॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

निम्बार्कगौरव

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

अभिनन्दन ग्रन्थ

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

✲ प्रधान-सम्पादक ✲

प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री

दयाशङ्कर शास्त्री
रामस्वरूप शर्मा गौड
भंवरलाल उपाध्याय
ऋषिकुमार जासरावत

वासुदेवशरण उपाध्याय
डॉ. रामप्रसाद शर्मा
ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री
रमेशचन्द्र माहेश्वरी

✲ प्रकाशक ✲

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ अभिनन्दन समिति

निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद, किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान

परामर्शदातृमण्डल :

मेवाड़महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्री मुरली मनोहरशरण जी महाराज, स्थल, सूरजपोल, उदयपुर
महन्त श्री हरिवल्लभदास जी महाराज, किशनगढ़-रेनवाल
श्रीमहन्त श्री वृन्दावनबिहारीदास जी काठियाबाबा, काठियाबाबा आश्रम, 24 परगना-सुखचर
बाबा श्रीमाधवशरणजी, निम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद
श्री रसिक मोहनशरण जी शास्त्री, व्यवस्थापक, श्री श्रीजी की बडी कुञ्ज, वृन्दावन
श्री हरिशरणजी, निम्बग्राम
डॉ. श्री रसिकबिहारी जी जोशी, (ब्यावर वाले) मेक्सिको (अमेरिका)
आचार्य श्री हरिशरणदेव जी शास्त्री, संरक्षक, श्री निम्बार्क दर्शन केन्द्र, मैडाकोट, जि. नवलपएसी (नेपाल)
आचार्य श्री खेमराज केशवशरण जी, अध्यक्ष-शरणागति आश्रम, देवघाट (नेपाल)
महामहोपाध्याय पं. गङ्गाधर जी द्विवेदी, जयपुर (राज.)
डॉ. श्री वासुदेव कृष्ण जी चतुर्वेदी, गतश्रम टीला, मथुरा (उ.प्र.)
डॉ. श्री प्रेमनारायण जी श्रीवास्तव, मोटे गणेश गली, वृन्दावन
डॉ. श्री भास्कर जी श्रोत्रिय, जयपुर

प्रकाशक :

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ अभिनन्दन-समिति
निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद,
किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान

संस्करण : 2004

टाईप सैटिंग :

आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर®
3580, जौहरी बाजार, जयपुर।
विशाल कम्प्यूटर्स, जयपुर

आवरण-सज्जा :

कम्प्यूटर क्राफ्ट,
चांदपोल बाजार, जयपुर

मुद्रक :

प्रिन्ट-ओ-लेण्ड
हवा सडक, जयपुर

महर्षिवर्य श्रीसनकादि संसेव्य - श्रीसर्वेश्वर प्रभु

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विराजित श्रीहँस-सनकादिक-नारद-निम्बार्क-निवासाचार्य

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विराजित श्रीजयदेव कवि समाराधित भगवान् श्रीराधामाधव

सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य
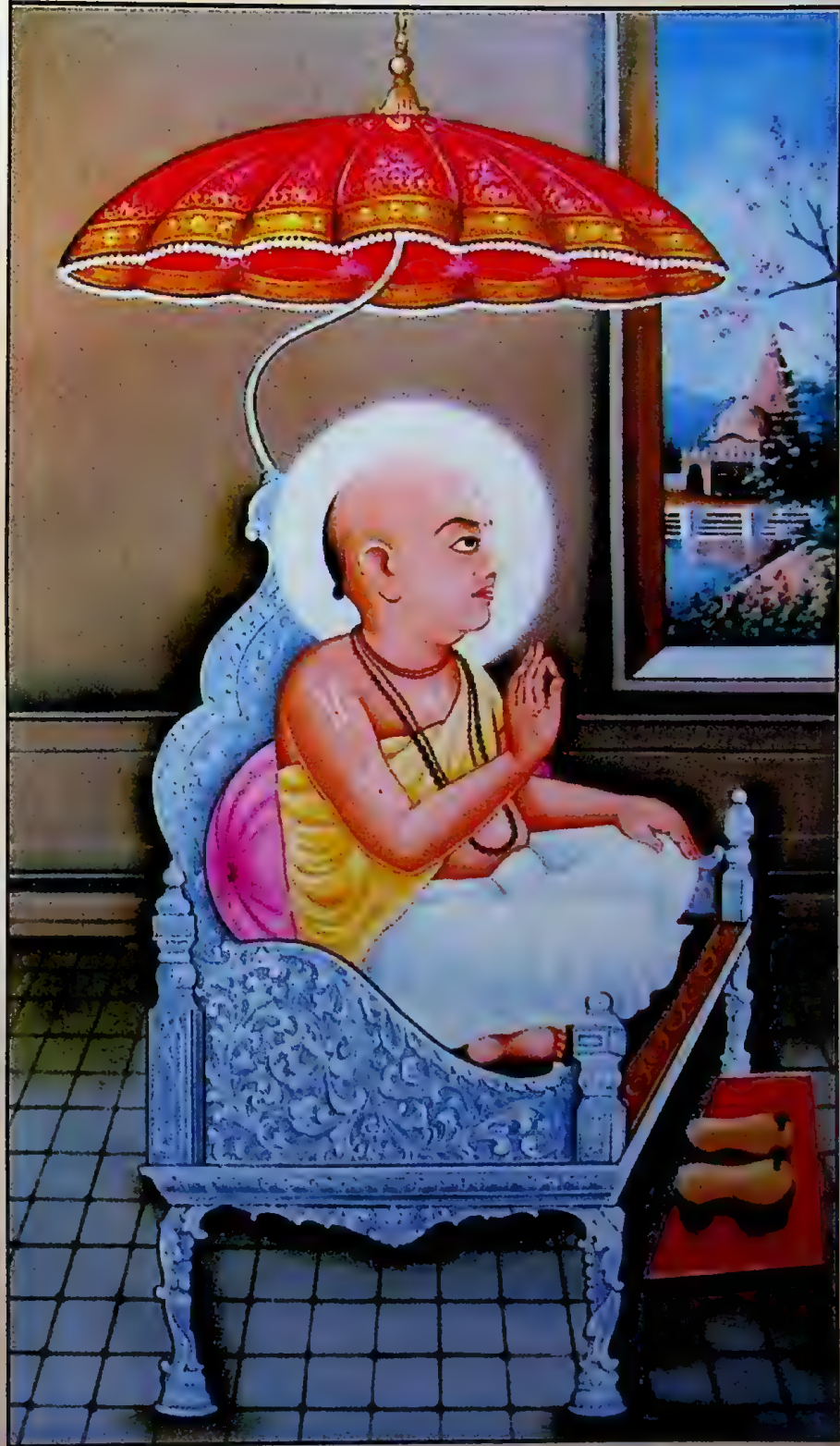
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज
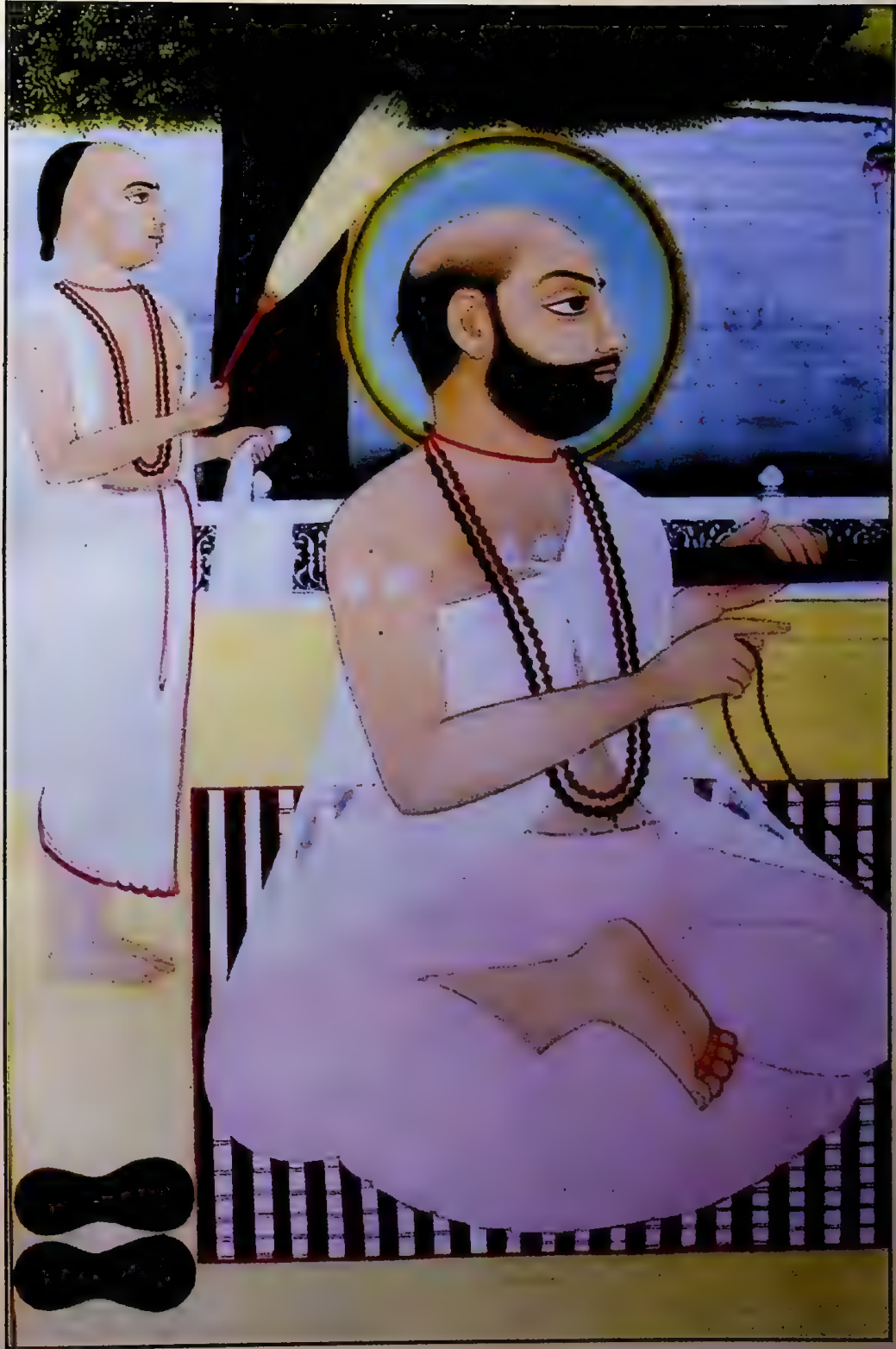
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज
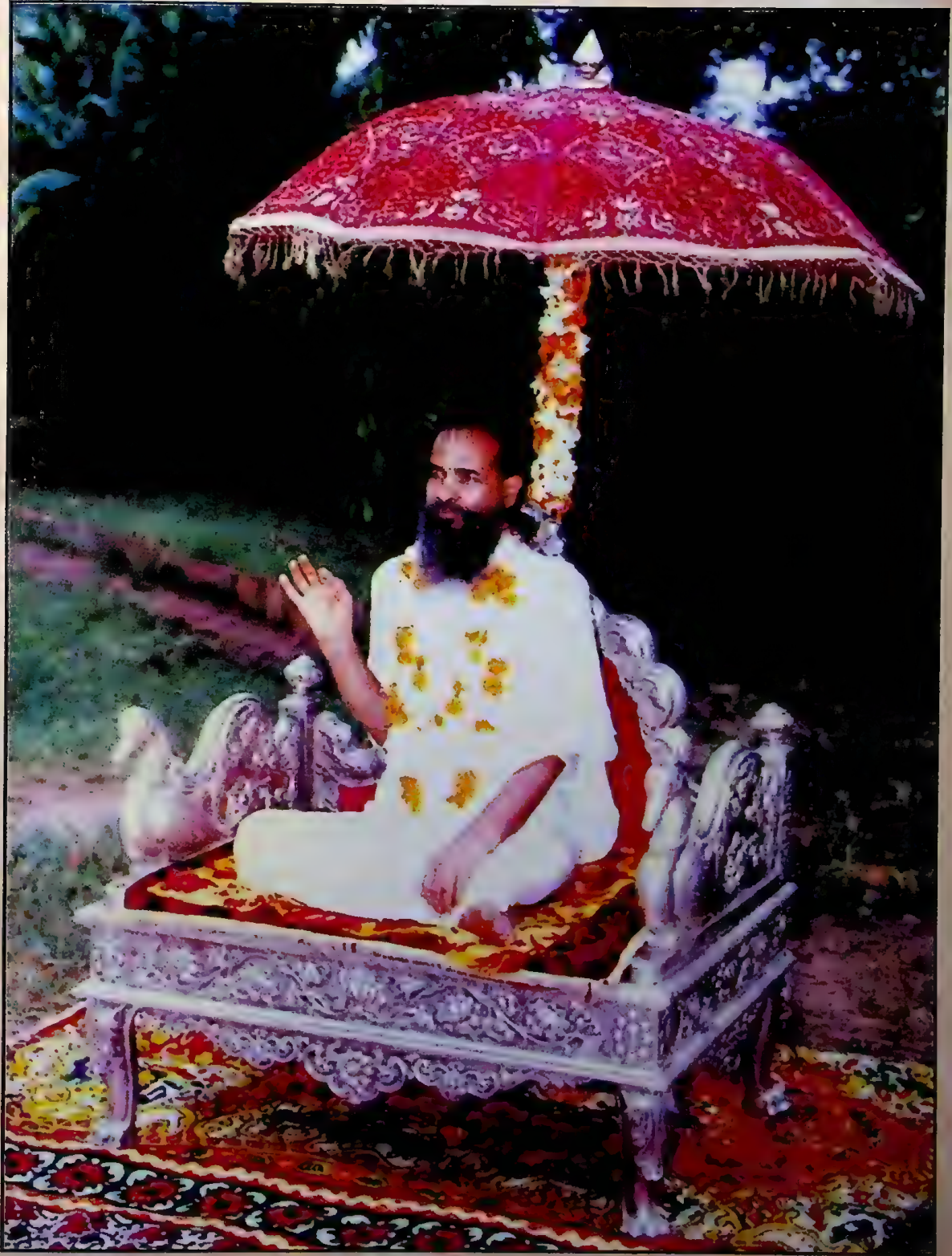
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

सम्पादकीयम्

श्री सर्वेश्वरो जयति।

आचार्यस्वरूप परम्परा

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर परमेश्वर सर्वाधार भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु के इस ब्रह्माण्ड में अन्य चतुर्दश लोकों की अपेक्षा इस भूमण्डल की महती विशेषता है। भूमण्डल में भी परम पावन इस भारतवर्ष की जो विशेषता है, वह अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। अनादिकाल से यह यहां की संस्कृति लोक-कल्याणकारी, मानवजीवन के परमोद्देश्य, **'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः''** इस सार्वभौम सनातन वैदिक धर्म को ही मानव जीवन का आधार मानती है। स्वर्गस्थ देवगण भी भारतवर्ष की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भारत में जन्म ग्रहण करने के लिए भगवान् से अभ्यर्थना करते रहते हैं–

अहो अमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत-स्वयं हरिः।
येर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्द-सेवोपमिकं स्पृहा हि नः॥

भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु भी धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थान निवृत्ति–पूर्वक धर्म संस्थापनार्थ अपने विविध अवतारों से इस भारत के अवनितल को कृतकृत्य करते हैं। इसी क्रम में भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु अपने अनुग्रह-विग्रह स्वरूप चक्रराज सुदर्शन को आज्ञा प्रदान करते हैं–

सुदर्शन महाबाहो कोटिसूर्यसमप्रभ।
अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥

इस भगवदाज्ञानुसार भगवान् के प्रिय आयुध चक्रराज सुदर्शन ने महर्षि अरुण के आत्मज नियमानन्द (निम्बार्क) के रूप में अवतार लेकर कालक्रम से शिथिल हुए सार्वभौम सनातन धर्म का साम्राज्य पुनः स्थापित किया था। भगवान् श्री निम्बार्क ने ही परवर्त्ती आचार्य श्रीश्रीनिवासाचार्य प्रभृति श्री बालकृष्ण शरणदेवाचार्यजी महाराज पर्यन्त समस्त आचार्यों के रूप में अवतरित होकर अज्ञान तिमिरान्ध मानव समाज में धर्म संस्थापना द्वारा जो लोकोत्तर आश्चर्यकारी कल्याण किया, वह निम्बार्कीय आचार्यों के स्वर्णिम इतिहास से सुस्पष्ट सर्वविदित है।

वस्तुतः "आत्मा वै जायते पुत्रः" इस श्रुति के अनुसार स्वाभाविक रूप से पिता के सद्‌गुणों का अवतरण पुत्र में होता है। शास्त्रानुसार पुत्र प्रकारद्वय से माना गया है– जन्मना संस्कारेण च। यथा जन्मना पिता के गुण (संस्कार) पुत्र में सङ्क्रमित होते हैं, तथैव गुरु के सद्‌गुणों की प्रवृत्ति धर्मपुत्र(शिष्य) में भी अवश्यमेव होती है। इस नियम से श्री भगवनिम्बार्काचार्य परम्परा में समस्त परवर्ती आचार्यों को भी उत्तराधिकार के साथ पूर्वाचार्यों की गुण-गण सम्पत्ति (संस्कार) प्राप्त होना स्वाभाविक होने से ही उनके द्वारा अपने कार्यकाल में लोकोत्तर कार्यानुष्ठान सम्पन्न होते हैं। इसी क्रम में वर्तमान आचार्यचरण **अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज** में उक्त संस्कार का अवतरण विपुल मात्रा में होकर संस्फुरित हुए हैं, यह आपश्री के लोकोत्तर कल्याणकारी महान् कृतित्व एवं व्यक्तित्व से सम्यक् सिद्ध है। **'प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि'** के अनुसार शैशवावस्था में ही उक्त सद्‌गुणगणों का स्वरूप विकसित होना प्रारम्भ हो गया था। बाल्यकाल में सामान्य बालकों के लौकिक क्रीड़नकों (खिलौनों) का परित्याग कर मंगलमय भगवन्नाम संकीर्तन के उपकरणों द्वारा संकीर्तन में भाव विभोर होकर आप तन्मयावस्था को प्राप्त हो जाते थे।

यथा–

वासुदेवे भगवति यस्य नैसर्गिकी रतिः
व्यस्तक्रीड़नको बाल्ये जड़वत्तन्मनस्कता।
कृष्णग्रहगृहीतात्मा न वेद जगदीदृशम्॥
आसीनः पर्य्यटन्नश्नन् शयानः प्रपिबन्–ब्रुवन्।
नानुसन्धत्त एनानि गोविन्द परिरम्भितः॥
क्वचिद्रुदति वैकुण्ठचिन्ताशबलचेतनः।
क्वचिद् भावनायुक्तस्तन्मयोऽनुचकार ह॥

पूज्य आचार्यश्री के जीवनवृत्त के अनुसार शैशवावस्था में ही एक दिव्य महापुरुष ने आपश्री की माताजी के समक्ष बालक के उक्त गुणों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी।

पूज्य आचार्यश्री के अलौकिक कृतित्व एवं व्यक्तित्व का वर्णन इस अभिनन्दनग्रन्थ में अनेक विधाओं से हुआ है, जिनका यहां पुनः उल्लेख करना अनावश्यक है। अतः संक्षेप में यही कहना उपयुक्त होगा कि श्री निम्बार्क भगवान् की दिव्य गुणगण-सम्पत्ति आपश्री को प्राप्त कर धार्मिक जगत् का परम कल्याण कर रही है।

आपश्री के समस्त परम भावुक भक्तजन ही नहीं, अपितु धार्मिक जगत् के धर्माचार्य, सन्त, महात्मा एवं विद्वज्जन भी आपश्री का भगवान् श्री निम्बार्क के रूप में दर्शन एवं स्मरण करके अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं।

आज के युग के भगवान् वेदव्यास के प्रतिरूप वेदोपनिषद् एवं श्रीमद्भागवत के ओजस्वी वक्ता विद्वद्वरेण्य श्री किशोरजी व्यास जैसे उद्भट मनीषी अभिनन्दनग्रन्थ में अपने हृदयोद्गार प्रकट करते हुए पूज्य आचार्यश्री का भगवान् निम्बार्क के रूप में अभिनन्दन करते हैं। यथा–

भारतवर्षे पश्चिमाञ्चले महाराष्ट्र-भूर्विशिष्यते।
मूंगीपैठणतीर्थो यस्यां गोदातीरे विराजते॥
तत्र जनिं लब्ध्वा सा ज्योतिः साक्षाद् यस्मिन् विराजते।
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥

इसी प्रकार राजस्थान के विख्यात ज्योतिर्विद् पं. श्री प्रभुलाल जी शास्त्री(पाली) पूज्य आचार्यश्री की जन्म कुंडली की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि जो योग एवं कृत्तिका नक्षत्र भगवान् श्री निम्बार्क की जन्म कुण्डली में है, वही नक्षत्र योग कृत्तिका नक्षत्र पू. आचार्यश्री की जन्मकुण्डली में विद्यमान है। अतः वर्तमान आचार्यश्री को भगवान् श्री निम्बार्क का अंशावतार कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होकर वस्तुस्थिति है।

श्रीमद्भगवद्गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्णद्वारा सम्यक् प्रतिपादन किया गया है कि–

यद्यद् विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽश सम्भवम्॥

पू. आचार्यश्री ने चतुर्दशवर्षवयस्क स्वरूप में ही अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ को समलंकृत किया था। यह विषय परम आश्चर्य का था, किन्तु इससे भी बढ़कर महाश्चर्य का विषय था वि. सं. 2001 में पञ्चदश वर्षीय आचार्यश्री का कुरुक्षेत्र में आयोजित अ.भा.विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अध्यक्ष पद को समलंकृत करना। आचार्यश्री के जीवन का वह एक महान् श्लाघनीय प्रसंग है।

वि.सं. 2001 में कुरुक्षेत्र में सूर्यसहस्ररश्मि महायज्ञ के अवसर पर विराट् अ.भा. सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन भारत के मूर्धन्य धर्माचार्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त महामनीषी जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री भारतीकृष्णतीर्थ, पुरी पीठाधीश्वर महाराज के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ था, जिसमें भारत के कोने कोने से धार्मिक जगत् के समस्त धर्माचार्य, शङ्कराचार्य, वैष्णवाचार्य, उद्भट विद्वान्, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर एवं सन्त महात्माओं का पादार्पण हुआ था। उक्त सम्मेलन में पञ्चदश वर्षदेशीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजीमहाराज ने एक दिन सम्मेलन के अध्यक्ष पद को समलंकृत किया था। उस समय सभासदों की आश्चर्ययुक्त मुखमुद्रा को देखकर जगद्गुरु पुरी पीठाधीश्वर शङ्कराचार्यजी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा था कि –उपासना के अन्तर्गत भगवान् शालग्राम का विग्रह जितना अधिक सूक्ष्म (अणुरूप) होता है, उसका अधिक महत्त्व माना जाता है। उसी प्रकार आज उदीयमान भगवद्भास्कर ओजो-

महिमा मण्डित निखिलमहीमण्डल चक्र-चूड़ामणि के रूप में एक अणुस्वरूप पञ्चदशवर्ष देशीय निम्बार्काचार्य विराट् सनातनधर्म सम्मेलन के अध्यक्ष पद को अलंकृत करते हुए अणोरणीयान् महतो महीयान्, इस उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। इस प्रकार तब हमारे पूज्य आचार्यश्री का 'अणोरणीयान्' स्वरूप धार्मिक जगत् के लोचनानन्द का विषय हुआ और आज पूज्यश्री के महतो महीयान् स्वरूप के दर्शन कर हम धन्य धन्य हो रहे हैं।

पूज्य आचार्यश्री को उत्तराधिकार के रूप में भगवान् श्री निम्बार्क गुणगण सम्पत्ति आचार्यपरम्परा में अवतरित होती हुई, आपके परम पूज्य गुरु देव **श्री बालकृष्ण शरणदेवाचार्यजी महाराज** से सम्प्राप्त हुई, उसका और भी विशेष संवर्द्धन आपश्री ने अपने तपोमय जीवन में किया। परिणामस्वरूप आचार्यपीठ को समस्त क्षेत्र में सभी दृष्टि से चरमोत्कर्ष पर प्रतिष्ठापित करना, यह लोकोत्तर महामहिमा का विषय है। आपश्री के स्वर्णिम कार्यकाल में काश्मीर से कन्याकुमारी तक वैदिक सनातन धर्म एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के स्वरूप की प्रतिष्ठापना की गई, यह भारतवर्ष के धार्मिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित की जायेगी।

भगवान् श्री निम्बार्क के 5100वें जयन्ती महा महोत्सव के पावन प्रसंग पर उन्हीं के प्रतिस्वरूप अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' **श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज** के कर कमलों में यह अभिनन्दन ग्रन्थ स्वरूप परम भक्ति भाव-सम्भारित-सारस्वतसरससुरभितसुमनोऽञ्जलि सादर समर्पित है।

सात खण्डों में विभक्त इस अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में भारत के सुप्रसिद्ध जननायकों, विद्वद्वरेण्यों एवं प्रसिद्ध उद्योगपतियों के अभिनन्दन एवं उनकी शुभकामनायें संकलित हैं। द्वितीय खण्ड में निम्बार्क सम्प्रदाय के इतिहास के साथ पूज्य आचार्यश्री का जीवन-दर्शन एवं भक्तों के हार्दिक भावोद्गार प्रस्तुत है। तृतीय खण्ड में आचार्यश्री का कृतित्व मूल्याङ्कन एवं विवेचकों की अनुभूतियां पठनीय हैं। चतुर्थ खण्ड दर्शन (द्वैताद्वैत) एवं अनुचिन्तन संकलित हैं। पञ्चम खण्ड में हार्दिक भावाञ्जलि के रूप में संप्राप्त अभिनन्दन पत्रों का संकलन तथा षष्ठ खण्ड में अतीत की स्मृतियों के रूप में उल्लेखनीय पत्र व्यवहार को प्रस्तुत किया गया है। चित्र वीथी के उपरान्त सप्तम खण्ड में उल्लेखनीय योगदान का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु से हार्दिक मङ्गल अभ्यर्थना है कि शतायु होने के पश्चात् भी **''शतम्भूयश्च शरदः शतात्''** इस श्रुति के अनुसार आपश्री पुनः शतायु के क्रम पर आरूढ़ होकर भारत राष्ट्र का अभ्युदय करते रहें।

श्रीचरण-कमलचञ्चरीक

सम्पादक-मण्डल

* * *

* प्रथम खण्ड *

अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं

(विषय सूची– खण्ड के प्रारम्भ में अवलोकनीय)

❁

* द्वितीय खण्ड *

इतिहास, जीवनदर्शन एवं हार्दिक भावोद्‌गार

(विषय सूची– खण्ड के प्रारम्भ में अवलोकनीय)

❁

* तृतीय खण्ड *

कृतित्व मूल्याङ्कन एवं अनुभूतियाँ

(विषय सूची से खण्डारम्भ है)

❁

* चतुर्थ खण्ड *

दर्शन एवं अनुचिन्तन

विषय–सूचनिका खण्डारम्भ में अवलोकनीय

❁

* पञ्चम खण्ड *

हार्दिक भावाञ्जलिः– ''अभिनन्दन पत्राणि''

विषय सूचनिका से खण्डारम्भ

❁

* षष्ठ खण्ड *

अतीत की स्मृतियाँ – पत्र व्यवहार

❁

* सप्तम खण्ड *

''न भूतो न भविष्यति''– अनुपम उल्लेखनीय योगदान

(विषय सूची खण्डारम्भ में)

प्रथम-खण्ड

अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं

❋ सूचनिका ❋

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

प्रथम-खण्ड

अभिनन्दन
एवं
शुभकामनाएं

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

शुभकामना सन्देश

सत्यमेव जयते

भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली/NEW DELHI - 110011
TEL. : 23016422/23016344 FAX : 23012645

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी निम्बार्काचार्य के 5100वें जन्मोत्सव के अवसर पर एक विराट धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रंथ का लोकार्पण एक सराहनीय प्रयास है।

उपराष्ट्रपतिजी आयोजन की सफलता की कामना करते हुए अभिनन्दन ग्रंथ के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

(डॉ० के. बी. ठाकुर)

नई दिल्ली
28 सितम्बर, 2004

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

शुभकामना सन्देश

मुख्य मंत्री
राजस्थान

8 NOV 2004

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अ.भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद की ओर से 20-26 नवम्बर, 2004 तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य-इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह शुभ संकेत है कि इस अवसर पर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज को अभिनन्दन ग्रन्थ भी समर्पित किया जा रहा है।

महान् संत-महात्माओं की स्मृति को चिरस्थाई बनाये रखने के उद्देश्य से जयन्ती महोत्सव का आयोजन करना अपने आप में पुण्य-कार्य है। ऐसे महोत्सव आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरणादायी सिद्ध होते हैं।

मुझे विश्वास है कि अभिनन्दन ग्रन्थ की सामग्री जनसाधारण के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

(वसुन्धरा राजे)

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्री द्वारका
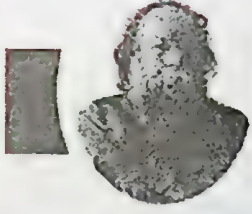
शारदापीठम्

द्वारका • गुजरात • भारत

प्रेषक : सचिव,
पू. पाद जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज

टॅलीफ़ॉन : (०२८९२) २३४०६४, २३५१०९ फ़ॅक्स : २३४४५७

संदर्भ :

दिनांक : 4-10-2004
स्थान : द्वारका

परमआदरणीय श्रीयुत जगद्गुरु निम्बार्काचार्यजी,
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद,
पुष्कर–क्षेत्र, किशनगढ़, राजस्थान
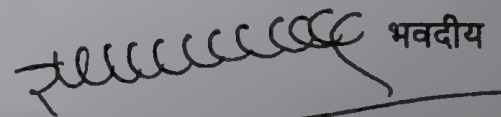
सप्रेम हरिस्मरण!

आपके यहाँ से प्रेषित निमन्त्रण–पत्र पाकर यह ज्ञात हुआ कि आप लोग श्री आद्यनिम्बार्काचार्यजी की जयन्ती सं. 2061 के कार्त्तिक शुक्ल अक्षय नवमी से कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्त मनाने जा रहे हैं और इस उपलक्ष्य में अखिल–भारतीय–विराट्–सनातन–धर्म–सम्मेलन तथा गोरक्षा–सम्मेलन प्रभृति बहुविध महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम भी आयोजित कर रहे हैं।

वस्तुतः लोक–कल्याण, वैश्विक अभ्युदय, मानवीय उत्कर्ष, राष्ट्रिय–रक्षा, सांस्कृतिक विकास, गो–संरक्षण एवं सनातन वैदिक धर्म व परम्परा की अक्षुण्णता के लिये इस प्रकार के सम्मेलन एवं तन्निष्ठ धार्मिक, आध्यात्मिक कार्यक्रमों का होना परम आवश्यक है। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आपके निर्देशन में ये अनेक लोक–हितकारक कार्यक्रम सम्पन्न किये जा रहे हैं।

श्री आद्य निम्बार्काचार्य जी की जयन्ती के पावन पर्व पर आयोजित सभी पुण्यप्रद याग निर्विघ्नतया पूर्णता को प्राप्त करें, एतदर्थ हम भगवान् द्वारकाधीश एवं भगवान् चन्द्रमौलीश्वर से प्रार्थना करते हुए पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित द्विपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामीश्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से शुभकामना प्रेषित कर रहे हैं।

परमपूज्य अनन्तश्रीविभूषित द्विपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी महाराज की आज्ञा से–

भवदीय

(स्वामी सदानन्द सरस्वती)
श्रीशारदापीठ, द्वारका

शुभकामना सन्देश

श्री श्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम् शृङ्गेरी.

SRI SRI JAGADGURU SHANKARACHARYA MAHASAMSTHANAM
DAKSHINAMNAYA SRI SHARADA PEETHAM, SRINGERI - 577 139.

PRIVATE SECRETARY
To His Holiness Sri Jagadguru
Shankaracharya Dakshinamnaya
Sri Sharada Peetham,
SRINGERI - 577 139. (Karnataka)

Camp :
Ref शृंगेरी
Date D-1/5279

श्रीमान् दयाशङ्करशास्त्री जी,

आपका पत्र पाकर जगद्गुरु श्रीचरण के चरणों में समर्पित किया।

यह जानकर दक्षिणाम्नाय शृंगेरी शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीभारतीतीर्थजी महाराज प्रसन्न हुये हैं कि आगामी नवम्बर 20 से 26 तक आद्य निम्बार्काचार्य इक्यावन सौवें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्मसम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

श्रीचरण अपने गुरुदेव के साथ 10 जून 1982 को सलेमाबाद पधारे और निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजीके आदर पूर्वक स्वागत स्वीकार किये और उनके सौजन्य से बहुत परिचित हैं।

महाराजजी इस कार्यक्रम के लिये अपनी शुभकामना प्रेषित करते हैं और भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि आपके सङ्कल्पित सारे कार्यक्रम सुचारुरूप से संपन्न होवें।

इति

दक्षिणामूर्ति

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

शुभकामना सन्देश

श्री शंकराचार्यो विजयतेतराम्

प्रातः स्मरणीय धर्मसम्राट् अनन्त श्री समलङ्कृत श्री मज्ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम (हिमालय)

1. ज्योतिर्मठ
जोशीमठ
जिला-चमोली, उत्तरांचल
दूरभाष: 01389-22127

2. श्री ब्रह्मनिवास
शङ्कराचार्य आश्रम
56/15 अलोपीबाग, प्रयाग
दूरभाष-0532-500097, 502158

3. प्राचीन श्रीराम जानकी मंदिर
त्रिवेणी बांध
रामघाट, प्रयाग
दूरभाष-0532-503329

4. श्री कृष्णानन्द सरस्वती ट्रस्ट
1. श्री ब्रह्म निवास, डी० 60/30 छोटी गैबी, वाराणसी
2. श्री ब्रह्म निवास, डी० 61/28 सिद्धिगिरी बाग, वाराणसी
3. श्री ज्योतिर्निकेतन शान्तेश्वर धाम अलोपीबाग, प्रयाग

शाखा कार्यालय
प्रेम सदन
डी० 56/32 सिगरा, वाराणसी
दूरभाष-0543-356784

पत्रांक........................ दिनांक....................

रसो वै सः सतत चिन्त्य सच्चिदानन्द ही रस स्वरूप है, तद्रस ही जीवन का सार है, तद्रस धारणा शक्ति जिसमें प्रतिष्ठित होती है, वह ही श्री राधा की प्रियता प्राप्त कर सकता है।

श्री राधा की प्रियता माधव की प्रियता मूलक शक्ति है, जिसका निम्बार्क पीठ में सदा सर्वदा प्राणिमात्र के कल्याण की कल्पना से अभिभूत होकर श्री राधाऽराधना की साधना एवं सेवा का दैनन्दिन व्यवहार दृष्टिगत होता है। जिसकी ५१००वीं जयन्ती निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में दिनांक २० नवम्बर २००४ से सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सन्त सम्मेलन आयोजित है, जिसमें **निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज** के कर कमलों में अखिल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जाएगा।

हमारी शुभकामना है अभिनन्दनीय का पावन अभिनन्दन नन्द-नन्दन की तरह दिग् चन्दन बनें।

शुभेच्छा: —
वासुदेवानन्दसरस्वती
११-११-२००४

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

शुभकामना सन्देश

HIS DIVINE HOLINESS
PRAMUKH SWAMI MAHARAJ
(SWAMI NARAYANSWARUPDAS)
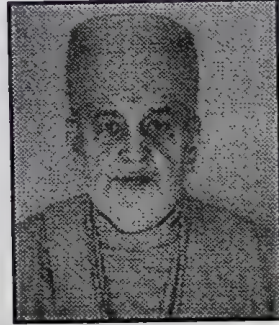
॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयते ॥

दिनांक : ०२-१०-२००४

सम्माननीय,
निम्बार्कपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ,
निम्बार्कतीर्थ(सलेमाबाद) पुष्कर क्षेत्र, किशनगढ,
जिला–अजमेर, पिन ३०५८१५

सादर जय श्रीस्वामिनारायण, जय श्रीराधे

श्रीसुदर्शनचक्रावतार भगवन्निम्बार्काचार्य के इक्यावनसौं वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में, अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का परिपत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ।

'अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदाम्' इस दश श्लोकी के श्लोकानुसार राधाजी सहित भगवान् श्रीकृष्ण की उपासना का उद्घोष करने में इस धरातल पर श्रीनिम्बार्काचार्य ही प्रथम हैं। विश्व सदा उनका ऋणी रहेगा। भगवान् श्री स्वामिनारायण ने अपने वचनामृतों में उत्तम भक्तों में श्री राधाजी का स्मरण भूयो भूयः किया है और श्री निम्बार्काचार्यजी का पुण्यस्मरण किया है।

श्री निम्बार्काचार्यजी की परंपरा का वहन करते हुए आज आपश्री की पावन निष्ठा में सामाजिक, धार्मिक और नैतिक सभी कार्यकलापों के द्वारा भारतीय सनातन धर्म के उत्थान का कार्य हो रहा है, वह सचमुच श्रीमद् आद्य निम्बार्काचार्यजी के चरणों में एक दिव्य भावांजलि ही है।

महोत्सव गौरवपूर्ण, सर्वाङ्गपूर्ण सफल हो, ऐसी भगवान् स्वामिनारायण और सभी अवतारों, संतों के चरणकमलों में प्रार्थना करते हुए प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने अपनी हृदयपूर्वक शुभेच्छाएँ प्रकट की हैं।

भगवदीय

शास्त्री ईश्वरचरणदास
कन्वीनर : बोचासणवासी श्री अक्षरपुषोत्तम
स्वामिनारायण संस्था (BAPS)

Bochasanwasi Shree Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Gujarat, INDIA.
Tel: (091) (79) 562 5151 / 52 Fax: (091) (79) 562 4405
www.swaminarayan.org email: info@swaminarayan.org

नवल किशोर शर्मा
राज्यपाल, गुजरात

राजभवन
गांधीनगर - ३८२ ०२०

दिनांक २९-०९-२००४

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद (अजमेर) में आगामी 20.11.2004 से 26.11.2004 तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य–इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजीमहाराज के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जी ने पवित्रता को आत्मा का स्वधर्म माना है और प्रेम प्रमुख मानवीय मूल्य। संसार में कौन है जिसे प्रेम और पवित्रता पसंद ना हो, परंतु अज्ञान के मालिन्य ने आत्मा की चमक को धूमिल कर दिया है। ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की अग्नि ने प्रेम के अमृत को सोख लिया है। भगवान्निम्बार्काचार्य ने अपनी ज्ञानवाणी द्वारा पवित्रता को सर्वोत्तम स्थान दिया है। विश्व बंधुत्व का आधार, प्रेम व एकता है। हमें भगवान्निम्बार्काचार्य के ज्ञान को जीवन में उतार कर अंतःकरण से विकारों और बुराइयों को निकालकर आत्मा के शुद्धीकरण व पवित्रीकरण करने का कार्य करना चाहिए। सुख शांति की जननी ही पवित्रता है।

मैं भगवान् निम्बार्काचार्य के इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव के सफल आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता हेतु अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूं।

(नवल किशोर शर्मा)

उपराज्यपाल
दिल्ली
LIEUTENANT GOVERNOR
DELHI

राज निवास
दिल्ली-११००५४
RAJ NIWAS
DELHI-110054

05 अक्टूबर 2004
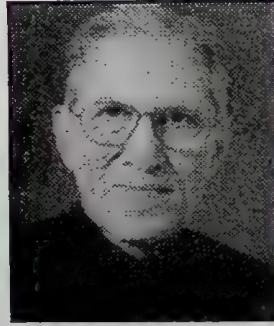
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आद्य निम्बार्काचार्यजी के 5100वीं जयंती के अवसर पर सलेमाबाद में भव्य समारोह आयोजित किया जा रहा है तथा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य की हीरक जयंती के अवसर पर एक ''अभिनन्दन ग्रन्थ'' प्रकाशित किया जाएगा।

मेरी परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीजी महाराज का सान्निध्य हमें वर्षों तक निरन्तर मिलता रहे और वे जन–जन के आध्यात्मिक उत्थान और पीड़ित मानवता की सेवा करते रहें।

सलेमाबाद में 20 से 26 नवम्बर 2004 तक आयोजित 5100वीं जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित सम्मेलन की सफलता के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीजीमहाराज की हीरक जयंती पर प्रकाशित ''अभिनंदन ग्रंथ'' में प्रकाशित प्रेरणादायी सामग्री से पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे।

बी.एल. जोशी

(बी.एल. जोशी)

।। श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ।। ।। श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।
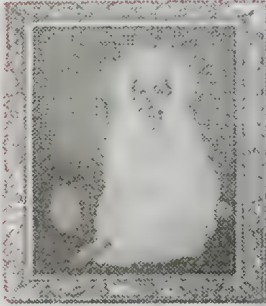
श्री दादू दयाल जी महाराज

श्री मद्दाद्य दादू सम्प्रदाय प्रधानपीठ नरायना

श्री दादू धाम नरायना, जिला - जयपुर (राज.) फोन : 01425-34160

पीठाधीश्वर श्री श्री १००८ महन्त गोपाल दास जी महाराज

महन्त गोपाल दास जी महाराज

।। श्रा दादूवजयतराम् ।।

''श्रीमदाद्य निम्बार्काचार्यश्री'' के ''इक्यावन सौ–वर्षीय–जयन्ती महोत्सव'' के उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय (दि.20.11.2004 से 26.11.2004 ई.) ''अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन'' एवं ''विराजमान निम्बार्क पीठाधीश्वरश्री श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यश्री श्रीजी महाराज'' के कर–कमलों में सकृतज्ञ–''अभिनन्दन–ग्रंथ'' समर्पित किये जाने के शुभावसर पर ''विश्ववन्द्य सद्गुरुदेव संतशिरोमणि अनन्तश्री श्रीमद्दादूदयाल जी महाराज'' के ''मुख्य–पीठ–श्रीदादूद्वारा धाम नरायना'' की ओर से ससम्मान शुभकामना प्रेषित करते हैं।

परमपूज्य पूर्व–निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वरश्री परशुराम जी महाराज सलेमाबाद व सन्तशिरोमणि, ब्रह्मर्षि श्रीदादूदयाल जी महाराज के सुशिष्य योगिराज, श्रीजगाजी महाराज की सोलहवीं शताब्दी की ऐतिहासिक भेंट के समय से ही दोनों संत–पीठों का ससम्मान, स्नेहसिक्त व सद्–व्यवहारपूर्ण प्रगाढ़–सम्पर्क अद्यावधि रहता आ रहा है। यह ''संतपथ'' की सनातन व गौरवमयी–गरिमा का प्रतीक है।

परमादरणीय पीठाधीश्वर देवस्वरूप विराजमानश्री श्रीजी महाराज का अभिनन्दन व पूजन परमसद्गुरुदेव श्री-मद्दादूदयाल जी महाराज श्री की ''वाणी श्री'' के सर्वथा अनुरूप हैं=

''दादू निराकार मन-सुरतिसौं प्रेम–प्रीति सौ सेव।
जे पूजे आकार को, तो साधू प्रत्यक्ष–देव''॥15॥2॥

इस पुनीत अवसर पर समस्त–'दादू–समाज' तथा 'दादूपीठ' की ओर से मंगल–कामना स्वीकार कीजिये।

सदूक्तिः–''परोपकाराय सतां विभूतयः'' एवं भगवान् वेदव्यास द्वारा समस्त पुराणों के सार–स्वरूप वर्णितः–''परोपकारः पुण्याय''..महामंत्र के अनुसार विराजमान पीठाधीश्वरश्री श्रीजी महाराज के सर्वथा समुज्ज्वल, साधनामय तथा सर्वदा परोपकार–परायण कीर्तिध्वज–संजीवन के लिये श्रीमद्दादूपीठ नरायना धाम की ओर से सादर अभिनन्दन!

सादर अभिनन्दन!

स्वामी कन्हीराम दादूपंथी
प्रतिनिधि
पूज्याचार्य श्रीमद्दादूपीठ

वैद्य शीतलदास स्वामी
सर्वाधिकारी
पूज्याचार्य श्रीमद्दादूपीठ

23019080
23019606 ऐक्स. : 456
23012692

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

अशोक गहलोत
महासचिव

24 अकबर रोड़,
नई दिल्ली–110011
क्रमांकः जेपी/
दिनांकः 5/10/04

प्रिय श्री शास्त्री जी,

आपका 26 सितम्बर,2004 का पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के तत्त्वावधान में 20 नवम्बर,04 से 26 नवम्बर,04 तक निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद में सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य–इक्यावनसौ वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है एवं इस अवसर पर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा।

भारत की महान् सभ्यता और समृद्ध संस्कृति के उन्नयन और उसके प्रसार में इस प्रकार के सम्मेलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है एवं समाज में शांति, सद्भाव और विश्वास की भावना को बढ़ावा मिलता है।

मुझे विश्वास है प्रकाशित ग्रंथ में जन सामान्य के लिए उपयुक्त आध्यात्मिक सामग्री का सरल शब्दों में समावेश किया जायेगा।

मैं इस अवसर पर निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु एवं सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले सभी महात्माओं को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए इसके सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

श्री दयाशंकर शास्त्री,
मंत्री, अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ,
श्रीनिम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद, पुष्कर क्षेत्र,
किशनगढ़, जिला अजमेर–305815

श्री प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री,
प्रधान सम्पादक-अभिनन्दन ग्रन्थ
254, शास्त्री सदन, खूंटेटा मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर-302 001

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

॥ श्रीः ॥

SRIKARYAM
SRI AHOBILA MUTT
ஸ்ரீ அஹோபில மடம்
Camp 8-A आर्तीनगर
पूर्वै ताम्बरम
चेन्नै 600 059
फोन: नं. 044. 22790815.

श्रीश्री
Sri निम्बार्काचार्यजी महाराज
निम्बार्क तीर्थ - सलेमाबाद
पुष्करक्षेत्र - किशनगढ़
अजमेर (राज.)

Date 25-06-2004

॥ श्रीमते श्री लक्ष्मीनृसिंह परब्रह्मणे नमः॥

॥ श्रीमते श्री लक्ष्मीनृसिंह दिव्यपादुकासेवक श्रीवण्शठकोप श्री नारायण यतीन्द्र महादेशिकाय नमः॥

प्रिय महोदय!

आपका पत्र ता. 16.6.2004 का श्री निम्बार्काचार्यजी का 5100वां जयन्ती महोत्सव आह्वान के साथ मिला। पत्र देखकर श्री श्री अहोबिलमठ श्री श्री स्वामीजी महाराज बहुत प्रसन्न हुए।

वर्तमान कार्यक्रमों का पूर्व पीडित कारण से आपका आह्वान सार पुष्करक्षेत्र राजस्थान पहुंचने को अनेक प्रकार की असुविधा है।

तो भी, आपके प्रयत्न से होने वाला महोत्सव सभी प्रकार सफलता होने के लिए श्री श्री लक्ष्मीनृसिंह भगवान को प्रार्थना कर फल मन्त्राक्षतादि भेजा हुआ है।

समय पर आप सपरिवार श्री अहोबिलमठ पधारकर श्रीश्री लक्ष्मीनृसिंह भगवान के दर्शन प्राप्त करें तथा श्रीश्री स्वामीजी को मिलने के लिए आह्वान कर रहा हूं।

इन्थम् आज्ञानुसार

(E.V. DESIKAN)
25.9.04.

(E. V. DESIKAN)
GENERAL MANAGER,
ALL INDIA GENERAL & SPL.
POWER AGENT OF HOLINESS
THE JEER OF SRI AHOBILA MUTT

Central Office : 'SRI DESIKA BHAVANAM', 30, Venkatesa Agraharam, Mylapore, Chennai - 600 004. Phone : 461 15 40

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

☎ (૦૨૮૪૧) ૪૪૪૪૪

મહામંડલેશ્વર મહંતશ્રી મુકુંદશરણજી મહારાજ

(નિમ્બાર્ક રત્ન)

નિમ્બાર્ક આશ્રમ - વૈજનાથ મહાદેવ

મુ. વલભીપુર – ૩૬૪ ૩૧૦

अनन्तश्री-विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यजी,

श्री श्रीजीमहाराज के चरणों में

वलभीपुर से मुकुन्दशरण का शाष्टांग दण्डवत् प्रणाम

आपका कृपापत्र मिला। ज्ञातव्य हुआ कि आचार्यपीठ में निम्बार्क भगवान् की 5100वां जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ है। अपने लिये और समस्त निम्बार्क परिवार और समस्त जनता के लिये बड़ा ही आनन्द और हर्ष का मौका है। उस महोत्सव में हमारे लिये आपकी आज्ञा हुई है कि परामर्श मण्डल में सेवा प्रदान की गई है। ये हमारा अहोभाग्य है पर यहां तुलसी विवाह का उत्सव का आयोजन किया गया है। अतः मैं 23 या 24 नवम्बर के दिन उपस्थित रह सकूंगा।

श्री चरणों में,

(मुकुन्द शरण)

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

गुलाबचन्द कटारिया
मंत्री
गृह, गृह-रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा,
कारागार विभाग

385-B
सिविल लाइंस, जयपुर
दूरभाष : (O) 2227362
(R) 2229300

अ. शा. पत्रांक : 5252
जयपुर, दिनांक : 1/11/05

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) पुष्कर क्षेत्र किशनगढ़ (अजमेर) द्वारा श्री भगवन्निम्बार्काचार्य-५१००वें जयंति महोत्सव के पावन उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कर कमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा। श्री श्रीजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित रहा है उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर सभी वर्गों के लोगों ने अपने जीवन में मानव मूल्यों तथा ज्ञान की लौ जागृत की है। शिक्षा, चिकित्सा तथा गौसेवा के क्षेत्र में भी श्री श्रीजीमहाराज सम्पूर्ण प्रदेश में प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। ऐसे महाभाग के संदर्भ में तो परमपिता परमेश्वर से केवल यही प्रार्थना करना चाहता हूँ कि उनका प्रेरणामय व्यक्तित्व सदा हमें लाभान्वित करता रहे।

(गुलाबचन्द कटारिया)
गृह मंत्री

प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री,
२५४, शास्त्री सदन, खूंटेटा मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर

शुभकामना सन्देश

घनश्याम तिवाड़ी
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, संस्कृत, तकनीकी)
भाषा एवं भाषाई अल्पसंख्यक
तथा विधि एवं न्याय विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

फोन : (नि.) 2293666
2293777
(का.) 2227418
2227222 Ext 2232

अ.शा.पत्रांक : मं.शि./04
जयपुर, दिनांक : 5.11.2004

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद में आगामी २०.११.०४ से २६.११.०४ तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य – इक्यावन सौंवें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कर कमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा।

श्रद्धेय श्री श्रीजी महाराज वन्दनीय-अभिनन्दनीय व्यक्तित्व हैं। लोक-समाज में उनके प्रति बडी श्रद्धा है। देश-समाज ऐसे विद्वान् महापुरुषों का ऋणी है।

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

सद्भावी,

(घनश्याम तिवाड़ी)

हरिशंकर भाभड़ा
उपाध्यक्ष

दूरभाष : 91-141-2227568 (कार्या.)
91-141-2220187 (निवास)
राजस्थान सरकार
आर्थिक नीति एवं सुधार परिषद
सचिवालय, जयपुर-302 005
निवास : 50, सिविल लाइन्स, जयपुर

कमांक /विशे.(नि.)/डीसी/ईपीआरसी/04/९०
जयपुर, दिनांक 13 अक्टूबर, 2004

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ–सलेमाबाद में आगामी 20.11.2004 से 26.11.2004 तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। मुझे यह जानकार और भी खुशी है कि इस अवसर पर अ.भा. निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कर कमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जावेगा।

मैं परमपिता परमेश्वर से उक्त विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने की मंगल कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि उक्त सम्मेलन में आज के परिप्रेक्ष्य में धर्म की आवश्यकता पर गहनता से विचार विमर्श कर ठोस निर्णय लिये जाकर जन–जन तक इसकी विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराये जाने का प्रयास किया जावे, ताकि सभी जन इसकी पालना कर अपना जीवन सार्थक बना सकें।

(हरिशंकर भाभड़ा)

शुभकामना सन्देश

गो. श्री गोपाललाल जी महाराज श्री

श्री महाप्रभु जी का बड़ा मन्दिर

वल्लभाचार्य मार्ग, पाटनपोल, कोटा - 324006 (राज.)
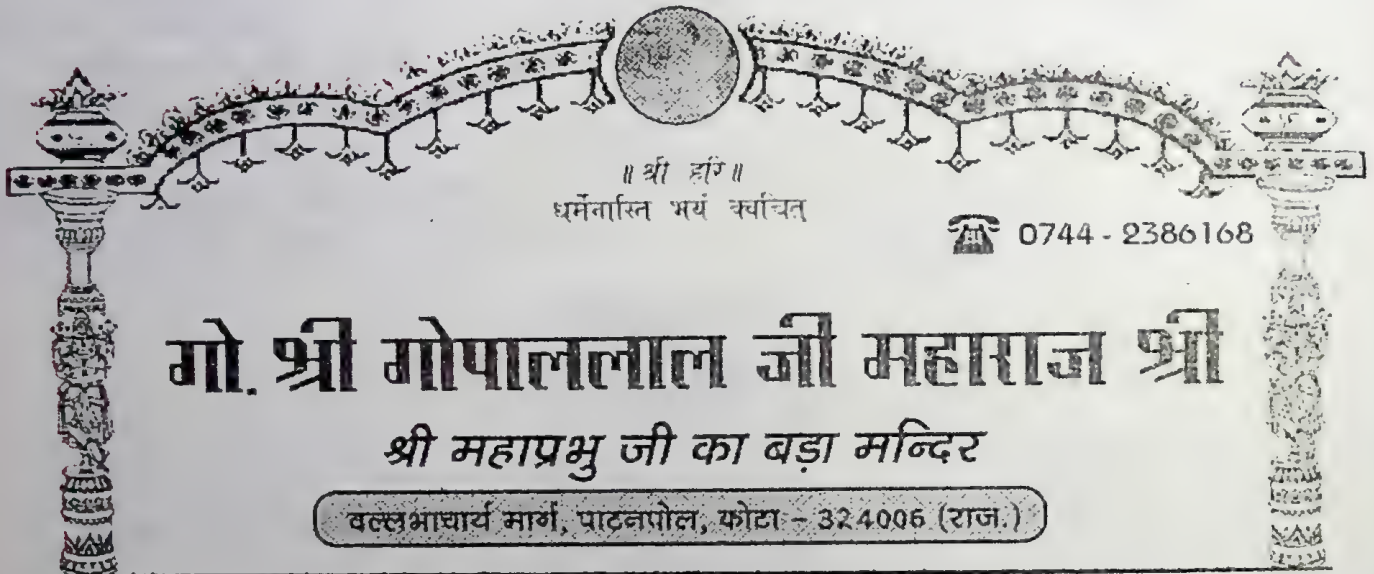
दिनांक १६.१०.२००४

विषय : श्री भगवन्निम्बार्काचार्यजी के ५१००वें जयन्ती महोत्सव पर शुभकामना।

आशीर्वादार्ह श्री मन्त्री जी व सचिव महोदय,

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ, जि. अजमेर (राज.)। आपका शुभ सन्देश पढ़कर हृदय में आनन्दानुभूति हुई। अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आप का यह आयोजन अत्यधिक सराहनीय है। अ.भा. निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज के कर कमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ का समर्पण किया जाना सनातन धर्म के उन्नयन का अतिशय गौरवास्पद सुकृत्य है। भक्ति मार्गीय सम्प्रदायों का अब अधिक दायित्त्व बढ़ गया है। इन प्रकार के आयोजनों से पतनोन्मुख समाज का कल्याणमय उन्नयन होगा। निरन्तर हमारी शुभकामनाएँ सनातन धर्म सम्मेलनों के लिये रहती आई है। हमारा आत्मिक स्नेह एवं आदर श्री जी महाराज को सूचित कीजियेगा। आप द्वारा स्थापित पारमार्थिक संस्थायें सदैव विकास के राजपथ पर अग्रसर हों, इसी शुभकामना के साथः—

लिखी आप श्री की आज्ञा सुं
नारायणप्रसाद शास्त्री
श्री वल्लभाचार्य मार्ग, श्री महाप्रभु जी का बड़ा मन्दिर,
पाटन पोल, कोटा

मुख्य संरक्षक :
आचार्य महामण्डलेश्वर
युगपुरुष स्वामी परमानन्दजी महाराज

अध्यक्ष :
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी

परम शक्तिपीठ

वात्सल्य ग्राम, मथुरा वृन्दावन मार्ग, वृन्दावन, उ० प्र०-285703, दूरभाष : 0565-2456888

दिनांक ३/११/२००४ पी.एस.पी./२०६२/०४

आदरणीय भाई वासुदेव उपाध्याय जी

जय श्री राम।

भारतीय धर्म-संस्कृति की आधार शिला भक्त व सन्त ही हैं। यदि ये न हों तो धार्मिक व्यवस्था चरमरा जाये। निम्बार्काचार्य पीठ धर्म का गढ है, जहाँ के पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जैसी महान् विभूति हों, उस आचार्य पीठ का गुणानुवाद शब्दों से परे है। आपके द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भाव बहुत सुन्दर है। सम्मेलन पूर्णरूपेण सफल हो, ऐसी मेरी आप सबको शुभकामना है, आशीर्वाद है।

दीदी माँ
साध्वी ऋतम्भरा
(साध्वी ऋतम्भरा)
परमशक्ति पीठ
वात्सल्य ग्राम,
वृन्दावन

वासुदेवशरण उपाध्याय
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
सलेमाबाद, जि. अजमेर (राज.)

कार्यालय : लव 103, अग्रसेन आवास, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली-110 092 दूरभाष : 22548224, 22531927 टैलीफैक्स : 22428242
पंजी० कार्यालय : 27/15, राधेश्याम पार्क, दिल्ली-110051 • e-mail : vatsalyagram@hotmail.com • visit us : www.vatsalyagram.org

ललित किशोर चतुर्वेदी
प्रदेशाध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान
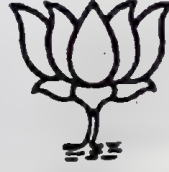
कार्यालय : सी-51, सरदार पटेल मार्ग
सी-स्कीम, जयपुर-302 001
फोन : 0141-2380040, 2381664
एवं फैक्स : 2382323

दिनांकः-26 अक्टूबर, 2004

मुझे यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद में दिनांक 20.11.2004 से 26.11.2004 तक आद्य निम्बार्काचार्य-इक्यावनसौवें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर निम्बार्काचार्य पीठाधीश श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा। धर्म शब्द को लेकर इस समय जितना भी दुष्प्रचार छद्म धर्मनिरपेक्षियों द्वारा किया जा रहा है, उसने समाज को मतिभ्रम में डाल दिया है। पंथ, समुदाय और उपासना पद्धतियों को लेकर जो वैचारिक प्रदूषण इस समय देश में व्याप्त है, उसे मिटाने में यह धर्म सम्मेलन अपनी महती भूमिका का निर्वहन करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

अभिनन्दन ग्रंथ इस दिशा में प्रकाश-पुंज की भूमिका अदा करेगा, ऐसी मेरी भावना है। पन्थों और सम्प्रदायों से अलग हट कर धर्म की भूमिका का विश्लेषण करते हुए भावी मार्ग निश्चित किया जा सके, इसके लिये ऐसे धर्म सम्मेलन के समय-समय पर आयोजन करने की व्यवस्था करते हुए उचित पाठ्य सामग्री लोगों को उपलब्ध हो सके, इस दिशा में सम्मेलन अपनी कार्य योजना बनायेगा, तो इसकी सार्थकता शाश्वत हो जायेगी।

सम्मेलन के सफल आयोजन और इस अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे अभिनन्दन ग्रंथ की सफलता के लिये मैं हृदय के अन्तःस्तल से शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूं।

(ललित किशोर चतुर्वेदी)

प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री,
प्रधान सम्पादक – अभिनन्दन ग्रंथ,
254, शास्त्री सदन, खूंटेटा मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर।

निवास : 4 भ 21, जवाहर नगर, जयपुर-302004 दूरभाष : 2655638

शुभकामना सन्देश

प्रो० रासासिंह रावत
संसद सदस्य
(लोक सभा)

1, हरीश चन्द्र माथुर लेन,
जनपथ, नई दिल्ली – 110001
दूरभाष : 23314700

313, चाँद बावड़ी,
अजमेर – 305 001 (राज.)
दूरभाष : 2460200, 2445400

क्रमांक/एमपी/अज/781/2004

दिनांक: 11.10.2004

माननीय शास्त्री जी,

सादर नमस्ते।

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ श्री निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद में आगामी 20 नवम्बर 2004 से 26 नवम्बर 2004 तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य–इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा। इन सभी समारोहों की सफलता के लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनायें, शतशः अभिनन्दन तथा श्री श्रीजी महाराज के चरणों में कोटिशः नमन और वन्दन स्वीकार करें।

श्री निम्बार्क पीठ अजमेर राजस्थान का महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायी धार्मिक तीर्थस्थल है, जहां हजारों श्रद्धालु जाकर आनन्द की अनुभूति करते हैं। श्री श्रीमहाराज संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान्, धर्म के साक्षात् स्वरूप, सरलता, सादगी और पवित्रता की तपोमूर्ति एक महान् एवं आदर्श सन्त शिरोमणि हैं।उनका जीवन भक्ति, धर्म तथा उपासना भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित रहे है। उनकी मेरे जैसे लाखों व्यक्तियों के ऊपर हमेशा कृपादृष्टि रही है। उनके सान्निध्य में एक शगुन मिलता है। ऐसे महान् मनीषी का अभिनन्दन इस विराट् सम्मेलन की सार्थकता है।

आपका,

(रासासिंह रावत)

श्रीमान् दयाशंकर जी शास्त्री,
मंत्री,
अ.भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ,
सलेमाबाद, जिला अजमेर

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

Registered under Societies Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११० ०२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

दूरभाष : ९१-११-२६१०३४९५, २६१७८९९२
फैक्स : ९१-११-२६१९५५२७
तार : हिन्दूधर्म
Phones : 91-11-26103495, 26178992
Fax 91-11-26195527
E-Mail : vhp@vichaar.net
vhpnews@vichaar.net
jaishriram@vsnl.in
manish@vichaar.net
Gram : 'HINDUDHARMA'

पत्र संख्या Ref. No विoहिoपo / 11बी / 2004

दिनांक Dated 18 अक्टूबर, 2004

आत्मीय बन्धुवर,

जय श्रीराम।

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ द्वारा 20 नवम्बर, 2004 से 26 नवम्बर, 2004 तक सप्त दिवसीय आद्य श्री निम्बार्काचार्य-इक्यावन सौ वें जयन्ती महोत्सव अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के स्वरूप में मनानें का निश्चय अति समीचीन है।

प्रकृति के सान्निध्य में, शांत एवं एकान्त वातावरण में भारतीय ऋषियों, मुनियों एवं चिंतकों ने जिस परकल्याणकारी सुखद, सर्वश्रेष्ठ मुक्तिदायक मानव जीवन दर्शन का उद्‌बोधन किया, वह सर्वकालिक, सर्वव्यापी एवं सर्वस्पर्शी व्यापकता लिये हुये शाश्वत अथवा सनातन है। संयम, साधना, आत्मालोचन, समदर्शिता इस जीवन दर्शन के मूल सतम्भ है।

प्रभु के श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना है कि श्री निम्बार्काचार्य-पीठ मानव समाज में एक्य स्थापित कर कल्याणकारी जीवन दर्शन का जीवन में अनुपालन करने की प्रवृत्ति जागृत कर यशस्वी होगा।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

अशोक सिंहल

(अशोक सिंहल)
कार्याध्यक्ष

श्रीमान् दयाशंकर जी शास्त्री,
अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ,
पुष्कर क्षेत्र, किशनगढ़, जिला अजमेर

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते || || श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

दूरभाष : ९१ ११-२६१०३४९५, २६१७८९९२
फैक्स : ९१-११-२६१९५५२७
तार : हिन्दूधर्म
Phones 91-11-26103495, 26178992
Fax 91-11-26195527
E-Mail vhp@vichaar.net
vhpnews@vichaar.net
jaishriram@vsnl.in
manish@vichaar.net
Gram . 'HINDUDHARMA'

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

Registered under Societies Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११० ०२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

पत्र संख्या Ref. No वि0हि0प0 / 11ए / 2004 दिनांक Date 29 सितम्बर, 2004

आदरणीय श्री दयाशंकर जी शास्त्री

सादर जय श्रीराम

यह जानकर अति आनन्द हुआ कि अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद में आगामी 20 से 26 नवम्बर, 2004 तक सप्त दिवसीय पूज्य आद्य निम्बार्काचार्य जी की 5100वीं जयन्ती के अवसर पर एक भव्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर आप एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं, जो पूज्य श्री श्रीजी के श्रीचरणों को समर्पित किया जाएगा।

इस अभिनन्दन ग्रन्थ में सनातन धर्म की विशद जानकारी और निम्बार्क पंथ की भी जानकारी, जिससे समाज पंथ के लिए योगदान करे, अवश्य रखे होंगे। पूज्य महाराज जी को अर्पित करने का अर्थ ही यह है कि ये लोग कल्याण के लिए काम आएंगे।

आपके प्रकल्प की सफलता के लिए परमेश के श्रीचरणों में प्रार्थना है।

पू. श्रीजी महाराज को सादर वन्दन। अभिनन्दन।

भवदीय

(आचार्य गिरिराज किशोर)
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्रीमान् दयाशंकर जी शास्त्री,
अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ,
निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद,
पुष्कर क्षेत्र, किशनगढ़, जिला अजमेर-305 815 (राज.)

शुभकामना सन्देश

॥ श्री राम ॥

विजय कौशल

निकुँज वन-पानीघाट,
वृन्दाबन (मथुरा)
दूरभाषः 0565 + 445253

आदरणीय श्रीमान् उपाध्यायजी,

सादर–श्री राधे–राधे।

रसमयी मधुर युगल उपासना के सूत्रधार श्री भगवन्निम्बार्काचार्यजी के 5100वें जन्म–महोत्सव के अवसर पर पूज्य महाराजश्री के कर कमलों में एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का भाव निश्चित ही सब भक्तों को आनन्द प्रदान करेगा।

वैसे तो हमारे महाराजश्री जीवित–जाग्रत महाग्रंथ हैं, जिनके जीवन के प्रत्येक पृष्ठ पर संयम की, साधना की, सौम्यता की, शिष्टता की, मधुरता की, दिव्यता की, भक्ति की, उपासना की तथा श्रेष्ठतम व्यवहार कुशलता की परिभाषाऐं अंकित हैं। अस्तु फिर भी......।

आपके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ को तथा प्रभु कृपा और हम सबके सौभाग्य से जीवित ग्रन्थ के रूप में हम सबको मिले, पूज्य महाराजश्री को मेरे अनेकशः नमन, वन्दन तथा अभिनन्दन।

पुनः अनेकानेक मांगलिक भावनाओं के साथ।

विजय कौशल

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानवसंसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Prof. V. Kutumba Sastry
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed University
(Under MHRD, Govt. of India)

रा0सं0सं0/वीसी–3/2004–05/299 5.10.2004
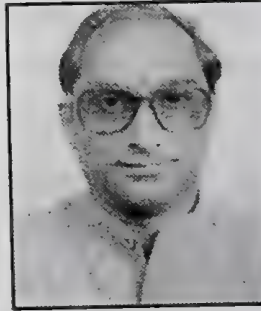
प्रिय श्री शास्त्री,

मैं रसमयी युगलमूर्ति के उपासक जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी के अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन एवं आचार्यश्री को समर्पण का जो अवसर अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के आयोजकों ने चुना है, उसके लिए सभी भक्तजनों को अत्यन्त साधुवाद देता हूं। आद्य आचार्यश्री की 5100वीं जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित सनातन धर्म सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं तथा युगलमूर्ति से प्रार्थना करता हूं कि वर्तमान विश्व को अपनी मधुर रसमयी कृपा प्रदान करें एवं समग्र संसार को पारस्परिक सौहार्द की अन्तः प्रेरणा दें।

सादर,

विनयावनत

(वि. कुटुम्बशास्त्री)

श्रीमान् दयाशंकर जी शास्त्री,
मंत्री, अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ,
निम्बार्कतीर्थ, (सलेमाबाद), पुष्कर क्षेत्र,
किशनगढ़, जिला अजमेर
राजस्थान–305 815

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते || || श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

Gram: DIVIYAJ

☎ 0145-2787055, 2787509(का.)
मोबाईल :9414075161
फैक्स : 0145-2787049

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,

पुष्कर बाई पास, अजमेर- 305 009 (राज.)

प्रो. एम. एल. छीपा
कुलपति

क्रमांक U.CS/MDSU/2004/599 दिनांक 15-10-04

आदरणीय शास्त्रीजी,

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आद्य निम्बार्काचार्य–5100वें जयन्ती महोत्सव पर अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्रीश्रीजी महाराज के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा।

आचार्य पीठ एवं पूज्य आचार्य श्री श्रीजी महाराज के साथ मेरा घनिष्ठ आत्मिक संबन्ध रहा है। वैदिक चिन्तन, दर्शन, संस्कृति, साहित्य व व्याकरण के आप वर्तमान युग में पुरोधा हैं, अहर्निश देव-भाषा संस्कृत के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भारतीय जीवन पद्धति और आचार्यश्री निम्बार्क के दर्शन के पल्लवन एवं पुष्पन के लिए आपके द्वारा किया जा रहा कार्य निश्चय ही ऐतिहासिक संदर्भ में मील का पत्थर सिद्ध होगा। मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि आपका जीवन दर्शन विश्व बन्धुत्व के लिए मानवता का प्रेरणा स्रोत ही नहीं, अपितु जीवन मूल्यों का विश्वकोष कहा जायेगा। मैं इस अवसर पर कार्यक्रम की सफलता एवं श्रीजी के आचार्य उद्‌बोधन को मानव जीवन का आप्लावित करने वाली वाणी के कोष को सफल बनाने हेतु पुनः शत–शत शुभकामनायें श्रीजी महाराज के चरणों में अर्पित करता हूं।

सादर!

भवनिष्ठ,

(प्रो. मोहन लाल छीपा)
कुलपति

प्रो. प्रभाकर शास्त्री
प्रधान संपादक-अभिनन्दन ग्रन्थ,
अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ,
निम्बार्कतीर्थ, (सलेमाबाद),
पुष्कर क्षेत्र, किशनगढ़, जिला अजमेर, राजस्थान

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

डॉ.पंकज चांदे,
कुलगुरु
Dr.Pankaj Chande,
Vice-Chancellor

कविकुलगुरु-कालिदास-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, (रामटेक)
Kavikulaguru Kalidas Sanskrit Vishvavidyalaya, (Ramtek)

जा.क्र.११४३३ 25 OCT 2004

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य - ५१०० वां जयन्ती महोत्सव के पावन उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म संमेलन

परमश्रद्धेयानां परमाचार्याणां श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याणां 5100 तमं जयन्ति–महोत्सवमनुलक्ष्य अखिल–भारतीय–विराट्–सनातन–धर्म–संमेलनं भवद्द्वारा आयोजयिष्यमाणमस्तीति विदित्वा नितरां मोमुद्यते मे मानसम्। भगवतां निम्बार्काचार्याणां पवित्रसंदेशं संस्मारयन्तीयं सभा स्थाने समायोजितेति धार्मिकाः बहूपकृता भूत्वा प्रमुदिता भवेयुः।

भगवतां निम्बार्काचार्याणां पवित्राशीर्वचोभिः सुगन्धितेयं सभा **'पुण्यस्य कर्मणः दूराद् गन्धो वाति'** इति श्रुतिगदितमनुसरन्ती वितनुयात् सर्वत्र धर्मामोदमिति सामोदमिदमाशास्यते।

सप्रणिपातम्

पंकज चांदे

डॉ. पंकज चांदे

मुख्यालयः - बघेले भवनं, सीतलवाडी, रामटेकम्, ४४११०६ जि.नागपुरम्। दूरध्वनी तथा फॅक्स क्र. (०७११४) २५५५४९
छात्र संपर्क कार्यालयः - महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी, कस्तुरबा भवनं, ज्ञानेश्वर मंदिरसमीपे, बजाज नगरं, नागपुरम्. दूरध्वनी क्र. (०७१२) २२४८०९४ तथा फॅक्स क्र. (०७१२) २५६०९९२
Head Off. - Baghele Bhawan, Sitalwadi, Ramtek 441106 Dist.-Nagpur. Ph.(07114) 256476 & Fax (07114) 255549
Student Contact Off. - Maharashtra Gandhi Smarak Nidhi, Kasturba Bhavan, Near Dnyaneshwar Temple, Bajaj Nagar, Nagpur. Ph. (0712) 2248094 & Fax (0712) 2560992

शुभकामना सन्देश

प्रो. प्रमोद गणेश लाले
(महामहिम राष्ट्रपति सम्मानित मनीषी)
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृल विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आ.प्र.)

6, कमलापार्क सोसायटी,
गणेशनगर, पुणे,
दि. 19.10.04

प्रोफेसर डॉ. प्रभाकर जी शास्त्री,

सस्नेह प्रणाम।

यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की ओर से श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का 5100वाँ जयन्ती महोत्सव आगामी मास में मनाया जा रहा है। मैंने मेरे जीवन का पर्याप्त समय हैदराबाद यानी तेलंगाना में गुजारा है। अतः तेलंगाना में ही जिन्होंने अवतार लिया था, उन महातपस्वी निम्बार्काचार्य के संबन्ध में मेरे मन में नितान्त आदर है। भगवतपुराण के अनुसार इनकी गुरुपरंपरा का सर्वप्रथम उपदेष्टा हंसावतार भगवान् है। उनके वेदान्तपारिजात का सौरभ सब दूर फैल गया है। उनके दशश्लोकी, सिद्धान्तरत्न आदि ग्रन्थ भी विद्न्मान्य हो गये हैं। उन्होंने द्वैत या अद्वैत के एकान्तिक सिद्धान्तों का अवलम्ब न करते हुए, दोनों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए उन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया। हाँ, उन्होंने उसको कृष्णा भक्ति का तीसरा सूत्र मिला दिया। उनके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण ही सर्वव्यापी सर्वशक्तिसंपन्न है। निम्बार्काचार्यजी के अनुसार ब्रह्म या परमेश्वर के अनेक रूप आविष्कृत होते रहते हैं। उस परमेश्वर में जगन्नियन्तृत्व आदि छैः गुण रहते हैं। इतना होने पर भी उन्होंने कृष्णचरणारविन्द को ही शरण्य माना है। वे दश्श्लोकी में कहते हैं।

नान्था गतिः कृष्णपदारविन्दात् सन्दृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितान्।
भवोच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहादचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यं शासनात्॥

वे राधाजी को भगवान् श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति मानते है।

उनके तत्त्वों का एक विशेष है– जीवों के चार प्रकार हैं–नित्यमुक्त, मुक्त, बद्ध और नित्यबद्ध। इन जीवों को ज्ञानयोग या अभियोग से अन्तिम मुक्ति मिलती है, जो चार प्रकार की है– सामीप्य, सारूप्य, सालोक्य और सायुज्य।

इस तरह आचार्यजी ने वेदान्त और भक्ति का सुन्दर समन्वय घटित करके, मोक्ष के चार प्रकार बतलाकर मोक्षस्थिति सबको उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया है।

निम्बार्काचार्यजी ने अपना मार्ग समन्वय से युक्त किया और मोक्ष के पांच मार्ग–कर्म, विद्या, उपासना, प्रपत्ति, गुरुसम्पत्ति जन सामान्य के लिए खोल दिये। इस महान् आचार्य के 5100वें जयन्ती महोत्सव के समय उस महान् वेदान्ती को मेरा कोटि कोटि सादर प्रणाम।

सभी प्रबन्धकों को सविनय प्रणाम। आपके मार्ग–दर्शन में कार्यक्रम सुचारुरूप से संपन्न होना है। मेरी शुभकामनाएँ।

(प्रोफेसर प्र.ग. लाले)
अध्यक्ष, कार्यकारी मंडल,
भांडारकर प्राच्य विद्या संस्था, पुणे-411004

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

Dr. YUGAL KISHOR MISHRA
Professor & Head
Department of Vedic Studies

(0542) 2200136
2204403
Sampurnanand Sanskrit University
7 Professor Colony, Jagatganj
VARANASI - 221 002

सांसारिक जीवों को सन्मार्ग का उपदेश करने के लिये समय–समय पर दिव्य आध्यात्मिक विभूतियां धरा–धाम पर अवतरित होती हैं। ऐसी महान् विभूतियों में अन्यतम श्री निम्बार्काचार्य महाप्रभु हैं। आचार्यप्रवर ने विशिष्ट दार्शनिक प्रस्थान का प्रवर्तन कर मानवों के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार श्री निम्बार्क महाप्रभु ने देवर्षि नारद से मन्त्रोपदेश प्राप्त कर द्वापरान्त में इस वैष्णव–सम्प्रदाय का तथा भक्तिमार्ग का प्रचार–प्रसार किया–यह परम्परा में अनुश्रुति है।

भक्तिमार्ग में नवधा भक्ति के अन्तर्गत नाम–संकीर्तन सबसे सुगम एवं सद्यः फलप्रद है। ऐसा माना जाता है कि सभी को प्रारब्ध का भोग करना ही पडता है, किन्तु श्रीहरिनाम संकीर्तन में प्रारब्ध–नाश करने की अतुल शक्ति है। अतएव सन्तशिरोमणि श्रीतुलसीदासजी ने भगवन्नाम संकीर्तन के विषय में कहा– **'मेटत कठिन कुअंक भाल के।'** भगवान् का नाम, रूप को प्रकट करता है। भगवान् का रूप नाम के अधीन होने से संतों ने भगवन्नाम संकीर्तन को श्रेष्ठ माना है। श्रीनिम्बार्काचार्य महाराज ने अपने अनेक स्रोतों में संकीर्तन भक्ति का वैशिष्ट्य बताते हुए एतदर्थ उपदेश दिया है, जिससे मानवों के त्रिविधतापों का शमन होता है।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के तपोनिष्ठ भक्तिरसप्लुत आचार्य–परम्परा में वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज परमभागवत श्रेष्ठ आचार्य हैं। वे अनुकरणीय चरित एवं दिव्य तेज से मण्डित होने के कारण भक्तजनों की अपार श्रद्धा के केन्द्र हैं। अनेकविध आध्यात्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक प्रकल्पों से महाराजश्री ने भवभय से पीडित मानवों का सत्पथ आलोकित किया है। ऐसे महान् आचार्य का सश्रद्ध नमन करते हुए उनके दीर्घायुष्य की प्रभु से कामना करता हूँ।

युगल किशोर मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष-वेद विभाग
पूर्व-प्रतिकुलपति,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विजयादशमी वि.सं. २०६१
वाराणसी-२२१००२ (उ.प्र.)

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

शुभकामना सन्देश

संस्कृत साहित्य अकादमी (गुजरात राज्य)
SANSKRIT SAHITYA ACADEMY (Gujarat State)

Old Vidhansabha Bhavan, Nr. Town Hall, Sector-17, GANDHINAGAR-382 017. GUJARAT. INDIA.
Tel. No. : (079) 27621610

Dr. GAUTAM PATEL *(Chairman)*

२-१०-०४

Dr. VASANT PARIKH *(Vice-Chairman)*
KANAIYALAL M. PANDYA *(Registrar)*

परम आदरणीय डॉ. प्रभाकरजी,

सादर नमस्कार।

परम पूज्य निम्बार्काचार्य जी के अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये आप का पत्र मिला। मैं समझता हूँ कि ऐसे जगद्गुरु के लिये कुछ भी लिखने में मैं असमर्थ हूँ। हमारी भारतीय परम्परा ही है, जो गुरु की गद्दी पर आता है या गुरु की पीठ को अलंकृत करता है, वह स्वयं गुरुस्वरूप ही बन जाता है। हमारे विद्यमान निम्बार्काचार्य इस परम्परा के अनुसार आद्य जगद्गुरु अनन्तश्रीविभूषित श्री निम्बार्काचार्यजी का ही स्वरूप हैं। उनके पवित्र चरणकमलों में कोटि–कोटि वन्दन।

आप जब राजस्थान संस्कृत अकादमी में स्थानापन्न थे, तब आपके कृपाकटाक्ष से ही मुझे अनन्तश्रीविभूषित निम्बार्कपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्रीश्रीजी महाराज के विशिष्ट विद्वत्सम्मान के अवसर पर उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपश्री के प्रथम दर्शन से ही मैं उनके श्रीचरणों का बरबस दास बन गया हूँ। हठेन वयं दासीकृता तेषां कृपाकांक्षेण।

आप श्री केवल नामके ही नहीं किन्तु असंख्येय मंगलमय गुणों से विभूषित हैं। सच्चे अर्थ में अनन्त श्रीविभूषित हैं। ज्ञान,विद्या,विनय,विवेक,करुणा,मुदिता,मैत्री,सद्भाव,समानता,सौम्यता,सर्वेश्वरता इत्यादि अनेक गुणों से विभूषित हैं। आपश्री की केवल कृपामय मूर्ति के दर्शनमात्र से मेरे जैसे हजारों आनन्द विभोर हो जाते हैं। मैं आपश्री के शताधिक आयु की संप्राप्ति हेतु परमकृपालु परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ और सद्गुरु से निवेदन करता हूँ कि जब आपश्री की शताब्दी का आयोजन हो, उस समय तक हम जीवित, स्वस्थ रहकर उसमें सम्मिलित हो सकें ऐसे आशीर्वाद प्रदान करें।

श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में उपस्थित रहने की इच्छा है, लेकिन ता. 24.11.04 तक मैं मण्डी,हिमाचल प्रदेश में व्यस्त हूँ। मैं सम्मेलन की सफलता की शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

कृपाकांक्षी

(गौतम पटेल)

शुभकामना सन्देश

प्रो० चन्द्रकान्त शुक्ल
एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) साहित्याचार्य, विद्यावारिधि, डी. लिट्.
पूर्व प्रतिकुलपति एवं कुलपति
कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय
दरभङ्गा (बिहार)
~~दूरभाष-06272-22138 (कार्या०), 22522 (आवास)~~

Prof. C. K. Shukla
M.A. (Sans. Hindi), Sahityacharya, Vidyavaridhi, D.Litt.,
Ex Pro. Vice-Chancellor & Vice-Chancellor
K.S.D. Sanskrit University, Darbhanga (Bihar)
~~Ph. No. - 06272 - 22138 (off.), 22522 (Res.)~~
16, प्रियदर्शी अपार्टमेन्ट, करमटोली, मोराबादी
राँची-834008, फोन-0651-2541608

Ref............................ Date 29. 10. 2004

परम सम्मान्य प्रो. प्रभाकर शास्त्री जी,

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि भेदाभेदवादी सिद्धान्त के पोषक 'द्वैताद्वैतवादी सम्प्रदाय' के संस्थापक आद्य निम्बार्काचार्य के जयन्ती-महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। इस पुनीत अवसर पर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कर कमलों में अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पण की योजना अभिनन्दनीय है।

श्रीचरणों में मेरा प्रणाम निवेदित करते हुए प्रस्तावित कार्यक्रमों की सफलता के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाऐं स्वीकार करें।

सादर,

भवदीय,

चन्द्रकान्त शुक्ल
29.10.04

प्रोफेसर (संस्कृत), राँची विश्वविद्यालय, राँची
पूर्व प्रतिकुलपति एवं कुलपति
कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय

सिन्धिया प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान

मध्यप्रदेश राज्य के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, संस्कृति प्रभाग
पर्यटन तथा संस्कृति मन्त्रालय, भारत शासन, नई दिल्ली का
पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन - 456010
दूरभाष : 0734-2515400, फैक्स : 0734-2514276

डॉ. बालकृष्ण शर्मा
निदेशक, सिन्धिया प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान
परियोजना समन्वयक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

सनातन वेदमार्ग के संरक्षणार्थ धरा–धाम पर अवतीर्ण सुदर्शनावतार भगवन्निम्बार्काचार्य द्वैताद्वैत वेदान्त दर्शन के प्रतिष्ठापक आचार्य–शिरोमणि हैं, धर्मचक्र के प्रवर्तक श्री निम्बार्क ने भारतभूमि के जिन क्षेत्रों को अपना पावन स्पर्श प्रदान किया, वे सनातन धर्मावलम्बियों के लिए तीर्थ हैं–**'यदध्यासितमर्हद्भिस्तद्धि तीर्थं प्रचक्षते।'**

निम्बार्कतीर्थ, पुष्करक्षेत्र में भगवान् निम्बार्काचार्य के 5100वें जयन्ती महोत्सव के पुनीत अवसर पर जगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के सान्निध्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन तथा अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन सर्वात्मना अभिनन्दनीय है। इस शिवसङ्कल्पात्मक अनुष्ठान की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. बालकृष्ण शर्मा)
निदेशक

शुभकामना सन्देश

अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज, जिनमें स्वभावतः ही समस्त दोषों का अभाव है तथा जो समस्त कल्याणकारी गुणों के एक मात्र भण्डार हैं, जो सर्वश्रेष्ठ परमब्रह्म स्वरूप हैं, आपके दर्शन मात्र से प्राणी का कल्याण हो जाता है, इस कलियुग में आपने जो, जो कार्य किये हैं, यह सब निम्बार्क सम्प्रदाय के अत्यन्त उत्थान के लिये किये हैं। आपने सम्प्रदाय के प्रवर्तक आद्याचार्य श्री सुदर्शन चक्रावतार श्री अरुण ऋषि के सुपुत्र भगवान् निम्बार्काचार्य के मूल आविर्भाव स्थल का जीर्णोद्धार करवाया। 'भव्यभवन' का निर्माण करके सर्वभक्तों का उपकार किया। आपने ऐसे कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं जो ईश्वर अंश के बिना होना बहुत ही असम्भव था।

ऐसे महान् आत्मा को हमने गुरु रूप से जाना, इनकी कृपा से हम सब तरह से सुखी, समृद्धिशाली बने एवं सनातन धर्म के अनुयायी भी इन ही की कृपा से बने हैं। आत्मा में आपका चिन्तन सर्वदा बना रहे, ऐसी हम पर कृपा करते रहें, ऐसी जगन्नियन्ता सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना है।

भगवान् निम्बार्काचार्य के 5100वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर आयोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन एवं प्रकाश्यमान अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए अपनी शुभकामना प्रेषित कर रहा हूँ।

वैद्य जगदीश शरण शर्मा
श्री श्याम औषधालय,
खाटूश्यामजी, जिला सीकर राज.।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान
जयपुर रोड
अजमेर 305001 (राज.)

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
अध्यक्ष

दूरभाष : 0145-2422597 (कार्या.)
दूरभाष : 0145-2425602, 2422876 (नि.)
फैक्स : 0145-2627394
ग्राम : राजसैकबोर्ड
ई-मेल : cm_bser@rediffmail.com
दिनांक. 11-11-2004.

आदरणीय प्रभाकर जी शास्त्री,

आपका दिनांक १५-१०-२००४ का पत्र यथा समय मिला। इससे पूर्व आपका कोई पत्र नहीं मिला था। आपने अवगत कराया कि दिनांक २० नवम्बर से २६ नवम्बर तक सलेमाबाद, किशनगढ़ में निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु श्री भगवान् निम्बार्काचार्य के ५१००वें जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भी भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस शुभावसर पर राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे निम्बार्कपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करेंगी। यह अभिनंदन ग्रन्थ समाज के नैतिक पतन को रोकने में सहायक बने एवं न केवल निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायियों को वरन् सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन प्रदान करे यह कामना करता हूँ।

आयोजन की सफलता के लिये मंगलमय हार्दिक शुभकामनायें।

भवन्निष्ठ

(डा० विमल प्रसाद अग्रवाल)

डॉ. प्रभाकर शास्त्री
प्रधान सम्पादक, अभिनन्दन ग्रन्थ,
२५४-शास्त्री सदन, खूंटेटा मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)

Mahamahopadhyaya Vidyavachaspati Vidyamartanda
Prof. Dr. Satya Vrat Shastri

Recepient of Padma Shri & President of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res.: C-248, Defence Colony,
New Delhi - 110 024
E-mail : ssarin@del3.net.in
Website : satyavrat-shastri.net
Ph.: 24336644, 24336631

5. 10. 2004.

आदरणीय डा. साहब,

सस्नेह प्रणाम।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीश्रीजी महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज के पावन हीरक जयन्ती वर्ष तथा श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् के 5100वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। जगद्गुरु न केवल वैष्णव सम्प्रदाय के ही, अपितु समस्त आध्यात्मिक जगत् के महान् नेता हैं। आज जबकि संसार अनेक उलझनों में फंसा है, उनके सदुपदेश की बहुत आवश्यकता है। प्रभु से प्रार्थना है कि जगद्गुरु दीर्घायु हों, उनका वरदहस्त हम सब पर अनेकानेक वर्षों तक बना रहे।

शुभकामनाओं सहित–

सत्यव्रत शास्त्री

शुभकामना सन्देश

॥ रामो विजयतेतराम् ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाय नमः ॥

ॐ श्री भगवदाचार्य आश्रम रामधाम ॐ

श्री कर्मवीर महामण्डलेश्वर स्वामी रामकुमारदासजी (खाकीबापु)

महन्त केशवदासजी रा. (खाकी) ता. १२-६-०४

सैजपुर बोधा, नरोडा रोड, अहमदाबाद-३८२ ३४५

अनन्तश्रीविभूषित पूज्यपाद श्री आचार्य चरणों में दास का सादर साष्टांग दंडवत।

श्रीचरणों की ओर से भगवान् श्री निम्बार्काचार्य जी महाराज का जयन्ती महोत्सव मना रहे हैं तथा उस परम पावन महोत्सव के अन्तर्गत अनेक दिव्य कार्य हो रहे हैं।

पूज्यपाद आचार्य चरण इस दास पर अहर्निश कृपा बनाए हैं। यह प्रभु श्री सीताराम जी तथा सद्गुरुदेव की कृपा का ही फल है। अगर शरीर स्वस्थ रहा, तो दर्शन करने का विचार है।

चरणाश्रित

महन्त

रामकुमारदास कयाली

☎ 2670233

卐 तेजस्वि नाऽवधीतमस्तु 卐

महामहिम राष्ट्रपति सम्मानित
महामहोपाध्याय पं. गङ्गाधर द्विवेदी
अध्यक्ष
प्राच्य शोध संस्थान

33, सरस्वती पीठ,
सीताराम बाजार, ब्रह्मपुरी
जयपुर 302002
(राजस्थान)

दिनाङ्क......२५-१०-२००४

शुभाभिशंसनम्

पूज्यपाद भगवन्निम्बार्काचार्य जी के अवतार को शतोत्तर पञ्च सहस्राब्द सम्पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनकी जयन्त्युत्सव का विशाल आयोजन वर्तमान निम्बार्कपीठाधीश्वर जगद्गुरू श्री श्रीजी महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी के सान्निध्य में दिनांक २० नवम्बर से २७ नवम्बर २००४ को सलेमाबाद, निम्बार्कातीर्थ में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशाल सनातन धर्म सम्मेलन का भी आयोजन सुनिश्चित है। इस शुभ अवसर पर भारत के विभिन्न प्रान्तों के सनातन धर्मानुयायी विद्वानों, सन्तों, श्रीमहन्तों, वैष्णवाचार्यों, मण्डलेश्वरों व महामण्डलेश्वरों के साथ सम्प्रदायाचार्यों के सम्मिलित होने से एक क्रान्तिकारी एवं अपूर्व आयोजन का रूप ग्रहण करेगा।

राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा 'अतिविशिष्ट विद्वत्सम्मान' से सभाजित, विद्वद्वरेण्य, निम्बार्कपीठाधिपति, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री श्रीजी श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निर्णय भी निश्चित ही श्लाघनीय एवं स्तुत्य प्रयास है। तदर्थ मेरी हार्दिक शुभकामनायें सादर स्वीकार कीजिये।

(गङ्गाधर द्विवेदी)

M. D. RATHI
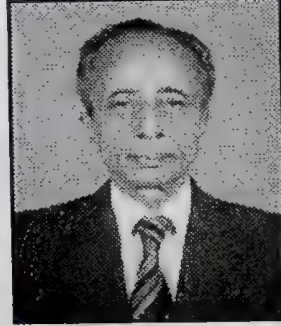
TEL. : 253121, 258341
FAX : 01462-251178
MOB.: 98290-68311

RATHI MANSIONS,
BEAWAR-305 901 (RAJ.)
INDIA

01.11.04

श्री दयाशंकरजी शास्त्री,
मन्त्री
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ
सलेमाबाद, किशनगढ।

जय श्रीकृष्ण।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि अ.भा.श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद में श्री निम्बार्काचार्य भगवान् का इक्यावनसौ वां जयन्ती महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है। इससे भी अधिक हर्ष का विषय यह है कि ऐसे शुभ एवं ऐतिहासिक अवसर पर अ.भा. निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कर्-कमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किए जाने की योजना है।

श्री श्रीजी महाराज द्वारा लिखित ग्रन्थों तथा धार्मिक व पारमार्थिक संस्थाओं के संचालन से भारतीय राष्ट्र का जो उपकार हुआ है, वह चिर-स्मरणीय है। अतः ऐसे श्री श्रीजी महाराज के समर्पित जीवन को भला कौन अभिनन्दन ग्रन्थ अपने कलेवर में समेट सकता है। फिर भी श्री श्रीजी महाराज के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का सन्देश इस ग्रन्थ द्वारा जन-जन तक पहुंचेगा, यह हर्ष का विषय है। उक्त कार्यक्रम की सफलता के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

आपका

(मुकुन्द दास राठी)
अध्यक्ष, सनातन धर्म सभा, ब्यावर

BHAGWAN MAHAVEER CANCER HOSPITAL & RESEARCH CENTRE
(MANAGED BY : K.G. KOTHARI MEMORIAL TRUST)
Jawahar Lal Nehru Marg, Jaipur - 302017
Phone : 91-141-5113104, 2700107, 2702120, 2702899 Fax : 91-141-2702021
e-mail : cancer@datainfosys.net, bmchrc@hotmail.com

Dr. Rameshwar Sharma
Director
M.D.,MPH (Harv.), F.A.M.S., F.I.P.H.A., F.N.I.E.
Emeritus Professor, Dept. of Preventive
and Social Medicine, SMS Medical College, Jaipur
Former Principal, S.M.S. Medical College, Jaipur
Former Vice-Chancellor, University of Rajasthan
Founder Director, I.I.H.M.R., Jaipur

Residence :
B-32, Vijay Path,
Tilak Nagar,
JAIPUR-302 004
Phones : 2620848, 260033

भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए सत्य ही कहा था–

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥''

द्वापर युग के अन्त में भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोकधाम(बैकुण्ठधाम) प्रस्थान करने के बाद कलियुग का प्रारंभ हुआ और आसुरी वृत्तियों ने अपना प्रभाव व्यापक किया। परिणामतः भगवान् कृष्ण को अपने तेजस्वी आयुध श्रीसुदर्शनचक्र को मानवरूप में प्रकट होकर इस भारतभूमि पर धर्मसंस्थापन का आदेश दिया और वे ही सुदर्शन चक्रावतार द्वापर युगान्त में श्री नियमानन्द भगवान् निम्बाकाचार्य के रूप में अवतरित हुए, जिनका यह 5100वाँ जयन्ती वर्ष है।

आद्य-निम्बार्काचार्यश्री की सुदीर्घ परम्परा में वर्तमान 48वें निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी महाराज **श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी** को उन्हीं आद्याचार्य का साक्षात् अवतार माना जाता है, जिनके हीरक जयन्ती वर्ष तक के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। विद्वद्वरेण्य, करुणावरुणालय, प्रतिभावान्, सुदर्शनस्वरूप साक्षात् भगवान् के वरदपुत्र श्री श्रीजी महाराज के योगदान को लोकार्पित करने की दृष्टि से उन्हें इस समायोजित विराट् सनातन धर्म हिन्दू सम्मेलन में एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निर्णय वस्तुतः महत्त्वपूर्ण एवं स्तुत्य प्रयास है। मैं उनके नीरोग सुस्वास्थमय दीर्घजीवन की कामना करते हुए भगवान् सर्वेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह साप्ताहिक आयोजन पूर्ण सफल हो तथा अपने लक्ष्यसिद्धि के द्वारा धर्म के विषय में भ्रमित भारतवासियों को सही मार्गदर्शन कर सके।

शुभकामनाओं सहित,

शुभेच्छु

(डा. रामेश्वर शर्मा)
निदेशक

शुभकामना सन्देश
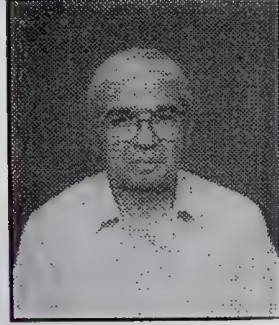
डॉ. जी.एस. झाला,
सर्जन

आनासागर सरक्यूलर रोड,
अजमेर।

सेवा में,

आदरणीय प्रो. डॉ. प्रभाकरजी शास्त्री

आपका कृपा पत्र दिनांक 10.10..4 का प्राप्त हुआ।

धन्यवाद।

आप आद्य निम्बार्काचार्य के इक्यावनसौ वें जयन्ती समारोह में श्रीजी महाराज को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने जा रहे हैं। यह प्रयास आपका प्रशंसनीय है। ईश्वर आपको पूर्ण सफलता प्रदान करें। श्रीजी महाराज का व्यक्तित्व बहुमुखी है। वे सरल और निर्मल संत हैं। स्वयं अमानि और सबको खूब मान प्रदान करते हैं। वे धर्म के मर्मज्ञ, भागवत पुराण के विशिष्ट ज्ञाता, अनेक संस्कृत ग्रन्थों के निर्माता और गौ माता के रक्षक हैं। आपके कार्यकाल में आपने निम्बार्क सम्प्रदाय में चार चांद लगा दिये, जगह जगह भगवान् निम्बार्काचार्य और युगल सरकार(राधाकृष्ण) के मंदिर बनवाये। निम्बार्क साहित्य का शोधन किया और खूब प्रचार किया। विशेषकर निम्बार्काचार्य और महाराज परशुरामाचार्य का, आप निरन्तर भक्ति और ज्ञान की गंगा बहा रहे हैं। ऐसे महान् व्यक्तित्व का अभिनन्दन करना हमारा सबका परम सौभाग्य है।

भवदीय,

डॉ. गुणवन्त सिंह झाला
अजमेर।

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते || || श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

M. K. Singhi
B. Sc., LL.B., F.C.A.
EXECUTIVE DIRECTOR

दिनांक 13.10.2004

सम्माननीय महोदय,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि दिनांक 20.11.2004 से 26.11.2004 तक सलेमाबाद में सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्यपीठ इक्यावन सौं वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में अखिल भारतीय विराट् धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया है। साथ ही अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ भी समर्पित किया जायेगा।

आध्यात्मिक जगत् की महान् विभूति जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का कृतित्व एवं व्यक्तित्व प्राणीमात्र के लिए आदर्श स्वरूप प्रेरणा स्त्रोत है।

इस प्रकार के धार्मिक समारोह आज के भौतिक युग में धार्मिक जागरूकता का सूत्रपात करते हैं।

इस शुभ अवसर पर परमपिता परमेश्वर से श्री श्रीजी महाराज के दीर्घायु होने की कामना करते हुए समारोह की सफलता के लिए श्री परिवार की ओर से एवं व्यक्तिगत रूप से अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूँ।

कृपया स्वीकार कर अनुगृहित करें।

आपका शुभेच्छु,

(एम. के. सिंघी)

श्री दयाशंकर जी शास्त्री
मन्त्री
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
श्रीनिम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद)
जिला अजमेर (राजस्थान)

SHREE CEMENT LIMITED
Bangur Nagar, Beawar - 305 901, Rajasthan, India
Phone : 01462 228101-8 EPABX (O&R) • Fax : 01462 228117 / 228118 / 228119
E-mail : singhimk@shreecementltd.com • shreebwr@datainfosys.net

Ambuja Cement

9 अक्टूबर,2004

श्रद्धेय शास्त्री जी,

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ–सलेमाबाद में दिनांक 20.11.04 से 26.11.04 तक सप्त दिवसीय आद्य निम्बार्काचार्य 5100 वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। मैं इस समारोह के सफलतापूर्वक संपन्न होने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

इस पावन पर्व की महता एवं विशेषता का सीमित शब्दों में वर्णन करना असंभव सा प्रतीत होता है।

आप सभी को इस पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।

भवदीय

(विजय प्रकाश शर्मा)

श्री दयाशंकर जी शास्त्री
मन्त्री
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ,
श्री निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) पुष्कर क्षेत्र
किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)

GUJARAT AMBUJA CEMENTS LTD.
Unit - Rabriyawas
P.O. Rabriyawas, Tehsil Jaitaran, Distt. Pali, Rajasthan - 306 709
Phone : 02939-288011-18, 011-23717879, Mobile 98281-28011, 12 Fax : 02939-288030
(Regd. Off. P.O. Ambuja Nagar, Taluka Kodinar Distt Junagarh, Gujarat - 362 715)

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥
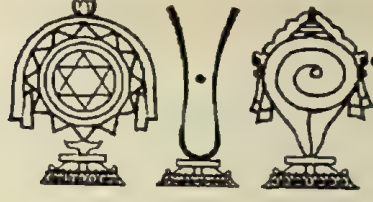
इतिहास, जीवन-दर्शन
एवं
हार्दिक भावोद्गार

द्वितीय - व्यक्तित्व खण्ड

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य इतिहास, जीवन दर्शन एवं हार्दिक भावोद्गार

❋ सूचनिका ❋

* * *

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपाद-पीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज का

जन्मकुल व बाल्यकाल

— 'निम्बार्क भूषण' पं. रामस्वरूप गौड

आचार्य प्रवर श्री श्री भट्टजी ने कहा है —

''धनि-धनि मात पिता सुत बन्धु, धनि जननि जिन गोद खिलायो।''

परम भागवत वैष्णव के माता-पिता व बन्धु बान्धव आदि कुलजन धन्य हैं।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या।
स्वर्गे स्थितास्तत्पितरोऽपि धन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम्॥

परम भागवत के जन्म से कुल पवित्र, माता-पिता कृतार्थ और धरा निवासी धन्य हो जाते हैं, क्योंकि एक परम भागवत भक्त के सुकृत व सत्प्रेरणा से सह प्रवृत्तियाँ प्रवृत्त और फलीभूत होती हैं। जिससे जीव जगत् का चतुर्विध सौभाग्य समृद्ध होता है। हमारे परमपूज्य परम भागवत श्री श्रीजी महाराज के जन्म से इनका पवित्र कुल व माता-पिता तो कृतार्थ हुए हैं, जीव-जगत् को भी आपकी सत्-प्रेरणा व आशीर्वाद से परम सुख और सन्मार्ग की प्राप्ति हो रही है। विप्रवंशावतंस आदि गौड़ परिवार में आपका जन्म हुआ है।

श्रीरामनाथ व श्रीमती सोनी बाई के दो पुत्र संतान दीर्घायु रहीं– श्री घासीलालजी व श्री रतनलालजी। श्री रतनलालजी ही विरक्त वैष्णव होकर जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री **''श्रीजी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज** हैं। श्री घासीलालजी के दो पुत्र सन्तान हैं श्री बालमुकुन्द व श्री बालकृष्ण। श्री बालमुकुन्दजी के दो संतान हैं, श्री सुदर्शन व श्री श्रीकान्त। श्री बालकृष्णजी के एक पुत्र है श्री हरीश।

पूज्य श्री श्रीजी महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी के **पिता श्री पं. रामनाथजी शर्मा गौड़** का जन्म पूरण की नांगल तहसील चाकसू में विक्रम सं. 1940 को हुआ। आपके पिताश्री का नाम **पं. गंगाधर जी** व माता श्रीमती गणेशी देवी थीं।

परम्परा से परिवार में पूर्ण वैष्णव निष्ठा और सुसंस्कार विद्यमान था। आज से कोई एक सौ बीस-इक्कीस वर्ष पूर्व जब पं. श्री रामनाथजी का जन्म हुआ था, तब देश अंग्रेजों के अधीन था। भारतीयों का जीवन समृद्ध नहीं था। सामाजिक जीवन व राष्ट्रीय परिवेश में साधनों का अभाव था। परतंत्रता में भारत के आम जन सादगीपूर्ण स्वावलम्बी व स्वाभिमान से जीवन जीते हुए अपनी धर्मनिष्ठा व भक्तिभाव पर आँच नहीं आने देते थे। उसी समय स्वतंत्रता का आन्दोलन भी चल रहा था। एक तरफ पराधीन भारत में शासकों द्वारा देश-धर्म और भक्तिभाव की संस्कृति कुचली जा रही थी। दूसरी तरफ

देश धर्म के स्वाधीनता प्रेमी प्रबुद्धजन स्वतंत्रता आन्दोलन की ओर अग्रसर थे और देश के आम आस्थावान् अपनी सादगीपूर्ण संस्कारशील जीवनचर्या और स्वाभिमान द्वारा देश धर्म की संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए उसे समृद्ध कर रहे थे। ऐसे ही समय में पं. रामनाथजी गौड़ का जन्म व जीवन प्रारम्भ हुआ।

पं. रामनाथजी बाल्यकाल से ही सत्संग प्रेमी थे। कथा-कीर्तन, भजन-पूजन, प्रभु स्मरण आदि में आपकी सहज अभिरुचि रहती थी। आपने उपनयन संस्कार के अनन्तर दैनिक संध्योपसना, गायत्री व श्री गोपाल मन्त्रराज के जप नियमित प्रारम्भ कर दिये थे, जो आजीवन अनवरत चलते रहे। यद्यपि आपका अध्ययन सामान्य ही रहा, किन्तु आपमें विद्या-बुद्धि के समस्त सद्‌गुण विद्यमान थे। पं. रामनाथजी के स्वभाव में सारल्य, नम्रता, सादगी, शान्ति व एकान्त प्रियता थी। आपमें सहृदयता और परदुःखकातरता विशेष रूप से विद्यमान थी। उपर्युक्त सद्‌गुणों के कारण आप लोकप्रिय भी थे। ग्रामवासी, सम्बन्धी व बन्धु-बान्धव आपको 'पण्डितजी' कहकर पुकारते थे।

विक्रम सम्वत् 1960 में पं. श्रीनादानजी गौड़ की सुपुत्री सोनी बाई (स्वर्णलताजी) के साथ आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ। आपका गृहस्थ जीवन सादगी, सौहार्द व सदाचार से व्यतीत हुआ। आपकी संतति में प्रथम राजू बाई, रामाबाई, पुक्खी बाई, व्रजकिशोर, गुलाब, भाई श्री घासीलालजी तथा श्री रतनलाल जी गौड़, कुल सात संतानें हुईं। इनमें राजूबाई, पुक्खी बाई व व्रजकिशोर का अल्प आयु में ही निधन हो गया। रामा बाई का अट्ठाईस वर्ष के बाद निधन हो गया। शेष तीन संतान रहीं, जिनमें दो पुत्र हैं। पुत्रों में से आपने एक को आदर्श त्याग प्रस्तुत करते हुए विरक्त दीक्षा की अनुमति प्रदान कर दी थी।

इनका परिवार सलेमाबाद में रहते हुए निम्बार्काचार्यपीठ के आजीवन सम्पर्क में रहा। आपने वि.सं. 1983 से 1995 तक निरन्तर श्रीवृन्दावन निवास किया। जहाँ 'श्री श्रीजी की बड़ी कुञ्ज' सहित जगद्-गुरु श्री श्रीजी महाराज द्वारा संचालित सभी कुञ्जों के व्यवस्था का कार्य बड़ी दक्षता से किया। इन बारह वर्षों में अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए भक्ति-भाव का निरन्तर अभ्युदय होता रहा। वृन्दावन में रहते हुए यमुना स्नान का दैनिक नियम तथा एकादशी, पूर्णिमा आदि विशिष्ट पर्वों पर श्री वृन्दावन परिक्रमा के नियम का आप निर्वाह करते थे।

एक दिन आप ग्रीष्मकाल, वैशाख मास में श्री वृन्दावन की परिक्रमा करते समय श्री श्रीजी के बगीचे में बाबा श्री गोपालदासजी मुखिया के पास पधारे। रात्री का समय था। उस समय आपको बगीचे की समीपस्थ लताओं से बंशी की सुमधुर ध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। बंशी की वह मधुर ध्वनि जिधर से आ रही थी, उधर ही आप वंशीवादक को खोजने के लिए उत्कण्ठा पूर्वक गये, किन्तु कोई दिखाई नहीं दिया। अनेक बार खोजने का प्रयत्न किया। बंशी का मधुर स्वर तो सुनाई पड़ता, किन्तु बंशी बजाने वाला नहीं दिखा। आपके आनन्द व उल्लास का ठिकाना नहीं रहा। आप भाव विभोर होकर प्रभुयश गाने लगे। इस तरह की अनेक अनुभूतियाँ समुपलब्ध हुईं, किन्तु आपने सहज-सारल्य-शान्त और गम्भीर स्वभाव के कारण उन्हें प्रचारित नहीं किया। इन्हीं पं. श्री रामनाथजी के सुपुत्र श्री रतनलालजी हमारे पूज्य

श्री श्रीजी महाराज हैं। पं. रामनाथ जी अपने जीवन को सन्मार्ग में प्रवृत्त करते हुए परम धाम के लिए आश्विन कृष्णा तृतीया, सम्वत् 2004 को पधार गये।

परम पवित्र कुल में समुत्पन्न पूज्या माताजी श्रीमती सोनी बाई का जीवन पति श्री रामनाथजी की तरह ही परम शुद्ध व भक्तिमय था। आपका दाम्पत्य जीवन सात्विक, सदाचार और भगवद् भावनिष्ठा के साथ प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्ग की उज्ज्वल मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए व्यतीत हुआ। आपने अपने जीवनकाल में परिवार को संस्कारशीलता प्रदान करते हुए उत्तरदायी कर्तव्य-परायणता का निर्वाह किया। माताजी ने तीन धाम, सप्तपुरी, बद्री, केदार व ब्रज आदि की तीर्थ यात्रायें अनेक बार सम्पन्न की। भागवत कथा व रासलीला के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आपने स्वयं भी भागवत कथा व रास लीला आदि करवाईं व श्री तुलसीजी का विवाह महोत्सव भव्य समारोह के साथ करवाया।

माताजी प्रतिदिन श्री राधामाधव के चित्रपट की सेवा करती थीं और समस्त उत्सव महोत्सव आदि का समारोह किया करती थीं। सदा प्रभु स्मरण करते हुए हाथ में माला निरन्तर रखती थीं। असह्य शारीरिक कष्ट के समय भी श्री माताजी के भगवत् चिन्तन में शिथिलता नहीं आई। माताजी ने अन्तिम क्षण तक अतीव सचेष्ट रहकर श्री सर्वेश्वर प्रभु का स्मरण चिन्तन किया। फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी, सोमवार दिनांक 7.2.77 को प्रातःकाल उन्हें दो दिव्य पुरुषों के दर्शन हुए। विशुद्ध-हृदया माताश्री ने आचार्यश्री का स्मरण किया। आचार्यश्री मातृभाव से सम्प्लावित होकर अन्तिम दर्शनार्थ घर पर माताजी के पास पधारे। अपनी सम्पूर्ण सुभग जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए निर्मल-हृदया माताजी हँसती-बोलती हुई, लगभग नब्बे वर्ष की अवस्था में गोलोक धाम को पधार गईं।

जन्म व बाल्यकाल —

पूज्य श्री श्रीजी महाराज **श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी** महाराज का आविर्भाव गौड़ ब्राह्मण कुल में पं. श्री रामनाथजी गौड़ के यहाँ विक्रम सम्वत् 1986 वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, शुक्रवार कृत्तिका नक्षत्र, तदनुसार दिनांक 10 मई 1929 ई. को निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद, किशनगढ़ राजस्थान में प्रातः 5 बजकर 54 मिनट पर हुआ। आपका जन्म कुल परिवार परम्परागत निम्बार्क सम्प्रदाय का अनुयायी रहा है। आपके बाल्यकाल का नाम **श्रीरतनलाल** रहा है तथा कृत्तिका नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्म होने से व्यासजी ने नाम **उत्तम चन्द** भी रखा था। शिशु रतनलाल गौर वर्ण व दीप्तिवान् थे व जमीन पर ही सोने-खेलने से प्रसन्न रहते थे। भाई-बहन, बन्धु-बान्धवों को अतीव प्रिय थे। महाराजश्री के जन्म से पूर्व की एक घटना संस्मरणीय है। एक सन्त घर पर भिक्षा मांगने आये, माताजी ने उन्हें भिक्षा प्रदान की। भिक्षा ग्रहण करके महात्मा ने माताजी को आशीर्वाद दिया। भद्रे! तुम्हारे एक पुत्र होगा। वह विरक्त एवं जगद्गुरु पद पर प्रतिष्ठित होगा। माताजी ने जब अपनी माताजी को यह बात घर में अन्दर जाकर सुनाई, तब वे दोनों उन सन्त को देखने बाहर आईं, किन्तु उन महात्मा के फिर दर्शन नहीं हो पाये, वे महात्मा अदृश्य हो गये। सम्भवतः वे स्वामीजी महाराज थे।

पं. श्री रामनाथजी शर्मा की पारिवारिक स्थिति गरिमामय तथा सादगी पूर्ण थी। श्री रतनलालजी

के जन्मोपरान्त एक दिन की बात है — पं. रामनाथजी के घर जटाधारी महात्मा भिक्षावृत्ति को आये। महात्माजी को भिक्षा देने के लिए माताजी द्वार पर आई। शिशु रतनलाल गोद में थे, माताजी की गोद में प्रसन्नमुख प्रभावान् बालक को देखकर महात्मा ने प्रमुदित होते हुए कहा– माता! तुम्हारा यह पुत्र तेजस्वी है। आगे चलकर यह उत्तमपद को प्राप्त करेगा। शुभाशीर्वचन सुनकर माताश्री प्रसन्न हुईं। थोड़ी देर बार माताजी के मन में यह स्फुरणा हुई कि यह परम तेजस्वी महान् वैष्णव सन्त श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति स्वामी श्री परशुरामदेवाचार्यजी महाराज ही ने इस रूप में अनुपम कृपा की है। **श्री परशुराम देवाचार्यजी** अपनी अमोघ कृपा श्रद्धालुओं पर आज भी करते रहते हैं।

शिशु रतनलाल घुटरन चलते हुए तुतलाती बोली में बोलने लगे। पैरों पर खड़े होने के साथ माता-पिता की भगवत् सेवा-संकीर्तन आदि को बड़े मनोयोग से देखने-सुनने लगे। माता-पिताजी के साथ श्री निम्बार्काचार्यपीठ, राधा-माधव मन्दिर के जगमोहन से प्रभु श्रीविग्रह को निहारते और माताश्री की गोद में परिक्रमा के समय कुछ हरिनाम भी गुनगुनाते रहते।

इस तरह बालकपन से ही श्री रतनलालजी में भक्ति-भाव के वैष्णवी संस्कार मन पर प्रभावी रहे। बालकपन से भी आपका लौकिक खेल-खिलौनों में मन न जाकर स्वभावतः ही भक्ति-भाव की प्रवृत्तियों में मन रहता था। तीन-चार वर्ष की अवस्था से ही आप श्री राधा-माधव के मंगला-शृंगार दर्शन एवं सायंकालीन आरती संकीर्तनादि में अतीव लगन से सम्मिलित होने लगे।

भक्तिभाव, सारल्य, सौहार्द व परदुःखकातरता महाराजजी में जन्म से ही विद्यमान हैं। बचपन की बात है– आप श्री राधामाधव के मन्दिर में शृंगार आरती के दर्शनार्थ आये हुए थे और जगमोहन में दर्शन करके बैठे हुए थे। वहीं पर बड़े महाराजश्री के जन्म स्थान के बाबा शिवचन्दजी विद्यमान थे। पुजारी श्री रघुनाथदास जी थे। भगवान् की शृंगार आरती के बाद पूड़ी प्रसाद बाँटा जाता था। पुजारी रघुनाथदासजी पूड़ी प्रसाद बाँटते समय हाथ में घड़ियाल बजाने का डण्डा रखते थे, जिससे प्रसाद बाँटते समय उत्पात करने वाले बालकों को डराते रहते थे। महात्मा शिवचन्दजी वृद्ध थे। श्रीरघुनाथदासजी के भाई के लड़के दुर्गालाल ने उन्हें छेड़ा-चिड़ाया होगा। जिस समय पुजारी रघुनाथदासजी प्रसाद बाँट रहे थे, शिवचन्दजी ने पुजारी जी को कहा– आपका यह बालक छेड़खानी करता है। पुजारी ने पूछा कौन! तब शिवचन्दजी ने कहा, कौन क्या, आपका यह "जाम"। इस शब्द पर पुजारीजी को आवेश आ गया और घडियाल के डण्डे की शिवचन्दजी के मस्तक पर मार दी। उनके सिर में बाल नहीं थे, अतः चोट से खून आ गया। यह सब देखकर बालक श्री रतनलाल के नेत्रों में आँसू आ गये और जोर-जोर से रोने लगे। रोते-रोते ही घर जा रहे थे, तो रास्ते में रुके और एक पत्थर उठाकर अपने ही पैर की अंगुली में जोर से मार ली। खून निकल आया। घरवालों ने रोने का कारण पूछा तो कहा– पैर में लग गई। साथ वाले बालकों ने मन्दिर में हुई घटना व रास्ते में स्वयं द्वारा अपनी ही अंगुली पर पत्थर मारने की बात बताई। इस घटना से जो बाल मन में स्थापित संस्कार मुखरित होते हैं, वे हैं– दुःख कातरता। दूसरे के लगी, उससे कितना और कैसे कष्ट होता है। यह जानना, समझना व बताना। मन्दिर परिसर में व्यंग भाषा व डण्डा प्रहार से

मर्यादा का उल्लंघन और उससे व्यथित होकर रो पड़ना, किन्तु शिकायत न करना, रुदन का कारण स्वयं के लगना आदि सहिष्णुता है।

नित्यप्रति राधा-माधव के दर्शनार्थ आने व संकीर्तन आदि में सम्मिलित होते रहने से बालक रतनलाल पर पुजारीजी का स्नेह हो गया था। बालक रतनलाल भी पुजारीजी द्वारा की जाने वाली बालकृष्ण की सेवा को बड़े अनुराग से देखते थे। अतः लड्डू गोपालजी को लेकर सेवा करने का मनोभाव हो गया। एक दिन शृंगार आरती के दर्शनोपरान्त बालक रतनलाल पुजारीजी से श्री लड्डूगोपाल मांगने लगे और पूरे हठ पर आ गये। पुजारीजी ने श्रीविग्रह के पास रखी सालगराम शिलाओं में से एक उठाकर बालक रतनलाल को दे दी। बालक रतनलाल उन लड्डूगोपालजी को बड़े चाव से अपने घर लाये और अपने घर की पोल के खम्बे की ताक में कपड़े का आसन बिछाकर विराजमान कर दिया और जैसा मन्दिर में देखते थे, वैसे ही नित्य स्नान कराना, वस्त्र पहनाना, भोग लगाना, बालकों को दर्शन कराके प्रसाद बांटना आदि सेवा, प्रवृत्तियाँ, बाल-सुलभता पूर्वक करने लगे। कभी-कभी तो भोग लगाने के लिए राधा-माधव के शृंगार आरती के बाद जो पाँच-छः पूड़ी प्रसाद मिलता, वही लाकर अपने घर के ठाकुरजी को भोग लगाकर बालकों में बांट देते।

वि.सं. 1991 किंवा 1992 में 6 किंवा 7 वर्ष की आयु में आचार्यपीठ के विरक्त सन्त पं. श्रीसूर्यबक्षजी मुखिया के निधन होने पर उनकी शवयात्रा में उन्हें सम्पूर्ण मार्ग में वैकुण्ठी के अग्रभाग में धवलवस्त्र पहने साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए चले थे और आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री घासीलालजी शर्मा गौड तथा श्रीमोहनलाल जी शर्मा गौड, श्री दुर्गाप्रसादजी शर्मा गुर्जर गौड भी उसी रूप में प्रणाम करते हुए चल रहे थे। जिसे देख कर ग्राम के निवासी जन अत्यन्त विस्मित होकर निहार रहे थे।

सात वर्ष की अवस्था में आप श्री (रतनलाल) ज्वरग्रस्त हो गये। पिताश्री वृन्दावन थे, माताजी ही थी। वे भी उस समय जल लाने के लिए बाहर गई हुई थी। दिन का समय था, आप चौक में खाट पर लेटे हुए थे, इतने में सामने छत पर एक छोटा सा बंदर आपको दिखाई दिया, वह आपकी ओर आगे हाथ करता हुआ मानव भाषा में कह रहा था "ले लाडू खायेगा-ले लाडू खायेगा" इतने में माताजी आ गई। तब आपने कहा "माँ, देखो यह बन्दर मेरी ओर हाथ करके क्या कह रहा है।" माताजी को कुछ दिखाई नहीं दिया, केवल आप ही उसे देख रहे थे। उसी समय से आपश्री का ज्वरताप दूर हो गया। आपश्री को अन्त में विश्वास हुआ कि यह मर्कट रूप में हनुमत्लालजी के ही दर्शन हुए हैं।

आपश्री पर परमभक्त श्री हनुमत्लालजी की स्नेहमयी कृपा है। यह आपको जीवन में कई बार अनुभव हुआ। ऐसी ही बाल्यावस्था की एक और घटना है– आठ वर्ष की अवस्था होगी। दिवाली का दिन और सायंकाल का समय था। पं. रामनाथजी के घर के बाहर पास में ही हनुमान्जी का स्थान है। (आपश्री) बालक रतनलाल वहाँ पर दीपक जला रहे थे, वहाँ पहले से ही मन्दिर स्थान के चारों ओर दीपक जल रहे थे। एक दीपक की लौ आपके कमीज के पिछले भाग में लग गई और कमीज जलने लगी। आपको पता नहीं लगा, पीछे चतरा बाबा बैठा हुआ देख रहा था, उसने तुरन्त दौड़ कर पीछे से

जलते हुए कमीज को बुझाया। आपने उससे कहा 'हट जा, क्या कर रहा है' तब उसने कहा– देख तेरा पीछे से कमीज जल गया। पीछे से कमीज का बहुत सा हिस्सा जल जाने के बाद भी हनुमान्‌जी महाराज की कृपा थी, जो शरीर पर आँच नहीं आने दी।

युवराज पद पर पदासीन होने व वैष्णवी दीक्षा से पूर्व आपका अध्ययन द्वितीय कक्षा तक हुआ था। पिता श्री रामनाथजी शर्मा गौड़ व पुजारी श्री किशनदासजी के संरक्षकत्व में वृन्दावन धामस्थ पड़रोना वाली कुञ्ज के निकट राजकीय पाठशाला बजाजा में आपश्री का यह द्वितीय कक्षा तक का अध्ययन सम्पन्न हुआ। एक तरह आपको बाल्यावस्था में ही वृंदावन धाम दर्शन व निवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ, शाला के सहपाठियों के साथ वृन्दावन की गलियों में खेलने-कूदने, कुञ्जों में श्रीविग्रह के दर्शन, यमुनाजी में स्नान, यमुना जल पान व वृन्दावन वासियों के संग उठने-बैठने बोलने-बतलाने व रहने-सहने का सुख मिला।

बजाजा स्कूल के अध्ययन काल का ही संस्मरण सुनाते हुए महाराज श्री ने बताया– वहां स्कूल के सामने एक व्यक्ति उबले हुए चने व आलू मसाला मिलाकर, चना मसाला बेचता था। श्री श्रीजी उन्हें खरीदते और खाते। वह बहुत स्वादिष्ट होता था। उसका स्वाद उन्हें आज भी याद है।

वि.सं. 1994-95 में बजाजा स्कूल की दूसरी कक्षा में थे– महाराजश्री बता रहे थे– दश महीने वहाँ वृन्दावन रहने के बाद आषाढ के महिने में पिताश्री के साथ अजमेर आना हुआ, जहाँ सबसे बडी बहिन श्रीरामाबाई के गम्भीर अस्वस्थता पर मिलने के एक दिन पश्चात् परमधाम वास हो गया, जिनकी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुए। उसके दूसरे दिन ही विरक्त बाबा बालाबक्ष जी का तिरोधान हो गया। बाबा के प्रति श्रद्धा से हम उनके संस्कार स्थल तक दण्डवत् करते हुए गये। हमें देख, हमारे साथ अन्य भी तीन चार लड़के बाबा के संस्कार स्थल तक दण्डवत् करते हुए गये। महाराजश्री ने वार्तालाप में ही बताया कि पूज्य पूर्वाचार्य गुरुदेव बड़े महाराजश्री के अन्तिम संस्कार में भी संस्कार स्थल पर दण्डवत् करते हुए गये थे और अपने जीवन में इन दोनों अन्त्येष्टि संस्कारों के अलावा इस जीवन काल में किसी अन्य के अन्त्येष्टि संस्कार में नहीं गये।

वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ला द्वितीया दिनांक 7 जुलाई 1940 को बड़े महाराज अनन्तश्रीविभूषित श्री **'श्रीजी' श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री महाराज** ने आपश्री रतनलालजी को विरक्त की पञ्च संस्कार दीक्षा प्रदान की और श्री **'श्री राधासर्वेश्वरशरणदेव'** नाम संबोधन करते हुए अपने उत्तराधिकारी के रूप में **युवराज** पद पर समासीन किया।

ग्राम-मोखमपुरा, जयपुर (राज.)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग से श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि उत्तमशास्त्रों के सतत अनुशीलन से साधक भक्त श्रीसर्वेश्वर-पराभक्ति एवं दैन्यादि गुण प्राप्त कर लेता है तब सहज ही में श्रीभगवत्कृपा की पात्रता स्वाभाविक है।

पूज्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज के गुरुवर, बड़े महाराज, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी" श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज

— 'निम्बार्क भूषण' पं. दयाशंकर शास्त्री

निम्बार्कदेशिकपथाग्रसरं प्रसिद्धं
निम्बार्कपीठपतिमाप्तमुदारचित्तम्।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं
श्री बालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीड़े॥

गुरुवर्य पूज्य बड़े महाराजश्री का आविर्भाव चैत्र कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार वि.सं. 1917 को जयपुर मण्डलान्तर्गत चाकसू तहसील के पूरण की नांगल ग्राम में हुआ था। परमपावन गौड़-ब्राह्मण वंश में आविर्भूत आपश्री के पिता पं. श्री गोपालजी शर्मा गौड़ और माता श्रीमती ललिता देवी थी। पं. श्रीगोपालजी गौड आचार्य श्री "श्रीजी" श्री घनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य थे। पं. श्री गोपालजी के छोटे भ्राता श्री किशनदासजी ने पूज्य श्री "श्रीजी" महाराज से विरक्त दीक्षा ग्रहण कर ली थी तथा वे आचार्यपीठ में अधिकारी पद पर नियुक्त थे। एतदर्थ पं. श्री गोपालजी का निम्बार्काचार्यपीठ पर आना जाना होता था।

संस्कार-सम्पन्न परम वैष्णव श्री गोपालजी गौड के पुत्र श्री बालूरामजी शर्मा की जन्म कुण्डली एक बार आचार्य-प्रवर श्री घनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज ने देखी। जन्म पत्रस्थ ग्रहों का अवलोकन कर आचार्यश्री ने इनके माता-पिता तथा अधिकारी श्री किशनदासजी से सत्परामर्श कर बालूरामजी शर्मा गौड़ को विरक्त– वैष्णवी दीक्षा देकर शरणागत सम्बोधन "**श्री बालकृष्णशरणदेव**" रख दिया। उत्तराधिकार हेतु **युवराज पद** पर भी नियुक्त कर दिया।

आचार्यश्री की आज्ञा से युवराज श्री बालकृष्णशरणजी ने श्रीधाम वृन्दावन में व्याकरण, वेदान्तादि शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन-अनुशीलन किया। वृन्दावन से आचार्यपीठ परसरामपुरी आने पर भी आपका अध्ययन चालू रहा। आपने ठुमरेला (लक्ष्मणगढ़) निवासी पं. श्री गोपीनाथजी शर्मा गौड से पाणिनीय व्याकरण व साहित्य ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया। युवराज पद पर रहते हुए अध्ययन के साथ श्रीसर्वेश्वर व भगवान् श्रीराधामाधव की सेवा पूजा में निरन्तर भाग लेते थे। प्रतिदिन व्यायाम, योगासन व मन्त्र जपादि नित्य नियमित जपते रहते थे।

विक्रम सं. 1963 चैत्र कृष्णा द्वादशी, सोमवार को आप श्री बालकृष्णशरण देवाचार्यजी निम्बार्काचार्य पीठासीन हुए। आपश्री का वैदुष्य, सारल्य, शान्ति-कान्ति, दयालुता व गम्भीरता महनीय

थी। परम्परानुसार श्री सर्वेश्वर प्रभु की नैवेद्य सेवा स्वयं बनाकर समर्पण करते थे। श्रीमद् भगवद्गीता का पठन-मनन, अनुशीलन आपकी दिनचर्या में अभिन्न रूप से रहा। नित्य प्रति सम्प्रदाय में प्रचलित स्तव, स्तुतियां, सुदर्शनकवच पाठ व गोपाल मंत्रराज का जप अनुष्ठान दशांश हवन के साथ आजन्म अक्षुण्ण रहा व भगवान् श्रीसर्वेश्वर के 108 तुलसी दलार्पण करना प्रतिदिन का नियम था। आपके आचार्यत्व काल में नाम संकीर्तन, कथा, सत्संग प्रतिदिन हो रहा था। आपश्री स्वयं गोपाल मन्त्रराज का जप– लगभग एक घंटे सूर्य की ओर बिना पलक गिराये दृष्टि स्थिर रखते हुए किया करते थे। कई शिष्यों का अनुभव है, आपको वचन-सिद्धि थी। आपका मुखाग्र वचन व आशीर्वाद बहुधा फलता था।

आपके शिष्यों में तत्कालीन प्रतिष्ठित विद्वान्, महामनीषी, परम भावुक भक्तजन और राजा महाराजादि थे। पण्डित प्रवर श्री रामप्रतापजी शास्त्री (प्रोफेसर नागपुर) मूल निवासी ब्यावर (राज.) पं. श्रीलाडलीशरणजी ब्रह्मचारी व्याकरण काव्यतीर्थ उल्लेख़नीय हैं। ये सभी आपके कृपापात्र थे। जोधपुर, बीकानेर, बूंदी, मारवाड़ आदि के राजपरिवार, जागीरदार व प्रजाजन आदि आपके शरणागत श्रद्धावनत थे। आपश्री की दक्षिण यात्रा के समय हैदराबाद स्टेट के नवाब ने विराट् शोभायात्रा निकाल कर अपनी विशेष श्रद्धा समर्पित की थी। उदयपुर के महाराजा श्री भूपालसिंहजी भी आपके श्रीचरणों में श्रद्धावनत थे। ठिकाना कादेड़ा ठाकुर के यहाँ आपके आशीर्वाद से ही पुत्र हुआ था। सप्तपुरी यात्रा पर जगन्नाथपुरी जाते समय वर्धमान नरेश ने अनन्य श्रद्धावान् होकर प्रजा सहित आपका स्वागत किया था। इस तरह भारतवर्ष में आपश्री लोक में श्रद्धास्पद थे। कृष्णगढ़ नरेश श्री मदनसिंहजी व यज्ञनारायणसिंहजी की भी आप में अपार श्रद्धा थी।

खरवा ठिकाना के राव आपश्री के शिष्य थे, जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में संघर्ष किया था। एक बार आचार्य पीठ परशुरामपुरी पर वे आ गये, जहाँ उन्हें अजमेर कमिश्नर ने चारों तरफ से घेर लिया था। संघर्ष होने वाला था, पर आपश्री की संकल्प शक्ति व तेजस्वी प्रभाव से दोनों ने परस्पर निःशस्त्र होकर वार्ता की और कमिश्नर अजमेर व राव साहब अजमेर होते हुए ठिकाना खरवा पहुंचे। आपश्री अजातशत्रु थे और ऐसा प्रभाव था कि प्रतिकूल आचरण वाला द्वेषी भी आपके सन्मुख आकर नतमस्तक हो जाता था।

आपश्री अत्यन्त दयालु थे, क्षुधार्त को अन्नदान व भोजन कराकर प्रसन्न होते थे। यदा कदा अकाल के समय किसानों का हासिल का बकाया भी स्थगित (माफ) करा देते थे।

आपश्री धर्मप्रचार के लिए भ्रमण करते रहते थे। श्रद्धालुओं व सन्त महान्तों के आमन्त्रण पर वहाँ पधारते रहते थे। आपश्री ने धर्म-सम्प्रदाय प्रचारार्थ व तीर्थ यात्रार्थ अनेक यात्राएँ की। आपकी लम्बी यात्रा वि.सं. 1964 पौष शुक्ला तृतीया से श्रावण कृष्ण दशमी वि.सं. 1965 तक छः माह की रही। इस यात्रा में आप मुख्यतः किशनगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, मन्दसौर, इन्दौर, महू की छावनी, खेडीघाट, ओंकारनाथ, सनावत, भुसावल, जालना, नान्देड़, हैदराबाद, वैजवाड़ा, मद्रास, मदुरै, रामेश्वरधाम, श्रीरङ्गम्, तिरुपति बालाजी, सिकन्दराबाद, परभनी, ओमगांव, इंगोली, कमरेगाँव, मालेगाँव, पीपल्या, मगरदा,

रोलगाँव, खण्डवा, उज्जैन, रतलाम, अजमेर, अरड़का आदि स्थानों पर होते हुए फिर श्री निम्बार्काचार्य पीठ पधारे। उत्तराखण्ड व उत्तराखण्ड के चारों धाम तथा वृन्दावन व कुम्भादि पर्वों की यात्रा यथा-समय होती ही रहती थीं।

श्री वृन्दावन धाम के कुम्भावसर पर सं. 1994 में आपश्री के वृन्दावन पदार्पण व वृन्दावनवास विशेष उल्लेखनीय रहा है। अजमेर के महान्त श्री रामकृष्णदासजी महाराज को निम्बार्कपीठ की स्थानीय व्यवस्था का प्रबन्ध देकर आपश्री वृन्दावन पधारे। आपश्री के साथ परिकर गणों में श्री सर्वेश्वरजी के पुजारी श्री रघुनाथदासजी, श्री सर्वेश्वरदासजी, श्री रामलालजी, उगमरावत, घासीरामजी व्यास, श्री वैजनाथजी व श्रीघासीलालजी गौड़ तथा श्री सर्वेश्वर संस्कृत विद्यालय के छात्र व अध्यापक पं. व्रजबिहारीदासजी आदि थे। आपश्री की सेवा में सर्वश्री मस्तराम, सोहनलाल, भगवतीदास तथा श्री दुर्गाशंकर जी पण्डा रहते थे।

मथुरा पहुंचते ही अखिल भारतीय श्री निम्बार्क-महासभा के प्रधान मं श्री नन्दकुमारशरणजी व मथुरा के महान्त श्री व्रजमोहनशरणदेवजी की व्यवस्था में अनेक सन्त-महान्त एवं श्रद्धालु भक्तजनों ने विशाल शोभा यात्रा आयोजित कर आपश्री का हार्दिक श्रद्धा से स्वागत किया। श्री वृन्दावन धाम श्री ''श्रीजी'' महाराज की बड़ी कुञ्ज तक शोभा यात्रा में अनी अखाड़ों के सन्त-महान्त नोबत निशानों के सहित, साथ-साथ चल रहे थे। स्वागतार्थ, श्रद्धानवत विशाल जन समुदाय उमड़ पड़ा था। स्थान-स्थान पर आरती तथा श्री ''श्रीजी'' महाराज की जय-घोष के साथ शोभा यात्रा श्री ''श्रीजी'' कुञ्ज पर पहुंची। भगवान् श्री श्रीसर्वेश्वर सहित आपश्री कुञ्ज में विराजे। यहाँ आपश्री के दर्शनार्थ प्रतिदिन अपारजन समूह उमड़ पड़ता था। आम वैसाख जनों के अतिरिक्त विशिष्ट साधु सन्त भी आपश्री के दर्शन सेवा को लालायित रहते थे। आपश्री के वृन्दावन निवास पर उस समय वृन्दावन के ख्याति प्राप्त सन्त श्री ग्वारियाबाबा नित्यप्रति दर्शनार्थ आया करते और अटूट श्रद्धा रखते थे। उद्योगपति, परम वैष्णव जन आपकी सेवा में समुपस्थित रहते थे। सेठ श्री जोगीराज कमलापति कानपुरवालों की सपरिवार उल्लेखनीय श्रद्धा थी।

वृन्दावन कुम्भ के अवसर पर ई.सन् 16.3.1938 को चतुःसम्प्रदायी वैष्णव अनी अखाड़ों के श्री महान्तों ने अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद (परशुरामपुरी) के आचार्यश्री के चरणों में परम्परागत निष्ठा को पुनः अभिलिखित करते हुए अभिलेख समर्पित किया था। इस आलेख में इन श्रीमहान्तों ने श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य-पीठस्थ आचार्य श्री श्री 1008 श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी तथा उनकी शिष्य-परम्परा में जो कोई उस गद्दी पर विराजमान होगा, उनका नाटे पाटे के मेले, कुम्भादि चढ़ाव तथा अयोध्या वृन्दावनादि तीर्थों पर पधारेंगे, तब तीनों अनी अखाड़ों के श्रीमहान्त सन्त सब मिलकर चंवर-छत्र डंका नोबत के साथ पूरा जुलूस निकालेंगे और निशान-सेवा की कोई भेंट-पूजा नहीं लेंगे। आपकी शिष्य परम्परा से गद्दी पर विराजमान का पूर्ण स्वागत-सत्कार करते रहेंगे।

निर्मोही अनी के श्रीमहान्त कमलदास, श्रीमहान्त जगन्नाथ दास, पश्च दिगम्बर अनी के महान्त श्री रामदुलारेदास, दिगम्बर अखाड़े के महान्त श्री धर्मदास, पश्चनिर्मोही अनी के महान्त श्री सीतारूपदास, श्री हरिव्यासी निर्मोही अखाड़े के श्रीमहान्त रामफलदास आदि श्रीमहान्तों ने अपने हस्ताक्षर कर के अभिलेख आचार्यश्री को समर्पित किया।

इसी वर्ष कुम्भावसर पर अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा का विशेषाधिवेशन पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के संरक्षण व शुभाशीर्वाद से सुसम्पन्न हुआ। इस महाधिवेशन में बाहर से पधारे हुए व स्थानीय सन्त-महान्त व वैष्णव जनों ने विशद रूप में भाग लिया। इस अवसर पर आपश्री ने अपने आशीर्वचन संस्कृत भाषा में किये। वेदशास्त्र ग्रन्थ परिवर्णित ब्रह्म, रुद्र, इन्द्र देवर्षि समर्चित वेदान्तवेद्य सर्वेश्वर श्री कृष्णचन्द्र युगल चरणारविन्द मकरन्द से निरन्तर अभिसिञ्चित व्रज भूमि का माहात्म्य अमोघ है।

''अनेक-जन्मोपार्जित नाना-विध-कर्मसमुद्भूत, बहुविध-क्लेशतिमिरपटलेन मलिनान्तःकरणान् पुरुषान् पवित्रीकरोति स्मरणमात्रेणेयं भूमिः। व्रजराजस्पर्श-लाभार्थं स्वर्ग-निवासिनोपि सततं समुत्सुका दरीदृश्यन्ते।'' व्रज भूमि अनेक जन्मोपार्जित कर्म से समुत्पन्न नानाक्लेशरूपी अज्ञानान्धकारपुञ्ज से मलिन अन्तःकरण को भी अपने स्मरण मात्र से पवित्र करती है। इस व्रजरज प्राप्ति के लिए देववृन्द भी लालायित रहते हैं।

स्थानीय व बाहर से आये हुए दर्शनार्थ भावुक भक्त वैष्णवों की आपने हार्दिक रूप से सराहना की और स्वाभाविक द्वैताद्वैत प्रचारक श्रीनिम्बार्क महासभा के कार्यकर्त्ताओं के उत्साह पर अत्यन्त प्रसन्नता और सन्तोष व्यक्त किया। सभासदों को विशेष उद्‌बोधन प्रदान करते हुए आपश्री ने कहा– **''यत् भोःभोः! सदस्याः! श्रूयतां साग्रहं मे वाक्यम्। अस्मिन् कराल-कलिकाल-कवलितयुगे सर्वेपि विद्वांसो वैष्णवाश्च स्वधर्म-रक्षणाय सम्प्रदायाभ्युदयाय च परिकर-बन्धनाय सनद्धा भवन्तु। यतः कलौ युगे संघ एव शक्तिः।''**

आप सावधान होकर सुनें। यह हमारा विशेष आग्रह है– इस कराल कलिकाल युग में सभी शास्त्र-मर्मज्ञ विद्वान्, तपः साधना में निरत साधु व वैष्णव जन अपने सभी के 'स्व सनातन धर्म रक्षा हेतु और अपनी सम्प्रदाय पद्धति के अभ्युदय हेतु सभी समुदाय एकजुट होकर कर्म दायित्व में तत्पर हो जावें, क्योंकि कलियुग में संघटन में ही शक्ति है।

आपने आगे कहा– सभी सम्प्रदाय के लोग पारस्परिक वैमनस्य को दूर रखें। क्योंकि वैमनस्य ही मनुष्य के अधःपतन का कारण है।

निम्बार्क-सम्प्रदाय जनों को सम्प्रदाय शिक्षा सबन्धी प्रचार प्रसार का आह्वान करते हुए आपने कहा– **'विश्वेऽस्मिन् सर्वत्र भेदाभेदमतोत्कर्षमाविष्कर्तुं पाठयन्तु बालकान्। तेषां पाठनार्थं समयोचितीं व्यवस्थां कुर्वन्तु, येन तत्र-तत्र साम्प्रदायिक-धर्मशिक्षामभ्यस्य सर्वत्रा पूर्ववदनादिवैदिक-सत्सम्प्रदाय-विजय-वैजयन्तीमुडड़ीयन्तु।'** विश्व में सर्वत्र भेदा-भेद सिद्धान्त के उत्कर्ष को बढ़ाने हेतु बालकों को पढ़ावें व इनके पढ़ाने की समुचित व्यवस्था करें। सम्यक् धर्म शिक्षा से जहां-तहां धर्मपूर्वक पूर्ववत् सर्वत्र धर्माचारण पूर्वक अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय की विजय-वैजयन्ती फहरावें।

आपश्री ने धर्म व सम्प्रदाय शिक्षा के अभ्युदय को साकार रूप देने के लिए क्रियाप्रवृत्ति आयोजित करते हुए– यहाँ आचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ परशुरामपुरी सलेमाबाद में वि.सं. 1994 में **'श्री सर्वेश्वर संस्कृत विद्यालय** की स्थापना की जो अद्यावधि महाविद्यालय के रूप में प्रवृत्त है। इसके पहले प्रधानाध्यापक महातमा पं. **श्री व्रजबिहारीदासजी,** दूसरे पं. **श्री लाडलीशरणजी व्रह्मचारी,** तदनन्तर पं. **श्री रामेश्वरशरणजी,** पं. **तेजपालजी** आदि महाराजश्री के आचार्य काल में रहे हैं।

आपश्री शास्त्रज्ञ विद्वान् और सत् पुरुषों का सदैव समादर स्नेह करते थे। विद्वान् आपके सानिध्य से आनन्दित होते थे। वृन्दावन निवासी परम मनीषी पं. श्री अमोलकदासजी शास्त्री, पं. श्री वैष्णवदासजी शास्त्री, पं. श्रीविहारीदास त्यागीजी, विद्यावारिधि श्री रमादत्तजी शास्त्री, संगीत के विद्वान् महात्मा गोपालदासजी, श्री सर्वेश्वर वाटिका वृदावन वाले बहुधा आकर पीठ पर ही निवास करते थे और आचार्यश्री को पुराणों की विविध कथायें सुनाया करते। आपश्री ने कई बार भागवत कथा व श्री गोपाल यज्ञ तथा संवत्सर पर्वोत्सव आयोजन समारोह पूर्वक सम्पन्न करवाये। आपश्री महल के बाहर विराज कर कई बार पं. देवकीनन्दनजी के हास्यप्रद सुललित दृष्टान्त सुनते और हंस-हंसाकर सबको आनन्दित करते।

भगवत् सेवार्थ आप स्वयं कई बार मनोरम पुष्पाहार बनाते, तो कई बार पत्तल-दोने का भी निर्माण कर देते। पुष्पोद्यान की सुन्दर रचना में भी आपकी रुचि थी। शास्त्रीय भक्ति संगीत सुनकर आप आनन्दित होते थे। कई बार श्रावण के झूलनोत्सव पर पुष्पाहार युक्त अद्‌भुत शृंगार झांकी का आप स्वयं निर्माण करते और भगवद् विग्रह के सामने विराज कर झूलादर्शन व पद श्रवण कर भावविभोर हो जाते। आप संयम-नियम पूर्वक दैनिक सभी यथेष्ट कार्य समय पर पूर्ण करने का ध्यान रखते थे।

आराधना के समय आप पद्मासन से विराजते थे। आपका पद्मासन से जप करने व लम्बे समय तक बैठक का अभ्यास था। रासलीला में रासबिहारीजी के दर्शन आप खड़े-खड़े ही करते। रासलीला मण्डलियों से आप पीठ-स्थानों पर रासलीलाएँ करवाते। आपश्री 1993 में उदयपुर महान्तजी के आग्रह पर उदयपुर पधारे थे, उस समय रेनवाल के महान्त श्री राधिकादासजी भी अन्य सन्त महान्त व वृन्दावन के भी दमोदर स्वामी की रासमण्डली भी आपके साथ थी। उदयपुर से लौटते समय आपका लक्ष्मीनारायण मन्दिर अजमेर में विराजना हुआ। यहां रासलीला हुई। आपश्री 93 वर्ष की आयु में भी रासलीला प्रारम्भ होने से लेकर समाप्ति पर्यन्त खड़े-खड़े ही दर्शन करते रहे। आपने एक बार निम्बार्काचार्यपीठ पर प्रसिद्ध रासलीला स्वामी श्री व्रजलालजी बोहरे को बुलाकर एक मास तक अष्टयाम सेवा के मनोहारी रासरस का दर्शनानन्द लिया। पं. श्री गोविन्ददासजी 'सन्त' लिखते हैं– ''रास दर्शन के समय कितनी ही बार आचार्यवर्य के युगल नेत्र अश्रुपूरित हो उठते, जिन्हें देखकर रसिक जन जय-जय ध्वनि 'बलिहारी' आदि मंगलमय वचनों का उच्चारण करते।''

आपके दीर्घकालीन भक्तिमय जीवन के इतने संस्मरण हैं कि सभी का यहाँ उल्लेख किया जाना संभव नहीं, कुछ उल्लेखनीय संस्मरणों को भक्तजनों के आह्लादनार्थ यहाँ प्रस्तुत करने का एक प्रयासमात्र किया गया है। जगद्‌गुरु एवं एक अखिल भारतीय स्तर के भक्ति व समन्वयवादी दार्शनिक सिद्धान्त के प्रतिष्ठापक, माधुर्योपासना संवलित पीठ के आचार्य पद पर विराजते हुए आपने अपने पीठ की गरिमा के सर्वथा अनुरूप आचरण करते हुए जो कीर्ति अर्जित की है, उससे आज भी आप यशः शरीर से अपने भक्तजनों के सम्मुख यथावत् विद्यमान हैं। धन्य धन्य हैं श्री गुरुदेव, जो सतत वन्दनीय हैं।

नेहरु नगर, गीता भवन के सामने,
ब्यावर (राज.)

अनन्त-श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपादपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का

संक्षिप्त-जीवनवृत्त

— निम्बार्क-भूषण पं गोविन्ददास सन्त

इस धर्मप्राण देश में जब-जब धर्म का ह्रास एवं अधर्म की अभिवृद्धि हुई है, तब-तब सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु ने अवतार ग्रहण कर अपने स्वरूपभूत धर्म की रक्षा की है। अब भी आवश्यकतानुसार अपनी दिव्य विभूतियों (पार्षदों) को धर्माचार्यों के रूप में भेजकर समयोचित उद्देश्यों की पूर्ति करवाते हैं। उन्हीं धर्माचार्यों की सम्प्रदाय परम्परायें अद्यावधि अक्षुण्ण रूप में चली आ रही हैं। इन परम्पराओं में भी बीच-बीच में जब कभी किसी प्रकार की कोई शिथिलता आ जाती है, तो भगवत् कृपा से किसी न किसी शक्ति-सम्पन्न महापुरुष का प्राकट्य हो जाता है, जिनके द्वारा पुनः जागृति का सञ्चार हो उठता है। बस, उन्हीं दिव्य-विभूतियों में एक हमारे परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु निम्बार्काचार्य वर्तमान **श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज हैं।**

जन्म एवं शैशवावस्था —

आपका जन्म विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, शुक्रवार, कृत्तिका नक्षत्र, तदनुसार दिनाङ्क 10 मई सन् 1929 ईस्वी में श्रीनिम्बार्कतीर्थ (परशुरामपुरी) सलेमाबाद-किशनगढ़ (राजस्थान) निवासी परम पावन गौड़ ब्राह्मण वंश के एक परिवार में प्रातः 5 बजकर 54 मिनट पर हुआ था। माता का नाम श्रीस्वर्णलता (सोनीबाई) और पिता का नाम श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ था। यह समस्त परिवार श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय परम्परानुयायी परम वैष्णव रहा है।

प्राक्तन पुण्य कर्मानुसार किसी भाग्यशाली दम्पती को ही ऐसे महापुरुषों को जन्म देने एवं लालन-पालन का सुयोग प्राप्त होता है।

जिस वसुन्धरा पर ऐसे महापुरुषों का जन्म होता है, वह वसुन्धरा तथा उनका कुल (परिवार), माता-पिता एवं उनके स्वर्गस्थ पितृगण आदि परम धन्य हो जाते हैं। आपका बाल्यकालीन प्रचलित (बोलता) नाम रतनलाल था। यद्यपि कृत्तिका नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका जन्म नाम उत्तमचन्द रखा गया था, तथापि नामकरण के दिन पीठ के व्यास पं. श्रीगोवर्धनलालजी के द्वारा यह बोलता नाम **रतनलाल** रखा जाने के कारण सब रतनलाल ही कहते थे। एक दिन की बात है– आपके जन्म स्थान पर एक अज्ञात वैष्णव जटाधारी महात्मा भिक्षावृत्ति के बहाने आये। माताजी ने बालक रतनलाल को गोद में लिये हुए ही श्रद्धापूर्वक उठकर उन्हें भिक्षा दी। माताजी की गोद में हँसते हुए बालक रतन को देखकर प्रसन्न मुद्रा में महात्माजी ने कहा– माता! तुम्हारा यह पुत्र अत्यन्त तेजस्वी एक रतन है, आगे

चलकर यह बालक एक अच्छे (उत्तम) पद को प्राप्त करेगा। इस शुभाशीर्वाद को श्रवणकर माताजी बड़ी प्रसन्न हुई। महात्माजी पधार गये, तब उनके चले जाने के बाद माताजी को तुरन्त स्मरण आया कि हो न हो ये महात्मा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक **श्रीपरशुरामदेवाचार्य (स्वामी) जी महाराज** ही होंगे, जो इस बालक को आशीर्वाद देने को ही आये हों। माताजी ने पहिले यह बात बड़े-बूढ़ों से सुन भी रखी थी कि इसी प्रकार इस पीठ में तथा श्रीपुष्करराज के परशुरामद्वारे में कई लोगों को श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन हुए हैं।

बालकपन से ही आपका लौकिक खेल-खिलौनों में मन न जाकर स्वाभाविक रूप से धार्मिक कार्यों जैसे भगवान् श्रीराधामाधव की मंगला, शृङ्गार एवं सायंकालीन आरती के दर्शन तथा स्तुति-संकीर्तनादि में सम्मिलित होने तथा पुजारी श्रीरघुनाथदासजी से श्रीलड्डू-गोपालजी की सेवा प्राप्त कर दैनिक पूजा करने आदि में प्रवृत्ति रहती थी। जिस प्रकार प्राची दिशा में सूर्योदय से पूर्व ही अरुणोदय-वेला में एक प्रकाशमयी लालिमा की दिव्य छटा दिखाई देने लगती है, ठीक उसी प्रकार– **होनहार विरवान के होत चीकने पात** वाली कहावत के अनुसार भगवत्कृपापात्र सद्गुण सम्पन्न महापुरुषों की भी उनके बालकपन में ही प्रतिभा झलकने लगती है। श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के सुयोग्य विद्वान् **ज्योतिषी पं. श्री लादूरामजी व्यास** द्वारा निर्मित आपकी जन्म कुण्डली का फलादेश जन्म से लेकर आज पर्यन्त ज्यों का त्यों मिलता हुआ आ रहा है।

दीक्षा-युवराज पद नियुक्ति एवं आरम्भिकी शिक्षा—

वैष्णव घराने में उत्पन्न हुए बालक घर में अपने माता-पिता एवं बन्धु बान्धवों का शिष्टाचार पूर्व रहन-सहन, आचार-विचार, पाठ-पठन एवं धर्म-कर्मादि सभी नियमों को जैसा देखते हैं, उसी प्रकार उनके हृदय पटल पर वैसे ही संस्कार जम जाते हैं और फिर वे **यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्** के अनुसार बालकपन से लेकर आजीवन पर्यन्त अमिट बन जाते हैं। आपके बालकपन से ही आपमें इन सदाचार-सद्विचार सम्बन्धी भावों को देखकर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज बड़े प्रसन्न होते थे।

हिन्दुसूर्य उदयपुर नरेश महाराणा श्रीभूपालसिंहजी के आवाहन और स्थलाधीश महान्त श्रीगंगादासजी की विनीत प्रार्थना पर विक्रम सम्वत् 1994 वैशाख शु. तृतीया को भूतपूर्व आचार्यश्री का उदयपुर पादार्पण हुआ। आपकी समारोहपूर्ण यह एक आदर्श यात्रा हुई थी। पं. श्रीअमोलकरामजी शास्त्री, पं. श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, पं. श्रीगणपतिजी शास्त्री, अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा के महामन्त्री श्रीनन्दकुमारदासजी ब्रह्मचारी तथा श्रीदामोदर स्वामी की रासमण्डली एवं अधिकारी श्रीमनोहरदासजी आदि वृन्दावनस्थ परिकर भी साथ था। निकट भविष्य में आने वाले कुम्भ अवसर पर आचार्यश्री के वृन्दावन में पादार्पण का प्रस्ताव उदयपुर में ही पारित हुआ था। महाराणा साहब ने इसका हार्दिक अनुमोदन किया और सेवा-शुश्रूषा की भी आपने अभ्यर्थना की। आचार्यश्री की अत्यन्त वृद्धावस्था थी, भावी उत्तराधिकारी मनोनीत नहीं किया था, जो मनोनीत किये थे, दैव उनके अनुकूल नहीं था, वस्तुतः वे इस पद के योग्य नहीं थे। सम्प्रदाय के

विशिष्ट महन्त-सन्त और सेवकगण इसलिये चिन्तित थे। आतुरतापूर्वक आचार्यश्री से निवेदन करते रहते थे, उस समय आचार्यपीठ के प्रबन्धक अधिकारी भी नहीं रहे, अतः कुम्भ अवसर पर वृन्दावन यात्रा के सम्बन्ध में संकल्प-विकल्प चल रहा था। दैवयोग से निम्बार्क महासभा के कार्यकर्ता पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी आचार्यश्री के दर्शनार्थ मार्गशीर्ष मास में आचार्यपीठ पहुँचे, आचार्यश्री बड़े प्रसन्न हुए, विचार विमर्श के अनन्तर आचार्यश्री के अनुरोधपूर्ण आदेश से आप ठहरे और वृन्दावन-यात्रा में आचार्यश्री के साथ ही रहे। कुम्भ पर्व सानन्द सम्पन्न हुआ। उसी समय सभी महन्त-सन्तों के अनुरोध से आचार्यश्री ने पं. श्रीलाड़िलीशरणजी और श्रीनरहरिदासजी की अधिकारी पद पर नियुक्ति की और भावी उत्तराधिकारी भी सोच-समझकर जहाँ तक हो शीघ्र ही नियुक्त किया जाय, यह सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

दो वर्ष (1995-96) अकालों की स्थिति और दोनों अधिकारियों के अनमेल के कारण सफलता नहीं मिल सकी। वि.सं. 1997 वैशाख शु. प्रतिपदा को आचार्यश्री ने पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी को अधिकारी पद पर नियुक्त किया, उस समय उदयपुर महान्तजी के आदेशानुसार समय-समय पर वियोगीविश्वेश्वरजी भी आचार्यपीठ आते-जाते थे, विचार-विमर्श होता था, सभी ने हमारे चरित्र नायक 11 वर्षीय बालक चि. रतनलाल को आचार्यपीठ के भावी उत्तराधिकारी पद की नियुक्ति का प्रस्ताव आचार्यश्री के समक्ष प्रस्तुत किया, इस प्रस्ताव से किशनगढ़ राज्य के दीवान पंचौली श्री केशरीसिंहजी भी सहमत थे। तब आपकी जन्म कुंडली देख, प्रतिभा सम्पन्न जान आपके माता-पिता से सत्परामर्श कर विक्रम. सं. 1997 के आषाढ शुक्ल द्वितीया (श्रीरथयात्रा) दिनाङ्क 7 जुलाई सन् 1940 ईस्वी में उक्त आचार्यश्री ने आपको विधि-विधानपूर्वक पंच संस्कार युक्त विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर युवराज पद पर नियुक्त कर दिया तथा आपके रतनलाल नाम को परिवर्तित कर **श्रीराधासर्वेश्वरशरण** नाम से आपको सम्बोधित किया। आपकी प्रारम्भिक संस्कृत शिक्षा आरम्भ करा दी गई। उससे पूर्व आपने राजकीय स्थानीय प्राथमिकशाला में चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। कुछ समय तक आपने निम्बार्कतीर्थ के व्यास श्रीबजरंगलालजी से भी अध्ययन किया था। तत्पश्चात् आपके अध्यापनार्थ विरक्त वैष्णव ब्रह्मचारी अ. पण्डित श्रीलाड़िलीशरणजी न्याय-वेदान्तशास्त्री काव्यतीर्थ को नियुक्त किया, जो कि बड़े श्री श्रीजी महाराज के ही कृपापात्र (शिष्य) थे।

श्रीआचार्यपीठासीन —

विक्रम संवत् 2000 दो हजार में अपने श्रीगुरुदेव के गोलोक धाम पधारने पर ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया दिनांक 5 जून सन् 1943 में 14 वर्ष की अवस्था में ही आप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठासीन हुए। उस समय सर्वसम्मति से **श्रीसर्वेश्वर संघ** नामक एक संस्था की स्थापना हुई और उसे किशनगढ़ स्टेट से रजिस्टर्ड भी करवा लिया गया। उसके सभापति व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय के श्रीमहान्त धनञ्जयदासजी (श्रीकाठियाजी) महाराज वेदान्त–न्याय भूषण, तर्क-तर्क तीर्थ-व्याकरणतीर्थ श्रीनिम्बार्काश्रम, श्रीधाम वृन्दावन और अधिकारी श्रीलाडिलीशरणजी न्यायव्याकरण-काव्यतीर्थ निर्वाचित हुए। आपकी नाबालिकी के कारण

भूतपूर्व श्री श्रीजी महाराज ने पीठप्रबन्धार्थ षड्वर्षीय एक ट्रस्ट भी नियुक्त कर दिया था– उसमें श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी महाराज स्थलाधीश उदयपुर, महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज किशनगढ़-रैनवाल (जयपुर) एवं जोधपुर राज्यान्तर्गत खेजड़ला ठिकाने के ठाकुर साहब श्रीभैंरोसिंहजी आदि महानुभावों के नाम थे। इन ट्रस्टियों की देख-रेख में वियोगी विश्वेश्वरजी, अ.श्रीव्रजवल्लभशरणजी, श्रीनरहरिदासजी तथा श्रीलाडिलीशरणजी इन अधिकारी चतुष्टय महानुभावों एवं वयोवृद्ध पु. श्रीरघुनाथदासजी, पु. श्रीसर्वेश्वरदासजी (चोथूबाबा) पं. श्रीदेवकीनन्दनजी, श्रीश्यामसुन्दरदासजी (बाबूजी) पु. श्रीबालकदासजी प्रभृति द्वारा पीठ का कार्य सञ्चालन सुचारु रूप से चलने लगा। 6 मास के पश्चात् दैवयोगवशात् अधिकारी पं. श्रीलाडिलीशरणजी वृन्दावन से अस्वस्थावस्था में आचार्यपीठ (सलेमाबाद) आ गये और गहन चिकित्सोपरान्त भी वे गोलोकवासी हो गये। तब अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी आचार्यपीठ से वृन्दावन आकर तत्रत्य व्यवस्था में नियुक्त हो गये।

अध्ययनकाल —

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के ट्रस्टी महानुभाव तथा अधिकारी वर्ग के परस्पर सत्परामर्शानुसार आपने **श्री श्रीजी की बड़ी कुञ्ज वृन्दावन** में ही निवास करते हुये अध्ययन किया। तत्पश्चात् श्रीमहान्त श्रीधनञ्जदासजी महाराज (श्रीकाठियाजी) की देख-रेख में मन्दिर श्रीदावानल विहारी (दावानलकुण्ड-वृन्दावन) में निवास करते हुए अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी, श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, श्रीरासविहारी जी गोस्वामी व्याकरण-साहित्याचार्य तथा पं. श्रीसोहनलालजी चतुर्वेदी व्याकरणाचार्य प्रभृति महानुभावों से व्याकरण, न्याय, वेदान्तादि का विधिवत् अध्ययन किया। श्रीआचार्यपीठासीन होने से पूर्व नौ वर्ष की अल्पायु में भी स्वयं के पितृचरण पं. श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ एवं पुजारी श्रीकिशनदासजी के संरक्षकत्व में श्रीवृन्दावन धामस्थ राजकीय पाठशाला में द्वितीय कक्षा पर्यन्त अध्ययन किया था। श्रीधामस्थ पडरोना वाली कुञ्ज के निकट बजाजा की स्कूल में ही आपश्री का यह अध्ययन सम्पन्न हुआ था।

पीठासीन होने पर श्रीधाम में निवास करते समय अध्ययन काल में आपकी परिचर्या में वहाँ महात्मा श्रीगोपालदासजी, पु. श्रीबालकदासजी, पु. श्रीदम्पतीशरणजी, महान्त श्रीरामकृष्णदासजी कामवन, राधावल्लभजी शर्मा गौड़, रसोईया लाडिलीशरणजी शर्मा, ब्रजवासी श्रीप्यारेलालजी शर्मा, गोपालशरण पर्वतीय तथा कुछ समय के लिये बाबा गोमतीदासजी भी थे।

इस प्रकार वि. सं. 2000 से वि. सं. 2004 पर्यन्त अर्थात् सन् 1943 से 1947 तक श्रीधाम वृन्दावन में ही आपश्री का अध्ययन काल व्यतीत हुआ।

अजमेर में शुभागमन —

वृन्दावन स्थित इस अध्ययन काल के भीतर ही वि.सं. 2001 वैशाख मास में अजमेर के भक्तजनों की विनीत प्रार्थना पर अजमेर के नवीन श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर, स्थान पट्टी कटला के प्रतिष्ठा महोत्सव पर श्रीवृन्दावन से ही आपश्री का अजमेर में पदार्पण हुआ। श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन होने के पश्चात् आचार्य पदेन अजमेर में पहली बार आपका शुभागमन होने से भक्तजनों ने हर्षोल्लास पूर्वक भव्य स्वागत एवं विशाल समारोह के साथ आपकी शोभायात्रा का आयोजन किया था। इस अवसर पर भक्तप्रवर सेठ

श्रीरतनलालजी चौधरी (अग्रवाल) के घर पर उनकी भावनानुसार बड़े समारोह पूर्वक पधरावनी का आयोजन सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में आचार्यपीठ के अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी अ.श्रीनरहरिदासजी, कामदार श्रीजयनारायणजी जासरावत व रैनवाल के महन्त श्री राधिकादासजी महाराज भागवतभूषण, महन्त श्रीमोहनदासजी (लूणवा), श्रीप्रेमदासजी काठिया (वृन्दावन), श्रीसर्वेश्वरदासजी (वृन्दावन) प्रभृति एवं श्रीहरिवल्लभदासजी (रैनवाल) आदि अनेक महानुभाव एवं भक्त वृन्द भी उपस्थित थे।

कुरुक्षेत्र के साधु सम्मेलन में पादार्पण—

इस अध्ययन काल की अवधि में ही विक्रम सम्वत् 2001 के श्रावण मास में कुरुक्षेत्र में होने वाले 'सूर्य सहस्र रश्मि' महायाग के शुभावसर पर आयोजित अखिल भारतीय साधु सम्मेलन में श्रीवृन्दावन से पधार कर सर्व सम्मति से आपने सभापति पद को समलंकृत किया। उस समय अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य श्रीभारती कृष्णतीर्थजी महाराज, श्रीगोवर्धनपीठाधीश्वर पुरी का भी पादार्पण हुआ था। इस प्रकार आपको अध्यक्ष पद पर देखकर जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी ने अपने भाषण में सम्मान पूर्वक इन शब्दों में कहा कि– आज हमें बड़ा ही गौरव है कि हम अपने इस साधु समाज के बीच जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी को इस बाल्यकालिक स्वल्पावस्था में ही अध्यक्ष पद पर देख रहे हैं। आप लोग अवस्था पर कोई विचार न करें– तुलसी पत्र या शालग्राम का श्रीविग्रह छोटा हो या बड़ा, किन्तु उसके महत्त्व में कोई अन्तर नहीं आता।

इसी शुभावसर पर आपके शिविर में एक दिन विद्वत्सभा का आयोजन भी रखा गया था, जिसमें जयपुर महाराज संस्कृत कालेज के अध्यक्ष महामहोपाध्याय पं. श्रीगिरधरजी शर्मा चतुर्वेदी, पं. श्रीअखिलानन्दजी कविरत्न अनूप शहर, शास्त्रार्थ महारथी पं. श्रीमाधवाचार्यजी, दिल्ली आशुकवि श्रीबच्चू सूर (वाराणसी) प्रभृति अनेक विद्वद्वृन्द सम्मिलित थे। सभा समारोह के अन्त में समुपस्थित सभी विद्वानों का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की ओर से (आपश्री द्वारा ही) प्रसाद, वस्त्र एवं मुद्रा (दक्षिणा से) सत्कार किया गया था।

सर्वप्रथम वृन्दावन के कुम्भ पर्व पर पादार्पण—

विक्रम सम्वत् 2006 के फाल्गुन मास में सर्वप्रथम आपका श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भ पर्व पर पादार्पण हुआ। सर्वप्रथम श्रीनारदटीला (मथुरा) पर दर्शनोपरान्त आपश्री की विशाल शोभायात्रा मथुरा के प्रधान बाजार में बग्गी में विराजित होकर समायोजित हुई। उसके अनन्तर श्रीविहारीजी का बगीचा (वृन्दावन) पधारना हुआ। यहाँ वयोवृद्ध महन्त श्रीदम्पतिशरणजी महाराज ने आचार्यश्री की बड़े उत्साह पूर्वक पधरावनी कराई एवं तदुपरान्त श्रीविहारीजी के बगीचा से बैण्डवाद्य, नौबत-निशान पट्टेबाजी, छड़ी, चँवर, छत्र, मसाल आदि के साथ भगवन्नाम संकीर्तन करते हुए आपकी बड़े समारोह पूर्वक पदाति शोभायात्रा श्रीधाम के मुख्य-मुख्य स्थानों में होती हुई– यमुना पुलिन में जहाँ शिविर लगा हुआ था, सभास्थल (पंडाल) में पहुंच कर एक सभा के रूप में परिणत हो गई। समागत विद्वानों के प्रवचन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश श्रवण कर भावुक भक्तजन भाव विभोर हो उठे थे।

प्रारम्भ से कुम्भ की समाप्ति पर्यन्त श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, वैष्णव विद्वानों द्वारा श्रीगोपाल मन्त्रराज के जाप, श्रीगोपाल महायाग, इन पंक्तियों के लेखक (पं. गोविन्ददास सन्त) द्वारा श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण, वैष्णव (सन्त) सेवा और रात्रि में प्रतिदिन प्रवचन तथा श्रीरासलीलानुकरण, इस शुभावसर पर एक दिन व्रजसेवा समिति के विशाल पण्डाल में बाबा श्रीमाधुरीशरणजी के संयोजकत्व में अनेक रास मण्डलियों द्वारा महारास का भी बृहद् रूप में आयोजन था।

कुम्भ के बाद संक्षिप्त-व्रजयात्रा—

कुम्भ समाप्ति पर बाबा श्रीमाधुरीशरणजी, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी-मन्त्री श्रीनिम्बार्क महासभा, सेठ श्रीरतनलालजी बेरीवाले, सेठ श्रीरामजीलालजी बेरी वाले आदि कतिपय महानुभावों ने आचार्यश्री से संक्षिप्त व्रजयात्रा के लिए भी निवेदन किया। एतदर्थ उसी समय कार द्वारा आचार्यश्री ने जहाँ-जहाँ कार पहुँच सकी, वहाँ-वहाँ के स्थलों का दर्शन एवं अवलोकनार्थ पधार कर दर्शन किये। साथ में श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी उदयपुर, अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, आदि तीनों अधिकारी वृन्द, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी तथा अनेक विद्वान् सन्त-महान्त वृन्द आदि कई महानुभाव संग में थे।

यही उपर्युक्त विचार कालान्तर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से अनेक भक्तों द्वारा प्रस्तावित होता हुआ वि. सं. 2026 के माघ में बृहद् रूप से फलीभूत हुआ।

पूर्वाचार्यों द्वारा–जयपुर छोड़ने के 85 वर्ष पश्चात् आपश्री का जयपुर में पादार्पण–

वि.सं. 2006 के वृन्दावनीय कुम्भ में जब आपश्री का पादार्पण हुआ, तब उसमें जयपुर के कई एक भक्तजन सम्मिलित हुये थे। उस समय सबकी यही इच्छा हुई कि जयपुर में भी आपश्री का अब इसी प्रकार पादार्पण हो। परन्तु आचार्यश्री से निवेदन करने का किसी का भी साहस नहीं हो पा रहा था। कारण यह था कि आपके पूर्वाचार्यों द्वारा जयपुर को त्याग दिया गया था, अब आप यह कैसे स्वीकार करेंगे। अन्त में जयपुर के ही भक्त रँगीलीशरण (छगनलाल बजाज चौमूंवाले) और उनके पुत्र मोहनलाल इन, दोनों पिता-पुत्र ने साहस करके आचार्यश्री की सेवा में जयपुर पधारने का प्रस्ताव कर ही दिया। इस पर आचार्यश्री ने कहा कि पीठ के अधिकारी और वृन्दावन के वयोवृद्ध स्वसम्प्रदायी महान्त-सन्त इस विषय पर विचार करके जैसा भी निश्चय करें, वही किया जाय।

इस पर पीठ के अधिकारी वर्ग तथा पं. श्रीकिशोरदासजी वंशीवट आदि वयोवृद्धों ने निश्चय किया कि अब सभी राज्य प्रजातन्त्र में विलीन हो चुके हैं– अतः जयपुर की जनता का प्रार्थना पत्र आना चाहिये। इस पर भक्तप्रवर श्रीरंगीलीशरण (छगनलाल) बजाज कमर कसकर पीछे पड़ गये। न रात गिनी न दिन देखा, न शीत की परवाह की और न कड़कड़ाती धूप से ही डरे। जयपुर से वृन्दावन, वृन्दावन से निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) कई बार गये, किशनगढ़ से निम्बार्कतीर्थ तक पैदल आने-जाने का साहस किया। जयपुरस्थ शीर्षस्थ विद्वज्जनों, सन्त-महान्तों एवं विशिष्ट महानुभावों तथा हजारों नर-नारियों के हस्ताक्षरों से युक्त जयपुर की जनता का प्रार्थना-पत्र लाकर श्रीचरणों में समर्पित किया। विचार-विमर्श-कारिणी समिति को भी इस पर अनुमोदन करना पड़ा। तदुपरान्त श्री आचार्यश्री ने कहा कि पूर्वाचार्य श्री गोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने जयपुर नरेश श्रीरामसिंहजी महाराज के वैष्णवाचार्यों को भस्म के त्रिपुण्ड

धारण का अमर्यादित दुराग्रह किया था, जिस पर आपने जयपुर का परित्याग कर दिया था, जिसके कारण तीन पीढ़ियों से जयपुर का सम्बन्ध विच्छेद किया हुआ था। अतः आपश्री ने इसका निषेध कर दिया। अ. श्रीव्रजवल्लभशरणजी के यह कहने पर कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यदि आज्ञा मिल जाय तो स्वीकृति होनी ही चाहिये और वह स्वीकृति इस रूप में ली जाय। निश्चित हुआ कि दो कागज की चिटों में एक पर 'जयपुर जाना चाहिए' दूसरी पर 'जयपुर नहीं जाना चाहिये' लिखकर दोनों चिटों की गोली बनाकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सामने रखी जाये, तब स्वयं आचार्यश्री द्वारा ही वह क्रमशः तीन बार गोली उठवाई गई। तीनों बार में ही जयपुर जाना चाहिये, यही निकला। तब दृढ़ निश्चय हो गया कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की ही ऐसी आज्ञा है। तब आचार्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की। आचार्यचरणों की स्वीकृति मिलते ही श्रीरंगीलीशरणजी कृत-कृत्य हो गये। इस यात्रा के समस्त खर्चे का भार प्रभु कृपा से उन्होंने अपने ऊपर ले लिया।

वि.सं. 2007 में आषाढ पुरुषोत्तम (अधिक) मास था। आगे स्थान आदि की प्रबन्ध व्यवस्था देखने के लिए अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी, अधिकारी श्रीनरहरिदासजी तथा योगमाया बाबा श्रीमाधुरीशरणजी इन पंक्तियों के लेखक (पीठ प्रचारमन्त्री पं. गोविन्ददास सन्त) आदि की नियुक्ति हुई। उपर्युक्त महानुभाव कई बार जयपुर पहुँच कर सभी व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में जयपुर के नागरिकों के साथ विचार-विमर्श करते रहे। उस समय श्रीरंगीलीशरणजी कानोता ठाकुर साहब के गढ के बुर्ज में रहा करते थे।

'दाँता हाउस' स्थान ठहरने के लिए निश्चित हुआ। अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन, भागवत सप्ताह, भक्तमाल कथा आदि कार्यक्रम के सूचना-पत्र छप गये और 22 दिन का कार्यक्रम निर्धारित हो गया।

द्वितीय आषाढ कृष्णा द्वादशी को आचार्यश्री का ट्रेन (रेलगाड़ी) द्वारा जयपुर पादार्पण हुआ। स्टेशन पर सहस्रों नर-नारी अगवानी (स्वागत) हेतु मालायें लिये प्लेटफार्म पर खड़े हुए थे। फूलों की वर्षा से प्लेटफार्म और मुसाफिरखाना (प्रतीक्षालय) रंग-बिरंगी बिछायत के रूप में सुशोभित हो गया। ट्रेन से ज्यों ही आचार्यश्री उतरने लगे, उस समय सर्वप्रथम तत्कालीन वृन्दावनस्थ रासमण्डली के स्वामी श्रीरामजी के लघु भ्राता श्रीघनश्यामजी ने, जो स्वयं श्रीठाकुरजी की स्वरूपाई में थे, आचार्यश्री को पुष्पमाल्यार्पण कर सबको चकित कर दिया। दिन के 11 बजे से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, जो प्रमुख बाजारों से होती हुई सायंकाल 8 बजे के लगभग 'दाँता हाउस' पहुंची। सहस्रों स्थलों पर आचार्यश्री की आरतियाँ उतारी गईं। अनेक संकीर्तन मण्डलियाँ, विविध बैण्डबाजे, सन्त-महन्त-महात्मा, विद्वान् संकीर्तन तथा जय ध्वनि के साथ असंख्य भक्तजन एवं भक्तिमती मातायें हर्षोल्लास पूर्वक सुशोभित हो रही थी। इस शोभायात्रा में जयपुर के सभी सम्प्रदाय के वैष्णव सम्मिलित थे। सभी प्रेमविभोर हो रहे थे। वस्तुतः इतनी लम्बी शोभायात्रा इन वर्षों में किसी भी धर्माचार्य की यहाँ जयपुर में आयोजित नहीं हुई थी।

निर्धारित क्रम के अनुसार सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा। जयपुर के भक्तों ने हृदय खोलकर अपने-अपने मकानों पर पधरावनियाँ करवाईं। अन्तिम पधरावनी श्रीरंगीलीशरणजी (छगनलालजी) मोहनलाल

बजाज के यहाँ उसी दाँता हाउस में हुई। चरण पूजा के पश्चात् श्रीरंगीलीशरणजी ने अपना समस्त घर-द्वार दुकान आदि सब की चाबियाँ लेकर आचार्यश्री के चरणों में रख दी। दर्शकजन चकित हो गये। ऐसी भेंट 85 वर्ष पूर्व जयपुर त्यागने के बाद पीसांगन नगर में हुई थी। पीसांगन दरबार ने अपनी एक सवा लाख वार्षिक आय के राज्य का पट्टा लिखकर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के चरणों में यह कहकर अर्पित कर दिया था– जयपुर राज्य की ओर से जो सवालाख रुपये की वार्षिक सेवा होती थी, उसकी कमी हुई है। अतः उसकी पूर्ति पीसांगन ठिकाने की पूरी जागीरी से हो जाय। श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में यह अङ्गीकार की जाय। श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने पीसांगन के राजाजी को धन्यवाद देते हुए कहा– राजन्! श्रीसर्वेश्वर प्रभु की चारों दिशाएँ जागीर में हैं, कुछ भी कमी नहीं। पीसांगन की जागीरी पीसांगन राज-परिकर के लिये है, उसी कार्य में उपयोग किया जाय। किन्तु जब राजाजी ने यह नहीं माना, तब आचार्यश्री ने आज्ञा दी– अच्छा आपकी भेंट स्वीकार की गई, किन्तु भगवान् की प्रसादी प्राप्त करना भक्त का परम कर्तव्य है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रसादी के रूप में पीसांगन राज्य दिया जा रहा है, इसकी आय में से केवल दो सौ रुपये वार्षिक आचार्यपीठ भेजते रहें। गुरुप्रदत्त भगवत्प्रसादी के लिये शिष्य को अस्वीकार नहीं करना चाहिये।

आज जयपुर में आचार्यश्री के पुनः पादार्पण के अवसर पर भी भक्त श्रीरंगीलीशरणजी ने वही दृश्य उपस्थित कर दिया था। प्रसादी रूप में आचार्यश्री ने उनको **भक्त-भूषण** की पदवी के साथ-साथ चाबियाँ पुनः प्रदान कीं, तब उन्होंने स्वीकार कर लिया।

यद्यपि 85 वर्ष पश्चात् पुनः जयपुर में आचार्यश्री के पादार्पण होने का यह श्रेय जयपुर निवासी सभी भक्तजनों को है, तथापि लगन, परिश्रम और अर्थ व्यय एवं शारीरिक श्रम ये सब **भक्त-भूषण श्रीरंगीलीशरणजी** का था। अतः इस आयोजन में उनका नाम विशेष उल्लेखनीय है। उसके पश्चात् तो आचार्यश्री का जयपुर में कई बार समारोह पूर्वक पादार्पण हुआ और होता ही रहता है। यहाँ के भक्तों की भावनाएँ आदर्श एवं अनुकरणीय हैं। इसी से कई सज्जन जयपुर की श्रीवृन्दावन से तुलना करते हैं।

कानपुर सार्वभौम साधु मण्डल के विशेषाधिवेशन पर आपश्री का पादार्पण—

विक्रम सम्वत् 2009 के कार्तिक कृष्णपक्ष में स्वामी श्रीनारदानन्दजी एवं श्रीभास्करानन्दजी द्वारा आयोजित सार्वभौम साधु-मण्डल के विशेषाधिवेशन पर आपश्री का कानपुर पधारना हुआ। आपके साथ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के तीनों अधिकारी वृन्द तथा वृन्दावन से व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय के श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया तर्क-तर्कतीर्थ, अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा के प्रधानमन्त्री ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी, बाबा श्री माधुरीशरणजी वन-विहार, वर्तमान अली माधुरीकुटी (रमणरेती) श्रीठाकुरदासजी विहारीजी का बगीचा, विद्वद्वरेण्य पं. श्रीभागीरथ झा न्याय-वेदान्ताचार्य आदि महानुभाव थे।

शोभायात्रा के शुभअवसर पर वायुयान द्वारा की गई पुष्पवृष्टि को देखकर जनसमुदाय का मन हर्षोल्लासित हो रहा था। इस अवसर पर विशेष रूप से सुसज्जित राजकीय मार्ग में भक्तों द्वारा पद-पद पर नीराजन एवं ऋतु अनुसार भावनापूर्ण सेवा सम्पादन की गई थी।

इस आयोजन में उत्तर-प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री गोविन्दवल्लभजी पंत तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक गुरुजी श्रीगोलवलकरजी, स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी महाराज एवं रामायणी श्रीप्रेमदासजी आदि महानुभावों का भी पधारना हुआ था।

इस पंचदिवसीय बृहत्सम्मेलन में एक दिन अर्थात् कार्तिक कृष्णा दशमी सोमवार के दिन आपश्री के सभापतित्व में समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन तथा सभापति पद से दिये गये आपश्री के शुभाशीर्वादात्मक सन्देश को श्रवण कर इस अनुपम सत्संग समारोह का सभी महानुभावों ने अपूर्व लाभ लिया।

मल्हारगढ़ के 'श्रीविष्णुयाग' में पादार्पण—

इसी वर्ष माघ शुक्ल पक्ष में मल्हारगढ़ जि. गुना (म.प्र.) के महान्त श्रीरामगोविन्ददासजी द्वारा आयोजित श्रीविष्णु-याग के शुभावसर पर आपश्री का श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित मल्हारगढ पधारना हुआ। इस आयोजन पर चारों ओर के सन्त-महान्त एवं मठाधीशों का शुभागमन हुआ था। यह विशाल याग अनेक याज्ञिक विद्वानों के साथ वाराणसी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं0 श्रीदौलतरामजी गौड़ वेदाचार्य के आचार्यत्व में सुसम्पन्न हुआ था, जो ग्राम से दूर बाहर एकान्त स्थल परम पावन वेत्रवती के (पर्वत मालाओं से घिरे हुये सुरम्य) महुठा घाट पर आयोजित था। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा के दर्शन, सभा मंच पर समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन तथा आचार्यश्री के सदुपदेशों से अत्यन्त प्रभावित हो दर्शकगण श्रोताओं की अपार भीड़ लगी रहती थी। एक ओर सुदूर तक साधु-सन्त, महात्मा एवं महन्त, मठाधीशों के तम्बू, डेरा तथा रावटियाँ और भक्तों के आवास स्थान और दूसरी ओर व्यापारियों की दुकानों का दोनों ओर बाजार तथा रासलीला, रामलीला का भी सुन्दर आयोजन था।

इस शुभावसर पर आपश्री के तत्त्वावधान में ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी के सुप्रयास से अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा वृन्दावन एवं अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर संघ का विशेषाधिवेशन भी सुसम्पन्न हुआ।

बीना स्थान के महान्त श्रीभगवानदासजी की विशेष प्रार्थना पर आपश्री का यहाँ वेत्रवती पार कर बीना पधारना हुआ। वहाँ सहस्रों की संख्या में भक्तजनों ने आपश्री का स्वागत किया और शोभायात्रा में सम्मिलित होने हेतु उपस्थित रहे। स्थान में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा सुसम्पन्न हुई और रात्रि में विद्वानों के प्रवचन तथा आचार्यश्रीचरणों के सदुपदेश होकर दूसरे दिन प्रातःकाल वहाँ से प्रस्थान कर ललितपुर श्रीमहान्तजी के यहाँ एक रात्रि ठहर कर वहाँ से तालबहेट के मन्दिर में सेवा हुई, वहाँ सायंकाल इण्टर कालेज के अध्यापक वर्ग एवं सहस्रों छात्रों द्वारा कालेज में ही आयोजित एक सभा में आपश्री के द्वारा शुभाशीर्वादात्मक मार्ग-दर्शन संप्राप्त किया। तदनन्तर प्रातः वहाँ से दतिया पधारना हुआ। दतिया स्थान के महान्त श्रीसर्वेश्वरदासजी ने अनेक सन्त-महन्तों एवं भक्तजनों को साथ लेकर आपश्री का स्वागत किया और विशाल शोभायात्रा के साथ मन्दिर में विराजमान कर चरण-पूजन किया। रात्रि में सदुपदेश हुये। एक दो दिवस विराजना हुआ। दतिया के अन्य कई एक मन्दिरों में भी आचार्यश्री का पादार्पण हुआ।

दतिया से झांसी पधारना हुआ। वहाँ श्रीकुञ्जविहारीजी के मन्दिर में विराजना हुआ। यहाँ के महन्त श्रीछबीलीदासजी ने अपने भक्तों के साथ आपश्री का स्वागत सत्कार कर रात्रि में सत्संग का अनुपम लाभ दिया। दूसरे दिन स्थानीय वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संचालक वैद्यप्रवर श्रीरामनाराणजी आयुर्वेदाचार्य की प्रार्थनानुसार आयुर्वेद भवन में भी पादार्पण हुआ। चरण-पूजनादि के पश्चात् श्रीवैद्यराजजी ने लगभग एक सौ से अधिक ग्रन्थ एवं औषधियाँ समर्पण कर निर्माणशाला का अवलोकन कराया।

एक दिन झांसी से आपश्री का भगवद्दर्शनार्थ ओरछा भी पधारना हुआ। वहाँ युगलकिशोर भगवान् श्रीसीतारामजी की परम मनोहर दिव्य झांकी के दर्शन कर तथा मन्दिर की निर्माणशाला का अवलोकन कर आचार्यश्री अत्यन्त प्रमुदित हुए।

झाँसी से प्रस्थान कर ट्रेन द्वारा आगरा पहुंचना हुआ। प्रातःकाल आगरा छावनी उतरे। भगवत्सेवार्थ वहाँ से दो माइल की दूरी पर एकान्त में जल जंगल की सुविधा देख एक कूप पर भगवान् के राजभोग पर्यन्त की सेवा सुसम्पन्न की। प्रसाद पाकर वहाँ से वापिस लौटते समय कुछ ही आगे चले होंगे कि पीछे से 'बाबा ठहरो! बाबा ठहरो!' ऐसी आवाज देते हुए 5-7 व्यक्ति दौड़े चले आ रहे हैं– उनमें आगे जो एक व्यक्ति था, उसका काला वर्ण, मोटा शरीर, केवल बनियान पहिने और तहमद लगाये हुए था। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे और भागे आने के कारण शरीर के कपड़े पसीने से गीले हो रहे थे। आचार्यश्रीचरणों के सामने आकर एकदम गिरते हुए दण्डवत् प्रणाम किया। आचार्यश्री के पूछने पर साथ वाले व्यक्तियों ने कहा– महाराज! यह जाति का मुसलमान है और बड़ा ही भक्त है। जिस समय हम लोग दर्शन करने आये थे, उस समय यह बाहर चला गया था। आने पर इसे मालूम हुआ कि इस प्रकार सन्त आये हुए थे। इसने कहा, देखो इस गाँव में मैं ही एक ऐसा अभागा रहा जो दर्शन नहीं कर सका। तब दौड़ता हुआ दर्शन करने को आया है। दतिया महान्त श्रीसर्वेश्वरदासजी भी आपश्री के साथ ही थे। सभी ने देखकर उसकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि देखो सन्तों के प्रति इनकी कितनी श्रद्धा और भावना है और उसे भगवत्प्रसाद तथा उत्तरीय पीत वस्त्र प्रदान किया।

स्थल-सूर्यपोल उदयपुर के आयोजन में पादार्पण—

विक्रम संवत् 2010 के वैशाख शु. 3 (अक्षय) तृतीया को मेवाड़ मण्डलेश्वर स्थलाधीश श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह तथा श्रीभक्तमाल कथा-प्रवचन के विशाल समारोह (विशेषाधिवेशन) पर आपश्री का उदयपुर पादार्पण हुआ। आपकी शोभायात्रा का दृश्य परम मनोहर एवं दर्शनीय था। इस शुभावसर पर तीनों अनियों के श्रीमहन्त एवं व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय के श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज तर्क-तर्क तीर्थ का भी पधारना हुआ था। भक्तमाली श्रीमदनमोहनदासजी द्वारा गायन रूप में भक्तमाल की सुललित कथा का अपूर्व रस पान कर प्रेमी श्रोताजन भाव-विभोर हो जाते थे।

इस शुभावसर पर एक दिन महाराणा श्रीभूपालसिंहजी साहब (उदयपुर नरेश) का भी पधारना हुआ और दिन भर स्थल में ही विराजना रहा।

श्रीनिम्बार्कतीर्थ-यात्रा स्पेशल ट्रेन में भी श्रीनिम्बार्क-जयन्ती महोत्सव उदयपुर स्थल में ही हुआ

था। वर्तमान महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी आयुर्वेदाचार्य ने भी उसी नियमानुसार भावनापूर्वक कई बार आचार्यश्री का पादार्पण कर विशेष समारोह पूर्वक चरण-पूजन किया है।

प्रयाग कुम्भ में श्रीनिम्बार्क नगर की स्थापना—

विक्रम संवत् 2010 के माघ मास में श्रीप्रयागराज के कुम्भ पर्व पर अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य तथा अधिकारी श्रीनरहरिदासजी श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारीत्रय, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी, मन्त्री-श्रीनिम्बार्क महासभा वृन्दावन तथा बाबा श्रीमाधुरीशरणजी आदि महानुभावों के पारस्परिक पूर्ण सहयोग से **श्रीनिम्बार्कनगर** की स्थापना हुई। सरकार से भूमि ली गई, उसके चारों ओर परिधि (हदबन्दी) कर मध्य में विशाल सभा-स्थल (पंडाल) श्रीसर्वेश्वर प्रभु का मन्दिर, आचार्यश्री-कक्ष, रसोई-भण्डार, सन्त-सेवा सदन, चारों ओर समागत सन्त-महन्तों के आवास स्थान, अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा का शिविर, औषधालय, वाचनालय तथा पूछताछ, प्रधान कार्यालय आदि-आदि का निर्माण हुआ। नल-बिजली आदि सभी का प्रबन्ध कराया। तीसरी पंक्ति में चारों ओर सद्गृहस्थ भक्तजनों के आवास आदि का निर्माण हुआ। श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का पादार्पण हुआ। भक्तप्रवर श्रीटण्डनजी के बँगले से लगभग त्रिवेणी संगम तक 3 मील की दूरी है, वहाँ से प्रातः 8 बजे से आचार्यश्री की भव्य शोभायात्रा पदाति प्रारम्भ होकर दिन के 11 बजे श्रीनिम्बार्कनगर पहुँची। इस शोभायात्रा में— तीनों अनी अखाड़ों के श्रीमहान्त नागा, अन्य कई सन्त-महान्त छड़ी, चँवर, छत्र, वैण्डवाद्य, नौबत, निशान, पट्टेबाजी आदि के साथ तथा सद्गृहस्थ दर्शनार्थी भक्तजनों द्वारा जयघोष की तुमुल ध्वनि हो रही थी, शोभायात्रा का अद्भुत (परम मनोहर) दृश्य प्रतीत हो रहा था।

श्रीनिम्बार्क नगर में कई भक्तजनों ने पूरे माघ निवास करते हुए कल्पवास व्रत किया। प्रतिदिन श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, सन्त-सेवा, समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन, आचार्यश्री के सदुपदेश, औषधालय, वाचनालय आदि पारमार्थिक सेवायें पूरे माघ मास चलकर यह आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ।

आचार्यश्री के शिविर का श्रीनिम्बार्क-नगर नाम इसी कुम्भ से प्रचलित हुआ। तत्पश्चात् प्रत्येक कुम्भ पर नगर निर्माण होता आ रहा है। वह वि.सं. 2036 के नासिक कुम्भ तक निम्बार्क नगरों की संख्या 16 तक हो गई। भक्तजनों की ओर से आर्थिक सहायता एवं रसोईयाँ खूब मात्रा में आती हैं। सभी कुम्भ पर्वों पर बराबर भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री का पादार्पण होता है। प्रत्येक कुम्भ में श्रीनिम्बार्क नगर के भव्य पण्डाल में प्रातः 6 बजे से लेकर रात्रि 11 बजे पर्यन्त मंगला, शृङ्गार, कथा, प्रवचन, नाम संकीर्तन, रात्रि में रासलीला, रामलीला आदि विविध कार्यक्रम निरन्तर चलते ही रहते हैं। सहस्रों की संख्या में भक्तजनों की उपस्थिति रहती है। श्रीनिम्बार्क-नगर में आचार्यश्री के साथ कई एक सन्त-महान्त एवं सैकड़ों भक्त परिवार सुविधापूर्वक ठहरते हैं।

श्रीनिम्बार्क नगर खालसा की महन्ताई भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री के तत्त्वावधान में

समस्त भेष की ओर से अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारी श्रीवियोगी विश्वेश्वरजी को विगत नासिक कुम्भ के शुभावसर पर प्रदान की गई थी। एक युग अर्थात् 12 वर्ष तक आपने सुचारु रूप से श्रीनिम्बार्क नगर का कार्य संचालन किया, किन्तु 1974 के प्रयाग कुम्भ में अस्वस्थ हो जाने पर एवं वृद्धावस्था में अधिक दौड़ धूप न होने के कारण आचार्यश्री ने सेवाभावी भक्तों की एक कुम्भ-प्रबन्ध-समिति बना दी है। इसी कुम्भ प्रबन्ध समिति के द्वारा सब कार्य संचालन हो रहा है और होता रहेगा।

चित्रकूट भक्ति-सम्मेलन में पादार्पण —

विक्रम संवत् 2012 के आश्विन मास के शुक्लपक्ष में सन्त श्रीकृपालुदासजी द्वारा आयोजित भक्ति-सम्मेलन में आपश्री का श्रीचित्रकूट भी पादार्पण हुआ। वहाँ श्रीमन्दाकिनी के परम पावन तट पर संस्थित तुमसरवाली धर्मशाला में विराजना हुआ। श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक दर्शन तथा पंचकालीन सेवा में दर्शनार्थी भक्तजनों की प्रतिदिन अपार भीड़ लगी ही रहती थी।

इस बृहत्सम्मेलन में एक दिवस आश्विन शुक्ला पूर्णिमा दि. 31.10.1955 को आपश्री के सभापतित्व में भक्ति तत्त्व पर अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए तथा आपश्री के शुभाशीर्वादात्मक शुभ सन्देशों से समुपस्थित सभी भक्तजनों को अनुपम मार्गदर्शन मिला।

भक्ति-सम्मेलन सानन्द सम्पन्न होने के पश्चात् श्रीकामद गिरि परिक्रमा के अनन्तर श्रीनिम्बार्कीय चोपड़ा स्थान से आपश्री ने अपने परिकर तथा अनेक सन्तों के साथ पदाति यात्रा प्रारम्भ कर स्फटिक-शिला, अनुसूया, गुप्त गोदावरी, हनुमानधारा तथा भरतकूप आदि तीर्थ स्थलों की यात्रा सुसम्पन्न की। आपके साथ इस यात्रा में पीठ के तीनों अधिकारी एवं बाबा श्रीमाधुरीशरणजी प्रभृति अनेक महानुभाव भी सम्मिलित थे।

श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा —

वि.सं. 2013 में भक्तप्रवर श्रीरामनिवासजी गोयल (रेल्वे दलाल एण्ड क्लेम्स एजेन्ट) माल गोदाम अजमेर के संयोजकत्व में आपश्री ने श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा की। यह यात्रा भाद्रपद शुक्ला दशमी को अजमेर से प्रस्थान कर मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में लौटकर श्रीपुष्करराज के स्नान के अनन्तर अजमेर में आकर सानन्द सम्पन्न हुई। इस यात्रा की यह विशेषता थी कि श्राद्ध पक्ष में गया श्राद्ध, मैसूर का सुप्रसिद्ध दशहरा, रामेश्वरम् में शरद्-पूर्णिमा, बम्बई की दीपमालिका—अन्नकूट और उदयपुर के स्थल में श्रीनिम्बार्क जयन्ती मनाई गई।

तीनधाम सप्तपुरी एवं मार्ग में आने वाले सभी स्थलों का परिचय, माहात्म्य, कथा, सत्संग, भगवन्नाम संकीर्तन, सन्त सेवा आदि इस स्पेशन ट्रेन की विशेषता थी। आपश्री की अधिकारी पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी ने आगरा में अगवानी की। रात्रि में आगरा बाजार में आपश्री के सदुपदेश श्रवण का आयोजन नागरिकों ने किया। प्रबन्धाधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, अधिकारी श्रीनरहरिदासजी, पुजारी, रसोईया, भण्डारी, विद्वानों में पं. श्रीसुरति झा, पं. श्रीगोविन्ददासजी सन्त, श्रीरंगीलीशरणजी वेदान्ताचार्य, छड़ीदार आदि एवं साथ में किशनगढ़- रैनवाल के महान्त श्रीहरिवल्लभदासजी तथा वृन्दावन की संकीर्तन मण्डली एवं अनेक

महान्त, सन्त-महात्मा थे। अजमेर, ब्यावर, किशनगढ़, रैनवाल और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के आस-पास के भक्त परिवारों से पूरी स्पेशल ट्रेन भरी हुई थी। सुख शान्तिपूर्वक यात्रा सानन्द सम्पन्न हुई।

वि.सं. 2014 में आचार्यश्री का **चला** नगरस्थ श्रीगोपाल मन्दिर में पादार्पण हुआ। यह स्थान विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के अन्त और सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य श्रीपीताम्बरदेवजी ने संस्थापित किया था। यहाँ चार सौ वर्षों में अच्छे-अच्छे सिद्ध सन्त हो चुके हैं। श्रीपीताम्बरदेवजी से ग्यारहवीं पीठिका में बजरङ्गदास (अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी) है। आपने 2014 ज्येष्ठ शु. नवमी को परम गुरु महान्त श्रीब्रह्मदासजी महाराज का मेला (भण्डारा) महोत्सव किया। उसमें आचार्यश्री का समारोह पूर्वक पादार्पण हुआ। अधिकारीजी को महन्ताई प्रदान की गई। थोड़े ही दिनों बाद नीमकाथाना (श्रीनिम्बार्क स्थान) की बड़ी जमात के महान्तजी का परमधाम वास हो जाने पर उनके स्मृति-महोत्सव पर भी बड़ी जमात में पादार्पण हुआ। इधर आपश्री की इन स्थानों की ये दोनों प्रथम यात्रायें थीं।

वि.सं. 2016 से 2021 तक महाराजश्री का भारत के कई प्रदेशों में भ्रमण हुआ।

प्रयाग कुम्भ में होने वाले विश्व हिन्दू परिषद् के महाधिवेशन में आपश्री का पादार्पण —

विक्रम संवत् 2022 के माघ मास में होने वाले श्रीप्रयागराज के कुम्भावसर पर आयोजित विश्व हिन्दू परिषद् के महाधिवेशन में माघ शुक्ला प्रतिपदा, शनिवार दि. 22 जनवरी सन् 1966 के दिन इस महाधिवेशन का निमन्त्रण आने पर आपश्री का प्रयाग कुम्भ स्थित श्रीनिम्बार्क नगर से विश्व हिन्दू परिषद् के महाधिवेशन में पधारना हुआ। इस महाधिवेशन में प्रायः सभी मठों के शंकराचार्य और वैष्णवाचार्य तथा कई एक विशिष्ट-अति विशिष्ट विद्वानों का पधारना हुआ था। महाराणा साहब श्रीभगवतसिंह जी उदयपुर एवं धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज भी पधारे थे। राजस्थान-विश्व हिन्दू परिषद् के संघटन मन्त्री श्री द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया भी थे। धर्माचार्यों के सदुपदेश तथा विद्वानों के प्रवचनों से सभी समुपस्थित जन-समुदाय ने मार्गदर्शन प्राप्त किया था।

7 नवम्बर 1966 के गोरक्षा आन्दोलन, दिल्ली में पादार्पण —

विक्रम सम्वत् 2023 के कार्तिक मास में गोरक्षा महाभियान समिति दिल्ली द्वारा आयोजित गोरक्षा आन्दोलन दिल्ली में भी आपश्री का कार्तिक कृष्णा नवमी, सोमवार दिनांक 7 नवम्बर सन् 1966 को सैकड़ों सन्तों को साथ लेकर दिल्ली में पादार्पण हुआ।

इसके पूर्व आपने अपने क्षेत्र जैसे– किशनगढ़, अजमेर, ब्यावर तथा जयपुर आदि कई एक नगरों में गोरक्षा हेतु भ्रमण कर प्रचार-प्रसार भी किया था।

इस प्रकार अपने ही एक स्वसाम्प्रदायिक स्थान मालाधारी अखाड़ा वृन्दावन के महान्त **श्रीकमलदासजी** भी वहाँ से कई एक महात्माओं को साथ लेकर दिल्ली आये थे और अपने प्राणों का भी बलिदान किया था तथा सदा के लिए अपना नाम अमर कर गये।

इस आन्दोलन में सभी मत मतान्तरों के गो-प्रेमी भक्तजनों ने लगभग पन्द्रह लाख की संख्या में उपस्थित होकर **'न भूतो न भविष्यति'** वाली कहावत को चरितार्थ कर दिखाया था।

गोरक्षार्थ किये जाने वाले अनशन व्रत पर गम्भीर स्थिति होने पर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी महाराज से मिलने हेतु श्रीगोवर्धनपीठ, पुरी में आपश्री का पादार्पण—

7 नवम्बर सन् 1966 में दिल्ली के गोरक्षा आन्दोलन होने के पश्चात् श्रीगोवर्धनपुरी पीठाधीश्वर अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीस्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के गोरक्षार्थ अनशन व्रत लेने पर उसके 21 वें ही दिन पश्चात् उनकी गम्भीर स्थिति के समाचार श्रवण कर आपश्री का उनसे मिलने हेतु पुरी पधारना हुआ। मार्गशीर्ष कृ. सोमवती अमावस्या सं. 2023 दिनाङ्क 12 दिसम्बर का दिन था, वहाँ परस्पर मिलकर और कुशल मंगल समाचार पूछने पर जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य महाराज ने आचार्यश्री से कहा कि आपश्री को इतनी दूर पधारने का बड़ा कष्ट हुआ।

आपश्री के साथ उस समय पं. श्रीमुरलीधरजी शास्त्री और श्रीनवलकिशोरजी व्यास तथा महात्मा श्रीशुकदेवदासजी संगीताचार्य भी थे।

पुरी से लौटते हुये सम्बलपुर (उड़ीसा) में सम्वाददाताओं की एक गोष्ठी में आपश्री ने गोरक्षा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किये तथा यहाँ से नागपुर, दुर्ग, अमरावती, आकोला, खाँमगाँव, धूलिया, सैन्धवा एवं इन्दौर आदि विशिष्ट नगरों में गोरक्षा पर जन-समुदाय को प्रेरणा देते हुए आपश्री का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पधारना हुआ। यहाँ से पुनः श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी के अनशन काल में उनसे गोरक्षा सम्बन्धी विशेष विचार-विमर्श करने हेतु आपश्री का श्रीधाम वृन्दावन पधारना हुआ।

ब्यावर के गोरक्षा सम्मेलन में आपश्री का पादार्पण—

वि.सं. 2025 सन् 1968 में श्रीगोवर्धनपीठाधीश्वर पुरी के शंकराचार्य जगद्गुरु श्रीस्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज ने ब्यावर (राजस्थान) में ही चातुर्मास्य किया था।

व्रत समाप्ति पर आश्विन मास में गोरक्षा सम्मेलन का विशाल आयोजन भी रखा गया था, जिसमें धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीअभिनव सच्चिदानन्दतीर्थजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज तथा अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज (आपश्री) का पधारना हुआ था।

इन धर्माचार्यों के अतिरिक्त कई एक विशिष्ट विद्वान् तथा धर्मसंघ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की भी उपस्थिति थी। आश्विन कृष्णा चतुर्थी मंगलवार, 10 सितम्बर 1968 को सभी धर्माचार्यों की एक साथ विशाल शोभायात्रा का आयोजन परम दर्शनीय था। इस आयोजन के विस्तृत वर्णन युक्त स्मारिका भी ब्यावर से निकली थी।

व्रज चौरासी कोसीय पद यात्रा —

वि.सं. 2026 तदनुसार ईसवी सन् 1970 फाल्गुन चैत्र मास में आपने तीन सौ से अधिक विरक्त

वैष्णव सन्तों तथा लगभग तीन हजार सद्गृहस्थ भक्तों को साथ लेकर श्रीव्रज-चौरासी कोसीय पदाति व्रजयात्रा शास्त्रीय विधान से सम्पन्न की। यह यात्रा श्रीवृन्दावन वंशीवट से प्रारम्भ होकर पुनः वहीं आकर सानन्द सम्पन्न हुई। यात्रा करने वाले भक्तों का कहना था कि– **'न भूतो न भविष्यति'** वाली कहावत को चरितार्थ करने वाली ऐसी पदाति व्रज-यात्रा हमने तो नहीं देखी। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में भक्तों का उत्साह, प्रेम तथा उनके द्वारा कृत स्वागत समारोह शोभायात्रा आदि का अपूर्व दृश्य था।

अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से प्रतिपक्ष प्रकाशित होने वाले श्रीनिम्बार्क के वर्ष 9 का विशेषाङ्क **श्रीव्रजयात्रा अङ्क** के नाम से प्रकाशित हुआ है। स्थान-स्थान पर लिये गये चित्रों से सुसज्जित जिसमें पूरी व्रजयात्रा का वर्णन है। इस अंक को पढने से उस समय का तत्कालीन दृश्य मानों नवीन बनकर सामने आ जाता है। व्रजयात्रा वर्णन के अतिरिक्त अनेक सन्त-महात्मा एवं विद्वानों के व्रज-महत्त्व पर लेख हैं। अतः यह अंक पठनीय है। इसके पढने से सब यात्रा वर्णन ज्ञात हो जाता है।

इस यात्रा की विशेषता यह थी कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा के दर्शन, कथा, सत्संग, नाम संकीर्तन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश तथा रात्रि में श्रीरासलीलानुकरण और स्थान-स्थान पर आचार्यश्री की पधरावनियाँ व वैष्णवसेवा (पंगत) होती थी। कई एक चमत्कार पूर्ण घटनाओं से ओत-प्रोत श्रीव्रजयात्रा अंक को एक बार मँगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए।

धर्म-संघ द्वारा आयोजित विशेषाधिवेशनों पर आपश्री का पादार्पण—

धर्मसंघ द्वारा आयोजित महाधिवेशनों पर जैसे– श्रीगंगानगर, मेरठ, आकोला के वेद सम्मेलन, दक्षिण हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के सर्ववेदशाखा सम्मेलन, धर्मसंघ सम्मेलन जमशेदपुर, टाटानगर (विहार) आदि-आदि कई स्थानों में आपश्री का पादार्पण हुआ।

महान्त श्रीराधिकादासजी के स्मृति महोत्सव पर रैनवाल में पादार्पण—

वि.सं. 2030 के आश्विन मास में किशनगढ रेनवाल के सुप्रसिद्ध स्थान श्रीकृष्णबिहारीजी मन्दिर के वर्तमान महान्त श्रीहरिवल्लभदासजी साहित्यदर्शन शास्त्री द्वारा आयोजित अपने परम पूज्य गुरुदेव गोलोकवासी महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज भागवत-भूषण की 21 वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य पर विद्वद्वरेण्य पं. **श्रीबदरीनारायण जी** कृत सप्ताह प्रवचन, गोलोकवासी महान्त श्रीराधिकादासजी की छत्री पर कलशारोहरण तथा उनके जीवन-चरित्र सम्बन्धी प्रकाशित ग्रन्थ का विमोचन आदि विविध आयोजनों के साथ होने वाले समारोह पर आश्विन शुक्ला में आपश्री का किशनगढ-रेनवाल पादार्पण हुआ।

जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्य षष्ठ शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का अभूतपूर्व आयोजन–

वि.सं. 2031 के चैत्र कृष्णा तृतीया रविवार से चैत्र कृष्णा सप्तमी गुरुवार तदनुसार दि. 30 मार्च से दि. 3 अप्रेल सन् 1975 पर्यन्त अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (अजमेर) राजस्थान में आपश्री के तत्त्वावधान में ही अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का पञ्चदिवसीय बृहद् आयोजन अनेक कार्यक्रमों के साथ बड़े समारोह पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलनान्तर्गत सुदर्शन महायाग, वैष्णव धर्म सम्मेलन, हिन्दु संस्कृति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, और महिला सम्मेलन एवं नवनिर्मित भव्य गोशाला का उद्घाटन, ग्रन्थ विमोचन प्रभृति धार्मिक समारोह सम्पन्न हुए।

इस शुभावसर पर चारों पीठों के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य, चतुःसम्प्रदाय पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीवैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्य और धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अनेक सन्त-महान्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, अनी अखाड़ों के श्रीमहान्त तथा विश्व विख्यात विद्वान् और विदुषी महिलायें तथा अनेक धार्मिक सांस्कृतिक कविगण भी पधारे थे।

पंच दिवसीय इस परम पुनीत कुम्भ सदृश महान् पर्व पर समस्त धर्माचार्यों का एकत्रित हो एक मञ्च पर विचार विनिमय करने का भारत में यह पहला ही दृश्य था।

अतएव **'न भूतो न भविष्यति'** वाली सदुक्ति को चरितार्थ करने वाला यह पंच दिवसीय अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन अपने ढङ्ग का एक निराला ही था। उक्त सम्मेलन में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीहरदेवजी जोशी, राजमाता सिंधिया ग्वालियर, महाराणा साहब श्रीभगवतसिंहजी उदयपुर तथा नेपाल नरेश के प्रतिनिधि रूप में उनके नायब बड़े राजगुरु पं. श्री जूनानाथजी आदि-आदि महानुभाव भी पधारे थे।

इस विराट् सम्मेलन की सविवरण **सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका** प्रकाशित है। बहुमूल्य चित्र एवं समय-समय पर लिये गये चित्रों से सुसज्जित स्मारिका की न्यौछावर 21 रु. मात्र है। मंगाकर धर्माचार्य एवं विद्वानों के प्रवचन पढ़कर लाभ लीजिये।

वि.सं. 2047 में आप के तत्त्वावधान में **युगसन्त श्रीमुरारीबापू** की नव दिवसीय **श्रीरामकथा** का एक महत्त्वपूर्ण आयोजन हुआ था। विस्तृत विवरण **श्रीरामकथा अंक** में द्रष्टव्य है। वि.सं. 2050 में आपश्री के आचार्यपीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव **स्वर्णजयन्ती महोत्सव** के शुभावसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का बृहद् आयोजन हुआ था, जिसका विस्तृत विवरण **स्वर्ण जयन्ती स्मारिका** में द्रष्टव्य है। वि.सं. 2053 में युगसन्त **श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीव्रजदासी भागवत का विमोचन** समारोह भी यहीं आचार्यपीठ में अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इसी प्रकार आपके द्वारा अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही श्री पुरुषोत्तम-मासीय आयोजनों पर श्रीमद्भागवत के अष्टोत्तरशत पाठ पारायण तथा श्री सुदर्शन-महायाग, श्रीगोपालयाग, श्रीमुकुन्द महायाग एवं श्रीरासलीला, रामलीला, संगीत समारोह भी बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए हैं।

भारत भ्रमण और धर्म प्रचार-प्रसार—

आपने पीठासीन होने के पश्चात् (वि.सं. 2000 के बाद) 14 वर्ष की अवस्था से ही निज आराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं परिकर सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे– जयपुर, जोधपुर, अजमेर-पुष्कर, भीलवाड़ा, उदयपुर, इन्दौर, पूना, मुम्बई, सोलापुर, इचलकरंजी, अयोध्या, बनारस, कलकत्ता, पुरी, उज्जैन, द्वारका, मथुरा-वृन्दावन, सौराष्ट्र, मुंगी-पैठण, प्रभृति तथा इनके आस-पास के छोटे-बड़े कई स्थानों में अनेक बार भ्रमण कर अपने दिव्य उपदेशों-सन्देशों द्वारा भारतीय संस्कृति तथा वैष्णव धर्म की जागृति की है।

इस प्रकार इस दीर्घकालिक 58 वर्ष के परिभ्रमण में सहस्रों ही की संख्या में धर्मप्राण जनता ने आपसे दीक्षा-शिक्षा ग्रहण कर आपके दिव्य सदुपदेशों द्वारा अनुपम लाभ प्राप्त किया है।

श्रीनिम्बार्क दर्शन एवं साम्प्रदायिक सिद्धान्त व उपासना प्रचार-प्रसार भी आपके आचार्यत्व में विशिष्ट व्यवस्था के साथ सुचारु रूप से होता रहा है। निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) की **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव** (ऐतिहासिक-धार्मिक बृहद् मेला), निम्बार्क सत्संग भवन के श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर (मदनगंज) की **श्रीराधाष्टमी महोत्सव**, श्रीपरशुरामद्वारा (श्रीपुष्करराज) की **श्रीनिम्बार्क जयन्ती**, श्रीनिम्बार्ककोट (अजमेर) की **श्रीमद्भागवत जयन्ती** आपकी सत्प्रेरणा का ही सत्फल है।

इसी प्रकार श्री श्रीजी मन्दिर (श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज) प्रताप बाजार, वृन्दावन में **दैनिक सत्संग** और श्रावण शुक्ल पक्ष में आपश्री के तत्त्वावधान में **झूलनोत्सव** बड़े समारोह पूर्वक सुसम्पन्न हो रहे हैं। आपश्री के कृपा प्रसाद से ही आज **'श्रीसर्वेश्वर'** शोधपूर्ण मासिक पत्र वृन्दावन से तथा **'निम्बार्क'** पाक्षिक-पत्र श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से विधिवत् प्रकाशित हो रहे हैं। इन दोनों ही पत्रों से निम्बार्क साहित्य शोध का अभूतपूर्व कार्य किया है। श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र के विशेषाङ्क रूप में **–श्रीनिम्बार्क अङ्क, श्रीवृन्दावनाङ्क, श्रीयुगलशतक, श्रीमहावाणीजी, रसोपासनाङ्क, श्रीनागरिदासजी की वाणी, व्रजलीला अङ्क,** आदि अनेक अङ्क और श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र के **श्रीसर्वेश्वर-अङ्क, श्रीव्रजयात्रा अङ्क, सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका, श्रीरामकथा अङ्क, स्वर्ण जयन्ती स्मारिका** आदि तथा **श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला** प्रभृति साहित्य सम्पादनादि से सम्प्रदाय को महती प्रसिद्धि मिली है।

निर्माण की दृष्टि से भी आपश्री के कार्यकाल में बहुत काम हुए हैं। जैसे– पूरे मन्दिर का जीर्णोद्धार, मदनगंज का भव्य श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर, अजमेर में श्रीनिम्बार्ककोट का भव्य निर्माण, भगवान् श्रीनिम्बार्क तपः स्थली निम्बग्राम में श्रीनिम्बार्क राधाकृष्णविहारीजी का प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त भव्य नूतन मन्दिर, श्रीपुष्करराज स्थित प्राचीन श्रीपरशुरामद्वारा का नवीन रूप द्वारा भव्य मन्दिर का निर्माण, आचार्यपीठ के दोनों विद्यालयों के भवन, सत्संग कथा भवन, राधामाधव गोशाला, यज्ञशाला, औषधालय, श्रीसर्वेश्वर उद्यान, आचार्यकक्ष, छात्रावास भवन, श्रीराधामाधव चौक, श्रीस्वामीजी महाराज की तपः स्थली का नया प्रारूप, आचार्यपञ्चायतन स्थापना, बैंक तथा पोस्ट ऑफिस भवन, गंगासागर पर उद्यान श्रीहनुमान् मन्दिर तथा भव्य अतिथि गृह, भव्य गोशाला, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर तथा यमुनासागर की चार दीवारी व सभा मञ्च का निर्माण, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर पर परकोटा व श्रीनिम्बार्क महादेव मन्दिर का निर्माण, खातोली मोड़ श्रीनिम्बार्कतीर्थद्वार पर श्रीनिम्बार्कमारुति मन्दिर का निर्माण, श्रीनिम्बार्काचार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण कर सरकार को प्रदान करना, झीटियाँ स्थान का श्रीगोपाल मन्दिर का नव निर्माण, श्रीविजयगोपालजी मन्दिर एवं श्रीनृसिंहजी मन्दिर निम्बार्कतीर्थ का जीर्णोद्धार, श्रीधाम वृन्दावन में श्री श्रीजी बड़ी कुञ्ज, पन्नाबाई वाली कुञ्ज, विहारघाट वाली अति प्राचीन कुञ्ज, राधासर्वेश्वर वाटिका, श्रीजी का पक्का बगीचा व अन्य सम्बन्धित कुञ्जों में जीर्णोद्धार व निर्माण, हीरापुरा पावर हाउस के पास निम्बार्क नगर जयपुर में श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारीजी के मन्दिर का भव्य नव निर्माण, श्रीगोपालद्वारा

किशनगढ़ का जीर्णोद्धार, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर के चारों ओर पक्का परिक्रमा मार्ग का नव निर्माण, पण्डरपुर, महू आदि के नव निर्माण सम्बन्धी अनेक कार्य आपके आचार्यत्व काल में सम्पन्न हुए हैं। सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के प्राकट्य स्थल महाराष्ट्र में पैठण समीप मूर्गी– ग्रामस्थ श्रीगोदावरी के पावन तटवर्ती **अरुणाश्रम पर भव्यतम श्रीनिम्बार्क मन्दिर की नव निर्माण की संपूर्ति** भी सम्प्रदाय के लिये परम गौरवास्पद है।

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय एवं श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय श्रीनिम्बार्कतीर्थ की विशिष्ट आदर्श शिक्षण संस्थायें हैं, जहाँ प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का निःशुल्क छात्रावास, आपश्री की देखरेख में चल रहा है। वहाँ के छात्र भारत की संस्कृति का आदर्श जीवन सीखते हैं। आपने संस्कृत और संस्कृति के लिये जो क्रियात्मक योगदान दिया है, वह सर्वथा अनुकरणीय है। श्रीसर्वेश्वर आराधना, गोपालन, भारतीय संस्कृति का संरक्षण, सनातन-वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार, मानव मात्र का कल्याण, साधु-समाज का संघटन, सन्तों और विद्वानों की सेवा ही आपके जीवन की मुख्य साधनाएँ हैं। इन्हीं उद्देश्यों की संपूर्ति हेतु आपकी कई भारतव्यापी यात्रायें सम्पन्न हुई हैं।

संस्कृत में न्याय-व्याकरण एवं वेदान्तादि के गम्भीर अध्ययन के साथ-साथ संगीत, आयुर्वेद, हिन्दी, ब्रजभाषा, बंगला, राजस्थानी आदि भाषाओं की जानकारी पूर्वक आप एक कुशल धर्मोपदेशक ही नहीं, अपितु विविध ग्रन्थों के रचयिता भी हैं– संस्कृत हिन्दी ब्रजभाषा आदि भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। आपके द्वारा विरचित श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत **प्रातः स्तवराज स्तोत्र पर युग्मतत्त्वप्रकाशिका, श्रीयुगलगीतिशतकम्, उपदेश दर्शन, श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु, श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः, श्रीराधामाधवशतकम्, श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्, हिन्दु संघटन, भारत-भारती-वैभवम्, श्रीयुगलस्तवविंशतिः, श्रीजानकीवल्लभस्तवः, श्रीहनुमन्महाष्टकम्, श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्, भारत-कल्पतरु, श्रीनिम्बार्क-स्तवार्चनम्, विवेक-वल्ली, नवनीतसुधा, श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीराधाशतकम्, श्रीनिम्बार्कचरितम्, श्रीवन्दावनसौरभम्, श्रीराधासर्वेश्वर-मंजरी, श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्, छात्र-विवेक-दर्शन, भारत-वीर-गौरव, श्रीराधासर्वेश्वरालोकः, श्रीपरशुराम-स्तवावली, श्रीराधा-राधना, मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका, आचार्य-पञ्चायतन-स्तवनम्, श्रीराधामाधव-रसविलास (महाकाव्य), श्रीसीतारामस्तवादर्शः, गोशतकम् माधवशरणापत्ति स्तोत्रम्** आदि-आदि ग्रन्थ परम उपादेय एवं मनन करने योग्य हैं, जो धार्मिक एवं भारतीय संस्कृति की विचारधाराओं के ग्रन्थ हैं।

आज भी बाल्यकाल के वे स्थायी शुभ संस्कार ज्यों के त्यों विराजमान हैं। नित्य भगवत्सेवा और सायंकाल नाम-संकीर्तन स्वयं ही करते कराते हैं।

यद्यपि विगत कुछ वर्षों से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, तथापि आपके आत्मबल एवं मनोबल में कोई न्यूनता नहीं आ पाई है। सदा ही मन प्रसन्न रहता है, किसी समय स्वास्थ्य में भी कोई साधारण गड़बड़ रहने पर भक्तों के पूछने पर ऐसा ही भाव व्यक्त कर देते हैं कि सब ठीक है। पीठासीन

होने से लेकर अद्यावधि पर्यन्त 58 वर्षों में आपके जीवनकाल में अनेक संघर्ष आये, किन्तु श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा और आपकी सरलता, समदर्शिता एवं सौम्य स्वभाव के कारण सब स्वतः समाधान हो जाते हैं। इन पंक्तियों का लेखक कई बार यात्रा में साथ रहा है, शहर और ग्रामों की तो बात ही क्या, किन्तु वीहड़ वनों में श्रीसर्वेश्वर प्रभु के साथ विराजने से जंगल में मंगल वाली कहावत अक्षरशः सत्य (चरितार्थ) हो जाती है। इस प्रकार आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही परम वन्दनीय हैं। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु हमारे आचार्यश्री को पूर्ण स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु प्रदान करें, जिससे सनातन (वैष्णव) धर्म का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार होकर जन कल्याण हो, इन्हीं मांगलिक वचनों के साथ हम अपनी लेखनी को विश्राम देते हैं।

प्रचार मन्त्री
अ.भा.निम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज.)

नेपाल पदार्पण

धन्य धन्य गुरुदेव धन्य कृपा पूरण धनि।
धन्य धन्य श्रीजी महाराज, धन्य नेपाली नरनारी॥
सलेमाबाद के आनन्द छोड़कर नेपाल देश पधारे॥
नेपाल निवासी नरनारी में धर्म-ज्ञान संचारे॥
''श्रीजी'' महाराज के प्रेम भाव ने सबमें भक्ति जगाया॥
मन और तन में नेपाल बासी के परमानन्द जगाया॥
ज्ञान भक्ति का स्वयं सिन्धु होकर नास्तिक भाव हटाएं।
भक्ति ज्ञान का केन्द्र बनकर नेपाल में ''श्रीजी'' पधारे॥
भक्ति योग का मन्त्र सुनाकर राधा-कृष्ण की महिमा गाए।
वैष्णवता और गोसेवा भाव जगाकर सब में नयी चेतना लाए॥
सेवा भक्ति ज्ञानमय शैली देकर मानव को हर्षाए।
अनन्तश्रीबिभूषित निम्बार्क पीठाधीश जगद्गुरु नेपाल में आए॥
राम नवमी के पावन पर्व में राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य
श्री श्री ''श्रीजी'' महाराज ने दर्शन दिए उदार॥

रचना– अकिञ्चन युवराज यमुनाशरण
उपा. लुंटेल, शिलिगुड़ी, प.बंगाल

ज्योतिष शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में

पूज्य आचार्य श्री "श्रीजी महाराज" : एक सत्याकलन

— पं. प्रभुलाल शास्त्री
साहित्याचार्य, M.S.U.M

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य भगवन्निम्बार्काचार्य जी की 5100 वीं जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में पुष्करारण्य क्षेत्र की पावनतम पुण्यधरा पर साभ्रमती सरिता के सुरम्य तट पर अवस्थित निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में दिनांक 20-11-2004 से दिनांक 26.11.2004 पर्यन्त वर्तमान श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर– अनन्त श्री समलंकृत-वीतराग, तपोनिष्ठ, पूज्य आचार्यचरण **'श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य'** श्री श्रीजी महाराज के संरक्षण व तत्वावधान में सप्त दिवसीय अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन एवं इसी शुभावसर की सम्माननीय शृंखला में पूज्य आचार्यश्री को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जा रहा है। वस्तुतः सारल्य-सौशील्य-माधुर्य-औदार्य-वैदुष्यादि गुणगणों की प्रतिमूर्त्ति स्वरूप आचार्यश्री इस महासम्मान के भाजन भी हैं। मैं ज्योतिष तत्त्वान्वेषक होने के नाते आचार्यश्री के जन्माङ्गचक्र को दृष्टिपथ में रखकर ज्योतिष शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में महाराजश्री के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को उजागर करने वाले ग्रहयोगों का विवेचन प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनके फलस्वरूप पूज्यश्रीचरणों के प्रति उद्भट विद्वानों, शीर्षस्थ राजनेताओं, विशिष्ट धर्माचार्यों, श्रेष्ठतम वक्ताओं, सेठ-साहूकारों तथा राजा महाराजाओं ने श्रद्धावनत होकर भावभीना अभिनन्दन ही नहीं किया है, अपितु अपनी अगाध निष्ठा का परिचय भी दिया है।
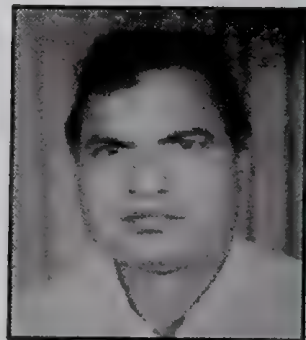
ग्रहाः राज्यं प्रयच्छन्ति, ग्रहाः राज्यं हरन्ति च।
ग्रहैः व्याप्तमिदं जगत्.......................

के सिद्धान्तानुसार ग्रह राजाधिराज बनाते हैं, ग्रह सर्वस्व छीन भी लेते हैं, चराचर जगत् ग्रहों से व्याप्त हैं, भले ही भूतलवासी अपने चर्मचक्षुओं से इन्हें नहीं देख सकते हों, पर घटित घटनाओं में ग्रहों की ही विशेष भूमिका रहती है। तो आइये जानें– उन ग्रहयोगों को, जिन्होंने साधारण-सामान्य ब्राह्मणवंश में समुत्पन्न महाराजश्री को राजराजेश्वर-जगद्गुरु बनाकर आपश्री की अनिर्वचनीय कीर्ति-कौमुदी को दिग्दिगन्त में प्रसारित किया है।

महाराजश्री की जन्मकालिक कुंडली, चन्द्रकुंडली, नवांश कुंडली, ग्रहस्थिति एवं विंशोत्तरी महादशा का संक्षिप्त विवरण —

जन्म दिनांक	–	10 मई 1929 ई., शुक्रवार
जन्म स्थान	–	सलेमाबाद (निम्बार्क तीर्थ)

जन्म समय	–	प्रातः 5-54 A.M.
उ. अक्षांश	–	26-47
पूर्वी रेखांश	–	74°.52
स्टेण्डर्ड समय अन्तर	–	0।30।32
मानक सूर्योदय	–	5।48।06
साम्पातिक काल	–	20।32।45
अयनांश	–	22।52।12

विंशोत्तरी महादशा - सूर्य, भोग्य काल 1 वर्ष 6 मास 21 दिन जन्म

जन्म नक्षत्र	–	कृत्तिका तृतीय चरण
राशि	–	वृष
स्वामी	–	शुक्र
वर्ण	–	वैश्य
तत्त्व	–	भूमि
वर्ग	–	गरुड़
गण	–	राक्षस
नाड़ी	–	अन्त्य
पुंजा	–	पूर्व

जन्म कुण्डली
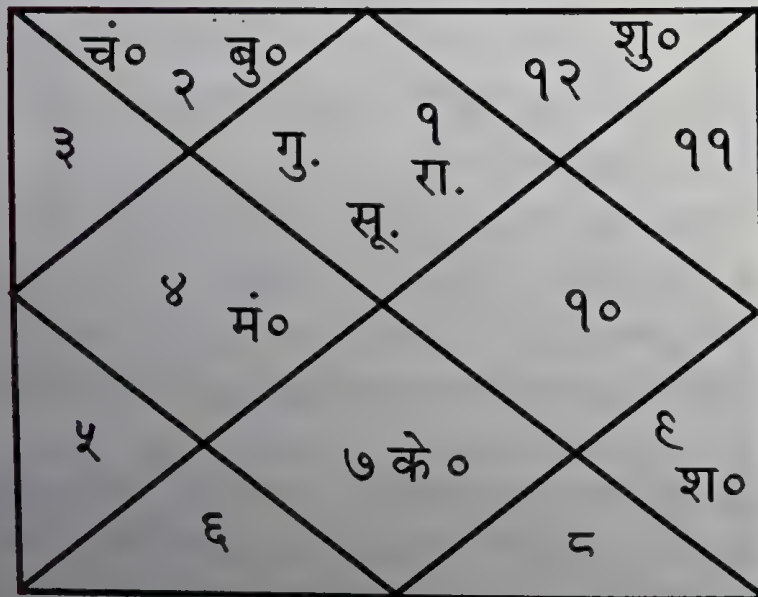
शुभ भूयात्

✻ चन्द्र कुण्डली ✻

✻ नवमांश कुण्डली ✻

तात्कालिक ग्रह स्पष्ट

लग्नम्	0	+	27	–	2	–	54	मार्गी
सूर्य	0	–	26	–	0	–	12	मार्गी
चन्द्र	1	–	6	–	32	–	5	मार्गी
मंगल	3	–	5	–	28	–	19	मार्गी
बुध	1	–	16	–	39	–	59	मार्गी
गुरु	0	–	28	–	18	–	22	मार्गी
शुक्र	11	–	29	–	50	–	36	वक्री
शनि	8	–	6	–	56	–	19	वक्री
राहु	0	–	28	–	17	–	48	वक्री
केतु	6	–	28	–	17	–	48	वक्री

वर्तमान कालिक विंशोत्तरी महादशा एवं अन्तर्दशा—

वर्तमान समय में बुध की महादशा में निम्नांकित ग्रहों की अन्तर्दशायें प्रचलित हैं—

वर्तमान बुध महादशा का समय –दि. 01.01.2001 से 01.01.2018 तक (17 वर्ष)

बुध महादशा में अन्तर्दशाओं का समय—

बुध में बुध की अन्तर्दशा	दि. 1.1.2001 से दि. 27.5.2003 तक
बुध में केतु ,,	दि. 28.5.2003 से 24.5.2004 तक
बुध में शुक्र ,,	दि. 25.5.2004 से 24.3.2007 तक

बुध में सूर्य	”	दि. 25.3.2007 से 31.01.2008 तक
बुध में चन्द्र	”	दि. 1.2.2008 से 30.6.2009 तक
बुध में मंगल	”	दि. 1.7.2009 से 27.6.2010 तक
बुध में राहू	”	दि. 28.6.2010 से 15.1.2013 तक
बुध में गुरु	”	दि. 16.1.2013 से 23.4.2015 तक
बुध में शनि	”	दि. 24.4.2015 से 1.1.2018 तक

वर्तमान अन्तर्दशा —

वर्तमान में बुध की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा है, जिसका समय दिनांक 25.5.2004 से 24.3.2007 तक है।

अन्तर्दशा फलित—

जन्मकुण्डली में शुक्र उच्च राशि का है, नवांश कुंडली में भी शुक्र उच्च राशि का है। ज्योतिष के दृष्टिकोण से यह समय जीवन का वसन्तकाल (क्रीम पीरियड) कहा जा सकता है।

फलित दर्शन

1. तत्रादौ दीर्घायु योग :—

महर्षि जैमिनि के अनुसार "लग्नेशाष्टमेशाभ्यां" प्रथम प्रकार से 'चरे चरे दीर्घायुः' एवं "शनिचन्द्राभ्यां" द्वितीय प्रकार से "स्थिरे द्विस्वभावे वा दीर्घायुः" प्रभृति फलितसूत्रों के नियमानुसार महाराजश्री की कुंडली में दीर्घायु योग विद्यमान है।

आज से 17 वर्ष पूर्व "गौतमधर्मप्रदीप" पत्रिका में 'आयु निर्णय प्रकार' शीर्षक से एक लेख मैंने लिखा था, उसमें महाराजश्री की कुंडली का उदाहरण देकर दीर्घायु योग का प्रतिपादन किया था, जो भगवत्कृपा से सटीक उतरा है।

2. अरिष्टभंगयोग—

एक एव बली जीवो, लग्नस्थोऽरिष्टसंचयम्।
हन्ति पापक्षयं भक्त्या प्रणाय इव शूलिनः॥

(बृहत् पाराशर 10 अध्याय, 3 श्लोक)

लघुजातक के अध्याय 8 वें, 1 श्लोक में, एवं सारावलीकार ने भी पृ.सं. 97 पर इसी मत की पुष्टि की है।

ज्योतिर्विदों का बहुप्रचलित श्लोक भी यही भाव प्रकट करता है कि–

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
मत्तमातंगयूथानां, शतं हन्ति च केसरी॥

मदोन्मत्त हस्तिसमूह को जिस प्रकार एकाकी सिंह मार गिराता है, उसी प्रकार जिस जातक के केन्द्र में बृहस्पति हो, दूसरे ग्रह क्या कर सकते हैं?

3. शुभवेसि, शुभवासि एवं उभयचरी योग—

'फलदीपिका' के षष्ठ अध्याय के 8-9 वें श्लोक में उपरोक्त योगों का विवरण दिया गया है, जो महाराजश्री की कुण्डली में विद्यमान है। आचार्य मंत्रेश्वर लिखते हैं—

जातः स्यात् सुभगः सुखी गुणनिधिर्धीरो नृपो धार्मिको
विख्यातः सकलप्रियोऽति सुभगो दाता महीशप्रियः।
चार्वङ्गः प्रियवाक्प्रपञ्चरसको वाग्मी यशस्वी धनी
विद्यादत्र सुवेसिवास्युभयचर्याख्येषु पादः क्रमात्॥

(फलदीपिका)

अर्थ— जो व्यक्ति 'शुभवेसि' योग में उत्पन्न होता है, वह देखने में सुन्दर, सुखी, गुणनिधि, धीर, धार्मिक और अनेक व्यक्तियों पर हुकूमत करने वाला होता है।

जो व्यक्ति 'सुवासि' योग में उत्पन्न होता है वह अति सुन्दर, दाता, राजा का प्रिय और विख्यात हो, उसको सब लोग चाहते हैं।

जो व्यक्ति 'शुभ उभयचरी' योग में उत्पन्न होता है वह वाग्मी (अच्छा बोलने वाला-वक्ता) प्रियवचन बोलने वाला,यशस्वी और धनी होता है। उसके सब अंग मनोहर होते हैं और सबको प्रसन्न करने वाला होता है।

4. लग्नात् शुभकर्तरी योग :—

लग्न के दोनों ओर शुभ ग्रह होने से 'शुभ कर्तरीयोग' भी है।

'जैवातृको विभयरोगरिपुः सुखी स्या–
दाढ्यः श्रिया च शुभकर्तरि योगजातः॥'

फलदीपिका 6।11

जो व्यक्ति 'शुभ कर्तरी योग' में उत्पन्न होता है, वह दीर्घायु, सुखी, लक्ष्मीवान् और वैभव से युक्त होता है।

5. विरञ्चि योग—

उच्चस्थ सूर्य, मित्रक्षेत्री बलिष्ठ गुरु, त्रिकोणस्थ अति बलिष्ठ शनि तीनों मिलकर विरञ्चि योग का सर्जन करते हैं।

इस योग का फलादेश महाराजश्री के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को अक्षरशः उजागर करता है। फलदीपिका में लिखा है—

ब्रह्मज्ञान-परायणो बहुमतिर्वेदप्रधानो गुणी,
हृष्टो वैदिकमार्गतो न चलति प्रख्यात-शिष्यव्रजः।
सौम्योक्तिर्बहुवित्तदारतनयः सद् ब्रह्म तेजो ज्वलन्
दीर्घायुर्विजितेन्द्रियो नतनृपो वैरिञ्चियोगोद्भवः॥

फलदीपिका 6।31

भावार्थ— जिसकी कुंडली में विरञ्चि योग हो, वह बहुत बुद्धिमान् हो; वैदिक धर्माचार्य हो; ब्रह्मज्ञानपरायण हो और गुणी हो। ऐसा व्यक्ति सदैव ही प्रसन्नचित्त रहेगा और वेदोक्त मार्ग से कभी विचलित नहीं होगा। उसके अनेक प्रख्यात शिष्य होंगे। सौम्य वचन बोलने वाला, बहुत धन, शिष्य आदि के सुख से युक्त हो। ऐसे व्यक्ति के मुखमण्डल पर सात्विक ब्रह्मतेज की उज्ज्वलता रहती है। ऐसे व्यक्ति दीर्घायु और जितेन्द्रिय होते हैं और राजा लोग भी उन्हें नमस्कार करते हैं।

नोट – ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्यादि ग्रह अपने फलितीय वक्तव्य के द्वारा पूज्यश्री को महिमा मंडित करते हुए अभिनंदन कर रहे हों। महाराजश्री की कुंडली में अनेक योग हैं। जिनका वर्णन करना यहाँ, संभव नहीं है। श्री दयाशंकर जी शास्त्रीजी ने मुझे संक्षेपतः लेखन का ही आदेश दिया है। फिर भी छत्र योग व भाग्य योग का वर्णन किये बिना महाराजश्री के व्यक्तित्व पर पूर्ण प्रकाश नहीं डाला जा सकता, जो ग्रहों ने अपनी भाषा में प्रकट किया है।

6. छत्र योग —

पञ्चम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो और पंचमेश उच्च राशि का होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो 'छत्र योग' होता है।

महाराजश्री की कुण्डली में 'छत्रयोग' विद्यमान है। छत्रयोग की फलश्रुति में महाराज मंत्रेश्वर लिखते हैं–

'सुसंसारसौभाग्यसंतानलक्ष्मी-
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे॥'

ऐसा जातक संसार के सब सौभाग्यों से युक्त, शिष्य सुख वाला, धनी, यशस्वी, बुद्धिमान्, उत्तम भाषण करने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि, जिसको बहुत स्फूर्ति हो, (जिसके विचार में उत्तम बुद्धि की नवीन बातें जागृत हो) ऐसे व्यक्ति को सरकार से सम्मान प्राप्त होता है।

संक्षेप में पञ्चमभाव और पञ्चम भावेश सुधर जाने से पञ्चम भाव संबंधी सब सुख प्राप्त होंगे।

7. भाग्य योग, विशिष्ट राजयोग—

नवमभाव में शुभग्रह की स्थिति, शुभ ग्रह की दृष्टि, नवमेश का उत्तम स्थान में बलवान् होकर बैठना भाग्य योग कारक है।

महर्षि पराशर के अनुसार नवमेश + दशमेश (गुरु+शनि) का केन्द्रत्रिकोणात्मक संबन्ध विशिष्ट राजयोग कारक है। नवमभाव में धनु-मीन राशि का शनि 'स्थानवृद्धिकरः' कहा गया है। किं बहुना? इस स्थान में धनु-मीन राशि में शनि व्यक्ति को धर्मसम्राट् बनाता है। धार्मिक जगत् में आध्यात्मिक जागृति के शंखनाद का श्रेय प्रदान करता है।

सनातन धर्म की विजयपताका फहराने वाले धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज के मीन का शनि नवम में था। बलवान् गुरु की पूर्ण दृष्टि भी थी। जैसा कि महाराजश्री की कुण्डली में भी है।

नवम तपस्या का स्थान है। यहाँ शनि वैराग्य उत्पन्न करता है। व्यक्ति को धार्मिक तथा तपस्वी बनाता है। ऐसा जातक आध्यात्मिक चिन्तन, देवार्चन आदि में समय व्यतीत करता है।

पूज्या आनन्दमयी माँ उच्चकोटि की तपस्विनी थी। उनके तुला का शनि नवम में था।

इस प्रकार उपर्युक्त राजयोग भाग्ययोग पूज्य आचार्यश्री की कुंडली में विद्यमान होने से दक्षिण भारत के प्रख्यात ज्योतिर्विद् फलदीपिकाकार 'भाग्य योग' का वर्णन करते हुए लिखते हैं— ''ऐसा व्यक्ति जब पालकी में जाता है तो उसके दोनों ओर चंवर रहते हैं। **'चञ्चच्चामर-वाद्य-घोष-निबिडामान्दोलिकां शाश्वतीम्'**– और उसके साथ-साथ आगे पीछे बाजे बजते हुए चलते हैं।

'लक्ष्मीं प्राप्य महाजनैः कृतनतिः स्याद्धर्ममार्गे स्थितः।'

सदैव रहने वाली लक्ष्मी प्राप्त होती है तथा बड़े बड़े आदमी नमस्कार करते हैं।

'प्रीणात्येष पितॄन् सुरान्द्विजगणांस्तत्तत्प्रियैः पूजनैः
स्वाचारः स्वकुलोद्वहः सुहृदयः स्याद्भाग्ययोगोद्भवः।।'

यह अपने माता-पिता का, पितरों, ब्राह्मणों और देवताओं का पूजन कर सदैव उनको प्रसन्न रखता है। अपने कुल की कीर्ति को बढ़ाने वाला, आचारनिष्ठ व सहृदय होता है।

महाराजश्री में ये सभी गुण विद्यमान हैं। कितना सटीक वर्णन किया है आचार्य मन्त्रेश्वर ने, जिसे पढ़कर कोई भी पाठक मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहेगा।

अन्त में अतिविस्तार भय से लेखनी को यहीं विराम देते हुए अभिनन्दन की परम पुनीत मंगलमयी वेला पर आचार्यश्री के पादपद्मों में इसी भावना के साथ नतमस्तकाञ्जलि हूँ कि **''वंदे महापुरुष ! ते चरणारविन्दम्''**।।

विशेष—

प्रसंगवशात् श्रद्धालु भक्तजनों को यह निवेदन करना भी असमीचीन नहीं होगा, कि वर्तमान आचार्यश्री का जो जन्मनक्षत्र (कृत्तिका) है, वही जन्मनक्षत्र (कृत्तिका) आज से 5100 वर्षों पूर्व प्रादुर्भूत श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्र का है। एवमेव चन्द्रमा, राशि, राशि स्वामी, वर्ण, वश्य, योनि, गण, तत्त्व, पुंजा, एवं नाड़ी आदि भी आचार्यद्वय के एकसमान हैं। वैदिक वाङ्मय इस तथ्य की पुष्टि करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि – श्रीहरिप्रियायुध सुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु भगवान् श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्र ही भक्तजनमनोरंजन हेतु वर्तमान आचार्यश्री के रूप में नववपुधारण कर सनातन धर्म की विजयपताका फहराते हुए पुष्करारण्यान्तर्गत साभ्रमती सरिता के पावनतम तट पर विराजमान होकर **''तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि''** की सदुक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं और ऐसा संभव भी है, क्योंकि **''अचिन्त्यमहिमानः खलु योगिनः।''**

उम्मेद मिल्स
पाली (मारवाड़)
(राजस्थान)

'न भूतो न भविष्यति'

'अति-विशिष्ट-विद्वत्सम्मान' जयपुर का प्रत्यक्षद्रष्टा

— महामहोपाध्याय, पण्डित गङ्गाधर द्विवेदी
'महामहिम राष्ट्रपतिसम्मानित मनीषी

अनन्तानन्त-श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' विरुदसंवलित **श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य** वस्तुतः भगवदंशावतार हैं। अपने जीवन के विगत 75 वर्षों में इन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य निष्पन्न किये हैं। इनका सुदर्शन व्यक्तित्व नास्तिक व्यक्ति को भी आस्तिक बनाने में पूर्ण सक्षम है। अपने स्वाभाविक द्वैताद्वैत दार्शनिक सिद्धान्त की प्रतिष्ठापना में तो इनका योगदान संस्मरणीय है ही, साथ ही राष्ट्र व समाज के उन्नयन के लिए भी आप चिन्तनशील हैं। साहित्य एवं संगीतप्रेमी होने के साथ आपकी भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में विशेष रुचि देखी गई है। **'भारत भारती वैभवम्'** में आपने **'गकारत्रयी'** को भारतीय संस्कृति का प्रतिमान माना है, जिनमें गीता, गंगा व गोमाता का संस्मरण है। इनमें भी आपकी गोसेवा-भक्ति अविस्मरणीय है। गोवधबन्दी आन्दोलन में आपका सक्रिय योगदान दूसरा ज्वलन्त व प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप हिन्दुत्व एवं हिन्दुधर्म के संरक्षक होने के साथ ही अन्य धर्मों के सद्गुण प्रशंसक है, आपका चिन्तन दर्शनानुकूल समन्वयवाद की दृढ़भित्ति पर अवस्थित है। इसीलिए आपकी विश्रुति सम्प्रदाय निरपेक्ष के रूप में भी लोक प्रसिद्ध है। भगवान् 'राधामाधव' के अनन्य भक्त होते हुए भी श्रीरामजन्म भूमि आन्दोलन के समर्थक रहे हैं तथा अनेक हनुमन्मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाकर आपने वायुनन्दन हनुमान् के प्रति भी अपनी निष्ठा को अभिव्यक्त किया है। भारतीय धर्मशास्त्रों के प्रबल समर्थक होने के साथ आप अस्पृश्यता निवारण कर्ता के रूप में जाने जाते हैं। शुद्धिव्यवस्था को आप जीवन में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। विचारों की शुद्धि को महत्त्व देते हुए भी आप महर्षि मनु के **''योऽर्थे शुचिः स शुचिः न मृद्वारिः शुचिः शुचिः''** को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। बालकों में शिक्षा व संस्कारों को परमावश्यक मानते हैं, क्योंकि शिक्षा व संस्कार ही उसका जीवन सफल बनाते हैं। स्वयं विद्वान् हैं, इसलिए विद्वानों के सम्मान को प्राथमिकता से महत्त्व प्रदान करते हैं— **''विद्वानेव विजानाति विद्वज्जन-परिश्रमम्'**। आपका एक गुण सर्वजन वन्दनीय है। वह है– ''अशरण शरण''। इसीलिए आपने अपने भक्तों के लिए संस्कृति के विभिन्न पक्षों का साक्षात्कार कर अनुपम दिव्य ज्ञानार्जन किया है। आप अपनी सम्प्रदाय-परम्परा के पालन के प्रति नितान्त आग्रहिल हैं। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण के **''स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः''** गीतोक्त सिद्धान्त की परिपालना के प्रति दृढ़निष्ठ हैं। आप अगणित गुणनिधान हैं, जिनमें कुछ का संकेतमात्र यहाँ प्रस्तुत किया है।

राजस्थान संस्कृत अकादमी (संगम) के संस्थापक सदस्यों में **प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री**, संस्कृत विभागाध्यक्ष, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का नाम अविस्मरणीय है। संस्कृत अकादमी के संस्थापन से लेकर व्यतीत लगभग 25 वर्षीय काल में प्रो. प्रभाकर शास्त्री के सप्तवर्षीय निदेशककाल में ऐसे

अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए, जिनमें एक उल्लेखनीय होने के साथ संस्मरणीय भी है। वह है– **''अतिविशिष्ट विद्वत्समान समारोह''**। डॉ. शास्त्री के ही मस्तिष्क में यह विचार आया कि अकादमी प्रतिवर्ष विशिष्ट विद्वत्सम्मान तो आयोजित करती है, उससे हटकर अतिविशिष्ट विद्वत्सम्मान का भी आयोजन किया जाय। अकादमी की महासमिति के समक्ष जब यह प्रस्ताव रखा गया तो मैं भी उस समय महासमिति का सदस्य था। 'पुरा कवीनां गणना प्रसंगे' के क्रम में जब महासमिति राजस्थान के वैदुष्य का मूल्याङ्कन करने में तत्पर हुई तो 'कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः' के समानान्तर अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का ही एकमात्र नाम संस्तुत हुआ। वे ही इस अति विशिष्ट विद्वत्सम्मान के लिए सर्वथा उपयुक्त एवं सर्व प्रशंसित रहे। वस्तुतः इसका मुख्यतः श्रेय भी प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री को ही दिया जाना औचित्यपूर्ण है।

17 सितम्बर, 1995 ई. को राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर का यह सर्वप्रथम अतिविशिष्ट विद्वत्सम्मान राजस्थान विश्वविद्यालय के मानविकीपीठ सभा भवन में महान् उल्लास व श्रीजी महाराज की पद गरिमा के सर्वथा अनुकूल सम्पन्न हुआ। उस समारोह के संबन्ध में सभी उपस्थित विद्वद्वृन्द एवं भक्तजनों का यही डिंडिम घोष था– ऐसा कार्यक्रम **'न भूतो न भविष्यति'**। मेरे सुदीर्घ जीवन काल में और राजस्थान संस्कृत अकादमी के इतिहास में वस्तुतः न तो ऐसा भव्यातिभव्य दिव्य कार्यक्रम आज तक हुआ है और न ही निकट भविष्य में आयोजित होने की सम्भावना ही है। राजस्थान प्रान्त के **महामहिम राज्यपाल श्री बलिराम भगत** महोदय ने अनन्तश्रीविभूषित, संस्कृत-संस्कृति संरक्षण तत्पर, निम्बार्कपीठाधिपति जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' **श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य का गुलाब के** सुगन्धित पुष्पों की माला एवं सुन्दर शाल ओढाकर प्रसन्नचित्त से सम्मान प्रदर्शित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया। सभा मञ्च विशिष्ट अतिथियों में **मेवाड महामण्डलेश्वर महन्त मुरलीमनोहरशरणजी ने** संस्कृत अकादमी का प्रतीक चिन्ह श्री 'श्रीजी' महाराज को समर्पित किया। राजस्थान विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति **डॉ. आर.एन.सिंह** महोदय ने अकादमी के प्रकाशन 35 ग्रन्थों की भेंट कर सम्मानित किया। राजस्थान संस्कृत अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष **देवर्षि कलानाथ शास्त्री**, गुजरात संस्कृत अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष **डॉ. गौतम भाई पटेल** अहमदाबाद ने वाचनोपरान्त अभिनन्दन पत्र भेंट किया। श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के सम्मान्य कुलपति **डॉ. वाचस्पति उपाध्यायजी** ने अकादमी की ओर से ग्यारह हजार रुपये की राशि का एक ड्राफ्ट 'श्रीजी' महाराज को समर्पित कर स्वयं को कृतकृत्य माना।

महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपने संक्षिप्त भाषण में स्वातन्त्र्योत्तर भारत में संस्कृत भाषा के ह्रास पर चिन्ता व्यक्त की। 'श्रीजी' महाराज ने भी महामहिम राज्यपाल महोदय के विचारों से सहमति व्यक्त करते हुए राजनेताओं, विशेषकर राजस्थान सरकार, शिक्षाविदों व समाज-सुधारकों विद्वानों द्वारा इस विषय में चिन्तनपूर्वक निर्णय करने की आवश्यकता बतायी। मुझे भगवान् निम्बार्काचार्य 5100 वीं जयन्ती के समारोह अवसर पर पुनः वह सम्मान कार्यक्रम स्मरण हो उठा है, जो मेरी दृष्टि में अभूतपूर्व होने से **'न भूतो न भविष्यति'** की परम्परा में आज भी महत्त्व रखता है।

अध्यक्ष, 33, प्राच्यशोध संस्थान, सरस्वती पीठ ब्रह्मपुरी जयपुर

श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

विविधविद्याविद्योतितहृदयानां परमविपश्चितां

निखिलशास्त्रनिष्णातानामनन्तानन्तश्रीसमलंकृतानां वर्तमाननिम्बार्काचार्याणां

जगद्गुरूणां श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां

महिम-विंशतिः

— स्वामी रासबिहारीदास जी ''काठियाबाबा''

आचार्यप्रवरं नित्यं दिव्यलक्षणभूषितम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।1।।
वेदवेदान्ततत्त्वज्ञं श्रीवेदधर्मरक्षकम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।2।।
श्रीसद्गुरुकृपाधन्यं सर्वशास्त्रविशारदम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।3।।
आविर्भूतं महारम्ये राजस्थाने सुभारते।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।4।।
ज्योतिर्मयतनुं धीरं हृदन्धकारनाशनम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।5।।
स्मयमानाननं भव्यं पंचकेशसमन्वितम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।6।।
तीर्थाटनं कृतं येन लोककल्याणहेतवे।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।7।।
युगलसाधनासिद्धं श्रीधामतत्त्वकोविदम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।8।।
युगलकीर्त्तने लीनं लीलासंकीर्त्तनप्रियम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।9।।
कृपालुं च दयालुं तं ह्यार्तजनसमाश्रयम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्।।10।।

वेदान्ततत्त्ववक्तारं रचितानेकपुस्तकम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥11॥
महाशयं महाभागं जनमनोमहोत्सवम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥12॥
भूषणं सम्प्रदायस्याचार्यपीठविराजितम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥13॥
निर्मापितसुगोशाला-चिकित्सालयमन्दिरम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥14॥
सम्मेलनेष्वनेकेषु ह्यध्यक्षपदशोभितम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥15॥
देशेषु च विदेशेषु सम्प्रदायप्रचारकम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥16॥
धर्माचार्यसमस्तैश्च पूजिताङ्घ्रिपदद्वयम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥17॥
श्रीमन्निम्बार्कसिद्धान्तसारज्ञं पुण्यदर्शनम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥18॥
श्रीनिम्बार्कस्वरूपं च ह्यादर्शाचार्यलक्षणम्।
राधासर्वेश्वरं वन्दे शरणान्तं जगद्गुरुम्॥19॥
अहो! आचार्यपादं तं भगवच्छक्तिधारकम्।
देशिकमभिवन्देऽहं तद्दिव्यगुणविग्रहम्॥20॥
स्मरणीया रसोदीप्तै- र्महिमविंशतिः गुरोः।
रासबिहारिदासेन रचिता तत्प्रसादतः॥21॥

व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त काठियाबाबा स्थान
गुरुकुलमार्गः, श्रीधाम, वृन्दावनम्
(उत्तरप्रदेश)

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यलोकपावनपरम्परागतअखिलभारतीय-श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर जगद्गुरुपूज्यश्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यश्री श्रीजी महाराजचरणसरोरुहयोः समर्पितः

अभिनन्दन-पद्यप्रसूनाञ्जलिः

— आचार्य किशोर व्यासः
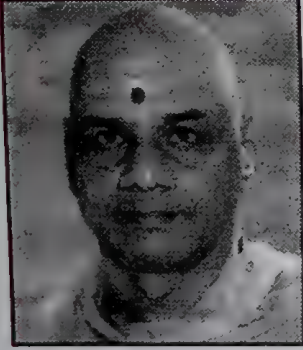
भारतवर्षे पश्चिमाञ्चले महाराष्ट्रभूर्विशिष्यते
मुंगीपैठणतीर्थं यस्मिन् गोदातीरे विराजते।
तत्र जनिं लब्ध्वा सा ज्योतिः साक्षाद्यस्मिन् प्रकाशते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥1॥

एकं ज्योतिरभूद् द्वेधा तद् यथाहि राधा-माधवयो-
र्द्वैतच्छलमद्वैतच्छलमपि जीवेश्वरयोर्नाट्यमहो।
रुचिरदर्शनं निम्बार्काणां नित्यं येन प्रगीयते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥2॥

आर्यसनातनधर्म-वेद-गो-ब्राह्मणरक्षां यः कुरुते
भारतमाता-संस्कृतभाषानिष्ठावृद्धिं संतनुते।
प्रिययुगलांघ्रिसरोजरसं भक्तेभ्यो नित्यं स्वादयते
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥3॥

स्थाने स्थाने प्रबोधनार्थं नित्यं भ्रमणं कृतवन्तं
तीर्थे तीर्थे दिव्यदेशजीर्णोद्धारार्थं प्रयतन्तम्।
काले काले परिषत् सम्मेलनादिभिर्जागरयन्तं
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥4॥

चंद्रज्योत्स्नाशीतलतायाः सुखदामनुभूतिं यच्छन्तं
अभिन्नदायः स्निग्धस्मितविलसित-नयनाभ्यां पश्यन्तम्।
करुणावरुणालयमतिमधुरं ज्ञानामृतमभिवर्षन्तं
तं राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यं नमामहे॥5॥

आचार्यचरणाम्भोजे प्रह्वप्रणतिपूर्विका।
श्रद्धासुमन-संयुक्ता किशोरकृतिरर्पिता॥

पुण्यपत्तनम् (महाराष्ट्र)

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यसंस्थापितराद्धान्तप्रसारबद्धपरिकराणाम्, विपश्चिदपश्चिमानाम्, वावदूकधुरीणानाम्, निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणाम्, तत्रभवताम्, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यश्री श्रीजीमहाराजमहानुभावानाम् अभिनन्दनावसरे सप्रश्रयं समर्पिताः

पद्य-प्रसूनाञ्जलयः

— प्रेमाचार्यः शास्त्री

निर्द्वन्द्वा अकुतोभयाः समदृशो निर्मानमोहाः बुधाः
सन्तः सर्वहितैषिणो नयरताः सद्धर्ममर्मस्पृशः।
साचारा अपरिग्रहा ऋतगिरो निम्बार्कराद्धान्तिनः
श्रीमत्स्वामिवराः जयन्तु नितरां निम्बार्कपीठाधिपाः॥1॥

श्रौतान् सिद्धान्तवादान् जगति विसृमरान् कर्तुमाबद्धकक्षः
ज्यायान् नित्यं गुणौघैः सहृदयहृदयावर्जकैः पुण्यकीर्तिः।
नास्तां कायेन पीवा धवलतमयशोराशिभिर्यो गरीयान्
निम्बार्काचार्यवर्यो जगति विलसतात् संस्कृतेः सूत्रधारः॥2॥
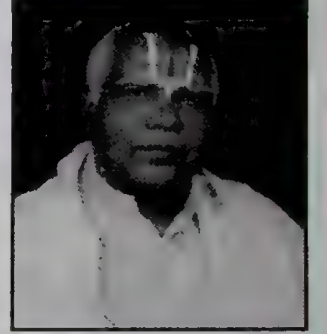
निम्बार्कतीर्थे विहिताधिवासः
निवृत्ततर्षो विदुषां वरेण्यः।
जीयाच्चिरं लोकहितैकनिष्ठः
आचार्यवर्यो यतिसार्वभौमः॥3॥

सारल्यं परिलक्ष्यते हि नितरां स्मेराननें सन्ततम्
द्वन्द्वानां विलयः स्फुटं नयनयोर्द्वन्द्वे दरीदृश्यते।
माधुर्यं स्मितमाक्षिकस्य सुतरां यस्याधरः सेवते
श्रीश्रीजीतिपदाभिधान मधुरो निःश्रेयसायास्तु नः॥4॥

निर्धूतान्तः कषायो यो
बहिरुज्ज्वलवेषवान्।
आत्मानं योजयामास
लोकमंगलकर्मसु॥5॥

श्रीधाम
150, पुरानी गुप्ताकालोनी, दिल्ली – 9 वास्तव्यः

सर्वेश्वरोऽवतु सदाऽखिलविश्वलोकम्

संस्तुतिपञ्चविंशतिः

— श्री सत्यनारायण शास्त्री

(1)

श्रीमद्धंसादिवर्गः श्रीहंसदेवं सनकादिवर्यान् श्रीनारदं निम्बरविं तथैव।
प्रणम्य पूर्वं निजहार्दभावान् प्रस्तोतुमिच्छामि निसर्गपुण्यान्॥

(2)

कालं कियन्तं किल कीर्तयेऽहमेषां च सत्त्वादिगुणानशेषान्।
मनाक्तथापि प्रकटीकरोमि, पातुं सदा सत्यमशेषकीर्तिम्॥

(3)

श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय : योऽसौ श्रीसनकादिरातसुभगो, सद्भुक्तिमुक्तिप्रदो,
राधामाधवपादपद्मयुगले भक्तिं प्रदातुं क्षमः।
पश्चाद्भागवतेन दिव्यमुनिना, श्रीनारदेनार्पितो,
निम्बार्काय च सम्प्रदाय इह नो जेजीयतां संसृतौ॥

(4)

द्वैताद्वैतविशेष-वादजनकः, सत्सम्प्रदायादिमो,
हन्तुं काल[1]करालकालकलुषं, योऽलं क्षमः क्ष्मातले।
दातुं निर्वृतितृप्तिमोक्षमखिलं, यः शश्वदास्ते प्रभुः,
सिद्धान्तोऽयमशेषशक्तिगुणभृद्भाभ्राज्यते भारते॥

(5)

तरीतुकामा यदि दुःखमूलं लोका! भवाब्धिं द्रुतमेव तर्हि।
आरुह्य नैम्बार्कमतोरु नावं, भवन्तु गन्तुं प्रभवोऽग्रतीरम्॥

(6)

वन्द्याः श्रीजियतीन्द्रदेशिकवराः सर्वेश्वरोपासका,
राधामाधवपादपद्मशरणाः, कारुण्यभावार्णवाः।
शान्ताः कान्तरुचो दयोदयभरश्रीभ्राजिताश्चारुता-
चञ्चच्चान्द्रमसीं श्रियं च दधतश्चेतस्यलं भान्ति नः॥

(7)

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्या जयन्त्वेते।
नैम्बार्कमुपदिशन्तः, श्रेयोदं च सम्प्रदायमिमम्॥

(8)

जाड्यतमस्तितितरणिं, तरणिं दुर्गाहघोरपाथोधेः।
वैतरणीतरणिप्रभमीडे, श्रीजिं च निम्बार्कपीठस्थम्॥

(9)

महात्मभिर्यैर्जनताहिताय, नैके प्रयासा विहिताश्च धर्म्याः।
सुरप्रतिष्ठारुणिदेवयाग - निर्माणजीर्णोद्धरणादयश्च॥

(10)

शाला गवां छात्रसुपाठशाला, भैषज्यशालादय एव नैकाः।
सञ्चालिता लोकहिताय शश्वन्नैकत्र चैभिः करुणार्द्रचित्तैः॥

(11)

आदौ पदार्पणमभूत्कुरुभूमिमध्य, एषां सनातनसुधार्मिकमेलने च।
लोकैस्ततोऽपि समवाप्य महाप्रतिष्ठां, निम्बार्कदिष्टगुरुतामवनौ व्यतन्वन्॥

(12)

प्राग्जैपुरेऽपि सुखदोऽभवदंघ्रिवेशस्तत्राऽप्यशेषसुजनैरधिगम्य मानम्॥
निम्बार्कदिष्टसृतिकीर्तिसुवैजयन्ती, मध्ये नभो हि गमिता गुरुवर्य्यपादैः॥

(13)

नैम्बार्कसन्मासिकपाक्षपत्र - सन्मुद्रणावाचनपुस्तगेहम्।
लोकोपकार्ये तदशेषमेभिर्नैकत्र सम्पादितमस्ति साधु॥

(14)

संस्कृताध्ययनपाठनद्वये, सन्निविष्टरुचिधीधरा वराः।
नैकशास्त्रवरबोधभागुरा, भान्ति भास्करनिभास्तमोभिदः॥

(15)

गौरवेण हिमवद्धृतेर्धराः, श्रीधराधरगुणोप[2]लौकस[3]ः।
येऽमरा इव सदा मृता[4]सुराः, दीनलोकगुरुकष्टदा न किम्?

(16)

स्वजीवने यैर्विबुधाः सभाजिताः सभाजिता[6] यैर्विबुधाधिया कृताः।
सारल्यसारात्मिकतां दधाना, जीयासुरेते सुचिरं यतीन्द्राः॥

(17)

सम्पादिता सत्यमभूतपूर्वा, सत्तीर्थयात्रा जनताहिताय।
श्रीमद्भिरेभिर्गुरुवर्य्यपादैः स्वजीवने भारतभूमिभागे॥

(18)

धामत्रयी, सप्तपुरीययात्राऽसकृत्पुराऽकारि सुदेशिकैर्नः।
जन्मोद्भवैनोव्रजमाशु हन्तुं, सदा क्षितौ साधुजनस्य लोके॥

(19)

व्यधायि जीर्णोद्धरणेनसत्रा, धामस्वनेकेषु सुरप्रतिष्ठा।
देवालयान्नव्यरुचः प्रणीय, कृतं न किं धर्ममयं सुकर्म?

(20)

पर्यट्य राष्ट्राधिधरं च साधु, प्राचारि नैम्बार्कमतं यतीन्द्रैः।
ऋते विवादादृजुभावपूर्णैः, संहृष्टहृद्भिर्भुवनेऽत्र किं न?

(21)

निम्बार्कतीर्थेऽपि च पीठमध्ये, जन्माष्टमीपर्वमहो महीयान्।
प्रत्यब्दमेभिः क्रियते सनिष्ठं, श्रीराधिकामाधवतोषणाय॥

(22)

सनातनीयानि बभूवुरत्र, विराडनेकानि च मेलनानि।
धर्म्याणि तेष्वाययुरुच्चसच्छ्रीमहन्तविद्वद्गुरुमण्डलेशाः॥

(23)

एभिर्द्वयोः संस्कृतराष्ट्रभाषयोर्ग्रन्था अनेके ग्रथिताः सुशिक्षणाः।
अधीत्य चैतान्मनुजोऽधिगच्छति, सद्ज्ञानमाहन्तुमशेषकारणाम्॥

(24)

दोषाकराढ्यो[7] अपि सद्गुणश्रियः, सुगौररूपा अपि कृष्णरूपका[8]ः।
स्वजीवने श्लाघ्यसुराः सदाधिया, चैभिर्मुहुर्भूरि विनिन्दिताः सुरा[9]ः॥

(25)

स्वजीवने यावदबोधिषं मया, तदेव तावद्वरतत्त्वमप्यदः।
समं तदुद्गारवचोभिरात्मना, प्राकाशि सर्वं परिभाव्य साम्प्रतम्॥

(26)

अन्तेऽहं श्रीजिपादानमरगुरुगुरून्प्रातिभोदात्तबोधान्,
निर्व्याजं शान्तभावैरनिमिषपलकैर्नौमि निम्नेन मूर्ध्ना।
विन्देरन्नायुराजीवनमतिसुचिरं, वार्तभागारवीन्दु-
श्रद्धानिष्ठासदाशं स्फुरति हृदि वरा मङ्गली भावनैषा॥

अजमेर

---

1. काल इति कलौ भवः कालः कलियुगीनः इत्याशयः। 'तत्रभवः' इति पाणिनीयेन सूत्रेण अण् प्रत्यये कृते काल इति पदं सिध्यति। (पद्य सं. 4)
2. उपल इति "उपलः प्रस्तरे रत्ने" इति मेदिन्याम्। गुणा एव उपलरत्नानि इति गुणोपलाः। (पद्य 15) ओक इति नपुंसकेऽपि।
3. ओका इति "सद्माश्रयश्चौका" इत्यमरः। ओका आश्रयमात्रे च मन्दिरे च नपुंसकम्। मेदिनी। ओकसः इति नपुंसकेऽपि। ओकमाश्रयः मन्दिरं वेति।
4. मृतासुरा इति मृतेभ्यः गतप्राणेभ्यः शवभूतेभ्योऽपि जनेभ्यः असून् प्राणान् रान्ति ददतीति मृतासुराः मृतजनप्राणदा इत्याशयः। (पद्य-15)
5. गुरुकष्टदा इति गुरूणि यानि कष्टानि तानि द्यन्ति खण्डयन्तीति गुरुकष्टदाः गरिष्ठकष्टहारिण इति। न तु गुरुभ्यो गुरुजनेभ्यः कष्टदा इति कष्टं ददतीति कष्टदाः इति। दो अवखण्डने। धातुर्दिवादिगणीयः। (पद्य- 15)
6. सभाजिता इति सभायां शास्त्रार्थसभायां जिताः विजिताः अथवा पराजिताः इत्याशयः। (पद्य-16)
7. दोषाकराढ्या इति दोषाकरः निशाकरश्चन्द्र इति। 'दोषः स्याद्दूषणे पापे दोषारात्रौ भुजेऽपि चेति' मेदिन्याम्। दोषाकर इव चन्द्र इव श्रिया शोभया सम्पदः आढ्या इति दोषाकराढ्याः इति। विरोधपक्षे दोषाकराढ्या इति दोषाणां दूषणानां दुर्गुणानां वा आकरः खनिरिवाऽपि दोषाकराढ्या इति। विरोधपरिहारः उपरि प्रागेव कृतोऽस्ति। 'आकरेण आढ्या इति। (पद्य-24)
8. कृष्णरूपका इति कृष्णभगवतः रूपमिव रूपं येषान्ते कृष्णरूपकाः। संज्ञायामत्र कन्प्रत्ययः। विरोधपरिहारः अयम्। कृष्णरूपका इति न तु कालरंगा इति। कृष्णवर्णाः इति। 'रूपं स्वभावे सौन्दर्ये इति' मेदिनी। (पद्य-24)
9. श्लाघ्यसुरा इति श्लाघ्याः वन्द्याः स्तुत्या वा सुराः यैस्ते श्लाघ्यसुराः वन्दनीयदेवा इति। न तु प्रशंसनीयासवा इति। विनिन्दिताः अवगीताः सुरा देवा इति विरोधपरिहारः। विनिन्दिताः सुराः मद्यानीत्याशयः। 'सुराहलिप्रियाहालापरिस्रुद्वरुणात्मजा' इत्यमरः। अमरा निर्जरा देवा विबुधास्त्रिदशाः सुरा इत्यमरः।
10. वार्तभागिति वार्तं आरोग्यमिति "वार्तं पाटवमारोग्यं भव्यं स्वास्थ्यमनामयम्।" यादवः। वार्तं स्वास्थ्यमारोग्यं वा भजतीति वार्तभागिति। (पद्य 26)

सादरं सविनयं सभक्ति च

— डॉ. रसिक बिहारी जोशी

(1)

अद्यैवाधिगतं निमन्त्रणमिदं प्रोल्लासकं हर्षणं
नागन्तुं प्रभवामि तत्र बहुशश्चेखिद्यते मे मनः।
श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्रचरणेष्वावेद्य भक्त्या नतिं
पद्यानीह विलिख्य भक्तिभरतः संप्रेषयामि द्रुतम्॥

(2)

संर्वाचार्यनमस्कृता बुधवरा भक्तिस्वरूपाः स्वयं
श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्रचणपाः साक्षात् कृपासागराः।
तत्रानागमनात्कृतं महदिदं धाष्ट्र्यं क्षमन्तां कृपा-
पाङ्गैस्तच्चरणारविन्दयुगलीं संप्रार्थये सादरम्॥

(3)

श्रीनिम्बार्कमहोत्सवस्य समितौ सप्रश्रयं प्रेष्यते
सोद्वेगं मम तत्र निर्गमविधौ क्लृप्तिर्न चास्तेऽधुना।
अत्राध्यापनकार्यतो न विरतिः संभाव्यते मेक्सिको-
देशात्तत्र समागमो नहि भवत्यास्तेऽनुतप्तं मनः॥

(4)

श्रनिम्बार्कमहामुनीन्द्रपरमं गोदावरीरोधसि
"मूंगी" ग्रामतलेऽरुणस्य सुभगे दिव्याश्रमे शोभने।
एकस्मिन् दिवसे शुभे ग्रहयुते माता जयन्ती मुदा
कल्याणाय च मानवस्य सुभगा प्रादाज्जनिं मुक्तिदाम्॥

(5)

श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्रचरणाश्चक्रावताराः स्वयं
किञ्चिद्दिव्यमरीरचंश्च विमलं प्रस्थानभाष्यं रुणात्।
द्वैताद्वैतधिया, तथा रसमयीं माधुर्यपूर्णां शुभां
दिव्योपासनपद्धतिञ्च विमलां राधामुकुन्दप्रियाम्॥

(6)

निम्बार्काचार्यवर्याः प्रमुदितहृदयाः प्रेरयामासुरत्र
नाना सम्मेलनानां विविधविषयकायोजनञ्च प्रशस्तम्।
यागः सौदर्शनाख्यः प्रवचन-भजनेत्यादि कार्यक्रमाश्च
वर्तिष्यन्ते समन्तात् तदिह च विविधा मुक्तिमार्गा भवन्तु॥

(7)

सम्मेलनमिदं महद्भवतु धर्मबोधाय वै
यतोऽभ्युदयपूर्वकं भवतु मुक्तिलाभो ध्रुवम्।
सरागमिह सेवतां जनमतिश्च ''श्रीजी''-पदे
सभक्ति भजनात्तदा भवतु सद्गतिर्मुक्तये॥

मैक्सिको. त.
दिनाङ्क 23.08.04

''श्रीजी'' महाराजचरणाश्रितः कृपाकांक्षी
विनीतो विधेयो
रसिक बिहारी जोशी

श्री श्रीजी वचनामृतम्

जीवन क्षणभङ्गुर है, पता नहीं कब यह अकस्मात् विलय हो जाय।

✻

वही उत्तम मानव है जो सद्धर्म परायण होकर श्रीप्रभु भक्ति में अपने अमूल्य समय को समर्पित करे।

✻

श्रीकृष्णचन्द्र की अनन्त आनन्द-शक्ति समूह में सर्वोपरि प्रधान शक्ति आह्लादिनी, भक्तिरस-प्रदायिनी, नित्यनिकुञ्जेश्वरी, वृषभानुतनया श्रीराधा हैं। ये अखिल रस समूह की एकमात्र निधि हैं।

20।11।2004 तः 26।11।2004 दिनाङ्केषु पुष्कर-क्षेत्रे सलेमाबाद-स्थिते अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठे सम्पत्स्यमाने श्रीभगवन्निम्बाकाचार्य-5100 तम-जयन्ती-महोत्सवे परम-श्रद्धेयेषु अनन्तश्रीजगद्गुरु-निम्बार्काचार्य-श्रीजिमहाराजराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य महानुभावेषु सबहुमानं समर्पितः सुवर्ण-नक्षत्र माला-रूपः अपूर्वः

साभिवादन-निवेदन-पद्य-प्रसूनाञ्जलिः

— डॉ. नारायणः काङ्करः

अनन्त-श्री-जगद्गुरु-, निम्बार्काचार्य-राधासर्वेश-।
शरणदेवाङ्घ्र्यब्जयोः, सादरमभिवाद्य निवेदये॥1॥

अनन्तश्रीं-विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य 'श्रीजी' महाराज राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य जी के पाद-पद्मों में सादर अभिवादन करके मैं निवेदन करता हूँ।

ख्यात-वैदिक-निम्बार्क-, सम्प्रदायाद्याचार्याङ्घ्र्यब्जऽनैक-।
पञ्चाशच्छततम्या, जयन्त्याः सूचनया मोदे॥2॥

प्रख्यात वैदिक निम्बार्क सम्प्रदाय के आदिम आचार्यजी के चरण कमलों की 5100 वीं जयन्ती की सूचना से मैं प्रमुदित हूँ।

अत्राऽखिल-भारतीय,-विराट्-सनातन धर्म-सम्मेलनम्।
अपि भवितेति सूचना, मानसं मे मोदयतितराम्॥3॥

इस जयन्ती पर अखिल भारतीय एक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन भी होगा– यह सूचना मेरे मानस को अति मुदित कर रही है।

युग्मकम्– **समे शङ्कराचार्या, वैष्णवाचार्य-धर्माचार्यैः सह।**
नैके सन्त-महान्तो, मण्डलाधीशा विद्वांसः॥4॥
श्री मुरारिबापुसन्त, -मुख्यमन्त्रि-वसुन्धरोपराष्ट्रपति-।
शेखावत-राजनेतृ-,जनाः समैष्यन्तीति मोदे॥5॥

इसमें वैष्णवाचार्य और धर्माचार्यों के साथ सभी जगद्गुरु शङ्कराचार्य अनेक सन्त महन्त, मण्डलेश्वर, विद्वान्, सन्त श्रीमुरारि बापू, मुख्यमन्त्रिणी श्रीमती सौ. वसुन्धरा राजे, उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत और राजनेता लोग पधारेंगे। इससे मैं प्रमुदित हूँ।

मिलितिरेषामेकत्र, भवेदवश्यं विश्व-कल्याणाय।
अस्य श्रेयः सर्वं, श्रीपादा एव प्राप्तारः॥6॥

इन सब का एक स्थान पर सम्मेलन अवश्य ही विश्वकल्याण के लिये सिद्ध होगा और इसका सारा श्रेय श्रीचरण आप ही प्राप्त करेंगे।

सम्मेलनेऽत्र सर्वैर्-, इदन्त्ववश्यं विचारणीयमेव।
बहु-बहूपदेशैरपि, किं न जनेषु सद्वृत्त्युदयः?॥7॥

इस सम्मेलन में सभी को यह तो अवश्य ही विचारना चाहिये कि उनमें बहुत बहुत उपदेशों से भी लोगों में सद्वृत्ति का उदय क्यों नहीं होता है?

कार्याऽकार्य-विवेकः, किं नहि समुद्भवति जनेष्वद्य हा!
किं कुमार्गगा एते, सन्त्यशान्तास्तुदन्त्यन्यांश्च?॥8॥

हा! खेद है, लोगों में आज उन उपदेशों से कार्य और अकार्य का विवेक क्यों नहीं उत्पन्न हो रहा है? कुमार्गगामी ये स्वयं क्यों अशान्त हैं और क्यों दूसरों को भी उत्पीडित करते हैं?

महिलानामपहरणे, तासु बलात्कारे तासां च वधे।
लिप्ता एते क्रूराः, किं न बिभ्यतीश्वराद् दुष्टाः?॥9॥

महिलाओं के अपहरण में, उन पर बलात्कार करने में और उनकी हत्या करने में लिप्त रहने वाले ये क्रूर दुष्ट व्यक्ति ईश्वर से क्यों नहीं डरते हैं?

प्रवञ्चनमेषां कर्म, मांस-मदिराऽण्ड-सेवनं धर्मोऽद्य।
नैक – तस्करतयैते, स्वराष्ट्रमाखुवन्निकृन्तन्ति॥10॥

ठगना इनका कर्म है, मांस, मदिरा और अण्डों का सेवन इनका धर्म है। आज ये अनेक प्रकार की तस्करता से अपने राष्ट्र को ही चूहों की तरह कुतर रहे हैं।

परम-स्वार्थिन एते, लग्ना आतङ्कानेक-कृत्येषु।
निरपराधानपि जनान्, निघ्नन्तो नैव लज्जन्ते॥11॥

महान् स्वार्थी बने हुए और आतङ्क के अनेक कार्यों में लगे हुए ये व्यक्ति निरपराध जनों को भी मारते हुए लज्जित नहीं होते हैं।

खाद्य-पेय-पदार्थेषु, जीवनोपयोगि-भेषजेषु तथा।
अपमिश्रणं तु कृत्वा, निघ्नन्ति मुग्धानिमे जनान्॥12॥

खाने-पीने के पदार्थों में तथा जीवनोपयोगी औषधियों में ये अपमिश्रण करके भोले लोगों को मार रहे हैं।

राष्ट्रमेतत् स्वकीयं, भ्रष्टाचार-परायणा एतेऽद्य।
क्षीणं क्षीणं कृत्वा, किं शौर्यं स्वयं प्रदर्शयन्ति?॥13॥

भ्रष्टाचार में लगे हुए ये आज अपने राष्ट्र को क्षीण क्षीण करके कौन सा अपना शौर्य प्रदर्शित करते हैं?

प्रशासनाङ्कुश एषु न, समवाय एसां महतो महीयान्।
रक्तबीजवदेषां तु, जन्म राष्ट्रं क्लिश्नात्यति नः॥14॥

इन पर प्रशासन का अङ्कुश नहीं है। इनका समुदाय महान् से महान् है। इनका रक्तबीज की तरह जन्म तो हमारे राष्ट्र को बहुत कष्ट दे रहा है।

बाह्यातङ्कान्मुक्तिर्, न हि दृश्यतेऽनेक-वर्षेभ्यो नः।
तदूर्ध्वमेसां वृत्तिः, स्फोटोपरि स्फोटायतेऽद्य॥15॥

बाहरी आतङ्क से अनेक वर्षों से हमको मुक्ति मिलती नहीं दीख पड़ती है। उसके ऊपर आज इनका आचरण तो एक फोड़े पर दूसरा फोड़ा ही बनता जा रहा है।

प्रशासनं चाप्येषां, दमने बलवन्नानुभूयते हा!
जगद्गुर्वादयोऽतः, स्वीय-शक्तिमितः प्रयुञ्जताम्॥16॥

और प्रशासन भी इनका दमन करने में बलवान् अनुभव में नहीं आ रहा है। खेद है। अतः जगद्गुरु आदि कृपया अपनी शक्ति का प्रयोग इधर करें।

तन्त्र-मन्त्रादि-शक्त्या, शोधयन्तु दुर्वृत्त-चित्तमेते।
येन दुर्वृत्तज-कर्म, भवेन्न कस्याप्युत्तापकम्॥17॥

ये जगद्गुरु आदि महापुरुष अपनी तन्त्र-मन्त्रादि शक्ति के द्वारा दुराचारियों के मन को शुद्ध करने की कृपा करें– जिससे दुराचार से उत्पन्न कर्म किसी का भी उत्तापक नहीं बने।

अथाऽविवेकि-हस्ततो,ऽस्मदाराध्य-देवी-देव-दुर्गतिम्।
किं नहि दर्शं दर्शं, दूयन्ते जगद्-गुर्वाद्याः?॥18॥

और अविवेकी लोगों के हाथों से हमारे आराध्य देवी-देवताओं की होती दुर्गति को देख कर ही ये जगद्गुरु आदि क्यों नहीं दुःखी हो रहे हैं?

मूर्त्तीः सञ्चोर्य जना, विक्रीणते विदेशेषु धन-लुब्धाः।
विकृताः कुर्वते ताश्च, यस्मादमूः स्युरपरिचेयाः॥19॥

ये धनलोभी अविवेकी लोग मूर्तियों को चुरा कर विदेशों में बेच देते हैं, उन मूर्तियों को विकृत भी बना देते हैं– जिससे वे न पहिचानने योग्य हो जायें।

पत्र-पत्रिकादिष्वपि, प्रकाश्य देवी-देवता-चित्राणि।
पद्भ्यामुपमर्दयन्ति, मल-मूत्रयोः पातयन्ति ते॥20॥

वे लोग पत्र-पत्रिकादिकों में भी देवी-देवताओं के चित्र प्रकाशित करके उनको पैरों तले रौंदते हैं, रौंदवाते हैं और मल-मूत्र में भी डालते हैं-डलवाते हैं।

दुष्कृत्यमिदं त्वरितं, निवारयन्तु जगद् गुरवोऽद्य।
यतो न देवी-देवा, भवन्त्यनादृता नः कदापि॥21॥

आज जगद्गुरु महापुरुष इस दुष्कर्म को शीघ्रातिशीघ्र बंद करवाने की कृपा करें– जिससे हमारे देवी देवता कभी भी अनादृत न हों।

एवं तदङ्घ्र्यब्जयोर्, नामं नाममसकृद् विनिवेदये।
श्रीमन्तोऽप्यस्मिन् मे, बोभुवतु सहायका आर्याः॥22॥

इस प्रकार मैं उन महापुरुषों, जगद्गुरुओं के पादपद्मों में नैकशः नमन कर-करके विशेष निवेदन कर रहा हूँ। श्रीमान् आप भी आर्य मेरे इस कार्य में कृपया सहायक बनिये।

विराट्-सम्मेलनेऽस्मिन्, येऽभिनन्दन्ति भक्त्या श्रीपादान्।
प्रथमं तेऽभिनन्द्या, अमानिनो मानदा मान्याः॥23॥

इस विराट् सम्मेलन में श्रीचरणों को भक्ति से जो अभिनन्दित कर रहे हैं– प्रथम वे अभिनन्दनीय हैं। शास्त्रों की शिक्षा है कि निरभिमान और दूसरों को सम्मान देने वालों को सम्मानित करना चाहिये।

सन्ति समृद्धा नैके, श्रीपादानामिह सेवकोत्तमाः।
यद्यपि नास्मि तथाहं, तथाप्यसकृद् भवतो वन्दे॥24॥

श्रीचरण! आपके यहाँ अनेक समृद्ध और उत्तमोत्तम सेवक हैं। यद्यपि मैं वैसा नहीं हूँ, तथापि श्रीमान् आपको मैं नैकशः नमन करता हूँ।

पाठं पाठं सुकृतीः, पायं पायं च वाक्सुधां भवताम्।
हर्ष-निर्भर-मानसः, श्रीपादयोर्लुण्ठाम्यार्याः!॥25॥

श्रीमन्! आपकी सुन्दर कृतियों को पढ़-पढ़ कर और वाणी सुधा को पी-पीकर हर्ष से परिपूर्ण मन वाला मैं श्री चरणों में हे आर्य! लोट-पोट हो रहा हूँ।

निदधतां निज-कराब्जं, मूर्धनि मे शान्त्यनुभावकमार्याः।
नान्यद् याचे किञ्चिद्, दुर्वृत्तिं मेऽपसारयन्तु॥26॥

हे आर्य! कृपया श्रीमान् आप शान्ति का अनुभव कराने वाला अपना पाणि-पद्म मेरे शिर पर रख दीजिये। मैं और कुछ याचना नहीं करता। श्रीमान् आप मेरी दुर्वृत्ति को मिटा दीजिए।

—: युग्मकम् :—

इति सुमेरुकर्णमार्ग, - रामगञ्ज-धान्यमण्डी-जयपुरे।
विद्या-वैभव-भवने, वासी श्रीमत्कृपा-काङ्क्षी॥27॥
तत्रभवद्-भवद्भ्योऽद्य, सबहुमानं विनिवेद्य निज-हार्दम्।
विरमयति स्व-लेखनीं, प्रणमन् नारायण-काङ्करः॥28॥

इस प्रकार विद्या-वैभव-भवन, सुमेरुकर्ण-मार्ग, रामगञ्ज, धान्यमण्डी जयपुर 302003 (राजस्थान) में निवासकारी, श्रीमान् आपकी कृपा का आकाङ्क्षी, आज परमादरणीय आपको बहुत बहुत सम्मान के साथ अपना हार्दिक अभिप्राय विशेषरूप से निवेदित करके श्री चरणों में प्रणाम करता हुआ यह नारायण काङ्कर यहीं अपनी लेखनी को विराम देता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

वर्धापन-पद्यपुष्पाञ्जलिः

—देवर्षि कलानाथः शास्त्री
म.म. राष्ट्रपति सम्मानितः

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य-जयन्ती (5100) महोत्सवे श्रीजीमहाराजानामभिनन्दनम्

(1)
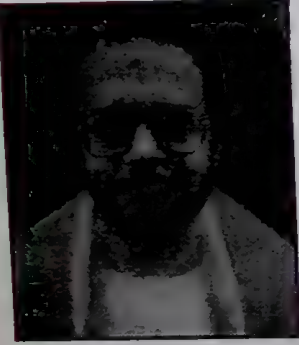
द्वैताद्वैतमयीं हि दर्शनगिरं सन्धार्य, सौदर्शनीं
यः प्रख्यापितवान् स्वकीर्तिममलां निम्बार्कसूरिः प्रभुः।
तस्यैव ध्वजमुद्वहन् बुधमणिः 'श्रीजी'ति संपूजितो
राजस्थान-भुवं विभूषयति वै राधाऽऽद्यसर्वेश्वरः॥

(2)

श्रीवृन्दावनधाम्नि संस्कृतगिरः शिक्षां प्रकृष्टां दधौ
हिन्द्या च व्रजभाषया, सुरगिरा ग्रन्थानगुम्फद् बहून्।
उत्कृष्टः कवि-गीतकारशिखरो वक्तोपदेष्टा तथा
विद्वद्वृन्दशिखामणिर्विजयतामाचार्यवर्यो ह्ययम्॥

(3)

निम्बादित्यमठे हि निर्जरगिरो विद्यालयं संदधद्
वेदाध्यापनकर्मणे रचितवान् यः पाठशालामिह।
इत्थं शिक्षणकर्मणे प्रतिदिनं शालात्रयं धारयन्
सोऽयं सर्वविधां ददाति जगते शिक्षामयीं सम्पदम्॥

(4)

ग्रन्थो "भारतकल्पवृक्ष" महितस्तद् "भारतीवैभवं"
सार्धं "भारतवीरगौरव"मयं यस्याऽस्ति तत् पुस्तकम्।
देशस्यास्य हि गौरवं बहुलयन् आचार्यचूडामणिः।
सूते राष्ट्रविचारणां स्वकृतिभिर्भाषासु सर्वास्वयम्॥

(5)

राधामाधवयोर्विलासरसभृद् वाग्गुम्फसन्दोहिभि-
र्गीतैः काव्यपदैश्च निर्जरगिरो हिन्द्याश्च शृंगारणाम्।
यः कुर्वन्निजभक्तिमार्गमहितैर्ग्रन्थैरबध्नान्मनो
राजस्थान-धराभुवां हि सुधियां भक्त-प्रजायास्तथा॥

(6)

श्रीनिम्बार्क-जगद्गुरोर्जनितिथेर्या पञ्चसाहस्त्रिकी
तस्या एकशतोत्तरे खलु महे सद्धर्मसम्मेलनम्।
संयोज्याखिल-भारतीयसुधियः सोऽयं समाकारयत्
राज्यस्यास्य च भारतस्य च यशः प्रख्यापयत्यद्य हि॥

(7)

सलेमाबादाख्ये प्रमुख-गुरुपीठे स्थितिमतः
प्रभून् श्रीनिम्बार्कान् विबुध-समुदाये प्रथयतः।
इमान् राधासर्वेश्वरशरण-देवान् प्रणमतां
हृदब्जान्यस्माकं प्रविदधति वर्धापनविधिम्॥

प्रधानसम्पादकः, "भारती" संस्कृत मासिकस्य,
भूतपूर्वोऽध्यक्षः, राजस्थान संस्कृत अकादम्याः,
निदेशकचरश्च संस्कृतशिक्षाभाषाविभागयोः राजस्थान सर्वकारीययोः,
अध्यक्षः, मंजुनाथ स्मृति संस्थानम्
सी/8 पृथ्वीराजरोड, जयपुर 302001

श्री श्रीजी वचनामृतम्

सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर निखिल विश्व ब्रह्माण्ड के एकमात्र कारण हैं, इनके सामान्य सङ्कल्प मात्र से ही अखिल ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है।

अनन्तश्रीप्रभाप्रभासमानविग्रहाणां कामाद्यरिषड्वर्गनिग्रहाणां मनःसहितचञ्चलेन्द्रियवाजिवेगनिरोधन-प्रग्रहाणां गोविप्रपशुपक्षिदीनमानवसेवानुग्रहाणां श्रीराधामाधवसमाराधनाग्रहाणां द्वैताद्वैत-दार्शनिकसिद्धान्तप्रचारप्रसारकर्मपरायणानां निरवद्यहृद्यगद्यपद्यकाव्यनिर्माणनिपुणानां राजस्थानप्रान्तान्तर्गतरम्याजयमेरुमण्डलमण्डितसलेमाबादविराजमानजगद्गुरु-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणां श्रीराधासर्वेश्वरचरणारविन्दमकरन्द-पानमदमत्तमिलिन्दानां **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां**
श्री 'श्रीजी' महाराजानां करकमलयोः समर्प्यते
पद्यपुष्पसुरभितं सादरमेतत्-

शुभाभिनन्दन-पत्रम्
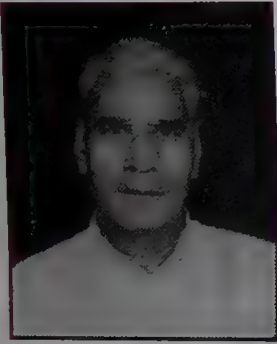
— महामहिम राष्ट्रपतिसम्मानितः 'वाचस्पति' पुरस्कार सम्मानित
पं. मोहनलाल शर्मा ''पाण्डेय''

(1)

राधासर्वेश्वराङ्घ्रिप्रचुरतमविभाभासमानाः समानाः,
द्वैताद्वैतानुयायिप्रखरमतिमतामग्रगण्याः सुधीन्द्राः।
प्रख्याता गीतकारा नवकवनचणाः कीर्तिमन्तो रसज्ञाः,
निम्बार्काचार्यवर्या हरिपदरसिका भान्ति भक्तिप्रबोधाः॥1॥

(2)

हिन्द्यां गीर्वाणवाण्यां व्रजगिरि रचिता नैककाव्यप्रबन्धाः,
नैके विद्यालया यैः श्रुतिविबुधगिरां स्थापिता बोधलब्ध्यै।
ग्रन्थानां ज्ञानलब्ध्यै श्रुतविषयजुषां पुस्तकागारमेकं,
पुस्तानां मुद्रणार्थं परिकरसहितं स्थापितं यन्त्रमेकम्॥2॥

(3)

पत्रं सर्वेश्वराख्यं विविधविषयकं वाचनार्थञ्जनानां
पत्रं निम्बार्कसंज्ञं द्वयमपि क्रमशो मासिकं पाक्षिकञ्च।
वृत्तान्तानामवाप्त्यै मनुजहितकरं वाचनागारमेकं
खातं निम्बार्कतीर्थं नृपशुखगहितं स्वर्णदीतुल्यतोयम्॥3॥

(4)

श्रीराधामाधवाख्या घृतदधिपयसां प्राप्तये धेनुशाला,
दीनानां रोगशान्त्यै गदहरणपदं श्रीहरिव्याससंज्ञम्।
राधासर्वेश्वराख्यः सुगमवसतये स्थापितश्छात्रवासः,
दिव्यं निम्बार्कसंज्ञं शिशुनिकरकृते निर्मितं मन्दिरं यैः॥4॥

(5)

तीर्थे कुम्भेऽर्धकुम्भे व्यरचि नगरकं पूज्यनिम्बार्कसंज्ञं
यस्मिन् सर्वा व्यवस्था उपकरणयुताश्चालिता भक्तवृन्दैः।
यात्रा धाम्नां चतुर्ण्णां बहुसुकृतजुषां मोक्षदानां पुरीणां
भक्तैः सार्धं कृता यैः प्रवचनपटवो भान्ति भक्त्युज्ज्वलास्ते॥5॥

(6)

श्रीसर्वेश्वरभक्तिशुद्धमनसः सौहार्दसम्पादकाः,
अध्यात्मोद्भवभासुराः कविवराश्चारित्र्यरत्नोज्ज्वलाः।
नानापक्षिदयापराः सहृदया निःस्वार्थसेवाकराः,
शान्तिस्नेहपरोपकारनिरता भावाश्रिता भान्ति ते॥6॥

(7)

श्रद्धां साधुषु वर्धयन्नतितरां प्रीतिं समुल्लासयन्,
हिंसामाशु निवारयन्निरुपमां मैत्रीं जनेषून्नयन्।
गाढध्वान्तसमाकुलस्य जगतस्त्रासं निरस्यन् सदा
कल्याणं विदधत् समस्तजगतां 'श्रीजी' सदा शोभते॥7॥

(8)

श्रीसर्वेश्वरपादपद्ममधुपा राधासमाराधकाः,
गीताविष्णुसहस्रनामरसिकास्तापत्रयोन्मूलकाः।
श्रीमद्भागवतस्य पाठनिरता वेदान्तबोधप्रदाः,
राजन्तां नितरां पवित्रमनसः श्रीजीतिसंज्ञा बुधाः॥8॥

पाण्डेय भवनम्
म.नं. 2381, खजाने वालों का रास्ता
जयपुरम्-302001 (राजस्थान)

प्रशस्ति-पञ्चदशी

— पं. प्यारेमोहन शर्मा
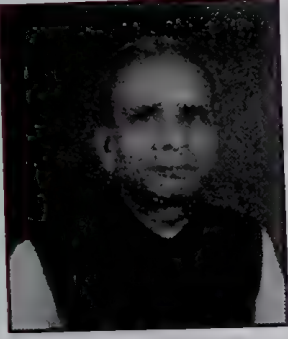
(1)

आद्याचार्यः कठिनतपसा ज्ञातवान् ब्रह्मतत्त्वम्,
तज्ज्ञात्वा यः निजजनकृतेऽवर्णयद् ग्रन्थमध्ये।
द्वैताद्वैतं, त्रिगुणरचितं माययाश्लिष्टमेतत्,
तत्त्वज्ञानं यदिह निहितं नैव ग्रन्थान्तरे तत्॥

(2)

नो तद्भिन्नं जगति सकले विद्यते वस्तु किञ्चित्,
नो मृद्भिन्नो भवति हि घटो निर्मितो मृत्तिकातः।
कार्यं तावत् पुनरपि तथा भिन्नमेव द्वयोस्तत्,
लोके लोकैर्नहि घट इवापूर्यते वारिणा मृत्॥

(3)

द्वैताद्वैतं सरलविधिना सर्वतः पूर्वमापुः,
स्रष्टुः पुत्राः सनकप्रमुखा हंसविष्णोः सकाशात्।
तेभ्यः प्रापत् मुनिरपि बुधो नारदो विष्णुभक्तः,
श्रीनिम्बार्कः स्वगुरुवदनात् प्राप्तवान् तं हि बोधम्॥

(4)

नाम्ना हंसेति पश्चात् जगति नरवरैर्ज्ञायते मार्ग एषः,
अन्यामाख्यां ततोऽयं विधिसुतमहितां प्राप्तवान् सम्प्रदायः।
निम्बार्काचार्यनाम्ना तदनु सुविदितः सम्प्रदायो बभूव,
पूर्वाचार्याश्च तस्मिन् विविधगुणगणैः सम्भृताः सम्बभूवुः॥

(5)

तस्मिन्नाचार्यपीठे प्रभुपदरसिकाः ख्यातसंज्ञा वरेण्याः,
राधासर्वेश्वराङ्घ्रि – प्रणतिततिपरा भानुवद् भासमानाः।

साक्षान्निम्बार्करूपा गुरुसमगुणिनो भारते सुप्रसिद्धाः,
निम्बार्काचार्यवर्या सकलबुधनुता भान्ति पीठप्रतिष्ठाः॥

(6)

आचार्याः पुण्यपीठे शशिसमधवलैः श्वेतवस्त्रैर्वृता ये,
भाले निम्बार्करीत्या कलितसुतिलकाः कृष्णबिन्द्वाश्रिताश्च।
'श्रीजी' नाम्ना सुपूज्याः सकलहितकराः विश्ववन्द्या महान्तः,
राधापादारविन्दे प्रणतिततिपराः कीर्तिमन्तो विभान्ति॥

(7)

भाषायां संस्कृते वा नवकवनपटुः सर्जकः पुस्तकानां,
शास्त्राणां तत्त्ववेत्ता सरलमृदुमनाः कृष्णभक्तिप्रसन्नः।
राधातत्त्वस्य बोद्धा सरसकविरसौ भक्तवात्सल्ययुक्तः,
सर्वैः शिष्यप्रशिष्यैर्नयविनययुतैर्नम्यते भक्तवृन्दैः॥

(8)

सारल्यं यदिहास्ति तन्न विबुधेष्वन्येषु संलक्ष्यते,
गाम्भीर्येऽब्धिसमो दयानिधिरसौ धर्मोपदेष्टा सुधीः।
आचार्यप्रवरो जगद्गुरुतया सर्वत्र सम्मानितः,
नानाशास्त्रकृतश्रमो मतिमतामग्रेसरो नम्यते॥

(9)

वैदुष्येऽप्रतिमः प्रवाचकवरः सिद्धान्तसंपोषकः,
सम्यक्शास्त्रविवेचकः सुरगिरि श्रेष्ठोऽधिवक्ता बुधः।
विद्वन्मण्डलमण्डनः सुतपसा जाज्वल्यमानाननः,
नित्यं ध्यानपरायणः प्रभुरसौ नंनम्यते सादरम्॥

(10)

भक्ता यस्य सुदर्शनाय सततं सोत्का भवन्त्यात्मना,
आढ्या आढ्यतराश्च यच्चरणयोर्धूलिं सदा मस्तके।
धृत्वा धन्यतमं स्वभाग्यमचिरं जानन्ति शिष्याः प्रभोः,
यस्याशीर्वचसा फलन्ति पुरुषाः स्वीयोद्यमे सर्वदा॥

(11)

ग्रन्थग्रन्थिविमोचनेऽतिनिपुणा ज्ञानप्रभाभास्वराः,
आचार्यप्रमुखाः सुधातिमधुरा राधास्तुतेः सर्जकाः ।।
जीवब्रह्मविवेचकाः सुकवयः सर्वेश्वराराधकाः,
राजन्ते बहुशास्त्रलेखनपराः सद्धर्म-संरक्षकाः ।।

(12)

वेदाध्यापन – हेतवे विरचिता शाला विशाला मठे,
योग्यास्तत्र नियोजिताः सुगुरवः सच्छास्त्रविज्ञा बुधाः ।
आवासाय च तत्र संसुघटिता श्रेष्ठा व्यवस्थाश्रमे,
निःशुल्कं ह्यशनं तथैव वसनं छात्रा लभन्ते मुदा ।।

(13)

प्रातः प्रीतियुताः पठन्ति बटवो वेदं गुरोः सस्वरं
शास्त्रं व्याकरणं तथैव ललितं साहित्यशास्त्रं प्रियम् ।
सन्ध्योपासनमाचरन्ति सवनं कुर्वन्ति छात्राः सदा
मन्ये तद्धि पुरातनं गुरुकुलं संलक्ष्यते सम्मुखे ।।

(14)

गोशाला घटिता गवां सुकृतिना रक्षार्थमेका मठे,
यासां कोऽपि न रक्षकः सपदि ताः सम्प्राप्नुवन्त्याश्रमम् ।
आचार्याः स्वयमात्मनो मृदुकरैः कुर्वन्ति सेवां तदा,
धन्यास्ताः ससुखं वसन्ति परितो यान् सर्वदा धेनवः ।।

(15)

आयुर्वेदचिकित्सया सरलया सम्प्राप्नुयुर्मानवाः,
नैरुज्यं सुखपूर्वकं सुमतिमान् बुद्ध्यानया चाश्रमे ।
आयुर्वेदिकमौषधालयमपि प्रातिष्ठिपत् सत्वरं,
सर्वेषां हितसाधकं गुरुवरं वन्दामहे सादरम् ।।

पूर्व-प्राचार्यः संस्कृतमहाविद्यालयः
पूर्वनिदेशकः राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुरम्
सम्पादक : संस्कृत मास पत्रिकायाः "भारती" जयपुरम् (राजस्थानम्)

श्रीमन्मायावच्छिन्न-समुच्छिन्न-तिमिर-निकराणां श्रुत्युद्भूत-द्वैताद्वैतसिद्धान्त-प्रतिपादन-दिनकराणां, श्रीमन्निम्बार्काचार्यपादपीठाधीश्वराणां जगद्गुरूणां श्रीमद्गुरूणां पादाब्जयोः

वाङ्मयम् अर्चनम्

— पं. राधाकृष्ण गौडः

निम्बादित्यस्य पीठे सकल-मुनिगणैरर्चितं बालसूर्यं,
शिष्यान् संबोधयन्तं सुरुचिर-महसा भासमानं समन्तात्।
शुद्धं शान्तं प्रसन्नं जगदभयकरं श्रीयुतं सन्ततं श्री–
"**राधासर्वेश्वराख्यं**" परमगुरुमहं चिन्तये ब्रह्मरूपम्॥1॥

कण्ठे यस्य विभाति शश्वदमलः सर्वेश्वरः श्रीहरि–
स्तं देवं द्विज-गोजनार्तिहरणं कारुण्यमूर्तिं शिवम्।
संसारार्णव-घोर-दुष्टमकरी-मायामुखे पीडितान्
त्रातुं बोधतरिं यतेन मनसा श्रीमद्गुरुं भावये॥2॥

क्षेत्राधिपेन्द्र-वटुकेश्वर-शंकरादीन्, देवानुपास्य किल संप्रति कौतुकाढ्यम्।
कृष्ण-स्वरूपममलं कलिकल्मषघ्नं, संवीक्ष्य ते चरण-किंकरतां व्रजामि॥3॥

तन्मां समुद्धर शरण्य दयैकसिन्धो! प्राप्तोऽधुनास्मि किल ते पदपद्ममूलम्।
ये षट्पदा रसविदो हि यतो नलिन्यास्तन्नायकं दिनमणिं शरणं न यान्ति॥4॥

हे हरिचक्र! श्री गुरुवर्य!
नित्यमनन्तं नौमि भवन्तम्॥5॥

समर्पयति—
श्री चरणाब्जभृङ्गोऽन्यतमशिष्यः
राधाकृष्ण गौड़ः
साहित्याचार्य आचार्यः
मथुरास्थः

श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य : श्री 'श्रीजी' महाराजः

—डा शिवसागर त्रिपाठी
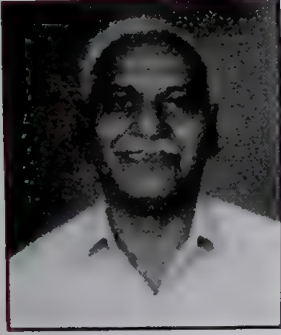
ॐ स्वास्ति श्रीमद्विद्वद्वरेण्यानां पण्डित-प्रवराणां वेदशास्त्रादिविद्यानिष्णातानां पदवाक्य-प्रमाणपारावार- पारीणानां भगवदंशावताराणां संस्कृतसंस्कृतिरक्षकानां गोवंशप्रतिपालकानां भक्तशिरोमणीनां रसस्वरूप-श्रीराधा-परमाराध्यरसपरब्रह्मसर्वेश्वर-दिव्य-स्वरूप-श्रीकृष्णरूप-युगलसमुपासकानां परमोपास्यानाम् अनन्तकृपापयोनिधीनाम् अहोरात्रं संस्मरणीयचरणानाम् अजयमेरुप्रान्ते किशनगढ़क्षेत्रे सलेमाबादस्य निम्बार्कतीर्थपीठाधीश्वराणाम् अनन्त- श्रीविभूषितानां पूजनीयाना-माचार्यप्रवराणां श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यमहाराजानां व्यक्तित्वकर्तृत्व-ज्ञान-विज्ञानादिविविध-विषयान्विताभिनन्दनग्रन्थसमर्पणावसरे सार्वजनिकाभिनन्दन-समारोहे च सादरम्—

(1)

श्रीनिम्बार्कस्य तीर्थेऽस्मिन् राधाकृष्णात्मिका परा।
कृष्णः राधात्मको जातः वन्दे युगलविग्रहम्॥1॥

(2)

सद्भक्तेषु कृतास्पदा नयविदः लोकोत्तराः कोविदाः
वक्तारश्च विधासु लेखनचणाः हिन्द्यां तथा संस्कृते।
नानाशास्त्रविचक्षणाः सुकुशलाः सम्मानिताः सर्वदा
श्यामाश्यामरताः कुशाग्रमतयः 'श्रीजीति' नामश्रिताः।

(3)

वैदुष्याप्रतिमप्रभावविभवो निम्बार्कपीठाधिपः
देवाचार्यविभुः बुधो विगतभीः विद्वद्वरेण्यो महान्।
शास्त्रादिव्यसनी तथागमधनी विद्यानिधिः ज्ञानवान्
आचार्यप्रवरो जगद्गुरुवरः शान्तिप्रदो भासते॥

(4)

गोवंशप्रतिपालको नयचयप्रस्तारकः सर्वदा
वन्द्यो भक्तशिरोमणिः मुनिवरो धर्माधिकारी कविः।
सौम्यां मूर्तिसृतिं वहन् स गरिमाश्रीशो यशोमण्डितः
सम्मान्योऽद्य सभाज्यते बुधवरैः राधाङ्कसर्वेश्वरः॥

(5)

कोटि - कोटि जनाराध्यो ह्यनन्त - श्रीविभूषितः।
राधासर्वेश्वरो देवाचार्यः श्रीज्यभिनन्द्यते॥

(संस्कृत विभागाध्यक्षचरः, राजस्थान-विश्वविद्यालयः)
ए-65, जनता कालोनी, जयपुरम्

परम पूज्य आचार्यश्री की परिकरों के प्रति सहृदयता

— रसिक शरण

परम पूज्य जै.जै. यूं तो प्राणीमात्र के लिए संवेदनशील हैं और दूसरे की कष्ट-वेदना मनोभावों का पूरा ध्यान रखते हैं। आपश्री के सेवा परिकर में रहते हुए मुझे दूसरा पूर्णतः अनुभव हुआ।

आपश्री के हृदय का आपरेशन हुआ था। हम तीन चार परिकर आपश्री की सेवा टहल में थे। मैं विशेषतः दिन में भी आपश्री के पास रहता और रात में भी, अन्य सेवा परिकरों के होते हुए भी अपनी स्वेच्छा से सेवा में रह रहा था। दो एक दिन में आपश्री को यह ध्यान में आया तो एक दिन रात में ही मुझसे कहने लगे– क्यों महात्मा ! सोते हो या नहीं? रात और दिन हमारे पास ही रहते हो। मैंने शिर झुका लिया। कहना चाह रहा था, महाराजश्री नींद नहीं आती। महाराजश्री ने अन्य परिकरों को बुलाकर कहा, देखो यह रात-दिन नहीं सोता, इसे रात की सेवा मत दो। सभी सोने उठने व भोजन प्रसाद का ध्यान रखा करो। तुम्हें भी अपने आप को स्वस्थ रखना है।

निम्बार्क तीर्थ

मङ्गल कामना

—श्री हरिनारायण शर्मा

वामाऽप्यवामा शरदिन्दु-कान्तिः,
श्रीराधिका कीर्त्तिसुता सुकीर्त्तिः।
भवप्रदा वैभव-दायिनी सा
भवे भवे मे भविकं ददातु॥1॥

(1)

श्री श्रीजीनां प्रादुर्भावः

सर्वेश्वरस्य चरणाम्बुज - चञ्चरीकः,
सद्धर्म-कर्म - निरतो द्विज-वंश-रत्नम्।
गौड़द्विजोत्तम-कुले सुगृहीतजन्मा,
श्रीरामनाथ इति सुन्दरनामकोऽभूत्॥1॥

(वसन्ततिलका)

(2)

तथाऽभवत्तत्सहधर्मचारिणी
श्रियाऽन्विता स्वर्णलताऽभिधां गता
दया-क्षमा-शान्ति-गुणैर्विभूषिता-
पतिव्रतानां प्रथमा रमा-समा॥2॥

(वंशस्थ वृत्तम्)

(3)

प्रतिपदि सितपक्षे भव्य-वैशाख-मासे
रस-वसु-निधि-भूमी संख्यके (1986 वि.) विक्रमाब्दे ।
द्विजवर-विमलश्रीरामनाथस्य गेहे,
सकल-भव-भवाय बाल एकोऽजनिष्ट॥3॥

(4)

अवेक्ष्य पुत्रस्य शरीर-कान्तिं,
रत्नेन तुल्यां सुमनोहराञ्च।
गुणानुरूपं तनयस्य नाम
चकार 'रत्नं' जनको मनीषी।।4।।

(5)

दिने - दिने संपरिवर्धमानं
पक्षे सिते चन्द्रमसा समानम्।
सुतं द्वितीयं प्रभयाऽद्वितीयं
विलोक्य पित्रोर्हृदयं तुतोष।।5।।

(6)

परन्तु संसार-सुखेषु निःस्पृहं
मुकुन्द-पादाम्बुज - लग्न-मानसम्।
विलोक्य पुत्रं पितरौ बभूवतुः,
विषाद - हर्षाश्रित - मानसौ तदा।।6।।
(वंशस्थवृत्तम्)

(7)

निम्बार्क-पीठाधिपतिं शरण्यं,
श्रीबालकृष्णाख्यजगद्गुरुं सः।
संप्रार्थ्य दीक्षार्थ - मवाप्तकामो
दीपः प्रदीपादिव राजते च।।7।।

(8)

तदा प्रभृत्येव जगद् हिताय
जगद्गुरुर्धर्म - प्रचार - कार्यम्।

कुर्वन् व्यतीतान् बहुवत्सरांश्च,
प्रौढामवस्थां भजतेऽधुनाऽसौ ॥8॥

(9)

श्री सर्वेश्वर - पाद - पद्म प्रणयी, निम्बार्क - पीठाधिपः
वेदानां समुपासकः सुरगवी संरक्षकः सर्वथा।
विद्युद् यन्त्र-सुमन्त्र-तन्त्रनिपुणः साहित्यसंगीतविद्
श्री 'श्रीजी' करुणार्णवो विजयतां विभ्राजते भूतले॥9॥
(शार्दूलविक्रीडितम्)

(10)

आचार्यवर्यस्य गुणैः प्रभाविता-
अकादमी, संस्कृत देववाण्याः।
विधाय सत्कारमहो कृतार्था
जाता स्वयं गौरवशालिनी सा॥10॥

(11)

शताऽधिकानां प्रियमाधवानाम्
प्रभात - वेलासु मनोहरासु॥
शृण्वन् द्विजानां श्रुति -
रम्यशब्दान्
प्रमोदतां श्रीश्वरमर्थयामः॥11॥

गुरुवर्याणां पाटोत्सवसमये भाद्रकृष्णपञ्चम्यां सं. 2043,
7 दिनांके रचितानि पद्यानि
'तेवड़ी' ग्राम वास्तव्यः 'श्रीजी'चरणचञ्चरीकः

बड़े-बड़े तत्त्वज्ञ महापुरुष भी विरोधी तत्त्वों के सङ्ग-दोष से पथ विचलित होते देखे गये हैं।

—श्री श्रीजी महाराज

समस्त-भूमण्डलाऽऽचार्य-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपतीनां जगद्गुरु-श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-महाराजानां निम्बार्कपीठस्थितानां श्रीजगद्गुरुनिम्बार्काचार्यचरणानां 5100– शून्य-शून्येन्दु बाणवर्षारम्भे महामहोत्सवे पूज्यश्रीजी चरणानां स्वागते **स्वागताभिनन्दनम्** रचयिता-मथुरास्थः वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः, निम्बार्कभूषण :

—डॉ. वासुदेवकृष्णः चतुर्वेदी

यत्कृपया सञ्जायते शान्तिश्चात्र परत्र।
हे सर्वेश्वर पातु मां यत्र तत्र सर्वत्र॥ (हिन्दी छन्दः)
राजस्थानधरामणिं बुधवरं वेदान्तविद्यानिधिं
श्री-सर्वेश्वरपादपद्म-रसिकं विद्यार्थिकल्पद्रुमम्।
द्वैताद्वैतमताब्जभास्करमहो ''श्रीजी'' पदैर्विश्रुतं
वन्दे वेदविभाकरं गुरुवरं निम्बार्कतीर्थस्थितम्॥

1008 जगद्गुरुःश्रीश्रीजीमहाराजनिम्बार्काचरणः (कुण्डलिया–)

विद्या भूषणसद्गुरो! श्री 'श्रीजी' सुकुमार।
श्री निम्बार्कशिरोमणे प्रतिभा प्रतिमाचार॥
प्रतिभाप्रतिमाचार सनातन धर्म सुशोभन,
अखिलवेदवेदान्त - शास्त्रसन्दोह - विमोहन।
वैष्णव-गुरुसम्राट्! सरस-कविता ते-हृद्या
लोकशोक-सन्ताप-हारिणी भुवि ते विद्या॥

मुसलबन्ध काव्यम्—
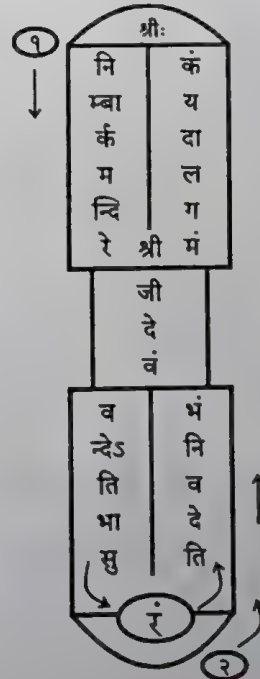
निम्बार्क-मन्दिरे श्रीजी देवं
वन्देऽति भासुरम्। रन्तिदेव-
निभं वन्दे जीवमंगलदायकम्॥

धनुर्बन्ध-काव्यम्—

नीलाम्बरावृतां राधां
विद्युदाभां सुरैर्नुताम्
तां श्रीजी हृद्गतां वन्दे
या निम्बार्क-विकासिनी ॥

श्रीराधाकाव्यम्—

उपर्युक्त प्रकारेण.
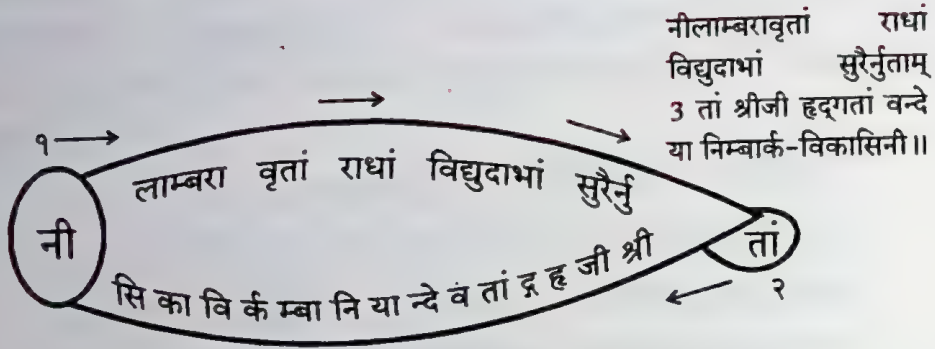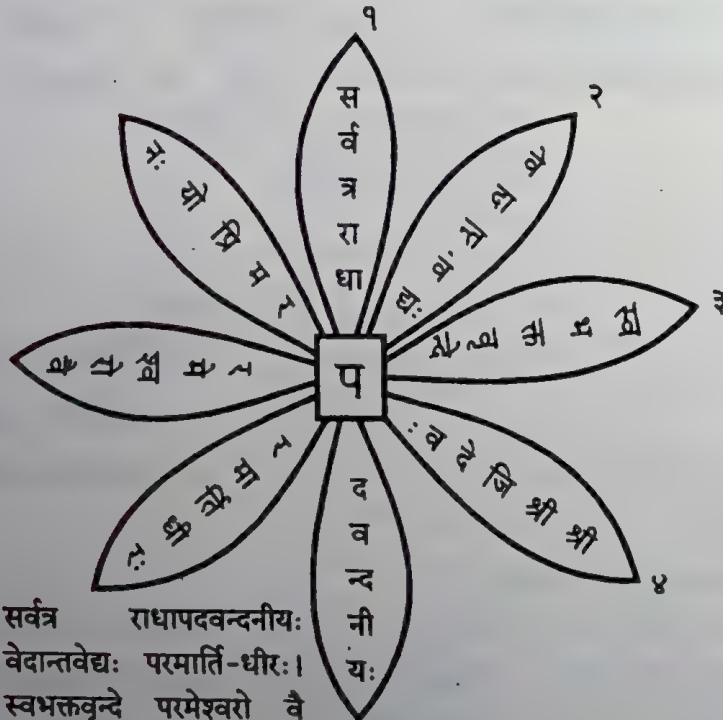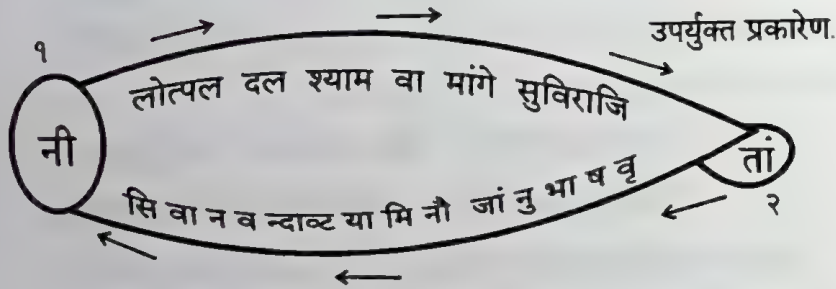
सर्वत्र राधापदवन्दनीयः
वेदान्तवेद्यः परमार्ति-धीरः।
स्वभक्तवृन्दे परमेश्वरो वै
श्री श्रीजिदेवः परम प्रियो नः।

नाथस्त्वं सर्व-गोपीनां
नाथो भव ममाद्य भोः
नाम्ना नाथः श्रियो नाथः
नाथानाथे दयां कुरु॥
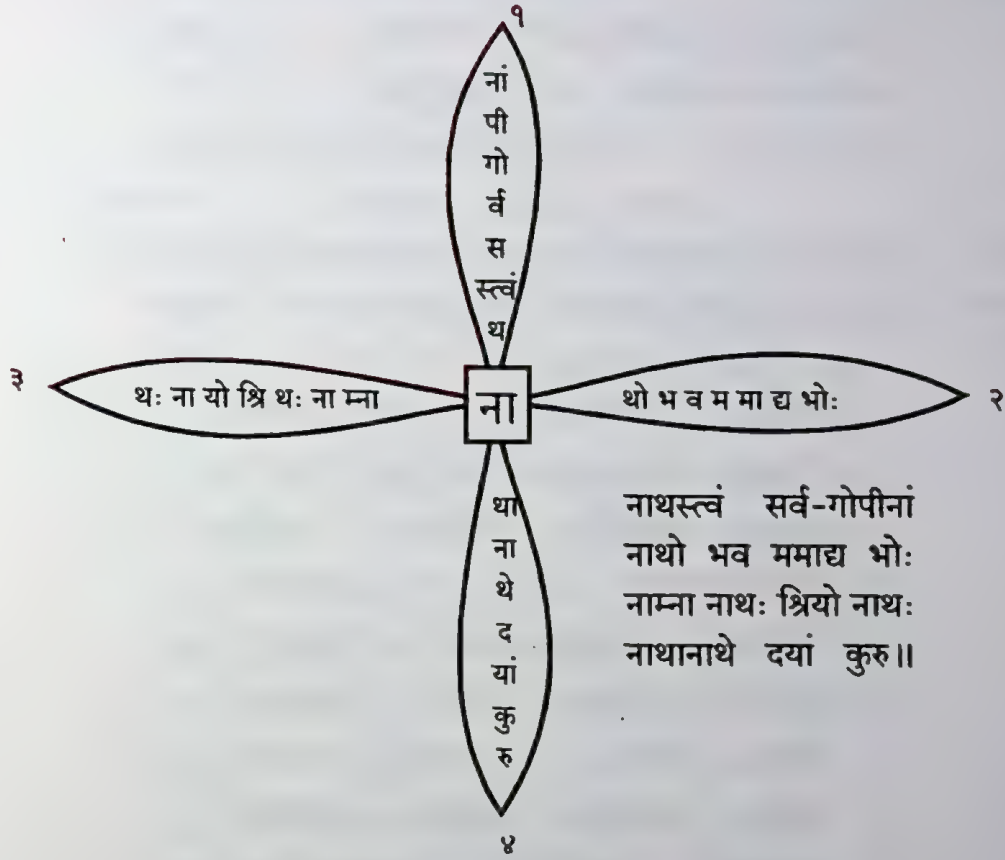
प्रहेलिका —

रासस्थले काऽस्ति प्रियाप्रभूणां?
किमाह सा कृष्णवियोगमाप्य?
को वाऽस्ति निम्बार्कगुरुः पृथिव्यां?
(श्री) राधाजिसर्वेश्वर देवविज्ञः।

रासस्थल में प्रिया का नाम क्या था— श्री राधा
वियोग में उन्होंने क्या नाम लिया— सर्वेश्वर
निम्बार्कसंप्रदाय के जगद्गुरु कौन हैं—

उत्तर है— श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

सारसा दृढतावादे— देवतार्पितभारता
तारमाभाति धाराया या राधा कृष्ण सा रसा

अनुलोम विलोम—

राधा सार रसाधारा
सार सार रसा रसा।
भा रा राम मरा रा मा
जय राधा धरायज

रसाधरायाः आसारः तं राध (प्रार्थय) की ह्शीसा– या सारस्य सारा-रसरूपा-सा– कामपत्नी सैव रभा-मार एव रामासुमारमाटः – तं ज्ञात्वा धरां जय। इत्यर्थः

गीतिः —

वन्दे श्रीजी राधा-चरणम्
विद्वत् कवि गण कविता भरणम्।
कुरु जयसिंह सर्वेश्वर शरणम्
शान्तिसाधनं कुरु गुरु वरणम्।
सफलं मानव जन्म विहरणम्।
कामः कुरुते नैव प्रहरणम्।
भूयो भवति न जननं मरणम्।
यदि सर्वेश्वर चरणं शरणम्।
ध्यानाद् भवन्ति वेदना-हरणम्।
सकल रोग शमनं शुभकरणम्।
भवति कदापि न माया वरणम्।
शक्यं भवति शिरसि गिरिधरणम्।
देवलोक-गमनं त्वथ रमणम्।
संसारार्णवतः खलु तरणम्॥
श्रीराधासर्वेश्वर शरणम्।
भज वासुदेवकृपा हृत् हरणम्॥

घनाक्षरी छन्दः —

चन्द्रवदनमति सौम्यं पद्मपाणिं पद्मपाद-
मनिन्द्य वपु सौन्दर्यं माधुर्यं वीक्ष्यताम्।
कम्बुग्रीवं दीर्घबाहुं हंसगतिमाश्रयन्तं
कामभस्मकृष्णकूर्चमद्भुतमत्र चिन्त्यताम्।

कामबाण-कर्षणायाऽयत-ललाट मीक्ष्य
कुन्दपुष्पं निभदेहयष्टिर्विज्ञायताम्।
वर्णनं जगद्‌गुरोः सर्वेश्वर-देवस्यैव
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यमत्र धार्यताम्।

हिन्दी भाषा में स्वामत—

चन्द्र से वदन वारै चन्दन समदेह धारे
पंकज नयन वारै जग उजियारे हैं।
हंसचाल पेखि हारे-सुरनदेख मोर हारे
चन्दन चक्रशंख धारै धर्म रखवारे हैं।
मुनिन के वेषवारै ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलकघाटे
स्वच्छवस्त्र वेषवारै भक्तचित्त हारे हैं।
उदधि व्रजभाषा के रत्न सुर भाषा के
हिन्दी के हम राधासर्वेश्वर हमारे हैं।
जिनको जस हास सौ अरन प्रकाश को सौ
कास सौ हुलास सौ पूनम प्रभासी है
हिम सौ हिमालय सौ छिति पै छपाकर सौ
इन्द्र सौ नरेन्द्र सौ व्रजेन्द्र सौ प्रकासी है
गद्यकवि बाण सौ सुकविता में भास से हैं
देव रत्नाकर छटा छाप ने तरासौ है
'कृष्ण' कवि मान देत हर्ष भोज कवि जैसो
श्री राधासर्वेश्वर देव कवित्व सिद्धिभासौ है॥
रजतकैलास की महेश अट्टहास मानों
शरद् ज्ञानवृन्द सी छिति पै सुहाई है
भास-कालीदास सी है पद्माकर देव सी है
तुलसी रहीम घनानन्द सुखपाई है।
रस की छटा है भाव भावना विभावना है
कविता कीर्ति कामिनी कदम्ब सुखदाई है।
भारती की वैभव-औ स्तुति रत्नाकर जैसी
श्री राधा सर्वेश्वर देव जू की कविताई है॥

कदली वन्धः – पद्म बन्धः

पद्म बन्धः

कदली वन्धः
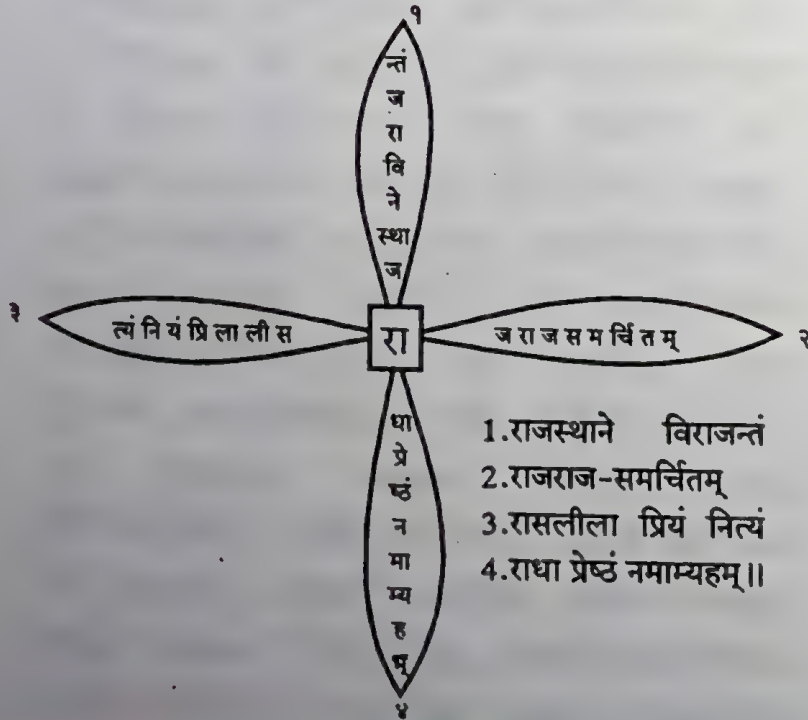
पद्मबन्ध काव्यम्—
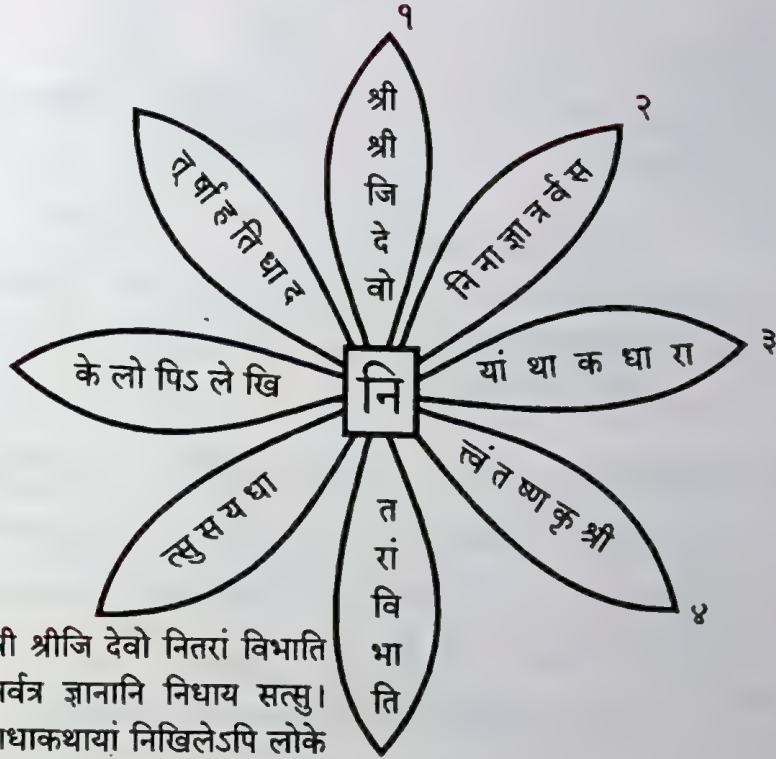
श्री श्रीजि देवो नितरां विभाति
सर्वत्र ज्ञानानि निधाय सत्सु।
राधाकथायां निखिलेऽपि लोके
श्रीकृष्णतत्त्वं निदधाति हर्षात्॥

कदली बन्धः — पद्मबन्धश्च
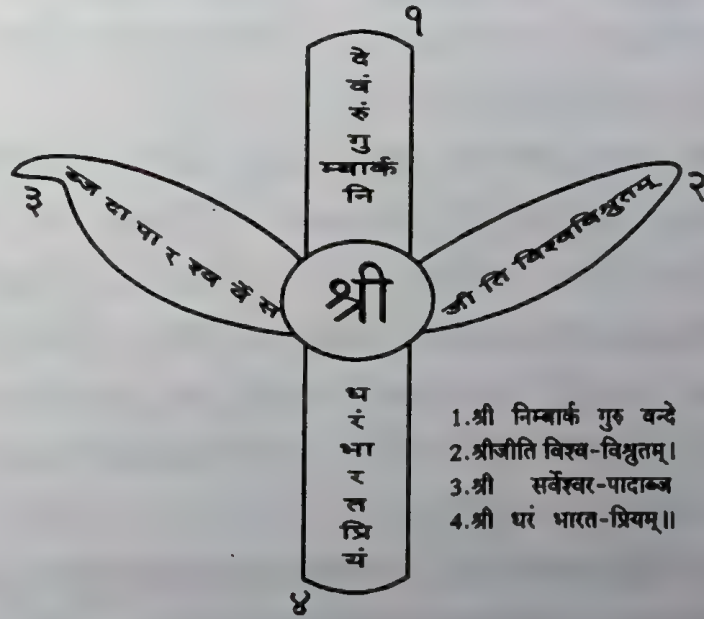
1.श्री निम्बार्क गुरु वन्दे
2.श्रीजीति विश्व-विश्रुतम्।
3.श्री सर्वेश्वर-पादाब्ज
4.श्री धरं भारत-प्रियम्॥

शक्तिबन्धः —
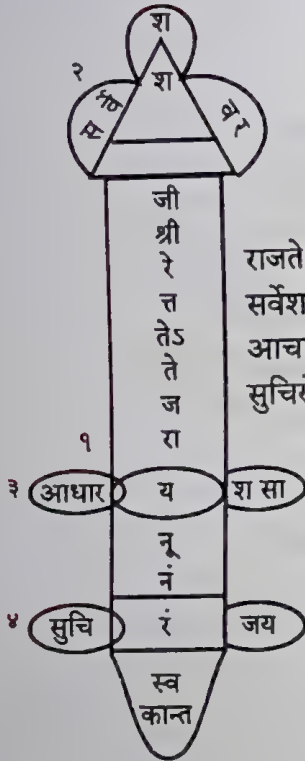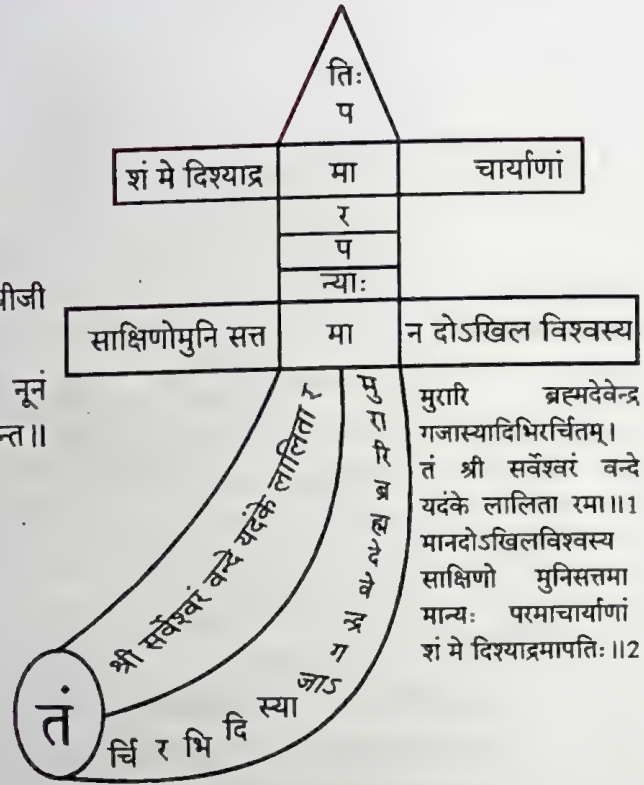
खड्गबन्धः

मातु जयन्ती तजि नहीं आये रोई बहुत रीझ नहीं पाये
अंग अंग ते मैं भई पुंगी– मैं निम्बारक की प्रिय मूंगी
विन सर्वेश्वर मैं भई गूंगी।
देखे बहु अवतार न पाये – ढूंढ़त रही वे कहाँ समाये।
खबर न लीनी नहिं कोई आये, देखि दसा नहिं कोई पछताये।
विश्व विदित निबांरक आये – श्री श्रीजी हिरदै घुसि आये।
वैष्णव भगत जगत ते आये नव मन्दिर उत्साहन छाये
जग में मूंगी पैठण भाये – आदि जग गुरु की में मूंगी
आज हँसूँगी रहूँ न गूंगी – जग में छाय रहै अब मूंगी

कवि– कविन कहैंगें अब तोहि गूंगी
निम्बारक की प्यारी मूंगी ओ मेरी प्यारी भूमी मूंगी ॥2॥

जगद्गुरूणां श्री 1008 श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवजी महाराजानां शुभाशंसनम्।

श्री राधा-स्तवः

सुनन्द - तनय - प्रियां सरस - रास - चूड़ामणिं
विलास - रस - वर्द्धिनीं सखि - सहस्र - मध्य - स्थिताम्।
सुपीत - वसनावृतां विपिनराज - शोभापराम्।
नमामि ब्रज - राधिकामखिल - लोकवन्द्यां मुदा।।1।।

महोत्सव - महोदयां मधुर - मान - शोभाधिकाम्।
निकुंज - प्रियमानसां मदनसारः - हाराधिकाम्।।
स्वकृष्ण - हृदयाधिकां जगति निम्बवरार्चिताम्
नमामि ब्रज - राधिकामखिल - भोग - सम्पादिकाम्।।2।।

द्वैताद्वैतः सकल - विदितस्तस्य संस्थापनार्थं
राधासर्वेश्वरयुगविभुं त्वर्चने वर्धयन्तम्।
मूंगीपैठे जगति विदिते जन्मना भूषयन्तं
निम्बादित्यं भजत सततं निम्बतीर्थे स्थितं वै।।

कुण्डलिया—

श्री राधासर्वेश्वरो जगद् गुरुर्विद्वान्
सर्वेश्वर पूजारतो निम्बार्कोऽस्ति महान्
निम्बार्कोऽस्ति महान् आद्यपीठे तु संस्थितः
सर्व - शास्त्रविन्मेधावी कविषु प्रतिष्ठितः।
श्री 'श्रीजी' महाराज नाम विज्ञो विदांवरः
राजति नव्ये मन्दिरे श्रीराधा-सर्वेश्वरः।।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क प्रतिष्ठा—

जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराजानां
करकमल द्वारा

वर्षे खर्तुनभाक्षिमाघ असिते ह्येकादशी सत्तिथौ
मूंगीपैठण नामकेऽति विशदे निम्बार्क-जन्मस्थले।
श्री श्रीजीति प्रसिद्ध-सन्तचरणैर्निम्बार्क-पीठाधिपैः
निर्माप्याऽप्रतिमं च मन्दिरमहोप्राणप्रतिष्ठा कृता।।

हिन्दी कविता—

अरुण मुनी तप कीये जहाँ वहाँ मूंगी के भाग्य विधाता ने देखे
पत्नी जयन्ती के गर्भ विराजै चक्र अंश ते बालभये अने देखे-
आये गोवर्धन नींव से ग्राम तहाँ निम्बपै अर्क श्री ब्रह्मा ने देखे
श्रीजी कृपा तिन जन्म थली पै 'मूंगी', निम्बारक नाचते देखे।।

108 पूज्य श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवजी महाराजाः

चित्रकाव्यम्

श्री श्री मज्जगद्गुरुः श्रीजी महाराज विचक्षणाः
श्री निम्बार्क-महाचार्याः श्री सर्वेश्वर-सेवकाः।।
रा राधा प्रियाः रासमग्नाः राधा-नाम-विभूषिताः
राधाकुञ्ज-स्थिता नित्यं राधालीला प्रसारकाः।।
धा धाम-प्रिया धराधीशं - धाकिट् धातृ धरप्रियाः
धाता निम्बार्क-शास्त्राणां - धनिताशेष-सम्पदाम्।।
सर् सर्वभक्ताऽन्तरे संस्थाः सर्वसद्गुण-भूषिताः
सर्व-सन्तोषदातारः - सर्वशास्त्रविशारदाः।।
वे वेदान्तवेदवेत्तारः वेदाङ्ग-परिनिष्ठिताः।
वेणुवादन-संप्रीताः वेदवक्तृ-प्रकाशकाः।।6।।
श्वः श्वः श्रेयसः कृपायुक्ताः श्वः श्रेयसरता मुदा।
श्वः श्रेयसपदा सक्ताः श्वः श्रेयस हि पूजकाः।।7।।
र रसिकः रसरूपश्च रमणीय - वपुर्धरः
र रचना कारकः रंगी रम्योत्सव-मनोरथः
श शरणागत दीनार्ताः शर्म कर्मणि तत्पराः
श शरण्यः निम्बभक्तानां शठानां मानमर्दकाः।
र रम्यानना रम्यवेषाः रचनासु सदारताः
र स राज बदालीना रसिकेश्वर-पूजिताः
ण णकाराक्षरसं भूता णाकारकवि-शीर्षकाः
ण युक्ताः क्षणकालांशाः णकारेण विलक्षणाः।
जी जीवातुः सर्वविप्राणां जीव-ब्रह्म-विवेचकाः

जीमूताः निम्बशिष्याणां जीवानां मार्गदर्शकाः
दे देववृन्द समाराध्या देवीराधा-प्रपूजकाः
देववत् पूजनीयाश्च देवर्षि-समुपासकाः ॥
व वरिष्ठा वैष्णवाचार्याः वसुधा-मणिभूषणाः
वसुदेवात्मजश्रेष्ठा वल्लवी भाव-भूषिताः
म महाराजाः महाभागाः मन्त्र-मुग्धमहोत्सवाः
महीपूज्या महावीराः मधुरांकृति धारकाः
हा हारहारि मनोहारि हली हार्दहरो हरिः
हास्य मुखाः दयायुक्ता हावभावविभूषकाः ॥
रा राजराजेश्वर-ध्याताः राजनीति-विदांवराः ।
राम-तत्त्व-विशेषज्ञाः रासरीति-रताः सदा ॥
ज जगज्जीवदया-युक्ताः जनता-पथ-दर्शकाः
जपानुष्ठान-संलग्नाः जयश्री-संयुता सदा
जी जीवोद्धार-प्रयत्नामा जीव-संरक्षकाः सदा
जीव दुःखापहर्तारः — जीव-जीवन-दायकाः
अष्टादशाक्षरो मंत्रः निम्बार्के सर्वप्रीतिदः
अतो ह्यष्टादशैर्वर्णैः रचितं बन्ध-काव्यकम्
श्रीमच्छीवर-पादाब्जः पराग-परिलालितः
वासुदेवश्चतुर्वेदो मंगला शासनं व्यधात् ॥

जो मानव
ऐसे परम पावनतम
सरस नाम सुधासिन्धु में अवगाहन कर
अपने आपको कृतकृत्य नहीं करता वह संसारासक्त
हेयास्पद नाना विकारों का आगार है।
उसका कलुषित अन्तःकरण उसे
अधःपतन की ओर ले जाता है।

—श्री श्रीजी महाराज

पुष्पमाला बन्ध-काव्यम्

श्री 108 श्री श्रीजी महाराजानाम् कृते
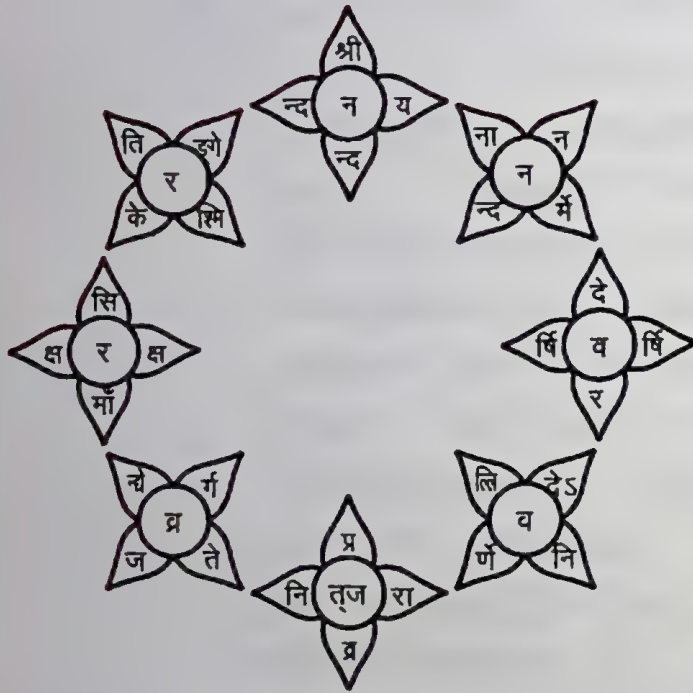
श्रीनन्द नन्द नयमानन नन्द नर्मे।
देवर्षि-वर्य वरदेऽवनि वल्लिवर्णे।
राजत्व्रजप्रजनिते ब्रज वर्ग वन्द्ये
मां रक्ष रक्ष रसिके रति-रश्मि-रंगे।।
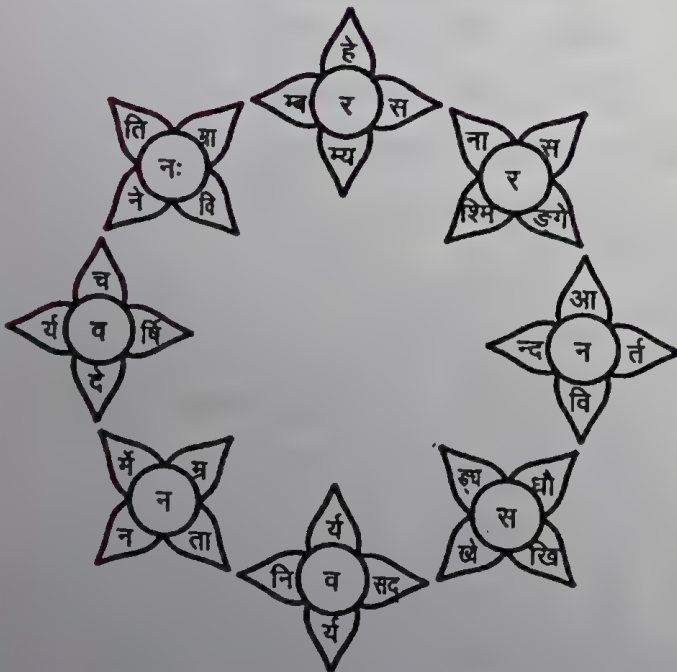
हेरम्बरम्य रसना रस रश्मि रङ्गे
आनन्द-नर्तन-विधौ सखि-सङ्घ-संस्थे
सद्वर्य वर्य-वनिता नननम्र नर्मे
देवर्षि वर्यवचने न-तिनः विनम्रा।
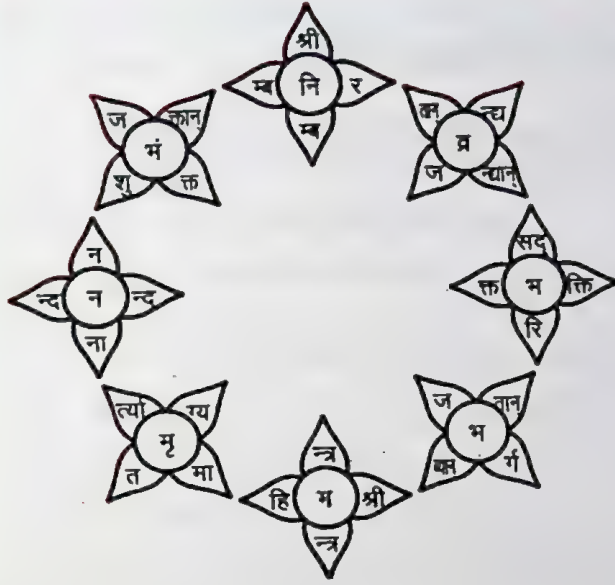
श्री निम्ब निम्ब-निरतान् व्रजवन्द्य-वन्द्यान्
सद्भक्त-भक्ति-भरितान् - भजभर्ग-भव्यान्।
श्रीमंत्र मंत्रमहिमा मृतमृग्यमर्त्यान्
(ना) आनन्द-नन्दनं शुभं भजभक्त-भक्तान्॥

चक्रबन्धकाव्यम्

श्री चक्रावताराद्य निम्बार्काचार्य पीठस्थितानां श्री जगद्गुरु श्री श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराजानां करकमलेषु समर्प्यते सादरम्।

सत्-सिद्धान्त-परायणैश्च मुनिभिः श्रीब्रह्मपुत्रैर्मुदा
त्रित्वेवै सनकादिभिश्च मुनिभिः संपूजिताः सर्वदा।
कल्ये निम्बगुरुः पुपूज मुदितः संस्थाप्य सन्मदिरं
रङ्गीदास सखि त्रिसंख्यकयुगे दासी मुदा चेश्वरम्॥
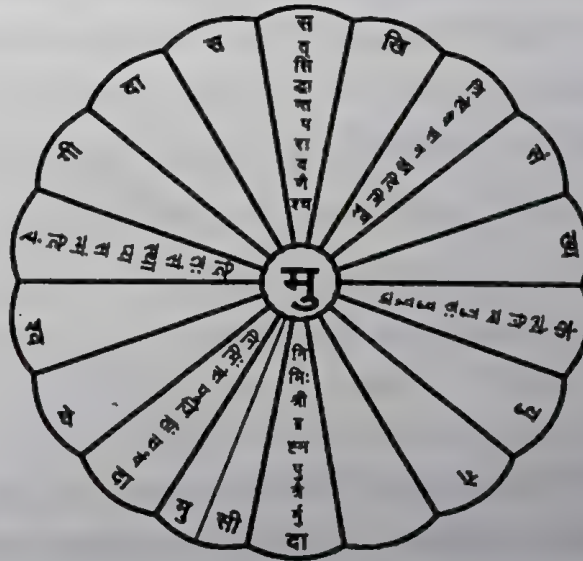
गतश्रम टीला, मथुरा

श्री रामानन्दाचार्यो विजयतेतराम्
श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां संस्कृतप्रेम

—अग्रपीठाधीश्वरः स्वामी राघवाचार्यः
राजस्थानसंस्कृताकादम्या अध्यक्षः

शिवतमोयं शुभावसरो यदनन्तश्रीविभूषिताद्यनिम्बार्काचार्यस्य शतोत्तरपञ्चसहस्रवर्षात्मके जनिमहोपलक्षेऽखिल-भारतवर्षीयस्वाभाविकद्वैताद्वैतराद्धान्तसंतानवितानैकतत्परसलेमाबादस्थ-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठेऽस्मिन् नवम्बरमासे-खिलभारतवर्षीयविराट्सनातनधर्मसम्मेलनं समायोज्यते। भव्यायोजनेऽत्र धर्मसम्मेलने आद्यनिम्बार्काचार्य-पदालंकृताधीश्वर **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजीमहाराजानां** पुण्यात्मभूतभारतीविद्या-प्रसृतिवितितिनिरतानां सम्माननेभिनन्दनीयाभिनन्दनग्रन्थः प्रकाशयिष्यत इति श्रावं श्रावं मे दान्तः स्वान्तः सम्मोमुदीतितमाम्। प्रसंगेत्र नानाभिन्दनग्रन्थविषया निरधार्यन्त, तेष्वन्यतमं भारतीप्रेमेति विषयमुररीकृत्याचार्याणां सुरभारतीप्रेमाख्यानं किंश्चित्प्रतिपाद्यते।

संस्कृतं संस्कृतिश्चैव, श्रेयसे समुपास्यताम्।
संस्कृतं संस्कृतेर्मूलं, श्रेयसे समुपास्यताम्।
संस्कृतं जीवनं सत्यं, ज्ञानविज्ञानकारकम्।
संस्कृतं प्राणभूतम्मे, प्राणिमात्रोपकारकम्।
संस्कृतं शिक्ष सत्याय, समाचरणाय हे सखे!
संस्कृतं भारते व्यापि, नित्यशः समुदीर्यताम्।
संस्कृतं पुण्यदं नित्यं, श्रूयतां श्राव्यतां बुधैः।
संस्कृतं सेव्यतां सुष्ठु, वार्यतां दुष्ठु चात्मनः।
संस्कृतं जुष्यते यैस्तु, देशसेवनमुच्यते।

इत्यादिवाक्यानि कोविदानां संस्कृतविद्यावारिधिनिमज्जनपुंगवानां संस्कृतस्य महनीयतां प्रख्यापयन्ति। संस्कृतमस्माकं भारतीयानां जीवनं सत्प्राचीनतमं ज्ञानविज्ञानमयं भाषारूपं वरीवर्ति, चैतद्धि लौकिकवैदिक-वाङ्मयाश्रयभूतं संस्कृतेर्मूलं वर्वर्ति। सेवनमस्य पुण्यजनकतावच्छेदकमिति मत्या परुषातिपरुषमिमं संस्कृतसेवनधर्ममधिजीवनम्महाराजाश्चात्मसात्कृत्यार्हनिशमेनं सेवन्तेतराम्। प्रामाण्यमस्य भजमानानामनेकेषां ग्रन्थानाम्प्रतिष्ठानानाञ्चोल्लेखो नितरामावश्यकम्। सलेमाबादस्थनिम्बार्काचार्यपीठासीनानां श्रीराधासर्वेश्वर-स्वामिनामधिपीठं परात्परपरमेश्वरस्य निश्वसितभूतस्याश्श्रुत्या ध्वनिः पटुभिर्वटुभिरहर्निशमुद्घुष्यतामेतदर्थं श्रुति-विद्यालयस्तैस्समुद्घाटितः, यत्र नानादिग्देशेभ्यश्छात्रा आगत्य ऋचः सम्प्रवदन्ते, तदानीमेतत्प्रतिभाति

यत्स्वर्गायमानोयं विद्यालयश्श्रुत्युद्धारकीभूतः सन् भारते भातितमाम्। श्रुतिविद्यापिपठीषूणाञ्छात्राणां समेषां भोजनावासादीनां व्यवस्था श्रीश्रीजीमहाराजैर्व्यवस्थीयते, अत्रान्तर एव **''वेदार्था अङ्ग्यन्ते प्रकाश्यन्ते इति वेदांगा''** अनया व्युत्पत्त्या वेदनिगदनपुरस्सरन्तदर्थप्रकाशनार्थं तद्रक्षार्थं च वेदांगानामध्ययनाध्यापनयोरावश्यकतेति मत्याधिनिम्बार्कपीठमेव संस्कृतमहाविद्यालयोपि सुसुष्ठुतया प्रचाल्यते। तत्राधिमहाविद्यालयं संस्कृतसंस्कृतिप्रेमिभिश्छात्रैः स्वस्वविषयपाण्डित्यपुंगवेभ्यो विविधविद्याविद्योतितान्तःकरणेभ्यो गुरुभ्यो व्याकृतिन्यायवेदान्तमीमांसादिपदपदार्था अधीयन्ते। भारती-पठने दत्तचित्तानां छात्राणां सर्वा व्यवस्थापि श्रीश्रीजीमहाराजैरेव समुह्यते। 'भारती'मासिकपत्रिकायाश्चामी आजीवनं संरक्षकाः सन्तः सार्वदिकं संरक्षणं सुरक्षणञ्चास्याः समुपपादयन्ति। समये समये संस्कृतविद्यासेवाविद्यायिनां विदुषां श्रीफलप्रावारकहिरण्यादिभिः सम्माननं सम्पादयन्ति। प्रकाशनक्षेत्रे चैषां सम्मतिः सर्वदा स्तुत्यतमास्ति। अमी हि संस्कृतग्रन्थानां प्रकाशनार्थं कटिबद्धा दरीदृश्यन्ते। स्वयमप्यमी संस्कृतविद्याया अधिकारिविद्वांसः सन्ति। अहर्निशममीषां चिन्तनं, मननं, निदिध्यासनमधिसंस्कृतभाषमेव प्रचलति। संस्कृतविद्याप्रसृतिवितत्योश्चामीषां योगदानमविस्मार्यम्। श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यवराणामनेके ग्रन्थास्तेषु केचन संस्कृते केचन हिन्दयान्तत्रान्यतराणां संस्कृतग्रन्थानां नामानि किञ्चित्परिशीलनञ्च क्रियते।

भारतभारतीवैभवम्, श्रीवृन्दावनसौरभम्, श्रीयुगलस्तवविंशतिः, श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्, श्रीराधाशतकम्, श्रीजांनकीवल्लभस्तवः, श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्, श्रीराधासर्वेश्वरालोकः, श्रीनिम्बार्काचार्यचरितम्, श्रीराधामाधवशतकम्, श्रीराधाराधना, नवनीतसुधा, इत्याख्यान् सुसंस्कृते उच्चतमान् ग्रन्थान् रचयित्वामीभिः सरस्वतीविद्याया महनीयोपकारो विहितः। सेवायै भारत्याः भारती ननु नितराममीषामुपकृतिं भजते। ग्रन्थैरेभिः वैदुष्यं सेवनं च भारत्याः नितराममीषां प्रशंसार्हम्।

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां लेखनी संस्कृतं संस्कृतिं संस्कृतज्ञान् च परिपोषयन्ती देदीप्यते। भाषा शैली चैषां सारमयी समुत्कृष्टतमा सहजात्मिका सरलात्मिका भारतीसमुपासकानां स्वान्तानि बलात्समाकर्षति। दृष्टिश्चैषां राष्ट्रधर्मभक्तिकर्मसम्पादिनी सती जनताजनार्दनोपकृतिकृतिनी विद्यते। मतिश्चैषां स्वाभाविकद्वैताद्वैतसिद्धान्त-विततिपुरस्सरं सामान्यजनताव्यवहृतिविधायिनी। रीतिश्चैषां कोमललालितकविताकामिनीकान्तमनोहारिणी वैदर्भी। भाषा चैषां स्वाभाविकहावभावविभ्रमदर्शिनी व्याकरणालंकृतिगुणादिदोषव्यतिरेकिनी सती कर्णपेया। गतिश्चैषां राधामाधवप्रणतिप्रसारिणी सती भारतीसमुपासकसत्कृतिशासनी।

निदर्शनमेकम्–

जयति मदीया भारत माता।
निर्मल सुभगा मणिमयरूपा रम्या विविधगुणैरवदाता॥
सस्यश्यामला परमविशाला हिमगिरिधवला परिसंजाता।
राधासर्वेश्वरशरणस्य चकास्ति चेतसि भारतमाता॥

निदर्शनमपरम्–
भारतधरणी परमोपास्या।
वीरधरायां वसन्ति वीराः॥
भारतरक्षणहेतोः सततं निबद्धकक्षा बलिष्ठधीराः।
व्रजन्ति परितः शस्त्रपाणयो देशसुनिष्ठा धृतनवचीराः।
राधासर्वेश्वरशरणो निगदति नहि ते भवन्त्यधीराः॥

एवं संस्कृताराधनासाधनायां श्रीमतामाचार्याणां हार्दिकी भावना नितरां चकास्ति। साधनैषा सेवा सा चाधुना दुर्लभा। साम्प्रतिके समाजे संस्कृतसेवाधर्मं नितान्तं क्षीयमाणं दर्शं दर्शमेभिः संस्कृतोपासनाकर्मोररीकृत्य नैजं सम्पूर्णमपि जीवनं समर्पितम्। विषयेऽस्मिन् भर्तृहरिरेवमाह यथा **''सेवाधर्मः परमगहनः योगिनामप्यगम्यः।''**

सेवा द्विधा भवति कारिणी भाविनी च। उभयत्रामीषां गती राजते। संस्कृतस्य कारिणी सेवा सैवोच्यते या क्रियात्मिका सती जनानुपकुरुते। तत्र विद्यालयाः, ग्रन्थाः, जलाशयः, धर्मशाला, कूपः, प्रपा, मन्दिराणि, वाचनालय इत्यादयः। संस्कृतस्य भाविनी सेवा सैवोच्यते या ग्रन्थेषु निर्विकल्परूपा मनोभावना श्रीमद्भिस्तत्र विपश्चिद्भिरेवानुभूयते यथा लावण्यं शरीरावयवेभ्यः पृथक्, तथैव भावनापि सूक्ष्मस्थूलजगद्भ्यां पृथक् काचिदनिर्वचनीयरूपा आत्मवृत्तिरेव। वृत्तिश्च नाम व्यापृतिः। आत्मनो व्यापृतिः भाविनी सेवा इत्याशयः। सेवाशब्दप्रेमशब्दयोः साम्यमत्र सतात्पर्यमेव। आचार्यवराणां संस्कृतप्रेमाहैतुकं सत् संस्कृतजगदुपकुरुते। प्रेमपरिभाषणन्तु नारदभक्तिसूत्रे एवम्प्रोक्तं तद्यथा, **नारदस्तु तदर्पिताखिलाचारिता तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति।** गोप्यो महारासलीलायां नृत्यन्त्यो दर्पोपेताः सन्त्यो महत्तमं कष्टमन्वभवन् कृष्णविरहे तदानीं ताभिरुक्तम् **''त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्''** इति श्रीमद्भागवतोक्तगोपवधूटीप्रेमवदमीषां संस्कृतम्प्रति प्रेम समनुदृश्यत इत्युदाहरन्विरमामि।

सर्वेश्वर! सुखधाम! नाथ मे संस्कृते रुचिरस्ति।
संस्कृतमनने संस्कृतपठने संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे।
चेतो नितरां भवतात्कृपया ममाभिलाषोऽस्ति।
श्रुतिशास्त्रेषु मनुशास्त्रेषु नयशास्त्रेषु रसशास्त्रेषु।
प्रगतिस्तीव्रा भवतादिति मे भावनास्ति॥

॥ इति शम्॥

जानकीनाथ का बडा मन्दिर
रैवासा धाम, सीकर (राजस्थान)

समर्चार्चनीयाः जगद्गुरवः

— विश्वनाथमिश्रः

विविधवैचित्र्योपेतेऽत्र जगज्जाले उत्पद्यन्ते, विलीयन्ते च नैके नृतनुभाजः, किन्तु एषु कश्चिदन्यतम एव पुण्यश्लोको भवत्यभिनन्दनीयो वन्दनीयः पूजनीयश्च समेषां, यस्य चेतसि विशालता, मनसि महनीयता, बुद्धौ सद्ग्राहिता, हृदये उदारता, वचसि मधुरता, कर्मणि कुशलता, उद्देश्ये परहित-कातरता, काये पूर्णपीयूषपूर्णता चेत्यादयो विशिष्टगुणा निरन्तरमुच्छलन्तः किमपि वैशिष्ट्यमादधानाः स्युः।

यश्च वदति निरन्तरं प्रियं, हितकारम्, ऋतमेव केवलम्। यश्च करोति कारयति च साधु कर्म, निराकरोति असदनुष्ठानं, प्रोत्साहयति सत्पथे, प्रेरयति धर्माचरणे, निवारयति कापथात्, वितरति ज्ञानम्, उपदिशति कैवल्यपथम्, रक्षति सानातनीं पद्धतिम्। यश्च रक्षिता सनातनधर्मस्य, व्याख्याता वैदिकपरम्परायाः, उद्गाता उपनिषदाम्, प्रतिष्ठापयिता पुराणानाम्, प्रवाचको भारतादीनाम्, वर्म इव भारतीयताया, भासमानो भास्कर इव प्रत्यूहकल्पो भूतवादमेव, सर्वस्वं मन्यमानानाम्।

एवं गुणगणविशिष्टेष्वन्यतमो वर्तमानो निम्बार्काचार्यपदमलङ्कुर्वाणोऽष्टचत्वारिंशत्तम आचार्यवरः **श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः 'श्रीजी' महाराजः**। अयं महानुभावः एकादशवर्षदेशीय एव निम्बार्काचार्यपीठाधिपतेरनन्तश्रीविभूषितस्य श्री बालकृष्णदेवाचार्यवर्यस्य चरणकमलमवलम्ब्य वैष्णवीं दीक्षां संगृह्याधिष्ठाय च युवराजपदं योग्यतमेभ्योऽध्यापकेभ्यो न्यायवेदान्तव्याकरणादि-विषयेषु विधाय चाध्ययनं परां प्रौढिमधिगतवान्। आचार्यपरम्परायां स्वकीयेन वैशिष्ट्येन भासा च भासमानो विराजत इति सौभाग्यं सर्वेषां नः। महानुभावोऽयं प्रकृत्या मधुरः, वर्णेन गौरः, चेतसा दयार्द्रः, पूतेन कर्मणा, जनमनः सन्तर्पणः, ज्ञानगरिम्णा, गरीयान्, परिपोषक आचार्यपरम्परायाः, प्रेष्ठः श्रेष्ठः गरिष्ठो विद्वज्जनसन्दोहस्येति नात्र विमतिः। निम्बार्कसम्प्रदायस्य प्रचाराय प्रसाराय च महापुरुषेणानेन कृतानि कार्याणि सन्ति अभिनन्दनीयानि। समये समयेऽनेन समायोजितं सनातन-धर्ममहासम्मेलनमभूतपूर्वमेव समपद्यत। लक्षाधिकाः लोकाः दर्शं दर्शं तत् चकिता इव, मुग्धा इव, परमप्रीताः सलेमाबादनगरं स्वर्गकल्पमपीपदन्। सम्मेलनेऽस्मिन् भगवन्तः शंकराचार्याः वैष्णचतुःसम्प्रदायाचार्याः यतिचन्द्रचूडामणयो धर्मसम्राजः करपात्र महाभागाश्च समुपस्थितान्यबोभवुः। पीयूषमिव चेतसः सन्तर्पणं महात्मनां भाषणं श्रोतुमुत्का लोका अहमहमिकया समुपस्थाय निम्बार्काचार्यवर्यस्य यशोगानमुदीरयामासुः।

अध्यध्यनकालं चतुर्दश वर्षदेशीयोऽयं महाभागः कुरुक्षेत्रेऽखिलभारतीय-साधुसम्मेलने समुपस्थाय सर्वसम्मत्या अध्यक्षपदमलमकरोत्। अवसरेऽस्मिन् जगद्गुरवः श्रीशंकराचार्याः पुरीपीठाधिपतयः स्वकीयभाषणेऽचकथन् यत् सौभाग्यमिदं यदल्पवया अपि निम्बार्काचार्यः निर्वहति सभाध्यक्षपदम्। तुलसीपत्रं लघीयोऽपि वन्द्यते। भगवान् शालिग्रामो लघीयानपि पूज्यते, आराध्यते च। तद्वत् महानुभावोऽयमपि अस्त्येवाभ्यर्च्यः।

अस्मिन्नेव वयसि निम्बार्काचार्यतीर्थयात्रा रेलयानद्वारा त्रयाणां धाम्नाम्, सप्तपुरीणां च साधीयसी यात्रा विहिता महाराजेनानेन। एवं रीत्या समायोज्य विभिन्नं धार्मिकमायोजनं व्यधायि भारतीय-संस्कृतेः वैष्णवधर्मस्य च महतीसेवा महानुभावेनानेन। निम्बार्कसम्प्रदायस्य प्रचाराय प्रसाराय च बद्धपरिकर आचार्यवर्यो नक्तन्दिवं शास्त्रचिन्तनपरायणः शास्त्रार्थायोजने दत्तावधानः काव्यनिर्माणकलाकुशलः समादृतो विद्वद्भिः सौभाग्यायैव कल्प्यते सनातनधर्मस्य।

एतेषां कार्यकाले निम्बार्क सम्प्रदायस्य प्रधानपीठस्य च गरिमा नभस्स्पृगिति वर्तते, विदुषां विवेचकानाश्चाकूतम्।

आचार्यवर्यस्य संरक्षणे सलेमाबादे वृन्दावने निम्बग्रामे च प्रचलन्ति संस्कृत-विद्यालयाः, महाविद्यालयाश्च। यत्र छात्राणामध्ययनस्य कृता निःशुल्का साधीयसी व्यवस्था। लोक-सौविध्याय सलेमाबादे एव बैंकस्यापि व्यवस्था कृता वर्तते। पत्रालयोऽपि अत्र सुप्रतिष्ठापितो, येन नानुभवेत् कोऽपि किमपि काठिन्यं पत्र-सम्बन्धि। अत्रत्या गोशालापि दर्शनीया। महाराजस्य गाः प्रति उत्कृष्टं प्रेमाभिव्यञ्जयति। प्रकारेणामुना शक्यते वक्तुं यत् 'श्रीजी' महाराजेऽलौकिक-प्रतिभासम्पन्नो धर्मनिष्ठो विद्यावैभवयुतः, तपसा, सरलतया, सन्निष्ठया, मर्यादानुगामितया च वैशिष्ट्यमादधानः क्षेमंकरः प्रियंकरो भद्रंकरश्च सर्वेषामित्यत्र नास्ति कस्यचित् विमतिः।

– 6 कैलास-निकुञ्जः
रानीबाजार, बीकानेर (राज.)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

- पावन सत्कर्मों का जो असीम सत्फल प्राप्त होता है। उसी प्रकार तीर्थ-यात्रा तीर्थ-सेवन से भी परम फल की प्राप्ति होती है।
- तीर्थ निवास काल में अपनी चर्या को सात्विक रूप से रखते हुए श्रीहरि की आराधना में संलग्न रहें।
- किसी के अहित-अमङ्गल की कामना मनसा, वाचा, कर्मणा भी न करें।
- सर्वदा अमलात्मा महात्माओं, श्रेष्ठ पुरुषों का ही सत्सङ्ग करें।
- किसी प्राणी को कभी भी कष्ट पहुँचाने की अन्तःकरण में सोचें तक भी नहीं।
- तीर्थ धामादिकों में सर्वोपरि सर्वोत्कृष्ट परम दिव्य धाम श्री व्रजधाम है।
- व्रजधाम अपनी अपरिमेय सच्चिदानन्दमयता से नित्यनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्री श्यामाश्याम को भी सतत अपनी ओर आकृष्ट किये हुए रहता है।

"श्री भगवन्निम्बार्क-महामुनीन्द्राष्टकम्"

—गोपालसिंहो जिज्ञासुः

सदा हंसं वन्दे तपसि सनकादींश्च निरतान् ततो वीणापाणिं मुनिवर महन्नारदमृषिम्।
समुत्सार्याऽविद्यां जनयति विवेकं हृदि परम्, भजे निम्बादित्यं भवभय-विनाशाय सततम्॥1॥

महाराष्ट्रे "मूंगी"—त्यभिध-नगरे पैठणयुते, सुनद्याः गोदायाः शुचितमतटे कृष्ण-वचनात्।
"जयन्ती" गर्भात् श्रीअरुणमुनिगेहे सुविमले, स्वभक्तानां प्रीत्यै ह्यजनि नियमानन्द वपुषा॥2॥

समेषां मन्त्राणामधिपतिरिहाष्टादश मिताऽक्षरैर्युक्तो मंत्रस्तमधिगतवान्नारदमुनेः।
सनत्सेव्यं गुञ्जाफल-सदृश-चक्राङ्कितमसौ तथा शालिग्रामं भुवनधवसर्वेश्वरमिमम्॥3॥

अविद्याग्रस्तानां सरलपथमाश्रित्य गतये, अधोनिम्बं देवो गिरिवर-समीपे व्रजभुवि।
श्रुतिज्ञोऽनूचानो गुण-निवहयुक्तो विमलधीः, समाधिस्थस्तेपे विगतभयकोपोऽमित तपः॥4॥

दिवा-भोजी दण्डी रहसि नियमानन्दमवदत्, प्रसादं याचे त्वामहनि परिगृह्णामि निशि च नो।
प्रदर्श्यार्कं निम्बे तदनु यतये नक्तममुना, प्रदत्तं निम्बार्को यम-नियम-वेत्ताऽभवदहो॥5॥

स्वयं धाताऽऽयातः कपटयतिवेशे भ्रमयुतः, वतारं चक्रस्य प्रखरमहसा सूर्यशतकम्।
तिरस्कर्तुं शक्तं प्रकृतिपरिणामेन रहितम्, परिच्छेत्तुं क्वेशो यमिह तमहं स्तौम्यभयदम्॥6॥

दशश्लोकी शास्त्रागम-निगम-तत्त्वेन सहिता, प्रपञ्चं मायायाः प्रणिगदति जीवं बहुविधम्।
परब्रह्मज्ञानं गमयति समासाच्च विमलम्, प्रणीता यैस्तेभ्यो भवभयहरेभ्यो मम नमः॥7॥

द्वयोर्भावो द्वैतं न भवति तदद्वैतमिति च, इदं द्वैताद्वैतं सकलभुवनेष्वस्ति विततम्।
मुनीन्द्रो निम्बार्कः श्रुतिनिकरसारं प्रकटयन्, शशीवोच्चैरास्ते हि भ-सदसि वेदान्तगगने॥8॥

प्रधानाचार्यः
सेठ लक्ष्मीनारायण संस्कृत महाविद्यालयः
प्रेम सरोवर, गाजीपुर, बरसाना,
मथुरा (उ.प्र.)

अनन्त-श्रीविभूषितस्य श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर जगद्गुरोः
'राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः श्री 'श्रीजी' महाराजस्य

अभिनन्दनपत्रम्

— आचार्य मारुतिनन्दन वागीशः

तापत्रयेण लोकोऽयं पीडितोऽस्ति दिवानिशम्।
भुक्त्वैव क्षीयते कर्म सिद्धान्तः शास्त्र-सम्मतः ॥1॥

दुःखहानिः सुखावाप्तिः विधिना केन जायते ?
विषयः सर्वशास्त्राणामेष एव न चान्यथा ॥2॥

उपायास्तत्तदाचार्यैः स्वानुभूत्या प्रकाशिताः।
निम्बादित्यस्तु तन्मध्ये सूर्यो ग्रहगणे यथा ॥3॥

द्वैताऽद्वैताख्य-सिद्धान्तं संस्थाप्य मुनि-पुङ्गवः।
सूर्यं निम्बे प्रदर्श्यासौ निम्बार्काख्यामवाप्तवान् ॥4॥

राधासर्वेश्वरौ सेव्यौ वृन्दावन - विहारिणौ।
भृकुटिक्षेपमात्रेण सृष्टिसंहार - कारिणौ ॥5॥

समग्रैश्वर्यमाधुर्या - धिष्ठानौ परमेश्वरौ।
वन्द्यौ परस्परात्मानौ नित्यनूतन - विग्रहौ ॥6॥

राधासर्वेश्वरौ येषां शरणं देववदाश्रिताः।
श्रीमन्निम्बार्कपीठेशाः वन्द्या **'श्रीजी'ति** संज्ञकाः ॥7॥

श्रद्धया परयोपेतः स्तौति नित्यं मुहुर्मुहुः।
उपास्योपासकान्सर्वान् **'वागीशो'** भक्तिभावतः ॥8॥

भागवत-मानस प्रवाचक
श्रीधाम, वृन्दावन

अनन्तगुणगरिष्ठ श्री ''श्रीजी''
श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज

— राधावल्लभ शास्त्री, कचनारिया

जन्माद्यस्य यतस्तस्मिन्, त्रय एव गुणा विभौ।
अस्मदाचार्यवर्ये तु, गणितोल्लङ्घिनो गुणाः॥

श्रीभगवत् प्रेम, श्री भागवत प्रेम, ब्रह्मण्यता, संस्कृतानुराग, विद्वद्वात्सल्य, देव-मन्दिरों के प्रति आदर, गोसेवा, परपीडा कातरता, नीति-निपुणता, अनालस्य, सरलता, संप्रदायानुराग और तीर्थों के प्रति श्रद्धा आदि के अनेक उदाहरण हैं।

भगवत् प्रेम :— मेरे अथवा अन्यान्य भावुक भक्तों की प्रार्थना पर उन देहातों, ढाणियों एवं कस्बों से पधरावनी होने से पहले वहाँ के छोटे से छोटे मन्दिर में सबसे पहले पधार कर पीठ की ओर से भेंट चढ़ावा अर्पित करना एवं पुजारी महन्त एवं ग्रामवासियों से मन्दिर के बारे में पूछताछ करना, प्रदक्षिणा करके उसकी स्थिति को भाँप लेना, स्वयं की ओर से आर्थिक सहायता तथा स्वागतार्थ आये हुए प्रमुख व्यक्तियों को दबाव देते हुए सहयोग हेतु प्रेरित करना, सैकड़ों स्थानों पर मैंने स्वयं देखा है। विशाल निर्माणों से व जीर्णोद्धारों से तो सभी परिचित एवं चकित हैं ही!

श्रीभागवत प्रेम :— लेखक के द्वारा प्रवचन की जाने वाली श्रीभागवत कथाओं में पचासों स्थलों पर श्रीचरणों की पधरावनी के समय सजल आँखों से मैंने स्वयं देखा है कि आचार्यश्री के द्वारा श्री भागवत जी का अभिवादन, माल्यार्पण प्रावरक (दपुट्टा) एवं भेट अर्पण करके ही मंच पर विराजना और श्री भागवत जी की स्वाभाविक सत्य प्रशंसा के बाद वक्ता तथा सहयोगी विद्वानों की भी प्रोत्साहन-प्रशंसा, दक्षिणा आदि से सम्मान करना नियमित सहज स्वभाव है। इस बारे में उदाहरणार्थ एक का उल्लेख इस प्रकार है, मदनगंज में रामनारायणजी लखोटिया (काकण्यास वालों) के गृह प्रवेश पर श्री चरणों का सर्वेश्वर सेवा सहित सपरिकर सप्ताह भर विराजना हुआ था। प्रारम्भ की शोभा यात्रा बालाजी की बगीची से हुई थी। उसमें पुष्प-सज्जित कार में विराजित आचार्यश्री की दृष्टि श्रीभागवतजी को सिर पर लिये पैदल चलते लखोटियाजी पर पड़ी तो आचार्यश्री को क्षोभ हुआ और शोभायात्रा के प्रबन्धकों को आदेश दिया कि या तो छड़ी छत्र श्री भागवतजी के ऊपर लगाकर हमें भी पैदल चलना है या श्रीभागवतजी भी सवारी से ही पधारेंगे। आदेश के अनुसार उन्होंने दूसरी सवारी का प्रबन्ध किया।

ब्रह्मण्यता :– आपश्री में अनेक बार यह विशेषता देखी गई है, केवल दो उदाहरण निम्न हैं :—

(क) एक श्रद्धालु सेठजी के नवीन गृह की प्रतिष्ठा में उनकी विनीत प्रार्थना स्वीकृत करके आप

श्री वहाँ पधारे। वहाँ 7-8 दिन से अनुष्ठानरत पण्डितों की दक्षिणा के बारे में आपश्री के पूछे जाने पर सेठजी ने यथास्थिति बता दी, तो आपश्री ने उन्हें समझाया कि इतना कम तो आप लोग अपने नौकरों, हमालों और मजदूरों को भी नहीं देते, फिर पण्डितों के लिए इतनी कृपणता क्यों? आज्ञानुसार सेठजी ने दुगुनी दक्षिणा दी।

(ख) पुरुषोत्तम मास या उत्सवों के अवसर पर प्रतिदिन पंगत के लगभग समापन पर पधारकर स्वयं अपने कर कमलों से केवल मिष्ट प्रसाद मनुहारें कर कर परोसना, उनसे संस्कृत श्लोक आदि बारी बारी से सुनकर जैसे कि ''उत्तुङ्गमोदकमहागिरिराजगर्वनिर्वापणैक-निपुणा वयमेव विप्राः'' आदि आदि से आनन्दित होना।

देवभाषानुराग :— संस्कृत बोलना, बुलवाना, रचनायें करना, अन्यों को प्रोत्साहित करना, प्रतियोगितायें आयोजित करना और पर्याप्त पुरस्कृत करना सहज स्वभाव है।

विद्वद्वात्सल्य :—

(क) यह स्वाभाविकता आपश्री में किशोर काल से ही देखता आ रहा हूँ। मेरे विद्यागुरु श्री वक्रतुण्ड जी शुक्ल श्री रमावैकुण्ठ महाविद्यालय पुष्कर में प्रधानाचार्य थे, आपश्री जब भी पुष्कर परशुराम-द्वारा पधारते तो उन्हें सादर आमंत्रित कर बुलाते। दुशाला, फल, प्रसाद और पर्याप्त नकद आदि से परितुष्ट करके विदा करते, साथ ही प्रस्थान के समय मुझ अनुयायी शिष्य को भी पर्याप्त प्रसाद आपश्री से और गुरुजी से भी मिलता। उस समय विद्यानिष्ठा से मुझ में प्रसादनिष्ठा अधिक थी।

(ख) लगभग 35-40 वर्ष पूर्व पुष्कर मेले के अवसर पर वैकुण्ठवासी, शास्त्रार्थ-महारथी श्री माधवाचार्य जी दिल्ली के सुपुत्र परशुरामद्वारा में मिले। उन्होंने वेदों के हिन्दी अनुवाद की चर्चा चलायी। आपश्री ने तुरन्त 1151 रु. नकद तथा प्रावारक उनके बिना मांगे दिया और प्रोत्साहन तथा अन्य आश्वासन व शुभकामनायें दीं।

देव-मन्दिरों के प्रति निष्ठा :— आपश्री में यह भाव प्रारम्भ से ही प्रसिद्ध है, जिसमें जीर्णोद्धारों के तथा अति विशाल नव निर्माणों के शतशः अधिसाक्षिक प्रमाण हैं।

गो-सेवा :— यह स्वभाव तो आपश्री में श्रीगोपालजी के ही समान है, गोशालाओं का स्थापन सुधार से संचालन, गायों के लिए पक्के भवनों का, नोहरों का निर्माण, उनके पौष्टिक आहार की पर्याप्त व्यवस्था और उन्हें उछलती क्रीडा करती देखकर आनन्दित होना। उनसे उत्पादित घृत से महायज्ञ, दुग्ध से अभिषेक पूजन व राजभोग निर्माण, आतुरों के लिये सुपथ्य, और तक्र (छाछ) से ग्रामवासियों तक के लिये वितरण देखकर आपश्री का हृदय अति आनन्दोलित होता है।

पर दुःख कातरता :— अकाल के समय परित्यक्त हजारों गायों के लिए स्वयं की ओर से पर्याप्त धनोपयोग करना और इस सत्कार्य के लिये औरों को प्रेरित करना, पीठ के टेंकरों का बाहर गांवों में, देहातों में, पशुओं की जलसेवा हेतु विनियोजन आदि पर पीडा कातरता के अन्यत्र अलभ्य प्रकट प्रमाण हैं।

नीति कुशलता :— किसी की भी भूल होने पर प्रकट में उलाहना न देकर एकान्त में उसे सावधान करना कई स्थानों और अवसरों पर देखने को मिला है।

अनालस्य :— नित्यानुष्ठान, भगवत्सेवा, नैवेद्य का स्वयं निर्माण और पीठ कार्य प्रबन्धन आदि से समयाभाव होते हुये भी निरन्तर लिखना एवं नवीन रचनायें करना आदि कार्य स्वास्थ्य की शिथिलता के भी उपरान्त करते रहना आपश्री में विशेष गुण हैं।

सरलता :— आपश्री इस गुण की स्वयं प्रतिमा ही हैं। मैंने स्वयं चटाई पर पोढे हुए दर्शन किये हैं।

तीर्थों के प्रति आदर :— कुम्भ मेले या अन्यान्य महोत्सवों पर दूसरे धर्माचार्यों को हाथी, पालकी बैण्ड आदि के साथ धूमधाम से जाते देखा है, परन्तु निम्बार्क नगरों से किलोमीटरों दूर भी शाही स्नानों के अवसरों पर ''श्री चरणों'' से ही पैदल पधारना एक अद्भुत लोकोत्तरता है।

संप्रदायानुराग :—

(क) एक बार मैंने उज्जैन कुम्भ मेला निम्बार्क नगर में अपनी तीर्थ यात्रा के समय आपश्री के दर्शनोपरान्त द्वारका जाने की आज्ञा मांगी, मुझे आपश्री की द्वारका गोपी तलाई के भूभाग से गोपी चन्दन (चक्राङ्किता) लाने की आज्ञा मिली, तदनुसार मैं वहाँ की एक खान से स्वयं खोदकर चक्रचिह्नित चन्दन ले आया और यात्रा से लौटकर समर्पित करने निम्बार्क तीर्थ ले गया। आपश्री ने उसे काष्ठ पीठ पर रखवाया और शिरसा अभिवादन करके ही सादर स्वीकार किया।

(ख) एक बार आचार्यश्री की सन्निधि में निम्बार्क सम्प्रदाय की सर्वप्राचीनता की चर्चा चल रही थी, उसी के प्रसंग में मैंने भी भागवतजी का यह श्लोक—

सनकाद्या नारदश्च, ऋभुर्हंसोऽऽरुणिर्यतिः!
नैते गृहान् ब्रह्मसुता, ह्यावसन्नूर्ध्वरेतसः ॥1॥ 4।8।1

निवेदित किया। आपश्री ने महल से श्री भागवत मंगवाकर ध्यान से पढ़ा और कुछ क्षणों तक मौन व ध्यानस्थ विराजे रहे और कुछ क्षण के बाद प्रसन्नता से प्रावारक व मंगल कामना प्रदान की।

और भी आपश्री में संगीत, आयुर्वेद, गद्य-पद्य, संस्कृत व हिन्दी में रमणीय लोकहितकारी व ज्ञानवर्धक रचनायें कुम्भ मेलों जैसे विशाल अनेक आयोजन और विविध यज्ञों के आयोजन आदि अनेक गुण अगणनीय यहीं आचार्यश्री में एकत्र देखने को मिले हैं।

शतशः नमन चरण स्पर्श सहित– एक पद्य के साथ विराम।

''भूमौ तेऽनवकाश-पीडितवपुः कीर्तिः परं पीवरी!
सौधोत्तुङ्ग-विनिर्मितिव्यपदिशा स्वर्गोन्मुखं प्रस्थिता!!
कुण्डाधस्तल-पूर्ण-पक्वरचना व्याजेन शेषान्तिकं!
यातुं कामयते कृशायतनवान् स्थानान्तरं याति हि!!1!!

कचनारिया (राज.)

स्मृति-साक्षी वे अविस्मरणीय क्षण

श्री 'श्रीजी' महाराज का पावन सान्निध्य

— डॉ. कमलाकान्त शर्मा 'कमल'

भगवान् निम्बार्काचार्य के 5100वें जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन एवं अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी श्री 'श्रीजी' महाराज के कर कमलों में भेंट करने हेतु अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन – निःसन्देह प्रत्येक धर्मानुरागी व्यक्ति के लिए परम हर्ष एवं गौरव की बात है।

"आचारः प्रभवो धर्मो, धर्मस्य प्रभुरच्युतः" – के अनुसार आचार, व्यवहार, भाषा, आहार और कर्म की दृष्टि से भारतभूमि पर जगदीश्वर की विशेष अनुकम्पा रही है। परिणामतः इस कलिकाल की विभीषिका में भी भारत में जन्मा व्यक्ति, विश्व के अन्य देशों में जन्में व्यक्तियों की तुलना में अधिक सौभाग्यशाली है। जहाँ कर्म और धर्म के साथ संसार की अनित्यता की मानस-त्रिवेणी, जन-जन के वैचारिक धरातल पर प्रतिक्षण बहती रहती है और यही कारण है कि ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या की अवधारणा को युगानुरूप परिप्रेक्ष्य में समझना एवं तदनुकूल आचरण करना यहाँ के निवासियों की मौलिक विशेषतायें हैं।

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ (श्रीनिम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद) जन-जन की आस्थाओं का केन्द्र है। पीठ के पावन धाम में पहुंचना और श्री 'श्रीजी' महाराज के चरणों में प्रणाम करना, श्रद्धालु भक्तजनों का विशिष्ट मनोरथ होता है। आचार्य पीठ पर सुशोभित श्री 'श्रीजी' महाराज का जो प्रत्येक व्यक्ति को आशीर्वाद, कृपाकटाक्ष और पावन सान्निध्य लाभ मिलता है, वह उस व्यक्ति की सम्पूर्ण जीवन यात्रा का चिरभिलाषी पाथेय होता है, जिसे स्मृतियों के पीताम्बर में सहेज कर विवेकशील व्यक्ति निरन्तर 'चरैवेति-चरैवेति' सूत्र को मूर्तता प्रदान करता चलता है।

कुछ ऐसे ही क्षण, कुछ ऐसा ही कृपा-प्रसाद, कुछ ऐसी ही अनुकम्पा मुझ अकिंचन को भी सहज रूप में प्राप्त हो गयी थी, आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व। अजमेर निवासी शिक्षाविद् – साहित्यकार डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के नेतृत्व में 'साहित्य की लोकयात्रा' कार्यक्रमान्तर्गत फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी (मंगलवार) सम्वत् 2051 को प्रान्त के कतिपय साहित्यकार बन्धुओं का एक दल निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद पहुंचा। यात्रा दल में एक मैं भी था।

मेरे मन मस्तिष्क के किसी गवाक्ष में वर्षों से एक चित्र संजोया हुआ धरा था कि आज तक मैं निम्बार्कतीर्थ नहीं जा पाया हूँ। कभी अवसर मिला तो निःसन्देह अन्य दस कार्यों को छोड़ कर भी वहाँ जाना और आचार्यश्री को प्रणाम करना मेरी प्राथमिकता में होगा। आज मेरे जीवन के आनन्ददायी और

परम आह्लादकारी क्षण थे वे जब पूज्य-चरण श्री 'श्रीजी' महाराज से मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ। गौरवर्णगात्र, मस्तक पर भव्य तिलक, पञ्चकेशी युक्त प्रभावान् मुख मण्डल, श्वेत उत्तरीय धारी इस तपःपूत, महामना, विराट् हृदय, ज्ञानपुञ्ज, आप्तपुरुष को प्रणाम कर जहाँ मुझे परम प्रसन्नता की दिव्य अनुभूति हुई थी, वहीं आचार्यश्री के सहज किन्तु सारगर्भित उद्बोधन से भी मैं अत्यन्त अभिभूत था।

आचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज ने उपस्थित सभी साहित्यकार बन्धुओं का लोक कल्याण एवं आत्मकल्याण हेतु आह्वान करते हुए अपनी अमृतमयी वाणी से षड्वर्ग (मातृ वर्ग, पितृ वर्ग, शासक वर्ग, कवि वर्ग, शिक्षक वर्ग एवं कृषक वर्ग) की सम-सामयिक उपयोगिता, आवश्यकता और प्रासङ्गिकता पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। तदुपरान्त एक काव्यगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसका सञ्चालन-दायित्व-निर्वहन मेरे द्वारा हुआ। मेरे द्वारा प्रस्तुत गीत– **''कौन रहा है जग में निज ही''** को सुनकर आचार्यश्री ने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की और अपने कर कमलों से **''आचार्य पीठाभिषेक-अर्द्धशताब्दी-पाटोत्सव, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव स्मारिका'** मुझे प्रदान की। सचमुच ऐसे विद्वान् मनीषी तत्त्वदर्शी, धर्मधुरीण, पीठाधीश्वर के समक्ष मुझे अपनी रचना प्रस्तुत करने का जो अविस्मरणीय अवसर मिला तो लगा कि मैं, मेरी लेखनी और मेरी रचना तीनों ही आज धन्य हो गये हैं।

हम लोग पूरे दिन भर निम्बार्कतीर्थ में ठहरे। एक के बाद एक कार्यक्रमों की क्रमिकता में दिन कब व्यतीत हो गया, ज्ञात ही नहीं हो पाया। सायंकाल जब हम सब लोग वहां से प्रस्थान कर रहे थे, तब हमारे साथ न केवल श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा प्राप्त मांगलिक आशीर्वाद की ऊर्जा थी, अपितु एक अनिवर्चनीय क्षमता की अनुभूति भी थी। **''आत्मैव आत्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः''** गीता की ये शाश्वत पंक्तियाँ, मानव जीवन की सार्थक-महत्ता में कितना सटीक मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह तथ्य श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रवचन में सुनने को मिला। उस क्षण की वह यात्रा, कम से कम मेरे लिए तो आज भी गौरव गरिमा की बात है। आचार्य पीठ से लौटते समय मुझे भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य की वे पंक्तियाँ मन-मन्दिर में उभर रही थीं, जिनमें कहा गया है—

''दुर्लभं त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम्।
मनुष्यत्वं, मुमुक्षत्वं महापुरुषसंश्रयम्॥''

(विवेकचूड़ामणि)

महापुरुषों का संग संश्रय बिना भगवत्कृपा के नहीं हो पाता। पूर्व जन्मोपार्जित पुण्यों के प्रभाव से या अहैतुकी भगवत्कृपा से मुझे पूज्य श्रद्धेय आदरास्पद श्री 'श्रीजी' महाराज का पावन सान्निध्य लाभ मिल सका। वस्तुतः ऐसे धर्मज्ञ महापुरुष ही पथ से भटकी मनुष्यता को पुंनः संयोजित करने का सामर्थ्य रखते हैं। मैं उनके पावन दर्शन व वचनामृतों से आज भी कृतकृत्य हूँ।

32, रामानुज कुटीर, वर्धमान कॉलोनी
रोडवेज डिपो के पीछे, गली नं. 2
भीलवाडा 311001 (राज.)

मेरी दृष्टि में 'आचार्यश्री'

जैसा सर्वाङ्गीण अनुभव किया

— श्री सत्यनारायण 'पथिक'
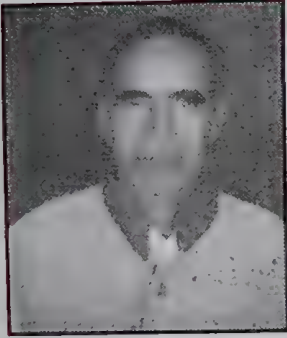
अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज इस भारतभूमि, जिसके बारे में शास्त्रों में **''गायन्ति देवाः किल गीतकानि''**, **''दुर्लभं भारते जन्म''** इस देश की ही नहीं, विश्व की महान विभूति हैं। पूर्वजन्म के कर्मानुसार इस धरा पर प्राणीमात्र जन्म लेते हैं और चले जाते हैं, किन्तु महापुरुष युगों-युगों में जीवमात्र पर कृपा करने हेतु भगवदाज्ञा एवं कृपा से अवतरित होते हैं।

वैसे तो किसी भी साधारण व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण अन्तर्बाह्य वर्णन विवरण भी दुष्कर कार्य है। शास्त्रों में कहा गया है ''यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे''। महापुरुष के साथ ही जगद्गुरु जो ''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः'' स्वरूप है, उनके संबन्ध में लिख पाना एवं अत्यल्प आकलन कर पाना असंभव ही है।

छैः अन्धों वाली कहावत प्रसिद्ध है। हाथी कैसा होता है? जिस अंधे ने स्पर्श कर जैसा अनुभव किया, उतना ही समझा। जिसने पूँछ के हाथ लगाया– उसने रस्सी के समान, जिसने पैर का स्पर्श किया, उसने खम्भे के समान, जिसने पेट के हाथ लगाया उसने मोटे घड़े के समान, जिसने कान का स्पर्श किया उसने सूप के समान समझा एवं बताया। पूरे हाथी का स्वरूप कैसा है, कोई नहीं समझ पाया। वैसा ही मेरा ज्ञान है, फिर भी मैंने बचपन से जब थोड़ा होश सम्हाला, तब से आजतक लगभग पचास वर्षों में जैसा देखा, सुना, पढ़ा एवं अनुभव किया, वही लेखबद्ध कर पा रहा हूँ —

1. **सुदर्शन व्यक्तित्व** — महाराजश्री का सुन्दर-सुदर्शन श्रीस्वरूप है। कहावत है **'फर्स्ट इम्प्रेसन इज दी लास्ट इम्प्रेसन'** प्रथम बार ही जो दर्शन करता है, गौर वर्ण, सुदर्शन, सौम्य, सन्तुलित देहयष्टि, निरहंकारी आकर्षक प्रभावी आभामण्डल युक्त सात्विकतापूर्ण श्रीमुखमण्डल, कृपा वर्षण करते नेत्र कमल, माधुर्य रस से परिपूर्ण वाणी ''रसो वै सः'' की साक्षात् सजीव प्रतिमा-प्रतिभा दर्शनीय है। प्रथम बार ''श्रीजी'' के जो भी दर्शन करता है, स्वतः स्वाभाविक स्वप्रेरणा से साष्टांग दण्डवत् हो चरण स्पर्श कर भावविभोर नत मस्तक होकर समर्पित हो जाता है।

2. **राष्ट्र-समाज का चिन्तन**— महाराजश्री निम्बार्कसम्प्रदाय के साथ-साथ सम्प्रदाय से ऊपर उठकर अहर्निश समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र का चिन्तन, विचार-विमर्श, मार्गदर्शन करते रहे हैं। सभी राजनैतिक पार्टियों के विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री, सामाजिक, धार्मिक संगठनों के प्रमुख आचार्य पीठ एवं प्रवास के समय अन्य प्रान्तों से दर्शनार्थ निरन्तर आते रहते हैं। धर्म चर्चा के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र

के संबन्ध में देश की परिस्थिति, तात्कालिक घटना-क्रम, शिक्षा संस्कार, संस्कृत भाषा, धार्मिक-स्थान, गौमाता आदि के संबन्ध में चर्चा, चिन्ता प्रकट कर मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त करते हैं।

3. **साहित्य-संगीत प्रेम—** 'आपश्री' साहित्य, संगीत-कलादि के मर्मज्ञ हैं। साहित्य, दर्शन, संस्कृत एवं हिन्दी काव्य में स्वरचित-लिखित रचनायें प्रकाशित हैं। संस्कृत भाषा में धार्मिक के साथ-साथ सरल संस्कृत में जनोपयोगी रचनायें हैं। हिन्दी भाषा में भी काव्य-महाकाव्य हैं। शास्त्रीय राग-रागनियों से युक्त गेय काव्य भी हैं। रचनाओं में सरल भाषा में आबाल-वृद्ध जनोपयोगी मार्गदर्शक स्वरचित रचनायें भी हैं, जिनमें तीर्थ स्थानों, गंगा-गीत, 'गायत्री' दैनिक दिनचर्या 'आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों', गौ माता, पंचामृत-पंचगव्य आदि के महत्त्व का दिग्दर्शन प्रभावी ढंग से है। इसके अलावा इतिहास के सन्दर्भ में कई कई अलभ्य अप्रकाशित संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी काव्य एवं अन्य काव्य ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों का संकलन करवा कर पीठ की ओर से या भक्तों-श्रेष्ठिवर्ग को प्रेरित कर प्रकाशित करवाई हैं। आचार्य पीठस्थ प्रेस में समाचार-पत्र के अलावा ग्रन्थ निरन्तर छपते रहते हैं। छपाई में ग्रन्थ रचनाओं की मौलिकता एवं शुद्ध छपाई हो, इस हेतु इतनी व्यस्तता में भी महाराजश्री को निरीक्षण एवं स्वयं को प्रूफ-रीडिंग तक करते हुए देखा है।

आचार्यपीठ एवं प्रवास में अन्य स्थानों पर नित्य सायंकालीन संकीर्तन में वाद्य पर स्वयं रागरागनियों युक्त संकीर्तन-भजन समय-समय पर करके भक्तों को प्रेरणा देते हैं। समय-समय पर शास्त्रीय-संगीत मर्मज्ञ, प्रसिद्ध गायक महाराजश्री के श्रीमहल तक में संगीत सुनाकर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। आपश्री को स्वयं तल्लीन होकर सुनकर राग-रागनियों नाम आरोह-अवरोह के संबन्ध में चर्चा-मार्गदर्शन देते हुए प्रत्यक्ष देखा है। महाराजश्री के प्रवचन एवं संकीर्तन दूरदर्शन "संस्कार" केन्द्र से नित्य प्रातः प्रसारित हो रहे हैं। इसके अलावा सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को सम्मानित कर दुपट्टा प्रसाद के साथ-साथ प्रोत्साहन हेतु नकद राशि भी देकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

4. **गो-सेवा, गो-भक्ति—** 'श्रीजी' महाराज की "**गावो विश्वस्य मातरः**" गौ माता के प्रति भाव पूर्ण श्रद्धा है। आपश्री हर प्रवचन में, वार्ता में, भक्तों से गौ पालन हेतु प्रेरणा एवं आग्रह अवश्य करते हैं। गोहत्या की चर्चा मात्र से इतने दुःखी एवं भावुक हो जाते हैं कि अश्रुपात तक हो जाता है।

7 नवम्बर, 1966 में गोहत्या निरोध हेतु देश भर में विशाल आन्दोलन हुआ था। संसद भवन के सामने विशाल प्रदर्शन हुआ था। प्रदर्शन में आपश्री ने हजारों भक्तों एवं सन्तों के साथ भाग लिया था, आप मंचासीन थे। उस समय मैं स्वयं संगठन के दिल्ली कार्यकर्ताओं के साथ व्यवस्था में मंच के पास था। एक पूर्व नियोजित षड़यंत्र के अन्तर्गत तत्कालीन सरकार के आदेश पर प्रारंभ में मंच पर अश्रुगैस के गोले एवं पश्चात् भयंकर गोलीकांड हुआ था। आपश्री अन्त तक, जब तक पूरा मंच खाली नहीं हुआ, विराजमान रहे।

अपनी काव्य रचनाओं का भी आपश्री ने गोमाता, गोदुग्ध, गोमूत्र, पंचगव्य एवं पंचामृत का

महत्त्व प्रकट किया है। आचार्यपीठ में भी नित्य प्रातः नियमित रूप से पंचामृत से श्रीसर्वेश्वर प्रभु का सामूहिक पुरुष सूक्त के उच्चारण के साथ अभिषेक होता है। आचार्यपीठ में गोशाला भी है, जिसमें ढाई सौ लगभग गाये हैं। निरन्तर गोसेवा होती है। सरकार एवं मुख्यमंत्रियों के आग्रह के बाद भी किसी प्रकार की सरकारी सहायता नहीं ली जाती।

राजस्थान में भयंकर अकाल के समय अकालपीड़ित गायों हेतु किसी न किसी रूप से आचार्यपीठ की ओर से सेवा-सहयोग होता रहा है। सन् 1987 में भयंकर अकाल के समय महाराजश्री ने ग्रामीण जनों को एकत्रित किया था। आपश्री की संरक्षता में सलेमाबाद, निम्बार्कतीर्थ में ''अकालपीड़ित गो सेवा समिति'' का गठन हुआ। आपश्री के सान्निध्य में गाँव की सभा में आपश्री ने इच्छा प्रकट की कि कोई भी ग्रामवासी अपनी गाय को किसी भी परिस्थिति में लावारिस नहीं छोड़ेगा- उसका सभी ने पालन किया। आपश्री ने आचार्यपीठ की ओर से समिति का कार्य प्रारंभ करने हेतु आर्थिक सहयोग राशि प्रदान की। सम्प्रदाय के भक्तों द्वारा देश भर से लाखों की राशि एकत्रित हुई। निम्बार्कतीर्थ सरोवर क्षेत्र में अकाल पीड़ित लगभग 600 गायों की 6 माह तक व्यवस्थित सेवा हुई। आपश्री ने सेवक को मंत्री का उत्तरदायित्व सौंपा था। पूरे राजस्थान में यही एक मात्र समिति थी, जिसने बिना किसी प्रकार की सरकारी सहायता के आपश्री के आशीर्वाद से सफलता पूर्वक निर्विघ्न यह कार्य सम्पन्न किया था।

5. **हिन्दुत्व-हिन्दुधर्म पुरोधा—** हिन्दुधर्म-सनातनधर्म, हिन्दुत्व-राष्ट्रीयत्व के संबन्ध में आचार्यश्री द्वारा स्पष्ट विचार एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाता रहा है। हिन्दु समाज की सभी कुरीतियाँ दूर हों, युगधर्मानुकूल व्यवस्था एवं आचरण हो, तभी हिन्दु समाज, हिन्दु धर्म एवं राष्ट्र वैभवशाली होकर विश्वगुरु संसार का मार्गदर्शन कर सकता है, विश्वशान्ति संभव हो सकती है। आपश्री ने ''हिन्दू संगठन'' पर बहुत पूर्व में स्वलिखित पुस्तक प्रकाशित की हुई है। ''विश्व हिन्दू परिषद'' के गठन स्थापना अवसर पर आपश्री उपस्थित थे। **''मार्गदर्शक मण्डल''** के प्रमुख महत्वपूर्ण प्रभावी सदस्य रहे हैं। परिषद हेतु समय-समय पर सहयोग एवं मार्गदर्शन भी रहा है। अखिल भारतीय अधिकारी पदाधिकारियों एवं सम्बन्धित प्रमुख सन्तों से सजीव सम्पर्क रहा है एवं वर्तमान में भी है। समय-समय पर विचार-विमर्श एवं दर्शनार्थ आते रहते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर (श्री गुरुजी) से भी आपका निकट सम्पर्क रहा है। आज भी संघ के पदाधिकारी दर्शनार्थ संगठन के कार्य-विवरण एवं मार्गदर्शन हेतु आते रहते हैं। आपात्काल के पश्चात् मा. सरसंघ चालक श्री बालासाहब देवरस के अजमेर के विशाल कार्यक्रम के अवसर पर आपश्री पधारे थे, अध्यक्षता ग्रहण की थी। निवेदन करने पर सद्यः समय भी कार्यक्रमों में पधारते हैं। पू. स्वामी करपात्रीजी महाराज द्वारा स्थापित ''सनातन धर्म संघ'' के भी आपश्री प्रतिष्ठित पदाधिकारी सदस्य रहे हैं। अन्य सांस्कृतिक संगठन भी आपश्री को आग्रहपूर्वक आमंत्रित करते रहते हैं।

6. **सम्प्रदाय निरपेक्ष—** 'श्रीजी' निम्बार्क सम्प्रदाय के सर्वोच्च प्रमुख हैं ही। अतः सम्प्रदाय की समस्त प्रगति एवं अन्य विषयों का मार्गदर्शन स्वाभाविक है। अन्य वैष्णव सम्प्रदाय के अलावा इतने

सारे सम्प्रदाय के संबन्ध में भी समस्या या अन्य के संबन्ध में वार्ताचिन्ता, साथ ही मार्गदर्शन करते भी देखा सुना है। देश के सभी सम्प्रदायों, संत महंत जगद्गुरु आचार्यपीठ पधारते रहते हैं– सभी से सजीव संपर्क एवं मधुर संबन्ध है। पूर्वाचार्यों के कई मुस्लिम समाज के लोग एवं फकीर भक्त रहे हैं। मुस्लिम बादशाह शेरशाह सूरी से लेकर कई निःसंतान मुस्लिम भक्तों के पूर्वाचार्यों की कृपा आशीर्वाद से सन्तान प्राप्ति एवं कष्ट मिटे हैं। उसी परम्परा में महाराजश्री के कई मुस्लिम भक्त हैं। आपश्री को उद्घाटन या अन्य बहाने आमन्त्रित करते हें एवं आपश्री पधारते हैं। कई विदेशी ईसाई लोगों को श्रद्धाभाव से यहाँ आते देखा है। इस दृष्टि से महाराजश्री की साम्प्रदायिक भावना या मत-मतान्तर दल गत भावना से ऊपर निरपेक्ष है, ऐसी छवि देश में है।

7. **कुशल संगठक—** महाराजश्री कुशल संगठक हैं। विशाल-कार्यक्रमों की सफलता पूर्वक रचना एवं योजना में सिद्धहस्त हैं। वर्षों पूर्व निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में सनातन धर्म सम्मेलन का सफल आयोजन आपश्री की योजना एवं मार्गदर्शन एवं सान्निध्य में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। आज जहाँ हिन्दू-समाज एवं अन्य मतावलम्बियों के लोग मुख्यतः सन्तगण, मुल्लामौलवी, पादरी अपने मत सिद्धान्त एवं विचारों को ही सर्वश्रेष्ठ मानकर बात-बात पर तर्क-वितर्क, शास्त्रार्थ एवं बात-बात पर फतवे निकालने को तैयार रहते हैं। ईर्ष्या द्वेष रखकर लड़ाई-झगड़े तक करते या करवाते हैं। एक मंच पर एकत्रित होकर सही दिशा में सर्वसम्मत निर्णय लेकर चलने या समाज को चलाने में असमर्थ हैं। फिर मुख्यतः हिन्दू समाज के बारे में तो पुरानी कहावत-उक्ति प्रसिद्ध है कि "चार हिन्दू एक दिशा में तभी चलते हैं, जब पाँचवा (मृत-शव) कंधों पर हो। यही स्थिति अन्य क्षेत्रों में है। ऐसे वातावरण एवं स्थिति में 'सनातन धर्म सम्मेलन' में सभी शंकराचार्य, छत्र चंवरधारी सन्त, महंत, श्रीमहन्त, स्वामी करपात्रीजी जैसे महान् त्यागी तपस्वी संत विद्वान् तथा अन्य दर्शनशास्त्री प्रकाण्ड पंडितों एवं अन्यों को एक मंच पर एकत्रित कर सर्वसम्मत निर्णय समग्र रूप से समाज को एक दिशा में प्रेरित करना अत्यंत दुष्कर कार्य आपश्री द्वारा सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में हिन्दुआ सूरज मेवाड़ नरेश, विजयराजे सिंधिया, हिन्दुराष्ट्र नेपाल के राजगुरु, नेपाल के विक्रम विश्वविद्यालय के प्रिन्सिपल-प्राचार्य, नेपाल नरेश का सन्देश लेकर उपस्थित हुए थे। इसके अलावा विश्वप्रसिद्ध रामायण-कथा-वाचक की कथा, स्वर्ण जयंती महोत्सव, श्रीमद्भागवत कथा के विशाल कार्यक्रम सम्पन्न करवाते हैं, जिनमें सभी राजनैतिक पार्टियों के मंत्री, मुख्यमंत्री सामाजिक संगठनों के प्रमुख नियंत्रित एवं उपस्थित होते रहे हैं। इसके अलावा देश की प्रमुख रामलीला, रासलीला मण्डलियों रवीन्द्रजैन जैसे प्रसिद्ध व अन्य संगीतज्ञ, भजन मंडलियाँ, प्रसिद्ध जादूगर, योग-विद्या, धनुर्विद्या विशेषज्ञों के कार्यक्रम निरन्तर होते रहे हैं। यह सब महाराजश्री के संगठन कौशल एवं समन्वयात्मक दृष्टिकोण से संभव हो पाये हैं।

8. **श्रीरामजन्म भूमि—** अयोध्या में श्रीराम जन्म स्थान पर ही राममन्दिर का निर्माण हो, काशी का पवित्र स्थान, श्रीकृष्ण जन्म भूमि मुक्त हो, यह कौन हिन्दू, विशेष रूप से संत नहीं चाहेंगे। महाराजश्री का इस संबन्ध में स्पष्ट विचार, आग्रह, सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा है। श्री रामजन्मभूमि

आन्दोलन से संबंधित श्री अशोक सिंघल, विश्वहिन्दू परिषद के सभी पदाधिकारी, वरिष्ठ कार्यकर्ता विचार-विमर्श एवं मार्गदर्शन हेतु आते रहे हैं। सन्तों में श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज, गोरखपुर पीठाधीश्वर, शंकराचार्य पू. स्वरूपानन्दजी, शंकराचार्य श्री वासुदेवानन्दजी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। ग्राम निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद एवं क्षेत्र के अन्य स्थानों पर श्री राममंदिर शिलायात्रा, श्री रामपालकी, गौमाता-गंगामाता-भारत माता आदि संबंधित यात्राओं कार्यक्रमों में आपश्री द्वारा स्वयं पूजन-आरती कर कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन, आशीर्वाद एवं जन-समाज को प्रेरणा प्रदान की है।

आन्दोलन में आपश्री की प्रेरणा से ग्राम से संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी एवं ग्रामवासी तेरह व्यक्ति अयोध्या गये थे, जिसमें लेखक स्वयं भी सम्मिलित रहा। सभी को आने जाने का किराया एवं अन्य व्यय एवं आशीर्वाद महाराजश्री द्वारा प्रदान किया गया।

9. **अस्पृश्यता निवारण-कर्त्ता—** हिन्दू समाज एवं विश्व में अस्पृश्यता का भाव, वैचारिक अस्पृश्यता का निवारण हो– मनसा-वाचा-कर्मणा– इस हेतु प्रयास एवं प्रेरणा सदा देते रहे हैं। आपश्री ने अस्पृश्यता के संबन्ध में एक पुस्तक लिखकर प्रकाशित करवाई है। पुस्तक में विवरण दिया है कि कुछ स्थिति में अस्पृश्यता रहेगी, आवश्यक है। जैसे स्त्री रजस्वला के काल में अस्पृश्य मानी जाती है। पुजारी बड़े मन्दिरों में तो जहाँ आठ समयों पर आरती होती है– शुद्धावस्था में रहता है। किसी भी व्यक्ति को स्पर्श नहीं होने देता (चिकित्सक शल्य क्रिया के समय विशेष वस्त्र, हाथ में दास्ताने पहनते हैं–चिकित्सालय में विशिष्ट कक्षों में–सम्बन्धियों तक का प्रवेश वर्जित है आदि। किन्तु किसी विशेष वर्ग को सामूहिक रूप से अस्पृश्य मानना या भाव रखना सर्वथा अनुचित है, इस प्रकार के विश्लेषित स्पष्ट विचार हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रवर्तक आद्याचार्य निम्बार्क प्रभु द्वारा प्रणीत ''वेदान्त (दसश्लोकी) कामधेनु'' जो निम्बार्कदर्शन का मुख्य आधार है– उसमें स्पष्ट है **''ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं''** प्रभु के अधीन अनन्त जीव हैं ज्ञान स्वरूप है। **''सर्वं हि विज्ञानमतोऽयथार्थकं''** जड़चेतना रूपी यह समस्त दृश्यमान विश्व विज्ञान (ब्रह्म) रूप ही है— वर्णित है।

इस सम्बन्ध में एक घटना का विवरण देना पर्याप्त है। अवसर था अयोध्या से भेजी गई ''राम शिला (ईंट) पूजन हेतु गाँव में आई हुई यात्रा का। रथ में रखी शिलाओं के पूजन के पश्चात् गाँव में शोभायात्रा निकालनी थी। ग्राम निम्बार्कतीर्थ–सलेमाबाद के एक किनारे सबसे बड़ा मोहल्ला बस्ती रैदास (रेगर) जाति की है। उसमें से होकर कभी भी कोई धार्मिक या अन्य जुलूस नहीं निकलने देते थे, परम्परा सी थी। हमने श्रीजी महाराज के श्रीचरणों में निवेदन किया कि शोभायात्रा उस मोहल्ले से भी निकले, ऐसी हमारी इच्छा है, आपश्री का आशीर्वाद एवं आज्ञा चाहिये। मुझे व अन्यों को अकल्पनीय आश्चर्य हुआ। जब श्रीमुख से यह शब्द निकले ''क्यों नहीं? अवश्यमेव निकलनी चाहिये– हम स्वयं पैदल साथ चलेंगे।'' इस पर हम सभी ने मर्यादा का ध्यान रखते हुए नम्रता पूर्वक इसको स्वीकार नहीं किया। उसके पश्चात् महाराजश्री की आज्ञा से आचार्यपीठ के अधिकारी जी, संत एवं पीठस्थ छात्रावास के विद्यार्थीगण शोभायात्रा में आगे और सभी ग्रामवासी ढोल एवं वाद्यों के साथ भजन गाते हुए साथ-

साथ चल रहे थे। मार्ग में मुख्य बाजार में हरिजन बस्ती से स्त्रीपुरुषों को बुलाकर श्रीराम के चित्र एवं राम शिला का पूजन करवाया। वे काफी संकोच कर रहे थे– पर गदगद् थे। जब शोभायात्रा रैदास बस्ती में पहुँची तो रैदास समाज के सभी आबाल वृद्ध स्त्रीपुरुष ने आश्चर्य चकित होकर दर्शनार्थ एकत्रित होकर पूजन किया। इस प्रकार की भावना एवं उदाहरण मिलना मुश्किल है एवं सभी के लिए प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है।

वैसे तो आचार्य पीठस्थ मन्दिर में जन्माष्टमी के मेले के अवसर पर या अन्य कार्यक्रमों में प्रारंभ से ही प्रभु दर्शनार्थ सभी लोग प्रविष्ट होते रहे हैं। कोई जाति-पाँति नहीं पूछी जाती, न मना किया जाता है– सभी हिन्दू मुसलमान दर्शनार्थ आते हैं।

10. शिक्षा एवं संस्कार— बालकों में बचपन से ही धार्मिक संस्कार भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम, तदनुकूल दिनचर्या एवं व्यवस्थित जीवन हो, इसका विशेष ध्यान एवं आग्रह हैं। आचार्यपीठ एवं अन्य संबन्धित स्थानों पर सभी विद्यार्थी गण द्वारा ब्राह्ममुहूर्त में उठकर सस्वर वेदाभ्यास, नित्य आरती, संकीर्तन समय-समय पर होने वाले यज्ञादि मंत्र जप, पूजापाठ में भाग लेना इसका प्रमाण है। सभी विद्यार्थीगण विशिष्ट बटुक वेशभूषा में रहते हैं। किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के आगमन पर कार्यक्रम विशेष पर पीठस्थ विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा विशिष्ट वेशभूषा में सस्वर सांगोपांग तन्मयता से एक साथ वेद-ऋचाओं का उच्चारण-पाठ सभी को प्रभावित करता है। महाराजश्री की निजसेवा में एवं विद्यालयों में शिक्षित छात्र धार्मिक, शिक्षा एवं अन्यान्य क्षेत्रों में विशिष्ट पदों पर एवं गृहस्थ जीवन में भी सफल रहते हैं। निरन्तर आचार्य पीठ से संबंधित रहते हैं। बालकों के किसी भी प्रश्न या शंका समाधान में भी आपश्री उतनी ही रुचि लेते हैं, जितनी विद्वानों के बीच। मैं स्वयं भी जब सातवीं-आठवीं कक्षा में पढ़ता था, तब कई बार महाराजश्री के पास पहुंच जाता था। कई प्रकार के प्रश्न 'चोटी क्यों रखना चाहिये', यज्ञोपवीत, संध्यावन्दन के संबन्ध में पूछता रहता था। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता था। साथ ही छोटी छोटी पुस्तिकायें भी आपश्री प्रदान करते थे। यह सब मुझे अभी भी स्मरण है।

बालकों में ऐसा लगता है कि आपश्री की मनो-भूमिका बालवत् हो जाती है। बालकों को ऐसा नहीं लगता कि वे किसी महान-विभूति के सान्निध्य में बैठे हैं। कई बार आपश्री निज बाल जीवन की स्मृतियाँ सुनाते रहते हैं। ऐसा लगता है कि आपश्री बालकों की प्रतिभा भविष्य का दिव्य दृष्टि से आकलन कर लेते हैं या बालगोपाल के रूप में देखते हैं। वैसे सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप "लड्डू गोपाल" की पूजा का नित्य विधान है।

आचार्य पीठ की ओर से संस्कृत महाविद्यालय, वेदविद्यालय एवं निम्बार्क दर्शन विद्यालयों का संचालन हो रहा है। सभी विद्यार्थियों की निःशुल्क, भोजन-वस्त्रादि व्यय एवं गुरुजनों के मासिक वेतनादि की व्यवस्था आचार्य पीठ की ओर से हो रही है। पीठ से संबंधित अन्य कई स्थानों पर भी यही व्यवस्था है। किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता नहीं ली जाती। ग्राम की प्राथमिक पाठशाला के भवन का निर्माण भी महाराजश्री द्वारा करवाया गया है।

11. विद्वानों का सम्मान— आपश्री विद्वानों का, सन्त महन्तों, विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान आग्रह पूर्वक करते हैं। समय-समय पर होने वाले विशेष कार्यक्रमों में विशाल जनसमूह की उपस्थिति में सम्मानित करते हैं। यह आपश्री की आचार्य परम्परा में एक विशिष्ट विशेषता उल्लेखनीय है। विद्वानों को विशेष उपाधियों से सम्मानित किया जाता है, उस समय उपाधि विशेष का प्रमाण पत्र, शाल, प्रसाद एवं अलग-अलग निश्चित राशि आपश्री द्वारा प्रदान की जाती है। यह हर वर्ष का क्रम बन गया है।

महाराजश्री उपाधि से सम्मानित कर इतिश्री नहीं करते– उसके पश्चात् भी निरन्तर कुशल क्षेम एवं अन्य जानकारी एवं समाचार प्राप्त करते रहते हैं। इस संबंध में स्वयं हमारे परिवार का उदाहरण देना आवश्यक एवं उचित है। पिता श्री कैलाशचन्द्र जी गौड़ को आपश्री ने **'निम्बार्क भूषण'** से सम्मानित किया था। कुछ वर्ष पूर्व पिताश्री का जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय अजमेर में ऑपरेशन (शल्य-क्रिया) हुआ था। महाराजश्री को इसकी जानकारी हुई तो एकदिन अचानक माधवबाबा के साथ चिकित्सालय पहुंच गये। इतने बड़े पद पर विराजमान महान् व्यक्तित्व के धनी, जिनके आगमन की प्रतीक्षा में हजारों भीड़ पलक पाँवड़े बिछाये दर्शनार्थ एकत्रित रहती है, एक साधारण जन की भाँति आत्मीय भाव से पास में रखी साधारण काष्ठ-पट्टिका पर आकर विराजमान हो गये। मैं एवं पिताश्री आश्चर्य चकित रह गये। पिताश्री की कुशल क्षेम के बारे में जानकारी प्राप्त की। मर्यादा एवं परम्परानुसार मैंने श्रीचरणों में पत्र-पुष्प कुछ भेंट करनी चाही, स्वीकार नहीं की गई। इसके विपरीत प्रसाद-स्वरूप ग्रहण करने का आग्रह कर बंद लिफाफे में रखी हुई राशि प्रदान कर आशीर्वाद देकर वापिस पधार गये। ऐसे हैं आपश्री। ऐसे महापुरुष के चरणों में कौन समर्पित नहीं होगा?

12 प्रशासनिक क्षमता— आपश्री में अद्भुत युक्ति-युक्त प्रशासकीय क्षमता है। सबसे प्राचीन सम्प्रदाय होने से देशभर में हजारों आचार्यपीठ से संबंधित मठमन्दिर हैं, हजारों मठ-मन्दिर हैं–हजारों सन्तजन हैं –अखाड़े हैं–लाखों भक्त हैं। कई स्थानों पर गौशाला, विद्यालय, समाचार पत्र, प्रेस, अन्य विविध कार्य-गतिविधियाँ हैं। आचार्यपीठ से भी पाक्षिक-मासिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं, जिनमें भक्तों के मार्गदर्शन हेतु व्रत, त्यौहार, देशभर में सम्पन्न विशेष कार्यक्रमों का विवरण रहता है। देशभर के लगभग पच्चीस हजार व्यवस्थित सक्रिय मठ मन्दिर हैं। सुदृढ़ व्यवस्था एवं सूचना तन्त्र हैं। सभी मठ-मन्दिरों, अखाड़ों में महन्त, श्रीमहन्त की नियुक्ति समय-समय पर की समस्याओं का निदान, जो अत्यन्त दुष्कर कार्य है, आपश्री के मार्गदर्शन में सभी कार्य सम्पन्न होते हैं। यद्यपि सभी की स्वतंत्र व्यवस्था है, ट्रस्ट भी बने हुए हैं, पर सभी का स्वामित्व एवं स्वत्वाधिकार सर्वोच्च निर्णायक शक्ति आपश्री का स्वीकार्य है। कई महंतों से स्वयं सुना है कि हम तो पहरेदार हैं, महाराजश्री के सेवक हैं।

यहाँ के ग्रामवासी एवं अन्य सम्प्रदाय से संबन्धित भक्तजन आचार्यपीठ के लिए "बड़ी सरकार" "श्री जी सरकार" शब्दों का प्रयोग करते हैं। देश की केन्द्र एवं राज्य सरकारों में तो प्रशासनिक अधिकारियों-कर्मचारियों को तो स्थानान्तरण, सेवा समाप्ति आदि का भय रहता है, किन्तु पहिले से ही घर बार छोड़े हुए बात-बात पर दण्ड-कमण्डल समेटने सकने वाले तेजस्वी, अग्निस्वरूप सन्तों को एक

सूत्र में पिरोये रखकर व्यवस्था का अंग बनाये रखना सभी के अलग-अलग स्तर, योग्यता, समर्पण का आकलन कर योग्य सम्मान, स्थान देकर श्रद्धास्पद समर्पण श्रीचरणों में करवा लेना आपश्री **''न राज्यो न राजासीत् न दण्ड्यो न च दण्डिकः। धर्मेणैव प्रजाः सर्वे, रक्षन्ति स्म परस्परम्॥''** के भाव से कार्य सम्पन्न करते हैं।

13. अशरण-शरण— आपश्री अत्यन्त दयालु स्वभाव के हैं– अशरण-शरण हैं। जिनको कहीं ठौर किसी भी कारण से नहीं है, उनके लिये अशरण -शरण हैं। कई वृद्धजन, निःशक्त, रोगी, मातृपितृ-विहीन बालक, यहाँ तक कि विक्षिप्त को भी शरण मिली है। उनकी व्यवस्था हुई -ऐसे कई उदाहरण हैं। वृन्दावन में तो सम्प्रदाय के अन्तर्गत कई कुञ्जों में वृद्धाश्रम, विधवाश्रम या भक्तिभाव से परिवार के साथ वृन्दावन में स्थायी निवास करने के इच्छुक जनों के लिए भी स्थायी व्यवस्था है, सन्तों के लिए तो है ही। अन्यों को भी सम्बन्धित स्थानों पर पुजारी या अन्य कोई कार्य सेवा प्रदान कर व्यवस्था होती है।

आचार्य-पीठ की ओर से निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सालय है, जहाँ गरीबों को औषधि प्रदान की जाती है। महाराजश्री स्वयं भी आयुर्वेद ज्ञाता-विशेषज्ञ हैं। स्वयं के पास भी शास्त्रोक्त रससिद्ध औषधियाँ रखते हैं। कई बार साधन सम्पन्न लोगों को भी स्वर्णयुक्त कूपी-पक्व रस-रसायन मौके पर उपलब्ध नहीं हो पाते– महंगी से महंगी औषधियों में भी विश्वसनीयता का अभाव है पर आप श्री के पास उपलब्ध रहती है। ग्राम-वासी परिवार में अत्यन्त गंभीरावस्था में किसी के होने पर आपश्री से लेकर आते हैं। कई जानकारी प्राप्त होने पर महाराज श्री आगे होकर भिजवा देते हैं। मैं स्वयं भी एक अवसर पर आपश्री से स्वर्णयुक्त महावात चिन्तामणि रस लेकर आया हुआ हूँ। आपश्री द्वारा प्रदत्त औषधि चमत्कारिक परिणाम देने में सक्षम है। यह स्वानुभूत है।

14. प्रचार-प्रसार— आचार्यश्री के पीठासीन होने के पश्चात् से आज तक निरन्तर निम्बार्क सम्प्रदाय विशेष रूप से आचार्यपीठ की प्रतिष्ठा प्रसिद्धि एवं प्रभाव में अलभ्य वृद्धि हुई है। प्रचार-प्रसार हुआ है। निम्बार्क-दर्शन-साहित्य-वाणी एवं स्वयं रचित पुस्तकों का प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार हुआ है जो पूर्व के लम्बे अन्तराल में नहीं हुआ है। पाठक-भक्तों की संख्या में वृद्धि हुई है। आचार्य पीठस्थ ग्रन्थालय एवं वाचनालय व्यवस्थित हुए हैं। निकटस्थ स्थानों एवं शहरों से गुजरने वाली यात्राओं के यात्रीगण आचार्य पीठ में श्री सर्वेश्वर राधा-माधव प्रभु के एवं आचार्यश्री के दर्शनार्थ विपुल संख्या में आने लगे हैं। क्रम निरन्तर चलता रहता है। सैकड़ों की संख्या में नये भक्तजन आचार्यश्री से दीक्षा ग्रहण करने आने लगे हैं। बीच के काल खण्ड में पीठासीन आचार्यों का कुम्भ पदार्पण क्रम अवरुद्ध हुआ था, वह पुनःप्रारम्भ हुआ है। कुंभ में निम्बार्क-नगर के विशाल पाण्डालों में कुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं, निम्बार्क-सम्प्रदाय के विद्वानों एवं आपश्री के अमृतमय प्रवचन सुनने आने लगे हैं। पीठस्थ हर कार्यक्रमों का विवरण समाचार पत्रों में अनिवार्यतः निरन्तर आते हैं– विशेष उत्सवों का दिग्दर्शन दूरदर्शन पर भी प्रसारित होता है।

15. भक्तों के भगवान्— आचार्यश्री के प्रति भावुक भक्तों की अनन्य श्रद्धा है। कई श्रद्धालु

स्त्री-पुरुष भक्त श्रीचरणों का प्रक्षालन कर जल ले जाते हैं। नित्य चरणामृत की तरह पान करते हैं। कई भक्त ऐसे भी हैं जो कहते हैं– गम्भीर रोगावस्था में महाराजश्री के दर्शन हुए और स्वस्थ हो गये। आर्थिक संकट टल गया आदि। इन भक्तों में अशिक्षित अंधश्रद्धालु ही नहीं, शिक्षित वर्ग, धनाढ्य, व्यापारी वर्ग आदि हैं। बातचीत में कहते मिले भगवान् के दर्शन जन्म-जन्मान्तर में किसी को मिलते हैं। हमारे लिए तो महाराजश्री साक्षात् भगवान् हैं, जब इच्छा होती है, दर्शन करने आ जाते हैं। इस युग में निःसन्तान दम्पतियों को आशीर्वाद के फलस्वरूप सन्तान प्राप्ति हुई है, इसके भी उदाहरण हैं। प्रसिद्ध संगीतज्ञ रवीन्द्र जैन स्वर्ण जयन्ती समारोह में यहाँ आये थे। आचार्यश्री के चरणों में निःसन्तान होने के कारण सन्तान प्राप्ति हुई। उसके बाद पुनः श्रीचरणों में आभार समर्पित करने हेतु दर्शनार्थ आये। भक्तों के लिये **''सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥** ऐसा कुछ यहाँ है। सभी भक्तों के घरों में आचार्यश्री के चित्र तो हैं ही, लेकिन कई नवयुवकों को महाराजश्री के चित्रयुक्त डाइल गले में पहने हुए सुरक्षा कवच की तरह देखे हैं।

वर्तमान में भक्त अपने नये वाहन, जीप, कार, ट्रेक्टर, ट्रक, बोरिंग, मशीनें लेकर आते हैं। आचार्य श्री के सान्निध्य में पूजन करवा कर धन्य समझते हैं। दुकान, मकान, फेक्ट्री, कम्पनी, कार्यालयों के उद्घाटन आपश्री का पदार्पण करवाकर करकमलों से करवाते हैं, यह क्रम निरंतर चल रहा है, जो भक्तों की असीम श्रद्धा का प्रतीक है।

16. परम्परा का आग्रह— सम्प्रदाय की पूर्वाचार्यों की प्राचीनकाल से विशिष्ट निरन्तर चली आ रही अखण्ड परम्परानुकूल सभी कार्य सम्पन्न हो, इसका जागरूकता पूर्वक ध्यान एवं प्रबल आग्रह आपश्री का रहता आया है। 'स्वाभाविक द्वैताद्वैत' दर्शन, पूजापद्धति, तिलक, तुलसी, मालाकंठी, तंत्र साधना पद्धति, माधुर्यरस परिपूर्ण निकुञ्जोपासना, भाव-भूमि, युगल सरकार की सातों दिन की विशिष्ट रंगों के वस्त्राभूषण, मुकट की दिशा, प्रातः मंगलआरती से लेकर शयनआरती का क्रम, ब्रह्मचारी, पुजारी, आचार-विचार, ज्योतिषशास्त्र की विशिष्ट गणित पद्धति के अनुसार व्रत-त्यौहार आदि सभी कार्य परम्परानुसार ही होना चाहिये, इसकी व्यवस्था है। विश्वसनीय जानकारी के अनुसार यह क्रम भविष्य में भी चलता रहे, इस हेतु वसीयत में भी इसका विशेष उल्लेख करवाया है। परिकर जनों, एवं सन्तों की दिनचर्या एवं व्यवहार पर भी दृष्टि आपश्री रखते हैं।

17. जन-जन पूजित-स्वयं पुजारी— आचार्यश्री की जन-जन-भक्तगण चरण-वन्दना पूजा करते हैं, पर आपश्री स्वयं-सेवक-स्वयं पुजारी हैं। श्रीसनकादिक-नारद से लेकर आज तक पीठासीन आचार्यों की परम्परानुसार 'श्री सर्वेश्वर' प्रभु की पूजा स्वयं करते हैं– स्वयं सेवा करते हैं। प्रतिदिन भोग-प्रसाद समयानुसार कच्चा-पक्का अपने हाथों से बनाकर अर्पित करते हैं। उसके पश्चात् ही अन्न-ग्रहण उसी प्रसाद से करते हैं। लम्बे प्रवास के समय श्री सर्वेश्वर प्रभु 'श्री विग्रह' आपश्री के साथ रहते हैं। श्री सर्वेश्वर प्रभु 'श्रीविग्रह' शालिग्राम स्वरूप हैं। सौ प्रकार के शालिग्राम विग्रहों में सर्वोच्च कोटि के 'शालिग्राम' श्री सर्वेश्वर नाम से शास्त्रों में वर्णित है। अलभ्य हैं। श्री सर्वेश्वर-श्रीविग्रह चने की दाल के

बराबर है– मध्यभाग में दो स्वर्ण रेखा स्वरूप श्री राधाकृष्ण युगल सरकार विराजमान हैं। विश्व में एक मात्र आचार्यपीठ में विराजित है। मेगनीफाइंग ग्लास की सहायता से दर्शन करने पर सहस्र कोटि स्वर्ण रश्मिसमूह निसृत दृष्टिगोचर होता है। ''श्रीयंत्र' को तो सिद्ध पुरुषों द्वारा सिद्ध करना पड़ता है। ये स्वयं सिद्ध हैं– जहाँ प्रभु विराजमान हैं, वहाँ श्री (लक्ष्मी) एवं वैभव चरणों में लौटते हैं। पीठासीन आचार्यों को साक्षात् प्रकट होकर वार्तालाप करते हैं।

मंदिर के गर्भ गृह में विराजित 'राधामाधव' युगल सरकार प्रभु की आरती पूजा भी विशेष उत्सवों पर आचार्यश्री स्वयं करते हैं। श्री माधवजी बंगाल के प्रसिद्ध संस्कृत के शृंगार रससिद्ध कवि 'गीत-गोविन्द' के रचयिता जयदेव पूजित ठाकुर रहे हैं। विवरण हैं– भावविभोर घूमते हुए जंगल में जब जयदेव गीत-गोविंद गाते जाते थे तो माधवजी उनके पीछे-पीछे चलते थे। रात्रि को शयनआरती के समय जयदेवजी को माधवजी के चरणों में कांटे चुभे हुए मिलते थे, जिन्हें वे निकालते थे। बंगाल से वृन्दावन होते हुए अब यहाँ विराजित हैं। साक्षात् हैं पूर्व पुजारी रघुनाथदासजी, जब कहीं बाहर जाते थे और पूजा आरती में कोई कभी-स्नान या सर्दी में रजाई ओढाना पुजारी भूल जाते तो रघुनाथदासजी को स्वयं माधवजी बता देते थे। श्री माधवजी का श्रीविग्रह विश्व के एक मात्र पूर्ण पुरुष स्वरूप है।

ऐसे साक्षात् श्री सर्वेश्वर, राधामाधव के स्वयं पुजारी आचार्यश्री साक्षात्कारी जगद्गुरु हैं। इसीलिए भक्त जन आचार्यश्री को प्रभु स्वरूप ही मानते हैं।

18. कहावतों के अर्थ बदल दिए— कुछ प्राचीन कहावतें समाज में प्रचलित हैं, जो विशेष अर्थों में सटीक हैं। जैसे– ''दूर के डूंगर सुहावणे'', ''घर को जोगी-जोगणा, आण गाँव का सिद्ध'' ''गंगा के किनारे रहने वाले गंगा का महत्त्व नहीं जानते'' तुलसीदासजी की उक्ति'' तुलसी तहाँ न जाइये जहाँ बाप का गाँव, ''तुलसीदास तुलसीगये तुलस्या-तुलस्या नाँव'' आदि। पर यहाँ इन सारी कहावतों के अर्थ बदल गए-निरर्थक हो गए।

आचार्यश्री की जन्मस्थली सलेमाबाद ही है। यहीं बचपन बीता, खेले कूदे बड़े हुए, यहीं युवराज पद पदासीन हुए। ज्यादातर देखा जाता है कि प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति दूर से पूजनीय लगते हैं, जय-जयकार होती है। पर निकट जाने, जानने का अवसर मिलता है, तो कई कमियाँ सामने स्वतः दिख जाती है। कई बार श्रद्धा नष्ट हो जाती है। पर आपश्री के ज्यो-ज्यों निकट जाते हैं, सब देखते हैं, श्रद्धा में वृद्धि होती है। जीवन खुली पुस्तक की तरह है। जिसको निकटता प्राप्त होती है, समर्पित हो जाता है।

ग्रामवासियों के लिये तो आपश्री ही योगी (जोगी) हैं, पूजित हैं, प्रसिद्ध आचार्य पीठ होने के कारण कई विद्वद्जन पीठासीन संत आते रहते हैं– किसी को विशेष रुचि ग्रामवासियों में नही रहती। उनका कोई कार्यक्रम या प्रवचन महाराजश्री के सान्निध्य में ही सम्पन्न हो सकता है, वह भी मंदिर-पीठ परिसर में। ग्रामवासियों एवं आसपास के क्षेत्र में आपश्री के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव है। जब भी आचार्यश्री पैदल भ्रमणार्थ या प्रवास पर पधारते हैं, ग्रामवासी स्वतः श्रद्धाभाव से खड़े हो करबद्ध प्रणाम करते हैं, सम्मान देते हैं। ग्रामवासियों एवं क्षेत्रवासियों हेतु तो आपश्री ही पूजनीय, वन्दनीय, सिद्ध योगी, सभी हैं।

आपश्री के कारण ही निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद का नाम चारों ओर प्रसिद्ध हुआ है– ग्राम के विकास संबंधी या अन्य कार्य आचार्य पीठ के नाम से ही सम्पन्न होते रहे हैं, यही सभी के मन मस्तिष्क में है। सबके भाव हैं– ''सलेमाबाद में रहणां और राधे-राधे कहणां।'' आदि।

19. न भूतो....अभिनव कार्य— निम्बार्क सम्प्रदाय के हजारों वर्ष की आचार्य-परम्परा है। मथुरा-वृन्दावन-बरसाना से लेकर देश भर में बड़े-बड़े मन्दिरों एवं अन्यत्र भव्य निर्माण हुए हैं। राजा-महाराजाओं, नगर सेठों का युग रहा। कई राजवंश दीक्षित भक्त थे, शिष्य थे– ज्यादातर निर्माण कार्य उनके माध्यम से हुए।

वर्तमान आचार्यश्री के करकमलों से ''न भूतो न भविष्यति'' अभिनव कार्य सम्पन्न हुए– जो भूतकाल के सैकड़ों वर्षों के काल खण्ड से संभव नहीं हुआ, आप श्री की इच्छा, प्रयास एवं संकल्प शक्ति से सम्पन्न हुए, संभव हुए हैं।

निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रवर्तक निम्बार्क प्रभु की जन्मस्थली का विवरण ''वैदुर्य पत्तन'' केवल ग्रंथों में ही सुरक्षित रहा। स्थल की सही स्थिति की जानकारी का अभाव रहा। जन्म स्थान की खोज आपश्री के निरन्तर प्रयास से संभव हो सकी। पुरातत्वविदों एवं इतिहासकारों से जानकारी प्राप्त करवा कर समर्पित भक्तजनों, कार्यकर्त्ताओं को उत्तरदायित्व सौंपा गया, प्रोत्साहित किया। आँध्रप्रदेश नर्मदा नदी के किनारे निम्बार्क प्रभु की जन्म स्थली अरुणाश्रम वर्तमान गाँव **मुंगी-पैठण** (संस्कृत का वैदुर्य-पत्तन का अपभ्रंश अनुवादित नाम) के पास स्थान की सही स्थिति का पता लगा। उस स्थान पर आपश्री द्वारा भव्य-मंदिर एवं अन्य निर्माण कार्य सम्पन्न करवाया गया। आपश्री 'शिलान्यास' एवं उद्घाटन के अवसर पर स्वयं पधारे– विशाल भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसी प्रकार निम्बार्क प्रभु की तपःस्थली **निम्बग्राम** के बारे में हुआ। लगभग लुप्तावस्था में थी– जीर्णशीर्ण। सन् 1968 के लगभग महाराजश्री ने करीब तीन हजार भक्तजनों के साथ ब्रज चौरासीकोसीय पदयात्रा की तो नीमगाँव (निम्बग्राम) रुके। तपःस्थली स्थिति का अवलोकन किया। प्रवचन में ग्रामवासी एवं भक्तों को स्थान की महिमा बताई। जीर्णोद्धार का संकल्प-और धीरे-धीरे कार्य प्रारंभ। व्यवधानों के होते हुए कार्य सम्पन्न हुआ। सन् 1987 में आपश्री के सान्निध्य में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। निम्बार्क सम्प्रदाय के इतिहास में यह कार्य **''न भूतो न भविष्यति''** अभिनव कार्य हुए। आज दोनों स्थानों पर हजारों की संख्या में भक्तजन दर्शनार्थ पहुंचते हैं।

आपश्री को निर्माण कार्यों में विशेष रुचि, सिद्धि प्राप्त है। आपके कार्यकाल में करोड़ों की राशि व्यय होकर कार्य सम्पन्न हुए हैं। पुष्कर में तीर्थ गुरु के सरोवर के किनारे **श्री परशुराम देवाचार्यजी की तपःस्थली** का पुनरुद्धार, किशनगढ़-शहर स्थित स्थान का पुनरुद्धार, मदनगंज में श्री राधासर्वेश्वर मंदिर का नवनिर्माण, श्री निम्बार्ककुंजबिहारी मंदिर (हीरापुरा) जयपुर, निम्बार्क कोट अजमेर, पण्डरपुर मंदिर, मंगलदरेड़ी में हनुमान् मंदिर का नवनिर्माण हुआ है।

आचार्य पीठ स्थित मन्दिर का भव्य जीर्णोद्धार, संस्कृतविद्यालय भवन, सत्संग भवन, गंगासागर में भव्य आवास स्थल, गोशाला भवन आदि अनेक निर्माण कार्य तथा धर्मशाला आदि सम्पन्न हुए हैं। पुराने

स्थानों की धार्मिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। इसके अलावा जो अभिनव कार्य हैं, आचार्य पीठ ग्राम का नाम **निम्बार्कतीर्थ** रखवाना। सनातन धर्म सम्मेलन में यह उद्घोषणा सन् 1975 में हुए सनातनधर्म सम्मेलन के मंच से की गई। सौभाग्य से मैं उस सम्मेलन में पूरे समय उपस्थित था। कोई पहचानता नहीं था, पत्रकारों के बीच मंच पर बैठता था। गाँव सलेमाबाद का नाम बदलने की स्लिप मैने ही शंकराचार्यजी महाराज के पास भिजवाई थी। इसके साथ ही ग्राम के सरोवर (कुण्ड) की तीर्थ सरोवर की मान्यता पद्मपुराण का अनुशीलनोपरांत प्रसंग के आधार पर दिलवाना आपश्री द्वारा सम्पन्न अभिनव कार्य की श्रेणी में है। सरोवर का पुनरुद्धार भी आप श्री द्वारा करवाया गया।

20. महान पर्यावरणविद्— आचार्यश्री 'पर्यावरण शुद्ध रहे' इस हेतु सदा प्रयासरत रहे हैं। अपनी काव्य रचनाओं में भी नीम, तुलसी, वट, पीपल, शर्मा आदि वृक्षों का महत्त्व समझाया है। निम्बार्कसम्प्रदाय में निम्ब-नीम वृक्ष का तो वैसे अतिमहत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वामी नियमानन्दजी ने यति वेशधारी ब्रह्मा को निम्बवृक्ष पर ही अर्क (सूर्य) के सूर्यास्त के पश्चात् दर्शन करवाये थे– इसीलिए निम्ब+अर्क निम्बार्क प्रभु के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। आज जब अमेरीकादि पाश्चात्य देशों में भारत-भूमि के नीम वृक्ष एवं अन्य औषधियों के पेटेंट की स्पर्धा हो रही है, हजारों वर्ष पूर्व श्री निम्बार्क प्रभु जैसे महापुरुषों ने वृक्षों के महत्त्व का दिग्दर्शन करवाया था।

आपश्री अपने प्रवचनों में भी भक्तों से तुलसी, नीम, पीपल, वटादि लगाने का आग्रह करते रहते हैं। सम्प्रदाय से सभी संबंधित स्थानों पर परिसर एवं कुंज-वाटिकाओं में वृक्षारोपण की परम्परा है। आचार्य पीठस्थ सरोवर के निकट की वाटिका, गंगासागर में वृक्षारोपण एवं व्यवस्था हेतु परिकर नियुक्त किये हुए हैं। अभी नवम्बर मास में होने वाले "भगवन्निम्बार्काचार्य का 5100 वाँ जयन्ती महोत्सव" की (तैयारी) व्यवस्था में प्रारंभ में ही विशाल स्तर पर वृक्षारोपण प्रारंभ हो गया है। निम्बार्कतीर्थ सरोवर के चारों ओर अन्दर किशनगढ़ मार्ग पर 10 किलोमीटर तक सड़क के दोनों ओर आपश्री की प्रेरणा से वृक्षारोपण का कार्य प्रारंभ हो चुका है।

21. श्रम का सम्मान— आचार्यश्री ने सदा श्रम का सम्मान किया है। आज तक हुए सभी कार्य में व्यवस्थादि या अन्य कार्यों में लगने वाले कार्यकर्त्ताओं-भक्तों को दुपट्टा-प्रसाद-प्रमाण पत्र एवं राशि प्रदान कर सम्मानित करने एवं आशीर्वाद प्रदान करने की परम्परा सी प्रारंभ की हुई है। यहाँ तक निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों, कारीगरों को पर्याप्त रूप से पारिश्रमिक देने के बाद भी दुपट्टा-प्रसाद एवं राशि प्रदान कर सम्मानित करते हैं। यह आपश्री की उदारता एवं महनीयता ही है।

22. महिला-वर्ग को विशेष स्थान एवं प्रोत्साहन— आपश्री महिलाओं में धार्मिक संस्कार, जागृति, भक्ति भाव बढ़े, इसका भी ध्यान रखते हैं। आपश्री समानभाव से महिलाओं को दीक्षा प्रदान करते हैं। शास्त्रों में भी मातृशक्ति को प्रथम गुरु माना है। सम्प्रदाय में भी विशेष स्थान है। नित्य के संकीर्तन भजन में भी श्रीभट्ट रचित भजन **"धन-धन मात पिता सुतबंधु, धन+जननी जिन गोद खिलायो"** गाया जाता है। सनातन धर्म सम्मेलन के कार्यक्रम में भी अलग से महिला सम्मेलन रखा

गया है। अन्य कार्यक्रमों में भी परिपाटी सी है। नई पीढ़ी में भी मातृशक्ति द्वारा ही धार्मिक संस्कार जागृत किये जा सकते हैं यह सोच है। निम्बार्क सम्प्रदाय में राधाकृष्ण की निकुञ्जोपासना में रसोपासना में सहचरी भाव से राधिकाजी की उपासना का विशिष्ट महत्त्व है। 'वेदान्त दशश्लोकी में भी **''अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्''** राधा जू को **''सकलेष्टकामदाम्''** कहा गया है। महारास में भी शंकर भगवान् को सखी स्वरूप धारण करना पड़ा था। वैसे भी उपासना के क्षेत्र में पूर्णपुरुष एकमात्र श्रीकृष्ण को माना गया है, बाकी सभी सखी स्वरूपा है। निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परानुसार ही आपश्री दीक्षा हेतु अनुरूप-समान मानकर स्वयं दीक्षा प्रदान करते हैं।

23. **वज्रादपि कठोराणि—** आचार्यश्री भक्तों के प्रति अत्यन्त दयालु हैं, परन्तु सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध कोई कार्य करता है, या आचार-विचार-व्यवहार में मनसा-वाचा-कर्मणा कोई दोष उसके लिये वज्रादपि कठोर हैं, चाहे फिर बड़े से बड़ा पदासीन हो या अन्य, उसके लिये वज्रादपि कठोर हैं, फिर तो यति-पति दिनेश का तेजस्वी स्वरूप दर्शनीय ही है। किन्तु नम्रतापूर्वक दोष स्वीकार करने पर ''कोमलं कुसुमादपि'' है **''कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते''** हैं। इसीलिए जो आचार्य पीठ में किसी भी नाते जिसने निवास कर लिया, या आचार्यश्री का कृपा पात्र रहा, किसी कारण से स्थान छोड़ता या छूट जाता है तो उसे अन्यत्र आनंद नहीं आता-वापिस लौटने का मन करता है या लौट आता है– **''नान्याः गति''** वाला कुछ है। हमारे इस गाँव में तो पुरानी कहावत प्रचलित है कि **''सागरमाला (चरागाह) की चरेडी गाय अर मन्दिर की पूड्याँ खायेड़ो कठै ही कोनी रंजे-पाछो अठै ही आवै''**।

24. **चरैवेति-चरैवेति—** आचार्यश्री को प्रारंभ से ही सदा निरन्तर सक्रिय देखा गया है। प्रातः ब्राह्म मूहूर्त से देर रात्रि तक पूजा आराधना, पठन-पाठन-लेखन, भक्तों को दर्शन, वार्ता, पीठ एवं अन्य स्थानों संबंधी-व्यवस्था, रचना, कार्यक्रमों की योजना आदि में व्यस्त एवं सक्रिय आपश्री रहते हैं। निकटस्थ परिकर जन भी आश्चर्य करते हैं, आपश्री शयन-विश्राम भी करते हैं, या नहीं करते, कब करते हैं। तीन धाम, सप्तपुरी यात्रा, बद्रीनाथ, केदारनाथ, त्रियुगीनारायण यात्रा, व्रजयात्रा, चौरासी कोसी परिक्रमा, धर्म के प्रचार प्रसार हेतु भक्तों के आग्रह पर या अन्य कार्यों हेतु निरन्तर प्रवास का तो कार्यकाल में आपश्री ने कीर्तिमान स्थापित किया है। कई सार्वजनिक कार्यक्रमों में घंटों आसन पर बिना किसी हलचल के विराजमान देखकर कई बार जनसमूह को भ्रममिश्रित आश्चर्य होता है कि महाराजश्री विराज रहे हैं या कोई निश्चल श्रीविग्रह विराजमान है। आज भी इतनी अस्वस्थता की स्थिति पथरी की शल्यक्रिया, किडनी कष्ट, रक्तचाप, हर्निया का कष्ट, ज्यादा समय बैठने पर विशेष स्थान पर मस्तक पीड़ा-कष्ट की इस अवस्था में भी निरन्तर सक्रियता-काव्य-महाकाव्यों की रचना, निरन्तर लेखन, किसी विशिष्ट सिद्धावस्था या विदेहावस्था में ही संभव है।

आप इतनी अस्वस्थता में भक्तों के आग्रह पर प्रवास में कोई कमी नहीं देखी गई है। इस अवस्था में भी चलने की किशोर-युवकोचित गति देखकर आश्चर्य होता है। ऐसा लगता है प्राचीन वैदिक-ऋषियों की वाणी ''चरैवेति-चरैवेति'' को आपश्री ने जीवन में आत्मसात् किया हुआ है।

25. **निरहंकारी-स्थितप्रज्ञ—** ग्रामवासी, विशेष रूप से इसी भूमि पर जन्में हम लोग आचार्य पीठ हेतु सेवक एवं पीठासीन आचार्यों के 'घर जाये चेले' संकीर्तन में होने वाले भजन ''चेलो कर राखो घर जायो'' के अनुसार हैं। परम्परा एवं स्वाभाविक रूप से यहीं दीक्षित पीठ की लगभग सभी गतिविधियों के साथी हैं।

आचार्य पीठ पुरातनतम निम्बार्कसम्प्रदाय का सर्वोच्च केन्द्र स्थल है। जो मनसा-वाचा-कर्मणा-समर्पित है, वे निरंतर संत या गृहस्थ भक्त सेवारत हैं। कई परिकर एवं पदासीन को **''स्थानं प्रधानं न बल प्रधानं''** उक्ति के अनुसार लोग माने या न मानें। अपने को उच्च मानकर अहंकार रत देखा है– जाने-अनजाने लोगों को आलोचनात्मक टिप्पणी करते देखा व सुना है। किन्तु यहाँ आचार्य पीठ एवं विशेष रूप से भी आचार्यश्री के प्रति सभी जन-जन की अनन्य श्रद्धा है।

हमने आपश्री को सभी उतार-चढ़ावों में निर्लिप्त स्थित प्रज्ञावस्था में देखा है। आपश्री के कार्यकाल में विशेष रूप से सर्वतंत्र स्वतंत्र निर्णय जब से आपश्री लेने लगे हैं। सम्प्रदाय एवं आचार्य पीठ के वैभव में, प्रसिद्धि में निरन्तर वृद्धि हुई। जो वस्तु पूर्व में अन्यों के प्रयास से प्राप्त होना दुष्कर था, आज आपश्री के प्रभा-मंडल के प्रभाव से स्वतः श्रीचरणों में समर्पित हो रही है। वैभव सर्वोच्च शिखर पर है। ''नवनिधियाँ'' जैसे श्रीचरणों की सेविका हैं।

आपश्री द्वारा महान् अभिनव कार्य सम्पन्न हुए हैं, फिर भी आपश्री चर्चा में यही कहते हैं कि **''सब सर्वेश्वर प्रभु की कृपा से हो रहा है, हम तो निमित्त मात्र हैं– स्वयं हम को भी पता नहीं कि यह सब कैसे संभव हो रहा है।''** ''मनसा-वाचा-कर्मणा'' लेश मात्र भी अहंकार नहीं है। निरहंकारी महापुरुष हैं। सभी भक्तों को ऐसा लगता है कि आचार्यश्री की सबसे अधिक कृपा मुझी पर है, मैं ही सबसे अधिक कृपापात्र हूँ। वास्तव में वर्तमान में आपश्री **''स्वभावतोऽपास्त समस्त-दोषमशेष-कल्याणगुणैकराशिम्''** स्वरूप हैं। भक्तों के लिये साक्षात् **''उपासनीयं नितरां जनैः सदा''** हैं।

आचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का 5100 जयन्ती महोत्सव हो रहा है। इस अवसर पर अ.भा.श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषितजगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज 'श्री श्रीजी'' के करकमलों में अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जा रहा है। ग्रन्थ के निमित्त पीठस्थ शिक्षा समिति के शिक्षामंत्री श्री दयाशंकरजी शास्त्री एवं सचिव प्राचार्य श्री वासुदेवशरणजी उपाध्याय ने मुझ जैसे अयोग्य को किन्तु अपनत्व भाव से श्रीचरण का अकिंचन सेवक होने से कुछ लिखने को प्रेरित किया है, उसके लिये मेरा अत्यन्त आभारी होना स्वाभाविक है।

आचार्यश्री के कृपा प्रसाद स्वरूप यह अकिंचन विद्यार्थीजीवन से, फिर शिक्षक के नाते, विद्यार्थी-संगठनों व शिक्षाक्षेत्र के संगठनों से संबंधित सक्रिय रहा है। लम्बे काल खण्ड तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के नाते कार्य एवं राजनैतिक क्षेत्र में प्रदेशस्तर एवं कार्य करते समय जीवन और समाज का कोई क्षेत्र-किसान, मजदूर, सांस्कृतिक संगठनों, विविध क्षेत्र अकाल, बाढ़, अन्य आन्दोलनों, सभी राजनैतिक पार्टियों, सभी नये पुराने सम्प्रदायों में कार्य, सम्पर्क, संबन्ध बनाने का अवसर मिला है। सभी

क्षेत्रों के साधारण कार्यकर्त्ताओं से लेकर अखिल भारतीय स्तर के नेताओं, विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्रियों तक सम्पर्क का अवसर मिला है। हृषीकेश, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि कई प्रान्तों में घूमने जाने प्रसिद्ध मठमन्दिरों सन्त, महन्त, जगद्गुरु, सिद्ध पुरुषों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सभी में कुछ न कुछ विशिष्टता गुण, तेजस्विता का किसी न किसी मात्रा में अनुभव किया है। समाज एवं आबाल वृद्ध व्यक्तियों के बीच कार्य करने के कारण व्यक्ति-व्याक्तित्व की पहिचान करने का अल्पांश में ही सही, पर कुछ योग्यता एवं अनुभव तो प्राप्त हुआ ही है।

इसी सब परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री के संबन्ध में कुछ लिखते समय ऐसा लगा कि ऐसे महापुरुषों, अवतारी स्वरूपों के संबन्ध में जितना लिखा जाये, अधूरा ही रहेगा। जीवन के एक-एक पक्ष, एक-एक शब्द, सूत्रवाक्य पर पूरी ग्रन्थावलियाँ लिखी जा सकती है– लिखी जाती रह सकती हैं।

मैंने जो कुछ वर्तमान पीठाधीश्वर आचार्यश्री के संबन्ध में अल्पांश में जो कुछ भी लिखा है, उसमें अतिशयोक्ति लेशमात्र भी नहीं है, न श्रद्धा का अतिरेक है– जो कुछ देखा, सुना, पढ़ा, समझा एवं अनुभव किया, उतना ही लिखा है। इसमें यदि कुछ शब्द, मात्रा, क्रम, भावों में किसी प्रकार की त्रुटि या स्खलन हुआ हो तो भक्त पाठक वृंद से मैं पूर्व में ही क्षमा-याची हूँ।

महाराजश्री के संबन्ध में अत्यल्प शब्दों में इतना ही और लिखना शेष है कि आपश्री सनकादिक-नारदादि निम्बार्क प्रभु जैसे सभी पूर्वाचार्यों के सच्चे-सफल-उत्तराधिकारी स्वरूप हैं। आपश्री ने श्रीमन्निखिलमहीमण्डल के देशिक सर्वतन्त्र स्वतन्त्र-चक्रचूड़ामणि, यतिपतिदिनेश, अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु, निम्बाकाचार्य जैसी अनन्त उपाधियों को सार्थक किया है।

आचार्यश्री के श्रीचरणों में— **''अपारसंसार समुद्रमध्ये, गुरुकृपातो शरणं किमस्ति'' ''पदरज दो अंजन दृग आँजू अन्तरतिमिर हरो हे– अमृत बरसादो पल-पल क्षण-क्षण मन के कष्ट हरो हे''** के साथ ही स्वरचित पंक्तियों–

''श्रीजी सभी को रसधार दो, श्रृंगार दे दो,
पुष्प के गलहार दो, स्वर्ण के भण्डार दे दो।
राज दे दो, साज दे दो, सभी को सिर, सब ताज दे दो
पर मुझे श्री-चरणरज का एक बूंद मात्र ही प्यार दे दो''

की भावना के साथ समर्पित है।

निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद
किशनगढ़ (राजस्थान)

महाराजश्री का बहु आयामी व्यक्तित्व

— आचार्य हरिशरण देव
व्या.वेदान्ताचार्य

1. विश्व के सफल धर्माचार्य के रूप में महाराजश्री—

मनगढ़न्त कल्पनाओं के आधार पर धर्म की परिभाषा नहीं की जा सकती। धर्म के रहस्यों को समझने के लिए वेद, वेदानुकूल शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन आवश्यक है। मानवजाति के मुख्य पुरुषों में गिने जाने वाले भृगु, अत्रि, मरीचि, अंगिरा आदि महापुरुषों ने मानव जाति के मूल पुरुष स्वयंभू मनु के पास जाकर धर्मविषयक जिज्ञासा प्रस्तुत की तो मनु ने उन की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा था—

''विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत॥''

मनुस्मृति।(2-1)

'रागद्वेष आदि विकारों से शून्य, सत्यवादी, सज्जन और सहृदय विद्वानों द्वारा नित्य अनुष्ठित तथा उनके निर्मल हृदय से निर्विकल्परूप में अङ्गीकृत जो धर्म हैं, उसे आप लोग सुनें और समझें। मनु का यह कहना कि मननशील मुनियों द्वारा हृदयतः स्वीकृत और अनुष्ठित धर्म ही धर्मपदवाच्य हो सकता है।' यह विचार बहुत महत्त्वपूर्ण है। मानव-मात्र का जब जन्म होता है, तो वह मुनिस्वरूप ही होता है। बाद के आगन्तुक विचार ही मनुष्य को बनाते हैं और बिगाड़ भी देते हैं। मनुष्य की आचार संहिता न बिगड़ पाए, एतदर्थ धर्माचार्यों का उदय हुआ है। मनुप्रोक्त धर्मपरम्परा की सुदृढ़ शृंखला से आबद्ध महापुरुष ही धर्माचार्य हो सकता है। धर्म के साथ आचार्यपद का योग भी अपने साथ में महत्त्वपूर्ण है।

आचिनोतीति शास्त्राणि ह्याचारे स्थापयत्यपि।
स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य उदाहृतः॥

अथ से लेकर इति पर्यन्त के शास्त्रों का सम्यक् अध्ययन करके तदनुसार जो स्वयं आचरण करता है और पथभ्रष्टोन्मुख मानव मात्र को सदाचारानुगामी बनाता है, वह महापुरुष **'आचार्य'** कहलाता है। धर्म और आचार्य पद के योग से धर्माचार्य होता है। इसका सीधा मतलब हुआ कि मनु प्रोक्त धर्मों का आचरण करने वाला महापुरुष धर्माचार्य है। क्या वर्तमान समय में ऐसा कोई धर्माचार्य है?

मेरे दीर्घकाल का अनुभव है कि वर्तमान में महाराजश्री जैसे धर्माचार्य और कोई नहीं हैं। जिन धर्माचार्यों को अधिकृत रूप में जगद्गुरु की पदवी उपलब्ध है, उनमें आप ही ऐसे हैं जिनमें सदा सदाचार की एकरसता है। किसी से राग-द्वेष नहीं, किसी में स्वपर भेद नहीं, किसी राजनीति से लगाव नहीं। न

क्षेत्रों के साधारण कार्यकर्त्ताओं से लेकर अखिल भारतीय स्तर के नेताओं, विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्रियों तक सम्पर्क का अवसर मिला है। हृषीकेश, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि कई प्रान्तों में घूमने जाने प्रसिद्ध मठमन्दिरों सन्त, महन्त, जगद्गुरु, सिद्ध पुरुषों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सभी में कुछ न कुछ विशिष्टता गुण, तेजस्विता का किसी न किसी मात्रा में अनुभव किया है। समाज एवं आबाल वृद्ध व्यक्तियों के बीच कार्य करने के कारण व्यक्ति-व्याक्तित्व की पहिचान करने का अल्पांश में ही सही, पर कुछ योग्यता एवं अनुभव तो प्राप्त हुआ ही है।

इसी सब परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री के संबन्ध में कुछ लिखते समय ऐसा लगा कि ऐसे महापुरुषों, अवतारी स्वरूपों के संबन्ध में जितना लिखा जाये, अधूरा ही रहेगा। जीवन के एक-एक पक्ष, एक-एक शब्द, सूत्रवाक्य पर पूरी ग्रन्थावलियाँ लिखी जा सकती है– लिखी जाती रह सकती हैं।

मैंने जो कुछ वर्तमान पीठाधीश्वर आचार्यश्री के संबन्ध में अल्पांश में जो कुछ भी लिखा है, उसमें अतिशयोक्ति लेशमात्र भी नहीं है, न श्रद्धा का अतिरेक है– जो कुछ देखा, सुना, पढ़ा, समझा एवं अनुभव किया, उतना ही लिखा है। इसमें यदि कुछ शब्द, मात्रा, क्रम, भावों में किसी प्रकार की त्रुटि या स्खलन हुआ हो तो भक्त पाठक वृंद से मैं पूर्व में ही क्षमा-याची हूँ।

महाराजश्री के संबन्ध में अत्यल्प शब्दों में इतना ही और लिखना शेष है कि आपश्री सनकादिक-नारदादि निम्बार्क प्रभु जैसे सभी पूर्वाचार्यों के सच्चे-सफल-उत्तराधिकारी स्वरूप हैं। आपश्री ने श्रीमन्निखिलमहीमण्डल के देशिक सर्वतन्त्र स्वतन्त्र-चक्रचूड़ामणि, यतिपतिदिनेश, अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु, निम्बाकाचार्य जैसी अनन्त उपाधियों को सार्थक किया है।

आचार्यश्री के श्रीचरणों में— **''अपारसंसार समुद्रमध्ये, गुरुकृपातो शरणं किमस्ति'' ''पदरज दो अंजन दृग आँजू अन्तरतिमिर हरो हे– अमृत बरसादो पल-पल क्षण-क्षण मन के कष्ट हरो हे''** के साथ ही स्वरचित पंक्तियों–

> **''श्रीजी सभी को रसधार दो, श्रृंगार दे दो,**
> **पुष्प के गलहार दो, स्वर्ण के भण्डार दे दो।**
> **राज दे दो, साज दे दो, सभी को सिर, सब ताज दे दो**
> **पर मुझे श्री-चरणरज का एक बूंद मात्र ही प्यार दे दो''**

की भावना के साथ समर्पित है।

निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद
किशनगढ़ (राजस्थान)

महाराजश्री का बहु आयामी व्यक्तित्व

— आचार्य हरिशरण देव
व्या.वेदान्ताचार्य

1. विश्व के सफल धर्माचार्य के रूप में महाराजश्री—

मनगढ़न्त कल्पनाओं के आधार पर धर्म की परिभाषा नहीं की जा सकती। धर्म के रहस्यों को समझने के लिए वेद, वेदानुकूल शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन आवश्यक है। मानवजाति के मुख्य पुरुषों में गिने जाने वाले भृगु, अत्रि, मरीचि, अंगिरा आदि महापुरुषों ने मानव जाति के मूल पुरुष स्वयंभू मनु के पास जाकर धर्मविषयक जिज्ञासा प्रस्तुत की तो मनु ने उन की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा था—

"विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत॥"

मनुस्मृति।(2-1)

'रागद्वेष आदि विकारों से शून्य, सत्यवादी, सज्जन और सहृदय विद्वानों द्वारा नित्य अनुष्ठित तथा उनके निर्मल हृदय से निर्विकल्परूप में अङ्गीकृत जो धर्म हैं, उसे आप लोग सुनें और समझें। मनु का यह कहना कि मननशील मुनियों द्वारा हृदयतः स्वीकृत और अनुष्ठित धर्म ही धर्मपदवाच्य हो सकता है।' यह विचार बहुत महत्त्वपूर्ण है। मानव-मात्र का जब जन्म होता है, तो वह मुनिस्वरूप ही होता है। बाद के आगन्तुक विचार ही मनुष्य को बनाते हैं और बिगाड़ भी देते हैं। मनुष्य की आचार संहिता न बिगड़ पाए, एतदर्थ धर्माचार्यों का उदय हुआ है। मनुप्रोक्त धर्मपरम्परा की सुदृढ़ शृंखला से आबद्ध महापुरुष ही धर्माचार्य हो सकता है। धर्म के साथ आचार्यपद का योग भी अपने साथ में महत्त्वपूर्ण है।

आचिनोतीति शास्त्राणि ह्याचारे स्थापयत्यपि।
स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य उदाहृतः॥

अथ से लेकर इति पर्यन्त के शास्त्रों का सम्यक् अध्ययन करके तदनुसार जो स्वयं आचरण करता है और पथभ्रष्टोन्मुख मानव मात्र को सदाचारानुगामी बनाता है, वह महापुरुष **'आचार्य'** कहलाता है। धर्म और आचार्य पद के योग से धर्माचार्य होता है। इसका सीधा मतलब हुआ कि मनु प्रोक्त धर्मों का आचरण करने वाला महापुरुष धर्माचार्य है। क्या वर्तमान समय में ऐसा कोई धर्माचार्य है?

मेरे दीर्घकाल का अनुभव है कि वर्तमान में महाराजश्री जैसे धर्माचार्य और कोई नहीं हैं। जिन धर्माचार्यों को अधिकृत रूप में जगद्गुरु की पदवी उपलब्ध है, उनमें आप ही ऐसे हैं जिनमें सदा सदाचार की एकरसता है। किसी से राग-द्वेष नहीं, किसी में स्वपर भेद नहीं, किसी राजनीति से लगाव नहीं। न

कोई मनगढन्त कल्पना है, न दम्भ है, न दर्प है, न आग्रह है, न सुनिश्चित सिद्धान्तों में संशोधन है। धर्म, धर्म है, न्याय, न्याय है, उसकी उल्टी-सीधी व्याख्या करना आपकी दृष्टि में अन्याय है। धर्म और न्याय से जो बात समाज में रखी जाती है, उसका सम्मान होता है। हमने देखा भारत में कई ऐसे आन्दोलन हुए, चाहे वह गोरक्षा आन्दोलन हो, चाहे वह राम-जन्म भूमि का हो, चाहे वह विश्वनाथ मन्दिर का हो, चाहे वह कृष्ण जन्मभूमि का हो, उन पर आपश्री ने किसी आग्रह वश नहीं, न्याय से और धर्म से जो मन्तव्य प्रकट किये हैं, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उन मन्तव्यों पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए थी। इस सम्बन्ध में मैं पाठकों का ध्यानाकर्षण करना चाहता हूँ कि महाराजश्री का न्याय, कितना आदर्शपूर्ण है। एक ओर न्यायतः धर्मतः राम मन्दिर निर्माण की सम्मति देते हैं, दूसरी ओर स्वयं के व्यय से जीर्णशीर्ण इस्लाम मस्जिद का जीर्णोद्धार कराते हैं। यह है जगद्गुरुता का ज्वलन्त उदाहरण। न्याय धर्म का निष्पक्ष क्रियान्वयन बिना आडम्बर के समन्वय का मार्ग ढूंढना चाहिए। यह है आचार्यश्री का सिद्धान्त।

2. धर्माचार्यत्व के निर्वाहक आचार्यश्री—

कोई जमाना था, धर्माचार्यों के निर्देशन में राज्यशासन चलता था। वशिष्ठ की राय से श्रीराम राज्य शासन करते थे। सनत्कुमारों के नीतिनिर्देशन से आदिराजा पृथु शासन करते थे। किन्तु आज राजनीति को धर्म से अलग करने का दुष्प्रयास हो रहा है। धर्मशून्य राजनीति से क्या जनता सुखी हो सकती है? कथमपि नहीं। सरकार तो अधर्म राष्ट्र की स्थापना करना चाहती है। अब धर्माचार्यों का दायित्व रह जाता है कि जनता गुमराह न हो। मानव जीवन में धर्म का क्या महत्त्व है, जनता को समझाना है। इसके लिए धर्मसम्मेलनों, धार्मिक यात्राओं के माध्यम आवश्यक हैं।

यही कारण है कि आचार्यश्री ने अखिल भारतीय स्तर के तीन विराट् सनातन धर्म सम्मेलनों का ऐसा अभूतपूर्व आयोजन किया है, जो स्वर्णाक्षरों से लिखे जाने योग्य है। ये आयोजन अपनी पूजा के लिए नहीं, अपनी प्रतिष्ठा के लिए नहीं, अपितु पथविभ्रान्त लोगों को सत्पथगामी बनाने के लिए किया गया है। यात्राओं के माध्यम से, कुम्भ पर्वों के माध्यम से, जो जागरण किया, वह जग जाहिर है। यही तो धर्माचार्यत्व निर्वहन है।

3. सत्सहित्य सर्जन की विधा में आचार्यश्री—

"साहित्य ही समाज का दर्पण" है। धर्मशास्त्र ही कर्तव्याकर्तव्य का निर्णायक है। मानवजीवन की इति-कर्तव्यता का बोध, सत्साहित्य से होता है। इन बातों को हृदयङ्गम करते हुए महाराजश्री ने जो साहित्य- सर्जन किया है, यह लोकोत्तर कार्य है। संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में जो काव्य रचना हुई है, अनुसन्धाताओं के लिए एक पुष्ट सामग्री तैयार हुई है। "भारत-भारती-वैभवम्" 'गोमहिमा', 'राधामाधव रस विलास' जैसे महाकाव्यों ने साहित्यजगत् में एक महत्त्वपूर्ण स्थान पाया है'। संस्कृत की ओर देखें तो कोई ऐसा विषय या देवता नहीं जिन पर महाराजश्री ने कलम न चलाई हो। धर्मप्रचार की व्यस्तता होते हुए, इतना बड़ा साहित्य भण्डार सर्जन करना मामूली बात नहीं है। इन दृष्टियों से विचार करने पर साहित्य-सर्जन की विधा में महाराजश्री सर्वाग्रणी हैं।

4. सर्वतोमुखी प्रतिमा के मूर्तिमान् के रूप में आचार्यश्री—

(क) यह कहना अत्युक्ति न होगी कि शास्त्रीय संगीत के भी आप आचार्य हैं। जीवन, अपने आप में एक संगीतमय है। संगीत के प्रथम जगद्गुरु भगवान् श्री कृष्ण हैं। ''वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम्'' भगवान् श्रीकृष्ण की वंशी ने पत्थरों को द्रव बनाया, जल को पत्थर सा बनाया, वृक्षों को रोमाञ्चित किया। उनके ही अनन्य उपासक आचार्यश्री पर श्रीकृष्ण का प्रभाव न पड़े, यह कैसे हो सकता है? यही कारण है कि प्रत्येक विराट् धर्म सम्मेलनों में संगीत को ही प्राथमिकता देते आ रहे हैं । महाराजश्री चाहते हैं कि संगीत का वह युग पुनः आवे। कहा जाता है कि विक्रम संवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य ने बिना अग्निशलाका के दीपकरण से ही दीपक जलाया था। कहने का तात्पर्य है कि महाराजश्री स्वयं संगीतज्ञ हैं, उसमें उनकी निजी प्रतिभा है।

(ख) आयुर्वेद-शास्त्र में आप का जितना प्रवेश है, शायद उतना सामान्य चिकित्सकों का भी न होगा। स्वयं ही औषधियों का निर्माण करते हैं। इतना अनुभव है कि प्रत्येक पदार्थ के परीक्षण द्वारा सिद्ध कर दिया है कि जीवन पर उनका क्या प्रभाव पड़ेगा। एक साधारण सा उदाहरण देता हूँ कि मैं गलावरोध तथा नजला पीडित था, औषधालयों की व्योषादिवटी का सेवन करता रहा, लाभ नहीं हुआ। इस बात को मैंने महाराजश्री के समक्ष रखी तो उन्होंने मुझे चार गोलियाँ दी जो उनके द्वारा निर्मित थी। मुझे लाभ हुआ। कहने का सार है कि हर विषय पर आपका पूर्ण अधिकार है।

(ग) प्रामाण्य संग्रह के ज्वलन्त उदाहरण महाराजश्री— ''कः काले फलदायकः'' कौन सी चीज कब काम आएगी, इस पर किसी का ध्यान नहीं होता। हमने पाया कि महाराजश्री एक महावैज्ञानिक हैं, पदार्थसंग्रह, प्रामाण्य संग्रह को देखकर हम हैरान हो गये। 14 वर्ष की अवस्था में गद्दीनसीन होने के बाद, पत्र, पत्रिकाएँ, चिट्ठी पत्री, पत्राचार का सम्पूर्ण व्यौरा, अनेक पदार्थों का आवश्यक संग्रह, जो आज अत्यावश्यक के रूप में सबको मानना पड़ रहा है। यदि वह संग्रह नहीं होता तो वह सामग्री कहाँ मिलती!

5. खोज पूर्ण निर्माण, जीर्णोद्धारों में अग्रणी आचार्यश्री—

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का इतिहास अति प्राचीन है। पांच हजार वर्षों से इतिहास में श्रीनिम्बार्काचार्य की भविष्य पुराण पर आधारित कथा मात्र कही जाती थी। परन्तु आचार्यश्री ने बताया कि मैं विगत तीस वर्षों से निम्बार्काचार्यजी की अवतार भूमि का पता लगाने के लिए प्रयासरत था। फलतः ''मूंगी पैठन'' (वैदूर्यपत्तन) का पता लगा, जो गोदावरी के तटवर्ती देश है। वहाँ के लोगों का कहना है कि बहुत पुराने समय से ही यहां नीम की पत्तियाँ, डालियाँ नहीं तोडी जाती रही हैं। निम्बवृक्ष को एक ऐतिहासिक वृक्ष के रूप में माना जाता है। वहाँ निम्बार्क जन्मभूमि की पहिचान के लिए श्रीनिम्बार्काचार्यमन्दिर के नाम से भव्य मन्दिर बनाया। यह कार्य साधारण नहीं था। इसी प्रकार निम्बार्कतपःस्थली के रूप में ''नीमगाँव'' गोवर्धन, मथुरा में विशाल और भव्य मन्दिर महाराजश्री ने बनाया। अब निम्बार्काचार्य का इतिहास मूर्तरूप में खड़ा है। स्वयं मुखरित हो रहा है। यह श्रेय महाराजश्री को ही प्राप्त है।

6. सत् शिक्षा प्रचार के अभियान में आचार्यश्री—

''भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'' भारत की प्रतिष्ठा, संस्कृत भाषा और संस्कृत-संस्कृति पर निहित है। यों कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी कि भारत को अनुप्राणित (जीवित रखने के लिए) संस्कृत भाषा और संस्कृति प्राण का काम करते हैं। इन बातों को हृदयंगम करके संस्कृत शिक्षण संस्थाएँ खोली।

(क) श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, सलेमाबाद (निम्बार्कतीर्थ)

(ख) वेद-विद्यालय, निम्बार्कतीर्थ

(ग) निम्बार्कदर्शनविद्यालय, नीमगाँव, मथुरा

इन संस्थाओं से योग्यतम स्नातक निकले हैं। बिना सरकारी अनुदान के ये संस्थाएं सुचारु रूप से चल रही हैं।

निष्कर्ष में आचार्यश्री भारत के ही नहीं, विश्व के एक निर्विकल्प आचार्य हैं। आपने सचमुच आचार्यत्व का पूर्ण निर्वाह किया है।

संरक्षक
निम्बार्कदर्शनकेन्द्र , प्रतीक वृन्दावन गैंडाकोट–1
नवलपरासी, (नेपाल)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

परात्पर सर्वान्तरात्मा व्रजवृन्दावनविहारी श्रीश्यामाश्याम के रूप में व्रज की मञ्जु निकुञ्जों में व्रजगोप एवं व्रजललनाओं के साथ ललित केलि विलास कर व्रज रस रसिकों को दिव्य रसामृत सिन्धु में अवगाहन करा अपरिमातानन्द का पान कराते हैं।

श्रीश्यामाश्याम व्रज के सर्वस्व और सर्वाधार हैं, जिन युगल प्रियालाल की दिव्यांतिदिव्य अनुपम मुखचन्द्रमाधुरी का प्रतिपल पान कर व्रज के ये यावन्निखिल व्रजवासी-जन अपने जीवन की सार्थकता और परम कृतार्थता का अनुभव करते हैं।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के उन्नायक. आचार्यश्री

— मुकुन्द शरण उपाध्याय
प्रधानाध्यापक

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा संस्थापित स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्तमतानुसारी श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय चतुःवैष्णव सम्प्रदायों में प्राचीनतम है। इस सम्प्रदाय द्वारा प्रतिपादित वैदिक सम्मत सनातन सिद्धान्त, भक्ति-रसोपासनापद्धति समस्तजन के लिए हितकारक है। कहा जाता है, लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी लीला पूर्ण करके इस धराधाम को तजकर जब से गोलोक धाम पधारे, तब से ही इस संसार में कलि-काल ने प्रवेश किया। जिन दुराचारियों का शमन कर भगवान् ने इस भूतल में परम-धर्म की स्थापना की, जिससे समस्त लोक में परम शान्ति का वातावरण स्थापित हुआ। वही शान्ति प्रभु के धामगमन पश्चात् ही विचलित होने लग गई। भुवन प्रकाशक भगवान् भास्कर के तिरोहित होने से लोक में जिस प्रकार निशाचर प्रसन्न हो विचरण करते हैं, इसी प्रकार तत्कालीन जनसमुदायों में समुत्पन्न अव्यवस्था ने कलि-मण्डन में विशेष सहयोग प्रदान किया। श्रीमद्भगवद्-गीतोपदेशक नन्द-नन्दन श्रीकृष्णचन्द्र के न होने से सनातन धर्मानुयायी सज्जनों को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इन बढ़ते पापाचरणों से दुःखी भगवद्भक्तों की प्रार्थना पर भगवदाज्ञा से ही प्रिय आयुध चक्र-राज श्री सुदर्शन ने अपने जन्म द्वारा इस लोक को कृतार्थ किया। जगत् में 'श्रीनिम्बार्क' अभिधान से सुविख्यात हुये। देवर्षि श्री नारद से समस्त शास्त्रों का गहन अध्ययन कर परमभगवद् वैष्णवदीक्षा प्राप्त की। साथ ही श्री सनकादिसंसेव्य शालग्राम विग्रह श्रीसर्वेश्वर प्रभु की निरन्तर सेवा प्राप्त की। वेद-विहित स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के संस्थापनार्थ ब्रह्मसूत्रों पर श्रीवेदान्तपारिजात सौरभाख्य वृत्तिरूप व्याख्याग्रन्थ का निरूपण कर श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ने प्रचलित सनातन श्रीसनकादिक सम्प्रदाय को नवीनाभिधान **श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय** स्वरूप से लोक में प्रतिष्ठापित किया। यह सनातन प्रमुख वैष्णव सम्प्रदाय तब से इस लोक में भगवद्भक्तिरसधारा को अजस्र प्रवाहित कर रहा है।

यद्यपि आद्याचार्य प्रवर भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य ने दक्षिण भारत में अवतार ग्रहण किया था, तथापि आपने तपः साधना उत्तर भारत में की। सम्प्रति गोवर्धन के समीप नीमगांव (निम्बग्राम) ही आद्याचार्य का आश्रम रहा। आज यहां विशाल दर्शनीय मन्दिर निर्मित है। दक्षिणभारत में भी (मूंगी पैठण) भव्य दर्शनीय विशाल मन्दिर का निर्माण किया गया है। श्री भगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा तत्कालीन विषम परिस्थितियों में इस वसुधा में यत्र तत्र भ्रमण कर भ्रमनिवारण के साथ सत्य धर्म को स्थापित किया गया था। प्रचलित विविध-विध आडम्बरों को प्रशमित भी किया था। आद्याचार्यवर्य के तपः साधना का सुपरिणाम ही है

कि यह श्री निम्बार्कसम्प्रदाय निरवच्छिन्न रूप से लोकोपकाररत है। एक से बढ़कर एक आचार्यों ने अपनी प्रतिभा और अतुलनीय वैदुष्य से सम्प्रदाय को संवार कर वैष्णव जगत् में सर्वोत्कृष्ट स्थानारूढ़ किया।

आचार्य-परम्परा में ऐसे अनेक आचार्य हुए हैं, जिनकी विशेषता का गुणगान करना भगवान् भास्कर को दीपक दिखाने के समान ही है। यों तो हमारे सभी आचार्य-प्रवरों ने अपनी साधना स्थली व्रज-वसुधा को बनाया। व्रज में भी प्रमुखता से **'श्री वृन्दावन'** को ही चुना। यहाँ तक कि– ''विपिन राज सीमा के बाहर हरि हुं को न निहार'' हमारे आचार्य श्री वृन्दावन धामसीमा के बाहर श्रीहरि का भी दर्शन नहीं करने की प्रतिज्ञा करते देखे गये हैं।

स्वयं का नहीं, अखिललोक का कल्याण करना आचार्यों का परम उद्देश्य होता है। इस कारण भक्तजनों की प्रार्थना पर श्री हरिव्यासदेवाचार्य महाराज ने अपने परम शिष्य श्री परशुरामदेवाचार्य को लोक-हितार्थ राजस्थान के पुष्कराख्य क्षेत्र में भेजा। आचार्यवर्य श्री स्वामीजी ने गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर सर्वजन सुखाय श्री वृन्दावन धाम-निवास तक को तज दिया। यह प्रमाण है हमारे भारतीय संस्कृति एवं विशुद्ध वैदिक परम्परा का, कि जहाँ आचार्य आज्ञा सर्वोपरि है, जिसके पालनार्थ प्रत्येक भारतीय तन, मन, धन सर्वस्व समर्पण करता है।

सम्प्रति निम्बार्क तीर्थ में विद्यमान अ.भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ इन्हीं पूज्य आचार्यचरण श्री स्वामीजी परशुरामदेवाचार्य महाराज की तपः साधना का ही प्रत्यक्ष मूर्त रूप है। प्रत्यक्षतः अद्यापि पीठ में विद्यमान **तपः साधना स्थली** इसका अकाट्य प्रमाण है। आज यहाँ पूर्वाचार्य श्रीसनकादिक संसेव्य भगवान् श्री सर्वेश्वर सूक्ष्म शालग्राम विग्रह एवं रससिद्ध कवि जयदेव समाराध्य श्री राधामाधव भगवान् के अमूल्य दर्शन, जो हमें प्राप्त हो रहे हैं, यह सब आप जैसे पूर्वाचार्यवर्य्यों की असीमित तपः साधना का सुपरिणाम है। जिन्हें दर्शन लाभ हो रहे हैं, वे भी अहो धन्यभाग्य हैं व जन्म-जन्मान्तर संचित पुण्यकर्मी हैं।

राजस्थान की धरा वीरप्रसू है। इस वसुन्धरा में दानवीर, कर्मवीर, ज्ञानवीर, बलवीर, ऐसे अनेक वीरों ने जन्म लिया। ज्ञानवीर की श्रेणी में भगवद्भक्ति को समाहित किया जा सकता है। तदनुसार राजस्थान में अनेक भक्त वीरों ने भी अपने जन्म से इस भूमि को महिमा-मण्डित किया है। जिनके जन्म से यह वसुधा धन्य-धन्य हो गई। भक्तिमती मीरा तो मानों भक्ति की पराकाष्ठा ही थीं। प्रसिद्ध है कि श्री परशुरामदेवाचार्य स्वामीजी महाराज द्वारा ही मीरां ने वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की थी। उनकी माधुर्य रसोपासना इसका स्वतः प्रमाण है।

पुराणप्रसिद्ध यह निम्बार्कतीर्थ युगों से श्री निम्बार्काचार्य पीठ को अपने में प्रतिष्ठित करने की प्रतीक्षा कर रहा था। यह सुयोग ही माना जायेगा, जिसकी पूर्ति श्री स्वामीजी श्री परशुरामदेवाचार्यजी द्वारा हुई। इत्थं प्रकारेण पौराणिक यह तीर्थ क्षेत्र श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रधान पीठ बन गया।

'तीर्थगुरु' श्री पुष्कर समीपस्थ श्री निम्बार्कतीर्थ में विद्यमान सुविशाल अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ के समक्ष स्थित गौड़ विप्रवंश के सरल, परम विनीत वैष्णव सद्गृहस्थ के एक घर में विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, शुक्रवार, तदनुसार 10 मई 1929 ई. में वर्तमान श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य महाराज का

जन्म हुआ। यह परिवार पूर्व से ही निम्बार्कानुयायी एवं पीठ के सेवाकार्यों में निरन्तर संलग्न परिवारों में से एक था। आपके जन्मोपरान्त बाल्यावस्था से ही पीठ के प्रति आपश्री की निष्ठा ने उसे और प्रगाढ़ कर दिया। एक दिन वह सुयोग्य बना, जब पूज्य आचार्यचरण श्री बालकृष्णशरण देवाचार्य द्वारा आपको विधिवत् विरक्त वैष्णवदीक्षा प्रदान कर लघु अवस्था में ही इस पीठ के उत्तराधिकारी के रूप में युवराज घोषित किया गया। परिवार की तपः साधना ही साकार आपके रूप में पीठ प्रतिष्ठित हो गई। यह उनके असीम पुण्य का सुपरिणाम ही था।

कहते हैं समय ही धीर-वीर पुरुषों को अपने दारुण-निकष पर कसकर उन्हें विपुल स्वर्णिम यशः कान्ति प्रदान करता है। आपको युवराज बने अभी कुछ समय हुआ था कि समय ने अपना दारुण खेल दिखा दिया। आचार्यवर्य श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य महाराज का गोलोकधाम गमन हो गया। विक्रम संवत 2000 ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया, तदनुसार 5 जून 1943 ई. में 14 वर्ष की आयु की अवस्था में ही अपने गुरुवर की अनुपस्थिति के कारण अकस्मात् आगत सम्प्रदाय के गुरुतर उत्तरदायित्व का संवहन करते हुए आप जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पदाभिषिक्त हुए। जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पद में रहते हुए ही आपश्री ने सम्प्रदाय के प्रख्यात एवं निष्णात शास्त्रमर्मज्ञ महात्मा गुरुजनों की सन्निधि में श्री वृन्दावनधाम में निवास करते हुए अतीव परिश्रम व तपः साधना सहित विविध-शास्त्रों का पठन पूर्ण किया। समय की विशेष परिस्थितियों से लोहा लेते हुए एक ऐसे साधक-मनीषी के रूप में स्वयं को ढाल दिया कि यह पंक्ति सार्थक हो गई, **''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः''**।

वस्तुतः मेरी इस निर्जीव लेखनी में वह सामर्थ्य नहीं है, किंवा वर्णनातीत हैं, पूज्य आचार्य चरणों की समस्त धार्मिक, साहित्यिक, लोकोपकारक कृतियाँ, एतदर्थ उन्हें अक्षरशः पत्रांकित मत्सदृशाल्पमति कैसे कर पायेगा, फिर भी आपके गुणसमुदाय ही प्रेरणा प्रदान करते हैं। जो शक्ति आपसे हमें मिली है, वही यहाँ समुपस्थित हो रही है। पूर्वाचार्यों द्वारा समुपदिष्ट समग्र सम्प्रति प्राप्त अमूल्य आध्यात्मिक, सम्प्रदायनिष्ठ, धार्मिक सत्साहित्य को क्रमशः आपने प्रकाशित कराकर अमूल्य निधि को सुरक्षा प्रदान की। पूज्य आचार्यों ने विविध विषयों पर सत्साहित्य को सुरभारती सहित अन्य लोक प्रचलित भाषा में भी प्रणयन किया, किन्तु उन सब का समुचित संधारण न होने से श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का विपुल साहित्य अद्यावधि अप्राप्य ही है। आचार्यों के साथ-साथ सम्प्रदायनिष्ठ उनके विद्वान् शिष्य वर्गों के भी साहित्य को प्रकाशित करवाने में आपश्री कृत सङ्कल्प रहे हैं।

आप स्वयं भी निरवच्छिन्न सारस्वत साधना में तल्लीन रहते हैं, जिसका परिणाम है कि राजस्थान संस्कृत अकादमी के प्रथम, निर्विवादित प्रथम **'अतिविशिष्टविद्वान्'** पदवी से आप समलंकृत हैं। सुरभारती अथवा लोक प्रचलित भाषा किसी में भी विरचित आपकी रचनायें सहज ही हृदय में उतर जाती हैं। आपकी जीवन पद्धति में जैसी सादगी व सरलता विद्यमान है, वही आपकी रचनाओं में साकार प्रतिभासित है। सरलता में भी गहनता रची बसी है। यह अर्थग्रहण करने वाले पर निर्भर करता है कि वह इन रचनाओं को समझने का पात्र है या नहीं। साहित्य प्रणयन एक विषय तक सीमित न होकर बहुमुखी है।

अन्तःचेतन को झंकृत करने के साथ-साथ समयानुकूल लौकिक प्रसङ्गों का भी समावेश है। आध्यात्मिक एवं स्वसम्प्रदायसिद्धान्तों के पूर्ण समर्थन सहित प्रचलित लोकाचार को भी सावधान किया गया है। न केवल अन्तेवासियों को उपदिष्ट किया गया है, अपितु साहित्य साधना का निरवच्छिन्न प्रवाह उपाध्यायों को भी सावचेत करता है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र शायद ही बचा होगा, जिसे आपकी रचना प्रकाश ने आलोकित न किया हो।

आद्याचार्य भगवान् श्री निम्बार्काचार्य ने जिस सम्प्रदाय रूपी महावृक्ष को आरोपित किया, उसका संरक्षण समस्त आचार्यों ने बहुविध किया। मुझे लगता है वही महावृक्ष इस विपरीत समय में भी जब सब ओर दुर्भिक्ष है, जलवृष्टि का अभाव है, समस्त लोक अकाल ग्रस्त है, फिर भी सब को अपने विशाल स्निग्ध छाया से जीवन रहस्य को समझने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। यह विशाल निम्बार्क सम्प्रदाय रूपी तरुवर आप जैसे आचार्यवर्य की तपःसाधना से आज पल्लवित मात्र न होकर पुष्पित और फलित हो रहा है, जिसके परिपक्व बृहद् दो फलों का मधुर रसास्वादन देश व प्रदेश के सम्पूर्ण निवासियों ने पूर्व में प्राप्त किया है। तृतीय फल की मधुरिमा का आनन्द सम्प्रति प्राप्त कर ही रहे हैं। प्रथम फल था– जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री हरिव्यास देवाचार्य महाराज की 600 वीं जयन्ती के अवसर पर समायोजित **अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन**। द्वितीय फल–आपश्री के ही पीठासीन होने के 50 वर्ष पूरे होने पर **स्वर्ण-जयन्ती उपलक्ष्य में समायोजित अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन**। तृतीय फल समक्ष है, जो **आद्याचार्य भगवान् श्री निम्बार्काचार्य के 5100 वीं जयन्ती के अवसर पर सम्पन्न हो रहा यह विशाल अ.भा.विराट् सनातन धर्म सम्मेलन**। तीनों ही सफल सम्मेलन समारोह के रचयिता, सूत्रधार व प्रेरक वर्तमान अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य ही हैं। कुम्भ पर्व का विशद आयोजन, जन्माष्टमी, गुरुपूर्णिमा, पुरुषोत्तम मास महोत्सवादि तो नियमित हैं ही।

साहित्य के साथ-साथ आपकी संगीत-साधना को कैसे भुलाया जा सकता है। कला के प्रमाण तो आपश्री के द्वारा विनिर्मित नीमगांव, जयपुर, मूंगी आदि के सुविशाल मन्दिर हैं। भिषक् शास्त्र का भी आद्योपान्त पूर्णाध्ययन है। दीपक जलकर लोकालोकित करता है, तद्वत् पिछले कुछ वर्षों से विविध कष्टप्रद शारीरिक व्याधियों से संतप्त होते हुए भी सर्वजन सुखाय दृढ़-व्रत का पालन करना ही आपका समुद्देश्य है। मैं तो नीतिकार भर्तृहरि के इस श्लोक का प्रत्यक्षतः दर्शन आपश्री के स्वरूप में करता हूँ—

''श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणां, परोपकारैर्न तु चन्दनेन॥''

करुणावरुणालय भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु के चरणों में पुनः पुनः प्रणति के साथ प्रार्थना करता हूँ कि हमारे पूज्य आचार्यश्री निरामय नीरोग होकर हमें सर्वदा दर्शन प्रदान कर इसी प्रकार अनुगृहीत करते रहें।

श्री ओम राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
डीडवाना (नागौर) (राजस्थान)

परमादरणीय श्री 'श्रीजी' महाराज की दीन दुःखी जनों के प्रति करुणा

— निम्बार्कभूषण रमाकान्त शर्मा

समस्त वृन्दारक वृन्द जिस अतिशय पावन धराधाम पर स्वजन्मलाभार्थ अपनी स्पृहा व्यक्त करते हैं, वही यह स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूत भारत वसुन्धरा सदा से अपने कुक्षिप्रसूत मानवों को वैदिक वर्णाश्रमानुकूल सद्धर्माचरण द्वारा पुरुषार्थ चतुष्टय की सम्यगुपलब्धि के लिए प्रेरणा देती रही है। इसी देववन्दिता धरा पर ईशनिवास भूत वेदों का प्रादुर्भाव हुआ तथा उनके गूढ रहस्यों का साधु अवगम कराने के लिए सद् असद् विवेकशील, त्रिकालदर्शी, महामनीषी ऋषियों द्वारा स्मृति, पुराण, दर्शनादि ग्रन्थों का प्राकट्य हुआ और यहीं पर चराचर जगत् के स्वामी जन्ममरणादि रहित विज्ञानवात्सल्य दयादिसिन्धु श्री सर्वेश्वर प्रभु भी लोक कल्याणार्थ, धर्मसंस्थापनार्थ "**अजायमानो बहुधा विजायते**" सिद्धान्तानुसार यथासमय लीलावतार धारण करते हैं। अतः इस भूमि के लिए "**पुण्या भारतभूरेषा**" यह कथन सर्वात्मना सत्य है। अनादि काल से त्यागी, तपस्वी, योगी, यति, सिद्ध, सत्कर्मनिष्ठश्रोत्रिय, अध्यात्म निरत, लोकोद्धारक, संस्कृत वाङ्मय के प्रखर विद्वान् ऋषि-महर्षिगण इसी धरातल को स्वजन्म से अलंकृत करते हुए अबोधोपहत मानवों को सद्बोध प्रदान कर उन्हें सर्वगुण व सर्वसुख सम्पन्नता प्राप्त करने हेतु—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥"

इस मन्वादिष्ट कर्त्तव्यपालन की ओर अग्रसर करते रहे हैं, किन्तु स्वयं जगत्स्रष्टा चतुरानन को भी सर्वोत्कृष्ट मानव की मूर्ति गढ़ते हुए कितने युग बीत गये, किन्तु कृतकार्य होने का चरम सुख उसे भी अधिगत नहीं हुआ, क्योंकि जो मूर्तियाँ गढ़ता आ रहा है, उनमें वे गुण कहाँ, जो आदर्श जीवनहेतु काम्य हैं। किसी में आकृति की, किसी में सौष्ठव की, किसी में संरचना की, किसी में वाक्पटुता की, किसी में कला की दृष्टि से कोई न कोई कमी अवश्य रह जाती है। यदि कोई मूर्ति नियति के विधान से सुन्दर निकल भी जाती है, तो अकस्मात् उसे टूटने में देर नहीं लगती, किन्तु ऐसी पञ्चतत्त्व से निर्मित दिव्यातिदिव्य मानवदेह, जिसमें रचयिता ने मानवता की आत्मा का रस उडेल दिया है, जो पारिजात के सौरभ से, कल्पवृक्ष के औदार्य से, कुसुमचय के सौन्दर्य से एवं प्रेम के माधुर्य से संसिक्त है, जिसमें अनोखी दीप्ति, दिव्य कान्ति, अनुपम चमत्कृति, विद्यमान है, जिसके पावन हृदय में उदारता व दीनों के प्रति करुणा की हिलौरें उठती रहती हैं। जो श्री, कीर्ति, स्मृति, सन्नत वाणी, मेधा, क्षमा, धृति, इत्यादि

सद्गुणों से समलङ्कृत है, ऐसी देवोपम दिव्यदेह का दर्शन लाभ 23.06.2001 को निम्बार्क पुण्यतीर्थ के पावन तट पर मिला, जिनके चरित्र एवम् आचरण में शिक्षा दर्शन उद्भासित हो रहा था। आपश्री के प्रत्येक कार्य में, चेष्टा में, साधुता का आदर्श झलकता है। आपश्री से उग्रता व क्षोभ कोसों दूर है। अध्यवसाय, परिश्रम, कर्त्तव्यपरायणता, त्याग, तपस्या, लगन, उत्साह, सहानुभूति, सहयोग इत्यादि गुण आपश्री में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। प्राणियों के सर्वविध कल्याण की उदात्तभावना तथा सर्वतोमुखी दया की सरस स्रोतस्विनी आपश्री के हृदयान्तराल में सदा प्रवाहित रहती है। पूज्यश्री के स्वभाव एवं प्रतिभा आदि में बहुत विलक्षणता है। सभी सद्गुणों का समावेश होने पर भी लोकोपकार व्रत-निष्ठा अनुपम है। नहीं कहा जा सकता कि कितने विद्याहीन, गृहहीन, जीविकाहीन, रोगार्तदीन प्राणियों के सर्वविध रक्षा प्रबन्धन का भार आपश्री ने स्वजीवन काल में प्रसन्नमुद्रा से वहन किया है और वर्तमान में वहन कर भी रहे हैं। **''परदुःख द्रवहि सन्त सु पुनीता''** यह साधुता का साकार स्वरूप आपश्री में ही पूर्णतः दृष्टिगोचर होता है। सैकड़ों कपोत पक्षियों के मध्य आसीन होकर स्वकरारविन्दों से दाना चुगाते हुए देखकर कौन मनुष्य भाव-विभोर नहीं होगा। पूज्य आचार्य चरणों की प्राणिमात्र के प्रति अगाध करुणा है। इसका प्रत्यक्षानुभव आपश्री के सान्निध्य में ही किया जा सकता है तथापि अधोलिखित हिन्दी पद्यों के माध्यम से यत् किञ्चित् भाव व्यक्त करने का प्रयास दुःसाहस पूर्वक कर रहा हूँ। त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी भी हूँ—

हे गुरुदेव! अनाथों को तुम जीवन देने वाले।
वदु को सन्त महन्त और आचार्य बनाने वाले॥
ऐश्वर्यों के मोह कुञ्ज में कभी न फंसने वाले।
तुम हो धर्मधुरीण धर्म की ध्वजा उठाने वाले॥
नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के पालक संयम शुचि व्रतधारी।
भीष्म, लखन, हनुमान आप पर जाते हैं बलिहारी॥
निराश्रितों को आश्रय देकर उनका मान बढ़ाया।
सात्विक जीवन सत्य कर्म का उनको पाठ पढ़ाया॥
तुम हो रवि अध्यात्म जगत् के लगते सबको प्यारे।
एक आप के तपः प्रभाव से चमक रहे हम तारे॥
परहित निज सर्वस्व त्याग का सबको पाठ पढ़ाया।
संस्कृत संस्कृति सरस्वती का अनुपम रस बरसाया॥
दीन प्राणिहित जीवन मेरा कहते हैं जनता को।
उपमा किसकी देवें कोई मिलता नहीं समता को॥

वर्णाश्रम उद्धार हित श्री चरणों का उपदेश है।
वैदिक प्रथा निज देश में गूंजे यही उद्देश्य है॥
यजुः साम, ऋग्, अथर्व का वटु घोष करें फिर प्रेम से।
जप होम सन्ध्या तर्पणादि कृत्य हो यहां नेम से॥
तुम हो गुणातीत श्वेताम्बर हम कैसे गुण गावैं।
हो विभोर तव भक्ति भाव से श्रद्धा सुमन चढ़ावैं॥
दीनों के प्रति हित भावना जिनमें है साकार।
उन श्रीजी महाराज को है प्रणाम शतवार॥

'देवभाषा' में पद्यप्रसूनाञ्जलि समर्पण—

नानानवद्यविद्याभिर्द्योतमानान् तपोमयान्।
जगद्वन्द्यान् महाराजान् नो नुमः श्री जगद्गुरून्॥1॥
दिव्यदेहधरान् धन्यान् रमणीय - गुणान्वितान्।
कामक्रोधपरित्यक्तान् नो नुमः श्रीजगद्गुरून्॥2॥
सर्वमंगलमाङ्गल्यान् चिन्ताशोक - प्रणाशकान्।
प्रसन्नवदनान् भव्यान् नो नुमः श्री जगद्गुरून्॥3॥
सुखदान् स्नेहसम्पन्नान् लोचनानन्ददायिनः।
शुक्लाम्बरधरान् दिव्यान् नो नुमः श्री जगद्गुरून्॥4॥
ब्रह्मनिष्ठतपःपूतान् अद्भुतैश्वर्यशालिनः।
सर्वेश्वरकृपालब्धान् नोनुमः श्रीजगद्गुरून्॥5॥
रसिकान् भावुकान् देवान् महामहिमशालिनः।
गुणज्ञानपरमाराध्यान् नोनुमः श्रीजगद्गुरून्॥6॥
वासुदेवप्रियान् विज्ञान् पुण्यारण्यविहारिणः।
प्रशान्तान् परमान् पुण्यान् नोनुमः श्रीजगद्गुरून्॥7॥
येषां दर्शनमात्रेण कृतकृत्याः दर्शनोत्सुकाः।
विद्वद्भिः पूजितान् धूनान् नोनुमः श्रीजगदगुरून्॥8॥
स्वल्पबुद्ध्या कृतं स्तोत्रं सर्वपापहरं नृणाम्।
रमाकान्ताख्यशिष्येण अर्पितं पादपद्मयोः॥9॥

आपश्री सदृश कनिष्ठिकाधिष्ठित महापुरुषों का जीवन सद्गुणों की पुण्य सलिला से सदा शाश्वत आप्लावित रहता है, इस कथन में लेशतोऽपि सन्देह नहीं है। सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वोपास्य सर्वकर्मफलदाता सर्वविश्वनियन्ता के पादारविन्दों में करबद्ध अभ्यर्थना है कि पूज्यपाद आचार्यश्री के कृपाप्रसाद के रसास्वाद का सौभाग्य सभी को सदा सर्वदा प्राप्त होता रहे।

प्राध्यापक-संस्कृत
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सरमथुरा (धौलपुर) राजस्थान

श्रीगुरुदेवाष्टकम्

निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वरश्रीमज्जगद्गुरुम् ।
प्रणमामि मुदा श्रीजीमहाराजं पुनः पुनः ॥1॥
कण्ठे सर्वेश्वरो यस्य ह्युपदेशो मुखाम्बुजे।
राधासर्वेश्वराद्यं शरणान्तं गुरुं भजे ॥2॥
शान्तं दान्तं महोदारं लोकानुग्रहकारकम्।
राधासर्वेश्वराद्यं तं शरणान्तं गुरुं भजे ॥3॥
अधर्मशमनं धर्मरक्षणं भुवि यद्व्रतम्।
राधासर्वेश्वराद्यं तं देवाचार्यं नमाम्यहम् ॥4॥
सवंशप्रदीपाय निम्बादित्यांशधारिणे।
भक्तिभावार्द्रचित्ताय नमःप्रोज्ज्वलकीर्तये ॥5॥
वैराग्यज्ञानपूर्णाय सदा सेवाव्रताय च।
राधासर्वेश्वराद्याय देवाचार्याय ते नमः ॥6॥
शास्त्र-धर्म-सुनिष्ठाय वैष्णवादर्शशालिने।
जगद्गुरुवराय श्री श्रीजी, त्याख्याय वै नमः ॥7॥
तत्त्वबोधप्रकाशाय तमोमोहादि-हारिणे।
नमो देशिकवर्याय युग्मलीलानुशीलिने ॥8॥
गुरुदेवाष्टकमिदं श्रद्धायुक्तेन चेतसा।
ये पठन्ति सदा तेषां गुरुवर्यः प्रसीदति ॥9॥

ॐ श्री सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः।

—यमुनाशरणउपाध्याय (युवराज वसुईटेल)
सिलीगुडी, पं. बंगाल

अलौकिक प्रतिभा परिपूर्ण निम्बार्काचार्य परम श्रद्धेय श्री 'श्रीजी' महाराज

— श्रीगोलोकधाम पीठाधीश्वर 'धर्मरत्न'
स्वामी गोपालशरणदेव

'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता'

द्वैताद्वैत-सिद्धान्त से सम्पोषित **हंसमतानुयायी श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाय** अनादिकालीन, शाश्वत, सर्वजनहितोपकारी, वैष्णवजनों में समादरणीय सुविख्यात, दृढ़ धारानुवद्ध वैदिक ज्ञान परिपूर्ण, **भक्तिसृति सम्वलित** अनन्यतम सम्प्रदाय है। इसका अपना सुदृढ़ साहित्य है। आचार्य चरणों की **परिपक्व अनुभूतिजन्य प्रस्थानत्रयी** की विशिष्ट व्याख्या एवं अनेक सन्त-मुनि-आचार्यजनों की सर्वजनहितैषी लोकभाषा की सरस सिद्धान्त सम्पादित वाणी ग्रन्थों की भक्तिभाव धारा से तो इसकी लोकप्रियता और सुदृढ़ हुई है। **श्रीहंस भगवान्, श्रीसनकादि मुनिवृन्द, श्रीनारदजी** के बाद आचार्य शृंखला अद्यावधि प्राणीमात्र के कल्याण के लिए अनवरत प्रयत्नशील है। **श्रीनिम्बार्क भगवान्** ने अपने सुदृढ़ सिद्धान्त का बड़ा ही सुन्दर, शाश्वत और अनुभव पूर्ण सिद्धान्त स्थापित करके भगवद् उपासना की इस भावधारा को सर्वोपरि स्थान में स्थापित किया है।

सर्वप्रथम परब्रह्म परमात्मा **गोलोकधामाधिपति भगवान् श्रीकृष्ण** ने उज्ज्वल, निर्मल, परममनोहर, ज्ञानपरिपूर्ण हंस का रूप धारण करके अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय देते हुए श्रीसनकादि मुनियों की मानसिक भ्रान्ति को दूर किया था। विशुद्धज्ञान की भक्ति-परिपूर्ण धारा से उनका सन्देह निवारण किया था। उनकी भक्ति का सुदृढ़ मार्ग प्रशस्त किया था। ब्रह्मपुत्र सनक, सनातन, सनन्दन एवं सनत्कुमार चारों मुनियों ने **श्रीहंस भगवान्** के इस अलौकिक प्रतिभा सम्पूर्ण सिद्धान्त को आत्मसात् किया था तथा इसे अपने हृदय में धारण करके लोकहितार्थ अपने कनिष्ठभ्राता ब्रह्म के मानसिक पुत्र श्रीनारदजी को प्रदान किया था। सनकादि मुनियों की प्रतिभा नारदजी की **'नारद भक्तिसूत्र' वैष्णव सिद्धान्त परिपूर्ण 'नारद-पञ्चरात्र'** जैसे सर्वोपरि भक्ति सिद्धान्त को स्थापित करने वाले ग्रन्थों से ही पता लगता है कि कैसे दिव्य प्रतिभासम्पन्न महर्षि नारदजी थे तथा लोकहित के लिए उन्होंने कितना कार्य किया है और अद्यावधि कर रहे हैं।

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी का **'वेदान्तपारिजातसौरभ व वेदान्त-कामधेनु 'दशश्लोकी'** ये दोनों ही ग्रन्थरत्न आपके उत्तमोत्तम प्रतिभा वैशिष्ट्य का ही परिचय देते हैं। परवर्ती आचार्य श्री श्रीनिवासजी तथा जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरी भट्टाचार्यचरणों की प्रतिभाविशेष को तो इन आचार्यों के वेदान्त परक उत्तम ग्रन्थ **वेदान्तमञ्जूषा, वेदान्त कौस्तुभ भाष्य की प्रभावृत्ति,** श्रीमद्भागवत पर रचित **तत्त्वप्रकाशिका**

एवं **क्रमदीपिका** का अध्ययन करने पर पता चलता है कि ये सब आचार्य अपने ईश्वराराधन मार्ग में कितने प्रतिभाशाली एवं अपने परम्परागत सिद्धान्त के पोषण में कितने सुदृढ़, एकनिष्ठ, लोकहितोपकारक महानुभाव थे। इनके अलौकिक, बौद्धिक, सामाजिक कार्य को देखकर तो सहज ही यह अनुभव होता है कि निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यों ने जो भी अपनी अलौकिक प्रतिभा का प्राकट्य किया है, वही परम्परा परवर्ती आचार्यगण भी निर्वाह करते हुए आ रहे हैं तथा यह परम्परा आज भी अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है।

परम रसिकाचार्य श्री श्रीभट्टाचार्यजी ने संस्कृत की इस परम्परा से भिन्न लोकभाषा '**ब्रजभाषा**' में जिस '**श्रीयुगलशतक**' ग्रन्थ की रचना की, उसकी लोकप्रियता तथा हिन्दी साहित्य में उसका स्थान अद्वितीय बना हुआ है। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी की '**महावाणी**' तो यथानाम तथागुण वाली बात को ही चरितार्थ करती है। यह वास्तव में ही '**महावाणी**' है। इस तरह से अनादिकाल से ही निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परा के सभी आचार्यगण परमप्रतिभा से समन्वित रहे हैं तथा अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय जनहित के लिए ही किया है। इस धराधाम पर शान्ति, भक्ति तथा '**श्रीराधाकृष्ण**' की युगल उपासना को जन-जन तक पहुंचाने के लिए इन्होंने जिस प्रतिभा का सदुपयोग किया है, वह सर्वस्तुत्य सर्वसिद्धान्त-प्रतिपाद्य तथा सर्वजनोपयोगी रहा है।

इन आचार्यों का प्रमुख भक्ति-साधना का केन्द्र ब्रज मण्डल ही रहा है तथा अपने उपास्यदेव **श्रीराधाकृष्ण की युगल माधुरी** छवि रही है। संस्कृत के बाद श्रीब्रजभाषा को प्रमुख रूप से अपनाया, फिर राजस्थानी, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं का भी इन्होंने अपनी उपासना के प्रचार-प्रसार में सदुपयोग किया है।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के शिष्य **श्रीपरशुराम देवाचार्यजी** ने राजस्थान को अपना प्रमुख प्रचार केन्द्र बनाया था तथा आपश्री ने ही श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना की थी। आज जिसका केन्द्र राजस्थान के सलेमाबाद में **अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ** के नाम से सुविख्यात है। इस पीठ की अपनी अलग पहचान है, उल्लेखनीय वैशिष्ट्रय है तथा अपना सर्वोपरि अस्तित्व है। इसी गद्दी के वर्तमान अभिषिक्त आचार्य हैं— **परम पूज्य, अनन्तश्री विभूषित श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी महाराज'**। आपश्री आज अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर के पद पर प्रतिष्ठित हैं तथा अपने कार्यकाल में आचार्य परम्परा की इस दिव्य धारा को एक अलग वैशिष्ट्र्यपूर्ण पहचान देने के लिए आज भी समुद्यत हैं। आप **श्रीअलौकिक प्रतिभा** के धनी हैं। सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा बौद्धिक क्षेत्रों में आज आपने जो कार्य किये हैं, उसे देखकर के तो सहज ही यह अनुभव होता है कि ठाकुरजी ने आपको कितनी शक्ति और प्रतिभा दी है,जिसका सदुपयोग आप अपने बौद्धिक बल से लोकहित के लिए कर रहे हैं। आज के वैज्ञानिक युग की इस व्यवस्था में प्रचार-प्रसार, साधना, उपासना आदि की परिपाटी भी बदलने लगी है, परन्तु आपश्री ने उसे अपने ही ढंग से अपनाया है। अपनी परम्परा को अविचलित रखते हुए नये साधनों से सम्प्रदाय को जो पोषण किया है, वह स्तुत्य है

तथा **जनोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी तथा मानवोपयोगी** हैं। आपश्री ने अपनी अलौकिक प्रतिभा का सदुपयोग किया है। ठाकुरजी के द्वारा प्रदत्त इस **बौद्धिक प्रतिभा** का सदुपयोग मानव मात्र में बाँटने का कार्य किया है। आपश्री इस वर्तमान युग में विखण्डित होते हुए धर्म मार्ग को जोड़ने के लिए अद्वितीय कार्य कर रहे हैं। आपने कई बार सभी धर्माचार्यों, सम्प्रदायाचार्यों, शंकराचार्यों को एक जगह आमन्त्रित करके विशृङ्खलित परम्परा को जोड़ने का अनुपम कार्य किया है। सैद्धान्तिक विविधता होते हुए भी मानव मात्र के कल्याण के लिए सभी धर्म, सम्प्रदाय, पन्थ तथा विविध मतमतान्तरों में एक रूपता होनी चाहिये। आपसी समझदारी एक दूसरे आचार्यों का सौजन्यपूर्ण व्यवहार, एक मंच पर एकत्रित होकर एक आदर्श परम्परा की स्थापना जैसे महत्त्वपूर्ण धर्मसंरक्षक उपायों को आपने पूर्णरूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रारम्भ किया तथा आप इस प्रयास में सफल भी हो रहे हैं। सभी आचार्य, पीठाधीश, जगद्गुरु महानुभाव आपके इस स्तुत्यकार्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं। अलौकिक प्रतिभा को द्योतक मानकर आपश्री का लोहा मानते हैं। इससे धर्म का गौरव बढ़ा है। वैष्णव सम्प्रदाय की सहिष्णुता, सरसता, सरलता तथा उत्कृष्ट उपासना की अनन्यता जन-जन तक पहुंची है। विशेष करके श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का परिचय सर्वत्र व्यापक हुआ है।

आचार्यश्री की धाम निष्ठा, इष्ट भक्ति, गौ भक्ति, विद्या प्रेम, जन सेवा आदि में भी अलौकिक प्रतिभा की अविच्छिन्न धारा अविरल रूप से प्रवहणशील दिखती है। आप स्वयं विद्वान् हैं। अनेक ग्रन्थों के अध्ययन में निरत रहते हैं तथा विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए कई शिक्षण संस्थान संचालित हैं। प्याऊ, कुँआ, जलाशय जीर्णोद्धार आदि के द्वारा अपनी अलौकिक सोच का परिचय आपश्री ने जनहित कार्यों की ओर प्रस्तुत किया है। श्रीसनातन धर्म सम्मेलन का बृहद् आयोजन तथा उसकी सफलता को देखकर तो यही अनुभव होता है कि आपश्री की यह शक्ति अलौकिक प्रतिभा की ही परिणति है। विद्वत् सम्मेलन, विद्वत् सत्कार, सद्ग्रन्थों का प्रयणन, प्रकाशन, सन्त-मनीषियों का सम्वर्धन तो आपकी साधना का प्रमुख ध्येय रहता है।

इन सब कार्यों के साथ ही आचार्यश्री अपनी नित्य उपासना अपने हाथों से श्रीसनकादि संसेव्य श्रीसर्वेश्वर शालिग्राम भगवान् की सेवा बड़ी ही श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति व अनुरक्ति से सम्पादन करते हैं। पद-पदावली, स्तुति आदि की नवीन रचनाओं से अपने इष्टदेव को रिझाते हैं। इन सब कार्यों के लिए अपना बहुमूल्य समय विभाजित करते हैं। यह सब आपकी अलौकिक प्रतिभा का ही विशेष परिचय है।

आपने कई बार भारतवर्ष के तीर्थों का परिभ्रमण किया है तथा अनेक स्थानों को सेवा कार्य के द्वारा विकसित किया है। अनेक राजनीतिज्ञों के साथ भेंट वार्ता, उन विशिष्ट राजनेताओं का आपश्री के प्रति सहज समादरभाव, अखण्डनाम संकीर्तन का प्रचार-प्रसार, चारों कुंभ पर्व के अवसरों की परम्परा में एक विशेष अध्याय जोड़ा है। यह सब **प्रभु श्रीयुगलसरकार** द्वारा प्रदत्त अलौकिक प्रतिभा का ही मूर्तरूप है। **सुदर्शनावतार श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् की जन्मभूमि मूंगी पैठण** का जीर्णोद्धार एवं मन्दिर निर्माण कार्य तो महाराजश्री का एक विशिष्ट ऐतिहासिक उद्घाटन तथा **निम्बार्क सम्प्रदाय** का **सर्वोत्कृष्ट** कार्य

माना जायेगा। इस अभूतपूर्व उत्सव पर हमें भी समुपस्थित होने का सौभाग्य मिला। **जर्मनी (इयूस्लडोफ)** तथा **यू.के. (महालक्ष्मी मन्दिर, लंदन)** में दो मन्दिरों की प्रतिष्ठा कार्य में व्यस्त होते हुए भी यथावसर सीधे मुम्बई एयरपोर्ट होते हुए मुंगी पैठण पर पहुंचकर उत्सव में सम्मिलित होकर हमने अपने आपको **गौरवान्वित** माना है।

हमारे **प्राणाधार, प्राणेश्वर, सर्वनियन्ता अखिल ब्रह्माण्डाधिपति ठाकुर श्रीराधागोलोक बिहारीजी** के चरणों में यही निवेदन करते हैं कि अलौकिक प्रतिभा के सम्राट् आचार्य **श्री 'श्रीजी' महाराज** अपने जीवन काल में जो अद्वितीय कार्य कर रहे हैं, इससे अपने सम्प्रदाय का, धार्मिक समाज का, भारतवर्ष का ही नहीं, समस्त विश्व का गौरव तो बढ़ा ही है, साथ ही साथ सभी धर्मावलम्बियों का एक मंच पर समुपस्थित होना भी प्रारंभ हो गया है। यह एक नई परिणति है। इसका एक मात्र श्रेय आचार्यश्री के ही अलौकिक प्रतिभा के लिये समर्पित होता है। आपश्री सम्प्रदाय, समाज और **राष्ट्र की पूर्ण सेवा** कर रहे हैं। ठाकुरजी आपको शक्ति दें कि यह प्रतिभापूर्ण कार्य अविच्छिन्न रूप से चलता रहे। आपश्री को यह अनुभूति होती रहे कि उन्हें कुछ और करना है। अभी सेवा अवशिष्ट है। आपश्री ने ऐसे ही अनेक कार्यों के द्वारा निम्बार्क सम्प्रदाय के गौरवपूर्ण इतिहास के उत्तरोत्तर अभिवृद्धि के साथ ही धर्म तथा 'आचार्य-परम्परा' के महत्त्वपूर्ण कार्य संयोजन सम्पादन के द्वारा अपने सम्प्रदाय को जो विशिष्ट योगदान दिया है, यह सब अभूतपूर्व है। प्रभु आपको दीर्घायुष्य प्रदान करें और ऐसे ही **लोकहित पूर्ण धार्मिक महत्त्व** के अनेकानेक कार्य आपश्री द्वारा निरन्तर सम्पन्न किये जाते रहें।

इस विराट् धर्म सम्मेलन की पावन वेला में प्रभु से हमारी यही प्रार्थना है – आचार्यश्री के इस अलौकिक प्रतिभा के अद्वितीय कार्य को निरन्तरता प्रदान करें। यह अभिनन्दन जनोपयोगी, प्रभु भक्तिनिष्ठ तथा राष्ट्र गौरव का द्योतक हो। इस पावन वर्ष पर **भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी का 5100 वाँ प्राकट्य महोत्सव** तथा **विराट् धर्म सम्मेलन महाराजश्री** की अध्यक्षता में मनाया जा रहा है, यह सोचपूर्ण कार्य भी आपश्री की अलौकिक प्रतिभा का ही एक महत्त्वपूर्ण अंश है। इस महोत्सव पर एक वर्षीय विशेष **'मौनव्रत अनुष्ठान'** में आबद्ध होने के कारण समुपस्थित रहने का सुयोग नहीं बन पा रहा है तथापि इस लेख के माध्यम से ही हमारी उपस्थिति प्रस्तुत होगी तथा अपने सम्प्रदाय के इस सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए हमारी ओर से **पूर्णतया समर्थन,** सौजन्यभाव प्रस्तुत रहेगा। **भगवान् श्री निम्बार्काचार्यजी महाराज को एवं आचार्यश्री के चरणों में पुनः पुनः प्रणाम, अभिनन्दन।**

"कल्याणं करोतु श्रीकृष्णः"

संस्थापक – शरणेश्वर सेवा ट्रस्ट एवं श्री गोलोक धाम आश्रम
गौशाला नगर, वृन्दावन – 281121
(मथुरा) (उत्तरप्रदेश)

अनन्तश्रीविभूषित श्रीजी महाराज का व्यक्तित्व

— राजवीर सिंह परमार ''क्रान्ति''

विप्रवंशावतंस, यतिपतिदिनेश, सन्तशिरोमणि, विलक्षण-प्रतिभासम्पन्न, सहृदय, दयासागर, अनुकरणीयाचरण, शरणागतवत्सल, दीनार्त-परित्राण-परायण, विद्वज्जनाभिनन्दनीय, प्रातःस्मरणीय, सनातनधर्मसंरक्षक, श्रद्धास्पदीभूत पूज्य आचार्यचरण श्रीजी महाराज की दिग्दिगन्त व्याप्त कीर्ति व सरस तात्त्विक शास्त्रसम्मत परम कल्याणमयी दिव्य वाणी का श्रवण कर्णकुहरों में बहुत ही सुखद प्रतीत होता है।

अनेकशः 'संस्कार चेनल' पर दूरदर्शन के माध्यम से प्रवचनामृत का पान किया तथा मेरे मन में बहुत दिनों से उथल-पुथल मच रही थी कि पूज्याचार्य चरणों में भाव-प्रसूनाञ्जलि समर्पित की जाये। अकारण करुण-करुणा-वरुणालय प्रभुजी की कृपा से वह सुअवसर सहसा मुझे मिल गया है। वस्तुतः आपश्री की महिमा का वर्णन सीमित शब्दावली में गागर में सागर भरने के समान सर्वथा असंभव है, तथापि स्वान्तः सुखाय पद्य-प्रसून भावार्थ सहित महाराज श्री के चरणों में समर्पित है।

वन्दना हमारी गुरुदेव लो प्रणाम को।
जहाँ पै ठिकाना उस धरती के धाम को।।

दीन अनाथ नाथ सर्वेश्वर, की तुम ही छाया हो।
खग मृग तृषित आर्त मानव के, हित तुम ही साया हो।।
पाते हैं आनन्द आपके, चरणों में दुखियारे।
जगमग अन्तर्मन होता है, मिट जाते अंधियारे।।
कैसी अशनाया पीते, चरणों के जाम को।
जहाँ पै ठिकाना..।।1।।

काम क्रोध मद लोभ आपको, कभी न ग्रस पाते हैं।
तेज महा विकराल भाल पै, देखत नश जाते हैं।।
परहित में सर्वस्व त्याग का, मूल मंत्र अपनाया।
किये तिरस्कृत जग ने जो सीने से उन्हें लगाया।।
पीर मिट जावे ऐसी, मलते हैं वाम को।
जहाँ पै ठिकाना..।।2।।

संस्कृत, संस्कृति की रक्षा में, प्रन करके हर्षाते।
सरस्वती के अमृत को दिल, खोल आप वर्षाते॥
गो सेवा ही जीवन अपना, है उपदेश तुम्हारा।
वर्णाश्रम हो अमर श्री पादारविन्द का नारा॥
निरत हुये हैं श्रीजी, तजि विश्राम को।
जहाँ पै ठिकाना..॥3॥

चारों वेद पुराण अष्टादश, छैंऊ शास्त्र हिय घर हैं।
किसकी समता करूं जगत में, कोई नहीं पटुतर हैं॥
धर्म सनातन पर पड़ती जब, जब काली छाया है।
मानों धर्म स्वयं श्रीजी के, चोले में आया है।
वैदिक प्रभा से करें, दिव्य गांव-गांव को।
जहाँ पै ठिकाना..॥4॥

तेज पुंज तपवेश गुणाम्बुधि, तन ये सरसाता है।
क्रान्ति सुमन मन भावन अपने, फिरि-फिरि वर्षाता है॥
चाहो जो उद्धार प्रभू के, चरणों में आ जाओ।
चरणामृत में एक रसायन, घोरि-घोरि पी जाओ॥
श्री राधा सर्वेश्वर शरण, देवाचार्य नाम को।
जहाँ पै ठिकाना उस, धरती के धाम को॥5॥

वन्दना हमारी गुरुदेव लो प्रणाम को।
जहाँ पै ठिकाना उस धरती के धाम को॥

भावार्थ :— परम पूज्य प्रातःस्मरणीय श्री गुरुदेव की मैं वन्दना करता हूँ और विनती करता हूं कि हे प्रभू मेरा भी प्रणाम स्वीकार करें। आप तो इतने महान् और दयालु हैं कि आपश्री के चरणकमल जिस स्थान पर हैं, वह धरती का टुकड़ा पवित्र ही नहीं, बल्कि तीर्थ स्थल बन गया है। अतः मैं उस धराधाम को भी प्रणाम करता हूँ, जहाँ आप निवास करते हैं।

श्री श्रीजी महाराज के गुणों का बखान मैं जीवनपर्यन्त करूं तो भी असंभव है, क्योंकि आपश्री उस परिधि से परे हैं, जहां प्रायः शब्दों का अभाव रहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपश्री महापुरुष का जीवन सदा-सदा लोकोपकारी मोक्ष-प्रदाता सद्गुणों की परम पावन सलिला से आप्लावित रहता है। अतः इस कलिकाल में आपश्री के श्रीचरणों की रज पा लेना हम सांसारिक मानव मात्र के लिए परम सौभाग्य व पूर्व जन्म के सुकर्मों का ही फल है।

अन्त में श्री राधामाधव सर्वज्ञ सर्वेश्वर सर्वोपास्य जगत् नियन्ता के पादारविन्दों में सुमनाञ्जलि

अर्पित करते हुए प्रार्थना करता हूँ कि आपश्री द्वारा विरचित श्रीगोशतकम् ग्रन्थ का रसास्वादन सभी को प्राप्त हो और संस्कृति की अभिवृद्धि हो तथा समयानुसार माया-मोह में भटकते हुए मानव को सुमार्ग दिखाने वाला कल्याणकारी साबित हो। इन्हीं भावों के साथ पूज्यपाद आचार्य श्री श्रीजी महाराज के पावन चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हुए लेखनी को विराम देता हूँ।

वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष
राज. उ.. मा. वि. सरमथुरा, धौलपुर (राज.) पिन. 325026

श्रीभगन्निम्बार्काचार्य-शतोत्तरपञ्चसहस्राब्दी (5100 वें) जयन्ती-महोत्सवे प्रस्तूयते

।। अथ श्रीमदाचार्याभिनन्दनम् ।।

–आचार्य नथमल शास्त्री

निम्बार्कपीठतीर्थस्था हंसवंशविभूषणाः।
वेदादिशास्त्रतत्त्वज्ञाः रससिद्धाः कवीश्वराः ।।1।।
राधामाधवमाधुर्यभक्तिरागानुरञ्जिताः।
श्री श्रीजी ह्यस्मदाचार्या वन्दिताश्चाभिनन्दिताः ।।2।।
श्रीवृन्दावनधामनाममहिमालीलारसोपासकाः,
निम्बादित्यपरम्परासुललिताः 'श्रीजी' पदालङ्कृताः।
विज्ञा वैष्णवभक्तिभाव-रसिकाः सौम्यास्तपोमूर्तयो,
राजन्ते तपसा श्रिया च गुरवो देवोपमा भारते ।।3।।
श्री सर्वेश्वर-पादपद्मनिरतैराचार्यवर्यैः श्रिता,
श्रीनिम्बार्कमुनीन्द्रपीठवसुधा तीर्थस्थली पावनी
जीवैः सद्गुणभक्तिभावभरितैः शिष्यैः प्रपन्नैः सदा,
मन्त्रज्ञैः श्रुतिशास्त्रबोधनपरैर्विद्वद्भिरासेव्यते ।।4।।
हारैर्मौक्तिकहेमरत्ननिचयैः संशोभिते मन्दिरे,
राधाकृष्णपदानुरागरसिका निम्बार्कपीठेश्वराः।
जाप्ये सद्गुरुमन्त्ररूप-युगल-ध्याने सदावस्थिताः,
आर्यावर्तधरां पुनन्तु सततं यज्ञैः कथाकीर्तनैः ।।5।।
विभूतिमद्भिराचार्यैः श्री श्रीजी पदभूषितैः।
तपस्विभिर्मनस्विभिः सेवात्यागपरायणैः ।।6।।
गोवंशो वेदविद्याश्च संस्कृतिः संस्कृतं तथा।
स्वधर्मो धर्मग्रन्थाश्च सेविताः परिवर्द्धिताः ।।7।।
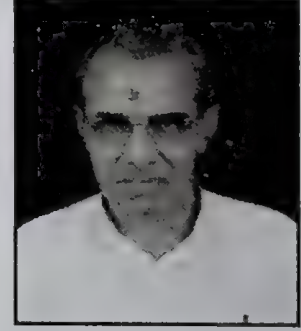
शुभानि वर्द्धन्ताम्

पूर्व प्राध्यापकः निम्बार्कीयः, छापर (चूरू)

राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील पूज्य आचार्यजी

— हरिप्रसाद जोशी

मेरा सौभाग्य है कि मैं एक अकिंचनजन अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज का कृपापात्र शिष्य हूँ।

पूज्य आचार्यजी भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, वैदुष्य, सारल्य, एवं संवेदनशीलता आदि सद्गुणों के सागर हैं।

माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर में मेरे द्वारा श्रीराम कथा का एक कार्यक्रम सन् 1996 अक्टूबर मास में चल रहा था। पूज्य आचार्यश्री का आशीर्वाद प्रदानार्थ उक्त कार्यक्रम में पादार्पण हुआ। मेरा जीवन का यह एक सुवर्ण अवसर था, जिसमें प्रथमबार पू. आचार्यश्री के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धर्मपत्नी हर्षाजी और मैं दोनों ही दर्शनों से अत्यधिक प्रभावित हुए।

गुरु चरणाश्रित होने का लम्बे समय से विचार चल रहा था। काशी, बदरीनाथ आदि तीर्थों एवं अनेक कुम्भ पर्वों आदि महोत्सव के अवसर पर अनेक महापुरुषों के दर्शन हुए, किन्तु किसी के शरणागत होने की मनःस्थिति नहीं बन पाई।

शरद्पूर्णिमा पर कार्यक्रम के निमित्त आचार्य पीठ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह अवसर मेरे जीवन का एक दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण अवसर था। जिन गुरु तत्त्व के अन्वेषण में था, वह प्राप्त कर जीवन की चिर अभिलाषा पूर्ण हुई। करुणावतार परमपूज्य आचार्यश्री ने दीक्षा द्वारा श्रीचरणाश्रय प्रदान करके हम दोनों को नवजीवन (अध्यात्मजन्म) दान से कृतार्थ किया। गुरु तत्त्व खोज की प्रक्रिया आज पूर्ण होने से अपार हार्दिक आनन्दानुभूति का अनुभव करके हम धन्य-धन्य हुए।

इसी क्रम में श्रीचरणों के कृपा प्रसाद से आठ मास तक आचार्यपीठ में रहकर श्रीचरणाश्रय प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अलभ्य अवसर पर श्रीमुख से श्रीमद् भागवत पाठ पढ़ने का भी परमानन्द प्राप्त हुआ। इस प्रसंग में श्रीमुख से जो विचार संवेदना सम्बन्धी व्यक्त होते थे, वे श्रीचरणों के परम पावन उदात्त व्यक्तित्व के द्योतक थे। कारगिल संग्राम, कच्छ (गुजरात) के भूकम्प, गुजरात के दंगों सम्बन्धी समाचार पढ़ते पढ़ते करुणार्द्र हृदय होने से आपके अश्रुपात हो जाते थे।

आपश्री के सान्निध्य में मैंनें अनुभव किया कि आचार्यश्री राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति भी सदा चिन्तन मनन करते रहते हैं। यथा– आतंकवाद, गोवध, अंधविश्वास, पर्यावरण, प्रदूषण, साधु-ब्राह्मणों की दुःखद स्थिति, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि समस्याओं के समाधान के लिए भी सतत प्रयासरत रहते हैं। आज इसी प्रकार अन्य धर्माचार्य भी उक्त समस्याओं के समाधान के लिए क्रियाशील हों तो हमारे राष्ट्र का अभीष्ट उत्थान होना संभव है।

अहमदाबाद (गुजरात)

पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की कोलकाता पधरावणी का संस्मरण

—जोधराज लढ्ढा
(तबीजी अजमेर वाले)

पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज बचपन से ही स्नेह संसर्ग में रहे हैं। पूज्यश्री का स्मरण भी विलक्षण है, परिचित को समय पर कभी भूलते नहीं।

1996 ई. में आपश्री कोलकाता श्रद्धालु भक्तजनों के आग्रह पर पधारे थे। श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ के कार्यालय से हमें फोन से सूचना मिली कि पूज्यश्री अमुक दिन कोलकाता पधार रहे हैं। कोलकाता के भक्तजनों को यह मंगलदायी सूचना परस्पर सब जगह पहुंच गई। हमने भी अपने परिचितों को अवगत करा दिया।

जिस दिन महाराजश्री कोलकाता पधारे, हम एयरपोर्ट पर आपश्री की अगवानी में थे। पूरा एयरपोर्ट परिसर प्रतीक्षारत श्रद्धालुओं से भर गया था। जब आपश्री प्लेन से उतरे तो सभी में हर्ष की लहर दौड़ पड़ी। ''श्री सर्वेश्वर की जय'' ''श्री श्रीजी महाराज की जय'' के जयकारों से गगनमण्डल गूंज उठा। पूज्यश्री 'श्रीजी' महाराज के अगवानी दर्शन कर सब आनन्दित हो गये। इस अगवानी में कोलकाता के कई गणमान्य व प्रबुद्ध नागरिक तथा भक्त भावुक उपस्थित थे। इन्हीं में श्री सीमेन्ट वाले श्री हरिमोहन बांगड़ भी थे। भव्य अगवानी जलूस के साथ पूज्यश्री साल्टलेक विधाननगर पधारे, जहां आप का विराजना हुआ। यहां से आप की कई भक्त भावुक श्रद्धालुओं के यहां पधारावनी हुई, अनेक भक्तजन आप के आशीर्वाद कृपा से कृतार्थ हुए।

इस अकिंचन के निमंत्रण आग्रह पर पधारकर पूज्यश्री ने जो कृपा वृष्टि की, वह मेरे परिवार का अहोभाग्य है। आपश्री का आशीर्वाद हमें उत्तरोत्तर फल रहा है। आपश्री की कृपा से मैं कटे व्यावसायिक सामाजिक प्रवृत्तियों में जुटा हूँ और सन्तोष का अनुभव करता हूँ।

आशुतोष चौधरी एवेन्यू,
बालीगंज, कोलकाता-19

ब्रज की अनुपम रजरेणु में अनवरत लुण्ठित होने वाले वे ब्रजवासी परम धन्य-धन्य एवं सौभाग्यशाली हैं।

—श्री श्रीजी महाराज

श्री सर्वेश्वरो विजयते

आपश्री का स्मरण और मेरी सफलता

(एक संस्मरण)

—गोविन्ददास वैष्णव

अनन्तश्रीविभूषित करुणावरुणालय जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज के गुण-गणार्णव का वर्णन करने में मैं समर्थ नहीं हूँ। बाल्यकाल से आपके सान्निध्य में रहा हूँ और आज तक भी हूँ। आप ही के द्वारा मंदिर श्री युगलकिशोर जी फतहगढ़ का पुजारी हूँ और मन्दिर आपके द्वारा ही संचालित है। आपकी दयालुता, उदारता प्रेम मेरे हृदय को आप्लावित कर देता है। मेरी जीवन नौका डूबने वाली थी, जिसको आपने अपनी कृपा की बल्ली लगाकर तार ही नहीं दिया, पूरे क्षेत्र में जहाँ भी गया, सम्मानित कर दिया। मैं सदा के लिये आपका गुण-गान भी हृदय से करता हूँ और इस भजन में मेरे स्वयं के उद्गार हैं। अवलोकन करें, थोड़ा सा संकेत :– **हे धर्मक्षेत्र के कर्णधार 'निम्बार्काचार्यं नमाम्यहम्।'**

निरन्तर मैं हृदय से आपका यशोगान करता हूँ। ध्यान तो चलते, फिरते, उठते, बैठते अनवरत चलता है। मेरी अध्ययनकाल में एक दो त्रुटियाँ भी हुई, उनकी आपने मेरी प्रशंसा करते हुए क्षमा कर दी और मैं भी सर्वेश्वर भगवान् को साक्षी करके कहता हूँ कि मेरी आत्मा आपके दर्शन वार्तालाप से कभी तृप्त नहीं हुई। मेरा कोई कार्य असम्भव मानकर हताश हो जाता हूँ तो ज्योंही आपका ध्यान करता हूँ तो वह कार्य एक दो दिन के अन्तराल में होता हुआ देखता हूँ। यह आपके स्मरण का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ।

मन्दिर श्री युगल किशोरजी का
मु.पो. फतहगढ़,
अजमेर (राजस्थान)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

— जगन्नियन्ता श्रीसर्वेश्वर जो दीन हैं, सरल हैं, दम्भ रहित होकर सत्कर्म में प्रवृत्त हैं, उन प्राणियों को अपनी अहैतुकी कृपावृष्टि से अभिसिञ्चित कर उन्हें आनन्दसुधा रस का दिव्य आस्वादन प्रदान कर परितृप्त करते हैं।

— कृपामय प्रभु अभिमान युक्त प्राणी को कभी भी अपने कृपा कटाक्ष से नहीं निहारते।

— सदा दीन बनकर अपने परमाराध्य के चिन्तन में अग्रसर हों।

— श्रीहरि केवल विशुद्ध दैन्यभावयुक्त भक्ति ही चाहते हैं।

पूज्य आचार्यश्री का शिक्षा प्रेम

— ब्रजकिशोर त्रिपाठी

इस धरातल पर जब-जब भी किसी प्रकार की विकृति आती है, तो सर्वनियन्ता श्री सर्वेश्वर प्रभु स्वयं यहाँ अवतरित होकर अपने ही नित्य-दिव्य पार्षदों को अथवा किसी न किसी रूप में इस भूतल पर महापुरुष के रूप में सम्प्रेषित करते हैं, जिससे कि उन विकृतियों का परिहार एवं वैदिक सनातन वैष्णवता का प्रचार प्रसार हो सके। ऐसे ही महापुरुषों में परमपूज्य प्रातःस्मरणीय अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ है।

आपश्री का शिक्षा के प्रति अगाध प्रेम एवं निष्ठा सदैव रही है और उसी का सुपरिणाम है कि आचार्य पीठ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृत विद्यालय, वेद विद्यालय एवं भारतीय शिक्षा पद्धति पर आधारित नन्हें मुन्ने बाल-गोपालों के लिए शिक्षण संस्थान संचालित हो रहे हैं। उक्त विद्यालयों में अध्ययन कर छात्र स्वजीवन को भारतीयता से ओत-प्रोत हो,भारत के नव-निर्माण में सहयोग प्रदान कर देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। वृन्दावन में यमुना पुलिन पर स्थित **श्रीनिम्बार्क शिशु मन्दिर** आपश्री की ही देन है, जिसमें ब्रजवासियों के बालक शिक्षा प्राप्त कर निज जीवन को धन्य कर रहे हैं। आपश्री के आशीर्वाद से ही विद्यालय नगर के समस्त शिक्षण संस्थानों में श्रेष्ठ स्थान पर है।

छात्रों के समुचित विकास को ध्यान में रखते हुए उनके जीवन को सरस, मधुर एवं सर्वतोभावेन संस्कार-क्षम बनाने हेतु आचार्यश्री ने अपने करकमलों से **''छात्र विवेक दर्शन''** ग्रन्थ की रचना की है, जो दोहों में निबद्ध है। जिसके अनुशीलन से छात्रों में भक्ति भावना, राष्ट्र प्रेम, नैतिकता, मातृभूमि के प्रति निष्ठा, सत्यनिष्ठा, विश्व-बन्धुत्व की भावना जैसे अनेकानेक गुणों का समावेश स्वतः ही होता है।

पूज्य आचार्यश्री द्वारा रचित ग्रन्थ **''भारत कल्पतरु''** सम्पूर्ण जनमानस के लिए प्रेरणाप्रद है। आपश्री ने उक्त ग्रन्थ में भारत की महिमा का बड़ा ही मधुर गान पदों के माध्यम से किया है, जो शिक्षा जगत् के लिए अनुपम कृति है, जिसके अनुशीलन, पठन, पाठन से हृदय में इस परम पवित्र भारत के प्रति निष्ठा, प्रेम की भावना सहज ही जागृत होती है। भारत महिमा का एक पद द्रष्टव्य है—

भारत वास महा सुखदाई।
बहुविध तीरथ धाम यहीं पर, फिर क्यों धावत देश पराई।
निरमल गंगा-यमुना-सरयू, धारा अविरल बहत भराई।
शरण सदा राधा सर्वेश्वर विमल सुयश अति नहि वरनाई॥

आपश्री के द्वारा गद्यात्मक पद्यात्मक 34 ग्रंथों की रचना अब तक हुई है, जो शिक्षा जगत् के

लिए परम उपादेय है। अनुपम कृतियों से आज केवल शिक्षा जगत् ही नहीं, अपितु समस्त भक्त परिकर भी अध्ययन कर अपने जीवन को धन्य कर रहे हैं।

आज पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से हमारा समाज विकृत हो रहा है। हम अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति के चकाचौंध से हम अपने स्वत्व को भूल चुके हैं। अपने मार्ग से भटक रहे हैं। इस भटके हुए समाज को सांस्कृतिक प्रदूषण और भी विकृत करने में सहायक बन रहा है। यदि हम विचार करें तो समझ में आता है कि पूज्य आचार्यश्री के द्वारा रचित ग्रन्थों से ''पहले हम क्या थे'' यह सहज ही समझ आ जाता है। आपश्री का साहित्य विघटित समाज में समरसता स्थापित करने हेतु परम श्रेयस्कर है।

आपश्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व शिक्षा जगत् में शोध का विषय बन गया है। आपश्री के ग्रन्थों का आज राष्ट्रव्यापी प्रचार प्रसार हो रहा है। काव्यमयी वाणी लोगों में विशेष है। विद्यार्थियों में भारतीय गौरव, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को दृढ़मूल करने में सार्थक हो रही है। यह सब आपश्री के शिक्षाप्रेम का ही परिणाम है।

आपश्री के श्रीमुख से ललित पदावलियों का गायन (ऑडियो/वीडियो कैसेट्स) किसके मन को आह्लादित नहीं करता? श्रीयुगलस्तवविंशति का आपश्री ने प्रणयन किया है। उसका भावुक श्रद्धालु भगवद्भक्त जन इस ग्रन्थ के स्तवों द्वारा श्रीप्रभु की मधुर उपासना कर अपना परमहित करते हैं।

आपने भारत राष्ट्र की उन्नति का मूल बड़े ही सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है। आपश्री ने बताया है कि संगठन में अपार शक्तिं होती है। संगठन मानव मात्र में ही नहीं, अपितु पशुपक्षी, मधु मक्खियों, चेटी आदि सूक्ष्म जन्तुओं में भी पर्याप्त देखा जा सकता है। अतः विवेकशील मानव में संगठन नितान्त आवश्यक है।

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैः
विज्ञान-शौर्य-विभवादि-गुणैः समेतम्।।
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति सन्तः
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।

अर्थात् सन्तों ने बताया कि जीवन चाहे क्षणमात्र का ही क्यों न हो, विज्ञान, शौर्य आदि गुणों से युक्त जो जीवन जिया जाता है, वही वास्तव में जीवन है। अन्याय आदि से दूसरों का दिया हुआ खाकर हम लम्बा समय व्यतीत कर देते हैं।

समस्त गुणों का समावेश आपश्री के द्वारा रचित ग्रन्थों में देखने को मिलता है। आपके द्वारा सामयिक प्रेरणा प्राप्त होती है। आपके द्वारा रचित ''भारत-वीर-गौरव'' ग्रन्थ को पढ़ने मात्र से ही निरन्तर

राष्ट्ररक्षा में तत्पर वीरों एवं नवयुवकों के हृदयों में राष्ट्र रक्षा की भावना व नव जागृति एवं अद्भुत स्फूर्ति का प्रादुर्भाव होता है। देशप्रेम से प्रेरित यह अनूठा ग्रंथ हमारे लिए सदैव प्रेरणा स्रोत रहेगा।

आचार्यश्री के शिक्षा प्रेम का ही सुपरिणाम है कि हमें जीवन को सरस, मधुरातिमधुर, श्रेष्ठ, संस्कारों से युक्त, पुष्पित-पल्लवित करने हेतु धार्मिक, साहित्यिक, अनुपम शिक्षाप्रद ग्रंथों के रूप में जो थाती प्रदान की है, वह सर्वतोभावेन परमहितकारी है।

अतः परमपूज्य आचार्यश्री ने हम सब को जो भक्ति का मार्ग प्रदान किया है, उसी का अनुकरण कर हमें अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहिए। आपश्री का सत्साहित्य शिक्षा के प्रति प्रेम हम सभी के लिए पाथेय सिद्ध हो रहा है और सदैव दिगदिगन्त को आलोकित करता रहेगा।

प्रधानाचार्य, श्रीनिम्बार्क शिशु मन्दिर
जूनियर हाईस्कूल, वृन्दावन

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा-संस्मरण ❊

महाराजश्री राधोगढ़ (मध्यप्रदेश) नरेश के सश्रद्ध आमंत्रण पर राधोगढ़ पधारे थे। राधोगढ़ नरेश ने पूज्यश्री श्रीजी महाराज की भव्य शोभायात्रा के साथ अगवानी की और पूज्यश्री की पधरावनी पर सपरिवार सेवा आवभगत की और मंत्र दीक्षा भी ली। राधोगढ़ के पास ही बजरंगगढ़ स्थान है, जहाँ पर निम्बार्क सम्प्रदाय के भव्य दिव्य दर्शनीय स्थल हैं। राधोगढ़ से पूज्यश्री निम्बार्क सम्प्रदाय के स्थलों के दर्शनार्थ बजरंगगढ़ पधारे। बजरंगगढ़ में एक मुसलमान भक्त आपश्री की पधरावनी के समय आया और दण्डवत् करके आपश्री के सेवा परिकर के साथ हो गया और जहाँ-जहाँ भी आपश्री चरण पादुका उतारते तो वह उनकी चरण पादुका को एक तरफ ऊँचे स्थान पर रखता और जैसे ही आपश्री वापस पधारते वह उन्हें चरण-पादुका धारण करवाता। आपश्री ने देखा कि वह सेवा-भाव से इतना भावविह्वल हो गया कि उसकी आंखों में अश्रुधारा आ रही थी। पूज्यश्री ने कहा हम उसकी (मुसलमान भक्त की) भाव विह्वलता से प्रभावित हुए।

पूज्य आचार्यश्री का संस्कृत प्रेम

— पं. प्रभुलाल शास्त्री

घटना हमारे विद्यार्थिकाल की है। जब मैं श्री रमा-वैकुण्ठ संस्कृत महाविद्यालय पुष्कर में उपाध्याय द्वितीय वर्ष में पढ़ता था, कुछ छात्रों ने महाराजश्री के दर्शन की योजना बनाई, क्योंकि आपश्री की कीर्ति सुनकर कर्ण तो तृप्त थे, पर आंखें तृप्त नहीं थी। महाराजश्री के संबन्ध में हमने बहुत कुछ सुन रखा था। किसी ने कहा– 'महाराजश्री बहुत सरल स्वभाव के हैं'। किसी ने कहा– 'विद्यार्थियों से अत्यधिक स्नेह करते हैं'। किसी ने कहा– 'आचार्यश्री की पावन-सन्निधि में बैठने पर जो आनन्द मिलता है, वह वर्णनातीत है'। किसी ने 'प्रभावोत्पादक प्रवचन शैली' के संबन्ध में कहा। हमारे प्राचार्यजी भी महाराजश्री के संतत्व साधु स्वभाव एवं वैदुष्य की मुक्तकंठ से प्रशंसा किया करते थे। एक दो भक्त भी समीप बैठे थे। हमने जाकर साष्टांग प्रणाम किया और महाराजश्री के सम्मुख बैठ गये।

परिचयादि पूछने के अनन्तर महाराजश्री ने हमसे पूछा– 'इस वाक्य की संस्कृत बनाओ'। वाक्य था– ''जल पिलवाओ''। पुनः महाराजश्री ने कहा– ध्यान देना, जल पिलाओ नहीं, अपितु 'जल पिलवाओ'' की संस्कृत बनाना है।

हम एक दूसरे का मुंह देखने लगे। हमारे में से किसी ने भी इस वाक्य की संस्कृत नहीं बनाई। क्योंकि उस समय हमारा व्याकरण ज्ञान प्रौढ़ नहीं था। महाराजश्री के परीक्षण में हम असफल ठहरे। मन्द मुस्कान के साथ शरमाते हुए हम महाविद्यालय गये, वहाँ जाकर इस प्रसंग की चर्चा हमारे प्राचार्य चरणों से की, उस समय प्राचार्य स्वनामधन्य श्री दामोदरजी शास्त्री थे। उन्होंने कहा– 'विद्यालय की हंसी कराते हो' का उल्हाना देते हुए प्रेरणार्थक धातुओं का ज्ञान कराया।

ऐसा है महाराजश्री का संस्कृत प्रेम, स्नेह सरिता से आपूर्यमाण हृदय में छात्रों के प्रति वात्सल्य भाव और वह भी संस्कृत शिक्षा से ओत प्रोत। यह घटना आज भी स्मृति पटल पर अंकित है और आचार्यश्री के संस्कृत शिक्षा प्रेम की उदात्त भावना को उजागर करती है।

''कोई विरला ही धर्माचार्य होगा, जो अल्प वयस्क बालकों के साथ मनोविनोदी वार्ता करते हुए कर्तव्य बोध भी करा दे।''

वस्तुतः आचार्यश्री इस युग की दिव्यविभूति हैं। आपश्री की सारस्वत-साधना सरस्वती समुपासकों के लिए सदा-सर्वदा संस्मरणीय रहेगी।

श्री उम्मेद मिल्स, पाली (राजस्थान)

श्री वृन्दावन-धाम एवं श्री-धाम के प्रति आचार्यश्री की निष्ठा

—स्वामी फूलडोलबिहारीदास आचार्य

श्रीधाम वृन्दावन भगवान् की रमण स्थली है। प्रेम स्वयं परमात्मा हैं और वृन्दावन धाम स्वयं प्रियाप्रियतम का प्रेम स्वरूप है। यहाँ की एक-एक रज प्रेमरस, मधुररस से सिञ्चित है।

यहाँ की भूमि अलौकिक चिन्तामणि है। यहाँ की धरती अनुरागवती है। प्रेम की धरती पर धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष तुच्छ हैं।

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च।।

श्रीधाम वृन्दावन बड़ा ही सुन्दर वन है। चाहे कोई भी ऋतु हो, वहाँ सुख ही सुख है। तभी तो गोकुलवासी विषाद योग में श्रीधाम वृन्दावन को याद करते हैं–

वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम्।
गोपगोपीगवां सेव्यं पुण्याद्रि-तृण-वीरुधम्।। भाग. 10/11

श्रीधाम वृन्दावन का संयोग पाकर श्रीकृष्ण व बलराम के हृदय में प्रीति उदय भयी,

वृन्दावन, गोवर्धन यमुना-पुलिनानि च।
वीक्ष्यासीदुत्तमा प्रीतिः राममाधवयोर्नृपः।।

श्री उद्धवजी वृष्णिवंशियों में एक प्रधान पुरुष थे। वे साक्षात् बृहस्पतिजी के शिष्य और परम बुद्धिमान् थे। उनकी महिमा के सम्बन्ध में इससे बढ़कर और कौनसी बात कही जा सकती है कि वे भगवान् श्रीकृष्ण के प्यारे सखा थे। सखा ही नहीं, श्रीकृष्ण के महामन्त्री भी थे। श्री उद्धवजी श्रीधाम वृन्दावन, जहाँ श्री भक्ति सदा नृत्य करती रही है। उन श्री किशोरी श्री दिव्य धाम वृन्दावन का संयोग पाकर श्री उद्धव लालसा करते हैं कि –

"आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां
श्री वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।"

मेरे लिये तो सबसे अच्छी बात यही होगी कि मैं इस वृन्दान धाम में कोई झाड़ी, लता अथवा औषधि-जड़ी-बूटी ही बन जाऊँ। अहा! यदि मैं ऐसा बन जाऊँगा, तो मुझे इन व्रजाङ्गनाओं की चरण धूलि नित्य निरन्तर सेवन करने के लिए मिलती रहेगी।

वर्तमान अनन्तश्रीविभूषित अ.भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वर

शरणदेवाचार्यजी महाराज आद्याचार्य श्री निम्बार्क भगवान् के द्वारा परम्परा से प्राप्त श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् की परमोज्ज्वल श्री युगलप्रियालालजी की उपासना एवं सिद्धान्तों का निष्ठा, त्याग-वैराग्य, भजनपूजन का परमादर्शमयी जीवन वेदादि शास्त्रों के सिद्धान्तानुसार सदाचार की सर्वाधिक मुख्यता सरस उपदेशों से निजाश्रितों को सत्य सनातन धर्म-परिबोध कराते हुए इस वसुधा पर प्रचार-प्रसार करते हुए आचार्य गद्दी को गौरवान्वित कर रहे हैं।

पूज्य आचार्यश्री का जब श्रीधाम वृन्दावन में आगमन होता है, आचार्यश्री श्रीधाम वृन्दावन के सीमा के बाहर ही वाहन त्याग कर आचार्य-संहिता का जिस तरह पालन करते हैं, अन्य किन्हीं आचार्य या जगद्गुरु में ऐसी धामनिष्ठा देखने को नहीं मिलती है। आचार्यश्री श्रीकृष्ण की भाँति अपने परिकरों के साथ चिलचिलाती धूप में जब पद रखने में तपन होता हो, वे स्वयं जीवन्मुक्त होते हुए भी लोक कल्याणार्थ साधना में प्रवृत्त होते हैं। केवल श्रीधाम वृन्दावन की बात छोड़ें, जब आचार्यश्री हरिद्वार के महाकुम्भ में भीष्म गर्मी में पैर जलने लगता हो, जब श्रीमहन्त सिंहासन लगाकर ऊँचे होदे पर बैठते हैं, तब उस भीष्म गर्मी में नंगे पैर महाराजश्री चलते हैं, उज्जैन की गर्मी हो, चाहे नासिक का भीष्म वर्षाकाल हो, अथवा प्रयाग की महाभीष्म सर्दी हो।

महाराजश्री श्रीजी को देख कर सभी धामों के प्रति अपार निष्ठा की अनुभूति होती है। श्रीमद्भगवद् गीता में श्रीकृष्ण के वचन स्मरणीय हैं–

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदा।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।।2-14
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
सम-दुःख-सुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते।।2-15

उनकी यह आचार्य-संहिता सदाचार का उद्देश्य, मानव को प्रेम-सुधा का पान कराकर परमानन्द की प्राप्ति कराना होता है। आचार्यश्री जब श्री राधासर्वेश्वर भगवान् श्री प्रियालालजी के आगे समाधिस्थ हो, प्रत्येक "श्री युगलनाम का कीर्त्तन" "मदन गोपाल शरण तेरी आयो" जब स्वर की झडी लगाते हैं तो सभी समाधिस्थ हो जाते हैं। उनकी दृष्टि-वाणी-प्रेम-करुणा एवं आनन्द से परिपूर्ण होती है। यह सौभाग्य श्रीदास को हमेशा तो नहीं, यदा कदा देखने को मिला, उनके निकट आने वाले प्राणी उनके सहज आकर्षण से प्रभावित हो, उनके श्री चरणों में समर्पित हो जाते हैं।

प्रातःस्मरणीय सदाचार सम्पन्न, अत्र-परत्र एवं सर्वत्र सुख समृद्धि का अनुभव करते हुए, समादर, श्रद्धा-भाजन अर्चनीय, अभिवन्दनीय एवं अवधारणीय श्रीमद् निखिल-महीमण्डलाचार्य सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र-यतिपतिदिनेश, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री "श्रीजी" श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के श्रद्धा और विश्वास के अक्षर पुष्पगुच्छ रूप में स्वीकार करें।

माध्वगौडेश्वर, चैतन्य कुटी
पानीघाट, वृन्दावन धाम

आचार्यश्री की धाम-निष्ठा

— आचार्यश्रीनरेशनारायण

नाम-निष्ठा और धाम-निष्ठा दोनों ही भक्ति मार्ग के प्रमुख अंग हैं। नवधा भक्ति के प्रसंग में नाम निष्ठा पर विशेष जोर दिया गया है। नाम और नामी में अभेद सम्बन्ध रहता है। इसीलिए भक्तजन निरन्तर नाम जप करते रहते हैं। नाम जपके प्रभाव से नामी श्रीयुगलसरकार श्रीराधासर्वेश्वर राधामाधव साक्षात् प्रकट होकर दर्शनों का लाभ प्रदान करते हैं।

प्रिया-प्रियतम श्रीराधाकृष्ण की निकुंज लीलाओं की पावन भूमि श्रीधाम वृन्दावन का वैभव भी उन्हीं के जैसा श्रेष्ठ है। तभी तो सुकृतिजन इस पावन व्रजरेणु के संस्पर्श के लिये लालायित रहते हैं। बड़े-बड़े ऋषिमुनि ही नहीं, स्वयम् भक्ति देवी भी यहाँ आकर उन्मुक्त हो नृत्य करने लगती है। श्रीमद्भागवतजी के माहात्म्य में लिखा है—

धन्यम् वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च।

व्रज के इसी आनन्द से अभिभूत होकर श्रीरामानुज सम्प्रदाय के महान् संत श्रीकुरेशस्वामीजी महाराज अपनी रचना पंचस्तवी में लिखते हैं—

गोवर्द्धनो गिरिवरो, यमुना नदी सा
वृन्दावनं च मथुरा च पुरी पुराणी।
अद्यापि हन्त सुलभाः कृतिनां जनाना–
मेते भवच्चरणचारजुषः प्रदेशाः॥

आपके सरस चरण कमलों से परम पवित्र यह श्रीगोवर्धन, श्रीयमुना नदी, श्रीवृन्दावन धाम आज भी पुण्यात्मा जनों को ही सुलभ होता है।

ऐसे दिव्य वृन्दावन के प्रति सरसजनों की निष्ठा भी दर्शनीय-वन्दनीय एवं स्मरणीय है।

लगभग 20 वर्ष पूर्व की एक मधुर स्मृति के आधार पर मैं यह मुक्त कंठ से कह सकता हूँ कि **अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्रीश्रीजी महाराज** की श्रीधाम वृन्दावन निष्ठा अद्वितीय है।

मध्याह्न के लगभग 12 बज रहे थे। मेरे पूज्य पिताश्री (पं. श्री केशवदेवजी शास्त्री-संपादक 'अनन्त-संदेश', वृन्दावन) ने घर में आकर कहा-अभी अभी श्रीजी महाराज वृन्दावन प्रवेश कर रहे हैं। कितनी भीषण गर्मी है। वे बिना कुछ पैरों में पहने पैदल अटल्ला चुंगी से अपनी कुंज तक आते हैं। उनके द्वारा ऐसा सुनकर मेरे बाल मन में ऐसा कौतुहल उत्पन्न हुआ कि मैं भी तुरन्त घर से दौड़कर उनके दर्शन करने

बाजार की तरफ गया। वृन्दावन के प्रताप बाजार से और पहले मथुरा गेट पुलिस चौकी के पास मैंने देखा प्रचुर भक्त मण्डली के मध्य बड़े प्रसन्नभाव से बड़ी मंद गति से एक दिव्य महापुरुष चले आ रहे हैं। गौर वर्ण, उन्नत ललाट, चन्दन चर्चित भाल, बिखरी हुई काली-काली अलकावली, गले में पुष्पमाला, श्वेत वस्त्र धारण किये हुये। छत्र, छड़ी, चमर लिये सेवक मर्यादानुसार साथ चल रहे थे।

संकीर्तन की मधुर ध्वनि वातावरण को और दिव्य बना रही थी—

सभी दर्शनार्थियों को अपनी दिव्य दृष्टि से आप्लावित करते हुये वे चले जा रहे हैं। यह सब देखते हुए फिर मेरी दृष्टि उनके चरणकमलों पर गयी। निश्चित ही कमलवत् उनके चरण उस तपती उष्णता से विचलित न होते हुये व्रजरज के आनन्द का अनुभव कर रहे थे। तभी मैंने भी नंगे पैर खड़े होकर उस गर्मी का अनुभव किया, यह मेरे लिये असहनीय था। यह देख मेरा मन उनके प्रति विनम्रता से नतमस्तक हो गया। धन्य हैं श्रीजी महाराज का वृन्दावन अनुराग। ऐसा दिव्य भाव श्रीधाम वृन्दावन के प्रति, उनकी धाम-निष्ठा का महत्वपूर्ण पक्ष है।

श्रीमद्भागवत में श्रीशुकदेवजी महाराज कहते हैं—

वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः।
यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयम्॥ (10-47)

इस श्लोक को अपने जीवन में चरितार्थ श्री श्रीजी महाराज ही करते हैं।

श्रीधाम वृन्दावन के प्रति निष्ठावान् ऐसे परम तपस्वी संत का सान्निध्य हम व्रजवासियों को प्राप्त होता चला आ रहा है।

सभी सुविधाओं के होते हुए भी व्रज सीमा पर उतरकर नतमस्तक हो श्रीव्रजरज को मस्तक पर धारण कर बिना पादत्राण के व्रज में भ्रमण करना व्रज के प्रति उनकी दिव्य निष्ठा है।

(प्रधान संपादक)
'अनन्त-सन्देश' मासिक पत्रिका
श्रीधाम वृन्दावन

श्री श्रीजी वचनामृतम्

* *भक्तजनों को सदा इस सर्वश्रेष्ठ दैन्य भाव का आश्रय लेकर अपने प्रेमास्पद के आराधन में संलग्न रहना चाहिए।*
* *वह श्वपच जिसके द्वारा मन, वचन, कर्म, धन एवं प्राण ये सभी श्रीप्रभु के समर्पित है, वह श्वपच अपने कुल को भी पवित्र बना देता है।*
* *मानव को श्रीभगवद्भक्ति रस सिन्धु में अवगाहन कर अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहिये।*

संस्मरण : स्मृतियों के गवाक्ष में

— महन्त श्री गोपालदास शास्त्री

आचार्य-पीठ से जब जब श्री वृन्दावन पधारना हुआ ज्यों ही वृन्दावन की परिधि आने से पहले ही आपश्री बिना खड़ाऊ के नंगे चरणों से चलते हैं। आपश्री की श्रीधाम वृन्दावन के प्रति कितनी निष्ठा है, यह देखते ही बनती है। वर्णन करने में नहीं आती। बचपन से ही आचार्यश्री के चरणों में रहने का सौभाग्य सम्प्राप्त हुआ। एक बार वृन्दावन यात्रा में चल रहे थे कि अचानक ड्राईवर पदमसिंह ने कहा कि गाड़ी में दुर्गन्ध आ रही है तो गाड़ी रोक दी और जब गाड़ी का बोनट खोला तो सब क्या देखते हैं कि गाड़ी के इंजन में आग लग रही है, सब भौचक्के रह गये। अब क्या उपाय करें, किसी को कोई उपाय नहीं सूझा। उसी समय अधिकारी श्रीनरहरिदासजी ने अपना अचला खोलकर गाड़ी के इंजन पर फैंक दिया और उसी समय अग्नि बुझा दी गयी। अधिकारी श्री नरहरिदासजी एकमात्र कौपीन में रोड पर खड़े रहे। यह देखकर आचार्यश्री ने श्री अधिकारीजी की भूरि भूरि प्रशंसा की और नया अचला निकालकर दिया। आचार्यश्री को यह वृत्तान्त याद होगा।

एक समय श्रीवृन्दावन कुम्भ लगा था। प्रत्येक कुम्भों में **'निम्बार्क नगर'** लगता है। श्री वृन्दावन कुम्भ में सबसे श्रेष्ठ नगर अपना ही लगता है। सायं का समय था। सब ब्रजवासी कुम्भ मेले के दर्शन करते आ रहे थे। कुछ व्रजवासियों ने कहा कि श्रीजी महाराज के दर्शन कर लें तो सब चल पड़े निम्बार्क नगर की तरफ। कुछ ब्रजवासियों ने आचार्यश्री के दर्शन किये और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसी समूह में कुछ छोटे छोटे बच्चे थे। उन अबोध ग्वालों ने बड़े आश्चर्य से देखा और बोले अरे देखो देखो! चांदी के चबूतरे पर सोने को बाबाजी, मेरे को बड़ी हंसी आई। मैंने जाकर आचार्यश्री के चरणों में निवेदन किया कि व्रजवासी बालक ऐसे बोल रहे थे आपश्री को भी तनिक भी क्रोध नहीं आया और आप हंसने लगे।

एक समय प्रयाग में आचार्यश्री के महल में आग लग रही थी। इस समय सभामंच पर प्रवचन चल रहे थे। आपश्री की जाने की तैयारी चल रही थी। उसी समय आचार्यजी ने ही अग्नि को शांत किया। सभी आश्चर्य चकित रह गये।

एक बार आप स्नान करने के लिए बैठे, उस समय राधेश्याम बाबा, जो बिहार का था, आपश्री की सेवा करता था। राधेश्याम बाबा जब जल लेकर नहीं आया, आपश्री स्नानघर में बैठे रहे। कुछ समय बाद आया तो कुछ क्रोध आ गया और आपने कहा दुष्टचांडाल हम खडाऊ से मार देंगे। राधेश्याम जल को रख भागा। मैंने पूछा– बाबा क्या हुआ! अभी अभी क्रोध आ गया? कुछ समय बाद आचार्यश्री

ने बुलाया और राधेश्याम बाबा को समझाया, हम तुम पर क्रोध नहीं कर रहे थे, हमको जो क्रोध आ गया था वह चांडाल का स्वरूप होता है उस क्रोध चांडाल को कह रहे थे कि तू हठ जा। मैंने सुना और आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। आप कभी क्रोध नहीं करते और समझाने की शैली कैसी विचित्र है, वास्तव में महापुरुष हैं। उस समय मेरी अवस्था 15-16 वर्ष की थी।

एक समय हम प्रयाग कुम्भ में जा रहे थे, गाड़ी साथ में चल रही थी। प्रातः काल का समय था। प्रायः सभी परिकर शौचादि से निवृत्त होना चाहते थे और सबने जिज्ञासा व्यक्त की जै जै समय हो गया है, शौच आदि का, तो आपश्री ने कहलवाया कि कोई कुंआ हो तो देखो। सभी दोनों तरफ कुंआ देखने लगे, कुछ दूरी पर कुंआ नजर आया और गाड़ी रोक दी गयी। सभी अपने जल पात्र लेकर जाने लगे, आपश्री बैठे थे। मैंने कहा आपश्री तो अभी विराजमान हैं। आपश्री बोले– पुजारी स्नान करके आयेगा उसके बाद हम जायेंगे और बोले हमको बड़ी चिन्ता हो रही है कि आज क्या होगा? मैंने पूछा क्यों? आपश्री बोले– आज भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक कैसे होगा? क्यों गाय का दूध तो है ही नहीं। उस समय उस खेत का मालिक दूध लेकर आ गया और बोला मैं ये दूध बाजार में बेचने जा रहा था और मैंने देखा महात्मा लोग मेरे कुएं पर स्नान कर रहे हैं और प्रयाग कुम्भ में जा रहे हैं। क्यों नहीं, ये दूध महात्मा लोगों को दूं और लेकर जा रहा हूँ। आप दूध की चाय बनाओ, चाहे खीर बनाओ। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपश्री का कितना बड़ा चमत्कार है।

एक समय आपश्री अकेले महल में विराज रहे थे। आप को मैंने देखा कि आपश्रीमहल में अपने हाथ से सोहनी सेवा कर रहे थे।

भक्ति का दर्शन

श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100 वाँ जयन्ती महोत्सव के पावन अवसर पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। अति प्रसन्नता का विषय है और साथ ही इस महामहोत्सव के समय अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीजी महाराज के कर कमलों में एक अभिनन्दन-ग्रंथ समर्पित करने का जो भाव किया है, वह सम्मान सूचक एवं आदरणीय है(स्वरूपानुकूल) है। यह अनिवार्य है। पण्डितप्रवर श्री दयाशंकर जी शास्त्री शिक्षामंत्री व गुरुजी पण्डित प्रवर श्री वासुदेवशरण उपाध्यायजी सचिव आज दोनों महापुरुष आदरणीय हैं, जो इस पुनीत कार्य में अपना अमूल्य समय प्रदान कर आनन्द का अनुभव करेंगे।

मानवता को भक्ति के संस्कार देने के लिए आपश्री ने जो रचनायें की हैं, वह सदा ग्राह्य एवं मननीय हैं। भगवान् को पाने के लिए भक्ति अत्यन्त सरल एवं सरस मार्ग है। भक्ति के अनेक रूप हैं। इसमें भी वात्सल्य भक्ति का विशेष महत्त्व है। माँ का वात्सल्य पाने के लिए भगवान् श्री सर्वेश्वर निर्गुण से सगुण बनते है और निराकार से साकार बनते हैं।

भक्ति परमात्मा की आह्लादिनी शक्ति है। इसका मूर्तिमान् रूप श्रीराधाजी हैं। श्रीकृष्ण और राधा

एक ही तत्त्व है। कभी वह श्रीकृष्ण के रूप में दिखाई देता है और कभी राधा के रूप में। ये अनादि काल से सृष्टि में विहार करते आ रहे हैं। पर ''अनादि अनन्त विहार करें दोउ प्रियतम प्रिया में भई न चिन्हारी''। श्री जी के चरण-नख से प्रकाश की एक किरण निकली, वह श्रीकृष्ण के रूप में परिणत हो गई।

कोई साधक इन चरणों की आराधना कर ले तो, उसे गोलोक की प्राप्ति हो जाती है। जैसे जन लोक, तपोलोक, सत्यलोक, श्वेतदीप आदि लोक हैं, वैसे गोलोक भी है। गोः, प्रकाश की किरणों से व्याप्त जो लोक है, वही गोलोक है। यह विशुद्ध सत्त्व से बना है। इसके ऐश्वर्य का वर्णन नहीं किया जा सकता। यह पारिजात तथा कल्प वृक्षों से सुशोभित है। यहाँ शैलप्रस्थ नाम का एक पर्वत है। पचास करोड़ योजन उसका विस्तार है। उसी पर्वत पर गोलोक का रास मण्डल है। उसमें सहस्र कोटि रत्न जटित मण्डल बने हुए हैं। वे सब इन्द्रनील मणियों से सुशोभित हैं। जो नाना प्रकार के आभूषणों से अलंकृत हैं। इन भवनों के मध्य में भगवान् का महल है। जिनमें श्रीराधिकाजी भगवान् के बाएँ पार्श्व में युगल भाव से विराजमान होकर अपने भक्तों पर सदा अनुग्रह करती रहती हैं।

वायु के आधार पर स्थित गोलोक अत्यन्त सुन्दर है। उत्तमोत्तम रत्नों के कारण वह बड़ा अद्भुत है। राधाजी की प्रसन्नता के लिये और उनकी इच्छा के अनुसार इसका निर्माण हुआ है। ब्रह्माण्ड से बाहर या ऊपर इससे बढ़कर कोई लोक नहीं है। काल का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता है। इसके ऊपर सब शून्य है। बस यहीं तक सृष्टि का विस्तार है। भक्तों के लिए यही परमपद है। यहाँ आकर फिर लौटना नहीं पड़ता।

सांगानेर, भीलवाड़ा (राज.)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

– उन नित्य-निकुञ्ज रास-रसप्रदायक श्रीप्रियाप्रियतम प्रभु के शरणागत होकर नित्य निरन्तर नियमित रूप से उनका चिन्तन स्मरण करें।

– जब मनुष्य उनके शरणागत अनुगत हो जाता है, सर्वभावेन आत्म-समर्पण कर देता है तभी भक्तवत्सल, करुणावरुणालय श्री प्रभु स्वतः उसे अपनी कृपादृष्टि से सिञ्चित करके अपना लेते हैं।

– शरणागत महानुभावों की सर्वप्रकार से रक्षा के निमित्त सदा सर्वदा सन्नद्ध रहते हैं।

– यदि इस भवाब्धि से पार होना है तो एकमात्र गति श्रीयुग्मचरणारविन्दावलम्बन ही है।

– सत्य पालन से प्राणी सत्य स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर के अनिर्वचनीय दर्शन कर अपरिमित आनन्द सुधारस का पान कर परम तृप्त होता है।

– क्रोध प्राणीमात्र का सबसे बड़ा शत्रु है, इससे सभी विवेकहीन होकर अकरणीय अत्यन्त नीच कर्म के करने में भी नहीं हिचकिचाते।

परम-पूज्य महाराजश्री के अध्ययन कालीन कतिपय पावन संस्मरण

— पं. श्री वैद्यनाथ झा
राष्ट्रपति पुरस्कृत, पूर्व प्राचार्य

**वृन्दावने केशिघट्टे मन्त्रराज-प्रदायकम्।
आबालकृष्णरसिकं गुरुं वन्दे भगीरथम्।।**

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आगामी 20 नवम्बर 2004 ई. से सम्पन्न होने वाले आद्याचार्य भगवान् श्री निम्बार्क महामुनीन्द्र के 5100 वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आचार्यपीठ श्री निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के शुभावसर पर परमपूज्य वर्तमान श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज (श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी) के करकमलों में उनको महान् अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का आयोजन किया जा रहा है।

कहना न होगा, वैष्णव सम्प्रदाय ही नहीं, बल्कि उपलब्ध ब्रह्मसूत्र भाष्यकारों में सर्वप्राचीन निम्बार्क सम्प्रदाय में एक से एक दार्शनिक आचार्य, एक से एक रसिक सन्त आचार्य, एक से एक तपस्वी, चमत्कारी परम प्रतापी 'आचार्य हुए, जिनमें दार्शनिक आचार्यों में जगद्-विजयी केशवकाश्मीरिभट्टाचार्य, रसिकाचार्यों में जगद्गुरु श्री श्रीभट्टदेवाचार्य, प्रतापी चमत्कारी आचार्यों में जगद्गुरु श्री परशुरामदेवाचार्य तथा जगद्गुरु श्रीचतुर चिन्तामणि देवाचार्य आदि धर्माचार्य विख्यात आचार्य हुए। परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इतने सुदीर्घ काल से किसी भी परम प्रतापी आचार्य का आद्याचार्य सुदर्शनावतार श्री निम्बार्क महामुनीन्द्र की तपः स्थली एवं महाराष्ट्र प्रान्त में विराजमान उनकी जन्मस्थली वैदुर्यपत्तन (मूंगी पैठन) के उद्धार की ओर ध्यान नहीं गया। यह महान् सौभाग्य वर्तमान आचार्य महाराजश्री श्रीजी को ही प्राप्त हुआ, जो आपने आद्याचार्य के उक्त दोनों स्थलों में श्री गिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में विराजमान निम्बग्रामस्थ तपः स्थली एवं जन्मस्थान वैदुर्यपत्तन में श्री निम्बार्कभगवान् एवं उनके परमाराध्य श्रीराधामाधव युगल किशोर का दिव्य मन्दिर, गोशाला, संस्कृत- पाठशाला तथा औषधालय आदि परम परोपकारी संस्थाओं का निर्माण कर उक्त दोनों स्थानों को दिव्याति- दिव्य स्वरूप प्रदान किया। ये दोनों ऐतिहासिक कार्य साम्प्रदायिक जगत् में आचन्द्रदिवाकर महाराजश्री की कीर्ति पताका को विस्तारित करते रहेंगे।

इनके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारतवर्ष में घूम-घूम कर सम्प्रदाय का जितना प्रचार-प्रसार महाराजश्री ने किया, कुम्भों में श्रीनिम्बार्क नगर की स्थापना, आचार्यपीठ के दो-दो बार विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन, उक्त आयोजनों में सभी श्रीशंकराचार्यों तथा समस्त वैष्णवाचार्यों को एक मञ्च पर विराजमान कर जो सौहार्द, सामञ्जस्य तथा समन्वय-समता एवं सनातन धर्म की एकता का परिचय दिया, सभी

आचार्यों का समान रूप से सम्मान कर जो धार्मिक एकता, सहिष्णुता एवं उदारता का उदाहरण प्रस्तुत किया, महाराजश्री का उक्त कार्य केवल सम्प्रदाय से नहीं, वैष्णव जगत् के लिये ही नहीं, अपितु सनातन धर्म की समस्त शाखाओं के लिये अनुकरणीय तथा प्रेरक व प्रशंसनीय है।

मेरा सौभाग्य है कि ऐसे परम प्रतापी सन्त शिरोमणि, युगल प्रियाप्रीतम के अनन्य रसिक, रसिक-शेखर, शास्त्र-चूड़ामणि आचार्य-शिरोमणि महाराजश्री के पावन सान्निध्य में लगभग तीन साल तक निवास का सौभाग्य मिला।

बात सन् 1953 की है। उन दिनों में मैं श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, वृन्दावन के प्राचार्यपद पर कार्यरत था। सन् 50 ई. में मैं वृन्दावन आया था। उसी साल श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई थी। उन दिनों उक्त महाविद्यालय के प्रबन्धक ब्रह्मचारी श्री नन्दकुमारशरणजी महाराज थे। आप अखिल भारतीय श्री निम्बार्क महासभा के प्रधानमंत्री भी थे। उन्हीं दिनों श्रीवृन्दावन में श्री रामबाग के विद्वत् सम्मेलन में मेरा शास्त्रार्थ उन दिनों वृन्दावन के प्रसिद्ध वैयाकरण श्री माध्व गौड़ेश्वरआचार्यश्री रासबिहारीदासजी गोस्वामी से हुआ था। सभा में अर्थवत् सूत्र पर शास्त्रचर्चा हो रही थी। प्रसंगवश मैंने तत्सम्बन्धी कोई गूढ़ प्रश्न पूछ लिया। मैं उससे कुछ दिन पूर्व वाराणसी से पढ़कर वृन्दावन आया था। उन दिनों सारा व्याकरण मुझे कण्ठस्थ था। तब शास्त्रार्थ को ही सबकुछ समझ रहा था। व्याकरण के शास्त्रार्थ में एकदा महामहोपाध्याय श्री राजेश्वर शास्त्री द्रविड़ की अध्यक्षता में प्रातिपदिकार्थ सूत्र पर शास्त्रार्थ में विजय पुरस्कार मिल चुका था, परन्तु मेरे प्रश्नों का उन्होंने (श्री रासबिहारी गोस्वामीजी ने) उत्तर नहीं दिया। मध्यस्थ श्री रंगलक्ष्मी संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य पं. श्री सीताराम शास्त्रीजी थे, स्थानीय थे, मैं ही एक बाहर का था। सभी एक स्वर से मेरे प्रश्नों को झुठलाने लगे। बोले– प्रश्न असम्बद्ध है, ऐसा प्रश्न व्याकरण में नहीं बनता। तब मुझे आवेश आ गया। मैं बोला– 'आप सब लिखकर दीजिए कि ऐसा प्रश्न अनर्गल है। मैं काशी के विद्वानों से इस पर जानकारी प्राप्त करूँगा।' किसी ने कुछ भी लिखकर नहीं दिया। फलतः जनता को सत्य का परिज्ञान हो गया। सभी मेरी प्रशंसा करने लगे। यह समाचार वृन्दावन में सर्वत्र फैल गया। ब्रह्मचारीजी बड़े प्रसन्न हुए। संभवतः यह समाचार आचार्य पीठ तक पहुंच गया। अधिकारी श्री वियोगीजी को यह बात मालूम हो गई। महाराजश्री इससे कुछ दिन पूर्व वृन्दावन के उक्त गोस्वामीजी से व्याकरण पढ़ रहे थे– या कुछ पढ़कर छोड़ दिये थे। परंतु कुरुक्षेत्र के विराट् धर्म सम्मेलन के अवसर पर उक्त गोस्वामीजी का व्यवहार, जैसा मैंने कर्णपरम्परया सुना-महाराजश्री के सम्मान के विपरीत हो गया था, जिससे पीठ के अधिकारीगण एवं महाराजश्री भी अप्रसन्न थे। गोस्वामीजी से मेरे शास्त्रार्थ विषय का समाचार सुनकर अधिकारी श्री वियोगीविश्वेश्वरजी बहुत प्रसन्न हुए थे और तभी से मेरी ओर उनका आकर्षण हो गया था। वे चाहते थे कि किसी प्रकार मैं आचार्यपीठ आ जाऊँ और महाराजश्री को वेदान्त का अध्यापन कराऊँ। एतदर्थ उन्होंने ब्रह्मचारी श्री नन्दकुमारशरणजी को पत्र लिखा कि इनको किसी प्रकार आचार्यपीठ भेज दीजिये। ब्रह्मचारियों ने मुझे पत्र सुनाया। पर मेरा मन वृन्दावन छोड़कर अन्यत्र जाने को नहीं हो रहा था। परन्तु श्री ब्रह्मचारीजी ने मुझे

भेजा। सन् 53 ई. में मथुरा कैन्ट जाकर किशनगढ़ का टिकट कटाकर आचार्यपीठ के लिये गाड़ी पर बैठा आये और बोले किशनगढ़ में महाराजजी की एक बगीची है, जिसका नाम अभी स्मरण नहीं हो रहा है, वहाँ पहुंच जाना। वहां से 3 बजें सलेमाबाद के लिए गाड़ी मिलेगी। वह बस सीधे सलेमाबाद के आचार्यपीठ पर उतार देगी। मैं जब सबेरे किशनगढ़ उतरा। वहाँ मारवाड़ी रेगिस्तान का नजारा देखा। कहीं कोई पेड़ नहीं, छाया नहीं, चारों ओर सूना सूना सा नजर आया। सोचने लगा– भगवन् कहाँ आ गया? कहाँ बिहार का हरा-भरा वातावरण? कहाँ यह भयानक रेगिस्तानी दृश्य? ब्रह्मचारीजी ने मुझे कहाँ भेज दिया। मेरी अवस्था भी उन दिनों थोड़ी ही थी। लगभग 22-23 साल। दुःखी मन से बगीची गया। वहाँ स्नानादि करके बस की प्रतीक्षा करने लगा। ठीक 3 बजे सलेमाबाद के लिये बस आई, बस में बैठ गया। ठीक 6 बजे बस सलेमाबाद पहुंच गई। मन्दिर के पास ही बस रुक गई। मैं बस से उतर गया। मन्दिर देखकर ही मेरी आधी उदासीनता दूर हो गई और जब ऊपर चढ़कर महाराजश्री के महल में पहुंचा, पूज्य महाराजश्री के दर्शन किये, उनके मधुर मनोहर दिव्य सन्त स्वरूप का दर्शन कर तो सारी उदासीनता समाप्त हो गई। मन में अनिर्वचनीय शान्ति का अनुभव होने लगा। ऐसे दिव्य स्वरूप का मैंने अपने जीवन में कभी दर्शन नहीं किया था। हृदय में एक अपूर्व गौरव का अनुभव होने लगा। महाराजश्री ने थोड़ा कुशल-समाचार पूछ कर तुरन्त मेरे रहने की व्यवस्था करवा दी। अपने महल के पास में ही ऊपर एक कक्ष में सब व्यवस्था करवा दी। उस समय महाराजश्री ने मेरे प्रति कितनी आत्मीयता, कितना अपनत्व, कितना सौहार्द, कितना स्नेह तथा कितना मधुर व्यवहार दिखाया, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। प्रसाद की नीचे व्यवस्था थी- जहाँ सभी सन्त प्रसाद पाते थे। उन दिनों सलेमाबाद में साग सब्जी की बड़ी दुर्लभता थी। वहां कोई हरी सब्जी उन दिनों नहीं मिलती थी। केवल महाराजश्री के लिए जयपुर से हरी सब्जी मंगाई जाती थी। नीचे भोजन में दो तरह की रोटी एवं गुड़ मिला। मेथी का साग मिलता था। कहां मैं बिहार का रहने वाला। दाल-भात खाने वाला, जहाँ नाना प्रकार की साग-सब्जियाँ नित्य प्राप्त होती थीं। कहाँ उक्त प्रकार का भोजन? पर क्या किया जाय, वहाँ साग सब्जी मिलती ही नहीं थी। लाचारी थी। महाराजश्री को मालूम पड़ा तो महाराजश्री ने मेरे लिये ऊपर से साग सब्जी की व्यवस्था करवा दी, कितना अपार स्नेह था उन दिनों मेरे ऊपर महाराजश्री का वर्णन नहीं किया जा सकता।

वहाँ ऊपर में एक संस्कृत विद्यालय भी चलता था, जिसका नाम श्रीसर्वेश्वरसंस्कृत महाविद्यालय था, जिसके प्राचार्य पं. श्री सुरति झा जी थे। वे बड़े ही व्यावहारिक, चतुर पण्डित थे। वे विद्यालय में पढ़ाते भी थे और वहीं मन्दिर के भीतर एक पत्रालय (पोष्ट आफिस) सञ्चालन भी करते थे। महाराजश्री के खेती का काम भी देखते थे। सलेमाबाद ग्राम की पञ्चायत में भी भाग लेते थे। गाँववाले सभी उनको जानते थे। परन्तु मैं केवल ऊपर में ही महल में केवल महाराजश्री को वेदान्त तथा थोड़ा बहुत न्याय का अध्यापन कराता था। उस समय हम दोनों के अलावा कोई नहीं होता था। अध्यापन में सब बात खुलकर होती थी। महाराजश्री का स्वभाव बड़ा भोला था। अवस्था हमारी उनकी प्रायः बराबर की थी। सन्

1928 में मेरा जन्म वर्ष और महाराजश्री का भी वही जन्म वर्ष एवं इसलिये सब बात खुलकर होती थी। महाराजश्री को अध्ययन में बड़ी रुचि थी। महाराजश्री को न्याय एवं वेदान्त पढ़ने का बड़ा शौक था। न्याय में अवच्छेदकावच्छिन्न भाषा महाराजश्री को बड़ी प्रिय लगती थी। संस्कृत में बोलने तथा श्लोक रचना में बड़ी रुचि रहती थी। कभी-कभी अध्ययन के समय अन्यान्य प्रसंग भी आ जाते थे,जिनमें महाराजश्री की बड़ी रुचि रहती थी। विद्वानों की चर्चा महाराजश्री को बहुत भाती थी। महाराजश्री अपने प्रबन्धाधिकारी श्री वियोगीविश्वेश्वरजी का बहुत सम्मान करते थे और उनसे संकोच करते थे। वियोगीजी की महाराजश्री पर बड़ी निष्ठा थी, महान् स्नेह था। उनकी बड़ी लालसा रहती थी कि महाराजश्री महान् दार्शनिक विद्वान् बनें, कभी अध्ययन में प्रमाद न करें, व्यर्थ वार्तालाप न करें। इसकी हिदायत हमको देते रहते थे। कभी-कभी जब हम दोनों (महाराजश्री और मैं) अध्यापन के समय कोई अन्य वार्तालाप करते और यदि वियोगीजी आ जाते, तो महाराजश्री बोलते– ''पण्डितजी! पढ़ाइये, अधिकारीजी आ रहे हैं।'' तब हम अन्य वार्तालाप छोड़कर अध्ययन कार्य करने लगते। महाराजश्री के तत्कालीन वे सारी बातें– उनकी अध्ययन निष्ठा, संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम, संस्कृत विद्वानों के प्रति सम्मान का भाव तथा मेरे प्रति भाव मन विह्वल हो जाता है। महाराजश्री के तत्कालीन स्वभाव, मधुर व्यक्तित्व, आत्मीयता पूर्ण व्यवहार, उनका परम उच्च कोटिस्थ सन्त स्वरूप बरबस याद आती रहती है। आचार्य पीठ में महाराजश्री के सान्निध्य में मेरा तीन साल का प्रवास एवं महाराजश्री का मेरे प्रति स्नेहपूर्ण समादर का भाव जीवन में कभी भूल नहीं सकता।

महाराजश्री मेरी योग्यता से बहुत प्रसन्न रहा करते थे। मेरी जहाँ-तहाँ प्रशंसा करते। एक बार नीम के थाना स्थान का प्रसंग मुझे याद आ रहा है। महाराजश्री मारवाड़ के ही किसी स्थान-विशेष से आचार्य पीठ आ रहे थे। मार्ग में नीमकेथाना के पास या वहीं, (पूरा स्मरण नहीं आ रहा है क्योंकि पचास साल उस प्रसंग को हो गया है।) एक इण्टर कॉलेज आ गया था। वहाँ के अध्यापकों ने मार्ग में महाराजश्री को सविनय रोककर कॉलेज में कुछ देर रुक कर छात्रों को आशीर्वाद देने तथा वहाँ की भावुक जनता को अपने उपदेशामृत से अनुगृहीत करने की प्रार्थना की। समय न रहने पर भी महाराजश्री वहाँ की अपार जनता की प्रार्थना पर रुक गये। वहाँ महाराजश्री के लिए बड़ा ही दिव्य सिंहासन बनाया गया था। महाराजश्री के प्रवचन सुनने हेतु वहाँ अपार जनता की भीड़ थी। कॉलेज के सभी अध्यापक एवं सहस्राधिक छात्र सभा में उपस्थित थे। महाराजश्री जब सिंहासन पर विराजमान हो गये। उनका माल्यार्पण हुआ, स्वस्ति वाचन भी हो गया। तत्पश्चात् उसी महाविद्यालय का एक संस्कृत का अध्यापक, जो स्वभावतः आर्यसमाजी था, संस्कृत बोलने का उसका अच्छा अभ्यास था। खड़े होकर तीन चार ऊटपटांग आर्यसमाजी प्रश्न महाराजश्री से पूछ लिये और महाराजश्री को उन प्रश्नों का समाधान के लिये संस्कृत में प्रार्थना की। उस समय महाराजश्री के साथ पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी पञ्चतीर्थ वेदान्ताचार्य, पं. श्री मुरलीधरजी, प्रेमसरोवर वाले तथा हम थे। प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अधिकारी श्री व्रजबल्लभशरणजी खड़े हो गये। व्रजवल्लभशरणजी विद्वान् महान् थे- सम्प्रदाय के धुरंधर विद्वान् थे- इसमें कोई शक नहीं, परन्तु वे धीरे-

धीरे बोलते थे, मन्द-मन्द स्वर से बोलते थे- प्रतिपक्षी धारावाहिक संस्कृत में बोलता था, उच्च स्वर से बोलता था। उसके बोलने पर सभी तालियाँ पीटने लगते थे, जिससे श्रोताओं पर गलत प्रभाव पड़ रहा था। तब महाराजश्री ने मुझे बोलने के लिए संकेत किया और अधिकारीजी को बैठ जाने का संकेत दिया। मैं महाराजश्री की आज्ञा पर तुरन्त खड़ा हो गया। उन दिनों मुझे संस्कृत बोलने का बड़ा अच्छा अभ्यास था। आवाज भी ऊँची थी- फिर क्या था? मैंने उस धूर्त आर्यसमाजी पण्डित की धूर्तता का पर्दा फास करने एवं आचार्य पीठ की शोभा बढ़ाने के लिए जल्प एवं वितण्डा का आश्रय लेकर बोलना प्रारम्भ कर दिया। फिर तो बोलता ही गया, चुप हुआ ही नहीं। उसे बोलने का अवसर ही नहीं दिया। मेरी संस्कृत सुनकर तथा गर्जना भरे उत्तरों को सुनकर सभी छात्र एवं श्रोता उच्च स्वर से तालियाँ बजाने लगे। महाराजश्री भी मञ्च पर मुस्कराने लगे- श्रोता सभी आचार्यश्री की जय-जयकार करने लगे। आधे घंटे तक यह सिलसिला चलता रहा, फिर तो वह अध्यापक भी थोड़ा मान गया। आकर महाराजश्री को प्रणाम किया मुझे भी बहुत-बहुत धन्यंवाद दिया। इस घटना से महाराजश्री मुझ पर प्रसन्न हुए। वर्षों तक महाराजश्री इसकी चर्चा जहाँ तहाँ करते रहे।

इस तरह तीन साल तक मैं महाराजश्री के सान्निध्य में रहा, अत्यन्त सन्निकट रहा। उन्हें अध्यापन का सौभाग्य मिला, परन्तु ऐसी तपश्चर्या, ऐसी दिनचर्या, ऐसा आचार-विचार, ऐसी श्री सर्वेश्वर प्रभु की उपासना, नित्य युगलनाम संकीर्तन, स्वाध्याय निष्ठा, ऐसी श्रीराधामाधव युगलपरक, युगलप्रेमवर्धक ग्रन्थरचना में अहर्निश प्रवृत्ति अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली। महाराजश्री की प्रथम रचना, आद्याचार्य श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्र के परम प्रातः स्तव की दार्शनिक टीका मेरे कार्यकाल में हुई थी। इसके पश्चात् तो महाराजश्री ने अनेक पुस्तकों की रचना कर डाली है।

मैं श्री सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु प्रातःस्मरणीय पूज्य आचार्यश्री को शतायु रखे, निरामय रखें, ताकि महाराजश्री सुदीर्घ साल तक सनातन धर्म का जगत् में प्रचार प्रसार करते रहें। इति

श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय

वृन्दावन (मथुरा)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

श्रीराधासर्वेश्वर उन अनन्य शरणापन्न साधक-भक्तों को अपनी अहैतुकी कृपा-कादम्बिनी से अभिषिक्त करते हैं जिनका कि निर्मल पवित्रान्तःकरण दैन्यसारल्यादि सद्गुणों से ओत-प्रोत हो।

आचार्यश्री का वात्सल्य और दीनजन पर करुणा

— महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्री बालकदासजी महाराज

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो,
लोकत्रयेऽप्यप्रतिम - प्रभावः।।

परम पूज्य आचार्यचरण जब व्रज चौरासी कोस की पद यात्रा पर थे, दास को ज्ञात हुआ तो वृन्दावन जाकर आपश्री से भेंट की और कार्यक्रम की जानकारी लेकर पद यात्रा के समय फालैन में श्री गोपाल मन्दिर पधारने का निवेदन किया, आपश्री ने कृपापूर्वक मृदुमुस्कान के साथ स्वीकृति प्रदान की।

दिनांक 22.3.70 को पूज्यश्री श्री 'श्रीजी' महाराज, साधु-सन्त भक्त समुदाय के साथ व्रज पद यात्रा क्रम से शेष शाही से आगे फालैन की तरफ पधारे। श्री 'श्रीजी' महाराज के पद यात्रा क्रम से फालैन पधारने की चर्चा गाँव में हो चुकी थी। सब उत्सुकता से उस घड़ी की प्रतीक्षा में थे, जब श्रीजी महाराज गाँव में पधारे।

दिनांक 22.3.70 को बड़ी संख्या में ग्राम वासी और हम महाराजजी की अगवानी को गये। ढोल व गाने बाजे के साथ ग्रामवासी लोगों ने महाराजजी की अगवानी व स्वागत किया। संगी पदयात्रियों सहित महाराजश्री की उस दिन श्री गोपाल मन्दिर पधरावनी हुई। मैं बालकदास श्रीचरणों का पूजन कर कृतार्थ हुआ। इस अवसर पर पूज्य आचार्य चरण की एक दो अन्य भक्तों के यहाँ भी पधरावनी हुई।

अगला होली का दिन था। पूज्यचरण ने फालैन गाँव वासियों व हमारे निवेदन पर बरसाना, नन्दगांव या नील गांव न जाकर फालैन की प्रसिद्ध होली का फालैन में ही विराजते हुए अवलोकन किया। हमको तो महाराजश्री ने वात्सल्य भाव से प्रेम प्रदान किया ही, फालैन वासियों को भी अंतरगता प्रदान की।

दूसरी संस्मरणीय घटना आपश्री की दैविक विपदा से पीडित दीन जनों पर करुणा बरसाने की है। नीम-गांव के नवनिर्मित मन्दिर के पाटोत्सव का दूसरा या तीसरा वर्ष होगा। पाटोत्सव के महामहोत्सव पर पूज्य चरण श्री 'श्रीजी' महाराज नीम गांव पधारे थे। वार्तानुसार इस पाटोत्सव पर आपश्री की चरण सेवा में दास भी उपस्थित होने वाला था। हमें पाटोत्सव में नीम गांव जाना था। उसी दिन फालैन गांव में अग्निकांड हो गया। कई घर जल कर राख हो गये। बड़ी संख्या में मवेशी भी जल मरे। गांव में हा-हा कार मच गया था, सो उस दिन नीम गांव दास को जाने में विलम्ब हो गया। सो अपनत्व की भाषा में

उलाहना दिया– यह क्या इतनी देर से कैसे आये? दास ने दुःखी भाव से अग्निकाण्ड की वह घटना सुनाई। सुनते ही पूज्यश्री द्रवित हो गये। अपने परिकरों को बुलाया और कहा महात्माजी कहते हैं– फालैन में वीभत्स अग्निकांड हुआ, वे लोग आज कष्ट में हैं। हम अभी वहाँ जायेंगे और उसी समय महोत्सव के कार्यक्रम मध्य ही पूज्यश्री फालैन के लिए पधार आये। दास साथ था। रैगर कुमी छोटी बड़ी सब जातियों के घरों में जिनके आग लगी थी, सब परिवारों से जाकर मिले। फालैन वासी सब आपश्री से परिचित थे। सब आपश्री के पास एकत्रित हो गये। आपने सान्तवना दी और उसी समय चालीस हजार की रोकड़ी राशि और कपड़े पीड़ित परिवारों को उसी समय वितरित कराये और दास को आज्ञा प्रदान की। सब पीडित घरों को पांच-पांच मन (दो-दो कुण्टल) अन्न उपलब्ध करा दो। ऐसे करुण हृदय और दीन वत्सल हैं पूज्य श्रीजी महाराज।

पूज्य आचार्यवर्य श्री श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ दास आचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ पर उपस्थित हुआ। यह कोई दस ग्यारह वर्ष पूर्व की बात है। पूज्यश्री के चरण-वन्दन व दर्शन वार्तालाप में ही दास ने आपश्री के सामने अपना मनोरथ श्री गोपाल मन्दिर फालैन पर श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव व यज्ञ आयोजन सबन्धी रखा। आपश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। श्री भागवत कथा व यज्ञ आयोजन का समय निश्चित हो गया। पूज्यश्री को इस आयोजन में पधारने व अपने सान्निध्य में कार्य सम्पन्न कराने का निवेदन किया गया था, जिसकी स्वीकृति मिल गयी। पम्पलेट आदि प्रचार प्रसार कार्य व समारोह आयोजन की सभी व्यवस्थायें यथावत् जुट गई। बीच में किन्हीं ने आकर निम्बार्क तीर्थ आकर कहा कि यहां समारोह की कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है। सो निम्बार्क पीठ से चार पांच परिकर ही निश्चित दिन को नीमगांव पहुंचे। दास ने आपश्री के पधारने का जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन नीम गांव श्री बनवारीशरण को भेजा। वहां ज्ञात हुआ कि महात्मा माधव बाबा के साथ दो चार परिकर ही आचार्य पीठ से आये हैं। पूज्य श्री का आना नहीं हुआ।

दास को ज्ञात होते ही श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ आ गया। पूज्यश्री के चरण वन्दन करने के बाद दास ने आप से पधारने का आग्रह किया और बताया कि आयोजन की सारी व्यवस्था तैयारी भव्य रूप से जुट गई है। सब लोगों में आपश्री के दर्शन की अभिलाषा है। आपश्री के पदार्पण के समाचार से सभी अभिभूत थे। दास का गला भर आया, आंसू छलग गये और कह बैठा– आप भी नहीं पधारेंगे तो दास का भी जाना नहीं होगा। तत्काल आपश्री ने परिकरों को आज्ञा दी और फालैन महोत्सव आयोजन में पधारे। लाखों की संख्या में विशाल जन समूह आपश्री के दर्शन व चरण पूजन से लाभान्वित हुआ। समारोह आपश्री की कृपा से दिव्य रूप में सम्पन्न हुआ और दास पर आपश्री की कृपा के चर्चे सारे क्षेत्र में फैल गये। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की कई कृपा अनुभूतियाँ हैं। दास हृदय से आपके वात्सल्य पूर्ण स्नेह भाव का अनुभव करता है और निर्भय रहता है।

फालैन कोसीकलां, जिला-मथुरा
उ.प्र.

"परम पूज्य महाराजश्री कौ वात्सल्य"

— पं. शिवचरणलाल शास्त्री

वन्दे गुरूणां चरणारविन्दे, मद्दर्शितस्वात्म-सुखावबोधे।
निःश्रेयसे माङ्गलिकायमाने, संसार-हालाहलमोहशान्त्यै॥1॥
आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निज-बोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥2॥

या कलिकाल में हम जैसे पतित प्राणिन कौ कल्याण करिवे के तांई श्री करुणा-वरुणालय श्री सर्वेश्वर प्रभु शक्ति स्वरूप आपश्री कौ अवतार या भूतल पै महापुरुषन के रूप में अवतरित भयौ है। आपश्री के द्वारा सगरे भारतवर्ष में हूँ कहा, विदेशन में हूँ श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय कौ बडौ भारी प्रचार एवं वैष्णव धर्म की स्थापना करी गई है। जा सों सबही अज्ञानी लोगन नें श्रीमहाराजश्री की शरणागति पाय कैं अपने नश्वर जीवन कूं सफल बनायो है। आ हा- जै जै श्री की जीव मात्र पै कैसी कृपा वृष्टि होय है? ता कौ आनन्द ही अलौकिक है। मैं हूं एक ऐसो ही अज्ञानी दास हूँ, ताकूं श्री महाराज ने अपनी शरण में लेकर के वात्सल्य भाव सौ ओतप्रोत कर अनुगृहीत कर्यो है। इस परम कृपा कौ श्रेय हमारे पूज्य पिताश्री पं. मुरलीधरजी शास्त्री कथाव्यासजी कौ रहयौ है। चूंकि हमारे पिताश्री आचार्यपीठ में महाराजश्री की पवित्र सेवा में 50 वर्षन तक समर्पित रह कर धार्मिक कार्यन कौ सम्पादन करौ है। इन्हीं की कृपा सों ही हमारौ पूरौ परिवार हू महाराजश्री की शरणागति प्राप्त है।

आपश्री को गुण व भगवद् भक्ति-परायणता आदि शक्ति कौ वर्णन या सांसारिक प्राणी के बस की बात नाँय। चौ कि भगवान् के गुणानुवादन को वर्णन कोन कर सके है? मैं तो श्री राधासर्वेश्वर प्रभू सौं सदाँ यही विनती करु हूं कि या भूतल के प्राणिन कौ उद्धार करिवे के ताई स्वस्थ दीर्घायु दैवें। ता सौं हमारे नेत्रन कूं श्री चरणन कौ दर्शन सुख मिलतौ रहे। श्री सर्वेश्वर प्रभू सौ मेरी यही निरन्तर मंगल कामना है।

"कुर्वन्तु वो मंगलम्"

श्रीमत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रो भास्करवित्तपाल-वरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः।
प्रद्युम्नो नलकूबरो सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः
स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम्॥1॥

अर्थात्— श्री सर्वेश्वर प्रभु, ब्रह्मा, विष्णु और शिव, वायुदेव, देवराज इन्द्र तथा अग्निदेवता, चन्द्रदेवता, भगवान् सूर्य, धनाधिपति कुबेर, वरुणदेव, संयमनी पुरी के स्वामी यमराज, समस्त ग्रह मण्डल, श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न, नल और कूबर, ऐरावत हाथी, चिन्तामणि रत्न, कौस्तुभमणि, शक्ति कूं धारण करवे वारे स्वामी कार्तिकेय जी तथा हलायुध-बलराम जी ये सवरे देवता आपश्री कौ मंगल करें। इति शुभम्

(प्रेम सरोवर) बरसाना धाम,
व्रज मण्डल (मथुरा)

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा संस्मरण ❊

पूज्यश्री वृन्दावन शिवपुरी पधारे थे। यात्रा मोटर-गाड़ी से थी। शिवपुरी से कुछ पहले गाड़ी के ड्राईवर ने गाड़ी में तकनीकी खराबी होने की बात कही। रात्रि हो चली थी। अतः रास्ते में रुकना ठीक नहीं समझा गया, अतः गाड़ी चलती रही। रात्रि में देर से शिवपुरी पहुंचना हुआ। पूज्यश्री जिस जगह पर पधारे थे, उससे दूसरी तरफ मिस्त्री का कारखाना था। आपश्री के उतर जाने के बाद ड्राईवर गाड़ी को दिखााने व ठीक कराने हेतु मिस्त्री के पास ले गया। मिस्त्री ने गाड़ी को देखते ही आश्चर्यचकित होकर कहा ''यह गाड़ी यहाँ तक कैसे चल कर आ गई? ड्राईवर ने पूछा ''क्यों क्या बात है? तब उसने बताया कि इसकी टायर रॉड बिल्कुल जा चुकी है। फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि यह गाड़ी सही सलामत रास्ते पर चल कर आ गई, निश्चय ही यह तो कोई दिव्य प्रभाव है। फिर उसने पूछा कि यह गाड़ी किसकी है? और जब उसको ज्ञात हुआ कि यह पूज्यश्री श्रीजी महाराज की गाड़ी है तब उसने पूज्यश्री के पास आकर दण्डवत् किया और गाड़ी की स्टेरिंग के सही सलामती गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाने पर आपश्री के तप प्रभाव को ही विशेष माना। आपश्री से वह इतना प्रभावित हुआ कि वह आपश्री को अपने खेत के बगीचे में ले गया और वहाँ रहने ठहरने और सेवा पूजा के लिए सभी भोज सामग्री की व्यवस्था कराई व आपश्री की चरण पूजा की।

❊ ❊ ❊

पूज्य श्रीजी महाराज का बरेली पधारना हुआ था। तब मुन्ना मियाँ नाम के एक मुस्लिम भक्त आये और आपश्री की साष्टांग दण्डवत् करते हुए भावविह्वल व गदगद् हो गये और जोर-जोर से 'राधे-राधे' नाम का उच्चारण करने लगे। बरेली में जब जब जहाँ जहाँ पूज्य श्री गए, वे भक्त पूज्यश्री के सेवा परिकर में साथ रहे व इन्होंने पूज्यश्री की चरण पूजा भी की। इन्हीं (मुन्ना मियाँ) ने बाद में श्रीलक्ष्मीनारायण का मंदिर व हिन्दु संस्कृति शिक्षा आश्रम बनवाया, यह भी सुना जाता है।

महापुरुष की महत्ता

— परशुरामः

अनन्तश्रीविभूषित, विद्यातेजस्तपोमूर्ति, श्री राधामाधवचरणाम्बुजचञ्चरीक, विविधविधविद्यावारिधि, श्रीभगवन्निम्बार्क-सम्प्रदाय-सच्छास्त्रावगाहनानुसरण-प्रचारपुरोधा, सनातनधर्मसुदृढ़भवनस्तम्भायमान, परमकारुणिक, श्यामाश्याममय, दिव्यनिम्बार्कतिलकसुशोभित, देदीप्यमान भव्यभाल, दिगन्तव्याप्त कमनीयकीर्तिकान्ति-धवलितशुभ्रश्वेतवसन, अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक-आह्लादिनीशक्तिस्वरूपा श्रीराधाध्यानाधिगतमहामन्त्रमर्म, श्रद्धावनतसहस्रशः शिष्य-प्रशिष्य-प्रपूजितपादपद्म, परमपूज्य प्रातः स्मरणीय श्री ''श्रीजी'' महाराज के प्रथम चरणस्पर्श व दिव्यदर्शन मात्र से ही पहले कोई परिचय व सम्पर्क नहीं होने पर भी आपश्री ने इस अकिंचन को हृदय से अपनाया है। तब से अनवरत अहैतुकी ममतामयी कृपादृष्टि तथा समस्त शास्त्रसारस्वरूप सुमधुर दिव्यवचनों से विविध दुःखदावानल दंदग्धहृदय में शीतलता का संचार कर रहे हैं।

स्वयं समस्तसद्गुणगणगणिनिधान होते हुए भी सरल, सन्त स्वभाव से ''**परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं**'' इस नीति के अनुसार इस दासानुदास को प्रशंसापूर्वक हृदय से शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं, तब संकोचवश कोटिशः साष्टांग प्रणाम-पावित हृदय से यही आवाज निकलती है– ''**वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्**''।

कितनी पारिवारिक व सांसारिक परिस्थितियों में, विघ्नबाधाओं के आते रहने पर भी कंटकाकीर्ण पथ की पगडण्डी पर पगपग पर पछाड़ खाते रहने पर भी आपके स्नेहसिञ्चित शुभाशीर्वाद का संबल पाकर, अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का प्रयास करता हुआ यह जन सुखपूर्वक जीवन-यापन कर रहा है, यह आपका ही दिव्य प्रभाव है। ऐसे महामहिम महापुरुष के चरणों में अनन्त नमन।

ग्राम–कैराय (नागौर)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

अपने परमाराध्य श्रीराधासर्वेश्वर के युगल पाद पद्मों में अनन्य प्रपत्ति (शरणागति) पूर्वक निश्छल अनुराग रखता है तो वह बड़ी सरलता से अपने आराध्य का अनुग्रह भाजन बन सकता है।

सबसे सुलभ साधन महापुरुषों का सत्सङ्ग ही है। यदि साधक विनयावनत होकर उनकी सन्निधि में रह कर अपने आराध्य के पादपद्मों में सतत पराभक्ति का सेवन करे तो बिना प्रयास के अपने अभिप्रेत लक्ष्य की प्राप्ति सुकरता से कर सकता है।

भगवान् श्रीश्यामसुन्दर का जब प्राणी पर महान् अनुग्रह होता है, तभी वह सुरदुर्लभ इस मानव शरीर को प्राप्त करता है।

"महनीय चरिताः श्रीचरणा राजन्तां सततं मुदा"

— रामचन्द्र शास्त्री

भारत वसुन्धरा पर अनेक महाविभूतियों ने अपने आविर्भाव से स्वकल्याण के साथ जनकल्याण की स्वाभाविक मनोवृत्ति का दिग्दर्शन कराया है। उनकी इन पावन व कल्याणमयी प्रवृत्तियों से धार्मिक जगत् नितान्त आनन्दानुभूति कर रहा है।

ऐतिहासिक अजमेर मण्डल के निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) में जगद्गुरुचरण, निम्बार्काचार्य, पीठाधीश्वर आचार्यप्रवर, पूज्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी श्री श्रीजी महाराज अपने जीवन में धार्मिक कर्मठता की भूमिका गत 60 वर्षों से निभाते चले आ रहे हैं।

पूज्य आचार्यचरण के विद्या-व्यसन, महनीय चरित्र, अनुपम वाक् शैली व प्रौढ़पाण्डित्य से धर्मप्राण जनता नितान्त अभिभूत है।

मुझ अकिंचन पर भी वर्षों से आपकी सहृदयता का प्रतिबिम्ब झलकता है। यदा कदा अनेक धार्मिक आयोजनों, विद्वद्-गोष्ठियों व उपनिषद् चर्चाओं में इस सेवक के सर्वप्रथम देववाणी द्वारा कुछ निवेदन किये जाने का आदेश प्राप्त होता रहा है 'आज्ञा गुरूणां परिपालनीया' इस उक्ति के सन्दर्भ में मैंने भी निवेदन स्वीकार करते हुए अपने भाग्य को सराहा है। आपकी प्रवचन शैली से भर्तृहरि के वैराग्य शतक के एक पद्य का विवेचन दूरदर्शन के संस्कार चैनल पर सुनने का अवसर रामधाम पुष्कर में स्व. स्वामी विष्णुदासजी त्यागी की कुटिया में प्राप्त हुआ।

उसी व्याख्या से प्रभावित मैंने यह पद्य जीवन में कितनी परिवर्तित परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है, यह समझने का प्रयास किया। वह आकर्षक पद्य वैराग्य-शतक से इस प्रकार उद्धृत है—

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्,
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालोऽपि न ज्ञायते।
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते,
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्।।

क्षणिक सुख की आशा में भटकते हुए मानव के मार्गदर्शन हेतु इस उक्त प्रसंग के अतिरिक्त कल्याण का अन्य मार्ग नहीं है।

आपके द्वारा अनेक उपनिषदों व विद्वद् गोष्ठियों तथा धार्मिक अनुष्ठानों के पावन अवसर पर मुझ अकिंचन को भी शाल ओढ़ाकर सभाजित, सम्मानित व सत्कृत होने का अलभ्य लाभ मिला है। श्रीचरणों की इस अहैतुकी कृपा से स्वयं को गौरवान्वित समझता हूँ। सम्प्रदाय विशेष की पावन परम्परा को अक्षुण्ण बनाते हुए आप अपने कल्याणकारी उपदेश से लाभान्वित करते रहें। यही परम प्रभु श्री सर्वेश्वर भगवान् से आपके दीर्घायुष्य की कामना है। समस्त सद्भावनाओं सहित–

शास्त्री कॉलोनी, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष– 2622893

सद् गुरु रस की वर्षा कीन्हीं

— पं. रामस्वरूप गौड़, 'निम्बार्क भूषण'

हम माँ से श्री श्रीजी महाराज व श्री श्रीजी के कुञ्ज वृन्दावन के बारे में सुनते आये हैं। हमारे पूज्य नाना जी चार-पांच भाई थे। वृन्दावन में पूज्य नाना जी रहते थे, माँ बचपन में वहाँ रही थी। वहीं से श्री श्रीजी के मन्दिर में भगवान् की आरती के दर्शन हेतु समय-समय पर आना होता रहा था। माताजी श्रीजी की कुञ्ज के ठाकुर जी के शृंगार, भोग-प्रसाद व उत्सव आदि के बारे में हमें बताती रही हैं। सायंकालीन संकीर्तन 'जय राधे-जय राधे-राधे' 'मदन गुपाल शरण तेरी आयो' व 'हरि कैसे गज को भी फंदछुड़ायो' तथा 'राधेश्याम-राधेश्याम श्याम-श्याम राधे-राधे' आदि षोडश अक्षरी नाम कीर्तन करती रही है। कार्य व्यस्तता होते हुए भी माताजी रामचरित मानस का पाठ यथा-साध्य कर लेती थीं। मां-पिताजी हम से भी मानस का मासपारायण पाठ कराते व स्वयं सुनते रहते। माता-पिताजी ने समय मिलने पर मानस-भागवत आदि भाषा ग्रन्थों का स्वाध्याय कई बार किया।

माताजी और पिता जी दोनों पूज्य श्री श्रीजी महाराज से दीक्षा प्राप्त हैं। गले में कण्ठी, श्री श्रीजी महाराज व श्री श्यामा-श्याम के युगल स्वरूप 'चित्रराज' दर्शन पूजा हेतु रखते आये हैं।

परिवार में परम्परा से ठाकुर श्री रघुनाथ जी के मन्दिर की सेवा पूजा है। पिताजी अभिवादन में 'जयरघुनाथजी की' व हर कार्य में 'रघुनाथ जी की कृपा है' कहते और मानते थे तथा सीताराम रघुनाथ को भगवान् राधेश्याम का ही मर्यादा स्वरूप मानते थे। पिताजी का मानना था– भगवान् शिव-पार्वती तो युगल सरकार राधेश्याम व सीताराम का निरन्तर कथा कीर्तन करते रहते हैं। अतः पिता जी कहते थे– भगवान् शिव को सीताराम-राधेश्याम और भगवान् राधेश्याम-सीताराम को भगवान् शिव-पार्वती अत्यन्त प्रिय हैं। अतः शिवार्चन से भी राधेश्याम-सीताराम प्रसन्न होते हैं। पिताजी भगवान् शिव-पार्वती में भी अनन्य आस्था रखते हुए यथा संभव वर्ष में एक बार शिवाभिषेक करवाते थे और कुलदेव के रूप में सदारामपुरा बालाजी भक्तराज हनुमान् को विशेष मानते थे। उदय होते हुए सूर्य को पिताजी प्रणाम करते थे और कहते थे– 'भगवान् भुवन भास्कर जगत् को भलो करो और मुझे सन्मति शुभमति दीजै'।

श्रीगायत्री मंत्र दीक्षा होने के बाद मैं कुछ जपादि करने लगा। राधेश्याम युगल नाम निष्ठा तो संस्कार में प्रवृत्त थी ही, साथ में विष्णु सहस्रनाम, रामरक्षा, गणेशाष्टक, आदित्यहृदय, रुद्राष्टक-शिवार्चन आदि भी नियमित चलते रहे।

किसी अप्राप्त को प्राप्त करने व किसी अदृश्य को देखने की अभिलाषा अन्तः हृदय में संस्कार से बैठी हुई थी, एक अकुलाहट मन में सदा बनी रहती थी। अप्रत्यक्ष के अन्वेषण की छटपटाहट में यत्र-तत्र सुसंग हेतु भी गया, पर संतुष्टि नहीं मिली। इसी अन्वेषण हेतु विविध ग्रन्थों का अध्ययन भी किया।

स्वाध्याय अनुशीलन के साथ से लिखने भी लगा। जो लिखा, वह छपा भी, विद्वानों द्वारा लेखन-चिन्तन को सराहा भी गया, विवेकपूर्ण तर्क को मान्यता भी मिली, कुछ दैविक अनुभूतियाँ भी हुईं। फिर भी एक रिक्तता बराबर बनी हुई थी, एक खटका हमेशा रहता था कुछ पाने की छटपटाहट बराबर बनी हुई थी।

सन् 1987-88 की बात है बम्बई से प्रकाशित श्री मद्भागवत भाषा में छपे हुए "जय राधे-जयराधे-राधे........."। संकीर्तन का मां गान कर रही थी, उसके बाद गजेन्द्र मोक्ष वाला पद और फिर "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का संकीर्तन करने लगी। इस संकीर्तन को सुनने से मुझ में आन्तरिक उल्लास उत्पन्न हुआ, जो बहुत देर तक अनुभव होता रहा और साथ ही साथ मन में पूज्य श्री श्रीजी महाराज के दर्शन की स्फुरणा होने लगी।

इन्हीं दिनों महाराज भी निम्बार्क तीर्थ से वृन्दावन पधारते समय जयपुर सोडाला में निम्बार्क पीठ के आश्रमवासी शिष्यों के घर के सामने ही कुछ समय के लिए रुके थे। पास में स्टेशनरी की दुकान थी, जिस पर मैं बैठा था। जैसे ही मुझे जानकारी मिली, दर्शन करने के लिए दौड़ा। मेरे कदम जैसे ही पूज्यश्री की तरफ बढ़ने लगे, हार्दिक उल्लास से मेरा गला रुंधने लगा और दहाड़कर हरिनाम कीर्तन करने का मन हुआ। मैंने अपने आप पर नियंत्रण करते हुए पूज्यश्री के चरणों में नतमस्तक हो चरण स्पर्श किया। तब तो आंखें नम हो आई, अपने भाव को मैं छुपाता रहा।

सन् 1988 की बात है– मेरे द्वारा कुछ जप अनुष्ठान हो रहा था, तब ही निम्बार्क तीर्थ जाकर पूज्य श्री के दर्शन की उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। एक मित्र को साथ लेकर हम निम्बार्क तीर्थ पहुंच गये। शायद नवम्बर का महीना था और साढ़े तीन-चार बजे होंगे। पूज्यश्री तब बारहदरी में आसन पर विराजे हुए नहीं थे। हम मन्दिर प्रांगण से होते हुए श्री निम्बार्काचार्य पीठ स्थल स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी की तपःस्थली पर दर्शन हेतु चले गये। वहाँ मैं श्री निम्बार्क भगवान् व स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी को दण्डवत् करने के बाद ध्यान मुद्रा में बैठा था। तभी एक अणुमात्र बिन्दु के रूप में ज्योति के दर्शन हुए, जो ऊपर की ओर उठ रही थी। मेरे शरीर में अन्दर ही अन्दर झनझनाहट होने लग गई। आंखें चाहने पर भी खुल नहीं पा रही थी। कुछ देर बाद इस ध्यान मुद्रा से उठकर हम बाहर आये। ज्ञात हुआ पूज्यश्री भ्रमण के लिए निम्बार्क तीर्थ की तरफ पधार गये हैं। तीर्थ पर जाने से मालूम हुआ, पूज्यश्री गंगासागर की तरफ गये हैं। हम तीर्थ के दर्शन कर पूर्वाचार्य चरणों की समाधि स्थल पर दर्शन करने लगे। जहाँ जानकारी मिली, पूज्य आचार्यश्री सरकारी स्कूल के प्रांगण में वार्ता कर रहे हैं। हम दौड़े हुए वहां गये। स्कूल प्रांगण में ज्यों ही पूज्य से मैं कुछ कदम की दूरी पर था, आन्तरिक आल्हाद से गला भर आया, आंखें नम हो गई और चरणछूते ही शरीर में झनझनाहट होने लगी।

शाम हो गई थी। हम पुनः मन्दिर परिसर में आ गये। यहाँ हमारी जयपुर के परिचित सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थियों से भेंट हुई। हमने संध्या आरती के दर्शन किए व श्रीराधा-माधव के सामने पूज्यश्री के मुखारविन्द से कराये जाने वाले सायंकालीन संकीर्तन में सम्मिलित हुए। इस दिन के संकीर्तन का आनन्द हमारे लिए जीवन का संस्मरणीय संस्मरण है।

विद्यार्थी हमें पंगत प्रसाद पवा लाये और अपने पास ठहराया भी। विद्यार्थियों ने पूज्यश्री को हमारी जानकारी दे दी थी। पूज्य महाराजश्री ने रात्री नौ बजे के लगभग आचार्यश्री महल में बुलवाया। आचार्यश्री महल में महाराजश्री के साथ पं. श्रीरामगोपाल जी शास्त्री व एक दो श्रद्धालु और बैठे थे। दण्डवत् के बाद हम बैठ गये महाराजश्री ने मेरा परिचय जाना। मैंने अपना परिचय देते हुए आपश्री के दर्शन अभिलाषा से यहाँ आने का हेतु निवेदन किया। महाराजश्री ने वृंदावनस्थ श्री लक्ष्मीवल्लभजी राधावल्लभ जी के विषय में जानकारी चाही। इस समय किसी उत्सव में महाराजश्री की पधरावणी की चर्चा चल रही थी। मैं एकाग्रभाव से बैठा हुआ अतीव प्रफुल्लता का अनुभव कर रहा था। उन दिनों मेरे केश और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। पं. शास्त्री जी ने मेरी तरफ देखकर कहा "जै जै हम आये, तब ये मन्दिर के बाहर खड़े थे।हमने समझा ये........." पूज्य जै-जै कहने लगे प्रभु स्मरण बना रहता है,वहाँ ऐसा होता है। फिर महाराजश्री को मैंने प्रातः काल गाँव लौटने की जानकारी दी और अनुमति प्रसाद लेकर सोने के लिए चले गये।

बाद में गुरु पूर्णिमा, जन्माष्टमी पर्व पर यदा-कदा आना जाना हुआ,तब सभा मंच पर ही पूज्यश्री के दर्शन दण्डवत् कर लौट गये। दो-चार बार जयपुर सभा समारोह में पूज्यश्री के दर्शन लाभ होते रहे।

सन् 1994 में भगवान् श्री रघुनाथ जी के मन्दिर में दर्शन उपरान्त श्री विग्रह समीप बैठे हुए मुझे स्फुरणा संकेत हुआ। श्री निम्बार्कपीठ जाकर श्री श्रीजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें। इसी दिन श्रावण शुक्ला नवमी सम्वत् 2051 दिनांक 15 अगस्त 1994 को निम्बार्क पीठ आये। आते ही भगवान् राधा-माधव के दर्शन हेतु मन्दिर में गये। जहाँ एक नीम का पत्ता आंगन में पड़ा हुआ था, जिस पर सबसे पहले मेरी दृष्टि पड़ी। यह मुझे बार-बार आकर्षित कर रहा था। इस नीम के पत्ते ने मुझे अपने आकर्षण में बांध लिया। मैं कभी गुरु पंचायतन की तरफ दृष्टि डालूँ और कभी ठाकुर राधा-माधव को निहारने लग जाऊँ, किन्तु मेरी दृष्टि तो बरबस उस नीम के पत्ते पर ही जाकर ठहरे। मैं चुपचाप आगे बढ़ा, उस नीम के पत्ते को उठाया और सादर शीश पर लगा लिया, फिर क्रमशः गुरु पंचायतन, ठाकुर राधा-माधव व श्री सर्वेश्वर को दण्डवत् निवेदन कर श्री निम्बार्क पीठ पर व श्री परशुराम देवाचार्य जी की तपःस्थली पर दर्शन दण्डवत् प्रणाम के लिए चला गया। यहाँ कुछ समय ध्यान करके पंगत प्रसाद को चले गये।

लगभग दो बजे महाराजश्री बाहर पधारे। महाराजश्री को दण्डवत् करने के बाद हम पास ही बैठ गये। हम तीनचार आदमी ही थे। दीक्षा प्रसंग चला,महाराजश्री ने गोपाल मंत्रराज श्री गोपाल-सहस्रनाम आदि ग्रन्थ देते हुए इन के जप की विधि बताई। निम्बार्कीय तिलक, कण्ठी व शिखा का महत्त्व बताया। मेरी स्वयं की नासा भाल पर हाथ लगाकर बतलाया कि हमारा ऊर्ध्वपुण्ड्रतिलक कहाँ से किस तरह होना चाहिए। उपनिषद् व्याख्या के संदर्भ की वार्ता चली तो पूज्यश्री ने श्री निम्बार्क दर्शन का सारगर्भित गूढ़ार्थ समझाया। उस संक्षिप्त सत्संग वार्ता में सारा गूढ़ज्ञान सहज प्रकाशित होता गया और पूज्यश्री के सन्निकट बैठे हुए गुरु पंचायतन का स्वरूप अन्त में आभासित हो रहा था। उस दिन संभवतः 15 अगस्त होने से भीड़ नहीं थी।पूज्यश्री से कुछ जिज्ञासा और उनके समाधान भी हुए। पूज्यश्री ने प्राचार्य श्री

उपाध्याय जी को बुलवाया। हमें रुकने को कहकर आपश्री, श्रीमहल में पधारे। कोई चालीस पैंतालीस ग्रन्थ मंगवाकर पूज्यश्री ने स्वयं प्रसादस्वरूप मुझे प्रदान किये और आशीर्वाद में कहा– "वैदिक वाङ्मय का गम्भीर अनुशीलन करते हुए साहित्य सेवा में सततः संलग्न रहें"। भगवान् श्री सर्वेश्वर को अर्पित प्रसाद व माला प्रसाद व उपवस्त्र प्रसाद प्रदान किया।

सद् गुरुदेव पूज्यश्री श्रीजी महाराज की इस अमोघ कृपा से हमारे मन की अकुलाहट मिट गई। मन का खटका सदा सदा के लिए जाता रहा। हार्दिक सन्तुष्टि आ गई। श्री सर्वेश्वर ठाकुर श्री राधा-माधव के प्रति अनुराग व निष्ठा हृदय में स्थापित हो गई व दिन प्रति दिन प्रभु के प्रति भावानुराग बढ़ने लगा। महाराज के प्रदत्त ग्रन्थों का अवलोकन किया, तो भावार्थ अपने आप हृदयंगम होने लगा। कई बार ऐसा अनुभव हुआ, जैसे पूज्यश्री स्वयं ही भावार्थ समझा रहे हों। इसी क्रम में वेदान्त कामधेनु दश श्लोकी का भावार्थ प्रकाशित हुआ। उन दिनों भगवान् श्री राधाकृष्ण की झूला-झूलते हुए झांकी मन को बार-बार लुभाने लगी। राधाकृष्ण के भक्ति-भावमय पद सहज ही साकार होने लगे। उन्हीं में से– सद् गुरु कृपा प्रभाव का यह एक अनुभव वर्णित पद है—

सत गुरु रस की वर्षा कीन्हीं।
निरस भाव बह्यो बहुदिन में प्रेम भावना दीन्हीं॥
नहीं अब चिन्ता भव सागर की शरण परम की लीन्हीं।
'रामस्वरूप' शरण 'श्रीजी' की भाव सरसता दीन्हीं॥

इन्हीं आत्मानुभूतियों के निवेदन केसाथ अनन्तश्री-विभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के पावन चरणों में सादर प्रणाम।

मोखमपुरा, बिचून, जयपुर (राजस्थान)

देह में आत्मबुद्धि, श्रीहरि-गुरु को छोड़कर अन्य की पराधीनता, स्वयं को भगवदीय न मानना, श्रुति-स्मृति-पुराणादि सत्‌शास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन, श्रीप्रभु को छोड़कर अन्य देव की आराधना, असत् शास्त्रों के अध्ययन की अभिलाषा, स्वयं को स्वतन्त्र मानना, अहंता-ममता की प्रबलता, सर्वेश्वर श्रीहरि को अन्य देवताओं के समान मानना, श्री प्रभु के अवतारों में मानवीय भावना, श्री भगवान् के चर्चा विग्रहों में सामान्य बुद्धि, भगवदीय दिव्य मन्त्रों में शब्द सामान्य की भावना, भगवदीय पावन गाथाओं में लौकिक आख्यान की कल्पना, श्रीगोविन्द के स्वाभाविक सौन्दर्य-माधुर्य-कारुण्य-मार्दवादि अनन्त कल्याण गुण समूह में मायिक साधारण गुणों की कल्पना, श्रीप्रभु में विश्वास का अभाव, साधनान्तर निष्ठा, मन्त्रान्तर भावना, सदाचार हीनता, असत्य पालन, काम क्रोधादि परायणता, दुस्सङ्ग सेवन आदि-आदि इस प्रकार ये अनेक विध विरोधी तत्त्व हैं, जिनके सेवन से मानव विवेक भ्रष्ट होकर निरयगामी बनता है।

—श्री श्रीजी महाराज

लोककल्याण परायण श्री 'श्रीजी' महाराज

— निम्बार्कभूषण वैद्य धनाधीश गोस्वामी

निम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा में प्रायः आचार्यों ने विलक्षण साहित्य-सर्जन व सेवा के विविध कार्य सम्पादित किए हैं। वर्तमान आचार्य अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणजी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुपम एवं जन-कल्याणकारी सेवाओं के कारण वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिये।

आपने जीर्ण-शीर्ण देवस्थानों का केवल जीर्णोद्धार ही नहीं करवाया, अपितु नीमगांव, मूंगी पैठन आदि ऐतिहासिक तपस्थलियों में खण्डहर हुए मन्दिरों के स्थान पर नव्य व भव्य गगनचुम्बी मंदिरों का निर्माण करवा कर महान् अनुकरणीय कार्य किया है।

साहित्य-सर्जन में आपने राधा-सर्वेश्वर भगवान् की मधुरतम लीलाओं के दुःखनिवृत्तिपूर्वक अगाध भवसागर से पार करने वाले हजारों सरस पद्यों की रचना करके कलिमल-ग्रसित अनेकों व्यक्तियों का उद्धार किया है। कहा है—

संसारसिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो–
र्नान्यःप्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य।
लीलाकथारसनिषेवणमन्तरेण
पुंसो भवेद् विविधदुःखदवार्दितस्य॥ भागवत 12/4/40

भावार्थ— जो लोग अत्यन्त दुस्तर संसार-सागर से पार जाना चाहते हैं अथवा जो लोग अनेकों प्रकार के दुःखदावानल से झुलस रहे हैं, उनके लिए सर्वेश्वर भगवान् की लीला कथा-रूप-रस के सेवन के अतिरिक्त और कोई साधन या नौका नहीं है। ये केवल लीलारसायन से ही अपना मनोरथ सिद्ध कर सकते हैं।

सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आप बड़े-बड़े सम्मेलनों, सभाओं व यज्ञानुष्ठानों का सफल समायोजन करते व करवाते रहते हैं। आपने विलुप्त होते हुए कई आर्ष ग्रंथों का पुनः प्रकाशन करवाकर सरस्वती के साहित्य भंडार का संरक्षण किया है। पाश्चात्य संस्कृति से पथ-भ्रमित सामाजिक व्यक्तियों को अपने साहित्यद्वारा कर्तव्य-पथ का बोध कराकर व सन्मार्ग पथ-पथिक बनाकर उनका अपरिमित उपकार किया है। संसार में सर्वदा सुखानुभूति करने का सरल मार्ग बताते हुए आपने कहा है कि अपने से बड़ों का आदर करते हुए उनकी आज्ञा का पालन तथा उनके वचनों को सहन करना चाहिए। जो

बराबर-वाले हैं, उनसे मित्रता का भाव बढ़ावें। जो अपने से छोटे हैं, उनके अपराधों को क्षमा करते रहने से तथा सब प्राणियों में समत्व अर्थात् भगवद्भाव रखते हुए मानवजीव को सफल एवं आनन्दित बनाया जा सकता है। उक्तं च–

तितिक्षया करुणया मैत्र्या चाखिलजन्तुषु।
समत्त्वेन च सर्वात्मा भगवान् सम्प्रसीदति॥
सुप्रसन्ने भवगति पुरुषः प्राकृतैर्गुणैः।
विमुक्तो जीवनिर्मुक्तो ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥ भाग. 4।11।13-14

आपने अनेक ग्रन्थों में संसार में जीने की कला बताते हुए निर्देश दिए हैं कि गुरु शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, चिकित्सक-रोगी, ग्राहक-व्यापारी के परस्पर कैसे सम्बन्ध तथा कर्तव्य होने चाहिये। इनका मनन कर जीवन में उतारने से एक स्वस्थ व विकसित समाज का निर्माण होकर राष्ट्र समुन्नत अवस्था में प्रतिष्ठित हो सकेगा।

आपश्री ने गो-सेवा को अपने जीवन का अभिन्न अंग मान लिया है। निम्बार्कतीर्थ व अन्य कई स्थानों में गोशालाएँ स्थापित करके तथा अकाल के समय अनेकों शिष्यों को प्रेरित कर आपने असंख्य गायों के प्राण बचाये हैं।

वेद और संस्कृत भाषा के प्रति आपका प्रेम इसी से स्पष्ट होता है कि निम्बार्कतीर्थ में वेद महाविद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय जैसे प्रतिष्ठान आपके सत्प्रयत्नों से सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। प्रतिवर्ष बहुसंख्या में छात्र तत् तत् विषयों में निष्णात होकर राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं एवं देववाणी में रचित श्लोकों, पद्यों व ग्रन्थों का पठन-पाठन कर स्वयं को धन्य मानते हैं।

सायंकालीन नित्य कीर्तन में आपके कोकिल कण्ठ से निःसृत स्वरलहरी जब आस्तिक श्रोताओं की कर्णगुहा में प्रविष्ट होती है तो उनके हृदय में सुप्त भगवद् भाव जाग्रत हो जाता है और वे भाव-विभोर होकर झूमने लगते हैं।

उज्जयिनी के संदीपनी आश्रम की तरह छात्रावस्था में आपने मेरे अग्रज व्याकरण के धुरंधर विद्वान् पं. श्री मुरारिलालजी गोस्वामी से अध्ययन कर हमारे कुल को गौरवान्वित किया है।

"विद्या ददाति विनयम्" की आप साकार मूर्ति हैं। आपके अगाध पण्डित्य व विनयशीलता के आगे अपने आपको महान् मानने वाला व्यक्ति भी नतमस्तक हो जाता है।

भगवान् सर्वेश्वर से यही प्रार्थना है कि आपका जीवन स्वस्थ एवं दीर्घायुष्य युक्त हो, जिससे आपके असंख्य भक्त आपका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर कृतकृत्य होते रहें।

राधामाधव कुंज
रतनगढ़ (राजस्थान)

परम पूज्यनीय आचार्यश्री की भावुक भक्तजनों के प्रति सहृदयता

—सर्वेश्वर शरण दाधीच (नलू)

प्रातःस्मरणीय परम पूज्य जगद्गुरु श्री निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का समग्र जीवन किंवा उनका श्रीविग्रह गंगाप्रवाहवत् परम पावन है, जिनके चरण-सान्निध्य में बैठकर भावुक भक्तजन पवित्र होते हैं। जैसे गंगाजल बिना किसी भेदभाव के चराचर जगत् को पवित्र करता है, ठीक उसी प्रकार श्रीचरणों का सान्निध्य व दर्शन सबको पावन कर देता है। पूज्य आचार्यश्री की दृष्टि में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं है।

भगवद् भक्त रसिक जनों के सर्वस्व, सन्मार्ग प्रेरक, सरल हृदय, मन, वचन, कर्म व सात्विक मृदुभाषी और सबसे समान स्नेह रखने वाले हैं हमारे हृदय सम्राट् पूज्य आचार्यश्री।

पूज्य आचार्यश्री की संकल्प शक्ति अनुपम है। आपश्री जो भी संकल्प लेते हैं, वह श्री निखिल भुवन मोहन सर्वनियन्ता भगवान् श्री राधामाधव श्री सर्वेश्वर प्रभु की अनुपम कृपा से सहज ही निर्विघ्नतया पूर्ण हो जाते हैं। आपका आशीर्वाद भक्तों को फलीभूत होता है। आपके दर्शनभाव से सहज सुखानुभूति होती है। आपके मन्त्रदीक्षित शिष्यों के भक्तों के सत् पुरुषार्थ सहज ही फलीभूत होने लगते हैं। आपश्री के सरल सौम्य साधुता पूर्ण व्यवहार से समस्त समाज प्रभावित है। जनताजनार्दन के आप कर्णहार है। आपका समन्वयात्मक एवं निर्विवादात्मक व्यक्तित्व, कृतित्व, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्रों में प्रेरणादायी है। अनेक भक्तजनों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाकर अपने पवित्र मनोरथपूर्ण कर अपने जीवन को कृतार्थ किया है तथा कर रहे हैं।

आपश्री का स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुए भी भक्तों के समक्ष घण्टों विराजते हैं, सदुपदेश देते हैं। प्राणीमात्र का कल्याण करते हैं, क्योंकि 'परोपकाराय सतां विभूतयः' के अनुसार महापुरुषों का यह स्वभाव ही है– दूसरों का उपकार करना। शारीरिक पीडा रहते हुए भी अपनी सारस्वत साधना में आपश्री निरन्तर संलग्न रहते हैं। जो स्वयं तनावग्रस्त हो, पीडाग्रस्त हो, किन्तु संसार के प्राणीमात्र को तनाव से पीडा-मुक्त करने के लिए सदुपदेश साहित्यरचना आदि दिव्य साधना में सतत निरत रहना आपश्री का स्वभाव बन गया है, कितना महान् अनुगह है पूज्य आचार्यश्री का भक्तों के प्रति।

''तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्! अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः'' अर्थात् सज्जनता ही भूषण है जिनका, ऐसे साधुजन बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी विचलित नहीं होते। वे करुणा के मूर्त्तिमान् स्वरूप होते हैं। जो समस्त प्राणीमात्र में सौहार्दभाव रखते हैं, जिनकी दृष्टि में कोई शत्रु नहीं होता और परम शान्त होते हैं। जिनके दर्शन मात्र से अपारशान्ति मिलती है। उपरोक्त सभी लक्षण पूज्य प्रवर आचार्यश्री में घटित होते हैं। आपश्री की भावुक भक्तजनों के प्रति सहृदयता ही उसका ज्वलन्त उदाहरण है।

पूर्व स्नातक, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
243 A पिय निवास, मदनगंज, किशनगढ़

माँ भारती के 'महान् सपूत',
'युग-द्रष्टा' श्री 'श्रीजी राधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य'

— डॉ. (कु.) विमला भास्कर

सन्तजन किसी भी देश की सच्ची सम्पत्ति होते हैं। वे जिस युग में आविर्भूत होते हैं, उस युग के जन समुदाय के लिए सच्चे पथ-प्रदर्शक होते हैं। विश्व के कल्याण के लिए जिस समय जिस धर्म की आवश्यकता होती है, उसका आदर्शमय रूप प्रस्तुत करने के लिए स्वयं भगवान् ही तत्कालीन सन्तों के रूप में नित्य अवतार लेकर आविर्भूत होते हैं। वर्तमान युग में यह दिव्य कार्य जिन सन्तों द्वारा हो रहा है, उनमें ही है 'आचार्य शिरोमणि जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री **श्रीजी राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य**'।

शब्दसागर में डुबकी लगने पर मिलने वाले शब्दों में वह शक्ति कहाँ, जो उनके बहुविज्ञ व्यक्तित्व को समेट सके। उसके लिए तो चाहिए दिव्य-दृष्टि भी। जैसे विराट् विश्व को नापने के लिए वामन बौना पड़ जाता है, वैसे ही मध्याह्न के तेजोमय सूर्य को भला नन्हा प्रकाश रूप माटी का 'दीपक' कुछ दिखाने का साहस कैसे बटोर सकता है, पर अन्तस् में उमड़ती अपार श्रद्धा, उनके चरणारविन्दों का अटूट प्रेम लगातार हृदय को उद्वेलित उत्साहित कर गुह्य ब्रह्म विद्या के साक्षात् मूर्तिमन्त स्वरूप के विषय में कुछ लिखने हेतु लेखनी प्रयासरत होना चाहती है।

आज के इस भौतिकतावादी युग में मानव को स्वार्थपरता, ईर्ष्या-द्वेष, लोभ आदि की आंधी ने कुछ इस प्रकार झकझोर कर रख दिया है कि वह अपने पांवों सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता। हो भी तो कैसे? यह ज्वलन्त प्रश्न आज इस देश के मनीषियों, विद्वानों व चिन्तकों के मस्तिष्क पर कुछ इस प्रकार छा सा गया है कि उन्हें भी सिवाय 'मानवता' के कुछ और सूझ भी नहीं रहा। इन महापुरुषों को यह ज्ञात है कि सच्चा सुख इस चौंधियाती भौतिकता में नहीं, अपितु आध्यात्मिक व धार्मिक चेतना में निहित है। जिस भारत में विश्व को आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ा कर अज्ञानता से ज्ञान के उज्ज्वल आलोक में ला खड़ा किया था, आज वह स्वयं अपने अतीत के वैभव से जीवन मूल्यों को क्यों कर भूलता जा रहा है? पाश्चात्य सभ्यता के अर्थहीन मूल्यों को स्वीकार करते हुए हमें गर्व होता है और अच्छा लगता है अपने को 'मॉडर्न' कहलाना। पर क्यों? विचार करो? क्या यह मीठा जहर नहीं, जो गले से उतरते ही अपना प्रभाव हम पर छोड़ेगा ही। यह मीठा जहर हमें मिटा न दे, विनष्ट न कर दे, इसी चिन्ता से चिन्तित हैं प्रज्ञाचक्षु, परमयोगी, अद्वितीय विद्वान्, संस्कृति के सूर्य श्री श्रीजी महाराज (श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी) जो सम्पूर्ण भौतिक सुखों को तिलाञ्जलि दे प्राणी मात्र के उत्थान के लिए समर्पित हो रहे हैं। लगता है उनके तो जीवन का ध्येय ही बस एक है—

''यह जाता जीवन क्यों न जाये, पर हित-हिताय, पर हित-सुखाय।''

सन्देह नहीं कि करुणावरुणालय सर्वान्तर्यामी भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु स्वयं ही संसार तापानल से संतप्त जीवों के कल्याणार्थ नर स्वरूप धारण कर पृथ्वी पर ऐसे ही 'गुरु रूप' (श्री श्रीजी महाराज) में अवतरित हुए हैं। उनकी दयालुता, उदारता, भक्तवत्सलता व शरणागत जनों के प्रति कृपाभाव की तो तुलना नहीं की जा सकती। एक दृष्टान्त मन में रह-रह कर आ रहा है– 'पारस' जो लोहे को सोना बना देता है, पर पारस उसे पारस जैसी तद्रूपता प्रदान तो नहीं करता। इधर गुरुदेव अपने चरणों में आश्रय लेने वाले शिष्य को अपने से भी ऊपर उठाने के लिए तत्पर हैं। ऐसे गुण जहाँ हों, उसे तो अनुपम, अद्वितीय और अलौकिक ही कहा जायेगा। अतः गुरुदेव (चेतन) तो पारस (जड) से भी बहुत ऊपर हैं। वे चिन्तामणि या कल्पवृक्ष नहीं, जो लौकिक सुखों की अनुभूति मात्र करा कर छोड़ दे। वे तो उस गोलोक धाम, भगवत्पद की प्राप्ति क़रा देना चाहते हैं, जिसे पाने के बाद कुछ भी पाने की ललक मन में पैदा ही नहीं हो सकती। उनका जीवन तो विशुद्ध अहैतुकी सेवा का प्रमाण है। वे सेवा करते हैं, केवल सेवा के लिए। सेवानन्द में आनन्द तो वासना है, जो प्रेम सेवा का विघ्न है। उन्होंने सेवा हेतु पूर्णजीवन समर्पित कर दिया है। सेवाभाव विद्या, धर्म, साधुसन्तों, भक्तजनों, दीनदुखियों के प्रति तो है ही। पशु-पक्षियों तक उनकी पैनी दृष्टि पहुंची है, गो सेवा इसका प्रमाण है। खण्डहरों का भी जीर्णोद्धार उनके हाथों हुआ है। शायद ही कोई कोना अछूता रह गया हो, उनकी दृष्टि से, जो सेवा न पा सका हो।

नर में ही नारायण के दर्शन पाने वाले इस 'मसीहा' ने इसी नर सेवा को ही ईश्वर की आराधना मान लिया है। इस दिव्य रूप ने मानवता के कल्याण हेतु महान् सम्मेलनों का आयोजन किया तो कहीं टी.वी. के 'आस्था चैनल' के माध्यम से जन-जन तक अपनी वाणी पहुंचायी है, जिसका उद्देश्य सनातन धर्म को एक सूत्रता में निगुन्थित रखना व सन्तों-महात्माओं को उनके दायित्व से अवगत कराना रहा है। युग पुरुष ने युगानुरूप ही नारी-जाति का सम्मान किया है, तो विद्वानों का आदर भी । नशा, गो-हत्या जैसी कुरीतियों के दुष्परिणामों को भी उजागर किया है। गुरुकुल रूपा व अधुनातन विद्यालयों की स्थापना कर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास का भी पूर्ण ध्यान रखते हुए उसे जागरूक सुसंस्कृत मानव बनाने के लिए चेष्टाशील हैं।

'आचार्यश्री' स्वयं भी एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार व कवि हैं। उनके द्वारा 35 से अधिक ग्रन्थों की (संस्कृत व हिन्दी भाषा में) रचना हुई है। इन कृतियों में उनकी राष्ट्रभावना, संस्कृति प्रेम, प्रकृति प्रेम, वृन्दावन प्रेमादि लक्षित हो रहा है। अप्रतिम प्रतिमा के धनी आचार्यवर ने भारतीय कला-संस्कृति और धार्मिक आस्था को जो विश्वव्यापी प्रसार दिया है, वह 'राधासर्वेश्वर' (युगलसरकार) की ही तरह शाश्वत रहेगा। कहने के लिए 'सन्त' तो बस भक्त होते हैं तथा भक्ति ही उनका जीवन। इससे इतर क्या हो रहा है, उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं, पर महाराजश्री जी का व्यक्तित्व तो इसका अपवाद है। क्या गुण नहीं हैं इनमें? एक युग द्रष्टा की पैनी पकड़ तो सर्वत्र लक्षित हो रही है। अपार ज्ञान समुद्र हिलोरें लेता चारों

तरफ उमड़ता दिखायी देता है। हिन्दी, संस्कृत, ब्रज, बंगला व राज्यस्थानी भाषा के विद्वान् होने के साथ-साथ संगीत कला की रचना करना सम्प्रदाय के लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं। अध्यात्मपरक रससिद्ध कवि की काव्यधारा ऐसा भी मोड़ ले सकती है, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। 'भारत-कल्पतरु' 'भारत-भारती-वैभवम्' पूर्ण रूपेण राष्ट्रीयता के उच्चतम भावों जैसे सदाचार, विश्वबन्धुत्व, स्वदेश प्रेम, सहिष्णुता, परोपकारादि से आप्लावित अपवाद स्वरूप रचनाएँ ही कहीं जायेंगी।

''भारत तीरथ रूप महा है'' कहकर शस्यश्यामला, वीर प्रसविनी, ऋषि मुनियों की तपस्थली के प्रति प्राणी मात्र को नमन करने के लिए जैसे कहा हो। कवि तो राष्ट्र का कर्णधार होता है, वह जैसा चाहे समाज को दिशा दिखला सकता है और यदि यह कवि 'सन्त' है तो फिर कहना ही क्या? 'भारत कल्पतरु' में गागर समेट कर रख दिया है। समसामयिक सम्पूर्ण समस्याओं को जो मानवता को लीलती जा रही हैं, उनसे हर पल सचेत रहने की बात कही है। जैसे 'तस्करता का त्याग कर', 'भष्ट्राचार विसार' 'मद्यादि सेवन अवैध' 'चलचित्रों का त्याग', 'धूमपान दुःख मूल है' 'वन तरु-सम्पदा सब विधि रक्षण हेतु', अति घातक संहारकर अणु बम आदिक अस्त्र 103 से 108 तक के छः दोहों में क्या नहीं सिमटा? इन ज्वलन्त समस्याओं का समाधान भी 'भारतवर्ष अखण्डता' रक्षाहित अरपन' व 'संघटन करके रहो' 'सभी दृष्टि से आज' प्रस्तुत किया है। आयुर्वेद के प्रति लोगों के मन में पुनः आस्था स्थापित करने हेतु निम्ब, पंचगव्य, तुलसी आदि के महत्त्व को स्पष्ट किया है। उनकी यह रचना गुरु-गूढ़ ज्ञान मण्डित चरित्र-निर्माण हेतु एक संहिता के रूप में उभर कर सामने आयी है। पीयूषरसवर्षिणी 'कल्पतरु' तो नामानुकूल है। सरल दोहा छन्द में रचित यह रचना सर्वजन हिताय भावना से परिपूर्ण अतीत के झरोखों को झांकने के लिए आमन्त्रित करती है। 'भारत-भारती- वैभवम्' भारत के वैभव की सजीव छवि है, जो मानों स्वतः ही हृदयंगम हो जाना चाहती है। 'श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु हिन्दी भाषी भक्तों के लिए प्रसाद ही नहीं, अपितु 'स्वाति' की बूंद है, जिसका महत्त्व केवल निष्ठावान् रसिक हृदय ही चातक सदृश पान कर सकता है। कवि ने बार-बार उस सर्वेश्वर के भजन के लिए कहा है– **''सर्वेश्वर पद प्रीति करो मन''**।

उनकी रचनाओं में एक तरफ यदि गूढ़ अध्यात्म तत्त्व व सरल साधना-पद्धति दिखायी देती है, तो दूसरी ओर एक श्रेष्ठ कवि के काव्य की भाषा-अलंकारिता, छन्द बद्धता आदि विशेषताएँ स्वतः खिंचती चली आती हैं। आये भी क्यों न? युगल सरकार की मोहनी छवि में वह चुम्बकीय शक्ति जो है। इसमें 'तुलसी' के 'मानस' की भांति स्वान्तः सुखाय व 'सुरसरि सम सब कह हित होय' का भाव एक साथ लक्षित होता है। सन्तों का तो जीवन ही जागतिक कल्याणार्थ है। 'श्री युगलस्तवविंशति' में युगल सरकार, गिरिराज व राधाकुण्डादि विषयों को लिया है, तो 'श्री जानकी वल्लभ' में मंजुल नामा अवध विरामा सीतारामा' को भी नमन किया है। श्री स्तवरत्नाञ्जलि' में पूरे ब्रह्माण्ड के देवी-देवताओं, जैसे श्रीगणेश, गरुड़, लक्ष्मी, नारायण, हनुमान्, मिथिलेश-सुता, राम, शिव, सरस्वती, गंगा, गो, पुष्कर निम्बार्क तीर्थ आदि को समेट लिया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे 'आचार्यश्री श्रीजी' ने प्रिया-प्रियतम को तो लिया है,

पर उसके अंशांशी भेद को भी वे ओझल नहीं कर पाये। सर्वेश्वर प्रभु के भी अपने परिकर हैं, जो अपने-अपने ढंग से सेवा करते हैं। सन्देह नहीं कि महाराजश्री जी का दृष्टिकोण पूर्ण रूपेण समन्वयात्मक रहा है। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण आप जन-जन का कण्ठहार हुए हैं।

इस महान् व्यक्तित्व के लिए मैं तो यही कहूँगी कि निम्बार्क सम्प्रदाय की यह एक ऐसी विभूति है—

प्रभुता पाई जाहि मद नाहिं''

युग-चेता, युग-द्रष्टा, युगपुरुष, मानवता के पुजारी, दिव्य गुणों के भण्डार, महामानव, श्री श्रीजी राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य, साक्षात् राधा-सर्वेश्वर ही हैं, अपने सलोने मंजुल स्वरूप में पूर्णता समेटे। फिर भी यह अकिंचन जीव अपने अन्तःस्तल की गहराइयों से मंगलमय दीर्घ जीवन की कामना करते हुए शत-शत नमन करती हैं माँ भारती के इस ''महान् सपूत'' को।

1297 रानीबाग, शकूर बस्ती
दिल्ली 110034

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा संस्मरण ❊

पूज्य श्री श्रीजी महाराज हैदराबाद धर्म संघ में सम्मिलित होने हेतु यात्रा पर थे। बैतुल व हरदा के पास जंगल में श्री सर्वेश्वर भगवान् के अभिषेक, शृंगार व भोग का समय हो जाने से एक कुआँ देखकर आपने गाड़ी रुकवाई और परिकरों को कुएँ के पास भगवान् सर्वेश्वर के अभिषेक, शृंगार भोग आदि सम्पन्न करने का संकेत दिया। मन में सभी को विचार हो रहा था कि भगवान् सर्वेश्वर के अभिषेक के लिए जंगल में गाय के दूध का कैसे प्रबन्ध होगा। सर्वेश्वर इच्छा से वहाँ रुकना हो गया। सेवा की व्यवस्थाएँ होने लगी। कुएँ का जल खींचा जा रहा था। तभी एक सज्जन आए। परिकरों ने उनसे सर्वेश्वर सेवा के लिए गाय के दूध हेतु प्रबन्ध के लिए वार्ता की। उन सज्जन ने कहा– समय तो अब दूध दोहन का नहीं रह गया है, फिर भी मैं अपनी गायों के पास जाता हूँ, उनसे कुछ दूध मिल सका तो निकाल लाता हूँ। वे सज्जन जिनका नाम भानसिंह था, गये और दोहनी लेकर गायों का दूध दोह लाये। वे बता रहे थे कि उनकी गायों ने उतना दूध फिर दे दिया, जितना वे प्रातःकाल अपने नियमित समय पर निकालते थे। साथ ही वह अपनी बाड़ी से सब्जी व फल भी ले आए, इस तरह उस दिन उस जंगल में श्री सर्वेश्वर अभिषेक के लिए दूध के साथ, राजभोग के लिए तसमई (खीर) भी बनी। पूड़ी प्रसाद के साथ सब्जी प्रसाद भी बना और उन सज्जन के परिजनों से सभी परिकरों ने राजभोग के बाद आनन्द से प्रसाद पाया और राजभोग प्रसाद का जंगल में पूर्ण वैभव हुआ।

उलाहना दिया– यह क्या इतनी देर से कैसे आये? दास ने दुःखी भाव से अग्निकाण्ड की वह घटना सुनाई। सुनते ही पूज्यश्री द्रवित हो गये। अपने परिकरों को बुलाया और कहा महात्माजी कहते हैं– फालैन में वीभत्स अग्निकांड हुआ, वे लोग आज कष्ट में हैं। हम अभी वहाँ जायेंगे और उसी समय महोत्सव के कार्यक्रम मध्य ही पूज्यश्री फालैन के लिए पधार आये। दास साथ था। रैगर कुमी छोटी बड़ी सब जातियों के घरों में जिनके आग लगी थी, सब परिवारों से जाकर मिले। फालैन वासी सब आपश्री से परिचित थे। सब आपश्री के पास एकत्रित हो गये। आपने सान्तवना दी और उसी समय चालीस हजार की रोकड़ी राशि और कपड़े पीड़ित परिवारों को उसी समय वितरित कराये और दास को आज्ञा प्रदान की। सब पीडित घरों को पांच-पांच मन (दो-दो कुण्टल) अन्न उपलब्ध करा दो। ऐसे करुण हृदय और दीन वत्सल हैं पूज्य श्रीजी महाराज।

पूज्य आचार्यवर्य श्री श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ दास आचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ पर उपस्थित हुआ। यह कोई दस ग्यारह वर्ष पूर्व की बात है। पूज्यश्री के चरण-वन्दन व दर्शन वार्तालाप में ही दास ने आपश्री के सामने अपना मनोरथ श्री गोपाल मन्दिर फालैन पर श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव व यज्ञ आयोजन सबन्धी रखा। आपश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। श्री भागवत कथा व यज्ञ आयोजन का समय निश्चित हो गया। पूज्यश्री को इस आयोजन में पधारने व अपने सान्निध्य में कार्य सम्पन्न कराने का निवेदन किया गया था, जिसकी स्वीकृति मिल गयी। पम्पलेट आदि प्रचार प्रसार कार्य व समारोह आयोजन की सभी व्यवस्थायें यथावत् जुट गई। बीच में किन्हीं ने आकर निम्बार्क तीर्थ आकर कहा कि यहां समारोह की कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है। सो निम्बार्क पीठ से चार पांच परिकर ही निश्चित दिन को नीमगांव पहुंचे। दास ने आपश्री के पधारने का जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन नीम गांव श्री बनवारीशरण को भेजा। वहां ज्ञात हुआ कि महात्मा माधव बाबा के साथ दो चार परिकर ही आचार्य पीठ से आये हैं। पूज्य श्री का आना नहीं हुआ।

दास को ज्ञात होते ही श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ आ गया। पूज्यश्री के चरण वन्दन करने के बाद दास ने आप से पधारने का आग्रह किया और बताया कि आयोजन की सारी व्यवस्था तैयारी भव्य रूप से जुट गई है। सब लोगों में आपश्री के दर्शन की अभिलाषा है। आपश्री के पदार्पण के समाचार से सभी अभिभूत थे। दास का गला भर आया, आंसू छलग गये और कह बैठा– आप भी नहीं पधारेंगे तो दास का भी जाना नहीं होगा। तत्काल आपश्री ने परिकरों को आज्ञा दी और फालैन महोत्सव आयोजन में पधारे। लाखों की संख्या में विशाल जन समूह आपश्री के दर्शन व चरण पूजन से लाभान्वित हुआ। समारोह आपश्री की कृपा से दिव्य रूप में सम्पन्न हुआ और दास पर आपश्री की कृपा के चर्चे सारे क्षेत्र में फैल गये। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की कई कृपा अनुभूतियाँ हैं। दास हृदय से आपके वात्सल्य पूर्ण स्नेह भाव का अनुभव करता है और निर्भय रहता है।

फालैन कोसीकलां, जिला-मथुरा
उ.प्र.

"परम पूज्य महाराजश्री कौ वात्सल्य"

— पं. शिवचरणलाल शास्त्री

वन्दे गुरूणां चरणारविन्दे, सद्दर्शितस्वात्म-सुखावबोधे।
निःश्रेयसे माङ्गलिकायमाने, संसार-हालाहलमोहशान्त्यै।।1।।
आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निज-बोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि।।2।।

या कलिकाल में हम जैसे पतित प्राणिन कौ कल्याण करिवे के तांई श्री करुणा-वरुणालय श्री सर्वेश्वर प्रभु शक्ति स्वरूप आपश्री कौ अवतार या भूतल पै महापुरुषन के रूप में अवतरित भयौ है। आपश्री के द्वारा सगरे भारतवर्ष में हूँ कहा, विदेशन में हूँ श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय कौ बडौ भारी प्रचार एवं वैष्णव धर्म की स्थापना करी गई है। जा सों सबही अज्ञानी लोगन नें श्रीमहाराजश्री की शरणागति पाय कैं अपने नश्वर जीवन कूं सफल बनायो है। आ हा- जै जै श्री की जीव मात्र पै कैसी कृपा वृष्टि होय है? ता कौ आनन्द ही अलौकिक है। मैं हूं एक ऐसो ही अज्ञानी दास हूँ, ताकूं श्री महाराज ने अपनी शरण में लेकर के वात्सल्य भाव सौ ओतप्रोत कर अनुगृहीत कर्यो है। इस परम कृपा कौ श्रेय हमारे पूज्य पिताश्री पं. मुरलीधरजी शास्त्री कथाव्यासजी कौ रहयौ है। चूंकि हमारे पिताश्री आचार्यपीठ में महाराजश्री की पवित्र सेवा में 50 वर्षन तक समर्पित रह कर धार्मिक कार्यन कौ सम्पादन करौ है। इन्हीं की कृपा सों ही हमारौ पूरौ परिवार हू महाराजश्री की शरणागति प्राप्त है।

आपश्री को गुण व भगवद् भक्ति-परायणता आदि शक्ति कौ वर्णन या सांसारिक प्राणी के बस की बात नाँय। चौ कि भगवान् के गुणानुवादन को वर्णन कोन कर सके है? मैं तो श्री राधासर्वेश्वर प्रभू सौं सदाँ यही विनती करु हूं कि या भूतल के प्राणिन कौ उद्धार करिवे के ताई स्वस्थ दीर्घायु दैवें। ता सौं हमारे नेत्रन कूं श्री चरणन कौ दर्शन सुख मिलतौ रहे। श्री सर्वेश्वर प्रभू सौ मेरी यही निरन्तर मंगल कामना है।

"कुर्वन्तु वो मंगलम्"

श्रीमत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रो भास्करवित्तपाल-वरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः।
प्रद्युम्नो नलकूबरो सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः
स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम्।।1।।

अर्थात्— श्री सर्वेश्वर प्रभु, ब्रह्मा, विष्णु और शिव, वायुदेव, देवराज इन्द्र तथा अग्निदेवता, चन्द्रदेवता, भगवान् सूर्य, धनाधिपति कुबेर, वरुणदेव, संयमनी पुरी के स्वामी यमराज, समस्त ग्रह मण्डल, श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न, नल और कूबर, ऐरावत हाथी, चिन्तामणि रत्न, कौस्तुभमणि, शक्ति कूं धारण करवे वारे स्वामी कार्तिकेय जी तथा हलायुध-बलराम जी ये सवरे देवता आपश्री कौ मंगल करें। इति शुभम्

(प्रेम सरोवर) बरसाना धाम,
व्रज मण्डल (मथुरा)

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा संस्मरण ❊

पूज्यश्री वृन्दावन शिवपुरी पधारे थे। यात्रा मोटर-गाड़ी से थी। शिवपुरी से कुछ पहले गाड़ी के ड्राईवर ने गाड़ी में तकनीकी खराबी होने की बात कही। रात्रि हो चली थी। अतः रास्ते में रुकना ठीक नहीं समझा गया, अतः गाड़ी चलती रही। रात्रि में देर से शिवपुरी पहुंचना हुआ। पूज्यश्री जिस जगह पर पधारे थे, उससे दूसरी तरफ मिस्त्री का कारखाना था। आपश्री के उतर जाने के बाद ड्राईवर गाड़ी को दिखाने व ठीक कराने हेतु मिस्त्री के पास ले गया। मिस्त्री ने गाड़ी को देखते ही आश्चर्यचकित होकर कहा ''यह गाड़ी यहाँ तक कैसे चल कर आ गई? ड्राईवर ने पूछा ''क्यों क्या बात है? तब उसने बताया कि इसकी टायर रॉड बिल्कुल जा चुकी है। फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि यह गाड़ी सही सलामत रास्ते पर चल कर आ गई, निश्चय ही यह तो कोई दिव्य प्रभाव है। फिर उसने पूछा कि यह गाड़ी किसकी है? और जब उसको ज्ञात हुआ कि यह पूज्यश्री श्रीजी महाराज की गाड़ी है तब उसने पूज्यश्री के पास आकर दण्डवत् किया और गाड़ी की स्टेरिंग के सही सलामती गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाने पर आपश्री के तप प्रभाव को ही विशेष माना। आपश्री से वह इतना प्रभावित हुआ कि वह आपश्री को अपने खेत के बगीचे में ले गया और वहाँ रहने ठहरने और सेवा पूजा के लिए सभी भोज सामग्री की व्यवस्था कराई व आपश्री की चरण पूजा की।

❊ ❊ ❊

पूज्य श्रीजी महाराज का बरेली पधारना हुआ था। तब मुन्ना मियाँ नाम के एक मुस्लिम भक्त आये और आपश्री की साष्टांग दण्डवत् करते हुए भावविह्वल व गदगद् हो गये और जोर-जोर से 'राधे-राधे' नाम का उच्चारण करने लगे। बरेली में जब जब जहाँ जहाँ पूज्य श्री गए, वे भक्त पूज्यश्री के सेवा परिकर में साथ रहे व इन्होंने पूज्यश्री की चरण पूजा भी की। इन्हीं (मुन्ना मियाँ) ने बाद में श्रीलक्ष्मीनारायण का मंदिर व हिन्दु संस्कृति शिक्षा आश्रम बनवाया, यह भी सुना जाता है।

महापुरुष की महत्ता

— परशुरामः

अनन्तश्रीविभूषित, विद्यातेजस्तपोमूर्ति, श्री राधामाधवचरणाम्बुजचञ्चरीक, विविधविधविद्यावारिधि, श्रीभगवन्निम्बार्क-सम्प्रदाय-सच्छास्त्रावगाहनानुसरण-प्रचारपुरोधा, सनातनधर्मसुदृढ़भवनस्तम्भायमान, परमकारुणिक, श्यामाश्याममय, दिव्यनिम्बार्कतिलकसुशोभित, देदीप्यमान भव्यभाल, दिगन्तव्याप्त कमनीयकीर्तिकान्ति-धवलितशुभ्रश्वेतवसन, अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक-आह्लादिनीशक्तिस्वरूपा श्रीराधाध्यानाधिगतमहामन्त्रमर्म, श्रद्धावनतसहस्रशः शिष्य-प्रशिष्य-प्रपूजितपादपद्म, परमपूज्य प्रातः स्मरणीय श्री ''श्रीजी'' महाराज के प्रथम चरणस्पर्श व दिव्यदर्शन मात्र से ही पहले कोई परिचय व सम्पर्क नहीं होने पर भी आपश्री ने इस अकिंचन को हृदय से अपनाया है। तब से अनवरत अहैतुकी ममतामयी कृपादृष्टि तथा समस्त शास्त्रसारस्वरूप सुमधुर दिव्यवचनों से विविध दुःखदावानल दंदग्धहृदय में शीतलता का संचार कर रहे हैं।

स्वयं समस्तसद्गुणगणगणिनिधान होते हुए भी सरल, सन्त स्वभाव से **''परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं''** इस नीति के अनुसार इस दासानुदास को प्रशंसापूर्वक हृदय से शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं, तब संकोचवश कोटिशः साष्टांग प्रणाम-पावित हृदय से यही आवाज निकलती है– **''वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्''**।

कितनी पारिवारिक व सांसारिक परिस्थितियों में, विघ्नबाधाओं के आते रहने पर भी कंटकाकीर्ण पथ की पगडण्डी पर पगपग पर पछाड़ खाते रहने पर भी आपके स्नेहसिञ्चित शुभाशीर्वाद का संबल पाकर, अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का प्रयास करता हुआ यह जन सुखपूर्वक जीवन-यापन कर रहा है, यह आपका ही दिव्य प्रभाव है। ऐसे महामहिम महापुरुष के चरणों में अनन्त नमन।

ग्राम–कैराय (नागौर)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

अपने परमाराध्य श्रीराधासर्वेश्वर के युगल पाद पद्मों में अनन्य प्रपत्ति (शरणागति) पूर्वक निश्छल अनुराग रखता है तो वह बड़ी सरलता से अपने आराध्य का अनुग्रह भाजन बन सकता है।

सबसे सुलभ साधन महापुरुषों का सत्सङ्ग ही है। यदि साधक विनयावनत होकर उनकी सन्निधि में रह कर अपने आराध्य के पादपद्मों में सतत पराभक्ति का सेवन करे तो बिना प्रयास के अपने अभिप्रेत लक्ष्य की प्राप्ति सुकरता से कर सकता है।

भगवान् श्रीश्यामसुन्दर का जब प्राणी पर महान् अनुग्रह होता है, तभी वह सुरदुर्लभ इस मानव शरीर को प्राप्त करता है।

"महनीय चरिताः श्रीचरणा राजन्तां सततं मुदा"

— रामचन्द्र शास्त्री

भारत वसुन्धरा पर अनेक महाविभूतियों ने अपने आविर्भाव से स्वकल्याण के साथ जनकल्याण की स्वाभाविक मनोवृत्ति का दिग्दर्शन कराया है। उनकी इन पावन व कल्याणमयी प्रवृत्तियों से धार्मिक जगत् नितान्त आनन्दानुभूति कर रहा है।

ऐतिहासिक अजमेर मण्डल के निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) में जगद्‌गुरुचरण, निम्बार्काचार्य, पीठाधीश्वर आचार्यप्रवर, पूज्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी श्री श्रीजी महाराज अपने जीवन में धार्मिक कर्मठता की भूमिका गत 60 वर्षों से निभाते चले आ रहे हैं।

पूज्य आचार्यचरण के विद्या-व्यसन, महनीय चरित्र, अनुपम वाक् शैली व प्रौढ़पाण्डित्य से धर्मप्राण जनता नितान्त अभिभूत है।

मुझ अकिंचन पर भी वर्षों से आपकी सहृदयता का प्रतिबिम्ब झलकता है। यदा कदा अनेक धार्मिक आयोजनों, विद्वद्-गोष्ठियों व उपनिषद् चर्चाओं में इस सेवक के सर्वप्रथम देववाणी द्वारा कुछ निवेदन किये जाने का आदेश प्राप्त होता रहा है 'आज्ञा गुरूणां परिपालनीया' इस उक्ति के सन्दर्भ में मैंने भी निवेदन स्वीकार करते हुए अपने भाग्य को सराहा है। आपकी प्रवचन शैली से भर्तृहरि के वैराग्य शतक के एक पद्य का विवेचन दूरदर्शन के संस्कार चैनल पर सुनने का अवसर रामधाम पुष्कर में स्व. स्वामी विष्णुदासजी त्यागी की कुटिया में प्राप्त हुआ।

उसी व्याख्या से प्रभावित मैंने यह पद्य जीवन में कितनी परिवर्तित परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है, यह समझने का प्रयास किया। वह आकर्षक पद्य वैराग्य-शतक से इस प्रकार उद्‌धृत है—

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्,
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालोऽपि न ज्ञायते।
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते,
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्॥

क्षणिक सुख की आशा में भटकते हुए मानव के मार्गदर्शन हेतु इस उक्त प्रसंग के अतिरिक्त कल्याण का अन्य मार्ग नहीं है।

आपके द्वारा अनेक उपनिषदों व विद्वद् गोष्ठियों तथा धार्मिक अनुष्ठानों के पावन अवसर पर मुझ अकिंचन को भी शाल ओढ़ाकर सभाजित, सम्मानित व सत्कृत होने का अलभ्य लाभ मिला है। श्रीचरणों की इस अहैतुकी कृपा से स्वयं को गौरवान्वित समझता हूँ। सम्प्रदाय विशेष की पावन परम्परा को अक्षुण्ण बनाते हुए आप अपने कल्याणकारी उपदेश से लाभान्वित करते रहें। यही परम प्रभु श्री सर्वेश्वर भगवान् से आपके दीर्घायुष्य की कामना है। समस्त सद्भावनाओं सहित–

शास्त्री कॉलोनी, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष– 2622893

सद् गुरु रस की वर्षा कीन्हीं

— पं. रामस्वरूप गौड़, 'निम्बार्क भूषण'

हम माँ से श्री श्रीजी महाराज व श्री श्रीजी के कुञ्ज वृन्दावन के बारे में सुनते आये हैं। हमारे पूज्य नाना जी चार-पांच भाई थे। वृन्दावन में पूज्य नाना जी रहते थे, माँ बचपन में वहाँ रही थी। वहीं से श्री श्रीजी के मन्दिर में भगवान् की आरती के दर्शन हेतु समय-समय पर आना होता रहा था। माताजी श्रीजी की कुञ्ज के ठाकुर जी के शृंगार, भोग-प्रसाद व उत्सव आदि के बारे में हमें बताती रही हैं। सायंकालीन संकीर्तन 'जय राधे-जय राधे-राधे' 'मदन गुपाल शरण तेरी आयो' व 'हरि कैसे गज को भी फंदछुड़ायो' तथा 'राधेश्याम-राधेश्याम श्याम-श्याम राधे-राधे' आदि षोडश अक्षरी नाम कीर्तन करती रही है। कार्य व्यस्तता होते हुए भी माताजी रामचरित मानस का पाठ यथा-साध्य कर लेती थीं। मां-पिताजी हम से भी मानस का मासपारायण पाठ कराते व स्वयं सुनते रहते। माता-पिताजी ने समय मिलने पर मानस-भागवत आदि भाषा ग्रन्थों का स्वाध्याय कई बार किया।

माताजी और पिता जी दोनों पूज्य श्री श्रीजी महाराज से दीक्षा प्राप्त हैं। गले में कण्ठी, श्री श्रीजी महाराज व श्री श्यामा-श्याम के युगल स्वरूप 'चित्रराज' दर्शन पूजा हेतु रखते आये हैं।

परिवार में परम्परा से ठाकुर श्री रघुनाथ जी के मन्दिर की सेवा पूजा है। पिताजी अभिवादन में 'जयरघुनाथजी की' व हर कार्य में 'रघुनाथ जी की कृपा है' कहते और मानते थे तथा सीताराम रघुनाथ को भगवान् राधेश्याम का ही मर्यादा स्वरूप मानते थे। पिताजी का मानना था– भगवान् शिव-पार्वती तो युगल सरकार राधेश्याम व सीताराम का निरन्तर कथा कीर्तन करते रहते हैं। अतः पिता जी कहते थे– भगवान् शिव को सीताराम-राधेश्याम और भगवान् राधेश्याम-सीताराम को भगवान् शिव-पार्वती अत्यन्त प्रिय हैं। अतः शिवार्चन से भी राधेश्याम-सीताराम प्रसन्न होते हैं। पिताजी भगवान् शिव-पार्वती में भी अनन्य आस्था रखते हुए यथा संभव वर्ष में एक बार शिवाभिषेक करवाते थे और कुलदेव के रूप में सदारामपुरा बालाजी भक्तराज हनुमान् को विशेष मानते थे। उदय होते हुए सूर्य को पिताजी प्रणाम करते थे और कहते थे– 'भगवान् भुवन भास्कर जगत् को भलो करो और मुझे सन्मति शुभमति दीजै'।

श्रीगायत्री मंत्र दीक्षा होने के बाद मैं कुछ जपादि करने लगा। राधेश्याम युगल नाम निष्ठा तो संस्कार में प्रवृत्त थी ही, साथ में विष्णु सहस्रनाम, रामरक्षा, गणेशाष्टक, आदित्यहृदय, रुद्राष्टक-शिवार्चन आदि भी नियमित चलते रहे।

किसी अप्राप्त को प्राप्त करने व किसी अदृश्य को देखने की अभिलाषा अन्तः हृदय में संस्कार से बैठी हुई थी, एक अकुलाहट मन में सदा बनी रहती थी। अप्रत्यक्ष के अन्वेषण की छटपटाहट में यत्र-तत्र सुसंग हेतु भी गया, पर संतुष्टि नहीं मिली। इसी अन्वेषण हेतु विविध ग्रन्थों का अध्ययन भी किया।

स्वाध्याय अनुशीलन के साथ से लिखने भी लगा। जो लिखा, वह छपा भी, विद्वानों द्वारा लेखन-चिन्तन को सराहा भी गया, विवेकपूर्ण तर्क को मान्यता भी मिली, कुछ दैविक अनुभूतियाँ भी हुईं। फिर भी एक रिक्तता बराबर बनी हुई थी, एक खटका हमेशा रहता था कुछ पाने की छटपटाहट बराबर बनी हुई थी।

सन् 1987-88 की बात है बम्बई से प्रकाशित श्री मद्भागवत भाषा में छपे हुए ''जय राधे-जयराधे-राधे..........''। संकीर्तन का मां गान कर रही थी, उसके बाद गजेन्द्र मोक्ष वाला पद और फिर ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' का संकीर्तन करने लगी। इस संकीर्तन को सुनने से मुझ में आन्तरिक उल्लास उत्पन्न हुआ, जो बहुत देर तक अनुभव होता रहा और साथ ही साथ मन में पूज्य श्री श्रीजी महाराज के दर्शन की स्फुरणा होने लगी।

इन्हीं दिनों महाराज भी निम्बार्क तीर्थ से वृन्दावन पधारते समय जयपुर सोडाला में निम्बार्क पीठ के आश्रमवासी शिष्यों के घर के सामने ही कुछ समय के लिए रुके थे। पास में स्टेशनरी की दुकान थी, जिस पर मैं बैठा था। जैसे ही मुझे जानकारी मिली, दर्शन करने के लिए दौड़ा। मेरे कदम जैसे ही पूज्यश्री की तरफ बढ़ने लगे, हार्दिक उल्लास से मेरा गला रुंधने लगा और दहाड़कर हरिनाम कीर्तन करने का मन हुआ। मैंने अपने आप पर नियंत्रण करते हुए पूज्यश्री के चरणों में नतमस्तक हो चरण स्पर्श किया। तब तो आंखें नम हो आई, अपने भाव को मैं छुपाता रहा।

सन् 1988 की बात है– मेरे द्वारा कुछ जप अनुष्ठान हो रहा था, तब ही निम्बार्क तीर्थ जाकर पूज्य श्री के दर्शन की उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। एक मित्र को साथ लेकर हम निम्बार्क तीर्थ पहुंच गये। शायद नवम्बर का महीना था और साढ़े तीन-चार बजे होंगे। पूज्यश्री तब बारहदरी में आसन पर विराजे हुए नहीं थे। हम मन्दिर प्रांगण से होते हुए श्री निम्बार्काचार्य पीठ स्थल स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी की तपःस्थली पर दर्शन हेतु चले गये। वहाँ मैं श्री निम्बार्क भगवान् व स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी को दण्डवत् करने के बाद ध्यान मुद्रा में बैठा था। तभी एक अणुमात्र बिन्दु के रूप में ज्योति के दर्शन हुए, जो ऊपर की ओर उठ रही थी। मेरे शरीर में अन्दर ही अन्दर झनझनाहट होने लग गई। आंखें चाहने पर भी खुल नहीं पा रही थी। कुछ देर बाद इस ध्यान मुद्रा से उठकर हम बाहर आये। ज्ञात हुआ पूज्यश्री भ्रमण के लिए निम्बार्क तीर्थ की तरफ पधार गये हैं। तीर्थ पर जाने से मालूम हुआ, पूज्यश्री गंगासागर की तरफ गये हैं। हम तीर्थ के दर्शन कर पूर्वाचार्य चरणों की समाधि स्थल पर दर्शन करने लगे। जहाँ जानकारी मिली, पूज्य आचार्यश्री सरकारी स्कूल के प्रांगण में वार्ता कर रहे हैं। हम दौड़े हुए वहां गये। स्कूल प्रांगण में ज्यों ही पूज्य से मैं कुछ कदम की दूरी पर था, आन्तरिक आल्हाद से गला भर आया, आंखें नम हो गई और चरणछूते ही शरीर में झनझनाहट होने लगी।

शाम हो गई थी। हम पुनः मन्दिर परिसर में आ गये। यहाँ हमारी जयपुर के परिचित सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थियों से भेंट हुई। हमने संध्या आरती के दर्शन किए व श्रीराधा-माधव के सामने पूज्यश्री के मुखारविन्द से कराये जाने वाले सायंकालीन संकीर्तन में सम्मिलित हुए। इस दिन के संकीर्तन का आनन्द हमारे लिए जीवन का संस्मरणीय संस्मरण है।

विद्यार्थी हमें पंगत प्रसाद पवा लाये और अपने पास ठहराया भी। विद्यार्थियों ने पूज्यश्री को हमारी जानकारी दे दी थी। पूज्य महाराजश्री ने रात्री नौ बजे के लगभग आचार्यश्री महल में बुलवाया। आचार्यश्री महल में महाराजश्री के साथ पं. श्रीरामगोपाल जी शास्त्री व एक दो श्रद्धालु और बैठे थे। दण्डवत् के बाद हम बैठ गये महाराजश्री ने मेरा परिचय जाना। मैंने अपना परिचय देते हुए आपश्री के दर्शन अभिलाषा से यहाँ आने का हेतु निवेदन किया। महाराजश्री ने वृंदावनस्थ श्री लक्ष्मीवल्लभजी राधावल्लभ जी के विषय में जानकारी चाही। इस समय किसी उत्सव में महाराजश्री की पधरावणी की चर्चा चल रही थी। मैं एकाग्रभाव से बैठा हुआ अतीव प्रफुल्लता का अनुभव कर रहा था। उन दिनों मेरे केश और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। पं. शास्त्री जी ने मेरी तरफ देखकर कहा ''जै जै हम आये, तब ये मन्दिर के बाहर खड़े थे।हमने समझा ये.........'' पूज्य जै-जै कहने लगे प्रभु स्मरण बना रहता है,वहाँ ऐसा होता है। फिर महाराजश्री को मैंने प्रातः काल गाँव लौटने की जानकारी दी और अनुमति प्रसाद लेकर सोने के लिए चले गये।

बाद में गुरु पूर्णिमा, जन्माष्टमी पर्व पर यदा-कदा आना जाना हुआ,तब सभा मंच पर ही पूज्यश्री के दर्शन दण्डवत् कर लौट गये। दो-चार बार जयपुर सभा समारोह में पूज्यश्री के दर्शन लाभ होते रहे।

सन् 1994 में भगवान् श्री रघुनाथ जी के मन्दिर में दर्शन उपरान्त श्री विग्रह समीप बैठे हुए मुझे स्फुरणा संकेत हुआ। श्री निम्बार्कपीठ जाकर श्री श्रीजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें। इसी दिन श्रावण शुक्ला नवमी सम्वत् 2051 दिनांक 15 अगस्त 1994 को निम्बार्क पीठ आये। आते ही भगवान् राधा-माधव के दर्शन हेतु मन्दिर में गये। जहाँ एक नीम का पत्ता आंगन में पड़ा हुआ था, जिस पर सबसे पहले मेरी दृष्टि पड़ी। यह मुझे बार-बार आकर्षित कर रहा था। इस नीम के पत्ते ने मुझे अपने आकर्षण में बांध लिया। मैं कभी गुरु पंचायतन की तरफ दृष्टि डालूँ और कभी ठाकुर राधा-माधव को निहारने लग जाऊँ, किन्तु मेरी दृष्टि तो बरबस उस नीम के पत्ते पर ही जाकर ठहरे। मैं चुपचाप आगे बढ़ा, उस नीम के पत्ते को उठाया और सादर शीश पर लगा लिया, फिर क्रमशः गुरु पंचायतन, ठाकुर राधा-माधव व श्री सर्वेश्वर को दण्डवत् निवेदन कर श्री निम्बार्क पीठ पर व श्री परशुराम देवाचार्य जी की तपःस्थली पर दर्शन दण्डवत् प्रणाम के लिए चला गया। यहाँ कुछ समय ध्यान करके पंगत प्रसाद को चले गये।

लगभग दो बजे महाराजश्री बाहर पधारे। महाराजश्री को दण्डवत् करने के बाद हम पास ही बैठ गये। हम तीनचार आदमी ही थे। दीक्षा प्रसंग चला,महाराजश्री ने गोपाल मंत्रराज श्री गोपाल-सहस्रनाम आदि ग्रन्थ देते हुए इन के जप की विधि बताई। निम्बार्कीय तिलक, कण्ठी व शिखा का महत्त्व बताया। मेरी स्वयं की नासा भाल पर हाथ लगाकर बतलाया कि हमारा ऊर्ध्वपुण्ड्रतिलक कहाँ से किस तरह होना चाहिए। उपनिषद् व्याख्या के संदर्भ की वार्ता चली तो पूज्यश्री ने श्री निम्बार्क दर्शन का सारगर्भित गूढ़ार्थ समझाया। उस संक्षिप्त सत्संग वार्ता में सारा गूढ़ज्ञान सहज प्रकाशित होता गया और पूज्यश्री के सन्निकट बैठे हुए गुरु पंचायतन का स्वरूप अन्त में आभासित हो रहा था। उस दिन संभवतः 15 अगस्त होने से भीड़ नहीं थी।पूज्यश्री से कुछ जिज्ञासा और उनके समाधान भी हुए। पूज्यश्री ने प्राचार्य श्री

उपाध्याय जी को बुलवाया। हमें रुकने को कहकर आपश्री, श्रीमहल में पधारे। कोई चालीस पैंतालीस ग्रन्थ मंगवाकर पूज्यश्री ने स्वयं प्रसादस्वरूप मुझे प्रदान किये और आशीर्वाद में कहा– ''वैदिक वाङ्मय का गम्भीर अनुशीलन करते हुए साहित्य सेवा में सततः संलग्न रहें''। भगवान् श्री सर्वेश्वर को अर्पित प्रसाद व माला प्रसाद व उपवस्त्र प्रसाद प्रदान किया।

सद् गुरुदेव पूज्यश्री श्रीजी महाराज की इस अमोघ कृपा से हमारे मन की अकुलाहट मिट गई। मन का खटका सदा सदा के लिए जाता रहा। हार्दिक सन्तुष्टि आ गई। श्री सर्वेश्वर ठाकुर श्री राधा-माधव के प्रति अनुराग व निष्ठा हृदय में स्थापित हो गई व दिन प्रति दिन प्रभु के प्रति भावानुराग बढ़ने लगा। महाराज के प्रदत्त ग्रन्थों का अवलोकन किया, तो भावार्थ अपने आप हृदयंगम होने लगा। कई बार ऐसा अनुभव हुआ, जैसे पूज्यश्री स्वयं ही भावार्थ समझा रहे हों। इसी क्रम में वेदान्त कामधेनु दश श्लोकी का भावार्थ प्रकाशित हुआ। उन दिनों भगवान् श्री राधाकृष्ण की झूला-झूलते हुए झांकी मन को बार-बार लुभाने लगी। राधाकृष्ण के भक्ति-भावमय पद सहज ही साकार होने लगे। उन्हीं में से– सद् गुरु कृपा प्रभाव का यह एक अनुभव वर्णित पद है—

सत गुरु रस की वर्षा कीन्हीं।
निरस भाव बह्यो बहुदिन में प्रेम भावना दीन्हीं॥
नहीं अब चिन्ता भव सागर की शरण परम की लीन्हीं।
'रामस्वरूप' शरण 'श्रीजी' की भाव सरसता दीन्हीं॥

इन्हीं आत्मानुभूतियों के निवेदन केसाथ अनन्तश्री-विभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के पावन चरणों में सादर प्रणाम।

मोखमपुरा, बिचून, जयपुर (राजस्थान)

देह में आत्मबुद्धि, श्रीहरि–गुरु को छोड़कर अन्य की पराधीनता, स्वयं को भगवदीय न मानना, श्रुति–स्मृति–पुराणादि सत्शास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन, श्रीप्रभु को छोड़कर अन्य देव की आराधना, असत् शास्त्रों के अध्ययन की अभिलाषा, स्वयं को स्वतन्त्र मानना, अहंता–ममता की प्रबलता, सर्वेश्वर श्रीहरि को अन्य देवताओं के समान मानना, श्री प्रभु के अवतारों में मानवीय भावना, श्री भगवान् के चर्चा विग्रहों में सामान्य बुद्धि, भगवदीय दिव्य मन्त्रों में शब्द सामान्य की भावना, भगवदीय पावन गाथाओं में लौकिक आख्यान की कल्पना, श्रीगोविन्द के स्वाभाविक सौन्दर्य–माधुर्य–कारुण्य–मार्दवादि अनन्त कल्याण गुण समूह में मायिक साधारण गुणों की कल्पना, श्रीप्रभु में विश्वास का अभाव, साधनान्तर निष्ठा, मन्त्रान्तर भावना, सदाचार हीनता, असत्य पालन, काम क्रोधादि परायणता, दुस्सङ्ग सेवन आदि–आदि इस प्रकार ये अनेक विध विरोधी तत्त्व हैं, जिनके सेवन से मानव विवेक भ्रष्ट होकर निरयगामी बनता है।

—श्री श्रीजी महाराज

लोककल्याण परायण श्री 'श्रीजी' महाराज

— निम्बार्कभूषण वैद्य धनाधीश गोस्वामी

निम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा में प्रायः आचार्यों ने विलक्षण साहित्य-सर्जन व सेवा के विविध कार्य सम्पादित किए हैं। वर्तमान आचार्य अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणजी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुपम एवं जन-कल्याणकारी सेवाओं के कारण वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिये।

आपने जीर्ण-शीर्ण देवस्थानों का केवल जीर्णोद्धार ही नहीं करवाया, अपितु नीमगांव, मूंगी पैठन आदि ऐतिहासिक तपस्थलियों में खण्डहर हुए मन्दिरों के स्थान पर नव्य व भव्य गगनचुम्बी मंदिरों का निर्माण करवा कर महान् अनुकरणीय कार्य किया है।

साहित्य-सर्जन में आपने राधा-सर्वेश्वर भगवान् की मधुरतम लीलाओं के दुःखनिवृत्तिपूर्वक अगाध भवसागर से पार करने वाले हजारों सरस पद्यों की रचना करके कलिमल-ग्रसित अनेकों व्यक्तियों का उद्धार किया है। कहा है—

संसारसिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो–
र्नान्यःप्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य।
लीलाकथारसनिषेवणमन्तरेण
पुंसो भवेद् विविधदुःखदवार्दितस्य।। भागवत 12/4/40

भावार्थ— जो लोग अत्यन्त दुस्तर संसार-सागर से पार जाना चाहते हैं अथवा जो लोग अनेकों प्रकार के दुःखदावानल से झुलस रहे हैं, उनके लिए सर्वेश्वर भगवान् की लीला कथा-रूप-रस के सेवन के अतिरिक्त और कोई साधन या नौका नहीं है। ये केवल लीलारसायन से ही अपना मनोरथ सिद्ध कर सकते हैं।

सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आप बड़े-बड़े सम्मेलनों, सभाओं व यज्ञानुष्ठानों का सफल समायोजन करते व करवाते रहते हैं। आपने विलुप्त होते हुए कई आर्ष ग्रंथों का पुनः प्रकाशन करवाकर सरस्वती के साहित्य भंडार का संरक्षण किया है। पाश्चात्य संस्कृति से पथ-भ्रमित सामाजिक व्यक्तियों को अपने साहित्यद्वारा कर्तव्य-पथ का बोध कराकर व सन्मार्ग पथ-पथिक बनाकर उनका अपरिमित उपकार किया है। संसार में सर्वदा सुखानुभूति करने का सरल मार्ग बताते हुए आपने कहा है कि अपने से बड़ों का आदर करते हुए उनकी आज्ञा का पालन तथा उनके वचनों को सहन करना चाहिए। जो

बराबर-वाले हैं, उनसे मित्रता का भाव बढ़ावें। जो अपने से छोटे हैं, उनके अपराधों को क्षमा करते रहने से तथा सब प्राणियों में समत्व अर्थात् भगवद्भाव रखते हुए मानवजीव को सफल एवं आनन्दित बनाया जा सकता है। उक्तं च–

तितिक्षया करुणया मैत्र्या चाखिलजन्तुषु।
समत्त्वेन च सर्वात्मा भगवान् सम्प्रसीदति॥
सुप्रसन्ने भवगति पुरुषः प्राकृतैर्गुणैः।
विमुक्तो जीवनिर्मुक्तो ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥ भाग. 4।11।13-14

आपने अनेक ग्रन्थों में संसार में जीने की कला बताते हुए निर्देश दिए हैं कि गुरु शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, चिकित्सक-रोगी, ग्राहक-व्यापारी के परस्पर कैसे सम्बन्ध तथा कर्तव्य होने चाहिये। इनका मनन कर जीवन में उतारने से एक स्वस्थ व विकसित समाज का निर्माण होकर राष्ट्र समुन्नत अवस्था में प्रतिष्ठित हो सकेगा।

आपश्री ने गो-सेवा को अपने जीवन का अभिन्न अंग मान लिया है। निम्बार्कतीर्थ व अन्य कई स्थानों में गोशालाएँ स्थापित करके तथा अकाल के समय अनेकों शिष्यों को प्रेरित कर आपने असंख्य गायों के प्राण बचाये हैं।

वेद और संस्कृत भाषा के प्रति आपका प्रेम इसी से स्पष्ट होता है कि निम्बार्कतीर्थ में वेद महाविद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय जैसे प्रतिष्ठान आपके सत्प्रयत्नों से सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। प्रतिवर्ष बहुसंख्या में छात्र तत् तत् विषयों में निष्णात होकर राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं एवं देववाणी में रचित श्लोकों, पद्यों व ग्रन्थों का पठन-पाठन कर स्वयं को धन्य मानते हैं।

सायंकालीन नित्य कीर्तन में आपके कोकिल कण्ठ से निःसृत स्वरलहरी जब आस्तिक श्रोताओं की कर्णगुहा में प्रविष्ट होती है तो उनके हृदय में सुप्त भगवद् भाव जाग्रत हो जाता है और वे भाव-विभोर होकर झूमने लगते हैं।

उज्जयिनी के संदीपनी आश्रम की तरह छात्रावस्था में आपने मेरे अग्रज व्याकरण के धुरंधर विद्वान् पं. श्री मुरारिलालजी गोस्वामी से अध्ययन कर हमारे कुल को गौरवान्वित किया है।

"विद्या ददाति विनयम्" की आप साकार मूर्ति हैं। आपके अगाध पण्डित्य व विनयशीलता के आगे अपने आपको महान् मानने वाला व्यक्ति भी नतमस्तक हो जाता है।

भगवान् सर्वेश्वर से यही प्रार्थना है कि आपका जीवन स्वस्थ एवं दीर्घायुष्य युक्त हो, जिससे आपके असंख्य भक्त आपका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर कृतकृत्य होते रहें।

राधामाधव कुंज
रतनगढ़ (राजस्थान)

परम पूज्यनीय आचार्यश्री की भावुक भक्तजनों के प्रति सहृदयता

—सर्वेश्वर शरण दाधीच (नलू)

प्रातःस्मरणीय परम पूज्य जगद्गुरु श्री निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का समग्र जीवन किंवा उनका श्रीविग्रह गंगाप्रवाहवत् परम पावन है, जिनके चरण-सान्निध्य में बैठकर भावुक भक्तजन पवित्र होते हैं। जैसे गंगाजल बिना किसी भेदभाव के चराचर जगत् को पवित्र करता है, ठीक उसी प्रकार श्रीचरणों का सान्निध्य व दर्शन सबको पावन कर देता है। पूज्य आचार्यश्री की दृष्टि में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं है।

भगवद् भक्त रसिक जनों के सर्वस्व, सन्मार्ग प्रेरक, सरल हृदय, मन, वचन, कर्म व सात्विक मृदुभाषी और सबसे समान स्नेह रखने वाले हैं हमारे हृदय सम्राट् पूज्य आचार्यश्री।

पूज्य आचार्यश्री की संकल्प शक्ति अनुपम है। आपश्री जो भी संकल्प लेते हैं, वह श्री निखिल भुवन मोहन सर्वनियन्ता भगवान् श्री राधामाधव श्री सर्वेश्वर प्रभु की अनुपम कृपा से सहज ही निर्विघ्नतया पूर्ण हो जाते हैं। आपका आशीर्वाद भक्तों को फलीभूत होता है। आपके दर्शनभाव से सहज सुखानुभूति होती है। आपके मन्त्रदीक्षित शिष्यों के भक्तों के सत् पुरुषार्थ सहज ही फलीभूत होने लगते हैं। आपश्री के सरल सौम्य साधुता पूर्ण व्यवहार से समस्त समाज प्रभावित है। जनताजनार्दन के आप कर्णहार है। आपका समन्वयात्मक एवं निर्विवादात्मक व्यक्तित्व, कृतित्व, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्रों में प्रेरणादायी है। अनेक भक्तजनों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाकर अपने पवित्र मनोरथपूर्ण कर अपने जीवन को कृतार्थ किया है तथा कर रहे हैं।

आपश्री का स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुए भी भक्तों के समक्ष घण्टों विराजते हैं, सदुपदेश देते हैं। प्राणीमात्र का कल्याण करते हैं, क्योंकि 'परोपकाराय सतां विभूतयः' के अनुसार महापुरुषों का यह स्वभाव ही है– दूसरों का उपकार करना। शारीरिक पीडा रहते हुए भी अपनी सारस्वत साधना में आपश्री निरन्तर संलग्न रहते हैं। जो स्वयं तनावग्रस्त हो, पीडाग्रस्त हो, किन्तु संसार के प्राणीमात्र को तनाव से पीडा-मुक्त करने के लिए सदुपदेश साहित्यरचना आदि दिव्य साधना में सतत निरत रहना आपश्री का स्वभाव बन गया है, कितना महान् अनुगह है पूज्य आचार्यश्री का भक्तों के प्रति।

''तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्! अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः'' अर्थात् सज्जनता ही भूषण है जिनका, ऐसे साधुजन बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी विचलित नहीं होते। वे करुणा के मूर्त्तिमान् स्वरूप होते हैं। जो समस्त प्राणीमात्र में सौहार्दभाव रखते हैं, जिनकी दृष्टि में कोई शत्रु नहीं होता और परम शान्त होते हैं। जिनके दर्शन मात्र से अपारशान्ति मिलती है। उपरोक्त सभी लक्षण पूज्य प्रवर आचार्यश्री में घटित होते हैं। आपश्री की भावुक भक्तजनों के प्रति सहृदयता ही उसका ज्वलन्त उदाहरण है।

पूर्व स्नातक, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
243 A पिय निवास, मदनगंज, किशनगढ़

माँ भारती के 'महान् सपूत', 'युग-द्रष्टा' श्री 'श्रीजी राधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य'

— डॉ. (कु.) विमला भास्कर

सन्तजन किसी भी देश की सच्ची सम्पत्ति होते हैं। वे जिस युग में आविर्भूत होते हैं, उस युग के जन समुदाय के लिए सच्चे पथ-प्रदर्शक होते हैं। विश्व के कल्याण के लिए जिस समय जिस धर्म की आवश्यकता होती है, उसका आदर्शमय रूप प्रस्तुत करने के लिए स्वयं भगवान् ही तत्कालीन सन्तों के रूप में नित्य अवतार लेकर आविर्भूत होते हैं। वर्तमान युग में यह दिव्य कार्य जिन सन्तों द्वारा हो रहा है, उनमें ही है 'आचार्य शिरोमणि जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री **श्रीजी राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य**'।

शब्दसागर में डुबकी लगने पर मिलने वाले शब्दों में वह शक्ति कहाँ, जो उनके बहुविज्ञ व्यक्तित्व को समेट सके। उसके लिए तो चाहिए दिव्य-दृष्टि भी। जैसे विराट् विश्व को नापने के लिए वामन बौना पड़ जाता है, वैसे ही मध्याह्न के तेजोमय सूर्य को भला नन्हा प्रकाश रूप माटी का 'दीपक' कुछ दिखाने का साहस कैसे बटोर सकता है, पर अन्तस् में उमड़ती अपार श्रद्धा, उनके चरणारविन्दों का अटूट प्रेम लगातार हृदय को उद्वेलित उत्साहित कर गुह्य ब्रह्म विद्या के साक्षात् मूर्तिमन्त स्वरूप के विषय में कुछ लिखने हेतु लेखनी प्रयासरत होना चाहती है।

आज के इस भौतिकतावादी युग में मानव को स्वार्थपरता, ईर्ष्या-द्वेष, लोभ आदि की आंधी ने कुछ इस प्रकार झकझोर कर रख दिया है कि वह अपने पांवों सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता। हो भी तो कैसे? यह ज्वलन्त प्रश्न आज इस देश के मनीषियों, विद्वानों व चिन्तकों के मस्तिष्क पर कुछ इस प्रकार छा सा गया है कि उन्हें भी सिवाय 'मानवता' के कुछ और सूझ भी नहीं रहा। इन महापुरुषों को यह ज्ञात है कि सच्चा सुख इस चौंधियाती भौतिकता में नहीं, अपितु आध्यात्मिक व धार्मिक चेतना में निहित है। जिस भारत में विश्व को आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ा कर अज्ञानता से ज्ञान के उज्ज्वल आलोक में ला खड़ा किया था, आज वह स्वयं अपने अतीत के वैभव से जीवन मूल्यों को क्यों कर भूलता जा रहा है? पाश्चात्य सभ्यता के अर्थहीन मूल्यों को स्वीकार करते हुए हमें गर्व होता है और अच्छा लगता है अपने को 'मॉडर्न' कहलाना। पर क्यों? विचार करो? क्या यह मीठा जहर नहीं, जो गले से उतरते ही अपना प्रभाव हम पर छोड़ेगा ही। यह मीठा जहर हमें मिटा न दे, विनष्ट न कर दे, इसी चिन्ता से चिन्तित हैं प्रज्ञाचक्षु, परमयोगी, अद्वितीय विद्वान्, संस्कृति के सूर्य श्री श्रीजी महाराज (श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी) जो सम्पूर्ण भौतिक सुखों को तिलाञ्जलि दे प्राणी मात्र के उत्थान के लिए समर्पित हो रहे हैं। लगता है उनके तो जीवन का ध्येय ही बस एक है—

"यह जाता जीवन क्यों न जाये, पर हित-हिताय, पर हित-सुखाय।"

सन्देह नहीं कि करुणावरुणालय सर्वान्तर्यामी भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु स्वयं ही संसार तापानल से संतप्त जीवों के कल्याणार्थ नर स्वरूप धारण कर पृथ्वी पर ऐसे ही 'गुरु रूप' (श्री श्रीजी महाराज) में अवतरित हुए हैं। उनकी दयालुता, उदारता, भक्तवत्सलता व शरणागत जनों के प्रति कृपाभाव की तो तुलना नहीं की जा सकती। एक दृष्टान्त मन में रह-रह कर आ रहा है– 'पारस' जो लोहे को सोना बना देता है, पर पारस उसे पारस जैसी तद्रूपता प्रदान तो नहीं करता। इधर गुरुदेव अपने चरणों में आश्रय लेने वाले शिष्य को अपने से भी ऊपर उठाने के लिए तत्पर हैं। ऐसे गुण जहाँ हों, उसे तो अनुपम, अद्वितीय और अलौकिक ही कहा जायेगा। अतः गुरुदेव (चेतन) तो पारस (जड) से भी बहुत ऊपर हैं। वे चिन्तामणि या कल्पवृक्ष नहीं, जो लौकिक सुखों की अनुभूति मात्र करा कर छोड़ दे। वे तो उस गोलोक धाम, भगवत्पद की प्राप्ति करा देना चाहते हैं, जिसे पाने के बाद कुछ भी पाने की ललक मन में पैदा ही नहीं हो सकती। उनका जीवन तो विशुद्ध अहैतुकी सेवा का प्रमाण है। वे सेवा करते हैं, केवल सेवा के लिए। सेवानन्द में आनन्द तो वासना है, जो प्रेम सेवा का विघ्न है। उन्होंने सेवा हेतु पूर्णजीवन समर्पित कर दिया है। सेवाभाव विद्या, धर्म, साधुसन्तों, भक्तजनों, दीनदुखियों के प्रति तो है ही। पशु-पक्षियों तक उनकी पैनी दृष्टि पहुंची है, गो सेवा इसका प्रमाण है। खण्डहरों का भी जीर्णोद्धार उनके हाथों हुआ है। शायद ही कोई कोना अछूता रह गया हो, उनकी दृष्टि से, जो सेवा न पा सका हो।

नर में ही नारायण के दर्शन पाने वाले इस 'मसीहा' ने इसी नर सेवा को ही ईश्वर की आराधना मान लिया है। इस दिव्य रूप ने मानवता के कल्याण हेतु महान् सम्मेलनों का आयोजन किया तो कहीं टी.वी. के 'आस्था चैनल' के माध्यम से जन-जन तक अपनी वाणी पहुंचायी है, जिसका उद्देश्य सनातन धर्म को एक सूत्रता में निगुन्थित रखना व सन्तों-महात्माओं को उनके दायित्व से अवगत कराना रहा है। युग पुरुष ने युगानुरूप ही नारी-जाति का सम्मान किया है, तो विद्वानों का आदर भी । नशा, गो-हत्या जैसी कुरीतियों के दुष्परिणामों को भी उजागर किया है। गुरुकुल रूपा व अधुनातन विद्यालयों की स्थापना कर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास का भी पूर्ण ध्यान रखते हुए उसे जागरूक सुसंस्कृत मानव बनाने के लिए चेष्टाशील हैं।

'आचार्यश्री' स्वयं भी एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार व कवि हैं। उनके द्वारा 35 से अधिक ग्रन्थों की (संस्कृत व हिन्दी भाषा में) रचना हुई है। इन कृतियों में उनकी राष्ट्रभावना, संस्कृति प्रेम, प्रकृति प्रेम, वृन्दावन प्रेमादि लक्षित हो रहा है। अप्रतिम प्रतिमा के धनी आचार्यवर ने भारतीय कला-संस्कृति और धार्मिक आस्था को जो विश्वव्यापी प्रसार दिया है, वह 'राधासर्वेश्वर' (युगलसरकार) की ही तरह शाश्वत रहेगा। कहने के लिए 'सन्त' तो बस भक्त होते हैं तथा भक्ति ही उनका जीवन। इससे इतर क्या हो रहा है, उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं, पर महाराजश्री जी का व्यक्तित्व तो इसका अपवाद है। क्या गुण नहीं हैं इनमें? एक युग द्रष्टा की पैनी पकड़ तो सर्वत्र लक्षित हो रही है। अपार ज्ञान समुद्र हिलोरें लेता चारों

तरफ उमड़ता दिखायी देता है। हिन्दी, संस्कृत, ब्रज, बंगला व राज्यस्थानी भाषा के विद्वान् होने के साथ-साथ संगीत कला की रचना करना सम्प्रदाय के लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं। अध्यात्मपरक रससिद्ध कवि की काव्यधारा ऐसा भी मोड़ ले सकती है, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। 'भारत-कल्पतरु' 'भारत-भारती-वैभवम्' पूर्ण रूपेण राष्ट्रीयता के उच्चतम भावों जैसे सदाचार, विश्वबन्धुत्व, स्वदेश प्रेम, सहिष्णुता, परोपकारादि से आप्लावित अपवाद स्वरूप रचनाएँ ही कहीं जायेंगी।

''भारत तीरथ रूप महा है'' कहकर शस्यश्यामला, वीर प्रसविनी, ऋषि मुनियों की तपस्थली के प्रति प्राणी मात्र को नमन करने के लिए जैसे कहा हो। कवि तो राष्ट्र का कर्णधार होता है, वह जैसा चाहे समाज को दिशा दिखला सकता है और यदि यह कवि 'सन्त' है तो फिर कहना ही क्या? 'भारत कल्पतरु' में गागर समेट कर रख दिया है। समसामयिक सम्पूर्ण समस्याओं को जो मानवता को लीलती जा रही हैं, उनसे हर पल सचेत रहने की बात कही है। जैसे 'तस्करता का त्याग कर', 'भष्ट्राचार विसार' 'मद्यादि सेवन अवैध' 'चलचित्रों का त्याग', 'धूमपान दुःख मूल है' 'वन तरु-सम्पदा सब विधि रक्षण हेतु', अति घातक संहारकर अणु बम आदिक अस्त्र 103 से 108 तक के छः दोहों में क्या नहीं सिमटा? इन ज्वलन्त समस्याओं का समाधान भी 'भारतवर्ष अखण्डता' रक्षाहित अरपन' व 'संघटन करके रहो' 'सभी दृष्टि से आज' प्रस्तुत किया है। आयुर्वेद के प्रति लोगों के मन में पुनः आस्था स्थापित करने हेतु निम्ब, पंचगव्य, तुलसी आदि के महत्त्व को स्पष्ट किया है। उनकी यह रचना गुरु-गूढ़ ज्ञान मण्डित चरित्र-निर्माण हेतु एक संहिता के रूप में उभर कर सामने आयी है। पीयूषरसवर्षिणी 'कल्पतरु' तो नामानुकूल है। सरल दोहा छन्द में रचित यह रचना सर्वजन हिताय भावना से परिपूर्ण अतीत के झरोखों को झांकने के लिए आमन्त्रित करती है। 'भारत-भारती- वैभवम्' भारत के वैभव की सजीव छवि है, जो मानों स्वतः ही हृदयंगम हो जाना चाहती है। 'श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु हिन्दी भाषी भक्तों के लिए प्रसाद ही नहीं, अपितु 'स्वाति' की बूंद है, जिसका महत्त्व केवल निष्ठावान् रसिक हृदय ही चातक सदृश पान कर सकता है। कवि ने बार-बार उस सर्वेश्वर के भजन के लिए कहा है– **''सर्वेश्वर पद प्रीति करो मन''**।

उनकी रचनाओं में एक तरफ यदि गूढ़ अध्यात्म तत्त्व व सरल साधना-पद्धति दिखायी देती है, तो दूसरी ओर एक श्रेष्ठ कवि के काव्य की भाषा-अलंकारिता, छन्द बद्धता आदि विशेषताएँ स्वतः खिंचती चली आती हैं। आये भी क्यों न? युगल सरकार की मोहनी छवि में वह चुम्बकीय शक्ति जो है। इसमें 'तुलसी' के 'मानस' की भांति स्वान्तः सुखाय व 'सुरसरि सम सब कह हित होय' का भाव एक साथ लक्षित होता है। सन्तों का तो जीवन ही जागतिक कल्याणार्थ है। 'श्री युगलस्तवविंशति' में युगल सरकार, गिरिराज व राधाकुण्डादि विषयों को लिया है, तो 'श्री जानकी वल्लभ' में मंजुल नामा अवध विरामा सीतारामा' को भी नमन किया है। श्री स्तवरत्नाञ्जलि' में पूरे ब्रह्माण्ड के देवी-देवताओं, जैसे श्रीगणेश, गरुड़, लक्ष्मी, नारायण, हनुमान्, मिथिलेश-सुता, राम, शिव, सरस्वती, गंगा, गो, पुष्कर निम्बार्क तीर्थ आदि को समेट लिया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे 'आचार्यश्री श्रीजी' ने प्रिया-प्रियतम को तो लिया है,

पर उसके अंशांशी भेद को भी वे ओझल नहीं कर पाये। सर्वेश्वर प्रभु के भी अपने परिकर हैं, जो अपने-अपने ढंग से सेवा करते हैं। सन्देह नहीं कि महाराजश्री जी का दृष्टिकोण पूर्ण रूपेण समन्वयात्मक रहा है। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण आप जन-जन का कण्ठहार हुए हैं।

इस महान् व्यक्तित्व के लिए मैं तो यही कहूँगी कि निम्बार्क सम्प्रदाय की यह एक ऐसी विभूति है—

प्रभुता पाई जाहि मद नाहिं''

युग-चेता, युग-द्रष्टा, युगपुरुष, मानवता के पुजारी, दिव्य गुणों के भण्डार, महामानव, श्री श्रीजी राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य, साक्षात् राधा-सर्वेश्वर ही हैं, अपने सलोने मंजुल स्वरूप में पूर्णता समेटे। फिर भी यह अकिंचन जीव अपने अन्तःस्तल की गहराइयों से मंगलमय दीर्घ जीवन की कामना करते हुए शत-शत नमन करती हैं माँ भारती के इस ''महान् सपूत'' को।

1297 रानीबाग, शकूर बस्ती
दिल्ली 110034

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा संस्मरण ❊

पूज्य श्री श्रीजी महाराज हैदराबाद धर्म संघ में सम्मिलित होने हेतु यात्रा पर थे। बैतुल व हरदा के पास जंगल में श्री सर्वेश्वर भगवान् के अभिषेक, शृंगार व भोग का समय हो जाने से एक कुआँ देखकर आपने गाड़ी रुकवाई और परिकरों को कुएँ के पास भगवान् सर्वेश्वर के अभिषेक, शृंगार भोग आदि सम्पन्न करने का संकेत दिया। मन में सभी को विचार हो रहा था कि भगवान् सर्वेश्वर के अभिषेक के लिए जंगल में गाय के दूध का कैसे प्रबन्ध होगा। सर्वेश्वर इच्छा से वहाँ रुकना हो गया। सेवा की व्यवस्थाएँ होने लगी। कुएँ का जल खींचा जा रहा था। तभी एक सज्जन आए। परिकरों ने उनसे सर्वेश्वर सेवा के लिए गाय के दूध हेतु प्रबन्ध के लिए वार्ता की। उन सज्जन ने कहा– समय तो अब दूध दोहन का नहीं रह गया है, फिर भी मैं अपनी गायों के पास जाता हूँ, उनसे कुछ दूध मिल सका तो निकाल लाता हूँ। वे सज्जन जिनका नाम भानसिंह था, गये और दोहनी लेकर गायों का दूध दोह लाये। वे बता रहे थे कि उनकी गायों ने उतना दूध फिर दे दिया, जितना वे प्रातःकाल अपने नियमित समय पर निकालते थे। साथ ही वह अपनी बाड़ी से सब्जी व फल भी ले आए, इस तरह उस दिन उस जंगल में श्री सर्वेश्वर अभिषेक के लिए दूध के साथ, राजभोग के लिए तसमई (खीर) भी बनी। पूड़ी प्रसाद के साथ सब्जी प्रसाद भी बना और उन सज्जन के परिजनों से सभी परिकरों ने राजभोग के बाद आनन्द से प्रसाद पाया और राजभोग प्रसाद का जंगल में पूर्ण वैभव हुआ।

अविस्मरणीय-संस्मरण

— डॉ. ब्रजकिशोरप्रसाद सिंह
(एम.एस.सी., पी-एच.डी.)

मैं अपने अवगुणों की चर्चा करने लगूँगा तो एक अच्छी बड़ी पुस्तक तैयार हो जायेगी। अतः केवल यही कहना ठीक होगा कि पतितों में पतित 'नाथ शरण आयो तिहारी'। फिर भी इतना तो कहना चाहूँगा कि मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूँ और भाषा से मेरा लगाव नहीं रहा है। अपने लेख को अलंकृत करने का कार्य मुझ से सम्भव नहीं है। जिन दृश्यों का यहाँ वर्णन करने जा रहा हूँ, उन्हें मैने जैसे देखा है, सभी पाठकों के सामने रख रहा हूँ।

(1) प्रयाग राज में महाकुम्भ का समय था। 14 जनवरी की तिथि थी। शाही स्नान हो चुका था। करोड़ों श्रद्धालु भारतवर्ष के कोने-कोने से पहुँचे हुए थे। दोपहर के बाद से ही आसमान में बादलों का घनत्व बढ़ने लगा था। हवा इतनी ठण्डी हो रही थी, मानों हिमालय के बर्फों से गुजरने के बाद सीधे प्रयागराज ही आ रही हो। रात्रि में आठ बजे से ही वर्षा की कुछ बूँदें प्रयाग राज की जमीन पर पड़ने लगी। रात्रि के बढ़ने के साथ ही वर्षा भी घनी होती चली गयी। इस वर्षाती और ठण्डी रात में लाखों श्रद्धालु खुले आकाश तले जमीन पर पड़े रहने को बाध्य थे। उन श्रद्धालुओं के कष्ट का वर्णन करना कम से कम मेरे लिये तो असम्भव ही है।

दिनांक 15 जनवरी की सुबह बिस्तर से कम्बल से निकलना असम्भव सा लग रहा था। पर परम पूज्य 'आचार्यश्री' के द्वारा श्री सर्वेश्वर प्रभु के दर्शनों का समय हो गया था। स्नान कर अपने शरीर के प्रत्येक भाग को पूरी तरह ऊनी कपड़ों से ढककर वहाँ पहुँचा तो पूरी तरह आश्चर्य चकित रह गया। परम पूज्य 'आचार्यश्री' एक ही अवस्था में हाथ में मेग्नीफ्लाइंग ग्लास (Magnifying glass) लिये बैठे थे। किसी भी व्यक्ति के लिये एक ही आसन से एक ही अवस्था में उतनी ठण्ड में लगातार बैठना असम्भव है। काफी समय के बाद यह कार्यक्रम थमा। शृंगार आरती की तैयारी होने लगी थी और परम पूज्य 'आचार्यश्री' अपने श्रीमुखं से अमृत वर्षा करने लगे थे। पर यह क्या, श्रद्धालुओं के कष्ट का वर्णन करते-करते आचार्यश्री रोने लगे थे। उनके अनमोल आँसू लगातार बह रहे थे और मानों आचार्य श्री परम दयालु जुगल सरकार श्री राधासर्वेश्वर प्रभु से करोड़ों श्रद्धालुओं के द्वारा किये गये किसी अपराध के लिए क्षमा याचना कर रहे थे। हजारों शिष्यगण जो निम्बार्क नगर के पण्डाल में श्रीमुख से अमृत वाणी सुनने को एकत्रित थे, पर पूज्य आचार्यश्री के दुःख को देख कर सभी अभिभूत थे। भक्तों के दुःख से कितने दुःखी थे परम पूज्य 'आचार्यश्री'। भला परम दयालु सर्वेश्वर प्रभु अपने लाडले भक्त के आँसुओं को कैसे बेकार जाने देते। परम पूज्य आचार्य श्री के आँखों से होती आँसुओं की वर्षा रुकने के पहले ही आसमान से हो रही वर्षा रुकने लगी थी। बर्फीली हवा जो सीधे हड्डियों को छेद रही थी, उसकी गति भी कम होने लगी थी। दोपहर होते-होते सूर्य भगवान् के दर्शन हो गये थे।

इसी सन्ध्या परम पूज्य आचार्यश्री जब नित्य कीर्तन में उपस्थित हुए तो पूज्यश्री गोमती दास जी ने परम पूज्य आचार्यश्री से कहा कि आज आपकी कृपा से श्रद्धालुओं को भयंकर कष्ट से मुक्ति मिली है। परम पूज्य आचार्यश्री ने सिर्फ इतना ही कहा था कि हम सभी को सर्वेश्वर प्रभु का आभार प्रकट करना चाहिये।

(2) नासिक कुम्भ का समय था। शाही स्नान में जाने के समय कुछ गड़बड़ी हो जाने के कारण हम कुछ शिष्यों ने एक छोटा सा घेरा परम पूज्य आचार्यश्री के चारों ओर बना लिया था। धूप बड़ी ही तीखी थी। कंक्रीट की सड़क अंगारों की तरह तप रही थी। कुछ व्यवधान आने से मानव समुद्र का बहाव थोड़ी देर के लिए रुक गया था। तपते सड़क पर एक क्षण के लिए भी पैर रखना कठिन हो रहा था। हम सभी सड़क पर खड़े रहने के लिए बारी-बारी से कभी दाँयाँ तो कभी बायाँ पैर उठा और रख रहे थे। इन्हीं असाध्य कष्ट के क्षणों में मेरी निगाहें मुझ से करीब दो मीटर आगे परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों पर पड़ी। मैं पूरी तरह अचंभित रह गया। जहाँ एक क्षण के लिये भी इस तपती सड़क पर पैरों को जमाना कठिन हो रहा था, वही परम पूज्य आचार्यश्री स्थिर भाव से शान्त मुद्रा में चुपचाप खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि मानों तपती सड़क ने अपना पूरा ताप खो दिया हो और उसका तापक्रम जो हम सबों के लिये असहनीय हो रहा था, परम पूज्य आचार्यश्री के लिए एकदम सामान्य हो गया था। मुझे लगा कि अवश्य ही परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों में छाले हो जायेंगे। रात्रि में जब सन्ध्या संकीर्तन के समय परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों का स्पर्श मिला तो फिर मैं आश्चर्य चकित था। वही मुलायम गोरे, सुन्दर और हम पापियों को पाप से मुक्त करने वाले चरण थे। भला उन चरणों में छालों के लिये स्थान कहाँ था।

(3) इधर हाल ही श्री वृन्दावन में काठियाबाबा का उत्सव था। नवम्बर महीने का आखिरी सप्ताह चल रहा था। सर्दी अच्छी होने लगी थी। परम पूज्य आचार्यश्री इसमें भाग लेने सीधे जयपुर से कार द्वारा आ रहे थे। परम पूज्य 'आचार्यश्री' श्री वृन्दावन में पादयात्रा का प्रयोग नहीं करते और न ही किसी सवारी का। उनके आराध्य बाल स्वरूप श्रीकृष्ण यहाँ पाँव-पाँव जो चले थे। श्री वृन्दावन की सीमा के बाहर से ही खाली पाँव सीधे काठियाबाबा के यहाँ पधारने का कार्यक्रम था। हम शिष्यगण हजारों की संख्या में उनकी अगवानी के लिये श्री वृन्दावन की सीमा के बाहर आचार्यश्री की प्रतीक्षा कर रहे थे। सन्ध्या होते ही ठंडी हवायें चलने लगी। हम सभी लोगों ने ऊनी कपड़ों से अपना शरीर ढक लिया था। करीब आठ बजे रात्रि को परम पूज्य आचार्यश्री की कार जयपुर से श्री वृन्दावन की सीमा के करीब पहुँची थी। हम सभी को शीघ्र ही आचार्यश्री के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया था। हमने सुन रखा था कि परम पूज्य आचार्यश्री का स्वास्थ्य उन दिनों सही नहीं चल रहा था। पर परम पूज्य आचार्यश्री उन ठण्डे क्षणों में एक झीने सफेद वस्त्र में ही थे। वातावरण की ठंडी हवा का कम होता तापक्रम मानों आचार्यश्री के शरीर को स्पर्श करने से पहले ही बढ़ जाता था। तभी तो उन पतले सफदे कपड़ों के बावजूद आचार्यश्री के शरीर में कोई सिहरन नहीं थी। सभी परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों के स्पर्श को

अधीर हो रहे थे। समय अधिक हो रहा था। हम शिष्य जनों ने आचार्यश्री के चारों ओर एक छोटा घेरा बनाया और जन समूह परम पूज्य आचार्यश्री को अपने आगे लेकर काठियाबाबा के स्थान की ओर बढ़ चले थे। 'आचार्यश्री' शान्त, सौम्य और एक गति से चल रहे थे। रास्ते के कंकड़, पत्थर, कांटे, उन मुलायम चरणों पर कुछ भी प्रभाव नहीं डाल रहे थे। मैं अचंभित और मंत्रमुग्ध होकर सिर्फ आचार्य श्री के चरणों को अपने हृदय में बसाता चल रहा था। उन क्षणों में मुझे याद आया कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा है कि जब भगवान् श्री राम अपने पिता की आज्ञा से वन जा रहे थे तो रास्ते में कंकड़, पत्थर, साँप, बिच्छु भी अपना स्वभाव भूल गये थे। मुझे लगा कि इस महामानव परम पूज्य-आचार्यश्री के शरीर को स्पर्श करने के पले ही हवा का तापक्रम भी पूरी तरह सामान्य हो जाता है। रास्ते में पड़े कंकड़, पत्थर, कील, काँटे भी परम पूज्य आचार्यश्री के स्पर्श से अपने को धन्य बनाते होंगे।

परम पूज्य आचार्यश्री के इन्हीं चरणों में अपना नित्य का प्रणाम कर मैं अपनी इन यादों को विराम देता हूँ।

विश्वविद्यालय,प्राचार्य (भौतिकी)
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया
बिहार

श्री श्रीजी वचनामृतम्

- मानव शरीर प्राप्त कर लेने पर सहज ही में यह प्राणी महापुरुषों के सत्सङ्ग सेवन से श्रीभगवत्प्रपन्न हो साधनाभिरत रहकर अपने परमाराध्य के कमनीय दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है।
- यदि कहीं दुस्सङ्गपरायण दुर्जनों का कलुषित सङ्ग इसे मिल जाता है तो वह अगणित क्लेशों का उपभोग करता हुआ नारकीय जीवन बिताता है।
- मानवता का विपरीत अर्थ करने वाला प्राणी सदा ही संसार दावानल में संताप पाता है। वह कभी भी सुख-शांति का अनुभव नहीं कर सकता।
- सत्य, अस्तेय, दया, धर्म, सदाचार पालन और श्रीसर्वेश्वराराधन में ही मानवता सार्थक है।
- जहाँ विश्वास है,वहाँ श्रीहरि का सतत निवास है।
- स्त्री-पुरुष-पौत्रादि बन्धुजनों का प्रेम क्षणिक और स्वार्थपूर्ण है, वैभव अनित्य एवं दुःखरूप है।
- केवल प्राणी का परम सहायक एकमात्र भागवद्धर्म है।

धर्माचार्यों के आदर्श : महाराजश्री

—श्री किशोर जी व्यास

शरत्-पूर्णिमा की रात्रि हो, शीतल चंद्र ज्योत्स्ना सर्वत्र विकीर्ण हो रही हो, सुगंधित पुष्पों से आसमंत सुरभित हो, मंद समीर सुखद स्पर्श करता बहता हो, धीमे मंथर संगीत की मंजुल लहरें चल रही हो और ऐसे सुरम्य वातावरण में परमकारुणिक श्रीगुरुदेव अपने भगवद्भक्तिमय ज्ञान-विज्ञान के उपदेश से समग्र वात्सल्य की वृष्टि किसी संसार ताप-तप्त साधक पर कर रहे हो ऐसा परम सुखद आल्हाद किसी को भी, कभी भी प्राप्त करना हो तो वह आमंत्रित है– प्रातः स्मरणीय श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर आचार्यशरण पूज्य श्री श्रीजी महाराज–श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के मंगल दर्शनार्थ।

औरों की बात नहीं, अपनी अनुभूति सुना रहा हूँ। भगवत् कृपा से किशोरावस्था से ही अनेक धर्माचार्यों का सांनिध्य विविध निमित्तों से मुझे प्राप्त होता रहा। उसी से मेरा स्वाध्याय एवं साधन-विश्व विकसित होता गया। प्रायः वे सभी श्रेष्ठ एवं प्रणम्य रहे हैं। किन्तु प्रथम दर्शन से ही पूज्य महाराजश्री के सान्निध्य में मुझे जो उपरिवर्णित आल्हाद निरंतर अनुभव होता रहा वह सर्वथा अनोखा है। चंदन और चंद्रमा से भी अनेक गुणा बढ़कर शीतल साधु संगति कैसी होती है इसकी सुखद अनुभूति मैंने यहाँ निरपवाद निरंतर अनुभव की। आपश्री की मनोहारिणी सौम्य शांत मूर्ति, प्रेमपीयूष-वर्षिणी दृष्टि, स्नेहसिक्त वाणी और सहज सुंदर शालीन व्यवहार किसी के भी अंतःकरण से आपको सदा-सदा के लिये सादर प्रतिष्ठित कर दें तो क्या आश्चर्य है?

आश्चर्य तो यह है कि अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु के पद पर विराजमान होकर भी इतना सहज-सौजन्यमय सरल जीवन कैसे रह सकता है? किंचित् विद्या अथवा जरा सी पदप्रतिष्ठा प्राप्त होते ही असीमित अहंकार वृद्धि प्रायः सर्वत्र देखी जाती है, सांप्रदायिक संकीर्णता कटुता तक बढ़ जाती है, वित्त-व्यवहार धार्मिक जगत् को भी व्यावसायिक बनाने पर तुला है, धर्माचार्यों का वेद-शास्त्र-चिंतन क्षीण होता जा रहा है, शास्त्रीय मर्यादाओं का क्षरण उत्तरोत्तर अधिक दृग्गोचर हो रहा है, जगद्गुरु पद पर विराजमान महात्मा भागवत के कथा-व्यास होने में धन्यता का अनुभव कर रहे थे, भगवान् की मंगल कथा फिल्मी मनोरंजन की सहेली बनती जा रही है, राष्ट्रीयता की बात करने वाले धर्मविमुख और धार्मिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति उदासीन हो रहे हैं तथा देश का दिग्भ्रमित नवयुवक भौतिकता के चाकचक्य में अपना कर्त्तव्य ठीक से नहीं समझ पा रहा है। ऐसी विचित्र स्थिति में शारद्यमर्यादा और लोककल्याण इन दोनों तटों केमध्य से सर्वेश्वरभक्ति की मंगल धारा को प्रवाहित रखने का महत्कार्य संपन्न करने वाले आचार्यप्रवर सभी के लिये पथप्रदर्शक आदर्श के रूप में विराजमान प्रतीत होते हैं।

प्रचुर मात्रा में संस्कृत तथा हिंदी साहित्य का सृजन करके पूज्य महाराजश्री ने धर्माचार्यों में नया कीर्तिमान स्थापित किया है और विशेष बात यह है कि श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् की निगूढ़ लीलाओं से लेकर देशसंरक्षणार्थ आत्माहुति प्रदान करने वाले शहीदों की पुण्यस्मृति तक आचार्यश्री की लेखनी ने मुक्त एवं सार्थक संचार किया है। वेदविद्या एवं देववाणी संस्कृत भाषा के संरक्षणार्थ आप निरंतर परिश्रम करते रहे हैं। उस प्रसंग को तो मैं भूल ही नहीं सकता। जब श्रीपुष्कर में मेरी भागवत कथा में आशीर्वचन प्रदान करते समय गौमाता की दुःखद स्थिति का वर्णन करते-करते आचार्यश्री के नेत्रों से झरझर अश्रुपात होते हुए करुणाविगलित कंठ इतना अवरुद्ध हो गया कि ध्वनिवर्धक मुझे संभालना पड़ा। कैसे भूल सकता हूँ, वह प्रसंग जब आचार्यपीठ में मेरी कथा के समय अपराह्न में एकाएक आचार्यचरण मेरे निवास स्थल में अचानक पधार आये और केवल यह कहने के लिए कि 'व्यासजी, आज जैसा कपिलोपदेश मैने कभी नहीं सुना। मुझसे रहा नहीं गया इसलिए यह कहने चला आया।' वैदुष्य, करुणा तथा परगुणपरमाणुपर्वतीकरण की इस कृपा का यह संगम सर्वदा अलौकिक है।

सांप्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठकर सारे समाज को सनातन वैदिक धर्म एवं भारतीय राष्ट्रीयता से ओतप्रोत करने का पूज्य महाराजश्री का व्यापक दृष्टिकोण तथा उसी दिशा में अथक प्रयास सभी के लिए मार्गदर्शक है तथा संपूर्ण समाज इसके लिए पूज्य महाराजश्री का सदैव ऋणी रहेगा। हम महाराष्ट्र के निवासी धन्य हैं कि इस पवित्र निम्बार्क धारा का मूलस्रोत महाराष्ट्र की धरा रही है। हमारे प्रपितामह तक हमारी गुरु परंपरा भी श्रीनिम्बार्कपीठ की ही रही है। आज पूज्यचरणों में अपार श्रद्धा एवं प्रगाढ़ भक्ति से प्रणामाञ्जलि अर्पण करते हुए श्री सर्वेश्वर प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पावन संरक्षक छत्र हम सभी पर चिरकाल तक विराजित रहे और श्रीचंरणों की सर्वविध सेवा से हम सभी का जीवन सार्थक एवं धन्य होता रहे। इति।

'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेन्ट, सूर्यमुखीदत्त मन्दिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - 411016 (महाराष्ट्र)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

- *धर्म के सम्यक् आचरण से मानव स्वयं रक्षित तथा आनन्द की प्राप्ति करता है। अतएव धर्म का त्याग कदापि न करो, धर्म सदा ही सेवनीय है।*
- *मानव के साथ केवल उसका उपार्जित धर्म ही साथ जाता है।*
- *मानव सदाचार परायण न हो, सदाचार के परिपालन में प्रमाद करता हो तो वह अपने अभ्युदय से पराङ्मुख होकर अधोगामी बनता है।*
- *देश तो स्वतन्त्र हुआ, किन्तु देश की शास्त्र-सम्मत अक्षुण्ण मर्यादा, संस्कृति एवं सभ्यता तथा पुरातन परम्परा जो स्वतन्त्रता की सोपान ही नहीं, अपितु दृढ़-भित्ति एवं भव्य अट्टालिका है, उसको विविध रूप से छिन्न-भिन्न किया जाने लगा।*

'सत्यानुभूति'

— श्री गोविन्द बंग

आप विशाल हृदय, सरल स्वभाव, समदरसी, ओजस्वी वाणी धीरता, वीरता, गम्भीरता, शालीनता के धनी हैं। आपके जीवन का हर पल जगत् के भी जीवों के कल्याण व आनन्द के लिए है।

पिताश्री आपके पास स्नेहाशीर्वाद लेने व आपका सान्निध्य पाने के लिए निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) लगातार आते रहते थे, तभी हमें भी आपके दर्शन लाभ का अवसर मिल जाता था। जब मैं 18 नवम्बर 2001 से 5 फरवरी 2002 तक स्वास्थ्य लाभ के लिए आपके पास रहा, तभी आपके सान्निध्य व निम्बार्कतीर्थ की तपोभूमि के चमत्कारों का अनुभव हुआ, मेरी निष्ठा में और प्रगाढ़ता आई।

जब बम्बई में पिताश्री गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गए, तब 12 अप्रेल 2002 को आप घर पर उन्हें देखने पधारें। इससे आपकी हमारे परिवार पर असीम कृपा की अनुभूति हुई।

जब मैं बम्बई के हिंदुजा अस्पताल के आई.सी.यू. में भर्ती था, तब आप 30 नवम्बर 2003 को रात 10.30 बजे मुझे देखने अस्पताल पधारे व आशीर्वाद दिया। उसी के प्रभाव से मुझे नवजीवन प्राप्त हुआ।

आपकी प्रेरणा से ही 'सरल बाल गीता' का प्रकाशन संभव हो पाया। जो आज जन-जन में लोकप्रिय हो रही है।

आप वह पारस है, जिनके सम्पर्क से लोहा रूपी जीव स्वर्ण ही नहीं, अपितु पारस बन जाता है।

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मषि करूँ, गुरु गुण लिख्या न जाय॥

4/103 अनमोल
मुकुन्दनगर के सामने
ए.के. रोड, अंधेरी (पू.), मुंबई-59

क्या? केवल अन्न, वस्त्र, आवास, उद्यान, वाहन आदि की उपलब्धि ही स्वतन्त्रता का रूप है। यह सब तो यवन शासनकाल एवं ब्रिटिश शासनकाल में भी थे। यह कैसी विडम्बना है, पता नहीं आज के लोभ परायण शासनाधीश "अन्धेन नीयमाना यथान्धाः" वाली स्थिति का अनुगमन कर रहे हैं। इससे देश का कितना पतन, कितनी हानि संभाव्य है, वह अकल्पनीय है।

—श्री श्रीजी महाराज

श्री धाम वृन्दावन के प्रति पूज्यश्री का भाव

— स्वामी श्री रामस्वरूप जी शर्मा
(पूर्व विधायक)

श्रीवृन्दावन धाम दिव्य है, चिन्मय है, पूर्ण ब्रह्मस्वरूप है, यह श्रीकृष्ण का साक्षात् देह-रूप है। यह भूमि श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली है तो साथ में संतों की सराय, आश्रम एवं सम्प्रदाय का केन्द्र एवं समस्त चराचरों की साधना स्थली है। यही कारण है कि इस भूमि की परिधि में प्रवेश करते ही संत, महामण्डलेश्वर, आचार्य पीठाधीश्वर, राजा और महाराज अपने ऐश्वर्य को त्याग कर इसके प्रति नतमस्तक हो, अपना आदर भाव एवं समर्पण व्यक्त करते हैं। श्रीवृन्दावन धाम के प्रति पूज्य आचार्य निम्बार्कपीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीजी महाराज की क्या भावना है? वे इस भूमि को इतना सम्मान क्यों देते हैं? इसको जानने के लिए सर्वप्रथम वृन्दावन को जानना अनिवार्य है। ऋग्वेद के अनुसार ब्रजभूमि को बड़े-बड़े सींगों वाली गायों की विचरण भूमि बताकर उसे अध्यात्म की महिमा से मण्डित किया गया है---

याते वास्तून्युश्मसी गमध्यै, यत्र गावो भूरि शृंगा अयासः।
तद्विप्रांसो विपन्यवो जागृवान्सः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।।

—ऋग्वेद 1/21/20

पद्मपुराण के अनुसार वृन्दावन ब्रह्मसुख के संपूर्ण ऐश्वर्य को धारण करने वाला, नित्य आनन्द एवं अव्यय स्वरूप है। यह जो भू-स्थ वृन्दावन है, इसके अंशों के अंश वैकुण्ठादि धाम हैं–

पूर्णं ब्रह्मसुखैश्वर्यं नित्यमानन्दमव्ययम्। वैकुण्ठादि तदंशाशं स्वयं वृन्दावनं भुवि।।

—पद्मपुराण, पाताल खण्ड 69.9

बृहद्गौतमीय तन्त्र में वृन्दावन को निजधाम और यहाँ के पशु, पक्षी, मृग, कीट, मनुष्यादि को भी देहस्वरूप माना गया है। यही नहीं, वृन्दावन के इस पंच योजना रूप को भगवान् ने अपना देह-रूप माना है।

इदं वृन्दावनं रम्यं मम धामैव केवलम्।
अत्र मे पशवः पक्षिमृगाः कीटाः नरामराः।।
पंच योजनमेवास्ति वनं मे देहरूपकम्।।

—बृहद् गौतमीय तंत्र

श्रीधाम वृन्दावन का दिव्य वैभव सम्पन्नमय नित्य स्वरूप ही उपास्य है। इसी में नित्य लीलाबिहारी प्रिया-प्रियतम की नित्य रस लीलाएं सम्पन्न होती हैं। संसार के विविध महावलम्बियों के प्रवर्तक पुरुष (पैगम्बर) अपने-आपने मतों का प्रकाश करने के लिए ईश्वर के पुत्र अथवा दूत के रूप में पृथ्वी पर उतरते हैं और जिस क्षेत्र में वह अपनी ऐश्वर्य एवं माधुर्यमयी जन-जन-मोहिनी लीलाओं का विस्तार

करते हैं वह क्षेत्र धाम कहलाता है। 'धाम' उसे कहते हैं, जो तेजोमय दिव्य, अनन्त एवं अलौकिक हो। यह व्रज-धाम साक्षात् श्रीकृष्ण-स्वरूपमय लीलाधाम है।

इसके अतिरिक्त व्रज-वृन्दावन धाम में रामावत सम्प्रदाय के अनेकों मंदिर और आचार्य पीठ हैं। इन सब मंदिरों और पीठों की उपासनायें इनकी आचार्य परम्परानुसार दास्य-भाव की हैं। अस्तु, सम्पूर्ण भारत वर्ष में अनेक वैष्णव सम्प्रदाय हैं, किन्तु प्रमुख वैष्णव सम्प्रदाय चार हैं, जिनके अनुयायी श्री वृन्दावन धाम में अपने-अपने इष्ट-आराधन एवं सम्प्रदाय-प्रचार के लिए समर्पित हैं, श्री-सम्प्रदाय, निम्बार्क-सम्प्रदाय, मध्व-सम्प्रदाय एवं विष्णु स्वामी-सम्प्रदाय।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय ऐतिहासिक दृष्टि से निम्बार्क सम्प्रदाय के संस्थापक अनन्तश्रीस्वामी निम्बादित्य भी दक्षिण देश के ही निवासी थे। उनके ग्रन्थ दश श्लोकी के नाम से प्रसिद्ध है, जिसे प्रमाण मान कर निम्बार्क-सम्प्रदाय में व्रज-वृन्दावन-विहारी श्री राधाकृष्ण की उपासना प्रचलित हुई। इस सम्प्रदाय के आचार्यों की परम्परा बहुत विस्तृत है। विक्रम की 14 वीं शताब्दी के मध्य में स्वामी श्री भट्टदेवाचार्य एवं उनके शिष्य श्री हरिव्यास देवाचार्य ने अपने सम्प्रदाय की परम्परागत उपासना में मधुर रसोपासना का विशेष समावेश किया। इनका मानना है कि आनन्दकन्द नन्दनन्दन एवं श्री वृषभानु-नन्दिनी रसोपासना के मूल आधार हैं। यह युगल तत्त्व नित्य वृन्दावन में अनवरत नित्य निकुंज-क्रीड़ारत हैं। ऐश्वर्य भाव से रहित यह प्रेम जोड़ी अपनी नित्य किशोरी सहचरियों के साथ रासरसेश्वर रूप में नित्य, वृन्दावन में उज्ज्वल रस के विलास में मग्न हैं। अपने ग्रन्थ युगलशतक में श्री भट्टदेवाचार्य जी ने अपने आराध्य को विरह-वियोग आदि से वर्जित सतत स्वकीया-भाव में स्थित बताया है। इनका मानना है कि नन्दनन्दन वृषभानु-नन्दिनी प्रिया-प्रियतम का विहार अनादि और अनन्त है। इस रस की उपासना सखी-भाव से ही की जा सकती है, अन्य भावों से नहीं। मानव-समाज के लिए श्री निम्बार्क-पीठाधीश्वर श्रीजी महाराज का वही मूल्य है, जो बीज के अन्न का किसान के लिए है। महाराजश्री ऐसी गुप्त धरोहर है, जिसका विद्यमान होना ही अन्तिम आश्वासन है। महाराजश्री हमारा गुप्त धन इसलिए हैं, क्योंकि वे हवा का रुख देखकर नहीं चलते। वानप्रस्थ ग्रहण करते समय ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी से धन-संपत्ति संभालने को जब कहा तो मैत्रेयी का उत्तर था, **यन्नहं नाभृता स्यां किमऽहम् तेन कुर्याम्–** ये जो मुझे अमरत्व नहीं दे सकते, इन्हें लेकर मैं क्या करूँ? मैत्रेयी के इन शब्दों में जैसे सन्त परम्परा की सारी पवित्रता मुखरित हो उठी है।

भारत भूमि का सौभाग्य ही है कि उसे परम्परा से एक समृद्ध आध्यात्मिक रिक्थ प्राप्त हुए हैं। शास्त्रों के वचनों, सन्तों की अनुभूतियों तथा आचार्यों के मार्गदर्शन से पोषित सांस्कृतिक सम्पदा इतिहास के कई विषम पड़ावों पर उसके लिये संजीवनी सिद्ध हुई है। अनन्त श्रीविभूषित महाराजश्री इनमें से एक हैं। महाराजश्री ने अनेक उच्च कोटि की पुस्तकें, टीकायें, भाष्य, पद आदि लिखे हैं, जिन पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। आपका ब्रज, वृन्दावन, गौमाता, संस्कृत भाषा व संस्कृति के प्रति बहुत आदर एवं सम्मान का भाव है। वृन्दावन में तो वे नंगे पांव, बिना छत्र के गमन करते हैं। कारण कि यह श्रीकृष्ण

एवं राधाजी की दिव्य क्रीड़ा भूमि है और उनके सामने वे दास भाव के रूप में अपने को प्रस्तुत करते हैं। महाराजश्री का मेरे ऊपर तो अपार स्नेह है। वे मुझे अत्यन्त स्नेह एवं सम्मान देते हैं। निश्चित ही यह उनकी उदारता ही है कि मुझ जैसे प्राणी को वे अपना मानते हैं।

निम्बार्क मत में सकल गुण निधान श्रीकृष्ण ही परम ब्रह्म हैं तथा श्रीराधा उनकी नित्य आल्हादिनी शक्ति। आद्यसहधर्मिणी– **अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा–** सहस्रों सखियों से सेवित हैं। निम्बार्काचार्य श्रीराधाकृष्ण की यह युगलोपासना माधुर्योपासना को दार्शनिक सम्प्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम वैष्णव आचार्य हैं। उनके अनुसार प्रेम और त्याग का अन्तिम पर्यवसान गोपीभाव में है तथा गोपीभाव की पराकाष्ठा राधाभाव है। वृन्दावन की रसोपासना का विकास भेदाभेद सिद्धान्त का आश्रय लेकर ही हुआ। श्री राधा रासरासेश्वरी, नित्य निकुञ्जेश्वरी हैं, वृन्दावन उनका लीलाधाम है– श्रीराधा सर्वेश्वर की आराधना के व्रज-वृन्दावन में अनेक विशिष्ट स्थान हैं।

सन्तों ने चयन का मार्ग दिखलाया है– हमारे सामने सीकरी भी है और हरिनाम भी। विष भी है और रस भी। सन्त से यदि कुछ सीखा जा सकता है तो यही कि विषयोपासना से विलग होकर रसोपासना की ओर उन्मुख हों। वृन्दावन का यही संदेश है। सन्त स्वयं एक आश्चर्य है, क्योंकि वह सीकरी के 'चक्कर' में हरिनाम के भूलने पर व्यथित होता है। जिस दिन वह व्यथा हमारे मन में उदय होगी, हम कुंभनदास की कृपा के, सन्त-कृपा के अधिकारी हो जायेंगे।

अन्त में यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि वृन्दावन से जुड़े सन्त परिकर की हमारी विचार-परिक्रमा अपूर्ण रह गयी; संभव है उसे पूरा करने का सुयोग फिर कभी उपस्थित हो। इस अपूर्णता के लिए समयाभाव, स्थानाभाव अथवा विषय की व्यापकता तो मात्र एक बहाना है, मुख्य कारण लेखक की असमर्थता ही है। **क्या बने बात जहां बात बनाये न बने।**

वृन्दावन

श्री श्रीजी वचनामृतम्

- जो प्राणी अज्ञानवश स्वकीय अधिकारत्व, प्रभुत्व और मिथ्या अहंत्व के भाव को अपने मानस में उत्पन्न करता है, वह निश्चय ही अधःपतन का मार्ग प्रशस्त करता है।
- कभी भी किसी की प्रभुता और अधिकार स्थिर नहीं रहा।
- अधिकार एवं प्रभुता का अहंत्व करना कल्याण पथ में परम बाधक है।
- क्रोध से मानव विवेकहीन होकर कर्तव्या-कर्तव्य को भुला देता है।
- क्रोध का परिणाम भयावह होता है।
- सद्धर्मपरायण वैष्णवजनों को क्रोध का परित्याग कर अपने हृदय में दया, तितिक्षा, अजातशत्रुता, कृपालुता, धैर्य आदि सद्गुणों का अवलम्ब लेकर अपने हृदयरमण श्रीश्यामाश्याम के पदपल्लवों के चिन्तन में संलग्न रहना चाहिए।

पूज्य आचार्यश्री की समाज को देन

— पं. पवन कुमार शास्त्री
एम.ए.

महापुरुषों का दिव्य-चरित्र लोक-कल्याणकारी, पावन और आकर्षक होता है। वे अपनी लीलाओं से शाश्वत-शास्त्रों को सार्थक करते हैं तथा आचार्यों की परम्परा की अविच्छिन्न कड़ी जोड़ते हैं। "वे असम्भावना की वृत्तियों" का उन्मूलन प्रत्यक्ष क्रियाओं द्वारा करते हैं और श्रद्धा-विश्वास एवम् धर्म का मेरुदण्ड स्थापित करके जनमानस को प्रभावित करते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य मानव समाज को संयमी, इन्द्रियाजित और मनोजयी बनाने की ओर अग्रसर करना है तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म बुद्धि के द्वारा आत्मदर्शी भूमिका प्रस्तुत करना है।

परम पूज्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज अ.भा.श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ अजमेर (राजस्थान) के जीवन-दर्शन में धर्म-पालन के सुलभ-सोपानों और भक्तिरस के प्रवाह का सर्वोत्तम सुयोग है। समाज को पावन-पथ की ओर मोड़ने की अनुपम क्षमता आपमें विद्यमान है। किसी भी देश की सच्ची सम्पत्ति संतजन ही होते हैं। वे जिस समय प्रकट होते हैं, उस समय के जन-समुदाय के लिए उनका जीवन ही सच्चा मार्गदर्शक होता है। जिस समय जिस धर्म की आवश्यकता होती है, उसका आदर्श प्रस्तुत करने के लिए स्वयं भगवान् ही तत्कालीन संतों के रूप में निम्य अवतार लेकर आविर्भूत होते हैं। ऐसा कहना जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है। आचार्यश्री के दर्शन मात्र से संसार के भय एवं शोक, ईर्ष्या एवं उद्वेग की आग से तपे हुए मनुष्य को, सुख-शान्ति, स्नेह एवं सहानुभूति, सदाचार एवं संयम, साहस एवं उत्साह, शौर्य एवं क्षमा जैसे दिव्य गुण की प्राप्ति होती है।

गोसेवा— परम पूज्य आचार्यश्री सदैव गोसेवा का महत्त्व प्रकट करते हैं। हिन्दू धर्म में गो का महत्त्व अत्यधिक माना गया है। सर्वोत्तम दान भी गो दान है। गो माता हिन्दू धर्म का मान बिन्दु है। गो माता के शरीर में 33 कोटि देवी देवताओं का वास बतलाया गया है। वेद भगवान् **"गावो विश्वस्य मातरः"** गाय को समस्त विश्व की माता कहकर पुकारते हैं। गोसेवा से धन, सन्तान और दीर्घायुष्य प्राप्त होते हैं। गो के सेवकों को इन सबका प्रत्यक्ष फल मिलता है। रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप गो सेवा द्वारा पुत्र प्राप्त करते हैं। आचार्यश्री ने गो सेवा के लिए गोशालाओं का निर्माण करा कर गो पालन की प्रेरणा प्रदान की है। निम्बार्काचार्यपीठ में सैकड़ों गायों की सेवा होती है।

पूज्य आचार्यश्री की धाम निष्ठा— सच्चिदानन्दघन परमब्रह्म स्वयं भगवान् श्री ब्रजेन्द्र-नन्दन की असमोर्ध्व ऐश्वर्य-माधुर्य रसमयी क्रीड़ास्थली श्रीधाम वृन्दावन की अनिर्वचनीय महिमा है और इसी कारण यह विश्व-विश्रुत भी है। निगमागम, पुराण इतिहासादि समस्त शास्त्रों ने धाम-श्रीवृन्दावन को धामी

श्रीकृष्ण के स्वरूपवत् चिन्मय, विभु एवं मायातीत निरूपण किया है। आचार्यश्री का अध्ययन वृन्दावन में हुआ। आप वृन्दावन धाम में सवारी एवं पदत्राण का परित्याग कर पैदल ही यात्रा करते हैं। आपश्री की धाम निष्ठा है कि जिस पावन स्थली पर श्रीप्रिया प्रियतमजू अपने सुकोमल श्रीचरण कमलों का स्पर्श कर विहरण करते हैं, वहाँ पर किसी भी यान पर बैठकर चलना उचित नहीं है।

निम्बग्राम का जीर्णोद्धार— निम्बग्राम (गोवर्धन) स्थित श्री निम्बार्क भगवान् की तपस्थली के जीर्णोद्धार का संकल्प लिया व दिनांक 5 मई से 12 मई 1987 पर्यन्त भव्य आयोजन के साथ नव निर्मित श्री निम्बार्कराधाकृष्णविहारी जी के भव्य मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के समय पञ्चकुण्डात्मक श्री गोपाल महायज्ञ भी सम्पन्न हुआ।

मूँगी का भव्य आयोजन— श्री निम्बार्कभगवान् की जन्मस्थली मूँगी-पैठण में परमपूज्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज के पावन संकल्प से भव्य मन्दिर का निर्माण हुआ। पूज्य आचार्यश्री ने 15 दिसम्बर 1999 को शिलान्यास कर कार्य का श्रीगणेश किया। आपश्री की मंगल भावनानुसार अल्प समय में नव निर्मित मन्दिर में श्री निम्बार्क भगवान् के श्री विग्रह की प्रतिष्ठा की गयी।

पूज्य महाराज जी ने समाज के लिए पग-पग पर प्रेरणा दी है। आपश्री के द्वारा जो लोक कल्याणकारी कार्य हुए हैं, वे असम्भव-संभव है। सनातन जगत् में आपश्री का सर्वाधिक वर्चस्व है। जगद्गुरु पदवी आपश्री के स्वरूप, मर्यादा से शोभायमान है। रामजन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष पूज्य संत श्री रामचन्द्र परमहंस जी भरे समाज में कहते थे कि जगद्गुरु मैं मानता हूँ तो श्री ''श्रीजी'' महाराज को, आज सभी आचार्य अपने आचरण से भटक गये हैं। आपश्री नैष्ठिक बाल ब्रह्मचारी, परम तपस्वी, प्रकाण्ड विद्वान् प्रतिभाशाली, उपदेशक एवं सनातन संस्कृति के परमोपासक हैं। श्री सर्वेश्वर आराधना, गौपालन, गौरक्षक, सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार, मानव को दिव्य उपदेश द्वारा कल्याण, सन्तों एवं विद्वानों का सम्मान आपश्री के जीवन की मुख्य साधनाएँ हैं। आपश्री लिये जो कहा– लिखा जाये, बहुत ही कम है। आपश्री के सरल, सौम्य, साधुतापूर्ण व्यवहार से समस्त संत-समाज प्रभावित है, आपका समन्वयात्मक एवं निर्विवादात्मक व्यक्तित्व कृतित्व धार्मिक, राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में प्रेरणादायी है। आपश्री की जीवनचर्या अत्यन्त सरल, सदाचार एवं सादगीपूर्ण है। परम पूज्य आचार्य चरणों में कोटि कोटि नमन।

जय श्री सर्वेश्वर

श्री चित्रा वैष्णव देवी मन्दिर
छत्री रोड, शिवपुरी (मध्यप्रदेश)

प्रभु नाम से प्राणी निर्भय होकर अमित शान्ति और अखिल वैभव की उपलब्धि कर लेता है।
—श्री श्रीजी महाराज

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ का अभिनव-प्रयास

—डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ, श्री निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद का अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आज की समुपस्थित परिस्थितियों में एक अभिनव आयोजन है, जो भारतीय मानसिकता के अनुरूप तथा विकृतमानसिकता के लिए औषधि-स्वरूप बन सकता है। धर्म का जहाँ उपहास 'धर्मनिरपेक्षता' के नाम से उड़ाया जा रहा हो, वहाँ धर्म को समझाया जा सकता है और सिद्ध किया जा सकता है कि जड़जंगम जगत् में धर्मनिरपेक्ष न कोई जीव है और न कोई वस्तु। धर्म, सनातन है, शाश्वत है, सत्य है तथा ज्ञान का प्रतीक है।

आज जहाँ सम्प्रदाय को एक गाली के रूप में प्रयोग कर सम्प्रदायों को बहिष्कृत किया जा रहा है, उन्हें यह आयोजन सिखलायेगा कि संसार में सम्प्रदाय तो केवल पांच ही है। श्री शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित शांकर अद्वैत सम्प्रदाय, रामानुज सम्प्रदाय, श्री निम्बार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित निम्बार्क सम्प्रदाय, श्री मध्वाचार्य द्वारा प्रवर्तित माध्व सम्प्रदाय और श्री वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित वल्लभ सम्प्रदाय। ये विश्वमानव की वैचारिक अमूल्य निधि हैं। जहाँ इस सृष्टि को तोड़ने का नहीं, जोड़ने का प्रयास किया है, जहाँ चिन्तन प्रधान मनुष्य को एक विशिष्ट दृष्टि दी गई है। जहाँ केवल ब्रह्म, जीव और माया का ही मात्र विवेचन हुआ है और उनके पारस्परिक सम्बन्धों की अपनी दृष्टि से व्याख्या की गई है। जो दाय (उत्तराधिकार) अपने परवर्ती को प्रकृष्ट बनाकर प्रदाय बनाकर दिया गया है, सभी को समान रूप से दिया गया है इसलिए सम्प्रदाय के रूप में दिया गया है। यहाँ पूर्व-पश्चिम के रूप में, गोरे-काले के रूप में, जाति-पन्थों के रूप में कहीं कोई विचार नहीं है। यहाँ जीव को एक इकाई के रूप में देखा गया है। ऐसे भारतीय उदात्त को ही समाप्त करने का अथवा मानवता को समाप्त करने का षडयन्त्र रच रहे हों, भारत पुनः इस आचरण से समाप्त या परतन्त्र हो सकता है, मानवता समाप्त हो सकती है, परन्तु सम्प्रदाय कभी भी समाप्त नहीं हो सकते, क्योंकि वह शाश्वत सत्य है। युगों-युगों के इतिहास की प्रतिकृति पुराण इसके साक्षी हैं। इस अपयशनिष्ठ कार्य के भागीदारों को यह आयोजन सावधान करेगा और कहेगा "असतो मा सद्गमय" मृत्योर्मा, अमृतं गमय" उस दिशा में आगे बढ़ो जो सत्य की ओर ले जाय, सनातन तत्त्व की ओर ले जाय और परमेश्वर निर्मित सृष्टि का विनाश नहीं, उसे नवीन, भेदबुद्धिरहित जीवन मिले, जहाँ सुख हो, समृद्धि हो और जीवन को लक्ष्य साधा मिल सके।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय उत्तर भारत का प्रमुख सम्प्रदाय है, उसके कोटिशः अनुयायी हैं, अनेकों मन्दिर हैं और अनेकों साधुसेवी आश्रम हैं। ब्रज क्षेत्र में उसका व्यापक प्रभाव है। उसका द्वैताद्वैत दर्शन है। यद्यपि दर्शन के रूप में उसे प्रतिष्ठापित करने वाले श्री निम्बार्काचार्य जी है, जिन्होंने श्री गोवर्धनक्षेत्र में

स्थित 'निम्बग्राम' में साधना कर इस दर्शन का पुनरुद्धार किया था और अनेकों शास्त्रों जैसे प्रपत्तिचिन्तामणि, सदाचारप्रकाश, गीता-भाष्य, उपनिषद्-भाष्य, वेदान्तपारिजातसौरभ, वेदान्त-कामधेनु, रहस्य-षोडशी आदि का प्रणयन किया। इनमें कुछ उपलब्ध हैं और कुछ नहीं भी।

श्री निम्बार्काचार्य ने जिस मत का प्रतिपादन किया, वह अति प्राचीन है, जिसे ब्रह्मा जी के प्रथम मानसपुत्र सनत्कुमार आदि चारों भाइयों ने प्रतिपादित किया था। इसलिए इसका प्राचीन नाम श्री सनत्सम्प्रदाय भी है और इसके प्रचार में उनके ही द्वितीय मानस पुत्र श्रीनारद ने प्रचारित किया था। जैसा कि गुरुपरम्परा को व्यक्त करने वाले इस श्लोक से स्पष्ट है—

श्रीहंसं च सनत्कुमारादीन् वीणाधरं नारदम्।
निम्बादित्यगुरुं च द्वादशगुरून् श्रीश्रीनिवासादिकान्॥

"परमाचार्यैः श्रीसनत्कुमारैरस्मद्गुरवे श्रीनारदायोपदिश्य भूमात्वेव विजिहासितव्यः, इत्यत्र भूमा प्राणो न भवति, किन्तु पुरुषोत्तमः, कुतः, प्राणादुपरि भूत उपदेशात्॥"

(ब्रह्मसूत्रवृत्तिः)

भूमा तत्त्व प्राण नहीं, अपितु उससे ऊपर श्री पुरुषोत्तम ही हैं, जो अपनी अनेकों विशेषताओं से अनेकों नामों, परब्रह्म, रमाकान्त, आदि से लोकविश्रुत है। वे ही व्रजलोक में आकर श्री राधाकृष्ण, युगलकिशोर नाम से पुकारे गये, जो प्रत्येक प्राणी के उपास्य हैं। वे श्री वृन्दावन के नित्यनिकुञ्जधाम में अपनी आल्हादिनी भक्ति श्रीराधा के साथ नित्यविहार के आनन्दसुख को अपने उपासकों को वितरित करते रहते हैं।

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जभागे
कदम्बजम्बूविटपान्तराले।
सार्धं मुकुन्देन विराजमानं
स्मरामि राधापदकञ्ज युग्मम्॥
त्रिकालं पूजयेत् कृष्णं
राधाया सहितं विभुम्।

(सनत्कुमारीय योगरहस्य)

यहीं इसके सातवें खण्ड में और भी स्पष्टीकरण कर दिया है—

प्रेमभक्त्युपदेशाय राधाख्यो वै हरिः स्वयम्।
वेदे निरूपितं तत्त्वं तत्सर्वं कथयामि ते॥
उत्सर्जने तु रा शब्दो धारणे पोषणे च धा।
विश्वोत्पत्तिस्थिति-लयहेतू श्रीराधा प्रकीर्तिता॥

वृषभं त्वादि पुरुषं सूयते या तु लीलया।
वृषभानुसुता तेन नाम चक्रे श्रुतिः स्वयम्॥
गोपनादुच्यते गोपी, गोभूवेदेन्द्रियार्थके।
तत्पालने तु या दक्षा तेन गोपी प्रकीर्तिता॥
गोविन्दराधयोरेवं भेदो नार्थेन रूपतः।
श्रीकृष्णो वै स्वयं राधा या राधा सो जनार्दनः॥

प्रेमलक्षणा भक्ति के उपदेश के लिए श्रीकृष्ण राधा के रूप में प्रकट होते हैं। यह तत्त्व वेदों में भी निरूपित किया गया है। 'रा' का अर्थ है उत्सर्जन अर्थात् जन्म देना और 'धा' अक्षर का अर्थ है धारण और पोषण अर्थात् इस प्रकार उत्पत्ति-स्थिति-लय का कारण श्री राधा ही मानी गई। आदि पुरुष को वृषभ कहा गया है, उसे लीला से अनुसेवित करती है, वही वृषभानुसुता है। इसीलिए श्रुतियों ने भी वृषभानुसुता नाम से उल्लेख किया है। लीला गोपन करने से वही गोपी कहलाई। गोशब्द के पृथ्वी, वेद, इन्द्रिय अर्थ होने से उनका पालन करने के कारण वह गोपी नाम से भी व्यहृत हुई। इस प्रकार गोविन्द और राधा में न अर्थ से और रूप से कोई भेद नहीं है। कृष्ण ही स्वयं राधा है और राधा ही स्वयं कृष्ण हैं। अतः लीलारूप में द्वैत होते हुए भी अद्वैत है। यही द्वैताद्वैत का तात्त्विक आधार है। श्रीराधा श्रीजी के नाम से भी व्रज में जानी जाती हैं, इस गुरु, आचार्य और भगवत् तत्त्व में अभेद सम्बन्ध होने के कारण आचार्य चरणों को ''श्रीजी'' के नाम से भी पुकारा जाता है।

देवं गुरुं गुरुस्थानं क्षेत्रं क्षेत्राधिदेवताम्।
सिद्धं सिद्धाधिकारांश्च श्री पूर्वं समुदीरयेत्॥ (प्रयोगसार)

के अनुसार भी गुरु श्री स्वरूप होते हैं। श्रीजी महाराज इस कारण समाज में सम्मान्य हुए। राधाधारित आराधना होने के कारण भी इस सम्प्रदाय के आचार्यों को ''श्रीजी'' महाराज कहा गया।

राधाजी कृष्ण की आल्हादिनी शक्ति है। आल्हाद से ही जीवन का विकास चित्सुख, सदानन्द और शान्ति की प्राप्ति होती है इसीलिए वे श्रीकृष्णतत्त्व को विकसित करने वाली श्रीकृष्णस्वरूपा भी हैं। वे द्विधारूप से आनन्द का विस्तार करती हैं — **''एकज्योतिरभूत् द्वेधा राधामाधवरूपकम्''।**

एक ज्योति ही दो रूप श्रीराधा और श्रीमाधव के रूप में संसार का आनन्दविस्तार करते रहे। इसलिए दोनों रूपों को एकरूप मानकर उपासना करनी चाहिए—

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्।
जपेद्वा, धार्यते वाणि स भवेत् पातकी शिवे॥

गोपाल तन्त्र में श्रीशिव पार्वती से कहते हैं कि गौरतेज के बिना जो श्यामतेज की अर्चना करता है, जप करता है या ध्यान करता है वह पातकी पुरुष होता है।

श्रीराधासमन्वित श्रीकृष्ण इस भूमा के ही स्वामी नहीं, समस्त ब्रह्माण्ड के भी स्वामी हैं। इसलिए वे सर्वेश्वर ही हैं। वे सर्वात्मक हैं, सर्वव्यापी हैं, सर्वशक्तिमान् हैं। वे कर्तुम् अकर्तुं अन्यथाकर्तुं समर्थ हैं।

विश्वात्मक होने के कारण ही विश्व भी सत्य है। विश्व के सभी सम्बन्ध सूत्र भी सत्य है। उन्हें किसी भी भाव से उपास्य बनाया जा सकता है, उनकी उपासना की जा सकती है। चाहे दास बनकर उपासना करो, अथवा वात्सल्य, सख्य दाम्पत्यभाव से उपासना करो। उन्होंने गीता में संकेत भी दे दिया है।

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां तथैव भजाम्यहम्"

जो जिस भाव से मेरी शरण आयेगा, मैं उसी भाव से उसको अपना बनाऊँगा। यहाँ तक कि शत्रुभाव से निरन्तर ध्यान करने वाला भी उन्होंने आत्मसात् किया है। परन्तु अपेक्षा यह है कि हम सर्वात्मना समर्पण करना तो सीखें, जीवन की जो भी क्रिया कर रहे हैं, वह भी उसी को समर्पित होनी चाहिए। यदि हम भोजन कर रहे हैं तो यह ध्यान रखें—

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥

यह भोजन भी ब्रह्महवि है। हम उसे ब्रह्म को अर्पण करें, ब्रह्म अग्नि में ही ब्रह्म द्वारा ही हवन की गई है। इसलिये ब्रह्मकर्म समाधि द्वारा यह यज्ञान्न ब्रह्म को ही जाना चाहिए। यह व्यापक दृष्टि चाहिए समर्पण के लिए चाहिए। परन्तु दाम्पत्य उपासना में समर्पण सर्वाधिक रहता है, इसलिए यह सर्वश्रेष्ठ साधना है। इसे माधुर्य और उज्ज्वल उपासना भी कहते हैं। श्री राधासर्वेश्वर की साधना में सखी, सहेली, सहचरी भाव से की गई उपासना सर्वग्राही, सर्वोत्तमा भी है। श्रीकृष्ण ने एकादश अध्याय श्रीमद्भगवद्गीता में अपने विराट् रूप का दर्शन कराया था, जिसमें समस्त ब्रह्माण्ड समाया हुआ था, तब अर्जुन ने प्रार्थना करते समय यही कहा था—

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियार्हसि देव सोढुम्॥11।44

अपने सम्पूर्ण शरीर को आपके चरणों में समर्पण कर, प्रणाम कर मैं वन्दनीय, स्तुत्य आप को प्रसन्न करना चाहता हूँ। पिता जैसे पुत्र के, मित्र मित्र के, प्रिय प्रिया के अपराध क्षमा कर देता है, इसी प्रकार आप भी मेरे अपराध क्षमा करें। यहाँ उपासना की सभी पद्धतियाँ प्रस्तुत कर दीं गई हैं। माधुर्योपासना में ही अनन्यता का भाव पुष्ट होता है। तत्सुखसुखीभाव की अभिव्यक्ति होती है और इसीभाव में दुःख होते हुए भी लेशमात्र दुःख की अनुभूति नहीं हो पाती है। सुख, सौन्दर्य और आनन्द का ही एकमात्र साम्राज्य रहता है। निम्बार्काचार्य जी ने उपासना के क्षेत्र में उपासना साधना की जो दृष्टि प्रदान की है, वह सरल, सुगम, सुबोध और भावगम्य है।

अभावों से ग्रस्त इस युग में जो आपाधापी चल रही है, असन्तोष लिप्सा और जिसके परिणाम स्वरूप मानव और मानवता का जो मूल्य निरन्तर गिरता जा रहा है, उसकी रक्षा के लिए श्री निम्बार्काचार्य महाराज को व्यापक पहल करनी होगी। तृतीय सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन एक स्तुत्य प्रयास बन

सकता है, यदि यह आयोजन धर्माचार्यों को लोकमङ्गलार्थ प्रेरित कर सके, लोकमानस को भटकाव से हटाकर एक दिशा दे सके।

कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते
यथा भवेत् प्रेमविशेषलक्षणा।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः
सा चोत्तमा साधन-सत्पिकात्मिका॥ वेदान्त-कामधेनु

अनन्याधिपति उस महात्मन् की साधन रूपात्मक अनन्या भक्ति ही उत्तम है। उसकी कृपा से जैसे भी हो प्रेमलक्षण भक्ति ही प्राप्त करें। उसे सर्वेश्वर को समर्पित करें और सर्वविश्व से प्रेम करते हुए जीवन को सार्थक बनायें।

शुभमस्तु,

वृन्दावन

श्री श्रीजी वचनामृतम्

- त्याग के समान कोई श्रेष्ठ सुख नहीं है।
- मानव जितना ही अधिक परिग्रह (संग्रह) करता है, उतना ही अधिक वह अशान्त, दुःखी और निरन्तर मोहासक्त होकर प्रपञ्चपुञ्ज में जकड़ा रहता है।
- सुख और दुःख आदि इन सभी के मूल हेतु मन को ही शास्त्रों में निर्दिष्ट किया है।
- मन की अगणित परितप्त चञ्चल तरंगों से प्रताड़ित होकर स्वयं को जर्जर, दुःखी तथा घोर पापिष्ठ बना लेता है।
- यदि मानव मन का विनियोग श्री भगवत्परक कर दे तो वह परमात्मविद्या की उपलब्धि के साथ अनन्त सुख साम्राज्य का अनिर्वचनीय आनन्द सहज ही में ले सकता है।
- स्वरूप ज्ञान के बिना भगवन्निष्ठ श्रेष्ठ साधकों के आराधना पथ में नाना विघ्नों का आना स्वाभाविक है।

संस्मरण

—डॉ. (श्रीमती) कमलेश पारीक

वर्तमान में निम्बार्क सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज पीठ पर विराजमान हैं। भगवान् के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि वे हजारों वर्ष नीरोगी, स्वस्थ-सानन्द रहते हुए सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति कराते रहें।

आप बाल्यकाल से ही विद्याप्रेमी रहे हैं। तदर्थ उन्होंने यत्र-तत्र संस्कृत विद्यालयों की स्थापना की है, जिनमें कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की जाती है, साथ ही आर्थिक सहायता के रूप में 'छात्रवृत्ति' भी देते हैं।

निम्बार्क सम्प्रदाय के विपुल साहित्य के प्रकाशन में रुचि लेते हुए प्रायः सभी प्रकाशन मुद्रित कराने की व्यवस्थाएं कर चुके हैं, जिनसे कि समय-समय पर शोधार्थियों, जिज्ञासुओं की पिपासा शान्त होती है और उन्हें इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। निम्बार्क सम्प्रदाय के अनेक आचार्यों के ऊपर शोध-छात्र एवं छात्राओं ने शोध किया है, जिससे भी इनका साहित्य प्रकाश में आया है। उनमें से कुछ शोध-प्रबन्ध तो मुद्रित हो चुके हैं तथा कुछ अभी मुद्रित होने की पंक्ति में अवस्थित हैं। इस सन्दर्भ में स्व. श्री व्रजवल्लभ शरण वेदान्ताचार्य का स्मरण करना अनुचित न होगा। उन्होंने अपने समय में शोधार्थियों को जितना मार्ग निर्देशन कर सकते थे किया था, शोध सामग्री भी सरलता से उपलब्ध कराई थी। श्रीजी मन्दिर के पुस्तकालय में पाण्डुलिपियों का अपार भण्डार है, जिसके दर्शन का सौभाग्य मुझे कई बार प्राप्त हुआ।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'

एक बार वृन्दावन में कुम्भ का मेला लग रहा था। मेरी पुस्तक 'दशश्लोकी' की, जो कि वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा उस समय प्रकाशित हुई थी, एक प्रति महाराजश्री के कर-कमलों में भेंट-स्वरूप दी थी। उन्होंने मुझे विद्वत् सम्मेलन में आमंत्रित करके दशश्लोकी के सम्बन्ध में दो शब्द बोलने का अवसर प्रदान कर अनुगृहीत किया था। जबकि मैं यह सोच रही थी कि शायद बड़े-बड़े वृद्ध-विद्वानों, प्रकाण्ड पंडितों के मध्य मुझ स्त्री को क्या अवसर मिलेगा। फिर ये तो साधु-समाज है, यहाँ महिलाओं से तो दूर ही रहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने भरी सभा में मुझे माला पहनाकर मेरा सम्मान किया और कुछ बोलने के लिए कहा। मैं उस समय आश्चर्य चकित हुई, गदगद् हो गई और अधिक कुछ न कह सकी। मेरे मन में यह भाव आया कि महाराजश्री के मन में स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है, वे तो विद्या-प्रेमी होने के नाते विद्वान्-विदुषी में समभाव रखते हैं।

उनके व्यक्तित्व से भी ऐसा ही प्रस्फुटित होता है, जैसे शान्त, सरल-स्वभाव वाला कोई तपस्वी बैठा हो। उनमें देवत्व के लक्षण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। वृन्दावन में तो वे नंगे पैर ही भ्रमण करते हैं, क्योंकि श्री वृन्दावन धाम के प्रति उनकी उत्कट-श्रद्धा एवं भक्ति है। अन्त में श्रद्धा के साथ अत्यन्त विनम्र भाव से महाराजश्री को प्रणाम करते हुए अपनी लेखनी को विश्राम देती हूँ।

वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन (मथुरा) (उ.प्र.) पिन. 281121

'गोवध-बन्दी आन्दोलन' में विशिष्ट भूमिका
(एक संस्मरण)

— विनोदकुमार गौड

'गोमाता समस्त प्राणियों की एक मात्र शरण है' यह सम्पूर्ण विश्व की माता है **'सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्' 'गावो विश्वस्य मातरः' 'यह निखिलागमनिगमप्रतिपाद्य, सर्ववन्दनीया एवं अमित शक्ति प्रदायिनी है', 'अनन्त कोटि देवताओं का दिव्य अधिष्ठान है' 'गाय सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं मर्यादा का प्रतीक है' 'गाय मानव मात्र की पोषिका है।'** इस प्रकार गाय को सृष्टि के प्रारम्भ से ही, विशेषतः भारतवर्ष में समादरणीय व सेवा योग्य माना जाता रहा है।

भारत की आजादी का प्रथम आन्दोलन सन् 1857 में सैनिकों द्वारा ब्रिटिश सरकार की अवज्ञा के रूप में गाय की चर्बी को लेकर ही हुआ था। यह इतिहास प्रसिद्ध है कि **श्रीमंगल पाण्डे** द्वारा गाय की चर्बी लगे कारतूस के खोल को लेकर विरोध हुआ था। गौमाता के प्रति श्रद्धालु सैनिकों ने अंग्रेजों के प्रति बगावत कर दी थी। स्वतन्त्रता के दूसरे और सफल आन्दोलन के सभी कर्णधार और मनीषियों सहित महात्मा गांधी भारतीय धर्म प्राण जनता को यह आश्वासन देते आ रहे थे कि जैसे ही भारत स्वतन्त्र हुआ, संविधान में कानून बनाकर समस्त गोवंश वध को वैधानिक रूप से बन्द कर दिया जायेगा। परन्तु सन् 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के बाद भारतीय संविधान में गोवंश वध निषेध का कोई कानून नहीं रखा गया। स्वतंत्र भारत की प्रजातांत्रिक सरकार को धर्माचार्य, मनीषियों, प्रबुद्ध नागरिकों और श्रद्धालु जनता ने गोवध बन्दी हेतु अपने राजनेताओं को बार-बार याद दिलाया, किन्तु गोवंश की हत्या पर कानूनी प्रतिबन्ध नहीं लगा। कई आन्दोलन सत्याग्रह और करोड़ों की संख्या के हस्ताक्षर युक्त आवेदन राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि को दिये गये। कई गो भक्तों ने बलिदान दिये, परन्तु आज तक कोई कानून राष्ट्र स्तर पर नहीं बना।

अन्ततः अप्रेल 1966 को देश के सन्त-महात्माओं ने गोवध बन्दी आन्दोलन का शंखनाद कर दिया। उस समय अनुमानतः 30 हजार गोवंश की हत्या प्रतिदिन होती थी, संविधान की धारा 48 में गोवंश की हत्या बन्द करना राज्य के नीति निर्देशन में दिया गया था। राज्य सरकार के साथ केन्द्रीय सरकार का भी सावधान के इस निर्देश को पूर्ण करने का निर्देश है, किन्तु इसका पालन पूरी तरह कहीं नहीं हो रहा और अनुभव किया गया कि जब तक केन्द्रीय कानून नहीं बनता, सम्पूर्ण गोवंश की हत्या बन्द नहीं हो सकती और गोवंश हत्या इस देश का आत्म हनन है।

तत्कालीन सरकार के दुराग्रह को देखते हुए देश के धर्माचार्यों ने परस्पर विचार विनिमय करते हुए जगद्गुरु पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ, जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी कृष्ण बोधाश्रम

श्री, श्रीप्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी आदि महामान्य सन्तों ने यह घोषणा की थी यदि सरकार ने आगामी गोपाष्टमी सं. 2023 दि. 20 नवम्बर 66 तक सारे देश में गोवंश वध वन्दी का कानून नहीं बनाया तो वे आमरण अनशन करेंगे। इन महामान्य सन्तों के आत्महुति के संकल्प से, सरकार ने तो कोई सकारात्मक निर्णय आज तक नहीं लिया, किन्तु उस समय जनता में जागृति आई। गोवध वन्दी के लिए बलिदान की भावना उत्पन्न हुई। देश के तत्कालीन साधु-सन्तों व प्रबुद्ध आस्तिक जनों ने सरकार के प्रति आक्रोशात्मक आन्दोलन अवश्य किया।

पूज्य आचार्य-चरण श्री 'श्रीजी' महाराज ने अप्रैल सन् 1966 ई. में 'गो-वध-बन्दी कानून' के लिए प्रवृत्त जन-आन्दोलन में विशिष्ट रूप से जन-जागरण किया था। इस विचार से भारतवर्ष के कई प्रान्तों के नगरों, कस्बों, गांवों में भ्रमण कर गोमाता के महत्त्व पर उपदेश दिये थे। देश के प्रबुद्ध आचार्यों ने संगठित होकर गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनाने हेतु लोक आह्वान किया था। सभी धर्माचार्यों व प्रबुद्ध जनों के प्रयत्न से जन जागृति हुई, परिणामतः 5 सितम्बर 1966 को सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सम्पूर्ण दल व धर्म समुदाय के लोगों ने मिलकर गोहत्या बन्दी के लिए करीब एक लाख पचास हजार लोगों द्वारा दिल्ली में संसद भवन पर अभूतपूर्व प्रदर्शन किया था। इसी समय गोरक्षा अभियान समिति का गठन भी किया गया था, जिसमें आपश्री ने 'गोरक्षा-आन्दोलन' का नेतृत्व किया था।

श्री राधा-जन्माष्टमी महोत्सव पर 21.9.66 को आचार्यश्री चरणों ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए गाय की महत्ता पर प्रकाश डाला। धर्मशास्त्रों में वर्णित गो का विशेष महत्त्व बतलाते हुए कहा— गाय में देवताओं का निवास है।

पुष्कर में विशाल जन-सभा को सम्बोधित करते हुए गोहत्या बन्दीकरण हेतु आयोजित आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने का आह्वान किया था और आचार्यश्री ने सभी को घर में गो-पालन का निर्देश देते हुए उपस्थित जन-समूह से कम से कम एक गाय पालने की प्रतिज्ञा भी कराई थी। 29 सितम्बर को आचार्यश्री ने सेठ श्री धन्नालाल जी द्वारा आयोजित समारोह में (पालडी भवन में) सरकार द्वारा गोहत्या कानून में टालमटोल करने और साथ ही सन्तों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन को दबा देने के कुचक्र रचने की सम्भावना व्यक्त करते हुए इस धार्मिक आन्दोलन में तीव्रता लाने का आह्वान किया था। अजमेर में ही दूसरा आयोजन मानस-मण्डल में हुआ था जहाँ आचार्यश्री ने भागवत व मानस में व्यक्त गो की महत्ता प्रकट करते हुए आन्दोलन में जनभागीदारी का आह्वान किया था। यहाँ गोस्वामी श्री हरिकृष्ण जी शास्त्री व धरणीधर जी शास्त्री ने भी अपने विचार रखे थे।

14 अक्तूबर 1966 को आचार्यश्री का गोरक्षा अभियान की गतिविधि के अन्तर्गत दिल्ली प्रस्थान हुआ। साथ में अधिकारी नरहरिदास जी आदि थे व वृन्दावन से अ.व्रजवल्लभशरणजी व प. श्री मुरलीधर जी शास्त्री आदि आ गये थे। दिल्ली में आचार्यश्री का भक्तवर श्री कुन्दनलालजी भटिया के यहाँ पादार्पण हुआ, जहाँ आपश्री का पांच दिन निवास रहा। यहीं पर भारत साधु समाज के केन्द्रीय मंत्री स्वामी श्री आनन्द जी, डॉ. रसिक बिहारी जी जोशी व सेठ राजकिशन जी जैन आदि आये और गोरक्षा अभियान

की गतिविधियों की जानकारी दीं और साधु समाज मंत्री ने निम्बार्क सम्प्रदाय की ओर से अधिक सहयोग की आवश्यकता प्रकट की। आचार्यश्री ने संयुक्त सम्वाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया, जो विचार सभी राष्ट्रीय समाचार व आकाशवाणी पर प्रमुखता से प्रकाशित हुए। आचार्यश्री का 19 तारीख को सांसद डॉ. लक्ष्मीलाल सिंघवी के यहाँ साग्रह पधारना हुआ, जहाँ उन्होंने पूर्वजों की परम्परानुसार श्रद्धापूर्वक आचार्यश्री का चरणपूजन किया। यहीं पर निर्दलीय सांसद प्रकाश शास्त्री भी आये। आचार्यश्री ने इन्हें संसद में गोवध-बन्दी कानून बनाने जाने के संबन्ध में प्रभाव करने का आह्वान किया। विविध सभाओं में दिये आप के सम्बोधन को राष्ट्रीय समाचारपत्रों ने प्रकाशित किया। श्री नवभारत टाईम्स ने दिनांक 18.10.66 को श्री निम्बार्काचार्य जी की अपील, वीर अर्जुन ने ''सरकार गोहत्या का कलंक दूर करें'' श्री निम्बार्काचार्य की मांग, दिनांक 21.10.66 हिन्दुस्तान ने ''भारत में विदेशी स्तर का गो संरक्षण जरूरी'' (20.10.66)- निम्बार्काचार्य'' आदि शीर्षक दिये। आचार्यश्री ने दिल्ली प्रवास के समय ही तत्कालीन राष्ट्रपति म.म. डॉ. श्रीराधाकृष्णन्, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा व खाद्यमंत्री श्री जगजीवन राम को भी पत्र लिखा, जिसमें कहा गया था– गाय हिन्दुओं द्वारा पूजी जाती है, क्योंकि हिन्दु धर्म के अनुसार उसमें तैंतीस करोड़ देवी देवताओं का निवास है, इसलिए गाय का वध तैंतीस करोड़ देवी देवताओं का वध है। यह उन हिन्दुओं की धार्मिक भावनों पर आघात है। इसलिए मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा गोवध निषेध तुरन्त लागू करें! आदि यह समाचार भी राष्ट्रीय व प्रान्तीय सभी समाचार पत्रों में छपा। इन समाचार पत्रों (संकलन) के आधार पर ही हमने यह आलेख बनाया। ''श्री सर्वेश्वर'' पत्र में भी यह रिपोर्ट छपी। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री को भेजे पत्र की प्रति आचार्यश्री पीठ में देखी जा सकती है। उस समय के 'गोधन' व 'गोवन्दना' आदि मासिक पत्रों में आपश्री के उद्बोधन व भारतभर में उन की प्रतिक्रिया स्वरूप हुए जन जागरण के वृत्तान्त विशद रूप में छपे। दिल्ली से आचार्यश्री का 21 अक्टूबर को प्रस्थान कर निम्बार्क पीठ पधारना होगा।

21.10.66 को गो-रक्षा महाअभियान समिति का पत्र आया, जिसमें 13 अक्टूबर को केन्द्रीय गोरक्षा अभियान समिति की बैठक में किये गये निर्णयानुसार 7 नवम्बर 1966 को संसद भवन के सामने दिल्ली में 5 लाख जनता को एकत्रित कर प्रदर्शन करने का निर्णय हुआ। 6 नवम्बर को रात्रि तक सभी प्रदर्शनकारी जत्थों को दिल्ली पहुंचने का कार्यक्रम निश्चित हुआ और 7 नवम्बर को प्रातः प्रदर्शन का निर्णय हुआ। 7 नवम्बर को प्रदर्शन के बाद भी 20 नवम्बर गोपाष्टमी तक 300-400 तक के गौ भक्तों के जत्थों का प्रतिदिन दिल्ली संसद भवन पर प्रदर्शन करने का निर्णय हुआ।

अखिल भारतीय साधु-समाज के निर्णयानुसार सभी सम्प्रदाय के आचार्य, श्रीमहन्त, मण्डलेश्वर आदि अपने आश्रम स्थानों को व भक्त जन समुदाय को प्रेरित कर इस आन्दोलन में सम्मिलित होने का आग्रह करेंगे, ऐसा भी निर्णय हुआ।

आचार्य-पीठ से महाराजश्री के आदेशानुसार अधिकारी श्री वियोगी जी ने अपने सभी निम्बार्कीय स्थानों को तार व पत्र देकर 6 नवम्बर को दिल्ली प्रदर्शन के समूह-जत्थों के रूप में पहुँचने व 7 नवम्बर को प्रदर्शन में सम्मिलित होने का आचार्यश्री का आदेश पहुँचाया। 6.11.1966 को आचार्यश्री

का साधु-श्री महन्त व अनुगतों के समूह सहित वृन्दावन होते हुए दिल्ली पधारना हुआ। 6 नवम्बर को आचार्यश्री से गौ-रक्षा महाअभियान समिति व साधु-समाज के कार्यकर्त्ता, पदाधिकारी व प्रमुख पीठाचार्यों से आन्दोलन सम्बन्धी विचार-विमर्श हुआ।

7 नवम्बर को प्रातः 4 बजे चालीस साधुओं के साथ मालाधारी श्रीमहन्त कमलदास जी निम्बार्की प्रदर्शन में जाते हुए भीड़ में गिर पड़ने से गौ-लोकधाम के वासी हो गये, जिसका समाचार निम्बार्की 'महात्मा का बलिदान' हिन्दुस्तान टाईम्स में तथा गौ-भक्त का बलिदान नव-भारत, नवज्योति, राष्ट्रदूत आदि में छपा।

7 नवम्बर को प्रातः आचार्यश्री अनुगतों सहित हजारों की संख्या सहित गोरक्षा अभियान समिति के कार्यालय में पधारे। यहाँ सभी समागत प्रदर्शनकारियों की पंक्तियाँ लगाई गई। सर्वप्रथम साधु-समुदाय, जिसमें वैष्णव, सन्यासी, उदासी, निर्मल-नाथ, सिख, जैन, बौद्ध समुदाय सभी सम्मिलित थे। इनकी अग्रगामी पंक्ति में जगद्गुरु आचार्य कोटि के महापुरुष व गौरक्षा महाअभियान समिति के अधिकारी व भारत साधु-समाज के अगवा थे। इसमें पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेवजीतीर्थ, ज्योतिपीठ के शंकराचार्य श्री कृष्णबोधाश्रम जी, निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज वल्लभ कुल तिलकायत गोस्वामी ब्रजेश जी, स्वामी श्री करपात्री जी, मुनि श्री सुशील कुमार जी आदि उल्लेखनीय हैं।

सभी समागत प्रदर्शनकारियों का विशाल समूह जिनकी संख्या 5 लाख से भी अधिक थी, मंच के पास एकत्रित हो गये। लोकसभा के उत्तरीद्वार के निकट मंच बनाया गया, जिस पर अनेक प्रतिष्ठित साधु महात्मा व गौ वध बन्दी आंदोलन के अग्रगण्य मुखिया विराजमान थे, जिनमें कई कांग्रेस के सांसद भी थे। पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव जी तीर्थ, पूज्य कृष्ण बोधाश्रम जी, प्रातः स्मरणीय श्री करपात्री जी महाराज, पूज्यचरण निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज व श्री सुशीलकुमार जी आदि विराजमान थे। सबसे पहले पुरी के शंकराचार्य जी बोले, फिर बदरिकाश्रम के, फिर करपात्री जी महाराज, इसी समय श्री रामेश्वर जी महाराज संसद से आ गये। उन्होंने भाषण दिया, ''ये राजनेता ऐसे नहीं मानेंगे, संसद को घेरकर धरने पर बैठ जाओ। मंत्री गण, सांसद आदि बाहर आये तो उन्हें मत जाने दो और बाध्य करो कि वह गौ-वध बन्दी का कानून संसद में लायें और पास करायें।'' उन्होंने बलप्रयोग बाबत कुछ नहीं कहा था, किन्तु उनकी भाषा में आक्रोश जरूर था। इसी बीच श्रीप्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी उठे और रामेश्वरानन्द जी के भाषण के बीच में कहा, हमारा प्रोग्राम बलप्रयोग का नहीं है, हम शांतिपूर्ण ढंग से अपनी मांग रखने आये हैं। और आगामी निर्णय गौरक्षा महाअभियान समिति की कार्य परिषद करेंगी। फिर प्रकाश वीर शास्त्री व अटलबिहारी वाजपेयी बोले, जब प्रकाशवीर शास्त्री बोल रहे थे तब किसी अधिकारी के आदेश से प्रदर्शनकारियों पर अश्रु गैस के गोलों की वर्षा होने लगी। एक गोला मंच पर आकर गिरा, कई महानुभाव बेहोश हो गये। माइक के कनेक्शन काट दिये गये। सभा में भगदड़ मच गई। जान बचाने को लोग इधर-उधर भागने लगे। पुलिस ने अश्रु गैस के बाद लाठियाँ बरसानी शुरु कर दी और देखते ही देखते 201 राउण्ड गोली दागी जाने लगी और गौहत्या बन्दी का कानून बनवाने के लिए आये साधु भक्तों की हत्या की जाने लगी। बलिदानियों की लाशों का ढेर लग गया और कई खड़े वाहनों को नुकसान पहुंचाया गया।

हमारे आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के सन्निकट ही पूज्य श्रीकृष्ण बोधाश्रम जी महाराज के पीछे अश्रु गैस का गोला आकर गिरा था। गोले से आग लग गई थी और गोले की गैस से आचार्यश्री की आंखों में जलन होने लगी थी। मंच पर भगदड़ मच गई। पूज्य आचार्यश्री के पास मुरलीधर जी शास्त्री आदि आये। एक महात्मा मंच के नीचे खड़े थे। मंच 10 फुट ऊँचा था। आचार्यश्री मुरलीधरजी का हाथ पकड़कर मंच की लटक रही दरी पकड़कर नीचे खड़े साधु की सहायता से उतरे। यहीं पं. मुरलीधरजी शास्त्री व श्री महन्त जी उदयपुर आचार्यश्री जी के साथ थे। ये सभी सभा-स्थल से दूर आये। अपने वाहन सब अस्त-व्यस्त हो गये थे, कोई किसी को मिल नहीं पा रहा था। जैसे-तैसे एक रिक्शा वाला मिला और उससे कुछ कहने-सुनने पर वह दो सवारी बैठाकर दिल्ली के आचार्यश्री के ठहरने के स्थान पर छोड़ने को तैयार हुआ। आचार्यश्री और महन्तजी रिक्शे में बैठकर तथा मुरलीधर जी का पैदल ही थोड़ी देर बार पहुँचना हुआ।

7 नवम्बर 1966 को इस घटना के बाद सरकार ने दिल्ली में कर्फ्यू लगा दिया। कैसे-जैसे बहुत रात गये, सभास्थल में बिछुड़े अधिकारी ब्रजवल्लभशरण जी व वियोगी जी आचार्यश्री के पास आये। प्रातः 8 बजे दिनांक 8 नवम्बर 1966 को आचार्यश्री का आचार्य पीठ सलेमाबाद के लिए प्रस्थान हुआ।

20 अगस्त 1966 को श्री रामचन्द्र जी शर्मा ने गौ-वध बन्दी का कानून न बनने तक अनशन ले लिया था। पुरी के शंकराचार्य पूज्य श्री निरंजनदेवजी तीर्थ ने भी पूर्व घोषित वचनानुसार गोपाष्टमी 20 नवम्बर 1966 तक गौवध का बन्दी कानून संसद द्वारा न पास किये जाने के कारण, आमरण अनशन ले लिया। इसी तरह प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी आदि कई महानुभावों के अनशन प्रारम्भ हो गये।

7 नवम्बर 1966 की घटना के बाद गौरक्षा महाअभियान समिति व साधु-समाज ने गौरक्षा अभियान को प्रचण्ड रूप देने व विशद प्रचार-प्रसार करने का निश्चय किया। पूज्य श्री 'श्रीजी महाराज' का गौवध बन्दी आन्दोलन के विशद प्रचार हेतु 6.12.66 को पीठ से प्रस्थान कर वृन्दावन पहुंचना हुआ। वृन्दावन में 7.12.66 को आन्दोलन में बलिदान हुए, बलिदानियों के सम्मान में 'बलिदान दिवस' मनाया गया, जिसमें आचार्यश्री ने अपना प्रखर उद्‌बोधन दिया। 8.12.66 को कानपुर पहुंचना हुआ, जहाँ आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को आन्दोलन तीव्र करने हेतु उद्‌बोधन प्रदान किया। तदनन्तर वाराणसी (काशी) व काशी से प्रस्थान करते हुए हजारीबाग, चायबासा, कटक आदि स्थानों से होते हुए 12.12.66 को पुरी शंकराचार्य पीठम् पहुंचना हुआ। जहां पूज्यपाद शंकराचार्य श्री निरंजनदेवजी तीर्थ अनशनरत थे। यहाँ आचार्यश्री ने शंकराचार्य जी की कुशलक्षेम पूछी। दोनों आचार्यचरण हार्दिक रूप से मिले और आन्दोलन की स्थिति पर विचार-विमर्श किया। फिर पूज्यश्री 'श्रीजी महाराज' भगवान् जगदीश के दर्शनार्थ पधारे। दो दिन पुरी शंकराचार्य जी के पास विराजने के बाद 14.12.66 को पुरी से प्रस्थान कर सम्बलपुर, दुर्ग, नागपुर, अमरावती, आकोला, धुलिया, सेंधवा आदि स्थानों पर गौवध बन्दी आन्दोलन के कानून के लिए जनजागरण करते हुए 26.12.66 को आचार्यपीठ पहुंचना हुआ।

आचार्यश्री की प्रेरणा से राजस्थान प्रान्त की कई पंचायत समिति व पंचायतों ने गौवध बन्दी कानून बनाने के लिए राजस्थान सरकार व केन्द्रीय सरकार को प्रस्ताव भेजे। 20.12.66 को तार द्वारा

प्रधानमंत्री, गृहमंत्री व राष्ट्रपति जी को आचार्यश्री ने पुरी के शंकराचार्य व प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी आदि के महानुभावों की स्वास्थ्य की चिन्ता करते हुए तथा जनता की भावना का समादर करते हुए गौवध बन्दी का अध्यादेश शीघ्र जारी करने की सम्मति प्रदान की। आन्दोलन में अनशनरत सभी की कुशलक्षेम आचार्यजी पूछते रहे। 20.12.66 को नागपुर में अनशनरत श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के स्वास्थ्य का समाचार सेठ श्री रामजी लाल जी के द्वारा लिया। 27.12.66 को एक पत्र आचार्यपीठ से ब्रह्मचारी जी को भिजवाया गया।

28 जनवरी को केन्द्रीय सरकार की तरफ से ये बयान आया कि सरकार विचार-विमर्श करके शीघ्र गौवंश वध बन्दी के लिए कानून बनाने का प्रयत्न करेगी। इसके बाद केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि आन्दोलन व अनशनरत महानुभावों से मिले। पुरी के पूज्य शंकराचार्य श्रीनिरंजनदेवजी तीर्थ, श्री रामचन्द्र जी़ वरी, श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी व मुनि श्री सुशील कुमार जी आदि अनशनरत महानुभावों ने सरकार के इस आश्वासन और श्रद्धालु जनों के अनुनय-विनय से सरकार को छः महीने का अवसर प्रदान करते हुए 1 फरवरी 1968 को अपने अनशन समाप्त कर दिये।

पूज्य आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने अनशन समाप्ति पर अनशन के प्रखर तप और गोवध बन्दी का कुशल नेतृत्व का अभिनन्दन करते हुए पुरी के शंकराचार्य पूज्यपाद श्री निरंजनदेवतीर्थ व श्रीमान् प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को 4.2.67 को पत्र लिखे। दिनांक 25 फरवरी 1967 को गोरक्षा महाअभियान ने दिल्ली में पुरी के शंकराचार्य पूज्यपाद श्री निरंजनदेवजी तीर्थ आदि अनशन कर्त्ता महापुरुषों का अभिनन्दन किया, जिसमें हमारे पूज्यपाद श्री 'श्रीजी' महाराज ने पदार्पण कर गोरक्षा बलिदान करने, अनशन करने व भागीदारी करने वालों की प्रशंसा के साथ गो महिमा व आगे गो रक्षार्थ सर्वविध प्रयत्नशील रहने का आम वचन प्रदान किया।

इसके बाद भी गोरक्षार्थ कानून बनाये जाने हेतु प्रयत्न चलता रहा। केन्द्रीय सरकार अपने आश्वासन पर सही नहीं उतरी और आज तक भी कोई कानून नहीं बना। सभी महापुरुष, साधु, सन्त और विशेषतः हमारे पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने गोसेवा, गोपालन, गोशालायें, गोचर भूमि व गोवध बन्दी कानून के लिए अपने प्रभाव, प्रयत्न, उद्‌बोधन व प्रचार प्रसार निरन्तर जारी रखे हैं। इन्हीं प्रयत्नों के भाव भूमि में राजस्थान सरकार ने गोवध बन्दी, गोचरभूमि विकास, गोपालन व गोशालाओं के लिए कुछ कानून भी बनाये। जनता में भी गोपालन व गोसेवा की प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयत्न जारी हैं। आप श्री जी महाराज ने गोमहिमा में स्वरचित ग्रन्थ ''गोशतक'' व गोमहिमा बोधक भवन भी बनाया है, व गोविषयक सेवा भाव को प्रचलित प्रसारित करने के लिए आपश्री के तत्त्वावधान में आयोजित प्रथम सनातन धर्म सम्मेलन 1975 व 1993 तथा अब हो रहे 2004 के सम्मेलन में एक गोष्ठी गो सम्मेलन के विषय पर ही रखी है। इस तरह पूज्यपाद श्री 'श्रीजी' महाराज का गोसेवा विषयक प्रयत्न सतत और समृद्धशाली रहा है।

ब्रजराज बिहारी मन्दिर
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

आचार्य-अभ्यर्थना

—कौशल किशोर

दिव्याति-दिव्य श्री चरणों का अभिनन्दन कर सुख पाते हैं।
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की, पद रज हम शीश चढ़ाते हैं॥
जिनकी अनुकम्पा के बल से, सब कष्ट छिन्न हो जाते हैं।
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की, पद रज हम शीश चढ़ाते हैं।।टेक॥

वैदिक अनादि सत्सम्प्रदाय चक्रावतार निम्बारक हैं।
कलियुग में गुरुवर आप, दग्ध जीवों के शुभ उद्धारक हैं॥
श्री हंसदेव सनकादिक की यह परम्परा भू पर आई।
सर्वेश्वर प्रभु की अनुपम छवि ने कृपा सुधा जग बरसाई॥
नारदमुनि से चलती सेवा अद्यावधि आप निभाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद रज.

गिरिराज तलहटी निम्बग्राम यतिवर का प्रिय आतिथ्य किया।
निम्बोपरि अर्क दिखा प्रभु ने, निज कृपा प्रदर्शन दिव्य किया॥
पावन ग्रन्थों की परम्परा, अति दिव्यज्ञान है सुखदाई।
तव लोक विश्रुत शुभ कर्मों की भक्तों ने है कीरति गाई॥
निम्बार्क तीर्थ आचार्य पीठ चौखट पर माथ नवाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

निम्बार्क देव प्रभु श्री निवास केशव कश्मीरी जगपावन।
श्रीभट्टदेव हरिव्यास देव से सतत हो रहा संचालन॥
हरिव्यास देवजी के द्वादश शिष्यों में शोभित परशुराम।
निम्बार्क तीर्थ स्थापन से कृतकृत्य हुए मन पूर्णकाम॥
आचार्य पीठ के संरक्षक श्रीजी महाराज कहाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

पावन गद्दी पर वर्तमान श्रीजी महाराज विराज रहे।
(श्री)राधासर्वेश्वरशरण देव महिमा शब्दों में कौन कहे॥
कवि, गीतकार, चिन्तक एवं भाषा, संस्कृति के उन्नायक।
सेवासुख प्रतिपललीन, नाम संकीर्तन के सुमधुर गायक॥
विद्वानों के सिरमौर, नित्य सम्मेलन भव्य कराते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद रज.

ब्रज भाषा के मर्मज्ञ आप, संगीत कला के पण्डित हैं।
अनुपम साहित्य के प्रणेता हैं, इस जग में महिमामण्डित हैं॥
'गोशाला' 'सन्त-निवास' और विद्यालय छात्रावास तथा।
जप दान यज्ञ पोषण सेवा की अन्तहीन है कर्म कथा॥
गोवध-निषेध आन्दोलन के प्रभु अग्रदूत बन जाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी, प्रभु की पद.

जीवनचर्या अति सरल सहज, प्रभुसेवा अपने आप करें।
सर्वेश्वर प्रभु के चिन्तन में नित नवल नेह के भाव भरें॥
'भारत-वैभव' के वाचक हैं, ग्रन्थावलि निर्मित अनुपम है।
नवभाव पक्ष अरु कला पक्ष का अविरल अद्भुत संगम है॥
साहित्य सृजन आराधन में चिन्तन युत समय बिताते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

मुंगी-पैठण या निम्ब-ग्राम पण्ढरपुर पुष्कर वृन्दावन।
अध्यात्म केन्द्र निर्माण किए हो रहा यथा विधि संचालन॥
अतिक्षीणकाय व्यक्तित्व दिव्य राधामाधव का मन भावन।
श्रीधाम प्रेममय निष्ठा से त्यागें वृन्दावन में वाहन॥
गरिमामय अलंकरण पाकर विद्वज्जन भी सुख पाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

हर कुम्भपर्व पर छा जाता स्वर्गोपम 'श्री निम्बार्क-नगर।'
लीला प्रवचन सत्संग नित्य, सन्निधि में होते अष्ट प्रहर॥

आचार्य जयन्ती, जन्मोत्सव का बृहद्रूप आकर्षक है।
गुरुपर्व महोत्सव भक्तों के नयनों को अति सुखवर्षक है॥
भारत के धर्माचार्य नित्य अभिनन्दित आनन्द पाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

अति सरल सौम्य व्यक्तित्व धवल वस्त्रों की शोभा न्यारी है।
स्वर सरस और मुस्कान मधुर, जन मन को लगती प्यारी है।
छवि निर्विवाद, कृति उपकारी, सर्वत्र प्रेरणा दाई हैं।
निन्दक पर भी ये कृपा करें, चित ऐसी करुणा छाई है॥
गुरुदेव कृपा की सरिता में दुःख द्वन्द सभी बह जाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

शिशु सम निश्च्छल, गिरिसम उन्नत, सान्निध्य गंग सा पावन है।
मरुथल निवास है किन्तु छलकता सदा कृपा का सावन है॥
दर्शन शीतल सुखदायक हैं, मन परम प्रेम संचारी हैं।
प्रभु परम सन्त सद्गुण निधान बिन कारण जग उपकारी हैं॥
जिस पर कर देते कृपावृष्टि शतजन्म सफल हो जाते हैं॥
आचार्य प्रवर श्रीजी प्रभु की पद.

भारत संस्कृति भारत गौरव गरिमा की रक्षा आप करें।
चिरकाल आपके दर्शन से भक्तों में प्रमुदित भाव भरें॥
कण-कण से जो अभिनन्दित हैं, उनका अभिनन्दन क्या होगा।
जो मूर्तिमन्त वाणी स्वरूप, शब्दों से वन्दन क्या होगा॥
है पास न शब्दों का 'कौशल'; भावों के भवन सजाते हैं।
निज मन-मन्दिर में हम प्रभु की छवि निरख-निरख सुख पाते हैं॥
जिनकी अनुकम्पा जलद वृष्टि से ताप छिन्न हो जाते हैं।
आचार्य प्रवर श्रीजीप्रभु की पद रज हम शीश चढ़ाते हैं॥

श्रीचरणों में सादर समर्पित—

श्री निम्बार्क जूनियर हाईस्कूल
विहार घाट - वृन्दावन (उत्तरप्रदेश)

मङ्गल बधाई

— वैद्य बैकुण्ठनाथ शर्मा

मंगल मास जेष्ठ सुखदाई।
मंगल शुक्ल पक्ष द्वितीया कौं,
जन जन गावत मुदित बधाई॥
मंगल दिवस आज कौ यह है,
पीठासीन भये गुरु राई॥
मंगल अर्ध शताब्दि महोत्सव,
स्वर्ण जयन्ती रूप मनाई॥
मंगल **रामनाथ शर्मा** पितु,
मंगल **स्वर्णलता** सी माई॥
मंगल मूल ''रतनश्री'' प्रकटे,
राधासर्वेश्वर शरनाई॥
मंगल रस की राशि वृन्दावन,
वेद पुरान पढ़े प्रभु जाई॥
मंगल विश्व विधायक सुमति,
पाई श्रीगुरु भजन कमाई॥
मंगल अनन्त विभूषण श्री कौ,
श्रीगुरु **बालकृष्ण** सौं पाई॥
मंगल प्रबल प्रताप साधुता,
फैल गई जग विमल बड़ाई॥
मंगल मारतण्ड सम सन्तन,
जौरै एक मञ्च पर भाई॥
मंगल सुलभ प्रेम भक्ति रस,
तारहि शरणागतन दृढ़ाई॥
मंगल चरित श्रवण कर जिनके,
अखिल अमङ्गल मोह नसाई॥
मंगल गावत ''शरन बिहारी'',
बारम्बार बधाई बधाई॥

मथुरा

श्री 'श्रीजी' सतक

— सन्त हनुवन्त किंकर

पुष्कर पावन पुही पदम, विधि घर सर नमणूह।
देह विदेहा दिव्य दे दरस हरस पमणूह।।1।।
नील गिगन अट यान दे सुमन भरण भिरखाह।
रुं रुं पुलकित अंग नव रज सिर धरि हरखाह।।2।।
गौर नाग नीला गिगन छाव छबि हरियाह।
रिसि घर सर हरसद स्रवण नर लेरां लहराह।।3।।
जोत पुंज छिब उदय रिव मुंजल गूह ऊगूण।
तप तापस दम्पत सुचि ऊजल आगम जूण।।4।।
खगपत सज हरि लछ विचर तेज पुंज लख गूह।
परम प्रमुदित होय ढब उतर गीर घर गूह।।5।।
हर दरसण दम्पत हरख देह अलोकिक होय।
अग जूणी दुज वर वसुध सुवन मुनिपत सोय।।6।।
हर वर के परताप सूं **रामनाथ** दुज गौड़।
जांगल देस सुदेश में राम नाव सिर पौड़।।7।।
निंब अर्क तीरथ पवित **पुष्कर** आरण माय।
रामनाथ दुज दिव्य दे सरल सुभाव सुभाय।।8।।
स्वर्ण लता जिण नार नय, सहज सुसील सुखान।
राधा माधव ध्यान नित अरचण घण मण मान।।9।।
पन्ना छय लीली धरा सदमिण वेद वितान।
मुंजल मिंदर मिण मडित, सेत सौन सुर यान।।10।।
राधा माधव पडिम बर पूजा नित **रुधनाथ**।
त्रय वेला दरसण नितक हरसित मन रुघनाथ।।11।।
सोन वेलड़ी दरस नित राधा माधव देव।
अमर अर्चना प्रमन मन विधि भौत वर सेव।।12।।
राधा माधव वर क्रपा विष्णु वर वरदान।
सोन लता हरियल गरभ धवधिन दुज गणदान।।13।।

कथा भागवत नत पढे कथा राम घण मान।
गूढ ज्ञान सिसु गरभ में बीज भगत भगवान॥14॥
सत्य सुशील सुलक्खणी सतवत सोन लताह।
नेम धरम पूजा किसन तुलसी पूज सदाह॥15॥
वैष्णव जन के क्रत सकल दम्पत मिल पूराह।
राधा माधव सरण सुभ सेवा वद वदकाह॥16॥
इक नव अठ छह बीकमा सुक्रह सित वैसाख।
धर हर घर हर मेह भर जलमोतम पदमाख॥17॥
मंगल ढोलज ढ़म ढ़मइ मंगल गीतज सेर।
नींब तीर्थ हरखित हरो रामनाथ नाछिपोर॥18॥
बालचंद नव सूर दिव दिग् दिग् दिव्य उजास।
सोन लता हरखित अतुल कण कण धर नच रास॥19॥
नामोतम हों जलम रो **रतन** बोलता नाम।
दुजवर उत्तम रतन कुल रतन मीण जग धाम॥20॥
बालकील बालक परम धरम माग पगल्याह।
माईत नम नम पडिम हर पुरजन नम रंगलियाह॥21॥
जटाजूट मुनि **परस** भण रामनाथ घर भीख।
अंक **रतन** मड हंस हैस वर वर मुनिवर लीक॥22॥
मायड़ ज्ञानं व ध्यान सू **परशराम** मुनिजाण।
रूं रूं पुलकिय हिय हरख बाल गरब गुण खान॥23॥
बाल न य सुर सुरप पुह लोकिक नाय अलोक।
पदमासण थित ध्यान हर बतरस जनं उण लोक॥24॥
पिछवाइ माइत रतन गुण घण रतन अपार।
निंब तीर्थ नंदण वणां सुरतर बणव तैयार॥25॥
सत पथ संतन बालपण रम न भगत भगवान।
सभ्य सिष्ट सूशील सत सज्जन सायत सान॥26॥
संगीतग मिंदर किसन मंत्र मुग्ध शृंगार।
मंगल सायं आरती भजन कीरतन सार॥27॥
लादू सद सच वाग हिय, निंब तीर्थ पोसाल।
योगी तपसी ज्ञान कहत हंस सपथ मिण माल॥28॥

भोग न योगी योगपत सम दम वीतहराग।
वेदा शास्त्र सत्यविद हरि पद संतन मांग॥29॥
समराधन पूजन सदा घर में सालगराम।
ध्यान लीन स्थिर प्रज्ञा परम हंस निज धाम॥30॥
राधा माधव मिंदरा चित्रित चित चितसाल।
बालकृष्ण शरणो सदा सेव कंज पद माल॥31॥
ज्ञान आंख गरु लख रतन परखइ सोन कसोट।
सिष्य थाप हिय माय रस निंब अर्क पथ पोट॥32॥
इक नव नव सत सित दुइ दस बज रवि आसाढ़।
उतम रतन श्रीजी भयो नींबारक मिण माढ़॥33॥
राधा सर्वेसर शरण आदर पथ युवराज।
निंब अरक पुर सोन रिव उदयदु सब सुख साज॥34॥
सनकादिक विधसमुख हो बिरम ज्ञान जिज्ञास।
विद चिंतन हर हंस हवे पचपद विरम सुभास॥35॥
हंस सनक नारद वरन सुचिवर सम्प्रदाय।
आद गुरु निंबार्क कहय ख्याति जग वद काय॥36॥
निंब अर्क थापित थली परसराम आचार्य।
यस सौरभ दिग दिगंतह पसरइ कीरत धार्य॥37॥
पीठ अचारज परसजी सर मणि सुभ छतीस।
माला मणि चो अठतणा शरण सम जगदीश॥38॥
राधा सर्वेशर शरण नाम दिया गुरुराय।
सगतपात सव धन भगति तपबल दिय जुबराय॥39॥
गुरुवर पुण्य प्रताप सू पर्व जलम संस्कार।
राधा सर्वेसर सरण बाल कृष्ण उतगार॥40॥
प्रक्रति परक गरु क्रप सू मुमुख निवृतिइमाग।
रसोपासना निज पथन पिया पियतम पथ भाग॥41॥
गरु चरणन की सेव नित भगती रस अवगाह।
करुणाकर करुणा किय भव सागर की थाह॥42॥
घट छांदो दिय मिरत का त्री बंदन पट बंद।
दरस अलोकिक रूप विभ विरम रूप सिद संद॥43॥

मुदरा सव सिद सिद मणि पान अपानइ भेड़।
माग अलोकिक चलण हित मन अस वस दुत ऐड़॥44॥
नित दरसण हरसण मना त्रीवेणी परयाग।
कुंभ कोड इक धर सुधटन सोम सुरस बद भाग॥45॥
प्रिया प्रिय पथ पर चलत निंब अर्क मिग माग।
दिनमणि कोड़ा भास के मुख मंडल प्रम आग॥46॥
बालकृष्ण शरणो मणि सरणो संम उजास।
राधा किसनद शरण ले पथ रवि निंब प्रभास॥47॥
हिय चख खुल प्रज्ञा चगसु तीन गाठ खुल भाग।
माथ हाथ पारस गरु सोन कसोटी साग॥48॥
भगती पथ चल युव मना पथ वल खग खर धार।
आसा सीपी मन मुगत गुरु क्रप स्वाती सार॥49॥
मग ऊजड़ तन कवल कल हिंस पशु भयभीत।
चित रथ चल समता सुरस थिर मत इंदिय जीत॥50॥
द्वादस वय गय गाह गुरु सरल सुपथ भगतीह।
भवर भव न भव पार हित गुरु क्रप नौ सगतीह॥51॥
वज्र पात घुति पात सत जल थल नभ भवताह।
गीर पिगल नद उलट पट हंस वंस उड़ताह॥52॥
भीम प्रभंजन थिर सुवड़ थिर सिल नद वहताह।
धूप छांव दुख सुख इकन द्रग जल वह वन्ताह॥53॥
जेठ किसन एकम तणा दोय सहस बिकमाह।
अठ वज चौपच मिनट पुल कुंज गमन गरू नाह॥54॥
जेठ सुकल दूजम शनि आढ बजण सुभ वेल।
पीढा अधपत अधप नव संभप निज पथ गेल॥55॥
आणद मंगल चहुदिसा चहुदिस हरख उछाव।
साक्षात सुरगुरु पदध सवगुण मढिमढ भाव॥56॥
चवदह भर युव गुण मढि विद्वत कुल अवतंस।
राधा सर्वेसर शरण हंसह परमह हंस॥57॥
सर्वेसर संघ धिस्पणा संघप धनजे दास।
वृंदावन विद्याध्ययन सित अम्बर गल रास॥58॥

सोभा यात्रा नीसरी वृंदावन रे माय।
सुरपुर सुरपत यात्रा बुधजन उड़घन छाय॥59॥
चार वेद कंठम कलित आगम शास्त्र पुराण।
स्मृति स्मृति गीता गउख रामायण हिरदाण॥60॥
सकल विस्व विद्या वसी विद्या विस्वहु कोस।
निंबारक आचार्य वर मति सरतर हिय पोस॥61॥
वृंदावन धर दिव्य धर दिव्य होय वस वास।
शरण शरण सव दिव्यता निजपथ मरमग भास॥62॥
विद्या अरजण चौ भरस सब विद्या मणि खान।
विद्या सुरतर फल मणि रवि रस उड़गण भाण॥63॥
कुरुखेत मेलो मडयो सहस रसम महयाग।
सहस रसम सत मुख रवि ज्ञान उजास सुभाग॥64॥
मुख सद फुल झड़ झड़झड़ी गौ मुख जल गंगाह।
सद सद गीता सुरप सुण हररस सव रंगाह॥65॥
संकराचारज मुख सबद नमन सबन नर नार।
सालगरामज छोट बड़ पूजण अरचण सार॥66॥
अजयमेर आगम पढ़म स्वागत भव्य विसाल।
धरम राज नगरी धरम धरम धजा नभ माल॥67॥
कुंभ परब वृंदावनह फल प्रद पदांक।
भाव विभोरह भगत सद मंत्र मुग्ध सद भांग॥68॥
सद सरजीवण जीव म्रत सोम सुरस हरियाण।
नेह अमिय फल फूल फल जीवण मुगल सड़ाण॥69॥
ब्रज सज कीनी यातरा मुनी मंडल के साथ।
ससीवर जागण सोभ है मंडल उड़गण मात॥70॥
दोय सहस सातम दुजइ बारस किसन असाढ़।
श्रीजी जैपुर पग मडण मुद मणि चहुदिस माढ॥71॥
श्रीजी सुरगुरु अग सुभे मुनी मंडल वह लार।
जन समद उलट पलट चहु दिस जै जै कार॥72॥
मंगल गीता गोरीया आरतीया उतार।
वंदन अभ नंदन चउट फुल मिण मेह भरार॥73॥

दांता हाउस धिन धरा कंकू पग श्री जीह।
कण कण में श्री जी साहिब जैपर भण श्री जीह।।74।।
श्रीजी री पदरावणी रंगी भगती रंग।
घर घर धन सब गुरुसमप तन मन अरपिय पुंग।।75।।
पदवी भूषण भगत री चाबी पुन वगसीस।
धन्य छगन घटना दुरित पीसांगन न्रप ईस।।76।।
राज पाट सगलो समप सवा लाख की आय।
दुय सत श्री जी राखीयो सब धन फर लौटाय।।77।।
साधु मंडल परब में कानपुरी रे माय।
स्वागत घण नभ यान सू फूला मेह भराय।।78।।
विष्णु जाग मलहारगढ़ वीन ललित पुरजाय।
दतिया झांसी ओरछा वंद आगरा माय।।79।।
दोय सहस दस अखय तय उदयपुरी नयराय।
कंकु पग श्री जी मढ़े पावन पुर हरसाय।।80।।
कथा भागवत भगत सर श्री जी मुख वाखाण।
सुरसर नीसर सबद जल नर नारी गोताण।।81।।
मेदपाट धर अधपती भूपालक भूपाल।
वंदन गंगादास जी मुरलि मनोहर माल।।82।।
दोय सहस दस माह मह तिरथ राज प्रयाग।
कुंभ परब निंबार्क पुर वस वंदन महभाग।।83।।
तिण दन सूं आजु लगी कुंभ परब हर माय।
निंब अरक पुर सदा सुमें श्री जी रव उदयाय।।84।।
नीसर सोभा जातरा अनी अखाड़ा संत।
चँवर छत्र छड़ नौबता वाद्य घोस जय पंथ।।85।।
चित्रकूट के धाम पर पावन पद पदमांक।
कामदगिर व फटिकसिल पद पथ हिय हरसांक।।86।।
तीन धाम व सपत पुर आरण पुष्कर पाछ।
आणंद मंगल चहु दिसा महामोद जन नाच।।87।।
दोय सहस सोलह तणा दोय सहस इक्कीस।
भातर भू मंडल भ्रमण साक्सात जगदीश।।88।।

विश्व हिन्दु परिषद परब पूत कुंभ प्रयाग।
शंकर वैष्णवचार्य गम श्री जी वद् वद् भाग॥89॥
आंदोलन रक्षा सुरभि दिल्ली श्री जी भाग।
गौ रक्षा परचार किय रजथल कण कण जाग॥90॥
दुय सब दुय पल वीकमा **श्री जी ब्यावर माय।**
गौ रक्षा मेला तणा शंकराचार्य जी आय॥91॥
श्री जी पावन अटण व्रज चौरासी कोसीय।
तीन सहसजन संत सह महरस जन मुनीय॥92॥
धर्म सनातन परब पुर दोय सहस इगतीस।
चहु शंकर वैष्णवचार्य मिल जन दरसण जगदीश॥93॥
भारत भू रे माय ने श्री जी बड़ मुनि राय।
समता ओरां नह करै दूजा मुनि जग राय॥94॥
भारत भू मे घूमिया मुनी मंडल सह आप।
दर्शन कर धिन मानखा मुगती मणी मुनि साप॥95॥
निंब अर्क उदियो धरा चहुदिश में आलोक।
नित उठ वंदन मानखा सुर नर मुनि पद धोक॥96॥
पाली पुर रे माय ने श्री जी पग मंडणाह।
चारु दिस में हरख घण आणंद मंगल वाह॥97॥
रामायण किंकर रचि निज भाषा रे माय।
वीमोचन **श्रीजी** करां महा मोद पुर छाय॥98॥
आणंद मंगल झूलणै झूले सब नर नार।
यान अटे सुर गिगन में मंगल मेह भरार॥99॥
पवन पुत्र उबा भवन राम धनी दरसाय।
श्री जी उबा हरख मन किंकर सतक भणाय॥100॥

"श्री किंकर रामायण" (राजस्थानी)
173 जनता कॉलोनी पाली मारवाड़

श्रीभगवन्नाम के समान न तो ज्ञान है और न व्रत, इसी प्रकार ध्यान, फल, त्याग, शम, पुण्य और सन्मार्ग भी श्रीहरिनाम के समान नहीं हो सकते।

—श्री श्रीजी महाराज

श्री 'श्रीजी' महाराज का औदार्य

— महन्त श्री राधाकृष्ण दास
भिषगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य

श्री भगवन्निम्बार्काचार्य के 5100 वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन एवं पूज्य जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज के जीवन-वृत्त, व्यक्तित्व तथा कृतित्व आदि से सम्बन्धित अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन के महनीय आयोजन की पूर्ण सफलता के लिए श्री सर्वेश्वर भगवान् की महती कृपा के लिए सादर सहृदयता से प्रार्थना है।

अत्यन्त प्राचीन अनादि वैदिक निम्बार्क सम्प्रदाय के पूज्य आचार्यश्री के पावन चरणों का प्रथम सान्निध्य कुरुक्षेत्र यात्रा 1956 में प्राप्त हुआ था, जो अनवरत अद्यावधि उपलब्ध हो रहा है। मैंने सलेमाबाद में संस्कृत अध्ययन काल में अन्तेवासी रह कर भी आशीर्वचन प्राप्त किया है।

निःसन्देह आपश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रत्येक अंश जीव अविनाशी निम्बार्कीय वैष्णव गर्व व गौरव की अनुभूति करता है तथा सम्प्रति निम्बार्क सम्प्रदाय भव्यता, श्रेष्ठता, पवित्रता एवं द्वैताद्वैत सिद्धान्त से उच्चशिखर पर आरूढ़ है।

व्रज-वृन्दावन : श्री व्रज-वृन्दावन के प्रति आचार्यश्री की अगाध श्रद्धा, निष्ठा है। फलतः आपश्री ने धार्मिक सामयिक पैदल-यात्रा से कलियुग के झंझावातों से मुक्ति प्रदान कर जन-जन को सत्पथ पर अग्रसर तथा सत्कर्म करने की प्रेरणा प्रदान की है। पूज्य आचार्यश्री ने वृन्दावनस्थ समस्त कुञ्जनिकुञ्ज, श्री निम्बार्क राधाकृष्ण बिहारी मन्दिर, निम्बग्राम-गोवर्धन व मन्दिर के धार्मिक प्रतिष्ठानों की प्रतिष्ठा द्वारा सम्प्रदाय की उल्लेखनीय सेवा के साथ मानव-मन को सद्विवेक से जागृत कर श्री सर्वेश्वर प्रभु की कृपा से उपकृत और परोपकार से प्रभावित किया है।

श्री निम्बार्काचार्य पीठ-निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद में स्थापित : श्री सर्वेश्वर संस्कृत विद्यालय, देश, धर्म, संस्कृत और संस्कृति की समृद्धि के दृष्टिकोण से उल्लेखनीय है। श्री सर्वेश्वर पुस्तकालय, वाचनालय श्री श्रीजी महाराज द्वारा कलियुग में हो रहे धर्म, साहित्य, संस्कृति, सदाचार व मानवीय संवेदना, सहिष्णुता व दायित्व पर साहित्य सर्जन द्वारा साहित्य अमृत का पान करा रहे हैं तथा पीठस्थ समस्त मन्दिर, धार्मिक प्रतिष्ठान का जीर्णोद्धार द्वारा कायाकल्प से विशालता, भव्यता के सजीव प्रमाण हैं। निम्बार्क तीर्थ द्वार, श्री निम्बार्क मारुति मन्दिर, खातोली मोड, श्री निम्बार्कधाम, मूंगी-पैठण, श्री परशुराम-द्वारा, पुष्कर, श्रीगोपालद्वारा मन्दिर किशनगढ़, श्री राधासर्वेश्वर मन्दिर, मदनगंज, श्रीनिम्बार्ककोट-अजमेर, श्रीनिम्बार्क कुञ्जबिहारी मन्दिर-जयपुर आदि आदि द्वैताद्वैत वेदान्त परम्परा के पीठ व महान् आस्था के केन्द्र हैं तथा समस्त सम्प्रदाय के लिये अनुकरणीय है।

विशेष में श्री श्रीजी पूज्यवर आचार्यश्री द्वारा प्रयागराज, इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक चारों कुम्भ पर्व पर निम्बार्कनगर का निर्माण करने से यह सम्प्रदाय विश्व में प्रचार-प्रसार से विख्यात हुआ है।

पूज्य आचार्यश्री की वाणी में माधुर्य है। व्यक्तित्व भक्ति, ज्ञान, वैराग्य की त्रिवेणी से अभिषिक्त है। आपश्री धार्मिक, पारमार्थिक समारोह, यज्ञानुष्ठान, उत्सव, भागवत कथा, प्रवचन, भगवन्नाम संकीर्तन आदि के प्रेरणा स्रोत हैं। भगवद्भक्त रसिक जनों के सर्वस्व सन्मार्ग प्रेरक, सरल हृदय, मन, वचन व कर्म से सात्विक तथा सब से समान स्नेह रखने वाले हृदय सम्राट् आचार्य प्रवर से विशाल जन समुदाय कृपा से उपकृत और परोपकार से सर्वथा अनुगृहीत है।

अतः श्रीचरणों में शत-शत नमन, वन्दन।

श्रीजगदीश मन्दिर
राजा जी की छतरी, डूँगरपुर (राजस्थान)

❊ पूज्य आचार्यश्री का यात्रा संस्मरण ❊

पूज्यश्री श्रीजी महाराज झाँसी, ललितपुर, तालवहेठ, दतिया आदि की यात्रा मोटरकार से करने के बाद आगरा रेल से पधारे। इस यात्रा में आपश्री के साथ अधिकारी नरहरिदास जी, अधिकारी वियोगी जी, संत जी तथा पुजारी बालकदास जी भी थे। रेल अधि विलम्ब से आनी थी। भगवान् श्री सर्वेश्वर के अभिषेक, शृंगार, राजभोग आदि का समय हो गया था। अभिषेक, सेवा आदि के लिए स्वच्छ स्थान व कुआँ खोजा गया। स्टेशन से दो ढाई किलोमीटर दूर एक सुंदर-सा खेत जिस पर कुआँ व उस पर अरहट लगा हुआ दिखाई दिया। सर्वेश्वर सेवा के लिए वहाँ रुकना हुआ। कुछ ही समय में उस खेत का स्वामी वहाँ आ गया। सेवा परिकर गण से परस्पर वार्तालाप हुआ। अतिकाल तो हो गया था, परिकण गण ने उनसे गाय के ताजा दूध की आवश्यकता बताई, उस जगह से गाँव कुछ दूरी पर था, वह महाशय गए और गांव में जाकर जानकारी दी सर्वेश्वर प्रभु सहित कुछ संत-जन कुएँ पर विराजे हैं। सर्वेश्वर सेवा के लिए ताजा दूध की आवश्यकता है। उनकी जानकारी से गांव के बहुत से लोग ताजा दूध ले आए। भगवान् सर्वेश्वर का अभिषेक हुआ, तसमई खीर व पूडी प्रसाद बना। सभी ग्रामजन व परिकरों सहित राजभोग का प्रसाद पाया और पूज्य श्रीजी महाराज की चरण वन्दना की। तदन्तर पूज्यश्री परिकरों सहित रेलवे स्टेशन की तरफ पधार रहे थे, तभी एक श्याम रंग का हृष्ट-पुष्ट महाशय कुछ गाँव वालों के साथ आता हुआ पुकारता हुआ सुनाई दिया, वे कह रहे थे संत महाराज थोड़ा रुकिये। पूज्यश्री कुछ क्षण रुके। वे सांवले रंग के महाशय आए और पूज्यश्री के सामने धड़ाम से गिर गये और अश्रुधारा के साथ रुदन करने लगे, जब उनसे पूछा गया कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने कहा आज स्वयं प्रभु हमारे गाँव में पधारे और मैं उनके सेवा-दर्शन से वंचित रह जाता, यह सोचकर मुझे रुदन आया और आपश्री प्रभु के दर्शन कर मेरा मन प्रफुल्लित है, इसलिए यह बरबस अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है।

अद्वितीय व्यक्तित्व

— आचार्य खेमराज केशवशरण

परमतपोमय, विद्यावैभवसम्पन्न, प्रवचन-प्रबुद्ध एवं अतिकुशल शुभमार्गदर्शन में आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनादि वैदिक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के माध्यम से वैदिक सनातन धर्म के प्रबल संरक्षण एवं सम्वर्धन के साथ-साथ इसके चतुरस्र प्रचार प्रसार के क्षेत्र में उदित हो रहे व्यापक सहयोग एवं भावात्मक जागरण के वर्णन के लिए हमारे शब्दकोष में शब्द नहीं है। अपने सान्निध्य मात्र से समस्त वैदिक धर्मजगत् में नवचेतना का स्पन्दन करने वाले आपश्री के तपःपूत साधनामय प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व की गतिशील छवि और प्रतिष्ठा के सम्मुख आपश्री के सतत अनुगत हम सभी श्रद्धा से अवनत हैं।

आपश्री के तत्त्वावधान में वैदिक सनातन धर्म के संरक्षण तथा संवर्धन के सदुद्देश्य से आयोजित होने वाले अनेकानेक ऐतिहासिक बृहद् धर्मानुष्ठानों में आपश्री के औदार्य भरे गौरवमय सश्रद्ध आह्वानों में अखिल भारतीय स्तर पर परमपूज्य धर्माचार्यों का जो उत्साहदायी सहयोगात्मक सर्वसम्प्रदायीय शुभ सङ्गम जुट पा रहा है, और जगद्गुरु भारतवर्ष की गरिमामयी धार्मिक सांस्कृतिक परम्परा के समुज्जीवन में जो दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा का व्यापक सञ्चार सम्भव हो पा रहा है, यह सब आपश्री के लोकोत्तर व्यक्तित्व के विलक्षण प्रभाव से ही सम्भव हुआ है। आज सर्वत्र सभी यह अनुभव कर रहे हैं।

अनादि वैदिक निम्बार्क सम्प्रदाय के महान् सिद्धान्तों के साथ-साथ मर्यादित जीवन, संयम, सदाचार एवं सुशीलता को प्रतिष्ठापित करने वाले अपने जीवनस्पर्शी अमृतमय सदुपदेशों तथा अपनी भावप्राञ्जल-मयी मनीषा से निःसृत देववाणी संस्कृत और राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित अगणित काव्यविधाओं में फैली रसमयी दिव्यकृतियों के माध्यम से आपश्री के द्वारा हिन्दू समाज को धार्मिक एवं आध्यात्मिक आस्था का जो असाधारण उद्बोधन प्राप्त हो रहा है, वह स्वयं में अनुपम है।

आपश्री की सप्ताह व्यापी नेपाल यात्रा के क्रम में विगत 9 अप्रेल 2003 से 16 अप्रेल 2003 तक श्रीरामनवमी के पावन अवसर पर भगवान् श्रीपशुपतिनाथ के अभिषेक पूर्वक भव्य दर्शन के अनन्तर सनातन धर्म सेवा समिति काठमाण्डू व विश्वहिन्दूमहासंघ-काठमाण्डू द्वारा समायोजित धर्मसभा में आपश्री द्वारा जो दिव्य उद्बोध प्राप्त हुआ था, उसका असाधारण प्रभाव नेपाल के धर्मप्राण जनसमुदाय में पड़ा है। वह प्रेरणादायी अमर उद्बोधन बन गया है। सभी उसकी बार-बार चर्चा करते हुए पुलकित होते हैं। आपश्री के अतिमहनीय अद्वितीय व्यक्तित्व से प्रभावित इन सभी अवदानों को हृदयङ्गम करते हुए श्रद्धावनत होकर जगद्गुरु आद्याचार्य श्रीभगवान् श्रीनिम्बार्क के 5100 वें जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक समारोह में आपश्री को शत शत नमन करते हुए हम स्वयं को सौभाग्यशाली समझते हैं। प्रभुश्री सर्वेश्वर एवं श्री राधामाधव के श्रीचरणों में हम सभक्ति प्रार्थना करते हैं कि प्रभु आपश्री को सुस्वास्थ्य पूर्ण दीर्घजीवन प्रदान करे, जिससे वैदिक सनातन धर्म संस्कृति के चतुर्दिक् जागरण से देश में हिन्दू समाज को यह भावात्मक ऊर्जा सतत प्राप्त होती रहे।

प्रमुख संस्थापक तथा पूर्व अध्यक्ष
श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद्, 6/3 केशवकुटी, सिफल, काठमाण्डू (नेपाल)

एक छात्र की स्मृति, आचार्यश्री के चरणों में

— हरिमोहन उपाध्याय

कभी छात्र था मैं, मुझे सींचती थीं
निगाहें कहीं प्यार से आपश्री की।
वही आज भी साथ हैं, साथ होंगी
मिली थी मुझे जो कृपा आपश्री की॥

नहीं जानता था, नहीं जान पाता
कि है स्वाद क्या भक्ति की दिव्यता का।
पता प्रेम का जो दिया आपश्री की
कृपा है तभी श्याम को मैं बुलाता॥

कभी बाल्य मेरा बड़ा चञ्चलाता
तभी आपश्री की कृपादृष्टि पाता।
सभी याद है, याद आती न सेवा
मिला किन्तु क्या बात है नित्य मेवा॥

सुहाने दिनों की कथा तो वहीं थी
खुशी के क्षणों की सुधा तो वहीं थी।
लगा आज जो जिन्दगी जूझती है
पिटाई मिले तो मिठाई वहीं थी॥

कभी कान में आरती गूँज आए
तभी कीर्तनों की कथा सूझ आए।
करूँ क्या मुझे दूर भेजा गया है
नहीं भूल पाता कि यादें सताए॥

कभी गीत गोविन्द का पा न गया
कभी गीत गोविन्द का गान पाया।
बड़ी उल्झनों में फँसी आज काया
कृपा कीजिए माँगने भीख आया॥

न मोती सभी ज्ञान के बीन पाया
मिली ना सदा आप की छत्रछाया।
यही सोचता हूँ अनाडी रहा मैं
कि थोड़ा लिया भी बड़ा काम आया॥

टिपुली गढ़
ग्राम विकास समिति
9 बंकटी चौक, जि. रूपनदेही
भैरहवा (नेपाल)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

महामंगलमय पावन नामों के समुच्चारण मात्र से सकल अघसमूह का विध्वस्त होना स्वाभाविक है।

दयानिधान के शरणागत होकर पराभक्ति का सेवन करता रहे तो उसे कदापि भवबाधा का भय नहीं।

प्राणी कहीं भी रहते हुए अपने अन्तःस्थल में धाम का अनन्य निष्ठापूर्वक स्मरण करता रहे तो धाम की निश्चित कृपा होती है और यदि धाम में ही सतत निवास कर अपने आराध्य के ध्यान में संलग्न रहें तो और भी अधिक धाम की कृपा का अधिकारी बन सकता है।

जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

— रासेश्वरीदास शास्त्री

(श्री) राधासर्वेश्वर शरण श्री श्रीजी महाराज
पीठाचार्य निम्बार्क के, जानत सकल समाज।।
जानत सकल समाज, तीर्थ निम्बारक भारी।
पीठ सलेमाबाद, ताहि कह दुनियाँ सारी।।
कह रासेश्वरि दास, आज हम धनि परमेश्वर।
(पाये) आये हम सब लोग, शरण राधासर्वेश्वर।।1।।

(श्री) राधासर्वेश्वर शरण, श्री श्रीजी महाराज।
हुये आसनासीन जब, हर्षित सन्त समाज।।
हर्षित सन्त समाज, सकल विधि उन्नति पाई।
गावत खुश हो गीत सकल मिल वैष्णव भाई।।
कह रासेश्वरिदास तेज अद्भुत सब लखकर।
करते जय-जय कार, शरण राधासर्वेश्वर।।2।।

पीठ सलेमाबाद जब नहीं विराजे आप।
उससे पहले सम्प्रदा मानों करत विलाप।।
मानों करत विलाप, लुप्त सी जग में होई।
ज्यों ऑटे में नून, निम्बारकी पड़े दिखाई।।
कह रासेश्वरिदास, कृपा राधारानी की।
आचारज बन आप, सखी आई श्रीजी की।।3।।

पीठ सलेमाबाद का, ऐसा हुआ उत्थान।
मानों शव में लौटकर आया फिर से प्रान।।
आया फिर से प्रान, कल्प काया ही कीनी।
जबसे श्री महाराज, पीठ की गद्दी लीनी।।

कह रासेश्वरी दास, हुये हम सब बड़ भागी।
बना कौनसा पुण्य, प्रेम हम इनके पागी॥4॥

श्रीजी महाराज का कह लग करै बखान।
सकल गुणन की खान है, हम बालक अनजान॥
हम बालक अनजान, गुणन यों गाना चाहवैं।
जैसे पंगु सहज, हिमालय लंघना चाहवैं॥
कह रासेश्वरिदास, हमारी यह नादानी।
करै क्षमा अपराध, क्षमा की वे है खानी॥5॥

श्री श्रीजी आचार्य प्रवर अति प्रतिभा सम्पन्न।
चिन्तनशील उपदेष्टा, गीतकार सम्पन्न॥
गीतकार सम्पन्न, काव्य की क्षमा ऐसी।
अलंकार रसयुक्त, रचे कविता सुविशेषी॥
कहे रासेश्वरिदास, साहित्यकार मनीषी।
बंग हिन्दी संस्कृत, मरु भाषा के विशेषी॥6॥

आयुर्वेद में भी अति, अनुभव किया विशेष।
सरस कला संगीत के, प्रेमी रहे हमेश॥
प्रेमी रहे हमेश, यथोचित अवसर पाकर।
होय पुरस्कृत विज्ञ, निकट इनके सब आकर॥
कह रासेश्वरिदास, कवि अरु लेखक भारी।
पैंतिस पुस्तक रची, विलक्षण प्रतिभा धारी॥7॥

शिक्षा जगत में आपका, प्रशंसनीय स्थान।
महाविद्यालय त्रय के, संस्थापक इन जान॥
संस्थापक इन जान, पत्र का करत प्रकाशन।
श्री सर्वेश्वर अंक, कुंज से होय प्रकाशन।
कह रासेश्वरिदास पत्र निम्बारक भाई।
करत प्रकाशन सदा, पीठ आचारज राई॥8॥

निज आचारज काल में, भ्रमण किया भूभाग।
यत्र तत्र सर्वत्र ही, लोग सराहै भाग॥
लोग सराहै भाग, वैष्णवी दीक्षा पाकर।
भूतल हुआ पवित्र, हरि जन पद रज पाकर॥
कह रासेश्वरिदास, विनयश्री निम्बारक से।
निज मत विकसित करो, आप निज तेज भजन से॥9॥

पुष्कर, जयपुर, कृष्णगढ़, मदनगंज अजमेर।
मूंगी पैठण सब जगह, मन्दिर रचे सबेर॥
मन्दिर रचे सबेर, तलहटी श्री गिरवर में।
नीमगाँव श्रीधाम, सजाया देशिकवर ने॥
परमारथ के हेत, किये सब ही यह कारज।
निज स्वास्थ से रहित हमारे यह आचारज॥10॥

विद्यालय सत्संग अरु, गौ औषध यग हेत।
भवन किये निर्माण बहु, जनहित होय सचेत॥
जनहित होय सचेत, कूप उद्यान पियाऊ।
छात्रावास भी बना, पढ़न हित सहज सुभाऊ॥
कह रासेश्वरिदास, तीर्थ निम्बार्क सरोवर।
करवा जीर्णोद्धार, श्रीजी हुये यशस्कर॥11॥

तीन धाम सप्त पुरिन की सहस भक्त के संग।
करी यात्रा ट्रेन से, स्पेशल सहित उमंग॥
स्पेशल सहित उमंग, कोस चौरासी व्रजकी।
पैदल यात्रा करी, सहस त्रय संग सन्तन की॥
कह रासेश्वरिदास, यात्रा यह इतिहासिक।
सदा रहेगी याद, भइ अस विस्मयकारिक॥12॥

धार्मिक आयोजन सदा, करते आप हमेश।
जिसके कारण पीठ भी, ख्याति पाइ विशेष॥

ख्याति पाई विशेष, सनातन धर्म सम्मेलन।
रामकथा भी विशद, किया सुन्दर आयोजन॥
कह रासेश्वरिदास, जयन्ति सुवरण महोत्सव।
है सब वागातीत, हुये जितने ये उत्सव॥13॥

त्रिवेणी, हरिद्वार, तथा नासिक अरु, उज्जैन।
कुम्भ मेला के पर्व पर वास करत सुख चैन॥
वास करत सुख चैन नगर निम्बार्क बनाकर।
विविध कार्यक्रम सहित, होत जो हो जनहितकर॥
कह रासेश्वरिदास, कथा अरु सन्तन सेवा।
ये ही दो आधार भक्त के हितकर देवा॥14॥

सौम्य सरल सुभाव परम श्री श्रीजी महाराज।
निश्च्छल सत्य सुभाव से खुश रह सकल समाज॥
खुश रह सकल समाज, सरल सादा जीवन लख।
बने कण्ठ के हार, सदा इनको हर्षित लख॥
कह रासेश्वरिदास, दया के ये हैं सागर।
सहजदृष्टि पड़जाय, सूख जाय दुःख का सागर॥15॥

आजाद पानीघाट निकुंजवन,
वृन्दावन (मथुरा)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

मानव अज्ञानान्धकार से आवृत हुआ इतस्ततः जागतिक विनश्वर पदार्थों में समासक्त बना रहता है।

✻

अहंकार विमूढ़ होकर स्वयं को गहरे गर्त में निपतित कर अत्यन्त पीड़ित हुआ करता है।

वृन्दावन धाम के प्रति पूज्य आचार्यश्री की निष्ठा

— सेवानन्द ब्रह्मचारी

यत्र वृन्दावनं नास्ति यत्र न यमुनानदी।
यत्र गोवर्धनो नास्ति तत्र नो रमते मनः ॥

विश्ववन्द्य अनन्तश्री समलंकृत परमपूज्य, प्रातः स्मरणीय, अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने अपनी आचार्य परम्परा के अनुरूप सदाचार, कर्त्तव्यनिष्ठा, सर्वोच्च वैराग्य, वैष्णव सेवा, ग्रन्थ समुद्धार एवं अनारत सविधि सम्पादित वैष्णव पद्धति कृत मानसी सेवा-पूजा एवं धामनिष्ठा का एक आदर्श उपस्थित किया है।

ऐसे महापुरुषों का अवतरण इस धराधाम पर विलुप्त साम्प्रदायिक परम्परा को पुनरुज्जीवित करने के लिये ही समय-समय पर होता है। भक्त और भगवान् में अभिन्न सम्बन्ध होता है। भक्त को भगवान् का हृदय माना गया है। श्रीमद्भागवत जी में भगवान् ने स्वयं ही कहा है—

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयस्त्वहम्।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि॥

प्रातः स्मरणीय जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज इसी श्रेणी के महापुरुषों में अन्यतम है।

पूज्यश्री आचार्यवर्य के श्रीधाम में प्रवेश से पूर्व ही पावन वृन्दावन धाम की हरिपदरजस्पृष्टभूमि को सादर नमन कर पैदल ही प्रवेश करते हैं और जब तक उनका निवास बड़ी श्रीजी कुंज श्रीधाम में रहता है तब तक नंगे पैर श्रीधाम के अनेक कार्यक्रमों में चलकर सम्मिलित होना गृहमेधी देहात्मबुद्धि मानव शरीरधारी अज्ञानोपहत बद्धजीवों के लिए अनुभवात्मक उपदेश बनकर सदैव समुद्धार के लिये सचेष्ट करता रहता है।

यह दिव्य वृन्दावन धाम है। यहाँ युगल सरकार का नित्य विहार अविरल हो रहा है। उनकी चिन्मय दिव्य लीला में लव निमेष का भी अन्तर नहीं पड़ता है।

गिरिराज जी महाराज के प्रति अनन्य निष्ठा के ही कारण 'नीमगांव' श्री जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज का उपासना स्थल रहा।

आज वहाँ एक दिव्य मन्दिर है, जहाँ आचार्य एवं युगल सरकार की उपासना वैष्णव पूजा पद्धति के अनुसार अद्यावधि भी पूर्वतः चलती है। श्रीधाम वृन्दावन में बड़ी श्रीजी की कुञ्ज आचार्य पीठ है, जहाँ वर्षभर विविध, धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

दैनिक सत्संग, अर्चन-पूजन एवं विद्वानों का सत्कार आदि परम पूज्य आचार्यश्री के प्रभावी निर्देशन में अनवरत चलता रहता है। 'आचार्यं माम् विजानीयात्? भगवान् ने भी अपने श्रीमुख से आचार्य को अपने स्वरूप के रूप में स्वीकार किया है।

राधारस-सुधानिधि के प्रणेता एवं श्रीधाम वृन्दावन के धामनिष्ठ सन्त शिरोमणि श्री प्रबोधानन्द सरस्वती जी ने अपनी धामनिष्ठा दर्शाते हुए कहा है कि **''श्री राधामुरलीधरौ भज सखे, वृन्दावनं मा त्यज॥''**

मेरे मित्र! तुम अनन्यनिष्ठ होकर सतत राधामुरलीधर अर्थात् युगल सरकार, श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का भजन करो और किसी प्रकार श्रीधाम वृन्दावन का परित्याग न करो।

श्रील् प्रबोधानन्द सरस्वती द्वारा यह श्लोकार्द्ध उनकी अनन्य धाम निष्ठा को अभिव्यक्त करता है। अतः अपने समुद्धार के लिए नाम, धाम, रूप, लीला निष्ठावान् होकर तदनुरूप आचरण करना ही बद्धजीवों को बन्धन से मुक्त होने का अप्रत्याशित हेतु है।

॥ इति शम् ॥

अध्यक्ष
स्वामी अखण्डानन्द पुस्तकालय
आनन्द कुटीर
मोटी झील, वृन्दावन (मथुरा)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

तत्त्वतः उन श्रीसर्वेश्वर की सच्चिदानन्दमय अप्राकृत लीलाओं का सम्यक् ज्ञान उनकी निर्हेतुकी निस्सीम कृपा पर ही अवलम्बित है।

*

एकादशी व्रत के पालन से स्वस्थता, शुचिता, आत्मिक शक्तिसम्पन्नता आदि की उपलब्धि मात्र ही नहीं, परञ्च सर्वनियन्ता सर्वाधिष्ठान भगवान् श्रीसर्वेश्वर भी अति प्रमुदित होकर अपने अलभ्य अनिर्वचनीय दर्शन देने का विशेष अनुग्रह करते हैं।

*

एकादशी यदि दशमी विद्धा हो तो वह त्याज्य है,
उसे छोडकर द्वादशी में एकादशी व्रत विहित है।

अनन्त शक्तियों के स्रोत पू. आचार्यश्री

— महन्त बनवारी शरण शास्त्री

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य परम्परानुवर्ती अनेक आचार्य चरणों का इस परम पावन भारत की अवनि तल पर पादार्पण हुआ, जिनके कार्यकाल का परम पावन यशस्वी इतिहास निम्बार्क जगत् में विद्यमान है। किन्तु हमारे जीवन में जिन परम पूज्य आचार्यश्री के श्रीचरणों के आश्रय का सौभाग्य प्राप्त हुआ और जिनके स्वाभाविक परम कृपा प्रसाद से हम को नवीन धार्मिक जीवन प्राप्त हुआ और उसी कृपाप्रसाद से हम जैसे अकिंचन जनों का मानव जीवन किंचिन्मात्र सफलता की दिशा में चल रहा है, वे हैं– हमारे परमाराध्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री **'श्रीजी' महाराज**। आपश्री के श्रीचरण सान्निध्य को प्राप्त करके ऐसा अनुभव हुआ कि आपश्री तो वास्तव में भगवान् श्रीनिम्बार्क के ही अंशावतार हैं। शास्त्रों में लिखा है कि– ''आत्मा वै जायते पुत्रः'' पुत्र आत्मा का ही अवतार होता है। पुत्र दो प्रकार के होते हैं– लौकिक और पारमार्थिक (धार्मिक)। ऐसा अनुभव होता है कि वर्तमान आचार्यश्री, जो नैसर्गिक गुणगण निलय हैं, दिव्य गुणों के भण्डार हैं, वे सब स्वाभाविक दिव्यगुण गण निम्बार्क भगवान् से ही वर्तमान आचार्यश्री को प्राप्त होकर परम विकास को प्राप्त हुए हैं। अतः अनन्त शक्तियों के स्रोत परम पूज्य आचार्यश्री के मंगलमय कार्यकाल में राष्ट्र के कोने-कोने में चतुर्दिक् जो निम्बार्क सम्प्रदाय एवं वैदिक सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ है, वह सम्प्रदाय के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।
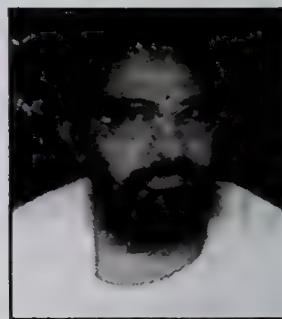
पू. आचार्यश्री सिद्ध संकल्प एवं अनन्त शक्तियों के स्रोत होने से जो भी सत्संकल्प होता है, वह साकार होकर सदा सफल होता है।

निम्बार्कआलय, गांधी नगर
भीलवाड़ा (राजस्थान)

मानव शरीर प्राप्त कर लेने पर सहज ही में यह प्राणी
महापुरुषों के सत्सङ्ग सेवन से श्रीभगवत्प्रपन्न हो साधनाभिरत रहकर अपने परमाराध्य के
कमनीय दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है।

—श्री श्रीजी महाराज

अलौकिक प्रतिभा के धनी हमारे आचार्यश्री

— डॉ. राखी अवरोल

वैष्णव धर्म सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन इत्यादि, इत्यादि सम्मेलन आपके तत्त्वावधान में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। देश-विदेश के कोने-कोने में जाकर आपने श्री निम्बार्क धर्म प्रचार प्रसार कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। आपश्री के द्वारा साम्प्रदायिक साहित्य का अभिवर्द्धन हुआ। आपके द्वारा निम्बार्क भगवान् की प्राकट्य स्थली मूंगी पैंठण का जीर्णोद्धार कराया गया। आपश्री ने संस्कृत, हिन्दी, बंगला, राजस्थानी भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया है। आपश्री ने संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में अनेक ग्रन्थों की रचना की। आपके द्वारा विरचित युग्मतत्त्व प्रकाशिका, पंचस्तवी, श्री युगल स्तवविंशतिः, श्री युगलगीतिशतकम्, श्री सर्वेश्वरसुधाबिन्दु, हिन्दू-संघटन, भारतभारतीवैभवम्, श्री निम्बार्क-स्तवार्चनम्, विवेकवल्ली आदि-आदि ग्रन्थ रत्न उपादेय एवं मनन करने योग्य हैं।

परम श्रद्धेय गुरुवर ! जिस तरह सागर की गहराई नापना संभव नहीं, इसी तरह आपश्री की चरण वन्दना का गुणगान करने में मेरी लेखनी छोटी पड़ रही है। गूगें के गुड़ का स्वाद भला कौन जान सकता है। उसी तरह श्री गुरुकृपा से कृतार्थ हुआ सेवक भाव विभोर होकर सदैव नत मस्तक रहकर गुरु वन्दना में स्वयं को लीन रखता है। धन्य है वह शिष्य, जिसे सर्वश्रेष्ठ श्रीगुरु द्वारा दीक्षित किया जाता है। सर्वजन के ऐसे भाग्य कहाँ? सौभाग्यशाली तो वही है, जिसे आपश्री की कृपा प्राप्त हो सके। आपश्री की आज्ञानुसार मैंने निम्बार्कीय अल्पज्ञात भक्त कवि श्री नारायण स्वामी के जीवन और साहित्य के ऊपर जो शोधकार्य किया था, उसे परम श्रद्धा एवं आदर सहित आपश्री के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए आपको समर्पित करती हूँ।

419 राधा नगर,
मथुरा।

यह सत्य है कि कोई भी यदि विधिपूर्वक श्रद्धायुक्त होकर एकादशी व्रत का आचरण करे तो वह आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन त्रिविध तापों से उन्मुक्त होकर दैवी सम्पदा को प्राप्त कर सकता है।

—श्री श्रीजी महाराज

सर्वव्याधिविनाशक-भगवच्चरणोदक – एक सत्य घटना

— ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री

शालग्राम स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वरप्रभु के अभिषेक का तीर्थोदक जिसे चरणामृत या चरणोदक कहते हैं के पान करने से अकाल मृत्यु का वारण तथा नाना विध व्याधियों का शमन होता है। सबसे बड़ी बात है कि मृत्यु के अनन्तर मोक्ष पद प्राप्त होता है फिर जन्म-जरा-विपत्तियों का सामना नहीं करना पड़ता। शास्त्र वचन है—

"अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशकम्। विष्णोः पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।" भगवच्चरणोदक का अपरिमित प्रभाव है, इसका भले ही हमें सहज में अनुभव नहीं होता हो, किन्तु यथार्थता कहीं न कहीं दृष्टिगोचर हो ही जाती है। इस सम्बन्ध में अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज के जीवन की एक रोचक सत्य घटना का उल्लेख मैं यहाँ कर रहा हूँ, जो पूज्य आचार्यश्री ने स्वयं कही थी। क्योंकि पिछले 18 वर्षों से आपश्री की निजी सेवा में रहने का सौभाग्य मुझे मिला है। यदा कदा स्वयं के जीवन में घटित विविध घटनाओं के प्रसङ्ग सहज भाव से सुनाते हैं। उन्हीं में से एक रोचक सत्य घटना का यह प्रसङ्ग है—

आज से लगभग 25-26 वर्ष पूर्व की बात है– एक बार ब्यावर निवासी भक्तप्रवर श्री भगवानदास जी गार्गीया गंभीर बीमार हो गये। आप चार्टेड अकाउन्टेन्ट के विख्यात आफिसर थे, सैकड़ों व्यक्ति आपके निर्देशन में ऑडिट का कार्य करते थे। पूरे क्षेत्र में आप का अच्छा प्रभाव था। श्रेष्ठ डाक्टरों, वैद्यों द्वारा चिकित्सा की जा रही थी, किन्तु सफलता किसी को भी नहीं मिल रही थी। 7-8 दिन से निद्रा नहीं आती, उठना बैठना भी नहीं हो सकता था। अतः उन्होंने स्वयं अपना अन्त समय जान कर पूज्य आचार्यश्री के दर्शन की अभिलाषा प्रकट की।

आपकी आचार्यपीठ एवं आचार्यश्री के प्रति अगाध श्रद्धा, निष्ठा थी। पीठ के प्रत्येक उत्सव-महोत्सवों, अन्य कार्यविधियों में आप सदा अग्रणी रहते थे। अन्तिम समय में आचार्यश्री के दर्शन की इच्छा पूर्ति हेतु आचार्यश्री के समक्ष सम्वाद भेजा, आपश्री का यथा समय ब्यावर पहुँचना हुआ। आचार्यश्री का दर्शन पाकर वे गद्गद हो गये, अशक्त होने पर भी सहारा देकर बैठाया गया। माल्यार्पण, भेंट आदि स्वयं अपने हाथों से किया। आचार्यश्री ने तत्काल अनेक महौषधियों का योग बनाकर उन्हें पिलाया, 10-15 मिनट बाद उन्हें नींद आई, लगभग 3 घंटे तक वे गहरी नींद में सोए, जैसे स्वस्थ व्यक्ति खर्राटे लेता है। आचार्यश्री तब तक वहीं विराजे रहे। उन महौषधियों में क्या क्या वस्तु थी, इसकी जानकारी बता दूँ– श्रीसर्वेश्वर प्रभु का चरणामृत, तुलसी दल, गंगाजल स्वामी जी की धुनी की विभूति, अभ्रक,

मुक्तापिष्टि आदि का योग था। "**योजकस्तत्र दुर्लभः**" के अनुसार आचार्यश्री के मनोयोग और विश्वास का सम्पुट रूप यह योग था। चिकित्सक महानुभाव सब चकित थे। महाराजश्री से जिज्ञासा की कि श्रीचरण आपने क्या जादू कर दिया, कौन सी दिव्य औषधियाँ थीं, जिससे यह अलौकिक चमत्कार हुआ।

आपश्री ने बताया यह तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणोदक का प्रभाव है, तुलसी का प्रभाव है, स्वामीजी की विभूति का प्रभाव है, अन्य वस्तु उसमें सहयोग का कार्य करती है। जिस प्रकार सामान्यतया सभी लोग मरणासन्न अवस्था में रोगी को गंगाजल तुलसीदल प्रदान करते हैं, यही कार्य हमने किया, यह तो प्रभु का अनुग्रह है गार्गीया जी की अनिद्रा मिट गयी। वहाँ उपस्थित सभी महानुभावों के मन में भगवच्चरणोदक, गंगोदक तुलसी आदि में अटूट श्रद्धा बढ़ी और आचार्यश्री की जय जयकार की।

दूसरे दिन प्रातःकाल तो गार्गीया स्वयं अपनी दिनचर्या के अनुसार मन्दिरों में भगवद्दर्शनों के लिए पैदल ही चलकर जाकर आये। मृत्यु तो अवश्यम्भावी है, उसे तो कोई टाल नहीं सकता, किन्तु औषधोपचार एवं तीर्थोदक आदि से संकट टल जाता है, जीवन सुखमय बन जाता है। अतः सब को सर्वव्याधिविनाशक भगवच्चरणोदक का नित्य पान करना चाहिए। ऐसी अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ पूज्य आचार्यश्री के जीवन में घटित हुई हैं। उदाहरण स्वरूप यह घटना प्रस्तुत की गई। यथासमय अन्य घटनाएँ भी प्रस्तुत की जायेंगी।

निजी सचिव
जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यश्री श्रीजी महाराज
निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ – सलेमाबाद
अजमेर (राज.)

श्री श्रीजी वचनामृतम्

मन्त्र में असीम और अत्यर्थ शक्ति सन्निहित है।

*

श्रीभगवत्परक जितने भी मन्त्र हैं उनका निष्काम भाव से जाप किया जाय तो इहामुत्र सर्वत्र परमानन्द मिलता है।

*

अष्टादशाक्षर "श्रीगोपालमन्त्रराज" का जो अत्यधिक वैशिष्ट्य है, यह बहुत ही महान् और निस्सीम है।

निम्बार्क तीर्थ : एक विश्व-विख्यात भक्ति-पीठ

— प्रो. (डॉ.) छगनलाल शास्त्री,
एम.ए. (त्रय), पी-एच.डी.

भारतवर्ष में राजस्थान का अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। बप्पा रावल, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा एवं महाराणा प्रताप जैसे महान् योद्धा इस धरती ने उत्पन्न किए। **''जो दृढ़ राखे धर्म को, ताहि राखे करतार''** –जो धर्म को दृढ़ रखता है, उस पर दृढ़तापूर्वक टिका रहता है, प्राणपण से उसकी रक्षा करता है, उसे जगत् स्रष्टा-परमपिता परमेश्वर दृढ़, सुस्थिर रखते हैं, यही इन महान् योद्धाओं का आदर्श था। धर्म, राष्ट्र व संस्कृति की प्रतिष्ठा हेतु वे सदैव सन्नद्ध रहे, हर किसी संकटपूर्ण स्थिति से उन्होंने लोहा लिया। वे क्षात्रधर्म के परिपालन में सदा रत रहे।

दूसरी ओर यह प्रदेश धर्म-साधना एवं भक्ति-आंदोलन का भी मुख्य केन्द्र रहा। शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय का सर्वोच्च तीर्थ नाथद्वारा (मेवाड़) में है। कांकरोली, कोटा, जयपुर, सांवलियाजी आदि भी भगवान् कृष्ण की उपासना के महान् केन्द्र रहे। ब्रज भूमि से समागत भगवान् कृष्ण की प्रतिमाएँ वहाँ सुरक्षा हेतु संस्थापित हुईं, जो आज सारे देश में आकर्षण का केन्द्र बनी हुई हैं।

सगुण भक्तिधारा के अन्तर्गत विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि के साथ द्वैताद्वैत परंपरा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसके प्रवर्त्तक भगवान् निम्बार्काचार्य थे। राधा एवं कृष्ण रूप द्वैत में शक्ति और तत्संपृक्त परमात्म-भाव का एक ऐसा अद्वैत भगवान् निम्बार्क ने साधा, जिसने भक्ति-आंदोलन में नव-चेतना का संचार किया। राधा शक्ति-स्वरूपा हैं। उसी से समन्वित सर्वेश्वर भगवान्श्री कृष्ण पल्लवित, पुष्पित एवं सुफलित हैं। उनकी आराधना ऐहिक और पारलौकिक दोनों दृष्टियों से परम कल्याणकारिणी है। यह भक्ति स्रोतस्विनी न केवल ब्रजभूमि और राजस्थान में ही प्रवहणशीला रही, वरन् समग्र भारत में इसकी लालित्य एवं माधुर्यमयी तरंगे उच्छ्वलित होती हुई जन-मानस को उल्लसित, हर्षित एवं समुत्साहित करती रहीं।

निम्बार्क संप्रदाय का सर्वोच्च, अखिल भारतीय पीठ राजस्थान में अजमेर जिलान्तर्गत 'सलेमाबाद' में विद्यमान है। यह स्थान महान् भक्त कवि किशनगढ़ नरेश श्री सांवतसिंह-नागरीदास की राजधानी किशनगढ़ के निकट है। इस ऐतिहासिक महनीय पीठ पर क्रमशः ऐसे-ऐसे महान् आचार्य अधिरूढ़ होते रहे, जिन्होंने इस पीठ को उत्तरोत्तर उन्नत बनाया। राधा-कृष्ण की भक्ति का राष्ट्र में व्यापक रूप में प्रसार किया। आचार्य-वृन्द अपने अमित त्याग, तपोमय, साधना निष्णात जीवन के कारण अत्यन्त प्रभावशील रहे।

राजा एवं प्रजा दोनों ही की उनके प्रति असीम श्रद्धा रही, जिससे निम्बार्क धाम उत्तरोत्तर उन्नति करता गया। भारत में इस महान् भक्ति-पीठ द्वारा अनुशासित सहस्रों मंदिर हैं, जो यहाँ के महान् आचार्यों के मार्गदर्शन में भगवद्भक्ति का लोक-जीवन में संचार करते हुए कार्यशील हैं।

पीठ के वर्तमान अधिपति 1008 श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य ''श्रीजी महाराज'' भारतवर्ष के

एक ऐसे धर्माचार्य हैं, जो अपने प्रगाढ वैदुष्य, वैराग्य, त्याग, सौहार्द, सौमनस्य एवं माधुर्यपूर्ण वृत्ति के कारण समस्त भारत में अत्यन्त श्रद्धापूर्ण स्थान बनाए हुए हैं। उनके व्यक्तित्व से निर्वेद तथा शांतरस का जो निर्झर प्रवहनशील रहता है, उससे भक्तजनों को, श्रद्धालु नर-नारियों को एवं जन-जन को आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

मैं इसे अपना परम सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे विक्रम संवत् 2046 सन् 1989 में तदनुशासनवर्ती श्री लक्ष्मीनाथ पीठ, रामसर के महन्त प्रबुद्ध भक्ति संगीतकार श्री मधुसूदनाचार्यजी के साथ परम पूज्य श्रीजी महाराज के दर्शन का जो सुअवसर प्राप्त हुआ, मैं इन अविस्मरणीय क्षणों को कभी भूल नहीं सकता।

श्रीजी महाराज का स्नेहानुग्रह तथा शुभाशीर्वादमय सम्मान प्राप्त हुआ, उसे मैं अपने जीवन के लिए बहुत बड़ा वरदान मानता हूँ। मैंने वहाँ देखा, निम्बार्कभाव ब्रजभूमिगत वृन्दावन की पावन धरा का रूप लिए हुए हैं। वहाँ कण-कण में श्री राधाकृष्ण की भक्ति का स्वर गुंजित है। आने वाला यह भूल जाता है कि वह राजस्थान में है या श्री राधा-सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की लीलास्थली में है। शान्त, स्निग्ध, ललित, मधुर भक्तिमय वातावरण हर किसी का मन मोह लेता है।

उद्यान वाटिका, सरोवर तथा उछलते-कूदते बछड़े-बछड़ियों से युक्त, धेनुमयी सर्वसुख सुविधा-पूरित गोशाला आदि सभी बड़े ही दर्शनीय हैं। भगवान्श्री राधासर्वेश्वर देव के पीठाधीश्वर श्रीजी महाराज के दर्शन एवं सत्संग के लिए देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से आने वाले संतों एवं भक्तों का जमघट सहसा आज के कलियुगी वातावरण से क्षणभर के लिए दूर ले जाता है।

मुझे परम पूज्य श्रीजी महाराज से अनेक दार्शनिक विषयों पर वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विविध शास्त्रों में अव्याहत पारगामित्व, समीक्षात्मक वैदुष्य, समन्वयात्मक विचार-सरणी इत्यादि से मेरा मन हर्ष-विभोर हो उठा। मुझे जिन स्नेहपूर्ण आशीर्वाद से उन्होंने वर्धापित किया, वह मुझे सुधासेक के तुल्य प्रतीत हुआ। एक बार तो मन में ऐसा आया कि मैं इस स्थान को छोड़कर जाऊँ ही क्यों, किन्तु अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रमों की आबद्धता मुझे वहाँ चिरकाल तक कैसे टिकने देती?

वहाँ निम्बार्क विद्यापीठ, ब्रह्मचारी विद्यार्थियों के अध्ययन का एक सुन्दर केन्द्र है। प्रवेशिका, उपाध्याय एवं शास्त्री तक का अध्ययन होता है। व्याकरण, साहित्य, दर्शन, वेद आदि के सुयोग्य विद्वान् वहाँ अध्यापनरत हैं। विद्या व्यासंगिता के कारण मैं अध्यापकों से मिला, विद्यार्थियों में रहा, उन सबके साथ संस्कृत में संभाषण किया, बड़ा प्रिय लगा। विद्यार्थी बड़े ही सौम्य, विनीत व अनुशासित हैं। ब्रह्मचर्याश्रमोचित वेशभूषा में वे बड़े मनोज्ञ प्रतीत होते हैं। प्राचीन ऋषिकुलों की स्मृति करा देते हैं।

निम्बार्कधाम में प्रवास का दूसरा अवसर मुझे वि.सं. 2048 सन् 1991 में कृष्ण जन्माष्टमी के समय प्राप्त हुआ। उस अवसर पर परम पूज्य श्रीजी महाराज ने मुझे अपनी पीठ की ओर से सम्मानित करने हेतु आमंत्रित किया। इसे मैं अपने पर उनकी असीम कृपा मानता हूँ। मैं लक्ष्मीनाथ धाम के महंत श्री मधुसूदनाचार्यजी तथा अपने अन्तेवासी छात्र शिवभगवान् पुष्टिकर के साथ वहाँ गया। देश के विभिन्न

भागों से सहस्रों नर-नारी वहाँ उपस्थित थे। भक्ति संगीत से धाम का कण-कण सुनिनादित था। ब्रज भूमि के विभिन्न भव्य तीर्थों से तथा अन्यान्य स्थानों से समागत अनेक सन्त वहाँ उपस्थित थे। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस पीठ के महान् मंदिर में श्री आदि निम्बार्काचार्यजी द्वारा पूजित भगवान् सालिगराम हैं तथा राधा और कृष्ण की वे भव्य प्रतिमाएँ हैं, जो गीत-गोविन्द के रचनाकार महान् भक्त कवि श्री जयदेव द्वारा अर्चित-पूजित थीं। श्री कृष्णजन्माष्टमी के साप्ताहिक समारोह के अन्तर्गत अनेकानेक सुंदर भक्ति प्रेरणाप्रद कार्यक्रम हुए, जैसे कि ब्रजभूमि में मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, गोकुल, नन्दगांव एवं बरसाना आदि में होते हैं। ऐसा लगता था कि मानों ब्रजमण्डल ही वहाँ प्रत्यावर्तित हो गया हो। मुख्य समारोह में मुझे परमपूज्य श्रीजी महाराज ने अपने कर-कमलों से बहुमूल्य उत्तरीय, अशीर्वाद-राशि तथा **'निम्बार्कभूषण'** उपाधि प्रदान कर अनुगृहीत किया। यह मेरे जीवन का अतीव-सौभाग्यपूर्ण अवसर था।

मैं कुछ वर्ष पूर्व कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर में शृंगेरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री अभिनव विद्यातीर्थ स्वामीपाद से सम्मानित हुआ था। कुछ समय पश्चात् वे दिल्ली पधारे हुए थे, तब मैंने अद्वैत वेदान्त के आदि पाठ को उनसे लेने का चिन्तन किया। तदनुसार उनसे निवेदन किया। उन्होंने बड़े ही अनुग्रह के साथ ''अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'' आदि सूत्रों पर शांकरभाष्य का विश्लेषणपूर्वक पाठ प्रदान किया। उनकी सूक्ष्म गवेषणापूर्ण निरूपण शैली वस्तुतः अत्यन्त बोधप्रद थी।

यही बात यहाँ निम्बार्कधाम में मेरे मन में उठी। मैंने मन ही मन कही– कि मैं जगद्गुरु निम्बार्काचार्यजी के वर्तमान पीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी ''श्रीजी'' महाराज से ब्रह्मसूत्र के निम्बार्कभाष्य का आदि पाठ पढ़ूँ। मैंने अपनी यह भावना उनकी सेवा में निवेदित की। यह लिखते मुझे परम प्रसन्नता होती है कि उन्होंने मेरा निवेदन कृपा कर स्वीकार किया। मैं दूसरे दिन यथासमय उनके सान्निध्य में उपस्थित हुआ। उन्होंने मुझे बड़ी ही परिमार्जित, परिष्कृत संस्कृत में जो निम्बार्क भाष्य का पाठ दिया, उसे जब मैं आज भी स्मरण करता हूँ तो हर्ष-विभोर हो उठता हूँ। उनकी वाणी का माधुर्य, निरूपण शैली का सौकुमार्य और सुधा-संसिक्त दयार्द्र दृष्टि कभी विस्मृत नहीं होती।

उस प्रवास के अनन्तर मैं बहुत चाहता रहा कि पुनः उनके श्रीचरणों का सान्निध्य प्राप्त करूँ, किन्तु अनेकानेक साहित्यिक, पठन-पाठनात्मक कार्यों में सतत व्यस्तता के कारण चाहते हुए भी वैसा नहीं कर सका, जिसका मुझे अत्यन्त खेद है। वास्तव में बड़े पुण्य से ही ऐसे महापुरुषों की सत्संगति का लाभ प्राप्त होता है।

परमपूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य के इस ऐतिहासिक पीठ से धार्मिक जगत् को बहुत आशाएँ हैं तथा मुझे विश्वास है, परम पूज्य आचार्यवर्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य ''श्रीजी महाराज'' के अनुग्रह से ये निश्चय ही पूर्ण होंगी।

काव्यतीर्थ, विद्यामहोदधि, निम्बार्कभूषण
सरदार शहर (चूरु)

श्री 'श्रीजी' महाराज का आकर्षक व्यक्तित्व

— डॉ. रामअवतार शर्मा
पी-एच.डी., डी.लिट्.

निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री भगवन्निम्बार्काचार्य के 5100 वें जयन्ती महोत्सव का आयोजन तत्ववेत्ता, धर्माचार्य, त्यागमूर्ति, वर्तमान पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज जो अति विशाल, विस्तृत सुव्यवस्थित और अद्वितीय आयोजन कर रहे हैं वह सत्ययुग, त्रेता और द्वापर युगीन ऋषि और देव सम्मेलनों का जैसा आयोजन है। भारत के धर्माचार्यों, संस्कृताचार्यों, अध्यात्मलीन, राजपरिवारों, राजनेताओं और सर्वसाधारण जनता को जोड़कर यह जयन्ती कार्यक्रमों का संयोजन हो रहा है। इस अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन पर जो विचारणीय विषय निर्धारित किए गये हें, उनमें भारत की समग्र आधिदैविक आधिभौतिक और आध्यात्मिक समस्याओं का निश्चय ही निराकरण होगा, यह मेरा विश्वास है। आज के भौतिकवाद में छटपटाती मानवता को निश्चय ही फलदायी सम्बल मिलेगा और भारत ही नहीं, अपितु भारत की ओर उन्मुख विश्वमानवता भी सद्विचारों से लाभान्वित होगी।

श्री श्रीजीमहाराज द्वारा भारतवर्ष में जितने भी सदाचरण प्रकल्प चलाये जा रहे हैं वे श्रीजी महाराज के देवत्व के प्रत्यक्ष रूप हैं। मैंने महाराज जी के शिष्यों एवं भक्तों से महाराजश्री के प्रखर व्यक्तित्व और उत्कर्षपूर्ण कृतित्व की, साथ ही उनके द्वारा चलाये जा रहे उच्चकोटि के कार्यों की चर्चा की है, वस्तुतः प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। विद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों और उनके संसर्ग में आये लोगों के जीवन में त्याग भावना, मातृभूमि के प्रति स्नेह और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निर्वहन करने में पूर्णनिष्ठा का रूप देखने को मिला है।

निम्बार्क सम्प्रदाय के प्राचीन और अर्वाचीन प्रकल्पों की सुव्यवस्था और विस्तार यह परिचय देते हैं कि वर्तमान में ईश्वरीय शक्ति वाला मानव ही कलिकाल की काली छाया से बचकर उन कार्यों को पूर्णरूप प्रदान कर सकता है। नितान्त मानव कल्याण की भावना से कार्य सम्पन्न करने के लिए दृढ़ संकल्पी जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीजी महाराज निश्चित ही अतिविशिष्ट देवीय संपदाओं से विभूषित हैं।

मैंने सत्तर वर्ष की उम्र तक कोई गुरु नहीं बनाया, क्योंकि मेरे मन मस्तिष्क में यह जुनून था कि जो गुरु दूर से ही मुझे प्रेरणा देकर सर्वोकृष्ट रूप से प्रभावित करेंगे और बिना पूर्व सम्पर्क के मुझे अपने सम्प्रदाय की ओर खीचेंगे, मैं उनकी गुरुदीक्षा ग्रहण करूँगा। आज वह मेरा जुनून पूर्ण हो गया और अब मैं धर्माचार्य श्री श्रीजी महाराज से गुरु दीक्षा लेने के लिए आतुर हूं। लगता है सत्तर वर्ष के राही को किनारा मिल गया है।

पूर्व कुल सचिव, आगरा विश्वविद्यालय एवं
संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

श्री निम्बार्काचार्य पीठ, सलेमाबाद

— अ. स्वामी श्रीहरिशरणानन्द

निम्बार्क साम्प्रदायिक संस्कृति के वेदान्त ग्रन्थों के अनुसार इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आद्य जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य जी थे तथा आपका जन्म नाम नियमानन्द था। आप पांच वर्ष की अल्पायु में ही वृन्दावन और गिरिराज गोवर्धन की गुफा में रहकर प्रभु-आराधना करने लगे थे।

एक दिन ब्रह्माजी यति रूप में अरुणाश्रम जा पहुंचे। सूर्यास्त होने वाला था। भगवान् के भोग लगने में देर देखकर दिवाभोजी यति-गणों को बिना प्रसाद लिए जाते देखकर बालक नियमानन्द ने यह कहकर उन्हें रोक लिया कि 'अभी सूर्यास्त होने में देर है, आप भोजन करके जाइये।' भगवान् का भोग लगने पर यतियों ने प्रसाद ग्रहण किया, किन्तु ज्यों ही आचमन करने लगे तो एक प्रहर रात्रि व्यतीत होने जैसा समय देखकर चकित हो गए। महर्षि ब्रह्मा के ध्यान करने पर मालूम हुआ कि निम्ब नामक वृक्ष पर स्वयं भगवान् सुदर्शन चक्रावतार ने ही सूर्य का दर्शन कराया था। इस प्रकार निम्ब नामक वृक्ष पर सूर्य का दर्शन कराने के लिए आप निम्बार्क के नाम से विख्यात हुए। बाद में इसी स्थान पर देवर्षि नारद ने आकर श्री निम्बार्क भगवान् को श्री सनकादि ऋषियों से प्राप्त 'गोपाल' मन्त्रराज का उपदेश तथा गुञ्जाफल के समान दक्षिणावर्त चक्र सहित भगवान् श्री शालिग्राम प्रदान कर स्वयंपाकिता तथा अखण्ड ब्रह्मचर्यादि नियमों का विधि पूर्वक उपदेश दिया।

इस पीठ के पूर्ववर्ती आचार्य-गण प्रायः घूम-घूम कर वैष्णव धर्म का प्रचार किया करते थे। फिर भी, एक ही स्थान पर आचार्यपीठ का व्यवस्थित रूप से संस्थापन पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्व जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री हरिव्यास देवाचार्य जी के द्वारा राजस्थान के पुष्कर क्षेत्रान्तर्गत किशनगढ़ नामक स्थान के पास सलेमाबाद ग्राम में किया गया। भारत के प्रायः सभी प्रान्तों एवं नेपाल आदि निकटवर्ती देशों में इस सम्प्रदाय के मठ-मन्दिरों की अनुमानित संख्या हजारों में हैं। सामाजिक प्राणियों को यथार्थ धर्म की ओर लगाना एवं अन्याय, भ्रष्टाचार आदि दुष्कर्मों की ओर से हटाने का मुख्य ध्येय पालन करते हुए निम्बार्काचार्यपीठ द्वारा विद्यालयों, छात्रावासों, गोशालाओं, औषधालयों, पुस्तकालयों आदि का संचालन किया जाता है, जिनकी निःशुल्क सुविधाएं, सामान्य जनता एवं साधुजनों को उपलब्ध रहती है। परम्परागत रीति-नियमों के अनुसार श्री सर्वेश्वर भगवान् की पूजा आचार्यश्री स्वयं करते हैं।

आचार्यपीठ के वर्तमान आचार्यश्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी एक विद्वान्-ओजस्वी एवं धर्मज्ञ साधु हैं। आप आचार्यपीठ एवं सम्प्रदाय के चतुर्मुखी विकास हेतु सतत प्रयत्नशील रहते हैं। आपको साधु समाज में सात्विक महात्मा के रूप में सम्मानित किया जाता है। आप भारत साधु समाज के संरक्षक भी हैं। 1977 में प्रयाग कुम्भ के अवसर पर साधु समाज सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी आयी थी तो 'श्रीजी' महाराज ने भी उन्हें आशीर्वचन दिया था।

'धर्म संस्कृति स्मारिका',

आश्रम साधु समाज, 22, सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली

'श्रीजी' महाराज हैं कैसे – तारों में चांद हो जैसे

— राजेन्द्र पुरोहित

आज कलियुग के घनघोर अंधेरे में विदेशी पाश्चात्य संस्कृति के सहारे पवित्र भारतीय वसुन्धरा पर भौतिकवाद सर्वत्र अपना मायाजाल फैलाकर भारतीय जनमानस को धर्म-विमुख बनाने की ओर अग्रसर है। ऐसे माहौल में आवश्यकता है सच्चे साधु-सन्तों और धर्मगुरुओं की, जो अपने आदर्श व्यक्तित्व तथा अनुकरणीय कृतित्व से भारतीय जनमानस को पुनः धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण देकर भक्तिमार्ग की ओर प्रेरित कर सके।

सौभाग्य से ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व और प्रेरणादायी कृतित्व के धनी हैं, हमारे गुरुदेव जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज। यदि कोई हमसे प्रश्न करे– गुरुदेव हमारे कैसे? तो निश्चित रूप से इसका एक ही जवाब होगा– **तारों में चाँद हो जैसे!** दया और करुणा की साक्षात् मूर्ति गुरुदेव श्री 'श्रीजी' महाराज की इन पंक्तियों के लेखक–संपादक पर प्रारंभ से ही महती कृपा रही है। वृन्दावन के श्री निम्बार्क संस्कृत कॉलेज में हमारे अध्ययन काल के दौरान आपके वहाँ पधारने और विराजने के समय हमें जो निकटता, अन्तरंगता और सेवा का अवसर मिला है, वह जीवन पर्यन्त स्मरणीय रहेगा। आपश्री ने एक बार नहीं, कई बार अपनी कृपा दृष्टि से हमें कृतार्थ किया है।

वृन्दावन वास की अवधि में अपने विद्यार्थी जीवन की एक घटना का उल्लेख है। धूमपान करने वाले एक सहपाठी विरक्त विद्यार्थी (भादी मंदिर मीठड़ी के साधु) की संगति के कारण हमारे प्रिंसिपल ने हमारे लिए भी धूमपान करने की धारणा बना ली थी और हमारे पिताजी (श्री चन्द्रदत्तजी पुरोहित) को परबतसर इस आशय का पत्र भी लिख दिया था। हम अपने पिताश्री से बहुत अधिक डरते थे, उनके क्रोध की कल्पना मात्र से ही सिहर उठते थे। उन्हीं दिनों श्रावण मास में पूज्य महाराजश्री भी वृन्दावन में ही विराज रहे थे। हमने महाराजश्री से अनुनय-विनय किया और उनके द्वारा पिताश्री को एक पत्र लिखवाया कि राजेन्द्र स्वयं धूमपान नहीं करता, धूमपान करने वाले एक सहपाठी की संगति के कारण प्राचार्य महोदय को राजेन्द्र के बारे में गलतफहमी हो गई थी, अतः आप राजेन्द्र पर क्रोध न करें। इस तरह महाराजश्री ने हमें पिताश्री के क्रोध से बचाया। वैसे महाराजश्री के पत्र व्यवहार का कार्य 'महाराज श्री की आज्ञा से' ये शब्द लिखकर उनके सचिव आदि कार्यालयीन सहयोगी ही करते हैं पर मेरे लिए महाराजश्री ने स्वयं अपनी लेखनी और हस्ताक्षर युक्त पत्र लिखा। यह कोई साधारण बात नहीं थी।

एक और बात। सर्वेश्वर म्यूजिक कम्पनी, मुंबई द्वारा निर्मित ऑडियो कैसेट 'जय श्री राधे' की,

जिसकी सभी रचनाएँ इस दास द्वारा लिखी और संगीतबद्ध की गई थी, स्टूडियो में रिकॉर्डिंग से पूर्व उसकी 'डेमी' पूज्य महाराजश्री सुनते और सुनने के बाद समीक्षात्मक शुभाशीर्वाद हेतु हमने सलेमाबाद जाकर निवेदन किया और मुंबई चले आये। अचानक दो-तीन दिन बाद महाराजश्री का मुंबई फोन आया और उन्होंने हमारे संगीत व काव्य पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभाशीर्वाद प्रदान किया। रिकॉर्डिंग के समय इससे हमारा भरपूर उत्साहवर्द्धन हुआ। जहाँ अन्य लोगों द्वारा सलेमाबाद फोन करने पर भी महाराजश्री से बातचीत का अवसर आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता, वहीं महाराजश्री ने स्वयं फोन कर हमें शुभाशीर्वाद प्रदान किया तथा यदा-कदा फोन पर कुशल क्षेम पूछ लेते हैं। इसे हम सौभाग्य ही नहीं, बल्कि साक्षात् ईश्वर की कृपा मानते हैं।

एक बार मुंबई में पधारे हुए एक अन्य जगद्गुरु जी महाराज से 'खोज खबर' में प्रकाशनार्थ भेंटवार्ता (इंटरव्यू) के दौरान हमारे प्रश्न सुनकर वे जगद्गुरु जी बोले कि अधिकांश पत्रकार जहाँ श्रीमद् भागवत और श्रीमद् भगवद्गीता का अन्तर भी नहीं समझते, वहीं आप इतने गहरे और अर्थपूर्ण प्रश्न पूछ रहे हैं, पहले अपना और अधिक तथा स्पष्ट परिचय तो दीजिए। जब हमने पूज्य पिताश्री चन्द्रदत्त जी पुरोहित का नामोल्लेख करने के साथ ही पूज्यश्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विधिवत् दीक्षित शिष्य एवं विशेष कृपापात्र होने का जिक्र किया तो उन्होंने कहा कि आप परम सौभाग्यशाली हैं जो श्री 'श्रीजी' महाराज जैसे महान् संत के शिष्य हैं। आपके सभी प्रश्नों के उत्तर देने में श्री 'श्रीजी' महाराज समर्थ हैं। इतनी सी बातचीत के साथ हमारी प्रकाशनार्थ भेंटवार्ता समाप्त और श्री 'श्रीजी' महाराज से संबद्ध संस्मरण तथा चर्चाएं प्रारंभ हो गई। लम्बे समय तक हमारे उनके बीच श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ और महाराजश्री से जुड़ी बातें ही होती रहीं।

अन्त में एक अन्य पारिवारिक घटना का उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा। साधुओं के 'जोगीहठ' की तरह बालकों के 'बालहठ' की भी अपनी एक खास अहमियत होती है। एक बार तो हमारे 'बालहठ' की भी लाज रख ली आपने। हमारी एक मात्र बहिन सौ. सुशीला के विवाहोत्सव में नहीं पधार पाने की नकारात्मक सूचना अथवा असमर्थता आपने हमारे पिताश्री से पहले ही व्यक्त कर दी थी। विवाह के कुछ दिनों पूर्व जब हम मुंबई से परबतसर (राजस्थान) पहुँचे तो पिताश्री ने विवाह की आमंत्रण पत्रिका छपवाने हमें आचार्यपीठ सलेमाबाद स्थित प्रेस में भेजा। पूछने पर यह भी बता दिया कि विवाह की तिथियों में पहले से निर्धारित अन्य यज्ञादि आयोजनों में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे देने के कारण महाराजश्री विवाह में शुभाशीर्वाद प्रदान करने नहीं पधार सकेंगे। यह सब जान-सुनकर हमें आश्चर्य मिश्रित वेदना हुई।

सलेमाबाद पहुंचकर प्रेस में आमंत्रण पत्रिका छपने का काम देने के बाद हमने महाराजश्री को अपने आने की सूचना भिजवाई। परम कृपालु महाराजश्री ने हमें तुरन्त अपने महल में बुलवा लिया। साष्टांग दंडवत् और कुशल क्षेम के पश्चात् हमने विवाहोत्सव में शुभाशीर्वाद देने हेतु पधारने का निवेदन

किया। उत्तर में महाराजश्री ने उन्हीं तिथियों में अन्यत्र आयोजनों में पधारने की पूर्व स्वीकृति प्रदान कर देने की बात हमारे पिताश्री को सूचित कर देने की जानकारी हमें दोहराई। पर हम इस उत्तर से संतुष्ट होकर कहाँ मानने वाले थे। नित्य निकुंजेश्वरी श्रीराधे रानी ने हम में न जाने कैसा अति आत्मविश्वास, जिद और अप्रत्याशित 'बालहठ' पैदा कर दिया कि हम वहीं महाराजश्री के चरण पकड़कर बैठ गये और आचार्यपीठ एवं संप्रदाय के लिए पिताश्री के त्याग और सेवाओं के साथ ही पीढ़ियों से आचार्यपीठ और पुरोहित परिवार के अंतरंग रिश्तों की गाथा कह डाली। भावावेश और 'बालहठ' की चरम पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी हमारी बातों को आपने शांतचित्त होकर सुना। कुछ समय के मौन के बाद आपने तुरन्त अपने तत्कालीन निजी सचिव श्री नवल जी को बुलाया और आदेश दिया कि अन्य यज्ञादि आयोजनों के आयोजनकर्ताओं को अविलम्ब फोन कर सूचना दो कि अपरिहार्य कारणों से उनके आयोजनों में आना संभव नहीं होगा। साथ ही हमारी ओर कृपा भरी दृष्टि कर अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ फरमाया– अपने पिताश्री (चन्द्रदत्तजी पुरोहित) से कह देना कि हम श्रीसर्वेश्वर प्रभु सहित सौ.सुशीला के विवाहोत्सव में शुभाशीर्वाद प्रदान करने आ रहे हैं।

इस तरह जीवन में कई अवसर आये हैं, जब आपने हम पर अहैतुकी कृपा की है। आप जैसे परम तपस्वी गुरु का विधिवत् शिष्य और कृपापात्र होने की चर्चा जब हम अन्य जगद्गुरुओं, संतमहंतों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों से करते हैं तो वे भी हमारे भाग्य को अहोभाग्य कहते हैं।

संपादक – 'खोज खबर'
मुंबई

श्री श्रीजी वचनामृतम्

सनातन धर्म के अन्तर्गत हिन्दुत्व का उद्‌बोधन कराने वाले समस्त, वर्ग, विभिन्न मतावलम्बी एक सूत्र में आबद्ध होकर धर्मविरोधी तत्त्वों के आमूलचूल निवारणार्थ एक 'विशिष्ट-कार्य' सम्पादन के लिए सर्वतोभावेन तत्पर हो जाना परमोत्तम एवं परम अभीष्ट है।

*

संसार के चाकचिक्यमय दुःखरूप पदार्थों की आसक्ति का परित्याग कर केवल अपने स्वाराध्य के मिलन की उत्कट उत्कण्ठा को जागृत करें।

शुभकामना संदेश

— श्री मुरारीलाल शर्मा

परम आनन्द का विषय है कि दिनांक 20.11.04 से 26.11.04 तक निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद की पावन स्थली में 5100 वाँ जयन्ती महोत्सव का जो अति आकर्षक एवं मनोहरकारी अखिल भारतीय विराट् धर्म सम्मेलन अति उत्साह, उल्लासपूर्ण, पूर्व नियोजित रूप से मनाया जा रहा है, जिसमें चारों पीठों के शंकराचार्य, चारों सम्प्रदायों के वैष्णवाचार्य, युग संत श्री मुरारीबापू, अनेक सन्त, महन्त, मण्डलेश्वर आदि के साथ भारत के द्वितीय नागरिक महामहिम उपराष्ट्रपति जी व प्रदेश की मुखिया भी पधारकर अति रमणीक व भव्यता की अतिवृष्टि करेंगे, जहाँ सप्त दिवस के विभिन्न कार्यक्रमों का समायोजन होगा। मुझे लगता है ऐसी स्थिति में धराधाम पर स्वर्ग में विराजमान विभिन्न देवगण संप्रेक्ष्य कर आने के लिए लालायित ही नहीं, प्रत्युत किसी अन्य रूप में पधारकर इस विशाल कार्यक्रमों से विशाल वसुन्धरा को अति सुभाषित कर अपने को कृत-कृत्य मानेंगे।

श्री निम्बार्क महामुनीन्द्र प्रदर्शित द्वैताद्वैत-पथैक पीठाधीश्वर !

स्वामी जी आप जैसे महायोगीराज ही इस महानिशीथ के भयानक एवं घनघोर तम में जगमगाते प्रकाश पुंज की भांति हम जैसे भटके लोगों को सत्पथ की ओर प्रेरित कर रहे हैं। हम कोटि-कोटि जनमानस आपके ऋणी रहेंगे।

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक हम सबके प्राणेश्वर अकारण करुणा वरुणालय की असीम अनुकम्पा से महोत्सव एक उदाहरण का रूप ले सकेगा, जो आगामी आयोजकों के लिए सत् प्रेरणा दे सकेगा। इसी मंगल कामना करते हुए पत्र के अन्त में 'दीन' श्रीवैष्णव जनपदरजोभिलाषी मैं आपश्री की व उपस्थित सन्त गणों की पावनपद रज को कोटिशः वन्दन करता हूँ।

श्री श्रीराधा बिहारी जी की अनवरत होती है आराधना।
उच्च कोटि के संत श्री के सान्निध्य में ही होती है साधना॥
श्री श्री से भण्डार वैभव की वहाँ वर्षा है।
जिसने दर्शन किये नहीं वह मानव विचारा तरसा है॥
जी जीवन उसी का सफल है जो संतों का सेवाभावी है।
हर ताले की संतों पर ही तो सुरक्षित रखी चाबी है॥
म मङ्गलाचरण माह नवम्बर में उस दिन तारीख होगी बीस।
मुझ जैसे दीन-हीन भी आवेंगे आवेंगे शेखावत जैसे रईस॥

हा हाटक की वर्षा होगी अद्‌भुत होंगे सभी कार्यक्रम।
अपना-अपना दायित्व सभी निवाह रहे, सभी कर रहे कठिन परिश्रम॥
रा राजेश्वरों के भी राजा आप, पर लेश नहीं अहंकार है।
जिसे आपका सान्निध्य मिला, आये उसमें सुसंस्कार हैं॥
ज जगद्‌गुरु के पद पर आसीन, विश्व आपको करता नमन।
सात दिन कार्यक्रम होगा, आश्रम बरसेगा चमन ही चमन॥
जी जीवन जीने की लोगों ने आप से पाई समझदारी।
जिला मुरैना, तह. सबलगढ़, ग्राम टेंटरा का दीन मुरारी॥

श्री भागवत आश्रम के पास, शिक्षा नगर, टेंटरा
तह.– सबलगढ़, जिला मुरैना (म.प्र.)
पिन 476229,
फोन नं. (27536) 265207

श्री श्रीजी वचनामृतम्

यह विचार करना चाहिये कि यत्न करने पर भी जीव अपने को क्यों नहीं देख पाते?

*

यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि जब कभी अन्धेरी रात में अपने मकान के अन्दर की कोठरी में पड़ी हुई, जानी-बूझी देखी हुई स्थूल वस्तु को भी प्रकाश बिना नहीं देख जाते; तब सूक्ष्म से सूक्ष्म इस जीवात्मा को बिना किसी प्रकाश का सहारा लिये कैसे देख सकते हैं?

इसलिये परम-प्रकाश-स्वरूप सर्वाधार श्री सर्वेश्वर प्रभु का अवलम्ब लेकर उनकी भक्ति के द्वारा उनकी कृपामयी किरणों से ही जीव आत्मपरमात्मस्वरूप को जान सकता है।

भारत की राष्ट्रिय संस्कृति की रक्षा के लिए गोरक्षा आवश्यक

— राधेश्याम खेमका

परमपिता प्रभु की इस सृष्टि में 'गौ' एक अद्भुत प्राणी है। कलिकाल के प्रभाव से संसार में प्रायः सभी वस्तुओं का अलौकिक प्रभाव लुप्त-सा हो गया है, किंतु गोमाता का दिव्य प्रभाव आज भी अक्षुण्ण है। गौ-सेवा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष– ये चारों पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। शास्त्र तो इसका समर्थन करते ही है, अनुभव से भी इसकी सत्यता प्रमाणित हो चुकी है। शास्त्रों में कल्पवृक्ष, चिन्तामणि तथा कामधेनु– इन तीनों को अखिल कामनाओं का प्रदाता माना गया है। इनमें भी कामधेनु का महत्त्व अधिक है। कल्पवृक्ष कोई एक ही वृक्ष है, सभी वृक्ष कल्पवृक्ष नहीं हो सकते। इसी प्रकार सब प्रकार की मणियों में ही चिन्तामणि का गुण नहीं आ सकता है, परन्तु गौएँ सभी कामधेनु हैं। कामधेनु की संताने भी कामधेनु ही हैं। किसी भी गौ की भक्तिपूर्वक सेवा की जाय, वह अपने भक्त की समस्त कामनाएँ पूर्ण करने में समर्थ है। राजा दिलीप ने नन्दिनी की सेवा से अभीष्ट मनोरथ प्राप्त किया था। आज भी कितने ही सद्गृहस्थ गो-सेवा से सब तरह का लाभ उठा चुके हें और उठा रहे हैं। कल्पवृक्ष और चिन्तामणि यद्यपि कामनापूरक माने गये हैं, तथापि वे मोक्ष या भगवत्प्राप्ति नहीं करा सकते। उनसे केवल लौकिक कामनाओं की ही पूर्ति हो सकती है। इतने पर भी वे सबको सुलभ नहीं हैं, किंतु गौएँ घर-घर सुलभ हो सकती हैं। इनसे केवल लौकिक कामनाओं की ही नहीं, समस्त पुरुषार्थों की – मोक्ष एवं भगवान् की प्राप्ति तक होती है। इसीलिए भगवान् ने इस कामधेनु को अपनी दिव्य विभूतियों में परिगणित किया है। गीता में भगवान् ने कहा है— '**धेनूनामस्मि कामधुक्**'— दूध देने वाले समस्त पशुओं में मैं कामधेनु हूँ।

अपने शास्त्रो के अनुसार गाय में तैतीस कोटि देवताओं का निवास है; अर्थात् सम्पूर्ण देवी-देवताओं की आराधना केवल गौमाता की सेवा से हो सकती है। भगवत्प्राप्ति के अन्यतम साधनों में से गौकी सेवा भी एक ऐसा ही साधन है, जिससे भगवान् शीघ्र ही सुलभ हो जाते हैं। भगवान् हमारे इष्टदेव हैं, परन्तु गौएँ उनकी भी इष्टदेवी हैं। वे इन्हीं की सेवा के लिये 'गोपाल' –शिरोमणि बनकर इस भूतल पर अवतीर्ण होते हैं। भगवान् भी जिनके सेवक हैं, उनकी सेवा से भगवत्प्राप्ति में क्या संदेह हो सकता है। यह तो है गो-सेवा का पारमार्थिक लाभ, परन्तु गौसे जो लौकिक लाभ मिलते हैं, उनकी तो गणना ही नहीं की जा सकती। संसार में ऐसा कोई जीव नहीं, जिसका मल-मूत्र भी लोकोपकारी और पवित्र हो। गाय का मल-गोबर और मूत्र भी मनुष्य के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं और उसके स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं आर्थिक जीवन-सम्बन्धी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ये खेतों के लिए खाद एवं अन्य जलवान आदि साधनों में उपयोगी होते हैं। गायों के बछड़े बैल के रूप में खेती के लिए सहायक होते हैं।

कहते हैं माँ के दूध के बाद गो-दुग्ध ही मानव-शिशु का पेट भरता है और उसका पोषण करता है। कुछ समय के बाद माँ के दूध की जगह भी उसका सर्वोत्तम खाद्य बन जाता है। गाय के दूध में जो

तत्त्व प्राप्त होते हैं, वे अन्य किसी के दूध में नहीं प्राप्त होते। इसीलिए आयुर्वेद में गो-दुग्ध, गो-दधि तथा गो-नवनीत (मक्खन) को बाल, वृद्ध, युवा एवं रोगी सबके लिए अत्यन्त हितकारी तथा अमृत के समान उपयोगी बताया गया है—

जरा समस्तरोगाणां शान्तिकृत् सेविनं सदा।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः।।

पर ये सभी वस्तुएँ धीरे-धीरे आँखों से ओझल होती जा रही हैं। ऐसा लगता है कि कुछ समय बाद सम्भवतः इनके दर्शन भी दुर्लभ हो जायेंगे। वस्तुतः गाय एक साधारण पशु के समान नहीं है। यह मनुष्य के उपयोग के लिए दिव्य पावनत्व से परिपूर्ण है। इसकी दिव्यता इसी विचित्र और अद्भुत बात से सिद्ध हो जाती है कि यह जीवितावस्था में तो सर्वप्रकार से लोकोपकारिणी है ही, मृत्यु के पश्चात् भी गाय का चमड़ा, सींग, पूँछ, खुर आदि प्रत्येक वस्तु लोकोपयोगी होती है। इस तरह यह संसार का सर्वाधिक उपयोगी जीव है। इसीलिए इस देश के ऋषि-महर्षि और शास्त्रों ने 'गौ' को माँ की संज्ञा दी है।

भारतीय संस्कृति में गङ्गा, गौ और गीता – इन तीनों को 'माता' शब्द से सम्बोधित किया गया है। इसका कारण यह है कि यहाँ 'माँ' को सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र माना जाता है। यहाँ के मनीषियों की यह मान्यता है कि जीवनपर्यन्त माँ की सेवा करने पर भी व्यक्ति माता के ऋण से उऋण नहीं हो सकता। माता अपने सभी पुत्रों का समान भाव से हित करती है। वहाँ छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच आदि का कोई भेद नहीं रहता। इसीलिए भगवान् का अवतार होता है। संत गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने लिखा है—

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिन्धु मानुस तनु धारी।।

यह गङ्गावत् सबकी कल्याणकारिणी है—

'सुरसरि सम सबकर हित होई।' सुरसरि भगवती गङ्गा सबका हित समानरूप से करती है। वहाँ जाति-पाँति, वर्ण और आश्रम आदि का कोई भेद नहीं होता। जो भी वहाँ जाता है, गङ्गाजल से लाभान्वित होता है। इसी प्रकार गौ की भी महिमा है। गौमाता भी अपने सभी पुत्रों का समानरूप से उपकार करती है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी– किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, गौमाता का दूध तथा अन्य सभी सामग्रियाँ समान रूप से बिना किसी भेद-भाव के उन्हें प्राप्त होती हैं और समान भाव से उनका लाभ उन्हें मिलता है, अतः गाय राष्ट्र की निधि है। इसे राष्ट्रिय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

पर यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि भारतवर्ष की इस पवित्र भूमि पर पूर्णरूप से गोहत्या आजतक बन्द नहीं हो सकी। इस देश के दर्शन, धर्म, संप्रदाय, तन्त्र और मजहब सबने एक स्वर से गो-हत्या का विरोध किया— हिन्दु, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम किसी ने भी गो-वध का समर्थन नहीं किया है। इतिहासकारों का कहना है कि हिन्दू-शासनकाल में तो इस देश में गो-हत्या का प्रश्न ही नहीं था, मुगल-शासनकाल में भी गोहत्या कानून से बन्द थी। सर्वप्रथम अंग्रेजों के शासन-काल में ही कसाईखानों में गायों का काटना प्रारंभ हुआ। अंग्रेज सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति को छिन्नभिन्न करना चाहते

थे। इसलिए उन्होंने देश में गोहत्या प्रारम्भ की। उन दिनों हम पराधीन थे। यह देश गुलामी की जंजीरों से बंधा था। देशवासियों के सामने एक ही लक्ष्य था कि आजादी कैसे प्राप्त की जाय। वे यह समझते थे कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद गो-हत्या जैसा काला कलङ्क तो स्वतः ही दूर हो जायेगा। पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद तत्कालीन सरकार ने गोहत्या-बंदी का कोई सुदृढ़ कानून नहीं बनाया। तब देश की जनता ने सत्याग्रह किया, आन्दोलन किये। संतों-महात्माओं ने उपवास किया जिसके फलस्वरूप प्रदेशीय स्तर पर कुछ राज्यों में गो-हत्या बंदी के कानून बनाये गये। पर ये कानून प्रायः अधूरे हैं। इनसे पूर्णतया गो-हत्या बन्द नहीं हो सकी है। आज भी कलकत्ता, बम्बई तथा केरल, मेघालय, अरुणाचल आदि प्रदेशों के कई स्थानों पर धड़ल्ले से कसाईखानों में गौएँ काटी जाती हैं। जिन प्रदेशों में गोहत्या बंद है, वहाँ से भी गौएँ चालान कर इन स्थानों के कसाईखानों में भेजी जाती हैं। यह सब एक महान् कलंक है, इस देश के लिए और यहाँ की जनता के लिए।

आज देश में हत्याओं का दौर चल रहा है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की जीवनलीला को बिना कारण क्षणभर में समाप्त कर देता है; सब लोग स्तब्ध हैं, अशान्त हैं। कोई जानता नहीं कि किस क्षण किस पर यह आघात हो जायेगा। एक रेग की चिकित्सा होती है तो दूसरा रोग उत्पन्न होने लगता है। हमारी दृष्टि में भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण की इस पवित्र धरा पर, जहाँ बुद्ध और गाँधी जैसे संतो ने सत्य और अहिंसा का दीप जलाया, जब तक गोमाता के रक्त की एक बूँद भी गिरती रहेगी, तब तक हम इस महान् पाप से मुक्त नहीं हो सकते तथा इन समस्याओं का स्थायी समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकता।

आज सर्वाधिक आवश्यकता है– पूर्णतया गोहत्या बन्द करने के लिये एक सुदृढ़ केन्द्रीयकानून बनाने की।

इस देश को तथा यहाँ की संस्कृति को जीवित रखने के लिए आज नहीं तो कल, इस देश से गोहत्या का काला कलङ्क मिटाना ही होगा। इस कार्य में हम सब लोगों को निमित्त बनकर पुण्य का भागी बनना चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण ने अकेले ही गोवर्धन पर्वत उठाया, पर ग्वालबाल सबने अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार सहयोग दिया। संत-महात्माओं की इस पुण्यभूमि में गोहत्या जैसा जघन्य पाप सहन नहीं हो सकता, अतः अपनी राष्ट्रिय संस्कृति की रक्षा के लिए गोरक्षा परम आवश्यक कर्तव्य है।

यह प्रसन्नता की बात है कि **श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय में आद्याचार्य श्रीसुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य का 5100 वाँ जयन्तीमहोत्सव मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्य श्रीश्रीजी महाराज के प्रति मैं अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूँ। धार्मिक जगत् में तथा गोरक्षा के कार्यों में महाराजश्री का विशेष योगदान है। परमात्मप्रभु से प्रार्थना है कि महाराजश्री को शतायु करें, जिससे आध्यात्मिक जगत् को आपका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे।**

सम्पादक 'कल्याण'

"आचार्यश्रीचरणों का प्रत्येक क्षण विश्वमंगल के लिए है"

— रेवतीरमण शर्मा

मेरे जन्म-जन्मान्तरों के, कल्प-कल्पान्तरों के अखण्ड पुण्यों के फलस्वरूप मुझे आचार्यश्री चरणों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मेरा जन्मभूमि से भी ज्यादा समय अ.भा. श्रीनिमबार्काचार्यपीठ सलेमाबाद में श्री 'श्रीजी' महाराज के पावन चरणारविन्दों में व्यतीत हुआ। वास्तव में जो स्नेह आचार्यश्री का मुझे प्राप्त हुआ मैं परम सौभाग्यशाली हूँ।

अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सकल विश्व में एक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। आचार्यपीठ की पवित्रता वहाँ विराजित रससिद्ध कोविद जयदेव के समाराधित श्रीराधामाधवप्रभु एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु तथा तीर्थगुरु पुष्करराज के पावन क्रोड़ में अवस्थित होने से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है और जो स्थल भक्तिमती मीराबाई के गुरु श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज की तपःस्थली रही हो, वहाँ पर हम सभी भक्तवृन्दों की मनोभिलषित कामनाएँ पूर्ण होती हैं। आचार्य पीठ की महिमा अद्‌भुत है।

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए आचार्यश्री के हृदय में गहरी वेदना है कि आज के समय में जिन तीर्थों से हमारी संस्कृति सुरक्षित है, वे तीर्थ आज विदेशी पर्यटकों के पर्यटन स्थल बनते जा रहे हैं। शैलानियों के परिभ्रमण स्थल बनते जा रहे हैं। देवालयों के देव विपुल धनराशि लेकर परराष्ट्रों में हस्तान्तरित कर दिये जाते हैं, जिन पर राष्ट्र के महानायकों की दृष्टि नहीं है।

हमारी वैदिक संस्कृति के आधार-स्तम्भ वेद पुराणादि शास्त्र, जिनको ऋषियों, मुनियों, आचार्यो ने हजारों वर्षों तक तपःसाधना निरत रहकर प्राप्त किया और सुरक्षित रखा– वही हमारी संस्कृति पर, राष्ट्रों की चकाचौंध रूपी आंधी में विलीन होती हुई दृष्टिगत होती है। इस प्रकार मैने अब तक आचार्यश्री के दिव्य उद्‌बोधनों में 20 वर्षों में उक्त विषयों पर ही चिन्तन करते हुए, विचार मंथन करते देखा है। आचार्यश्री का प्रत्येक क्षण विश्व मंगल की कल्याणकारी भावनाओं से ही ओतप्रोत है। उसी का ही परिणाम है कि आचार्यश्री ने न जाने कितने ही देवालय नवीन और उनमें नवीन देव विग्रहों का प्रतिष्ठान, प्राचीन देवालयों का जीर्णोद्धार विश्व मंगल के लिए विराट् यज्ञों का समायोजन, शिक्षण संस्थानों का संचालन, जिसमें विराट् सनातन धर्म सम्मेलनों का समायोजन के साथ ही विभिन्न धार्मिक आयोजनों में विराट् सनातन धर्म सम्मेलनों में स्वल्पायु से ही धर्मसम्राट् करपात्री जी महाराज और धर्माचार्यों के मध्य अध्यक्ष पद को समलंकृत करते हुए शोभित हुए हैं।

आचार्यश्री का लेखन (रचना कार्य) चलता ही रहता है। फलस्वरूप आज हमें आचार्यश्री के 37 ग्रन्थ प्राप्त हैं। जिनमें अभी कुछ ही समय पूर्व रचित आचार्य श्री का '**श्रीराधामाधव रसविलास**' महाकाव्य हमें प्राप्त है, जिसकी रचना आचार्यश्री ने हॉस्पिटल में वेदना से पीड़ित अवस्था में की है। इस अवस्था में भी आचार्यश्री का रचना कार्य बन्द नहीं हुआ। आचार्यश्री ने एक नहीं, अपितु तीन-तीन भाषाओं में काव्य रचनाएँ की हैं।

आचार्यश्री ने परम्परागत आश्रमों के स्वरूप को धारण किये हुए शिक्षण संस्थानों का संचालन किया, जिनमें श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, श्रीनिम्बार्क दर्शन महाविद्यालय एवं श्री निम्बार्क पुस्तकालय, श्रीहंस वाचनालय, श्री हरिव्यास औषधालय, श्रीनिम्बार्क द्रव्यालय आदि उल्लेखनीय हैं, जिनमें ब्राह्मण वटुकों के सम्पूर्ण भोजन आवासादि की व्यवस्था सहित उनको संस्कारित किये जाते हैं। इस प्रकार से आचार्यश्री द्वारा एक साथ अनेकों कार्यक्रमों का संचालन होना आचार्यश्री की प्रबल संकल्पशक्ति का परिणाम है।

आचार्यश्री का सहज स्वभाव हमारे जीवन को कृतार्थ करने वाला है। आचार्यश्री का प्रत्येक क्षण विश्वमंगल के लिए है। श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ का सूर्योदय वेदध्वनि के साथ होता है। आचार्यश्री के सम्बन्ध में कुछ लिखना मेरी हिम्मत नहीं। आचार्यश्री पूर्ण स्वस्थ रहते हुए हम सभी को सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करते रहे श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणों में यही हार्दिक अभिकामना है।

वेदाध्यापक
सलेमाबाद, निम्बार्कतीर्थ

श्री श्रीजी वचनामृतम्

विद्या, धन, जन-प्रतिष्ठा आदि कितना भी वैभव क्यों न मिल जाय, फिर भी प्राणी भटकता ही रहता है।
कुछ अपूर्णता सी ही अनुभव करता रहता है।
विविध कामनायें उसे चारों ओर भ्रमित करती हैं।

*

निष्कामी भक्त भी निन्दा-स्तुति से विषण्ण या हर्षित नहीं होता।

*

कामना रहित महापुरुषों की सन्निधि में अपूर्व-अनुपम शान्ति का अनुभव होता है।

*

जो व्यक्ति सश्रद्ध पवित्रान्तकरण पूर्वक इस भगवदीय पादोदक का शास्त्रविधि से प्रत्यह पान करता है वह निस्सन्देह श्रीप्रभुकृपाभाजन हो जाता है।

नेपालदेशीय वैष्णवजनों के प्रति पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की अनुपम आत्मीयता

— वासुदेवशरण उपाध्याय

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का संवत् 2000 में पीठासीन होने के पश्चात् लगभग 4 वर्ष पर्यन्त श्रीधाम वृन्दावन में अध्ययन क्रम चला। इस अवसर पर नेपाल के वरिष्ठ विद्वान् वीतराग, तपोनिष्ठ वैष्णव श्रीराधिकादासजी महाराज, जो "श्रीमान्जी", "कुटिया महाराज" आदि उपनामों से प्रसिद्ध थे, उन से आपश्री का प्रायः मिलन हुआ करता था। श्रीमान्जी की धामनिष्ठा, आचार्यनिष्ठा, साधननिष्ठा अनिर्वचनीय थी। आपका शुभ्रवपुष्मान् स्वरूप, शान्तस्वभाव, अगाधवैदुष्य सबके लिए दर्शनीय व अनुकरणीय था। पूज्य आचार्यश्री का श्रीमान् जी के प्रति स्वाभाविक अनुराग एवं आत्मीय भाव अनुपम है। उनकी कवित्व शक्ति विलक्षण थी। उनके उदात्त भावों को आपश्री स्वयं अनेकधा प्रसङ्गानुसार व्यक्त करते हैं। उनके द्वारा आचार्यश्री को लिखे पत्र प्रायः संस्कृत में कवितावद्ध होते, उनमें जो दिव्य भक्तिभाव है, आज भी नवनव भाव अनुपम हैं, वे सभी पत्र पूज्य आचार्यश्री के पास सुरक्षित हैं। जिन नेपाल के विशिष्ट महानुभवों ने पण्डित श्री दुलारेप्रसाद जी शास्त्री, अमरनाथ, श्री हरिप्रियाशरणदेवाचार्यजी महाराज, श्रीविहारीजी की बगीची (वृन्दावन) से निम्बार्कीय वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर स्वेदश नेपाल में वैष्णव धर्म का प्रचुर प्रचार-प्रसार किया, उनमें सर्वाधिक श्रेय अनन्तश्री सार्वभौमाचार्यश्री भगवत्शरणदेव जी महाराज को जाता है। पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के अध्ययन काल से बहुत पहले आप गुरु आज्ञा से स्वदेश नेपाल चले गये थे। आपने कुछ समय आसाम राज्य के गोहाटी नगर में रहकर वैष्णवता का प्रचार किया। तदनन्तर नेपाल में विशेषकर पश्चिम नेपाल के गांव-गांव में भ्रमण कर गीता, भागवत के उपदेश को माध्यम बना कर वैष्णवता का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। आपका सुमधुर स्वभाव, सौम्य व्यक्तित्व विरोधियों को हतप्रभ कर देता था। आपके सामने विपुलरूप में वैष्णवता के विरुद्ध षड्यन्त्र किये जाने लगे। किन्तु आपके अदम्य साहस तथा शास्त्रीय प्रमाणों से सब परास्त हो जाते। शनैः शनैः आपके शिष्य-प्रशिष्यों ने वृन्दावन, काशी आदि में अध्ययन कर प्रौढ़ पाण्डित्य अर्जित किया। गुरुदेव के वैष्णवधर्म प्रचार में सहभागी बनते गये। महान् वैष्णव समाज में नेपाल में उभरकर आया। कतिपय सन्त महात्मा साधना हेतु वृन्दावन पहुँच कर तपः साधना में लगे, पूज्यआचार्यश्री के साथ साधुत्व के नाते उनका घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा है।

संवत् 2019 श्रावण में जब पूज्य आचार्यश्री वृन्दावनस्थ श्रीजी की बड़ी कुञ्ज में विराज रहे थे, उस समय नेपाल से हमारे प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेवश्री 108 श्री भगवत् शरणदेवजी महाराज अपनी

शिष्यमण्डली के साथ श्रीधाम वृन्दावन पधारे, आचार्यश्री से जब मिलना हुआ, कितनी आत्मीयता, घनिष्ठता, सहृदयता थी। सन्त-मिलन का अनिर्वचनीय स्वरूप देखने को मिला था। पूज्य गुरुदेव का आचार्यश्री के सान्निध्य में अभिनन्दन किया और सार्वभौमाचार्य पदवी से आपको अलङ्कृत किया गया।

तदनन्तर प्रतिवर्ष शताधिक छात्रवृन्द अध्ययनार्थ वृन्दावन आते तथा विभिन्न विद्यालयों में पढ़ते थे। इसी क्रम में आचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय में आकर पढ़ने लगे। पूज्य आचार्यश्री की सेवा में वर्षों तक बहुसंख्यक छात्रों ने अन्तरङ्ग-वहिरङ्ग रूप में यथायोग्य परिचर्चा की। ऐसे व्यक्तियों की लम्बी सूची है, किसी व्यक्ति विशेष का नाम अंकित नहीं कर संकेत मात्र से सबका समावेश कर रहे हैं। इस प्रकार पूज्य आचार्यश्री एवं आचार्यपीठ के प्रति नेपाल के वैष्णव जनों की निष्ठा बढ़ती गयी और आचार्यश्री की उन के प्रति अनुपम आत्मीयता।

आचार्यपीठ द्वारा समायोजित विराट् धर्म सम्मेलनों, कुम्भपर्वों पुरुषोत्तम मासीय महोत्सवों, व्रजयात्रादि विविधयात्राओं, अन्यान्य विशिष्ट कार्यक्रमों में नेपाल के वरिष्ठ विद्वान्, राजनेता, मन्त्रिवर्ग, विशिष्ट नागरिक, धर्मप्राण नर-नारी जनों का आचार्यपीठ तथा अन्यान्य स्थलों पर उपस्थित होकर पूज्य आचार्यश्री के दर्शन कर उनसे उपदेश श्रवण, दीक्षा ग्रहण आदि का अनवरत क्रम बढ़ रहा है। इस प्रकार प्रतिवर्ष अधिसंख्यक महानुभावों का सम्पर्क सहज में ही बना हुआ है। आचार्यपीठ एवं पीठ द्वारा संस्थापित-संचालित संस्थाओं में जैसे वृन्दावन, निम्बग्राम, जयपुर, अजमेर, किशनगढ़, पुष्कर, मूंगी पैठण आदि में नेपाल के सन्तमहात्मा, विद्वान्, छात्रवृन्द सेवाकार्य अध्यापन, अध्ययन करते आ रहे हैं।

प्रतिवर्ष दर्शनार्थी, दीक्षार्थी, विद्यार्थी, यात्री आचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ, पुष्कर, निम्बग्राम, वृन्दावन आदि पहुंचते हैं। नेपाल के सभी अञ्चलों के श्रद्धालुजनों की घनिष्ठता आचार्यपीठ एवं आचार्यश्री के प्रति बनी हुई है। इधर पिछले कई वर्षों से पूज्य आचार्यश्री की नेपाल यात्रा का क्रम बना भी था, किन्तु परिस्थितिवश यात्रा नहीं हो सकी थी। आचार्यश्री की प्रबल इच्छा थी एक बार भगवान् श्री पशुपति नाथ जी के दर्शन हो जाँय। निमित्त आने पर कार्यक्रम सहज में बना। नेपाल के वरिष्ठ विद्वान् आचार्यश्री हरिशरण जी एवं आचार्यश्री खेमराज केशवशरणजी की योजना व सत्प्रयास से विगत 9 अप्रेल 2003 से 16 अप्रेल 2003 तक एक सप्ताह व्यापी नेपाल यात्रा सम्पन्न हुई। पूज्य आचार्यश्री के साथ युवराजश्री एवं 25 अन्य परिकर जनों का समूह भी गया था।

इस अवधि में 2 दिन काठमाण्डू, 2 दिन नारायण घाट, गैंडाकोट देवघाट, 1 दिन जनकपुर 2 दिन विराट् नगर में विराजना हुआ। दि. 10.4.2003 को प्रातः 10 बजे भगवान् श्री पशुपतिनाथ जी के महाभिषेक के साथ जो लोकोत्तर दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ, वह क्षण अनिर्वचनीय था। मन्दिर परिसर, वाग्मती नदी का तटवर्ती क्षेत्र, मृगस्थली आदि का अवलोकन कर आपश्री को महती प्रसन्नता हुई। तदनन्तर श्रीराधाकृष्ण मन्दिर गहना पोखरी टंजाल में आपश्री की पधरावनी हुई। देवदर्शन के पश्चात् भक्तजनों ने श्रीचरणों का समर्थन किया। आपश्री के शुभाशीर्वादात्मक उपदेश से सभी जन कृतकृत्य हुए।

इसी दिन अपराह्न 3 बजे सनातन धर्म सेवा समिति काठमाण्डू की ओर से आपश्री का अभिनन्दन किया गया। दूसरे दिन 11 अप्रेल को श्रीरामनवमी का पावन पर्व था, श्री सर्वेश्वर प्रभु का महाभिषेकपूर्वक जन्मोत्सव सम्पन्न हुआ। अपराह्न 3 बजे विश्वहिन्दूपरिषद महासंघ (काठमांडू) के सम्मेलन में पादार्पण हुआ। महासंघ की ओर से आपश्री का अभिनन्दन किया गया। 12 अप्रेल को नारायणघाट के लिए स्थल मार्ग से प्रस्थान हुआ। काठमाण्डू से नारायण घाट तक वन, पर्वत, जलप्रपात, नदी प्रवाह, तटीय क्षेत्र, आदि प्राकृतिक दृश्यों, प्रभात वेला की मन्द सुगन्ध शीतल पवन गति, पक्षियों के कलरव, भ्रमरों की गुञ्जार, लता पुष्पों की सुषमा, हिमाच्छादित शैलराज की गगन चुम्बी शिखरों की शोभा ने आचार्यश्री का मन मोह लिया। आचार्यश्री ने बार बार संकेत किया कि वायुयान से यात्रा करते तो इस अलौकिक आनन्द से वञ्चित हो जाते। वस्तुतः नेपाल की भूमि देवों की क्रीडाभूमि स्वर्ग से कम नहीं है। यहाँ की जनता की श्रद्धाभक्ति अनुकरणीय है।

देवघाट, नारायणघाट, गैंडाकोट की स्वागत-विधि देखकर आपश्री ने कहा– जीवन में ऐसा दृश्य पहली बार देखने को मिला। संस्थाओं का उद्घाटन, संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन, दीक्षार्थियों को दीक्षा, जिज्ञासुओं को सदुपदेश, दर्शनार्थियों को दर्शन देकर सब का मनोरथ पूर्ण किया। 13 अप्रेल को प्रस्थान कर रात्रि में जनकपुर विश्राम किया। 14 को श्रीराम जानकी के दर्शन, महन्त जी का आतिथ्य ग्रहण कर विराट् नगर के लिए प्रस्थान हुआ। रात्रि को स्वागत समारोह के साथ विराट् नगर में प्रवेश व विश्राम।

पूर्वाञ्चल के अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया। मन्दिरों में देवदर्शन, नवनिर्मित संस्थाओं का उद्घाटन, दिव्य सदुपदेश द्वारा सब को धार्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई। दिनांक 16 अप्रेल को वायुयान द्वारा काठमांडू-दिल्ली होते हुए 18 को आचार्यपीठ पहुंचना हुआ। इस प्रकार नेपाल के वैष्णव जनों की भावना के अनुरूप यह नेपाल यात्रा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर 50-60 वर्ष पूर्व पूज्य आचार्यश्री की सेवा में निरत अनेक वैष्णवजनों से मिल कर आचार्यश्री का अगाध आत्मीय भाव उमड़ आया। इस तरह नेपाल के वैष्णवजनों के प्रति आचार्यश्री की आत्मीयता अनिर्वचनीय है। इस का बार बार अनुस्मरण कर हृदय द्रवीभूत होता है।

प्राचार्य, सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

श्री श्रीजी वचनामृतम्

* प्रत्येक वैष्णव जन किंवा मानव मात्र को विष्णुपादोदक (चरणामृत) का नित्य पान करना चाहिये, जिससे मानव जीवन सफल बने।
* वेद-पुराणों की भर्त्सना, देव-मन्दिरों की अनावश्यकता कह-कह कर जो स्वयं की पूजा कराकर घोर अनर्थ करते हैं। वे स्वयं तो पातकी हैं ही, अन्य जनसामान्य को इस मार्ग के अनुगामी बनाने के प्रयत्न में हैं।

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥
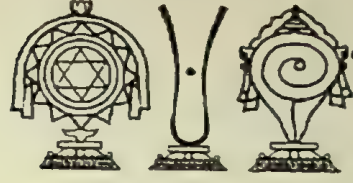
तृतीय-खण्ड

कृतित्व-मूल्याङ्कन
एवं
अनुभूतियां

तृतीय-खण्ड

कृतित्व मूल्याङ्कन एवं अनुभूतियाँ

✲ सूचनिका ✲

✲

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी'
श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य महाराज द्वारा विरचित

संस्कृत ग्रन्थ (नामावली)

1.	श्री निम्बार्क भगवान् कृत "प्रातः स्तवराज" पर **'युग्मतत्त्व प्रकाशिका'** नामक संस्कृत व्याख्या	
2.	श्री युगल गीतिशतकम्–	पद्यात्मक
3.	श्री स्तवरत्नाञ्जलिः	"
4.	श्री राधामाधव-शतकम्	"
5.	श्री निकुञ्ज-सौरभम्	"
6.	भारत-भारती वैभवम्	"
7.	श्री युगलस्तव-विंशतिः	"
8.	श्री जानकी-वल्लभस्तवः	"
9.	श्री हनुमन्महाष्टकम्	"
10.	श्री निम्बार्क-गोपीजन-वल्लभाष्टकम्	"
11.	श्री निम्बार्क-स्तवार्चनम्	"
12.	श्री निम्बार्क भगवान् कृत **"वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी"** पर **"नवनीत सुधा"** नामक संस्कृत व्याख्या	
13.	श्री सर्वेश्वर-शतकम्	पद्यात्मक
14.	श्री राधाशतकम्	"
15.	श्री निम्बार्क-चरितम्	जीवनी गद्यात्मक
16.	श्री वृन्दावन-सौरभम्	पद्य
17.	श्री माधव-प्रपन्नाष्टकम् (संस्कृत व हिन्दी)	पद्य
18.	श्री राधा-सर्वेश्वरालोकः (संस्कृत व हिन्दी)	"
19.	श्री परशुराम-स्तवावली	"
20.	श्री राधा-राधना	"
21.	मन्त्रराज-भावार्थ-दीपिका	"
22.	आचार्य-स्तवनम्	"
23.	श्री सीताराम-स्तवादर्शः	"
24.	श्री माधव-शरणागति स्तोत्रम्	"
25.	गोशतकम्	शतक काव्य

यह सूची आचार्यश्री द्वारा प्रणीत व प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थों की वि.सं. 2060 गोपाष्टमी तक की है। इन में दो ग्रन्थ व्याख्या के हैं और एक ग्रन्थ जीवनी का है। शेष 22 ग्रन्थ पद्यात्मक हैं। सारे पद्यात्मक ग्रन्थों की श्लोक संख्या 1804 अक्षरे एक हजार आठ सौ चार है। यह तथ्य "गोशतकम् ग्रन्थ" में प्रकाशित ग्रंथमाला सूची पर आधारित है।

पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज प्रणीत ग्रन्थों पर समीक्षा व शोध ग्रन्थ परिचय

पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा प्रणीत संस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों पर सम्पूर्ण आकलन प्रस्तुत करने वाले अध्ययन, समीक्षा और विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत शोध प्रबन्ध के रूप में उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को उजागर करते हैं। यहाँ इन समीक्षात्मक अध्ययनों व शोध ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. **''जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य और उनका श्री राधासर्वेश्वर शतक''** (श्री सर्वेश्वर सुधा-बिन्दु)

यह ग्रन्थ आगरा-विश्वविद्यालय की एम.ए. परीक्षा के लघुशोध प्रबन्ध के रूप में लिखा गया है। इस शोध प्रबन्ध का निर्देशन डॉ. प्रेम नारायण श्रीवास्तव, पी-एच.डी., डी.लिट्. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी शोध विभाग ने किया।

लेखक – डॉ. केशवदेव शर्मा, हिन्दी विभाग, एस.डी. कालेज, पलवल, जि. फरीदाबाद (उ.प्र.)

सम्पर्क – न्यू कॉलोनी, एक्सटेनशन, रसूलपुरा रोड पलवल, जि. फरीदाबाद

प्रकाशन – नीरज बुक सेन्टर, सी-32, आर्यनगर ग्रुप हाउसिंग सोसाइटी, दिल्ली-92

प्रकाशन वर्ष – 1997 मूल्य – 90/-

इस ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध निम्बार्क सम्प्रदाय के भक्ति सिद्धान्तों के निरूपण के साथ-साथ वर्तमान जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर भी राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी के व्यक्तित्व व कृतित्व का अंकन आप द्वारा प्रणीत ग्रन्थ ''श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु (श्री राधासर्वेश्वर शतक) की समीक्षा का मुख्य आधार लेकर किया है।

शोध ग्रन्थ पांच प्रकरणों में विभाजित है– प्रथम प्रकरण में ग्रन्थकार ने श्री ''श्रीजी' महाराज के जन्म, जीवन, व्यक्तित्व व मौलिक साहित्य पर प्रकाश डाला है। प्रथम प्रकरण के प्रथम खण्ड में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य की परम्परा, वर्तमान पीठ परिचय तथा पीठ सञ्चालित विभिन्न संस्थाओं का संक्षिप्त विवरण भी है। दूसरे प्रकरण में वर्तमान काल के शतकों में 'श्री राधासर्वेश्वर शतक' का स्थान निर्धारण करते हुए इसके प्रतिपाद्य विषय को प्रकट करते हुए वर्तमान कालीन राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का आकलन किया गया है। तृतीय प्रकरण में कृष्ण-भक्ति काल, कृष्ण-भक्ति का स्वरूप, नवधा भक्ति, माधुर्य भक्ति, उपास्य-तत्त्व राधा-कृष्ण व वृन्दावन का निरूपण है। चतुर्थ प्रकरण में ''श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु'' के काल सौन्दर्य, भाव पक्ष व कलापक्ष पर प्रकाश डाला गया है। पांचवें प्रकरण में श्री सर्वेश्वरसुधाबिन्दु का साहित्य में योगदान आदि का विवेचन है।

2. **जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य प्रणीत स्तव साहित्य का अध्ययन**

पं. रामस्वरूप गौड़, मोखमपुरा, जयपुर (राजस्थान)

आशीर्वाद – पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज। **पुरोवाक्** – डॉ. मण्डन मिश्र व देवर्षि कलानाथ शास्त्री

प्रकाशक– अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद अजमेर (राज.)

पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा प्रणीत 21 ग्रन्थों का सश्रद्ध हृदय से सर्वांगीण अनुशीलन कर उसका समीक्षात्मक आकलन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। आचार्यश्री द्वारा प्रणीत ''स्तव-साहित्य'' में भक्ति व चिन्तन का अद्भुत समन्वय है। इनमें साधना, भावना व विद्वत्ता का संगम है। इस स्तव साहित्य की सन्तुलित व गम्भीर समीक्षा इस ग्रन्थ में प्रस्तुत की गई है, जो जिज्ञासु आमजन व भक्त भावुक साधकों के लिए उपयोगी है।

इस ग्रन्थ में आठ प्रकरण हैं। स्तोत्र साहित्य, पूज्यश्री ''श्रीजी'' महाराज प्रणीत संस्कृत ग्रंथों का परिचय, आचार्य स्तव, राधा-माधव रूप, गुण तत्त्व, वृन्दावन वर्णन, निकुञ्ज लीलानुगत भक्ति रस, हार्दिक भावोद्गार व उत्तम उपास्य स्तव व साहित्य आदि।

3. **निम्बार्क दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अनन्तश्रीविभूषित निम्बार्क पीठस्थ जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

शोधकर्त्ता – डॉ. परमानन्द शर्मा, तेवडी, जयपुर

प्रस्तावना व निर्देशन – प्रो. डॉ. प्रभाकर जी शास्त्री

प्रकाशक – अखिल भारतवर्षीय निम्बार्क पीठ शिक्षा समिति, सलेमाबाद।

इस ग्रंथ में पांच प्रकरणों में श्रीनिम्बार्क दर्शन का परिचय एवं प्रमुख सिद्धान्त, निम्बार्क सम्प्रदाय का दार्शनिक सिद्धान्त, उपासना आदि तथा निम्बार्क सम्प्रदाय का सारगर्भित इतिहास, अनन्तश्रीविभूषित निम्बार्क पीठस्थ वर्तमान जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री ''श्री जी'' महाराज का व्यक्तित्व व कृतित्व, अनन्त श्री विभूषित-निम्बार्क पीठस्थ वर्तमान जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा प्रणीत कृतियों का विवरणात्मक अनुशीलन, शोध ग्रन्थ में निम्बार्क सम्प्रदाय के दर्शन, सिद्धान्त, उपासना, इतिहास आदि के साथ पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है, जो सर्वप्रकारेण उपादेय है।

4. **जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्यः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (शोध प्रबन्ध) (अप्रकाशित)**

शोधकर्त्री – श्रीमती उषा चौधरी, एम.ए. हिन्दी विभाग

शोध-निर्देशक – डा. पी.एन. श्रीवास्तव

यह शोध प्रबन्ध आठ प्रकरणों में विभक्त हैं।

श्री ''श्रीजी'' महाराज की जीवनी व व्यक्तित्व, राष्ट्रभक्ति, सर्वधर्म-समभाव, निम्बार्क सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकास, पूज्य श्री ''श्रीजी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी की उपासना पद्धति, विविध योगदान, आचार्यश्री की साहित्यिक उपलब्धियाँ व आचार्यश्री की रचनाओं का भावपक्षीय विवेचन आदि हैं।

5. **राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के हिन्दी विभाग से श्री ललितकुमार शर्मा महाराजश्री की हिन्दी भाषात्मक रचनाओं पर शोध कार्य कर रहे हैं।**

सम्पादक

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्कपीठाचार्य श्री ''श्रीजी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी प्रणीत संस्कृत ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय

— संपादक

अनन्तश्रीविभूषित आचार्य श्री ''श्रीजी'' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य के वैशाख शुक्ल तृतीया वि.सं. 2060 तक प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थों की संख्या 25 है। **''श्री निम्बार्कचरितम्''** में जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्य का संस्कृत-भाषा में गद्यात्मक प्रामाणिक चरित्र वर्णित है। जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्य विरचित ''प्रातः स्तवराज'' पर **''युग्मतत्त्व-प्रकाशिका''** व ''वेदान्तकामधेनु –दशश्लोकी'' पर **''नवनीत-सुधा''** नामक संस्कृत में व्याख्या ग्रन्थ है। साथ ही हिन्दी भाषा में सारभूत अर्थ भी संगृहीत हैं। **''मंत्रराज भावार्थ-दीपिका''** में निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रचलित ''मुकुन्द-मंत्र'' व ''गोपाल-मंत्र'' का भावार्थ आपश्री द्वारा विरचित **''मुकुन्दशरणाष्टक स्तोत्रम्''** व **''गोपालमन्त्र-राजाष्टक स्तोत्रम्''** में व्यक्त किया गया है, जिसका हिन्दी रूपान्तर भी प्रकाशित है। साथ ही इस ग्रन्थ में मुकुन्दमंत्र व गोपालमंत्र की जप विधि भी दी गई है।

''श्री निम्बार्कस्तवार्चनम्'' में जगद्गुरु आद्यनिम्बार्काचार्य पर संस्कृत में 6 स्तव रचनायें **''श्री निम्बार्क-चतुश्लोकी, श्री निम्बार्काराधनाष्टकम्'', श्रीनिम्बार्क-गुणाष्टकम्, श्रीनिम्बार्क-स्वरूपाष्टकम्, श्रीनिम्बार्क भजनाष्टकम्, श्री निम्बार्क विंशतिस्तोत्र''** से अर्चना की गई है। साथ ही हिन्दी में निम्बार्क स्तुति के 17 पद, श्री निम्बार्क-भगवन्नाम संकीर्तन, ''श्री निम्बार्क दिव्यस्वरूपदर्शन'' व पुस्तपृष्ठ पर श्री निम्बार्क भगवान् की आरती दी गई है।

''श्री परशुराम-स्तवावली'' में आचार्यश्री ने स्वकीय भावोद्गार में श्री हंस, सनकादि, देवर्षि नारद व निम्बार्काचार्य द्वारा सर्वेश्वर प्रभु की सेवा व निम्बार्क परम्परा की जानकारी देते हुए बताया है कि श्री परशुराम देव ने श्री हंसावतार के प्रमुख स्थल-जगत् पिता श्रीब्रह्मा की पावन यज्ञ-स्थली, पुष्कर के अरण्य मरु भूमि में साभ्रमती तट समीपस्थ-जिसका वर्णन ''पद्मपुराण'' में है। (निम्बार्कतीर्थ) पर आकर तपः साधना की थी। श्री निम्बार्क की आचार्य-परम्परा के पैंतीसवें आचार्य श्रीहरिव्यासदेव के उत्तराधिकारी आचार्य श्रीपरशुराम देव ने इसी निम्बार्क तीर्थ पर अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ की स्थापना की। इनके पूर्व के आचार्य गिरिगोवर्धन के निकट निम्बग्राम या व्रज-मण्डल में ही विराजते थे।

आचार्य श्रीपरशुराम देव जी ने ही भक्तिमती मीरांबाई को वैष्णव-दीक्षा प्रदान की थी तथा तत्कालीन दिल्ली के सम्राट् बादशाह शेरशाह सूरी को आपके आशीर्वाद से ही पुत्र प्राप्त हुआ था, जिसका नाम

सलीम था। शेरशाह सूरी ने ही अपने पुत्र के नाम पर निम्बार्क-तीर्थ-आचार्यपीठ के समीप **''सलेमाबाद''** नगर बसाया था जो यथावत् अद्यावधि विद्यमान है।

इस तरह निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) आचार्य परशुराम देवजी की तपः स्थली पर संस्थापित है। इस प्रकार सर्वप्रथम आचार्य श्री परशुरामदेव जी द्वारा ही यह पीठ स्थापित है, जो अखिल भारतीय स्तर का पीठ है।

निम्बार्कपीठ, निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद के संस्थापक श्री परशुरामदेव जी की स्तुति **''श्री परशुरामस्तवावली''** में श्रीमत्परशुरामदेवाचार्याष्टकम्, श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यस्तोत्रम्, श्री परशुरामदेवाचार्य ''चतुश्लोकी, चार दोहों व आरती'' का संग्रह है। **''श्री स्तवरत्नाञ्जली''** आदि में आचार्य श्रीदेव **रचित स्तव, स्तोत्र व स्तुतियाँ उनका पठन, मनन, अनुशीलन व सस्वर पाठ स्तुतिकर्ता को भावापन्न करने वाला है। उनके शब्द, छन्द, मंत्र, ताल, गति और अक्षर-समायोजन ऐसा है कि यह स्तव अक्षरब्रह्म के द्वारा परमब्रह्म को प्राप्त कराने वाले हैं।** चाहे यह पूर्वाचार्य-चरणों की स्तुतियाँ है या चिन्मय विग्रह राधा-माधव, राम-सीता की, शिव, गणेश, हनुमान् तथा यमुना, गोवर्धन, वृन्दावन आदि लीला-भूमि की सभी में भाव के साथ प्रभु का निर्मल और दिव्य आलोक चित्रित है। **इन स्तुतियों के तेज से संस्तुत-देव प्रकाशित होने लगते हैं।** ''स्तवरत्नाञ्जली'' का संपादन अधिकारी श्रीब्रजबल्लभशरण, वेदान्ताचार्य व पं. रामगोपालशास्त्री, पं. गोविन्ददास सन्त, पं. मुरलीधर शास्त्री कथाव्यास आदि विद्वान् महानुभावों ने किया है।

''श्री स्तवरत्नाञ्जली'' के दो खण्ड हैं। पूर्वार्द्ध खण्ड में 23 स्तव हैं। श्री व्रजभावनाष्टकम्, श्री यमुनाष्टकम्, श्री वृन्दावनाष्टकम्, श्री राधाष्टकम्, श्री माधवाष्टकम्, श्री राधा-माधवाष्टकम्, श्री वृषभानुसुताष्टकम्, श्री व्रजराजसुताष्टकम्, श्री सर्वेश्वर प्रातःस्तव, श्री युगलगीतिका, श्री हंससनकादिनारदाष्टकम्, श्री निम्बार्काष्टकम्, श्री निम्बार्क-महिमाष्टकम्, श्री निम्बार्क-पंचश्लोकी, श्री निम्बार्कचतुश्लोकी, श्री निम्बार्कस्तवराजः, श्रीनिवासाचार्याष्टकम्, श्री श्रीभट्ट देवाचार्याष्टकम्, श्री हरिव्यास-षोडशी, श्री परशुरामदेवाचार्य चतुश्लोकी, श्रीमद्गुरुस्तव।

उत्तरार्द्ध खण्ड में 16 स्तव हैं– श्री गणेशाष्टक, श्रीगरुडाष्टक, श्रीलक्ष्मी-महिमाष्टकम्, श्रीमन्नारायणाष्टक, श्रीराममहिमाष्टक, श्रीमिथिलेशसुताष्टक, श्री हनुमानमहिमाष्टकम्, श्री देवीमहिमाष्टकम्, श्री शिवमहिमाष्टकम्, श्री सरस्वती-महिमाष्टकम्, श्री गंगा-महिमाष्टकम्, श्री गो-महिमाष्टकम्, श्री पुष्करमहिमाष्टकम्, श्री निम्बार्कतीर्थाष्टकम्, श्री सत्पथाष्टक, श्री राधा-माधव स्तव, श्री केशव काश्मीरी पञ्चश्लोकी।

''श्रीयुगल स्तवविंशतिः'' में बीस स्तव है– श्री राधाष्टकम्, श्री राधा-रसाष्टकम्, श्री राधाप्रियाष्टकम्, श्री कृष्णाष्टकम्, श्री सर्वेश्वराष्टकम्, श्री वेणुगीताष्टकम्, श्री निकुञ्जाष्टसखीमहाष्टकम्,

श्री यमुनाष्टकम्, श्री गोवर्धनाष्टकम्, श्री मानसी गंगाष्टकम्, श्री राधा-कुण्डाष्टकम्, श्री कृष्णकुण्डाष्टकम्, श्री ललित-कुण्डाष्टकम्, श्री निम्ब-ग्रामाष्टकम्, श्रीमद् भगवद् गीताष्टकम्, श्रीमद् भागवताष्टकम्, श्री सुदर्शनाष्टकम्, श्री पाञ्चजन्याष्टकम्, श्री तुलसीमहिमाष्टकम्, श्री गोपीचन्दनाष्टकम्। "**श्री माधव-प्रपन्नाष्टक**" में नामानुरूप एक अष्टक श्री राधा-माधव के गुणानुवाद का है, जिसमें हिन्दी के 10 पद व 10 दोहे हैं।

"**श्री निम्बार्क-गोपीजन-वल्लभाष्टकम्**" में नामानुरूप गोपीजन-वल्लभ का एक अष्टक स्तव व "श्रीनिम्बार्कचतुःश्लोकी" है।

"**श्री जानकी-वल्लभ-स्तवः**" इस स्तव में श्री जानकीवल्लभ का 28 श्लोकों में पराभक्ति पूर्ण स्तुति गान किया गया है। साथ में "सीताराम चतुःश्लोकी" व हिन्दी में "श्री रामकृष्ण-युगलसंकीर्तन व राघवेन्द्राष्टक दिया गया है।

"श्री हनुमन्महाष्टकम्"**आचार्य श्रीदेव की रामभक्त श्री हनुमान् जी के प्रति हार्दिक भक्ति का भाव है और पराभाव स्वरूप श्री हनुमान् जी का भी आचार्यश्री पर अनुग्रह वर्णित है। यह अष्टक दोनों तरफ से बहने वाली भाव गंगा का सम्मेलन है।** इस ग्रन्थ में दो अष्टक हैं। दूसरा "श्री हनुमान् वन्दनाष्टकम्" है, इसके साथ हिन्दी के 10 पद हैं। श्री हनुमानजी के गुण कीर्तन के साथ ही 18 दोहों में श्री हनुमान् जी का विरुद गाया गया है। विशिष्टता यह है कि इस ग्रन्थ में "शिव-स्वरूपाष्टक" भी दिया गया है।

"श्री वृन्दावन-सौरभम्" **भगवान् श्री राधा-माधव ने परिकरों सहित गोलोकधाम से पधार कर व्रजक्षेत्र में परम दिव्य मनोहारी महाभाव परिपूर्ण लीला की है। अतः पूरा व्रजक्षेत्र ही भगवान् की दिव्य महाभाव लीलाओं में सहचर-सहयोगी रहा है। इस वृन्दावन क्षेत्र में आज भी दिव्य लीलाओं का सञ्चार होता रहता है। वृन्दावन व वृन्दावन के लीलाधीश की लीला-स्मरण, दर्शन व भावपूर्ण श्रवण मनन से वृन्दावन की दिव्यता का अनुभव हो सकता है।** आचार्यश्री ने वृन्दावन के इस सौरभ को संस्कृत के 54 श्लोक, 4 गेयपद व हिन्दी के दस दोहों के **कमल पंक को प्रस्फुटित** कर महका दिया है और इस ग्रन्थ को नाम दिया है "**श्री वृन्दावन-सौरभ**"।

"**श्री निकुञ्ज-सौरभम्**" पूर्ण भक्ति परक भाव को "महाभाव" या "भावानन्द" कहते हैं। **वृन्दावन निकुञ्जबिहारी श्री श्यामा-श्याम की निकुञ्ज लीला महाभाव लीला है। परा और परम, भक्ति-निकुञ्ज में भाव-विहार करते हैं। राधा-माधव के इस नित्य निकुञ्ज में 'महाभाव' सिद्ध सखी जन का ही प्रवेश होता है,** जो परमभाव से परिपूर्ण है। वहीं सब रसों का रस व सब से सर्वोत्तम है। **यही सर्वथा निर्मलभाव, उज्ज्वल भाव कहलाता है। इस मधुर रस उज्ज्वल भाव में निकुञ्ज की रस लीलाओं का समावेश होता है। आचार्यश्री ने माधुर्य रस के महासागर में 54 श्लोक के**

कमल दल उगाकर भक्तिरस शृंगार की मकरन्द सुरभि महकाई है और इस ग्रन्थ का नाम दिया है– ''निकुञ्ज सौरभ''।

''श्री राधा-शतकम्''– श्री राधाजी पराश्री है, महाभाव स्वरूपा हैं। भगवान् श्री कृष्ण की ह्लादिनी शक्ति हैं, कमनीय हैं। आचार्यश्री ने अपने आमुख लेख में लिखा है– अनन्तानन्त शक्तियों में प्रधान दो शक्ति है ''श्रीश्च ते लक्ष्मीश्चपत्न्यौ'' अर्थात् श्री और लक्ष्मी दो शक्तियाँ सर्वोपरि प्रमुख हैं ''श्री प्रेमाधिष्ठात्री'' शक्ति तथा ''लक्ष्मी'' ऐश्वर्याधिष्ठात्री शक्ति है। इन उभयविध शक्तियों में प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति का ही प्राधान्य है। ''श्री'' अर्थात् श्रीराधा ''लक्ष्मी'' अर्थात् पद्मालया लक्ष्मी। इन में श्री कृष्णा-ह्लादिनी प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति **''श्री निकुञ्जेश्वरी रसेश्वरी सर्वेश्वरी श्री राधा है''**।

श्री कृष्ण महाभाव के अधीन– महाभाव स्वरूपा श्री राधाजी हैं, अतः श्री कृष्ण राधाजी के अधीन है। पराभक्ति के समस्त भावुक जनों को उज्ज्वल रस प्राप्त करने के लिए महाभाव स्वरूपा श्री राधा जी के कृपा-कटाक्ष पर निर्भर रहना होता है। वही प्रेम मार्ग की अधिष्ठात्री हैं और प्रेमा भक्ति दिलाने वाली हैं। परम श्री कृष्ण की कृपा प्राप्त करने के लिए परा श्री राधाजी की कृपा प्राप्त करने हेतु श्री राधाजी की उपासना रसिक समुदाय में प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इसी क्रम में श्री राधाजी का स्तवन अनुष्टुप् छन्द में ''श्री राधाशतक'' द्वारा आचार्यश्री के माधुर्य भाव से निष्पन्न हुआ है। इस के अन्त में हिन्दी के दस दोहे भी हैं। **''श्री राधाराधना''** ग्रन्थ में संस्कृत के अनुष्टुप् छन्द के 51 पद्य हिन्दी के 51 दोहे व 25 गीति पद हैं।

''युगलगीतिशतकम्'' ग्रन्थ में श्री वृन्दावन-धाम श्री यमुनाजी, श्री गिरिराज, गो, मुरली व श्री राधे श्याम की व्रज व कुञ्ज केलि का चित्रण तथा मनोयोग पूर्वक श्री सर्वेश्वर की अभ्यर्थना है। यह शतक माधुर्य रस की श्रेष्ठ कृति है।

''श्री राधा-माधव शतकम्''– पं. श्री गोविन्ददास ''सन्त'' ने दो शब्द में लिखा है– **''श्री राधा-माधव-शतक'' श्यामा-श्याम की अन्तरङ्ग (निकुञ्ज) रहस्यमयी लीला (रसोपासना) से ओत प्रोत है।** इस में श्लोकों के पूर्वार्द्ध में **श्री निकुञ्ज की रस-लीलाओं का वर्णन है** और उत्तरार्द्ध में **''राधा माधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम्''** ऐसा पाठ सभी श्लोकों में है।

आचार्यश्री ने ग्रन्थ के आमुख में इस ग्रन्थ की विषय-वस्तु के सन्दर्भ में लिखा है **''श्री राधा-माधव की निकुञ्ज रस परक परम रसमय ललित लीलाओं का चिन्तन एवं उनके लोकोत्तर अनन्त, अचिन्त्य रूपमाधुर्य लावण्यादि दिव्य गुणों का सूत्रात्मक अनुसंधान एवं प्रख्यापन करने की चेष्टा की है। ''इस तरह यह शतक भी (निकुञ्ज) रस भावोपासना की वैजयन्ती माला है। ''श्री सर्वेश्वर शतकम्'' ग्रन्थ भी श्री सर्वेश्वर युगल किशोर श्याम-श्यामा की निकुञ्ज लीलारस के मनस चिन्तन के भाव-विहार से निष्पन्न है। भगवद् लीला का महिमामय परमानन्द परक चित्रण**

इस ग्रन्थ में है। ग्रन्थ के अन्तर्निहित विषय के सन्दर्भ में आचार्यश्री ने स्वकीय भावाभिव्यक्ति में लिखा है **''श्री सर्वेश्वर शतक में श्री सर्वेश्वर प्रभु के माहात्म्य का उनके व्रजभावपरक एवं निकुञ्ज रस बोधक कतिपय प्रसंगों का अति संक्षिप्त परिवर्णन हुआ है।''**

''श्री राधासर्वेश्वरालोक'' ग्रन्थ श्री राधासर्वेश्वर प्रभु की ललित लीलाओं को प्रकाशित करने वाली अनुपम रचना है। प्रकाशन सेवा प्रदान करने वाले ''श्री कल्याण प्रसाद जी अग्रवाल सूतवाले जयपुर के पुत्र **श्री घनश्याम दास अग्रवाल** ने अपनी भावाभिव्यक्ति में श्रीराधासर्वेश्वरालोक को अत्यन्त हृदयग्राही बताया है और इसमें सम्मिलित संस्कृत के 17 पद्य हिन्दी की सुमधुर पद्यावली व दोहावली का उल्लेख किया है। **निश्चय ही इस ग्रन्थ के श्लोक, पद्यावली व दोहे श्री युगलकिशोर के स्वरूप-वैभव का हृदयाकर्षक महिमा गान कर रहे हैं।**

''भारत-भारती वैभवम्'' ग्रन्थ में मातृभूमि भारत, मानव संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान करानेवाली भाषाओं में प्राचीन देववाणी **संस्कृत** (भारती) तथा भारत-जन की आस्था समरसता व अवलम्बन के तीन आधार **गीता, गंगा** व **गाय** की गुण गरिमा का वर्णन श्लोक व पद्यों में किया गया है। **शास्त्रसम्मत दिशा निर्देश कराने वाले उद्गीथ वचन भी है।** इस ग्रन्थ का विमोचन राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने किया था।

आचार्य-स्तवनम् — ग्रन्थ में श्री हंस, श्री सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमारादि, देवर्षि नारद, श्री निम्बार्क, श्री श्रीनिवासाचार्य आदि सहित पूर्वाचार्य चरणों की स्तुतियाँ हैं।

श्री सीताराम-स्तवादर्श — ग्रन्थ में युगलकिशोर भगवान् श्री सीताराम का स्तवन हैं। संस्कृत पद्यों का हिन्दी अनुवाद है। सुमधुर दोहा और अनेक पदों का समावेश है।

श्री माधवशरणापत्ति-स्तोत्र में भगवान् माधव का शरणागति भावना से संस्तवन किया गया है।

गोशतकम् — 'गोशतकम्' ग्रन्थ में गो-माता के धर्म, आध्यात्मिक, प्राकृतिक व देवोपम गुण-माहात्म्य का संस्कृत के 118 श्लोकों में, श्री गोषोडशी स्तवन तथा हिन्दी भाषा के 63 दोहों व 14 पदों से महिमा गान किया गया है।

श्रीश्रीजी प्रणीत **'स्तव-साहित्य का अध्ययन'** ग्रन्थ से साभार उद्धृत

सम्पादक मण्डल

✻

जिन भक्तों में दीनता, प्रपन्नता, सरलता, साधुता है, वे ही यथार्थ भक्त हैं।

– श्री 'श्रीजी' महाराज

वाणी "श्रीजी" बभूवेति

महामहिम राष्ट्रपति सम्मानित मनीषी
— प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्री

वस्तुतः 'काव्य' कवि की उस शब्दार्थमयी रचना को कहते हैं, जो लोकोत्तर हो और नियमतः चमत्कार की संचारिका हो, क्योंकि कवि के शब्द और अर्थ संसार के पदार्थों की भांति अनित्य नहीं होते। वे अमर तथा लोकोत्तर होते हैं। अतः उनमें चमत्कार अर्थात् अनिर्वचनीय आनन्द का होना स्वाभाविक है।

साहित्याचार्यों ने काव्य के दो भेद माने हैं– श्रव्यकाव्य और दृश्यकाव्य। श्रव्यकाव्य के भी भेदोपभेद उपलब्ध हैं, जिनमें सर्वप्रथम तीन भेद किये जाते हैं– गद्य, पद्य और मिश्र। जो छन्दोबद्ध होता है, वह पद्यकाव्य होता है और छन्द रहित रचना– "गद्यकाव्य" कहलाती है। जहाँ दोनों का सम्मिश्रण होता है, वहाँ उसकी संज्ञा 'चम्पू' बताई गई है– "गद्य की अपेक्षा पद्य का स्मरण करना अत्यन्त सुगम माना जाता है और यही प्रमुख कारण रहा है कि प्राचीन कवियों ने अपनी काव्यकला का कौशल पद्य रचना के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इसी सन्दर्भ में अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज ने भी संस्कृत पद्यों के माध्यम से अनेक उत्कृष्ट रचनायें लोकार्पित की हैं, जिनमें "भारत-भारती वैभवम्", "श्री सर्वेश्वरशतकम्", "श्रीवृन्दावन-सौरभम्" "युगलगीति-शतकम्", "श्रीयुगलस्तवविंशतिः" "श्री निम्बार्कस्तवार्चनम्", "श्री निम्बार्क गोपीजनवल्लभाष्टकम्", "श्री हनुमन्महाष्टकम्", "श्री जानकीवल्लभ-स्तवः", "श्री निकुञ्ज-सौरभम्", "श्री राधामाधव-शतकम्", "मन्त्रराज-भावार्थ-दीपिका" आदि उल्लेखनीय, मननीय, पठनीय एवं स्मरणीय हैं। जिस प्रकार कतिपय श्रेष्ठ लेखकों ने अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए गद्यशैली को अपनाया और उनके विश्लेषण से साहित्य समीक्षकों ने यह स्वीकार किया कि उनके द्वारा रचित गद्य साहित्य अपनी उत्कृष्टता के कारण किसी भी रूप में कम नहीं है। यह सत्य है कि पद्य की अपेक्षा गद्य लेखन कठिन होता है। यही कारण है कि समीक्षकों को यह स्वीकारना पड़ा– **"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।"**
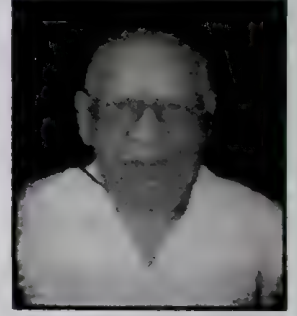
संस्कृत वाङ्मय के सर्वाङ्गीण अध्ययन से यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि गद्य रचनाओं के सम्बन्ध में दो प्रकार की शैलियों के दर्शन होते हैं। इनमें प्रथम प्रकार की शैली के उदाहरण पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, शुकसप्तति, सिंहासन-द्वात्रिंशत् पुत्तलिका, वेतालपञ्चविंशतिका, भोजप्रबन्ध आदि संस्कृत गद्य-रचनाओं में दृष्टिगत होते हैं, जो स्वाभाविक, सरल तथा 'निरलंकृत शैली' कही जाती है। दूसरी शैली 'अलंकृत शैली' मानी गई है, जिसका स्वरूप सर्वप्रथम प्रशस्तियों, शिलालेखों आदि में मिलता है। इस शैली के विकसित रूप में गद्यकार सुबन्धु की "वासवदत्ता" बाणभट्ट की 'हर्षचरित' व 'कादम्बरी' का नाम प्रस्तुत किया जा सकता है।

उपर्युक्त दोनों शैलियों के उद्भव और विकास पर जब चिन्तन करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि साधारण किं वा स्वाभाविक अनलंकृत गद्य के विषय में लक्षणग्रन्थ सर्वथा मौन दिखाई देते हैं, जबकि अलंकृत गद्य के स्वरूप के विषय में विस्तार से विवेचन उपलब्ध होता है। आचार्य दण्डी का नाम इस दृष्टि से ''कनिष्ठिकाधिष्ठित'' है, क्योंकि उन्होंने ही सर्वप्रथम 'गद्य' की परिभाषा प्रस्तुत की है। वे अपने ''काव्यादर्श'' नामक लक्षण ग्रन्थ में लिखते हैं—

''अपादः पद-सन्तानं गद्यम्''।

अर्थात् उन्होंने अपद्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहा। इसके बाद आचार्य विश्वनाथ से ''साहित्य दर्पण'' में इसे परिभाषित किया–''**वृत्तगन्धोज्झितं गद्यम्।**'' उन्होंने इसके चार भेद भी बतलाये। उनका उल्लेख है—

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तगन्धि च।
भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्॥
आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम्।
अन्यद् दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम्॥

(साहित्य दर्पण– 6/330-32)

यद्यपि महाकवि दण्डी 'मुक्तक' को गद्य का भेद नहीं मानते। उनके अनुसार वृत्तगन्धि-गद्य, उत्कलिकप्राय तथा चूर्णक ही गद्य के तीन भेद हैं, जो वैदर्भी, गौडी तथा पाञ्चाली नामक तीन रीतियों के रूप में विकसित हुए। दीर्घ समास वाला गद्य, जिसमें गौडी रीति का प्राधान्य होता है, 'उत्कलिका प्राय' कहलाता है, वैदर्भी रीति प्रधान गद्य को ही 'चूर्णक' कहते हैं, जिसमें लम्बे समास नहीं होते तथा पाञ्चाली रीति-प्रधान गद्य 'वृत्तगन्धि' होता है। आधुनिक समीक्षक सरल, सरस, स्वाभाविक गद्य को 'मुक्तक' के रूप में व्याख्यायित करते हैं। महाकवि बाण भट्ट की 'कादम्बरी' में अनेक स्थलों पर सरल व स्वाभाविक गद्य के दर्शन किये जा सकते हैं।

यद्यपि उपलब्ध समस्त गद्य रचनाओं का सही सर्वेक्षण किया जाय तो कोई भी रचना उपुर्यक्त भेदों के अनुसार रचित नहीं है। सभी रचनाओं में सभी शैलियों के उदाहरण प्राप्त हो जायेंगे। अभिनव बाणभट्ट के नाम से विश्रुत पं. अम्बिकादत्त व्यास की गद्यरचना ''शिवराजविजयम्'' को आज के समीक्षक– आदर्शरचना मानते हैं। वस्तुतः जो स्वाभाविक सौन्दर्यवती नारी हो, वह आभूषणों, अलंकारों के बिना भी चित्ताकर्षक होती है– **''सुकान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्''** इसके विपरीत स्वाभाविक सौन्दर्यरहित और अलंकारों से लदी नारी, चित्ताकर्षक नहीं होती। उसी प्रकार किसी सिद्धकवि के मुख से निर्गत शब्दार्थमयी स्वाभाविक रचना पाठक को स्वतः ही आल्हादित कर देती है। अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज की गद्यसरस्वती वस्तुतः स्वाभाविक रूप से मुखारविन्द से निर्गत है। उन्होंने बलात् उसे अलंकृत करने का प्रयास भी नहीं किया है। इसीलिए वह उनकी सारस्वत-साधना का प्रतिफल रूप है, जो स्वतः सौन्दर्यमयी है।

विषय विवेचन की दृष्टि से जहाँ अग्नि पुराणकार गद्य के पांच भेद प्रस्तुत करता है–

आख्यायिका कथा खण्डकथा परिकथा तथा।
कथानिकेति मन्यन्ते गद्यकाव्यं च पञ्चधा॥

वहीं 'काव्यालंकार' ग्रन्थ में आचार्य भामह ने मूलतः कथा तथा आख्यायिका का विस्तार से विवेचन किया है। आचार्य दण्डी ने भी इनकी अच्छी विवेचना प्रस्तुत की है। आधुनिक समीक्षकों का कथन है कि कथा तथा आख्यायिका में लक्षण सांकर्य होने के कारण कोई निश्चित विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। इस विषय में ध्यातव्य है कि अलंकार संग्रहकार का कथन ही इस विवेचन को सही मार्ग-दर्शन देता है। उनका कथन है—

''**कथा कल्पितवृत्तान्ता सत्यार्थाऽऽख्यायिका मता**'' अर्थात् '**कथा**' में लेखक कल्पित वस्तु का चित्रण करता है, जबकि ''**आख्यायिका**'' में वास्तविक घटनाओं का चित्रण होता है। श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा रचित ''**श्रीनिम्बार्काचार्यचरितम्**'' इस दृष्टि से आख्यायिका है, क्योंकि इसमें सुदर्शनावतार भगवान् महामुनीन्द्र श्री निम्बार्काचार्य का सत्य चित्रण प्रस्तुत हुआ है। इस चित्रण में कहीं भी 'कल्पना' का लेश भी नहीं है। ऐसे भी आचार्यश्री के मुखारविन्द से प्रसूत सारस्वत वाणी निःसन्देह शास्त्रानुप्राणित सत्यवाणी है।

आचार्य रुद्रट ने 'आख्यायिका' के सम्बन्ध में लिखा है कि– ''श्लोकैर्महाकथायामिष्टान् देवान् गुरून् नमस्कृत्य।'' अर्थात् आरम्भ में अभीष्ट देवता व गुरु आदि की स्तुति पद्यों के माध्यम से प्रस्तुत की जानी चाहिये। अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज के ''श्रीनिम्बार्काचार्य चरितम्'' का जब अवलोकन करते हैं, तो प्रतीत होता है कि वे आचार्य रुद्रट की वाणी का मानों समर्थन कर रहे हैं—

निम्बार्कचरितं दिव्यं प्रपन्नार्तिनिवारकम्।
शास्त्रप्रख्यापितं राधा-कृष्णाङ्घ्रिभक्तिसम्प्रदम्॥1॥
निर्जरभाषयाऽऽबद्धं निम्बार्काचार्य – वैभवम्।
सर्वार्थसिद्धिदं चारु चाऽस्ति युग्मरसप्रदम्॥2॥
सर्वेश्वरञ्च निम्बार्कमाद्याचार्यं जगद्गुरुम्।
संस्मृत्याऽऽरभ्यते ग्रन्थो निम्बार्कचरिताऽञ्चितः॥3॥
ध्यात्वा गुरोः पदाम्भोजं कलि – कल्मषसंहरम्।
तन्यतेऽधिगतं यच्च लघुगद्यात्मकं मया॥4॥

श्री 'श्रीजी' महाराज का निर्मल अन्तःकरण पवित्र परमपावन भारतवर्ष के पुरातन परिवेश का चित्रण कर आह्लादित होता है। पुरातन शास्त्रों के अवलोकन से उन चित्रों की सुखद अनुभूति कितना असीम आनन्द प्रदान करती है, यह वस्तुतः अनिर्वचनीय है। आज के भीड़भाड़ भरे कोलाहल परिपूर्ण वातावरण

से सर्वथा रहित, स्वाभाविक शान्त मनोहारी परिवेश में सुखद ग्राम्यजीवन किं वा आश्रम निवास अनिर्वचनीय होता है, जिसके प्रत्येक स्वरूप चित्रण में भारतीयता दृष्टिगोचर होती है। सस्यश्यामला भूमि में सघन वृक्षों से आच्छादित ऋषियों की तपःस्थली बरबस चित्त को आकर्षित कर लेती है। श्री 'श्रीजी' महाराज की दिव्य लेखिनी से प्रसूत यह स्वाभाविक वर्णन पढ़कर ही पाठक प्रत्यक्षानुभूति करने में पूर्णतः सक्षम है—

''अहो कियती कमनीयता दरीदृश्यते परितो भारतवर्षे, यत्तस्य परमरम्यपावनवसुन्धरायां समुल्लसितानां परमदिव्यचारुतमानां ऋषीश्वरपवित्राऽश्रमाणाम्। यत्र च सुप्रभातवेलायां ऋषयो मुनयो योगि-यति-तपस्वि-साधको यज्ञानुष्ठानमाचरन्ति। शास्त्रस्वाध्यायपरमपटवो ब्रह्मचारिवटवश्च सस्वरवेदमन्त्रान् समुच्चारयन्ति। द्राक्षाऽऽम्र-कदम्ब-निम्ब-जम्बू-जम्बीर-बदरी-बकुल-विल्व-वट-पिप्पल-दाडिम-नारङ्गी-तूद-कदल्यादितरवो वल्लयश्च स्वकीयानि सुपरिपक्वानि परममधुराणि फलानि प्रददति। मालती-केतकी-पाटली-चम्पा-कुन्द-यूथिका-मल्लिका-वासन्ती-शेफालिकादि विविध-व्रतति-सुमनस्सुरभिस्तु परितः परिव्याप्ताऽस्ति। रक्तोत्पलयुताः पवित्राच्छवारिभरिताः सुभगसरोवराः स्वकीयपावनतां प्रदर्शयन्ति। पर्वतनिर्झरप्रपाताः कलकलनिनादेन सर्वतो दिगन्तरालमुपरिष्टान्निपतन्तः शब्दायमानं विदधति। पुण्यसलिलाः सरितो गभीरधाराप्रवाहेण प्रवहन्त्यो नितरां निखिलदर्शकमानसमानन्दयन्ति। गिरिनिकराः श्रोतृरूपेणाऽवस्थिता दरीदृश्यन्ते। मृगाश्च स्वच्छन्दमरण्यप्रदेशं समलङ्कुर्वन्ति। शुभ्रवर्णाः शशकाश्च सोल्लासं निरातङ्कमितस्ततो धावन्तोऽतिमृदुलान् दूर्वाङ्कुरान् समास्वादयन्तो विचरन्ति। मृगेन्द्र-व्याघ्र-भल्लूक-वराह-जम्बूक-वृक-बिडालादि हिंसक- पशुविशेषा हिंसां विहाय परमशान्त-सात्विकरूपेण समवतिष्ठन्ते। शाखामृगास्तु द्रुमाद् द्रुमोपरि प्रकूर्दमानाः परितः पलायमानाः मिथो विक्रीडन्ति। सर्पाः विसर्पन्तः समेषां मङ्गलं कामयन्ते। वृश्चिकादिविषवन्तो जन्तवो विषमपहाय भ्रमन्ति। वस्तुतः एतेषां परमसात्विक-दिव्याश्रमाणामतीव वैलक्षण्यं परिलक्ष्यते, यतोहि नानाविध-कुसुम-सौरभ-सुरभितास्त्रिविधः समीरः प्रवहति। केचन शास्त्र-विहित-सङ्गीतमर्मज्ञाः वंशी-विपञ्ची-मृदङ्ग-मञ्जीरादि विविधमङ्गलवाद्यैर्भगवन्नाम संकीर्तन-संलग्नाः सन्ति। केचन मनीषिणः परस्परं ब्रह्मजीव-जगद्विषयकवेदान्तदर्शन-चर्चां प्रकुर्वन्तः प्रमुदितमनस्काः विजायन्ते।''

उपर्युक्त आश्रम प्रदेश का सुरम्य स्वाभाविक वर्णन पढ़कर महाकवि बाणभट्ट की अमररचना ''कादम्बरी'' के वे वर्णन स्मृतिपटल पर उभर आते हैं, जिनमें उन्होंने महर्षि जाबालि के पवित्र आश्रम का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है–

''अनतिदूरमिव गत्वा दिशि सदा सन्निहित-कुसुमफलैः ताल-तिलक-तमाल-हिन्ताल-बकुल बहुलैः, एलालताकुलितनारिकेलकलापैः, आलोललोध्रलवलीलवङ्ग-पल्लवैः, उल्लसत् चूतरेणुपटलैः, अलिकुलझङ्कारमुखरसहकारैः, उन्मदकोकिल-कुल-कलालाप-कोलाहलिभिः, उत्फुल्ल-केतकी-कुसुम मञ्जरीरजः-पुञ्ज-पिञ्जरैः, पूगीलता-दोलाधिरूढवनदेवतैः काननैरुपगूढम्'' इत्यादि (जाबाल्याश्रमवर्णन)

'अहो प्रभावस्तपसाम्'। 'पुण्यानि हि नामग्रहणान्यपि महामुनीनाम्, किं पुनर्दर्शनानि'। 'अस्य भगवतः प्रभावादेवोपशान्तवैरमपगतमत्सरं तपोवनम्'। अहो प्रभावो महात्मनाम् 'अत्र हि शाश्वतिकमपहाय विरोधमुपशान्तान्तरात्मानस्तिर्यञ्चोऽपि तपोवनवसति-सुखमनुभवन्ति', इत्यादि वाक्यों की स्पष्ट छाया श्री'श्रीजी' महाराज के वर्णन से भावसाम्य रखती है। महाकवि बाणभट्ट ने जहां आश्रम वर्णन में आलंकारिक शैली का आश्रय लिया है, वहीं अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज का कथन घटाटोपरहित, स्वाभाविक व नैसर्गिक है। प्रवर्तमान युग में ऐसे ही निर्मल व स्पष्ट चित्रण की महती आवश्यकता है, क्योंकि पाठक घटाटोपमयी आलंकारिक दुरूह भाषा को पसन्द ही नहीं करते।

श्री 'श्रीजी' महाराज की स्वान्तःकरणप्रसूत दिव्य भारती किस निश्छल भाव से कथा का प्रवर्तन करती है, यह दर्शनीय है–

"एवंविधे विविध-सुरम्य-दृश्यपरिलसिते नितान्त-शान्ते परमैकान्ते सात्त्विक-भावभाविते पुण्यतीर्थस्वरूपे दिव्यतमे महामङ्गलमये सुपावनतमाऽऽश्रमेऽऽध्यात्मैकजीवना ऋषयो मुनयः तपोनिष्ठाः निगमागमशास्त्रस्वाध्यायाभिरताः परमधीराश्च यजनकर्मणि प्रवृत्ताः सुशोभन्ते।"

इस प्रकार के अनेक रमणीय दृश्यों से शोभायमान अतिशान्त, एकान्त सात्त्विक भावालंकृत पवित्र तीर्थस्वरूप अतिदिव्य परम पावन आश्रम में अध्यात्म जीवन परायण ऋषि मुनि यज्ञानुष्ठान कर्म में प्रवृत्त थे, तब ही पापकर्म-विदूषित अन्तःकरणवाले, निरन्तर पापपङ्क संलग्न निशाचर उन तपस्वियों के महायज्ञों के विध्वंसकर्म में प्रवृत्त हुए। उनके द्वारा निरन्तर क्रियमाण विध्वंसक कर्मों से अतिखिन्न मन वाले तपस्वियों ने महर्षि अरुण की प्रेरणा से तत्कालीन भारत सम्राट् महाराज परीक्षित के पास पहुंचकर निवेदन किया–

"दुर्दान्तक्षपाटविहित-दुष्कृत्याखिन्नमानसाः परिगृहीतदर्भासन-कमण्डलु-कुश-तुलसीमालहस्ताः श्रीमदरुणमहर्षि-सम्प्रेरिताः ऋषिमुनीश्वराः समवेताः, तात्कालिक-भारतवर्ष-हस्तिनापुर-राज्यसिंहासनाऽऽसीनस्य शास्त्रनिर्दिष्ट-मर्यादानुकूल-सरणिसंस्थितस्य भागवतधर्मपरिपालनतत्परस्य श्रीपरीक्षिन्महाराजस्य पवित्रसन्निधौ समुपागताः।" (पृ. 6)

प्राचीन काल में, द्वापर युग में महामहिम सार्वभौम सम्राट् भी वर्णाश्रमप्रतिपालक होते थे, ऋषिमुनियों के प्रति कितने विनम्र तथा सेवापरायण होते थे, 'अतिथिदेवो भव' की वैदिक अवधारणा की पालना में तत्पर होते थे– तथा कितनी विनयशीलता से उनसे वार्तालाप करते थे, यह श्री 'श्रीजी' महाराज के शब्दों से अवगतार्थ होइये–

"महाराजः – भो भो ऋषि-मुनीश्वराः! यति-सुधीसाधुप्रवराः! अद्य मे कियच्छुभं सौभाग्यं वरीवर्ति, यतोहि भवद्भिः परमानुग्रहपूर्वकं श्रीमच्चरणपङ्कजरजोभिः पवित्रीकृतोऽहं तथा चेदं राजभवनमपि! भवतामतिदुर्लभं महामङ्गलमयदर्शनं विधाय अतिकृतार्थोऽहम्। भगवन्! परमपूतान्तःकरणैस्तपोनिष्ठैः भवद्भिराचरितं दैनन्दिनं यज्ञादिसत्कर्मानुष्ठानां तु निर्विघ्नतया

सञ्चलत्येव? तथा च तत्रभवतां भवतां पुण्यमये तीर्थस्वरूपे सुरमणीये परमपवित्राऽऽश्रमे सार्वत्रिकं सर्वविधं कुशलं तु स्वाभाविकमेव?

अखण्ड भारत के सार्वभौम सम्राट् महाराज परीक्षित की विनम्रता दर्शनीय होने के साथ ही उनके सौम्य एवं अनुकरणीय चरित का ज्वलन्त उदाहरण है। महनीय चरित ऋषीश्वर भी सम्राट् के वचनामृतों से संतृप्त होकर स्वयं के सेवा में उपस्थित होने का कारण अत्यन्त विनम्रता से प्रस्तुत कर रहे हैं–

''ऋषीश्वराः – यद्यपि श्री भगवदनुग्रहेण वयं पूर्णतः प्रसन्नाः स्मस्तथापि यागादि-कर्माणि होमावसरे दुर्वृत्तैः दुर्दान्तैः दैत्यनिकरैरनारतं नानाऽनर्थपूर्वकदुष्कर्माणि च पौनःपुन्येन परितो विधीयन्ते। अतोहि श्रीभगवदुपासनाभजनानुष्ठानादिकमाह्निकं कृत्यं कृच्छ्रेणैव सञ्चलति। सुतरां भवतैव कार्यमिदं नितरां सम्पत्स्यत इत्यस्माकं द्रढ़ीयान् प्रत्ययः। एतदर्थमेव वयं पूर्णतो निखिलं विविच्य भवत् सविधे समुपस्थिताः स्मः।''

ऋषीश्वरों के समागमन कारण को जानकर सम्राट् महाराज परीक्षित खिन्न होते हैं, परन्तु उन्हें पूर्णतः आश्वस्त भी करते हैं। भगवन्निष्ठ महाराज आसुरी शक्तियों के शमनार्थ कामना करते हैं कि सर्वान्तरात्मा सर्वज्ञ श्रीहरि को या तो स्वयं अवतीर्ण होकर या अपने किसी पार्षद के माध्यम से ही दुष्टों का दलन करना होगा। इसीलिए वे ऋषीश्वरों से भी प्रार्थना करते हैं–

''अतो हि भवद्भिरेव समवेतरूपेणैकत्रीभूय वृन्दारकवृन्दानि मन्त्रैराहूय तैः सह जगन्नियन्तुः श्रीसर्वेश्वरप्रभोरभ्यर्थना विधातव्या, यथा मङ्गलप्रार्थनया करुणावरुणालयो हरिः सर्वं शं विधास्यतीति श्रीचरणारविन्देषु मे निवेदनम्।''

भारतसम्राट् श्री परीक्षित महाराज के सन्देश को लेकर महर्षिवर श्रीमद् अरुण महर्षि के आश्रम में लौटते हैं, तथा उनसे वृत्तान्त निवेदन करते हैं। उसी समय देवर्षि नारद का आश्रम में शुभागमन होता है। देवर्षि के कुशलक्षेम प्रश्नानन्तर महर्षि अरुण अपने आश्रम की स्वाभाविक स्थिति का चित्रण करते हुए 'आत्मनिवेदन' करते हैं। यह वर्णन श्री 'श्रीजी' महाराज की लेखिनी से इस प्रकार प्रस्तुत है—

''ऋषिवरश्रीमदरुणः — देवर्षे! यद्यपि भवदनुग्रहेण सर्वं साधीयः। आश्रमस्थाः सर्वेऽपि ऋषिमुनीश्वराः निगमागमस्वाध्यायनिरता ब्रह्मचारिणो, दिव्यदुग्धाऽमृतप्रदा रोमन्थनिरताः सवत्सा धेनुनिवहा, परममधुरकलवरपटाः पतत्रिपुञ्जाः, हरितमृदु-दूर्वाङ्कुरचर्वणरताः कुरङ्गनिकराश्च सुरभितसुभग- सुमनोऽन्वित-विविधफल-प्रपूरितपादप- वल्लयः निर्मल-मधुर-वारिभरित-सरिन्निर्झरप्रपाताः गिरिकदम्बाऽऽदयः सर्वे सर्वतः सर्वथा परममङ्गलमाकलयन्ति, परं देवर्षे! अपत्यमन्तरा चेखिद्यते मे चेतोऽनारतम्। अतोहि कृपानिधे! मदीयाऽभीष्टपूर्तिर्यथा प्रभवेन्महनीयां दिव्यतमाकाममनुकम्पां विदधातु, तथा च साम्प्रतं कार्यप्रभावान्निशाचरैः प्रपीड्यमाना वयं कार्त्स्न्येनैव यज्ञादिसत्कर्माणि सम्पादयितुं समर्थाः प्रभवेमोऽतो हे देवर्षे! तन्निरोधोपायमपि सानुग्रहं सन्निर्दिशतु॥''

देवर्षि नारद ने ऋषिप्रवर श्री अरुण की कामना पूर्ति हेतु निखिल मन्त्रसमूहशेखर श्री गोपालमन्त्रराज

का उन्हें सदुपदेश दिया और लोकान्तर में प्रस्थान कर दिया। **''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थो नु धावति''** कथनानुसार मन्त्रराज गोपाल मन्त्र के दिव्यानुष्ठान से उनकी अभीप्सित सिद्धि हुई और स्वयं भगवान् पुराणपुरुषोत्तम श्री कृष्णचन्द्र ने प्रकट होकर ऋषिप्रवरों से कहा–

''भो भो ऋषि-मुनीन्द्राः! देवगणाः! मा विचिन्तयन्तु, त्वरितमेवाऽसुराणां परिहारो भविष्यति। मदीयाऽऽयुधराज-सुदर्शनवर्यो मनुजरूपेणाऽवनावतीर्य झटिति तेषां विनाशं विधास्यति इति समुपदिश्य स्वकीय-दिव्यकृपाकटाक्षपातैः निखिलानभिषिच्य सपदि नभसि विद्युत्वदन्तर्दधौ।''

श्री सुदर्शन चक्रराज ने भी श्रीहरि की आज्ञा–

''सुदर्शन! महाबाहो! कोटिसूर्य समप्रभ।

अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय'' (पृष्ठ 10) को स्वीकार कर श्री अरुण महर्षि के यहाँ अवतार ग्रहण किया।

''सम्प्राप्ते च समये द्वापरान्ते कलियुगारम्भकाले कार्तिकशुक्ल-पूर्णिमायां पुण्यतिथौ बुधवासरे सायं समये गोधूलिवेलावसरे वृषराशौ मेषलग्ने कृत्तिकानक्षत्रे चन्द्रमङ्गल-बुध-गुरु शनैश्चरादिषु पञ्चसु ग्रहेषूच्चस्थेषु सत्सु परमपावनपर्वणि चाविर्बभूव जयरूपिण्याः जयन्तीमातुः शुभोदराद् भगवान् श्री सुदर्शन-चक्रराजः॥''

इनका प्रथम नाम भगवान् 'नियमानन्द' था। एक बार दक्षिण यात्रा प्रसंग से कतिपय ब्रजनिवासियों का संघ अकस्मात् महर्षि अरुण के आश्रम में पहुंचा। ब्रजवासी ब्राह्मणवर्ग से ब्रजधाम की महिमा सुनकर भगवत्स्वरूप श्री नियमानन्द जी ने अपने पितृचरण से ब्रजदर्शनोत्कण्ठा व्यक्त की। अपने प्रिय पुत्र की अभिलाषा को मुनिवर अरुण नकार न सके और अपनी धर्मपत्नी श्रीमती जयन्ती देवी के साथ ब्रजधाम के प्रस्थान का निर्णय कर लिया। अनन्तश्रीविभूषित श्री ''श्रीजी'' महाराज की सरस्वती-स्वरूपा लेखिनी किस सहज एवं निश्छल भाव से इसका ललित स्वाभाविक वर्णन प्रस्तुत कर रही है, दर्शनीय है—

''भोः ऋषिमुनिवरिष्ठाः! बालक-नियमानन्दस्य तीव्रतरां ब्रजदर्शन-समुत्कण्ठां वीक्ष्य मया व्रजयात्राया आयोजनं निर्धारितम्। मामकीना स्पृहाऽपि स्वान्ते समुत्पन्ना यदनेन व्याजेन ब्रजधाम्नो दिव्यदर्शनलाभः प्रभविष्यतीति कृत्वैवैतद् यात्राऽऽयोजनं विहितम्। अस्याऽश्रमस्य निखिला व्यवस्था भवद्भिरेव सम्पादनीयेत्यस्मदीया पवित्राऽन्तर्भावना संरक्षणीया। तथा च हे श्रुतिस्वाध्यायरता अन्तेवासिनो ब्रह्मचारिणः! कथमपि यूयं खेदं मा वहत। अत्रत्या इमे ऋषिमुनिप्रवरा आश्रमीय-सकलसुव्यवस्थां वेदादिशास्त्राध्ययनादिनिखिलकार्यजातं सौकर्येणैव निश्चप्रचतया सम्पादयिष्यन्तीति सर्वान् समाश्वास्य ब्रजवासिभिः सह सपरिकरोऽरुणमहर्षिवरो व्रजयात्रार्थं मङ्गलप्रस्थानं चकार॥''
(पृष्ठ- 13)

व्रजयात्रा प्रसंग में मध्येमार्गं सम्प्राप्त श्री पुष्कर तीर्थराज, गालवतीर्थ, श्री हंसावतार स्थल आदि के पावन दर्शन करते हुए ब्रजधाम पहुंचे। वहां से श्रीकृष्णावतारस्थली मथुरा भी आये। श्री वृन्दावनधाम की

कमनीयता से परम प्रमुदित महर्षि अरुण व भगवान् नियमानन्द आदि सभी ने दिव्यानन्द की अनुभूति की। श्री 'श्रीजी' महाराज की सारस्वत लेखनी भी अपने दिव्य रूप में अनुप्रासादि अलंकारधारण कर प्रकट हो गई–

''अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायकस्य क्षराक्षरातीतस्य निखिल-जगज्जन्मादिहेतोः सर्वनियन्तुः सर्वान्तर्यामिणः सर्वद्रष्टुः सर्वज्ञस्य सर्वात्मनः सर्वेश्वरस्य कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थस्य मुक्तोपसृप्यस्य निरतिशय-सौन्दर्य-माधुर्य-सौशील्य-सौकुमार्य-लावण्य-कारुण्य-मार्दवाद्यनन्तकल्याण-गुणगणमहोदधेरखिलरसामृतसिन्धुसारविग्रहस्य नवाम्बुदानीकमनोहरस्य कोटिकन्दर्पदर्पदलनपटीयसोऽकारण-करुणावरुणालयस्य दयासिन्धोरनन्त-सखीवृन्दपरिसेवितस्य भगवतः श्री राधाकृष्णस्य कलकलकल्लोलिनी कलिन्दजाकूलपरिलसितं शुकपिकसारिका-मयूरादि खगवृन्द-कलित-कलरवाभिगुञ्जितं विविधलतातरुसुमनस्सुरभितं सच्चिन्मयं नित्यललितलीलास्थलं परम- दिव्याऽप्राकृतधाम श्रीमद् वृन्दावनं चारुतया विधिवत् प्रणम्य तस्याऽनुपमं दिव्यदर्शनं विधाय लोकोत्तरां परमाद्भुतां परम-सुभगशोभां मुर्हुर्मुहुरवलोक्य ऋषिवर्यः श्रीमदरुणः परमविस्मयान्वितो भूत्वा मथुरापुरीमाजगाम।'' (पृष्ठ-14)

उपर्युक्त वर्णन को पढ़कर पाठक अनिर्वचनीय रसानन्दसागर में निमज्जन कर अतिशयानन्द की स्वाभाविक अनुभूति करता है, क्योंकि इसकी पदावली अत्यन्त सरल, वैदर्भी रीतिमय समासरहित व अर्थावबोधक है। निश्चय ही यह भगवती वीणापाणि भगवती शारदा सरस्वती का ही दिव्य प्रभाव है, जो साक्षात् प्रादुर्भूत है, प्रकट है।

प्रसंगप्राप्त श्री 'श्रीजी' महाराज ने ब्रजभूमि के उन समस्त पुण्य स्थलों का यहां स्मरण किया है, जिनमें वृषभानुपुर (बरसाना), नन्दग्राम, गोकुल, गिरिराज गोवर्धन, मानसीगङ्गा, संस्मरणीय हैं। भगवान् नियमानन्द ने गोवर्धन पर्वतराज की उपत्यका (तलहटी) की परम पावन भूमि को अपनी तपःस्थली के लिए उचित मानकर वहीं आश्रम निर्माण कर अपने पूज्य पितृचरण महर्षि अरुण तथा पूज्या वन्दनीया माताश्री जयन्ती देवी के साथ रहने लगे।

यही परमपवित्र आश्रम कालान्तर में तथा वर्तमान में **'निम्बग्राम'** के नाम से लोकविश्रुत है। श्री सुदर्शनावतार श्री नियमानन्द भगवान् के परमपुनीत चरित का अपनी दिव्यवाणी से प्राकट्य करते हुए अनन्त श्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज लिख रहे हैं कि एक दिन वीणावादन करते हुए देवर्षि नारद निम्बग्राम में अवस्थित महर्षि अरुण के आश्रम में पधारे। उनके परमश्रेयःप्रद दिव्यदर्शन को प्राप्त कर महर्षि अरुण अतीत प्रमुदित हुए। महर्षि अरुण के दिव्य मनोभाव को जानकर उन्होंने भगवान् नियमानन्द को श्रीमन्मुकुन्दशरणागति मन्त्र श्री गोपालमन्त्रराज की विधिवद् दीक्षा प्रदान की। साथ ही उन्होंने श्री सनकादि महर्षि संसेवित गुञ्जाफल परिमित, दक्षिणावर्त चक्राङ्कित शालग्रामस्वरूप श्री सर्वेश्वर प्रभु के दिव्य विग्रह को नित्य पूजार्थ प्रदान किया। यहाँ श्री श्रीजी महाराज ने श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्धस्थ त्रयोदशाध्याय के पद्य संख्या सत्रहवें के गूढ़ रहस्य को भी अनावृत किया है, जिस प्रश्न को भगवान् नियमानन्द ने

देवर्षि नारद जी के समक्ष उपस्थित किया था, जो वस्तुतः मननीय व पठनीय है। परात्पर परब्रह्म सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् ने श्रीहंसरूप से सर्वप्रथम सनकादि महर्षियों को उपदेश दिया तथा उनके जिज्ञासित प्रश्नों का समाधान किया, वही मूल चिन्तन यहाँ विवेचित है। श्री हंस भगवान् ने सर्वप्रथम शालग्राम स्वरूप दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित गुञ्जाफलसम दिव्यस्वरूप सर्वेश्वर प्रभु के विग्रह को सनकादिक महर्षिवर्यों को समर्पित किया था, जिनसे देवर्षि नारद को प्राप्त हुआ और देवर्षि नारद ने उसे भगवान् नियमानन्द को प्रदान किया–

''**इतस्तु श्री नारदोक्तविधिना श्रीसर्वेश्वरप्रभुसेवाऽभिरतः श्रीमन्नियमानन्दः। श्री नियमानन्देन सम्पद्यमानं श्री सर्वेश्वरस्य वैदिकं समीचीनमर्चाविधिं संवीक्ष्य जयन्तीदेव्या सह श्रीमहर्षिवर्योऽरुणः परमानन्दमवाप।**'' (पृष्ठ-18)

श्री सुदर्शनचक्रावतार भगवान् नियमानन्द के जीवन की उल्लेखनीय, अविस्मरणीय एवं नितान्त संस्मरणीय महत्त्वपूर्ण घटना का सन्दर्भ प्रस्तुत करते हुए श्री 'श्रीजी' महाराज ने जिस वैदर्भी शैली का अवलम्बन किया है, वह सहज एवं नितान्त स्वाभाविक है–

''**एकदा ब्रह्मलोके दिव्यसिंहासनाऽऽसीनो ब्रह्मा समाधौ किञ्चिद् विशेषचिन्तावस्थायां संतिष्ठमान आसीत्तदा मनसि संकल्पितं विधिना यत् सुदर्शनचक्रराजः श्रीहरिणा समादिष्टो मनुजरूपेण धराधाम्नि समवततार। अतस्तज्जिज्ञासार्थं परीक्षार्थञ्च छद्मरूपेण मया भूतले यातव्यमिति विनिश्चित्य तत्क्षणादेव ब्रजधाम्नि गोवर्धनेऽरुणमहर्षितपःस्थल्यां सृष्टिकर्ता वेधा दण्डियतिरूपेण सूर्यास्तसमये समाजगाम।**'' (पृ. 18)

वैदिक संस्कृति की मूल चतुष्टयी में ''अतिथिदेवो भव'' का माहात्म्य महत्त्वपूर्ण रहा है। दण्डी यति के रूप में किसी तेजस्वी अतिथि का आश्रम में आगमन हो और भला भगवत्स्वरूप श्रीनियमानन्द उनका स्वागत न करें, यह कैसे सम्भव था? यद्यपि आश्रमाधिपति महर्षि अरुण गिरिराज गोवर्धन की परिक्रमा में गये हुए थे, तो भी उन्होंने यतिराज को बिना आतिथ्य सत्कार लौटने न दिया। ''**अप्रणोद्योऽतिथिः सायं अपि वाग्भू-तृणोदकैः**'' स्मृतिवाक्यानुसार ''श्री नियमानन्द ने यतिराज को भोजनार्थ निमन्त्रित किया, परन्तु यतिराज ने स्वयं को दिवःभोजी यति के रूप में परिचय दिया, तो सुदर्शन चक्रावतार श्री नियमानन्द ने निम्बवृक्ष पर अपने रूप से भगवान् सूर्य का बिम्ब दिखाकर दण्डीयतिराज को भोजनार्थ आग्रह कर ही दिया। उनके प्रभाव से प्रभावित यतिराज ने ही श्रीनियमानन्द का नाम 'निम्बार्क' रख दिया–

''**श्रीमन्नियमानन्देन स्वकीयमूलस्वरूपं कोटिसूर्यसमप्रभं सुदर्शनायुधं प्रकटीकृत्य स्वाश्रमस्थे निम्बद्रुमे सूर्यवत् स्वरूपाकृतिं दर्शयित्वा यतिरूपो ब्रह्मा निजकरकञ्जाङ्गुल्या निर्देशेन सम्बोधितो– हे यते! नैवाऽधुना सन्ध्यावेलास्ति, दिवाकरस्य प्रत्यक्षदर्शनं सञ्जायते, अतोऽस्माकं निवेदनमिममुररीक्रियताम्। यतिरपि परमसन्तुष्टीभूय श्रीभगवन्निवेदितं भगवत्प्रसादं सानन्दं पुलकित–**

चेतसा प्रगृहीतवान्। भगवत्प्रसादान्ते यदाऽऽचमनं यतिरूपेण विधिना विहितं, तदा हठादेव गाढध्वान्तयुता महानिशा विलोकिता।'' (पृ. 19)

जगत्स्रष्टा ब्रह्मा ने जब यह चमत्कार देखा तो जान गये कि यह भगवान् सुदर्शन का ही प्रभाव है। हठात् उन्होंने प्रकट होकर भगवान् नियमानन्द को जो कहा– वह श्री 'श्रीजी' महाराज के शब्दों में प्रस्तुत है–

''हे चक्रराज! सृष्टिकर्ता विधिरहं केवलं भवत् परीक्षणार्थं छद्मरूपेणेहाऽऽगतः। सर्वेश्वरपर-ब्रह्मणा श्रीकृष्णभगवता सम्प्रेरितो जगत्कल्याणायाऽनादिवैदिकसनातन-वैष्णव-धर्माऽभ्युत्थानार्थं नैशाचरीवृत्तिपरिशमनार्थञ्च ऋषिमुनिवृन्दारकवृन्दसम्प्रार्थितो भवानिह भूतले मनुजरूपेण वैष्णवाचार्यरूपेण परमानुकम्पापूर्वकमवतीर्णवान्, नात्र कोऽपि सन्देहावसरः। भवदीयाश्रमे समायाते मयि भवता यदातिथ्यं सम्पादितं, तदत्यद्भुतं परमं विचित्रं, तद्वर्णने सर्वथाऽसमर्थोऽहम्। ममाधुना स्वान्ते यत्कियद्हर्षः समुदेति, तदप्यतीव चित्रमाभाति। यदा भवता निम्बद्रुमेऽस्तंगते मरीचिमालिनि भगवति भुवनभास्करे पुनरेवाऽर्कस्य दिव्यदर्शनमकारि, तच्चमत्कृतिपूर्णमतीव महनीयं भवद्वैभवम्। निम्बतरुवरेऽर्कः प्रदर्शितोऽतो भवान् निम्बार्कस्वरूप एव। अद्यत्वे मया भवान् निम्बार्क नाम्ना सम्बोध्यते। निखिलेऽस्मिन् विश्व- ब्रह्माण्डे निम्बार्काभिधानेनैव भवतो लोकप्रसिद्धिः प्रभविष्यतीति निश्चप्रचम्। तथा च जगत्यां चतुर्दिक्षु भवतो नाम्ना सम्प्रदायख्यातिः प्रसृता भृशमेव भवेदिति श्री हरेः प्रेरणया मे द्रढीयो वचः:॥''(पृष्ठ20)

श्री 'श्रीजी' महाराज ने निम्बार्काचार्य के नामकरण से संबद्ध प्रामाणिक घटना का चित्रण कर उनके रचनात्मक कार्य पर भी प्रामाणिकता की मुहर लगा दी है, जिनमें वेदान्त-पारिजातसौरभ, दशश्लोकी वेदान्त कामधेनु, मन्त्ररहस्य षोडशी, प्रपन्नकल्पवल्ली, 'श्रीकृष्ण-प्रातः-स्मरणस्तोत्रम्, श्रीराधाष्टकस्तोत्रम् प्रपत्तिचिन्तामणि, सदाचार प्रकाशः तथा 'गीतावाक्यार्थः' का उल्लेख किया है। साथ ही यह भी जानकारी दे दी है कि इनमें से अन्तिम तीन ग्रन्थ आज अनुपलब्ध हैं।

चरितवर्णन प्रसंग में श्री 'श्रीजी' महाराज ने पण्डितंमन्य **विद्यानिधि** का भी उपाख्यान प्रस्तुत किया है, जो शाक्तमतानुयायी था। उसने भगवान् निम्बार्काचार्य के सम्मुख उपस्थित होकर शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज दिया और अशिष्ट भाषा में व्यवहार किया, परन्तु भगवन्निम्बार्काचार्य ने स्वाराध्य की उपासना पूर्ण कर आगन्तुक पण्डितमानी का विनम्र शब्दों में आदर किया। वे 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' नीति के समर्थक नहीं थे–

''भो विद्वन्! समागम्यताम्। आसनमिदमभिगृह्णन्तु भवान्। भवद्दर्शनमवाप्याऽतीव पुलकितोऽस्मि। अत्राश्रमवासिनः समेऽपि प्रमुदिताः सञ्जाताः प्रेक्षावतां दर्शनं सर्वदैव पुण्यकरं भवति। निर्दिशतु काऽप्यपेक्षा चेत् किमभिवाञ्छति भवान्।'' (पृष्ठ 21-22)

''पण्डितंमन्य विद्यानिधि'' से चर्चा चल ही रही थी कि उदुम्बर वृक्ष से अकस्मात् टूटकर गिरे

फल से तेजोमय दिव्यरूप औदुम्बराचार्य प्रकट हुए और उन्होंने विद्यानिधि के प्रश्नों का समाधान किया, जिससे सन्तुष्ट होकर उसने भगवान् निम्बार्काचार्य की शिष्यता स्वीकार कर ली तथा मन्त्रोपदेश भी लिया।

भगवान् निम्बार्काचार्य को अज्ञानवश तान्त्रिक समझकर दुष्ट ग्रामवासियों द्वारा उन्हें आग में भस्म करने के कुकृत्य को भी उन्होंने शान्त किया तथा ग्रामवासियों को सदुपदेश देकर क्षमादान ही नहीं दिया, मन्त्रराज का उपदेश भी दिया।

श्रीमतंग ऋषि के उपाख्यान को भी आचार्य-चरण ने प्रस्तुत किया है, जो सामान्य जन के लिए एक अद्भुत उपाख्यान है। मतंग ऋषि ने अपने गुरु की आज्ञा की अवहेलना की थी, परिणामस्वरूप उन्हें 'कच्छप' होने का शाप मिला था। भगवान् निम्बार्काचार्य जी के चरणकमल के स्पर्श से ही वे शाप विमुक्त हो पाये थे।

इसी प्रकार भारत-यात्रा के सन्दर्भ में जब श्री निम्बार्क प्रभु नैमिषारण्य में गये थे, तब भी दुष्टजनों ने उन पर आक्रमण कर दिया था और उन्होंने अपने वास्तविक रूप को प्रकट कर सभी का शमन किया था। ऐसी ही एक घटना ब्राह्मनद (शोण) पर घटी थी, जब नाव में बैठे लोग डूबने लगे थे और भगवान् ने अपने चरणकमल के स्पर्श मात्र से समुद्री तूफान को शान्त किया था।

कालान्तर में भगवान् ने अपने प्रमुख शिष्यों **श्री श्रीनिवासाचार्य** व **श्री औदुम्बराचार्य जी** व **गौरमुखाचार्य जी** को स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त तथा वृन्दावन निकुञ्जविहारी श्री राधाकृष्ण निकुञ्ज रसोपासना का परम दिव्य उपदेश दिया था। पाञ्चजन्य शङ्खावतार श्री श्रीनिवासाचार्य जी भगवान् निम्बार्क प्रभु के पट्टशिष्य थे, अतः उन्होंने उन्हें ही शालग्राम स्वरूप श्री सर्वेश्वर प्रभु का विग्रह प्रदान किया था, जो आज परम्परा से अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा संसेवित है।

श्री सुदर्शन चक्रावतार भगवान् निम्बार्क प्रभु के दिव्य चरितों का संक्षिप्त में उल्लेख कर श्री 'श्रीजी' महाराज की लेखिनी ने लोकोपकार किया है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। उनकी भावाभिव्यक्ति दर्शनीय है–

''इत्थं सुदर्शनचक्रावतारस्य सम्प्रदाय-प्रवर्तकस्याऽऽद्याचार्यस्य श्रीभगवनिम्बार्काचार्य-जगद्गुरोर्नानाविधानि लोकोत्तराणि परमपावनतमानि दिव्यातिदिव्य-चरितानि विद्यमानानि सन्ति, परमथ विस्तारभियाऽत्रैव प्रस्तुताऽतिशय-पवित्रप्रसङ्गस्याऽस्य विरामो विधीयते।'' (पृ. 30)

दिव्यजीवन-चरित के मार्मिक प्रसङ्गों का स्वाभाविक प्रवाहमयी शैली में चित्रण कर श्री 'श्रीजी' महाराज ने निम्बार्क भगवान् द्वारा प्रतिपादित स्वाभाविक द्वैताद्वैत (भेदाभेद) सिद्धान्त को लोकोपकारार्थ प्रस्तुत किया है। सप्रमाण प्रस्तुत इस विवेचन को सरलता से हृदयंगम करने की कामना से ही उन्होंने ग्रन्थान्त में उसका संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत कर दिया है। सम्प्रदाय के प्रति निष्ठा रखने वाले प्रत्येक श्रद्धालु को इस सिद्धान्त के स्वरूप को हृदयंगम करना चाहिये तथा व्रतोपवास आदि की पालना

की दृष्टि से शास्त्रसम्मत तिथिवेध का परिज्ञान कर एकादशी आदि व्रतों की पालना में सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की पालना करनी चाहिये।

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने सम्प्रदाय के अनुयायियों के उपकारार्थ– श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य रचित-**श्रीमन्त्ररहस्य षोडशी, प्रपन्नकल्पवल्ली, 'वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी, श्रीकृष्णप्रातःस्तवराजः, श्रीराधाष्टकं स्तोत्रम्** को भी मूलरूप में यहाँ प्रस्तुत किया है।

अपने कथन की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए श्री 'श्रीजी' महाराज ने भविष्यपुराणान्तर्गत **श्रीनिम्बार्क प्राकट्यचरितम्**' तथा **श्री निम्बार्क माहात्म्य प्रदर्शन ललित पद्यात्मक श्रीलघुस्तवराज स्तोत्रम्** एवं **श्रीमदौदुम्बराचार्यवर्य प्रणीतं श्रीनिम्बार्कस्तोत्रम्** को भी संपादित किया है। उन्होंने श्री औदुम्बराचार्य प्रणीत श्री निम्बार्क विक्रान्ति नामक ग्रन्थ से भी कुछ महत्त्वपूर्ण पद्यों को संकलित कर यहाँ प्रस्तुत किये हैं। उन्हीं के प्रमुख शिष्यों में स्मरणीय श्री गौरमुखाचार्य प्रणीत **श्री निम्बार्कसहस्रनामस्तोत्र** के भी कतिपय श्लोक यहां संकलित किये हैं। इन्हीं की द्वितीय रचना **'निम्बार्ककवचम्'** तथा **'नारद-नियमानन्द गोष्ठी रहस्यम्'** को भी यथावत् प्रस्तुत कर सम्प्रदायानुयायियों के साथ सर्वसाधारण का भी परम उपकार किया है।

अनेक गणमान्य अनुसन्धाताओं के भ्रमनिवारणार्थ भगवान् निम्बार्काचार्य का प्रादुर्भावकाल का चित्रण परमावश्यक मानकर उसका सप्रमाण विवेचन इस ग्रन्थ-रत्न का महत्त्वपूर्ण अंश है।

अन्त में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा का उल्लेख ज्ञानवर्धक होने के साथ ही अनेक भ्रान्तियों का निवारक भी है।

इस प्रकार श्री सुदर्शनचक्रावतार श्री नियमानन्दापरपर्याय भगवान् श्री निम्बार्क प्रभु के पावन चरित को सप्रमाण विवेचित करने के सत्प्रयास में मेरी स्वानुभूति है कि साक्षात् वीणापाणि शारदा सरस्वती मां ही 'श्रीजी' के रूप में प्रकट हुई है।

निवर्तमान अध्यक्ष,
संस्कृत-विभाग, राज. विश्वविद्यालय
एवं कला संकायाध्यक्ष
254, शास्त्री-सदन, खूंटेटा मार्ग
जयपुर 302001 (राज.)

इस सुरदुर्लभ देह को प्राप्त कर इसका उपयोग भगवत्परक नहीं किया तो संसार के नाना क्लेशों का उपभोग और अन्त में नारकीय यातनाओं के अतिरिक्त कुछ भी मिलने का नहीं।

–श्री 'श्रीजी' महाराज

भारतभारतीवैभवम् : देशभक्ति का आदर्श काव्य

— प्रो. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यह वैदिक वाक्य भूमि के लिए माता का स्थान निर्धारित कर मानव मात्र को उसके पुत्र के रूप में प्रतिष्ठापित करता है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपनी जन्म भूमि के प्रति महनीय लगाव रहता है, चाहे वह संसार के किसी भी कोने में रहे, जन्म-स्थान उसकी स्मृति का एक अमिट अंश बना रहता है। अतः वह जन्मभूमि उसको स्वर्ग से भी बढ़कर प्रतीत होती है। भगवान् श्री राम ने भी जन्मभूमि के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हुए कहा है--

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''।

माता एवं मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा का यह भाव भारतीय जनमानस में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए भारतीय साहित्य में भारत देश को आधार मानकर अनेक रचनाएँ हुईं, जिनमें से सुप्रसिद्ध बंगाली कवि बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वार रचित **'वन्दे मातरम्'** ने तो राष्ट्रगान का स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार हमारे राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने **'भारत-भारती'** शीर्षक से साहित्य सर्जना की। इसी राष्ट्रभक्ति भावना से प्रेरित होकर जगद्गुरु श्री निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री **'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य महाराज** ने **'भारत-भारतीवैभवम्'** नामक संस्कृत काव्य की रचना की। आचार्य **'श्रीजी'** महाराज का चिन्तन सार्वजनीन एवं सार्वभौमिक है, परिणामस्वरूप उन्होंने **''भारतभारतीवैभवम्'** के अतिरिक्त **'भारतकल्पतरु'** एवं **'भारतवीर गौरव'** नाम से दो काव्य हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए प्रस्तुत किये, जो सर्वथा मौलिक चिन्तन की देन हैं। कारगिल युद्ध का प्रसंग सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का विषय रहा है, जिसमें मातृभूमि की रक्षा के लिए अनेक वीरों ने प्राणोत्सर्ग किया। इस युद्ध में राजस्थान के वीरों की भूमिका अत्यधिक प्रशंसनीय रही और इसी से द्रवीभूतमना आचार्य **'श्रीजी'** ने वीरों के शौर्य का वर्णन करने के उद्देश्य से 'भारतवीर-गौरव' की रचना की।

संस्कृत काव्य **'भारत-भारती-वैभवम्'** के रचयिता **'श्रीजी'** महाराज का जन्म 10 मई, 1929 को स्वनामधन्य श्री रामनाथ शर्मा के यहाँ हुआ तथा मात्र 14 वर्ष की आयु में ही आपने जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर पद को सुशोभित किया। अद्वितीय प्रतिभा के धनी आचार्य **'श्रीजी'** ने संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें मातृभूमि को लक्षित कर तीन काव्यों का प्रणयन हुआ। संस्कृत भाषा में रचित **'भारतभारतीवैभवम्'** काव्य को विषय के दृष्टिकोण से मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है तथा इसमें विभिन्न छन्दों में रचित कुल 116 पद्य हैं, जिनमें भारत-भारती के ललित स्वरूप को 20 सुमधुर गीतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। ये गीतियाँ कला एवं भाव पक्ष के

साथ ही रस के दृष्टिकोण से अनुपम सिद्ध होती हैं। इन गीतियों में हिन्दी भाषा में स्वीकृत शैली की छाया स्पष्ट परिलक्षित होती है, जिसके अनुसार प्रत्येक गीति के अन्तिम चरण में **'श्रीराधासर्वेश्वरशरणो वदति'** इत्यादि का उल्लेख मिलता है।

'भारतभारतीवैभवम्' की गीतियाँ मणिमाला के समान हैं, जिनमें एक पद कौस्तुभ मणि का साम्य रखता है। आचार्यश्री ने भारत-वन्दना के रूप में अतीव सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत किया है—

जयति मदीया भारतमाता!
निर्मलसुभगा मणिमयरूपा, रम्या विविधगुणैरवदाता।
सस्यश्यामला परमविशाला, हिमगिरिधवला परिसञ्जाता।
राधासर्वेश्वरशरणस्य, चकास्ति चेतसि भारतमाता॥8॥

विश्वगुरुत्व की प्राप्ति करवाने वाली हमारी भारतीय संस्कृति एवं भारत देश धन्य हैं, जहाँ देवता भी जन्म लेने को लालायित रहते हैं। यह भारतवर्ष आध्यात्मिक उपासना के लिए प्रत्येक मानव के आकर्षण का केन्द्र रहा है और वर्तमान में भी है–

भारतधरणी परमोपास्या!
वैदिकसंस्कृतिकेन्द्रस्वरूपा, नित्यं विबुधजनैरभिलाष्या।
इह खलु मुनयः सुधियः सन्तो, वसन्ति सततं तैरभिभाष्या।
श्री राधासर्वेश्वरशरणो, वदति मुदेति मनोहरहास्या॥2॥

हमारी यह मातृभूमि केवल अध्यात्म का ही केन्द्र रहा हो, ऐसी बात नहीं है। जब जब धरा पर आक्रान्ता शत्रुओं की बुरी नजर पड़ी, हमारे वीरों ने अपने शौर्य का लौहा मनवाया, चाहे वह द्वितीय विश्वयुद्ध की स्थिति रही हो या फिर चीन और पाकिस्तान के आक्रमण की स्थिति। इसी कारण इस धन्य धरा को सदा ही **'वीर-प्रसविनी'** के नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है, यही राष्ट्रीय भावना आचार्य **'श्रीजी'** के इन शब्दों में स्पष्टरूप से गुञ्जित होती है–

वीरधरायां वसन्ति वीराः।
भारतरक्षणहेतोः सततं, निबद्धकक्षा बलिष्ठधीराः॥
व्रजन्ति परितः शस्त्रपाणयो, देशसुनिष्ठा धृतनवचीराः।
श्री राधासर्वेश्वरशरणो, निगदति न हि ते भवन्त्यधीराः॥7॥

यह वह देश है जो सुख शान्ति का पुजारी है तथा सदा सम्पूर्ण विश्व को शान्ति का पाठ पढ़ाने के लिए **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का उद्घोष करता आया है। यहाँ हिंसावादियों के लिए कोई स्थान नहीं है, हाँ, यदि कोई क्रूरतम शत्रु भी **'त्राहि माम्'** का अतिनाद करते हुए शरणागत होता है तो सदा ही

उसको आश्रय मिला है, ऐसा शरणागतवत्सल भारत सभी की श्रद्धा का केन्द्र है। हम उसको नमस्कार करते हैं–

शान्तिं सुखं भुवि तनोति यथा जनेभ्यः
सत्प्रेरणामपि करोति तथैव नित्यम्।
एतादृशं निखिलदानपरं प्रसिद्धं
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम्॥17॥

सदाऽऽश्रयो वै शरणागतानां
हिंसारतानां नहि यत्र पूजा।
विमुक्तहिंसो लभते प्रतिष्ठां
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥34॥

उपर्युक्त कारणों का आधार हमारी आध्यात्मिक एवं धार्मिक भावना ही है। यहाँ सम्पूर्ण शिक्षा दीक्षा गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी तथा धार्मिक आस्था के प्रतीकभूत तीर्थस्थल एवं मन्दिर जितने भारत में हैं, उतने धार्मिक स्थल शायद ही कहीं किसी देश में हों। इसीलिए भारतीय लोगों में धार्मिक भावना, दया दाक्षिण्यादि गुण, अहिंसा, शरणागतवत्सलता का भाव पूर्णरूप में परिलक्षित होता है—

देवैरुपास्यं मुनिभिश्च सेव्यं
धीरैः समीड्यं कविभिः सुगीतम्।
वीरैर्वरेण्यं भुवने सुरम्यं
श्रीभारतं नौमि मुकुन्दधाम॥30॥

इस काव्य का द्वितीय खण्ड 'भारती' से सन्दर्भित है। यहाँ 'भारती' शब्द का अभिप्राय संस्कृत भाषा से ही लिया गया है, यद्यपि प्रारम्भ की प्रथम गीति माँ शारदा की स्तुति रूप में प्रस्तुत है। रचनाकार की संस्कृत के प्रति अगाध श्रद्धा होने के परिणामस्वरूप एक अध्याय संस्कृत भाषा की विशेषता को प्रकट करने के लिए निर्मित किया गया है। आचार्य श्रीजी स्वयं संस्कृतज्ञ होते हुए भी भगवान् सर्वेश्वर से अतीव विनतभाव से प्रार्थना करते हैं कि हे नाथ! मेरा चित्त पूर्णरूपेण संस्कृतमय हो–

सर्वेश्वर! सुखधाम! नाथ! मे संस्कृतरुचिरस्ति।
संस्कृतमनने संस्कृतवदने, संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे,
चेतो नितरां भवतात्कृपया, ममाभिलाषोऽस्ति॥
श्रुतिशास्त्रेषु मनुशास्त्रेषु, नयशास्त्रेषु रसशास्त्रेषु,
प्रगतिस्तीव्रा भवतादिति, मे प्रचुरभावनाऽस्ति॥

लेखनपटुता प्रवचनपटुता, कर्मणि पटुता सेवापटुता,
सततं माधव! भवतादिह मे परम-याचनाऽस्ति॥
वचने मृदुता चेतसि रसता, स्वात्मनि वरता दृष्टौ समता
राधासर्वेश्वरशरणस्य प्रबलकामनाऽस्ति॥39॥

आज के वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त यदि कोई भाषा है, तो वह संस्कृत है। इस भाषा का व्याकरण इतना सुसंघटित एवं परिष्कृत है कि आज इसका स्थान कोई अन्य भाषा नहीं ले सकती। सम्भवतः यही कारण है कि इसे हम पहले से ही सभी भाषाओं की जननी स्वीकार करते आ रहे हैं, अत एव आचार्यश्री इसकी वन्दना करते हुए कहते हैं–

समग्रभाषा-जननीमधीश्वरीं
प्रजाकरीं मुक्तिकरीं महेश्वरीम्।
रसालरूपां रसदानतत्परां
भजे सदाहं हृदि देवभारतीम्॥51॥

ऋषि मुनियों द्वारा संरक्षित एवं परम्परागत संस्कृति के ज्ञान का आधार तथा श्रुति, स्मृति, ज्ञान, विज्ञान के भण्डार से परिपूर्ण यह संस्कृत भाषा किंकर्त्तव्यमूढ़ता की स्थिति में पथ प्रदर्शन का कार्य करती है तथा इसका विशाल साहित्य विवेक जाग्रत कर यथार्थ का ज्ञान करवाता है–

विचारमूढाय पथप्रदर्शिनीं
प्रपन्नविघ्नौघविनाशकारिणीम् ।
कवीन्द्रचित्तेषु मुदा विलासिनीं
भजे सदाहं हृदि देवभारतीम्॥53॥

भारत की पुण्य धरा से जुड़ी गीता, गंगा और गौ के महत्त्व का वैज्ञानिक पक्ष आज विश्व के मानव मात्र द्वारा स्वीकारा जा चुका है तथा इसके प्रति उसका श्रद्धा भाव है। आचार्यश्री ने भी अपने काव्य में भारत एवं भारती की सत्ता का आधार इसी गकारत्रयी को स्वीकार किया है तथा कतिपय पद्यों में इसकी महत्ता का प्रतिपादन किया है।

उपसंहार के रूप में आचार्यश्री ने भारतीयों को दायित्व का बोध करवाने के उद्देश्य से **'जनान् प्रत्युद्बोधनम्'** शीर्षक से कुछ अनुष्टुप् पद्यों की रचना भी की है, जिनमें माता, पिता, शिक्षक, प्रशासक, छात्र, युवक तथा मानव मात्र के लिए उपदेशात्मक वचनों का उल्लेख है, इसके साथ ही कपट, त्याग, मद्य- निषेध, छात्रों द्वारा कुसंगति त्याग आदि के बारे में बताते हुए कर्त्तव्यों का विधान बताया है। शिक्षकों चिकित्सकों प्रशासकों की सेवा-परायणता अनिवार्य सिद्ध की है। आचार्यश्री पर्यावरण के प्रति अत्यधिक चिन्तित है। अतः गंगा, यमुना आदि नदियों के साथ ही मंगलकारी गोवर्द्धन, हिमालय आदि पर्वत एवं पशु पक्षियों तथा वनों के संरक्षण को बल देने हेतु कहा है–

अवनीयानि तीर्थानि वनानि विविधानि च।
तथैव खग-वृन्दानि पशुवृन्दानि मानवैः॥80॥
एवञ्च ह्यवनीयास्ते सर्वमंगलसम्प्रदाः।
गोवर्द्धनहिमाद्र्यादिपर्वता भुवि संस्थिताः॥82॥

राष्ट्ररक्षा के लिए भी राष्ट्रनायकों, युवकों से राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव की अपेक्षा की गई है

भारतवर्षदेशस्याखण्डतार्थं सुनायकैः।
तस्य गौरवरक्षार्थं यतनीयं निरन्तरम्॥100॥

इस प्रकार सिद्ध होता है कि रचनाकार की दृष्टि अतिसूक्ष्म है। परिणामस्वरूप यह काव्य भारत एवं भारती के स्वरूप को 'गागर में सागर' के समान संजोये हुए है।

प्रोफेसर-साहित्य
2381, खजाने वालों का रास्ता,
चाँदपोल बाजार, जयपुर।

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

दुर्व्यसनी कभी भी समाज में प्रतिष्ठा नहीं पा सकता।

❊

दुर्व्यसनी स्वयं को तथा निज बन्धुजन को दग्ध करता रहता है।

❊

दुर्व्यसन मानव का प्रबल शत्रु है।

❊

धर्माचरण का निरन्तर सेवन करने वाला जन सदा निर्मलान्तःकरण अजातशत्रु एवं सर्वजनप्रिय होकर अमित शान्ति की प्राप्ति करता है।

❊

दुर्व्यसन रहित होकर धर्माचरण की ओर अभिरत होना अपना एवं अपने समाज तथा राष्ट्र का परम हित है।

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज रचित

संस्कृत स्तोत्रों में हार्दिक भावोद्गार

— श्री रामस्वरूप गौड़

आचार्य श्री की यों तो समस्त रचनायें ही स्तुतिपरक होने से भगवान् के रूप-लीला-गुण-विरद से परिपूर्ण, स्मरण-ध्यान आत्मनिवेदन परक हैं, किन्तु कई पदों में स्वयं का हार्दिक भाव द्रवित होकर रचना में प्रवाहित हुआ है।

भावुक साधक अपने इष्ट की स्मृति, चिन्तन, कीर्तन, सेवादि में सतत संलग्न रहता है, तब हृदय में दैन्य भावार्द्रवता उत्पन्न होती है। इस भावावस्था में हावभाव, सेवा, विनय आदि जो क्रिया-कलाप होते हैं, वे स्वतः हार्दिक होते हैं। प्रभु के प्रति यह हार्दिक भावापन्नता ही प्रेमविशेष-भक्ति का स्वरूप है।

''श्री राधाशतक'' के प्रारम्भिक लेख में लिखा है– आराधना क्रम में प्रगाढ़ भक्ति के साथ जब आराध्य का चिन्तन होता है, तब तन्मयता की स्थिति आती है। इस तन्मयता में आनन्दानुभूति से अनन्तानन्तभाव हृदय में समुद्भूत होते जाते हैं। वे ही भाव जब शब्द रूप में बाहर व्यक्त होते हैं, तब वे मनोहर स्तोत्र बनकर श्रद्धालु भावुक जनों के लिए भक्तिपूर्ण उपासना में परिणत हो जाते हैं।

पढ़ने-सुनने गुनने वालों को यह भावोद्गार हार्दिक भक्ति रस का आस्वादन कराते हैं–

कथन्न रे मानस! मोह-मुग्ध-
श्रीधाम वृन्दावनमेषि तूर्णम्।
यत्राऽस्ति राधाहरि-नित्यलीला
तद्वासलिप्सा सुतरां विधेया ॥6॥ (श्री युगल गीति शतकम्)

विषयों की आसक्ति ही मन की मुग्धता है। जब तक मन जगत् से मोहित है, प्रभु की ओर नहीं जाता। जो मन प्रभु में आसक्त है, वह जगत् में रहते हुए भी श्रीहरिकृपा-वैभव में ही रमण करता है। इस दोहरी गति के मन को जगत् की मोह मुग्धता से ताड़ित करते हुए कहा है– हे मानस, श्रीधाम वृन्दावन की ओर क्यों नहीं जाता? 'मानस' शब्द से अन्तः बाह्य सब कृति वृत्तियां आ गयी हैं जो मनस् चित्तवृत्ति में धारण होती है। मोह ग्रस्त मानस का केन्द्र जगत् होता है व श्रद्धावान् मानस का केन्द्र सात्विक सदाचारमय कृतिवृत्ति के साथ इष्ट का, धाम, लीला-चरित्र, नाम-स्वरूप और विरद होता है। जो मन के केन्द्र हैं वे ही लक्ष्य होते हैं, वे ही ध्येय होते हैं। अतः यहाँ कहा है– हे मन, मोह मुग्ध होकर अपने लक्ष्य से विचलित क्यों होता है? अपने लक्ष्य पर केंद्रित हो श्रीधाम वृन्दावन की ओर चल, जहां अपने आराध्य, अपने ध्येय श्री राधा हरि हैं और इन के नित्य लीला विहार का आनन्द है। इतना ही नहीं, यहाँ श्री धाम में भलीप्रकार भावलिप्सा से आबद्ध होकर रहने की वाञ्छा कर।

वैराग्यवृत्तिं परिधार्य सम्यग्
वृदावने माधव-धाम रम्ये।
वसन्ति नित्यं युगलाङ्घ्रिलीना
धन्यास्तु ते वैष्णव-नामधेयाः ॥7॥ श्री.युगल गीति

जगत् विषय की मोह (आसक्ति) मयी ऐषणाओं से मनस् (चित्त) का उपरम हो जाना वैराग्य है। निष्काम भाव से अपने कर्तव्य कर्म को करना और संयम पूर्वकर रहना वैराग्य की भली प्रकार अर्थात् उत्तम धारणा है। वैराग्य धारण के साथ प्रभु-श्रद्धा-शरणागति पूर्वक भक्ति-भाव में प्रवृत्त रहना वैराग्य वृत्ति है।

मोहमाया आसक्त सभी कर्म अविद्या है, अज्ञान है। सर्वज्ञ सर्वनियन्ता सर्वाधार श्री राधासर्वेश्वर की शरणागति पूर्वक निष्काम कर्तव्य कर्म करते हुए प्रभु भक्ति में तत्पर रहना, यह वैराग्य वृत्ति-धारक की ज्ञान धारणा है। वस्तुतः वैराग्य वृत्ति धारक विद्या व अविद्या को भली प्रकार जान जाता है व विद्या अर्थात् ज्ञान का अवलम्बन ले लेता है। यहां पद्य में वैष्णव नामधेय, वैराग्यवान् सत्पुरुषों को हार्दिक धन्यवाद प्रेषित किया गया है, जो श्रीधाम वृन्दावन में रहते हुए श्री राधा-माधव की सेवाभक्ति में लीन है।

श्री धाममह्यारजसा स्वदेहं
प्रालिप्य सर्वं रसिका वरेण्याः।
स्वापास्यनिष्ठाऽभिरताः रसज्ञाः
सौभाग्यवन्तो विहरन्ति धाम्नि ॥8॥ श्री युगल गीतिशतकम्

श्री धामवृन्दावन की परम-पवित्र-रज से अपनी सम्पूर्ण देह को विभूषित कर अपने उपास्य की निष्ठापूर्ण भक्ति में संलग्न हैं– वे रसवेत्ता, रसिकजन, साधु, भक्त परमसौभाग्यशाली हैं। अपने इष्ट श्यामा-श्याम की लीला-भूमि वृन्दावन की रज को भावापन्न होकर अपने शरीर पर मल लेना यह विशेष प्रेमराग का परिणाम है। निश्चय ही जो भगवद् भावानुराग से सम्पन्न है, वे पूज्य हैं, आदरणीय हैं।

यहाँ दोनों पद्यों में श्रीधाम का व साधु भक्तों के प्रति हार्दिक आदर व धन्यवाद प्रकट किया गया है।

संत्यज्य सर्वं भवमोह-जालं
भयावहं भीषणकाल-रूपम्।
नित्यं भजस्व व्रजधाम मूलं
वृन्दावनं रे मन! आप्तमृग्यम् ॥11॥

यह संसार तो मोह का जाल ही है। जो इस जगत् में पुत्र, वित्त, मानादि ऐषणाओं में बंधकर कर्म प्रवृत्त रहता है, वह काम, क्रोध, ईर्ष्यादि विकारों द्वारा मोह जाल को लपेटता रहता है जगत्जाल से

निवृत्त नहीं होता, जगत्-क्लेश की आवृत्ति से पीडित रहता है। इस जगत् क्लेश की निवृत्ति के लिए चेतना प्रदान करता हुआ यह श्लोक है।

हे मन ! भीषण जगज्जाल रूपी जगद् आसक्ति का त्यागकर और उस व्रजधाम तथा धामाधिपति श्री राधा-माधव का भजन कर, जिन का निवृत्तकाम साधुजन भजन करते हैं।

चल रे चेत! सुचपल! श्री वृदारण्य धाम-वासय।
पथि मा चिन्तय नितरां कृष्णः कृशलं करोत्याशु॥12॥

ये चित्त बड़ा चञ्चल है! मीरांजी ने कहा है– यो मन म्हारों बड़ा हरामी ज्यूँ मदमातो हाथी। सद्गुरु हाथ धर्यो शिर ऊपर अंकुश दे समझाती॥'' यह मन मदमाते हाथी के समान चञ्चल है। गुरु रूपी वरदहाथ अर्थात् नाम दीक्षा शिष्टाचार संस्कार के पालन द्वारा बार बार स्मरणभजन से समझता है। ''श्री वृन्दावन सीमा के बाहर हरि हू को न निहार'' (श्री भट्ट) के अनुसार श्री वृन्दावन धाम व वृन्दावनाधीश की ध्यान व उपासना यहां चरितार्थ हुई है।

हे चित्त ! चञ्चलता त्याग कर वृन्दावन धाम को चलो। मार्ग की चिन्ता मत करो। क्योंकि ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' (गीता) भगवान् ने स्वयं कहा है कि – भक्तों के योगक्षेम की मैं स्वयं रक्षा करता हूँ। अतः विश्वास कर भगवान् श्री कृष्ण सब प्रकार से मंगल करेंगे।

कदा श्रीगोविन्दाऽधररस-सुधाऽऽस्वादनरते
व्रजाऽऽलीनामन्तर्मनसि ममतावर्द्धनपरे।
रसज्ञैराराध्ये! प्रचुररस-दान-प्रमुदिते
भवेत्त्वन्निस्वानो हरिमुरलिके! मे श्रुतिगतः॥28॥

वंशी भगवान् श्रीकृष्ण के मन-वचन-प्राण से जुडी हुई, भाव रस गंगा का वह प्रेम रस स्रोत है, जिस से निकलता हुआ स्वर भावुक भक्त सखी जनों को दिव्य प्रेम रसामृत का पान कराता है। श्रीकृष्ण की वंशी स्वर डोरी से आबद्ध होकर गोपियाँ निकुञ्ज के महारास में प्रविष्ट हुई थी। आज भी भावुक प्राज्ञजन उपासना परिपक्व होने पर इस वंशी स्वर का नाद सुनते हैं। इस पद्य में रसज्ञे का उद्धरण देकर इस तथ्य को पुष्ट किया गया है।

श्री गोविन्द के अधरामृत निसृत, व्रज गोपाङ्गनाओं और रसिक जनों को मधुरनाद का दान कर प्रेमानन्द वर्धन व प्रेमानन्द से आबद्ध करने वाली हरिमुरली! आप का रस प्लावन करने वाला वेणुनाद मुझे कब श्रवण करने का सौभाग्य मिलेगा?

शृङ्गार-कुञ्जे नवकिङ्करीभि-
र्नीराजनेनाऽञ्चित-मञ्जुलाङ्गीम्।

कोटीन्दुलावण्य-मुखारविन्दां
विलोकयामीति कदा हि राधाम्।।38।।

श्री राधाजी अमल-निर्मल दिव्य स्वरूपा है। दिव्य ही इन का शृंगार, अलंकार, व अर्पित नैवेद्य आदि है। दिव्य ही इन के सखीजन परिकर है। दिव्य भावा ही इन की सेवा, श्रद्धा और भक्ति है। किसी भी प्राकृत विकार से यह सर्वथा परे हैं, सर्वदा नव्य-दिव्य है। चन्द्रमा आदि की लौकिक प्रभा से सर्वथा विशिष्ट और दिव्य लावण्य प्रभायुक्त है। यह परमानन्द पूर्णा है ''न तत्र सूर्यो भाति न च चन्द्र-तारकाः (क.उ.) के अनुसार यह परमेश्वरी स्वयं प्रभावती हैं।

आचार्यश्री इस पद्य से अभिलाषा करते हैं– नित्य नवीन स्वरूपा, शृंगार कुञ्ज में सखी परिकर द्वारा शृंगारित कोटिचन्द्र सम सुन्दर मुखारविन्द वाली श्री राधाजी का मैं कब दर्शन करूँगा। ''विलोकयामीति कदा हि राधाम्'' अर्थात् मैं ऐसी ही राधाजी का कब दर्शन करूँगा– यह भावाभिव्यक्ति बड़ी भाव उत्कण्ठा से प्रकट हुई है।

कदा राधिके ते पदाम्भोज-युग्मं
महाभाव-रूपे प्रिये सौख्यपुञ्जे।
सदाऽभ्यर्थमाने मुकुन्देन कुञ्जे
प्रसन्नस्तवाऽहं द्रुतं द्रष्टुमीहे।।40।। (युगल गीतिशतकम्)

''महाभाव'', आनन्द भाव है। भक्ति सूत्र में भक्ति की अन्तिम परिणति बताई गई है– ''आनन्दो भवति, अमृतो भवति, सिद्धो भवति, तृप्तो भवति'' इस रसानुगा भक्ति में भक्ति की अन्तिम परिणति ''महाभाव'' कहलाती है। श्री राधाजी महाभाव स्वरूपा हैं, महाभाव प्रदान करने वाली हैं, महाभाव की स्वामिनी है।

महाभाव स्वरूप स्वामिनी श्री राधाजी से दर्शन रूपी कृपा कटाक्ष की अभ्यर्थना की गई है। हे महाभाव रूप सौभाग्य सुख की आगार, श्री मुकुन्द द्वारा समादृत श्री राधे! आप के शरणागत हुआ मैं आप के चरणारविन्द का कब दर्शन पाऊँगा। ''द्रुतं'' शब्द से यह भाव भी लक्षित है किं कृपया शीघ्रता से दर्शन दीजिये।

नाऽहं समीहे धनरूपराशिं
न च प्रतिष्ठामथ नो कवित्वम्।
स्वर्गादि-लोकं न कदाऽपि राधे !
वाञ्छामि चैकां तव पादभक्तिम्।।46।। (युगल गीतिशतकम्)

निष्काम भाव पूर्वक भगवद् भजन ही भक्ति का यथार्थ स्वरूप है। भक्त की लगन मात्र भगवान् के प्रति होती है। अतः भक्त की कामना मात्र भगवद् भक्ति ही होती है।

यही वाञ्छा इस पद्य में प्रकट की गई है– हे राधे! मैं विपुल धन राशि की इच्छा नहीं करता, न मान सम्मान और कवित्व ही चाहता हूँ, न स्वर्ग की कामना रखता हूँ। मैं तो एक मात्र आप के श्रीचरणों की भक्ति चाहता हूँ।

व्रजेश! राधावर! नन्दनन्दन !
मुकुन्द! योगेश्वर! कृष्ण ! माधव!
निकुञ्ज-गोपीजन-वल्लभ-प्रभो!
कृपाकटाक्षानभिवर्षयाऽच्युत॥46॥ (युगल गीतिशतकम्)

हे व्रजेश, राधावर, नन्दनन्दन मुकुन्द, योगेश्वर, श्रीकृष्ण, माधव, निकुञ्ज-गोपीजन-बल्लभ प्रभो! हे अच्युत! अपने कृपा कटाक्ष से हमें अभिसिंचित करो।

यहां दश नामों से पुकारा है। इस का भी मार्मिक अर्थ है।

प्रसीद गोविन्द! दया-सरित्पते!
भवाटवी-क्लेश-सुकम्पितो मुहुः।
त्वदंघ्रिरक्तोत्पल-धूलिलोलुप-
स्तथाऽपि राधाप्रिय! माययाऽऽहतः॥50॥ (युगल गीतिशतकम्)

हे दयासागर! मैं आप के चरणकमल की सेवा करने को लालायित हूँ , किन्तु हे राधाप्रिय! आप की प्रबल माया से आहत हुआ भवबन्ध के नाना क्लेशों से बार-बार कम्पायमान हूँ। अतः हे गोविन्द! कृपा कीजिये अर्थात् माया-निवृत्ति पूर्वक आप के चरण कमलों की भक्ति प्रदान कीजिये।

''अनादि माया-परियुक्त रूपं त्वेनं विदुर्वै भगवद् प्रसादात्'' वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में है। इस माया का आवरण भगवत् कृपा से ही उच्छेदन हो सकता है। तुलसीदास जी ने भी कहा है– ''जो बांधे सोई छोड़ें'' यहाँ ''प्रसादात्'' के अनुरूप ही 'प्रसीद' शब्द का प्रयोग हुआ है।

न जाने कदाऽनन्त! मे चित्तभृङ्गोऽ
स्थिरोऽति प्रमत्तो हरेर्भक्तिशून्यः।
अहो श्रीमुरारे! दयाऽगाधसिन्धो!
प्रवृत्तो द्रुतं ते भवेदंघ्रियुग्मे॥55॥ (युगल गीतिशतकम्)

हार्दिक दीनार्त भाव से प्रभु को पुकारा गया है जैसे डूबता हुआ हाथी एक मात्र प्रभु को ही सहारा मानकर पुकार रहा था– हे नारायण ! आओ अब मेरा कोई सम्बल नहीं है। वैसे ही– हे अनन्त! हे दया के महासागर! हे मुरारि! हरि भक्ति शून्य चञ्चल चित्त आप के चरणारविन्द में कब संलग्न होगा? किसी

सक्षम से पूछा जाता है कि हमारा यह काम कब तक हो जायेगा? यहां प्रभु से पूछा है– आप के चरणों में मन कब लगेगा? अर्थात् आप कब कृपा करके अपने चरणों की भक्ति प्रदान करेंगे। "द्रुतं" कहकर तो यह उत्कण्ठा भी प्रकट कर दी की अब बिना विलम्ब के शीघ्र कृपा कर दीजिये।

कृपालो! दयालो! प्रपन्नाघ-हारिन्!
घनश्याम! कृष्णा-व्रज-प्राण! पूर्ण।
यशोदाङ्कबाल! प्रियाप्रेमलिप्सो
विधायाऽनुकम्पामनन्तां प्रसीद॥56॥ (युगल गीतिशतकम्)

इस पद्य में दस नाम से पुकार कर आत्मनिवेदन किया है– दयार्द्र होकर अनन्त कृपा की वर्षा कीजिये।

ललिता-हितु चम्पिकादिभि–
र्नवनित्याङ्ग-सखीगणैः सदा।
व्रजराज-पदाब्ज-रेणवः
परिसेव्या मम भान्तु मानसे॥60॥ (युगल गीतिशतकम्)

हे दीनबन्धु व्रजराज! यह सम्बोधन काव्य में लुप्त, किन्तु भाव में प्रकट है। ललिता, हितु, चम्पिका आदि नित्य नवस्वरूप सहचरी गणों द्वारा परिसेव्यमान आप की चरणकमल रज रेणु अर्थात् आपकी पदारविन्द भक्ति मेरे मानस में कब भासमान होगी।

हे कृष्ण पाहि ! नितरां विफलं प्रपन्नं
कामादिघोररिपुभिः प्रहितैश्च तीक्ष्णैः।
नानाविधैरतिभयावहतीव्र-वेगैः
संविध्यमानमिषुभिः खलु जर्जरं माम्॥61॥

विषय-कामादि कर्मों को या विकारों को क्लेश कहते हैं, घोर भी कहते हैं और ये ही शत्रु कहलाते हैं। ईर्ष्या, संशय व विविध कष्टकारक होने के कारण ये भयावह होते हैं।

हे कृष्ण ! भयावह विषयासक्त कामदि घोर शत्रुओं ने भेदने हेतु तीव्र व तीक्ष्ण वणों के प्रहार किये हैं। हमारी क्षमता सीमित है। आप परम सक्षम हैं। अतः शत्रुओं से मुझ शरणापन्न की रक्षा कीजिये।

विविधभवविपत्तिं प्रत्यहं वीक्ष्य मर्त्यः,
प्रभवति न विरक्तौ सर्वथा विस्मयो नः।
इह पुनरपि मोहं याति कष्टं निकृष्टं
भगवति ! नितरां रे मूढ चित्तं विधत्स्व॥63॥ (युगल गीतिशतकम्)

यह सर्वथा आश्चर्य की बात है कि मनुष्य प्रतिदिन नानाविध जगद् विपत्तियों को देख-सहकर भी वैराग्य की ओर प्रवृत्त नहीं होता। मोह-ग्रस्त हुआ इस असार संसार में बार-बार कष्ट को प्राप्त होता है।

अविद्याग्रस्त ऐषणादि क्लेश-कर्मों से विविध ताप की प्रवृत्ति होती है। काम-मोह प्रवृत्त कर्मों से कभी हार्दिक सुख नहीं मिला। अन्त में व्यथा ही प्राप्त होती है और संसार मे जन्म-मृत्यु रूप आवागमन भी बना रहता है। अतः यह देखते-भोगते हुए भी अविद्याग्रस्त मानव सचेत नहीं होता। यह आश्चर्य ही है। आदिशंकराचार्य ने चर्पट पञ्जर में कहा ''पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते'' ऐसी ही इस पद में चेतावनी है।

भवाम्बुधौ प्रवाहितं त्रितापतापतापित–
मनर्थपुञ्जसम्भृतं मनोरुजाप्रपीडितम्।
मुकुन्द! माधव! प्रभो! शरण्य! दीनवत्सल!
त्वदंघ्रिपङ्कज़ाश्रितं कृपानिधे! हि शाधि माम्॥64॥

प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण कर्म के प्रभाव से, जगद् विषयक कर्मों में ही जीवन का प्रवृत्त रहना या इन्हीं में उलझा रहना, भवसिन्धु में प्रवाहित रहना कहलाता है। प्राकृत सिद्धान्त के अनुसार इन कर्मों से तीन तरह के कष्ट, विघ्न और पीड़ायें प्राणी को होती है। दैहिक-पीड़ा, रोगादि कष्ट, भौतिक विपन्नता आदि, दैविक-प्राकृतिक आपदा, ये सभी तरह के विपर्य्यय कर्म के परिणाम व्यथा जनक, पतन-कारक व अनर्थ हैं। यह बराबर संगृहीत होने पर भार जनक हैं। इस अनर्थ भार से मानसिक क्लेश विपरीत धारणा स्फुरण होती है, काम, मोह, ईर्ष्यादि विकार उत्पन्न होते हैं, जो यहाँ दीनवत्सल भगवान् से प्रार्थना की गई है। क्योंकि प्रभु ही संसार के इन अनर्थों से बचा सकते हैं। अतः हे प्रभु त्रिविध तापों से संतप्त नानाविध अनर्थों के भार से युक्त मनोरुज से ताडित होकर संसार सिन्धु में बहते हुए मुझे, कृपा-सिन्धु संभाल लीजिए।

संसार-राग-परिताप-समूहतप्तो
गोविन्द-भक्ति-विमुखो गुणहीन-दीनः।
विद्या-विराग-रहितो बलकान्ति-शून्यो
हे कृष्ण! ते पदसरोजरतिं समीहे॥65॥ (युगल गीतिशतकम्)

जो गुणवान् है, बल, कान्ति विद्यायुक्त व धनवान् है, जिसे यह सब अपने पास होने का अभिमान है और जिसको इन के सामर्थ्य पर विश्वास है, वह तो जगत् की क्षमताओं का ही उपासक है। वह तो इन्हीं पर आश्रित है, वह परमेश्वर पर आश्रित नहीं है और उसे परमेश्वर का आश्रय मिलता भी नहीं। परम प्रभु का आश्रय तो उसे ही मिलता है, जो विद्यावान्, कान्तिमान्, बलवान् हो, चाहे न भी हो, अभिमानशून्य अकिंचन बना रहता है। प्रभु को ही सर्वेश्वर सर्वसमर्थ समझता है और उन्हीं का आश्रय

लेता है। सूरदास जी ने कहा "मो सब कौन कुटिल खलकामी।" उसे ही भगवान् के पद सरोज की प्रीति मिलती है।

जगत् का अभिमान और प्रभु का आश्रय यह दो ध्रुव एक जगह नहीं रह सकते। इस पद्य से यही भाव प्रकट हुआ है।

मैं जगद्विपत्ति समूह से संतप्त भक्ति-विमुख गुणहीनदीन, विद्या, वैराग्य, रहित, बल-कान्ति शून्य हूँ, हे कृष्ण ! आप के चरणारविन्द के अनुराग की अभिलाषा करता हूँ।

क्लिश्यन्ति लोकाः सततं पृथिव्यां
सत्त्वेऽपि कृष्णावसुधा समुद्रे।
ते ज्ञानहीना निरये पतन्ति
दौर्भाग्यमेषां किमहो वदामि ॥66॥ (युगल गीतिशतकम्)

अभिमान शून्यता पूर्वक ईश्वर को सर्वसमर्थ अनुभव करते हुए परमप्रभु में श्रद्धा होना निष्काम कर्म करते हुए प्रभु पर आश्रित हो जाना ज्ञान है, विद्या है। इसके विपरीत क्षणभंगुर पदार्थों की भोगेच्छा करते हुए धनसम्पदा बलादिकों को समर्थ मानना व इन के लिए सकाम कर्म करना अविद्या और अज्ञान है। यह मन अविद्या या अज्ञान से आसक्त होकर पतित होता है और पतित कृति-वृत्ति से आवृत होकर घोर क्लेशों को भोगता हुआ नरकों में पड़ता है। न्याय-अन्याय अच्छे बुरे कर्मों का परिणाम सब जानते है। दुर्भाग्यवश लोग फिर भी सचेत नहीं होते। यही इस पद्य में कहा गया है।

इस पृथ्वी पर श्रीकृष्ण नामामृत सिन्धु के विद्यमान रहने पर भी इस से लाभ न उठाकर अज्ञानीजन क्लेश भोगते हुए घोर नरकों में पडते है, यह बड़े कष्ट की बात है। इन के दुर्भाग्य का कहां तक वर्णन किया जाये।

समीहे नैव सम्पत्तिं कवितां न च केवलाम्।
रसस्निग्धां पराभक्तिं वाञ्छामि नन्दनन्दने ॥67॥ यु.गी.

जगत् सम्पदा की कामना का निरसन करते हुए यहाँ पराभक्ति की विनम्र वाञ्छा प्रकट की गई है।

संस्कृतिक्लेशसंतप्तः कामाद्यरिशरार्दितः।
प्रमत्तः पथविभ्रान्तो याचे हरिरनुग्रहम् ॥69॥ (युगल गीतिशतकम्)

संसार क्लेश संतप्त कामादि शत्रुओं से आहत को, हे कृष्ण! हे हरे अनुग्रह करके बचा लीजिये।

हे प्राणनाथ! विविधाऽघकदम्बपूर्णो
विश्वाऽऽमलस्य परिताप-नितान्तखिन्नः।
सम्प्रार्थये रसिकवत्सल! कृष्णचन्द्र !
त्वत्पादपकंजरतिर्हृदये भवेन्मे ॥70॥

हे भक्तवत्सल! हे प्राणनाथ! यह प्राण उस आत्मा से ही उत्पन्न हुये हैं और उन्हीं द्वारा शासित और उन में सदैव बंधे हुए हैं। मलावरण से यथार्थ बोध नहीं होता। वे आत्मा परमात्मा श्रीकृष्ण हैं जो अमलात्मा सखीजनों के सर्वस्व हैं (यह उपनिषद् कहती है)। अतः यहां प्राणनाथ शब्द प्रयोग किया गया है।

हे कृष्ण ! आप के चरणारविन्दका दृढ़ अनुराग दे दीजिये। प्रभो ! न मैं स्वर्ग वैभव चाहता हूँ, न संसार के भोग चाहता हूँ। मैं तो आप की भक्ति की ही अभिलाषा करता हूँ।

रात्रौ राधा दिवा राधा श्रीशं राधाञ्च राधिकाम्।
सततं राधिकां राधां स्मरामि राधिकां पुनः ।।41।। श्री राधा-राधना
गृहे राधां वने राधां स्थले राधाञ्च राधिकाम्।
अभ्रे राधां जले राधां स्मरामि राधिकां मुहुः ।।75।। श्री राधा-राधना
प्रभाते राधिकां दिव्यां सायं राधां रसावहाम्।
मध्याह्ने राधिकां राधां स्मरामि सर्ववैभवाम् ।।76।। श्री राधा-राधना

दिन, रात, घर, वन, स्थल, जल, प्रभात, सायं, सब जगह प्रतिक्षण प्रतिपल श्रीकृष्ण सहित राधा का ही स्मरण हो, यही अभिलाषा है।

"**श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः**" व **स्तवविंशतिः** व **माधव-प्रपन्नाष्टकम्** में बहुधा हार्दिक भावोद्गार है, जिन में तत्त्व-दर्शन, मधुर भक्ति उपदेश सब कुछ है।

व्यर्थं भ्रमन्तीह जना धनार्थं
व्यर्थं समिच्छन्ति सदा प्रजार्थम्।
सर्वेश्वरे चेदनुरागः बुद्धि–
निश्चप्रचं संलभतेऽखिलार्थम् ।।62।।

दो तरह के अनुराग हैं, एक रजोगुण उत्पन्न वासना गत अनुराग और एक सात्विक श्रद्धासम्पन्न परमप्रभु से अनुराग। परम प्रभु से अनुराग करने वाला अनासक्त भाव से कर्तव्य कर्म करता हुआ निरन्तर प्रभु को भजता रहता है। इसे श्रेय कर्म कहते हैं। ऐसे मनुष्य को जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की परम प्राप्ति हो जाती है। गीता में कहा है–

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।। (अ. 3, श्लो. 19)

जगत् आसक्तिवाला संसार के क्लेश प्राप्त करता है। इन्हें प्रेय कर्म कहते हैं। इन से अधोगति होती है। अतः गीता में भगवान् ने चेताया है–

उद्धेरदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मानः ॥5॥ (अ. 6)

अपने द्वारा आप ही अपना उद्धार करे। अपने को अधोगति में न डाले। मनुष्य आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है।

इसी तरह का यहाँ यह उद्‌बोधन किया गया है। व्यर्थ के धन सन्तानादि की ऐषणा से भ्रमित मनुष्य भगवान् सर्वेश्वर में अनुराग-पूर्वक जीवन बिताये तो निश्चय ही सम्पूर्ण पुरुषार्थ की प्राप्ति कर लेगा।

राधामुकुन्द-युगनामरसाब्धि-धारा
यन्मानसे प्रतिपलं प्रवहत्यहो सः।
सौभाग्यभागिह महारतिभावमुग्धो
युग्मप्रियो भवति नाऽत्र कदापि चित्रम् ॥74॥

भावना आबद्ध भक्त भगवान् से विलग नहीं होता। भगवान् को भाव ही प्रिय है। अतः श्रद्धा भावापन्न भक्त भगवान् राधामाधव को अतिप्रिय है। ऐसे भावुक भक्त के मन में भगवद् नाम की रस धारा प्रतिपल प्रवाहित होती रहती है। निश्चय ही यह बड़े आनन्द की बात है। विषय-विकार के आवरण से मुक्त हुआ ऐसा भक्त सौभाग्यशाली है।

येषां मनो हरिपदाम्बुजयुग्मनिष्ठं
येषां मनो हरि कथामृतपानजुष्टम्।
तैः पुण्यतीर्थ-सदृशा अमलाः प्रपूज्याः
तद्दर्शनेन बहुशो लभते प्रलाभम् ॥103॥ यु.गी.

भगवान् के कथामृत श्रवण व नाम सुमिरण, स्वाध्याय में मन तब ही लगता है, जब मन निर्मल हो जावे। ऐसे अमलात्मा भगवद् पदाम्बुज निष्ठ हैं। निश्चय ही वे पुण्यात्मा तीर्थ के समान पवित्र करने वाले और पूज्य हैं, ऐसे दिव्यात्माओं के दर्शन-सत्संग से अमोघ फल होता है।

सत्सङ्गं सततं सेव्यं राधकैश्च मुमुक्षुभिः।
यस्याऽवलम्बमात्रेणाऽमृतत्वं लभ्यते ध्रुवम् ॥104॥

भजन-साधना करने वाले साधु मुमुक्षु जनों की सत्संग सेवा करनी चाहिये, ऐसा करने से उन्हीं के समान कृपापूर्वक अमृत्व की प्राप्ति होती है।

सत्सङ्गाज्जायते भावो भावाद् भक्तिः प्रजायते।
भक्त्या एवं पराभक्तिस्तया तुष्यति माधवः ॥105॥

104 श्लोक के भावार्थ को ही जैसे इस में स्पष्ट किया है। सत्संग से भगवत् श्रद्धाभाव उत्पन्न होता है। भाव से भक्ति का प्रादुर्भाव होता है। भाव से भक्ति करते रहने वाला शनैः शनैः निर्मलता प्राप्त करता हुआ प्रभु से अनन्य अनुराग रूप पराभक्ति को प्राप्त कर लेता है और निर्मल पराभक्ति से भगवान् माधव प्रसन्न हो जाते हैं।

सुखिनस्ते भवारण्ये ये हरिचरणाम्बुजौ।
स्मरन्तः स्मारयन्तश्च वसन्त्यस्मिन्विपश्चितः ॥105॥ यु.गी.

सुख मन की तुष्टि का भाव है। भगवत् श्रद्धा परिपूर्ण मन ही भगवद् भक्ति करता हुआ तुष्ट रहता है। अन्य विषय में तुष्टि नहीं देखी जाती है। अतः जो भगवान् के भजन करता है व दूसरों को प्रेरणा देकर भजन करता है, संसार में वही सुखी है।

सुखार्थं सर्वलोकानां कृत्यो भवति नित्यशः।
सुखस्थानमविज्ञाय पतन्ति संस्सृतौ पुनः ॥107॥

सभी प्राणी सुख चाहते हैं और नित्य प्रति सुख के लिए ही कर्म प्रवृत्त हैं, किन्तु अविचल सुख वस्तुतः क्या है? और कहाँ है? यह नहीं जान पाते या इसे जानकर भी हृदय से स्वीकार नहीं कर पाते। भूल के कारण मनुष्य बार बार संसार सागर में पतन को प्राप्त होता है।

उत्सृज्य जगदाकाङ्क्षां सम्प्राप्य गुरोराश्रयम्।
राधासर्वेश्वरौ नित्यं भजन्तु भुवि भावुकाः ॥106॥

वास्तविक सुख प्राप्ति के लिए– भावुक जन तृष्णाओं का त्याग कर के गुरु आश्रय अनुगत हो श्री राधा-सर्वेश्वर का ही नित्य भजन करते हैं अर्थात् सभी को गुरु उपदेश वैदिक परम्परा से लेकर भगवद् भजन करना चाहिये।

मोखमपुरा
जयपुर (राज.)

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

– धर्म सेवन के बिना राजकीय कठोर शासन की व्यवस्था एवं प्रबल नियन्त्रण के रहने पर भी दुष्कर्मों का परिहार सम्भव नहीं है।

– धर्म के बिना मानव का जीवन सर्वथा निरर्थक है।

– धर्म विरहित राजनीति भी वाराङ्गना के समरूप है।

"भारत-भारती-वैभवम्"

में

भारतीय संस्कृति का सजीव चित्रण

— डॉ. विकास शर्मा
एम.ए., पीएच.डी.

आज से लगभग 21 वर्ष पूर्व अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक, परम-करुणामय, सर्वशक्तिमान्, सर्वमंगलविधायक श्री सर्वेश्वर प्रभु की महती कृपा से अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज की सारस्वत-साधना का प्रतिफल राष्ट्रभक्तिपरक ग्रन्थरत्न "भारत भारती वैभवम्" का लोकार्पण पौष शुक्ला त्रयोदशी वि.सं. 2043 को राजस्थान प्रान्त के तत्कालीन मुख्यमंत्री, लोकप्रिय जननेता तथा भारतीय-संस्कृति के पुजारी श्री हरिदेव जोशी जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था। इस महनीय ग्रन्थरत्न के प्रकाशनोद्देश्य को प्रकट करते हुए ग्रन्थ के व्याख्याकार सन्तशिरोमणि, धर्मशास्त्री व पुराणतीर्थ पण्डितप्रवर **विद्वद्वरेण्य श्री गोविन्ददासजी महाराज** ने जो स्वोद्गार प्रकट किये हैं, वे आज भी महत्त्वपूर्ण प्रमाणित हो रहे हैं। उनका आकलन है–

"भौतिक चाकचिक्य, पाश्चात्य अन्धानुकरण तथा वर्तमान आणविक युग की विषमताओं से सम्प्रति जनजीवन आस्थाहीन एवं राष्ट्रीय भावना से शून्य, अधिकांशतः अनैतिक तथा उच्छृंखल हो गया है। ऐसी स्थिति में भारतीय वैदिक संस्कृति के उच्चतम आदर्शों, आध्यात्मिक शाश्वत परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित मौलिक एवं कर्तव्यनिष्ठ भारतीय जीवन की चिरन्तन धारा पुनः प्रवाहित हो, यही इस ग्रन्थ का उद्देश्य है। "राष्ट्र ही सर्वोपरि है तथा राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च प्रेमभाव संयुक्त भारतीयता ही हमारी राष्ट्रीयता है" इस मूल भावना का जीवन में संचार हो, यही "भारत भारती वैभवम्" ग्रन्थ का अन्तरङ्ग भाव है। व्याख्याकार श्री सन्त की भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु से यही अभ्यर्थना रही है कि ग्रन्थ रत्न की पुनीत अन्तरंग भावना राष्ट्र के जनमानस में व्याप्त है। अपने प्राक्कथन में श्री 'सन्त' महोदय ने भारत पुण्य भूमि की वास्तविकता का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है कि इस परम पावन भारतदेश में देवगण भी जन्म धारण करने की अभिलाषा रखते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने भगवान् वेदव्यास रचित श्रीमद्भागवत महापुराण के पञ्चम स्कन्ध, अध्याय 19 श्लोक सं. 21-23 में वर्णित 'भारत-महिमा' का सुन्दरतम चित्रण उपस्थित किया है, वस्तुतः स्पृहणीय है—

"अहो अमीषां किमकारि शोभनं
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।

यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे
मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः॥'' (5/19-21)

श्री विष्णुपुराण का निम्नोद्धृत पद्य भी भारत के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत कर रहा है—

''गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ये भारतभूमि-भागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥'' विष्णु. पु. 2/3-24

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के उद्‌गार ''व्यक्ति में व्यक्तित्व, समाज में सुसंघटन और अपने- अपने कर्त्तव्यपालन का उत्तरदायित्व सब शिक्षा पर ही निर्भर करता है। शिक्षित व्यक्ति ही भारत और भारती देववाणी संस्कृत भाषा के महत्त्व को जान सकता है। हमारे पूर्वज तपोनिष्ठ उन ऋषिमहर्षियों ने अपने तपोबल से ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा शास्त्रों का निर्माण कर आध्यात्मिक दृष्टि से देश और संस्कृत भाषा का कितना महत्त्व बतलाया है, ज्ञातव्य है'' ही वस्तुतः ''भारत-भारती-वैभवम्'' की रचना की पृष्ठभूमि है। अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस ग्रन्थरत्न में भगवान् के विराट् स्वरूप भारत देश व भारत का महत्त्व बताने वाली 'भारती' देववाणी संस्कृत भाषा की वन्दना करते हुए इसके वैभव का जो अनुपम दिग्दर्शन कराया है, वह न केवल पठनीय है, मननीय, चिन्तनीय व अवधारणीय भी है।

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज का यह ग्रन्थरत्न पाश्चात्य संस्कृति के बन्धन में जकड़े हुए दिग्भ्रान्त विवेकशून्य जन समुदाय के लिए 'शास्त्र' रूप है, हितकारी है तथा मार्ग निर्देशक है। स्वयं श्री 'श्रीजी' महाराज के इस ग्रन्थरत्न के समर्पण के समय प्रकट किये गये उद्‌गार ही इसमें प्रमाण हैं—

यत्कृपास्फुटितं स्वान्ते सर्वलोकहितावहम्।
भारतभारती-वैभवाख्यशास्त्रं समर्पये॥

''सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकम्'' शीर्षक से अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए अखिल भारतवर्षीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद के 'अधिकारी', वेदान्ताचार्य, पञ्चतीर्थ श्री ब्रजवल्लभशरण जी ने इस ग्रन्थरत्न को भगवत्प्रेरणा का ही प्रतिफल माना है, क्योंकि भगवान् सर्वेश्वर प्रभु के बिना कृपा-कटाक्ष के लोककल्याणकर रचनाएं प्रस्तुत ही नहीं हो सकती। उसमें भी अनन्तश्रीविभूषित जगद्‌गुरु पदासीन भगवदंशावतार श्री 'श्रीजी' महाराज के अन्तःकरण से स्फुटित प्रत्येक पद तो वस्तुतः ईश्वरीय वाणी ही है। भगवान् श्रीकृष्ण के अमृतोपदेश भगवद्‌गीता में चित्रित विचार ही रचना की पृष्ठभूमि है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

वैदिक ऋषि मुनियों की वाणी भी जो वैदिक मन्त्रों के रूप में स्फुटित हुई, वह भी ईश्वरीय वाणी ही मानी जाती है। उसी की कृपा से वह उनके मुखारविन्दों से प्रकट हुई है। इसीलिए श्री श्रीजी महाराज ने भी यह स्वीकारा है कि जो भी विचार उनके स्वान्तःकरण में स्फुटित हुए, भगवत्प्रेरणा ही उनके मूल में रही है, वे ही सर्वलोकहितकारी भाव– ''भारत-भारती-वैभवम्'' के नाम से लोक में प्रस्तुत हैं। इसीलिए शास्त्र 'आत्मा' को ज्ञानरूप और ज्ञानधर्मी अर्थात् ज्ञानवान् मानता है– ''सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म''।

डॉ. प्रेमनारायण श्रीवास्तव ''प्रियादास'', प्रोफेसर तथा शोधनिर्देशक स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, प्राच्यदर्शन महाविद्यालय, वृन्दावन ग्रन्थ-रत्न को काव्य की दृष्टि से उच्च कोटि की कृति स्वीकारते हैं। रमणीयता की कसौटी पर भी यह खरी उतरती है। 'अभिधा' का अवलम्ब इसका विशिष्ट गुण मानते हैं। वे इसके शैलीगत प्रवाह एवं भाषागत ओज से प्रदीप्त काव्य स्वीकारते हैं। उनकी दृष्टि में भावनाओं को उद्वेलित करने वाले इस काव्यरत्न में अद्भुत शक्ति है। उनकी यह दृढ़ धारणा है कि स्वतन्त्रता के पुजारी, देश सेवक एवं विद्वद् वर्ग इसे आत्मसात् कर आपादमस्तक मग्न हुए बिना न रहेंगे। वे यह अनुभूति कर रहे हैं कि भारत देश के प्रति कवि भी मंगलकामना इसमें मुखरित हुई है, निःसन्देह यह सभी के लिए समानरूप से आदरणीय है।

प्रख्यात विद्वान्, सप्ताचार्य, 'व्रजगन्धा' के यशस्वी सम्पादक विद्वद्वरेण्य **डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी**, मथुरा तो इस 'ग्रन्थरत्न' को पाकर अत्यन्त प्रमुदित हैं तथा वे इस ग्रन्थरत्न को ब्रजेश्वर सर्वेश्वर का गुणगान ही मानते हैं। उनके शब्द यहाँ यथावत् उद्धृत किये जा रहे हैं–

''भारत की अनन्त और असीम महिमा है। जिस भारत की रम्यधरा पर स्वयं सर्वेश्वर श्रीहरि नाना स्वरूपों से अवतीर्ण होते हैं, जहाँ की पवित्र भूमि की रज को देवगण भी शिर पर धारण कर अपना अहोभाग्य मानते हैं, अगणित ऋषि, मुनि, तपस्वी तपः साधना करते हैं, गङ्गा-यमुना जैसी अनेक पुण्यसलिला नदियां जहां अपने कलकल निनाद से प्रवाहित होती हुई मानव के पापों का क्षय करती है, जिस सुभग वसुन्धरा पर आध्यात्मिक चेतना का मनोहर दर्शन सर्वदा विद्यमान है, वस्तुतः ऐसे भारतवर्ष का गुणगान व्रजेश्वर सर्वेश्वर का ही गुणगान है। इसी प्रकार सुरभारती संस्कृत भाषा का भी अपरिमित माहात्म्य है। यह देववाणी न केवल भारत की भाषाओं की ही जननी है, अपितु समस्त विश्वभाषाओं का मूल स्रोत है। इस भारती में अनन्त ज्ञान-विज्ञान निहित है। अध्यात्म ज्ञान की तो यह महासिन्धुरूप है। ऐसी दिव्यवाणी का स्वाध्याय परम पुण्यरूप है। अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जी राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्रीचरण श्री 'श्रीजी' महाराज ने परम कृपा कर ''भारत-भारती वैभवम्'' की अनुपम रचना कर जो अनुग्रह किया है, वह निश्चय ही परम महत्त्वपूर्ण है। आपश्री ने भारत-भारती के साथ-साथ मानव मात्र के प्रति जो उद्बोधन दिया है, वह और भी अत्यन्त महत्त्वशाली एवं आदर्शरूप है। आज के विभ्रान्त जन-मानस को सत्पथ की ओर अग्रसर करने का यह उच्चतम दृढ़ सोपान है। ''भारतभारती-वैभवम्'' का भाव गाम्भीर्य विलक्षण है। रचना सरल, सरस एवं अतीव मधुर है। अलङ्कार

अनुप्रास, उपमा आदि काव्यगत गुण स्वाभाविक एवं धारावाहिक हैं। इस ग्रन्थ के अध्ययन अनुशीलन से जन समुदाय को देशभक्ति संस्कृत भाषा के प्रति सहज अनुराग स्वतः जागृत होगा तथा अपने समुचित कर्तव्यों का भी उद्‌बोधन होगा, जिससे देश में फैले हुए भ्रष्टाचार, अनाचार आदि दुर्गुणों, दुर्व्यसनों के निरोध को स्वस्थ दिशा मिलेगी।''

डॉ. चतुर्वेदी के ग्रन्थ के संबन्ध में प्रकट किये गये विचारों से 'ग्रन्थरत्न' की संपूर्ण विवेचना हो गई है। न केवल डॉ. वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी ही इस ग्रन्थरत्न के प्रशंसक हैं, तत्कालीन संस्कृत शिक्षा निदेशक **डॉ. रामनारायण चतुर्वेदी** भी अत्यन्त प्रभावित रहे हैं। वे लिखते हैं– ''भारत-भारती-वैभवम्'' अनन्तश्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज की मौलिक रचना है। इसमें संस्कृत की सरल एवं प्रचलित प्रसिद्ध हृदयग्राही संगीत व अन्य प्रकार के छात्रोपयोगी सरल गीतों के साथ-साथ संस्कृत के विविध छन्दों में चित्ताकर्षक पदों का निर्माण किया गया है। प्रारम्भ में देशभक्ति के गीत भारत राष्ट्र के प्रति आत्मीयता, एकता व बन्धुता को उत्पन्न करते हैं। तदनन्तर देवभाषा संस्कृत की महत्ता के बोधक अभिनव गीत हैं, जो बालकों को संस्कृत के अध्ययन की ओर प्रेरित करते हैं। शेष भाग में ''जनान् प्रत्युद्‌बोधनम्'' शीर्षक के ऐसे समाज व राष्ट्र के उपयोगी हितकर उपदेशों का संकलन किया गया है, जिसके अध्ययन से राष्ट्रीयता, नैतिकता, स्वतंत्रता की सुरक्षा, सदाचार, शुद्धता, सत्यता आदि सद्‌भावों का उदय होता है तथा भ्रष्टाचार मिलावट, अनुशासनहीनता, मादकता आदि दुर्गुणों का समूल उन्मूलन करने की प्रवृत्ति जागृत होती है। माता-पिता व गुरु की सेवा, राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठा व नम्रता पर विशेष बल दिया गया है।''

इस ग्रन्थरत्न में पांच खण्ड हैं, जिनमें क्रमशः 1. भारत-वैभववर्णनम् 2. देवभारती-वैभववर्णनम् 3. जनान् प्रति उद्‌बोधनम् 4. भारत-भारत्योराधारभूता गकारत्रयी- गीता गङ्गा गावश्च तथा 5. भारतमातृगुणाष्टकम् विषय विवेचित हैं।

इस ग्रन्थरत्न का शुभारम्भ अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी महाराज 'भारतवर्ष वन्दना' से कर रहे हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यही वह पुण्य प्रदेश है, जहाँ निगमागम नीति, तन्त्र, पुराणादि विविध शास्त्रों से स्तूयमान, सुरमुनिवृन्दों से परितः चर्चित एवं नगाधिराज हिमालय से सुशोभित, सस्य श्यामल, आनन्दकन्द भगवान् विष्णु के चरण कमल रज से सुवासित श्री राधासर्वेश्वर का शरण (गृह) विद्यमान है—

वन्दे भारतवर्षं सुभगम्।
निगमागमनयतन्त्रपुराणैः शास्त्रैर्विविधैर्गीतं ललितम्।
सुरमुनिवृन्दैश्चर्चितमभितो हिमगिरिशोभित-सागरसरसम्।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः सस्यश्यामलं हरिपदललितम्॥

सर्वहिताय गेय तथा गुणगणमण्डित 35 विभिन्न छन्दों में ग्रथित इस भारतभारती वैभव में पुण्यश्लोक

भारतभूमि का स्तवन हुआ है। भारतभूमि का 'स्वरूपवर्णन' वस्तुतः चित्ताकर्षक होने के साथ ही पाठक के सम्मुख उसके दिव्य एवं भव्य रूप को उपस्थित करने में सक्षम है। 'श्रीजी' महाराज की सारस्वत-साधना का प्रतिफल यह चित्रण स्वाभाविक एवं सरस होने से हृदयाकर्षक है—

वन्दे नितरां भारतवसुधाम्।
दिव्य-हिमालय-गङ्गा-यमुना-सरयू-कृष्णा शोभित सरसाम्॥
मुनिजनदेवैरनिशं पूज्यां जलधितरङ्गैरञ्चित-सीमाम्।
भगवल्लीलाधाममयीं तां नानातीर्थैरभिरमणीयाम्॥
अध्यात्मधरित्रीं गौरवपूर्णां शान्तिवहां श्रीवरदां सुखदाम्।
सस्यश्यामलां कलितामलां कोटिकोटिजन-सेवितमुदिताम्॥
वीरकदम्बैरतिकमनीयां सुधीजनैश्च परमोपास्याम्।
वेदपुराणैर्नित्यसुगीतां राष्ट्रसुभक्तैरीड्यां भव्याम्॥
नानारत्नैर्मणिभिर्युक्तां हिरण्यरूपां हरिपदपुण्याम्।
राधासर्वेश्वरशरणोऽहं वारं वारं वन्दे रम्याम्॥1॥

व्याख्याकार श्री गोविन्ददास जी 'सन्त' ने अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज की पावन लेखिनी से प्रसूत प्रत्येक दिव्य शब्दब्रह्म का अपनी ''वैभवबोधिनी'' व्याख्या से लोकोपकारार्थ स्पष्ट कर हस्तामलकवत् प्रस्तुत किया है, जिसके अन्त में देवनागरी हिन्दी में भावार्थ भी उपलब्ध है।

अन्यान्य गेय पद्यों में– **'भारतधरणी परमोपास्या', 'भारतवर्षं नमामि रुचिरम्', 'भारतभूमौ सुन्दरवासः', 'भारतवर्षं मनसा ध्येयम्', 'भारतवसुधादर्शनममलम्', 'वीरधरायां वसन्ति वीराः', 'जयति मदीया भारतमाता', 'भारतधरणी कियती मधुरा', 'वन्दे सदा (च तं) रुचिरभारतवर्षदेशम्', 'तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्'** इस पुण्य श्लोका के स्वाभाविक सुभग स्वरूप का चित्रण करते हैं, जिनके गान से पाठक का हृदय रससागर में निमज्जन कर असीम आनन्द की अनुभूति करता है।

पुण्य ललिता परम पावनी नदियों के स्मरण मात्र से तथा नाना गिरीन्द्रों के सुरम्य उल्लेखन से कलुषितचित्त सुपवित्र हो जाता है। यही 'भारतवर्ष का वास्तविक रूप है तथा इसीलिए यह परम वन्दनीय है–

गङ्गा - कलिन्दतनया - सरयू - त्रिवेणी-
गोदावरी प्रभृति दिव्य-तरङ्गिणीभिः।
नाना गिरीन्द्रहिमशैलवरैः सुरम्यं
वन्दे सदा रुचिरभारतवर्षदेशम्॥10॥

'वन्दे सदा रुचिरभारतवर्ष देशम्' के गुणगान से मण्डित 15 वसन्ततिलका छन्दों में अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपनी प्रिय मातृभूमि का स्वरूप चित्रण किया है, जिसमें उन्होंने समुद्र चतुष्टयी की पावन तरङ्गों से आवेष्टित, परम मनोहर वेद पुराणादि शास्त्रों द्वारा सुगीत, गोब्राह्मण साधुजनों से शोभायमान, मधुराति-मधुर सुन्दर फलों से युक्त, आम, जामुन, कदम्ब, केला आदि के वृक्षों से समृद्ध, अत्यन्त मनोहारी वनोपवन विद्यमान हैं, जहाँ हरिणों के झुण्ड, नानारंग के पक्षियों के कलरव से गुंजायमान गहन एवं शीतल छाया वाले वृक्ष सुशोभित हैं, अश्व, हाथी आदि उपयोगी पशुवृन्द स्वच्छन्द विचरण करते हैं, विद्वज्जनों द्वारा वेदपुराणादि के मन्त्र व गेय पद्य गुंजरित होते हैं, भगवान् इन्द्र की आज्ञा से मेघवृन्द चारों ओर यथेष्ट वर्षा करते हैं, कृषिकर्म कुशल, कृषीवल अपने शस्यश्यामल लहलहाते खेतों को देखकर अत्यन्त प्रमुदित होते हैं, वस्तुतः भारतदेश श्री 'श्रीजी' महाराज के लिए परम वन्दनीय है—

गुञ्जन्ति यत्र निगमागमदिव्यमन्त्रा
वर्षन्ति मेघनिकराः परितो यथेष्टम्।
हृष्यन्ति देशकृषकाः कृषिकार्यदक्षा
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम्॥14॥

यही वह भारतभूमि है, जहां चरित्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए पृथ्वी के समस्त जिज्ञासुलोग उपस्थित होते हैं तथा आचार्यों से अध्यात्म शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को सुखी एवं परमार्थोपयोगी बनाते हैं। महर्षि मनु का यह वचन सर्वत्र प्रसिद्ध है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

इस संबन्ध में अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के उद्गार दर्शनीय हैं–

अध्यात्मधर्मपथतत्त्वविदो विदन्त–
आचार्यवर्यचरणाः सकलाः प्रसिद्धाः।
ज्ञानं प्रजार्थमतुलं ददतीति यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम्॥16॥
शान्तिं सुखं भुवि तनोति यथा जनेभ्यः
सत्प्रेरणामपि करोति तथैव नित्यम्।
एतादृशं निखिलदानपरं प्रसिद्धं
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम्॥

इस भव्य वर्णन के अन्तिम 10-11 पद्यों में श्री 'श्रीजी' महाराज ने चतुर्थ चरण में तनिक परिवर्तन

किया है तथा 'वन्दे च तं रुचिरभातरवर्षदेशम्' के स्थान पर 'तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्' का प्रयोग किया है। जिस भारत देश के पूर्व की ओर श्री जगन्नाथपुरी, दक्षिण की ओर श्री सेतुबन्ध रामेश्वर, पश्चिम दिशा में श्री द्वारिका और उत्तर दिशा में श्री बदरीनारायण विराजते हैं, उस विशाल प्रदेश भारतवर्ष को श्री 'श्रीजी' महाराज प्रणाम करते हैं—

प्राच्यां जगन्नाथपुरी ह्यवाच्यां
रामेश्वरो, द्वारवती प्रतीच्याम्।
यत्रोत्तरे श्री बदरीविशाल-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥25॥

मोक्षदायिका पुरियों का स्मरण तथा द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का उल्लेख वस्तुतः भारतवर्ष का गौरव है। यह पावन स्मरण भी श्री 'श्रीजी' महाराज की अन्तश्चेतना के माहात्म्य को लोकार्पित करता है–

हरेरयोध्या मथुरा च माया
काशी च काञ्ची फलदा ह्यवन्ती।
द्वारावती यत्र लसन्ति पुर्य-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥26॥
श्रीद्वादशेशाः शिवलिङ्गरूपा
ज्योतिःस्वरूपा विलसन्ति यत्र।
सर्वार्थसिद्धिप्रियदा मनोज्ञा-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥27॥

संस्मरणीय पुण्य पावन प्रदेशों में श्री वृन्दावन धाम, गिरिराज गोवर्धन, तीर्थराज पुष्कर, प्रयागराज, चित्रकूट, अयोध्या का माहात्म्य विश्वविश्रुत है, प्रसंगवश श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश की पावनी चर्चा भी वन्दनीय रही है। वस्तुतः यह वह परम पावनी भूमि है, जहाँ गृहस्थ, वटुक, छात्रवृन्द, सन्यासी तथा वैष्णवधर्मावलम्बी भक्तजन उन्मुक्त भाव से निवास करते हैं– अतः जब अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी महाराज उसे नमन करते हैं तो यह निश्चित है कि वह सर्वजन वन्दनीया है। सभी विश्वजन को उसे नमस्कार करना ही है—

सन्तो गृहस्था बटवश्च छात्राः
सन्यासिनो वैष्णवसत्तमा वै।
शुद्धा विरक्ता विचरन्ति यत्र
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥35॥

सर्वतः स्पृहणीया परम पावनी जन्मभूमि भारतमाता का नमन करने के उपरान्त श्री श्रीजी महाराज द्वितीय खण्ड में देवभारती संस्कृत भाषा का वैभव वर्णन प्रस्तुत करते हैं, जिसके सम्बन्ध में कहा गया है– **''संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।''** संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता से प्रभावित पाश्चात्य विद्वान् भी इसे भगवती सरस्वती की वाणी मानते हैं। श्री 'श्रीजी' महाराज ने भी सर्वप्रथम इसे भगवती सरस्वती का ही रूप माना है तथा दिव्यभाव से उसका स्तवन किया है—

वन्दे वरदां शुद्धां शारदाम्।
निर्जरनिकरैरर्चित-चरणां चर्चितचन्दन-हर्षित-सुमुखाम्॥
गुणगणनिलयां विमलां ललितां सुरवागीशां हंसारूढाम्।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः श्रीदां सरसां वीणाहस्ताम्॥36॥

श्री 'श्रीजी' महाराज इसे 'हरिमुखगीता' मानते हैं, इसीलिए उनका उपदेश है यह संस्कृतभाषाशास्त्र गेय है। वे संस्कृत भाषा के सौष्ठव से अभिभूत हैं तथा सर्वतोभावेन उसकी उपासना करते हैं। साथ ही समस्त भारतवासियों को सदुपदेश देते हैं कि उन्हें भी संस्कृत भाषा पढ़नी चाहिए, उसमें संभाषण करना चाहिए। वे संस्कृत भाषा के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं। उनके उद्‌गार मननीय व पालनीय हैं—

सर्वेश्वर! सुखधाम! नाथ! मे संस्कृतरुचिरस्ति।
संस्कृतमनने संस्कृतवदने संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे,
चेतो नितरां भवतात्कृपया ममाऽभिलाषोऽस्ति॥
श्रुतिशास्त्रेषु मनुशास्त्रेषु नयशास्त्रेषु रसशास्त्रेषु,
प्रगतिस्तीव्रा भवतादिति मे भावनाऽस्ति॥
लेखनपटुता, प्रवचनपटुता, कर्मणि पटुता, सेवापटुता,
सततं माधव! भवतादिह मे याचनाऽस्ति॥
वचने मृदुता, चेतसि रसता, स्वात्मनि वरता, दृष्टौ समता
राधासर्वेश्वरशरणस्य प्रबला कामनाऽस्ति॥39॥

इसीलिए वे इस 'अमरभारती' की वन्दना करते हैं। संस्कृत श्रवण को वे श्रेयस्कर मानते हैं, उनकी दृष्टि में संस्कृत भाषा मंगलकर्त्री है, अमृतरूपा है, अतः उसका स्तवन भी अमृतमय है।

'देवभारती' संस्कृत भाषा की यह विशेषता संस्मरणीय है कि वह भगवान् मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र द्वारा गीतोपदेश के माध्यम से विश्व में पूजित है, देवताओं की वाणी होने से सर्वजन वन्दनीय है, विद्वानों के द्वारा उपासनीय है तथा कविजनों के चित्तमन्दिर में संस्थित हैं, अति प्राचीन होते हुए भी नित्यनूतनस्वरूपा है, इस प्रकार गुणगणालंकृत होने से सभी लोगों द्वारा वन्दनीय है—

मुकुन्दगीतां सुरवृन्दसेवितां
बुधैरुपास्यां कविचित्तसंस्थिताम्।
पुरातनामप्यथ नित्यनूतनां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम्॥47॥

यह संस्कृतभाषा श्रुति-स्मृतियों के ज्ञान की निधि है, समस्त संसार को सुखशान्ति प्रदान करने वाली है, अमृतरूपा है, मनुष्यों के पापों का संहार करने वाली है। यह समस्त भाषाओं की जननी है, यह सर्वाधिष्ठात्री परमेश्वरी और अनन्त ज्ञान-विज्ञान को उत्पन्न करने वाली मुक्ति प्रदायिनी माहेश्वरी रूपा है, मधुर स्वरूपा है, रसप्रदात्री ऐसी देववाणी का हृदय से सम्मान करना मानव मात्र का कर्तव्य होना चाहिए—

श्रुति-स्मृति-ज्ञान-विधान-धारिणीं
समग्रभूमौ सुखशान्तिवाहिनीम्।
सुधामयीं तां मनुजाऽऽघहारिणीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम्॥50॥
समग्रभाषाजननी - मधीश्वरीं
प्रजाकरीं मुक्तिकरीं महेश्वरीम्।
रसालरूपां रसदानतत्परां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम्॥51॥

इस प्रकार अनन्त गुणोपेता, संसार-सागर संतापहारिणी, अपारदुःखहर्त्री, अमृतस्वरूपा, विद्वज्जनसन्तोषदात्री तथा अज्ञजनों को पथप्रदर्शन करने में पूर्ण सक्षम, परम दिव्य स्वरूपा, शरणागतवत्सला, सर्वफल-प्रदायिनी देवभारती का श्री 'श्रीजी' महाराज ने नाना रूपों में संस्मरण किया है।

तृतीय खण्ड 'उपदेशात्मक' है, जिसका शीर्षक है– ''जनान् प्रति उद्बोधनम्''। जो लोग पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से दृष्टिहीन है, मार्गभ्रष्ट हैं, पथविचलित हैं, कर्तव्याकर्तव्यज्ञान शून्य हैं, उन्हें सन्मार्ग में प्रवृत्त करने के उद्देश्य से अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज की सरस्वती स्वतः मुखरित हुई है। उनका यह उद्बोधन सभी के लिए मननीय, पठनीय व आचरणीय है। 'श्रीजी' महाराज का यह विचार वस्तुतः स्तुत्य है कि भ्रष्टाचाररत लोगों को दण्ड दिया जाना चाहिए, चाहे वे कितने ही उच्च पदासीन हों—

भ्रष्टाचाररता ये तु दण्डनीयाश्च भारते।
सन्तु ते जनसामान्या विशिष्टा वा प्रशासकाः॥57॥

महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है कि दण्डनीयों को दण्डित न करने तथा अदण्डनीयों को दण्ड प्रदान

करने पर शासक महान् अपयश प्राप्त करता है तथा उसकी कीर्ति भी लोकान्तरगामी हो जाती है। वस्तुतः आज के समाज की यही स्थिति हो रही है, जो चिन्तनीय विषय है। श्री 'श्रीजी' महाराज का सद्‌विचार तो यह है कि कुपथगामी प्रज्ञा को सुपथगामी बनाने में धर्माचार्यों का ही दायित्व प्रमुख है। चूंकि धर्माचार्य पदासीन महामण्डलेश्वर भी मौनावलम्बन किये हुए हैं, जिसका यह दुःखद परिणाम है कि आज जनता कुपथगामिनी भ्रष्टाचारपरायण हो रही है। वे मातृशक्ति को ही बालक-बालिकाओं की प्रथम शिक्षिका मानते हैं, जिनका यह प्रमुख कर्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को सुसंस्कारित करें, भारतीय संस्कृति के वास्तविक स्वरूप से परिचित करावें, ताकि वे सुपथगामी बन सकें। माताओं के बाद शिक्षकों, गुरुजनों, कवियों, विद्वानों आदि का दायित्व बनता है कि वे सुशिक्षा से जनता को सुसंस्कारित व शिक्षित करें। वैदिक संस्कृति किं वा भारतीय संस्कृति गौमाता को परम पूजनीय मानती है, साथ ही नारियों को भी ऋषि-महर्षियों ने सदा पूजनीय माना है—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाक्रियाः॥
जामयो यानि गेहानि शपन्त्यः प्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः॥

महर्षि मनु का विचार ही परमपूज्य श्री 'श्रीजी' की वाणी से प्रस्फुटित हुए हैं–

देवालया रक्षणीया धर्मग्रन्थाश्च साधुभिः।
गावो नार्यश्च सम्पूज्याः सर्वदा सर्वमानवैः॥63॥

श्री 'श्रीजी' महाराज उद्‌बोधन में सभी लोगों को उनके कर्तव्यों का बोध कराते हैं। अहिंसा के मार्ग का अवलम्बन करने का उपदेश देते हैं, शरणागत संरक्षण का बोध कराते हैं। वन, उपवन, तीर्थ, पशु-पक्षी संरक्षण की भावना को जागृत करते हैं।

राष्ट्रीय सम्पत्ति के सर्वविध संरक्षण के उपदेश के साथ ही वे 'अनुशासन' को जीवन में अपनाने का संकल्प लेने के पक्षधर भी हैं। सद्‌ग्रन्थों के अध्ययन व मनन की प्रेरणा देते हुए वे छात्रवर्ग से आलस्य त्याग कर दुर्व्यसन व कुभोजन के प्रति सचेत करते हैं। मद्य, मांस-सेवन तथा द्यूत व उत्कोच ग्रहण को सर्वथा निन्दनीय मानते हैं। तस्करवृत्ति, चौर्यवृत्ति, नास्तिकता तथा मिथ्याप्रजल्पन को सर्वथा त्याजनीय मानते हैं। भारत के समस्त वर्गों को वे उनके तथा देश के हितकारी उपदेश देते हैं। उनका एक ही तथ्य है कि सदुपदेशों की पालना से मानव मात्र का कल्याण होगा और इसीलिए वे अन्त में सर्वजन हिताय सर्वेश्वर प्रभु से विनती भी करते हैं–

सर्वे प्रमुदिताः सन्तु सर्वे सन्तु विनिर्मलाः।
सर्वे शमभिपश्यन्तु मा कश्चित् क्लेश-माप्नुयात्॥101॥

चतुर्थ अध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसमें उन्होंने भारत-भारती की आधारभूता 'गकारत्रयी' का गुणानुवाद प्रस्तुत किया है। प्रत्येक 'ग' कार की महिमा का वर्णन करने में 5 पद्यों की रचना है। इस प्रकार कुल 15 पद्यों में 'गकारत्रयी' अर्थात् 'गीता' 'गङ्गा' व गोधन की महिमा वर्णित है। सर्वप्रथम 'श्रीमद्भगवद्गीता' का माहात्म्य प्रस्तुत करते हुए श्री 'श्रीजी' महाराज कहते हैं—

समुद्गता कृष्णमुखारविन्दात्
या भारतेऽध्यात्मपवित्र-धाम्नि।
गीताऽर्थदा सा हरिभक्तिरूपा
नित्यं तनोत्यच्युतभक्तितत्त्वम्॥102॥

आध्यात्मिक ज्ञानसम्पन्न परमपावन भारत भूमि पर स्वयं श्रीकृष्णरूप में अवतीर्ण भगवान् के मुखारविन्द से प्रकट हुई पुरुषार्थ चतुष्टयी के साथ हरिभक्तिरूप पञ्चम पदार्थ को प्रदान करने वाली यह 'गीता' वस्तुतः भगवद्भक्ति स्वरूप को प्रकट करने के कारण सर्वगेया है। निश्चय ही यह भगवान् श्री कृष्ण की उपदेशात्मक दिव्यवाणी है, जो संपूर्ण पृथ्वीमंडल को भक्तिरसामृत से आप्यायित करती है, जो वेदादि शास्त्रों की दिव्य सारभूता वाणी के रूप में ही जगद् विख्यात है।

श्रीमद्हरेर्या ह्युपदेशवाणी
पीयूषवर्षा विदधाति भूमौ।
श्रुत्यर्थशुद्धाऽद्भुतमञ्जुसारा
गीता च सा वै जयताज्जगत्याम्॥103॥

लोककल्याण की कामना से अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को माध्यम बनाकर, निमित्त बनाकर साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट महाकल्पलतास्वरूप, रसपरिपूर्णा यह ज्ञानसंवर्द्धिनी व कल्मष-नाशिनी 'गीता' समस्त विद्वज्जन सेव्या तो है, सभी के द्वारा मननीया भी है।

गीता महाकल्पलतोपदिष्टा
कृत्वाऽर्जुनं लक्ष्यमुदात्तशिष्यम्।
लोकार्थमीशेन रहस्यरूपा
सेव्या सुधीरैर्मनसा रसाढ्या॥106॥

जिस प्रकार गीता मानव के अन्तःकरण को रसप्लावित कर विशुद्ध बनाती है, उसी प्रकार भगवती गङ्गा अपने निर्मल जल से बाह्य तथा अन्तर्भाग को कालुष्यरहित बनाती है। यह भगवान् श्री कृष्ण के युगल चरणारविन्द से समुत्पन्न होने से पुण्यस्वरूपा है, तथा भगवान् शङ्कर की दिव्य जटाओं में निवास कर योगियों व मुनिवृन्दों से पूजनीय व देवसमूह से परिसेवित होने से परम श्लाघनीय है—

गङ्गां भजे त्रिपथगां सुरवृन्दसेव्यां
गोविन्दचारुचरणस्नुतपुण्यरूपाम् ।
श्रीमन्महेश्वर-जटा-परिशोभमानां
योगीन्द्रतापसमुनीन्द्रकदम्बपूज्याम् ॥107॥

यह समस्त तापों का निवारण करने वाली है, परम पवित्र तथा परम श्रेष्ठ है, भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्यभक्ति में सद्बुद्धि-प्रदात्री है तथा संसार के बन्धनों से मुक्ति प्रदान करने वाली है। मृत्यु के आसन्न होने पर गङ्गाजल पान करने से दिव्यलोकों की प्राप्ति होती है, अतः यह सर्वदा पूजनीया है– वन्दनीया है। अनन्तगुणगणमण्डित, वेदादिशास्त्रों द्वारा प्रकटित दिव्यस्वरूपिणी, सुधामयी, आनन्दप्रदायिनी, प्रत्यक्ष प्रकट होकर कल्मष हारिणी व मोक्षप्रदात्री भगवती भागीरथी गङ्गा सर्वदा वन्दनीया है—

स्वान्ते महागुणवतीं श्रुति-शास्त्रगेयां
दिव्यप्रभां भगवतीममृतस्वरूपाम्।
आनन्ददां समुदितां विमलाम्बुधारां
गङ्गां नमामि नितरां मनसा गरिष्ठाम्॥111॥

'ग' कारत्रयी महिमा का अन्त 'गोमाता' के स्तवन से परिपूर्ण होता है, जो वस्तुतः भारतीय संस्कृति का एक प्रतिमान है। **'गावो मे चाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे परितः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥''** आनन्दकन्द जगदानन्दकर 'भगवान्' श्री कृष्ण चन्द्र की यह कामना किसी ही सौभाग्यशाली की भावना को तृप्त करती है। अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज सर्वतः पूजनीया कामदुधा कामधेनु गोमाता का दिव्यभाव से स्तवन करते हैं—

श्रीकृष्ण-हस्ताम्बुजवेणुनादैः सम्पुष्टगात्रा सुरधामरूपा।
या भारतश्रीः परिपूजनीया गौः कामधेनुर्जयतीहलोके॥112॥

यह नित्यप्रति मधुरतम दुग्धधारा प्रदान करती है, जिसके गोमय में लक्ष्मी का निवास माना गया है, मनोवांछित फल प्रदात्री गोमाता का वेदादि शास्त्र माहात्म्य वर्णन करते नहीं अघाते, समस्त पापों के नाश करने में प्रसक्त वह गोमाता विश्ववन्द्या है, सर्वतोभावेन अवध्य महामंगल-विग्रहस्वरूपा नवनीतनिधि वह गोमाता सभी के द्वारा उपास्या है, इसीलिए वह विश्वमाता है, जो गोपाल श्रीकृष्ण के बांसुरी वादन से प्रसन्न रहने वाली है, वह सकलमनोभिलाषाओं की पूर्तिकारिणी है, अतः परम वन्द्या है—

गोपालवाणी श्रवणेन हृद्या, व्रजे व्रजन्ती खलु विश्वमाता।
वरीयसी भारतवर्षरम्ये गौः कामधेनुर्जयतीह लोके॥116॥

ग्रन्थ के अन्त में अनन्तश्रीविभूषित श्री श्रीजी महाराज ने **भारतभारती स्तोत्र** प्रस्तुत किया है, जिसका अन्तिम पद्य है–

भारत भारती स्तोत्रं राष्ट्रभक्ति-विवेकदम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।9।।

इस स्तोत्र को उन्होंने राष्ट्रभक्ति के विवेकदाता के रूप में माना है। पंचम खण्ड में ''भारतमातृगुणाष्टकम्'' है। सर्वप्रथम भारतभारती स्तवन से भी श्री श्रीजी महाराज को मनस्तोष नहीं हुआ लगता है। इसीलिए वे अन्त में भी भारतमाता के गुणों का बखान करने में आह्लादानुभूति करते हैं। धन्य है ऐसे परमसन्त, राष्ट्रसन्त, राष्ट्र को समर्पित भक्ति वाले, अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज, परमधन्य हैं जो अहर्निश भारत मातृवन्दना में ही तत्पर दृष्टिगोचर होते हैं। मैं सर्वतोभावेन ऐसी परमदिव्य कान्तिमयी, सन्मार्गोपदेशिका श्री 'श्रीजी' की वाणी को बारम्बार सविनय प्रणाम करता हूँ।

व्याख्याता- संस्कृत
नवलगढ़ महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय नवलगढ़ (झुंझुनू)

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

जिस प्रकार पिपासाकुल प्राणी मधुर जल की खोज में इतस्ततः भटकता हुआ उसे प्राप्त करने की इच्छा लिये अतीव व्याकुल बना तड़पता रहता है, बस हरिदर्शन पिपासु रसिक साधक भक्त भी यदि इसी लालसापूर्ण अवस्था को बना ले तो उन परम दयामय करुणार्णव की अनुकम्पा में फिर विलम्ब कहाँ।

❊

उत्कण्ठ भाव ही तो विश्वनियन्ता को प्रेम-शृङ्खला में बांध देता है।

❊

परिशुद्धि (पवित्रता) ही समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाली है।

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य जी महाराज द्वारा प्रणीत

हिन्दी ग्रन्थ माला

1.	उपदेश दर्शन	–	उपदेश प्रवचन
2.	श्री सर्वेश्वर-सुधाबिन्दु	–	पद (सं. 118)
3.	हिन्दु संघटन	–	आलेख
4.	भारत-कल्पतरु	–	पद्य
5.	विवेकवल्ली	–	दोहा (स. 106)
6.	श्री राधासर्वेश्वर-मञ्जरी	–	पद सं. 64 दो. 92
7.	छात्र विवेक दर्शन	–	दोहा (सं. 242)
8.	भारत वीर गौरव	–	दोहा (सं. 181)
9.	श्री राधामाधव रस विलास.	–	दोहा (सं. 1053)

आचार्यश्री द्वारा प्रणीत-प्रकाश हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की यह सूची. विक्रम स. 2060 गोपाष्टमी तक की है। हिन्दी भाषा में कुल नौ ग्रन्थों में दो ग्रन्थ आलेखबद्ध हैं शेष पद व दोहों में रचित हैं। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में भी हिन्दी के पद व दोहा प्रकाशित हैं। आचार्यश्री द्वारा रचित कुल पद दोहा सं. 2622 दो हजार छः सौ बाईस हैं।

पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज प्रणीत
हिन्दी ग्रन्थों का परिचय

उपदेश दर्शन – पूज्य आचार्य श्री के उपदेश दर्शन ग्रन्थ में करीब 108 उपदेशात्मक आलेख सम्मिलित हैं। इन आलेखों में सनातन धर्म-मर्यादा, वैष्णव, आचार-विचार व श्री निम्बार्क सम्प्रदाय सम्बन्धी सभी विषयों पर शास्त्र सम्मत, सारगर्भित सरल, सुबोध व प्रभावोत्पादक, उपदेशात्मक आलेख है।

हिन्दु संघटन – अनादि वैदिक सनातनधर्म हिन्दुधर्म के मूलतत्त्व, सामाजिक सांस्कृतिक आचार विचार, सामाजिक एकीभाव व सांस्कृतिक संघटनात्मक, क्रियान्विति के सम्बन्ध में आचार्यश्री का हिन्दु संघटन में सामयिक उद्‌बोधन है।

श्री सर्वेश्वर सुधा बिन्दु व श्री राधा-सर्वेश्वर मञ्जरी – ये दोनों ग्रन्थ प्रमुखतः आचार्यश्री द्वारा रचित पद रचनाओं के हैं। इन पद रचनाओं में गायन की शास्त्रीय मर्यादा व काल की व्याकरण गत छन्द मर्यादा दोनों हैं। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की सरस माधुर्य भाव परम्परा से यह सराबोर है। इन में श्री

सर्वेश्वर व आचार्य महिमा पदावली के साथ युगलकिशोर श्री राधामाधव के साथ युगल किशोर की श्री राधामाधव के उत्सवी लीला प्रसंग हैं और आरती के अतिरिक्त चेतावनी विनय शरणागति व नामजप महिमा के पद भी हैं। श्री राधा कृष्ण की वृंदावनस्थ निकुञ्ज लीला व सेवा शृंगार के पद प्रमुखता से हैं।

भारत-कल्पतरु – भारत देश, भारत भूमि भारत के आर्य ग्रन्थ, भारत व भारतीयों का गौरव मय इतिहास, यहाँ के ऋषि, महर्षि, राजर्षि, भक्त, धर्मात्मा आदि प्राणभावों का प्रेरणामय स्मरण, भारत की दया परोपकार अहिंसा आदि सद्‌गुणों से परिपूर्ण संस्कृति गौरवमय भारतीयता का परिज्ञान कराने वाला पद्यात्मक ग्रन्थ है ''भारत कल्पतरु''। इसमें 70-71 पद व 225 के करीब दोहा है। इस ग्रन्थ का लोकार्पण तात्कालिक उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा जी ने किया था।

छात्र-विवेक-दर्शन – यह ग्रन्थ आचार्यश्री ने विशेषतः छात्रों को सम्बोधन करके लिखा है, किन्तु यह सभी के लिए उपादेय है। इस ग्रन्थ में निहित प्रेरणाओं से मातृ-भक्ति, पितृभक्ति, आचार्य-भक्ति, अतिथि सेवा, देश-भक्ति, भगवद्-भक्ति व सांस्कृतिक धर्माचार का निर्देश मिलता है।

भारतवीरगौरव – आचार्यश्री ने 'भारतवीर गौरव' ग्रन्थ में, भारतीय संस्कृति-निष्ठ प्रबल आत्मबली, मनीषी धर्मात्मा, प्रजापालक धर्मनिष्ठ राजा महाराजा और शूरवीर योद्धाओं का यशोगान करते हुए राष्ट्रगानों को सामयिक आक्रमणकारी समस्याओं से जूझने व विजय प्राप्त करने के लिए प्राणवान् उद्‌बोधन प्रदान किया है। इस ग्रन्थ में करीब 180 दोहे हैं।

विवेक-वल्ली – विवेक-वल्ली ग्रन्थ मानव में सद् विवेक विकसित करने का प्रेरणादायी प्रयास है। वैष्णवी निम्बार्क आचार मर्यादा के अतिरिक्त इस ग्रन्थ में प्रचलित असदाचारों से सावधान करते हुए धार्मिक आचारों, रीति-नीति, संस्कारों, सांस्कृतिक आचार-विचार की प्रेरणा प्रदान की है। यह ग्रन्थ मानव में कर्तव्य बोध, मर्यादा और मानव जीवन को सुख शान्ति मय व समृद्ध बनाने का परिपूर्ण विवेक प्रदान करता है। इस ग्रन्थ में निहित विवेक मानवता का सर्जन करने में सक्षम है। इसमें करीब 406 दोहे हैं।

श्री राधा-माधव रस विलास – 'राधा माधव रस विलास' दश सर्गात्मक महाकाव्य है। निकुञ्ज लीलानुगत भक्तिरस का आस्वादन कराता है। इसमें रस माधुर्य के आधार 'व्रजभाव' कुशल सरकार श्री राधामाधव की निकुञ्ज लीला के आधार वृन्दावन व सखी सहचरी गण सहित माधुर्यमय यशोगान है। इसके साथ ही भक्ति के अवयव व अष्टयाम सेवा, उत्सव-वर्णन, भक्ति रस, मनोविग्रह श्रीगुरुनिष्ठा व प्रेरणाप्रद उद्‌बोधन सहित माधुर्य भक्ति के सर्वोच्च निकञ्ज रस की लीलाओं का भाव-विहार है। यह काव्य माधुर्य भक्ति का सम्पूर्ण कथन कहा जा सकता है।

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज प्रणीत साहित्य में

धर्म-मर्यादा

— 'निम्बार्कभूषण' पं. रामस्वरूप गौड़

जीवन-व्यवहार में शालीनता, सद्भाव, शौचाचार, यथायोग्य स्नेह-सम्मान व परस्पर के सत्याचरण, कर्म-व्यवहार को शिष्टाचार व सदाचार कहते हैं। सदाचार-शिष्टाचार, धर्म-संस्कार से निष्पन्न हैं। अतः शिष्टाचार व सदाचार में धर्म की मर्यादायें हैं। शास्त्रों में शिष्टाचार-सदाचार को धर्म-मर्यादा के रूप में प्रदर्शित किया हैं, अतः शास्त्रानुकूल यथा-योग्य शिष्टाचार-सदाचार व शौचाचार, धर्म का ही व्यावहारिक रूप है।

आचार्यप्रवर कहते हैं शास्त्रों के अनुकूल चलो, शास्त्रानुसार आचार-व्यवहार करो, अज्ञतावश शास्त्रों के प्रति निर्मूल शंका मत करो, शास्त्र-विधि क्रम त्याग कर मनोनुकूल चलोगे तो प्रतिकूल परिणाम और परिस्थिति उत्पन्न होगी। हिन्दू शास्त्र और संस्कृति का ध्येय सम्पूर्ण विश्व समुदाय की चतुः पुरुषार्थ सिद्धि व सुख सद्भाव की श्रेष्ठ हिताभिलाषा है।

निखिल विश्व का हितावह, सतत सुवांछित श्रेय।
राधासर्वेश्वरशरण हिन्दू-संस्कृति ध्येय॥
हिन्दू-संस्कृति विश्व का, चाहत हित सद्भाव।
राधासर्वेश्वरशरण, डिण्डिम घोष प्रभाव॥
शास्त्र-विधिक्रम त्यागकर, चलता मनोऽनुकूल।
राधासर्वेश्वरशरण, फल पावे प्रतिकूल॥
शंका करना अज्ञता शास्त्रों में निर्मूल।
राधासर्वेश्वरशरण, चलो शास्त्रानुकूल॥
(विवेक वल्ली)

सदाचार-विमुख के बारे में महाराजश्री ने कहा– ''यदि मानव सदाचार परायण न हो, सदाचार के पालन में प्रमाद करता हो तो वह अपने अभ्युदय से पराङ्मुख होकर अधोगामी बनता है, फलतः नारकीय नाना यातनाओं की भीषण ज्वाला में दग्ध होकर दारुण क्लेशों का उपभोग करता है।'' (उपदेश दर्शन 40)

सदाचार संदर्भ से 'महाभारत' उद्योग पर्व के श्लोक देते हुए भावार्थ दिया है—

आचारात्फलते धर्ममाचारात्फलते धनम्।
आचाराच्छ्रियमाप्नोति आचारो हन्त्यलक्षणम्॥

सदाचार के पालन से धर्म की वृद्धि और सदाचार से ही धन प्राप्ति होती है। सदाचार से कीर्ति की उपलब्धि तथा अग्राह्य अवगुणों का ध्वंस होता है।

आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचारात्कीर्तिमाप्नोति पुरुषः प्रेत्य चेह च॥

स्वर्गादि लोकों की प्राप्ति पूर्वक सदाचार से आयु और लक्ष्मी की उपलब्धि तथा यश मिलता है जिससे यह मानव परमानन्द की दिव्य अनुभूति करता है। (उपदेश दर्शन पृ. 41)

आज जो मानव समाज में अधिकांशतः अनाचार, दुराचार, अश्लीलता, अशिष्टता, हिंसा, आतंक व आततायी वातावरण दिखाई दे रहा है। पदगत भ्रष्टाचार व व्यावसायिक व कर्मगत कदाचार देखा जा रहा है, इन सबका कारण धर्म-मर्यादा और मानवीय दायित्व-हीनता ही है। आचार्यप्रवर कहते हैं— ''आज बहुधा विवेकहीन मानव धार्मिक, नैतिक और चारित्रिक आश्रय को त्याग कर दुष्कर्म परायण होता जा रहा है। अपनी स्वार्थपरता के पीछे अत्यन्त निन्दनीय क्रूर से क्रूर, गर्ह्य से गर्ह्य और घोर से घोर पाप कर्मों के करने में लेश मात्र भी संकोच नहीं करता। देश, धर्म, संस्कृति, मर्यादा आदि सभी से विमुख होकर अज्ञान-पाश में आबद्ध हुआ, हिंसा अत्याचार आदि पैशाचिक कुकर्मों की ओर प्रवृत्त होना ही उसके जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य बन गया है। परिणाम में अन्ततः वह उभयतो भ्रष्ट होकर क्लेश रज्जु में बँधा नारकीय भयङ्कर यातनाओं का उपभोग करता है।'' (उपदेश दर्शन)

मानव जीवन के समस्त क्षेत्र की व्यवस्थायें चाहे वह पारिवारिक हों, सामाजिक हों, व्यावसायिक हों, न्याय व्यवस्था की हों, शासकीय हों, वर्णाश्रम व दैनन्दिन जीवनचर्या की हों, धर्म सदाचार के मर्यादित कर्म दायित्व के बिना मानव सहित जीव मात्र के लिए समस्याग्रस्त और यातनापूर्ण हो गई है।

इन सभी समस्याओं का समाधान जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज एक मात्र 'धर्म' को ही बताते हैं। आपश्री का मानना है धर्म सेवन के बिना शासन की कठोर नियन्त्रण व्यवस्था से भी इन दुष्कर्मों का परिहार सम्भव नहीं, यह तो केवल धर्म के सर्वदा आचरण से ही स्वयमेव के सेवन से सम्भव है। ''उपदेश दर्शन'' के लेख ''**धर्म ही भ्रष्टाचार का प्रतिबन्धक हो सकता है**'' में आचार्य प्रवर ने मनुस्मृति का यह श्लोक उद्धृत किया है—

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत्॥ मनुस्मृति 8/15

धर्माचरण से धर्म की रक्षा और समृद्धि होती है समाज में सर्वत्र धर्म का व्यवहार देखने को मिलता है और इस धर्म समृद्ध आचरण से सम्पूर्ण जीव, जगत् तथा मानव की रक्षा समृद्धि होती है। जहां मानव समाज में धर्माचरण नष्ट हुआ, वहीं परस्पर काम, क्रोध, स्वार्थ से हिंसा, द्वेष, अनाचार और कदाचार देखने को मिलता है। इस तरह नष्ट हुआ धर्म जीव-जगत् व मानव को ही नष्ट करने लगता है। अतः प्राणीमात्र की रक्षा समृद्धि के लिए कभी भी धर्म की हानि नहीं करनी चाहिए।

माता-पिता व परिवार-परिजन, शैशव काल से ही सन्तान को परम्परागत शिष्टाचार संस्कार देते हैं। शिक्षा में पहले शिष्टाचार संस्कार देते हैं। शिक्षा में पहले शिष्टाचार सदाचार व शौचाचार की ही शिक्षा दी जाती है। शिक्षा-शिष्टाचार से व्यक्ति में परिमार्जित सदाचार संस्कार निर्मित होते हैं। परिवार, समाज, शैक्षणिक, धार्मिक, कार्मिक, व्यावसायिक व प्रशासनिक प्रतिष्ठानों में भी यथायोग्य कर्तव्य व्यवहार के शिष्टाचार संस्कार परम्परा से चले आ रहे कर्तव्य व्यवहार से प्राप्त होते हैं। अतः परम्परागत शिष्ट और सदाचार-सम्पन्न समाज संस्कारशील कहलाता है। परम्परागत सदाचार शिष्टाचार की संस्कारगत व्यवहार प्रणाली ही संस्कृति कहलाती है।

व्यक्ति और समाज का जीवन सदाचार कर्म-व्यवहार से ही सुमधुर, सौजन्यमय और सुसमृद्ध होता है। ग्रन्थों में इन कर्म व्यवहार के तीन स्वरूप देखते हैं– श्रौत, स्मार्त और सदाचार। श्रौत कर्म में संस्कार (विवाह, गर्भाधान) आदि कृत्य आते हैं, इसमें ब्राह्मण संहिताओं के यज्ञादि कर्म अग्निस्थापन, व्रत, तप तथा सोम यज्ञादि कृत्य आते हैं। स्मार्त कर्म में स्मृतियों में वर्णित कर्म (कर्त्तव्य) आते हैं, जिनका विशेष सम्बन्ध वर्णाश्रम धर्म से है। अपने-अपने कर्मक्षेत्र के सभी धर्मसम्मत कर्तव्य, नियम, शिष्टाचार व सदाचार धर्ममर्यादा में आते हैं। सम-सामयिक परिस्थितिवश कर्म प्रवृत्ति की प्रणाली में न्यूनाधिक परिवर्तन हो सकता है, किन्तु शिष्टाचार, सदाचार व शौचाचार के धर्मसम्मत नियमों में परिवर्तन हो शौचाचार के धर्म सम्मत नियम में परिवर्तन होनेसे वह कर्म धर्म-विमुख या धर्म रहित कर्म (कर्तव्य) गिना जाता है। अतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के कर्म चाहे वह नवीन प्रायोजित हो या परम्परागत, धर्म के मूलभूत नियम से परिपूर्ण होने चाहिये। हरि निष्ठा व सत्य अहिंसादि धर्म के मूल तत्त्व से विपरीत कर्म अधर्म कहलावेगा। उदाहरण के लिए राक्षस और दैत्यों ने काम, क्रोध, मद, अहंकार पूर्वक श्रीहरि से वैर किया, नास्तिक भाव से श्रौतस्मार्त कर्तव्य सदाचार को त्याग दिया, स्त्री-पुरुष की मर्यादाओं से रहित कामवासनामय व्यवहार किये, अनुचित जीवन व्यवहार व मांस-मदिरा से आतंकित किया, इन सब अधर्म अमानवीय आचरण के साथ शक्ति और वैभूति के लिए ब्रह्मा-शिव आदि देवों की घोर तप साधनायें की और यज्ञ किये, किन्तु धर्म के सामान्य भाव से विलग होने से यह राक्षस धर्मद्रोही ही कहलाये।

सदाचार के प्रसंग में धर्मशास्त्रों ने धर्म के दस यम और नियम बताये हैं—

सत्यं क्षमार्जवं ध्यानमानृशंस्यमहिंसनम्।
दमः प्रसादो माधुर्यं मृदुतेति यमा दश॥
शौचं स्नानं तपो दानं मौनेज्याध्ययनं ब्रतम्।
उपोषणोपस्थदण्डो दशैते नियमाः स्मृताः॥

सत्य, क्षमा, सरलता, ध्यान, अक्रूरता, अहिंसा, इन्द्रिय-दमन, प्रसन्नता, मधुरता व कोमलता ये दस यम है। शौच, स्नान, तप, दान, मौन, यज्ञ, अध्ययन, व्रत, उपवास तथा इन्द्रिय संयम ये दस नियम हैं। जिन-जिन कर्तव्य व्यवहार में यह धर्म-नियम सम्मिलित हैं, वह व्यक्ति व कर्म धर्मप्रवण है। उपरोक्त

कथित 'यम' सदाचार है व नियम दैनन्दिन संस्कारशील कर्तव्य है। दैनन्दिन कर्तव्य में परिस्थिति के अनुसार शिथिलता हो सकती है, किन्तु सदाचार के नियमों में शिथिलता पतनोन्मुख बनाती है।

धर्म के आचरण से व्यक्ति व समाज की समुन्नति होती है। सुख-सौहार्द का वातावरण बनता है। सदाचारी में एक दूसरे के भले की भावना होती है, व्यक्ति परस्पर एवं दूसरे से सुरक्षित और विश्वस्त अनुभव करते हैं। जहाँ सदाचार नहीं, वहाँ ईर्ष्या, द्वेष, अपमान, अवमानना, झूठ, पाखण्ड, काम, क्रोध, लोभ, स्वार्थ में हिंसा क्लेश से परस्पर संघर्षरत दल देखे जाते हैं। सदाचारहीन समाज में कोई सुरक्षित और निश्चिन्त नहीं देखा जाता। दान, दया, करुणा, गुणीजनों व उपकारक का सम्मान, छोटों को स्नेह-दान, परोपकार आदि सत्याधृत आचरण सदाचार से ही जीवन व्यवहार में उतरते हैं।

शास्त्रों में सदाचार को परम धर्म, मनोरथों को पूर्ण करने वाला परम तप, आयु की वृद्धि करने वाला तथा सब पापों का नाश करने वाला कहा है। आचारशील को श्रेष्ठ मानव व आचारहीन को निन्दनीय कहा है। आचारशील की स्तुति और यश होता है, आचारहीन समाज में अपमानित होता है–

विद्वेषरागरहिता अनुतिष्ठन्ति ये मुने!।
विद्वांसस्तं सदाचारं धर्ममूलं विदुर्बुधाः॥
लक्षणैः परिहीनोऽपि सम्यगाचारतत्परः।
श्रद्धालुरनुसूयश्च नरो जीवेत् समाः शतम्॥

राग-द्वेष रहित विद्वान् सदा सत्कर्म का सम्पादन करते हैं, बुद्धिमान् श्रद्धालु उसे ही धर्म का मूल सदाचार कहते हैं, उसी का अनुसरण करते हैं। वेदविज्ञ विद्वान् से धर्म-प्रेरणा लेकर शिक्षा, अध्ययन से रहित श्रद्धावान् सामान्य जन भी अत्यन्त आदर से धर्म-सदाचार का पालन करता हुआ नीरोग, शतायु और यशस्वी होता है।

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः यद्यप्यधीता सह षड्भिरङ्गैः।
छन्दास्येतं मृत्युकाले त्यजन्ति नीडं शकुन्ता इव जातपक्षाः॥
(भ.पु.उ. 202-17)

आचारहीन तो वेद-शास्त्रों के अध्ययन से भी पवित्र नहीं हो सकता। वरन् वेद-शास्त्रों का अध्ययन न किया हुआ भी श्रीहरि और शास्त्रों में श्रद्धा भक्ति रखने वाला शास्त्रानुकूल परम्परा से चले आ रहे सदाचार का अवलम्बन करके विद्वानों से यथा-योग्य मार्गदर्शन लेकर कर्तव्य का सम्पादन करने वाला पवित्र हो जाता है सफल-मनोरथ हो जाता है।

मनुजी ने वेद-स्मृति सदाचार व पवित्र मन को धर्म का साक्षात् स्वरूप माना है।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्॥
(मनु. 2-12)

पवित्र मन से वेद-स्मृति वर्णित सदाचार का पालन ही धर्म है, अर्थात् धर्म को सदाचार का ही स्वरूप कहा है। वशिष्ठ ने धर्म स्मृति में सदाचार को सर्व श्रेष्ठ परम धर्म कहा है।

आचारः परमो धर्मः सर्वेषामिति निश्चयः।
हीनाचारः परीतात्मा प्रेत्य चेह विनश्यति॥
वसिष्ठ स्मृति (6-1)

भगवान् राम तो धर्म सदाचार के जीवन्त अवतार ही हैं, वाल्मीकि जी ने '**रामो विग्रहवान् धर्मः**' भगवान् राम को धर्म का साक्षात् विग्रहः कहा है। जगत् में भी भगवान् राम सदाचार के कारण 'मर्यादा पुरुषोत्तम' नाम से विख्यात हुए।

धर्म-सदाचार का पालन अर्थ, काम, लिप्सा से रहित होकर करना चाहिये। (मनु. 2-13) एक का धर्माचार प्रवण कर्तव्य कर्म दूसरे धर्माचारण व कर्तव्य कर्म में बाधक न बने।

धर्मं यो बाधते धर्मो न स धर्म कुधर्म तत्।
अविरोधात्तु यो धर्मः स धर्मः सत्य-विक्रमः॥
(महाभारत)

सत्याधृत अपने कर्तव्य धर्म से धर्म व धर्मावलम्बियों का सहयोग करे व सब मिल कर व्यक्ति राष्ट्र व प्राणी मात्र की अधर्म से रक्षा करें। अधर्मी से धर्म रक्षा अर्थात् धर्म सदाचारमय कर्तव्य-कर्मों के विघ्नों का निवारण व राष्ट्र-रक्षा अधर्म से भी करना हेय नहीं कहा गया है। इस सम्बन्ध में सामयिक रक्षा कर्तव्य को मुख्यता दी गई है।

ऋषि-मुनियों ने सदाचार में ही समस्त धर्म की गति देखकर धर्म को ही समस्त तप का मूल कहा है—

एवमाचरतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्।
सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम्॥
(मनु. 1-110)

धन से हीन को हीन नहीं माना गया है। धर्माचार से गिरे हुए को ही हीन व मृतक समान माना है— "**अहीनो वित्ततो हीनो वृत्ततस्तु हतो हतः॥**" आचार को ही धर्म व कुल का मूल कहा है। आचारहीन तो न कुलीन होता है, न धार्मिक।

एवमाचारधर्मस्य मूलं राजन् कुलस्य च।
आचाराद्धि च्युतोजन्तुर्न कुलीनो न धार्मिकः॥

बड़े कुल में जन्म ले लेने से कोई कुलीन नहीं हो जाता है, वरन् श्रेष्ठ कुल में जन्म लेकर श्रेष्ठ आचरण से ही कुलीन कहलाता है और कुल श्रेष्ठ रह पाता है।

हीनजातिप्रसूतोऽपि शौचाचार-समन्वितः।
सर्वधर्मार्थकुशलः स कुलीनः सतां वरः॥
(भ.पु.उ.प. 205-22)

हीन-जाति में जन्म लेने पर भी जिस क्रम के जातक शौचाचार से सम्पन्न है तो वह धर्म आस्था से सम्पन्न कुल, सज्जनों में प्रशंसनीय है। व्यक्ति और कुल की पहचान सदाचार से ही होती है। सदाचारी लोक और परलोक दोनों में आनन्द प्राप्त करता है।

शिष्टाचार, सदाचार और शौचाचार ये तीन शब्द मुख्यतः धर्म आचार के लिए आये हैं। धर्म भावनागत व्यवहार में ये परस्पर ओत-प्रोत हैं, किन्तु कर्म व भाव की मुख्यता से इनकी पृथक्-पृथक् पहचान भी है।

परम्परागत यथायोग्य बर्ताव को सामान्य रूप से हम शिष्टाचार कहते हैं। जो परिवार परिजनों का यथायोग्य सम्बन्ध से बर्ताव गुरु-शिष्य बड़े-छोटे, ग्राहक दुकानदार आदि तथा योग्य बर्ताव। इसी तरह परिवार समाज, ग्राम, राष्ट्र, वर्णाश्रम, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, विधि व शासन तथा व्यवहार नियमों का यथायोग्य रूप से आचार-व्यवहार पालन भी शिष्टाचार व्यवहार में आता है।

इस शिष्टाचार-व्यवहार में विभिन्नता हो सकती है, जैसे ब्राह्मण के लिए ब्राह्मण कुलीन शिष्टाचार व दैनन्दिन चर्या व परस्पर वैसे ही व्यवहार की आवश्यकता है, वैसे ही दूसरों को अपने कुलाचरण अनुरूप यथायोग्य जीवनचर्या व परस्पर के व्यवहार की आवश्यकता है, वैसे ही अपने-अपने वर्ण आश्रम के अनुरूप जीवनचर्या व परस्पर के व्यवहार की अपेक्षा है तथा तपोवृद्ध, कुलवृद्ध ज्ञानवृद्ध व वयोवृद्ध के अनुरूप परस्पर सम्मान, स्नेह, सहयोग व सद्भाव की अपेक्षा है। इस तरह परिवार, समाज व ग्राम का परस्पर शिष्टाचार पालन योग्य है। इसी तरह कार्मिक (उद्योग), शैक्षणिक (विद्यालय आश्रम) व्यावसायिक (व्यापारिक प्रतिष्ठान) धार्मिक (देवालय, धर्म, ग्रन्थ, तीर्थ गुरु-आश्रम साधु सन्यासी स्थान आदि) विधिशासन (देश के कानून, न्यायालय व शासकीय कार्यालय) आदि-आदि प्रतिष्ठानों के अपने-अपने क्षेत्राधीन नियम है, जिनका व्यवहार- पालन इन कार्य क्षेत्रों में कार्य करते समय करना पड़ता है।

राष्ट्र की सीमाओं में यह सब कार्य-प्रवृत्ति होती हैं। राष्ट्र का विधान जन-जन की धर्मनिष्ठ कार्य प्रवृत्तियों का संरक्षक है। अतः राष्ट्र-जन को शासन-विधान का सम्मान करना होता है। शासन व विधान का यह धर्म है कि वह धार्मिक मर्यादाओं को बाधित न करे और अधर्म को प्रशस्त न होने दे। धर्म-सदाचार को प्रशस्त करे व अधर्म, अकर्म व कदाचरण को बाधित कर रोके।

कई शिष्टाचार कर्तव्यों में बहुतों की समानता हो सकती है, किन्तु दैनन्दिन व दूसरे कर्म आचरण में साधनाचर्या में शिष्टाचार हो सकती है। इस तरह परस्पर के शिष्टाचार, सदाचार, सद्भाव के यथायोग्य पालन से ही सामूहिक धर्म पुरुषार्थ की स्नेह सौजन्यमय समृद्धि होती है।

शिष्टाचार-सदाचार-शौचाचार को धर्म मर्यादा में सात्विक सुसौम्य वस्त्रालंकरण शिक्षा-संगीत, मूर्ति, भवन, वास्तु आदि बतलाये, लोक जीवन की परम्परागत लोक संस्कृति, नदी-सरोवर, कूप-बावड़ी,

बागबगीचे, फल-पुष्प, लता-वृक्षादि, जीव-जन्तु व प्रकृति का लालन-पालन संरक्षण-संवर्धन भी आता है, क्योंकि सनातन धर्म में सम्पूर्ण जड़-चेतन, विश्व-प्रकृति के साथ परस्पर का अवलम्बन मानकर मर्यादा पूर्व अविरोधात्मक सहयोग का आह्वान किया है।

शिष्टाचार व सदाचार की एक बारीक विभाजन रेखा हो सकती है। शिष्टाचार परस्पर का धर्म-विधि मान्य व्यवहार है, तो सदाचार श्रीहरि व धर्मनिष्ठामय सत्वसम्पन्न समर्पित व्यक्तिशः जीवनचर्या। सदाचारी का दैनिक जीवन ईश्वर उपासना-भक्ति श्रद्धा व सत्य अहिंसा सन्तोष पवित्रता दान दया आदि धर्म क्रिया-कलाप से परिपूर्ण होता है। सदाचारी जीवन उस पार्थ के विभिन्न क्रिया व्यवहार से जुड़कर भी अपनी व्यक्तिगत धर्म प्रवृत्ति का निष्ठा से निर्वाह करता है। शिष्टाचार में सदाचार निहित है और सदाचार में शौचाचार निहित है।

देश, काल व कर्म प्रतिष्ठा अनुसार यथायोग्य शिष्टाचार मर्यादा तो अन्य सभी को निभाने पड़ते हैं अन्यथा उसे व्यावहारिक सम्बन्धों से तोड़ना पड़ेगा या व्यवहार से अलग कर दिया जावेगा या व्यावसायिक हानि उठानी पड़ेगी और शिष्टाचार-हीनता को अपराधी उल्लंघन तक पहुंचने पर न्याय विधि द्वारा दण्डित भी किया जा सकता है, जबकि सदाचारी जीवन के प्रत्येक व्यवहार में हार्दिक भाव से शिष्टाचार का निर्वाह करता है व स्व नियन्त्रित होता है। अतः सदाचार सम्पन्न शिष्टाचार श्रेष्ठ श्रेणी का व उत्तम धर्म है।

'शौचाचार' मनसा-वाचा-कर्मणा शुद्धि के लिए प्रयुक्त हुआ है। परस्पर मन-वचन और कर्म की शुद्धता से बाह्याभ्यन्तर पवित्रता और निर्मलता का निर्माण होता है। बाह्य व्यवहार, दैनिक जीवन और कर्म में शौच, शुद्धि और सात्विक पावनता का ध्यान रखने से इसका प्रभाव अन्तर्मन की पवित्रता पर भी पड़ता है। अतः शौचाचार का परस्पर अन्तः-बाह्य प्रभाव होता है। सात्विक शुद्ध खान-पान, रहन-सहन, शुद्ध जीविकोपार्जनीय कर्म, सुसौम्य वस्त्रालंकरण, सुसंग, कामोत्तेजना रहित साहित्य का पठन, दर्शन-संगीतश्रवण, गायन, सत्साहित्य सत्पुरुष व सत्संगति का संसर्ग आदि बाह्य प्रकार के शौचाचार हैं, जिनसे तन-मन व वातावरण पवित्र बनता है। परम पूज्य जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस शौचाचार-सम्पन्न पवित्रता के लिए कहा है— **'जिस मानव के जीवन में सर्वाङ्गीण पवित्रता आ जावे, वह देव रूप हो जाता है। इह लोक में वह सर्व वन्दनीय एवं ऊर्ध्वलोकों में परमानन्द का अनुभव करता है।'**

"पवित्रता का सभी क्षेत्रों में विचार किया जाता है– काल-पवित्रता, स्थान-पवित्रता, सङ्ग-पवित्रता, वाणी-पवित्रता, दान-पवित्रता, शरीर-पवित्रता, बुद्धि-पवित्रता, चित्त-पवित्रता, घ्राण-पवित्रता, रसना-पवित्रता, गति-पवित्रता, चरित्र-पवित्रता, अर्थ-पवित्रता, वस्तु-पवित्रता, अन्न-पवित्रता, जल-पवित्रता, सेवा-पवित्रता आदि-आदि।"

"जहाँ पवित्रता का अभाव है, वहीं आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक, त्रिविध ताप-परिताप प्रकट होने लगते हैं और विनाश की स्थिति आ जाती है।"

"अपवित्रता से ही असुरता का उद्भव होता है। अपवित्रान्तःकरण मानव ही समाज में अपराधी कार्य करता है और सर्वदा उपेक्षणीय, अनादरणीय और दण्डनीय होता है।"

''(मांस) मद्यमांसादि नानाविध मदान्धता, अपवित्रता, सर्वविध रूप से घृणित एवं अशान्ति मूलक है। इससे जीवन में ह्रास-विनाश पापाचार हो रहा है जो अकथनीय है।''

''इसलिए जीवन में पवित्रता का प्रसार हो, पवित्रता का समादर हो और पवित्रता का साम्राज्य हो। इत्थंभूत पवित्रता आदि से समष्टि का कल्याण कर सकती है। इस प्रकार न केवल राष्ट्र ही, अपितु समग्र विश्व ही पवित्रता के आचरण से शान्तिमय आनन्द एवं संवर्धनशील हो सकता है। सभी पारस्परिक कलह द्वन्द्व निरस्त हो सकते हैं।'' (उ.द. पवित्रता मानव का भूषण है–लेख से)

श्रुति-स्मृति-पुराणादि सनातन धर्म के ग्रन्थों में सदाचार मर्यादा का बृहद् वर्णन है। धर्म-सदाचार मर्यादा के सम्बन्ध में इन ग्रन्थों से जो मुख्य प्रकरण ग्रहण किये जा सकते हैं, वे इस प्रकार हो सकते हैं–

ईश्वर, ईश्वर का अजन्मा स्वरूप, लीला स्वरूप, ईश्वर का सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता, नियन्ता व संहारकर्त्ता का स्वरूप, ईश्वर का धर्म नियन्ता स्वरूप। सृष्टि (ब्रह्माण्ड) का स्वरूप, गति व प्रतिष्ठा, धर्म का स्वरूप, सदाचार, मर्यादा का स्वरूप, देश का स्वरूप, राजा (शासन) का स्वरूप, जीवन व्यवहार में धर्माचार व धर्माचार का उत्तम फल, दुराचार व अपराध व पापाचार का स्वरूप तथा फल, राजदण्ड, समाजदण्ड व नरकादि योनियों, आततायी व नास्तिक का स्वरूप, नास्तिक-आसुरी व्यवहार, असुर और आसुरी उत्पात, असुर आततायियों का जन जीवन में आतंक, आसुरी पापाचार का पराभव करने के लिए समय-समय पर श्री हरि (ईश्वर) का दिव्य शक्तियों सहित अवतार, भक्ति पर कृपा अनुग्रह के लिए धारित श्रीहरि (ईश्वर) का अवतार, विविध अवतारलीला, ईश्वर द्वारा आस्तिक धर्मशील, भक्त-उपासकों को समय-समय पर सम्बल सहयोग व कृपा अनुग्रह प्रदान करना, ईश्वर, महापुरुषों, महात्मा, ऋषि, महर्षि, साधुजनों की जीवन लीलायें व परस्पर के सम्वाद, उपदेश। वर्ण-धर्म, आश्रम-धर्म, संस्कार, विभिन्न कर्मगत आचार, शिष्टाचार, धर्मानुरूप दिनचर्या, सदाचार, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शौचाचार, धर्मानुरूप मन, धर्मनीति, राजनीति, स्त्री-पुरुषों के सामान्य तथा विशेष धर्म, गृहस्थों के कर्तव्य, विवाह-विधान, पुत्र-सन्तान प्रकरण, कर्मविपाक, धर्मपालन में स्वर्गादि, पुण्यलोक व मनुष्यादि, उच्चकुल योनि में जन्म, अधर्माचरण से नरकादि अधोगामि लोक व तीर्थ आदि योनियों में पुनर्जन्म। श्रीराधा सर्वेश्वर श्रीहरि की ईश्वरी-उपासना से गोलोकधाम, साकेतधाम, वैकुण्ठधाम आदि की प्राप्ति, ईश्वर के नित्यधाम की माधुर्यमय प्राप्ति, रूप जीवनमुक्ति।

परिवार, समाज, ग्राम, वित्त, उत्पादन, कर्म, दान, श्राद्ध, अशौच, शुद्धाशुद्ध, व्रत-उपवास, प्रायश्चित्त, पाप-पुण्य-फल, ज्ञान-विज्ञान, प्रभु उपासनायें और भक्ति परम्पराओं के प्रकरण धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

समस्त ब्रह्माण्ड, प्रकृति और पदार्थ की अपनी धर्म मर्यादा है। विश्व के समस्त प्राणियों की अपनी-अपनी धर्म मर्यादायें हैं और मानव जीवन व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र की याथातथ्य अपनी धर्म मर्यादायें हैं। इस एक धर्म की धुरी पर सब भ्रमण कर रहे हैं। श्रीहरि धर्म की धुरी के नियन्ता है।

मानव को करने के लिए दो विकल्प हैं– धर्म-मर्यादा का आचरण और अधर्माचरण। सृष्टि नियन्ता श्रीहरि के लिए धर्म व अधर्माचरण करने वालों को याथातथ्य फल प्रदान करने हेतु विविध तरह के विकल्प हैं और वह अपने नियन्ता-धर्म के द्वारा याथातथ्य इन विकल्पों से विविधात्मक सृष्टि का संचालन करता है।

कामवासना, लोभवासना, मोह, मद, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, आलस्य, कर्महीनता, नास्तिकता, हिंसा, क्रूरता, अपवित्रता आदि भाव समन्वित कर्मप्रवृत्ति अधर्माचरण है।

श्री हरि और वेदादि शास्त्रों में आस्थापूर्वक सात्विकता, सौम्यता, सदाचार, शिष्टाचार और पवित्रता, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, कर्तव्य-दायित्व, सन्तोष, दया, विनय आदि धर्मनिष्ठ कर्म-प्रवृत्ति, धर्माचरण कहे जाते हैं। धर्म, अधर्म की यह भाव प्रवृत्ति दैनन्दिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विविध तरह से प्रवृत्त होती है। व्यक्ति को अपने धर्माचरण की राह परम्परागत संस्कार, शास्त्र-विवेक, महापुरुष-प्रेरणा व विवेक ख्याति से तय करनी होती है।

श्रुति, पुराण, स्मृति, शास्त्र के, दिव्य वचन अनुसार।
राधासर्वेश्वरशरण, अनुवर्तन चित धार।।
श्रीहरि माया प्रबल है, परम अचिन्त्य अपार।
राधासर्वेश्वरशरण, हरि शरणागति धार।।
सतसङ्गति श्रुति-शास्त्र बोध, साधन जन अनिवार्य।
राधासर्वेश्वरशरण, परमोत्तम यह कार्य।।
समदृष्टि सद्भाव चित्त, परिहर निज अभिमान।
राधासर्वेश्वरशरण, निश्चय श्रेय महान।।

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज अपने वचनों में यह कह रहे हैं– श्रुति-स्मृति-पुराण आदि शास्त्र के दिव्य वचनानुसार अपनी धारणा बनाओ और उसके अनुसार चलो। इस सत्-असत् परिपूर्ण जगत् में श्रीहरि की विविधात्मक अचिन्त्य अपार माया है। इस मायामय क्लेश से बचने के लिए श्रीहरि की शरणागति धारण कर लें। सत्सङ्गति पूर्वक श्रुति शास्त्र का बोध कर लो। ईश्वर आराधना में लग जाओ, यह परमोत्तम कार्य है। अपना अभिमान त्यागकर समदृष्टि व सद्भाव चित्त में धारण करो, यह धर्म मर्यादामय जीवन ही निश्चय रूप से महान् और श्रेयस्कर है।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु जिस तरह **''सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं श्रुति-स्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः''** श्रुति-स्मृति व उसमें वर्णित समस्त विज्ञान व वस्तुओं को अपने-अपने क्षेत्राधिकार में यथावत् स्वीकार करते हुए उनसे जीवन में याथातथ्य व्यवहार का निर्देश देते हैं वैसे ही आचार्य-प्रवर अपने वचनों में शास्त्रों को याथातथ्य स्वीकार करते हुए उनके अनुसार चलने का निर्देश भी देते हैं।

मोखमपुरा, जयपुर

* * *

एक समसामयिक महत्त्वपूर्ण उद्बोधन :
"छात्र-विवेक-दर्शन"

— **डॉ. आलोक शर्मा**
एम.एससी., एम.एड., पीएच.डी. (शिक्षा)

'छात्र' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है– 'छत्रं गुरोर्दोषाणाम् आवरणं तच्छीलमस्य'। अर्थात् जिसका स्वभाव गुरु के दोषों को ढकने का हो, वह 'छात्र' होता है। इसी का पर्यायवाची है– 'शिष्य'। राजतरङ्गिणी' में कल्हण ने लिखा है–

"भूभुजा दानशौण्डेन पैत्रिके स्थण्डिले कृतः।
छात्राणामार्यदेश्यानां तेन विद्यार्थिनां मठः।।"

'गुरु' के लिए जो छाते का काम करे, वह 'छात्र' होता है। 'विवेक' शब्द का व्याख्यान करते हुए कोशकार कहते हैं कि परस्पर व्यावृत्ति से जो वस्तु का स्वरूप निर्धारित करने में सक्षम हो। विवेचन से उत्पन्न 'ज्ञान' को भी 'विवेक' कह सकते हैं– "विवेको वस्तुनो भेदः प्रभृतेः पुरुषस्य वा।" वेदान्त दर्शन में कहा गया है– "नित्यानित्यवस्तु विवेकस्तावत् ब्रह्मैव नित्यं वस्तु, ततोऽन्यदखिलं अनित्यमिति विवेकस्तावत् ब्रह्मैव नित्यं वस्तु, ततोऽन्यदखिलं अनित्यमिति विवेचनम्।' तीसरा पद है– 'दर्शन', जिसकी व्युत्पत्ति की जाती है– "दृश्यते अनेन' इति, अर्थात् 'नयन' अथवा बुद्धि अथवा शास्त्र (दृश्यते यथार्थतत्त्वमनेनेति) अमरकोशकार ने दर्शन के पर्यायवाची पदों में निवर्णन, निध्यान, आलोकन व ईक्षण का उल्लेख किया है। इस प्रकार तीनों शब्दों के संयोग से जो अर्थाभिव्यक्ति होती है, वह है– 'छात्रों के लिए विवेकितापूर्ण ज्ञान का परिज्ञान कराने वाला शास्त्र'। तैत्तिरीयोपनिषद में 'शिक्षावल्ली' के अन्तर्गत समावर्तन संस्कार के समय आचार्य शिष्यों को उपदेश देता है– **'सत्यं वद। धर्मं चर स्वाध्यायान् मा प्रमदः'** इत्यादि। आचार्य अपने प्रिय शिष्यों को यह कहने में भी तनिक संकोच नहीं करते कि जो उनके अनवद्य (अनिन्द्य) कर्म हैं, उन्हीं का अनुकरण करना है, अन्य लोकनिन्द्य कर्मों का आचरण नहीं करना चाहिये। उनके सुचरितों की ही उपासना करनी है, अन्य की नहीं– **"यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।"** (तैत्तिरीयोपनिषत् शिक्षा अध्याय, प्रथम वल्ली राकादश अनुवाक्)

अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वर-शरण देवाचार्य जी श्री 'श्रीजी' महाराज के अन्तर्मन से प्रस्फुटित विचार जो समस्त छात्रवर्ग के लिए मननीय, पठनीय व आचरणीय हैं, वस्तुतः उन ऋषि-महर्षियों की दिव्य वाणी के समान हैं, जो उनके आरम्भिक जीवन में मार्ग प्रशस्तकर होने के साथ ही सत्प्रेरणा के स्रोत हैं। स्वयं श्री आचार्यचरण का कथन है–

सुगमभाषयाऽऽबद्धं छात्रमङ्गलसम्प्रदम्।
विरच्यते विवेकार्थं छात्रविवेक-दर्शनम्॥2॥

महर्षि मनु ने समस्त मानव कल्याण की भावना को दृष्टिगत रखकर उपदेश दिया है कि प्रत्येक को ब्राह्म मुहूर्त में उठना चाहिए तथा धर्मार्थ चिन्तन के साथ दैनन्दिन जीवनचर्या प्रारम्भ करनी चाहिये–

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥ 4/92

श्री 'श्रीजी' महाराज का भी यही कथन है कि जो छात्र प्रभातकाल में निद्रापरित्यग कर देता है, वही उत्तम 'छात्र' है–

प्रतिदिन प्रभातकाल में नियमित उठे श्रेष्ठ।
वही छात्र अति उत्तम है, "शरण" सुमंगल श्रेष्ठ॥

प्राचीन शास्त्रकारों व नीतिवेत्ताओं का भी यही कथन है कि सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय सोते रहना हानिप्रद है।

"सूर्योदये चास्तमये शयानं विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः।"

सोकर उठने के तुरन्त बाद अपने इष्टदेव का ध्यान करना चाहिये। शेष शारीरिक क्रियायें भी उसके बाद करनी चाहिये। शरीर शुद्धि के उपरान्त 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः" विधिवाक्यानुसार प्रत्येक छात्र को स्वाध्याय में प्रवृत्त होना चाहिये। 'प्राणायाम' को श्रीजी महाराज छात्र दिनचर्या का महत्त्वपूर्ण अंग मानते हैं। वस्तुतः प्राणायाम के आचरण से चित्त विशुद्ध होता है। ऐसे प्राणायाम प्रातः सन्ध्या का एक अनिवार्य अंग है। महर्षि मनु का निर्देश है—

उत्थायावश्यकं कृत्वा कृतशौचः समाहितः।
पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् स्वकाले चापरां चिरम्॥4/93
ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च॥4/94॥

श्री 'श्रीजी' महाराज भी प्रत्येक छात्र के लिए यही हितकारी मानते हैं कि वह प्राणायाम आदि के साथ व्यायाम भी करे तथा सर्वविध अपने को स्वस्थ रखे—

दैनिक प्राणायाम हो, दिनचर्या अति शुद्ध।
प्रवचन-लेखन रुचि रहे, 'शरण' चित्त अवरुद्ध॥6
श्रम आसन नियमित करै, स्वस्थ रखें निज अङ्ग।
सात्त्विक भोजन उचित हो 'शरण' लहै सत्सङ्ग॥7॥

यह सत्य है– "यादृशं भक्ष्यतेऽन्नं बुद्धिर्भवति तादृशी" अर्थात् "जैसा खायेगा अन्न, वैसा होगा

मन''। सात्त्विक अन्नभक्षण से बुद्धि भी निर्मल रहती है, जो एक छात्र के लिए आवश्यक है। बुद्धि को सर्वदा निर्मल रखने की दृष्टि से ही 'श्रीजी' महाराज का यह सदुपदेश है कि दुर्व्यसनों का त्याग करना चाहिए तथा गुटका, बीडी यहाँ तक कि 'चायपान' से भी दूर रहना चाहिए। 'चायपान' भी उनकी दृष्टि में एक व्यसन है। मद्य-पान को तो वे सर्वथा हेय मानते हैं। उनके शब्दों में–

दुर्व्यसनों का त्याग हो सत्पुरुषों का मान।
आलस तज स्वाध्यायरत, 'शरण' छात्र गुणवान॥11
गुटका-बीडी-चाय से रहो सदैव सुदूर।
मद्यादि अति घातक हैं, ''शरण'' त्याग भरपूर॥12

छात्रावस्था में प्रत्येक बालक को निरामिष आहारी होना चाहिए। जो छात्र सामिष आहारी होता है, वह स्वाध्याय में प्रवृत्त होकर निद्रालु होता है तथा वह इन्द्रियनिग्रही भी नहीं हो पाता—

आमिष-अण्डा आसुरी, दुरित कर्म पहचान।
इनसे अतिशय दूर रहो तजो 'शरण' अज्ञान॥15
सुभग समय को सहज में, कभी न करता व्यर्थ।
वही छात्र मतिमान है, 'शरण' सुयोग्य समर्थ॥16

श्री 'श्रीजी' महाराज एक छात्र को सुसंयत जीवन यापन के लिए उपदेश देते हैं। इसीलिए वे चलचित्र दर्शन, दूरदर्शन के कार्यक्रमों से दूर रहने के लिए निर्देश देते हैं। क्योंकि सिनेमा, दूरदर्शन आदि पर अश्लील चित्र अधिक प्रभावी होते हैं, जो एक छात्र की निर्मल बुद्धि को कलुषित करने में पूर्ण सक्षम होते हैं। उनके दर्शन से वह पथभ्रष्ट हो जाता है तथा जूवा, चौपड, ताश आदि दुर्व्यसनों के साथ अन्यान्य सामयिक दुर्व्यसनों का आदी हो जाता है। उनका परित्याग ही छात्र के लिए श्रेयस्कर है—

चलचित्र का त्याग कर, भजिये राधाकृष्ण।
दूरदरश अश्लील दृश्य, शरण तजो यह तृष्ण।21
जूवा-चौपड तास का, खेल अनेक निकृष्ट।
इन्हें तजो मतिमान हो, 'शरण' वृथा आकृष्ट॥22॥

'जगद्‌गुरु' अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज चाहते हैं कि भारतीय नागरिक होने से प्रत्येक छात्र आस्तिक बुद्धि सम्पन्न हो। इसीलिए वे उसके लिए अपने इष्टदेव के प्रति समर्पित होने तथा उसकी आराधना-पूजादि में संलग्न होने का उपदेश भी प्रदान करते हैं। अपने घर में प्रतिदिन तुलसी पूजन, दीपदान तथा उसमें जलसिंचन को उसका प्रमुख कर्तव्य मानते हैं। वे प्रत्येक छात्र को मनमानी न करने का उपदेश भी देते हैं तथा श्रेष्ठ पुरुषों से परामर्श कर किसी भी कार्य में प्रवृत्ति को श्रेयस्कर मानते हैं। परस्पर संभाषण में श्लील भाषा के प्रयोग को सर्वथा हितकर व औचित्यपूर्ण मानते हैं। आजकल नाना विकृत पेय द्रव्यों का प्रचलन व उपभोग भी आचार्य छात्रवर्ग के लिए अहितकर मानते हैं—

नाना विकृत पेय द्रव्य सतत अहितकर जान।
इनका सेवन ना करो, 'शरण' सत्य को मान॥28॥

'जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'– सिद्धान्त के प्रति अनन्य श्रद्धा रखने वाले अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज की यह दृढ़ अवधारणा है कि प्रत्येक छात्र को जन्मभूमि का सम्मान करना चाहिये। भारतीय परम्परा के अनुपालन में ही छात्रवर्ग का परमहित है। शास्त्रकारों ने छात्र के लिए सायंकाल अध्ययन, भोजन, शयन आदि का निषेध किया है। प्रातःकाल भगवान् के मन्दिर में जाना, प्रभुदर्शन कर व उनका चरणामृत पान कर, उनका संकीर्तन कर छात्र को स्वस्थचित्त होना चाहिये। वे पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने वाले छात्रों को अशोभनीयाचरण वाला मानते हैं। वे छात्रों के द्वारा 'श्रमदान' करते रहने के पक्षधर हैं। आलस्य, दीर्घसूत्रिता व पठन में मन्दता को वे छात्रवर्ग के लिए उचित नहीं मानते। कार्य सम्पादन में शीघ्रता करना भी औचित्पूर्ण नहीं है। गो तथा विप्रवर्ग की सेवा में दत्तचित्त होना, किसी भी प्राणी का अपमान न करना, सभी के प्रति आदर-भाव रखना सुखी जीवन का लक्षण मानते हैं। परनिन्दा व परदोष से बचने का प्रयास छात्र वर्ग के लिए सर्वथा हितकारक है––

पर निन्दा पर दोष से, बचे रहो धीमान।
सद्गुण अवधारण करो, 'शरण' मिलै सम्मान॥41
कभी किसी का भूलकर मत करो अपमान।
जो जन का आदर करै, 'शरण' परम कल्यान॥42

'वेद' की 'सूत्रचतुष्टयी' के प्रति छात्रवर्ग को पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिये तथा अपने जीवन में उसकी यथाशक्ति पालना भी करनी चाहिये। 'सूत्र चतुष्टयी' में प्रथम सूत्र है– **''मातृदेवो भव''**। द्वितीय सूत्र है– **''पितृदेवो भव''**। तृतीय व चतुर्थ सूत्र भी– **''आचार्यदेवो भव''** तथा **''अतिथिदेवो भव''** है। इनके पालन से भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा तो जागृत होती ही है, साथ ही परम कल्याण भी प्राप्त होता है। श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट विचार अभिव्यक्त किये हैं। यथा––

मातृशक्ति का मान कर, यह है उत्तम कार्य।
उनकी सेवा में सदा 'शरण' भक्ति अनिवार्य॥44
सम्पूर्ण मातृशक्ति का आदर कर सम्मान।
छात्रा प्रति हो शुभदृष्टि, 'शरण' छात्र सद्ज्ञान॥45

इसी क्रम में वे उपदेश देते हैं––

अतिथि सेवा परम धर्म अभ्यागत सम्मान।
सकल छात्र कर्तव्य है, 'शरण' सहज वरदान॥115॥

सभी देवताओं के प्रति छात्रवर्ग को अपनी सद्भावना रखनी चाहिये। चाहे भगवान् श्री शंकर की

उपासना हो या श्रीगणेश की वन्दना। अपने इष्टदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित होना अत्यन्त हितकर है। भारतमाता की वन्दना को वे सर्वोपरि मानते हैं तथा प्रत्येक छात्र के लिए भगवती सरस्वती की अभिवन्दना को व उसके ध्यान को वे परम उपयोगी मानते हैं—

भारतमाता वन्दन कर श्रद्धायुक्त गुण गान।
भारत के प्रिय पुत्र छात्र, 'शरण' भजो भगवान॥130॥
सरस्वती अभिवन्दना, सरस्वती नित ध्यान।
सरस्वती जय उच्च स्वर, 'शरण' सरस्वति ज्ञान॥131॥

'छात्र वर्ग को भारत की भावी पीढी मानते हुए वे उन पर ही भविष्य का दायित्व मानते हैं। यदि छात्रवर्ग वस्तुतः सुसंयत, शालीन व भारतीय संस्कृति का पोषक होगा तो भारत निश्चित ही विश्वगुरु के गौरव से सुमण्डित होगा। इसीलिए वे 'छात्रवर्ग' से शुभ कामना करते हैं—

छात्र धर्म अतिश्रेष्ठ है, विद्यार्थी समुदाय।
भावी दायित्व आप पर, 'शरण' सुभग यह काय॥129॥

इस प्रकार सामान्य छात्र वर्ग को सदुपदेश देकर आचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने आचार्यपीठस्थ विद्यालयीय छात्रों के लिए तो 'आचार-संहिता' का ही निर्माण कर दिया है। पद्य संख्या 132 से 173 पद्य (42 पद्य) तक उन्होनें आचार्य पीठस्थ छात्रों की दिनचर्या का सरल शब्दों में वर्णन कर उन्हें अनुशासन योग्य बनाने की दृष्टि से सदुपदेश प्रदान किया है। वे छात्रों के साथ-साथ छात्राओं के प्रशिक्षित होने के पक्षधर भी हैं। 'नारीशिक्षा' को वे समय की आवश्यकता मानते हुए उन्हें भी वे उपदेश प्रदान करने में संकोच नहीं करते। छात्रायें ही वस्तुतः भारत की 'भावी मातृशक्ति' हैं। उनके मर्यादित होने तथा संस्कारित होने के साथ प्रशिक्षित होने में वे भारत को गौरवान्वित मानते हैं। इसीलिए वे उपदेश देते हैं—

छात्रा भी अपना समय शिक्षा में शुभदान।
गृहकार्य भी आवश्यक, 'शरण' श्रेष्ठतम मान॥176॥
मर्यादा पालन करो, जीवन हो आदर्श।
मातापिता आज्ञापरक, 'शरण' गहै अभिमर्श॥477॥
शास्त्रों में मातृशक्ति की, महिमा अमिट अपार।
तदनुकूल जीवन बनै, 'शरण' यही सुखसार॥178॥

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज 'सहशिक्षा' को समुचित नहीं मानते। उन पर महर्षि मनु का प्रभाव स्पष्ट रूप में झलकता है। महर्षि मनु ने कहा है—

स्वभाव एव नारीणां नराणामिह दूषणम्।
अतोऽर्थान्न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः॥ 2।213

अविद्वांसमलं लोके विद्वांसमपि वा पुनः।
प्रमदा ह्युत्पथं नेतुं कामक्रोधवशानुगम्॥ 2।214

इस संसार में पुरुषों को दूषण लगाना स्त्रियों का स्वभाव होता है, इसलिए पण्डित जन स्त्रियों में असावधानता से नहीं रहते हैं। संसार में स्त्रियां मूर्ख को अथवा कामक्रोध के वशीभूत पण्डित को बुरे मार्ग में ले जाने में समर्थ होती हैं।

महर्षि मनु ने तो सामान्यतः मनुष्य को माता, बहिन या अपनी पुत्री के साथ एकान्त में बैठने का भी निषेध किया है, क्योंकि इन्द्रियों का समूह बड़ा बलवान् होता है, वह पण्डित को भी आकर्षित कर लेता है—

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥ 2।215

किसी अनुभवी महर्षि का मत भी विचारणीय है—

घृतकुम्भसमा नारी तप्ताङ्गारसमः पुमान्।
तस्माद्घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः॥

नारी को घृत के कुम्भ समान बताया है तथा पुरुष को तपे हुए अंगारे के समान कहा है। इसीलिए घी तथा आग को एक साथ न रखें। इसीलिए पुराने विचारवाले लोग 'सहशिक्षा' को उचित नहीं मानते। श्री श्रीजी' महाराज के विचार हैं—

छात्र-छात्रा सहशिक्षा कदापि समुचित नाहि।
इसीका अतिविनिषेध हो 'शरण' सुधीजन चाहि॥103

माता यदि 'विदुषी' हो तो वह हितकारिणी होती है। वस्तुतः माता ही बालक की प्रथम गुरु मानी गई है। आचार्य को परमात्मा की मूर्ति कहा है, पिता ब्रह्मा की मूर्ति होता है तथा माता पृथ्वी की मूर्ति मानी गई है। सहोदर भ्राता अपनी ही मूर्ति होता है। इनमें भी माता-पिता का स्थान मनुष्य जीवन में अविस्मरणीय होता है, क्योंकि मनुष्य की उत्पत्ति के समय जो क्लेश माता और पिता सहन करते हैं, उसका बदला वह सैकड़ों वर्षों में भी नहीं चुका पाता—

आचार्यः ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः॥2।226
यं माता-पितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥227

स्थान निर्धारण के सम्बन्ध में मनु ने उपाध्याय से दश गुणा महत्त्व आचार्य को, आचार्य से सौ गुणा महत्त्व 'पिता' को तथा पिता से हजार गुणा महत्त्व 'माता' को दिया है—

उपाध्यायान् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥2।125

आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज कहते हैं कि–

विदुषी माता हितप्रदा करती जग का श्रेय।
वही प्राध्यापिका बने, 'शरण' श्रेष्ठ हो ध्येय॥184

अन्त में उपसंहार रूप में 'श्रीजी' महाराज का कथन हृदयग्राही तथा जीवन में अनुष्ठेय है—

छात्रा का यह धर्म है करै श्रेष्ठ व्यवहार।
लज्जा ही शुभ भूषण है, 'शरण' हृदय अवधार॥105
प्रस्तुत इस लघु ग्रन्थ में जो निर्दिष्ट विचार।
छात्र-छात्रा हितकारी 'शरण' उचित हियधार॥186

अन्त में उनकी सारस्वत लेखिनी 'नारी' के महत्त्व को उजागर कर विराम को प्राप्त हुई है—

नारी लक्ष्मी रूप है, नारी देवी रूप।
नारी शक्ति स्वरूपिणी, 'शरण' प्रपूज्य स्वरूप॥

निःसन्देह परम पूज्य श्री श्रीजी महाराज का यह उपदेश उनकी चिरकालीन साधना का प्रतिफल है, जो समसामयिक भी है तथा उपयोगी भी। शास्त्रकारों ने जो इस सम्बन्ध में कहा है, वह सर्वथा युक्तियुक्त है कि बालक को पांच वर्ष की आयु तक 'लालन' करना चाहिए–लाड दुलार करना चाहिए। उसके बाद दस वर्ष तक अर्थात् 15 वर्ष तक की आयु तक उसे ताडित करना चाहिए अर्थात् निर्दिष्ट नियमों की पालना न करने पर अनुशासित करना चाहिए, समझाना चाहिए, आवश्यकता होने पर डांटना भी उचित है। सोलहवर्ष का होने पर अपने आज्ञाकारी शिष्य या पुत्र को 'मित्र' समझना चाहिए–

''लालयेत् पञ्चवर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे शिष्यं मित्रवदाचरेत्॥''

इसी सन्दर्भ में आचार्यश्री का यह संपूर्ण उपदेश है, जिसे प्रत्येक छात्र शिष्य को अपने जीवन में पालना चाहिए।

254, शास्त्री सदन,
खूंटेटा मार्ग, जयपुर 302001

'गागर में सागर' : एक सत्योक्ति
('भारत वीर गौरव' के विशेष सन्दर्भ में)

— घनश्याम शर्मा
एम.एससी. (गणित व सांख्यिकी)
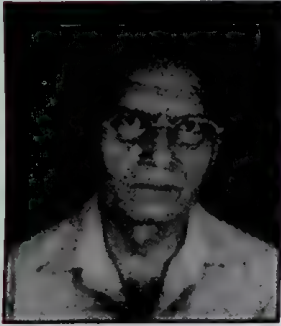
अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्कपीठाधीश्वर (वर्तमान) श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री

'श्रीजी' महाराज की दिव्य एवं परम पावनी लेखिनी से प्रसूत ग्रन्थरत्न "**भारतवीर-गौरव**" के अध्ययन, मनन व चिन्तन का स्वर्णिम अवसर पाकर मैं धन्यधन्य हो गया। यद्यपि इस ग्रन्थरत्न की पूर्वपीठिका तो भारतदेश के उत्तराञ्चल के 'कारगिल' क्षेत्र में चल रहे भारत-भाक सैनिकों के युद्ध में देश के प्रति अपने प्राणों का उत्सर्ग करनेवाले वीरवरेण्यों की पावन स्मृति को स्थायित्व प्रदान करना रहा है, तथापि आचार्यश्री की दिव्यवाणी अपनी मातृभूमि के प्रति सर्वस्व अर्पित करने वाले उन समस्त वीरों का स्मरण करने में तत्पर दिखाई देती है, जो वस्तुतः भारत-माता के सुपुत्र कहलाने योग्य प्रमाणित हुए हैं।

शब्दकोशों के अनुसर 'वीर' शब्द अनेकार्थक है। वैदिक मन्त्र "**वीरात्मानो रुद्रमभितो वधीर्हविष्मन्तः सद्यि त्वा हवामहे**" की व्याख्या में सायण ने वीर शब्द का अर्थ 'पुत्र' किया है। ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त वीर शब्द (वीरैः स्याम सधमादः - वीरैः पुत्रैश्च सधमादः सद् माद्यन्तः स्याम तथा कुरु– इति तद्भाष्ये सायणः) पति तथा पुत्र के लिए प्रयुक्त दृष्टिगत होता है। अमरकोशकार ने 'अवीरा निष्पति-सुता' लिखकर ऐसी स्त्री की संज्ञा 'अवीरा' बतलाई है, जो पति तथा पुत्र से विहीन हो। मार्कण्डेय पुराण में उल्लेख आया है कि ऐसी स्त्री से भाषण नहीं करना चाहिये जो वीरहीना हो– "**न चालपेज्जनद्विष्टां वीरहीनां तथा स्त्रियम्।**" विष्णु-सहस्रनाम में वीर भगवान् विष्णु का पर्यायवाची है– "**वीरोऽनन्तो धनञ्जयः:**"। लोक में वीर 'जिन' तथा 'नर' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। 'रुद्रयामल' प्रभृति तन्त्रग्रन्थों में 'वीर' एक तान्त्रिक भाव विशेष है– "**तत्रैव त्रिविधो भावो दिव्यवीर-पराक्रमः**"। वहाँ 'वीर' शब्द पारिभाषिक है– "**कुलाचारतो वीरः कुलसङ्गी सदा भवेत्।**" इत्यादि। वैदिक काल में 'वीर' शब्द 'कर्मदक्ष' के लिए भी प्रयुक्त होता था। '**कर्ता वीराय सुन्वथ उलोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित्**' इत्यादि मन्त्र की व्याख्या में सायण ने 'वीराय' –यज्ञादिकर्मदक्षाय अर्थ किया है। 'वीर' शब्द का प्रसंगोचित अर्थ है– 'प्रेरयिता'। वस्तुतः यह अर्थ भी सायणकृत है। आज लोक में वीर शब्द की जो व्युत्पत्ति प्रचलित है, वह है– '**विशेषेण ईरयति दूरीकरोति शत्रून्**' अर्थात् जो विशेषरूप से शत्रुओं को सीमा से खदेड देता है, भगा देता है, वह 'वीर' है। उसके पयार्यवाची शब्द हैं– शूर, विक्रान्त आदि। अमरसिंह ने अमरकोश में 'उत्साहवर्द्धक' को 'वीर' कहा है– "**उत्तमः प्रकृतिर्वीरः उत्साहस्थायिभावकः। महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः॥**"

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने 'वीर' शब्द के नानार्थों में से जिन वीरों का 'भारतगौरव' के रूप में उपस्थापन किया है, वे भी एकार्थक नहीं है। उन्होंने राष्ट्रवीरों, धर्मवीरों, दानवीरों, युद्धवीरों के साथ कर्मवीरों की चर्चा कर वस्तुतः उन लोगों को प्रेरणा प्रदान की है, जो हंसते-हंसते अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए समर्पित हो गये। वस्तुतः 'वीर' वही है, जिसके जन्म से राष्ट्र समुन्नति के शिखर पर आरूढ़ होता है– **''स जातो येन जातेन याति राष्ट्रः समुन्नतिम्''** अर्थात् जन्म उसी का सार्थक माना जाता है, जिसके जन्म से राष्ट्र उन्नति को प्राप्त होता है। गुणीजनों की गणना में प्रवृत्त होने पर जिसका नाम सर्वप्रथम स्मृतिपटल पर न आवे, तो उसे वह 'गौरव' प्राप्त नहीं हो सकता जो कनिष्ठिकाधिष्ठान को प्राप्त होता है। अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के स्मृतिपटल पर आने वाले सभी 'वीर' वस्तुतः भारतवीर के गौरव से महिमामण्डित हैं। उनका स्मरण न केवल अनुकरणीय है, अपितु प्रेरणाप्रद भी है। इसीलिए वे वीरशब्द के 'प्रेरयिता' अर्थ को सार्थक करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस काव्य की रचना कर सर्वनियन्ता श्री सर्वेश्वर प्रभु तथा उन्हीं के भक्ताग्रगण्य भक्तशिरोमणि श्री हनुमानजी महाराज के पावन चरणारविन्दों में सश्रद्ध अभ्यर्थना की है तथा उसी के साथ इस ग्रन्थरत्न का समर्पण किया है—

अर्जुनरथ ध्वज निजशोभित, महावीर हनुमान।
चक्रपाणि श्रीकृष्णचन्द्र, अभिराजत रथवान॥
कुरुक्षेत्र भारतधरा, महाभारत संग्राम।
श्रीयुत हनुमत बलशाली, शान्तभाव विश्राम॥
जानकीवल्लभ रामप्रिय, नाम जपत नित आप।
इन अतिपावन भक्तिरस, नशत सकल भवताप॥
महावीर हनुमान के श्रीचरणाम्बुज आज।
''भारतवीर गौरव'' का समर्पण शुभ विभ्राज॥

वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के 63 वें सर्ग में स्वयं वानरराज सुग्रीव ने अपना दृढ़मत अभिव्यक्त किया है कि 'कार्यसिद्धि' तो श्री हनुमान् के चरणों का चुम्बन करती है। वे बुद्धिमतां वरिष्ठ हैं। उन्हीं के लिए 'ज्ञानिनामग्रगण्य' का प्रयोग किया जाता है, वे 'अतुलितबलधाम' हैं। ऐसे 'सकलगुणनिधान' वीरों में अतिवीर 'महावीर' के चरणारविन्दों में किया गया समर्पण सर्वथा औचित्य पूर्ण है—

दृष्टा देवी न सन्देहो न चान्येन हनुमता।
न ह्यन्यः साधने हेतुः कर्मणोऽस्य हनूमतः।
कार्यसिद्धिर्हनुमति मतिश्च हरिपुंगवे।
व्यवसायश्च वीर्यं च श्रुतं चापि प्रतिष्ठितम्॥

न केवल 'समर्पण' में, अपितु ग्रन्थारम्भ में भी उन्होंने आदरभाव से महावीर महावीर-शिरोमणि का स्मरण किया है—

राधासर्वेश्वरं ध्यात्वा निम्बार्कश्चायुधं हरेः।
आञ्जनेयं हृदि स्मृत्वा महावीर-शिरोमणिम्॥1
श्रीमद्गुरोः पदाम्भोजं जगत्तापनिवारकम्।
प्रणम्य तन्यते हृद्यं "भारतवीरगौरवम्"॥2॥

भारतवर्ष की अनुपम महिमा है। इसके माहात्म्य का वर्णन श्रुति, स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि सम्पूर्ण शास्त्रों में समुपलब्ध है। समस्त ऋषि, मुनि, साधु, सन्तजन-धर्माचार्यवर्य इस पवित्र धरित्री का सर्वथा मङ्गल गान करके सौभाग्य का अनुभव करते हैं। एतदर्थ श्री 'श्रीजी' महाराज ने भारतभूमि का गुणगान किया है तथा अपने अन्तःकरण की भावना को अभिव्यक्त किया है कि इस भारतवर्ष का सर्वतोभावेन रक्षण होना चाहिये—

अखण्ड भारतवर्ष का रक्षण विधिवत होय।
तन मन धन अर्पण करै "शरण" संकल्प संजोय॥3
अपने पावन देश का, रक्षण हित हो कार्य।
यह कर्तव्य महान है, "शरण" परम अनिवार्य॥4॥

उन्हें भगवान् श्रीकृष्ण का वह वचनामृत स्मरण हो रहा है, जिसे स्वयं भगवान् ने अर्जुन को कहा था—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

"अवतारवाद" के परम सम्पोषक श्री श्रीजी महाराज की यह दृढ़धारणा है कि जब जब इस पवित्र भारत भूमि पर धर्म की ग्लानि होती है, तो उसके संहरण के लिए स्वयं भगवान् को अवतीर्ण होना पड़ा है। इसी के समर्थन में उनके उद्गार हैं—

श्रीहरि भारतवर्ष में लेते हैं अवतार।
दुष्टदमन हित वे प्रभू 'शरण' शस्त्र कर-धार॥5

भारत महिमा गान में उनका मन बहुत रमा है। इसी सन्दर्भ में उन्होंने पर्वतराज हिमालय, भगवती गङ्गा, यमुना, सरस्वती, कृष्णा, काबेरी, गोदावरी आदि पुण्य ललिता नदियों का, वृन्दावन, मथुरापुरी के साथ परमपावनी सप्तपुरियों, द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का स्मरण कर उन्हें प्रणाम निवेदन किया है।

भारतवर्ष की पुण्य नगरियों में जहाँ, गुरुप्रवर 'पुष्करराज' का, मोक्षदायिनी 'काशी' का, प्रयाग का, हरिद्वार का, साथ ही नासिक, अवन्तिका (उज्जैन) आदि का स्मरण करते है, वहीं वे भगवान् श्रीकृष्ण की बाललीला क्रीडास्थली ब्रजमण्डल के पगपग का स्मरण करने में अधिक रमे हैं और इसीलिए व्रज वृन्दावन धाम, मथुरापुरी, बरसाना, नन्दगांव, गोवर्धन गिरिराज को कथमपि विस्मृत नहीं कर पाये हैं। भगवान् श्री राम की पुण्यधरा अयोध्या व परमपावनी सरयू नदी का भी स्मरण कर धन्य-धन्य हो गये हैं। भारत के पुरातन सांस्कृतिक इतिहास का उल्लेख करते हुए वे अतीत के झरोखे से उन पुण्यात्माओं का स्मरण दर्शन कराने को समुद्यत हैं और इसी क्रम में वे भारत की महती वीराङ्गनाओं का स्मरण कराते हैं—

भारत की वीराङ्गना, समुपस्थित आदर्श।
अतीतकाल अद्यावधि 'शरण' शुभानन हर्ष॥23॥

अतीत काल में सम्पन्न देवासुर संग्राम, तदनन्तर 'रामायणकाल', तदुपरान्त 'महाभारत' के युद्ध का स्मरण कराते हुए वर्तमान कलियुग के वीराग्रणी 'पृथ्वीराज चौहान' की चर्चा करते हैं, जिन्होंने विदेशी आक्रान्ता मुहम्मद गौरी को परास्त कर अपनी वीरगाथा से राजस्थान की धरा का इतिहास रचा था। वीरों की पुण्यगाथा के स्मरण काल में वे परम वीराग्रगण्य श्री छत्रपति शिवाजी को कैसे विस्मृत कर सकते हैं, जिनका लोकपावन उज्ज्वल चरित विश्वविख्यात है। संपूर्ण भारत में भी राजस्थान की भूमि और उसमें भी 'मेवाड' की भूमि वस्तुतः धन्य है, जहाँ महाराणा सांगा जैसे प्रबल प्रतापी वीरवर ने भीषण युद्ध कर अपनी मातृभूमि की रक्षा में सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। वही 'दानवीर' श्री भामाशाह के लोकपावन चरित को उपस्थित कर श्री श्रीजी महाराज ने उसके त्याग को एक अनुपम उदाहरण माना है, जिसने देशहित में अपनी समस्त सम्पदा को समर्पित कर दिया था—

श्रीयुत भामाशाह ने भारत किया प्रकाश।
समस्त वैभव तज दिया, 'शरण' तजा तन श्वास॥31॥

वीरों के लिए अद्भुत प्रेरणास्रोत – 'महाराणा प्रताप' का जीवन चरित कितना आदर्शपूर्ण एवं संस्मरणीय है, यह वाणी का नहीं, अनुभूति का विषय है। वस्तुतः सकल ब्रह्माण्ड में राजस्थान के 'मेवाड' क्षेत्र की धरा का वह इतिहास, जब वीर सैनिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, तो उनमें अदम्य शक्ति का संचार होता है। इन्हीं वीरवरों की स्मरण शृंखला में मरु राठौड दुर्गादास, जयमल, दूदाजी का कथानक भी अविस्मरणीय है। यहां अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने उस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख कर सामान्य पाठकों की ज्ञानवृद्धि की है, जिसमें भक्तिमती मीरां बाई के अपने इष्टदेव गिरिधर गोपाल की उपासना का वास्तविक उपदेश निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री परशुरामदेवाचार्य जी महाराज से प्राप्त कर वैष्णवी दीक्षा प्राप्त की थी तथा आजन्म प्रभु श्री गिरिधर गोपाल जी की सेवा में तत्पर रहीं थीं और अन्त में उन्हीं में विलीन हो गईं थी। ऐसे ही भक्तशिरोमणि वीरश्रेष्ठ श्री जयमल जी और दूदाजी का इतिहास भी

पठनीय है, जिनकी ओर से स्वयं भगवान् ने युद्धकर न केवल भक्तसंरक्षण किया था, शत्रुसंहरण भी किया था।

हिन्दुसंस्कृति के सम्पोषक श्री गुरुगोविन्दसिंह का प्रभाव जगद् विख्यात है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का इतिहास किसी भी भारतीय बुद्धिजीवी से प्रच्छन्न नहीं। श्री श्रीजी महाराज ने उनका भी पावन स्मरण किया है। वीरगाथा के इतिहास को प्रस्तुत करते हुए वे अपने निम्बार्क सम्प्रदाय के पूर्वाचार्य श्री अनन्तश्री विभूषित श्री निम्बार्कशरणदेव जी महाराज के जीवन की उस परम साहसी घटना को भी उपस्थित करने में गौरव की अनुभूति कर रहे हैं, जिन्होंने अपने सम्प्रदाय के 300 सशस्त्रवीर सन्तों को भरतपुर नरेश व अंग्रेजों के द्वन्द्व युद्ध में सहयोगार्थ प्रेषित किया था—

निम्बार्काचार्यपीठपर, शोभित पीठाचार्य।
निम्बार्कशरणदेव की 'शरण' आज्ञा धार्य॥37
शतत्रय साधुसन्तों ने किला भरतपुर जाय।
अंग्रेज नरेश युद्ध में, 'शरण' करी सहाय॥38
किला भरतपुर मन्दिर में बिहारी जी भगवान।
तत्सुरक्षार्थ सन्तों ने 'शरण' समर्पण जान॥39॥

धर्मसंस्थापन एवं धर्म संरक्षण हेतु चार वैष्णव सम्प्रदायों के आचार्यों ने मिलकर समवेत रूप से राजस्थान की धरा पर 'जयपुर नगर' में 'अनी अखाडा' स्थापित किया था, जिसमें रामानन्द सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य श्री बालानन्द जी एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य श्री वृन्दावनदेवाचार्य जी महाराज का योगदान विशेषतः संस्मरणीय है। श्री 'श्रीजी' महाराज ने उसी इतिहास की ओर संकेत किया है—

वैष्णव चार सम्प्रदाय, अनी अखाडा ठान।
शत्रुशमन हित शस्त्रहस्त 'शरण' सतत अवधान॥70

केवल युद्धभूमि में ही वीरता का प्रदर्शन पर्याप्त नहीं होता, राष्ट्रसंस्कृति व वैदिक वनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए जिन बुद्धिजीवियों ने अनुपम योगदान किया, श्री 'श्रीजी' महाराज की दृष्टि में उनका पावन चरित्र भी अविस्मरणीय है। उनमें **लोकमान्य तिलक, श्रीगोपाल कृष्ण गोखले, श्री मोहनदास करमचन्द गान्धी जी, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, वीर सावरकर** को विस्मृत नहीं किया जा सकता। साथ ही **महामना श्री मदनमोहन मालवीय, श्री अरविन्द घोष** का संस्मरण तो प्रायः सभी को है, परन्तु **खरवा ठिकाना अजमेर के ठाकुर श्रीगोपालसिंह जी** एवं उनके भतीजे **मोडसिंह जी** के इतिहास से सर्वजन अपरिचित ही हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में ब्रिटिश शासन सत्ता के विपरीत युद्ध में गोपनीय रूप से शस्त्रास्त्र निर्माण कर सहयोग किया था। स्वतन्त्रता संग्राम के ऐसे वीरों के इतिहास से जनसामान्य को परिचित कराने के लिए हम श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

खरवा-श्रीगोपालसिंह, मोडसिंह बलवान।
श्रीनिम्बार्कपीठ शिष्य, 'शरण' शरण भगवान।।46।।

इस पद्य की विवेचना दर्शनीय व पठनीय है। स्वतन्त्रता संग्राम के शीर्षस्थ नेताओं में **श्री बल्लभ भाई पटेल, पं. श्री जवाहरलाल नेहरु**, प्रथम राष्ट्रपति रहे **श्री राजेन्द्रप्रसाद जी** तो संस्मरणीय हैं ही, श्री श्रीजी महाराज ने **श्री सदाशिव माधवराव गोलवलकर 'श्रीगुरुजी'** का भी पावन स्मरण किया है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारतराष्ट्र की उच्चतम सेवार्थ समर्पित कर दिया था। उनका प्रमुख योगदान था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखायें पूरे देश में संस्थापित कर विधर्मी शत्रुओं का पूर्णरूपेण दमन किया। उन्होंने हिन्दुत्व के संरक्षण हेतु विविध विधाओं से असीम कष्ट को सहन कर भी भारत के उच्चतम गौरव को प्रतिष्ठित रखा—

श्री गुरुगोलवलकर जी, हिन्दू हित कटिबद्ध।
यावज्जीवन देशरत, 'शरण' सतत सन्नद्ध।।48।।

अपने त्यागमय जीवन से, बौद्धिक स्तर से, उपदेशामृतों से राह भटके नवयुवकों को सही मार्गदर्शन कराने में जिनका योगदान संस्मरणीय है, उनमें **स्वामी विवेकानन्द** जी, वैदिक सनातन धर्म व संस्कृति संरक्षक **महामहोपाध्याय पं. श्रीगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जी, शास्त्रार्थ महारथी श्री माधवाचार्य जी, धर्मसम्राट् श्री करपात्रीजी** (श्री हरिहरानन्द जी) महाराज गोरक्षणतत्पर **पुरी पीठाधीश्वर श्री शंकराचार्य निरंजनदेवतीर्थ जी, श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी, वेदभाष्यकर्ता स्वामी गङ्गेश्वरानन्द जी**, रामजन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के सूत्रधार **स्वामी वामदेव जी महाराज**, आदि प्रमुख हैं। इनके पावन जीवन चरित से भावी पीढी के बालकों को ज्ञान कराना परमावश्यक है, ताकि वे सुसंस्कारित जीवन प्राप्त कर सकें।

सभी क्षेत्रों के वीरवरों अर्थात् प्रेरकों का सादर स्मरण कर श्री 'श्रीजी' महाराज ने सर्वसामान्य रणबांकुरों की प्रशंसा में अनेक पद प्रस्तुत किये हैं, जो अपने शारीरिक सुखों का परित्याग कर राष्ट्ररक्षण कार्य में अपना जीवन समर्पित करने में तत्पर रहते हैं—

कितना दुस्तर कार्य है, वीरवरों का ध्येय।
ये असीम यशस्वी हैं, 'शरण' अपरिमित श्रेय।।92
न बुभुक्षा-पिपासा है, केवल एक सुलक्ष्य।
शस्त्र सुशोभित समर में 'शरण' शत्रुदल-भक्ष्य।।66

भारत में भी वे राजस्थान प्रान्त को वीरों का प्रमुख धाम मानते हैं। पाकिस्तान व चीन द्वारा भारत पर आरोपित युद्धों व उनकी पराजय की चर्चा करते हुए 'श्रीजी' महाराज कारगिल के छद्म युद्ध से चिन्तित हैं तथा सर्वेश्वर प्रभु से विजय की कामना करते हैं—

सर्वेश्वर से कामना करते हैं दिनरात।
वीरवृन्द सब सफल हों, 'शरण' टेक रख बात।।84

न केवल सर्वेश्वर से अपितु श्रीराधामाधव, शिवशङ्कर, दुर्गा भवानी का भी स्मरण करते हैं तथा उनकी यह दृढ़ धारणा है कि रणबांकुरों की पारिवारिक शुभकामनायें भी उन्हें विजयश्री प्राप्त करने में पूर्ण सहायक होगी----

राधा-माधव के सरस, परम मधुरतम काम।
युग संकीर्तन करत ही 'शरण' सिद्धि अविराम।।85
श्री शिवशङ्कर प्रार्थना, कभी न निष्फल होय।
दुर्गा-भवानी वन्दना 'शरण' कृपा संजोय।।86
माता-पिता-गुरुजन सदा प्रभु मानस कर ध्यान।
निज गेहिनी शुभकामना 'शरण' वीर बलवान।।90

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज 'कारगिल' क्षेत्र में पाकिस्तानी सैनिकों के प्रवेश को सीमा का उल्लंघन मानते हैं तथा उनके द्वारा की गई कार्यवाही को औचित्यपूर्ण नहीं मानते—

कारगिल निजक्षेत्र में सीमा रेखा देख।
तदुलंघन है अहितकर, 'शरण' विधान सुलेख।।126
नियन्त्रण-रेखा में घुसे, पाक सैनिक अज्ञ।
गोलाबारी बम डाले, 'शरण' हैं हतप्रज्ञ।।128
प्रान्त-प्रान्त के वीरों ने समर किया अतिघोर।
राजस्थान वीरवरेण्य 'शरण' वीर शिरमोर।।130

इस प्रकार एक राष्ट्रीय सन्त के मन में भी अपनी भारतभूमि की अस्मिता के प्रति जो भावना जागृत हुई और जिसे उन्होंने शब्दों के माध्यम से प्रकट किया, वस्तुतः एक स्तुत्य व प्रशंसनीय प्रयास है। इस ग्रन्थरत्न का विमोचन राजस्थान के पूर्वमुख्यमन्त्री एवं वर्तमान में भारत के उपराष्ट्रपति पद पर विराजमान **माननीय ठा. श्री भैरूंसिंह जी शेखावत** के द्वारा सम्पन्न हुआ – यह गौरव का विषय है।

व्यास-सदन
253 खूंटेटा मार्ग
जयपुर-302001

सत्यं शिवं सुन्दरम् का प्रतिमान रूप

"विवेक-वल्ली"

— श्रीमती आभा शास्त्री

सर्वप्रथम तो मैं अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य के श्रीचरणों में साष्टांग प्रणाम निवेदन करती हूँ, जिनके पावन दर्शन से मुझे सदा सर्वदा परम शान्ति का अनुभव हुआ है। जब से मुझे उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मुझे वे साक्षात् 'ईश्वर' के रूप में प्रतीत होते हैं। मुझे अपने जीवनकाल में अनेकों महात्माओं, साधुसन्तों, परमाचार्यों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, परन्तु श्री 'श्रीजी' महाराज जैसे दिव्य स्वरूप को मैंने अन्यत्र अनुभव ही नहीं किया है। मुझे तो वे शंखचक्र रहित साक्षात् भगवान् स्वरूप ही प्रतीत होते हैं। अज्ञातनामा किसी विद्वान् की अनुभूति का यहाँ स्मरण हो रहा है—

आर्तानामिह जन्तूनां आर्तिच्छेदं करोति यः।
शङ्खचक्रगदाहीनो द्विभुजः परमेश्वरः॥

श्री 'श्रीजी' महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का जब मैंने अनुशीलन किया, उनके अनेक प्रवचनों को सुना, उनके द्वारा लिखित हिन्दी पद्यात्मक साहित्य का जब मनन किया, तो लगा वे इस कलियुग में साक्षात् भगवान् के अवतार के रूप में ही प्रकट हुए हैं। मुझे जब जब उनके दर्शन का सुअवसर प्राप्त होता है, उनके उपदेशों को सुनने का अवसर प्राप्त होता है, तब मुझे श्रीमद्भगवद्गीता का वह प्रसिद्ध पद्य याद हो उठता है—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

मानों साक्षात् भगवान् ही पुनः पथभ्रष्ट लोगों को सुपथगामी बनाने के लिए निम्बार्कपीठाधीश्वर के रूप में अवतीर्ण हो गये हैं। उनकी हिन्दी पद्य रचना **"विवेकवल्ली"** वस्तुतः उन लोगों के लिए परम उपयोगी शास्त्रवत् रचना है, जिसमें 'सत्य, शिव व सुन्दर' का समन्वय है। 'सत्य' तो इसलिए कि इसमे मनन-अनुशीलन से उस परम तत्त्व का परिज्ञान होता है, जो शाश्वत व सांसारिक दुःखों से उन्मुक्त कर शान्तिप्रदान करता है। उपदेश सर्वसामान्य के लिए कल्याणकारी होता है, उसकी पालना से प्राणी मात्र को असीम सुख की प्राप्ति होती है और 'सुन्दर' इसलिए वह दुःख संतप्त लोगों को सुख प्रदान करता है। उसके पालन से प्रेय तथा श्रेय की प्राप्ति होती है। व्यक्ति सन्मार्गगामी होता है तथा इह लोक में तो आनन्द प्राप्त करता ही है, परलोक में शाश्वत चिरन्तन शान्ति का अधिकारी भी हो जाता है।

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस 'विवेकवल्ली' में 416 पद्य प्रस्तुत किये हैं। अत्यन्त सरल सर्वबोधगम्य हिन्दी भाषा में प्रस्तुत ये पद्य पढ़ने के साथ ही हृदयपटल पर अंकित हो जाते हैं। रचना के प्रारम्भ में श्री 'श्रीजी' महाराज ने 'मंगल विवेक' के अन्तर्गत अपने आराध्य इष्टदेव राधा-माधव भगवान् की स्तुति की है तथा बाद में ब्रजनिकुञ्ज उपासना विवेक में अपने निम्बार्क सम्प्रदाय में प्रचलित उपासना पर प्रकाश डाला है। इस ग्रन्थरत्न के सम्बन्ध में उनका विचार अत्यन्त सटीक है कि इसमें विवेचित विषय अन्तःकरण की अनुभूति अवश्य है, परन्तु वे हमारे वेदादिशास्त्रों का परम गुह्य सार मात्र है—

विवेकवल्ली पुस्तिका श्री प्रभु-कृपा प्रसाद।
राधासर्वेश्वरशरण, शास्त्रसार अनुवाद॥9॥

विषयसूची में श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने कथ्य को अत्यन्त सरल भाव से वर्गीकरण कर प्रस्तुत किया है, जिनमें सम्प्रदाय में दीक्षित जन-सामान्य के लिए विवेकज्ञान करवाया है। उसी के अन्तर्गत **भगवत् उपासना विवेक, धामतीर्थादिक विवेक, वैष्णवता विवेक, वैष्णवाचार विवेक, निजसम्प्रदायविवेक, गुरुदीक्षाविवेक, श्री भगवल्लीलानुकरण विवेक तथा साधक कर्म विवेक** वस्तुतः कर्तव्याकर्तव्य बोध कराते हैं। आचरणीय, पालनीय व त्याजनीय विषयों की ओर विशेष ध्यान देने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

'साधक कर्म विवेक' को श्री 'श्रीजी' महाराज ने 9 अवान्तर बिन्दुओं से स्पष्ट किया है। प्रत्येक साधक को सर्वप्रथम गुरु के प्रति श्रद्धा रखनी अनिवार्य होगी। उसके निर्देशों की पालना उस साधक का परम कर्तव्य होगा। श्री 'श्रीजी' महाराज सत्यानुभूति की विवेचना कर रहे हैं—

श्रीगुरु भगवतरूप हैं, श्रुति पुराणनिर्देश।
राधासर्वेश्वरशरण सन्तवचन सन्देश॥125॥
श्रीगुरु प्रतिपल करते हैं धर्मशास्त्र उपदेश।
राधासर्वेश्वरशरण अनुपम शुभ सन्देश॥146॥

'गुरु' की महिमा का विवेक दर्शन कराकर श्री 'श्रीजी' महाराज साधक के लिए 'सत्संग' की आवश्यकता प्रतिपादित करते हैं—

शाश्वत शान्ति तभी मिले कृष्ण भजन सत्संग।
राधासर्वेश्वरशरण, पुलकित हो प्रत्यंग॥155

साधक के लिए 'ईश्वर प्राप्ति' यदि लक्ष्य है तो उसे संसार से 'वैराग्य' करना होगा। संसार में आसक्ति होने से साधक को सच्चा या वास्तविक सुख प्राप्त नहीं हो सकता—

भव आसक्ति बाधक है, जो निज हृदय विराग।
राधासर्वेश्वरशरण, श्रीहरिपद अनुराग॥159॥

गृह ममता सब त्यागकर भजतो नन्दकुमार।
राधासर्वेश्वरशरण, अवधर शास्त्रविचार॥163॥

'वैराग्य' के उपरान्त मन को संयमित करना नितान्त आवश्यक होता है। मन चंचल होता है। यह साधक को साधना से विचलित करता है। श्री 'श्रीजी' महाराज के उद्‌गार हैं—

साधक साधन अभिनिरत, मन यदि चंचल खिन्न।
राधासर्वेश्वरशरण, साधन विफल विभिन्न॥190॥
शनैः शनैः अभ्यास हो, मन चाञ्चल्य निरोध।
राधासर्वेश्वरशरण, करो सत् शास्त्र प्रबोध॥176॥

'चञ्चल मन को संयमित कर किया गया भगवन्नाम संकीर्तन साधक को मनोवाञ्छित फल प्राप्त करने में सहायक होता है। श्री 'श्रीजी' महाराज का अनुरोध है कि **'नरत्वं दुर्लभं लोके'** अर्थात् मानव जीवन बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है, अतः इसे प्राप्त कर व्यक्ति को हरि कीर्तन में अनुराग करना चाहिए—

नरजीवन सौभाग्य से, प्राप्त हुआ बडभाग।
राधासर्वेश्वरशरण, गुरु आज्ञा अवधार॥180॥
जो साधक गोविन्द को, भजता भाव-कुभाव।
राधासर्वेश्वरशरण, उत्तम महानुभाव॥182॥

'कीर्तन' में दत्तचित्त व्यक्ति को भगवान् का साक्षात्कार हो जाता है। पता नहीं किस रूप में भगवान् की प्राप्ति हो जाय, कहना कठिन है। अतः ऐसे स्थान ५र निवास करना श्रेष्ठ है, जो परितः शुद्ध हो, भक्ति रूपी रसामृत सिन्धु में स्नान करने का यही सुफल है कि 'हरिदर्शन' का अहसास होता है—

भक्ति रसामृत सिन्धु में करो निरन्तर स्नान।
राधासर्वेश्वरशरण, ध्रुव हरिदर्शन-भान॥193॥

भगवद्दर्शन के लिए उपासक या साधक को निर्मल हृदय होना आवश्यक है, वचनों का माधुर्य तथा दैन्यभाव नितान्त स्वीकरणीय, मिथ्यावाणी अत्यन्त अहितकर है, तस्कर वृत्ति सर्वथा त्याजनीय है, शुद्धमन वाला व्यक्ति ही सन्तरूप होता है—

दैन्य-तितिक्षा-शुद्ध मन, दया हृदय हरि-ध्यान।
राधासर्वेश्वरशरण, सन्त रूप सम्मान॥149॥

प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह प्रत्येक सन्त का हृदय से सम्मान करे। साधक अभिमान रहित होकर जब विद्वज्जन, विप्रजन व सन्तों का सम्मान करता है तो वह ईश्वर सम्मान के तुल्य माना गया है—

बुधजन का आदर सुखद, विप्ररूप सम्मान।
राधासर्वेश्वरशरण, पावै सुख-सम्मान॥205॥

न केवल साधक या उपासक का ही यह धर्म है कि वह वृद्ध, सन्त, विद्वान् आदि का सम्मान करे, अपितु मानवमात्र का यह कर्तव्य है। वस्तुतः वही सच्चा मानव धर्म है—

दया मनुज का धर्म है, करुणा पर-उपकार।
राधासर्वेश्वरशरण, आगत जन सत्कार॥210॥

मानव मात्र के प्रति कर्तव्याकर्तव्य (विवेक) का उपदेश देते हुए अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज का आदेश है कि उसे 'सदाचार' का पालन करना चाहिए। नियमपूर्वक नित्यकर्म सम्पन्न करने चाहिए। आचरण में निरंहता (अहंकार का अभाव) रहे तथा लक्ष्यपूर्ण जीवन यापन करना चाहिए। महर्षि मनु ने भी यही शाश्वत उपदेश दिया है—

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥

मानव का जीवन उच्च आदर्शों से पूर्ण होना चाहिए। मित्रद्रोही, कृतघ्न, विश्वासघाती व्यक्ति का समाज में निन्दनीय स्थान है। श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस विषय में अपना स्पष्ट मन्तव्य प्रकट किया है। वे मानव को वाणी पर संयम रखने का भी उपदेश प्रदान करते हैं। मानव मात्र को प्रभु आश्रित जीवन में श्रद्धा रखनी चाहिये। यदि मानव चाहता है कि उसके सांसारिक कष्ट, क्लेश, दुःख आत्यन्तिक रूप से निवृत्त हों तो उसे संसार के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान करना होगा, क्योंकि मानव जीवन क्षणभंगुर है। नरजीवन दुर्लभ है, मृत्यु निश्चित तथा अटल है, काल यापन न करते हुए कर्म को ही जीवन मानते हुए कर्तव्यपराण बुद्धि से कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए। जीवन संरक्षण हेतु श्री 'श्रीजी' महाराज ने **''आयुर्वेद विवेक''** अध्याय के अन्तर्गत स्वानुभूत उन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की है, जो प्रत्येक प्राणीमात्र के लिए, मानवमात्र के लिए परम उपयोगी व पालनीय है। **''जीवन् नरो भद्रशतानि पश्येत्''** सिद्धान्तानुसार जीवन की अमूल्यता अत्यन्त विचारणीय बिन्दु है, अतः आयुर्वेद विवेकानुसार मनुष्य को जीवन संरक्षण में प्रवृत्त होना चाहिए।

''हिन्दु संस्कृति विवेक'' श्री 'श्रीजी' महाराज का सुविचारित एवं मननीय उपदेश है, जिसमें उन्होंने 'नारीसम्मान' को प्राथमिकता से उपस्थित किया है। **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'** का मानवीय सिद्धान्त सर्वत्र सम्माननीय है। साथ ही उन्होंने भारतीय नारियों को भी उनके पातिव्रत्य धर्म का स्मरण कराया है। विश्व कल्याण हेतु नर-नारियों को, समस्त मानवों को सन्नद्ध व समर्पित रहना चाहिए। शास्त्र-मर्यादित जीवन ही सुखावह है। प्रत्येक मानव का ध्येय अपने धर्म, अपनी संस्कृति के संरक्षण व पालन के प्रति निश्चित होना चाहिए। हिन्दू धर्माचार्य वर्णाश्रम संस्कृति व धर्म के प्रति प्रारम्भ से ही कट्टर रहे हैं। आज हम जो भी विषमता देखते हैं, या देख रहे हैं, वे उन शाश्वत सिद्धान्तों की पालना के अभाव में ही हैं। सन्मान्य मानव, जो वेद-शास्त्रों का अध्येता नहीं है, उसके लिए कर्तव्य का उपदेश देने के लिए श्रीमद्भगवद् गीता ही पर्याप्त है। वह भगवान् के मुख से निसृत अमृतवाणी है, ज्ञान का अक्षय भण्डार है। श्री 'श्रीजी' महाराज **'भारत महिमा विवेक'** को महनीय मानते हैं। साथ ही युगधर्म के पालन पर भी अपना दृष्टिकोण उपस्थित करते हैं। युगधर्मों में देश तथा राष्ट्रहित सर्वोपरि है। गोरक्षण भारत की अस्मिता से जुड़ा प्रश्न है, अतः गोवध निषेध की महत्ता को समझने का उपदेश देते

हैं। **'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव'** सनातन ज्ञान वेद के वे अपरिहार्य उपदेश हैं, जो भारतीयता के गौरव हैं। सभी जीवों के प्रति अहिंसा वृत्ति, मत सहिष्णुता, मातृत्व भाव, लोकार्पण भाव, साम्प्रदायिक एकता, धर्माचार्यों के प्रति अनन्य निष्ठा के महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं, जिनके पालन से मानव मात्र सुखी जीवन जी सकता है। विभिन्न व्यवसाय परायण लोगों, जैसे चिकित्सक, चालक, शिक्षक आदि के लिए भी वे आचारसंहिता पालन पर बल देते हैं। सत्साहित्य के सेवन से सन्मार्ग प्रवृत्ति होती है। अभिमान रहित वैदुष्य सम्मान दिलाता है। इसी प्रकार पाचक, परिचारक, लेखक आदि के आदर्श भी निर्दिष्ट किये हैं। मादक द्रव्यों का सेवन हानिकारक भी बतलाया है। यहाँ तक कि चाय सेवन को भी वे उचित नहीं मानते—

सम्प्रति प्रचलित चाय से विविध रोग संचार।
राधासर्वेश्वरशरण, उसका त्याग प्रचार॥373॥

उनका अभिमत है कि गुटका आदि के सेवन से असाध्य रोग (कैंसर) हो जाता है—

गुटका एक अखाद्य है, तज दो महानुभाव।
राधासर्वेश्वरशरण, अर्बुद रोग प्रभाव॥344॥

अन्न, जल, फलादि प्रदूषण भी मानव अस्वास्थ्यकर हैं। कृत्रिम खाद से उत्पादित अन्न भी हानिकारक होता है। इस प्रकार के **'संघे शक्ति-कलौ युगे'** के सिद्धान्तानुसार हिन्दू संघटना को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। **'अहिंसा परमो धर्मः'** सिद्धान्त में उनका अटूट विश्वास है। वे मानव मात्र को उपदेश देते हुए शक्ति के दुरुपयोग को उचित नहीं मानते। **'मांसाहारनिषेध'** पर तो वे वारम्बार अपना मन्तव्य प्रकट कर चुके हैं। विदेशी वस्तुओं के उपयोग को भी वे उचित नहीं मानते। पाश्चात्य अन्धानुकरण को भारतीय संस्कृति के नष्ट करने का एक सोचा समझा षडयन्त्र मानते हैं। राजनीति व राजधर्म को समझने का आग्रह करते हैं तथा अन्त में विपरीत काल में प्रजा व राजा के कर्त्तव्यों पर स्वयं के विचार उपस्थित करते हैं। वे **''विवेक-वल्ली''** में उपस्थित विवेक-दर्शन को मानव मात्र का हितैषी मानते हैं। वे लिखते हैं—

सकल शास्त्र का सार यह विवेक निरत हरिभज।
राधासर्वेश्वरशरण, अलाभ कामना तज॥415॥

उनकी सद्भावना है—

विवेकवल्ली ग्रन्थ में यदि हो पूर्ण विवेक।
राधासर्वेश्वरशरण निश्चय भावोद्रेक॥416॥

इस प्रकार जीवन के आदर्शों से अनुप्राणित, अनुभवों से परिपूर्ण, कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेकपूर्ण उपदेशों के प्रदाता अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस 'विवेकवल्ली' में जीवनोपयोगी समस्त बिन्दुओं पर स्पष्ट अवधारणा के साथ मन्तव्य उपस्थित कर जन-जन का महान् कल्याण किया है। आवश्यकता है, उसके प्रचार-प्रसार की, तथा अनुपालना के लिए जन-जन को संकल्पित करने की।

मेरा अन्तस्तल उनके इस सत्प्रयास के लिए उन्हें ''साधक-शिरोमणि'' के महनीय पद पर प्रतिष्ठित करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा है। ऐसे **''साधक-शिरोमणि''** को बारम्बार सादर नमन।

254, शास्त्री सदन
खूंटेटा मार्ग जयपुर-302 001

अनन्तश्रीविभूषित 'श्रीजी' महाराज का स्तोत्र वाङ्मयार्णवः एक अवगाहन

— डॉ. नीरज शर्मा

नान्यागतिः कृष्णपदारविन्दात् संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात्।
भक्तेच्छयोपात्त-सुचिन्त्य-विग्रहा-दचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात्॥[1]

ये मुक्तावपि निःस्पृहाः प्रतिपदप्रोन्मीलदानन्ददां,
यामास्थाय समस्तमस्तकमणिं कुर्वन्ति यं स्वे वशे।
तान् भक्तानपि तां च भक्तिमपि तं भक्तप्रियं श्री हरिं
वन्दे संततमर्थयेऽनुदिवसं नित्यं शरण्यं भजे॥[2]

भक्ति और स्तोत्र :

'भक्ति' प्रेम का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप है। 'प्रेम' स्वयं सुख स्वरूप है तथा वह अपने विषय के सम्बन्ध में अखण्ड सुखात्मक वस्तु चाहता है। यह शाश्वत सुख तथा इसके आनन्दघन आलम्बन अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक, करुणावरुणालय, भक्तवाञ्छाकल्पतरु, सर्वान्तर्यामी, सर्वाधार, सर्वनियन्ता, सर्वेश्वर श्रीहरि ही है। जब हम आनन्द से युक्त पूज्यबुद्धि और श्रद्धा के द्वारा अपने आराध्य का सान्निध्य पाने की इच्छा करते हें, उनके दर्शन से स्वयं को धन्य कहते हैं एवं परमानन्द की अनुभूति करते हैं तो अनन्य श्रद्धा व उत्कट प्रेम का यह सघन समवाय 'भक्ति' कहलाती है। महर्षि नारद ने इसे अमृत-स्वरूपा एवं परमप्रेम-रूपा कहा है —

सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा॥ अमृतस्वरूपा च॥[3]

महर्षि शाण्डिल्य भी ईश्वरीय अनुरक्ति को भक्ति का तात्पर्य मानते हैं —

सा परानुरक्तिरीश्वरे [4]

भक्ति ही जीव का चरम पुरुषार्थ है। यह ऐसी आनन्दमयी अनुभूति है, ऐसा रस है जिसे प्राप्त करने के उपरान्त कोई अभिलाषा शेष नहीं रहती है—

**"यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति, अमृतो भवति, तृप्तो भवति।
यत्प्राप्य न किञ्चिदभिवाञ्छति...."[5]**

इस प्रकार धर्मबुद्धिपूर्वक भगवद्गुणों का आराधन करने से द्रवीभूत चित्त की अविच्छिन्न धारावाहिक रूप भगवदाकारता को प्राप्त हुई वृत्ति विशेष भक्ति है। यह कृष्णानुकूलिनी चित्तवृत्ति क्लेशों का नाश करने वाली, कल्याणकारिणी तथा मोक्ष को भी तिरस्कृत करने वाली एवं आनन्ददायिनी होती है।[6]

भारतीय अध्यात्म की प्रशस्त परम्परा में भक्ति का स्थान सर्वोपरि तथा महनीय है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा, उसकी परमसत्ता का गुणगान, उसकी महिमा की मीमांसा, अव्यक्त के आभास की चेष्टा, सच्चिदानन्द की अवधारणा, जीव, जगत्, जीवन के प्रति कुतूहलपूर्ण जिज्ञासा-विमर्श, सृष्टि के उस कारण, नियामक, सर्वज्ञ-सर्वव्याप्त के चरणों में समर्पण मानव जीवन के मूल उद्देश्य के रूप में यहाँ निर्धारित किये गये हैं। भक्त ऋषि-मुनि तथा भक्त कवि परमेश्वर का गुणानुवाद, कीर्तन, स्मरण तथा आत्मनिवेदन विविध रूपों में करते हैं। आराध्य के प्रति यह ऐकान्तिक-विनम्र निवेदन साधना एवं साहित्य के क्षेत्र में 'स्तोत्र' संज्ञा से अभिहित किया गया है। यह वाङ्मयी आराधना या पूजा स्वरूप-साहित्य है। स्तोत्र शब्द का अर्थ है, जिसके द्वारा स्तवन किया जाये— ''स्तूयतेऽनेनेति''।[7] स्तुत्य या आराध्य के प्रति उत्साह, उपालम्भ, परिवाक् भाषण के साथ, श्लाघा, शंसा, प्रशंसा, स्तुति और नमन के लिए स्तोत्र का व्यवहार होता है —

उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च।
श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः॥[8]

उपास्य भगवद् विषयक् एवं भक्ति रस से आप्लावित यह स्तोत्र चतुर्विध बताया गया है— द्रव्यस्तोत्र, कर्मस्तोत्र, विधिस्तोत्र तथा अभिजन स्तोत्र—

द्रव्यस्तोत्रं कर्मस्तोत्रं विधिस्तोत्रं तथैव च।
तथैवाभिजनं स्तोत्रं स्तोत्रमेतच्चतुष्टयम्॥[9]

स्तुत्य की स्वरूपप्रधान वन्दना द्रव्यस्तोत्र, उनके गुणकर्मादि विशेषताओं का स्तवन कर्मस्तोत्र, यज्ञार्चन आदि में प्रयुक्त विधिस्तोत्र तथा आराध्य से सम्बद्ध परिजनादि का कीर्तन अभिजन स्तोत्र कहलाता है।

साहित्यिक मर्यादा में स्तोत्र विधा का वर्गीकरण आराध्य के अनुसार तथा श्लोकों की संख्या के अनुसार किया जा सकता है। यथा– श्रीकृष्ण, श्रीराधा, श्रीराम, श्रीशक्ति, श्रीगंगा स्तोत्र आदि तथा त्रयी, चतुश्श्लोकी पंचक, अष्टक, शतक आदि। भावसान्द्रदशा में गेयता, लय-ताल के आधार पर भी स्तोत्रों को गीति तथा मुक्तक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वस्तुतः स्तोत्रों का उपर्युक्त विभाजन साहित्य-शास्त्रीय परम्परा में विद्या का सुगमतापूर्वक अधिगम करने की दृष्टि से किया गया है। अन्यथा ससीम का निस्सीम के साथ तादात्म्य स्थापित करने वाला यह साहित्य का आदि स्वरूप अपने अनुभूति के स्तर पर इतना सघन, विगलित वेद्यान्तर, भक्तिरस पीयूष के प्रबल प्रवाह में इतना उत्कट और व्यापक है कि इसके समस्त विभाजन आलम्बन के ध्यान के साथ ही तिरोभूत हो जाते हैं तथा सच्चिदानन्द परमेश्वर के आश्रय में परमाह्लाद आनन्द मात्र स्वभाव के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहता है।

आचार्यश्री श्री श्रीजी महाराज और उनका महनीय अवदान :

''वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या'' वीर-प्रसविनी राजस्थान की पुण्यधरा उस समय धन्यातिधन्य हुई जब यहाँ परम भक्त, दिव्यविभूति, परमपूज्य, प्रातः स्मरणीय, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरुश्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी का जन्म हुआ। आप राजस्थान

के आध्यात्मिक-सांस्कृतिक तथा साहित्यिक नभोमण्डल में उस एकमेव तेजपुञ्ज प्रभाकर के समान हैं, जो स्वयं भक्ति, प्रेम व माधुर्य की अक्षय ऊर्जा से ऊर्जस्वित् हैं तथा अपने चतुर्दिक् व्याप्त अनन्त जनों को अपनी प्रेम माधुरी, तपःपूत सहज निश्छल-सरस-भावुक व्यक्तित्व से निरन्तर भक्तिरस वर्षा से आप्लावित-संसिक्त कर रहे हैं। साथ ही उनमें राधा-कृष्ण प्रेम की अद्‌भुत ऊष्मा का संचार भी कर रहे हैं।

आचार्यश्री श्रीजी महाराज ने राजस्थान की मरुधरा पर परम युगलोपासना की भक्तिधारा के सांस्कृतिक इतिहास में प्रेमलक्षणा रागात्मिका पराभक्ति की साधना का प्रवर्तन करने वाले भगवन्निम्बार्क के आराधना-पथ को आलोकित करते हुये आपने प्रेमाराधन और लोकाराधन दोनों की उदात्त साधना की है। जीवमात्र को भगवत्स्वरूप मानकर निर्मल चित्त एवं प्रेमरूप हृदय से भगवत्स्वरूपानन्द की प्राप्ति हेतु सर्वात्म समर्पण के माध्यम से भक्ति की सच्ची सामाजिक चेतना से पुनः पहचान कराई है। जाति, वर्ग, सम्प्रदाय के आडम्बरों के तिरोभाव के साथ अपनी समस्त अस्मिता, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास व आसक्ति को विनम्र भाव से श्रीराधाकृष्ण के चरण कमलों में समर्पण को ही भक्ति का मूल माना है। आपने अपने साधनापूर्ण व्यक्तित्व से मानवीय सम्बन्धों में भी भगवत्प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति को प्रोत्साहित किया है। आपने सामूहिक चेतनाओं का संस्कार कर उन्हें मानवीय सन्दर्भों में उदात्त बनाया तथा अखण्ड सुखात्मक, निरतिशय आनन्द का शाश्वदालम्बन प्रदान किया है।

लौकिक प्रेम को अलौकिक प्रेम में परिवर्तित करने वाले अनन्तश्रीविभूषित श्रीजी महाराज का राजस्थान के संस्कृत साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान है। आचार्यश्री ने प्रेम-प्राञ्जल उर्वर लेखनी से भारती के श्रीकोश में महनीय अभिवृद्धि की है। राजस्थान की भक्तिपूर्ण साहित्यिक परम्परा में बीसवीं शती के रससिद्ध कवियों में श्रीजी महाराज का स्थान अन्यतम तथा सर्वोपरि है। समानान्तर साहित्य की दृष्टि से भी भक्ति परम्परा में आपका अवदान सर्वाधिक तथा सर्वातिशायी है। शास्त्रीय स्थापित प्रतिमानों के पर्यालोचन के उपरान्त निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि श्रीजी महाराज का स्तोत्र साहित्य भक्तिरस की सघन निष्पत्ति के साथ उत्तमकोटि के काव्य की श्रेणी में सुस्थापित है। आपके समग्र साहित्य में श्रद्धा, प्रेम तथा समर्पण की त्रिवेणी प्रवाहित है। इस त्रिवेणी में आनन्दमग्न सहृदय ही आपके वाङ्मयार्णव तक पहुँचता है, जहाँ उसे भक्तिरसघनीभूत, नाना अलंकार-अलंकृत, माधुर्य प्रसादादि गुण गुणान्वित, वैदर्भीरीतिरञ्जित अनेकानेक महार्ह हृदयावर्जक स्तोत्र रत्नों के दर्शन होते हैं। यह एक-एक स्तोत्ररत्न सामाजिक के सम्पूर्ण क्लेशों, त्रिविधतापों का उपशमन कर परमानन्द-संदोह में निमग्न कर देने के लिये पर्याप्त सक्षम है।

श्रीजी महाराज के स्तोत्रों का यथार्थ मूल्याङ्कन तो साधना के क्षेत्र में चरम उत्कृष्ट दशा को प्राप्त कोई व्युत्पन्न भगवद्भक्त ही कर सकता है, क्योंकि एक-एक पद्य ही सहृदय पाठक के चतुर्दिक् भगवत्प्रेम का ऐसा सरोवर निर्मित कर डालता है, जिसके भीतर ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय की त्रिपुटि तत्काल विलीन हो जाती है तथा आनन्दमात्र अवशिष्ट रहता है। भागवत रस के परम रसिक, परमभक्त, अद्‌भुत प्रेमपूर्ण सहज निर्मल व्यक्तित्व के धनी श्रीजी महाराज अपने दर्शन तथा दृष्टि प्रसाद मात्र से प्रेम-वीथि के पथिक

को आनन्द से सरोबार कर देते हैं। आपकी अमृत-वर्षिणी वाणी सहृदयों को भाव-विभोर कर देती हैं। अतः आपके साहित्य को आपके व्यक्तित्व से पृथक् करके कथमपि देखना संभव नहीं है। आपका निर्मल व्यक्तित्व आपके समग्र स्तोत्रवाङ्मय में प्रतिबिम्बित होता हुआ ही भक्ति में पर्यवसित होता है। आराधना के क्रम में तन्मयावस्था में आनन्दानुभूति के भाव हृदय में समुद्भूत होते हैं तथा वे ही शब्दों में आकार ग्रहण कर मनोहारी स्तोत्र बन जाते हैं। वृन्दावन- बिहारी श्री राधामाधव की निकुञ्ज रसपरक, परमललित, रसमयी लीलाओं का चिन्तन तथा उनके लोकोत्तर अनन्त, अचिन्त्य रूप माधुर्य लावण्यादि दिव्यगुणों का निरूपण स्तोत्रों के स्वतः विषय बन गये हैं। प्रकाशन-शीर्षक के आधार पर श्रीजी महाराज का स्तोत्र सम्बन्धी वाङ्मय निम्न प्रकार से विज्ञापित किया जा सकता है—

1. श्री स्तवरत्नाञ्जलि
2. श्री युगलगीतिशतकम्
3. श्री राधामाधवशतकम्
4. श्री सर्वेश्वरशतकम्
5. श्री राधाशतकम्
6. श्री युगलस्तवविंशति
7. भारत-भारती-वैभवम्
8. श्री जानकीवल्लभस्तवः
9. नवनीत-सुधा (वेदान्त कामधेनु की व्याख्या)
10. श्री हनुमन्महाष्टकम्
11. श्री निम्बार्क-गोपीजनवल्लभाष्टकम्
12. श्री निकुञ्ज-सौरभम्
13. प्रातः स्तवराज (युग्मतत्त्वप्रकाशिका व्याख्या)
14. श्री निम्बार्क स्तवार्चनम्

इन रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार उपस्थित किया जा सकता है—

1. श्री स्तवरत्नाञ्जलिः —

भक्ति के प्राणतत्त्व 'उपासना' के लिये समर्पित यह 382 श्लोकात्मक विशाल स्तोत्र (काव्य संकलन) संवत् 2036 में श्री निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद से प्रकाशित हुआ है। उपासना के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्यश्री कहते हैं— "**मानवता का मूल अर्थ है विवेकपूर्वक वेदादिशास्त्र प्रतिपादित सत्कर्म धर्माचरण में संलग्न रहते हुए जगन्नियता जगज्जन्मादिहेतु सर्वाधार सर्वशक्तिमान् सर्वान्तरात्मा सर्वज्ञ श्री सर्वेश्वर श्रीहरि की परम कल्याणकारिणी मङ्गलमयी उपासना में अपने आपको अभिरत करें.....**"[10]

सुरभारती के प्राञ्जल प्रवाह में माधुर्य प्रसादादि गुणगण मंडित, अनायासागत नाना अलंकारों से सुशोभित यह काव्य पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध दो भागों में विभक्त है। इसके पूर्वार्द्ध में 23 तथा उत्तरार्द्ध में 16 मनोहारी स्तोत्रों का एकत्र संग्रह है। महाराजश्री के भक्तिपूर्ण हृदयकमल में प्रखर काव्यबीज संस्कार की चेतना के पराग के समान ये सभी स्तोत्र साधक तथा पाठक दोनों के ही भावजगत् को दिव्य बना देते हैं। आपकी उर्वर लेखनी वेद, वेदाङ्ग, पुराण, इतिहास, गीता, रामायण तथा अनेक शास्त्रों के परिपक्व तथा पाण्डित्य से परिप्लुत है।

'स्तवरत्नाञ्जलि' के पूर्वार्द्ध में सर्वेश्वर श्रीहरि, श्रीराधा, श्रीमाधव, श्रीयमुना-वृन्दावनादि तीर्थ तथा श्रीनिम्बार्क, श्रीहरिव्यासादि आचार्यों की आराधना विहित है। उत्तरार्द्ध में श्रीगणेश, श्रीलक्ष्मी, श्रीनारायण,

श्रीहनुमान्, श्रीराम, श्रीशिव, गंगादि अनेक देवताओं के साथ-साथ पुष्करादि तीर्थों की दिव्य उपासना का वर्णन है। सार्वजनिक कल्याण के लिये सभी स्तोत्रों के समस्त श्लोकों का भावों के अनुरूप सरल हिन्दी भाषानुवाद प्रकाशित है, जो स्तोत्रों की उपादेयता को और भी वर्धित कर देता है। वस्तुतः **"श्री स्तवरत्नाञ्जलि"** श्रीजी महाराज के वाङ्मयार्णव के अद्भुत और अनुपम काव्यात्मक सौन्दर्यसम्पन्न, रस, भाव समुज्ज्वल स्तोत्र रत्नों की अञ्जलि के ही समान है, जो आचार्यश्री ने प्रभु चरणों में समर्पित की है। पूर्वार्द्ध के प्रथम स्तोत्र श्री व्रजभावनाष्टक के सभी पद्यों के चतुर्थ चरण में "जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा" की सरस भावना की गई है। व्रज कुञ्ज की पवित्र वसुन्धरा का यह वर्णन अनायास चित्त में ध्वन्यात्मक सद्भाव उपस्थित करता है—

वृषभानुसुता पदकञ्जधृता व्रजवल्लभमञ्जुल-केलिकरा।
गिरिराजलताद्रुमकुञ्जलता जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा।।[11]

श्रीमाधवाष्टक में श्री मुकुन्दमाधव के परम मनोहर स्वरूप का वर्णन निरूपित है। मुरलीधरश्री माधव का रूप सौन्दर्य देखिये—

स्मरकोटिकलाब्धि-निरासकरं रससारसुधारमणं मधुरम्।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया सह माधवमञ्चितमालिजनैः।।[12]

माधुर्यगुण गुम्फित इस पद्य में व्रजराजसुत श्रीकृष्ण का यह मनोहारी वर्णन है—

व्रजकुञ्जनिकुञ्ज-सुपुञ्जतले खगवृन्दसुगुञ्ज सुरम्यवने।
व्रजराजसुतो व्रजगोपगणैः सह याति सदा नववेणुधरः।।[13]

श्री सर्वेश्वर के रूप-लावण्य को प्रणामार्पण करते हुए श्री 'श्रीजी' रचित एक पद्य देखिये—

नन्दात्मजायाऽखिल-मोहनाय व्रजाङ्गनाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय।।[14]

रत्नाञ्जलि के पूर्वार्द्ध में ही 19 पद्यात्मिका श्री युगलगीतिका की यह मनोहर पदावली विन्यस्त पद्य श्रीराधिका जी के दिव्य सौन्दर्य का अनुपम वर्णन कर रहा है—

जयति माधवी कृष्णवल्लभा रससुधाऽर्णवा केलिकोविदा।
अमित-वैभवा कोटि-चन्द्रमा नवनिकुञ्जगा राधिकाप्रिया।।[15]

इस काव्य के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम आदिपूज्य विघ्नहरण मंगलकरण गणनायक गणेश जी की वन्दना की गई है। स्तोताओं के प्रिय भुजंगप्रयात छन्द में ग्रथित इसका एक पद्य प्रस्तुत है—

गणेशं सदा विघ्नबाधाकदम्बं प्रणाशे पटुं नित्यशान्तं गभीरम्।
प्रसन्नं सुपीनं हरेर्ध्यानमग्नं महामोदकारं सुदेवं नमामि।।[16]

धनधान्य की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी के गुण कीर्तन में निबद्ध **'लक्ष्मीमहिमाष्टक'** का यह पद्य कितना चारुतर है—

अनन्त-लावण्य-वरेण्यरूपां करीन्द्रवृन्दार्पितपुष्पमालाम्।
किरीटकेयूरविशोभमानां पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम्॥[17]

इसी प्रकार स्तवरत्नाञ्जलि में 39 स्तोत्रों का प्रणयन किया गया है।

2. श्री युगलगीतिशतकम् —

इस स्तोत्र का प्रकाशन भी अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा-समिति-सलेमाबाद द्वारा वि.सं. 2047 श्री राधाजयन्ती को (द्वितीय संस्करण) किया गया है। श्रीराधाकृष्ण की युगलोपासना भक्ति का सर्वस्व है। पूर्णपरमात्म परब्रह्म-पुरुष नित्य निकुञ्जेश्वर श्री नन्दनन्दन हैं तथा श्री राधा उनकी आह्लादिनी शक्ति है। ऐश्वय-माधुर्य पराकाष्ठापन्न श्री राधामाधव युगलतत्त्व की आराधना में समर्पित इस स्तोत्र में कुल 118 पद्य हैं। इस काव्य का समर्पण करते हुए श्रीजी महाराज की आत्म-विनम्रता है—

श्री वनसखीजनसमुल्लसित राधा-
माधवपदाब्जयुगले प्रणतपाले।
श्री युगलगीतिशतकं सरसरम्य-
मर्पितमिदं मधुरमस्ति भवदीयम्॥[18]

इस काव्य पर पं. गोविन्ददास 'सन्त' प्रणीत भक्त विनोदिनी हिन्दी टीका भी श्लोकों के साथ ही प्रकाशित है। इस स्तोत्र में श्रीजी महाराज ने शिखरिणी, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, मालिनी, वियोगिनी, पंचचामर, उपजाति, इन्द्रवज्रा, गीति, भुजङ्गप्रयात, रथोद्धता, अनुष्टुप्, आर्या, वंशस्थ आदि लगभग सभी प्रसिद्ध छनदों में श्री वृन्दावन धाम, श्रीयमुना जी, श्री गोवर्धन धाम, व्रज गोवन्दन, मुरलीमहत्त्व के गुणानुवाद के साथ-साथ इनके अधिष्ठान श्री युगलकिशोर की भक्ति रसान्वित वाङ्मयी आराधना विहित है। श्री वृन्दावनधाम का स्मारक यह माधुर्यगुणान्वित अनुप्रास अलंकृत वसन्ततिलका छन्दोबद्ध यह पद्य कितना हृदयावर्जक है—

मत्तालिगुञ्जन - सुमञ्जुल - कुञ्जपुञ्जं
दिव्य-द्रुमावलिलता सुमनः प्रफुल्लम्।
सौरी प्रतीररुचिरं खगवृन्दगीतं
वृन्दावनं युगलधाम सदा स्मरामि॥[19]

श्री श्यामाश्याम के कृपा-कटाक्ष की आकांक्षा से हृदय के अन्तःस्तल से निःसृत यह करुण पुकार वंशस्थ छन्द में कितनी रससिक्त है—

प्रसीद गोविन्द दयासरित्पते!
भयाटवी-क्लेश सुकम्पितो मुहुः।

त्वदंघ्रिरक्तोत्पलधूलिलोलुप–
स्तथापि राधाप्रिय! माययाऽऽहतः ॥[20]

आर्त्त और रसिक भक्तों, साधकों के साथ ही यह काव्य अपने छन्दगत सौन्दर्य, गेयता, लय तथा माधुर्यपूर्ण ध्वन्यात्मकता के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा अन्यतम है। संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये छन्दशास्त्रीय उद्धरणों की दृष्टि से अत्यन्त उपादेय है।

3. श्री राधामाधवशतकम् —

श्री निम्बार्कतीर्थ से संवत् 2046 में प्रकाशित (द्वितीयावृत्ति) तथा 105 पद्यात्मक इस स्तोत्र काव्य में श्री वृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम की निकुञ्जलीलाओं की रसोपासना है। 'सरल संस्कृत-अनुष्टुप् छन्दोपनिबद्ध इस स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक के पूर्वार्द्ध में श्री निकुञ्ज की विविध सरस लीलाओं का वर्णन है तथा श्लोक के उत्तरार्द्ध में **"राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम्"** का भक्तिरस सहभावी पाठ है। यह पाठ स्तोत्र में गेयता तथा रस के प्रवाह में वेग तथा गति का आधान करता है। नित्य कीर्तन के लिये यह स्तोत्र लोकप्रिय तथा उपयोगी है।

इस स्तोत्र में वृन्दावनविहारी श्री राधामाधव की निकुञ्ज रसपरक परम ललित, रसमयी लीलाओं का चिन्तन तथा उनके लोकोत्तर अनन्त, अचिन्त्य, रूप माधुर्य लावण्यादि दिव्यगुणों का सूत्रात्मक अनुसन्धान एवं प्रख्यापन किया गया है।[21] प्रतिक्षण अनन्त असीम सौन्दर्यामृत-सिन्धु में नवनवायमान अवस्था में वृन्दावन नवनिकुञ्ज लीलामध्य विराजित युगलकिशोर की शोभा मधुरातिमधुर सौन्दर्य, माधुर्य, लावण्य, कारुण्यादि निखिल गुणों से युक्त है। युगलकृपारूप इस महारास का अनुभव प्रपन्नतापूर्वक समाश्रित होकर रसवेत्ता, रसमर्मज्ञ एवं रसिक भक्त ही कर सकते हैं। यह रसाभिव्यक्ति वस्तुतः कृपासाध्य ही है।[22] इस सुमधुर स्तोत्र के कतिपय भक्तिरसाप्लावक पद्य अवलोकनीय हैं—

वृन्दाटवी निकुञ्जेषु सेव्यमानं सखीजनैः।
राधामाधवमाराध्यं भजेद् वृन्दावनाधिपम्॥[23]
रससिन्धुं रसाधारं रसदानपरायणम्।
राधामाधवमाराध्यं भजेद् वृन्दावनाधिपम्॥[24]
अत्यद्भुतं कृपासिन्धुं प्रपन्नेप्सितसम्प्रदम्।
राधामाधवमाराध्यं भजेद् वृन्दावनाधिपम्॥[25]
कृपैकलभ्यमाधारं पराभक्त्याः परात्परम्।
राधामाधवमाराध्यं भजेद् वृन्दावनाधिपम्॥[26]

4. श्री सर्वेश्वरशतकम् —

श्री निम्बार्कपीठ से संवत् 2053 में प्रकाशित इस स्तोत्र में कुल 108 पद्य हैं। इस रचना में श्री

सर्वेश्वर प्रभु की दिव्य आराधना की गई है। जनवरी, सन् 1996 में शारीरिक अस्वस्थता-जन्य शल्य-चिकित्सा हेतु श्रीजी महाराज ने मुम्बई में रहते हुए चिकित्सालय प्रवास के समय श्री सर्वेश्वर प्रभु को यह सारस्वत-सुमन समर्पित किया था। यह स्तोत्र आपकी निरन्तर ईश्वरीय आराधना एवं तत्त्वचिन्तन का तत्कालीन निदर्शन है। यह महान् स्तोत्र भवरोगों का भी औषध है। **राष्ट्रसंत मुरारिबापू** के इस स्तोत्र के प्रति यही उद्गार हैं— **"जो स्वस्थ है, वही समर्थ है। हमारे पूज्य श्रीचरणों की इस महिमा का हमें गौरव है। सभी को यह स्तोत्र भवरोग की भी औषध सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।"**[27] इस स्तोत्र के सभी पद्यों के चतुर्थ चरण में **"नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्"** भक्तिरस की वर्षा को अधिक सघन बनाता है। श्री सर्वेश्वर के दिव्य स्वरूप का वर्णन है—

श्री सनकादि-संसेव्यं गुञ्जाफल-समाकृतिम्।
शालग्रामस्वरूपश्च नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्॥[28]
दक्षिणावर्तचक्रेण चर्चितं चारु दर्शनम्।
श्यामलं सुप्रभापूर्णं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्॥[29]

त्रिविध संतापों का हरण करने की सामर्थ्य इन्हीं में है तथा ये भक्तों पर अनुकम्पा करते हैं—

परात्परतरं ब्रह्म रसशेखरमच्युतम्।
त्रिविधतापहर्त्तारं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्॥[30]
अनुकम्पाकरं देवं भक्तस्वान्ते प्रतिष्ठितम्।
सर्वात्मानश्च सर्वज्ञं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्॥[31]

5. श्री राधाशतकम् —

वि.सं. 2054 में प्रकाशित इस स्तोत्र में 103 श्लोक हैं। **"सर्वोत्कर्षमयी राधा"** इस सिद्धान्त का तात्त्विक विवेचन तथा दिव्य स्तवन इस स्तोत्र का विषय है। वेद, उपनिषद्, तन्त्र, सूत्र, पुराणेतिहास आदि विस्तृत वाङ्मय में श्री राधाजी के स्वरूप, स्वभाव, उत्कर्ष आदि के विपुल वर्णन को महाराजश्री ने इस स्तोत्र में समाहित कर दिया है। बिन्दु में समाहित सिन्धु के समान यह स्तोत्र नित्य पठनीय तथा मननीय है।[32] भक्तों के तापत्रय को पूर्णतया उन्मूलन करने में समर्थ, अल्पाक्षर अनुष्टुप् छन्दोबद्ध, माधुर्य-प्रसाद गुण समन्वित सहज आह्लाद-रस का उल्लास यह स्तोत्र भक्तों के हृदय में महारास का निर्झर उपस्थित करता है। श्री राधाजी श्रीकृष्ण की आह्लादिनी, प्रेमाधिष्ठात्री शक्ति तथा सर्वेश्वरी है। रसाधारा श्री राधाजी का दिव्य स्वरूप अचिन्त्य, अनिर्वचनीय अप्राकृत, सच्चिन्मय-परममंगलमय है। श्री महाराजश्री का मन्तव्य है कि इनके अपरिमेय स्वरूप का यत्किंचित् वर्णन भी लेखनी को पावन बनाता है।[33] इस सुमधुर स्तोत्र के कतिपय पद्य दृष्टव्य हैं—

राधां रसमयीं श्यामां परमानन्द निर्झराम्।
कृष्णवामाङ्ग-विज्ञातां श्रीराधां भावयेऽन्तरे॥[34]

पुष्पगुच्छं कराम्भोजे नीत्वा वृन्दवनाऽवनौ।
विहरन्तीं मुदा राधां पौनःपुन्येन भावये॥[35]
अहैतुकीं कृपां दिव्यामाचरन्तीं दयापराम्।
अद्भुतां करुणापूर्णां भावये राधिकां मुहुः॥[36]

6. **श्रीयुगलस्तवविंशतिः—**

वि.सं. 2043 में प्रकाशित तथा 186 श्लोकात्मक इस सरस स्तोत्र काव्य में 20 लघुकाय अष्टक स्तुतियों का संकलन है। अनेक स्तोत्रों का प्रणयन तथा उन्हें समग्र रूप से लोकहित में प्रकाशित करके श्रीजी महाराज सुरभारती तथा भारतवासी दोनों के वैभव में अभिवृद्धि करते हैं। आप वेद-पुराण शास्त्रादि में प्रतिपादित गूढ़ तात्त्विक रहस्यों तथा भगवद् स्वरूप चरितामृत का सर्वसुलभ, सरस, मनोहारी पद्यों में उपनिबद्धन करते हैं। आपकी दृढ़ मान्यता है– "**स्तवैः कीर्तनीयो हरिः**" प्रकृत स्तोत्र काव्य में श्री राधा, श्रीकृष्ण, श्रीसर्वेश्वर की स्तुति के साथ उनसे सम्बद्ध परिजन, तीर्थ साहित्यादि का भी भावान्वित आराधन किया है। श्री राधाष्टक में श्रीराधाजी की दिव्य शोभा का वर्णन देखिये—

वृन्दावन-महाशोभां शुभ्राम्भोजे विराजिताम्।
कृष्णप्रियां परां राधां भावये करुणामयीम्॥[37]

रसाधारा श्री राधिका की अन्यत्र शोभा का निदर्शन है—

श्री राधां राधिकां नौमि रसिकां रासलासिनीम्।
रासेश्वरीं रसाऽधारां रसिकेश्वर-वल्लभाम्॥[38]

सर्वेश्वर श्री कृष्ण का तात्त्विक रूप दर्शन कराता हुआ यह पद्य द्रष्टव्य है—

श्री कृष्णमव्ययं नित्यं राधिका-दक्षिणे स्थितम्।
विभुं क्षराक्षरातीतं हरिं सर्वेश्वरं भजे॥[39]

वेणुगीताष्टक में भक्तकवि के वेणु के प्रति उत्कट हृदयोद्गार हैं—

समस्तवेदागमदिव्यमन्त्रैः प्रगीयमानः सुखसिन्धुरूपः।
सदास्वरैः रागविधानशीलः श्रीकृष्णवेणू रसयेत्कदा नः॥

पाञ्चजन्य का दिव्य स्मरण भी एवमेव द्रष्टव्य है—

अज्ञानध्वान्तहर्तारं शास्त्रज्ञानप्रदायकम्।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्री हरिप्रियम्॥

इसी भांति गोवर्धन, मानसी गंगा, यमुना, निकुञ्ज तथा राधा-कृष्ण कुण्ड, ललिताकुण्ड, निम्बग्राम, भगवद्गीता, श्री सुदर्शन चक्र, तुलसी तथा गोपीचन्दन को केन्द्रीय स्थिति में रख महाराजश्री ने अन्य स्तोत्रों का सरस सद्भाव किया है।

7. भारत-भारती-वैभवम् —

इस रचना का प्रकाशन सं. 2043 में हुआ था तथा इसमें कुल 135 पद्य हैं। राष्ट्रभक्तिपरक इस ग्रन्थ का विमोचन 12.1.87 को राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने किया था। भारतीय वैदिक संस्कृति के उच्च आदर्शों, आध्यात्मिक परम्पराओं, नैतिक मूल्यों पर अवलम्बित श्रेष्ठ और सार्थक जीवन की सनातन धारा का पुनः प्रवाह इस ग्रन्थ का उद्देश्य था।[40] राष्ट्रिय-प्रेम तथा राष्ट्रिय चेतना की भावना का संचार इस रचना का अन्तरङ्ग है। भारत के साथ-साथ भारतीय सुरवाणी के भी वैभव का प्रतिपादन किया गया है। धर्माचार्य-धर्मपरायण, परमवीतरागी विरक्त हृदय में निर्झरित 'भारत-भारती' के प्रति विशिष्ट समर्पित एवं रागात्मक भावोद्रेक की अन्तः सलिला का यह प्रबलतम उद्वेग निश्चित ही श्रीजी महाराज के सुहृदय में विद्यमान "**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**" भावना का अभीष्ट अभिव्यक्त है।[41] युगद्रष्टा कविहृदय, युगबोध एवं युगचिन्तन के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। अतः कवि की समष्टिकल्याण व सर्वतोभद्र की चेतना से प्रेरित संवेदना ही ऐसे काव्यों में मुखरित हो जाती है। आचार्यश्री के शब्दों में "स्वदेश-निष्ठा, संस्कृतानुराग, कर्त्तव्यपरायणता ही इस ग्रन्थ का मूल उद्देश्य है।[42] भक्ति ही वह मौलिक तत्त्व है, जो ईश्वरीय निष्ठा से राष्ट्र निष्ठा तक का मार्ग प्रशस्त करता है। लोकमान्य तिलक के गणेशोत्सव ने भारतीय राष्ट्रिय आन्दोलन में महती भूमिका का निर्वहन किया था।

रससिद्ध कवि श्रीजी महाराज का यह काव्य-माधुर्य हिन्दी जगत् के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रचित भारत-भारती के समकक्ष है।[43] श्रीजी वाङ्मयार्णव के इस प्राञ्जल प्रवाह में भारतवैभव वर्णन, देवभारती वैभव वर्णन, भारत भारती के आधारभूत-गीता, गंगा, गो गकारत्रयी, भारतभारती स्तोत्र तथा भारतमातृगुणाष्टक नामक स्तुत्यात्मक रचनायें सन्निहित हैं।

'भारत-वैभवम्' शीर्षक के अन्तर्गत 35 श्लोकों में सुललित भारतवर्ष के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का अन्यतम वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया गया है। यहाँ के पर्वत, नदी-नद, समुद्र, तीर्थ, वृक्ष, पशु-पक्षीजन धनादि से युक्त प्राकृतिक परिवेश के प्रति प्रगाढ़ रागात्मकता अभिव्यक्त है[44]। भारत के उत्तर दिशा में हिमाच्छादित, श्वेत, हेमवर्ण, गरिशृंगों से युक्त विशाल पर्वतराज हिमालय, दुग्धधवल-जलपूरित कल-कल निनादिनी-गंगा, यमुना, सरयू, गोदावरी प्रभृति नदियाँ, सस्य श्यामल भूमि, रत्नगर्भ समुद्र, जम्बू, कदली, कदम्ब वृक्षावली से संयुक्त भारत वर्ष-अभिवन्द्य, स्तुत्य तथा निरन्तर समुपास्य है—

जयति मदीया भारत माता।
निर्मल सुभगा मणिमयरूपा, रम्या विविध-गुणैरवदाता।
सस्य-श्यामला परम-विशाला हिमगिरिधवला परिसंजाता।
राधासर्वेश्वरशरणस्य, चकास्ति चेतसि भारतमाता।।[45]

विश्वनीड यह भारतभूमि प्राणिमात्र को आश्रय प्रदान करती है। "**अरुण यह मधुमय देश हमारा।**

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक किनारा॥'' महाकवि जयशंकर प्रसाद जी का यही पूज्यभाव आचार्यश्री की वाणी में निसर्गतः आ गया है—

सदाऽऽश्रयो वै शरणागतान्तां हिंसारतानां नहि यत्र पूजा।
विमुक्त-हिंसो लभते प्रतिष्ठां तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम्॥[46]

देवभारती वैभव वर्णन के अन्तर्गत 19 श्लोकों में देववाणी संस्कृत का अनुपम-दिव्य-भावपूर्ण गुणकीर्तन किया गया है। श्रुति-स्मृति पुराणेतिहासादि संचित विशाल ज्ञानराशि इसी भाषा में संरक्षित है—

परम्परा संस्कृति-बोधकारिणीमनन्तविज्ञानविवेकदायिनीम्।
रसावहां गौरववृद्धिशालिनीं भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम्॥[47]

यह भाषा सभी भाषाओं की अधिष्ठात्री, परमेश्वरी, ज्ञान, भक्ति-मुक्ति प्रदायिनी है—

समग्रभाषा जननीमधीश्वरीं प्रजाकरीं मुक्तिकरीं महेश्वरीम्।
रसालरूपां रसदान-तत्परां भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम्॥[48]

श्रीजी महाराज का श्री सर्वेश्वर के प्रति देववाणी का यह चरम भक्तिमय निवेदन है—

सर्वेश्वर! सुखधाम! नाथ! मे संस्कृतरुचिरस्ति।
संस्कृतमनने संस्कृतवदने संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे॥[49]

भारतीय संस्कृति के सर्वाधार गीता-गंगा तथा गो की अभिवन्दना 5-5 श्लोकों में की गई है। तदनन्तर 9-9 श्लोकात्मक भारतभारती स्तोत्र तथा भारतमातृगुणाष्टक है, जिसमें भारतभारती का विलक्षण वैशिष्ट्य निरूपित है।

8. श्री जानकीवल्लभस्तवः —

वि.सं. 2054 में प्रकाशित 40 श्लोकात्मक यह स्तोत्र मर्यादा पुरुषोत्तम-राजीवलोचन नयनाभिराम श्री राघवेन्द्र सरकार श्री राम की स्तुति में समर्पित है। मधुर उपासना के क्षेत्र में श्रीराम के स्तोत्रों में यह महार्ह स्तोत्ररत्न है। यह स्तोत्र भगवत् प्रेम रस सिन्धु में निमग्न कर सहृदयों को दिव्य आनन्द का आस्वादन कराता है। सरल सुगम संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध इस सुललित सुमधुर वन्दना के पद्य प्रस्तुत हैं—

भरताग्रजमब्जलोचनं भवबाधाहरमीप्सितप्रदम्।
भवमोदकरं भवेश्वरं भजनीयं प्रणमामि राघवम्॥[50]
मुदितं नवकल्पभूरुहं करुणासिन्धुमनारतं भजे।
सुखशान्तिकरं शुभालयं जगदीशं प्रभुराममच्युतम्॥[51]

स्तोत्र के अन्त में 5 श्लोकात्मक **''सीताराम चतुश्श्लोकी''** महनीय लघुकाय स्तोत्र है।

9. नवनीतसुधा (टीका)

संवत् 2052 में प्रकाशित इस ग्रन्थ में श्री सुदर्शन चक्रावतार श्री भगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत वेदान्त

कामधेनु दशश्लोकी की आचार्य श्री द्वारा प्रणीत व्याख्या है। इस स्तोत्र के समर्पण पद्यों में आचार्यश्री इसके वैशिष्ट्य को विनम्रतापूर्वक प्रभुचरणों में निरूपित कर अर्पित करते हैं—

श्रीमदाचार्य-निम्बार्क-पदाम्भोजे समर्पये।
वेदान्तकामधेन्वाख्यां व्याख्यां सर्वहितावहाम्॥
लघुरूपात्मिकां व्याख्यां नवनीतसुधाऽभिधाम्।
भेदभेदेति सिद्धान्त-दर्शिकामर्पये मुदा॥[52]

आचार्यश्री ने वेदान्तदशश्लोकी के गम्भीर दार्शनिक-तात्त्विक गूढ़ दुरूह रहस्यों को सर्वजन सुलभ बनाने के लिये नवनीत के समान स्निग्ध मधुर-सुधा के समान सरल अर्थतात्पर्य बोधिका व्याख्या का प्रणयन किया है।

10. श्री हनुमन्महाष्टकम् —

संवत् 2054 में प्रकाशित यह लघुकाय स्तोत्ररत्न भक्तशिरोमणि-पवनपुत्र प्रभुश्री हनुमान् जी महाराज की वन्दना में अर्पित है। आचार्यश्री की बाल्यकाल से ही अपने आराध्य की उपासना के साथ-साथ श्री हनुमल्लाल जी में भी परमनिष्ठा रही है।[53]

इस स्तोत्र में आपने श्री हनुमान के दिव्य रूप, महिमा तथा गुणों के माहात्म्य का सुन्दरतम वर्णन किया है। माधुर्य, प्रसाद-गुणगणगौरव से युक्त वैदर्भी रीति समन्वित प्राञ्जल सहज प्रवाहमयी भाषा में उपजाति छन्दोनिबद्ध इस स्तोत्र का एक पद्य प्रस्तुत है —

श्री रामचन्द्राऽङ्घ्रि सरोजभृङ्गं
गदाधरं शैलधरं विशालम्।
मुनीन्द्र - वृन्दारकवृन्दवन्द्यं
सदाऽऽञ्जनेयं मनसा स्मरामि॥[54]

11. श्री निम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्—

चतुर्दश श्लोकात्मक यह स्तोत्ररत्न भगवान् श्रीनिम्बार्क के परम उपास्य दिव्य रूप-गुण महिमा का सुमधुर कीर्तन है। इसका एक पद्य प्रस्तुत है —

श्रीधामवृन्दावनराजिताय, कुञ्जाऽऽलिवृन्दैरभिसेविताय।
नमोऽस्तु नित्यं रसिकप्रियाय निम्बार्कगोपीजनवल्लभाय॥[55]

12. निकुञ्ज-सौरभम् —

संवत् 2044 में प्रकाशित 58 श्लोकात्मक इस स्तोत्र में वृन्दावन-विहारी, नित्यनिकुञ्ज-विहारी प्रिया-प्रियतम युगल किशोर श्री श्यामाश्याम की परमोज्ज्वल विशुद्ध रसमयी लीलाओं का भक्ति-रसान्वित चित्रण है। रसों में 'मधुर रस' यदि सौरभ से परिपूर्ण हो तो उसका माहात्म्य और भी बढ़ जाता है।

आचार्यश्री द्वारा प्रणीत यह स्तोत्र सौरभाप्लावित माधुर्य का रसिक भक्तों में संचार करता है। इस सुमधुर स्तोत्र के कतिपय पद्य देखिये—

वृन्दावने कुञ्ज-निकुञ्ज-पुञ्जे
भृङ्गैः विहङ्गैरभिगुञ्ज्यमाने।
नानालता-पादपपुष्परम्ये
राधामुकुन्दं रुचिरं स्मरामि॥[56]
राधाविहारीरसिकाऽऽर्तिहारी
सौरीतटे कुञ्जरसप्रसारी।
लीला-विलासी लयलास्यकारी
प्रेमाभिलाषी स हि मे गतिः स्यात्॥[57]
श्रीकुञ्जपुञ्जे श्रियमालपन्तं
राधारसाधारमहास्वरूपाम्।
अनन्तसौन्दर्यरसैक-सिन्धुं
श्रीमन्मुकुन्दं समुपासयामि॥[58]

13. प्रातः स्तवराज (टीका) —

इस ग्रन्थ में श्री सुदर्शन चक्रावतार भगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत प्रातःस्तवराज की श्रीजी महाराज विरचित **''युग्मतत्त्वप्रकाशिका''** व्याख्या है। समग्र स्तोत्र साहित्य में प्रातःस्तवराज का स्थान महत्त्वपूर्ण तथा अन्यतम है। आचार्यश्री ने अपनी व्याख्या में श्रीयुगल-विलास के ध्यान-चिन्तन-भजन-स्मरण-आराधन वन्दनादि विविध प्रसंगों में प्रतिपादित अगम्य, परमदिव्य, श्रुतिस्मृतिसम्मत ज्ञान गरिमापूर्ण रसविग्रह का सूक्ष्म-गहन तथा गम्भीर विवेचन किया है।[59] युग्मतत्त्व-प्रकाशिका गागर में सागरवत् रसपूरित है, जिसमें रसमर्मज्ञ भावुकहृदय अनवरत अवगाहन करता है। यह टीका निम्बार्कीय भक्ति के विपुल विस्तार का उज्ज्वल आलोकित दिव्य प्रकाश है—

श्री निम्बार्ककृतस्यास्य प्रातः स्तोत्रस्य सादरम्।
निजानन्दाय बोधाय वैष्णवानाञ्जन-तुष्टये॥
सम्प्रदायानुसारेण सम्यग्बोध-प्रदायिका।
टीका विरच्यते भक्त्या ''युग्मतत्त्वप्रकाशिका॥''[60]

14. श्री निम्बार्क-स्तवार्चनम् —

संवत् 2057 गुरुपूर्णिमा को प्रकाशित यह स्तोत्ररत्न सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्री

निम्बार्काचार्य के दिव्य गुण-कीर्तन में समर्पित है। भगवान् श्री निम्बार्क वैष्णव मात्र के परम उपास्य हैं। ये सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के करकमल विराजित चक्रराज श्री सुदर्शन के अवतार हैं। द्वैताद्वैत-उपासना तथा भारतभूमि पर निकुञ्ज रस को प्रवाहित करने वाले श्री निम्बार्क भगवान् का दिव्यातिदिव्य महिमागान करने वाले इस स्तोत्र में निम्बार्क चतुश्श्लोकी श्री निम्बार्काराधनाष्टक, श्री निम्बार्क गुणाष्टक, निम्बार्क स्वरूपाष्टक, निम्बार्क भजनाष्टक आदि अनेक लघुकाय स्तोत्रों के साथ-साथ परमदिव्य-निम्बार्क-विंशति स्तोत्र भी संकलित है। श्री निम्बार्क के दिव्य स्वरूप की माधुरी देखिये—

हरेरायुधाचार्य - निम्बार्क - देवं
व्रजे धाम्नि सर्वेश्वराचार्य-निमग्नम्।
सदा भक्तवृन्दैः समाराध्यमानं
भजे भानुकोटिप्रकाशं मुनीन्द्रम्॥[61]

श्रुतिभाष्यकरं भवतापहरं हरिनामसुधारसपानपरम्।
नवमेघनिभं नवनीतहृदं भज निम्बरविं नितरां मनसा॥[62]

श्री धामवृन्दावनयुग्मलीला-रासोत्सवाऽऽनन्दसदानिमग्नम्।
स्मिताननं पीतपटैर्मनोज्ञं निम्बार्करूपं सततं स्मरामि॥[63]

"निम्बार्कविंशतिस्तोत्र" में अद्भुत लय-ताल मिश्रित पद्यों में सभी के उत्तरार्द्ध में **"निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम्"** का समावेश है। इसके दो पद्य प्रस्तुत हैं—

आद्याचार्यं धराऽऽख्यातमनन्तश्रीविभूषितम्।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम्॥
अखण्डमण्डलाचार्यं चक्रचूड़ामणिं परम्।
निम्बार्काचार्यमात्मज्ञं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम्॥[64]

उपर्युक्त विवेचन के अन्तर्गत आयी रचनाओं में अनेक में लघुकाय मनोहर स्तोत्रों का संग्रह है। उपास्य अथवा आराध्य के अनुसार श्रीजी महाराज के साहित्य में उपलब्ध समस्त स्तोत्रों का विस्तृत वर्गीकरण निम्नानुसार किया जा सकता है—

	स्तोत्र	**पद्य संख्या**	**स्वरूप/प्राप्ति**
1.	युगलगीतिशतकम्	109	स्वतन्त्र प्राप्य
2.	श्री राधा-प्रियाष्टकम्	09	श्री युगलगीतिशतक में
3.	श्री सर्वेश्वर-शतकम्	108	स्वतन्त्र प्राप्य
4.	श्री राधामाधव-शतकम्	105	"
5.	श्री राधा-शतकम्	103	"

6.	निकुञ्ज-सौरभम्	58	स्वतन्त्र प्राप्य
7.	श्री निम्बार्क-विंशति-स्तोत्रम्	21	श्री निम्बार्कस्तवार्चनम् में
8.	श्री जानकीवल्लभ-स्तवः	33	स्वतन्त्र प्राप्य
9.	श्री सीतारामचतुश्श्लोकी	05	जानकीवल्लभस्तव में
10.	श्री हनुमन्महाष्टकम्	09	स्वतन्त्र प्राप्य
11.	श्री हनुमद्वन्दनाष्टकम्	09	श्री हनुमन्महाष्टक में
12.	श्री राधाष्टकम्	09	श्री युगलस्तवविंशति में
13.	श्री राधा-रसाष्टकम्	09	,,
14.	श्री राधा-प्रियाष्टकम्	09	,,
15.	श्री कृष्णाष्टकम्	09	,,
16.	श्री सर्वेश्वराष्टकम्	09	,,
17.	श्री वेणुगीताष्टकम्	09	,,
18.	श्री निकुञ्जाष्टसखीमहाष्टकम्	09	,,
19.	श्री यमुनाष्टकम्	09	,,
20.	श्री गोवर्धनाष्टकम्	09	,,
21.	श्री मानसी-गंगाष्टकम्	09	,,
22.	श्री राधा-कुण्डाष्टकम्	09	,,
23.	श्री ललिताकुण्डाष्टकम्	09	,,
24.	श्री निम्बग्रामाष्टकम्	09	,,
25.	श्रीमद्भगवद्गीताष्टकम्	09	,,
26.	श्रीमद्भागवताष्टकम्	09	,,
27.	श्री सुदर्शनाष्टकम्	09	,,
28.	श्रीपाञ्चजन्याष्टकम्	09	,,
29.	श्री तुलसीमहिमाष्टकम्	09	,,
30.	श्री गोपीचन्दनाष्टकम्	09	,,
31.	श्री निम्बार्काराधनाष्टकम्	09	श्री निम्बार्कस्तवार्चनम् में
32.	श्री निम्बार्क-गुणाष्टकम्	09	,,
33.	श्री निम्बार्क-स्वरूपाष्टकम्	09	,,
34.	श्री निम्बार्क-भजनाष्टकम्	09	,,
35.	श्री निम्बार्क-चतुश्श्लोकी	04	,,
36.	श्री व्रजभावनाष्टकम्	09	स्तवरत्नाञ्जलि पूर्वार्द्ध में

68.	श्री गंगामहिमाष्टकम्	09	स्तवरत्नाञ्जलि उत्तरार्द्ध में
69.	श्रीं गोमहिमाष्टकम्	09	,,
70.	श्री पुष्करमहिमाष्टकम्	09	,,
71.	श्री निम्बार्कतीर्थाष्टकम्	09	,,
72.	श्री सत्पथाष्टकम्	09	,,
73.	भारत-भारती-वैभवम्	39	स्वतन्त्र प्राप्य
74.	देवभारती-वैभवम्	20	भारत-भारती-वैभवम् में
75.	गीता-पंचकम्	05	,,
76.	गंगापंचकम्	05	,,
77.	गोपंचकम्	05	,,
78.	भारत-भारती-स्तोत्रम्	09	,,
79.	भारत-मातृगुणाष्टकम्	09	,,
80.	श्रीराधामाधवस्तवः	06	स्तवरत्नाञ्जलि उत्तरार्द्ध में

उपर्युक्त स्तोत्रों के आगे निर्दिष्ट पद्य संख्या के अतिरिक्त समर्पण तथा मंगलपद्यों को मिला देने पर श्रीजी महाराज द्वारा प्रणीत श्लोकों की कुल संख्या 1300 से भी अधिक है। यह संख्या राजस्थान प्रदेश की स्तोत्रविधा में एक उजज्वल कीर्तिमान है।[65] इन पंक्तियों के लेखक ने राजस्थानीय स्तोत्र साहित्य पर अनुसन्धान कार्य किया है। अतः वह इस तथ्य को पुष्ट कर सकता है। श्रीजी महाराज के साहित्यिक अवदान पर राजस्थान विश्वविद्यालय से प्रो. (डॉ.) प्रभाकर शास्त्रीजी के निर्देशन में शोधोपाधि भी प्रदान की जा चुकी है।[66]

प्रकृत आलेख में श्रीजी महाराज के वाङ्मयार्णव में अवगाहन का प्रयास-चक्षुपरिमाण से सागर के परिमाप के तुल्य है। वस्तुतः भक्तशिरोमणि आचार्यश्री का कृपा-प्रसाद ही प्रयत्नों को सार्थक करता है। आप शारीरिक-अस्वस्थ होने पर भी निरन्तर सारस्वत-साधना में संलग्न हैं, जो समस्त संस्कृतानुरागियों, साहित्य- प्रचेताओं, शोध-अध्येताओं एवं सहृदयों के लिये नितान्त प्रेरणास्पद तथा अनुकरणीय है।

फुट नोट —

1. वेदान्त कामधेनु B
2. कल्याण-भक्ति अंक पृ. 1 से उद्धृत
3. नारदभक्ति सूत्र 2, 3
4. शाण्डिन्य भक्ति सूत्र-1
5. नारद भक्ति सूत्र
6. हरिभक्ति रसामृत सिन्धु 1-1-11
7. हलायुध कोश (अभिधानरत्नमाला)
8. वैजयन्ती कोश 2, 4, 35
9. मत्स्य पुराण 45-121
10. स्तवरत्नाञ्जलि-भूमिका
11. श्री वृजभावनाष्टक – 2
12. श्री माधवाष्टक – 3
13. श्री वृजराजसुताष्टक – 1
14. श्री सर्वेश्वरराष्टक – 6

15. श्री युगलगीतिका – 1
16. श्री गणेशाष्टक – 1
17. श्री लक्ष्मीमहिमाष्टक – 3
18. श्री युगलगीतिशतकम् – (समर्पण में)
19. श्री युगलगीतिशतकम् – 2
20. श्री युगलगीतिशतकम् – 50
21. श्री राधामाधवशतक-भूमिका – 'छ'
22. श्री राधामाधवशतकम्-भूमिका – 'ज'
23. वही – 2
24. वही – 32
25. वही – 49
26. वही – 90
27. श्री सर्वेश्वर शतकम्, पृ. 3 (भूमिका)
28. श्री सर्वेश्वरशतकम् – 1
29. वही – 4
30. वही – 6
31. वही – 74
32. श्री राधाशतक म्. पृ. 4
33. वही पृ. 9
34. श्री राधाशतकम् – 7
35. श्री राधाशतकम् – 24
36. वही — 41
37. श्री युगलस्तवविंशतिः – 8 श्री राधाष्टकम्
38. श्री राधारसाष्टक वही – 1
39. कृष्णाष्टक-युगलस्तवविंशति – 1
40. भारत-भारती-वैभवम्
41. भारतभारती-वैभवम् पृ. 17
42. वही पृ. 49
43. भारत-भारती-वैभवम् पृ. 40
44. वही पृ. – 19
45. भारत-भारती-वैभवम् – 8
46. वही पृ. 34
47. श्री भारत-भारती-वैभवम् 49
48. वही – 51
49. वही – 39
50. जानकीवल्लभस्तवः 2
51. श्री जानकीवल्लभस्तव – 11
52. नवनीतसुधा समर्पण – 1, 2
53. श्री हनुमन्महाष्टकम्-भूमिका
54. श्री हनुमन्माहाष्टकम् पद्य – 1
55. श्री निम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकस्तोत्रम् – 1
56. निकुञ्जसौरभम् – 1
57. निकुञ्जसौरभम् – 17
58. वही – 42
59. प्रातःस्तवराज पृ. 27
60. वही पृ. 1
61. श्री निम्बार्कस्तवार्चनम्-चतुश्श्लोकी – 1
62. वही, निम्बार्कगुणाष्टकम् – 2
63. वही, निम्बार्क स्वरूपाष्टक – 5
64. वही, निम्बार्क विंशतिस्तोत्र –1, 2
65. बीसवीं शताब्दी का राजस्थानीय संस्कृत स्तोत्र साहित्य – शोधप्रबन्ध; (अप्रकाशित) डॉ.नीरज शर्मा
66. ''अनन्तश्री विभूषित श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य का संस्कृत साहित्य को अवदान'' – डॉ.परमानन्द शर्मा शोध प्रबन्ध (प्रकाशित)

प्रवक्ता एवं यू.जी.सी. रिसर्च अवार्ड फैलो
गौ.दे. राजकीय महिला महिलाविद्यालय
अलवर (राज.)

अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज के सारस्वत प्रबन्ध में

श्रीराधातत्त्व व श्रीकृष्ण-तत्त्व चिन्तन

— डॉ. (श्रीमती) उषा चौधरी,
एम.ए., पीएच.डी.

हमारी भारत-भूमि के धार्मिक क्षेत्र में राधा व कृष्ण का चिन्तन, मनन एक आध्यात्मिक महत्त्वपूर्ण घटना है। मध्ययुगीन कृष्णप्रेमाश्रय शाखा वाले वैष्णव-सम्प्रदायों में निम्बार्क-सम्प्रदाय सबसे प्राचीनतम है। कृष्ण-उपासना के साथ-साथ राधा-तत्त्व का प्रथम धार्मिक आविर्भाव श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय में मानना उचित है। इस सम्प्रदाय के आद्यप्रवर्तक श्रीनिम्बार्काचार्य हैं। श्रीहंस भगवान्, श्रीसनकादिक तथा श्रीनारद के अनुसार ही श्रीनिम्बार्काचार्य ने श्रीराधा की उपासना का विशेष आदेश दिया है। वेद-पुराण-तन्त्र आदि शास्त्रों के अनुसार श्रीनिम्बार्काचार्य ने कहा कि परात्परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण के बाएँ अंग में प्रसन्नतापूर्वक विराजमान श्रीश्यामसुन्दर के अनुरूप-दिव्य गुणों से सम्पन्न सखियों से सेवित, समस्त अभीष्टों को पूर्ण करने वाली श्रीवृषभानुनन्दिनी का हम सदा स्मरण करते हैं।

श्रीराधातत्त्व-चिन्तन —

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आद्यप्रवर्तक श्रीनिम्बार्काचार्य ने अपने प्रख्यात स्तोत्र **'वेदान्तकामधेनु'** (दशश्लोकी) में भगवान् श्रीकृष्ण के वामांग में विराजमान वृषभानुनन्दिनी श्रीराधिका का स्मरण किया है—

अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा, विराजमानामनुरूप-सौभगाम्।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा, स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्॥[1]

श्रीराधाकृष्ण की युगलछवि की उपासना ही निम्बार्क-सम्प्रदाय की इष्ट साधना-चिन्तन है। युगलस्वरूप श्रीराधाकृष्ण की आराधना ही सम्प्रदाय की सर्वोपरि निधि है। इस उपासना की प्राचीनता का उल्लेख स्वयं भगवान् निम्बार्काचार्य के इस कथन से स्पष्ट हुआ— सनत्-कुमारों ने इसी का उपदेश अखिल तत्त्व-साक्षी श्रीनारदजी को दिया था। अतः श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण के साथ राधिका का साहचर्य सर्वतोभावेन मान्य है।

वेद, उपनिषद्, तन्त्र और पुराणों में श्रीराधा का उल्लेख श्री, गोपी, रुक्मिणी आदि अनेक नामों से हुआ है। अथर्ववेदीय गोपालतापिनी-उपनिषद् के गोपाल-मन्त्र में गोपी-शब्द से ही श्रीराधिकाजी का उल्लेख हुआ है। पाञ्चरात्रोक्त मुकुन्द-मन्त्र में श्रीशब्द से श्रीकिशोरीजी का उल्लेख है। 'श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ' इस यजुर्वेदीय पुरुषसूक्त में लक्ष्मी-नाम स्पष्ट है, उनके साथ श्रीशब्द से श्रीराधिकाजी का उल्लेख है। इन सब मन्त्रों में श्रीराधा और श्रीकृष्ण का वैशिष्ट्य एवं नित्ययोग बतलाया है।

इस सम्प्रदाय के प्रख्यात आचार्य श्रीश्रीभट्टजी तथा उनके शिष्य श्रीहरिव्यासदेव ने अपने ग्रन्थों में राधातत्त्व का उन्मीलन अधिकता तथा विशदता के साथ किया है। श्रीराधा-कृष्ण कथमपि अलग-अलग

दृष्टिगोचर नहीं होते। श्रीराधा श्यामसुन्दर का विग्रह हैं, तो कृष्ण श्रीराधिका की ही मूर्ति हैं— दर्पण और उसके प्रतिबिम्ब के समान। अतः 'श्रीराधा' जी ही निम्बार्कीय भक्तों की परम आराध्या इष्ट देवी हैं। श्रीराधा के बिना कृष्ण आधे हैं। वहीं रासेश्वरी, वृन्दावनेश्वरी, नित्यविहारिणी प्रियाजी हैं। श्रीराधा श्रीकृष्ण की स्वकीया मानी जाती हैं। निम्बार्क-सम्प्रदाय राधिका के परकीया-रूप से परिचय नहीं रखता। श्रीजयदेव ने गीत-गोविन्द में तथा निम्बार्कीय कवियों ने राधा के अभिसार का वर्णन किया है।

श्रीनिम्बार्काचार्य के शिष्य श्रीऔदुम्बराचार्य ने अपने मान्य ग्रन्थ ''औदुम्बर-संहिता'' में राधाकृष्ण के युगल-तत्त्व का विवेचन विशेषरूप से किया है। इनका कथन है कि यह युग्म सदा-सर्वदा विद्यमान रहता है। वह नित्य-वृन्दावन में नित्य-विहार करता है। राधा और कृष्ण समभावेन अवस्थित रहते हैं। श्रीऔदुम्बराचार्य के इस अभिमत की पुष्टि करते हुए आलोच्य कवि श्री 'श्रीजी' महाराज ने अपने हिन्दी-ग्रन्थों में श्रीश्यामाश्याम के युगल स्वरूप का वर्णन किया है। श्रीराधाजी का स्मरण श्रीयुगलगीतिशतकम् में स्पष्ट करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं—

गोविन्दाऽऽराधितां राधां रसिकैः सततं स्मृताम्।
रासरससुधा-स्निग्धां नौमि तामलिलालिताम्॥[2]

'अर्थात् श्रीगोविन्द द्वारा संसेवित, रसिकजनों द्वारा संस्मृत एवं रासरससुधा-सिन्धु में विभोर हुई, सखीजनों द्वारा संचालित उन श्रीराधिकाजी को मैं नमन करता हूँ।'

इसी तरह **'श्रीराधासर्वेश्वरसुधाबिन्दु'** में कहा है– श्रीकृष्ण के संग श्रीराधा की भी उपासना होनी चाहिए। यथा—

व्रज कुञ्ज बसे व्रजकुञ्जविहारी।
श्रीयमुनातट पावन चिनमय, ललितलता-तरु मञ्जु महारी॥
मोहन माधव वाम विराजत, श्रीराधावृषभानु दुलारी।
नृत्य सखीजन सेवारत नित, गावत नाचत दे दे तारी॥
अति पुलकित नव युगल मुख मण्डल, लखि-लखि शोभा श्रीव्रजनारी।
शरण सदा राधा सर्वेश्वर, व्रजवसुधा प्रिय रस संचार॥[3]

आचार्यश्री ने अपने नवीन ग्रन्थ **श्रीराधा-राधना** में भी श्रीराधा के गुणों का गान करते हुए स्मरण-चिन्तन किया है। आपश्री ने श्रीमद्वृन्दावन की दिव्य निकुंज में सखी-समूह द्वारा अतीव-उल्लासपूर्वक मंगल-स्तुति से समाराधित श्रीकृष्ण-परमप्रियतमा रसिकेश्वरी श्रीराधा की स्तुति की है—

वृन्दावननिकुञ्जेषु सखीवृन्दैः समीडिताम्। श्रीराधां परमां राधां स्तौमि राधाञ्च राधिकाम्।[4]

श्रीकृष्ण-तत्त्व-चिन्तन —

आलोच्य कवि ने श्रीराधाकृष्ण को परमब्रह्म, अगमअगोचर, अजन्मा, ध्यान से परे ज्योतिस्वरूप,

नित्यकिशोर, साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तम बताया है। वे ही आदि-अनादि, अनन्त-असीम तत्त्व हैं, वे ही अखिल ब्रह्माण्ड-नायक, सर्वेश्वर, सर्वनियन्ता, सर्वात्मा, सर्वशक्तिमान्, सृष्टिविधायक, पालक-संहारक, सर्वसद्‌गुणालंकृत, सर्वान्तर्यामी, परमात्मा, परमेश्वर, देवाधिदेव परम विलक्षण एवं परात्पर हैं। इन्हीं विशेषणों से युक्त परम्परागत स्वरूप का सुन्दर विवेचन इन पदों में हुआ है—

वन्दे श्रीसर्वेश्वरमनिशम्।
वन्दे विधि-शिव-सुरपतिबहुवृन्दारक, वन्दितमंगलयुगल-पदाब्जम्॥[5]
जय नन्दनन्दन! जय सर्वेश्वर!!
श्रीसनकादिक परिसेवित हो, ऋषिवर नारद समुपासित हो।
सकल सृष्टिपालक परमेश्वर! जय नन्दनन्दन जय सर्वेश्वर॥
श्रीनिम्बारक आराधित हो, गुंजाफल सम अभिराजत हो।
सूक्ष्म रूप में हो निखिलेश्वर, जय नन्दनन्दन जय सर्वेश्वर॥
परम्परागत परिपूजित हो, शालगराम रुचिर शोभित हो।
राधामाधव! व्रजविपिनेश्वर!, जय नन्दनन्दन जय सर्वेश्वर॥[6]
रे मन भज भज श्रीसर्वेश्वर।
आनन्द सिन्धु रसघन पूरन ब्रह्म सनातन नित्य उजागर।
श्रुति पुरान गावत निशि दिन ध्यावत ऋषि मुनि मन्त्र सुनाकर॥[7]

श्रीकृष्ण भगवान् का स्वरूप अद्‌भुत, अनुपम तथा तदव्यय-सौन्दर्य से युक्त है। उनके अंगों की शोभा में कोटि-कोटि कामदेवों की शक्ति समाहित है। वे अपनी मंदमृदुल-मुस्कान से सहज ही रसिकों का मन मोह लेते हैं। यथा—

श्रीसर्वेश्वर परम पियारे।
अति सुन्दर नवमंगल विग्रह, अनुपम श्यामल परम सुखारे॥
दिव्य प्रभायुत मंजुल मोहन, श्रीवृन्दावन रस संचारे।
शरण सदा राधा सर्वेश्वर, अगणित-स्मर-शर सदा प्रहारे॥[8]

योगी, ऋषि, मुनि जिनका निरन्तर ध्यान करते रहते हैं, वे श्रीकृष्ण तीनों लोकों के स्वामी हैं। सन्तों, भक्तों की कामना-पूर्ति के लिए ही वे अलग-अलग रूप (अवतार) धारण करते हैं। नित्यकिशोर श्रीकृष्ण नित्यधाम से पृथ्वी पर अवतरित होकर रसिकों को नित्य-विहार का रसदान करते हैं। निम्बार्कीय भक्तहृदय ने ऐसे ही श्रीकृष्ण-स्वरूप 'श्रीसर्वेश्वर' भगवान् को शरणागतवत्सल, करुणासागर, पतितपावन, भक्तसंकटहारी माना है और उन्हीं के प्रति शरणागति चाही है—

सर्वेश्वर पद प्रीति करो मन।

शुद्ध भाव नत शरणागत हो विमल भगति चित दीन सदा बन॥[9]

निम्बार्क-सम्प्रदाय में 'रसो वै सः' श्रुति के अनुसार श्रीकृष्ण के साक्षात् स्वरूप 'भगवान् सर्वेश्वर' रसरूप हैं। वे अखिल-सौन्दर्य-माधुर्य-मंडित आनन्दकन्द-नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ही स्वेच्छा से रसविलास-हेतु युगल-स्वरूप श्रीप्रिया-प्रियतम के दिव्य रूप में प्रकट हो, नित्यधाम श्रीवृन्दावन में अहर्निश निकुंज-क्रीड़ारत होते हैं। श्रीराधासर्वेश्वर, पूर्ण परात्पर, अभिन्न, अनन्त, अद्वय, सौन्दर्य-माधुर्य-गुणों में परस्पर सर्वथा अनुरूप, सनातन और नित्य हैं। आचार्यश्री ने आनन्दकन्द श्रीकृष्ण के जन्म की बधाईयों का बड़ा ही सुन्दर चित्रांकन अपने ग्रन्थ श्रीसर्वेश्वरसुधाबिन्दु में किया है। यथा—

व्रज में मंगल आज बधाई।

भादों कृष्ण सुभग अष्टमी, मध्य निशा माधव प्रगटाई॥

विधि शिव किन्नर सुरमुनि रिषिजन, सुमनवृष्टि कर अति हरषाई।

ढाढिन ढाढी महामोदभर, नन्द निकेतन देत बधाई॥[10]

कृष्ण नाम नव रास की धारा, बहुत निरन्तर व्रज सरसाई।

जय जय बोलत बुध-वन्दीजन, पुलकित आवत जन समुदाई॥

बाजत अनुपम मंगल बाजे, नाचत गोपी-गोप सुहाई।

शरण सदा राधा सर्वेश्वर, श्रीराधावर सब सुखदाई॥[11]

अतः श्रीकृष्ण की लीला अनन्त, अलेख्य, अपार एवं अपरिमित है। उनकी लीलाओं का कोई पार नहीं पा सकता। श्रीकृष्ण भक्तों के प्राणदान, जीवन तथा सम्पूर्ण लोकों से दुःखों का विभंजन करने वाले हैं। सभी लोकपाल, जपजीवन सदैव श्रीकृष्ण की शरण में शीश झुकाते हैं। परम ब्रह्म श्रीकृष्ण की जन्म-कर्मादि लीलाएँ अविकारी एवं दिव्य हैं। जो उनकी लीलाओं को लौकिक एवं मायायुक्त मानते हैं, उनका जीवन ही व्यर्थ है। वे श्रीकृष्ण विभु हैं, उनकी लीलाएँ भी विभु हैं। श्रीसर्वेश्वर प्रभु अनन्त कृपा के सागर, परमदयालु एवं अपने शरणागत भक्तजनों की रक्षा करने वाले हैं। वे पूर्णातिपूर्ण ब्रह्म हैं। उन्होंने अपने भक्तजनों के रक्षार्थ गिरिराज-गोवर्धन को अपनी कनिष्ठा अँगुली पर उठा लिया था। ब्रह्म-शिवादि द्वारा भी जिनका स्वरूप अचिन्त्य है, उत्तम-श्लोक सन्त-महापुरुषों द्वारा सदा संसेव्य हैं, दिव्यातिदिव्य स्वरूप में सर्वदा विराजमान श्रीसर्वेश्वर प्रभु युगलस्वरूप श्रीराधामाधव निम्बार्क-सम्प्रदाय के आराध्य ठाकुर हैं। यथा—

दिव्यातिदिव्यरूपश्चाऽचिन्त्यं विधि-भवादिकैः।

सद्भिः स्वान्ते सदा सेव्यं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम्॥[12]

6. सखी-तत्त्व व वृन्दावन-तत्त्व-चिन्तन —

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य महामुनीन्द्र ने सखी-भाव से 'युगल-स्वरूप' श्रीराधाकृष्ण की निकुंज-

सेवा को सर्वोपरि अन्तरंग-उपासना बताया है। 'सहचरी' जीवात्मा की अलौकिक अवस्था का नाम है। यह रसिकोपासक का परम-भाव है, जिसमें वह अहर्निश निमग्न हो 'प्रिया-प्रियतम' के केलिकुंज की सेवा करता हुआ कुंजरन्ध्रों से केलि-रसानन्द की अलौकिक अनुभूति करता है। ऐसे परम भावुक-भक्तों के लिए ही उनके परमाराध्य 'श्रीराधामाधव' नित्य-केलिधाम श्रीवृन्दावन में निकुंज-क्रीड़ारत होते हैं।

श्रीराधाकृष्ण पूर्वकाम हैं। वे नित्यतृप्त तथा आनन्दमय भी हैं। भाव और प्रेम को परमात्मा से पृथक् नहीं किया जा सकता। श्रीराधाकृष्ण प्रेम के विषय हैं, तो सखियाँ प्रेम का आश्रय हैं। सखियों का अप्राकृत दिव्य-भाव ही परब्रह्म श्रीकृष्ण में दिव्य सुखेच्छा उत्पन्न करता है। आचार्यश्री ने निकुंज क्रीड़ारत नित्यविहारी-विहारिणी जू की अनुपम झाँकी का वर्णन श्रीसर्वेश्वरसुधा-बिन्दु में किया है—

श्रीवन विहरत श्रीसर्वेश्वर।
नित्य किशोरी स्वामिन राधा, सखीजन संग सुशोभित सुन्दर॥
वृन्दावन नव चिन्मय अवनी, वीथिन विहरत मुदित मनोहर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, रसिक निहारत नवल युगनवर॥[13]
श्रीसर्वेश्वर रसिक छबीलो।
कुंज सखी सह विहरत श्रीवन, परम प्रिया को परम रसीलो॥
विविध केलिरस विलसत मंजुल, रसिक शिरोमणि नित्य नवीलो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रेम सुधा रस नित बरसीलो॥[14]

सखीतत्त्व-चिन्तन के लिए 'नित्यविहारी-विहारिणी जू' का यह नित्य लीला-रस नित्य-नूतन, अहर्निश और विविधरूपी है। अनेक अगणित भावों और नव-नव उत्साहों से उसका विकास होता है। देवाचार्यजी ने सखियों की केलि-क्रीड़ा की कामना का वर्णन करते हुए अपने ग्रन्थ में लिखा है—

चल सखि तरनि तनूजा तीर।
विहरत जहँ श्रीराधामाधव, बहत सुखावह त्रिविध समीर॥
कदली कुंज-कुंज अभिराजत, सखि वरषावत कुसुम-अबीर।
तरु डरियन पर हरिगुन गावत, मोर सारिका-कोकिला-कीर॥
युगल पदाम्बुज परम निकटतम, वहत रविसुता निरमल नीर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दरशन हित मम नयन अधीर॥[15]

सखियाँ रूप और वय में रसिक दम्पती श्रीराधाकृष्ण के समान हैं। उन्हीं के प्रेम-रस-रंग में रंगी-पगी होने के कारण उनसे अभिन्न हैं। प्रियतम श्रीकृष्ण दिव्य वृन्दावन में रमण करने वाले नित्यविहारी तथा रस-स्वरूप पुरुष हैं, तो प्रियतमा राधा उनकी पराकृति एवं आह्लादिनी शक्ति हैं। युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के नित्यविहाररस और निकुंज-विलास का विधान सखियाँ किया करती हैं। सखी अथवा सहचरी-भाव

जीव की उत्कृष्ट अवस्था है, जहाँ वह निष्काम-भाव से श्रीप्रियाप्रियतम की निकुंज-लीला का आस्वादन करता है। भगवान् श्रीनिम्बार्क ने दशश्लोकी में **''सखी-सहस्रैः परिसेवितां सदा, स्मरेम देवीं सकलेष्ट-कामदाम्''** कहकर श्रीराधिका-प्रधान सहचरी-भक्ति का निर्देश किया है। राधा-बिना कृष्ण सम्पूर्ण नहीं है। सहचरी-भक्त को स्वामिनी राधाजी की कृपा से ही निकुंज-सेवा सुलभ होती है।

सहचरी-भक्त परमाराध्य श्रीयुगलकिशोर की अहैतुकी कृपा से लौकिक दुःखों से मुक्त होकर सखी-भाव को धारण करती है। उसके उस सखी-भाव में स्व-सुख की कल्पना का अभाव है। श्रीयुगल का प्रेम केलि-विधान ही उसका आहार है। यमुनाजी के वंशीवट तट पर सखियाँ परमाराध्य श्रीराधाकृष्ण की केलि-क्रीड़ा, अनुपम छटा, मधुर-मधुर मुरली की ध्वनि आदि से दिव्य दर्शन करती हुई उल्लसित दिखाई पड़ती हैं—

आज युगलवर वंशीवट तट, करत रास रस केलि सखी री।
श्रीवृन्दावन रसिक हृदय घन, चिनमय रजधन ललित लसीरी।।[16]

श्रीराधाकृष्ण का दिव्य स्वरूप तथा उनका नित्य-विहार और सखी-रूप में उनका अन्तरंग सेवा-विधान आचार्यश्री की विविध रचनाओं में प्रकट हुआ है। सम्प्रदाय में देवाचार्यजी श्री 'श्रीजी' महाराज के नाम से विख्यात हैं। सखीभावोपासना होने से उनका 'श्रीजी' उपमान सार्थक प्रतीत होता है।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु-युगलकिशोर-नित्यनिकुंज-लीलारत श्रीराधामाधव की नित्यविहार-लीला-स्थली दिव्य-लीलाधाम श्रीवृन्दावन है। 'लीलाधारी' की भाँति 'लीलाधाम' श्रीवृन्दावन भी परम दिव्य है, वही नित्यविहारी-विहारिणीजू का केलिकुंज है। श्रीश्यामाश्याम की अद्भुत अंग-कान्ति से ही यह कान्तिमान रहता है। श्रीधामवृन्दावन की पच्चीस-योजन भूमि में श्रीश्यामाश्याम एक-रस होकर नित्य-विहार करते हैं। श्रीहरिव्यासदेवजीकृत 'महावाणी' में भी इसकी महिमा का वर्णन किया गया है—

जै जै श्रीवृन्दावनधाम, चिदानन्दघन पूरन काम।[17]

श्रीवृन्दावन रसिक-भक्तों का 'योगपीठ' है, जो गोलोक से महनीय और परम पावन है, जिसके एक-एक रजकण में अनेक तीर्थों का समागम है। श्रीधामवृन्दावन ब्रह्म, शिव आदि के द्वारा सेवित एवं वन्दित है। वृन्दावन सदा-सनातन एक-रस होकर भूतल पर प्रकट है, प्रिया-प्रियतम का निजधाम है। श्रीराधामाधव यहाँ नित्य विराजमान रहते हैं—

श्रीवृन्दावन रसमय धाम।
युगल प्रियाप्रिय चरन कमल नख, छवि सों वरषत रस अविराम।।
अवगाहत रस सुधा सिन्धु में, पुलकित सखिजन अति निषकाम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह रस बहत वन आठों याम।।[18]

वृन्दावन निगमागमों के लिए भी नितान्त गूढ़ एवं अगम्य है। यहाँ निरन्तर प्रेम-रस की धारा बहती रहती है। यहाँ पर रसिकों को संसार की बाधाएँ भी कष्ट नहीं दे पाती हैं। रसिकजनों की प्रतिपल यही

अभिलाषा रहती है कि हम युगलनामरस का पान करते हुए वृन्दावन में वास करते रहें। सखीभावोपासक रसिकजन ही वृन्दावन के निगूढ रहस्य को समझ सकते हैं। जीवरूपा सखियाँ भी चिदानन्दमय ही हैं, जो निरन्तर दिव्य-चिन्मय वृन्दावनधाम में एक-रस विराजमान होकर रसरूप रसिक-दम्पती की रसमयी सेवा-परिचर्या में लीन रहती हैं —

युगल वपु श्रीवृन्दावनधाम।
चिनमय रसनिधि परम सुख भूमि, सुरगन वांछत दरश निषकाम।।[19]

वृन्दावन-तत्त्व-चिन्तन में रूपरसिकदेव जी ने वृन्दावन के गुह्यतम रूप का उद्घाटन करते हुए साक्षात् हरि के इस धाम को सर्वलोकों से परे कहा है। वे भी इसका मर्म समझाने में असमर्थ हैं, क्योंकि न तो वह सूर्य के नीचे भू-लोक पर है और न ही शेषनाग के फन पर पाताल-लोक में विद्यमान है, बल्कि रसिकशिरोमणि राधेश्याम का निजधाम जहाँ है, वहाँ सामान्य साधक का प्रवेश ही निषिद्ध है। वहाँ तो नित्यविहार-रस के पिपासु, मर्मज्ञ, अनन्य सखी-भावोपासक, साक्षात् श्रीहरिप्रिया-सहचरी का स्वरूप धारण करने वाले साधक ही पहुँच सकते हैं। आचार्यश्री ने लिखा भी है —

रे मन चल वृन्दावन धाम।
जहाँ निरन्तर बहत रस धारा, जग बाधा नहिं व्यापत काम।।
युगल नाम रस पीवो प्रतिपल, पावो अविचल अति आराम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यही अभिलाष परम अविराम।।[20]

अखिलान्तरात्मा सर्वेश्वर-रसिकेश्वर श्रीकृष्ण श्यामसुन्दर प्रभु का श्रीधामवृन्दावन के लिए यह दृढ़ संकल्पशास्त्र प्रसिद्ध है —

''वृन्दावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छामि''

''अर्थात् श्रीवृन्दावन की सीमा का त्याग कर मैं अपना एक चरण भी आगे नहीं बढाता। यथार्थतः श्रीप्रभु के इस संकल्प से स्पष्ट सिद्ध है कि उन्हें श्रीवृन्दावन कितना प्रिय है।''

आचार्यश्री ने भी अपने ग्रन्थों में श्रीवृन्दावनधाम की महिमा का गुणगान बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है—

वृन्दावनं वनं दिव्यं चिद्घनं हरिमन्दिरम्। अप्राकृतं व्रजे नित्यं शोभितं भावयेऽनिशम्।।[21]

''अर्थात् व्रजमण्डल में सदा परम सुशोभित प्राकृत-तत्त्वों से परे अतिशय दिव्य-आनन्द-स्वरूप श्रीनिकुंज-विहारी-सर्वेश्वर-मदनमोहन-श्रीराधाकृष्ण के निजनिकुंजधाम-विपिनराज श्रीवृन्दावनधाम की निरन्तर हम भावना करते हैं—''

राधाकृष्ण-पदाम्भोज-रसभक्तिसमन्वितम्। गेयं-वृन्दावनाऽऽनन्द-सुधासीकरसम्प्रदम्।।[22]

"अर्थात् युगलविहारी ललना-ललन श्रीराधाकृष्ण के युगलचरणारविन्दों की रसमयी प्रेमाभक्ति से परिपूर्ण एवं श्रीवृन्दावन में सर्वदा आविर्भूत आनन्दामृत के सूक्ष्मकणों से सराबोर करने वाली वृन्दावन-महिमा के मनन-योग्य है।"

नित्यविहाररस के विधायक तत्त्व —

नित्यविहार-रस की स्पष्ट परिभाषा स्वामी हरिदासजी-प्रणीत 'केलिमाल' के प्रथम दो-तीन पदों से ही प्राप्त हो जाती है। उनके अनुसार ये किशोर-किशोरी सहज ही प्रकट हुए हैं। ये अत्यन्त सुन्दर, चतुर और 'सुघट' हैं। दोनों की समान ही अवस्था है। दोनों ही प्रेम के समुद्र में डूबे हैं, रस में पगे हैं तथा परस्पर विहार कर रहे हैं। इनका यह विहार करता हुआ स्वरूप सदा से था, अब भी है और आगे भी अटल रहेगा। यह निरवधि नित्यविहार इस प्रकार चल रहा है कि प्रिया-प्रियतम रात-दिन इसी में डूबे हैं। आधे निमिष के लिए शयन तक नहीं करते। प्रतिक्षण इसका रंग बढ़ता ही रहता है। युगल को न भोजन करने का अवकाश है, न स्नान या शृंगार का। वस्तुतः इन नित्यविहारी युगल का विहार ही भोजन है, शृंगार तो उन्हें भार सा लगता है—

अंग संग नवल किशोर किशोरी, एक वैस रस सिंधु अगाधा।
जागत अनुरागत निसि वासर, लगत न नैन निमेष न आधा॥[23]

श्रीराधाकृष्ण की मधुर उपासना ही नित्यविहार-रस है। नित्यविहार अथवा निकुंजलीला में लौकिक-काम का सर्वथा अभाव रहता है। यह नित्यविहार-रस नित्य-निरन्तर अहर्निश-अविराम चलता ही रहता है। अर्थात् श्रीनित्यनिकुंजेश्वर एवं श्रीनित्यनिकुंजेश्वरी श्यामाश्याम परस्पर अनेक प्रकार से रास-रस की रहस्यमयी क्रीड़ाएँ अनवरत करते रहते हैं और उनकी ये सभी क्रीड़ाएँ वृन्दावन में ही निष्पन्न होती हैं।

स्वामी हरिदासजी के युगल सदा-सर्वदा इस प्रकार केलि करते हैं, जैसे प्रथम समागम रात्रि को वरवधू उनकी उद्दाम कामनाएँ सदा बढ़ती रहती हैं, घटती नहीं हैं —

प्रथम समागम रैन दिन, अंगन अंग समाहिं। समर रूप बाढत रहै, निरखत नैन सिहाहिं॥[24]

यह विहार-रस इतना एक-रस है कि सदा अत्यन्त उद्दाम-गति से चलता रहता है। इसके घटने-बढ़ने की विशेष ऋतु, पर्व या समय नहीं है। इसलिए भावुक उपासक युगल के लिए विशेष अवसरों पर उत्सवों की आवश्यकता नहीं समझते। उनकी भावना है कि निकुंज में नित्य शरद्-पूर्णिमा है, नित्य अक्षय-तृतीया, नित्य-होली और नित्य वसन्त-पंचमी है। यथा—

नित्य शरद नित तीज है, नित होरी सु वसन्त।
नित्य केलि क्षण-क्षण नई, जाके सुखहिं न अन्त॥[25]
तोही सौं हिलग आँखिन सौं आंखें, मिली रहें जीवन कौ यहै लहा हो प्यारी।
मोकौं इतौ साज कहाँ री प्यारी हों अति दीन, तुवपस भुवक्षेप जाय न सहा हो प्यारी॥
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कहत राखि लै, बाँह बल हौं वपुरा काम दहा हो प्यारी॥[26]

इस नित्यविहार-रस में एक विलक्षण बात यह होती है कि युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम तन-मन-प्राण से सदा मिले हैं, एक-प्राण दो-देह कहलाते हैं, फिर भी मिलन की उत्कट इच्छा बनी रहती है। स्वामी हरिदासजी के कुंजविहारी का स्वरूप ऐसा है कि वे मिलन के समय भी मिलन के लिए आतुर रहते हैं, "हा-हा खाते" रहते हैं। यही आतुरता निरवधि नित्यविहार की एक-रसता को अटूट रखती है। परितुष्टि की भावना कभी आने नहीं देती, यह उत्सुकता या आतुरता ही इस नित्यविहाररस का मूल-मन्त्र है।

नित्यविहार-रस में राधाकृष्ण और गोपी अथवा सहचरी (सखी) के बीच वृन्दावनधाम में अलौकिक प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। निकुंज-लीला में वर्णित नित्यविहार-रस के परमानन्द में ही केलिरत श्यामाश्याम के दिव्य दर्शन होते हैं। अहर्निश निकुंज-केलिक्रीड़ा के विधान में दिव्यभाव-समन्वित सहचरी के नेत्र कुंज-रन्ध्रों से इसी दिव्य-दर्शन के चिरभिलाषी रहते हैं।

इस प्रकार श्रीराधामाधव का सखी-परिकर के साथ श्रीवृन्दावनधाम में नित्यनिकुंज-केलिक्रीड़ा का होना ही नित्यविहार-रस कहलाता है। अर्थात् नित्यनिकुंज-लीला श्रीवृन्दावन में ही निष्पन्न होती हैं और इसका विधान अष्टसखी-परिकर द्वारा किया जाता है। फलतः नित्यविहार-रस के विषयक तत्त्व मूल रूप से 4 माने जाते हैं—

1. श्रीराधा 2. श्रीकृष्ण 3. सखी-परिकर और 4. वृन्दावन।

इनमें से किसी एक के भी अभाव में यह लीला सम्भव नहीं होगी। आचार्यश्री ने सर्वेश्वर-सुधाबिन्दु में नित्यविहार-रस का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है—

विहरत राधा श्रीयमुना तट।
रंगदेवी-हितु-श्रीहरिप्रिया, नित्य सखी संग सेवित सूभट॥
निहारत माधव श्रीराधापद, सरस सखी जन मुख धर घूँघट।
छिन-छिन वरषत नव रस धारा, राधा रसिकनि धर सुन्दरपट॥
अगणित रतिपति शोभा श्रीहरि, सो छवि निरखत मुख राधारट।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विलसत केलि प्रिय वंशीवट॥[27]

8. विधि-लीलातत्त्व-चिन्तन —

निम्बार्क-सम्प्रदाय में श्रीराधाकृष्ण युगल की आराधना माधुर्यभाव की भक्ति से की जाती है। इस माधुर्यभाव की भक्ति को प्राथमिकता देने का श्रेय स्पष्ट रूप से श्रीनिम्बार्काचार्य को ही है। उनके सिद्धान्त-ग्रन्थों से इस तथ्य की पूर्णरूपेण पुष्टि हो जाती है। श्रुतियों ने जिसकी रसोपासना की ओर इंगित किया है, वह रस-रूप परमात्मा श्रीकृष्ण ही हैं। इस माधुर्यभाव की प्राप्ति बिना सर्वेश्वरी श्रीराधिका की कृपा के सम्भव नहीं है। अतः श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने 'अंगे तु वामे' कहकर सर्वप्रथम श्रीकृष्ण के साथ श्रीराधिका की स्तुति कर उनकी कृपा की याचना की है। इस प्रकार प्रेम-पीयूष की वर्षा करने वाली रासेश्वरी श्रीराधिका की आराधना किये बिना माधुर्यभाव की प्राप्ति असम्भव है।

आचार्यश्री ने भी अपनी आराधना व साहित्य-सर्जना में माधुर्यभाव की उपासना को ही सर्वोपरि प्रमुखता प्रदान की है। आपके ग्रन्थों से इसका पूर्णता से समावेश हुआ है।

विविध लीला-तत्त्व में श्रीनित्यनिकुंजविहारी श्यामाश्याम की युगलोपासना के अतिरिक्त श्रीश्यामाश्याम की व्रजलीलाओं का भी चिन्तन किया जाता है। व्रजधाम का चिन्तन विविधलीला-तत्त्व का एक प्रमुख अंग है। भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं से नित्य सम्बन्ध होने के कारण सम्पूर्ण व्रज-प्रदेश भारत में ही नहीं, अपितु विश्वभर में गौरवान्वित हुआ है। चौरासी कोस व्रजधाम का चिन्तन भी इसी के अन्तर्गत किया जाता है। समस्त भूमण्डल में व्रज ही श्रेष्ठ है और व्रज से भी सर्वश्रेष्ठ श्रीश्यामाश्याम का निजधाम श्रीवृन्दावन है। भगवान् श्रीकृष्ण की लीला-स्थली होने से व्रजधाम वैकुण्ठधाम से भी उत्तम है। इसी व्रजधाम में निम्बार्क-सम्प्रदाय के आराध्य श्रीश्यामाश्याम की बाल-लीलाओं का चिन्तन भी किया जाता है। आचार्यश्री ने श्रीसर्वेश्वर-सुधाबिन्दु में 'कन्दुक-लीला' का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है—

प्रियतम! कन्दुक लीला सुन्दर।
आवो मिलि खेलें मम नवकन्दुक, मखमल मंडित जरकसि चितहर॥
यह लो निज कर मंजुल कन्दुक, केलि विलसिये कुंज सरोवर।
शरण सदा राधा सर्वेश्वर, सहित सहचरी यूथ बनाकर॥[28]

'व्रज' शब्द का अर्थ ही होता है 'प्राप्त होना' अर्थात् भगवान् श्रीकृष्ण अथवा उनकी प्राप्ति जहाँ हो, उसे व्रज कहते हैं। ब्रह्म का 'ब्र' और रज का 'ज' अक्षर मिलकर ही ब्रज शब्द बना है। यहाँ व्रज-रज के स्वरूप में साक्षात् परब्रह्म श्रीहरि ही निवास करते हैं। व्रज के अन्तर्गत चौरासी-कोस के स्थान आते हैं। उनमें गोकुल, मथुरा, गोवर्धन, नन्दगाँव, बरसाना, वृन्दावन आदि प्रमुख हैं। इन स्थानों में हुई श्रीश्यामाश्याम की बाल-लीलाओं का वर्णन आचार्यश्री ने बड़े सुन्दर ढंग से किया है। युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम की महारासलीला का चिन्तन विविध लीला-तत्त्व के अन्तर्गत किया जाता है। कन्दुक-लीला, माखनचोरी, वंशीलीला, छाकदान, रास, मानलीला आदि बाल-लीलाओं की उपासना कर साधकों द्वारा रिद्धि-सिद्धि प्राप्त नहीं कर ली जाती है, तब तक साधक को राधाकृष्ण की मधुर-भक्ति अथवा माधुर्योपासना की भक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। अर्थात् जिसे निकुंजोपासना की भक्ति या नित्यविहार-रस की उपासना भी कहते हैं, उसे साधक प्राप्त नहीं कर सकता। अतः श्रीयुगल-स्वरूप की माधुर्यभाव की भक्ति-प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ में साधक को इन विविध-लीला-तत्त्वों का चिन्तन परमावश्यक है।

फुट नोट —

1. वेदान्तकामधेनु (दशश्लोकी) : ज. निम्बार्काचार्य, श्लोक सं. –5
2. श्रीयुगलगीतिशतकम्, श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी पद सं. 47, पृष्ठ सं. 23
3. श्रीसर्वेश्वरसुधाबिन्दु, श्री 'श्रीजी' महाराज पद सं. 50, पृष्ठ सं. 15
4. श्रीराधा-राधना, श्री 'श्रीजी' महाराज पद सं. 30, पृ. सं. 11

5. श्रीसर्वेश्वर-सुधाबिन्दु, श्री 'श्रीजी' महाराज — पद सं. 1, पृ. सं. 1
6. वही – — पद. सं. 6, पृ. सं. 2
7. वही – — पद. सं. 19, पृ. सं. 6
8. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 4, पृ. सं. 15
9. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 5, पृ. सं. 11
10. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 65, पृ. सं. 20
11. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 20, पृ. सं. 65
12. श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 20, पृ. सं. 48
13. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 23, पृ. सं. 7
14. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 9, पृ. सं. 4
15. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 57, पृ. सं. 18
16. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 68
17. महावाणी (सिद्धान्तसुख) : श्रीहरिव्यासदेवाचार्य-प्रणीत — पद सं. 4/1
18. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 9, पृ. सं. 32
19. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 97, पृ. सं. 31
20. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 96, पृ. सं. 31
21. श्रीवृन्दावनसौरभम्, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 1, पृ. सं. 2
22. श्री वृन्दावनसौरभम्, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 53, पृ. सं. 22
23. स्वा. विहारिनिदास, सिद्धान्त के पद – 146
24. स्वा. ललित किशोरी दास, साखी – 973
25. स्वा. ललित किशोरी दास, –साखी
26. स्वा. हरिदास, केलिमाल, 35
27. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 11, पृ. सं. 38
28. श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी, — पद सं. 101, पृ. सं. 32

हिन्दी विभाग

आई.ओ.पी. वृन्दावन (उ.प्र.)

हिन्दुत्व का बोध वैदिक-संस्कृति पालन पर ही निर्भर है।

– श्री 'श्रीजी' महाराज

"अष्टावष्टसहस्रे द्वे शताधिक्यस्त्रियस्तथा।
ऋचोपनिषदस्ता वै ब्रह्मरूपा ऋचः स्त्रियः।" श्रीकृष्णोपनिषद्

भगवान् निम्बार्क, श्री राधोपनिषद् और ऋग्वेद की शांखायन और आश्वलायन शाखाएँ

— डॉ. गिरिधारी शर्मा, एम.एस.
हृदयरोग विशेषज्ञ

निम्बार्क दर्शन में भगवती राधा का पूर्णब्रह्म सर्वेश्वरकृष्ण की आल्हादिनी आद्यशक्ति के रूप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके नाम से **श्रीराधोपनिषद्** और **श्रीराधातापनीयोपनिषद्** मिलते हैं। श्रीराधोपनिषद् ऋग्वेद से सम्बन्धित है, जबकि राधातापनीयोपनिषद् अथर्ववेद से संबद्ध है। अनन्तश्रीविभूषित 1008 श्रीजी महाराज राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी भगवान् निम्बार्क के 5100वां प्राकट्य वर्ष मनाने के लिए निम्बार्कपीठ सलेमाबाद में विशाल विद्वत् सम्मेलन करवा रहे हैं। इस अवसर पर, वेदों की शाखाओं पर जो अलवर और बांसवाड़ा राजस्थान में मिली हैं, उनकी महत्ता पर सामयिक विचार भी वांछित है। तत्सम्बन्धी विचार इस लेख में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

ऋग्वेद और राधोपनिषद् :

ऋग्वेद की **"वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्"** शान्ति है, जो श्रीराधोपनिषद् की भी है और इसकी तरह सौभाग्यलक्ष्युपनिषद् व सरस्वतीरहस्योपनिषद् की भी है। यह उपनिषद् छोटा होते हुए भी बहुत सारगर्भित है। इसमें तथा राधातापनीयोपनिषद् दोनों ही श्रुतियों में भगवती राधा को आल्हादिनी शक्ति बताकर उनके **"राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमन्माधिदेवता, सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावन-विहारिणी** आदि 28 नामों से वेदों ने उनके नामों का गान किया है। अन्य उपनिषदों में श्री भगवती आद्या शक्ति को 'बहृच-प्रिया', 'सामगान-प्रिया' तथा 'ऋग्वेदे त्वं समुत्पन्ना' 'या ऋग्वेदे स्तुता देवी' आदि विशेषणों तथा वेदवाक्यों से सम्बोधित किया है।

भगवान् निम्बार्क का प्राकट्य और ऋग्वेद की शाखाएँ :

श्री निम्बार्काचार्य का प्राकट्य कलियुग के प्रारम्भ में तथा द्वापर युग के अन्त में माना गया है। उस वक्त ऋग्वेद की कम से कम 21 शाखाएँ थी। मुक्तिकोपनिषद् और पातंजल महाभाष्य के अनुसार 'एकविंशति बाह्वृच्यं, एकशतं अध्वर्युशाखा, सहस्रशाखं सामवेदः, नवधा अथर्वणो वेदः। इस तरह 1131 वेद की शाखाओं का कलियुग में 5000 वर्षों में इतना ह्रास हुआ कि आज इनकी संख्या घटकर 13-15 तक ही रह गई और कुछ का लोप अवश्यम्भावी है, अगर धर्मप्राण वैदिक समुदाय इस ओर उपेक्षा बुद्धि रखेगा। **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मो षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"** आज जितना आवश्यक है, उतना कभी रहा भी है। ऋग्वेद की 21 शाखाओं में केवल शाकल शाखा ही बची है। शांखायन शाखा लुप्त होने के कगार पर है, आश्वलायन शाखा हालाँकि पुस्तक और पद पाठ के रूप में उपलब्ध है, परन्तु उनके अध्येता ब्राह्मणों को उसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

शांखायन और आश्वलायन ऋक्शाखाओं का महत्त्व—

शांखायन शाखा महार्णव के अनुसार नर्मदा के उत्तर प्रान्तों में फैली हुई थी। आजकल वह सिमटकर गुजरात व राजस्थान के कुछ नागर व सहस्र औदीच्य ब्राह्मणों में ही रह गई है। इस शाखा की संहिता, पदपाठ, शांखायन ब्राह्मण, शांखायन आरण्यक, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र तथा शांखायन ब्राह्मण, शांखायन तन्त्र इस शाखा के साहित्य में उपलब्ध हैं। इस शाखा की संहिता तथा पदपाठ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, अलबर में सुरक्षित है तथा इस शाखा के श्रौतसूत्र पर दुर्लभ टीकायें क्रतुरत्न माला इत्यादि भी उपलब्ध हैं। शांखायन महर्षि का उल्लेख श्रीमद्भागवत के मैत्रेय-विदुर संवाद में तृतीय स्कन्ध में आया है। उन्हें महाभागवत तथा सनत्कुमार से निवृत्ति-मार्ग की शिक्षा प्राप्त करने का उल्लेख है। इस शाखा के आधुनिक महापुरुषों में **श्री निरंजनदेवतीर्थ, पुरी के पूर्व शंकराचार्य, भारतीय विद्याभवन के निर्देशक जयन्त हरिकृष्ण दवे** (वर्तमान) तथा **बांसवाड़ा के निवासी शुभशंकरजी हर्षदजी नागर व इन्द्रशंकर झा के नाम** स्मरणीय है।

आश्वलायन ऋक् शाखा के सम्बन्ध में यह जानना आवश्यक है कि ऋग्वेद की शाकलशाखा का सूत्र भी आश्वलायन ही है। कवीन्द्राचार्य के सूचीपत्र तथा अलवर में उपलब्ध आश्वलायन संहिता (पदपाठसहित) को देखने से लगता है कि यह आश्वलायन शाखा ऋग्वेद की स्वतंत्र शाखा रही है। इसके अध्येता ब्राह्मण उत्तरी भारत में चतुर्वेदी ब्राह्मण, बिहार, मध्यभारत, महाराष्ट्र में फैले हुए हैं। **महामहोपाध्याय स्व. पं. गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी आश्वलायन शाखा के ऋग्वेदी थे।**

भगवान् निम्बार्क के एक शतोत्तर पंचसहस्र (5100) प्राकट्य समारोह पर हमारा कर्तव्य —

1. हमें आचार्यश्री के ग्रन्थों का, विशेषकर प्रस्थान त्रयी व ब्रह्मसूत्र भाष्य का अनुशीलन करना चाहिये।
2. उत्तरी भारत में पिछले सहस्र वर्ष की राजनैतिक अस्थिरता तथा वैदिक धर्म की उपेक्षा के कारण वेदाध्ययन तथा वैदिक श्रौत कर्मानुष्ठान का बहुत ह्रास हुआ है। इस ओर संगठित होकर ध्यान देने की आवश्यकता है।
3. वैदिक शाखाओं तथा विशेषकर लुप्तप्राय शाखाओं पर आस्तिक समुदाय को ध्यान देने की आवश्यकता है। यद्यपि भारत सरकार ने मानव संसाधन मंत्रालय के द्वारा 1985 में महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना करके तथा 2003 में यूनेस्को द्वारा परम्परागत वैदिक अध्ययन को तथा श्रौत यज्ञ परम्परा को मानवजाति की महत्त्वपूर्ण धरोहर घोषित करके इस दिशा में अच्छे निर्देश का श्रीगणेश कर दिया है। आज इस उद्देश्य के लिए धनसंग्रह, ट्रस्ट आदि का संगठन, वैदिकों को वर्षाशन पाठशाला खुलाना, पाठशालाओं को आर्थिक मदद देना आदि कार्य चालू किये जा सकते हैं। निम्बार्क पीठ भी इस ओर पूर्वतः सक्रिय हैं।
4. ऋग्वेद की शांखायन, आश्वलायन, वाष्कल और कौसीतकि शाखाएँ, यजुर्वेद की मैत्रायणी काठक, कठ कपिष्ठल, सामवेद की जैमिनि, राणायनी और अथर्ववेद की शौनक और पैप्पलाद शाखायें लुप्त होने के कगार पर खड़ी हैं। अन्त में भगवान् निम्बार्क के 5100 प्राकट्य अवसर पर अनन्तश्रीविभूषित 1008 **'श्रीजी' महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य** के चरणों में उनकी वेदनिष्ठा तथा वेदरक्षा की लोकोत्तर सेवाओं को प्रणाम करके उनके दीर्घायुष्य की मंगल कामना करते हुए उनके इस अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण की योजना के साफल्य की शुभेच्छा है।

108, हरिमार्ग, सिविल लाइन्स जयपुर – 1

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥
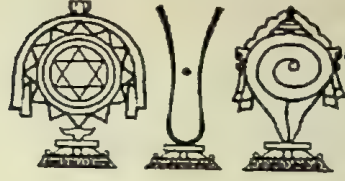
चित्र-वीथी

आचार्यश्री की विभिन्न अवस्थाओं की चित्रावली

आयु १४ वर्ष
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन के पावन अवसर पर लिय गया चित्र
ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया वि.स.२०००

आयु १५ वर्ष
श्रीवृन्दावन में अध्ययन काल के समय अजमेरस्थ पट्टी कटला में नवनिर्मित श्रीलक्ष्मीनारायणभगवान् के प्रतिष्ठोत्सव में आपश्री के पधारने पर शोभा-यात्रावसर पर लिया गया चित्र।

आयु १५ वर्ष
श्री वृन्दावन में अध्ययन-काल

आयु २० वर्ष
श्रीनिम्बार्कमहाविद्यालय (वृन्दावन) में विराजित फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा वि.स. २००६
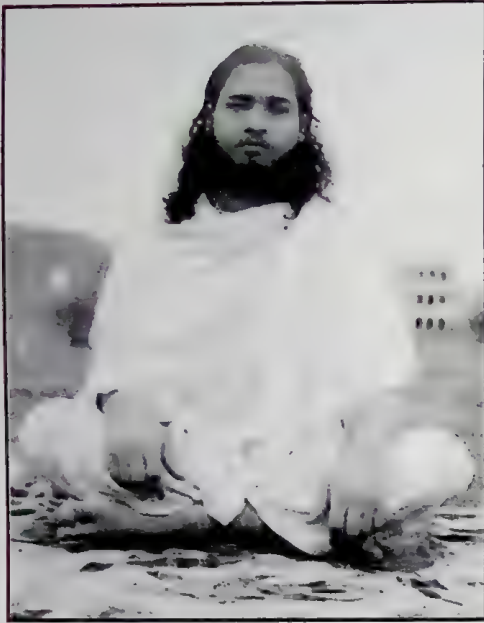
आयु २१ वर्ष
आमेर मार्ग स्थित श्रीपरशुरामद्वारा जलमहल (जयपुर)के सम्मुख विराजित

आयु २३ वर्ष
दांता हाऊस (जयपुर) में विराजित

आयु २५ वर्ष

आयु २७ वर्ष
यात्रावसर पर इन्दौर (म.प्र.) में विराजमान

आयु ३० वर्ष

आयु ३१ वर्ष
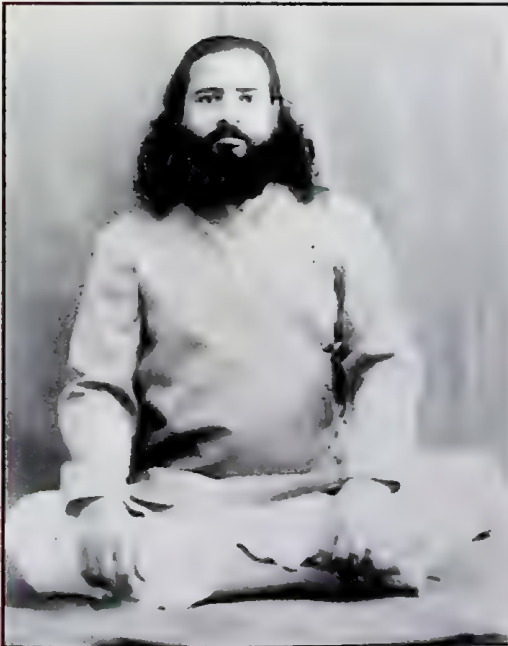
आयु ३३ वर्ष

आयु ३५ वर्ष

आयु ३५ वर्ष
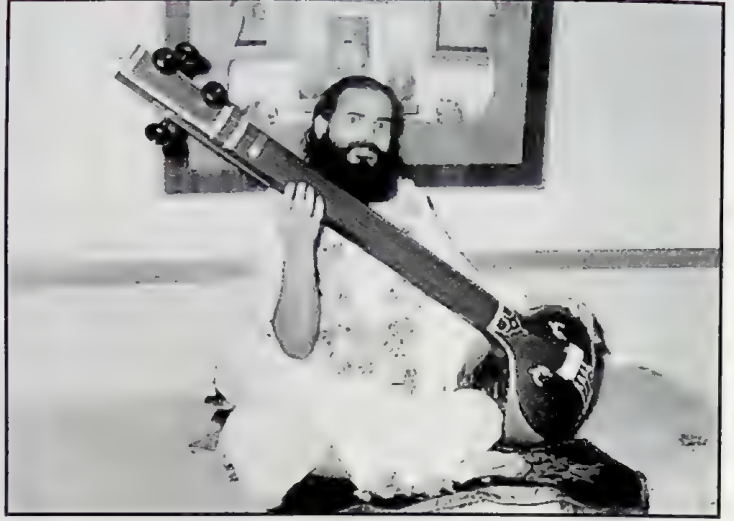
आयु ३७ वर्ष
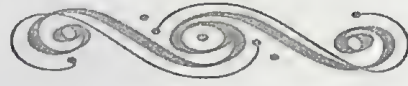
आयु ४१ वर्ष

आयु ४१ वर्ष

आयु ४६ वर्ष

पूज्य आचार्यश्री के जन्म स्थान पर श्रीमद्‌भागवत कथा समापन के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री की पधरावनी, आपश्री के दाँई ओर खड़े श्रीघासीलालजी गौड़ इन्दौरिया, सामने करबद्ध मुद्रा में खड़े माताश्री स्वर्णलता (सोनीबाई)

आचार्यश्री के दाहिनी ओर प्रथम अ. श्री नरहरिदासजी, गोस्वामी श्रीललितकृष्णजी (प्रयाग)
बाँयी ओर अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, वि.जयविहारीशरण

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री बालकृष्णदेवाचार्यजी महाराज
युवराज श्रीराधासर्वेश्वर शरणदेवजी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के पट्टाभिषेक ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया शनिवार वि. सं. 2000 दिनांक 5/6/1943 आपके दाहिनी ओर बैठे हुए म. श्रीराधिकादासजी (रैनवाल), बाँयी ओर व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त धनञ्जयदासजी काठियाबाबा महाराज तर्कतर्कतीर्थ (वृन्दावन), श्रीसर्वेश्वरदासजी शास्त्री पुरोहित, श्रीनृत्यगोपालदासजी (वृन्दावन)। खड़ी पंक्ति में दाहिनी ओर चँवर लिये श्रीप्रेमदासजी काठियाबाबा (वृन्दावन), छड़ी लिये पु. बालकदासजी, बाँई ओर छत्रलिए त्रिपतिदासजी, चँवर लिये अ. श्रीनरहरिदासजी (आचार्यपीठ), साफा बाँधे हुए श्रीगुलाबरायजी (किशनगढ़ स्टेट), छड़ी लिये श्रीकुञ्जविहारीजी (अजमेर) । खड़ी पंक्ति में दाहिनी ओर टोपीधारी श्रीरामप्रसादजी कामदार (सलेमाबाद), माला पहिने भगवानूदासजी कामदार (सलेमाबाद), खुले सिर श्रीरतनलालजी कामदार (सलेमाबाद), साफा पहिने श्रीशंकरलालजी जोशी (सलेमाबाद)।

पूज्य आचार्यश्री का पट्टाभिषेक होने पर किशनगढ़ में शोभा यात्रा का अग्रिम दृश्य वि. सं. २०००

पूज्य आचार्यश्री का गद्यारूढ़ होने के पश्चात् वृन्दावन पधारते समय मदनगंज
राज्य किशनगढ़ (मदनगंज) मे शोभायात्रा (सवारी) ज्येष्ठ शु. ७ सं. २०००
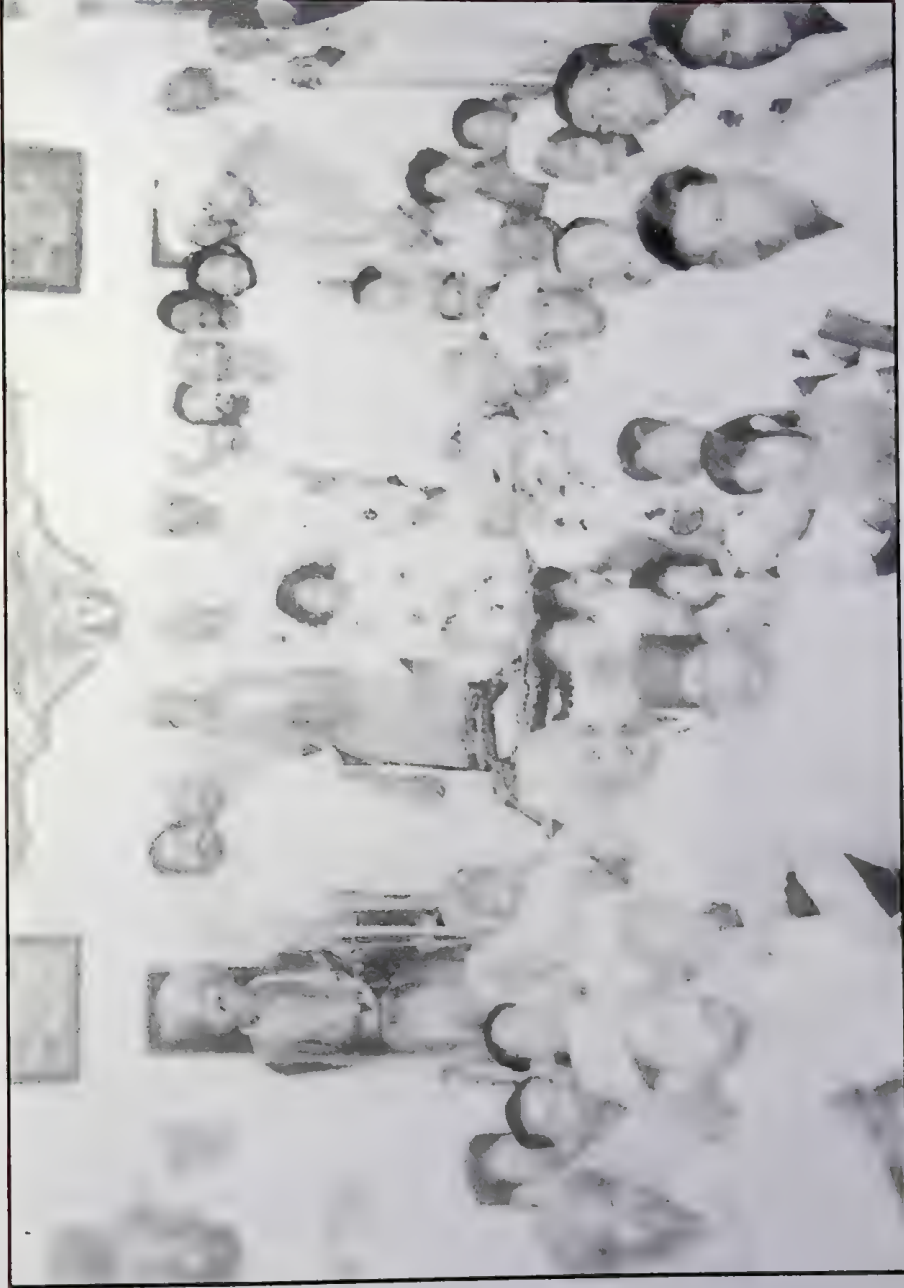
पूज्य आचार्यश्री का पट्टाभिषेक होने के पश्चात् अजमेर पट्टीकटला में नवनिर्मित श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर के प्रतिष्ठोत्सव पर प्रथम पधरावनी रतन बिल्डिंग, अजमेर वैशाख शुक्ल १५ सं. २००१। खड़ी पंक्ति में दाहिनी ओर पञ्चकेशी सुशोभित अ. श्रीनरहरिदासजी, बाँयी ओर शुभ्र पञ्चकेशी सुशोभित अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी तथा अन्य विशिष्ट महानुभाव। आपके बाँयी ओर बैठी पंक्ति में टोपीधारण किये हुए म. श्रीराधिकादासजी (रैनवाल) तथा दोनों ओर एवं सन्मुख भक्त समुदाय।

पूज्य आचार्यश्री के दांयी ओर व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनंजयदासजी तर्कतर्कतीर्थ(काठिया बाबा) महाराज बांयी ओर वयोवृद्ध पं. श्री वैष्णवदास जी शास्त्री

नेपाल वास्तव्य श्रीमान् श्री राधिकादासजी
युगल भवन (वृन्दावन)

पूज्य आचार्यश्री के अध्ययन काल की व्यवस्था
सम्बन्धी देख रेख में तत्पर रहने वाले
महात्मा श्रीगोपालदासजी (श्रीनिम्बार्कतीर्थ)

आचार्यश्री के जयपुर प्रथम पादार्पण पर जयपुर रेल्वे स्टेशन पर ट्रेन से उतरते ही स्वागत का अद्भुत दृश्य

महन्त श्री राधावल्लभदासजी बाईजी राज कुण्ड, उदयपुर आचार्यश्री का चरण पूजन करते हुए सं. 2007

श्री बद्रीनाथ यात्रा का दृश्य

जयपुर स्टेशन पर स्वागत समारोह का दृश्य

जयपुर में शोभायात्रा का परम मनोहारी दृश्य

श्री वृन्दावन कुम्भ के अवसर पर पारमार्थिक वैष्णव विश्वविद्यालयान्तर्गत ''श्री निम्बार्क कॉलेज'' का शिलान्यास करते हुए पूज्य आचार्यश्री फाल्गुन शुक्ल 11 सं. 2006

श्री निम्बार्क महासभा के प्रचार मंत्री श्री नन्द कुमार शरण जी ने जब विद्यालय में श्री सर्वेश्वर प्रभु सहित श्री चरणों की पधरावनी का दृश्य फाल्गुन शु. 15 सं. 2006 - चित्र में सम्मिलित पं. श्री देवकी नन्दन जी , श्रीबिहारीशरणजी, श्रीरंगीलीशरणजी, श्रीवैद्यनाथजी झा, श्रीभागीरथजी झा, श्रीभीमदासजी-सिद्धपुर, मं. श्रीगंगादासजी-उदयपुर, श्रीबिहारीदासजी त्यागी, पं. श्रीसरस्वतीदासजी-बनारस, अ. श्रीव्रजवल्लभशरणजी, पं. श्रीमुरारीलालजी शास्त्री, पं. दम्पतिशरणजी, पं. श्रीसुरति झा, अर्धस्थित पंक्ति में रसोईया किशोरदासजी, अ. भा. नि. म. प्र. मंत्री श्रीनन्दकुमारशरणजी, खडी पंक्ति में स्वामी किशोरीशरणजी, रसोईया दुर्गाप्रसादजी, श्रीभंवरलालजी जासरावत, श्रीगिरधारीलालजी, श्री राधाचरणदासजी, म. श्रीगोकुलदासजी-उदयपुर,म. श्री ब्रजविहारीदासजी सुपटा-विहार, श्रीदम्पतिशरणजी-निम्बार्कतीर्थ, छडीदार श्रीरामदीनजी जासरावत, पु. श्रीराधेश्यामदासजी-वृन्दावन, श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री रेनवाल।

जयपुरस्थ काजल वालों के यहाँ मन्दिर में आचार्यश्री की पधरावनी (वि. सं. 2006)
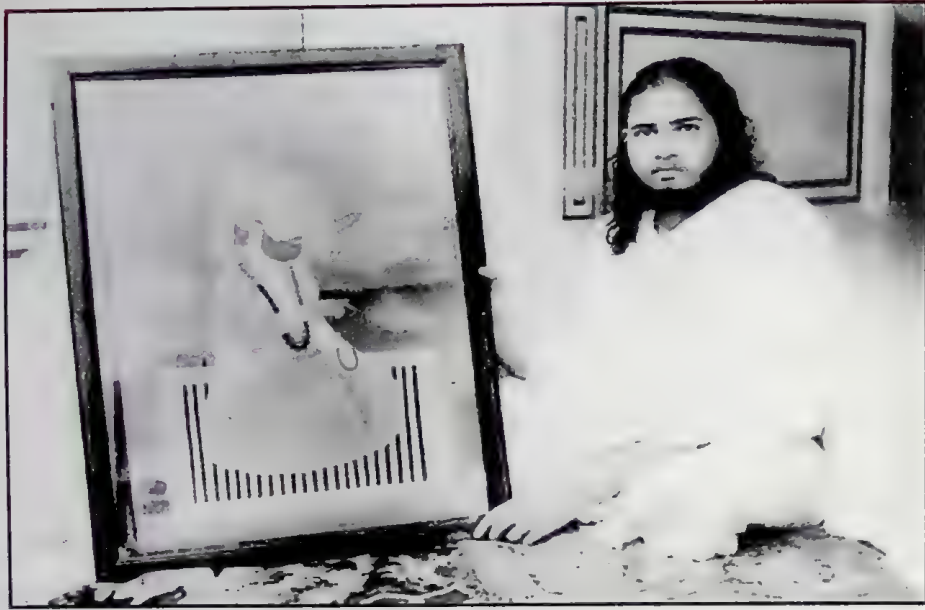
जयपुर आमेर में स्थित श्रीपरशुराम द्वारा मन्दिर में अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपरशुराम देवाचार्य जी महाराज के चित्रपट के साथ वर्तमान आचार्यश्री सं. 2007

सार्वभौम साधुमण्डल द्वारा संयोजित अ. भा. साधु महासम्मलेन के द्वितीय अधिवेशन कानपुर में पूज्य आचार्यश्री की पदाति विशाल शोभायात्रा सं. 2009

सार्वभौम साधुमण्डल संयोजित अ. भा. साधु महासम्मलेन के द्वितीय अधिवेशन
कानपुर में पूज्य आचार्यश्री की पदाति विशाल शोभायात्रा कार्तिक कृ. 9 सं. 2009

सार्वभौम साधुमण्डल संयोजित अ. भा. साधु महासम्मलेन के द्वितीय अधिवेशन
कानपुर में पूज्य आचार्यश्री अध्यक्षीय पद से प्रवचन करते हुये

श्री वृन्दावन कुम्भ के अवसर पर मथुरा में पूज्य आचार्यश्री की भव्य शोभायात्रा सं. 2006

रंगीलीशरण मोहनदास (छगनलाल, मोहनलाल) बजाज चौमूं वाले द्वारा आयोजित तृतीय पधरावनी के उपलक्ष्य में स्मृति चित्र, स्थान - नारायण निवास, केशरगढ़, जयपुर पौष कृ. 12 रविवार, सं. 2009

वृन्दावन कुम्भ के अवसर पर पधारते हुए
आचार्यश्री सं. 2026

आचार्यश्री के साथ स्वामी दामोदरजी
रासमण्डली परिकर

प्रथम उज्जैन कुंभ के अवसर पर शोभा यात्रा के साथ आचार्यश्री संवत् 2014

श्रीबद्रीनाथ यात्रा
के समय लिया गया मनोरम दृश्य

तीनधाम सप्तपुरी यात्रा के अवसर पर हनुमानगढ़ी मन्दिर अयोध्या में पूज्य आचार्यश्री एवं वहाँ के गद्दीनशीन श्रीमहन्तसीतारामदासजी
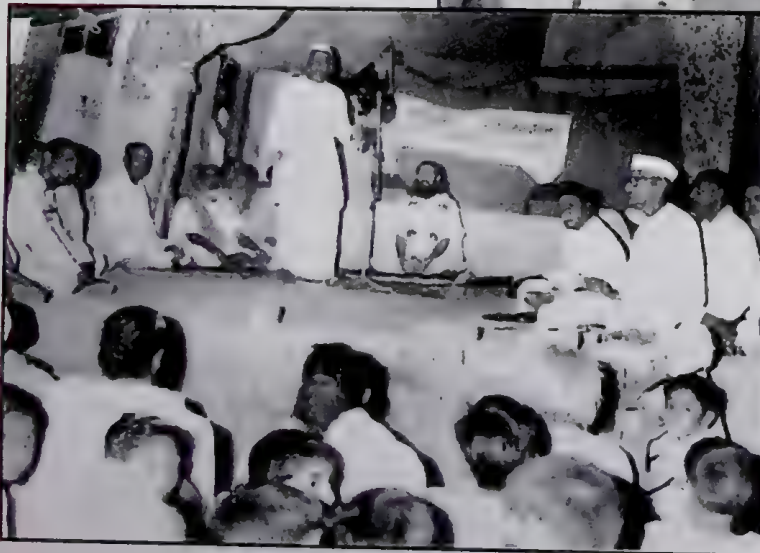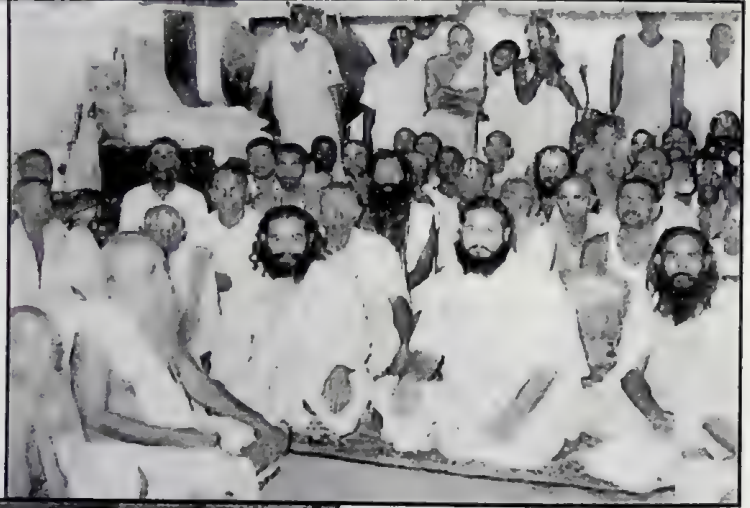
उज्जैन कुंभ पर्व पर श्री निम्बार्क नगर में पं. श्रीविशम्भरप्रसादजी शर्मा द्वारा आयोजित गोरक्षा सम्मेलन में प्रवचन करते हुए श्री शर्माजी, श्री गुलजारी-लालजी नन्दा एवं आचार्यश्री

हैदराबाद में यात्रा के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री दिनांक 27-03-1960

दक्षिण भारत की यात्रा पर हैदराबाद में श्रीसीताराम मन्दिर के महन्त श्री शुकदेवदासजी के यहाँ पूज्य आचार्यश्री श्रीचरणों के दाहिनी ओर खुले सिर म. श्रीकमलाकरदासजी, श्रीवासुदेवदासजी बांयी ओर सिकन्दराबाद स्थित श्री नृसिंह मन्दिर के म. श्रीनन्दगोपालदासजी

ब्रजलीला केन्द्र द्वारा श्रीजी बड़ी कुञ्ज वृन्दावन में स्वर्गीय बौहरे ब्रजलालजी की पावन स्मृति कार्यक्रम के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री एवं वृन्दावनस्थ निम्बार्कीय समस्त रासमण्डली के स्वामी वृन्द, विद्वज्जन तथा अ.श्रीव्रज-वल्लभशरणजी प्रभृति महानुभाव।

मदनगंज - किशनगढ़ में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पूज्य आचार्यश्री एवं निवर्तमान शंकराचार्य (भानपुरापीठ) स्वामी श्रीसत्यमित्रानन्दजी महाराज।

श्रीजी बड़ी कुंज वृन्दावन में आचार्यश्री द्वारा प्रणीत ''श्रीस्तव-रत्नाञ्जली'' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए ब्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया-बाबा महाराज - वृन्दावन।

ब्रजयात्रा के पावन अवसर पर श्री कृष्ण जन्म भूमि मथुरा
में दर्शन के लिये प्रवेश करते हुए पूज्य आचार्यश्री
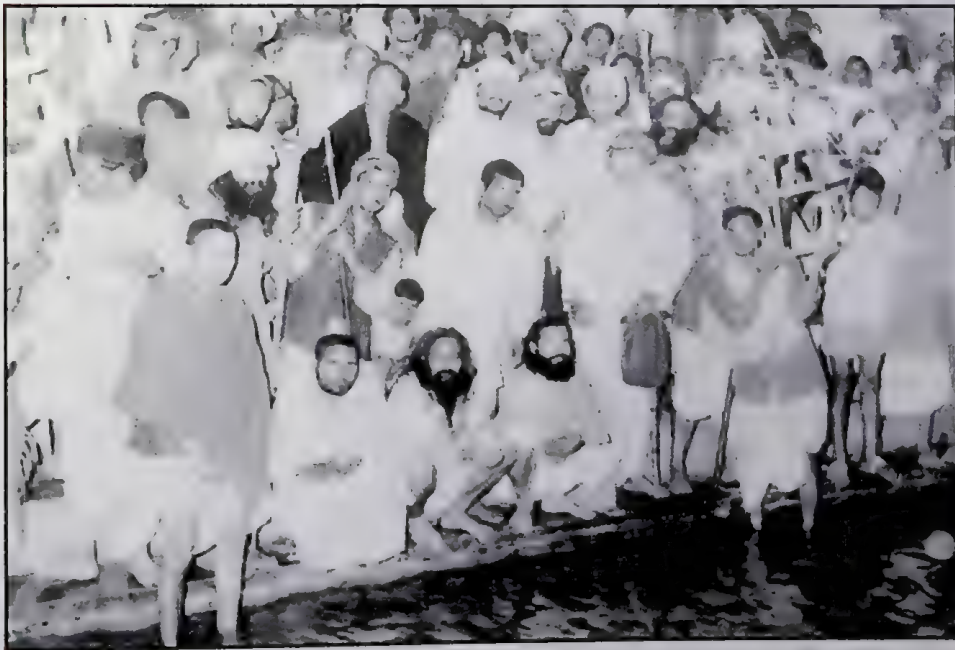
ब्रजयात्रा के मंगलमय अवसर पर मथुरा के प्रसिद्ध स्वामी घाट पर मथुरा के
तीर्थ पुरोहितों द्वारा आचार्यश्री को यमुना जी का पूजन आचमन कराते हुए

अ. भा. श्री निम्बार्क नगर खालसा में अ. श्रीवियोगी विश्वेश्वरजी एवं अन्य सन्त महात्मा

श्रीकृष्ण भवन, लाडिलीजी का खुर्रा, जयपुर आचार्यश्री के दाहिनी ओर खड़ी पंक्ति में अ. श्रीवियोगी विश्वेश्वरजी तथा बाँयी ओर नि.म.स. के महामंत्री ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी बैठी पंक्ति में दाहिनी ओर श्रीमदनलालजी मावा वाले तथा बाँई ओर उन्हीं की धर्मपत्नी।

नासिक कुम्भ के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा पूर्वक पधारते हुए पूज्य आचार्यश्री

अर्द्ध कुम्भ प्रयागराज (इलाहाबाद) के अवसर पर शंकराचार्य मठ से शोभायात्रा पूर्वक प्रस्थान करते हुए पूज्य आचार्यश्री

तीन धाम सप्तपुरी यात्रा के अवसर पर अयोध्या में पूज्य आचार्यश्री की विशाल शोभायात्रा
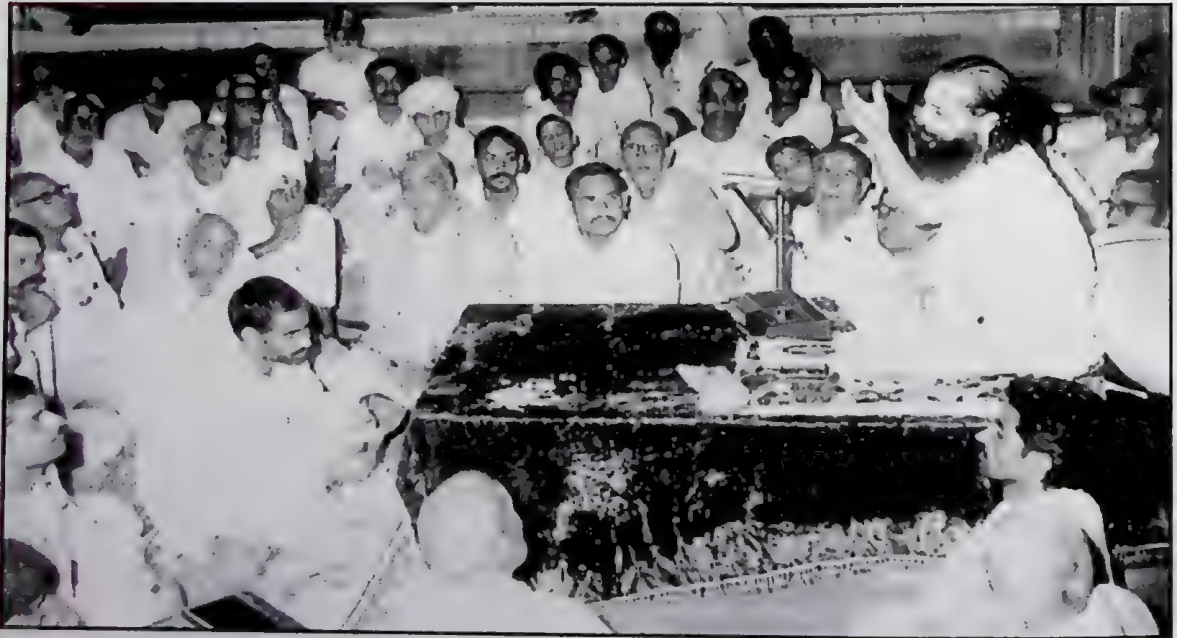
म. म. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी शताब्दी समारोह के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री एवं विद्वन् मण्डल
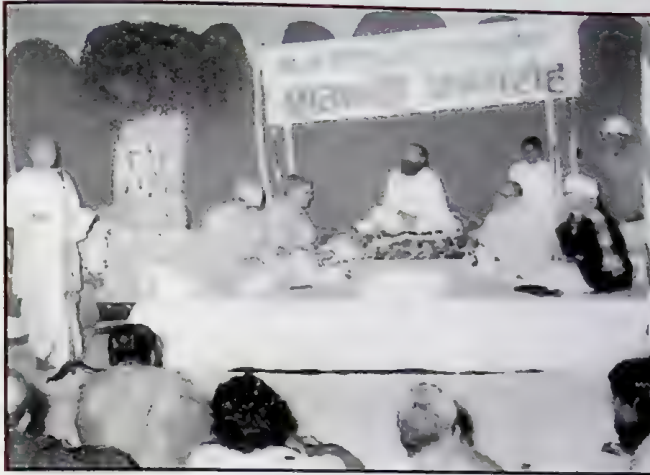
म.म. श्रीगिरधरजी शर्मा शताब्दी समारोह, जयपुर में विद्वद् गोष्ठी के अवसर पर प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री
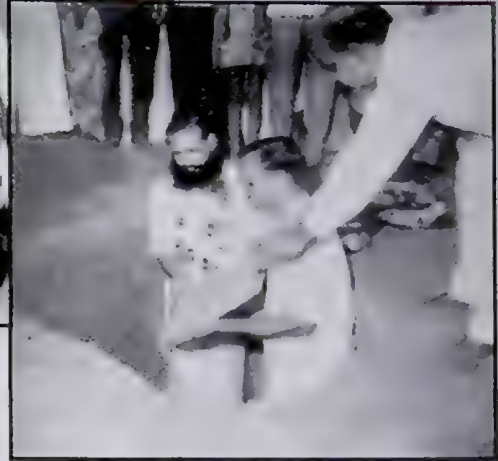
सांईनाथ विद्यालय बडायेली का शिलान्यास करते हुए आचार्यश्री एवं संस्थापक श्रीगणेशीलालजी
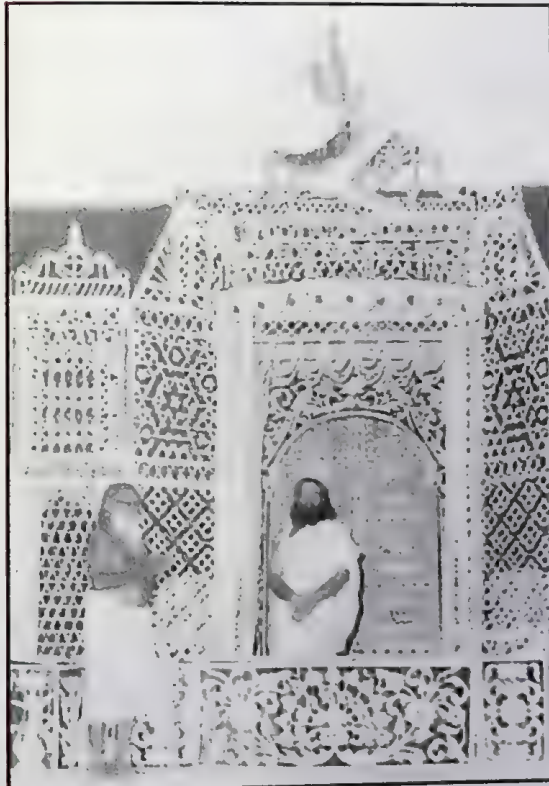
आचार्यपीठ में मन्दिरस्थ-पुष्प बंगले में पूज्य आचार्यश्री, बाबा माधुरीदासजी, वनविहार, रमणरेती श्रीवृन्दावन

सांईनाथ विद्यालय भवन बडायली के आचार्यश्री द्वारा शिलान्यास के पश्चात् चरण पूजन करते हुये संस्थापक श्रीगणेशीलालजी तात्कालिक अध्यक्ष

जयपुर गलता कुण्ड में स्नान करते समय झरना के नीचे पूज्य आचार्यश्री

जल से प्रपूरित श्रीपुष्करराज का श्रीपरशुरामघाट-श्रीपरशुराम द्वारा, मन्दिर चौक में आचमन लेते हुए आचार्यचरण सं. 2032 साथ में म. श्रीमाधवदासजी भागवतभूषण - पलसाना

उज्जैन कुम्भावसर पर शोभायात्रा पूर्वक पधारते हुए आचार्यश्री

पूज्य आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए गुजरात के राज्यपाल म. नित्यानन्द कानूनगो

आचार्यश्री के दांयी ओर महन्त ब्रजविहारीदासजी सुपटा (गया) बिहार, महन्त बनवारीशरणजी (जूसरी), रमेशजी आचार्यश्री के बांयी ओर शत्‌वर्षीय श्रीबालक-दासजी (नागपुर), श्रीमाधवशरणजी, पुजारी राधावल्लभदासजी

भारत साधु समाज के इलाहाबाद कुंभ अधिवेशन के अवसर पर 1977 में मंच से सम्बोधित करते हुए निम्बार्काचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, साधु समाज के अध्यक्ष स्वामी गुरुशरणदासजी, महामंत्री हरिनारायणानन्दजी एवं जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामीशांतानन्दजी सरस्वती
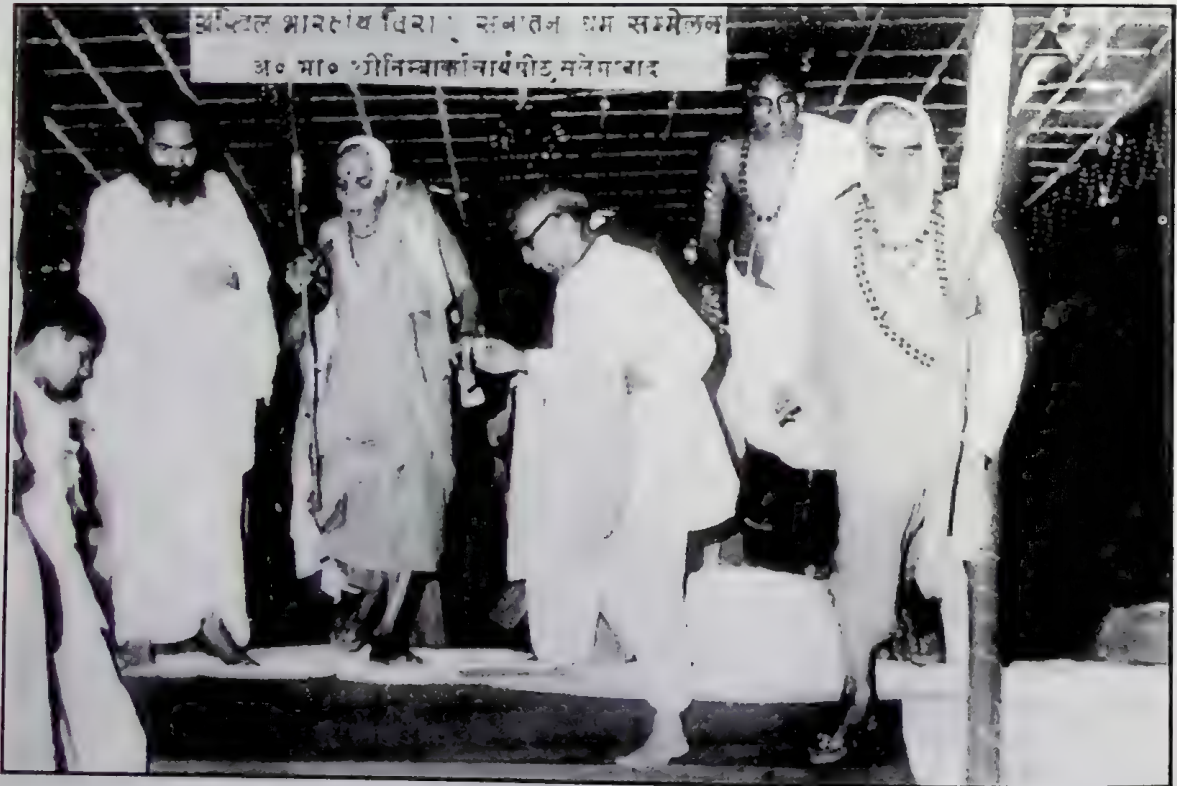
अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री एवं जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज (पुरी), धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रजी महाराज विशाल मञ्च से नीचे की ओर पधारते हुए

आयुर्वेद सम्मेलन अजमेर (राज.) में आचार्यश्री द्वारा मुख्यमंत्री श्रीमोहनलालजी सुखाडिया को अमृत कलश प्रदान, उसी अवसर पर राज्यपाल डॉ. श्रीसम्पूर्णानन्दजी, वित्तमंत्री श्रीमोरारजी देसाई एवं श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज, भारत के रेल्वे मंत्री श्रीजगजीवन रामजी, वैद्य प्रेमशंकरजी आयुर्वेदाचार्य

झांसी में वैद्यनाथ रसायन शाला में विराजमान पूज्य आचार्यश्री वैद्यनाथ फार्मेसी के संचालक-संस्थापक वैद्य श्रीरामनारायणजी आयुर्वेदाचार्य करबद्ध अपने भाव प्रकट करते हुए
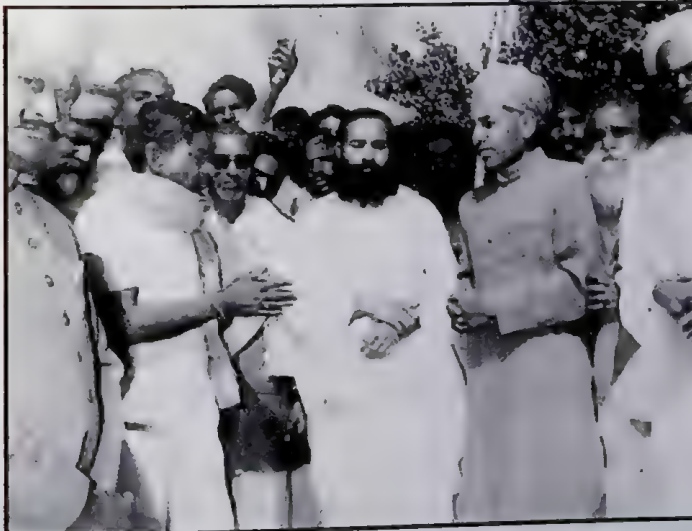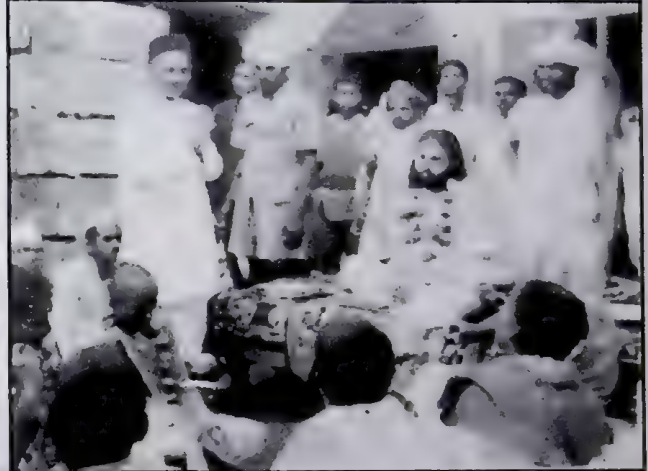
भीलवाड़ा स्थित हरणी महादेव मन्दिर के कलशारोहण के समय पूज्य आचार्यश्री एवं उदयपुर महाराणा श्री भगवतसिंहजी तथा मन्दिर के जीर्णोद्धार कर्ता भक्तवर श्रीगणेशीलालजी दरग

आचार्यश्री के चरणों का पूजन करते हुए उदयपुर जगमन्दिर में महाराणा श्री भोपालसिंहजी
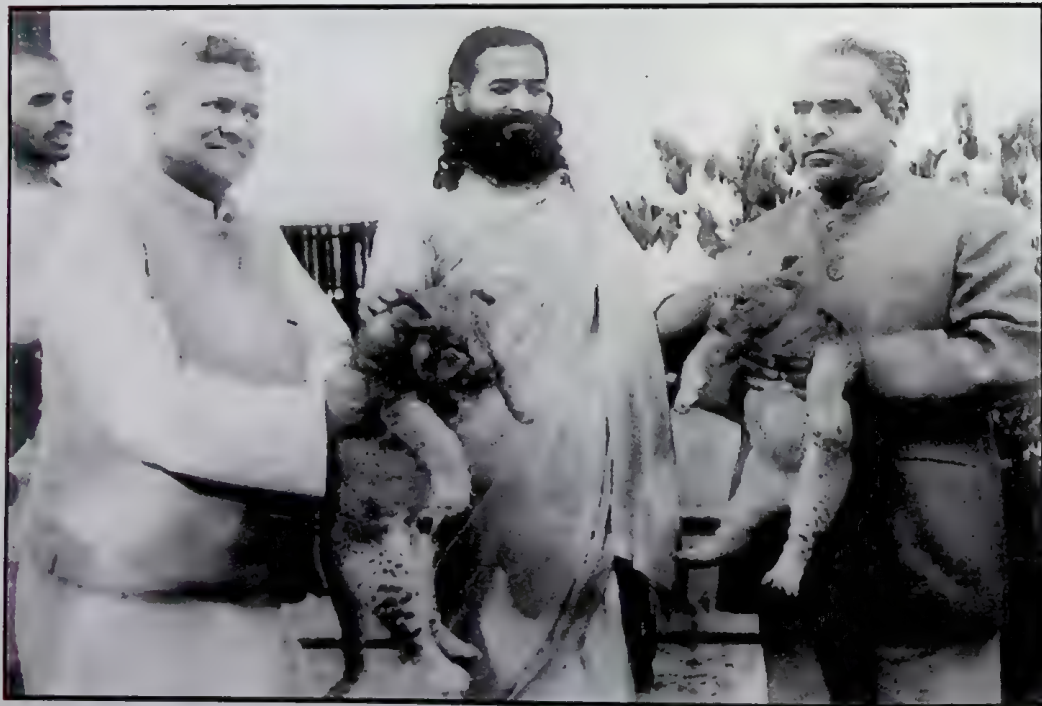
उदयपुर चिड़ियाघर में शेर के बच्चों का अवलोकन करते हुए आचार्यश्री व पास में खडे श्रीमोहनलालजी सोनी, पु. श्रीदीनबन्धुशरणजी तथा चिड़ियाघर के मैनेजर

निम्बार्क तीर्थ में वेदप्रतिष्ठा के पश्चात् प्रवचन करते हुये स्वामी श्री गंगेश्वरानन्दजी एवं आचार्यश्री

आचार्यश्री उ. प्र. के मुख्यमंत्री श्रीगोविन्द-वल्लभपंत एवं कांग्रेस अध्यक्ष जे. पी. खेर

आचार्यश्री के दाहिनी ओर शृंगेरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीअभिनवविद्यातीर्थजी महाराज

आचार्यश्री के तत्वावधान में डॉ. रामप्रसादजी शर्मा (किशनगढ़) द्वारा प्रकाशित "परशुराम सागर" ग्रन्थ विमोचन के अवसर पर अपने भाव प्रकट करते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाडिया

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीमोहनलालजी सुखाडिया को ग्रन्थ प्रदान करते हुए आचार्यश्री
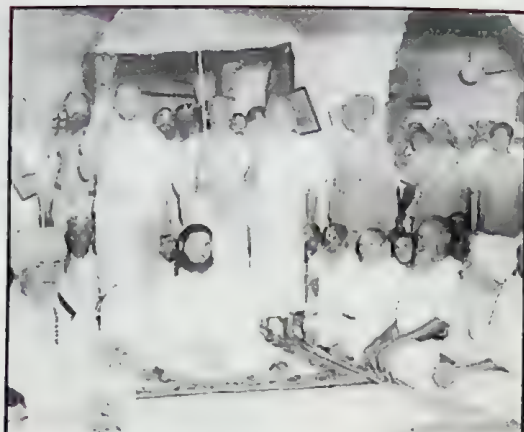
उदयपुर स्थल में श्रीचरणों की सान्निध्य में उदयपुरस्थ श्रीमहन्त श्रीगंगादासजी महाराज, महात्मा वृन्द एवं अनियों के श्रीमहन्त तथा श्री ब्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त धनञ्जयदासजी (काठियाबाबा) महाराज

जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी अभिनव विद्यातीर्थजी महाराज शृंगेरी मठ एवं उनके युवराज श्रीभारती तीर्थ जी महाराज एवं आचार्यश्री परस्पर वार्तालाप करते हुये

धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं आचार्यश्री

पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में रामराज्य परिषद् के ठाकुर साहब श्रीमदनसिंहजी (दांता) को राजर्षि पद प्रदान करते हुये

मेरठ में मन्दिर प्रतिष्ठा के अवसर पर आचार्यश्री की शोभायात्रा का दृश्य

मध्य में आचार्यश्री, दाहिनी ओर पगडी बांधे सामोद महन्त श्रीमनमोहनशरणजी, बांयी ओर सामोद महन्त के अधिकारी जी

गोरक्षा सम्मेलन पर अपने भाव प्रकट करते हुये गुजरात के राज्यपाल श्रीनित्यानन्द कानूनगो आपके दाहिनी ओर परम गोभक्त श्रीशम्भूनाथजी एवं श्रीभागवताचार्यजी महाराज, महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी तथा जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

जमशेदपुर टाटा नगर में धर्मसंघ के 31 वें सम्मेलन में जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारका पीठाधीश्वर श्रीअभिनवसच्चिदानन्दतीर्थजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीस्वरूपानन्दजी महाराज एवं जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
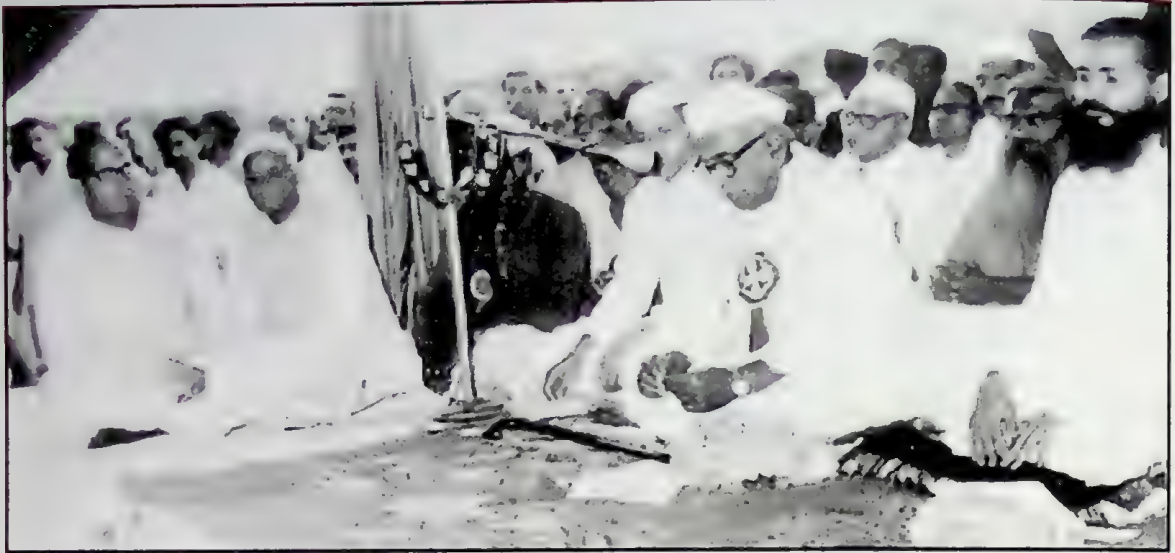
अजमेर में आयुर्वेद सम्मेलन के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री एवं राजस्थान के राज्यपाल डॉ. सम्पूर्णानन्दजी

गोरक्षा सम्मेलन ब्यावर में जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज (पुरी), जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज (बद्रीकाश्रम) एवं निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
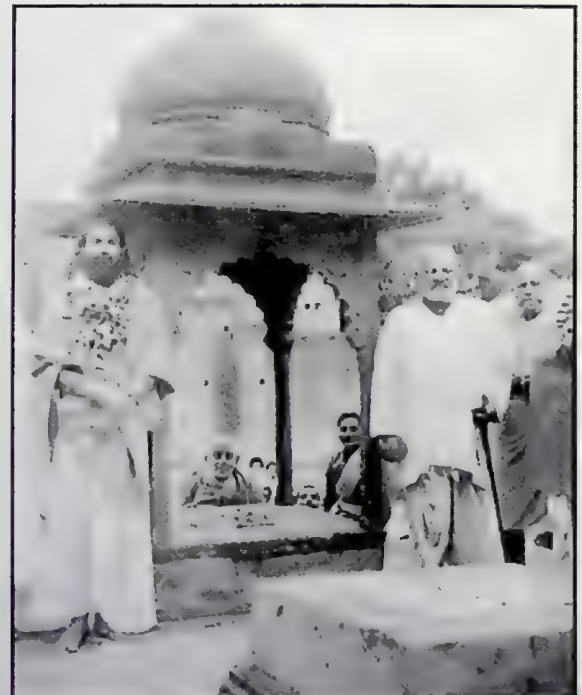
मथुरा में नारद टीला पर पूर्वाचार्य प्रवरों की समाधि स्थल पर आचार्यश्री एवं महन्त श्रीव्रजभूषण-शरणजी महाराज, श्रीराधाकान्त मन्दिर (मथुरा)

श्री ओघड़नाथ महादेव मन्दिर के प्रतिष्ठा के समय सभामञ्च पर ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज, पुरीपीठाधीश्वर शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज प्रवचन करते हुए, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

निम्बार्काश्रम निम्बग्राम में आचार्यश्री के तत्त्वावधान में नूतन मन्दिर निर्माण योजना पर अपने भाव प्रकट करते हुये अधिकारी श्रीवियोगी विश्वेश्वरजी
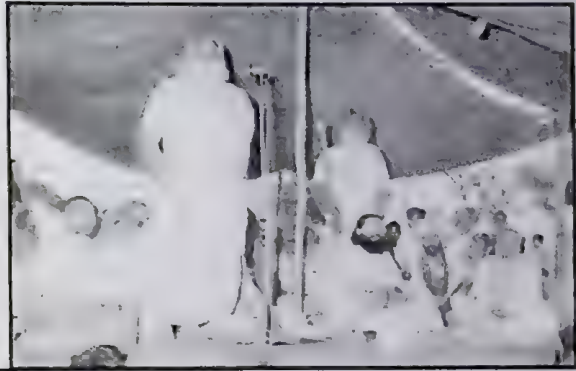
अजमेर में राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन (पंजीकृत) जोधपुर तृतीय अधिवेशन के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री, श्री मुरारजी देसाई, मुख्यमंत्री सुखाड़ियाजी, रेल्वे मंत्री श्रीजगजीवनरामजी, महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज।

ब्यावर में सनातन धर्म सभा में गोरक्षा के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुये द्वारका पीठाधीश्वर श्रीअभिनवसच्चिदानन्दतीर्थजी महाराज, आपके दाहिनी ओर निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज, बाँई ओर धर्मसम्राट् स्वामीश्रीकरपात्रजी महाराज एवं पुरी पीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज
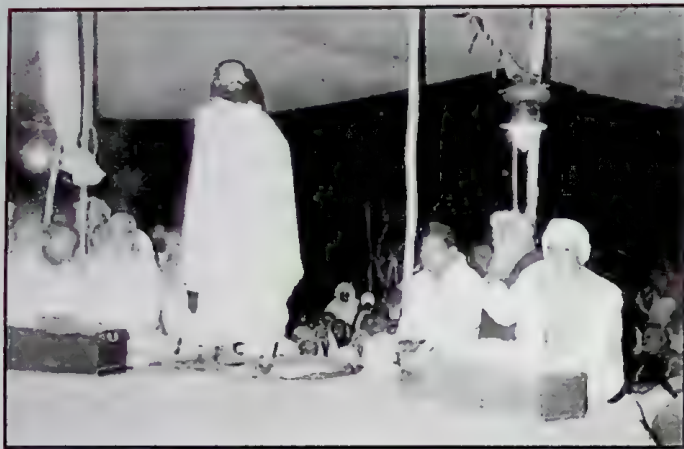
व्रज यात्रा के अवसर पर निम्बार्काश्रम निम्बग्राम के नवनिर्माण के सम्बन्ध में दिव्य उद्‌बोधन प्रकट करते हुये आचार्यश्री

हैदराबाद धर्म संघ के पावन अवसर पर पूज्य आचार्यश्री, श्रीनिरंजनदेव-तीर्थजी महाराज एवं श्रीज्योतिष्पी-ठाधीश्वर श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज एवं शास्त्रार्थ महारथी श्रीमाधवाचार्यजी महाराज

राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन अजमेर में मुख्यमंत्री श्रीसुखाडियाजी को अमृत कलश प्रदान करते हुये आचार्यश्री

[illegible] [illegible] हैदराबाद में अपने भाव [illegible] करते हुए राजकुमारी रत्नावती [illegible] [illegible] एवं आचार्यश्री, पुरी शंकर- [illegible] एवं ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्यजी

पूज्य आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये गुजरात के राज्यपाल श्री नित्यानन्दजी कानूनगो, भागवताचार्यजी महाराज एवं श्रीशम्भूनाथजी, म. मुरलीमनोहरशरणजी।

प्रयाग महाकुम्भ के अवसर पर शाही स्नान से लौटने पर श्रीनिम्बार्क नगर के प्रवेश द्वार में प्रवेश करते हुए आचार्यश्री के साथ व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज।
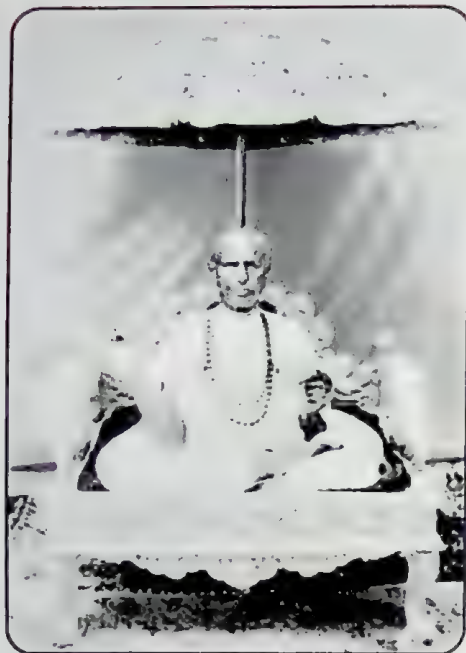
अ. श्री. वि. जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज।

आचार्यश्री के माताश्री श्री स्वर्णलताजी
(सोनीबाई) निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

आचार्यश्री के पिताश्री श्रीरामनाथजी
शर्मा गौड़ इन्दौरिया

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
पीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज मध्य में विराजमान, आपके दाहिनी ओर अ. श्रीनरहरिदासजी तथा बाँयी ओर अ. श्रीव्रजवल्लभशरणजी तथा अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी।

तीन धाम सप्तपुरी यात्रा के पावन अवसर पर श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन डिब्बे के द्वार पर खड़ी मुद्रा में आचार्यश्री एवं ट्रेन-व्यवस्थापक श्रीरामनिवासजी गोयल (अजमेर) एवं उनका सुपुत्र, ट्रेन के गार्ड श्री गोयलजी
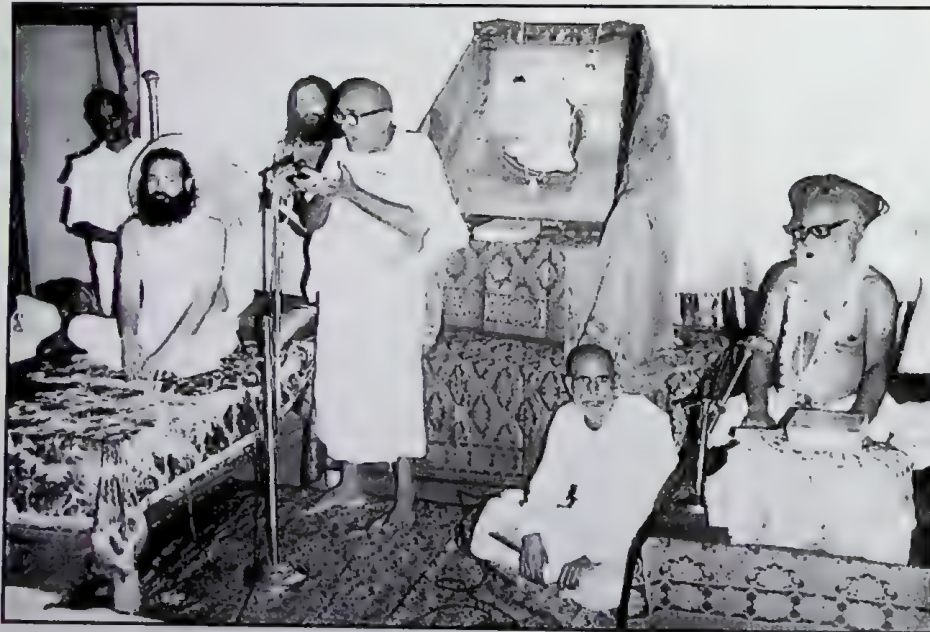
वृन्दावनस्थ श्रीजी बडी कुंज में आचार्यश्री के तत्त्वावधान में व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी (काठियाबाबा) महाराज द्वारा ग्रन्थ विमोचन होने पर बाबा कुंजविहारीशरणजी प्रवचन करते हुए। पं. श्रीगोविन्ददासजी "सन्त" काठियादासजी महाराज के दाहिनी ओर बैठें है।

आचार्यश्री के बाल्यकाल
के आराध्य श्रीहनुमान्जी

आचार्यश्री द्वारा अपने अष्टवर्षीय बाल्यकालिक
सेवा के भगवान् श्रीलड्डूगोपालजी

आचार्यश्री के अध्ययनकाल के
समय की घड़ी

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में विराजमान आचार्यश्री

श्रीसर्वेश्वर प्रभु को तुलसीपत्र अर्पित करते हुए आचार्यश्री
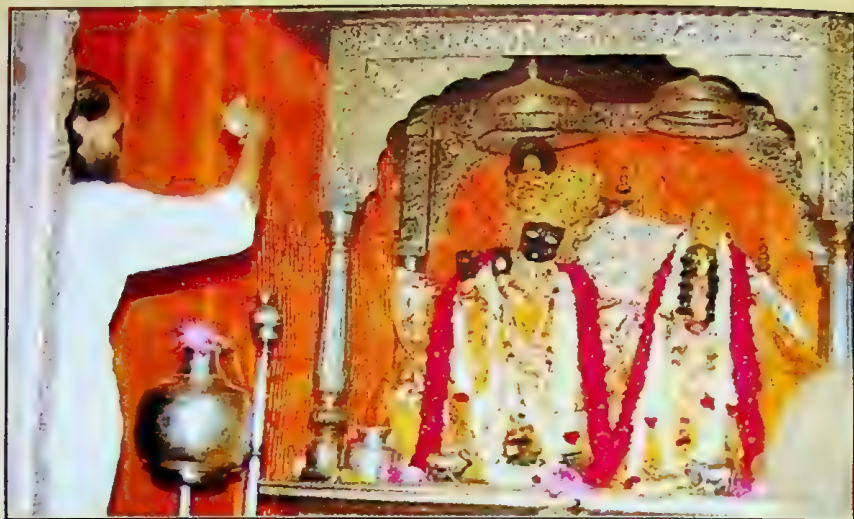
भगवान् श्रीराधामाधव की आरती करते हुए आचार्यश्री

भजन साधना में तल्लीन आचार्यश्री

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के दर्शन कराते हुए आचार्यश्री

भगवान् की भोग-सामग्री बनाते हुए आचार्यश्री

भगवान् को भोग समर्पण करते आचार्यश्री

जोधपुर महाराजा श्रीगजसिंहजी आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए युगसन्त श्री मुरारी बापू हरिव्यासी (महुवा) गुजरात

श्रीनिम्बार्कनगर में आयोजित सत्संग सभा के अवसर पर श्रीमहन्तनृत्यगोपालदासजी एवं अन्य सन्त महात्मा

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में तत्कालीन राज्यपाल आयार्यश्री को माल्यार्पण करते हुए

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित विद्वत सम्मान समारोह में आचार्यश्री को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी, उदयपुर एवं पास में विराजमान राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्रीबलिराम भगत

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित विद्वत सम्मान समारोह में आचार्यश्री को माल्यार्पण द्वारा सम्मानित करते हुए अकादमी निदेशक डॉ. प्रभाकर शास्त्री

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित विद्वत सम्मान समारोह में आचार्यश्री को अकादमी के प्रकाशनों (ग्रन्थों) को भेंट करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति डॉ. आर.एन. सिंह पीछे अवस्थित डॉ. प्रभाकर शास्त्री (निदेशक)।

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित विद्वत सम्मान समारोह में आशीर्वाद प्रदान करते हुए अनन्त विभूषितजगद्गुरु श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज एवं समीपस्थ महामहिम राज्यपाल श्री बलिराम भगत, कुलपतिजी एवं महन्त मुरलीमनोहरशरणजी

ग्रन्थ विमोचन के अवसर पर राजस्थान की तत्कालीन उप-मुख्यमंत्री श्रीमती कमला बेनीवाल
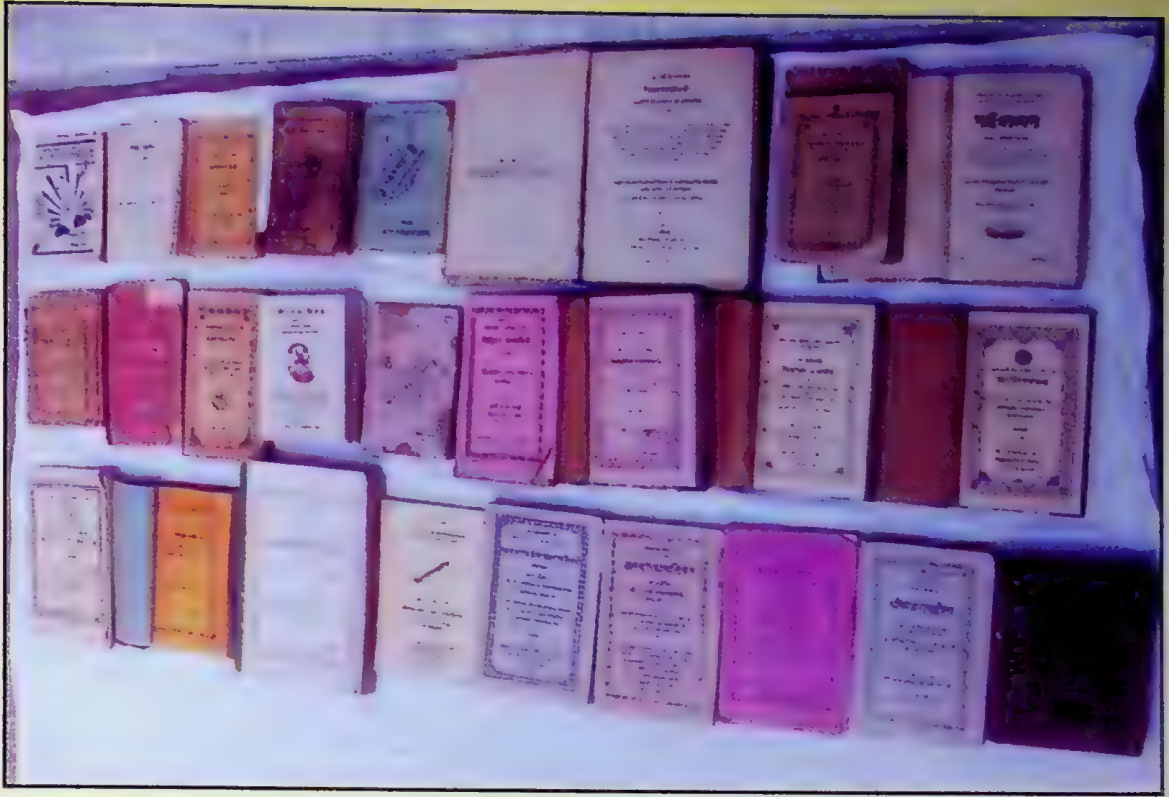
आचार्यश्री के अध्ययनकालिक व्याकरण, साहित्य, न्याय, वेदान्त विषयक विविध ग्रन्थों का मनोहारी संगम।

पूज्य आचार्यश्री द्वारा प्रणीत 'भारत-कल्पतरु' ग्रन्थ पर हस्ताक्षर करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय डा. श्रीशङ्करदयाल शर्मा।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा प्रणीत 'भारत-कल्पतरु' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय डा. श्रीशङ्करदयाल शर्मा। (उपराष्ट्रपति भवन, दिल्ली)

ग्रन्थ प्रणेता-अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज एवं '' भारत-भारती-वैभवम्'' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्रीहरिदेवजी जोशी

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में आचार्यश्री द्वारा विरचित ''भारत-वीर-गौरव'' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंहजी शेखावत।

राजस्थान में अकाल की संकटावस्था में आचार्य-पीठ में अधिकमास समारोह के अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीअशोकजी गहलोत को एक लाख राशि का चैक प्रदान करते हुए आचार्यश्री।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में श्रीकृष्णजन्माष्टमी समारोह पर पलना में विराजित भगवान् श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के प्रसादी हरित दुर्वांकुर लेते हुए आचार्यश्री एवं खड़ी मुद्रा में युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी तथा पु. श्यामसुन्दर शरण।

आचार्यश्री के स्वर्ण जयन्ती समारोह के पावन अवसर पर युवराज श्यामशरण को आचार्यश्री के सान्निध्य एवं तीनों अनी-अखाड़ों, चतु:सम्प्रदाय खालसों के श्रीमहन्तों, विद्वानों के मध्य परिधान अर्पित करते महन्त श्रीवृन्दावनविहारीदासजी सुखचर-कलकत्ता।

आचार्यश्री के स्वर्ण जयन्ती समारोह में आयोजित विराट् सनातनधर्म सम्मेलन में एक ही मञ्च पर समस्त धर्माचार्यों के अनिर्वचनीय दर्शन।

भक्तवर श्रीभागीरथजी भराड़िया द्वारा आयोजित श्रीगोपाल महायज्ञ सेंधवा (इन्दौर) मध्यप्रदेश के अवसर पर लिया गया आचार्यश्री का चित्र, आपके दाहिनी ओर चँवर लिये भक्तवर श्रीअमरचन्दजी लटूरिया एवं बाँयी ओर श्रीनाथूलालजी यादव

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में आचार्यश्री के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर आयोजित सनातन धर्म सम्मेलन के समय मञ्च पर महाभारत धारावाहिक निर्माता बी.आर. चोपड़ा को सम्मान में श्रीनिम्बार्क-सुदर्शन महाचक्र प्रदान करते हुए जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज।

सनातनधर्मसम्मेलन समारोह में रामायण धारावाहिक निर्माता श्रीरामानन्द सागर को सम्मान में श्रीनिम्बार्क-सुदर्शन महाचक्र प्रदान करते हुए जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज।

सनातनधर्मसम्मेलन समारोह में भजन संगीत सम्राट् श्रीरविन्द्रजैन को सम्मान में श्रीनिम्बार्क-सुदर्शन महाचक्र प्रदान करते हुए जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज।

श्रीनिम्बार्कतपःस्थली निम्बग्राम के नवनिर्मित
भव्यतम मन्दिर के वाम भाग में मन्दिर का दर्शन करते हुए आचार्यश्री।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्राकट्य स्थल मूंगी (पैठण) के नव निर्मित मन्दिर के द्वार पर आचार्यश्री, आपके बाँई ओर युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी, मध्य में व्यवस्थापक श्रीरसिकमोहनशरणजी, आपश्री के दाहिनी ओर निजी सचिव श्रीओमप्रकाश शर्मा गौड़।

श्रीवृन्दावन कुम्भ के अवसर पर आचार्यश्री की शोभायात्रा का अतीव आकर्षक समारोह।

राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने पर श्रीवसुन्धराराजे जयपुरस्थ हीरापुरा के निम्बार्क नगरीय श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारी मन्दिर में आचार्यश्री द्वारा शुभाशीर्वाद प्राप्ति का अनुपन दर्शन।

आचार्यपीठ में श्रीमद्भागवत के रस प्रवक्ता श्रीरमेशभाई ओझा आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के अर्द्धशताब्दी समारोह के अवसर पर अपने भाव प्रकट करते हुए आचार्यश्री एवं पास में तत्कालीन उप-मुख्यमंत्री श्रीमती कमला बेनीवाल, उदयपुर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी, विद्यालय के प्राचार्य श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय एव अध्यापक वृन्द

श्रीनिम्बार्क तप:स्थली निम्बग्राम का विहंगम दृश्य एवं श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारी भगवान् का भव्य मन्दिर तथा सुदर्शन सरोवर

श्रीनिम्बार्कग्राम में अतिपुरातन श्रीनिम्बार्क तप:स्थली पर प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त नवनिर्मित मन्दिर के प्रतिष्ठा महोत्सव का दृश्य

श्रीनिम्बार्क तप:स्थली पर प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कलश यात्रा एवं मन्दिर तथा यज्ञमण्डप का अनुपम दर्शन।

निम्बग्राम प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री के सान्निध्य में अपने भाव प्रकट करते हुए श्रीभागीरथजी भराड़िया एवं विराजमान अधिकारी श्री व्रजवल्लभशरणजी, श्री वासुदवेकृष्णजी चतुर्वेदी तथा सन्त-विद्वज्जन

निम्बग्राम प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री के सान्निध्य में अपने भाव प्रकट करते हुए पं. श्रीहरि-नारायणजी एवं विराजमान मानसकिंकर श्रीकौशल-किशोरजी रामायणी प्रभृति सन्त-महन्त विद्वज्जन

पुष्करराज में श्रीमुरारी बापू की रामकथा के अवसर पर विराजमान आचार्यश्री एवं मुख्यमंत्री श्री भैरों सिंहजी शेखावत, श्रीललितकिशोरजी चतुर्वेदी एवं राजस्थान पत्रिका के सम्पादक श्रीकर्पूरचन्दजी कुलिश

निम्बग्राम में प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर भरतपुर की विधायक श्रीकृष्णेन्द्र कौर सिंहासन पर विराजमान आचार्यश्री, वासुदेवकृष्णजी चतुर्वेदी, पं. श्रीमुरलीधरजी शास्त्री आदि मञ्च पर अवस्थित है।

किशनगढ़ बालाजी मेला के अवसर पर मञ्चासीन आचार्यश्री, शर्मा बन्धु (मुजफ्फर नगर), प्रवचन करते हुए भक्तमाली श्रीनारायणदासजी एवं मानसकिंकरजी तथा अन्य सन्त महात्मा।

उज्जैन महाकुम्भ के अवसर पर 'भारत साधु समाज' के अधिवेशन में प्रवचन करते हुए आचार्यश्री एवं विराजमान आचार्यप्रवर, महामण्डलेश्वर तथा सन्त समाज।

महन्त श्रीमाधवदासजी, पलसाना के भंडारा उत्सव के अवसर पर उनके शिष्य श्रीमनोहरदासजी की महन्ताई। आचार्यश्री के दाहिनी ओर रेवासापीठाधीश्वर स्वामी श्री राघवाचार्यजी एवं बाँयी ओर म. श्रीहरिवल्लभदास जी, रेनवाल, पं. श्रीगोविन्ददासजी सन्त।

निम्बग्राम में प्रतिष्ठा महोत्सव पर मध्य में मंचासीन आचार्यश्री एवं आपश्री के दाहिनी ओर स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज, डीडवाना (राज.) रामायणी श्री कौशलकिशोर-दासजी मानसकिंकर,पं. श्रीमुकुंद-शरणजी (वृन्दावन) बाँयी ओर प्रवचन करते श्रीमहन्त नृत्यगोपालदासजी (अयोध्या) तथा सन्त-महन्त महानुभाव।

श्रीवृन्दावन कुम्भावसर पर श्री-निम्बार्क नगर में उपदेश करते आचार्यश्री एवं जगद्गुरु रामा-नन्दाचार्य श्रीशिवरामाचार्यजी महाराज (काशी) आपके दाहिनी ओर श्रीमहन्त नन्दरामदासजी निर्मोही अनी (अहमदाबाद) तथा अनेक सन्त-महन्त।

आचार्यश्री के विभिन्न कुम्भावसरों पर शोभायात्राओं का अतीव आकर्षक दर्शन

वृन्दावन कुम्भ के अवसर
पर शोभायात्रा का दृश्य

उज्जैन कुम्भ 1992
शोभायात्रा का दृश्य

नासिक कुंभ 1991 के अवसर पर निम्बार्क नगर में सन्त महात्मा एवं भक्तजनों सहित पधारते हुए आचार्यश्री

उज्जैन कुंभ में तीनो अनियों के श्रीमहन्त सहित आचार्यश्री

निम्बग्राम में श्रीनिम्बार्क भगवान् की प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा का दृश्य,

राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा निम्बार्कतीर्थ में आयोजित वैदिक छात्र सम्मेलन के अवसर पर आचार्यश्री एवं विद्वद् गण

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मंचासीन जगद्गुरु

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री का अभिषेक करते हुए विद्वज्जन
एवं सप्तवर्षीय बालस्वरूप युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी

आचार्यपीठ के उत्तराधिकारी युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी को तिलक करते हुए आचार्यश्री एवं पास में विराजमान श्रीनिम्बार्क महासभा के महामंत्री श्री व्रजविहारीशरणजी राजीव तथा अनेक श्रीमहन्त, महन्त, सन्त-विद्वज्जन

आचार्यश्री के सान्निध्य में श्रीश्यामशरणदेवजी को आचार्यपीठ के उत्तराधिकारी मनोनीत करने पर अपने भाव व्यक्त करते हुए मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्तश्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज, उदयपुर एवं सन्त, महन्त तथा विद्वज्जन।

आचार्यपीठ के उत्तराधिकारी युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी
विभिन्न अवस्थाओं में

श्रीवृन्दावन कुम्भावसर पर मध्य में आचार्यश्री, होली महोत्सव के आयोजक बाबा श्रीमाधुरीशरणजी करबद्ध मुद्रा में आचार्यश्री के बाँई ओर व्रजमण्डल श्रीमहन्त बालकदासजी (फालेन) तथा जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीशिवरामाचार्यजी महाराज (वाराणसी)
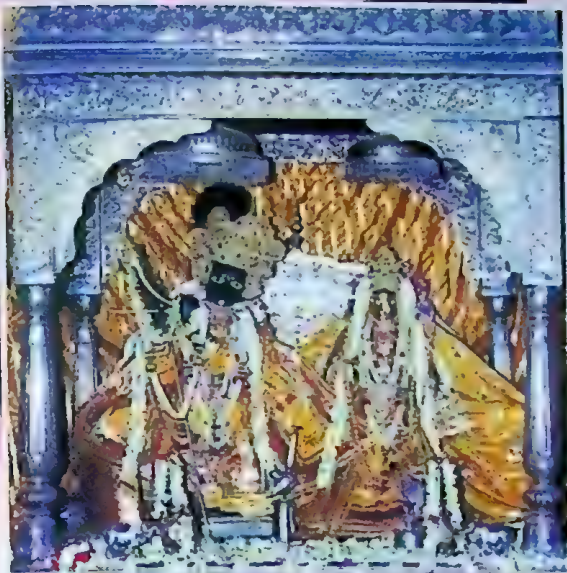
श्रीसनकादि संसेव्य दक्षिणावर्ती
चक्रांकित गुंजाफल सदृश
शालग्राम श्रीसर्वेश्वर
प्रभु का गो-दुग्धा महाभिषेक
करते हुए पूज्य आचार्यश्री।

सायंकालीन श्रीभगत्राम
संकीर्तन में तबला
वादन करते हुए
पूज्य आचार्यश्री।

गो महिमा बोधक भवन (गोशाला) गंगासागर के प्रांगण में गो यूथ को संहलाते अतीव आनन्द का अनुभव कर रहे पूज्य आचार्यश्री एवं प्रसन्न मुद्रा में निश्चल खड़ी गोमाताएं।

तीर्थगुरु पुष्कर राज में शान्त भाव से चारा खाते मृग यूथ (हिरण) और उन्हें हरा चारा (घास) देते पूज्य आचार्य श्री।

तीर्थगुरु पुष्करराज में बन्दरों को लड्डू-चना आदि खिलाते आचार्यश्री एवं प्रसन्नतापूर्वक हाथ से स्वयं लेते हुए वानर (बन्दर) समूह

आचार्यश्री महल के छत पर कबूतरों को दाना चुगाते स्मितानन पूज्य आचार्यश्री एवं अतिविश्वस्त कबूतर आपश्री के हस्तकमल, मस्तक तथा अगल-बगल फुदकते सुशोभित हो रहे हैं।

आचार्यश्री महल में मयूर को दाना चुगाते पूज्य आचार्यश्री।

श्रीचरणों का चरण पूजन करते हुए बायें से दिगम्बर अनी के श्रीमहन्त श्रीहरिदास जी महाराज एवं विशिष्ट श्रीमहन्त, दायें से निम्बार्क महासभा के महामंत्री महन्त श्री ब्रजबिहारीशरणजी राजीव, पं. श्री नवलकिशोर जी व्यास, बाबा श्रीमाधवशरणजी।

पुष्करराज के तट-स्थित मध्य में श्रीपरशुराम द्वारा के मन्दिर का मनोरम दृश्य।

पुष्कर स्थित नवनिर्मित
श्री परशुराम द्वारा के प्रतिष्ठा
महोत्सव के अवसर पर
सुसज्जित निज मन्दिर
द्वार तथा शिखर के दर्शन।

पुष्करराज स्थित श्री परशुराम द्वारा मन्दिर में प्रतिष्ठा महोत्सव पर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के विग्रह का दर्शन करते हुए पूज्य आचार्यश्री एवं बाएं से मुख्य यजमान श्रीपूरणमलजी अग्रवाल भाटापारा।

श्रीब्रजदासी भागवत विमोचन के अवसर पर मंच पर विराजमान पूज्य आचार्यश्री एवं बाएं सिंहासन पर श्रीब्रजदासी भागवत ग्रन्थ, युगसंत श्रीमुरारी बापू, भक्तमाली श्रीमन्नारायणदासजी।

श्रीब्रजदासी भागवत ग्रंथ का विमोचन कर उसे पूज्य आचार्यश्री को समर्पण करते हुए युगसंत श्री मुरारी बापू।

लीम्बड़ी (गुजरात) यात्रा के अवसर अहमदाबाद में पर गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्रीनवलकिशोरजी शर्मा पूज्य आचार्यश्री का अभिवादन करते हुए एवं उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हुए आचार्यश्री।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विराजित भगवान् श्रीराधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री के दर्शनार्थ मन्दिर में प्रवेश करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीभैरोसिंहजी शेखावत एवं साथ में श्रीअशोकजी पाटनी आर.के.मार्बल।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ५१०० वें जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मंच पर मध्य में विराजमान पूज्य आचार्यश्री एवं बाएं जगद्गुरु पुरी शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानन्दजी महाराज दाएं रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य श्री दादूदयाल जी महाराज शाहपुरा

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य इक्कावनसौवें जयन्ती महोत्सव पर आयोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर मंच पर विराजित आचार्यश्री एवं बाएं युवराजजी शंकराचार्य स्वामी श्रीवासुदेवानन्दजी सरस्वती, रामानुजाचार्य, स्वामी श्रीविष्णुप्रपन्नाचार्यजी, महामंडलेश्वर श्रीचिन्मयानन्दजी महाराज, दायें से वल्लभाचार्य, गोस्वामी श्रीवल्लभरायजी महाराज सूरत, भारत साधु समाज के अध्यक्ष महामंडलेश्वर श्रीमंगलानन्दजी महाराज।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य इक्कावनसौवें जयन्ती महोत्सव पर निम्बार्क दर्शन सम्मेलन पर अपने भाव प्रकट करते हुए आचार्यश्री एवं दायें से विराजमान युगसंत श्रीमुरारी बापू, महन्त श्रीयुगलशरणजी पाटनारायण आबू, श्रीमहन्तश्री वृन्दावनदासजी काठियासुखचर-कलकत्ता तथा मंचासीन अनेक संत महन्त।

रलावता (किशनगढ़) वास्तव्य श्रीगणपतिसिंहजी राठौड़ द्वारा निर्मित अतिभव्य श्रीराममन्दिर - केसरियाजी, उदयपुर मण्डल (राजस्थान) के मन्दिर प्रतिष्ठा के द्वितीय पाटोत्सव के पावन अवसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के तत्त्वावधान में विशाल मण्डपस्थ सभा समारोह में आचार्यश्री के बाँई ओर राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीया श्रीवसुन्धराराजे, गृहमंत्री श्रीगुलाबचन्दजी कटारिया, क्षेत्रीय सांसद, विधायक आदि तथा दाहिनी ओर आचार्यपीठ के युवराज श्रीश्यामशरणदेवजी एवं महा-मण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी (उदयपुर) मन्दिर निर्माता श्रीगणपतिसिंहजी केसरियाजी (रलावता) आदि।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-शतोत्तर पञ्चसहस्राब्दी (5100) वां जयन्ती महोत्सव पर आयोजित अ.भा. विराट् सनातनधर्म सम्मेलन समारोह विषयक आचार्यश्री एवं श्रीवसुन्धराराजे मुख्यमंत्री (राजस्थान) विशेष परामर्श करते हुए।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ निम्बार्कतीर्थ सरोवर परिसर में वृक्षारोपण करते हुए आचार्यश्री तथा राजस्थान के खनिज व वन पर्यावरण मंत्री श्री लक्ष्मीनारायणजी दवे एवं क्षेत्रीय विधायक श्रीभागीरथजी चौधरी, वकील श्रीराधेश्यामजी (किशनगढ़) मन्त्रोच्चारण करते पं. श्रीविश्वामित्रजी व्यास आदि विशिष्ट स्थानीय परिकर समुदाय।

विश्व हिन्दू महासंघ नेपाल द्वारा समायोजित हिन्दू एकता दिवस के पावन अवसर पर कमलपोखरी-जैन निकेतन सभागार में सिंहासनासीन पूज्य आचार्यश्री एवं पीठ के उत्तराधिकारी श्रीश्यामशरणदेवजी, नेपाल के उपप्रधानमंत्री श्रीबद्रीप्रसादजी मण्डल, आचार्य खेमराजकेशवशरणजी आदि प्रमुख महानुभाव।

तोदी भवन-विराटनगर के सभाहाल में विराजमान पूज्य आचार्यचरण, सामने प्रवचन करते हुए आचार्य श्रीहरिशरणजी, आचार्य श्रीखेमराजकेशवशरणजी, प्राचार्य श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय, एस.पी. श्रीश्यामशरणजी एवं अन्य महानुभाव।

जनकपुर धाम में देवविग्रहों के दर्शनानन्तर जानकी मन्दिर प्रांगण में महन्तजी एवं पीठपरिकर के साथ पूज्य आचार्यचरण।

वाग्मती तटवर्ती नेपाल के राष्ट्रदेव विश्वाराध्य भगवान् श्रीपशुपतिनाथ प्रभु का भव्य मन्दिर तथा मन्दिर परिसर में पूर्वाह्नवेला में महाभिषेक के अवसर पर श्रीपशुपतिनाथ प्रभु के दर्शनार्थ सपरिकर पधारते हुए आचार्यश्री।

विमोचन समारोह
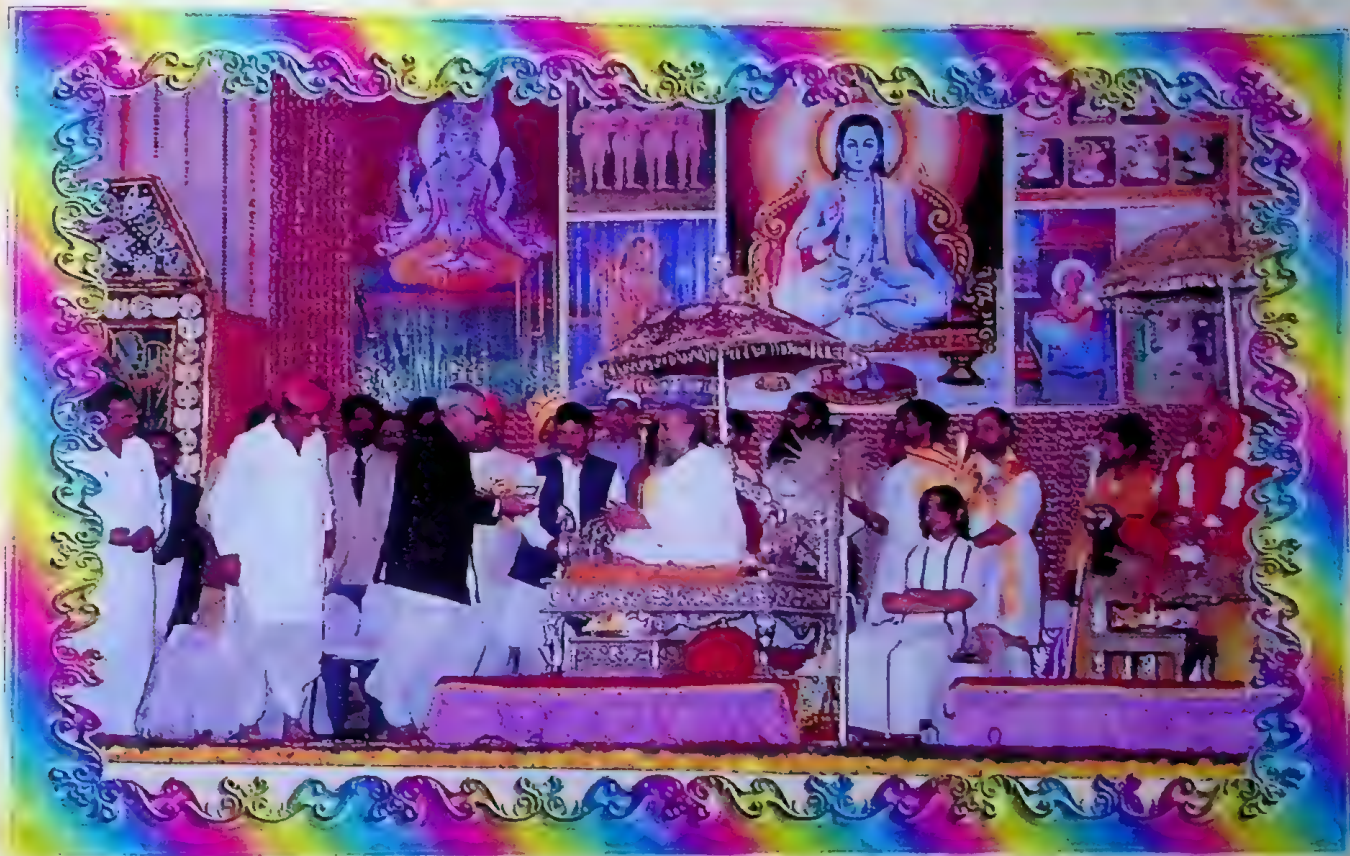
श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ५१०० वें जयन्ती महोत्सव पर आयोजित अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन पर जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज अयोध्या की अध्यक्षता में उपराष्ट्रपति जी द्वारा उद्‌घाटनोपरान्त जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा विरचित ग्रन्थ ''श्री गोशतकम्'' का विमोचन करते हुए
महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी शेखावत, श्री सांवर लाल जाट–सिंचाई मंत्री, राज. सरकार, श्री वासुदेवजी देवनानी–राज्य शिक्षा मंत्री, राज.सरकार

समर्पण समारोह

विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ के विमोचनानन्तर माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे (जयपुर) पूज्य आचार्यश्री को ग्रन्थ समर्पण करती हुई।

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

चतुर्थ-खण्ड

दर्शन
एवं
अनुचिन्तन

चतुर्थ - खण्ड

दर्शन एवं अनुचिन्तन

❊ सूचनिका ❊

* * *

परमाराध्य सनकादि संसेव्य—

श्रीसर्वेश्वर प्रभु

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अद्यावधि विराजमान ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मदेव के मानसपुत्र श्रीसनकादिकों के संसेव्य भगवद्विग्रहरूप शालग्राम स्वरूप ठाकुर हैं । श्रीसनकादिकों के द्वारा हरिभक्ति परायण वीणापाणि देवर्षि श्रीनारदजी को इनकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ । पुनः यही सेवा श्रीनारद मुनि से श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यजी को द्वापर युग के अन्त में संप्राप्त हुई, जिसको आज ५१०० वर्ष हो चुके हैं । श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इन्हीं ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' की सेवा सहित व्रजस्थ श्रीगिरिगोवर्धन के सन्निकट निवास करते हुए तपस्या की थी । जो तपस्थली आज ''श्रीनिम्बग्राम'' नाम से प्रसिद्ध है। वर्षों पर्यन्त यही स्थान श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय का परम्परागत आचार्यपीठ रहा और श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा भी परम्परा से आचार्यों द्वारा यहीं की जाती रही । इस स्थान का संचालन श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ द्वारा होता रहा । भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यजी के पश्चात् ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' उत्तरोत्तरवर्ती सभी पूर्वाचार्यों, द्वादश आचार्यों तथा अष्टादश भट्टाचार्यों द्वारा संसेवित होते रहे। कालान्तर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यह सेवा जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी महाराज को संप्राप्त हुई । इन सभी पूर्वाचार्यों ने व्रज में गोवर्धन, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानों में विराजकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया । पश्चात् विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में निजगुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की आज्ञा पाकर इन्हीं ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' की सेवा को लेकर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने पुष्कर क्षेत्र के पावन प्रदेश में आकर भगवद्विमुख प्राणियों को सद्धर्म में लगाते हुए वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना की । अतः परम्परागत नियमानुसार ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही विराजते हैं और अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर ही इस विश्वव्यापी बृहद् निम्बार्क सम्प्रदाय के एकमात्र आचार्य कहलाते हैं । ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' इन्हीं आचार्यश्री के परमाराध्य ठाकुर हैं ।

''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' की यह प्रतिमा प्रातःस्मरणीय विद्यातपोनिष्ठ पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित तथा अति प्राचीन होने से अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है । अति सूक्ष्म (गुञ्जाफल सदृश) इस श्रीविग्रह का नित्य प्रति मंगला आरती के पश्चात् गोदुग्धादि से श्रीपुरुषसूक्त द्वारा विधिपूर्वक अभिषेक होता है । तदनन्तर श्रीविग्रह के दर्शनों का कार्यक्रम निर्धारित रहता है। उस समय यदि सूर्य की किरणों द्वारा अच्छा प्रकाश हो तो भली भाँति दर्शन हो जाते हैं, अन्यथा सूक्ष्मदर्शी यन्त्र द्वारा दर्शन होते हैं । इस श्रीविग्रह में एक गोलाकार चक्र दिखलाई पड़ता है। उस चक्र के मध्य में दो ऊर्ध्व रेखाएँ दृष्टिगोचर होती हैं, ये दोनों रेखाएँ

प्रियाप्रियतम युगल सरकार श्रीराधाकृष्ण की ही स्वरूपात्मक हैं । इन्हीं रेखाओं में कभी किसी भावुक भक्त को श्रीराधाकृष्ण की झांकी की झलक भी हो जाती है, यह सब तो उन्हीं कृपामय प्रभु की कृपा पर निर्भर है।

श्रीविग्रह के वैदिक पुरुष-सूक्त मन्त्रों द्वारा अभिषेक होने पर दर्शनों के पश्चात् आचार्यश्री स्वयं श्रीतुलसीदल समर्पण करते हैं और शृङ्गार आरती उतारते हैं । आरती के पश्चात् श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यकृत ''वेदान्त दशश्लोकी'' द्वारा प्रार्थना होती है । उस समय श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अनुपम मङ्गल छवि और आचार्यश्री के दर्शनों का सौभाग्य समागत भक्तजनों को संप्राप्त होता है । राजभोग में नैवेद्य समर्पण का नियम भी परम्परागत रूप से यही चला आरहा है कि आचार्यश्री ''श्रीजी'' महाराज ही अपने करकमलों से अपरस में कच्चे नैवेद्य का थाल तैयार करते हैं और वही राजभोग में आता है। अन्यथा पक्के नैवेद्य का थाल निर्धारित पुजारी रसोईया द्वारा अपरस में निर्मित होकर भोग में आता है । जब कभी आचार्यचरण का धर्म-प्रचारार्थ या भक्तजनों के निवेदनानुसार उनके यहाँ किन्हीं विशेष उत्सवों पर बाहर पधारना होता है, तब श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित ही पधारना होता है, मार्ग में लक्षित स्थान पर पहुँचने तक सभी सामयिक सेवाएँ विधिपूर्वक सम्पन्न होती हैं तथा निर्धारित स्थान पर जाने पर तो भगवान् के विराजने की व्यवस्था हो ही जाती है ।

इस प्रकार ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' श्रीनिम्बार्क भगवान् के एक परमोपास्य श्रीविग्रह हैं और इनकी महिमा बड़ी ही महान् तथा विलक्षण है । धर्मशास्त्र में भी सूक्ष्म श्रीशालिग्राम प्रतिमा के पूजन का बड़ा भारी फल बताया है । निर्णय-सिन्धुकार श्रीकमलाकर भट्टजी ने निर्णय-सिन्धु नामक ग्रन्थ के तृतीय परिच्छेद के पूजा प्रकरण में पद्मपुराण का प्रमाण देते हुए लिखा है--

तत्राप्यामलकीतुल्या पूज्या सूक्ष्मैव या भवेत् ।
यथा यथा शिला सूक्ष्मा तथा स्यात्तु महत्फलम् ॥

आँवले के बराबर श्रीशालिग्राम की मूर्ति पूजा में हो तो उसका बड़ा भारी फल है और यदि उससे भी ज्यों-ज्यों सूक्ष्म मूर्ति प्राप्त हो, त्यों-त्यों और भी महत्फल को देने वाली है ।

इस शास्त्रीय वचनानुसार अति सूक्ष्म (गुञ्जाफल सदृश) ''श्रीसर्वेश्वर प्रभु'' की यह प्रतिमा प्रातःस्मरणीय तपःपरायण उन पूर्वाचार्यों द्वारा संसेवित तथा अति प्राचीन होने से दर्शन फल में अपना एक विशेष महत्त्व रखती है। ऐसी प्राचीन और सूक्ष्म प्रतिमा संसार में अन्यत्र उपलब्ध नहीं है ।

* * *

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विराजित—

भगवान् श्रीराधामाधवजी

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में अचल रूप से विराजमान भगवान् श्रीराधामाधवजी, निम्बार्कवीथि-पथिक, रसिक-शिरोमणि रससिद्धकवि गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव के संसेव्य ठाकुर हैं । बंगाल से आकर व्रजमंण्डल में श्रीगोवर्धन की पावन कन्दरा में विराजमान हुए और वि० सं० १८२३ में श्रीराधाकुण्ड के निकट ललिताकुण्ड पर स्थित श्रीनिवासाचार्यजी की पावन बैठक पर विराजमान रहे। तत्कालीन जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज को स्वप्न में आदेश दिया कि हमें श्रीपुष्कर क्षेत्रस्थ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (सलेमाबाद) ले चलो । आचार्यश्री ने प्रार्थनापूर्वक निवेदन किया— भगवन् ! कैसे और किस प्रकार से ले चलें ? तब श्रीमाधवजी ने कहा कि अपने रथ में बिठा कर ले चलो । प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य कर आचार्यश्री ने रथ में श्रीमाधवजी को विराजमान कर गोवर्धन से प्रस्थान किया । पीछे से गोवर्धन के व्रजवासी भक्तों और बंगाली भक्तजनों ने विचार किया कि भगवान् श्रीमाधवजी का व्रज से बाहर जाना ठीक नहीं है, उन्हें पुनः यहीं पधराना चाहिये । यह विचार करके सबके सब संगठित होकर वहाँ से चले । इधर तब तक रथ में विराजमान श्रीमाधवजी भरतपुर पहुँच चुके थे, वहाँ भगवान् की सेवा हो रही थी । पीछे इन आये हुए सभी भक्तों ने आचार्यश्री से प्रार्थना की कि– ''**श्रीमाधवजी व्रज में ही विराजें, बाहर न पधारें**'' ऐसी हमारी सबकी भावना है और इसीलिए विचार करके हम यहाँ आये हैं, आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करें । आचार्यश्री ने कहा— ''**श्रीमाधवजी की इच्छा है तो हम क्या कहें ।**'' भरतपुर नरेश से भी सबने अनुरोध किया । नरेश ने भी आचार्यश्री से निवेदन किया । प्रभु का आदेश हुआ है और वे स्वयं अपनी इच्छा से पधारे हैं । उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता । आचार्यश्री ने निर्णय दिया कि आप सब रथ को खेंच कर ले जाइये, यदि माधवजी की इच्छा होगी तो पुनः व्रज की ओर पधार जावेंगे । यह निर्णय सुनकर आये हुए सभी व्रजवासियों ने रथ को खैंचा, खूब जोर लगाया, परन्तु रथ तनिक भी हिला तक नहीं । तब आचार्यश्री के रथ में घोड़े जुतवाये । आचार्यश्री ने प्रार्थना की और वह रथ चल पड़ा । सभी दर्शक चकित हो गये जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गूञ्ज उठा । वि० सं० १८२३ के ज्येष्ठ शुक्ल ४ का वह दिन भरतपुर और व्रजमण्डल के उपस्थित सभी भक्तजनों के हृदय-पटल पर बहुत दिनों तक अंकित रहा । इस घटना का उल्लेख कृष्णगढ राज्य के इतिहास रजिस्टरों में भी जयलाल कवि ने किया है ।

आचार्यपीठ सलेमाबाद के मार्ग में जितने भी नगर-गांव आये, सभी स्थानों पर नर-नारियों ने भगवान् श्रीमाधवजी का तथा आचार्यचरणों का हार्दिक स्वागत किया । कृष्णगढ के नरेन्द्र और प्रजावर्ग को महान् हर्ष हुआ । आचार्यपीठ के समीपवर्ती गांवों की जनता के हर्ष का तो पारावार ही नहीं

रहा । जय जयकार के साथ श्रीमाधवजी का अपूर्व स्वागत हुआ । पुनीत दिवस वि० सं० १८२३ के ज्येष्ठ शुक्ल १० (गंगा दशहरा) को समारोह पूर्वक श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सन्निकट श्रीमाधवजी विराजमान हुए ।

यह समय अराजकता का था, मुस्लिम शासन कमजोर हो चुका था, अंग्रेज शनैः-शनैः देश को हथिया रहे थे । कई शक्तिशाली फौजी लूटमार कर रहे थे । ऐसी स्थिति में वि० सं० १८३८ में श्रीमाधवजी रूपनगर के किले में पधराये गये । आचार्यपीठ के विशाल मन्दिर को यवन लुटेरों ने ध्वंस कर डाला, तब कुछ दिनों के बाद संगमरमर का यह नया मन्दिर बना, जोधपुर दरबार की ओर से मकराना से संगमरमर पत्थर आया । वि० सं० १८७२ में पुनः श्रीमाधवजी रूपनगर से आचार्यपीठ (सलेमाबाद) पधारे । उसी समय श्रीकिशोरीजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा भी कराई गई । तब से श्रीराधामाधवजी अचल रूप से अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में विराजमान हैं । तब से अब तक प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शु० १० गंगा दशहरा को श्रीराधामाधवजी का पाटोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होता है । भगवान् की विविध पुष्पमालाओं से सुसज्जित शृङ्गारयुक्त भव्य झांकी के दर्शन कर भक्तजन तृप्त हो जाते हैं । ऐसी अद्भुत छवि का शायद ही कहीं अन्यत्र दर्शन मिल सके ।

✼ श्री श्रीजी वचनामृतम् ✼

आत्माराम उत्तम श्लोक हरिभक्त सन्तों की क्षणिक सेवा भी सकल पापतापहारिणी तथा परमैश्वर्य और परमानन्द की देने वाली है ।

✼

परोपकार, दया, तितिक्षा करुणा, अजातशत्रुता, श्रीहरिरसरसिक वैष्णव महापुरुषों के श्रेष्ठ लक्षण हैं ।

✼

संसार के चाकचिक्यमय दुःखरूप पदार्थों की आसक्ति का परित्याग कर केवल अपने स्वाराध्य के मिलन की, उत्कट उत्कण्ठा को जागृत करें ।

श्रीहंस भगवान् से वर्तमान आचार्य पर्यन्त—

आचार्य-परम्परा

आचार्य-नामावली	उत्सव मास तिथि
१. श्रीहंस भगवान्	कार्तिक शु० ९
२. श्रीसनकादि भगवान्	कार्तिक शु० ९
३. देवर्षि श्रीनारद भगवान्	मार्गशीर्ष शु० १२
४. श्रीसुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जी	कार्तिक शु० १५
५. श्री श्रीनिवासाचार्यजी	माघ शु० ५
६. श्रीविश्वाचार्यजी	फाल्गुन शु० ४
७. श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी	चैत्र शु० ६
८. श्रीविलासाचार्यजी	वैशाख शु० ८
९. श्रीस्वरूपाचार्यजी	ज्येष्ठ शु० ७
१०. श्रीमाधवाचार्यजी	आषाढ शु० १०
११. श्रीबलभद्राचार्यजी	श्रावण शु० ३
१२. श्रीपद्माचार्यजी	भाद्रपद शु० १२
१३. श्रीश्यामाचार्यजी	आश्विन शु० १३
१४. श्रीगोपालाचार्यजी	भाद्रपद शु० ११
१५. श्रीकृपाचार्यजी	मार्गशीर्ष शु० १५
१६. श्रीजान्हवीकार श्रीदेवाचार्यजी	माघ शु० ५
१७. सेतुकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी	मार्गशीर्ष शु० २
१८. श्रीपद्मनाभ भट्टाचार्यजी	वैशाख कृ० २
१९. श्रीउपेन्द्र भट्टाचार्यजी	चैत्र कृ० ३
२०. श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी	वैशाख कृ० ५
२१. श्रीवामन भट्टाचार्यजी	ज्येष्ठ कृ० ६
२२. श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी	आषाढ कृ० ९
२३. श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी	आषाढ कृ० ८
२४. श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी	कार्तिक कृ० ९

आचार्य-नामावली	उत्सव मास तिथि
२५. श्रीभूरिभट्टाचार्यजी	आश्विन कृ० १०
२६. श्रीमाधवभट्टाचार्यजी	कार्तिक कृ० ११
२७. श्रीश्यामभट्टाचार्यजी	चैत्र कृ० १२
२८. श्रीगोपालभट्टाचार्यजी	पौष कृ० ११
२९. श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी	माघ कृ० १४
३०. श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी	श्रावण शु० ७
३१. श्रीकेशवभट्टाचार्यजी	चैत्र शु० १
३२. श्रीगांगलभट्टाचार्यजी	चैत्र कृ० २
३३. श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी	ज्येष्ठ शु० ४
३४. श्रीश्रीभट्टाचार्यजी	आश्विन शु० २
३५. श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी	कार्तिक कृ० ११
३६. श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी	भाद्रपद कृ० ५
३७. श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी	मार्गशीर्ष कृ० ७
३८. श्रीनारायणदेवाचार्यजी	पौष शु० ९
३९. श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी	भाद्रपद कृ० १३
४०. श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी	कार्तिक कृ० ५
४१. श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी	कार्तिक कृ० ८
४२. श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी	पौष कृ० ६
४३. श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी	ज्येष्ठ शु० ६
४४. श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी	ज्येष्ठ शु० ५
४५. श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी	माघ कृ० १०
४६. श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी	आश्विन कृ० ६
४७. श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी	चैत्र कृ० १३
४८. श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी वर्तमान आचार्यश्री	ज्येष्ठ शु० २

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की अद्भुत महिमा

श्रीसर्वेश्वर साक्षात् भगवान् हैं, उनके दर्शन करना
जीवन को सार्थक करना है

(पूज्यपाद ब्रह्मलीन श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज के
महत्त्वपूर्ण सदुपदेश)

– भक्त रामशरणदास पिलखुवा

भारत के सुप्रसिद्ध महान् धर्माचार्य ब्रह्मलीन परमपूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज के ये श्रीसर्वेश्वर भगवान् सम्बन्धी सदुपदेश आपके श्रीचरणों में बैठ कर लिखे गये थे, जो कि यहाँ पर दिये जा रहे हैं । आशा है पाठक इन्हें बड़े ध्यान से पढने की कृपा करेंगे । इसमें जो कुछ गलती रह गई हो वह सब हमारी ही समझेंगे, पूज्यपाद श्री आचार्यचरण की नहीं ।

प्रश्न **- पूज्य महाराजश्री ! क्या श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परमाराध्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के आपने कभी दर्शन किये हैं ?**

उत्तर - हाँ हमने भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कई बार दर्शन किये हैं । हम व्रज के रहने वाले थे और हमारा ब्राह्मण शरीर है और हमारा परिवार श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का अनुयायी था । इसलिए जब हम पहले श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के थे और श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के तो श्रीसर्वेश्वर भगवान् परम इष्टदेव और परमाराध्य हैं, इसलिए हमारे भी श्रीसर्वेश्वर भगवान् कुल परम्परा के परमाराध्य थे । वैसे तो समस्त सनातन धर्ममात्र के ही श्रीसर्वेश्वर प्रभु परमाराध्य हैं । इस सम्बन्ध में सनातन धर्मीमात्र का कोई मतभेद नहीं है । सभी सनातनधर्मी श्रीसर्वेश्वर भगवान् को अपना परम पूज्य भगवान् मानते चले आये हैं और आज भी मानते हैं । हमने श्रीसर्वेश्वर भगवान् के दर्शन कितनी ही जगहों पर किये हैं । हम जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के पास सलेमाबाद जा चुके हैं और वहाँ पर कई दिनों तक रहे थे, वहाँ पर श्रीसर्वेश्वर भगवान् विराजते हैं । हमे वहाँ रहने पर तो श्रीसर्वेश्वर भगवान् के खूब दर्शन हुआ ही करते थे ।

प्रश्न **- महाराजश्री श्रीसर्वेश्वर भगवान् की क्या विशेषता है ?**

उत्तर - श्रीसर्वेश्वर भगवान् की बड़ी अद्भुत विलक्षण महिमा है । यदि श्रीसर्वेश्वर भगवान् की अद्भुत विशेषता न होती तो इन्हें बड़े-बड़े ऋषि, महर्षि, क्यों पूजते और जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज इन्हें अपना परमाराध्य और परम इष्टदेव मान कर इनकी अपने हाथों अष्टयाम सेवा पूजा क्यों करते? आज भी ''श्रीजी'' उनकी बड़ी विधि-विधान से सेवा पूजा करते हैं । शास्त्रों में श्रीसर्वेश्वर भगवान् की महिमा लिखी हुई है ।

***प्रश्न* - महाराजजी ! यह कहा जाता है कि श्रीसर्वेश्वर भगवान् को महर्षि श्रीसनकसनन्दन सनातन सनत्कुमार और महर्षि श्रीनारदजी महाराज आदि बड़े-बड़े ऋषि, मुनि पूजते चले आये हैं और लाखों वर्ष प्राचीन हैं ?**

उत्तर - इसमें सन्देह क्यों करते हो ? पहले ऋषि, मुनि भगवान् श्रीशालिग्राम की पूजा किया करते थे सो श्रीसर्वेश्वर भगवान् की भी वह अवश्य पूजा करते होंगे इसमें सन्देह करने की क्या बात है? श्रीसर्वेश्वर भगवान् की प्रतिमा अति सूक्ष्म है और इसकी बड़ी अद्‌भुत महिमा है । शालिग्राम साक्षात् भगवान् माने गये हैं । फिर श्रीसर्वेश्वर भगवान् की तो और भी ज्यादा अद्‌भुत महिमा है । जो हमारे शास्त्र, पुराण और जो हमारे पूज्य धर्माचार्य कहते चले आये हैं, उन बातों को नतमस्तक होकर मानना चाहिए, इसी में परम कल्याण है । धर्म में तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिये । जब भी अवसर मिले श्रीसर्वेश्वर भगवान् का अवश्य दर्शन करना चाहिये ।

॥ बोलो सनातन धर्म की जय ॥

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की आराधना का महत्त्व

(लेखक - याज्ञिक-सम्राट् पण्डित श्रीवेणीरामजी शर्मा गौड़, वेदाचार्य, वाराणसी)

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की महिमा अनिर्वचनीय है । जो मनुष्य भक्ति-भाव से श्रीसर्वेश्वर भगवान् की आराधना करता है, वह सुख-शान्ति का अनुभव करता हुआ परमानन्द की प्राप्ति करता है । सर्वेश्वर भगवान् का आराधक प्राणि-मात्र को आत्मवत् समझता है । वह शरीर की ममता और अहंता के भेदभाव से दूर रहता है। वह अपने शरीर को अनित्य जानकर इसकी मोहासक्ति से दूर रहता है । वह इन्द्रियों के वश में नहीं रहता है । वह निरभिमान रहता है। वह सदा शुद्ध, बुद्ध, मुक्त रहता है । वह राग-द्वेष से सदा दूर रहता है । वह सांसारिक मिथ्या-प्रपञ्चों से सदा दूर रहता है । वह काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि से सदा बचता है । वह सबसे समभाव और प्रेमभाव रखता है । वह साधु महात्माओं की भक्ति और उनकी आज्ञा का पालन करता है । वह सदा सद्‌गुरु की शरण में रहकर उनकी सेवा शुश्रूषा करता है । वह सदा सत्य का पालन करता है । वह सदा सद्धर्म और सत्कर्म करता है । वह सदा सनातन धर्म को मानता है । वह सदा सर्व प्रकार से तृप्त और सन्तुष्ट रहता है । वह सदा अपने को अमर और अभय मानता है । अतः जिन सर्वेश्वर भगवान् की आराधना से मनुष्य उपर्युक्त अद्‌भुत अलौकिक एवं दुर्लभ ईश्वरीय सद्‌गुणों की प्राप्ति कर लेता है, उन सर्वेश्वर भगवान् की आराधना प्रत्येक मनुष्य के लिये अनिवार्य और आवश्यक है ।

हरिद्वार कुम्भ पर्व के अवसर पर 'श्रीनिम्बार्क नगर' में

धर्म-सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज

का प्रवचन

(हरिद्वार कुम्भ में श्रीनिम्बार्क नगर के भव्य पण्डाल में दि० २१/४/१६७४ की सायंकालीन सभा में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ द्वारा संचालित श्रीनिम्बार्क-पाक्षिक-पत्र के विशेषाङ्क **''श्रीसर्वेश्वर अङ्क''** का ग्रन्थ विमोचन अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ । इस शुभावसर पर अनन्तश्री धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज का **''श्रीसर्वेश्वर प्रभु और द्वैताद्वैत सिद्धान्त''** पर प्रवचन हुआ वह टेप रिकार्ड कर लिया गया था । उसी प्रवचन को सभी के लाभार्थ अक्षरशः यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

— सम्पादक

महानुभावों, ! महात्माओं, आचार्यों, सन्तों के बीच में प्रभु का गुण-गान करना बड़े भाग्य की बात है । यह सौभाग्य है कि हमारे शास्त्रों में वेद की बड़ी महिमा है । वेद अनादि अपौरुषेय हैं । **अपास्तसमस्तपुंदोषशंका-कलंकपंक** होने से परम प्रमाण है । वेद का स्वरूप कैसे निर्धारित होता है, वेद की अपौरुषेयता कैसे निर्धारित होती है, इसका मूल एक सूत्र है जैमिनि मीमांसा में **''तुल्यं साम्प्रदायिकम्''** इसका अर्थ है, अनादि अविच्छिन्न परम्परा प्राप्त होने के कारण जैसे मन्त्र भाग का वेदत्व है, वैसे ही ब्राह्मण भाग का भी वेदत्व है । अनादि अविच्छि परम्परा से मन्त्र का अध्ययन हम करते आये हैं, वैसे अनादि अविच्छिन्न परम्परा से हम ब्राह्मण का भी अध्ययन करते आये हैं। एतावता सम्प्रदाय परम्परा के अनुसार ही वेद का स्वरूप निर्धारित होता है । आजकल लोग सम्प्रदाय शब्द को बहुत संकीर्ण अर्थ में लेते हैं । एक प्रकार से नाजायज दलबन्दी । अनुचित गिरोहबन्दी को सम्प्रदाय कहा जाता है, हमारे यहाँ सम्प्रदाय शब्द बड़ी ऊंची चीज है । **किसी ज्ञानकाण्ड, किसी कर्मकाण्ड, किसी उपासना काण्ड की अनादि अविच्छिन्न परम्परा का नाम सम्प्रदाय है।** इसका आदर सर्वत्र है । आज भी आप देखें कोर्ट के सम्बन्ध में परम्परा का आदर है, लोअर कोर्ट के सामने कोई प्रश्न खड़ा होता है तो उसके सामने हाई कोर्ट के फैसले की नजीर पेश की जाती है । हाई कोर्ट के सामने कोई प्रश्न खड़ा होता है तो सुप्रीम कोर्ट के फैसले की नजीर पेश की जाती है। सुप्रीम कोर्ट के सामने भी मसला खड़ा होता है तो प्राचीन सुप्रीम कोर्ट के फैसले हैं, वे ही नजीर के तौर पर उपस्थित किये जाते हैं । इसका अर्थ है हम परम्परा का सम्मान करते हैं । दुनियाँ में इंग्लैण्ड की पारलियामेन्ट संसार के पारलियामेन्ट की दादी, दुनियां में जितने पारलियामेन्ट हैं, सबकी दादी इंग्लैण्ड की पारलियामेन्ट है । किसी भी पारलियामेन्ट के सामने कोई समस्या खड़ी होती है तो इंग्लैण्ड की पारलियामेन्ट के इतिहास के पन्ने उलटने पड़ते हैं। वहां जो समाधान होता है, उसी समाधान से यहाँ भी काम लिया जाता है । इसका मतलब यह है कि पारलियामेन्ट की परम्परा, उसका भी सम्मान किया जाता है । कोर्ट की परम्परा उसका भी सम्मान करते

हैं । तो सबसे बड़ी बात हमने वेद की कही ''तुल्यं साम्प्रदायिकम्'' यह सूत्र है । इसका स्पष्ट अर्थ है कि अनादि अविच्छिन्न परम्परा प्राप्त होने के कारण ही वेद का वेदत्व है । ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व है । मन्त्र का मन्त्रत्व है । कहने का अभिप्राय यह हुआ कि इस तरह से हमारे सम्प्रदाय की बड़ी महिमा है। माने जो ज्ञान काण्ड, जो उपासना काण्ड, हमने मनमानी पुस्तक से देखकर जाना, पढ़ा, उसका महत्त्व नहीं । हमारे ग्रन्थ हैं उनमें लिखा है कि **''पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् दृष्ट्वा जपति यो नरः। स जीवन्नेव चाण्डालः मृतः श्वा चापि जायते ॥''** पुस्तक में लिखे हुए मन्त्र को जो देखकर पढता है, वह जीता हुआ चाण्डाल है, मरने के बाद कुत्ता होता है। एतावता कोई भी मन्त्र हम अपनी आचार्य परम्परा से जानकर जपें, उसका महत्त्व होता है । इसी प्रकार कोई उपासना, कोई ज्ञान काण्ड, कोई कर्म काण्ड मनमानी नहीं, अनादि अविच्छिन्न आचार्य परम्परा के द्वारा उसको जानकर अनुष्ठान करना, यज्ञ करना हमारी परम्परा है। इसी आधार पर हमारे अनेक सम्प्रदाय निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय, शंकर सम्प्रदाय और वल्लभ सम्प्रदाय, अनेक सम्प्रदायों में सब ही परम्परा है । तो इस दृष्टि से भगवान् सर्वेश्वर का क्या स्वरूप है ? इसको भी परम्परा से जानना चाहिए । यह मनमानी किसी के मस्तिष्क से इसका निर्धारण नहीं होता है । हमारी अनादि अविच्छिन्न परम्परा से जो बात प्रचलित है, वह ही हमारे लिए परम इष्ट है । उपनिषदों में कई जगह में **''इति शुश्रुम धीराणाम् येनस्तद् विचचक्षिरे''** जहाँ किसी प्रकार की विप्रत्तिपत्ति खड़ी हुई, विवाद खड़ा हुआ, वहाँ वही कह दिया इति''शुश्रुम धीराणाम्'' हम धीर पुरुषों के सम्प्रदाय के आचार्यों की परम्परा को सुनते आये हैं । उसके आधार पर ही हम तत्त्व का निर्धारण करते हैं । ''येनं स्तद् विचचक्षिरे'' जिन आचार्य वर्गों ने उस तत्त्व का निरूपण किया है, निरूपण करके उपदेश किया है उन धीरों के वचन परम्परा के आधार पर हम भी निर्णय करते हैं और हमारे यहाँ **''तैत्तरीय संहिता''** का एक वचन है कि **''पूर्वे पूर्वेभ्यो वचः एतदूचुः''** इस वचन को पूर्व लोगों ने पूर्व लोगों से इस तत्त्व का निरूपण किया है, अर्थात् शुद्ध अनादि परम्परा के आधार पर हमारे वेद का स्वरूप निर्धारित है । इसी तरह से हमारे मन्त्रों की, जो अपना गोपाल महामन्त्र, राधासर्वेश्वर प्रभु का मन्त्र है । वह भी मनमानी किसी पुस्तक में देखकर के किसी ने जप लिया, उससे नहीं होता, हमारी अनादि अविच्छिन्न परम्परा से जो वस्तु प्रचलित है, उसी रूप में उसका अनुष्ठान, जप, तप सब भला होता है और वे सर्वेश्वर भगवान् पहले तो आप समझ लीजिए अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक परमात्मा ही सर्वेश्वर होता है । ''संहिता'' के ४० वें अध्याय का मन्त्र है **'ईशावास्यमिदं सर्वं' इदं सर्वम् इशावास्याम् इदं सर्वं** और उसका ईश्वर इदं सर्वं सारा अनन्त कोटि ब्रह्माण्डात्मक विश्व प्रपंच यह सब उसके सर्वेश्वर सर्वाधिष्ठान सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से वह सब आच्छादित है, वासित है, अर्थात् सब कुछ भगवान् का है । सब कुछ भगवान् का स्वरूप है । सब कुछ भगवान् से उद्‌भूत है । सब कुछ भगवान् से निर्धारित है । भगवान् से संचालित है । यही ''ईशावास्यम्'' का अर्थ है । इदं सर्वम् भी वही है और ईश भी है और वही अनेक उपनिषदों में **''एष सर्वेश्वरः''** अनेक शब्दों में, मन्त्र भाग में भी, ब्राह्मण भाग में भी, उपनिषद् भाग में भी सर्वेश्वर

का प्रतिपादन आता है और हम तो कहते हैं कि ईश्वर मात्र जो सर्वेश्वर नहीं, वह ईश्वर ही नहीं, इसलिए हम कहा करते हैं जैसे कोई ज्ञानवान्, इच्छा-वान्, क्रियावान् व्यक्ति मिट्टी के घट का निर्माता होता है, ज्ञानवान्, क्रियावान्, इच्छावान् व्यक्ति लकड़ी की मेज बनाता है, ज्ञानवान्, क्रियावान् व्यक्ति लोहे की विविध प्रकार की मशीनों को बनाता है, वैसे ही अनन्तकोटिब्रह्माण्ड का निर्माता चन्द्र-मण्डल, सूर्य मण्डल, भूधर, सागर, गगन, पर्वत नाना प्रकार के प्रपंच का भी निर्माण करने वाला जो ज्ञानवान्, इच्छावान्, क्रियावान् तत्त्व है, वही सर्वेश्वर है । तो इसलिए अनन्तकोटिब्रह्माण्ड का जो उत्पादक है, पालक है, संहारक है, और ज्ञानवान्, क्रियावान्, इच्छावान् वही पालक सर्वेश्वर सर्व शक्तिमान् है । वह युक्तियों से साध्य नहीं है । यद्यपि नास्तिक लोग कहा करते हैं कि जङ्गल का पौधा अपने आप बन जाता है । काँटों का नुकीलापन किसने बनाया, हंस के शुक्ल वर्ण का निर्माण किसने किया, तोता के हरे रंग को किसने बनाया, मयूर के पिच्छ की चित्र-विचित्र कारीगरी को किसने बनाया, फूलों पर बैठने वाली तितलियों को चमकीली साड़ी बना कर किसने पहनाया तो वे कहते हैं कि प्रकृति के स्वभाव से । लेकिन हमारे यहां स्पष्ट है कि जो विलक्षण कार्य हम देखते हैं वह ज्ञानवान्, इच्छावान्, क्रियावान् के प्रयास का सत्फल होता है । अब नास्तिक जो बात कहता है, उसमें एक मूल मन्त्र होता है कि व्याप्तिग्रह के लिए दृष्टान्त अपेक्षित होता है । व्याप्तिग्रह जैसे ''पर्वतो वह्निमान् धूमात्'' इस-लिए दृष्टान्त बताओ ''यो यो धूमवान् स स वन्हिमान्''। यथा ''महानसः'' । तो दृष्टान्त जो होता है, वह वादी प्रति-वादी सम्मत होना चाहिये। एक सम्मत नहीं होना चाहिये । वादी प्रतिवादी सम्मत ही दृष्टान्त होता है । तो महानस अग्नि और धूम का सहचर है । यह वादी प्रतिवादी दोनों को मान्य है, तभी वादी प्रतिवादी सम्मत दृष्टान्त के आधार पर व्याप्ति निर्णय होता है। तदनुसार हेतु से हेतुमत् की सिद्धि की जाती है । इस प्रकार दृष्टान्त जो है ज्ञानवान्, इच्छा-वान्, क्रियावान् के द्वारा कोई विलक्षण कार्य उत्पन्न होता है । यह दृष्टान्त तो आस्तिक सम्मत है। लकड़ी की मेज और मिट्टी का घड़ा तथा लोहे की मशीन और नास्तिक का दृष्टान्त है– जंगल का पौधा। तो नास्तिक का दृष्टान्त केवल नास्तिक सम्मत है । आस्तिक, नास्तिक, उभय सम्मत नहीं और आस्तिक का दृष्टान्त उभय सम्मत है । नास्तिक भी कहता है कि मिट्टी का घड़ा किसी ज्ञानवान्, क्रियावान्, इच्छावान् के प्रयास का फल है । नास्तिक भी कहता है कि लकड़ी की मेज ज्ञानवान्, क्रियावान्, इच्छावान् के प्रयास का फल है । नास्तिक भी कहता है कि लोहे की मशीन ज्ञानवान्, इच्छावान्, क्रियावान् के प्रयास का फल है । लेकिन जङ्गल का पौधा अपने आप बन जाता है वह सिर्फ नास्तिक कहता है आस्तिक नहीं कहता है । आस्तिक तो कहता है वहाँ भी जिसने सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल, भूधर, सागर, पर्वत का निर्माण किया उसी ने जङ्गल के पौधे का निर्माण किया । वह पक्ष सम है । तात्पर्य यह है संदिग्ध साध्यवान् पक्ष होता है, निश्चित साध्यवान् सपक्ष होता है । जहाँ साध्य निश्चित है वहीं दृष्टान्त बनता है। यहाँ तो साध्य निश्चित है ही नहीं। जङ्गल का पौधा अपने आप बन गया, यहाँ यह साध्य कहाँ निश्चित है । हम तो कहते हैं जैसे सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल, इत्यादिकों का निर्माता कोई ज्ञानवान्,

इच्छावान्, क्रियावान् है । वैसे जंगल के पौधे का भी निर्माता कोई ज्ञानवान्, इच्छावान्, क्रियावान् है । इसलिए वह पक्ष कोटि में है, पक्ष स्वयं दृष्टान्त कोटि में आ नहीं सकता, इसलिए नास्तिक का दृष्टान्त असंगत होने के कारण व्याप्तिग्रह हो नहीं सकती। इसके बाद हेतु-हेतु मद्भाव का निर्धारण हो नहीं सकता। हेतु द्वारा हेतुमान् की सिद्धि हो ही नहीं सकती। तो अस्तु ! इन सब दृष्टियों से सिद्ध है कि अनन्तकोटिब्रह्माण्ड नायक जो परमात्मा सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् वही सर्वेश्वर है । सर्वेश्वर ! सर्वेश्वर ईश्वर जो है, वही सर्वेश्वर, सर्वेश्वर नहीं वो ईश्वर नहीं । जो सर्वेश्वर नहीं, एको न ईश्वर एक से कम का ईश्वर । कोई एक ग्राम का अधिपति, कोई दस ग्राम का अधिपति, कोई पन्द्रह ग्राम का अधिपति किन्तु सर्वाधिपति कौन होगा ? सर्वाधिपति तो वही है, जो अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक अनन्त ब्रह्माण्ड संहारक वही सर्वाधपति सर्वेश्वर है ।

अब वह सर्वेश्वर भगवान् स्वेच्छानुसार अनेक रूप धारण करते हैं । हमारे यहाँ शालग्राम वैसे भी शालग्राम को साक्षात् भगवान् का प्रादुर्भाव माना है । वृन्दा देवी ने शाप दे दिया था, श्रीकृष्णचन्द्र, परमानन्दकन्द, मदनमोहन, ब्रजेन्द्रनन्दन प्रभु ने वृन्दा को अपनाया, इस कथा को लोग बड़ी टेड़ी-मेढी समझते हैं । हम तो बहुत सुन्दर समझते हैं । हम तो जानते हैं कि कई लोग भगवान् को बहुत चाहते रहते हैं तो भी भगवान् उन्हें नहीं मिल पाते हैं । पर कई भाग्यशाली ऐसे होते हैं कि भगवान् को नहीं चाहते, ये थोड़ा परहेज करते रहते हैं और भगवान् उनको-जबर्दस्ती से अपनाते हैं तो वृन्दा जालन्धर की पत्नी थी और बड़ी सती, साध्वी, पतिव्रता थी । पर जन्म-जन्मान्तर, युग-युगान्तर, कल्प-कल्पान्तर का कोई असाधारण सम्बन्ध सर्वेश्वर प्रभु से था । तो उन्होंने उसको अपनाया, उनकी गाली भी सही, वह नहीं पसन्द करती थी, वह अपनी पतिव्रता थी और वह अपने पति में अनन्य अनुरागिणी थी, परन्तु भगवान् सर्वेश्वर ने उसको अनपाया, छल करके भी उसको ग्रहण किया । कपट से छल करके, इसका मतलब यह है कि भगवान् तो प्रियतम परम प्रेमास्पद हैं । भगवान् प्रेमी नहीं, हम कहते हैं भगवान् प्रेमी हैं, भगवान् से बढकर कौन प्रेमी, भगवान् ऐसा प्रेमी है, जो गाली सह कर भी प्रेम करता है । वृन्दा, यहाँ तक देखो वृन्दा को भगवान् ने अपनाया जन्म-जन्मान्तर, युग-युगान्तर, कल्प-कल्पान्तर के पुण्य पुञ्ज से वृन्दा को प्रभु ने अंगीकार किया, छल कपट से भी वृन्दा को अंगीकार किया । जहाँ बड़े-बड़े योगीन्द्र, मुनीन्द्र, अमलात्मा परमहंस बड़ी तपस्या करके प्रतीक्षा करते हैं, क्षण भर के लिए प्रभु के मधुर, मंगल, मनोहर, मुखचन्द्र की दिव्य रश्मि हृदय में आ जाय । प्रभु के पादारविन्द के नख मणिचन्द्रिका का एक कण हृदय में प्रकाशित हो जाय, प्रभु के मंगलमय अंग में विराजमान दामिनिद्युति विनिन्दित पीताम्बर की छटा मन में आ जाय । तो जहाँ बड़े-बड़े योगीन्द्र, मुनीन्द्र, अमलात्मा, परमहंस उसकी आकांक्षा करते हैं, वहाँ स्वयं प्रभु अपने परम भक्त को ऐसी आकांक्षा करते हैं । वह नहीं चाहता तो छल करके भी, कपट करके भी उसको अंगीकार करते हैं । उसके बाद भी फिर वह प्रभु की उपेक्षा करके सती हो जाती है, अपने पति के साथ । जालन्धर के साथ सती हो गई । सती हो जाने के बाद भी प्रभु उसकी चिता पर महीनों

लौटते रहे, चिता पर लौटते रहे । तो मतलब यह क्या प्रेम की पराकाष्ठा है । हम जिससे प्रेम करते हैं वह नहीं चाहता फिर भी हम उसको चाहते हैं । यह सबसे ऊँची प्रेम की ऊँची दशा है । हमारे तुलसीदासजी ने कहा है कि **''मांगत जल पवि पाहन डाले, जलद जन्म भरि सुरत बिसारै'' पर चातक रटन घटे घट जाहिं, बढे प्रेम सब भांति भलाई''** चातक पानी मांगता है । बादल उसको पानी न देकर के पत्थर डालता है, ओला डालता है और उसके पंख छिन्न-भिन्न हो जाते हैं । अपने प्रियतम की ओर से अपमानित होने पर भी चातक अपने प्रियतम बादल की उपेक्षा नहीं करता है । अगर उसकी रटन में कमी आ जाय, मानों प्रेम कम हो जाय, तो कहते हैं कि--**''कनकहिं बान चढे जिमि दाहे, जिमि प्रियतम पद प्रेम निभाये''** सुवर्ण जैसे अग्नि में तपता है, जितना-जितना स्वर्ण आग में दंदह्य-मान होता है उतना-उतना स्वर्ण की दिव्यातिदिव्य मूल्य की वृद्धि होती है । उसी प्रकार से प्राणी जितना-जितना अपने प्रियतम से अपमानित होता है, उतना उतना उसमें प्रेम उत्तरोत्तर बढे, यह विशेषता, तो यह भक्त की विशेषता होती है । पर यहाँ यह सब भगवान् की विशेषता दिखाई दे रही है । इसलिए भगवान् केवल प्रेमास्पद नहीं, किन्तु प्रेम के आलय भी हैं । प्रेम भी प्रभु से प्रकट होता है । दुनियाँ में जो प्रेम कहीं हैं हमारे व्रज के लोग कहते हैं **''कहि जानत श्रीवृषभानु लाड़िली, कहि जानत यह कान्हर कारो''** यह कारो कन्हैया प्रेम को जानता है । तो इसलिए **''जानत प्रीति रीत रघुराई''** यह भी कहते हैं तुलसीदासजी महाराज । तो कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रकार से भगवान् ने उसे अपनाया, फिर उसने शाप दे दिया, पत्थर हो जाओ, तो प्रभु पत्थर हो गये, वो यही पत्थर शालग्राम है। अनन्तब्रह्माण्डनायक परमात्मा सर्वेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द मदनमोहन वही शाप से पत्थर हो गये, शालग्राम । लेकिन पत्थर हो गये, पर तुलसी (वृन्दा) बिना नहीं । तुलसी वहाँ भी चाहिए । सुना **''छप्पन भोग, छत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक न मानी''**, हजार छप्पन भोग धरो– तुलसी नहीं तो फिर क्या, तो असल में बात यह है कि इसका नाम है रागानुगाप्रीति । असल में तुलसी भी भगवान् की परम अन्तरंगा, दिव्य शक्ति है । तुलसी महाशक्ति है, कोई प्राकृत असुर की पत्नी नहीं है । वो तो भगवान् की दिव्य परमान्तरंगादिव्य, वो तो एक प्रेम का लोकोत्तर प्राखर्य दिखलाने के लिये लीला है । संसार में भगवान् प्रेमालय है, भगवान् प्रेम दानी है, अनन्तानन्त प्रेम का दान करने वाले हैं । वही प्रेम के आगार हैं और वही प्रेम के सागर है, वही प्रेम के अनन्त सिन्धु हैं और उनसे ही प्रेम का वितरण होता है। सर्वत्र इस भांति प्रख्यापन करने के लिए लीला व्यक्त हुई है। वास्तव में वे दोनों एक ही हैं। कोई फर्क नहीं है । इस तरह से तत्त्व यह है कि शालग्राम यों भी स्वभाव से ही वो सर्वेश्वर होते हैं । फिर विशेष करके जो आचार्य परम्परा से जो सर्वेश्वर प्रसिद्ध है, श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में वो सर्वेश्वर हमारे यहाँ परम्परा प्रसिद्धि की भारी महिमा है । मीमांसा में विचार किया है **''राजा राजसूयेन यजेत्''** यहां राजा शब्द का क्या अर्थ है ? ''राजस्यकर्ता राजकार्य'' यह राज शब्द का अर्थ है । अथवा राज शब्द का कहां-कहां इस बात की प्रवृत्ति, सो कहा आन्ध्र प्रदेश में राज शब्द क्षत्रिय विशेष में रूढ है, इसलिए

आन्ध्र प्रसिद्धि के अनुसार राज शब्द को क्षत्रिय जाति परक मान करके कहा कि क्षत्रिय जाति का राजा हो वो राजसूय यज्ञ कर सकता है । एतावता ब्राह्मण भले ही अखण्ड भूमण्डल का सम्राट् हो पर राजसूय यज्ञ नहीं कर सकता । राजसूय यज्ञ करेगा क्षत्रिय जाति का राजा, तो वो क्षत्रिय जाति कैसे ली गई, आन्ध्र प्रसिद्धि के अनुसार । उसी तरह से हमारे निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रसिद्धि के अनुसार सर्वेश्वर कौन है ? तो शालग्राम स्वयं सर्वेश्वर है और विशिष्ट सर्वेश्वर और कौन है ? तो वो, जो परम्परा से प्राप्त है । हमारे यहाँ माना जाता है कि यह सम्प्रदाय द्वैताद्वैत सम्प्रदाय है । स्वाभाविक द्वैताद्वैत एक औपाधिक द्वैताद्वैत होता है, एक निरुपाधिक स्वाभाविक द्वैताद्वैत । स्वाभाविक द्वैताद्वैत यह सम्प्रदाय है, तो इसमें यह प्रसिद्ध ही है । भागवत वाली बात । भागवत के अनुसार भगवान् हंस का प्रादुर्भाव हुआ । स्वयं भगवान् के स्वरूप ही माने जाते हैं । यह आनन्दमय कोष का जो वर्णन है, तो कहते हैं कि ''प्रियमेव शिरः, दक्षिणः पक्षः मोदः, उत्तरः पक्षः प्रमोदः आनन्द आत्मा, ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा'', इसको जोड़ता कौन है भाई ? कौन है ? इसका पुच्छ है है ब्रह्म, तो आनन्द जो हंस भगवान् है, हंस भगवान् का जो शिर है, हंस भगवान् कोई प्राकृत वस्तु नहीं, प्राकृत पक्षी नहीं, अस्थिमांस-चर्ममय पंजर का प्राकृतिक, लौकिक, भौतिक वस्तु नहीं है । किन्तु साक्षात् अनन्त ब्रह्माण्डाधिष्ठान स्वप्रकाश परमेश्वर ही है और उनका ही शिर है, जो क्या है ? ''प्रिय'' प्रिय उनका शिर है । ''मोदः दक्षिणः पक्षः, मोद दक्षिण पक्ष है, प्रमोद उत्तर पक्ष है । आनन्द उनका आत्मा माने मध्यभाग है । ब्रह्म अखण्ड ब्रह्माण्डाधिष्ठान उसका पुच्छ है, तो इस तरह से एवं भूत वह अनन्त आनन्द और विशिष्ट आनन्द माने प्रियत्व विशिष्ट, मोदत्व विशिष्ट, प्रमोदत्व विशिष्ट, आनन्दत्व विशिष्ट और अन्ततोगत्वा सर्वाधिष्ठान ब्रह्मत्वयुक्त एवंभूत जो अद्भुत स्वरूप ब्रह्म है, वह साक्षात् आनन्दमय भगवान् हंस है । हंस भगवान् ने असल में अपनी बात कौन बताये ? भगवान् ही जान सकते हैं, **''स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तमः''** यह पुरुषोत्तम आप अपने से ही अपने को जानते हैं। दूसरा कोई आपको जान नहीं सकता है । दूसरा जब जान नहीं सकता है तो फिर वर्णन क्या कर सकता है । इसलिए वर्णन करने के लिये स्वयं प्रभु पूर्णतम पुरुषोत्तम प्रभु प्रकट हुये, हंस के रूप में, उन्होंने उस तत्त्व का वर्णन किया, तब तत्त्व वर्णन में द्वैताद्वैत सम्प्रदाय का वर्णन किया । द्वैताद्वैत सम्प्रदाय का अर्थ यह है कि--संक्षेप में समझ लो, वैसे माना जाता है कि द्वैताद्वैत परस्पर में विरुद्ध है । भावाभाव का परस्पर में विरोध होता है । घट-घटाभाव का परस्पर में विरोध होता है। घटाभाव और घट दोनों एकत्र एक ही जगह कैसे रहेगा । **''घटवत् भूतले घटाभावःकथम्''** घटवान् भूतल पर घटाभाव कैसे बन सकता है इसलिए **''द्वैतवति ब्रह्मणि अद्वैतं कथं''** अद्वैते ब्रह्मणि द्वैतं कथं'', यह सब बड़ी विप्रतिपत्ति होता है। उन सबका समाधान आचार्यों ने किया है । निम्बार्क-भाष्य, वेदान्त पारिजात सौरभ और श्रीनिवासाचार्य कृत वेदान्त कौस्तुभ । तो इन सब ग्रन्थों को देखने से बड़ी शुद्ध भाषा, ललित भाषा, गम्भीर भाषा उन सब आधारों से निर्धारण किया है कि जैसे--**''एकपयोव्रती''** जो है वो दुग्ध, दही दोनों का सेवन करता है । दधिव्रती केवल दधि का भक्षण करता है, पय भक्षण नहीं करता । दधिव्रती पय का त्याग करता

है, दधि भक्षण करता है । "**पयोव्रती**" उभय ग्रहण करता है । पयोव्रती दधि दुग्ध दोनों को ग्रहण कर सकता है । एतावता मालूम होता है कि दधित्वेन रूपेण, पयस्त्वेन रूपेण दोनों भिन्न हैं, लेकिन पयस्त्वेन रूपेण पयसा माने, पयसा गव्य है, दोनों गव्य है । गव्य की दृष्टि में दोनों पय भी और दधि भी । इसलिए दधिव्रती भी और पयोव्रती भी, दोनों बात चलती है। एक प्रकार से देखते है--"**सुवर्णं कुण्डलं**" स्वर्ण कुण्डल यह एक समानाधिकरण व्यपदेश है । जिससे मालूम होता है, स्वर्ण कुण्डल का भेद है । लेकिन "**सुवर्णे विज्ञातेऽपि किमिदम्**" ऐसी जिज्ञासा होती है, सोना तो जानते हैं सोना है, किन्तु फिर भी पूछते हैं । सोना जानने पर भी पूछते हैं "**किमिदम्**", तो मालूम पड़ता है सोना और कोई चीज है। इसलिए कुण्डलत्व, मुकुटत्व आदि रूपेण उनका भेद है । सुवर्णत्वेन रूपेण अभेद है । इसी प्रकार से ब्रह्म जो हैं, अनन्त ब्रह्माण्डाधिष्ठान स्वप्रकाश ब्रह्म वैसे अनेक स्थानों में "सर्वं खल्विमिदम् ब्रह्म" इत्यादि वाक्यों के अनुसार द्वैतवादिनी, अद्वैतवादिनी सर्व प्रकार की श्रुतियों का समन्वय, द्वैतवादिनी भी श्रुतियाँ, अद्वैतवादिनी भी श्रुतियाँ । सब प्रकार की श्रुतियों का समन्वय । भोक्तृ वर्ग और भोग्य वर्ग सभी अन्तर्यामी अनन्त ब्रह्माण्डाधिष्ठान परब्रह्म से अभिन्न है और स्वेन रूपेण भोक्तृत्वेन रूपेण, भोग्यत्वेन रूपेण पृथक् होते हुये भी ब्रह्मात्म रूपेण अभिन्न है । इस प्रकार से वही दृष्टि, यहां पर भी माना जाता है द्वैताद्वैत खाली जगत् प्रपञ्च के विवेचन में ही नहीं है । यह द्वैताद्वैत विवेचन राधा कृष्ण के विवेचन में भी है । राधाकृष्ण भी क्या है ? यही अभी आचार्यश्री ने बतलाया कि मूर्ति तो एक है, शालग्राम की प्रतिमा एक है और उसी के भीतर, चक्र के भीतर स्वरूप दो हैं, क्या मतलब ? अभेद के भीतर भेद, अभेद के भीतर का भेद यही तो स्वरूप है । माने मूर्ति एक है, एक के भीतर रेखात्मक वस्तु दो हैं। तो क्या मतलब ? अर्थात् अद्वितीय के भीतर सद्वितीय इसलिए हम देखते हैं, असल में राधा कृष्ण क्या है ? उसकी भी देखें, तो "एकं ज्योतिरभूद्द्वेधा" एक ही ज्योति ब्रह्म ज्योति, जो "ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः" तो ज्योतियों का भी ज्योति, "अन्तर्ज्योतिः", "बाह्य ज्योतिः", सूर्यचन्द्रादि बाह्य ज्योति, मन बुद्धि अहंकारादि अन्तर्ज्योति। बाह्य ज्योतिः, अन्तर्ज्योतिः सब ज्योतियों का जो प्रकाशक हो "ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः" अखण्ड अनन्त, स्वप्रकाश, अखण्ड बोध रूप भगवान् श्री सर्वेश्वर तो वो एक ही ज्योति है, वही अनन्त है, अखण्ड है, निर्विकार है, वही कूटस्थ है-। वही दो रूप में प्रकट हो गये । कौन से दो रूप ? श्रीराधामाधव । ऋग्वेद का परिशिष्ट है "राधामाधव रूपकम्"। राधारूप में, माधवरूप में वही ज्योति प्रकट हुई । मतलब क्या है ? मतलब यह है कि वो सच्चिदानन्द ब्रह्म, ज्योति जो है, ज्योति माने प्रकाशक, प्रकाशक होने से चित्, चित् बोध, बोध होने से वह अत्यन्ताबाध्य बोध है । इसलिये सत् भी है, अत्यन्ताबाध्य है, कभी बाधित नहीं हुई त्रिलोक में, इसलिए वह परम सत् है, परम सत् स्वप्रकाश है, इसलिए वह चित् है और वह सर्वोपद्रव विवर्जित है इसलिए रूप है । तो वही अनन्त सत्ता, वही अनन्त आनन्द, वही अनन्त में थोड़ा दो विभाग बन गये हैं । क्या विभाग बन गये ? सौन्दर्य सार सर्वस्व की अधिष्ठात्री राधा रानी वृषभानुनन्दिनी निकुञ्जेश्वरी के रूप में, प्रेमसार सर्वस्व का अधिष्ठातृदैवत वह श्री कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द, मदनमोहन,

व्रजेन्द्रनन्दन, अर्थात् सच्चिदानन्द में जो प्रेम और आनन्द दो विभाग थे, उनमें जो सौन्दर्यसार सर्वस्व की अधिष्ठात्री, वही तो श्रीवृषभानुनन्दिनी, प्रेमसार सर्वस्व के अधिष्ठातृदैवत वही श्रीकृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द, पर इसमें यह नहीं समझना कि सौन्दर्यसार सर्वस्व की अधिष्ठात्री भगवती राधा रानी में प्रेम नहीं या प्रेमसार सर्वस्व अधिष्ठातृदैवत श्रीकृष्ण में सौन्दर्य नहीं, नहीं नहीं । दोनों में सौन्दर्य है । दोनों में अनन्तानन्त प्रेम है । तो भी एक में सौन्दर्य प्राधान्य की विवक्षा, एक में प्रेम की प्राधान्य की विवक्षा । इस तरह से इस रस प्रेम प्राधान्य, सौन्दर्य प्राधान्य की विवक्षा से ''एकं ज्योतिरभूद्द्वेधा'' एक ही अखण्ड ज्योति, राधासर्वेश्वर वही दोनों राधासर्वेश्वर के रूप में प्रकट हुये। तो भगवान् सर्वेश्वर सबका सर्वेश्वर विशेष करके राधासर्वेश्वर। राधासर्वेश्वर माने सर्वेश्वर विषयक पूर्णानुरागरससार समुद्र राधा के हृदय में जो सर्वेश्वर विषयक पूर्णानुरागरससार समुद्र उसके मन्थन से आविर्भूत जो निर्मल निष्कलंक पूर्ण चन्द्र वही हैं कृष्णचन्द्र। राधारानी वृषभानुनन्दिनी के हृदय में जो सर्वेश्वर विषयक पूर्णानुरागरससार समुद्र उसे आविर्भूत जो निर्मल निष्कलंक सूर्यचन्द्र वही कृष्णचन्द्र और कृष्णचन्द्र के हृदय में जो राधा विषयक पूर्णानुरागरससार समुद्र। या यों समझिये यों जोड़ लीजिये संप्रयोगात्मक विप्रयोगात्मक उद्भूत उभय विध शृङ्गार रस समुद्र, राधा रानी के हृदय में कृष्ण विषयक शृंगार, कृष्ण के हृदय में राधारानी विषयक शृङ्गार, वो शृङ्गार भी ''रसो वै सः'' इत्यादि । श्रुतियों से सिद्ध है और वह रस का रूप दो है । संप्रयोगात्मक शृङ्गार, विप्रयोगात्मक शृङ्गार दुनियाँ के सामने यह समस्या है कि जिस समय प्रियतम का सम्मिलन नहीं होता, उस समय प्रियतम के सम्मिलन की उत्कट उत्कण्ठा जो होती है, प्रियतम सम्मिलन काल में नहीं । प्रियतम के विप्रलम्भ में जो उत्कट उत्कण्ठा होती है, वह प्रियतम के सम्मिलन में नहीं। तो प्रियतम विप्रलंभ जनित तीव्र ताप के अवसर में कमी रहती है । प्रियतम सम्मिलन की और प्रियतम सम्मिलन काल में कमी रहती है उस उत्कट उत्कण्ठा की । वह सारस पत्नी लक्ष्मणा इनको सम्मिलन का सुख है तो लक्ष्मणा ने चक्रवाकी को कहा कि चक्रवाकी ! तुम्हारा हृदय बड़ा कठोर है वज्र से भी अधिक कठोर तुम्हारा हृदय है । भादव की अमावस्या की अंधियारी रात्रि तुम्हारे प्रियतम नदी के इस पार, तुम नदी के उस पार, घन-घोर उमड़ रही, दामिनी दमक रही, दादुर की धुन चारों ओर सुहावनी लग रही, इस अवसर में तुम प्रियतम के विप्रयोग जनित तीव्र ताप में बच कैसे जाती हो ? जीवित कैसे रहती हो ? फिर सुखी आंखों को लेकर सवेरे प्रियतम के पास पहुँच जाती हो, तुमको शरम नहीं आती ? चक्रवाकी ने कहा– हाँ । सखी ठीक है हमारा हृदय बड़ा कठोर है, जन्म-जन्मान्तर के दुष्कृत कर्म के प्रभाव से पुण्य नहीं होता । परन्तु सखी ! प्रियतम के विप्रयोग जनित तीव्र ताप के अनन्तर प्रियतम के सम्मिलन में जो सुख होता है तो उससे वंचित नहीं, तुम उससे अपरिचित, तुमको उसका प्रियतम विप्रयोग जनित तीव्र ताप के अनन्तर प्रियतम सम्मिलन में जो सुख होता है उससे तुम अपरिचित हो जानती नहीं, इसलिए यह मूल समस्या है कि जहाँ पर प्रियतम विप्रयोग जनित तीव्र ताप की अनुभूति, वहाँ प्रियतम सम्मिलन नहीं, जहाँ प्रियतम सम्मिलन है, वहाँ प्रियतम के विप्रयोग जनित तीव्र ताप की अनुभूति नहीं । एक ही ऐसा स्थान है राधाकृष्ण का स्थान है, जहाँ जिस क्षण में चक्रवाक-चक्रवाकी जैसा व्रिपयोग जनित तीव्र ताप होता है, उससे कोटि-कोटि गुणित

चक्रवाक-चक्रवाकी के विप्रयोग से कोटि-कोटि गुणित अधिक विप्रयोग जनित तीव्र ताप है और उसी समय सारस और सारस पत्नी लक्ष्मणा के सम्प्रयोग से कोटि-कोटि गुणित अनन्त-अनन्त कोटि गुणित दिव्य सम्प्रयोग से भी, अर्थात् एक कालावच्छेदेन एक और वह भी कोई यह नहीं कि भ्रान्ति वाला, कोई रसशास्त्र के कोई भाव-विशेष द्वारा यह सब बात बनती है सो नहीं स्वाभाविक ही स्थिति है, तो इस प्रकार से क्योंकि स्वरूप ही उसका है, क्योंकि वह जो प्रेमसार सर्वस्व का अधिष्ठातृदैवत वही श्यामसुन्दर और सौन्दर्यसार सर्वस्व की अधिष्ठातृ भगवती राधारानी वृषभानुनन्दिनी दोनों का अभिन्न स्वरूप है, दोनों में प्रेम का भी प्राखर्य है, सौन्दर्य का भी प्राधान्य है यह सब होते हुए भी इसमें विशेषता यह है कि वह प्रयोगात्मक, विप्रयोगात्मक, उद्बुद्ध, उद्वेलित एक तो होता है, जहां विप्रलम्भ होता है वहां सम्भोग नहीं, जहाँ सम्भोग होता है वहां विप्रलम्भ नहीं और होवे भी तो मान लिया एक में ज्वार तो एक में भाटा होवे। सम्भोग समुद्र में ज्वार, तो विप्रलम्भ समुद्र में भाटा, या विप्रलम्भ समुद्र मेंज्वार होवे तो सम्भोग समुद्र में भाटा, वह तो दोनों सम्प्रयोगात्मक, विप्रयोगात्मक उद्बुद्ध उभयविध उद्वेलित, उद्वेलित अवस्था में तो सम्प्रयोगात्मक, विप्रयोगात्मक, उद्बुद्ध, उद्वेलित, उभयविध, शृङ्गाररससार समुद्र उस शृङ्गाररससार समुद्र से आविर्भूत जो राधारानी के हृदय में सम्प्रयोगात्मक, विप्रयोगात्मक, उद्बुद्ध उद्वेलित, उभयविध, शृङ्गाररससार सर्वस्व वह तो कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द और जो कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द के हृदय में जो राधारानी विषयक सम्प्रयोगात्मक, विप्रयोगातमक, उद्बुद्ध, उद्वेलित, उभयविध, शृङ्गाररस समुद्र उसका सार सर्वस्व वह राधारानी, वृषभानुनन्दिनी, इसलिए बोल सकते हो उभय-उभय भावात्मा, उभय-उभय रसात्मा, उभय-उभय भावात्मा दोनों-दोनों के भाव रूप हैं । दोनों-दोनों के रस स्वरूप हैं इसीलिए भीतर ही भीतर से भी, बाहर से भी, भीतर से भी, बाहर से भी, माने भीतर से भी श्रीकृष्ण, यह स्पष्ट हुआ, कृष्णचन्द्र, परमानन्दकन्द स्वयं रसमय हैं । राधारानी वृषभानुनन्दिनी स्वयं रसमय है, लेकिन रसस्वरूप कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द के भीतर राधारानी वृषभानुन्दिनी रसस्वरूपा वृषभानुनन्दिनी राधारानी के भीतर कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्दमदनमोहन इसलिए भीतर भी कृष्णचन्द्र परमा-नन्दकन्द हैं और बाहर भी। ''यः श्रवसोः'' कुवलयं अक्ष्णोरञ्जनं, उरस महेन्द्रोमणिदाम, वृन्दावनतरुणीनां मण्डलमखिलं रञ्जयति'' मतलब क्या ? अर्थात् भीतर तो श्यामसुन्दर ब्रजेन्द्रनन्दन है ही हैं । अन्तरात्मा में, अन्तःकरण में, प्राणों में, रोम-रोम में, मदनमोहन, श्यामसुन्दर, ब्रजेन्द्रनन्दन सर्वेश्वर हैं ही। लेकिन बाहर भी उनके कानों में जो नील कमल का कुण्डल है, नील कमल के कुण्डल के रूप में कृष्णचन्द्र, परमानन्दकन्द ही विराजमान है, अंग में जो नील साड़ी, नहीं नीलाम्बर वो नीलाम्बर कोई प्राकृत नीलाम्बर नहीं, कृष्णचन्द्र परमानन्दकन्द मदनमोहन ही नीलाम्बर बन कर विराज-मान हैं । उरोजों में मृगमद के रूप में भी श्यामसुन्दर ब्रजेन्द्रनन्दन कृष्णचन्द्र ही विराजमान हैं, इन्द्रनीलमणि चूड़ियों के रूप में, नयनों में अञ्जन, अञ्जन क्या ? लगाती करिखा कालः कालः करिखा करिखा क्या लगती ? बोलो मदनमोहन श्यामसुन्दर ब्रजेन्द्रनन्दन के पादारविन्द का जो पराग है, जो दिव्य पराग वही तो अञ्जन उनका, इसलिए ''अक्ष्णोरञ्जनं'' आंखों में अञ्जन ''उरसो महेन्द्रमणिदाम'' उरः स्थलः में जो महेन्द्रमणि की माला तो ''श्रवसोः कुवलयम्'' ''अक्ष्णोरञ्जनम्'' किं

बहुना वृन्दावनतरुणीनां मण्डनमखिलम्। इतना मण्डन है, भूषण है, अलङ्कार है, सब श्यामसुन्दर, व्रजेन्द्रनन्दन मदनमोहन ही हैं । इसी तरह से प्रभु के मंगलमय अंग में पीताम्बर कौन है, राधारानी वृषभानुनन्दिनी ही पीताम्वर बनी, वो कुंकुममिश्रित हरिचन्दन के रूप में कौन विराजमान है ? राधारानी वृषभानुनन्दिनी, गौर तेज संवलित श्याम तेज और श्याम तेज संवलित गौर तेज इस तरह से गौर तेज और श्याम तेज का जो एक अद्‌भुत सम्मिश्रण है, मिलन है, यह द्वैताद्वैत ही तो है, अद्वैत भी है, द्वैत भी है, खाली अद्वैत हो तो स्वाद कहां आवे, जो खाली द्वैत हो तो स्वाद कहाँ आवे । इसलिए द्वैताद्वैत रूप ही यह उपासना है, इसलिए इस उपासना के अभिप्राय से श्री आचार्यचरणों ने बड़ी ऊँची बातें कहीं हैं । तो इसलिये वो जो कुछ भी हमारी परम्परा, अनादि अविच्छिन्न परम्परा, आचार्य परम्परा का सिद्धान्त ही सिद्धान्त मान्य होता है, आचार्य परम्परा का ही वेद-वेद मान्य होता है, आचार्य परम्परा का ही मंत्र गोपालमन्त्रादि मन्त्र मान्य होता है, एक सज्जन अंग्रेज ने किसी पण्डित से कहा– महाराज जरा गायत्री मन्त्र बताओ। पण्डितजी ने कहा तुमको अधिकार नहीं है गायत्री का, अंग्रेज ने कहा महाराज यही तो है देखो हमको तो कण्ठ है यही गायत्री है न, कहा नहीं, गायत्री ही नहीं । यह क्या है ? बोले हम कहेंगे तुम सुनोगे तब वह गायत्री बनेगी । ''अनुश्रव'' वेद का नाम अनुश्रव, अनुश्रव माने गुरोर्मुखात्, अनुश्रूयते इति अनुश्रवो वेदः, इसलिये गुरूच्चारणानुच्चारण गुरु उच्चारण के अनुच्चारण होता है वह वेद बनेगा । इसलिए मन्त्र तो जब हमें आचार्य परम्परा से प्राप्त होगा, आचार्यश्री बतलायेंगे तब वह मन्त्र-मन्त्र होगा, अन्यथा तो क, ख, ग, घ का एक समूह है, इकट्ठा होगा, उसमें क्या रखा है, तो इन दृष्टियों से उसी आधार पर जैसे आचार्य ने वो सब किया मन्त्र उपदेश, ज्ञान उपदेश, द्वैताद्वैत सम्प्रदाय उपदेश, तैसे ही उपास्य का स्वरूप, उपासना करने की माने एक सांगोपांग विधि तो इत्थं उपास्य स्वरूप भी देना,मन्त्र स्वरूप बतलाया सिद्धान्त स्वरूप बतलाया । सिद्धान्त स्वरूप मन्त्र स्वरूप बतलाने के बाद में किसकी उपासना करना उपास्य का एक पुञ्जीभूतरूप हमारे यहाँ मानते हैं सिद्धान्त में (भेदाभेद है) जहां-तहां लेकिन कहते हैं ''पुञ्जीभूतं प्रेम गोपाङ्गनानां'' एकीभूतं गुप्तवित्तं श्रुतीनाम् । श्यामीभूतं ब्रह्म मे सन्निधत्ताम्'' जो कि श्रुतियों का गुप्त इकट्ठा हो गया हो जैसे गोपांगनाओं का प्रेमपुञ्ज जो इकट्ठा हो गया है ''मूर्तीभूतं भागधेयं यदूनाम्'' यदुओं का भागधेय मानों एकत्रित हो गया है, मानों वही वेदान्त वेद्य अखण्डसच्चिदानन्दघन भगवान् सर्वेश्वर वो ही सर्वेश्वर शालग्राम के रूप में भगवान् हंस ने सनकादिकों को प्रदान किया, सनकादिकों ने उसी को नारदजी को प्रदान किया, नारदजी ने उसी को निम्बार्क महाप्रभु को प्रदान किया । उनकी परम्परा से जो बात चली आ रही है हम लोग उसी सिद्धान्त को मानते हैं क्योंकि परम्परावादी हैं, हम लोग सम्प्रदायवादी हैं, हम लोग, हम सम्प्रदाय नाम से डरते नहीं, आज कल लोग कहते हैं साम्प्रदायिक साम्प्रदायिकता है तुम पागल हो तुम सम्प्रदाय का अर्थ ही नहीं जानते ।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित श्रीनिम्बार्क पाक्षिक पत्र का विशेषांक ''श्रीसर्वेश्वर अंक'' बहुत ही सुन्दर एवं उपादेय है । भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु से यही प्रार्थना है कि इस अंक के प्रचार-प्रसार द्वारा अधिकाधिक लोक कल्याण हो ।

* * *

✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्

— युवराज श्रीश्यामशरणदेव

श्रीनिम्बार्क भगवान् ने जगत् कल्याण हेतु ''वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी'' की रचना की। इसके अष्टम श्लोक में आपने भगवत् शरणागति के विषय में उपदेश किया है–

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्, संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात्।
भक्तेच्छ्योपात्तसुचिन्त्यविग्रहादचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात्॥

अकारण करुणावरुणालय लीलाधारी भगवान् श्रीकृष्ण, जो कि ब्रह्म, शिवादि वन्दित हैं, उनके युगल पादारविन्द के अतिरिक्त जीव की गति (गम्यते प्राप्यते अनया) अर्थात् मार्ग दृष्टिगत ही नहीं है। जीव का अवलम्ब केवल प्रभु शरणागति ही है। शरणागति का समुत्कर्ष बताते हुए भगवान् स्वयं कहते हैं—
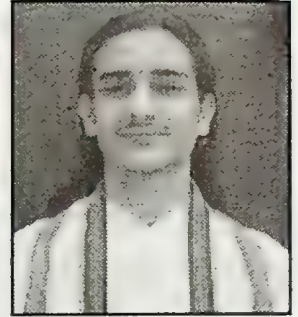
सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

हे अर्जुन! सभी धर्म अर्थात् यज्ञ, दान, तप, दर्श–पौर्णमासी आदि कर्मों के अङ्ग-उपाङ्गों की फलाशा छोड़कर, साथ ही उन कर्मों के करने न करने से गुण दोष की ओर ध्यान न देकर मेरी शरण में आ जावो। मैं माया सम्बन्धी गुणत्रय रहित, अनन्त कल्याणमय ज्ञान, बल, ऐश्वर्य आदि गुणों से परिपूर्ण हूँ। चराचर जगत् का नियन्ता, सच्चिदानन्द स्वरूप, ब्रह्म-शिवादिवन्दित, मुमुक्षु साधकों का उपास्य और प्राप्तव्य भी मैं ही हूँ। हे कुन्तीनन्दन! आनुकूल्य संकल्प, प्रातिकूल्य वर्जन, गोप्तृत्वशरण, रक्षिष्यतीति विश्वास, आत्मनिक्षेप, कार्पण्य इन छः अङ्गों सहित शरणागति को ध्यान में रखकर निरन्तर गंगाप्रवाहवत् प्रेमानुराग के साथ चिन्तन करते हुए मेरी शरण में आजा। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश तब ही किया था जब अर्जुन ने **''शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्''** कहा था। अर्थात्– मैं शिष्य भाव से आपकी शरण में आया हूँ, मुझे उपदेश करें। प्रभु कहते हैं– मैं जीव को तभी अपनाता हूँ, जब जीव मुमुक्षु भाव से मेरी शरण में आता है। जिस प्रकार माता अपने बालक को क्रीड़ा के विभिन्न साधनों में व्यस्त करके अपने गृह-कार्य में संलग्न हो जाती है, बालक उन साधनों में व्यस्त होकर माता को विस्मृत कर देता है। परन्तु जब उसे पुनः माता की स्मृति होती है, तब वह समस्त साधनों को छोड़कर रोने लगता है और माता के लिये व्याकुल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार प्रभु जीव को नाना प्रकार के भौतिक साधनों का प्रलोभन देकर उसी में व्यस्त कर देते हैं और जीव को सांसारिक मोह में व्यस्त देख स्वयं भी निश्चिन्त हो जाते हैं। परन्तु जब जीव को वास्तविकता का ज्ञान होता है, तब वह सभी भौतिक साधनों और सांसारिक बन्धनों का त्याग करके निर्लिप्त भाव से प्रभु की शरण में चला जाता है। तब प्रभु उसे अपनी शरणागति प्रदान करते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम कहते हैं—

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम॥

अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा जो कोई भी प्राणी एक बार भी प्रभो! मैं आपका हूँ, आपकी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा कीजिए, ऐसा कहता है, उसको मैं अभयदान देकर अपने पास रखता हूँ, यह मेरा व्रत है। इत्यादि शास्त्रीय वचन शरणागति की सर्वोत्कृष्टता प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। समस्त चराचर जगत् के जीवों के लिये समान रूप से अपनाये जा सकने वाले ''शरणागति'' धर्म से सरल और क्या हो सकता है।

आचार्यप्रवर श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी द्वारा प्रणीत ''श्रीयुगलशतक'' का यह प्रारम्भिक पद इस प्रसङ्ग में सतत ध्येय व गेय है।

मदनगोपाल शरण तेरी आयो।
चरण कमल की सेवा दीजे, चेरो करि राख्यो घर जायो॥
धनि-धनि मात पिता सुत बन्धु, धनि जननी जिन गोद खिलायो।
धनि धनि चरण चलत तीरथ को, धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो॥
जे नर विमुख भये गोविन्द सों, जन्म अनेक महा दुःख पायो।
'श्रीभट्ट' के प्रभु दियो अभय पद, यम डरप्यो जब दास कहायो॥

इसी प्रसंग में अस्मद्गुरुवर्य प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी श्री 'श्रीजी' महाराजश्री ने कितना सुन्दर भाव व्यक्त किया है —

सर्वेश्वर! तव शरणापन्नः।
सर्वनियामक! सर्वाधारक! सर्वशरण्य! सदाऽस्मि विपन्नः॥
परम दयामय! रसरसिकेश्वर! कामादिकरिपुकवलितछिन्नः।
अहो मुरारे! कुञ्जविहारिन्! प्राकृतधिषणा भङ्गैः स्विन्नः॥
अयि करुणार्णव! द्रुतमनुकम्पय संसृतितापैरतिशय-खिन्नः।
''श्रीराधासर्वेश्वरशरणः'' त्वत्पदपङ्कज - सुरति - प्रसन्नः॥

हे सर्वेश्वर! मैं आपके शरणागत हूँ। हे सर्वनियन्ता सर्वाधार शरण्य! मैं सदा सांसारिक विपत्तियों से संत्रस्त हूँ। हे परम दयालो! रसरसिकेश्वर! मैं कामादिक षट् शत्रुओं का ग्रास बनकर छिन्नभिन्न हो रहा हूँ। अहो हे! मुरारे! श्रीनिकुञ्जविहारिन्! मैं प्राकृतबुद्धि की प्रबल तरङ्गों से प्रताडित हूँ। अतः हे करुणा के समुद्र! आप शीघ्र ही मेरे ऊपर अनुकम्पा करो। कारण कि मैं संसार तापानल से संतप्त होकर महादुःखी हूँ। श्रीआचार्यचरण कह रहे हैं कि हम इन सांसारिक प्रपञ्चों में भी आपके श्रीचरणों में अनुरक्त हो, परम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ – सलेमाबाद
किशनगढ़ जि. अजमेर (राजस्थान)

वेदान्त दर्शन में निम्बार्कीय द्वैताद्वैत प्रस्थान का वैशिष्ट्य

–पं. श्रीवैद्यनाथ झा

जन्मना न्यायशास्त्रज्ञं वेदान्ताद्वैतपण्डितम् ।
द्वैताद्वैतप्रियं किन्तु गुरुं वन्दे भगीरथम् ॥

श्रुति, स्मृति, पुराण आदि शास्त्रों में दर्शन-शास्त्र का सर्वाधिक महत्त्व है । भारत अपने दर्शन-शास्त्र के कारण ही आज 'विश्वगुरु' कहलाता है । **'दृश्यते अध्यात्मतत्त्वम् अनेन इति दर्शनम्'** जिससे आत्मा-परमात्मा, जीव-जगत्, सृष्टि-प्रलय, बन्धन-मोक्ष तथा परलोक-पुनर्जन्म आदि परोक्ष तत्त्वों के वास्तविक स्वरूप का परिज्ञान होता है, या उनका अपरोक्ष साक्षात्कार होता है, उसे दर्शन कहते हैं । उक्त विषयों पर जितना गहन एवं गम्भीर विवेचन, चिन्तन हमारे दर्शनाचार्यों, ऋषियों-महर्षियों ने किया है, उतना विश्व की किसी भी संस्कृति या धर्म में नहीं हुआ है ।

आस्तिक-नास्तिक इनके दो मुख्य भेद माने गये हैं । जो दर्शन अनादि 'अपौरुषेय' दिव्य भगवद् वाणी रूप वेद के आधार पर अपना विवेचन प्रस्तुत करते हैं, वे **आस्तिक दर्शन** कहलाते हैं । जो दर्शन श्रुति, स्मृति-पुराण प्रमाणों को न मानकर केवल प्रत्यक्ष प्रमाण या श्रुति विरुद्ध तर्क के आधार पर अपने मनमाने ढंग से उक्त अतीन्द्रिय तत्त्वों के सम्बन्ध में अपनी मान्यताओं की स्थापना करते हैं, वे **नास्तिक दर्शन** कहलाते हैं । जैसे चार्वाक, जैन तथा बौद्ध (सौत्रान्तिक, वैभाषिक, योगाचार तथा माध्यमिक) आदि। सच तो यह है, जो दर्शन आत्मा को ही नहीं मानता या उसे क्षणिक, विनाशी, परिणामी या शून्य रूप मानता है, जो शरीर को ही आत्मा, मरण को ही मोक्ष एवं **यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्** का सिद्धान्त मानता है, वह दर्शन कहलाने के योग्य ही नहीं है ।

आस्तिक दर्शनों में न्याय, वैशेषिक, साङ्ख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त प्रमुख माने गये हैं । हमारे यहाँ **नास्तिको वेदनिन्दकः** के अनुसार वेद को नहीं मानने वाला ही नास्तिक माना गया है । वेद भगवान् की यह असाधारण विशेषता है कि वेद के विरुद्ध ईश्वर की भी वाणी हमारे यहाँ अग्राह्य है। **विरोधे त्वनपेक्षं स्यादसति ह्यनुमानम्** यह मीमांसा सूत्र है । इतना ही नहीं, ईश्वर को न मानने पर भी वेद को मानने वाला हमारे यहाँ आस्तिक होता है और ईश्वर को मानने पर भी वेद को नहीं मानने वाला नास्तिक कहलाता है । यही कारण है कि सांख्य-दर्शन ईश्वर को न मानने पर भी वेद की प्रामाणिकता मानने के कारण आस्तिक-दर्शन तथा बौद्ध-दर्शन बुद्ध भगवान् को मानने पर भी वेद को न मानने के कारण नास्तिक दर्शन कहलाता है । वेदरूप के विषय में रवि की तरह स्वप्रतिपाद्य के विषय में निरपेक्ष प्रमाण माना जाता है । अर्थात् उसे अपने प्रतिपाद्य की प्रामाणिकता के लिए प्रमाणान्तर की

अपेक्षा नहीं होती, **वेदस्य निरपेक्षं प्रामाण्यं रवेरिव रूप-विषये** (श्रीशंकराचार्य) इसीलिए वेद-उपनिषद् पर आधारित आस्तिक दर्शन का हमारे यहाँ सर्वाधिक महत्त्व है ।

इन आस्तिक दर्शनों में भी न्याय, वैशेषिक तथा योग एवं वेदान्त ये चार दर्शन ही ईश्वरवादी हैं। सांख्य और मीमांसा की प्रसिद्धि निरीश्वरवादी रूप में ही है । (यद्यपि मीमांसा और सांख्य को भी कतिपय विद्वानों ने ईश्वरवादी माना है ।) आस्तिक दर्शनों में न्याय, वैशेषिक प्राथमिक दर्शन हैं । न्याय-वैशेषिकों के सामने मुख्य प्रतिद्वन्द्वी चार्वाक आदि नास्तिक ही थे, जो वेदादि शास्त्रों को न मानकर तर्क के आधार पर ईश्वरवादी एवं शरीरातिरिक्त आत्मवाद का खण्डन करते थे । इसलिए न्याय दर्शन ने सबसे पहले इन पर ही अपना प्रहार किया । तर्कवादी चार्वाक आदि को न्याय दर्शन ने अपने अमोघ तर्कों द्वारा उनके शरीरात्मवाद का खण्डन कर शरीरातिरिक्त शाश्वत आत्मवाद की सिद्धि की तथा विविध विचित्र संस्थान सम्पन्न इन सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ ईश्वर की शाश्वत सत्ता को अनेकानेक अकाट्य युक्तियों द्वारा सिद्ध किया । वेदों की प्रामाणिकता तथा बौद्ध आदि नास्तिकों से वैदिक आत्मवाद की रक्षा के लिए न्यायशास्त्र का जो योगदान है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है । महानुभावों का कथन है कि वैदिक धर्म, वैदिक आत्मवाद की रक्षा के लिए जहाँ भगवान् श्रीशंकराचार्य ने उन बौद्धों से बगल से टक्कर लिया, वहाँ न्याय दर्शन के महामनीषी आचार्यों ने उनसे सीधा टक्कर लेकर उन्हें परास्त किया अर्थात् वे नास्तिक जहाँ तर्क के आधार पर वैदिक आत्मवाद, ईश्वरवाद का खण्डन करते थे, वहाँ इन नैयायिकों ने तर्क से उनका मुँह तोड़ उत्तर देकर (सीधा टक्कर लेकर) उन्हें परास्त किया और वैदिक आत्मवाद की ध्वजा सारे विश्व में फहरायी । इन नैयायिकों में न्यायसूत्रकार महर्षि गौतम, (मिथिला) भाष्यकार वात्स्यायन, वार्तिककार उद्योतकर, न्यायवार्तिक तात्पर्यकार वाचस्पतिमिश्र, न्या० वा० तात्पर्य परिशुद्धिकार उदयनाचार्य (ये सभी मिथिला निवासी मैथिली ब्राह्मण थे) आदि महामनीषी दार्शनिक जगत् में सुप्रसिद्ध हैं । आचार्य उदयन ने न्याय-कुसुमाञ्जलि नामक ग्रन्थ में ईश्वर की सिद्धि के लिए जो अकाट्य युक्तियाँ प्रदर्शित की हैं, उनके सामने सबको नतमस्तक होना पड़ता है। यदि कहें कि तर्क द्वारा ईश्वर सिद्धि का इससे बढ़कर दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी ।

तर्क के आधार पर जितनी बातें सिद्ध हो सकती थीं, न्याय ने उतना ही काम किया । तर्क से आत्मा के दो भेद सिद्ध होते हैं-जीवात्मा व परमात्मा । न्याय शास्त्र ने आत्मा के दो भेद माने-जीव और ईश्वर । आत्मा को ज्ञानाधिकरण तथा प्रतिशरीर भिन्न माना । सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् परमात्मा को एक माना, सगुण निराकार माना । तर्क से सृष्टि का आरम्भवाद सिद्ध होता है, अतः उसने परमाणु से सृष्टि माना, परमाणुओं को उपादान, ईश्वर को निमित्तकारण । दो परमाणुओं से सृष्टि का विस्तार माना तथा उसे आरम्भवाद नाम दिया । संसार में प्राणीमात्र दुःखों से छुटकारा चाहते हैं । अतः उसने तर्क के आधार पर दुःख निवृत्ति को ही 'मोक्ष' माना । जैसा कि संसार के अधिकांश लोग दुःखनिवृत्ति को ही परम पुरुषार्थ मानते हैं, जैसे सांख्य, योग, जैन, बौद्ध इत्यादि । परन्तु मोक्ष का परम स्वरूप क्या है, इसका निर्णय

करना उसका काम नहीं है । उसने प्रथम दृष्ट्या तर्क से जितनी बातें सिद्ध हो सकती थीं, नास्तिकों को समझाने के लिए, उन्हें नास्तिक से आस्तिक बनाने के लिए जितनी आवश्यकताएँ थीं, उतनी बातें बतलायी। उक्त तत्त्वों का वास्तविक स्वरूप जताना या बताना वेदान्त-दर्शन का काम है, क्योंकि अध्यात्म के विषय में निर्णायक दर्शन वेदान्त-दर्शन ही है ।

इसी तरह सांख्य-दर्शन का मुख्य कार्य प्रकृति-पुरुष का विवेक, प्रकृति के तीन गुणों सत्त्व, रज, तम का स्वरूप एवं कार्य का वर्णन मुख्य ध्येय है, इसी प्रकार योग का मुख्य विषय चित्तवृत्ति का निरोध तथा तदुपयोगी यम, नियम आदि अष्टाङ्ग योग का वर्णन करना है । मीमांसा दर्शन का मुख्य कार्य, यज्ञ, यागादि कर्मकाण्डों का स्वरूप, लक्ष्य तथा तत्सम्बन्धी समस्त इतिकर्तव्यताओं को बताना ही मुख्य विषय है । वैदिक यज्ञ-यागादि कर्मकाण्ड ईश्वर की आराधना के लिए विहित हैं-**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्** पहले लोग यज्ञ-यागादि द्वारा ही भगवान् की आराधना करते थे । यज्ञ से भगवान् की ही आराधना होती है **अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च** । अतः मीमांसा दर्शन ने यज्ञ के द्वारा प्रभु की आराधना किस प्रकार की जाय, इस पर विशेष ध्यान दिया । इस दृष्टि से मीमांसा दर्शन की नितान्त उपयोगिता है ।

सारांश यह है कि जीव, जगत्, ईश्वर आदि तत्त्वों के निर्णायक स्वरूप का निरूपण वेदान्त दर्शन में ही हुआ है । अतः उक्त अध्यात्म तत्त्वों का निर्णयात्मक स्वरूप जानने के लिए वेदान्त दर्शन का ज्ञान परमावश्यक है । यह भारतीय वैदिक संस्कृति का सिद्धान्त है ।

वेदान्त का अर्थ है, वेद का अन्तिम भाग अर्थात् उपनिषद् या वेद का ज्ञानकाण्ड । वेद की प्रत्येक शाखा में एक-एक उपनिषत् होती है, इस प्रकार यदि उपनिषदों की संख्या ११ सौ से भी कुछ अधिक होती है, तो दौर्भाग्य-वश आज केवल १०८ उपनिषदें ही उपलब्ध हैं, जिनमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक तथा श्वेताश्वतर आदि ११ उपनिषदें प्रसिद्ध है एवं सर्वमान्य हैं । इनके अलावा **श्रीगोपाल तापिनी उपनिषद्** भी श्रीकृष्ण भक्ति के लिए अत्यन्त उपादेय है । यह अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा की उपनिषद् है। इसी में **श्रीनिम्बार्कीय उपास्य अष्टादशाक्षर मन्त्रराज हैं** ।

ब्रह्मसूत्र के सभी भाष्यकारों ने इन्हीं उपनिषदों के आधार पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, अपनी मान्यताएँ स्थापित की हैं । इन उपनिषदों में भी आत्मा, परमात्मा, जीव-जगत्, सृष्टि, परलोक-पुनर्जन्म तथा मोक्ष आदि का वास्तविक स्वरूप निरूपित है । ये उपनिषदें अत्यन्त गम्भीर, निगूढ एवं ईश्वरीय भाषा में उपनिबद्ध होने के कारण इनका वास्तविक रहस्य समझना सर्वसाधारणजनों की बुद्धि से बाहर है। अतः प्राणी मात्र के अहैतुक हितचिन्तक अष्टादश पुराण रचयिता महर्षि भगवान् वेदव्यास ने इन उपनिषदों का वास्तविक रहस्य, मर्म तथा इनका मुख्य प्रतिपाद्य बताने के लिए कलियुगी मन्दमति प्राणियों के

कल्याण के लिए लगभग साढे पाँच सौ सूत्रों (वे. कौ. प्रभा के अनुसार ५४९ सूत्र) में एक ब्रह्मसूत्र नामक अति महत्त्वपूर्ण सर्वोपरि रहस्यमय शास्त्र का प्रणयन किया । इनके एक-एक अधिकरण में वेदान्त के तत्-तत् प्रकरण का सारगर्भित भाव समझाया गया है । उदाहरणार्थ ब्रह्मसूत्र के ईक्षत्यधिकरण में छान्दोग्य की सद्‌विद्या का भावार्थ समझाया गया है। वहाँ सन्देह होता है **सदेव सौम्येदम्** में सत् शब्द से जड़ प्रधान लेना चाहिए या चेतन ब्रह्म ? तो व्यासजी ने अपने ईक्षत्यधिकरण के ८ सूत्रों द्वारा निर्णय दिया कि वहाँ सत् शब्द से चेतन परमात्मा ही ग्राह्य है न कि जड़ प्रकृति। इसी तरह तैत्तिरीय उपनिषद् के रस विवरण में आनन्द मय शब्द से जीवात्मा का ग्रहण हो, प्रकृति का या परमात्मा का, इस जिज्ञासा में व्यासजी ने अपने ब्रह्मसूत्र के आनन्दमयाधिकरण के ८ सूत्रों द्वारा निश्चित किया है कि वहाँ आनन्दमय शब्द से परमात्मा ही लेना चाहिए, न कि जीव या प्रधान । इसी तरह समन्वयाध्याय नामक प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में समस्त कारण वाक्यों का परमात्मा में समन्वय बताया गया है तथा उसके द्वितीय पाद में स्पष्ट जीव लिङ्गक तथा स्पष्ट जीव लिङ्गक वाक्यों एवं चतुर्थ पाद में अब्रह्मात्मक प्रधान कारणवाद संशयात्मक वाक्यों का ब्रह्मात्मक प्रधान कारणवाद में समन्वय दिखाया गया है।

द्वितीय अविरोधाध्याय के प्रथमपाद में ब्रह्मकारणवाद के अन्तर्गत नास्तिकों द्वारा अथवा प्रधान परमाणुवादी आस्तिकों द्वारा उपस्थापित विरोध का बोधगम्य युक्तियों से निराकरण करके ब्रह्म कारणवाद का समर्थन किया गया है । इस अध्याय के द्वितीय पाद में कापिल मत तथा अक्षपाद मत में युक्तियुक्त विरोध प्रदर्शित कर उन मतों में असारता का प्रतिपादन किया गया है । इसके तृतीय पाद में आकाशादि भूतों की उत्पत्ति बताने वाली श्रुतियों का परस्पर अविरोध तथा जीव तत्त्व का निरूपण है । इस अध्याय के चतुर्थ पाद में जीव के करण इन्द्रिय आदि के सम्बन्ध में श्रुतियों में प्रतीयमान विरोध का परिहार किया गया है ।

तृतीय अध्याय-साधनाध्याय के प्रथम पाद में साधक जीव के संसार से विरक्ति उत्पादन के लिए जागतिक दोषों का वर्णन तथा द्वितीय पाद में परमात्मा में अनुराग वृद्धि के लिए उनके दिव्य गुणों का वर्णन किया गया है। तृतीय पाद में ब्रह्म की उपासना में भेदाभेद का विचार तथा उनमें गुणोपसंहार एवं अनुपसंहार का वर्णन किया है। चतुर्थपाद में विद्या से पुरुषार्थ (मोक्ष) होता है या कर्म से ? ऐसी शंका करके विद्या से ही पुरुषार्थ होता है, इसका निर्णय प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय-फलाध्याय में प्रथम पाद में साधनावृत्ति का निश्चय है । द्वितीय पाद में उत्क्रान्ति का विचार है । तृतीय पाद में अर्चिरादि मार्ग का वर्णन एवं चतुर्थपाद में ब्रह्म प्राप्त जीव के स्वरूप (मोक्षदशा) का निरूपण किया गया है ।

इस प्रकार वेदान्त (उपनिषद्) की वास्तविक प्रतिपाद्य वस्तु तथा रहस्य की जानकारी देने के लिए भगवान् व्यास ने ब्रह्मसूत्र की रचना कर मन्दमति प्राणियों का महान् उपकार किया है । वास्तव में ब्रह्मसूत्र

जैसा शास्त्र श्रीमद्-भगवद्गीता के बाद दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है । मुझे तो ब्रह्मसूत्र पूरा 'भक्ति' सूत्र प्रतीत होता है । उपलब्ध समस्त भक्ति सूत्रों में यह सर्वोपरि सर्वाङ्ग परिपूर्ण भक्तिसूत्र है, जिसमें, जीव, जगत्, ईश्वर के सम्पूर्ण स्वरूपों के निरूपण के साथ सर्वत्र भक्ति आराधना, उपासना की ही चर्चा है । परात्पर परमात्मा में प्रेम बढ़ाने के लिए ब्रह्मसूत्र से बढकर कोई अन्य शास्त्र नहीं है । सारांश है कि जीव, ईश्वर, उपासना, भक्ति, प्रपत्ति आदि की सम्पूर्ण जानकारी ईश्वर में प्रीति वृद्धयर्थ, उपनिषत्, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता के समान विश्व में कोई ग्रन्थ नहीं है । इसीलिए इसे **प्रस्थानत्रयी** कहते हैं । 'प्रस्थानत्रयी' से बढकर कोई प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं है । वास्तव में ये ही तीन ग्रन्थ मुख्य वेदान्त हैं । आजकल वेदान्त के विषय में भी अधिकांश जन भ्रान्त दीखते हैं । ये वेदान्त शब्द से भाष्य विशेष को ही वेदान्त समझते हैं, वेदान्त अर्थात् शांकर या रामानुज भाष्य । ये भाष्य ब्रह्मसूत्र आधारित हैं, उन्हीं की व्याख्या है । अतः ये भी वेदान्त कहे जा सकते हैं अथवा वेदान्त हैं, इसमें कोई मतभेद नहीं, परन्तु यही वेदान्त है, ऐसा नहीं, असली वेदान्त--**उपनिषत्, ब्रह्मसूत्र एवं गीता** ही है । विद्वानों को चाहिए कि भाष्य विशेष का आग्रह छोड़कर उक्त प्रस्थानत्रयी का शब्द मर्यादया लभ्यमान स्वारसिक अर्थों पर आधारित वस्तु तत्त्व पर विचार करें और देखें कि गीता और ब्रह्मसूत्र सीधे-सीधे क्या कहते हैं । उनका तोड़-मरोड़ न करें, उस समय सभी भाष्यों को छोड़ दें, केवल ब्रह्मसूत्र देखें । ब्रह्म-सूत्र तथा गीता का दृष्टिकोण साफ है, बिलकुल स्पष्ट, इतना स्पष्ट, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, पर खेद है कि बड़े-बड़े विद्वानों ने भी साम्प्रदायिक दुराग्रह के कारण ब्रह्मसूत्र व गीता के अभिप्राय का इतना तोड़-मरोड़ किया, जितना शायद किसी अन्य ग्रन्थ के साथ परिलक्षित नहीं होता । यहाँ ब्रह्मसूत्र एवं गीता का स्वारस्य उन्हीं के शब्दों में सुनना व मनन करना चाहिए --

आज ब्रह्मसूत्र पर आधारित आचार्यों के निम्नाङ्कित मतवाद प्रसिद्ध हैं--

क्र.	आचार्य	सिद्धान्त	समय
०१.	श्रीनिम्बार्काचार्य	स्वाभाविक भेदाभेद	द्वापर युग का अन्त
०२.	श्रीशंकराचार्य	केवलाद्वैत	आठवीं सदी
०३.	श्रीरामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैत	ग्यारहवीं सदी
०४.	श्रीभास्कराचार्य	औपाधिक भेदाभेद	दसवीं सदी
०५.	श्रीमध्वाचार्य	भेदवाद	बारहवीं सदी
०६.	श्रीकण्ठ	शैवविशिष्टाद्वैत	तेरहवीं सदी
०७.	श्रीपति	वीरविशिष्टाद्वैत	चौदहवीं सदी
०८.	श्रीवल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैत	सोलहवीं सदी
०९.	श्रीविज्ञानभिक्षु	अविभागाद्वैत	सोलहवीं सदी
१०.	श्रीबलदेव	अचिन्त्य भेदाभेद	अठारहवीं सदी

इनमें यहाँ उक्त सब पर विचार न कर केवल द्वैताद्वैत या स्वाभाविक भेदाभेद प्रस्थान पर ही थोड़ा विचार करते हैं जो कि इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है । द्वैताद्वैत प्रस्थान का ही दूसरा नाम स्वाभाविक भेदाभेद है । इस प्रस्थान में तीन मौलिक तत्त्व माने गये हैं–

१. चित्, अचित् एवं ईश्वर । २. चित् जीव ज्ञान स्वरूप, ज्ञानधर्मी, अणुपरिमाणयुक्त, प्रतिशरीर में भिन्न, बन्धमोक्ष योग्य, अहं पद वाच्य तथा प्रत्येक दशा में भगवदधीन माना गया है । जैसा कि आद्याचार्य का वचन है-

ज्ञानस्वरूपं च हरेरधीनं शरीर-संयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥ --श्रीनिम्बार्काचार्य

२. अचित् पदार्थ--इसके तीन भेद माने गये हैं--प्राकृत, अप्राकृत तथा काल ।

अप्राकृतं प्राकृतरूपकश्च कालस्वरूपं तदचेतनं मतम् ---श्रीनिम्वार्काचार्य

(क) प्राकृत गुणत्रयात्मक सत्व, रजस्, तमस् के आश्रयभूत द्रव्य, नित्य तथा परिणाम आदि विकारी, काल नियम्य ।

(ख) त्रिगुणात्मक प्रकृति एवं काल से भिन्न, कालानियम्य ज्ञानस्वरूप, ज्ञानधर्महीन अत्रिगुणात्मक भगवद्-धाम आदि ।

(ग) काल-प्राकृत अप्राकृत उभय भिन्न अचेतन द्रव्य, नित्य एवं विभु अखणड-प्रकृति एवं प्राकृत जगत् का नियामक परन्तु ईश्वर द्वारा नियम्य ।

३. ईश्वर (ब्रह्म) :- अनन्त, अचिन्त्य, स्वाभाविक, सत्यसंकल्पत्व, सत्यकामत्व, सर्वाधारत्व, सर्वशक्तिमत्त्वादि गुणगण विशिष्ट ब्रह्माण्ड के अनन्तानन्त प्राणियों के अन्तरात्मा के साक्षी, दिव्य मंगलविग्रह आप्राणखात् सुवर्ण नख से शिख तक आनन्दमय, आनन्दमूर्ति सगुण साकार माना गया है ।

परमतत्त्व परमात्मा का उक्त स्वरूप अनेकानेक श्रुतियों, स्मृतियों एवं ब्रह्मसूत्र के अनेकानेक सूत्रों से समर्थित है । श्रुतियों में परमात्मा को आनन्दमय कहा गया है, जैसा कि व्यासजी का सूत्र है **आनन्दमयोऽभ्यासात्।** व्यासजी कहते हैं कि परमात्मा आनन्दमय है, क्योंकि श्रुतियों में सर्वत्र परमात्मा को आनन्दमय कहा गया है, पुनः-पुनः कथन है कि श्रुतिवचन है-**तस्माद् विज्ञानमयादन्योऽन्तर आत्मा आनन्दमय स वाऽयं पुरुपविशः, आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि, एतस्यैवान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति, भूमैव सुखम्, तदेतत् प्रेयः पुत्रात्.... तस्मादात्मानं प्रियमुपासीत** इन श्रुतियों द्वारा परमात्मा को आनन्दमूर्ति कहा गया है । उसका नख से शिख तक आनन्द ही आनन्द है। **आनन्दमात्रमुखपादकरोदरादि** चीनी के खिलौने या मूर्ति की तरह उसका अङ्ग-अङ्ग आनन्द है, उसका चरण आनन्दकर, पाद आनन्द, कटि आनन्द, जंघा आनन्द, उदर आनन्द, वक्षस् आनन्द, ग्रीवा आनन्द,

मुख आनन्द, अधर आनन्द, भाल आनन्द--सब कुछ आनन्द ही आनन्द है । वहाँ स्वरूप या व्यक्ति (विग्रह) में भेद नहीं है । वह पुरुषविध साकार आनन्द स्त्री से, पति से, पुत्र से, वित्त से सबसे अधिक प्यारा है **तदेतत् प्रेयः पुत्रात्....** (बृहदारण्यक) उससे बढकर विश्व में कोई प्रिय पात्र नहीं, वह भूमा सुख है (छान्दोग्य.) जिस सुख के साक्षात्कार करने पर, अन्य किसी सुख की इच्छा नहीं होती--ऐसा इतर राग विस्मारक सुख वह परमात्मा है, अतः उसे **कृष्ण** भी कहते हैं । उक्त सूत्रों में स्पष्टतया परमात्मा को आनन्दमय आनन्द मूर्ति कहा गया है । कुछ लोगों ने इस सूत्र **आनन्दमयोऽभ्यासात्** की व्याख्या करते हुए बड़ा तोड़-मरोड़ किया है, इसका संकेत हमने आनन्दमय अधिकरण की व्याख्या (टिप्पणी) में किया है ।

वह आनन्दमय परमात्मा निर्विशेष, निधर्मिक नहीं, किन्तु अनन्त कल्याण गुण निलय होने से सविशेष एवं अनन्त गुण विशिष्ट है । ब्रह्मसूत्र में आदि से लेकर अन्त तक अर्थात् **अथातो ब्रह्मजिज्ञासा** से लेकर **अनावृत्तिः शब्दात्** तक कहीं भी शुद्ध, बुद्ध, निधर्मिक, निर्विशेष तथाकथित ब्रह्म का प्रसङ्ग नहीं है, बल्कि **आनन्दमयोऽभ्यासात्, अन्तस्तद्धर्मोपदेशात्, सर्वधर्मोपपत्तेश्च, विवक्षितगुणोपपत्तेश्च अन्तर उपपत्तेः सर्वोपेता च सा तद्दर्शनात्** आदि सूत्रों में सर्वत्र सविशेषवाद स्पष्ट प्रतिपादित है ।

इन्हीं उक्त श्रुतियों तथा सूत्रों तथा भगवद्गीता के अनेकानेक वाक्यों के अनुसार आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्क ने ब्रह्म स्वरूप का निरूपण करते हुए कहा है--

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥

परम तत्त्व को उपनिषदों में सर्वत्र निरतिशय आनन्द एवं भूमा सुख कहने के कारण ही श्रीनिम्बार्काचार्य ने उसे कृष्ण कहा है। कारण **कृषिर्भूवाचकः शब्दः। णश्च निवृत्तिवाचकः। तयोरैक्य-परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते** । इस श्रुति में भी निरतिशय स्वतन्त्र सत्तायुक्त आनन्द को ही कृष्ण कहा है । ऐसा परमतत्त्व न तो न्याय, वैशेषिक, न योगदर्शन या शंकर दर्शन में माना गया है, उक्त दर्शनों में कोई सगुण निराकार तो कोई निर्गुण निराकारवादी हैं, जबकि श्रुति सूत्रों द्वारा सगुण साकार ब्रह्म का प्रतिपादन दीखता है । ऐसा केवल द्वैताद्वैत प्रस्थान में ही बताया है। इस दृष्टि से भी यह प्रस्थान सर्वोपरि एवं पूर्ण श्रौत है ।

क्रमशः

द्वैताद्वैत या स्वाभाविक भेदाभेद का निरूपण

इस प्रकार **प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेश, भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा** आदि-आदि श्रुतियों, सूत्रों द्वारा तत्त्वत्रय तो सिद्ध है ही, परन्तु ये तत्त्वत्रय निम्बार्क मत में योग शास्त्रीय तत्त्वत्रय की तरह स्वतन्त्र नहीं है, किन्तु एक ही स्वतन्त्र सत्ताश्रय ब्रह्मतत्त्व परमात्मा के अधीनस्थ उनसे सर्वथा अपृथक् सिद्ध उसका ही स्वाभाविक भिन्नाभिन्न स्वभाव शक्ति विशेष रूप है, ये चित् और अचित् । इनमें स्वाभाविक भेदाभेद अथवा द्वैताद्वैत है । जैसा कि व्यासजी ने अपने सूत्रों द्वारा स्पष्ट कहा है, **उभयव्यपदेशात्त्वहि कुण्डलवत्** (३/२/२७) एवं **प्रकाशाश्रयवद्वा तेजस्त्वात्** (३/२/२८) । इनमें प्रथम सूत्र द्वारा ब्रह्म और जगत् के स्वाभाविक भेदाभेद तथा द्वितीय सूत्र में जीव तथा ब्रह्म में स्वाभाविक भेदाभेद बताया है । इनकी व्याख्या करते हुए कौस्तुभ भाष्यकार श्रीनिवासाचार्यजी ने कहा है--**मूर्तामूर्तादिसर्वकार्यजातस्य ब्रह्मभिन्नत्वेऽपि तदभिन्नत्वं कुतः , उभय व्यपदेशात्, भेदाभेद व्यपदेशात्** अर्थात् मूर्त अमूर्त आदि सम्पूर्ण जगत् ब्रह्म से भिन्न होने पर भी उससे अभिन्न है, कारण श्रुति में भेद अभेद दोनों तरह का व्यपदेश है । जैसे **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, यः पृथिव्यां तिष्ठन्** इत्यादि भेद व्यपदेश है और **सर्वं खल्विदं ब्रह्म** इत्यादि अभेद व्यपदेश है । इस प्रकार उभय व्यपदेश होने से ब्रह्म और जगत् में स्वाभाविक भेदाभेद है । दृष्टान्त में कहते हैं **अहि कुण्डलवत्** अहि कुण्डल में जैसे कुण्डल का उपादान स्वरूप रज्ज्वाकार अहि कारण है, उसी प्रकार अहि स्थानीय सर्वशक्ति समुपेत ब्रह्म उपादान कारण और वलयाकार कार्य कुण्डल है, उसी तरह तत्स्थानीय मूर्तामूर्तादि समस्त प्रपञ्च ब्रह्म का कार्य है । अहि कुण्डल में कुण्डल परतन्त्र, व्याप्य तथा कार्य और अहि उसकी अपेक्षा स्वतन्त्र, व्यापक एवं कारण है । इसलिए दोनों में भेद है तथा अहि के बिना कुण्डल की स्थिति, प्रवृत्ति नहीं होने से अभेद भी है । इसी प्रकार चित् अचित् शक्तिमद् ब्रह्म के कार्यभूत जगत् का कारण ब्रह्म के साथ स्वाभाविक भेदाभेद है । इसी प्रकार जीव और ब्रह्म के विषय में भी **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा,** इत्यादि वचनों में भेद तथा **'ऐतदात्म्यमिदं सर्वं ब्रह्मैवेदं सर्वम्, आत्मैवेदं सर्वम्'** इत्यादि श्रुतियों में अभेद प्रतिपादित होने से जीव ब्रह्म में भी स्वाभाविक भेदाभेद है । कारण जब श्रुति का एक-एक अक्षर समान रूप से प्रमाण है, इनमें गौण-मुख्य भाव मानने पर एकतर श्रुति का बाध होता है, इसलिए स्वाभाविक भेदाभेद मानने पर समस्त श्रुतियों का समन्वय होता है । इसलिए स्वाभाविक भेदाभेदवाद या द्वैताद्वैतवाद ही श्रुति समर्थित सिद्ध होता है ।

यहाँ ज्ञातव्य है कि यह श्रौत भेदाभेद तार्किक सम्मत भेदाभेद नहीं है । न्याय में तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव को भेद कहते हैं और एतादृश भेद के अभाव को अभेद कहते हैं। जब **'ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्, पुरुष एवेदं सर्वम्'** आदि-आदि श्रुतियों द्वारा जीव तथा सारा जगत् ब्रह्मात्मक सिद्ध है, फिर उसमें उक्त लक्षण (वैशेषिक मत सिद्ध) भेद कैसे सम्भव हो सकता है और सूत्र

कहता है **अहि कुण्डलवत् भेदाभेद,** अहिकुण्डल में भी तार्किक सम्मत भेद नहीं हो सकता, क्योंकि अहिकुण्डल के सर्पात्मक होने से उसमें तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव लक्षण भेद कैसे हो सकता है। अतः मानना पड़ेगा कि वैदिक भेदाभेद तार्किक भेदाभेद से विलक्षण है । श्रौतभेद का स्वरूप है ब्रह्मात्मकत्व परिपन्थित्वाभावविशिष्ट तत्तत् स्वरूपगत वैलक्षण्य प्रतीति एवं विलक्षण कार्यकारिता का निर्वाहक धर्मविशेष भावरूप या अभावरूप विशेषता रूप है । उसमें ब्रह्मात्मकत्व के परिपन्थित्व का अभाव होने पर भी मुख्य भेद की तरह वैलक्षण्य प्रतीति निर्वाहक धर्म होने से भेद पद में व्यवहार्यता होती है । इसी प्रकार यहाँ अभेद भी वैलक्षण्य परिपन्थित्व अंश के त्याग के साथ तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभावरूप भेद का अत्यन्ताभावरूप माना गया है । लौकिक अभेद में वैलक्षण्य अनुभव का विरोधित्व होने से वह अंश यहाँ भेदाभेद घटक अभेद पदार्थ में अनभिमत होने से उसका यहाँ त्याग है।

इसी प्रकार द्वैताद्वैत पदार्थ भी हमारा विलक्षण है । **द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् इतं ज्ञातं इति द्वीतमेव द्वैतम्** स्वार्थिक अण् प्रत्यय, तद्भिन्नम् अद्वैतम् यहाँ भी अद्वैत घटक नञ् पदवाच्य भेद तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव रूप भेद कैसे रह सकता है ? इसलिए द्वैत का अर्थ है **द्वाभ्यां परस्पर-विलक्षणाभ्यां प्रकाराभ्यां स्वतन्त्रसत्त्व-परतन्त्रसत्त्वाभ्यां चेतनाचेतनत्वाभ्यां च इतं ज्ञातं वस्तु द्वीतम्, तदेव द्वैतम्** अर्थात् स्वतन्त्रसत्त्व परतन्त्रसत्त्व भेद से दो तरह के तत्त्व हैं, जीव और ब्रह्म । ब्रह्म स्वतन्त्रसत्ताश्रय, जीव परतन्त्रसत्ताश्रय इस तरह तो द्वैत है और अद्वैत का अर्थ है तद्विलक्षण द्वैतविलक्षण अर्थात् ब्रह्मात्मकत्वरूप एक ही प्रकार से ज्ञात अर्थात् ब्रह्मात्मकत्वेन एक। यह द्वैताद्वैत अर्थ है न कि अद्वैत का अर्थ है (द्वैताभिन्न) उदाहरण के लिए जैसे अज्ञान शब्द है । इसका अर्थ ज्ञानभिन्न नहीं होता। यदि अज्ञान का अर्थ ज्ञानभिन्न करेंगे,. तब अज्ञान शब्द का ज्ञानभिन्न घट में भी प्रयोग होने लगेगा, पर ऐसा नहीं होता। वहाँ अज्ञान का अर्थ होता है विपरीत ज्ञान । इसी तरह अद्वैत का अर्थ द्वैत भिन्न नहीं, किन्तु द्वैत विलक्षण अर्थ है, इस प्रकार द्वैताद्वैत में सामानाधिकरण्य सम्भव है और यही भाव द्वैताद्वैत का निम्बार्क सम्प्रदाय में अभिप्रेत है । द्वैताद्वैत या भेदाभेद सम्बन्धक विशिष्ट एवं स्पष्ट जानकारी के लिए हमारे नित्यलीलालीन नव्य न्याय एवं शांकर वेदान्त के समस्त ग्रन्थों के विधिवत् गुरुमुख से अध्येता तथा मर्मज्ञ पूज्य गुरुदेव पं० भगीरथजी झा मैथिल द्वारा निर्मित **द्वैताद्वैत विवेक** पुस्तक विद्वानों को अवश्य पढना चाहिए । इस पुस्तक में गुरुदेव ने नव्यन्याय की शैली में प्रौढ दार्शनिक भाषा में द्वैताद्वैत एवं स्वाभाविक भेदाभेद तत्त्व का विवेचन किया है । उस पुस्तक में आपने जगत् ब्रह्म के भेदाभेद, जीव ब्रह्म के भेदाभेद, नित्य परिकर सखीगण एवं सखागण के भेदाभेद एवं प्रिया-प्रियतम के भेदाभेद का बड़ा मार्मिक तारतम्य बताया है तथा विवेचन किया है, जो पढने योग्य है । यह पुस्तक श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय में उपलब्ध है । कोई भी सज्जन वहाँ से प्राप्त कर पढ सकते हैं ।

राष्ट्रपति पुरस्कृत-पूर्व प्राचार्य
श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, वृन्दावन
जि० मथुरा (उ० प्र०)

भारतीय दर्शन, द्वैताद्वैत और राजस्थान

–देवर्षि कलानाथ शास्त्री

प्रायः सभी भारतीय दर्शनों की चिन्तन सरणि वेदकाल से लेकर आज तक कुछ इस प्रकार की रही है कि यह जो दृश्य सत्ता है, विश्व है और संसार है, अर्थात् जीव और जगत् है, उसके पीछे एक अदृश्य सत्ता अवश्य है । यह अदृश्य सत्ता अभौतिक है, ज्ञानात्मक है, जो पदार्थ जगत् के अस्तित्व में आने से पहले भी थी और बाद में भी रहेगी। विश्व की स्थिति के समय भी वह सत्ता इसमें अनुस्यूत है, इसे चला रही है । अत्यन्त स्थूल और सर्वबोध्य रूप में समस्त भारतीय दर्शन शाखाओं का जिन्हें आस्तिक दर्शन काल कहा जाता है, यह अभिगम रहा है । यह अभिगम उन भूतवादी दर्शनों के विपरीत ध्रुव को स्पर्श करता है, जो यह मानते हैं कि प्रकृति अर्थात् पदार्थ जगत् स्वयंभू है, यह पहले पैदा हुई, इसके बाद इसका ज्ञान पैदा हुआ, (आखिर वृक्ष को देखें, विना वृक्ष के ज्ञान कैसे पैदा हो सकता था) इस प्रकार सत्ता या प्रगघटना पहले हुई, उनका नाम, ज्ञान, बुद्धि, विचार और संवित्तियां बाद में । इसीलिए पदार्थवादी भूतवादी या भौतिकवादी चिन्तन भारत में अधिक नहीं पनपा । यद्यपि नास्तिक दर्शनों में इसका भी सर्वाङ्गीण विवेचन उपलब्ध होता है ।

यह अभौतिक सत्ता जो स्वयंभू है और सबकी प्रेरक है, जो अनादि, अनन्त है, क्या है, किस रूप की है, इसके विवेचन के प्रकारों के कारण ही हमारे यहाँ अनेक दर्शन शाखाएँ उद्भूत हुईं । वेदकाल में ऐसी अभौतिक सत्ता को प्राण, मन, ब्रह्म, पुरुष आदि अनेक नामों से समझने की चेष्टा की गई, उपनिषद् काल में चित्, चैतन्य, ज्ञान, ब्रह्म आदि रूप में । सत्, असत्, सत्य, ऋत आदि विशेषणों के निर्वचन वेद से लेकर आज तक अलग हुए हैं, इसलिए हम इनका प्रयोग उस अभौतिक परम सत्ता के लिए नहीं कर रहे हैं। चूंकि सभी युगों में किसी न किसी रूप में ब्रह्म शब्द को इसके लिए प्रयुक्त किया गया । अतः हमारे दर्शन का यह मूल प्रत्यय कहा जा सकता है । सारे दर्शन मार्ग इसी के स्वरूप निर्वचन के प्रकार भेद के कारण विभिन्न शाखाओं में बँटे हैं । सांख्य व योग ने इसी ब्रह्म को चराचरनियन्ता होने के कारण ईश्वर कह डाला, तो भक्तिमार्ग ने इसे भगवान् कहा । दर्शनों ने इसे शुद्ध चैतन्य के रूप में व्याख्यात किया । यह सृष्टि के पहले भी था, अतः यही सृष्टिकर्ता रहा । यही परम तत्त्व प्रायः सभी विश्व धर्मों में ईश्वर, गॉड, खुदा, अल्ला कहा गया है, जिसकी भूमिका होती है सृष्टि को पैदा करना, सृष्टि के जीवों को पैदा करना। अन्य धर्मों में यह परमपिता सृष्टि को पैदा करता है और कुछ जीवों को संसार में भेज देता है, जो सृष्टि चलाते रहते हैं, या जीवों को यह भेजता है, नियन्त्रित करता रहता है और मृत्यु के

बाद जब वे वापस पहुँचते हैं, तब उनके कर्मों के अनुसार न्याय करता है, स्वर्ग नरक आदि में भेजता है। इस प्रकार वह ऊपर रहने वाला ईश्वर है, जिसे अंग्रेजी में Immanent इंमानेन्ट कहते हैं । हमारे धर्म दर्शन में यह चराचर स्रष्टा भी है, चराचर नियन्ता भी है और अन्तर्यामी भी। हम सबके अन्दर भी रहता है, इसे ही अंग्रेजी में इंमिनेंट Imminent कहते हैं ।

चूंकि यह परम तत्त्व हमारे यहाँ शुद्ध चैतन्य स्वरूप माना गया है । अतः इसे एक साथ स्रष्टा और अन्तर्यामी मानने में अधिक कठिनाई नहीं हुई । उपनिषदों ने सीधा सा यह रास्ता निकाल लिया कि उसने सृष्टि पैदा की और स्वयं भी उसमें प्रविष्ट हो गया-**तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्** । वह सबकी आत्मा में प्रविष्ट होकर सबको प्रेरित भी करता रहता है--**ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति । भ्रामयन् सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया** । यह संसार उसी के चलाए चल रहा है । इस प्रत्यय और इस भावभूमि का आधार लेकर इसका विवेचन दर्शन-शास्त्रियों ने जिस प्रकार से किया, उसके कारण वेदान्त दर्शन की शाखाओं के अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत, शुद्धाद्वैत, अचिन्त्यभेदाभेद, रामाद्वैत आदि अनेक नामकरण होते गये । भक्तिमार्ग ने जब उसी ब्रह्म को भगवान्, आराध्य और ठाकुर के रूप में देखा तो उन्होंने उसे अभौतिक, अमूर्त और शुद्ध चैतन्य होते हुए भी स्वयं मूर्तरूप लेकर भक्तों तक आने वाला बतला दिया। इस चमत्कार के कारण ब्रह्म ने स्रष्टा, नियन्ता और अन्तर्यामी होने के साथ-साथ घर-घर में सेवित आराध्य के रूप में भी उपस्थिति नियत करवा दी । यह है विशेषता हमारी विकसित होती हुई दर्शन परम्परा की ।

दार्शनिक चिन्तन का वेदोत्तर कालीन संग्रह उपनिषदों ने किया, उनमें से ब्रह्म विद्या को दर्शन का मूलाधार मानते हुए उसका स्वरूप स्पष्ट करने हेतु बादरायण ने **अथातो ब्रह्मजिज्ञासा** कहते हुए ब्रह्म क्या है, यह बतलाने हेतु ब्रह्मसूत्र लिखे । जब ब्रह्म का यह चिन्तन अधिक अमूर्त और जटिल तथा निष्क्रिय होने लगा तो द्वैपायन ने महाभारत के अंग के रूप में गीता लिखकर ईश्वर, ब्रह्म, कर्म, ज्ञान और विश्व का पारस्परिक संबंध स्पष्ट करते हुए समूचे दर्शन फल का समन्वय करके एक आधार ग्रन्थ रच दिया। यही हमारे दर्शनों की आधार भूत प्रस्थानत्रयी कही गई । आदि शंकराचार्य ने उपनिषद् के दार्शनिक चिन्तन का आधार लेकर यह बतलाना चाहा कि वस्तुतः चरम सत्ता, परम तत्त्व तो शुद्ध चैतन्य है, अमूर्त है, सत् चित् आनन्द रूप वही है, यह दृश्य प्रपंच तो आभासमात्र है । इस दृष्टि से उन्होंने विश्व की सत्ता को लगभग नकार दिया । यह सब जो दिख रहा है, फिर वह क्या है, यह बतलाने हेतु उन्हें माया की अवधारणा बतानी पड़ी जो उस शुद्ध चैतन्य रूप ब्रह्म को सीमित करती है, प्रकट करवाती है । वह मूर्त है या अमूर्त? इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि न वह सत् है, न असत् है, न सत्य है न मिथ्या, बल्कि अनिर्वचनीय है । ब्रह्म उससे भी परे है । तब क्यों उसे परम सत्य मानें । इस पर उन्होंने बताया कि हमारे अन्दर जो भी चैतन्य तत्त्व है यह ब्रह्म का तत्त्व है **जीवो ब्रह्मैव नापरः** । अतः जो भी अस्तित्व में है, वह तत्त्वतः ब्रह्म ही है, दूसरा कोई नहीं है । यह हुआ अद्वैत । ब्रह्म की ही पारमार्थिक सत्ता है । प्रकृति

या जगत् तो हमारे ज्ञान में भासित होते हैं । अतः उनकी प्रतिभासित सत्ता है । हमारे जीवन के सांसारिक कार्य भी सचमुच होते हैं, अतः इनकी भी व्यावहारिक सत्ता है, किन्तु परम सत्य तो ब्रह्म है, जो निर्विशेष, निर्गुण, निराकार है ।

यह अद्वैत वेदान्तमत सदियों तक दबदवा वनाये रहा, किन्तु जब इसने ब्रह्म को निर्गुण निराकार मान लिया तो भक्ति की, मन्दिर में मूर्ति पूजा की, साकार उपासना की तो साख ही कैसे बनती ? साकार मूर्ति पर चन्दन चढाने का औचित्य कैसे सिद्ध होता ? अतः निर्गुण निराकार युग की मान्यताओं में परिवर्तन के विना भक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाएगा, यह एहसास रखने वाले आचार्यों ने शंकर के निर्गुणवाद अथवा मायावाद का खंडन कर ब्रह्म को सगुण सिद्ध करने का प्रयास किया, साथही उसे सृष्टिकर्ता भी माना, ईश्वर भी, उपास्य भी, कृपालु भी, अनन्तगुणनिधान भी, सर्वशक्तिमान् भी । यह सब होते हुए भी शांकर अद्वैत का दबदवा ऐसा छाया रहा कि सभी ने उस अद्वैत शब्द को वहाल रखते हुए उसी में संशोधन किये--विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि । द्वैत की धारणा तो सृष्टि के लिए भी आवश्यक है, भक्ति के लिए भी । जो जिसे पैदा करता है, वह उससे अलग तो होगा ही, कुम्हार घड़े से अलग ही होगा, अभिन्न नहीं होगा, भिन्न ही होगा । जिसकी हम भक्ति करते हैं, वह हमसे भिन्न है (और ऊँचा, उत्कृष्ट, विशिष्ट भी है) तभी तो उसकी उपासना करेंगे । इस प्रकार के वचन वेदों में भी मिलते हैं, उपनिषदों में भी । किन्तु जब हमने परम सत्ता को शुद्ध चैतन्य स्वरूप मान लिया और वह चैतन्य हममें भी है, जीव रूप में, ज्ञान रूप में-तभी उसे जीव में स्थित, संसार में व्याप्त भी मानना होगा, अन्तर्यामी भी । यह अद्वैत भी किसी रूप में हमारे दर्शन में है ।

यह सब कुछ देखते हुए निम्वार्क सम्प्रदाय ने ऐसा मार्ग स्वीकार किया, जिसमें सिद्धान्त रूप में अद्वैत भी है और व्यवहारतः द्वैत भी साधित है । आद्य निम्वार्काचार्य ने आद्य शंकराचार्य से भी पहले सर्वप्रथम श्रुति सूत्रों में प्रतिपादित स्वाभाविक द्वैताद्वैत को अपने सूत्रात्मक भाष्य में दर्शाया तथा परवर्ती आचार्यों ने वैदुष्यपूर्ण शैली में विभिन्न सिद्धान्तों की समीक्षा करते हुए स्वाभाविक भेदाभेद-द्वैताद्वैत को सिद्धान्तित किया । भक्ति, साधना और उपासना के लिए जीव और ईश्वर में भेद तो स्वीकार करना ही था। अतः उन्होंने माना कि जीव जन्म-मृत्यु के चक्र से आबद्ध हैं, अतः उनकी परतन्त्र सत्ता है, उनका नियन्त्रण ईश्वर अर्थात् परब्रह्म के हाथ में है । श्रीकृष्ण परब्रह्म रूप हैं, उन्हीं के अंश या अंग हैं, जगत् उन्हीं के अधिष्ठान पर स्थित है । इसलिए स्वभावतः ये दो अलग-अलग सत्ताएँ या इकाइयाँ तो हुई ही। अब इनमें स्वाभाविक भेद है, स्वाभाविक द्वैत है । किन्तु इनमें आधार-आधेय, व्याप्य-व्यापक भाव का सम्बन्ध है, कार्यकारण भाव का सम्बन्ध है, अतः इनमें स्वाभाविक अभेद भी है । ब्रह्म ही सृष्टि का उपादान कारण है, वही कार्य रूप में परिणत हो जाता है । जैसे सोना कुण्डल, नथ या गहने के रूप में परिणत हो जाता है । उसे कोई सोना नहीं कहेगा, वह तो कुण्डल, हार या गहना ही रहेगा, पर है तो

वह सोना ही । कभी भी वह सोने के रूप में देखा जा सकता है । यही सम्बन्ध है मूल कारण ब्रह्मऔर कार्यरूप जीव और जड़ जगत् में । इस दृष्टान्त के आधार पर निम्बार्क सम्प्रदाय के दार्शनिकों ने स्वाभाविक द्वैत और स्वाभाविक अद्वैत का--भेद होते हुए भी अभेद का सिद्धान्त समझाया है । इस मूल सिद्धान्त को लक्ष्य में रखकर आचार्यों ने पूरे दर्शन की सत्तामीमांसा, ज्ञानमीमांसा और तत्त्व मीमांसा स्पष्ट की है । इस वेदान्त सिद्धान्त को द्वैताद्वैत दर्शन का नाम देने का यही कारण है। स्पष्ट है कि इस दृष्टि से निम्बार्क सम्प्रदाय बिलकुल सुरक्षित भित्ति पर आधारित है, क्योंकि वेदों, उपनिषदों आदि में जहाँ **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया** आदि वचनों द्वारा जीव और ब्रह्म में, आत्मा और परमात्मा में भेद बताया गया है, उसका समाधान वे अपने स्वाभाविक द्वैत की धारणा द्वारा कर देते हैं और जहाँ ब्रह्मसूत्रों में ब्रह्म के साथ कार्यकारणभाव या अभिन्नता बतलाई गई है, जो मुक्ति का भी चरम लक्ष्य है (ब्रह्म के साथ तादात्म्य हो जाना) उसके साथ भी उनकी अद्वैत-मान्यता ठीक वैठ जाती है ।

इस सिद्धान्त की स्थापना हेतु निम्बार्काचार्य के लिखे हुए ब्रह्मसूत्र भाष्य **वेदान्तपारिजातसौरभ** से लेकर इस भाष्य की व्याख्या श्रीनिवासाचार्य का **वेदान्तकौस्तुभ**, उस पर केशवकाशमीरिभट्ट की **कौस्तुभप्रभा**, देवाचार्य की **सिद्धान्तजाह्नवी**, सुन्दरभट्ट की **सिद्धान्त सेतु**, माधवमुकुन्द का **परपक्षगिरिवज्र** आदि ग्रन्थों ने व्यापक विमर्श किया है । पुरुषोत्तमाचार्य की दशश्लोकी व्याख्या **वेदान्त रत्नमञ्जूषा**, पुरुषोत्तमप्रसाद की सविशेष निर्विशेष **कृष्णस्तवराज की व्याख्या-श्रुत्यन्तसुरद्रुम** सम्प्रदाय के बेजोड़ ग्रन्थ हैं ।

हमारे वैष्णव दर्शनों के ये दो आयाम, जो प्रकृति में एक दूसरे के विपरीत हैं, किस प्रकार सह अस्तित्व बनाये हुए हैं, यह देखकर पाश्चात्य मनीषी दांतों तले अंगुली दबाते हैं । ये दो आयाम हैं, भक्ति और दर्शन के । भक्ति जहाँ भावना और अनुराग से उपजती है, जिसमें तर्क को कोई स्थान नहीं है, वहाँ दर्शन विशुद्ध तर्क और बौद्धिक विमर्श पर आधारित है । किन्तु सभी वैष्णव आचार्यों ने विष्णु और उन्हीं के अवतार या साक्षात् स्वरूप कृष्ण की भक्ति, अनुरक्ति की मधुर चाशनी में लपेट कर देश में फैलाई, साथ ही वेदकालीन ज्ञानानुगामी (उपनिषत् कालीन मनन से उद्भूत) दार्शनिक विमर्श पद्धति अपना कर ब्रह्मवाद के साथ तर्क के आधार पर अपनी मान्यता का समन्वय भी किया । यही कारण है कि इन वैष्णव सम्प्रदायों के साहित्य में जो आश्चर्यजनक रूप में विपुल, समृद्ध और शताब्दियों तक चली सुदीर्घ सर्जन परम्परा की परिणति होने के कारण अत्यन्त परिपक्व और उत्कृष्ट है, दोनों धाराओं के हजारों ग्रन्थ मिलते हैं, जो प्रत्येक पीढी के आचार्यों और विद्वानों ने लिखे हैं, जिनमें बहुत से प्रकाशित हैं, बहुत से अप्रकाशित । भक्ति मूलक ग्रन्थों में स्तोत्र, पूजा प्रकार, भजन, गेय पद, काव्य, चम्पू, चरित्र वर्णन, भागवतादि की टीकाएँ आदि आती हैं । दर्शन मूलक ग्रन्थों में सूत्रभाष्य, टीकाएँ, निबन्ध, शास्त्रार्थ और खण्डन-मण्डन के तर्कपूर्ण ग्रन्थ आदि आते हैं ।

वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों और दार्शनिकों ने सर्वाधिक शक्ति शंकराचार्य के उस अद्वैत और मायावाद के खण्डन में लगाई है, जिसके अनुसार जगत् मिथ्या है, यह सब दृश्य प्रपंच और सांसारिक व्यवहार अविद्या है (जो वस्तुतः अविद्यमान होने के प्रत्यय अर्थात् धारणा से बना शब्द है) क्योंकि उस दर्शन के अनुसर भक्ति, सगुण पूजा और साकार आराधना, गृहस्थ होकर कर्तव्य करते हुए भी मुक्ति तक पहुँचने के प्रयास सभी अदार्शनिक सिद्ध होते हैं, किसी का औचित्य नहीं बताया जा सकता । यही कारण है कि रामानुज सम्प्रदाय से ही शांकराद्वैत का खण्डन शुरु हो गया । वेंकटनाथ ने तो शंकर में सौ दोष बताने के लिए शतदूषणी लिख डाली, मेघनादारि, श्रीनिवासाचार्य, महाचार्य आदि सैंकड़ों आचार्यों ने जो शास्त्रार्थ ग्रन्थ लिखे, उनका इतिहास वड़ा दिलचस्प हैं, किन्तु यहाँ इसकी प्रासंगिकता नहीं है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि निम्वार्क सम्प्रदाय में भी उपर्युक्त दोनों धाराओं के सहस्रशः ग्रन्थ लिखे गये । शास्त्रार्थ पद्धति से दार्शनिक आधार भित्ति तैयार करने वाले आचार्यों में माधव मुकुन्द (जिन्होंने परपक्षगिरिवज्र या हार्दसंचय नामक ग्रन्थ लिखकर शंकर और भास्कर का खण्डन किया) पुरुषोत्तम (श्रुत्यन्तसुरद्रुम) वनमाली मिश्र (जिन्होंने वेदान्तसिद्धान्त संग्रह या श्रुतिसिद्धान्त संग्रह लिखा) देवाचार्य (सिद्धान्तजाह्नवी) आदि अनेक आचार्य उल्लेखनीय हैं । भक्तिमूलक ग्रन्थों में भी निम्बार्काचार्यजी के वेदान्तदशश्लोकी-श्रीकृष्णस्तव आदि स्तोत्र ग्रन्थों की टीकाएँ, भाष्य आदि, भागवत पर आधारित व्याख्या ग्रन्थ आदि की बहुत बड़ी संख्या है ।

जिस प्रकार द्वैताद्वैत दर्शन की मान्यताओं का एक पूरा तानाबाना सैद्धान्तिक आधार संरचना की दृष्टि से स्वाभाविक भेदाभेद, व्रह्म से ही निकले और व्रह्मात्मक होने के कारण जीव और माया (जगत्) को भी मानना (जीव और प्रकृति चित् अचित् का परतन्त्र होना, व्रह्म का स्वतन्त्र होना आदि स्थापनाओं को लेकर वना है, उसी प्रकार निम्बार्क सम्प्रदाय की भक्ति साधना की मान्यताओं की भी एक समृद्ध, सुदीर्घ और विशिष्ट परम्परा है । सच पूछा जाए तो इस साधना मार्ग का अवदान संस्कृति, साहित्य और समाज को और भी अधिक गरिमामय और विपुल है। इस सम्प्रदाय में राधा को कृष्ण के साथ अभिन्न रूप से सम्वद्ध माना गया है । इन दोनों की साधना, आराधना, पूजा, आरती, कीर्तन, संगीत आदि के द्वारा विविध रूप से होती है । कीर्तन के लिए सुललित गेय पद संस्कृत में और उससे अधिक व्रजभाषा में लिखे गये हैं और इस साहित्य का भी अपना सुदीर्घ इतिहास है ।

भक्ति के इस मार्ग में राधाकृष्ण की निकुंज लीला स्थिति को केन्द्र में रखकर उपासना पद्धति को चला लिया गया है । इस युगल उपासना का पूरा कार्यक्रम, अष्टयामीय सेवा की व्यवस्था, विभिन्न उत्सवों के विधान--सारा मंडान परम्परा प्राप्त है, जो प्रत्येक अन्य सम्प्रदाय की तरह इसकी अपनी विशिष्ट पहचान करते हैं । जिस प्रकार विभिन्न सम्प्रदायों के तिलक अलग-अलग हैं, उसी प्रकार इसके आचार्यों और अनुयायियों द्वारा लगाए जाने वाले तिलक का भी रूप अलग है। इस सारी पहचान को, सिद्धान्तों

को, उपासना पद्धति को और भावना को श्रद्धेय एवं वरिष्ठ सम्प्रदाय मनीषी सन्त श्रीगोविन्ददासजी (सम्पादक-श्रीनिम्बार्क पत्रिका) ने जिस रूप में रखा है, वह इसकी सुप्रचलित धारणाओं को भली भाँति अभिलषित कर देता है ।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस सम्प्रदाय का जुडाव राजस्थान के साथ अनेक अर्थों में बहुत गहरा और घनिष्ठ है । इसका प्रधान पीठ सलेमाबाद (किशनगढ के पास) में स्थित है, राजस्थान के अनेक नगरों में इसके मठ, मन्दिर और आचार्य जनता के श्रद्धाभाजन हैं, अनेक राजघराने इसके अनुयायी रहे हैं, हजारों लाखों की संख्या में इस सम्प्रदाय में दीक्षित नागरिक राजस्थान में बसे हैं । राजस्थान के कवियों, लेखकों--सर्जकों ने इस सम्प्रदाय के साहित्य और इतिहास पर अनेक काव्य और ग्रन्थ लिखे हैं । मेरे पूर्वजों में से अनेक कवियों ने जयपुर राजवंश और निम्बार्काचार्यों के सम्बन्धों पर, निम्बार्काचार्य श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी की प्रेरणा से सवाई जगत्सिंहजी द्वारा जयपुर में संवत् १८७७ की पौष पूर्णिमा को आयोजित चतुः सम्प्रदायी सम्मेलन अर्थात् मेले के इतिहास पर व्रजभाषा में काव्य लिखे हैं । कविवर मंडनभट्ट देवर्षि लिखित **जयसाहसुजसप्रकाश** काव्य इसी इतिहास का अभिलेख है। यह इस सम्प्रदाय द्वारा २००७ में छपवाया भी गया था । इस सम्प्रदाय और राजस्थान के सम्बन्धों का पूरा अभिलेख अब तक लिखा नहीं जा सका है । आवश्यकता इस बात की है, इसी प्रकार के किसी महत्त्वपूर्ण आयोजन के प्रसंग में ऐसा इतिहास विस्तार से लिखवाया और प्रकाशित कराया जाए ।

यहाँ इस उल्लेख का उद्देश्य यही है कि राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परा और देन पर विस्तृत अध्ययन और प्रकाशन की आवश्यकता आज भी बनी हुई है । यह प्रसन्नता की बात है कि श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का ५१०० वाँ जयन्ती महोत्सव सलेमाबाद में जिस उत्साह, सुव्यवस्था, सुनियोजन और वैशद्य के साथ सम्पन्न हो रहा है, उस प्रसंग में राजस्थान धरा की इस सम्प्रदाय के प्रति जो सेवा है, जो साधना है, जो देन है, उसका भी प्रसंग-वश आकलन हो सकेगा ।

प्रधान सम्पादक - भारती संस्कृत मासिक,
भूतपूर्व अध्यक्ष-राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
अध्यक्ष - मंजुनाथ स्मृति संस्थान, सी./८ पृथ्वीराज रोड़, जयपुर - ३०२००१

* * *

आत्मसन्तुष्ट महापुरुषों को धन-जन, मान-सम्मान,
ऐश्वर्य-प्रतिष्ठा आदि किसी भी प्रकार के वैभव की अपेक्षा नहीं रहती।
–श्री श्रीजी महाराज

श्रीनिम्बार्काचार्य का भेदाभेद सिद्धान्त

– व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहान्त धनञ्जयदासजी महाराज तर्क तर्कतीर्थ, काठिया बाबा

भगवान् श्रीनिम्वार्काचार्य का दार्शनिक सिद्धान्त द्वैताद्वैत या भेदाभेद के नाम से प्रसिद्ध है । श्रीवेदव्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्र के भाष्यों में विभिन्न आचार्यों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से अपने दार्शनिक मतों का प्रतिपादन किया है । इन सभी मतवादों में श्रीनिम्बार्काचार्य का द्वैताद्वैत मत अन्यतम है । उनके मतानुसार ब्रह्म का जीव और जगत् से स्वरूपतः भेदपरक एवं अभेदपरक दोनों ही रूपों में सम्बन्ध है । इस मत को द्वैत (भिन्नता मानने वाला) और अद्वैत (अभिन्नता मानने वाला) मत से संबोधित किया जाता है । वास्तव में इस मत में सत्यता भी प्रतीत होती है । कार्य-कारण सम्वन्ध पर विचार करने से इस मत की पूर्ण पुष्टि हो जाती है । जैसे कार्य(घट) कारण (मिट्टी) से भिन्न भी है और साथ ही अभिन्न भी । क्योंकि दोनों की नाम, रूप, आकार आदि में भिन्नता है, किन्तु दोनों की सामग्री एक ही होने से अभिन्नता भी है । इसी प्रकार जगत् (कार्य) ब्रह्म (कारण) से भिन्न और अभिन्न उभय रूप है ।

विचारपूर्वक यदि देखा जाय तो यह निश्चय होता है कि अपनी अनन्त शक्ति से जीव और जगत् रूप में प्रकाशित होने के कारण उनसे अभिन्न रूप में प्रतिष्ठापित है। साथ ही अतीत रूप में विद्यमान होने के कारण जीव और जगत् से भिन्न भी है। अतः ब्रह्म, जीव और जगत् में परस्पर भेद (द्वैत) और अभेद (अद्वैत) दोनों ही हैं और यही श्रीनिम्वार्काचार्य का प्रतिपाद्य है। उनके इस द्वैताद्वैत सिद्धान्त को विस्तार से हृदयंगम करने के लिए ब्रह्म, जीव और जगत् सम्वन्धी उनकी मान्यताओं का विस्तृत विवेचन आवश्यक है।

ब्रह्म--

श्रीनिम्वार्काचार्य ने ब्रह्म को आनन्दमय कहा है ।[१] आनन्दमय का अर्थ विकारवान् कदापि नहीं, उसका आनन्द, भूमा की अवस्था में जाकर स्थित होता है ।[२] वस्तुतः जीवात्मा को आनन्द देने के कारण भी परमात्मा ही आनन्दमय कहा जायेगा ।[३] ब्रह्म जगत् का केवल प्रकृति अर्थात् उपादान कारण नहीं है, वह जगत् का निमित्तकारण भी है ।[४] क्योंकि उसके द्वारा अश्रुत श्रुत हो जाता है । अमूर्त मूर्त हो जाता है । अविज्ञात विशेषरूप से ज्ञात हो जाता है । जैसे एक मिट्टी के ढेले को देखने से सम्पूर्ण मिट्टी के पदार्थों का ज्ञान हो जाता है । अतः परमात्मा ही जगत् का कारण है, ऐसा निश्चय होता है । वह सृष्टि का उपादान कारण भी है । क्योंकि उसने अभिलाषा की कि बहुत हो जाऊँ इस वाक्य से भी अभिलाषा प्रकट करने वाला ब्रह्म चैतन्य स्वतन्त्र परमात्मा है ।[५] वह आनन्दमय अप्राकृत, सर्वशक्तिमान्,

---

१. आनन्दमयः परमात्मा एव, न तु जीवः--निम्बार्कभाष्य १।१।१३

२. निरतिशय-सुखरूपत्वामृतत्वस्वमहिम-प्रतिष्ठितत्वादीनां परमात्मन्येवोपपत्तेश्च भूमा परमात्मैव । वही, १।३।६

३. जीवानन्द हेतुत्वादपि परमात्मैवानन्दमयः वही, १।१।१५

४. प्रकृतिरुपादानकारणं चकारान्निमित्त-कारणं च परमात्मैव । -- निम्बार्कभाष्य १।४।२३

५. तदैक्षत बहुस्याम - इत्यादिना तदुपदेशात् ब्रह्मणः स्रष्टुत्वप्रकृतित्वे वर्त्तते---वही, १।४।२४

पुरुषोत्तमस्वरूप है । उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि जब वह सृष्टि करने की कामना करता है, तो संकल्पमात्र से सृष्टि कर लेता है ।[१] श्रुतियों का भी एकमात्र ब्रह्म ही प्रतिपाद्य है । 'रसो वै सः' 'आनन्दो ब्रह्म' आदि उसी के द्योतक हैं । आनन्द उसका ही एक विशिष्ट गुण है, जिसका कि पृथक्-पृथक् रूप से उल्लेख हुआ[२] है । उन सबका उपसंहार उस परमात्मा में ही समझना चाहिए । वह स्वरूपतः अव्यक्त होते हुए भी भक्तियोग में ध्यान द्वारा व्यक्त हो जाता है । ब्रह्मज्ञान की उपलब्धि होने पर ही विशुद्ध अन्तःकरण में उस ब्रह्म की स्पष्ट झाँकी परिलक्षित होती है ।[३]

वह भक्ति से ही सर्वसुलभ है । वह सर्वप्रकार से परिपूर्ण, चिद्रूप और विभु है । सम्पूर्ण जीव उसी के चिदंश की किरणों के रूप में विद्यमान है ।[४] उसमें अनन्त वस्तुओं को उत्पन्न करने की शक्ति है । उस शक्ति में ही सभी वस्तुएँ स्पष्टतः विद्यमान हैं । वह अपनी शक्ति का अनुभव करने से संसार का रूप धारण करता है । वस्तुतः वह ब्रह्म, नानारूपी विश्व की सृष्टि का हेतु है । अचिन्त्य शक्तियों का आधार भी वही है । वेदों का प्रतिपाद्य, जगत्-जीवमय विश्वात्मा, सर्वरूप से भिन्नाभिन्नावस्था में रहते हुए, आनन्दमय परमतत्त्व वासुदेव के रूप में प्रतिभासित होता है ।[५] वह परमात्मा मायाधीश है । जन्म आदि विकारों से शून्य, स्वाभाविक और अचिन्त्य अनेक गुणों का सागर, विभूति सम्पन्न है । वह मुक्त जीवों को ऐश्वर्यानुभूति कराता है ।[६] वह सत्यकाम और सत्यसंकल्पवान् है । जीवों के स्वरूप का आविर्भावकर्ता, मुक्ति-प्रदाता भी वही है । उसकी परम कृपा से जीवों को उसकी प्राप्ति होती है । वह अन्तर्यामी रूप से सर्वत्र विद्यमान है । वह सुख-दुःख के भोगने वाले शरीरी जीवों से अधिक उत्कृष्ट है। शरीर का भी कर्त्ता है। आत्मा के अन्दर वह परमात्मा ही शासनकर्ता है ।[७] श्रीनिम्बार्काचार्य की दृष्टि में वस्तुतः सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि आदि का कारण ब्रह्म ही है । वह कारणों का कारण, सभी का नियन्ता एवं स्वामी है । उसकी अध्यक्षता में ही प्रकृति-चराचरात्मक जगत् की सृष्टि करती है । प्रकृतिस्थ जगत् का एकमात्र अधिष्ठाता ब्रह्म ही है ।[८]

जीव–

श्रीनिम्बार्काचार्य ने 'वेदान्तकामधेनु' के एक ही श्लोक में जीव के वास्तविक स्वरूप का प्रतिपादन

---

१. कामात् संकल्पादेव, सोऽकामयत बहु स्याम, इत्यादि श्रुतेः, अतः तद्भिन्न आनन्दमयः । वही, ।१।१।१९
२. आनन्दादयस्तु गुणाः गुणिनः सर्वत्रैक्यादुपसंहियन्ते । वही, ३।३।१३
३. भक्तियोगे ध्याने तु व्यज्यते, ब्रह्मज्ञान प्रसादेन विशुद्ध सत्त्वः, ततस्तु तं पश्यति निष्कलं ध्यायमानः । निम्बार्कभाष्य ३।२।२४
४. अविभागोऽपि समुद्रतरंगयोरिव, सूर्य तत्प्रभयोरिव तयोर्विभागः स्यात् । निम्बार्कभाष्य १।१।१३
५. सर्वज्ञ सर्वाचिन्त्यशक्तिविश्वजन्मादिहेतुर्वेदैःप्रमाणगम्यः सर्वभिन्नाभिन्नो भगवान् वासुदेवो विश्वात्मैव । निम्बार्कभाष्य ।१।१।४
६. जन्मादि विकार शून्यं स्वाभाविकाचिन्त्यानंत गुणसागरं सविभूतिकं ब्रह्मैव, मुक्तोऽनुभवति । वही ४।४।१९
७. सुखदुःख-भोक्तुः शारीरादधिकमुत्कृष्ट ब्रह्म जगत् कर्त्तुः ब्रूमः, आत्मानमन्तसेयमयति । निम्बार्कभाष्य २।१।२१
८. कृत्स्नजगत् सृष्ट्यादि व्यापारार्हं ब्रह्मैव, स कारणं कारणाधिपाधिपः सर्वस्य वशी, सर्वस्येशानः, मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् । निम्बार्कभाष्य ४।४।२०

करदिया है । वे आत्मवेत्ता, जीव को चैतन्य (ज्योतिस्वरूप) शरीर से संयुक्त और वियुक्त होने वाला, अणु परिणाम वाला, सूक्ष्म तथा परमात्मा के अधीन कहते हैं-

ज्ञानस्वरूपं च हरेरधीनं शरीरसंयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥

—वेदान्तकामधेनु (दशश्लोकी)

ब्रह्म का अंश होने के नाते जीव भी ब्रह्म ही है, तथापि जीव और ब्रह्म का पूर्णतः अभेद स्वीकार्य नहीं । भेदाभेद सम्बन्ध ही मान्य है । जीव को स्वरूपतः अणु मानते हुए भी श्रीनिम्बार्क ने उसके गुण और ज्ञान को विभु की संज्ञा दी है । अणु, चित् होते हुए उसका ब्रह्म से नित्य सम्बन्ध बना रहता है । इस प्रकार भगवान् का साधर्म्य प्राप्त कर जीव सर्वज्ञ की कोटि में पहुँच जाता है । जिस प्रकार महान् गुण के कारण परमात्मा महान् है, उसी प्रकार जीवात्मा अणु रूप होकर भी गुण से महान् है ।[१] जीवात्मा अणु परिमाण वाला होकर भी सारे शरीर के दुःख का अनुभव करता है ।[२] जीवात्मा के प्रकाश से ही सारा शरीर प्रकाशित होता है । ठीक वैसे ही जैसे कि कमरे में एक स्थान पर स्थित दीपक सारे कमरे को आलोकित करता रहता है ।[३]

श्रीनिम्बार्काचार्य के अनुसार आनन्दमय परमात्मा ही है, जीव नहीं । वस्तुतः ब्रह्म का संयोग पाकर ही जीव आनन्दानुभव करता है । वद्ध जीव को इसीलिए अज्ञ अथवा अल्पज्ञ की संज्ञा दी गई है । ब्रह्म के साथ जीव का क्रमशः विभु और अणु का सम्बन्ध ही स्थापित होता है । जीवात्मा न तो जन्म लेता है और न ही मरता है । वह नित्य और अजन्मा है । इससे जीव की नित्यता भी सिद्ध होती है ।[४] मुक्त जीव ब्रह्म का साक्षात्कार करके उसके पूर्ण आनन्द में निमग्न हो जाता है । किन्तु बद्ध जीव को आनन्दात्मक जगत् का अनुभव केवल जड़ रूप में ही प्रतिपादित होता है । उसे अपने चिदंश-स्वरूप का विस्मरण हो जाता है । श्रीनिम्बार्क ने ज्ञान और जीव में धर्म-धर्मी सम्वन्धरूप से भेदाभेद सम्बन्ध स्थापित किया है । यद्यपि चिदंश-रूप होने के नाते जीव और उसके ज्ञान में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता ।[५]

परमात्मा आनन्दयोग से जीवात्मा पर शासन करता है । अर्थात् जीव अन्तर्यामी परमात्मा द्वारा नियन्त्रित होता है । वह उस परमात्मा से भिन्न भी है, जिसके सकाश से आनन्दयोग की स्थिति बनती है। वह परमात्मा रसस्वरूप है, जिस रस की अनुभूति कर जीवात्मा आनन्दित होता है ।[६] इस प्रकार

---

१. दृश्यते बृहदेव प्राज्ञो गुणैरपि बृहद् भवति दार्ष्टान्ते तु जीवो अणु परिमाणको गुणेन विभुरिति विशेषः। वही, २।३।२८
२. जीवोऽपि प्रकाशयति, अतः कृत्स्न शरीरे सुखाद्यनुभवो न विरुध्यते । निम्बार्कभाष्य २।३।२३
३. देहे प्रकाशो जीवगुणादेव, कोष्ठे दीपालोकादिवत् । वही, २।३।२५
४. न जायते म्रियते वा विपश्चित् नित्यो नित्यानाम् । वही, २।३।२७
५. जीवतद्ज्ञानयोर्ज्ञानत्वाविशेषेऽपि धर्मधर्मी भावो युक्त एव । वही, २।३।२७
६. तद्योगं आनन्दयोगं शास्ति श्रुतिः रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽनन्दी भवति इति जीवस्य यल्लाभादानन्द योगः स तस्मादन्यः इति सिद्धम् । --निम्बार्कभाष्य १।१।२०

जीव और ब्रह्म के बीच स्वरूपतः, गुणतः एवं शक्तितः शाश्वत भेद है । किन्तु भोक्ता जीव और नियन्ता ब्रह्म के बीच यह भेद ठीक वैसा ही है, जैसा कि समुद्र और उसकी तरंग एवं सूर्य और उसकी प्रभा के बीच विद्यमान है ।[१] अतः यह ब्रह्म और जीव के बीच अभेदत्व के साथ भेदत्व सिद्ध हुआ । निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जीव या चित् ज्ञान स्वरूप और ज्ञानाश्रय है । वह ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता है । वह अणु है । मुक्तावस्था में भी वह कर्ता रहता है । उस समय वह ईश्वर से केवल एक बात में भिन्न रहता है । वह यह कि ईश्वर नियन्ता है और जीव नियम्य । अंशांशिभाव रहने से जीव और परमात्मा में भेदाभेद दिखाया गया है । वस्तुतः जीव परमात्मा का अंश है, कारण ज्ञ (सर्वज्ञ) ईश (ईश्वर) और अज्ञ (असर्वज्ञ) अनीश (जीव) दोनों ही अज (जन्मरहित एवं नित्यसत्य) है--इस श्रुति वाक्य में जीव और ईश्वर में भेद उपदिष्ट हुआ है ।[२]

इस प्रकार श्रीनिम्वार्काचार्य ने ब्रह्म और जीव में भेदाभेद सम्बन्ध स्थापित किया है । इस बात की उन्होंने स्पष्ट घोषणा की है कि जीव ब्रह्म का अंश होने से उनके बीच परस्पर भेदाभेद सम्बन्ध भी नित्य शाश्वत और स्वाभाविक है ।

जगत्–

श्रुति इस बात का प्रमाण है कि ब्रह्म ही जगत् रूप से प्रकाशित है । श्रीनिम्बार्काचार्य ने **आत्मकृतेः परिणामात्** सूत्र के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा है कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा स्वशक्ति के विक्षेप से जगत् के आकार में परिणत हो जाता है । वह अव्याकृत स्वरूप में रहकर ही अपनी शक्ति और कृति से जगत् रूप को प्राप्त होता है । ब्रह्म ही निमित्त और उपादान कारण है । जगत् उसी की अनुकृति है ।[३]

जगत् ब्रह्म की लीलार्थ की हुई संकल्पमूलक परिणति है । कार्य जगत् का कारण ब्रह्म से अनन्यत्व (अभेद) सम्बन्ध है, अत्यन्त भिन्नत्व (भेद) नहीं है । मृत्तिका सत्य है, क्योंकि उसके द्वारा निर्मित घटादि भिन्न प्रतीत होते हुए भी पृथ्वी के ही विकृत रूप होने के कारण उससे अभिन्न ही हैं । वस्तुतः यह सारा दृश्यमान जगत् परमात्मास्वरूप ही सत्य प्रतीत होता है । क्योंकि कारण और कार्य में न तो सर्वथा भेद ही होता है और न अभेद ही। भेदाभेद ही नित्यसिद्ध रहता है । कार्य के दोषों से मुक्त होता है । इसी प्रकार जगत् (कार्य) के दोष ब्रह्म कारण में नहीं होते ।[४] परमात्मा के व्यक्त और अव्यक्त

---

१. अविभागोऽपि समुद्र तरंगयोरिव सूर्य तत्प्रभयोरिव तयोर्विभागः स्यात् । वही, २।१।१३

२. अंशो नाना व्यपदेशादन्यथा चापि दाशंकित वादित्वभिधीयत एके । (अंशाशिभावाज्जीवपरमात्मनोर्भेदौ दर्शयति, परमात्मनो जीवोंऽशः ज्ञाज्ञौ द्वावजावीशानीशौ इत्यादि ....)

३. ब्रह्मैव निमित्तमुपादानं च.....सर्वज्ञं सर्वशक्ति ब्रह्म स्वशक्ति-विक्षेपेण जगदाकारं स्वात्मानं परिणमय्य, अव्याकृतेन स्वरूपेण शक्तिमता कृतिमता परिणतमेव भवति । वही, १।४।२६

४. कार्यस्य कारणानन्यत्वमस्ति न त्वत्यन्त-भिन्नत्वं...
ऐतदात्म्यमिदं सर्वं, तत्सत्यं तत्त्वमसि सर्वं खल्विदं ब्रह्म । --निम्बार्कभाष्य २।१/१४

दोनों रूप एक साथ ही स्वीकार किये जाते हैं । मूर्त और अमूर्त (स्थूल और सूक्ष्म) विश्व (जगत्) अपने कारण रूप ब्रह्म में भिन्नाभिन्न सम्बन्ध से रह सकता है । ठीक उसी प्रकार से, जिस प्रकार सर्प इच्छानुसार कुण्डली बनाकर बैठ जाता है और अपनी इच्छानुसार ही विस्तृत हो जाता है । इसी प्रकार ब्रह्म अपने संकल्पमात्र से ही जगत् की सृष्टि और लय का हेतु है ।[१]

'उक्त' 'अहि-कुण्डल न्याय' से स्थित विश्व को ब्रह्म से भिन्न भी नहीं कह सकते और सर्वथा अभिन्न भी नहीं कहा जा सकता । बद्ध और मुक्त जीवों की आसक्ति और अनासक्ति का कारण भी यह जगत् ही है । ब्रह्म की शक्ति होने के कारण जगत् भी नित्य सत्य है, किन्तु नित्य होते हुए भी वह परिवर्तनशील है । भूत, भविष्यत् और वर्तमान रूपों से प्रकाशित समग्र जगत् परमात्म ज्ञान में नित्यरूप से प्रतिष्ठापित है । यह जगत् पहले से ही सत्तावान् था । प्रत्येक वस्तु की सत्ता थी, जो कालान्तर में जगत् रूप में प्रकट हो गई । यह जगत् भी प्रलय होने पर सूक्ष्म रूप से संकुचित होकर परमात्मा में स्थित हो जाता है और सृष्टि के समय पुनः इसका विस्तार होने लगता है ।[२] जगत् की सृष्टि-आदि तथा नाना रूपता में परिणति ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता द्वारा ही होती है । जगत् का एकमात्र आधार ब्रह्म ही है, क्योंकि वह नियन्ता एवं अन्तर्यामी रूप से सदैव विद्यमान होता है । कुम्हार को घट के निर्माण करने में चक्र, मिट्टी, दण्ड आदि बाह्य उपकरणों का संग्रह करना पड़ता है, किन्तु परमात्मा तो ऐसा नहीं करता । वह तो दूध से दही अथवा जल से बर्फ की भाँति प्राकृतिक शक्ति से स्वतः जगत्रूप में परिणत हो जाता है।[३] वस्तुतः आनन्दमय, सर्व-शक्तिमान् पुरुषोत्तम को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि जब वह सृष्टि करने की कामना करता है तो संकल्प मात्र से जगत् की सृष्टि कर लेता है । उसने कामना की-कि में एक से बहुत हों जाऊँ ।[४] जिस प्रकार कपड़े को प्रथम समेटकर बाद में पुनः विस्तृत कर दिया जाय, उसी प्रकार परमात्मा भी विश्व को अपने में समेटकर पुनः उसे प्रसारित कर देता है । इससे प्रलय के बाद भी जगत् की सत्ता सिद्ध होती है ।[५] पुनः स्पष्ट करते हैं कि जैसे प्राणायाम की क्रिया द्वारा रुककर प्राण वायु अपने संकुचित रूप में अवस्थित रहता है, वैसे ही यह जगत् भी प्रलय होने पर सूक्ष्म रूप से संकुचित होकर परमात्मा में स्थित हो जाता है और सृष्टि के समय पुनः विस्तृत हो जाता है।[६]

---

१. मूर्त्तामूर्त्तस्याप्रतिषेध्यत्वं द्रढयति, मूर्त्तामूर्त्तादिकं विश्वं ब्रह्मणि स्वकारणे भिन्नाभिन्नसम्बन्धेन स्थातुमर्हति भेदाभेद-व्यपदेशादहि-कुण्डलवत् । वही, २।२।२७

२. सदेव सौम्येदमग्र आसीत् ।
विगत निरोधश्चांजसा तत्तद्रूपेणावगृह्यते तथेदमपि । निम्बार्कभाष्य २।१।१७।१६

३. यतः क्षीरवत् कार्यकारणे ब्रह्म परिणमते स्वासाधारण-शक्तिमत्वात् । निम्बार्कभाष्य २।१।२३

४. कामात् संकल्पादेव, सोऽकामयत बहुस्यामः इत्यादि श्रुतेः । वही, १।१।१६

५. यथा च पूर्वे संवेष्टितः पश्चात् प्रसारितः पटस्तद्वद् विश्वम् । वही, २।१।१८

६. यथा च प्राणापानादिवायु....... तत्तद्रूपेणावगृह्यते, तथेदमपि । वही, २।१।१६

अतः जगत् और ब्रह्म का कार्यकारण, शक्ति-शक्तिमान् के आधार पर परस्पर भेदाभेद सम्बन्ध का ही प्रतिपादन किया गया है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि श्रीनिम्बार्काचार्य ने ब्रह्म को सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में स्वीकार किया है । जीव और जगत् की सत्यता पर भी उन्होंने वल दिया है । उनकी दृष्टि में जीव और जगत् सत्य हैं, मिथ्या नहीं । श्रीनिम्बार्काचार्य का अद्वैत (ब्रह्म) द्वैत (जीव, जगत्) से पृथक् नहीं है, अपितु जीव और जगत् को ब्रह्म का अङ्गीभूत रूप से एक करके ही है । किन्तु अद्वैत मतावलम्वी अद्वैत (ब्रह्म) में जीव और जगत् का स्थान स्वीकार नहीं करते, इसलिए कि उनके मत में जगत् मिथ्या है और जीव का पृथक् रूप से कोई अस्तित्व ही नहीं है। फिर भी आश्चर्यजनक तो यह है कि अद्वैत (ब्रह्म) की सत्ता का पूर्ण समर्थन करते हुए भी वे (अद्वैतवादी) जीव और जगत् की सत्ता को अस्वीकार न कर सके । उन्हें व्यावहारिक भाव से इनकी सत्ता को स्वीकार करना पड़ा । ब्रह्म से भिन्न करने से व्यावहारिक रूप से जीव और जगत् की सत्ता स्वीकार करने के कारण द्वैतवाद की प्रतिष्ठा होती है । अतः अद्वैतवादियों के मत की यथार्थ पुष्टि नहीं होती । वस्तुतः द्वैताद्वैतवादी श्रीनिम्बार्काचार्य ही यथार्थ रूप में अद्वैतवादी हैं, क्योंकि उनके द्वैताद्वैतवाद में अद्वैत (ब्रह्मवाद) और द्वैत (जीव, जगत्वाद) सत्ता का एकपक्षीय द्योतन न होकर उभयपक्षीय द्योतन होता है । यही द्वैताद्वैतवाद की परम विशेषता है । इसमें समन्वय की अभूतपूर्व क्षमता विद्यमान है ।

--काठिया आश्रम, वृन्दावन (उ० प्र०)

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

माया बड़ी प्रबल है।
इसी के प्रबल आर्वत में आबद्ध होकर जीव
इस असीम संसृति के झंझावात में चक्कर काटता हुआ
जन्म-मरण के भयंकर
दुःख को भोगता रहता है।

❊

हिन्दू लोग आदि काल से सृष्टि के अनन्त निर्दोष
जीवों के प्रति सहानुभूति प्रकट
करते हुये आये हैं।

श्रीभगवन्निम्बार्कावतरण एवं सम्प्रदाय सिद्धान्त

–वासुदेवशरण उपाध्याय

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के अवतार प्रसंग में शास्त्रों में अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं । उन्हीं शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के चरित्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं । मुख्यतः श्रीनिम्बार्काचार्य सुदर्शनचक्र एवं अनिरुद्धव्यूह के अवतार माने गये हैं । कल्पभेद और युगभेद के आधार से ये विषय परस्पर अविरुद्ध समझने चाहिए। कहीं कहीं तो साक्षात् श्रीकृष्ण के ही अवतार रूप में उल्लेख मिलता है - जैसे–**''साधनप्रकारस्य चातिगूढत्वात् तद्दर्शनाय स्वयमेव भगवान् श्रीपुरुपोत्तमः श्रीमन्निम्बार्क-रूपेणावनितलतैलङ्गदेशे द्विजवरात्मनाऽवततार''** अर्थात् भगवद्भावापत्तिरूप मोक्ष का साधन प्रकार अतिगूढ होने से मुमुक्षुजनों के उपकार हेतु उसी साधनतत्त्व को व्यक्त करने के लिए साक्षात् पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण ही श्रीनिम्बार्काचार्य के रूप में भारतभूमि के दक्षिण प्रदेश (महाराष्ट्र) जो उस समय तैलङ्ग नाम से प्रसिद्ध था, वहीं पर गोदावरी तटवर्ती मूंगी (पैठण) ग्रामस्थ अरुणाश्रम में ऋषिकुमार (तैलङ्गविप्रकुलीन-बालक) के रूप से अवतीर्ण हुए ।
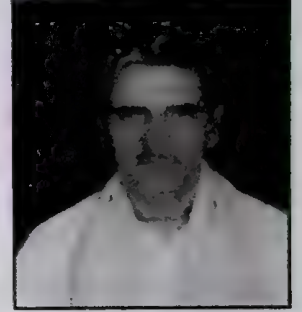
औदुम्वर संहिता के रचयिता आचार्यप्रवर श्रीऔदुम्बरजी अपने पूज्य गुरुदेव की वन्दना करते हुए कहते हैं-**श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे । निम्बादित्याय देवाय जगज्जन्मादि कारिणे । सुदर्शनावताराय नमस्ते चक्ररूपिणे** इत्यादि। भावार्थ है कि समस्त विद्याओं के रचयिता, पूर्णब्रह्म, जगत्स्रष्टा, जगत्पालक, जगत्संहारक, ऐश्वर्यादि सकल शक्ति के स्वामी सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बादित्य प्रभु को मेरा बारम्वार प्रणाम है ।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि श्रीनिम्बार्काचार्यजी तो सुदर्शनचक्र के अवतार माने जाते हैं, फिर उन्हें श्रीकृष्ण का अवतार बताना क्या उचित है ? इसके समाधान हेतु हमें अवतारों के विषय में विचार करना आवश्यक है । अवतार की परिभाषा करते हुए विवरणकार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी कहते हैं--

''अवतारो नाम स्वेच्छया धर्मसंस्थापनार्थमधर्मोपशमनार्थं स्वीयानां वाञ्छापूर्त्यर्थश्च विविध-विग्रहैराविर्भावविशेषः''

अर्थात् अवतार उसे कहते हैं, जब ईश्वर का अपनी इच्छा से धर्मसंस्थापन, अधर्मोपशमन एवं स्वकीय भक्तों की इच्छापूर्ति हेतु विविध विग्रहों, स्वरूपों से आविर्भूत होना । अवतारों के शास्त्रों में तीन

भेद बताये हैं--गुणावतार, पुरुषावतार और लीलावतार । प्रथम गुणावतार सत्त्वगुणाश्रय किंवा सत्त्वगुण के स्वामी भगवान् श्रीविष्णु का कार्य है, सृष्टि में आये हुए समस्त प्राणियों की रक्षा एवं उनका सम्पोषण करना, रजोगुण के स्वामी लोक पितामह श्रीब्रह्मदेव का कार्य है रजोगुण के आश्रय से जगत् की सृष्टि करना, तमोगुण के स्वामी भगवान् श्रीरुद्रदेव का कार्य है तमोगुण का आश्रय लेकर युगान्त किंवा कल्पान्त में सृष्टि का संहार करना । अतः ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये त्रिदेव गुणावतार कहलाते हैं । इस सम्बन्ध में भागवतकार का कथन कितना सटीक है--

सत्त्वं रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तैर्युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते ।
स्थित्यादये हरिविरिञ्चिहरेति संज्ञा श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणां स्युः ॥

अर्थात् सत्व, रजः, तमः ये तीन गुण प्रकृति के हैं, उन्हीं गुणों का आश्रय लेकर अथवा उनसे युक्त होकर एक ही परब्रह्म परमात्मा इस जगत् प्रपञ्च को त्रिविध रूप में --स्थिति, सृष्टि, संहार रूप में श्रीविष्णु, विरिञ्चि, हर इन संज्ञाओं से धारणादि करते हैं । उनमें मनुष्यों का सर्वविध मंगल, सत्त्वतनु भगवान् नारायण के सर्वतोभावेन समाश्रय से होता है । इस प्रकार गुणावतार के स्वरूपों का वर्णन किया गया है।

द्वितीय पुरुषावतार–

'पुरुषावतार' के विषय में स्मृतिकार कहते हैं--

"प्रथमं महतः सृष्टिर्द्वितीयं त्वण्डसंस्थितम् । तृतीयं सर्वभूतस्थं तानि ज्ञात्वा विमुच्यते ॥"

तात्पर्य है कि महत्तत्व के स्रष्टा कारणार्णवशायी प्रकृति नियन्ता पुरुष ही प्रथम रूप में पुरुषावतार हैं । समष्टि जगत् के उत्पादक गर्भोदकशायी अन्तर्यामी पुरुष ही द्वितीय रूप में पुरुषावतार समझने चाहिए। व्यष्टि के अन्तर्यामी सर्वनियन्ता क्षीरोदशायी पुरुष ही तृतीय रूप में पुरुषावतार कहे गये हैं ।

तृतीय लीलावतार–

"लीलावतार" के दो भेद हैं, स्वरूपावतार और अंशावतार । अंशावतार के भी स्वांशावतार एवं शक्त्यंशावतार के भेद से दो प्रकार बताये गये हैं । मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, हयग्रीव और हंस ये स्वांशावतार माने गये हैं । इसी प्रकार नर नारायण, धन्वन्तरि, परशुराम, कपिल, ऋषभ, पृथु, सनकादिक, नारद, व्यास इत्यादि शक्त्यंशावतार हैं तथा श्रीनृसिंह, राम और कृष्ण ये पूर्णावतार हैं । उपर्युक्त लीलावतारों में श्रीकृष्ण परिपूर्णतम अवतार हैं । भगवान् के इन्हीं अवतारों के प्रसंग में **ऋपिरूपधरः क्वापि** इस वचन के अनुसार श्रीनिम्बार्काचार्य भी लीलावतार के अन्तर्गत आते हैं । क्योंकि श्रीकृष्ण के चतुर्व्यूह स्वरूप वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न एवं अनिरुद्ध इनमें से अनिरुद्धावतार श्रीनिम्बार्काचार्य हुए हैं ।

नारद पंचरात्र में अनिरुद्ध व्यूह के स्वरूप का निवर्चन करते हुए नारदजी कहते हैं--श्रीअनिरुद्धजी मन के नियन्ता होने से मोक्ष के उपाय स्वरूप वेदान्त सिद्धान्त को प्रकट करके सत्त्वरजस्तमोरूप प्रकृति

गुण समुदाय से निर्लिप्त स्वयं स्वाश्रित भक्तों को भोग मोक्ष प्रदान करते हैं । मायागत गुणरहित होने से गुणातीत निर्गुण आदि शब्दों द्वारा व्याख्यात होने पर भी स्वयं के सर्वज्ञादि अनन्त कल्याण गुणगण के सागर हैं । इसीलिए अनिरुद्ध स्वरूप को निरुपाधिक, निर्गुण, हंस, आचार्य आदि शब्दों से प्रतिपादित किया है । अतः आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क को अनिरुद्धावतार मानने के अनेक शास्त्र प्रमाण विद्यमान हैं ।

अनिरुद्धो मनो नेता मोक्षोपायं श्रुतिम्पराम् । मनसोत्पादयित्वाऽतो मोक्षचारी सतः स्वयम् ॥
नैव विरुद्ध्यते कैश्चित् सत्त्वादिभिरूपाधिभिः । निरुपाधिस्त्वगुणोऽतो ह्यनिरुद्ध इति स्मृतः ॥
आद्याचार्योऽनिरुद्धस्तु निर्गुणैति ह्यमोक्षकृत् ॥

अनिरुद्ध के अवतार होने पर भी श्रीनिम्बार्काचार्य वस्तुतः सुदर्शनचक्र के ही अवतार हैं । यह भी नारद पञ्चरात्र के इस वचन से सिद्ध होता है । जैसे--**शंखः साक्षाद् वासुदेवो गदा संकर्षणः स्वयम्। बभूव पद्मं प्रद्युम्नोऽनिरुद्धस्तु सुदर्शनः ॥** भगवान् श्रीहरि के चार आयुध ही चतुर्व्यूहरूप में प्रकट हुए हैं । पाञ्चजन्य शंख स्वयं वासुदेव स्वरूप हैं, कौमोदकी गदा स्वयं श्रीसंकर्षण प्रसिद्ध हुए, पद्मावतार श्रीप्रद्युम्न जी हैं, तो चक्रराज साक्षात् अनिरुद्धजी हुए । इस प्रकार कहीं साक्षात् कहीं परम्परया श्रीसुदर्शनावतार ही श्रीनिम्बार्काचार्य हैं, यह प्रमाण सिद्ध है ।

वर्तमान में प्रचलित मान्यता के अनुसार--**सुदर्शन महाबाहो कोटिसूर्यसमप्रभ । अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥** 'इस भगवदाज्ञा' के अनुसार साक्षात् सुदर्शन का महर्षि अरुण तथा माता जयन्ती के पुत्ररूप में प्रकट होकर नियमानन्द से निम्बार्क नाम की ख्याति होने का इतिवृत्त अति प्रसिद्ध हुआ है। जो भी शास्त्र के सभी कल्पभेद व युगभेद से युक्ति संगत एवं प्रमाणसिद्ध होने से मान्य है।

'सम्मोहन तन्त्र' नामक ग्रन्थ में वर्णित एक कथा प्रसंग इस प्रकार है--पूर्व काल में अर्थात् त्रेतायुग के अन्त में नैमिषारण्य के परम पावन विष्णु क्षेत्र में वेदज्ञ ऋषियों व ब्राह्मणों ने दीर्घकालिक यज्ञानुष्ठान का आरम्भ किया था । उस समय राक्षसों ने नाना प्रकार से विघ्न उपस्थित किये थे, उससे दुःखी होकर सभी याज्ञिक विप्र ब्रह्मदेव के शरण में गये, प्रार्थना की । ब्रह्माजी ने भगवान् विष्णु का स्मरण किया, प्रभु प्रकट हुए । ब्राह्मणों की व्यथा-कथा सुनकर श्रीहरि ने सुदर्शनजी को आज्ञा दी, जाकर इन महर्षियों की यज्ञ रक्षा करो । चक्रराज सुदर्शन मुनि स्वरूप धारण कर उनके साथ नैमिषारण्य पहुँचे । महर्षियों का यज्ञानुष्ठान निर्विघ्न पूर्ण कराया । आपके प्रभाव से राक्षसगण भाग गये । यज्ञीय हवि की रक्षा करने के कारण आपका नाम उस समय **हविर्धानी** पड़ा ।

सुदर्शनावतार मुनिराज ही उस समय **हविर्धानी** नाम से प्रसिद्ध हुए । मुनिरूपधारी चक्रराज ने नीम के पत्तों का क्वाथ पीकर कठोर तप किया, इसलिए श्रीनिम्बार्क सहस्रनामों में आपका एक नाम **निम्बक्काथैकभोजनः** पड़ा। आचार्यप्रवर ने श्रीधाम वृन्दावन के निभृत निकुंजों में युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण के साक्षात् दिव्य दर्शन किये । लोक में सर्वत्र वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार कर अन्त में अपने ही एक स्वरूप को नैमिषारण्य में स्थापित कर आप अपने मूल सुदर्शन स्वरूप को प्राप्त हुए । इस प्रकार

युग-युग में श्रीसुदर्शन के अवतार प्रसङ्ग मिलते हैं । अतः कल्पभेद एवं युगभेद से श्रीनिम्बार्काचार्य के अनेक अवतार प्रसङ्ग उपलब्ध हैं । उपर्युक्त प्रसङ्ग से नैमिषारण्य क्षेत्र को **चक्रतीर्थ** कहने का ऐतिह्य प्रमाण स्पष्ट एवं युक्ति संगत है ।

श्रीनिम्बार्क भगवान् के विरक्त शिष्यों में श्रीश्रीनिवासाचार्यजी, श्रीगौरमुखाचार्यजी और श्रीऔदुम्बराचार्यजी तीन आचार्य प्रमुखरूप से इतिहास प्रसिद्ध हुए हैं । श्रीश्रीनिवासाचार्यजी पाञ्चजन्यशंख के अवतार माने जाते हैं, आचार्यपीठ के उत्तराधिकारी तथा गुरुदेव की अन्तर्धानलीला के पश्चात् आप ही प्रमुख पीठाचार्य हुए । आपने गुरुदेव की आज्ञा से ब्रह्मसूत्रों पर **वेदान्तकौस्तुभ** नाम से विस्तृत भाष्य की रचना की । अतः आप भाष्यकार के नाम से भी प्रख्यात हुए । आपने गिरिराज गोवर्धन की परिक्रमा मार्ग राधाकुण्डीय परिसर के ललिता कुण्ड के समीप रह कर तपश्चर्या की । आज वह स्थान **श्रीनिवासाचार्यजी की बैठक** के नाम से प्रसिद्ध है ।

श्रीगौरमुखाचार्यजी नैमिषारण्य क्षेत्र में रहकर तपःसाधना करते हुए भक्तितत्त्व का उपदेश किया करते थे। वहाँ पर निरन्तर सत्संग चलता रहता है । भूतल में इस क्षेत्र को **सत्संगवैकुण्ठ या वनवैकुण्ठ** कहा जाता है । श्रीऔदुम्बराचार्यजी ने छायावत् श्रीगुरुदेव की सेवा में निरन्तर रहकर गुरु प्रपत्ति साधन का सर्वतोभावेन पालन किया था। आपकी रचनाओं में **औदुम्बर संहिता** एवं **श्रीनिम्बार्कविक्रान्ति** ये दो ही ग्रन्थ उपलब्ध हैं । श्रीनिम्बार्क विक्रान्ति में श्रीनिम्बार्काचार्यजी के १४-१५ चरितों का विस्तृत वर्णन है।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का प्रादुर्भाव आज से ५१०० शतोत्तरपञ्चसहस्राब्द पूर्व दक्षिण भारत गोदावरी तटवर्ती मूंगी गांव में हुआ था । आपके पिताश्री **महर्षि अरुण**, देवी माता **श्रीजयन्ती** परम तपस्वी ऋषि दम्पती थे। बाल्यावस्था में आपका नाम **नियमानन्द** था, उस आश्रम का नाम **अरुणाश्रम** किंवा **सुदर्शनाश्रम** आदि प्रसिद्ध है । यहाँ पर वर्तमान में **अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज** के सत्संकल्प से विशाल एवं भव्य **श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य मन्दिर** का निर्माण होकर माघ कृष्ण ११ रविवार सं० २०६० दि० १८ जनवरी २००४ को पंच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के महनीय कार्यक्रमों के मध्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के नूतन विग्रह की विधिवत् प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । इस महामहोत्सव के अन्तर्गत, श्रीगोपाल महायज्ञ, सत्संग, सभा प्रवचन, आचार्यश्री के सदुपदेश, रासलीलानुकरण, भगवन्नाम संकीर्तन आदि भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए, जिसमें लक्षाधिक जन समूह की उपस्थिति रहती थी । यह सब वृत्त इतिहास में स्वर्णाक्षरों से उल्लेखनीय है । यह स्थान वर्तमान में महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के अन्तर्गत पैठण से १० कि० मी० उत्तर पूर्व में अवस्थित है ।

वहीं पर पूर्वाश्रम में श्रीनियमानन्दजी ने बाललीला पूर्वक प्रारम्भिक वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया । उपनयन संस्कार के बाद माता-पिता के साथ यात्रा पूर्वक उत्तर भारत के व्रजमण्डल क्षेत्र में मथुरा,

वृन्दावन, गोकुल, वरसाना, नन्दगाँव, गोवर्धन, यमुना पुलिन आदि श्रीहरि के लीला विहार स्थलों का अवलोकन करते हुए श्रीगिरिराज गोवर्धन की उपत्यका में अवस्थित निम्बग्राम पहुँच कर निवास पूर्वक तपश्चर्या प्रारम्भ की थी। यह स्थल इस समय **श्रीनिम्बार्क तप:स्थली** के नाम से प्रसिद्ध हैं । यहाँ प्राचीन मन्दिर आदि तो यथावत् हैं, किन्तु जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज के सत्संकल्पानुसार अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (अजमेर-राजस्थान) की ओर से विशाल एवं भव्य नूतन श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारी मन्दिर का निर्माण होकर भगवद् विग्रहों की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । मन्दिर परिसर में विद्यालय, औषधालय, सन्त निवास, अतिथि निवास, गोशाला, शिवालय आदि पारमार्थिक संस्थाओं का निर्माण एवं संचालन आदि कार्यक्रम हो रहे हैं । वाहरी परकोटा, उद्यान, सुदर्शन कुण्ड आदि परम चित्ताकर्षक बने हुए हैं ।

आद्य निम्बार्काचार्यजी ने यहीं रहकर दीर्घकाल तक तपश्चर्या की और शास्त्रों की रचना की है। इसी प्रसंग में एक समय स्वयं श्रीब्रह्मदेव दिवाभोजी सन्यासी (यति) के रूप में सायंकाल आश्रम पर उपस्थित हुए । स्वागत सत्कार के पश्चात् जब श्रीनियमानन्दजी ने भगवत्प्रसाद ग्रहण के लिए निवेदन किया, तब उन्होंने सूर्यास्त के बाद भोजन-प्रसाद न लेने का नियम बताकर निषेध किया । किन्तु आश्रम में आये हुए अतिथि बिना आतिथ्य ग्रहण किये जायेंगे तो आश्रमवासियों का धर्म नष्ट हो जायेगा, ऐसा विचार कर आश्रम के पश्चिम की ओर स्थित निम्बवृक्ष पर अर्क बिम्ब (सूर्य) का दर्शन कराया। चारों ओर दिव्य प्रकाश का विस्तार देखकर यतिराज ने आतिथ्य ग्रहण किया। तदनन्तर श्रीनियमानन्दजी ने उस बिम्ब व प्रकाश को अन्तर्हित कर दिया, सर्वत्र रात्रि का अन्धकार देख यतिराज चकित हो गये । उन्होंने श्रीनियमानन्द को सुदर्शनचक्र का अवतार माना । अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होकर कहा- मुनिवर ! आप भगवत्पार्षद चक्र सुदर्शन हैं, आपने अपने तेजोमय स्वरूप का दर्शन कराकर मेरा भ्रम दूर कर दिया ।

आपने इस निम्बतरु पर अर्क बिम्ब का दर्शन कराया, अतः अब आप इस भूतल में **निम्बार्काचार्य** के नाम से प्रसिद्ध होंगे और आप द्वारा प्रवर्तित वैष्णव परम्परा, सिद्धान्त आदि निम्वार्क नाम से ही विख्यात होंगे । इतना कह कर श्रीब्रह्मदेव सत्य लोक को चले गये । इधर कुछ समय के पश्चात् देवर्षि श्रीनारदजी का शुभागमन हुआ। श्रीनिम्बार्क भगवान् ने शरणागति पूर्वक श्रीनारदजी से पंचसंस्कार युक्त वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर उपासना विधि के साथ श्रीसर्वेश्वर प्रभु (शालिग्रामविग्रह) की सेवा प्राप्त की । कुछ समय पर्यन्त साधनानुष्ठान में संलग्न रहे । श्रीहंस-सनकादि-नारद के नाम से प्रचलित यह सम्प्रदाय **निम्बार्क सम्प्रदाय** के नाम से भूतल में तभी से प्रख्यात हुआ । श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु द्वारा जिज्ञासु सुयोग्य शिष्य को सम्यक् प्रकार से प्रदान किये जाने वाले ब्रह्मविद्या सम्वन्धी उपदेश की परम्परा को सम्प्रदाय कहते हैं । यह सम्प्रदाय परम्परा अनादि वैदिक काल से ही चली आरही है । शिव की उपासना परम्परा को शैव सम्प्रदाय, शक्ति के उपासक शाक्त, सूर्य के उपासक सौर, गणपति के उपासक

गाणपत्य एवं विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाते हैं । इस प्रकार वैदिक काल से ही यह पंचदेवोपासना प्रचलित है । वैष्णव परम्परा अथवा वैष्णव सम्प्रदाय के मुख्यतः चार भेद हैं--श्रीनिम्बार्क, श्रीरामानुज (रामानन्द), विष्णुस्वामी तथा मध्वाचार्य ।

वैष्णव धर्म के चार सम्प्रदायों में श्री, रुद्र, ब्रह्म, सनकादिक ये चार भगवद् विभूति आदि प्रवर्तक हैं । अन्य प्रकरण में शंख के अवतार श्रीरामानन्द, चक्र के श्रीनिम्बार्क, गदा के श्रीविष्णुस्वामी, पद्म के अवतार श्रीमध्वाचार्य हुए हैं । **रामानन्दःसुधीः शंखः चक्रं निम्बार्क नामभाक् । गदा हि विष्णुस्वामी च पद्मं वै माधवस्तथा** ॥ श्री रामानुज और श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में श्रीलक्ष्मीनारायण और श्रीसीताराम युगल इन उपास्य देव के स्वरूप भिन्न होने पर भी दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत दोनों का एक ही है । श्री सम्प्रदाय के आचार्य श्रीरामानुज, सनक सम्प्रदाय के श्रीनिम्बार्क, ब्रह्म सम्प्रदाय के श्रीमध्वाचार्य और रुद्र सम्प्रदाय के आचार्य श्रीविष्णुस्वामी, तदनुयायी श्रीवल्लभाचार्य हुए । उपर्युक्त वैष्णव परम्परा में उपासना एवं दार्शनिक सिद्धान्त भिन्न-भिन्न होने पर भी मुख्य ध्येय सभी का भगवत्सेवा कैङ्कर्य, भक्ति का प्रचार व प्राणीमात्र में दयाभाव रहता है । जिस प्रकार गाय के चारों स्तनों से निर्मल अमृतमय दूध प्राप्त होता है, उसी प्रकार इन चारों सम्प्रदायों से भक्तिरसमयी दिव्य सुधा धारा प्राप्त होती है ।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का आरम्भ भगवान् श्रीहंसनारायण से हुआ है, यह सर्वविदित है । हंस भगवान् ने सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार इन चारों महर्षियों को अष्टादशाक्षर पञ्चपदी श्रीगोपालमन्त्रराज स्वरूप ब्रह्म विद्या का उपदेश प्रदान किया । सनकादिकों से श्रीनारदजी को, नारदजी से श्रीनिम्बार्क को यह दीक्षोपदेश प्राप्त हुआ । इस प्रकार परम्परा से प्रचलित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का उल्लेख इतिहास ग्रन्थों में दृष्टिगोचर होता है । जैसे-

नारायणमुखाम्भोजान्मन्त्रस्त्वष्टादशाक्षरः । आविर्भूतः कुमारैस्तु गृहीत्वा नारदाय वै ।
उपदिष्टः स्वशिष्याय निम्बार्काय च तेन तु । एवं परम्परा-प्राप्तो मन्त्रस्त्वष्टादशाक्षरः ॥ (विष्णुयामल)

श्रीनिम्बार्क भगवान् ने तीर्थयात्रा के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया । द्वारिका में तप्तमुद्रा (शंख-चक्र) धारण करने की परम्परा को प्रारम्भ किया । इसलिए श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में द्वारिका के अतिरिक्त अन्यत्र तप्त मुद्रा धारण करने का विधान नहीं है । सर्वत्र गोपीचन्दन द्वारा शीतल मुद्रा ही धारण करने की परम्परा है । तीर्थयात्रा से लौटने के बाद आप निम्बग्राम में ही दीर्घकाल तक रह कर ग्रन्थों की रचना एवं सदुपदेश करते रहे । आपकी रचनाएँ-

१. वेदान्त पारिजात सौरभ (ब्रह्मसूत्र भाष्य)
२. वेदान्तदशश्लोकी (मौलिक रचना)
३. प्रातःस्तवराज
४. राधाष्टक
५. मन्त्ररहस्यषोडशी (गोपालमन्त्र व्याख्या)
६. प्रपन्न कल्पवल्ली (मुकुन्द मन्त्र की व्याख्या)

इत्यादि प्रसिद्ध एवं उपलब्ध हैं ।

गीता वाक्यार्थ व सदाचार प्रकाश ये दो ग्रन्थ भी आप द्वारा रचित हैं । ग्रन्थागारों में इनके नाम उपलब्ध हैं, किन्तु मूलरूप में ग्रन्थ अप्राप्त हैं ।

कुछ समय तक नैमिषारण्य में भी आपने निवास किया था, ऐसा उल्लेख मिलता है । श्रीनिम्बार्क भगवान् का एक नाम आरुणि भी प्रसिद्ध है । श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध में गंगा तट पर शापग्रस्त महाराज परीक्षित के समक्ष ऋषि समुदाय के मध्य आरुणि नाम आया है, उस समय आप वहाँ विद्यमान थे।

अतएव महाराज परीक्षित के परम धाम गमन के पश्चात् भी अधिक समय तक आप इस धराधाम पर अवश्य थे । क्योंकि नैमिषारण्य में ऋषियों के दीर्घ सत्र के समय आपकी विद्यमानता रही है । श्रीनिम्वार्काचार्य के धाम गमन का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता । सुदर्शनावतार होने के कारण स्वेच्छया दीर्घ काल तक रह कर धाम गमन किया होगा, ऐसा अनुमान किया जाता है ।

श्रीनिम्बार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्त एवं उपासना के विवेचन प्रसंग में अन्य सम्प्रदायों का भी सामान्य परिचय प्रस्तुत करना प्रासङ्गिक होगा । वैष्णव चतुः सम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त तथा उपासना में किञ्चिद् भिन्नता होने पर भी लक्ष्य सब आचार्यों का भगवद्भक्ति और भगवत् प्राप्ति समान है । श्रीसम्प्रदाय में आचार्य श्रीरामानुज, जो शेषावतार हैं, उनके द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र-श्रीभाष्य एवं अन्य रचनाओं में दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में विशिष्टाद्वैत प्रसिद्ध है । उपासना में परमैश्वर्यमय वैकुण्ठनाथ भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण युगल हैं । इसी प्रकार श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में श्रीरामानन्दाचार्य पाञ्चजन्यशंख के अवतार माने जाते हैं । ब्रह्मसूत्र भाष्यों, अन्य रचनाओं में इनका दार्शनिक सिद्धान्त वही विशिष्टाद्वैत और उपासना साकेतविहारी युगल स्वरूप श्रीसीताराम की मधुरोपासना है ।

ब्रह्म सम्प्रदाय के आचार्य श्रीमध्वाचार्य प्रसिद्ध हुए हैं । उनका दार्शनिक सिद्धान्त द्वैत और उपासना श्रीराधाकृष्ण की है । रुद्र सम्प्रदाय के आचार्य श्रीविष्णुस्वामीजी कौमोदकी गदा के अवतार माने गये हैं। उनकी परम्परा में स्वामी श्रीवल्लभाचार्य का आविर्भाव हुआ । उनका दार्शनिक सिद्धान्त शुद्धाद्वैत और उपासना भगवान् श्रीकृष्ण के बालरूप की प्रसिद्ध है। इस सम्प्रदाय को पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय भी कहते हैं।

सनक सम्प्रदाय, जो हंस भगवान् से प्रारम्भ होकर हंस-सनक-नारद-निम्बार्काचार्य इत्यादि परम्परा से प्राप्त लोक में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुआ। सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत (भेदाभेद) और उपासना वृन्दावन (दिव्य गोलोक) नित्यनिकुञ्जविहारी अनन्त सखीजन सेवित नित्यकिशोर श्रीराधाकृष्ण युगल की माधुर्योपासना है ।

स्वाभाविकद्वैताद्वैत सिद्धान्त–

वेदान्त दर्शन में चिदचिदीश्वर भेद से तीन तत्त्व माने गये हैं । **भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म चैतत्** इस श्रुति वचन में **भोक्ता** शब्द से निर्दिष्ट किया जाने वाला चित्तत्व जीवात्मा है । भोग्य शब्द से निर्दिष्ट तत्त्व अचित्तत्व है, जो प्राकृत, अप्राकृत, काल के भेद से तीन प्रकार का है । प्रेरिता शब्द से निर्दिष्ट ईश्वर तत्त्व ही परब्रह्म, परमात्मा, पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण हैं ।

उक्त त्रिविध पदार्थ के स्वरूप, गुण, लक्षण, सम्बन्ध को सरलता से बोध कराने हेतु भगवान् श्रीव्यासदेव ने शारीरक मीमांसा नामक **ब्रह्मसूत्र** ग्रन्थ की रचना की । समस्त सम्प्रदायाचार्यों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से उन सूत्रों की विस्तृत विवेचना के साथ भाष्य रचना कर स्व-स्वोपासनानुरूप सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है ।

ब्रह्मसूत्र ग्रन्थ के समग्र सूत्रों को पदार्थ विवेचन, समन्वय, साधना, फल विवेचन रूप चार अध्यायों में विभक्त किया है । आद्य निम्बार्काचार्य ने इन्हीं सूत्रों पर **वेदान्तपारिजातसौरभ** नामक संक्षिप्त वृत्यात्मभाष्य का प्रणयन किया । उनके प्रमुख शिष्य श्रीश्रीनिवासाचार्यजी ने इसी भाष्य के आधार पर **वेदान्त कौस्तुभ** नामक बृहद् भाष्य की रचना की । तदनन्तर परवर्ती आचार्यों में श्रीदेवाचार्यजी ने **वेदान्त जाह्नवी**, श्रीसुन्दरभट्टाचार्य ने **द्वैताद्वैतसेतु**, श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य ने **वेदान्त कौस्तुभप्रभा**, श्रीमाधवमुकुन्दजी ने **अध्यासपरपक्ष गिरिवज्र** नामक विस्तृत एवं प्रौढ भाष्य रचनाओं से सम्प्रदाय सिद्धान्त को परिपुष्ट एवं अकाट्य बनाया । इसी प्रकार श्रीनिम्बार्क भगवान् की मौलिक रचना **वेदान्त कामधेनु** वेदान्त दशश्लोकी पर श्रीपुरुषोत्तमाचार्य की **वेदान्तरत्नमञ्जूषा**, श्रीहरिव्यासदेवाचार्य की **सिद्धान्त रत्नाञ्जलि**, श्रीगिरिधरप्रपन्नजी की **लघु मञ्जूषा** नामक व्याख्याएं परम प्रमाणभूत एवं प्रौढ रचनाएं हैं । श्रीमद्भगवद्गीता पर श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य की **तत्त्व प्रकाशिका** नामक व्याख्या अनुपम सैद्धान्तिक ग्रन्थ है ।

उपर्युक्त भाष्यों में से वेदान्त कौस्तुभ भाष्य का साधनाध्याय प्रकरण स्वाभाविक सिद्धान्त को पुष्ट करता है । उसमें भी "**उभयव्यपदेशात्त्वहिकुण्डलवत्**," "**प्रकाशाश्रयवद्वा तेजस्त्वात्**" इन दो सूत्रों का विवेचन अनुपम है। आचार्यप्रवर कहते हैं--

यह दृश्यमान चेतनाचेतनात्मक सम्पूर्ण कार्य रूप जगत् स्वरूप से ब्रह्मभिन्न प्रतीत होने पर भी वस्तुतः ब्रह्म से भिन्न नहीं है । यहाँ पर यह जिज्ञासा होती है कि जो पदार्थ भिन्न रूप से प्रतीत होने वाला है, वह फिर अभिन्न कैसे? उसका समाधान करते हुए कहते हैं जैसे-धूम अग्नि से, तरङ्ग जल से, प्रकाश सूर्य से पृथक् नहीं रह सकते, उसी प्रकार जड़चेतनात्मक जगत् ब्रह्म से पृथक् नहीं रह सकता। क्योंकि धूम की स्थिति प्रवृत्ति अग्नि के आधीन है, तरंग भी जल के अधीन है, प्रकाश की स्थिति-प्रवृत्ति सूर्याग्नि चन्द्रादि के अधीन है, उसी प्रकार चेतनाचेतनात्मक जगत् की स्थिति-प्रवृत्ति ब्रह्म के अधीन है । जो जिसके अधीन में रहता है, वह स्वरूप से भिन्न रहते हुए भी वस्तुतः भिन्न नहीं रहता, क्योंकि सूत्र में उसका हेतु दिया है-**उभय व्यपदेशात्** अर्थात् उभयोः--भेदप्रतिपादक और अभेद प्रतिपादक श्रुति वचनों में बाध्यबाधक भाव न होने से **व्यपदेशात्** मुख्य व्यवहार स्वीकार करने के कारण भिन्न वस्तु भी स्व-भावतः अभिन्न रहती है ।

"**यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते**"......**नित्यो नित्यानां चेतनाचेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्** जिस परमात्मा से यह चराचर जगत् उत्पन्न होता है, जिससे पालित पोषित होता है,

जिसमें लीन होता है, जो नित्यों में नित्य, चेतनों में चेतन और अनन्त जीवों की अकेले समस्त कामना पूर्ण करता है--इत्यादि भेदवोधक असंख्य वचन.उपलब्ध हैं । इसी प्रकार **अयमात्मा ब्रह्म, तत्त्वमसि, आत्मैवेदं सर्वम्, सर्वं खल्विदं ब्रह्म,** यह जीवात्मा ही ब्रह्म है, वह ब्रह्म तुम हो, यह सव जगत् ब्रह्ममय है, इत्यादि अभेद वोधक वचन भी अनन्त हैं । इन सवका समन्वयात्मक रूप में विश्लेषण आचार्यों ने स्वाभाविक द्वैताद्वैत (भेदाभेद) सिद्धान्त के रूप में स्थापित किया । सूत्र में दृष्टान्त वचन **अहि कुण्डलवत्** है । ब्रह्म स्थानीय ऋजुरूप सर्प है और जगत् स्थानीय कुण्डलाकार सर्प है । जैसे कुण्डल सर्पात्मक है । वैसे ही यह चराचर जगत् भी ब्रह्मात्मक है । प्रकृत सूत्र से जडभूत जगत् ब्रह्म का भेदाभेद प्रतिपादित किया है । अव शुद्ध जीव का ब्रह्म से भेदाभेद प्रतिपादन **प्रकाशाश्रयवद् वा तेजस्त्वात्** इस सूत्र से किया है । प्रकाश स्थानीय ज्ञान स्वरूप जीव है तो आश्रय स्थानीय ब्रह्म है । आश्रय भी तेजोमय है, प्रकाश भी तेज स्वरूप है । अतः ब्रह्माधीन स्थिति प्रवृत्ति होने से जीव स्वाभाविक रूप से भिन्नाभिन्न है। इस प्रकार सैद्धान्तिक रूप में द्वैताद्वैत या भेदाभेद का निर्वचन करके अव उपासना में भेदाभेद वताते हैं।

चक्रावतार श्रीभगवन्निम्वार्काचार्य ने जिस प्रकार अपने दार्शनिक सिद्धान्त में चिदचित् का ब्रह्म के साथ स्वाभाविक भेदाभेद सम्वन्ध स्वीकार किया, उसी प्रकार अपने आराध्यदेव श्रीराधाकृष्ण में भी लीला विलासादि में आकृतिभेद और तेजोभेद से भिन्न तथा ज्योति-स्वरूप से अभिन्न माना है । किन्तु जीव ब्रह्म की तरह परतन्त्र सत्ता और स्वतन्त्र सत्ता नहीं है, दोनों स्वतन्त्र सत्ताश्रय ब्रह्म स्वरूप हैं । इसी वात का स्पष्टीकरण करते हुए भगवान् शिव पराम्वा पार्वतीजी को वताते हैं--**एकं ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् । तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव-भाषितम्। संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम् । एतज्ज्योतिरहं वन्द्यं चिन्तयामि सनातनम् । गौरतेजो बिना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्। जपेद्वा ध्यायते वाऽपि स भवेत् पातकी शिवे !।** इत्यादि ।

इसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने देवर्षि नारदजी से कहा--हे नारद ! जो मैं हूँ वही राधा है, जो राधा है वही मैं हूँ । इसलिए राधा कृष्ण की यह दिव्य जोड़ी कभी एक दूसरे से पृथक् नहीं रहती । क्योंकि ये दोनों अनादि दम्पती हैं । सदा एक स्वरूप हैं । **योऽहं स राधा किल राधिका तथा या साऽहमेवाद्यतमः सनातनः । श्रीराधिका कृष्णयुगं सनातनं नित्यैकरूपं निगमादिवर्जितम् ॥**

इत्यादि शास्त्र वचनों से उपासना में भी श्रीराधाकृष्ण युगल स्वरूप का स्वाभाविक भेदाभेद सिद्ध है । मुमुक्षु वैष्णवजनों को कर्म=ज्ञान-भक्ति-प्रपत्ति-गुर्वाज्ञानुवृत्तिरूप प्रमुख साधनों और श्रद्धा-आर्जव-विश्वास-सत्संग-वैराग्य इन सहकारी साधनों द्वारा उपर्युक्त सिद्धान्तानुकूल युगलकिशोर सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण की सतत समाराधना करनी चाहिए । इसी में जीवों का सर्वविध कल्याण निहित है । इत्यलम् ।

प्राचार्य -- श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद
सम्पादक --“श्रीनिम्बार्क” - पाक्षिक - पत्र

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का दार्शनिक सिद्धान्त

–पुरुषोत्तमशरण शास्त्री भागवताचार्य

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का सिद्धान्त एक ऐसा सिद्धान्त है, जो साधक को पूर्ण रूपेण आस्तिकता प्रदान करता है । आपके सिद्धान्त में समन्वयवादी दृष्टि को लेते हुए ब्रह्म विषय का प्रतिपादन किया है । आचार्य श्रीनिम्बार्क का दार्शनिक सिद्धान्त द्वैताद्वैत या भेदाभेद के नाम से प्रसिद्ध है । भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का यह मत विश्व के सभी दार्शनिकों के मतों का पोषक है । आचार्यचरणों के मतानुसार ब्रह्म और जीव में एवं ब्रह्म और जगत् में स्वरूपतः भेदपरक एवं अभेदपरक दोनों ही रूपों में सम्बन्ध प्राप्त होते हैं । अतः ब्रह्म, जीव और जगत् के इस सम्बन्धानुसार इस मत को द्वैत अर्थात् भेद मानने वाला और अद्वैत अर्थात् अभेद मानने वाला मत कहा जाता है । यथार्थ रूप में कार्यकारण सम्बन्ध पर विचार करने से इस मत की पूर्ण पुष्टि एवं सत्यता प्रकट होती है । जिस प्रकार कार्य अर्थात् घट कारण अर्थात् मिट्टी से भिन्न तो है ही, साथ ही अभिन्न भी है । क्योंकि दोनों घट और मिट्टी के नाम रूप आकार आदि में भिन्नता है, परन्तु दोनों की सामग्री एक ही होने से उनमें अभिन्नता अर्थात् अभेद भी है । अतः जगत् या कार्य अपने ब्रह्म या कारण से भिन्न और अभिन्न उभय रूप में विद्यमान है । यह सब विषय बिना दर्शन के समझना असम्भव है । दर्शन शब्द का अर्थ है **दृश्यते अनेन इति दर्शनम्** । जिसके द्वारा देखा जाय, वही दर्शन है। इसलिए तात्त्विक अर्थ को समझने के लिए हमें एकमात्र दर्शन का ही आश्रय लेना पड़ता है । श्रीमद्भागवत में भी सभी दर्शनों का दिग्दर्शन है । सांख्ययोग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त दर्शन और कर्मकाण्ड, स्थापत्य, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि सब कुछ है और समस्त सिद्धान्त निष्पन्न यह श्रीमद्भागवत है । **सर्वसिद्धान्त निष्पन्नं संसार-भयनाशनम्** (भा. मा. १/६) सर्व सिद्धान्त निष्पन्न श्रीमद्भागवत में द्वैताद्वैत सिद्धान्त को **यथाऽऽभासो यथा तमः** (भा.२/९/३३) कहकर वर्णन किया है। जैसे प्रकाश और अन्धकार । दीपक जहाँ जल रहा है, वहाँ प्रकाश है और उस दीपक के नीचे अन्धकार है । इस प्रकार भागवत की टीकाओं में विरुद्ध धर्माश्रय भगवान् को माना है । यह भी द्वैताद्वैत का पर्याय है । वेदों में भी **अणोरणीयान् महतो महीयान्** वह परमात्मा बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा है । अर्थात् भेदादि सिद्धान्त पूर्ण रूपेण प्रतिपादित है । इस सिद्धान्त को विरुद्ध धर्माश्रयी स्वाभाविक भेदाभेद एवं द्वैताद्वैत नाम से विद्वानों ने कहा है । श्रीमद्भागवत में सगुणात्मक, निर्गुणात्मक भगवान् के दोनों स्वरूपों के प्रतिपादित करने वाले श्लोक पाये जाते हैं । जब तक हम दोनों स्वरूपों को बताने वाले श्लोकों को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक हम भागवत धर्म के पूर्ण आस्तिक नहीं हो सकते हैं ।

निम्बार्क सिद्धान्त में सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, अभिन्ननिमित्तोपादान कारण एवं राधाकृष्ण युगल रसस्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को ही परब्रह्म माना है ।

व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी के सिद्धान्त में श्रीकृष्ण को ही परब्रह्म स्वीकार किया गया है । जीव ज्ञान स्वरूप है, सदा सर्वदा श्रीकृष्ण सर्वेश्वर प्रभु के अधीन है । चारों प्रकार के शरीरों के साथ संयोग और वियोग होने के योग्य है । परिणाम में अणुरूप है । प्रत्येक शरीर में भिन्न अर्थात् ब्रह्मा से लेकर चींटी पर्यन्त चारों प्रकार के शरीरों में अलग-अलग है । जगत् की स्थिति ऐसे समझिये जैसे घट मृत्तिका का व्याप्य है, अतः मृत्तिका माने मिट्टी से अभिन्न है, उसी प्रकार यह चेतनाचेतनात्मक जगत् ब्रह्म का व्याप्य है । ब्रह्म से अभिन्न है ।

विचार पूर्वक देखने से ऐसा निश्चित होता है कि द्वैताद्वैत सिद्धान्त सत्य के यथार्थ रूप को स्पष्ट करने वाला सिद्धान्त है । जगद्गुरु निम्बार्काचार्य के सिद्धान्त को भली प्रकार समझने पर ही सनातन धर्म के यथार्थ सत्य को जाना जा सकता है ।

गुरुकुल छात्रावास के पीछे
वृन्दावन जि० मथुरा (उ. प्र.)
दूरभाष : ०५६५ --२४५६३२७

✻ श्री श्रीजी वचनामृतम् ✻

एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को दुःखी करता है, सताता है, बाधा पहुँचाता है तो वह उस मनुष्य के प्रति ही अपराध नहीं करता, परंच वह तो हृदयस्थ ईश्वर के प्रति अपराधी है।

✻

जब मानव प्रभु को भुला देता है, तभी वह झूंठ, कपट, छलछिद्र, दुराचार, अनाचार, तस्करता आदि पापाचारों में प्रवृत्त होता है।

✻

पृथ्वी के किसी एक स्थल पर जो पाप हो उसका और पास के क्षेत्रों तक भी प्रभाव पड़ता है।

स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त

–श्यामशरण

भगवान् श्रीनिम्बार्क का सिद्धान्त - स्वाभाविक द्वैताद्वैत है । उक्त वाक्य घटक स्वाभाविक पद स्ववैशिष्ट्य का ज्ञापक है । कुछ आचार्य द्वैत को ऐच्छिक अद्वैत को पारमार्थिक मानते हैं । कुछ लोग द्वैत को आरोपित (कल्पित) एवं अद्वैत को पारमार्थिक मानते हैं । पूर्वोक्त सिद्धान्त में द्वैत एवं अद्वैत दोनों स्वाभाविक हैं । द्वैत तथा अद्वैत प्रतिपादक वाक्यों में सम बल है । एक को निर्बल एवं द्वितीय को प्रबल क्यों माना जाये । **द्वा सुपर्णा** इत्यादि वाक्य द्वैत प्रतिपादक हैं--**तत् त्वमसि** इत्यादि वाक्य अद्वैत प्रतिपादक है । जीव कर्म फल भोक्ता एवं ईश्वर नियन्ता है । इन द्वैत प्रतिपादक वाक्यों का अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है--तद् अधीन स्थितिकत्व तद् अधीन प्रवृत्तिकत्व को लेकर अभेद है । जीव बद्धावस्था में जैसे द्वैत है एवं मुक्तावस्था में भी द्वैत है । श्रीभगवान् ने गीता में-**मम साधर्म्यमागतः** वाक्य में मुक्ति में जीव का साजात्य माना है, सजात्य भेद घटित होता है । मुक्तावस्था में जीव भगवद्रस का आस्वादन करता है । **सोऽश्नुते सर्वान् कामान्**, रसास्वादन अत्यन्ताभेद में असम्भव है । भगवान् व्यास ने **आनन्दमयोऽभ्यासात्** सूत्र में परमात्मा को आनन्द स्वरूप माना है, जीव-परमात्मा के आनन्द से आनन्दी (आनन्दवान्) होता है । ब्रह्मसूत्र में मुक्तात्मा का **जगद्व्यापारवर्ज्यम्** कथन भी ब्रह्म से भेद को सिद्ध करता है । मुक्तावस्था में जीवात्मा का ब्रह्म से अत्यन्त अभेद नहीं होता, अपितु भेदसहिष्णु अभेद होता है । इस बात का स्पष्टीकरण आचार्य श्रीसुन्दरभट्ट सेतुकार टीका में कर रहे हैं-- **श्रीभगवदनवच्छिन्नानुभूत्या स्थितिः भगवद् प्राप्तिः सैव भगवद् भावापत्तिः** अत्यन्ताभेद मुक्ति का खण्डन आचार्य श्रीकेशवकाश्मीरि भट्टपाद ने ब्रह्मसूत्र अध्याय ४/पाद/४ सूत्र ७ में विस्तार से किया है। निम्बार्क सिद्धान्त में जीव, जगत्, प्रकृति सभी पदार्थ सत्य हैं, कोई मिथ्या नहीं । जगत् भगवान् की शक्ति का परिणाम है, अतएव सत्य है । विवर्तवाद में जगत् मिथ्या है । श्रीकेशवकाश्मीरिजी महाराज इस सिद्धान्त का खण्डन करते हुए कहते हैं--**प्रपञ्चो यदि सत्यो न स्यात्, तर्हि श्रीपुरुषोत्तमस्य परब्रह्मणः परिपाल्यो न स्यात्। तत् परिपाल्यत्वं च श्रुति-स्मृति-सूत्रैरुद्घुष्यमाणं तस्मात् सत्यैवेति।** अर्थात् जगत् यदि सत्य नहीं होगा तो भगवत् परिपाल्य नहीं होगा, श्रुति-स्मृति, सूत्रों में यह उद्घोषणा है कि जगत् भगवत् परिपाल्य है , इसलिये सत्य है । सभी वैष्णवाचार्यों ने सांख्य के सत् कार्यवाद को अपनाया है। अन्तर केवल इतना है--सांख्य सिद्धान्त में जगत् केवल प्रकृति का परिणाम है, वैष्णव सिद्धान्त में भगवदाश्रित शक्ति का परिणाम है, अतः सत्य है ।

॥ इति ॥

श्यामशरण नैयायिक, वृन्दावन

* * *

वेदसर्वस्वं निम्बार्कदर्शनम्

— दयाशंकर शास्त्री,
निम्बार्कभूषण

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ।।

अनन्तकोटिब्रह्माण्ड नायक-परात्पर-परब्रह्म परमात्मनः श्रीसर्वेश्वरप्रभोः सृष्टेः पूर्वं संकल्पोऽभवत् **एकोऽहं बहु स्याम्।** अनेन सत्यसंकल्पेन परमात्मा सर्वप्रथमं स्वं ब्रह्मरूपमकल्पयत् । सृष्टिसर्जनाय ब्रह्मणे स्व निःश्वास- स्वरूपं ज्ञानविज्ञानाक्षय-भाण्डागारं वेदं समर्पयामास । ब्रह्मा परमात्मनः संकल्पानुसारं यथा सृष्टिः पूर्वमासीत्, तथैवाकल्पयत् ।

'धाता यथा पूर्वमकल्पयदिति' श्रुतिः । सृष्टिनिर्माणाय यज्ज्ञानविज्ञानमपेक्षितमासीत्, तत्सर्वं वेदे निहितमासीत् । मानव-मात्रस्य कल्याणाय, मानवजीवनस्य परमलक्ष्यप्राप्त्यै, अभ्युदयनिःश्रेयस-सिद्ध्यै, परमात्मा वेदान् प्राकाशयत्, ऋग् यजुस्सामाथर्ववेदाः समस्त-सत्यविद्यानामक्षयभाण्डागाराः सन्ति। वेदेषु यत्राध्यात्म ब्रह्म-विद्यादर्शन-कर्मकाण्डादीनां विशदं वर्णनमस्ति, तत्रैव लौकिक-ज्ञान-विज्ञान-सृष्टि रचनाचारविचार-शिक्षा- सामाजिकज्ञानार्थशास्त्र-राष्ट्ररक्षा-राष्ट्रव्यवस्था-राष्ट्रोन्नयनादिविषयाणामपि सम्यक् समावेशोऽस्ति । वस्तुतो भगवान् वेदः सर्वमानवसमाजस्य जीवनोत्कर्षसम्बन्धि समस्त-समस्यानां व्यावहारिकं श्रेष्ठतमं समाधानं प्रयच्छति । मानव- कल्याणकारी कोपि विषय एतादृशो नास्ति, यस्य वेदेषु-समावेशो न भवेत्।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।

मानवधर्मस्य विश्वजनीन-मान्यतानुसारं वेदैः सहारण्यकानां ब्राह्मण-ग्रन्थानामुपनिषदां पुराणानां स्मृतीनां तथा रामायण-महाभारतादिग्रन्थानामपि महत्त्वपूर्णं स्थानमस्ति । उक्त-समस्तग्रन्थानां विषयाणामक्षयं स्रोतो वेद एवास्ति । यत एते ग्रन्था वैदिकसिद्धान्तानामेव विशदं व्याख्यानं कुर्वन्ति ।

ज्ञानार्थक विद् धातोर्घञ्‌ि प्रत्यये कृते सति वेदशब्दस्य निष्पत्तिर्भवति । करणार्थे घञ् प्रत्यये सति **वेद्यतेऽनेन- इति वेदः** । अनया व्याख्यया यद् वाङ्मयं वेदितव्याध्यात्मिक ब्रह्मतत्त्वस्य लौकिक-तत्त्वानां ज्ञानविज्ञानयोश्च ज्ञानं कारयति, सः वेदः। घञ्प्रत्यये कर्मणि सति च **'वेद्यते यः सः वेदः'** । अनया व्याख्यया परमात्मा ज्ञानस्वरूपोऽस्ति, अतः सः वेदोऽस्ति । अर्थाद् यो वेदस्तद् ब्रह्मास्ति, यद् ब्रह्म च तदेव वेदः । इमौ द्वावभिन्नौ स्तः । वस्तुतंस्त्वभिन्नावेव, किन्तु-बोधावबोधदृष्ट्या भिन्नावपि स्तः, अतस्तौ ब्रह्मवेदौ भिन्नाभिन्नौ स्तः, एवमपि कथयितुं शक्यते ।

परमात्मा ज्ञानस्वरूपोऽस्ति, एतद् दृष्ट्या तु ज्ञानस्य परमं महत्त्वमस्त्येव, किन्तु-कस्यापि पदार्थस्य सत्ता ज्ञानेनैव सिद्धा भवति, अनया दृष्ट्यापि ज्ञानस्य विशेषं महत्त्वं विद्यते । यतोहि यस्य ज्ञानं न भवति, तस्याभावो मन्यते ।

वेदितव्य-वेदस्य विषयाणामीश्वरस्य तथा धर्मादिर्ज्ञानं केनापीन्द्रियेण भवितुं न शक्यते । अत इन्द्रियातीत-पदार्थानां ज्ञानस्य साधनं वेद एव विद्यते । मीमांसकानुसारं धर्मादीनां ज्ञानस्य, ईश्वर-ज्ञानस्य च प्राप्तेः साध्य-साधनभावस्य ज्ञापको वेद एव । उक्तञ्च--

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते ।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता ॥

धर्मस्य मूलकारणं वेदः, उक्तञ्च--

वेदप्रणिहिनो धर्मः, ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः । --भागवतम्
धारणाद्धर्म इत्याहुः, धर्मो धारयते प्रजाः ॥ --मनुः

भगवता व्यासेनापि श्रीमद्भागवते उक्तम्--

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे । एतद्धर्मज्ञानाय वेद एव मूलकारणम् ॥
धर्म एव ब्रह्म, ब्रह्म एव धर्मः वेदादेव धर्मज्ञानं, ब्रह्मज्ञानञ्च भवति ।
नावेदविन्मनुते तं महान्तम् ।
अतो ब्रह्म जिज्ञासायै वेद एवैकमात्रं ज्ञातव्यं वस्तु विद्यते ।
महर्षेरापस्तम्वस्य कथनमस्ति यद् 'मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयमिति' ।
वेदात्सर्वं प्रसिद्ध्यति । मनुः॥

सर्वशब्देनात्र दार्शनिक-विचारा अपि आयान्ति । अर्थात् दर्शनस्याधारोऽपि वेद एवास्ति ।

जीव-जगद्-ब्रह्म-विषयक तत्त्वज्ञानप्रधानशास्त्रं दर्शनशास्त्रमभिधीयते । दृश्यते ज्ञायते तत्त्वत्रयं येन तद् दर्शनम् । दर्शनशास्त्रमपि द्विविधम् । नास्तिकं तदास्तिकञ्च । यद्दर्शनशास्त्रं वेदं प्रमाणरूपेण स्वीकरोति, अथ च-ईश्वरं जगत् सृष्टेः कर्तृरूपेण स्वीकरोति, तदास्तिकम् । यच्च-वेदानां प्रामाण्यं न स्वीकरोति, तन्नास्तिकम् ।

न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-पूर्व मीमांसोत्तरमीमांसेति षडास्तिक दर्शनानि । एतेषु न्याय-वैशेषिक-सांख्य- दर्शनानि ज्ञानप्रतिपादकानि, योगदर्शनं योग प्रतिपादकम्, पूर्वमीमांसा कर्मप्रतिपादकम् । उत्तर-मीमांसा(वेदान्तदर्शनम्) भक्तिप्रतिपादकमिति ।

दर्शनेष्वपि वेदान्त-दर्शनं मुकुटमणिरिव मुख्यतामावहति ।
अतोऽत्र वेदान्त-दर्शनमुख्येन निम्बार्कवेदान्तदर्शन-विचारो विधीयते ।

वेदानामन्तो वेदान्तः, वेदानां शिरो भागः अर्थात् वेदानां सारसर्वस्वमेव वेदान्त इति निष्कर्षः । उपनिषदपि वेदान्तशब्देनाभिधीयते । उप निषीदति परमात्मानं प्रापयति या ब्रह्मविद्या सोपनिषद् । अर्थात् यया विद्यया ब्रह्मसाक्षात्कारो भवति, सैवोपनिषद् । वेदा मुख्यरूपेण एव प्रतिपादनं कुर्वन्ति, यत्तत्त्वं वेदानां वाक्येषु निहितमस्ति, तदेव तत्त्वमुपनिषदंशः तदेव तत्त्वं ज्ञानकाण्डनाम्नाभिधीयते । वेदस्यापरांशो यज्ञ-यागादिक-विषयो वरीवर्ति, स कर्मकाण्डनाम्नाभिधीयते । तत्र काम्यकर्मणामपि विधिविधानं विस्तरेण वर्तते। तस्य च फलं सुखोपभोगप्राप्तिर्भवति । किन्तु क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति अनेन स्मृतिवचनेन कर्मफलमस्थायि-विनाशशीलञ्च, अतस्तद्धेयम्।

किन्तु वेदान्तस्य ब्रह्मविद्याया फलमविनाशि, निःश्रेयस्करं मोक्षप्रदञ्च भवति । वेदान्त (उपनिषद्) ब्रह्मतत्त्वस्य मायाजीवतत्त्व-समूहानाञ्च वर्णनमस्ति । उक्त-तत्त्वसमूहानां सुखबोधाय भगवान् वेदव्यासो ब्रह्मसूत्र ग्रन्थमरचयत्। वेदव्यासस्येयममरकृतिर्वेदान्त नाम्ना प्रसिद्धा । अस्मिन् ग्रन्थे वेदानामन्तः सारसर्वस्वं निहितम्, अत एवायं वेदान्तदर्शन नाम्नाभिधीयते ।

ब्रह्मसूत्रस्य मर्मार्थज्ञानाय परवर्त्याचार्यप्रवरैः भाष्याणां रचना व्यधायि । विभिन्नाचार्य-वरेण्यैर्ब्रह्मतत्त्वस्य यथानुभवं स्व स्व मतस्थापनमकारि । यथा कैश्चिद् अद्वैतरूपे, अन्यैः द्वैतरूपे, अपरैः विशिष्टाद्वैतरूपे, शुद्धाद्वैत-रूपे च ब्रह्मतत्त्वमनुभूतम् । अतोऽद्य भारते विभिन्न-शास्त्रीय-मतवादानुरूपं अनेके सम्प्रदायाः प्रचलन्ति ।

भगवता श्रीमन्निम्बार्काचार्येण ब्रह्मसूत्रश्रुतिस्मृतिप्रमाणैः स्वाभाविक-द्वैताद्वैत-सिद्धान्तः स्थापितः । भगवतः श्रीनिम्बार्कस्य लोकप्रियोऽयं सिद्धान्तः दार्शनिक-सम्प्रदायेषु प्राचीनतमः । निम्बार्क-सिद्धान्ते सर्वतः महद् वैशिष्ट्यमस्ति, यदस्मिन् अन्यसमस्त-दार्शनिक-मतवादानां सम्यक् समन्वयो भवति । अतोऽयं निम्बार्क-सिद्धान्तः सर्वांगीणं परिपूर्णं दर्शनमस्ति । यतोहि-अन्यैः सम्मान्यैः धर्माचार्यचरणैः श्रुतिस्मृतिशास्त्रसम्मता एव स्वस्व सिद्धान्ताः स्थापिताः । किन्तुश्रीमन्निम्बार्काचार्यचरणानां स्वभाविकद्वैताद्वैतसिद्धान्तस्तु श्रुति-स्मृतिशास्त्राणां सर्वांगीण-परिपूर्णवचनैः परिपुष्टः । भगवतो वेदस्य द्वैताद्वैत-परक समस्त-वचनानि समादरयता भगवता श्रीनिम्बार्केण सर्व- सिद्धान्त-समन्वयात्मकोऽनादि वैदिकः स्वाभाविक-द्वैताद्वैतसिद्धान्तः प्रतिष्ठापितः । दर्शनशास्त्रेषु ब्रह्मजीवजगतां स्वरूपस्य विवेचनं विस्तरेणाभवत्। भगवतो निम्बार्कस्य-वेदान्त-सिद्धान्तदर्शनस्य वैशिष्ट्यस्यात्र संक्षेपेण दिग्दर्शनं क्रियते ।

श्रुति-स्मृत्यनुगतं ब्रह्म चतुष्पादस्ति । अर्थात् ब्रह्मणः स्वरूपं चतुष्टयमस्ति-अक्षरेश्वर-जीवजगद्भेदात्। प्रमाणम्—

पादोस्य विश्वा भूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि ।

समस्तजगद् ब्रह्मण एक पदेऽस्ति, अक्षरेश्वर जीवाश्चेमे त्रयः पादा अमृतस्वरूपे स्थिताः ।

सच्चिदानन्द स्वरूपं ब्रह्मास्ति, तद् निर्गुणरूपेण व्याप्तमस्ति ।

२. तदेव ब्रह्म यदाऽचिन्त्य विचित्र विशिष्ट जगतः सृष्टिं स्थितिं लयञ्च करोति, तदा तदीश्वरः कथ्यते। तदेव ब्रह्मास्य जगतो निमित्तोपादान-कारणं भवति ।

३. यदा च ब्रह्म एकोऽहं बहु स्याम् इति स्वसंकल्पानुरूपं स्वीयं चिदंशमनन्तरूपेण विस्तारयन् स्वरूपेणैवानन्त-- अणोरणीयान् महतो महीयान्) रूपेण प्रकाशितः । जगतः प्रत्येकांशेऽनुप्रविष्टं चिदंश एव जीव संज्ञां लभते।

४. ब्रह्मणो येषु अनन्तरूपेण चिदंशाः प्रविष्टास्तेषां रूपसमूह एव जगदभिधीयते । श्रुति-स्मृति-प्रतिपादित रूपेण ब्रह्मा चतुर्ष्वपि रूपेण परिपूर्णस्वरूपेण विराजमानोनुभवविषयतां गच्छति । अतो ब्रह्म वेदशास्त्रेषु चतुष्पादरूपेण स्तूयते । तच्च ब्रह्म सर्वत्र परिपूर्णरूपेण विराजमानो विद्योतते, इति शास्त्रसम्मतम् । यथा–

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

स्वाभाविक-द्वैताद्वैत-दर्शनम्–

द्वयोर्भावः-द्विता, द्विता-एव द्वैतम्, न द्वैतम्-इति-अद्वैतम्, द्वैतश्चाद्वैतञ्च इति द्वैताद्वैतम् । जीव-जगद्भ्यां ब्रह्म भिन्नं मन्यते, यत्र तद् द्वैतम्, जीवजगदभिन्नं मन्यते, तद् अद्वैतम् । किन्तु-श्रुतिस्मृतिप्रमाणैर्जीवजगद्भ्यां ब्रह्म स्वाभाविकरूपेण यस्मिन् सिद्धान्ते द्वैतं द्वैतरूपेण स्वीक्रियते, स द्वैताद्वैत-सिद्धान्तः कथ्यते, वेदसार-सर्वस्व- विद्भिस्तत्त्वज्ञैः । भगवतो निम्बार्कस्यायमेव द्वैताद्वैतसिद्धान्तः प्रतिष्ठते ।

दार्शनिक-दृष्ट्या यदि विचार्यते तर्हि निश्चीयते यद् ब्रह्म जीव जगद्रूपे प्रकाशमानोऽपि जीव जगदतीत-रूपेणापि विराजते, तदा ब्रह्म जीव-जगद्भ्यां भिन्नम्, जीवो जगच्च तस्यैव ब्रह्म प्रकाशितरूपम्, इति दृष्ट्या तद् ब्रह्म जीवजगद्भ्यामभिन्नमपि । अत एव ब्रह्मजीवजगत्सु स्वभाविकः पारस्परिको भेदाभेदसम्बन्धः स्वीक्रियते ।

प्रमाणानि–

अविभागोपि समुद्रतरङ्गयोरिव । सूर्य तत्प्रभयोरिव तयो र्विभागः स्यात् ॥

ब्रह्मसूत्र भाष्य २/१/१३

समुद्रे तरंगेष्वभेदे सत्यपि समुद्रतरंगेषु बाह्यरूपतो भेदोस्ति । एव्मेव सूर्ये तत्प्रभायाञ्च अभेदेपि स्वरूपतो भेदोपि वर्तते, अतो जीव-ब्रह्मणोः चाभेदे सत्यपि बाह्यरूपतो भेद एव स्वीक्रियते ।

भू विकार वज्र-वैदूर्यादिवद् ब्रह्मभिन्नोऽपि क्षेत्रज्ञः बाह्यरूपतो भिन्न एव ।

ब्र. सू. भाष्य २/१/२२

यथा-वज्र वैदूर्यादीनि पृथिव्याः विकाराणि । अतस्तदभिन्नानि, किन्तु-बाह्यरूपतो भिन्नान्यपि । एवं हि-ब्रह्मणो जीवेऽभिन्नेपि, बाह्यरूपतः भिन्न एव । एवमेव जगद् ब्रह्मणोरपि भेदाभेद सम्बन्धः प्रमाणसिद्धः।

तदनन्यत्वमारम्भण शब्दादिभ्यः । ब्र. सू. २/१/१४

कारणात्कार्यस्याभेद-सम्बन्धोऽस्ति । यथा श्रुति प्रमाणम्-कार्यस्य कारणानन्यत्वमस्ति, नत्वत्यन्त-भिन्नत्वम्, कुतः वाचारम्भणं विकारो नामधेयम्, मृत्तिकेत्येव सत्यम् ।

तत्त्वमसि ।

सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।

भगवता निम्बार्केणापि नानाप्रमाणैः कारण-ब्रह्मणः कार्यजगतोऽभेदसम्बन्धः प्रदर्शितः । **जन्माद्यस्य यतः**। इत्यादि ब्रह्मसूत्रभाष्ये ब्रह्म जगतः सृष्टिस्थितिलयकाले कर्तृजगदतीतश्चोक्तम् । अतो ब्रह्मणि जगति च भेदोऽप्यस्ति। एवं ब्रह्मणि जीवे च भेदाभेद-सम्बन्धः स्वाभाविकः ।

उभय व्यपदेशात्त्वहि कुण्डलवत् । इत्यादि सूत्र प्रमाणाद् ब्रह्मणि जगति चापि भेदाभेदसम्बन्धो विद्यते। यथा सर्पस्य वलयाकारांशः कारणभूतांशि सर्पे भिन्नाभिन्नरूपेण स्थितः । कारण-ब्रह्मणि जगति च भेदाभेदसम्बन्धः श्रुतिषु सम्यगुपदिष्टः । **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते ।** (तैत्तरीय.)

यः पृथिव्यां तिष्ठन् (बृह.)

इत्यादि श्रुतिषु ब्रह्मणि जगति च भेदः ।

सर्व खल्विदं ब्रह्म । छादोग्योप. ।

एतदात्म्यमिदं सर्वम् । (छान्दोग्योप.) । इत्यादिषु श्रुतिष्वभेदश्चोपदिष्टः ।

सर्वशास्त्रेषु सूक्ष्मदृष्ट्यावलोकनेन सिद्ध्यति यत्-सर्वत्रायं भेदाभेद-सम्बन्ध उपदिष्टः । यथा-

अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाभिहितेन ते । यजन्ति तन्मयास्त्वां वै बहुमूर्त्येक मूर्तिकम् ॥

श्रीद्भागवतम् /१०/४०/७

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजतो मामुपासते । एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतो मुखम् ॥

श्रीमद्भगवद्गीता, ६/१५

ऊँ नमो वासुदेवाय तस्मै भगवते सदा । व्यतिरिक्तं न यस्यास्ति व्यतिरिक्तोऽखिलस्य यः ॥

वि. प्रा. १/२६/७८

नित्यानित्यप्रपश्चात्मन् निष्प्रपञ्चामलाश्रितः । एकानेक नमस्तुभ्यं वासुदेवादिकारण ॥

वि. प्रा. १/२०/१२

यः स्थूलः सूक्ष्मः प्रकट-प्रकाशो, यः सर्वभूतो न च सर्वभूतः ।
विश्वं यतश्चैतद् विश्वहेतो, नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥

वि. प्रा. १/२०/१३

अन्तर्यामी जगद्रूपी सर्वसाक्षी निरञ्जनः । भिन्नाभिन्नस्वरूपेण स्थितो वै परमेश्वरः ॥

बृ. ना. पु. ३/२७

द्वैतश्चैव तथा द्वैतं द्वैताद्वैतं तथैव च । न द्वैतं नापि चाद्वैतमिति तत्पारमार्थिकम् ॥

द. सं. ७/४८

मनु संहितायाः द्वादशाध्यायस्य पञ्चाशीतितम श्लोकस्य टीकायां मेधातिथिर्लिखति–

अतो वेदान्तोपदिष्टस्य समस्त-द्वैताद्वैत-विषयस्य सदात्मनो दर्शनं सदात्मज्ञानमभिप्रेतमिति एतत्समस्तशास्त्र- वाक्यैरिदमेव निश्चीयते यद् ब्रह्मजीवजगत्सु भेदाभेद (द्वैताद्वैत) सम्बन्ध एवास्ति, अयमेव सर्वशास्त्र-सिद्धान्तः । केवलं द्वैतमद्वैतं वा नास्ति सर्वशास्त्रसिद्धान्तः । यतोहि केवलं द्वैत-कथनेनाद्वैतवाचक श्रुतिस्मृतीनां केवलमद्वैत- कथनेन च भेदवाचक श्रुतिस्मृतीनां वाक्यानां वर्जनं भवति । किन्तु द्वैताद्वैतसिद्धान्ते भेदाभेदो भयवाचकश्रुति-स्मृतीनां वाक्यानां समानरूपेण सादरं ग्रहणं भवति । न कस्याप्येकस्य वर्जनं गौणता विधानं वा । अतः एव द्वैताद्वैतसिद्धान्तेनैव समस्तशास्त्राणां यथार्थं सामञ्जस्यं भवति ।

वेदसर्वस्व-निम्बार्क वेदान्तदर्शनानुसारं ब्रह्मणः स्वतन्त्र-सत्तास्ति । जीवस्तु सर्वदा श्री सर्वेश्वराधीनत्वात्र स्वतन्त्रः । वेदान्त-दशश्लोक्यामुक्तम्--

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनम्, शरीर-संयोगवियोग-योग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेह-भिन्नम् , ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥

वे. दश. श्लोकी

जगतः सृष्टि-स्थिति-संहतिकर्ता श्रीसर्वेश्वर एव, अतः स स्वतन्त्रः। समस्तस्यास्य जगतः स्थितिः प्रवृत्तिश्च ब्रह्माधीनत्वाद् ब्रह्मजगतोऽन्तरात्मा, यस्य वस्तुन आत्मा ब्रह्म भवति, तद् ब्रह्मात्मकं कथ्यते, अत इदं इयद् ब्रह्मात्मकमस्ति । ब्रह्मात्मकत्वाज्जगज्जीवौ ब्रह्मणो भिन्नौ । यथा सुवर्णकुण्डलं सुवर्णात्मकमतस्तत् सुवर्णादभिन्नम्, यः पदार्थो यस्य व्याप्यं भवति, सोऽपि तस्मादभिन्नो भवति । यथा घटो मृदो व्याप्योऽतो घटो मृत्तिकाया अभिन्नः । तथैव सम्पूर्णं जगद् ब्रह्मणो व्याप्यत्वात् तदभिन्नम् । किन्तु सकलमिदं जगन्नाम रूपादिभेदेन ब्रह्मणो भिन्नमपि विद्यते। स्वाभाविक-भेदाभेदसिद्धान्तस्येदमेव रहस्यं यद्-जीवरूपेण जड़रूपेण चेदं चराचरात्मकं जगद् ब्रह्मणो भिन्नमस्ति, किन्तु ब्रह्मणोंऽशत्वात् स्वभावतोऽभिन्नमपि । अयं भेदाभेदसम्बन्ध औपाधिको न, न च भ्रममूलकः, किन्तु स्वाभाविक-भेदाभेदः सर्वत्र दरीदृश्यते । यथा दुग्धेऽमूर्तरूपेण घृतस्य स्थितिर्विद्यते, तथैव समस्त-वेदशास्त्रेषु द्वैताद्वैत-सिद्धान्तस्य स्थितिरन्तर्हितास्ति, तस्यैव प्रकाशनं भगवता निम्बार्केण लोकहिताय विहितम् ।

श्रीनिम्बार्केण वेदशास्त्र-प्रमाणैः घोषितम् ब्रह्म सत्यम्, जगदपि सत्यम् । सत्यात् सत्यमेव जायते, एतदभिप्रायेण भगवता निम्बार्केणोक्तं वेदान्त-कामधेनौ--

सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकम्, श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः ।
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतम्, त्रिरूपतापि श्रुतिसूत्रसाधिता ॥

श्रुतिस्मृति ब्रह्मसूत्रेण ब्रह्मणस्त्रिविधं स्वरूपं निर्णीतम्, भोक्ता भोग्यं नियन्ता चेति। अतस्त्रिरूपं यथार्थमेव न तु मिथ्या। परन्तु अद्वैतवादिभिर्महाभागैः-ब्रह्म सत्यम्, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः -

इत्युक्तम्। उक्तिरियं कथं शास्त्रसम्मता ? यतोहि-भगवता वेदेन स्पष्टमेव कथितम्, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, एषोऽणुरात्मा । वालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च भागो जीवः । सर्वं खल्विदं ब्रह्म । तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्यं सर्वमिदं जगत् ।

अंशो नाना व्यपदेशात् । जन्माद्यस्य यतः ।

यदि ब्रह्मणोऽन्यत् किमपि नास्ति, तदा किं श्रुतिस्मृत्युक्त-वाक्यानि व्यर्थानि ? श्रीमद्भगवद् गीतायामप्युक्तम्-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः । एतावता-भगवद् वाक्यैरपि जीवस्य पृथगस्तित्त्वं सिद्ध्यति। अतो जगन्मिथ्या **जीवो ब्रह्मैव नापरः** इत्युक्तिः श्रुतिसम्मता युक्ति सम्मतापि न प्रतीयते ।

श्रुतिस्मृतिप्रमाणैः द्वैताद्वैतमत-प्रकाशक (स्थापक) श्रीनिम्बार्काचार्यमते जीवो जगच्च सर्वं ब्रह्मणः एवांशः, ब्रह्मणि च स्थितः चराचरं जगत् सत्यम् । स एवैव ब्रह्मणोंशत्वाद् ब्रह्मणोऽभिन्न अंशिब्रह्मणोंशजीव-जगतोः पृथक् सत्ता नास्ति । अतो जीव-जगद्भ्यां सह ब्रह्माद्वैतम् । एवम् द्वैताद्वैतवादि श्रीनिम्बार्कस्याद्वैतं जीवजगद्रूपद्वैतं विहाय न, किन्तु-जगज्जीवौ ब्रह्मणोऽङ्गीभूत-रूपेणैवाद्वैतमस्ति । अद्वैत-वादिनामद्वैतत्त्वे तु जीव-जगतोः स्थानं नास्ति, जगच्च मिथ्या । जीवजगतोः त्याग-करणमपि जीवजगतोः सत्तास्वीकरणमेव । अर्थात् जीवजगतोऽस्तित्वेऽपि तयोः परित्यागः, एतावता द्वैतवादिनां वचनोक्तिभिरेव सिद्धं जीवजगतोऽस्तित्वम्। व्यवहारतोः जीवजगतोः सत्ता स्वीकरणेन तु द्वैतवाद एव प्रतिष्ठते, अद्वैतत्वं तु निरसितं भवति । अतस्तेषामद्वैतवादो यथार्थ द्वैतवादः कथयितुं न शक्यते । द्वैता-द्वैतवादी श्रीनिम्बार्को यथार्थद्वैतवादी, यतस्तस्य द्वैताद्वैतवादे जीव-जगतोरस्तित्वं स्वाभाविकं स्वीक्रियते ।

यदि भेदाभेदोभय-वाचक श्रुतयः सन्ति, तर्हि कस्या अपि श्रुतेर्वर्जनं कर्तुं न शक्यते । यतोहि तत्त्वद्वय- वाचकाः श्रुतयस्तुल्यबलाः सन्ति । अतस्तुल्यरूपेण श्रुतिद्वय-ग्रहणेनैव श्रुतीनां प्रामाण्यं सुरक्षितं भवति । आचार्य श्रीनिम्बार्केण भेदाभेदवाचक-श्रुतिद्वयं गृहीत्वा भेदाभेदवादः स्थापितः ।

यच्च भेदवादिनोऽभेदवादिनश्च वदन्ति यद् भेदाभेदौ परस्परं विरुद्धौ, अतस्तावेकत्र स्थातुं न शक्यते। एवं भेदाभेद नामको वाद एव भवितुं न शक्यते । तेषामुक्तिरियं भ्रान्तिपूर्णा, यतो भेदाभेदावापाततो विरुद्धौ प्रतीयेत, किन्तु सूक्ष्म-विवेचनावसरे, यथा-अंशाशि-विवेचनस्थले विरुद्धौ न प्रतिभासेते । अंशो नाना व्यपदेशाद् इति सूत्रव्याख्यायां सुस्पष्टम् । अंशांशि स्थले भेदाभेदौ बोधगम्यौ भवेतामेतदर्थं निम्नदृष्टान्तेन समाधीयते ।

वृक्षस्य शाखा वृक्षांशः, अंशरूप-शाखांशिनो-वृक्षादभिन्ना, एतत्सर्वे स्वीकुर्वन्ति । यतः शाखा वृक्षं विहाय पृथक् स्थातुं न शक्यते । अतः शाखा वृक्षस्यांश एव, शाखा वृक्षो न, वृक्षो शाखामतिक्रम्यास्ते, वृक्षो व्यापकोऽपि, आकृत्यापि वृक्षो महानस्ति । अतः शाखा वृक्षाद् भिन्नापि विद्यते । विचारसरण्या यदि

दृश्यते, तर्हि वृक्षशाखायां भेदाभेदसम्बन्धः स्पष्टः । एवमेव ब्रह्मणा सह जीवजगतोरपि भेदाभेद-सम्बन्धस्तिष्ठति ।

यथाहि अस्माकमेकोऽखण्ड आत्मा (जीवः) अस्ति । अस्यात्मनश्च दर्शनश्रवणमननादयोऽनेकाः शक्तयः। यदा वयं निद्रिता भवामस्तदा सर्वाः शक्तय आत्मनि लीना भवन्ति, यदा च जागृता भवामस्तदा ताः शक्तयः प्रकाशिताः भवन्ति । आत्मा च ताभिः शक्तिभिर्विभिन्नानि कार्याणि करोति, शक्तय आत्मनोंशा एव, यतस्ता शक्तय एकस्यैवात्मनो विभिन्नरूपेण प्रकाश एवास्ति, कश्चिदेकशक्तिरूपोंशः (आत्मा) इति कथयितुं शक्यते । अतः सा एकैका शक्तिरात्मनो भिन्ना, किन्तु शक्तेरात्मनः पृथक् सत्ताभावेनात्मनोऽभिन्नापि। अत आत्मना सह तासां शक्तीनां भेदाभेद सम्बन्ध एव स्पष्टः ।

एवम् अखण्डमेकं ब्रह्मापि जीवजगद्रूपानन्तशक्त्या आधारोऽस्ति । अनन्त-जगद्रूपशक्तयस्त-स्यानन्तशक्तिमतो ब्रह्मणोंशत्वात् तासां शक्तीनां पृथक् सत्ता नास्ति, अतस्ते जगज्जीवरूपांशा ब्रह्मणोऽभिन्नाः। अंशरूपा जगज्जीवाश्चांशिरूपं ब्रह्म न सन्ति । अतस्ते ब्रह्मणो भिन्ना अपि । एवं ब्रह्मणा सह जीवजगतोर्भेदाभेद- सम्वन्धो वेद-शास्त्रपरिपुष्टः ।

अद्वैत-सिद्धान्त-प्रतिष्ठापका भगवन्तः श्रीशंकराचार्यचरणा अपि भेदाभेदसिद्धान्तं स्वीकुर्वन्त्य एव प्रतीयन्ते, तेषां निम्नरचनया--

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् । सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो न तारंगः ।

गोस्वामी श्रीतुलसीदास महाभागाः स्व सिद्धान्ते विशिष्टाद्वैते सत्यपि ते पारमार्थिकरूपेण द्वैताद्वैत-सिद्धान्तं स्पष्टं स्वीकुर्वन्ति--

यथा - गिराअर्थ जलवीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न । वन्दौ सीतारामपद जाहि परमप्रिय खिन्न ॥

इत्यादि समस्तशास्त्र-वचनानामिदमेव तात्पर्यम्--

यद्-वेद सर्वस्वं निम्बार्कदर्शनं, सर्वश्रुतिस्मृति शास्त्रसम्मतमिति शम् ।

श्रीनिकुंज, शास्त्री सदन, नेहरुनगर, ब्यावर (राज०)
फोन. २५७४५२

* * *

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की माधुर्योपासना

–म० श्रीभक्तवत्सलशरण

श्रीराधाकृष्ण को उपास्य मानकर चलने वाली धारा में निम्बार्कीय माधुर्य-भाव की साधना अथवा रसिक साधना अद्वितीय है । समस्त वैष्णव सम्प्रदायों में श्रीकृष्ण भक्ति की माधुर्य उपासना का सबसे प्राचीन प्रवर्तन का श्रेय श्रीनिम्वार्काचार्य को ही है । उनके सिद्धान्त ग्रन्थों से इस तथ्य की पूर्ण रूपेण पुष्टि हो जाती हैं । श्रुतियों ने जिस रसोपासना की ओर इंगित किया है, वह रसरूप परमात्मा श्रीकृष्ण ही हैं । उन्हीं की उपासना से जीवों को परम सुख की प्राप्ति हो सकती है । इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्काचार्य ने श्रीराधाकृष्ण की माधुर्योपासना पर विशेष बल दिया है ।

श्रीकृष्ण के चरणों की शरण लिए बिना कल्याण नहीं हो सकता । अस्तु, जीव की एक मात्र गति पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ही हैं। साथ ही उनके वामांग में विराजमान उन्हीं के समान अनुपम लावण्य-सौभाग्य से युक्त तथा सहस्रों सखियों से परिवेष्टित सर्वेश्वरी श्रीराधा की आराधना करना परम आवश्यक है-वेदान्त दशश्लोकी के अनुसार-

अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा, विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम् ॥

अथर्ववेद के राधिकोपनिषद् में तो यहाँ तक कहा गया है कि बिना सखीभाव का अवलम्बन लिए कोई भी साधक इस दिव्य माधुर्य रस का आस्वादन नहीं कर सकता और यह भाव बिना सर्वेश्वरी श्रीराधा की कृपा के किसी को प्राप्त नहीं होता । सम्पूर्ण भुवन को अपनी ओर सहज में ही आकृष्ट करने वाले पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण इन्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्रियतमा मानते हुए प्रेमार्द्र होकर उनकी चरण रज को शिरोधार्य करने के लिए सदैव लालायित रहते हैं, जिन श्रीराधा के वशीभूत परात्पर भगवान् श्रीकृष्ण रहते हैं, उन्हीं की उपासना का सन्देश प्रियतम भाव से श्रुतियों ने दिया है ।

वस्तुतः श्रीराधा और कृष्ण रस के सार-समुद्र एक ही देहधारी है । क्रीड़ा करने के लिए ही दो हुए हैं । उनका अंग-अंगी सम्वन्ध द्वैताद्वैत भाव का पोषक है ।

येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिःदेहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत् । (श्रीराधाकृष्णोपनिषद्)

श्रीकृष्ण का लीलाविलास ही मधुर रस का मूलाधार है ।

यही मधुरा रति विभावादि से पुष्ट होकर माधुर्यरस में परिणत हो जाती है । माधुर्य रस को समझाने के लिए प्रथम प्रेम के स्वरूप को जानना आवश्यक है । प्रेम की गति अद्‌भुत है । सच्चे प्रेम में देह के समस्त सुख विस्मृत हो जाते हैं । प्रियतम को जो-जो बातें रुचती है, वही प्रेमी को भाती हैं । प्रेम और

काम में आकाश पाताल का अन्तर है। जहाँ नायक अपना सुख चाहता है और नायिका अपना रस, तो उसे प्रेम नहीं कहा जा सकता । यह तो साधारण सुख भोग ही है । जहाँ अपने-अपने सुख की अभिलाषा है, वहाँ सच्चा प्रेम कहाँ ?

एक रस सनेह की रीति ऐसी है, जो सनेही को सुख चाहें अपनी चाह कछु नाहि। खाई और त्रिपित होई और । ऐसा निमित्त रहित नित्य एकरस सहज प्रेम ही श्रीकिशोरकिशोरीजी का प्रेम है, जो अन्यथा भाव से अप्राप्य है । प्रिया के समस्त लीला विलास प्रियतम के हेतु है और प्रियतम भी वही करते हैं जिससे प्रिया को सुख प्राप्त हो । प्रिया-प्रियतम भी एक प्राण दो देह है । अतः उनके समस्त आनन्द रस सखियों की प्रसन्नता के लिए हैं । सखियों की प्रसन्नता श्रीलाडलीलाल के सुख में है। इस प्रकार उनमें से किसी का भी सुख अपने निमित्त नहीं है, अतः श्रीलाडलीलाल का प्रेम अप्राकृत है, जो काम से कोसों दूर है, श्रीकृष्ण काम के वश में नहीं है । जिन कुंजविहारीजी के स्वरूप पर कोटि-कोटि कामदेव न्यौछावर हो जाते हैं, जो कोटि-कोटि मनोज-रति सहित सबके मन को मोहित किये रहते हैं । भला वे कभी कामवश हो सकते हैं ? अतः श्रीश्यामाश्याम का यह प्रेम विशुद्ध है, सकाम कदापि नहीं।

जिन मनुष्यों की मनोवृत्तियाँ काम कलुषित सांसारिक शृंगार रस के आस्वादन के अभ्यास से विकृत हो चुकी हैं, वे इस दिव्य उज्ज्वल रस की अवतारणा भी पार्थिव भाव भूमि पर ही करेंगे । अन्यथा युगल का स्वसुख विहीन प्रेम केलि अनन्य केलि को सामान्य कामकेलि से भिन्न देखने की दिव्य दृष्टि भला उन्हें कैसे प्राप्त हो सकती है?

रस और सुख में भेद है । सुख उसे कहते हैं, जो कार्य के द्वारा मिलता है । यह भगवद् प्रार्थना द्वारा मिलता है । सुख का परिणाम दुःख है, पर रस का परिणाम आनन्द । ऐसा कोई दुःख नहीं, जो मानव को पराधीनता से नहीं मिलता हो ।

रस के द्वारा ही मानसिक निर्विकारता आती है । भर पेट गुड़ के भोजन को ही संसार का सर्वोच्च आनन्द समझने वाले को छटांक भर गुलकन्द कुछ भी नहीं जंचेगा । जैसे द्राक्षा, सिता और सुधा सबका अलग-अलग मिठास और स्वाद है, शृंगार उज्ज्वल एवं निकुंजरसों का भी अपना-अपना माधुर्य है, जो जिस रस का प्रेमी है, उसको वही प्रेयः लगेगा । अतः उसे वही देना भी चाहिए ।

इसलिये सुविज्ञ रसिकों ने अपनी रस साधना को बड़ी सावधानी से सुरक्षित रखा था । अनिच्छुक अनधिकारी अथवा आशिक को इसकी हवा भी न लगने दी । इसके प्रेमी उपासकों को ही गोप्य रूप से प्रदान करने की धारणा उन्होंने दिखाई । क्योंकि परिपक्व भाजन में ही रस ठहर सकता है । कच्चे कलश में भर देने से कलश तो गलकर टूट-फूट जायेगा ही, रस भी इधर-उधर बिखर जायेगा ।

महामृदुला महामधुर मधु महा रहसि रस रासि ।
महा सुखद सर्वेश की महा मनोभव भासि ।
महा मनोभव भासि भूल जनु देउ सठहुँ कोऊ ।
परम प्रेम परिकास आस पद वास चहो जाऊ॥
परपक भये भाजन बिना सुरंग ठारि दीजिए कहाँ ।
श्रीहरिप्रिया को सर्व विभव दुर्लभ ते दुर्लभ यहाँ ॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने उद्धव से कहा है-- (श्रीमहावाणी)

विपयान् स्मरतश्चित्तं विषयेपु विपज्जते । मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते ।

जिस प्रकार विषयी पुरुषों का चित्त विषयों की अनुस्मृति द्वारा सांसारिक विषयों में निरत रहता हो, उसी प्रकार भगवान् के गुणानुवाद में निरत पुरुषों का प्रेम प्रभु में ही लगा रहता है ।

श्रीगौमुख वशिष्ठाश्रम,
आबूपर्वत

❋ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❋

हिन्दू संस्कृति शास्त्र सिद्धान्त पर आधारित है, शास्त्र की अवज्ञा हिन्दू-संस्कृति की अवज्ञा है।

❋

"आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः" जो अपने सदाचार से, अपने धर्म से, अपनी संस्कृति से, अपने स्वरूप से, अपने आदर्श से, उत्तम गुणों से हीन है,उन्हें वेदादि शास्त्र भी पवित्र नहीं करते हैं।

पूज्य आचार्यश्री एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के प्राचीन मठ-मन्दिर

–नरेन्द्रकुमार सक्सेना

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के महानुभावों ने भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया है तथा पर्णकुटी एवं आश्रम आदि का निर्माण कराया है । कई प्रान्तों में हमारे सम्प्रदाय के बहुत से जीर्ण-शीर्ण मन्दिर नष्ट भी हो रहे हैं ।

आचार्यश्री ने अपना अनुराग एवं प्रेम निम्बार्क सम्प्रदाय के मन्दिरों का निर्माण कराके निम्बार्क सम्प्रदाय पर महती कृपा की है तथा प्रमाणित किया कि उनका प्रेम एवं अनुराग निम्बार्क सम्प्रदाय के मन्दिर निर्माण के प्रति है।

आचार्यश्री ने पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके उन्हें नया रूप दिया तथा नये मन्दिरों को निर्माण करके उन्होंने सिद्ध किया कि उनका मन्दिर निर्माण में अति प्रेम व्याप्त है । श्रीआचार्यश्री ने श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर मदनगंज एवं श्रीनिम्बार्ककोट अजमेर का निर्माण करके निम्बार्क साधकों को धार्मिक गतिविधि के लिए एक उचित स्थान दिया है। यह कहने में संकोच नहीं हो रहा है कि पूज्य आचार्यश्री ने पीठासीन होने के पश्चात् जितने मन्दिर बनवाये, उनका बहुत महत्त्व है । श्रीनिम्बार्क भगवान् की भजनस्थली निम्बग्राम, गोवर्धन में निम्बार्क राधाकृष्णबिहारीजी को विराजमान कर नये इतिहास की रचना की है, जबकि पूर्व में इस ओर किसी का भी ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है । आज निम्बग्राम में एक विशाल मन्दिर स्थापित है, जहाँ महन्त श्रीहरिशरणजी सेवारत हैं तथा इसके अलावा महाराजश्री द्वारा निम्बार्क दर्शन विद्यालय, औषधालय,गोशाला का भी निर्माण कराकर श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय पर महती कृपा की है ।

पूज्य आचार्यश्री ने श्रीनिम्बार्कनिकुंजबिहारी मन्दिर जयपुर, पण्डरपुर एवं श्रीपरशुरामद्वारा पुष्करतीर्थ का जीर्णोद्धार कराकर निम्बार्क सम्प्रदाय को भक्तिसाधना एवं भजन हेतु एक उचित स्थान दिया है । स्मरणीय रहे, पूज्य आचार्यश्री द्वारा किये गये समस्त निर्माण अद्वितीय हैं ।

पूज्य आचार्यश्री ने श्रीनिम्बार्क धाम मूंगी-पैठण में जो वर्तमान में विशाल मन्दिर बनाया है, जिसका निर्माण बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था, क्योंकि वह श्रीनिम्बार्क भगवान् की जन्मस्थली है और पूज्य आचार्यश्री ने भव्य मन्दिर का निर्माण करा कर एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की है ।

यद्यपि निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित हस्तेड़ा, किशनगढ-रेनवाल, पलसाना, चला, नीम का थाना,

उदयपुर (शेखावाटी), अजमेर, पुष्कर, मदनगंज, शाहपुरा, भीलवाड़ा, बंगाल, नैमिषारण्य, मथुरा(नारदटीला), पण्ढरपुर, लीम्बड़ी एवं वृन्दावन धाम में मेरी जानकारी में निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित मन्दिर स्थापित हैं। इसके अलावा भी भारत में और भी मन्दिर हैं, जिनकी मुझे जानकारी नहीं हो सकी है, लेकिन उपरोक्त समस्त निम्बार्क मन्दिरों का नियन्त्रण पूज्य आचार्य द्वारा बहुत सहनशीलता एवं अनुशासन के साथ किया जाता है, यह बहुत गौरव की बात है ।

श्रीवृन्दावनधाम में श्री श्रीजीकुंज, नागावालीकुंज, टोपीकुंज, टटियास्थान, वरसानिकुंज, जीवारामकुंज आदि भव्य देवालय हैं । मुझे विश्वास है, पूज्य आचार्यश्री का इसी प्रकार मन्दिर निर्माण कार्यक्रम चलता रहेगा और भविष्य में निम्बार्क सम्प्रदाय के ही सबसे अधिक देवालय एवं आश्रम होंगे । मैंने अनुभव किया है कि श्रीयुवराजजी भी दिव्य सन्त अपनी युग के साबित होंगे और महाराजश्री ने उनको उत्तराधिकारी बना कर निम्बार्क सम्प्रदाय पर महती कृपा की है ।

एडवोकेट, इलाहाबादी,
एटा (उ. प्र.)

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

मानव के जीवन में यदि सर्वाङ्गीण पवित्रता आ जाय तो वह मानव मानव ही नहीं, अपितु वह देवरूप हो जाता है। इहलोक में वह सर्व वन्दनीय एवं ऊर्ध्वलोकों में परमानन्द का अनुभव करता है।

❊

जहाँ पवित्रता का अभाव है वहीं आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक त्रिविध ताप-परिताप प्रकट होने लगते हैं और विनाश की अवस्था आ जाती है।

अखिल भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
व
श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

–विजयशंकर पारीक

वैष्णव चतुःसम्प्रदायों में निम्बार्क सम्प्रदाय अत्यन्त प्राचीन है । इस सम्प्रदाय के आद्य प्रवर्तक भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य हैं । भक्तजनों की करुणा भरी पुकार पर निकुंजबिहारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने प्रिय आयुध श्रीसुदर्शन को आदेश देते हुए कहा कि–

सुदर्शन महाबाहो ! कोटिसूर्य-समप्रभ ।
अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥

इस भगवद् आज्ञा के अनुसार श्रीचक्रराज सुदर्शन ने दक्षिण देश में बालक नियमानन्द के रूप में अवतार लिया । एक बार आपके आश्रम में दिवाभोजी महात्मा के रूप में आये हुए ब्रह्माजी को रात्री हो जाने पर भोजन करने से निषेध करते देखकर आपने नीम के पेड़ पर अपने तेजतत्त्व श्रीसुदर्शन चक्र को आवाहन कर सूर्य रूप में दर्शन कराकर उन्हें भोजन कराया । निम्ब के वृक्ष पर सूर्य दिखाने के कारण ब्रह्माजी द्वारा आपका नियमानन्द से निम्बार्क नाम रखा गया। इस सम्प्रदाय का नाम निम्बार्क सम्प्रदाय पड़ा । आपकी सम्प्रदाय आचार्य परम्परा में सर्वाधार सर्वाधिपति विश्वव्यापक जगन्नियन्ता आनन्दकन्द भगवान् श्रीसर्वेश्वर की असीम कृपा का ही प्रत्यक्ष फल है कि आज उनके परम भक्त निखिल महीमण्डलाचार्य-चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्र स्वतन्त्र यतिपतिदिनेश श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यपाद- पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का राजस्थान की मरुधरा पर पधारना तब हुआ जब चारों ओर यावनी संस्कृति का प्रभाव अत्यधिक प्रबल था । आचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के बाद आचार्य पद पर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज अभिषिक्त हुए । इनका जन्म जयपुर राज्य के अन्तर्गत पन्द्रहवीं शताब्दी भाद्रपद कृष्ण ५ को हुआ था । वि० सं० १५१४ से लेकर वि० सं० १६६४ तक आप आचार्यपीठ पर अधिष्ठित रहे । आपका जन्म ब्राह्मण कुल में ही हुआ था । आपके ग्रन्थ परशुरामसागर में लिखा है कि–

ब्रह्म कर्म करणी गई, गई जनेऊ जाति । अब हम हुए रामजन, परसा परम सुजानि ॥

आप को पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही वैराग्य का रंग लग गया था । आपके अलौकिक वैदुष्य,

विलक्षण वुद्धि, चमत्कारपूर्ण सिद्धि और गम्भीरता के कारण गुरुदेव का आपके प्रति अत्यधिक स्नेह था। गुरुदेव के द्वादश विद्वान् शिष्यों में भगवान् श्रीसर्वेश्वरजी की सेवा आपको ही समर्पित की गई थी । आपने भारत का भ्रमण करते हुए गुरुदेव परम्परा को चिरस्थायी बनाने के लिए अनेक मन्दिर, मठ, प्रतिष्ठान स्थापित किये । निम्वार्कतीर्थ के विषय में प्रामाणिक इतिहास मिलता है। यहाँ पर भयंकर बीहड़ वन था। आपने ही यहाँ आचार्यपीठ की स्थापना की । यहाँ पर यावनी संस्कृति का प्रचुर प्रभाव था। मुसलमान नामधारी अत्याचारी लोग सन्त मण्डल व भक्त समुदाय को यातना पहुँचाते थे । यहाँ पर सुन्दर जल, वृक्ष, पुष्प, लताओं से आच्छादित आश्रम था । पैशाचिक सिद्धि सम्पन्न दुष्ट यवन फकीर मस्तिंगशाह ने अपनी तुच्छ सिद्धियों से इस क्षेत्र पर आधिपत्य कर लिया था । उस आश्रम के निकट होकर पुष्कर एवं द्वारका जाने का मार्ग था । यह मदान्ध मस्तिंगशाह परमार्थ साधकों के रास्ते में काफी दुःख पहुँचाया करता था । एक वार कुछ सन्त-महात्मा इसी मार्ग से द्वारका धाम को जा रहे थे । जव फकीर के निवास स्थल के समीप पहुँचे, तव फकीर ने पैशाचिक सिद्धि के वल पर अनेक प्रकार से उनके साथ दुर्व्यवहार करते हुए व्यथित किया। उसके इन अत्याचारों से त्रस्त होकर सन्त समूह जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की शरण में मथुरा गये और आचार्यश्री से निवेदन किया कि भगवन् ! यवन फकीर द्वारा किये गये दुष्कृत्यों से आप ही हमें मुक्ति दिला सकते हैं । आपने अपने कृपापात्र शिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को आज्ञा प्रदान की--इस दुष्ट यवन को जाकर परास्त करो । गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद और आज्ञा को शिरोधार्य करके आपने ईश्वरीय कार्य सम्पादन करने के लिए कुछ सन्तों को साथ लेकर वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु प्रस्थान किया। सबसे पहले पुष्करराज में स्नान किया । वह यवन यहाँ से १२ कोस की दूरी पर ही रहता था । सन्त मण्डली को साथ लेकर उस दुष्ट निवास स्थान तक पहुँच गये। आये हुए सन्तों को देखकर यवन फकीर ने क्रोधानल से जलकर अपनी समस्त सिद्धियों द्वारा सबको मूर्छित करना चाहा था । आध्यात्मिक प्रतिमा के सामने भौतिक अनित्य तुच्छ सिद्धियां क्या प्रभाव रखती है। उसके पास तीन पैशाचिक सिद्धियां थी, जिनको श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने हरण कर ली । अपने आपको असहाय एवं असमर्थ पाकर क्षमा प्रार्थना करने लगा । आपका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया । उससे प्रभावित अनेकानेक मुसलमान भी आपके भक्त मण्डल में समाविष्ट हुए । उस यवन फकीर की कब्र श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठ, निम्वार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से कुछ दूरी पर दक्षिण दिशा में विद्यमान है । इस मरु प्रदेश को निष्कण्टक बनाकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया और कुछ समय निम्वार्कतीर्थ पर निवास कर मथुरा को चले गये । फिर श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी महाराज को इनके चमत्कारिक कार्य कौशल तथा सिद्धि बल को देखकर आश्चर्य हुआ। इन्हें सब प्रकार से योग्य समझकर इन्हें आचार्यपद पर प्रतिष्ठित करके भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान कर मरुस्थल प्रदेश में जाकर वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार करो, ऐसी आज्ञा प्रदान की। आचार्यश्री के सम्बन्ध में भक्त महिला कवियित्री श्रीमती सुन्दरकुँवरिजी कहती हैं–

लपटे उर श्रीकृष्ण जब, परसुराम जू देव । प्रेमावेशित मिलत लहि, लहि आनन्द अभेव ॥
यह हू इन मानी न अरु, जग जन जब नियराय । तब श्रीकृष्ण सु भजन इन, कर गहि लिय दृढभाय॥
परसुराम जू मूठि में, जो हुब सालिगराम । सो सेवा भाजत अजहुँ, श्रीसर्वेश्वर नाम ॥

आनन्दकन्द भगवान् श्रीसर्वेश्वर की सेवा सहित इस मरुस्थल प्रदेश में आकर भगवद्भक्ति की गंगा बहाने लगे । इनके द्वारा निर्मित परशुरामसागर विशाल ग्रन्थ है । यह विशाल ग्रन्थ ४ भागों में विभक्त है। **प्रथमखण्ड परशुरामवाणी, द्वितीयखण्ड परशुराम चरितावलियां, तृतीयखण्ड परशुराम लीलाएँ, चतुर्थखण्ड परशुराम पदावली**। ग्रन्थ का सम्पादन विद्वद्वर डा. श्रीरामप्रसादजी शर्मा एम. ए. पी-एच. डी. पूर्व प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय किशनगढ (राज.) ने किया है । श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज द्वारा रचित परशुरामसागर नामक गन्थ में द्वैताद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया है --

हरि आदिष्ट में प्रसराम, दिष्टक सबै समांहि । दीसै अगनि तरंग ज्यौं, ताकी ताही मांहि ॥
कियां न होई जीव को, कन कछु जीवक हाथि । हरि का कीया प्रसराम को बिना मेटण रामराथि॥
तरवर न्यारौ छांहते, छांह बिना तर नाहि । यो हरि न्यारौ प्रसराम रु दिष्टक है हरि माहि ॥
आभूपण ज्यौं कनक कै, कटि कियै जु अनंत । फेरि मिल्यांवत प्रसराम, कण को कण नग अंत॥

आचार्यचरण ने साधना को मूल वताया है और सत्संग का सेवन करना चाहिए तथा हरिनाम स्मरण ही मोक्ष का साधन बताया है । जैसे--

एक घड़ा आधी घड़ी, आधी को अधभाग । साधु समागम प्रसराम, जो करिये बडभाग ॥
जो सुख नाहि सतसंग को, हिर्दे नाहि हरि नांऊ । भगति विमुख नर प्रसराम यूनि समाऊ ॥

श्रीसर्वेश्वर भगवान् के प्रति सर्वोपरि भक्ति भावना व निकुंज श्यामाश्याम उनके हृदय में निवास करते हैं-**काहू के कोई भजन, काहु कै कोई देव । परसा तहु करि नेम धरि, सर्वेश्वर की सेव ॥**
मन मैं सखी सरूप करि, रु तन धरैं ज्यौं दास । परसराम ता दास कै, हिरदै जुगल निवास ॥

आचार्यश्री परशुरामजी महाराज ने जिन दुष्ट यवनों द्वारा सम्पूर्ण भारत को अपने आधिपत्य में कर लिया था, जो हिन्दू जनता को अनेक प्रकार से दुःखित व प्रताडित करते थे । मन्दिरों को ध्वस्त तथा देव मूर्तियों को खण्डित करते थे । यवनों ने बर्बरता पूर्वक त्राहि-त्राहि मचवा दी थी । उनको अनेक प्रकारों से परास्त कर वैष्णवता का प्रचार प्रसार व जनता का कल्याण किया था । आप कभी पुष्करराज में अथवा निम्बार्क तीर्थ में विराजमान रहते थे । आपने अनेक प्रान्तों का भ्रमण करते हुए सनातन धर्म का उत्थान किया । आचार्यश्री के अनेकों चमत्कारिक चरित्र मिलते हैं । भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु से सम्बन्धित एक दो चरित्र प्रस्तुत कर रहे हैं ।

आप भगवन्निम्बार्काचार्य के स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के कट्टर समर्थक थे । भक्ति ज्ञान वैराग्य

और कर्मोपासना के समस्त धार्मिक विषयों पर आपका समान अधिकार था । एक वार एक वेदान्ताभिमानी सन्यासी ने आपकी परीक्षा करने के लिये अपने उत्कृष्ट बुद्धि वाले शिष्य को आपके पास जल का पूरा भरा घड़ा भेजा तो, उत्तर में आपने उस घड़े मे शक्कर डलवाकर कहा देखो ! तुम्हारे गुरु ने तुम्हारा हृदय पूरी तरह से वेदान्त ज्ञान से भर दिया है। परन्तु भक्तिरूपी रस जरुरी है । इस प्रकार आपसे प्रभावित होकर वह आपका शिष्य वन गया ।

एक समय बादशाह शेरशाह सूरी कोई सन्तान नहीं होने के कारण अजमेर ख्वाजा की यात्रा के लिए आया था । परन्तु कई उपायों के वाद भी उसके कोई सन्तान नहीं हुई । उस समय बादशाह की सेना में जोधपुर राज्य के अन्तर्गत खेजड़ला ग्राम के प्रसिद्ध ठाकुर शियोजी भाटी सरदार सेनापति थे, वे परम्परागत रूप से स्वामीजी के शिष्य थे । उन्होंने बादशाह से निवेदन किया कि यदि आप हमारे गुरुदेव से प्रार्थना करें तो आपकी इच्छा की पूर्ति हो सकती है । यहाँ अजमेर से दश कोश की दूरी पर ही एकान्त में हमारे गुरुदेव का आश्रम है । वे वहाँ पर तपस्या करते हैं । यदि उनकी आप पर कृपा हो जाये तो निःसन्देह आपको पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है । बादशाह ने स्वीकार कर लिया, आकर आचार्यश्री के दर्शन किये । बादशाह ने प्रणाम करते समय एक वहुमूल्य वस्त्र (दुशाला) समर्पित किया, जिसे आचार्यचरण ने उस अमूल्य वस्त्र को चिमटा से उठाकर प्रज्वलित धूनी में डाल दिया । बादशाह को अपना अमूल्य वस्त्र जलता हुआ दिखाई दिया तो उनके मन में काफी दुःख हुआ । उनके मन की भावना को जानकर आचार्यश्री ने प्रज्वलित धूनी से उसी प्रकार के सैकड़ों दुशाले चिमटा से निकाल कर और वादशाह को आज्ञा दी की आप दुःखी मत होईये, इसमें से जो वस्त्र आपका हो उठा लें । वादशाह ने जव विचित्र चमत्कार देखा तो उसको अत्यधिक आश्चर्य हुआ । उसके बाद बादशाह ने पुत्र प्राप्ति के लिए आपसे प्रार्थना की । तब आपश्री ने कहा कि पुत्र प्रदान करने वाले तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु ही है, जाओ । प्रणाम करके पुत्र की इच्छा को प्राप्त करके अपने स्थान को चले गये । जब उनके पुत्र हो गया तो उसका नाम सलीमशाह रखा । आपके द्वारा बहुत प्रकार से प्रार्थना करने के वाद आपने कुछ स्वीकार नहीं किया । तब उन्होंने नगर निर्माण के लिए प्रार्थना की और कहा कि उस नगर का नाम मेरे पुत्र के नाम से विख्यात हो । गायों को चरने के लिए ६ हजार बीघा जमीन समर्पित की । बादशाह के पुत्र के कारण ही स्थान का नाम **सलेमाबाद** पड़ा । विश्व विख्यात परम भक्तिमती श्रीमीरां वाई ने आपश्री से मन्त्र दीक्षा व श्रीगिरिधरगोपाल की प्रतिमा प्राप्त की है । वर्तमान में वही श्रीगिरिधरगोपाल श्रीपुष्करराज में परशुरामद्वारा स्थान में सुशोभित हैं ।

अध्यापक - श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

वेदों में श्रीसर्वेश्वर

–वेददर्शनाचार्य महामण्डलेश्वर स्वा. श्रीगंगेश्वरानन्दजी महाराज

भगवान् के अनन्त नाम हैं । वे सभी आस्तिक जगत् के आदरणीय हैं । फिर भी विभिन्न सम्प्रदायों में किसी-किसी नाम की विशिष्टता एवं उसके लिये विशेष आस्था एवं आदर दृष्टि गोचर हो रहा है । वैरागी रामानन्दीय वैष्णव सम्प्रदाय में 'राम' नाम का, गौडीय सम्प्रदाय में 'श्रीकृष्ण' नाम का, रामानुज सम्प्रदाय में 'नारायण' नाम का सन्तों ने विशेष महत्त्व वर्णन किया है । निम्बार्क सम्प्रदाय में 'श्रीसर्वेश्वर' नाम का विशेष प्रचार-प्रसार एवं उसी नाम का विशेष समादर है । हमारे पूर्वज वैदिक सम्प्रदायाचार्यों तथा सन्तों ने वेद को स्वतः प्रमाण माना है । अतः अपने सिद्धान्तों को वेद मन्त्रों पर आधारित माना है । सन्तों ने कृपा की, मुझे स्मरण किया गया, लिखा कि आप सर्वेश्वर के नाम पर अपने विचार व्यक्त करें । आज तक जितने लेख लिखे और प्रकाशित हुये, उनमें वेद मन्त्रों का उद्धरण मैंने किया है, कुछ स्वभाव सा बन गया है, कि जब किसी विषय पर विचार आरम्भ करता हूँ तो सर्व प्रथम दृष्टि भगवान् वेद की ओर अग्रसर होती है और मन में यह तरङ्ग उठती है कि इस विषय की खोज वेद मन्त्रों में की जाय । एक ऐश्वर्य सीमित (सातिशय) सापेक्ष होता है , दूसरा निःसीम, निरतिशय निरपेक्ष होता है । देवेश, नरेश, भूपति, क्षितिपति आदि शब्द सापेक्ष ऐश्वर्य के सूचक हैं । सर्वेश्वर, विश्वेश्वर, जगदीश्वर आदि शब्द निःसीम ऐश्वर्य के प्रदर्शक हैं। प्रसन्नता की बात है अथर्ववेद काण्ड ७, सूक्त १०७ या (१०२) मन्त्र १ में उन देवों का उल्लेख हुआ, जिनका परिच्छिन्न सापेक्ष ऐश्वर्य है । दूसरे शब्दों में, वे देव ईश्वर अवश्य हैं, परन्तु उनका ऐश्वर्य परिच्छिन्न या सीमित है । इसका स्पष्टीकरण माण्डलिक राजा सम्राट् के दृष्टान्त से भली भाँति किया जा सकता है । निष्कर्ष माण्डलिक राजाओं की तरह अग्न्यादि देवों का ऐश्वर्य, शासन सीमित परिच्छिन्न साङ्कुश्य है । सम्राट् का शासन निरंकुश अपरिच्छिन्न व्यापक एवं सर्वोपरि है ।

पहले कहा जा चुका है कि काण्ड ७, सूक्त १०७, मन्त्र १ में माण्डलिक राजाओं के समान परिच्छिन्न शासक अग्न्यादि देवों का ईश्वर शब्द से निर्देश किया है । सर्वेश्वर का सम्राट् के समान निरंकुश शासन बतलाने के लक्ष्य से **सर्वस्य ईश्वरः** दो शब्दों से (११,४,१ तथा १०) एवम् (१६,५३,८) में वर्णन हुआ है ।

अब क्रमशः मन्त्र अर्थ सहित नीचे दिये जाते हैं--

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे । मेक्षाम्ययूर्ध्वस्तिष्ठन्मा मा हिंसि पुरीश्वराः ॥

(अथर्व. ७, १०२ (१०७), १)

मैं (द्यावापृथिवीभ्याम्) द्युलोकाधिपति सूर्य तथा पृथ्वी लोकाधिपति अग्निदेव (अन्तरिक्षाय) मध्य

लोकाधिपति वायु तथा (मृत्यवे) यमराज के प्रति (नमस्कृत्य) नमस्कार करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ । वे (ईश्वराः) माण्डलिक राजा के समान पृथिव्यादि लोकों के अधिपतिदेव (मा मा हिंसिषु) मुझे हिंसित न करें, तात्पर्य मेरी प्रगति में बाधक न बनें, उनकी कृपा से (ऊर्ध्वः) उन्नत (तिष्ठन्) स्थिर रहकर (मेक्षामि) गच्छामि, चलूँ ।

टिप्पणी–

१. म्यक्षति मिक्षयति गतिकर्माः । निघण्टु (२/४) ।

भावः-मैं संसार में अग्न्यादि देवों की कृपा से उत्तरोत्तर उन्नत एवं दीर्घकालजीवी बनूँ ।

पाठकों को उपर्युक्त मन्त्र से अवगत हो गया होगा कि अग्न्यादि देवों का शासन अपने अपने पृथिव्यादि प्रदेशों में है, सर्वत्र नहीं । अतः वे ईश्वर हैं, सर्वेश्वर नहीं । सर्वेश्वर कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित मन्त्रों का अवलोकन करें ।

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे । यो भूतःसर्वस्येश्वरो यस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥

(अथर्व. ११,४ (६) १)

जिस प्राण के समस्त जगत् (वशे) वश में, वशीभूत, वशवर्ती है । वह प्राण परब्रह्म परामात्मा (भूतः) उत्पत्ति विनाश से शून्य सर्वदा सर्वत्र वर्तमान है ।

टिप्पणी–

(भूतः) भूतकालावच्छिन्नः न तु भविष्यत् । सर्वदा लब्धाक सत्ताक इति सायणः ॥

(सर्वस्येश्वरः) समस्त प्राणी वर्ग का स्वामी है । अतः सर्वेश्वर है । (यस्मिन्) परब्रह्म स्वरूप प्राण में समस्त जगत् स्थित है ।

टिप्पणी–

यस्मिन् उदीरित नक्षणे प्राणे परब्रह्मात्मके इति सायणः । उस सर्व नियन्ता, सर्वाधार, प्राण, परमात्मा को मेरा नमस्कार है । ज्ञातव्य है **प्राण शब्द प्रकर्षेण विश्वं व्याप्य अनिति चेष्टते** इस व्युत्पत्ति से सर्व जगत् को व्याप्त करके चेष्टमान परमात्मा का वाचक है । भौतिक वायु विकार श्वास-प्रश्वासात्मक प्राण का नहीं । इसकी पुष्टि मन्त्र के द्वितीय तृतीय चरण में क्रमशः प्रतिपादित सर्व नियन्तृत्व सर्वाधारत्व लिङ्ग से सुतरां सम्पन्न होती है, क्योंकि सर्व का नियन्ता सर्व का आधार परमात्मा ही हो सकता है, वायु प्रभृति तत्त्वान्तर नहीं । इसी भाव का पोषक अतएव **प्राणः** वेदान्त दर्शन (१/२/२३) का सूत्र है, अतएव प्राण शब्द ब्रह्म बोधकता के समर्थक संवेषणादि लिङ्ग दर्शन से, प्राणः शब्द से परमात्मा अभिप्रेत है, भौतिक प्राण नहीं ।

विवरण–

छान्दोग्योपनिषत् प्रथमाध्याय के १० वें और ११ वें खण्ड में उषशित चाक्रायण ऋषि का आख्यान विस्तार से वर्णित है । उसका संक्षिप्त सार यह है कि दुष्काल पीड़ित वह ऋषि किसी राजा के विशाल यज्ञ में प्रचुर दक्षिणा की लिप्सा से गया । राजा ने कहा--ऋषे ! हम आपकी खोज में थे । पता न चलने से हमने अन्य ब्राह्मणों को ऋत्विक् निश्चित किया । सौभाग्यवश आपका पधारना हुआ । अतः ऋत्विक् सम्बन्धी कार्य का संचालन करें । उत्तर में चाक्रायण ने कहा--मुझे स्वीकृत है । साथ ही एक शर्त यह है कि जितना धन, दक्षिणा में अन्य ऋत्विजों को दिया जाय, उतना धन मुझ अकेले को ही दक्षिणा में देना होगा । राजा ने उनकी शर्त को सहर्ष मान लिया । अब चाक्रायण ने आदेश किया--मेरे तत्त्वावधान में नियुक्त पूर्व ऋत्विक् ही यज्ञ क्रिया आरम्भ करें । सर्व प्रथम प्रस्तोता साम गाने के लिये यज्ञ शाला में चाक्रायण ऋषि के समक्ष उपस्थित हुआ । वह सामगीति के प्रस्ताव अंश को गाना प्रारम्भ करने लगा । चाक्रायण ने उनसे पूछा--

प्रस्तोतर्या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां चेदविद्वान् प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति मा भगवानवोचत कतमा, सा देवतेति ।

(छान्दोग्योपनिषत् १,११ ४)

(प्रस्तोतः) प्रस्तोतृ ऋत्विक् ! जिस देवता का प्रस्ताव भाग से सम्बन्ध है, उसको बिना जाने यदि तू प्रस्ताव गान करेगा तो मस्तक ग्रीवा से पृथक् हो जायगा । प्रस्तोता ने सविनय प्रार्थना की, भगवन्! आप ही मुझे बतलावें (कतमा सा देवता) वह देवता कौन है ? प्रश्न के उत्तर में दयालु ऋषि ने कहा–

प्राण इति वाच सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभि संविशन्ति प्राणमभ्युज्जिहते ।

(छान्दोग्योपनिषद् १, ११,५)

वह देवता प्राण है, ऐसा ही ऋषि ने कहा, क्योंकि समस्त पृथ्व्यादि पाँचों तत्त्व प्रलय काल में प्राण में ही (अभिसंविशन्ति) प्रलीन होते हैं (उज्जिहते) सृष्टि काल में प्राण से (उद्गत), उत्पन्न होते हैं। अब हमें विचार करना होगा कि सर्वभूतों का लय और उद्गम परमात्मा से ही सम्भव है । यदि प्राण शब्द का अर्थ वायु किया जाय तो वह अनुपपन्न होगा, कारण पृथ्व्यादि तीनों तत्त्वों का वायु में लय होने पर भी वायु का तथा आकाश का वायु में लय शक्य नहीं । अतः वेदान्त दर्शन में २२ से ३१ तक के सूत्रों में आकाश, प्राण एवं ज्योति शब्द का अर्थ परब्रह्म है, भौतिक, आकाश, वायु तथा तेज नहीं, ऐसा सिद्धान्त स्थिर किया है ।

ठीक उसी तरह इस मन्त्र में प्राण शब्द का अर्थ परमात्मा है, भौतिक प्राण वायु नहीं । इस बात का भी ध्यान रक्खें, वेद ने परमात्मा के सर्वेश्वर शब्द की व्याख्या में किसी को कर्मधारय समास

सर्वश्चासावीश्वरः, एवं सर्वेषु ईश्वरः सप्तमी तत्पुरुष, सर्वश्च, ईश्वरश्च, द्वन्द्व समास की भ्रान्ति को दूर करने के लिये अभिमत षष्ठी तत्पुरुष का स्फुट प्रतीति के लिये अभिमत सर्वस्येश्वर ऐसा व्यस्त दो पदों का निर्देश किया। समस्त सर्वेश्वर शब्द का नहीं। दयानिधि भगवान् वेद आस्तिक भक्त का निर्वचन स्वयं कर रहे हैं।

प्राणः प्रजा अनुवस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम् । प्राणो ह सर्वस्येश्वरो यच्च प्राणेति यच्च न ॥

(अथर्व. ११, ४, १०)

(प्राणः) परमात्मा प्यारे पुत्र को पिता की तरह समस्त प्रजाओं को अर्थात् सृष्टि के समस्त-- प्राणियों को (अनुवस्ते) अनुग्रह से आच्छादन करता है, अपनी गोद में स्थापित करता है । ताकि किसी प्रकार की विघ्न बाधा भीति या कष्ट उन्हें न हो । (प्राणः) वह परमात्मा निश्चित ही (सर्वस्येश्वरः) सबका स्वामी है । चतुर्थ चरण में सर्व शब्द के अर्थ का विवरण है । जो प्राण चेष्टा करता है और जो नहीं । निष्कर्ष चाहे जंगम गतिशील, चाहे स्थावर गतिशून्य पदार्थ हो, समस्त चराचर (स्थावर जङ्गम) विश्व का शासक परमात्मा है । अतएव वह सर्वेश्वर है ।

अथर्ववेद के ११ वें काण्ड में २६ मन्त्रों का चतुर्थ सूक्त सर्वेश्वर का ही गुणगान कर रहा है । इसी सूक्त में साधक अपने आराध्य इष्टदेव सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करता है ।

यो अस्य विश्वजन्मन ईशे सर्वस्य चेष्टतः । अतन्द्रो ब्रह्मणा धीरः प्राणो मामनुतिष्ठतु ॥

(अथर्ववेद ११, ४, २४)

नाना योनियों में समुत्पन्न अपने-अपने कार्यों में संलग्न इस विश्व की जो प्राण (ईश) ईष्टे शासन करता है। वह सर्व शासक, सर्व नियन्ता परमात्मा (अतन्द्रः) आलस्य रहित (धीरः) ज्ञान शक्ति सम्पन्न सर्वेश्वर प्रभु मुझ साधक का (ब्रह्मणा) अनवच्छिन्न ब्रह्मरूप से अनुवर्तन करे । अर्थात् मुझ पर अनुग्रह करे । निष्कर्ष, उनके अनुग्रह से उनके अनवच्छिन्न सर्वगत ब्रह्मस्वरूप का मुझे साक्षात्कार हो । (ब्रह्मणा) सर्वगतब्रह्मात्मकेन अनवच्च्छिन्नेन रूपेण (मा) माम् (अनुतिष्ठतु) अनुवर्तताम् इति सायणः ।

इतना ही नहीं, अथर्ववेद सर्वेश्वर के गुणगान से अतृप्त १९ काण्ड के ५३ तथा ५४ दो सूक्त जो क्रमशः १० एवं ५ मन्त्रों के हैं, उनमें काल नाम से सर्वेश्वर के अखण्ड साम्राज्य का सुन्दर चित्रण कर रहा है ।

काले तपः काले ज्येष्ठं, काले ब्रह्म समाहितम् । कालो ह सर्वस्येश्वरो, यः पिताऽऽसीत्प्रजापतेः ॥

(अथर्ववेद १९, ५३, ८)

काल की अद्भुत महिमा है, क्या (तपः) ईक्षण स्रष्टव्य पदार्थों का आलोचन जगत् सर्जन का विचार । क्या (ज्येष्ठ) सर्व प्रथमोत्पन्न हिरण्यगर्भतत्व । क्या (ब्रह्म) साङ्गवेद सबके सब काल में समाहित

है, भली प्रकार स्थापित है । अर्थात् इन सबका यथा समय आविर्भाव (काल) परमात्मा के संकल्प पर ही निर्भर है । परमात्मा में सिसृक्षा सर्जनेच्छा का ही अद्भुत चमत्कार (विश्व) चराचर जगत् है । केवल काल जगत् का उत्पादक ही नहीं, अपितु (कालः) परमात्मा (ह) निश्चित (सर्वस्येश्वरः) स्वसृष्ट चराचर जगत् का स्वामी है । अधिक क्या कहें वह परमात्मा (प्रजापतेः) चतुर्मुख ब्रह्मा का भी (पिता) जनक है । अतः उसकी सर्वेश्वरता में सन्देह का किञ्चित् स्थान ही नहीं।

विचारणीय है पूर्व मन्त्रों में जैसे प्राण शब्द भौतिक प्राण का वाचक न होकर उपलब्ध ब्रह्मपरता के पोषक लिङ्ग के कारण ब्रह्म का वाचक स्वीकार किया है । उस ही तरह मन्त्र में भी प्रजापति चतुर्मुख की जनकता, पितृत्व तथा साङ्गवेद स्रष्टव्यालोचनादि का संस्थापन भौतिक काल में अनुपपन्न होने से काल शब्द का परमात्मा अर्थ करना होगा । अतएव सायणाचार्य ने (काले) परमात्मा ने इस प्रकार काल शब्द की व्याख्या की है । अतएव स्तोम महा-निधि कोष तथा अमर कोष की टीका में काल शब्द की सिद्धि निम्न निर्दिष्ट है । कालः कुत्सितमलति अत्र (भ्वा० ५१५) अच्कोः कोदशा ।

कल्यते कल संख्याने शब्दे च (भ्वा. आ. से. ४६७) **कर्मणि घञ्** (३, ३, १९) **कालयति सर्वम्, इति वा। ण्यन्तात्पचाद्यच्** (३, १, १३४) **कालो मृत्यौ महाकाले समये यमकृष्णयोः** (अमरकोष, काण्ड१, काल वर्ग ४, श्लोक १) ।

अव विचार करें कुत्सित, निन्दित वा निकृष्ट को अलति **अल भूषणपर्याप्तिवारणेपु** (भ्वा. ५१५) भूषित, प्रशस्त या उन्नत बनाने वाला काल शब्द का अर्थ है। कुत्सित शरीरादि जो अत्यन्त अशुचि हैं, वे परमात्मा के सम्पर्क से पावन एवं प्रशस्त बन जाते हैं । निकृष्ट शबरी आदि भक्त भी उसकी कृपा से तत्क्षण उत्कृष्ट कोटि में गणना किये हैं। जिसकी कृपा से अपवित्र शरीरादि पावन हों, निकृष्ट उत्कृष्ट बन जायँ, वह परमात्मा ही शब्द स्तोम महानिधि निर्दिष्ट कुत्सितमलति इस व्युत्पत्ति से काल शब्द का अर्थ है । अमरकोष में कल्यते, शब्दते, स्तूयते, इस व्युत्पत्ति से संतुत्य प्रशंसनीय परमात्मा काल शब्द का अर्थ है । पाणिनीय धातु पाठ में कल् शब्द--**संख्यानयोः** (भ्वा. आ. ४६७) धातु ये कलते शब्दति आह्वयति स्वभक्तान् इस व्युत्पत्ति से काल शब्द सुतरां भक्तवत्सल भक्तों के सस्नेह का आह्वाता, प्रेम पूर्वक बुलाकर अपनी गोद में भक्तों को बिठाने वाले भगवान् ही होंगे । चुरादिगण में **कल्** विक्षेपे (चुरादि १६०५) कल् धातु का क्षेप अर्थ लिखा है। उसके अनुसार **कालयति क्षिपति प्रलयकाले स्वस्मिन् सर्वम्** इस व्युत्पत्ति के आधार पर समस्त जगत् को अपने में जो प्रलीन करता है, वह सर्वेश्वर ही काल शब्द का अर्थ है । चुरादिगण में भी दूसरी धातु **कल गतौ संख्याने च** (चुरादि. १८६६) है, उससे काल शब्द निष्पन्न किया जाय तो **कलयति गच्छति भक्तत्राणार्थम्** अथवा अन्तर्भावित ण्यर्थ मानकर **गमयति उपासकान् स्वधामेति कालः** । भक्तों को अपने धाम में प्रेषित करने वाला सर्वेश्वर ही काल शब्द का अर्थ है । कर्म में उसी धातु से घञ् प्रत्यय मान कर निष्पन्न काल शब्द का अर्थ होगा कल्यते,

गम्यते, मुक्त्यैक रूप सृप्यते मुक्त आत्माओं में प्राप्तव्य परमात्मा सर्वेश्वर ही काल शब्द से अभिप्रेत है तथा **विद्वान् नाम रूपतः विमुक्तः परात्परं पुरुपमुपैति दिव्यम्** । (मुण्डकोपनिषत् २, ३, ८)

श्रुति पर आधारित वेदान्त दर्शन (१, ३, २) सूत्र **मुक्तोपसृप्यव्यपदेशात्** परमात्मा की मुक्ति प्राप्यता का स्पष्ट निर्देश कर रहा है ।

अस्तु, चारों वेदों में सर्वेश्वर का गुणगान हुआ है । विस्तार भय से अधिक मन्त्र उद्धृत नहीं किये हैं । **वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः** (गीता १५, १५) गीता प्रमाण से सर्वेश्वर ही सर्व वेद प्रतिपाद्य है । अथर्वोक्ति काल स्वरूप सर्वेश्वर का ही विवेचन **अहमेवाक्षयः कालः** (गीता १०, ३३) में मधुसूदन सरस्वती ने किया है । वे लिखते हैं- **क्षयि कालाभिमान्यक्षमः परमेश्वराख्यः कालः ज्ञः कालकालो गुणी सर्ववेद्यः** इत्यादि **श्रुति प्रसिद्धेऽहमेव ज्ञः काल कालः** इत्यादि श्रुति में प्रसिद्ध है । जो सर्ववित्, सर्वज्ञ, परमात्मा वह (ज्ञः) ज्ञान शक्ति सम्पन्न (गुणी) गुणनियन्ता एवं (कालकालः) काल का काल महाकाल है । जिसका तात्पर्य है, वही क्षयी काल अभिमानी अक्षय काल सर्वेश्वर परमेश्वर मेरा स्वरूप है ।

अन्त में सर्वेश्वर आराध्य परमात्मा देव से सविनय प्रार्थना है, वे हम पर कृपा करें, ताकि हम उनके वास्तविक परब्रह्म स्वरूप का साक्षात्कार द्वारा अपना मानव जीवन सार्थक करें ।

उत वात पिता सिन उत भ्रातो तनः सखा । य नो जीवातवे कृधि ।

(ऋग्वेद १०, १८६, २)

❊ ❊ ❊

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

न केवल एक राष्ट्र ही, अपितु समग्र विश्व ही पवित्रता के आचरण से शान्तिमय, आनन्दमय एवं सम्वर्द्धनशील हो सकता है। सभी पारस्परिक कलह द्वन्द्व निरन्त हो सकते हैं।

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य का दार्शनिक सिद्धान्त

–निम्बार्कभूषण राधाकृष्ण शास्त्री, व्या. सा. वेदान्ताचार्य

भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोक प्रस्थान करते समय भक्तवृन्द की रक्षा के लिये भगवान् ने सुदर्शनचक्र को नियुक्त कर दिया था । चक्रराज ही माता जयन्ती के गर्भ से निम्बार्काचार्य रूप में प्रकट हुए । ईश्वर की सत्ता स्वतन्त्र है, जीव परतन्त्र है । **ज्ञानस्वरूपं च हरेरधीनं शरीर-संयोगवियोगयोग्यम्** जीव ज्ञान का स्वरूप है । निम्बार्क सम्प्रदाय में तीन तत्त्व १. जीव २. ब्रह्म और ३. प्रकृति माने जाते हैं । जीव अणु स्वरूप है, **अणुर्ह्येष आत्मा** इस वैदिक प्रमाण के आधार से जीव अणु है । जीवात्मा विभु (व्यापक) नहीं है, व्याप्य है । जिस प्रकार दीपक अपने घर को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार जीवात्मा भी सम्पूर्ण देह को प्रकाशित करता है । **उत्क्रान्ति गत्यादीनां, स्वशब्दोन्मानाभ्यां** (२/३/२३ ब्र. सू.) । जीव शरीर से निकल कर अन्य देह में प्रवेश करता है, इत्यादि प्रमाणों से जीव व्यापक नहीं है। यदि मध्यम परिणाम जीव का मानें तो जैसे घड़ा नष्ट हो जाता है, इसी प्रकार जीवात्मा नष्ट हो जायगा । इसलिये जीव अणु है, जीवात्मा की संख्या अनन्त है । परमात्मा एक है ।

अण्डज, स्वेदज, जरायुज, उद्भिज आदि चार भेद जीवों के हैं । परब्रह्म से इनमें विलक्षण भेद है । **अंशो नाना व्यपदेशाद्** (ब्र. सू. २/३/४२) इस प्रमाण से जीव अनेक हैं । **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया ज्ञाज्ञौ द्वावजानी-शानीशौ पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा नीशश्चात्मा बध्यते भोक्तृभावात्, अनीशमा शोचति मुह्यति मुह्यमाणः** इत्यादि श्रुति प्रमाण है । **भेदव्यपदेशाधान्य इति अधिकस्तु भेदनिर्देशात्** इत्यादि श्रुतियों द्वारा परमात्मा और जीवात्मा में भेद है । गीता में भी इस भेदाभेद का कथन श्रीकृष्ण ने किया है । यदि एक ही जीव को मान लें तो सांकर्य दोष आता है । कोई जीवधारी सो रहा है, कोई मर गया, कोई बेहोश पड़ा है । इसलिये वेद के सिद्धान्त से जीव का एकत्व नहीं है । श्रीकृष्ण की कृपा से जीव ब्रह्म का साक्षात्कार करता है । साक्षात्कार से वह कर्म बन्धन से छूट जाता है । इस सम्प्रदाय में जीव को सामीप्य मोक्ष की प्राप्ति होती है । सायुज्य तो हो ही नहीं सकती है । क्योंकि जीव भिन्न है तथा परमात्मा भिन्न है । जैसे घट अवच्छेद के नष्ट होने पर दीप प्रकाश होता है । वैसे लिंग के नष्ट होने पर जीव प्रकाशित होता है । ब्रह्म ज्ञान से वह ब्रह्मवत् हो जाता है । ब्रह्म नहीं होता है ।

माया जीव को बन्धन में डालती है, किन्तु **दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते** । गीता में श्रीकृष्ण वाक्य है कि यह माया बड़ी कठिन है, किन्तु जो मुझ कृष्ण परब्रह्म की चरण शरण ग्रहण कर लेते हैं, वे माया से छूट जाते हैं ।

इस दर्शन शास्त्र में जीव एवं ब्रह्म का अंशांशिभाव सम्बन्ध है । अंश जीव है और अंशी परब्रह्म कृष्ण है । इस दर्शन का नाम द्वैताद्वैत है । स्वभाविक भेदाभेद है । **राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राधा-स्वरूपिणम् । कलात्मानं निकुंजस्थं गुरुरूपं सदा भजे ॥** राधा और कृष्ण दो हैं, द्वैत है तथा दोनों का मिलित तत्त्व एक है, अद्वैत है ।

भागवत और गीता में भी द्वैताद्वैत की पुष्टि विद्यमान है । भगवान् निम्बार्काचार्यजी ने कृपास्यदैन्यादियुजि प्रजायते । कृपानुग्रह का महत्त्व माना है । दशश्लोकी में भी--स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषम् । युगलतत्त्व द्वैताद्वैत कहा है । स्वाभाविक है । घट घटत्व की तरह अवच्छेद्य-अवच्छेदक भाव सम्बन्ध है ।

पूर्व प्राचार्य,
श्रौतमुनि निवास, कच्ची सड़क,
मथुरा (उ. प्र.)
दूरभाष : २४०८३०५

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य एवं उनकी आचार्य परम्परा का पावन स्वरूप

–महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज, रेनवाल

वैष्णव चतुः सम्प्रदायों में निम्बार्क सम्प्रदाय अत्यन्त प्राचीन है । आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की आचार्य परम्परा श्रीहंस भगवान् से प्रारम्भ होती है । श्रीहंस भगवान् चौबीस अवतारों में जगत्प्रसिद्ध हैं । श्रीमद्भागवत, महाभारत तथा प्रायः सभी पुराणादि शास्त्रों में श्रीहंसावतार कथा का पर्याप्त उल्लेख है । महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों के द्वारा पितामह श्रीब्रह्मा से मन और जगत् विषयक प्रश्न किये जाने पर श्रीब्रह्मदेव उसके समाधान में स्वयं को असमर्थ पाकर मन ही मन समाधि अवस्था में श्रीहरि का स्मरण करते हैं, तभी कृपामय भगवान् श्रीकृष्ण ने ही श्रीहंस रूप से अवतीर्ण होकर श्रीसनकादिकों के प्रश्न का समाधान किया था और उन्हें शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु जो गुञ्जाफल सदृश सूक्ष्म विग्रह दक्षिणावर्ती चक्रांकित हैं, सेवार्थ प्रदान किया था तथा श्रीगोपालमन्त्रराज का उपदेश किया था। यही पूर्वोक्त सेवा और मन्त्रराज की दीक्षा श्रीसनकादिकों ने देवर्षिवर श्रीनारदजी को प्रदान की तथा आज से ५१०० वर्ष पूर्व श्रीनारदजी ने सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को वही मन्त्रराज एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की, जिसे श्रीनिम्बार्क भगवान् ने प्राप्त कर इस भूतल पर निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया । वस्तुतः यही अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय (श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय) वैष्णव चतुः सम्प्रदायों में तो अतीव प्राचीन है ही, परञ्च अद्वय सम्प्रदायों में भी पूर्ववर्ती यह विश्व प्रसिद्ध निम्बार्क सम्प्रदाय है । अनेक शोधकर्ताओं ने भी इसे सर्व प्राचीन निर्दिष्ट किया है । निम्बार्क सम्प्रदाय के समग्र साहित्य के अनुशीलन से भी इस सम्प्रदाय की प्राचीनता स्पष्टतः सिद्ध होती है । कतिपय श्रीभाण्डारकर आदि शोधकर्ताओं ने आपके कार्यकाल विषय में भ्रान्ति उत्पन्न करदी थी, जो सर्वथा तथ्यहीन एवं भ्रामक है, जिसका अनेक प्रमाणों से निराकरण किया जा चुका है ।

वर्तमान समय से ५१०० वें वर्ष पूर्व श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य इस भूतल पर अवतीर्ण हुये थे। भारत के दक्षिणाञ्चल में गोदावरी तटवर्ती पैठन के समीप मूंगी ग्राम में महर्षिवर्य श्रीअरुण व माता जयन्ती के यहां आविर्भूत हुए, जहां इनका नाम 'नियमानन्द' हुआ। बाल्यवस्था में ही महर्षि अरुण एवं माता जयन्ती के साथ आप उत्तर भारत में ब्रजमण्डल में गिरिराज गोवर्धन के अति निकट निम्बग्राम क्षेत्र में पधारे। यहीं पर देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से मन्त्र दीक्षा एवं शालग्राम स्वरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु सेवा, जो परम्परागत सनकादिकों से परिसेवित है, प्राप्त की। जहाँ आपने तपःसाधना की, वहीं पर सूर्यास्त के समय जगत् रचयिता श्रीब्रह्मा एक दण्डी यतिरूप में आपके आश्रम में पधारे, वेदाध्ययन में तल्लीन श्रीनियमानन्द ने अपने सहपाठी वेदाध्यायी ब्रह्मचारियों के साथ अतिथि रूप में आये हुए यति स्वरूप श्रीब्रह्मा का आतिथ्य किया

और भगवत् प्रसाद लेने के लिये संकेत किया। यति रूप ब्रह्मा ने यह कहते हुए अपनी भावना प्रकट की 'यति सूर्यास्त के वाद भिक्षा ग्रहण नहीं करते'। यति के संकल्पानुसार सूर्यास्त होने पर भी अपने सुदर्शनचक्र स्वरूप को समीपस्थ नीम वृक्ष पर सूर्यवत् दर्शन कराके यति रूप ब्रह्मा को भगवत्प्रसाद कराके आतिथ्य किया । यति रूप ब्रह्मा ने भोजनान्त में आचमन करते ही प्रगाढ अन्धकार का अनुभव किया। सुदर्शन चक्रराज के अन्तर्हित होने पर आश्चर्यचकित ब्रह्मा ने समाधिस्थ होकर आप सुदर्शन चक्रराज के अवतार हैं, यह अनुभव किया । तत्काल अपने ब्रह्मा के स्वरूप में प्रकट होकर श्रीनियमानन्द को ''श्रीनिम्वार्क'' नाम से सम्वोधित किया एवं कहा-आप इस समस्त भूतल पर निम्वार्क नाम से विख्यात होंगे । अपने जगद्गुरुत्व के स्वरूप का सर्वत्र आलोक प्रकाशित करेंगे । भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा निर्दिष्ट- **सुदर्शन महाबाहो सूर्यकोटि समप्रभ। अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥** के अनुसार आप इस भूमण्डल पर अज्ञान का परिहार कर अनादि वैदिक सनातन वैष्णव धर्म का प्रचार करते हुए निम्वार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य के रूप में प्रतिष्ठित होंगे ।

श्रीनिम्वार्क भगवान् ने श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में निरत रहते हुए-प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचना कर निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी उपासना एवं अपने दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत का प्रबल प्रचार किया । इसी प्रकार आपने एकादशी व्रतों में कपालवेध सिद्धान्त को स्वीकार किया । आपने अपने वेदान्त पारिजात सौरभ नामक ब्रह्मसूत्र भाष्य एवं वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी, प्रातः स्तवराज, राधाष्टक स्तोत्र, मन्त्ररहस्य षोडशी, प्रपन्न सुरत मञ्जरी आदि ग्रन्थों की रचना की । आप की परम्परा में वेदान्त कौस्तुभ भाष्यकार श्रीश्रीनिवासाचार्यजी महाराज प्रभृति पूर्वाचार्यों ने दार्शनिक एवं उपासना परक ग्रन्थों का विपुल रूप में प्रणयन किया । श्रीनिम्बार्क भगवान् की परम्परा में--प्रभावृत्तिकार जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज एवं श्रीश्रीभट्टाचार्यजी महाराज, रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज, श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज, गीतामृत गंगाकार श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज, गोविन्दवाणीकार श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज, श्रीसर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज, श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज, श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी महाराज आदि पूर्वाचार्यों ने भी विविध रचनायें की । इसी आचार्य परम्परा में गोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज परम प्रतापशाली पीठाचार्य हुए । आपकी ही परम्परा में आचार्यवर्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीवालकृष्णशरण-देवाचार्यजी महाराज ने इस आचार्यपीठ को सुशोभित किया। आप ही के पट्टशिष्य **अनन्तश्रीविभूपित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज** १४ वर्ष की आयु में वि. सं. २००० में आचार्यपीठ पर आसीन हुए। आपके गुरुवर्य्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्वार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज ने आपश्री के नाबालिक अवस्था में सबालिक होने तक के लिए ट्रस्ट नियत किया । ट्रस्टियों में श्रीमहन्त राधिकादासजी महाराज- हस्तेड़ा-किशनगढ-रेनवाल, श्रीमहन्त

गंगादासजी महाराज, स्थल सूर्यपोल-उदयपुर, ठा० सा० श्रीभैरुसिंहजी खेजडला-जोधपुर का चयन किया। वर्तमान आचार्यश्री के गुरुवर्य्य के परमधामवास होने पर ब्रज विदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी (काठिया बाबा) महाराज तर्कतर्कतीर्थ, वृन्दावन के संरक्षण में आपश्री के अध्ययन की व्यवस्था श्रीधामवृन्दावन में की गई । जहाँ चार वर्ष १४ वर्ष की आयु से १८ वर्ष की आयु पर्यन्त आप रहे । वहाँ अध्ययन के पश्चात् श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर अपनी अस्वस्थता के कारण पधारना हो गया। उसी अवसर पर आपका हमारे गुरुवर्य श्रीराधिकादासजी महाराज की सन्निधि में एक पक्ष अर्थात् १५ दिवस किशनगढ-रैनवाल भी विराजना हुआ । अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ और हस्तेड़ा (किशनगढ-रैनवाल) के बड़े मन्दिर का अतीव प्राचीन सम्बन्ध रहा है, जिसकी पुरातन पत्रावली हमारे यहाँ सुरक्षित है।

वर्तमान में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर विराजमान निखिल महीमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्रस्वतन्त्र यतिपतिदिनेश राजराजेन्द्रसमर्चितपादकमल जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय में विश्ववन्दित निम्बार्क सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रचार-प्रसार हुआ । आपने अपनी प्रतिभा के सदुपयोग से तथा अपने सुयोग्य विद्वान् अधिकारियों के सहयोग से, मूर्धन्य विद्वानों के मार्ग दर्शन से, सम्प्रदाय के विकास में तथा प्रचार-प्रसार में अथक परिश्रम किया है ।

प्रयाग, हरिद्वार, वृन्दावन, नासिक एवं उज्जैन आदि स्थानों में कुम्भ पर्वों पर 'निम्बार्क' नगर का निर्माण कराके विविध प्रकार के धार्मिक आयोजनों के माध्यम से अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन, आयुर्वेद औषधालय के माध्यम से निःस्वार्थ औषधियों का वितरण, सन्त सेवा में प्रतिदिन हजारों की संख्या में पंगत प्रसादी होती थी, वाचनालय के माध्यम से अनेक पत्र-पत्रादि द्वारा सबका मनोरंजन होता है, दुनिया में कहां क्या होता है-इसका ज्ञान होता है एवं त्रिविध ताप संतप्त पंचविध क्लेशों से पीड़ित मानव समूह को मनीषियों, सन्तों-महन्तों एवं स्वयं की वाणी से तृप्त करते रहे हैं ।

सम्प्रदाय के सिद्धान्त के माध्यम से संसारी जीवों का उद्धार करने के लिए लाखों-लाखों भगवद् विमुखों को आपने भागवतोन्मुख किया एवं शिक्षा-दीक्षा प्रदान की ।

श्रीनिम्बार्काचार्य तीर्थयात्रा स्पशेल ट्रेन के माध्यम से बहुत सस्ते में तीन धाम व सप्तपुरी की तीर्थ प्रेमियों को यात्रा करवाई तथा निम्बार्क सम्प्रदाय सिद्धान्त का प्रचुर प्रचार किया ।

आपने अपनी नव नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के द्वारा साहित्य सर्जन में विश्व में विश्वकवि के रूप में प्रख्याति प्राप्त कर निम्बार्क सम्प्रदाय की वरिष्ठता को प्रभावित किया है । आपनें हिन्दी एवं संस्कृत में ३०-३५ ग्रन्थों का सर्जन कर महाकवियों की माला में सुमेरु का रूप धारण कर लिया है । यहाँ उन ग्रन्थों का उल्लेख करना उचित समझते हैं । जैसे--युग्मतत्त्वप्रकाशिका, युगलगीतिशतकम्, श्रीराधामाधवशतक,

श्रीनिकुञ्जसौरभ, भारत-भारती-वैभवम्, श्रीयुगलस्तवविंशति, श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्, नवनीतसुधा, श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीराधा-राधना, श्रीराधाशतकम्, श्रीनिम्बार्कशतकम्, श्रीवृन्दावनसौरभम्, श्रीनिम्बार्कचरितम् आदि तथा हिन्दी पद्यों में दोहों में भी आपकी अनेक अद्भुत रचनायें हैं ।

आपने श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का सम्पूर्ण रूप से जीर्णोद्धार कर एवं विद्यालय, छात्रावास, धर्मशाला, पाक-शाला, अतिथि निवास, गोशाला, सभा भवन, सत्संग भवन, सत्संग मंच, औषधालय आदि के निर्माण के साथ निम्वग्राम में विशाल निम्बार्क भगवान् के मन्दिर का निर्माण किया है । जयपुर में मन्दिर श्रीनिम्बार्क निकुंजबिहारी जी, हीरापुरा एवं मदनगंज में श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर, पुष्कर में परशुरामद्वारा को पूरा ठंडा करके त्रिशिखरात्मक नव निर्माण आपने करवाया । अभी-अभी श्रीनिम्बार्क भगवान् की जन्मस्थली मूंगी (पैठन) में २ करोड़ की लागत का श्रीनिम्बार्क भगवान् का भव्य नूतन मन्दिर बनवाया, श्रीवृन्दावन में वड़ी कुंज, छोटी कुंजों का कायाकल्प कर भव्यता से प्रकट किया है। यह सर्वश्रेय आपके तपोमय जीवन एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा का ही है ।

आपके द्वारा समायोजित व्रज चौरासीकोश की यात्रा का मनोहर दृश्य आज भी नेत्रों के आगे नृत्य कर रहा है, जिसमें कम से कम ३-४ हजार धार्मिक व्रज भावना में ओत प्रोत जन यात्रा कर रहे थे। जिसे देखने वालों ने मुक्त-कण्ठ से यही कहा था कि ऐसा 'न भूतो न भविष्यति'। इस यात्रा में भी श्री श्रीजी महाराज ने इस अकिञ्चन को भी साथ रखा था ।

आपने अपने इस श्रीनिम्वार्काचार्यपीठ की सर्वतोमुखी उन्नति सारे वैष्णव जगत् की उन्नति मानते हुए अथक परिश्रम के साथ शरीर के अस्वस्थ होते हुए भी बड़े-वड़े सनातन धर्म सम्मेलनों का आयोजन करके सभी जगद्गुरु शंकराचार्यों, रामानन्दाचार्यों, रामानुजाचार्यों, माध्वाचार्यों, वल्लभाचार्यों के साथ दादू, रामस्नेही आदि धर्म प्रचारक एवं सभी पार्टियों के राजनेताओं को एक मंच पर लाकर यह सिद्ध कर दिया कि सनातन धर्म जगत् में लोक प्रिय सर्व समन्वयात्मक एकमात्र निम्बार्काचार्यपीठ है ।

सं० २०१० में हमारे महन्ताई के अवसर पर सपरिकर आचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का पधारना हुआ था एवं पूर्व मर्यादानुसार सभी कार्य आपकी सन्निधि में सम्पादित हुए थे । रेनवाल में आचार्यश्री का ४-५ बार आयोजनों में पधारना भी संस्मरणीय है ।

आपने श्रीश्यामशरणजी बालक को युवराज पद पर विभूषित किया है, जो सुशील हैं, अध्ययनरत हैं, अनुशासित हैं, मिलनशील हैं । आपकी कृपा से भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु उन्हें विद्वान् बनावें, श्रीनिम्बार्क सिद्धान्त प्रवीण बनावें, भगवत्सेवा परायण बनावें, यही प्रभु के चरणों में सतत विनम्र प्रार्थना है ।

आपश्री ने इन ६१ वर्षों में मौलिक एवं आध्यात्मिक समुन्नति अर्जित की है । वह सब श्रीसर्वेश्वर

प्रभु रूप श्रीगुरुदेव की कृपा तथा शास्त्र की कृपा का प्रत्यक्ष फल है । आपश्री कितने ही वर्षों से शरीर की अस्वस्थता में चल रहे हैं, फिर भी आपका मनोत्साह अभूतपूर्व है । आप धर्म प्रचार-प्रसार कार्यों में पूर्ववत् यात्रा आदि कर रहे हैं, अथक परिश्रम से शास्त्र-निर्माण कर रहे हैं, यह आपश्री के संयम नियम का ही अत्यद्भुत फल है ।

आपश्री चिरायु हों, आपकी शारीरिक व्याधि दूर हो, आप शतायुष से भी अधिक आयु वाले हों, आप नीरोग एवं स्वस्थ हों। हम अपने एकमात्र उपास्यदेव श्रीसर्वेश्वर प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि मार्कण्डेय ऋषि की सी आयु प्रदान करें, जिससे वे श्रीनिम्बार्काचार्य सिद्धान्तानुसार धार्मिक जगत् की अधिक से अधिक अभ्युन्नति करते रहें।

आप अभी २०/११/२००४ से २६/११/२००४ तक विराट् सनातन धर्म सममेलन का भव्य आयोजन करने जा रहे हैं, जिसमें इस अभिनन्दन ग्रन्थ के माध्यम से हम सभी सनातन धर्मावलम्वी सद्गृहस्थ विरक्त सन्त-महन्त, श्रीमहन्त पदाधिकारी, अधिकारी, मठाधीश आबाल वृद्ध नरनारी जनों के साथ आपकी दीर्घायुष्य की मंगल कामना श्रीजगदाधार श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणों में साष्टांग प्रणति के साथ कर रहे हैं ।

राधासर्वश्वरो देवो शरण्यपदभूपितः । निम्बार्काचार्यपीठस्य आचार्यो विद्यतेऽधुना ॥
शुभाभिनन्दनं कुर्मः श्रद्धाभावसमन्विताः । तेषां महानुभावानां बद्धाञ्जलिपुटाः सदा ॥

— साहित्य, दर्शन शास्त्री, आयुर्वेद विशारद, काव्यतीर्थ
बड़ा मन्दिर (हस्तेड़ा) रेनवाल,
जयपुर (राज.)

* * *

❊ श्री श्रीजी वचनामृतम् ❊

मद्यपानादि नानाविध मदान्धता, अपवित्रता सर्वविध रूप से घृणित एवं अशान्तिमूलक है। इससे जीवन में किना ह्रास-विनाश, पापाचार हो रहा है जो अकथनीय है।

वृन्दावन - युगलकेलि रसाभिषिक्तम्

–जयकिशोरशरण

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य अपने हृदयगत इष्ट रसनिधि श्रीश्यामा-श्याम की रसोन्मादी सुमधुर केलि-माधुरी में निरन्तर निमग्न रहते हुए निजानुभव को **प्रातःस्तवराज** में यत्किंचित् अभिव्यक्त करते हैं । इसमें आपश्री ने सर्वप्रथम श्रीप्रियालाल की नित्यविहार-स्थली श्रीवृन्दाटवी का स्मरण किया है--

प्रातः स्मरामि युगकेलि-रसाभिषिक्तं, वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।
सौरी प्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं, युग्मांघ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्त्वम् ॥

युगलकेलि-रसाभिषिक्तम्–

निरवधि, नित्यनिश्चल नवलकिशोर श्रीप्रिया-प्रियतम की, आदि-अनादि एक-रस अद्भुत नित्य नूतन मनोरम-केलि, श्रीवृन्दारण्य की विविध नव-निकुंजों में सतत स्वच्छन्द सम्पन्न होती रहती हैं । सर्व सुखों के सार-भूत-सहज रस-रास-विलास विलसते हुए श्रीयुगल सकल वन-सम्पदा को सुरत से अभिषिक्त कर रस-रूप ही बना देते हैं ।

प्रातःस्तवराज के तृतीय एवं चतुर्थ श्लोक में आचार्यश्री ने निशान्त में जगे, अन्योन्य केलिजन्य रस-चिह्नों के संयुक्त, रूपरसामृत-सिन्धु श्रीराधासर्वेश्वरजू की अनुपम छवि का दर्शन कराया है । युग्मकेलि-रस की अनन्त माधुरी का अवलोकन कर सखियों के नेत्र नेह नीर में सराबोर हो जाते हैं ।

श्रीनिम्बार्क आद्याचार्य प्रभु द्वारा प्रतिपादित रसोपासना का अनुसरण करते हुए श्रीहितूसहचरी श्रीश्रीभट्ट-देवाचार्यजी *श्रीयुगलशतक* ग्रन्थ में सन्त समाज को सम्वोधित करते हुए कहते हैं कि नित्यकेलिरस-परायण श्रीप्रियालाल ही हमारे परमाराध्य हैं--

संतो ! सेव्य हमारे श्रीप्रिय-प्यारे, वृंदाविपिन बिलासी । (श्रीयुगलशतक)

रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी (हरिप्रियासखी) ने भी रस महोदधि *श्रीमहावाणी* ग्रन्थ में श्रीरंगदेवी (श्रीनिम्बार्क) संसेव्य नित्यकेलि-रस-रत श्रीरसिक दम्पती के रसमय-स्वरूप का निरूपण किया है । यहाँ केवल सुरतसुख का मंगलाचरण श्लोक उपास्य-स्तुति के रूप में उद्धृत है--

राधाकृष्णा वहं वन्दे रसरूपौ रसायनौ । वृन्दावननिकुञ्जेपु नित्यलीलासमाश्रितौ ॥
गौरश्यामौ महारम्यौ कोटिकन्दर्पमोहनौ । रङ्गदेवी-सेव्यमानौ पराभक्ति-प्रदायिनौ ॥

(श्रीमहावाणी)

रसरूप तथा रसायन अर्थात् रस के आधाररूप, श्रीवृन्दावन के निकुंजों में नित्य क्रीड़ानिरत, गौर-श्याम प्रभा से युक्त, परम रमणीय रूपमाधुरी से करोड़ों कामदेवों को भी मोहित करने वाले, श्रीरंगदेवी सेव्यमान तथा पराभक्ति प्रदायक श्रीराधाकृष्ण की हम वन्दना करते हैं ।

वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम्–

प्रातःस्तवराज के प्रथम श्लोक के पहले चरण में युगलकेलिरस का तथा द्वितीय चरण में आद्याचार्यजी ने नित्यविहाररस से अभिषिक्त श्रीवृन्दावन तथा यहाँ के उदार वृक्षों का निरूपण किया है। पहिले कल्पवृक्षवत् वृन्दावन का स्वरूप देखिये, जो अनन्याश्रितों को उनकी अभिलाषानुसार श्रीप्रिया-प्रियतम के पाद-पद्मों की समधुर सेवा रूपी परम फल प्रदान करने वाला है--

गुणातीतं महद्धाम प्रेमभक्ति स्वरूपकम् । वृन्दया पावनं यस्मात्तस्माद् वृन्दावनं स्मृतम् ॥

वह धाम गुणातीत प्रेमभक्ति स्वरूप है । वृन्दा नाम भक्ति का है, वनं यानी रक्षण अर्थात् जहाँ भक्ति द्वारा ही रक्षण होता है, उसको वृन्दावन कहते हैं ।

श्रीमद्भागवत में भी कहा है–

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च ।

श्रीवृन्दावन परम धन्य है, जहाँ भक्ति साकार-स्वरूप धारण कर सदैव नृत्य-परायण रहती है । इसीलिये श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी जय ध्वनि के साथ उद्घोषणा करते हुए कहते हैं कि महानन्द-मूल श्रीवृन्दावन के नामोच्चारण मात्र से अन्तःकरण में प्रेम-भक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है । फलतः उसे श्रीयुगल निज-धाम का निवास प्रदान कर देते हैं । मन-वचन-कर्म से जो जीव श्रीधाम की शरण है, उसे श्रीराधा-माधवजू की प्राप्ति हो जाती है और भगवत् विमुखता के कारण भव-भटकन-रूपी अनेक जन्म की भूल से वह सदा-सर्वदा के लिये निवृत्त हो जाता है--

जाकौ नामहि लेत मन, देत जुगल निज कूल । जै-जै वृन्दावन जू है, महानन्द कौ मूल ॥

जै-जै वृन्दावन आनन्द मूल ।
नाम लेत पावत जु प्रनै रति, जुगल किसोर देत निज कूल ॥
सरन आये पाये राधाधव, मिटी अनेक जनम की भूल ।
ऐसैं जानि वृंदावन श्रीभट्ट, रज पै वारि कोटि मखतूल ॥

(यु. श. सि. सु. ३)

जिनकी अतुल रूप-रस-माधुरी पर अखिल ब्रह्माण्ड विमोहित हो जाते हैं, ऐसे मोहन-मोहिनीजू स्वयं ही अपने अभिन्न स्वरूप श्रीधाम वृन्दावन की महारम्य शोभा पर मोहित हो जाते हैं । एक क्षण के लिये भी यहाँ से पृथक् नहीं होते--

आपुहीं लुभि रहे दोउ प्यारे । छिनहुँ तहँ ते न ह्वै सकहिं न्यारे ॥

(महावाणी सि. सु. ३)

उक्त तथ्य को *श्रीसनत्कुमारसंहिता* में भी अभिव्यक्त किया है--

वृन्दावनं परित्यज्य नैव गच्छाम्यहं क्वचित् । निवसाम्यनया सार्धमहमत्रैव सर्वदा ॥

वृन्दावनधाम को छोड़कर मैं कभी भी कहीं नहीं जाता हूँ, यहाँ ही श्रीराधा के संग नित्य निवास करता हूँ।

श्रीराधाजू के सोलह नामों में *वृन्दा* नाम भी है, जो श्रुति सम्मत है । इसी से यह वृन्दावन कहा जाता है । (ब्रह्म.वै. पु.)

वृन्दावनी अर्थात् वृन्दावन की अधीश्वरी श्रीप्रियाजू का यह अत्यन्त प्रिय विनोद-वन है। प्रियतम अपनी अभिन्न-स्वरूपा प्रियतमा के विहार-वन को छोड़कर भला, अन्यत्र कैसे जा सकते हैं? यह सदा-सर्वदा नित्य नूतन हरीतिमा, प्रफुल्लता से परिपूरित रहता है, क्योंकि यहाँ पिय की प्यारी श्रीकिशोरीजू आनन्दघन-रूपी मेघ से स्वाति-बन-बूँदों की सतत सुवृष्टि करती रहती हैं–

वृन्दावन सहज सुहावनो, जहाँ सहज सदा हरिसारी जू ।
स्वाति बूँद नित बरषही, जहाँ आनंद घन पिय प्यारी जू ॥

(महा. उ. सुं. २६)

श्रीवृन्दावन निखिल रसों का अक्षय आकर है, जिसके मध्य **''सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा''** अनन्तानन्त सखियों से परिसेवित नित्य-रस-वैभव विलासी चक्रवर्ती सम्राट् श्रीयुगलकिशोर सुशोभित हैं–

सब रस को घर है सदा, श्रीवृन्दावन धाम । जा मधि वैभव बसत नित, अधिपति स्यामा-स्याम ॥

(महा. सु. सु. १०२)

अमित ऐश्वर्य-माधुर्यमय श्रीवृन्दावन धाम की उत्कृष्ट स्थिति को परिव्यक्त करते हुए महावाणीकार कहते हैं--कि यह धाम मन-वाणी की पहुँच से परे है । इसके सूक्ष्मतम-स्वरूप का विचार करते-करते बुद्धि चकित-थकित हो जाती है तथा चित्त भी उसकी प्राप्ति के लिये असमर्थ है । समस्त साधन मुक्ति-प्राप्ति तक ही सीमित है । यद्यपि बिना भगवत्कृपा कोई साधन भी फलित नहीं हो सकता है, तो भी पराभक्ति विना श्रीवृन्दावन की प्राप्ति नितान्त दुर्लभ है । पराभक्ति की प्राप्ति प्रिया-प्रियतम की कृपा से ही हो सकती है--

अखिल ब्रह्माण्ड बैराट के थाट सब, महाबैराट के रोम के कूप ।
सावकासैं उड़त रहत निति सहजहीं, परम ऐश्वर्य आश्चर्यमय रूप ॥
सो प्रथम एक ही सून्य मधि समि रह्यो, जैसे त्रिसरेनु सत अंस ।
यातें दस दस गुनी सहस्र सत सुन्य पुति, तिनतै लख सीस महासुन्य अवतंस ॥

(महा. सि. सु. ११)

श्रीनिम्बार्काचार्यजी के प्रातःस्मरणीय वृन्दावन की उदारता एवं उत्कृष्ट स्थिति का दर्शन कर यहाँ के सुरमणीय मुदारवृक्षों का स्वरूप देखिये--

ब्रह्मसंहिता में कहा है--

द्रुमा भूमिश्चिन्तामणिगणमयी तोयममृतम् ।
वनं वृन्दावनं नाम नवपल्लवमण्डितम् ।
कोकिलभ्रमरारावं मनोभवमनोहरम् ॥

(पद्मपुराण)

महावाणीकार ने सिद्धान्तसुख के मधुर वृन्दावन (योगपीठ) वर्णन में उज्ज्वल गुल्म-लताओं की बड़ी ही सरस माधुरी प्रस्तुत की है--

बिमल वृक्षन की सोभा बनि सार । पेड़ मनि बील तौ हरितमनि डार ॥
पत्र मनि पीत फल अरुन अनुकूल । मधुर सौरभ सुभग सुरंग रंग फूल ॥
बहुत द्रुम ऐसें जिनकी छबि छाय । फूल फल मूल साखादि बहुभाय ॥
सबही आभासि रहे रंग नाना । मनहरन रम्य को कोटि भाना ॥
अति रसीली रही रंग-रेली । ललित वृक्षन सों लपटाय बेली ॥
बहुत कै लत्तिका ऊर्ध्व गवनी । बहुत कै भूमि परिसरित रवनी ॥

हितकुल भूषण श्रीध्रुवदासजी ने बयालीस-लीला के श्रीवृन्दावन सतलीला में लतिकाओं के दिव्य-स्वरूप का गान इस प्रकार किया है--

लता-लता सब कल्पतरु, पारिजात सब कूल । सहज एक रस रहत हैं, झलकत यमुना कूल ॥
वृन्दावन दुति पत्र की, उपमा कौं कछु नाहिं । कोटि-कोटि वैकुण्ठ हू, तेहि सम कहे न जाहिं ॥

श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने प्रथम श्लोक के तृतीय चरण में कंकणाकार-श्रीयमुना की गंभीर धारा तथा अनन्त गुणों से देदीप्यमान श्रीवृन्दावन का स्मरण किया है--

सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशम्–

श्रीयमुनाजू का रसमय स्वरूप--

कालिन्दी चाकरोद्यस्य कर्णिकायाः प्रदक्षिणम् ।
(पद्मपुराण)

श्रीयमुना कर्णिका की परिक्रमा करती हुई बहती हैं, इसलिये कंकणाकार हैं -

कंकनाकार सौढार सरिता । बहति अति सुरस सिंगार भरिता ॥ तथा
सरिता रस-सिंगार की सदा बहत चहुँ ओर ॥ (महावाणी सि. सु.)

श्रीयमुनाजी कर्णिका के मध्य में स्थित कामबीज-रूप कलिन्दपर्वत से प्रकट होकर कर्णिका की परिक्रमा देती हुई बहती हैं ।

कामबीज और सुरतकेलि का एकत्व *गौतमीतंत्र* के क कारः पुरुषः कृष्णः श्लोक में वर्णित है । अर्थात् श्रीयमुनाजी का प्राकट्य श्रीप्रियालाल के सुरतविहार से है । यथा--

राधायाश्च कृता केलिः श्रीकृष्णेन समं शुभा । ततः प्राप्य सखीश्रेष्ठा ललिता वाक्यमब्रवीत् ॥

ललितोवाचः–

युवयोर्वक्त्र संजाताः केलिःश्रमकणाः शुभा । अतः संजायते नूनं तटिनी कापि चोत्तमा ॥
सर्वैः सखीगणैः पेयं त्वं प्रसीद कुरुष्व च । तस्यास्तद्वाक्यमाकर्ण्य सा चकार नदीं वराम् ॥

(स. सं. प. ३२ श्लो. ८, ९. १०. ११)

इस प्रकार श्रीललिताजू के वचन श्रवण कर श्रीश्यामाजू ने परम पावन सरिता श्रीयमुनाजू को प्रकट किया। इसीलिये श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी कहते हैं--

केलि-रूपिनी जमुना श्रीभट्ट, वृन्दावन फूल्यौ बहु भतियाँ ॥

(श्रीयुगलशतक)

श्रीप्रियालाल के इच्छानुरूप श्रीवृन्दावन अपने गुणों को प्रकटित कर उन्हें सदैव सुख प्रदान करता रहता है-

रसिक दम्पती की अभिलाषा को जानकर वृन्दासखी मुदित मन से वनराज के वृक्ष-बेलियों को निर्देश करती हैं कि आज श्रीयुगल विपिन-विहार करेंगे, सभी अपना नख-से शिख पर्यन्त शृंगार कर नूतन वेश धारण कर लो । जिनके मन में जो आकांक्षा है, उसे प्रफुल्ल पुष्प-सौरभ की सेवा से पूर्ण कर लो । श्रीहरि के आने की सुन हेत से हमजुही का हृदय हर्षित हो गया, क्योंकि इसका वर्ण प्रियाजू की अंग-कान्ति के सदृश होने से प्रियतम को अतिशय प्रिय है । इधर तमाल-तरु की पंक्ति का हर्ष ळह कम नहीं, क्योंकि इनका वर्ण भी लालजी की श्याम-अंगप्रभा जैसा होने से किशोरीजू को अति सुख प्राप्त होता है–

वृन्दा बात दुहुन की जानि । तब मन ही मन अति हरपानि ॥
तब वृन्दावन बेलि कों, दीनों परम निदेस ।
नख-शिख करहु सिंगार सुब, पहिरो नूतन वेस ॥
आज प्रिया संग प्रानपति, करि हैं विपिन बिलास ।
फूलहुं सुमन सुवास सब, जाके मन जु हुलास ॥
हेमजुही हरपहु हिये, हरि आवत तब हेत । प्रिय लागति हो पीय को, प्रिया वरन सुख देत ॥
हे तमरल मालावली, करहुं मोद विस्तार । सुख पावत हैं स्वामिनी, देखि स्याम उनिहार ॥

चन्दन से चर्चित तथा पुष्प-पराग के पद-पाँवड़े से मंडित सघन वन पथ पर श्रीविहारी-विहारिणी विचरण कर रहे हैं, इस समय त्रिविध पवन में झूमती हुई वृक्षावली फल-फूल की सेवा लिये श्रीयुगल की सेवा में तत्पर रहती है--

सघन विपिन मारग छवि छाये । कुसुमनि पग पाँवड़े बिछाये ॥
कुसुमित-कंज गुंज अलिमाला, चंदन चरचित गलियाँ ।
सुखद समीर बहत सौरभ जल, कमल विराजत थलियाँ ॥
पल्लव पवन परसपर करहीं । द्रुम फल लै सन्मुख अनुसरहीं ॥

सखी कहती है, देखा ! आज श्रीप्यारीपीय के उज्ज्वल तन में प्रकाशित वन की कैसी शोभा हो रही है ! जगमगाते हुए ज्योतिर्मय श्रीविग्रहों में सम्पूर्ण वन का निवास हो रहा है--वन में तन और तन में वृन्दावन परस्पर ऐसे एकमेक हो रहे, जैसे बादल में बिजली और बिजली में बादल--

बन सोभा जो देखिये, सब तन कियो प्रकास । तन में आभा झलमलैं, वन को सकल निवास ॥
वन में तन तन में वृन्दावन । ज्यौं घन दामिनि दामिनि में घन ॥

युग्माङ्घ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्त्वम्–

श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने प्रातःस्तवराज के प्रथम श्लोक के इस अंतिम चतुर्थचरण में श्रीराधाकृष्ण के चरण-चिह्नों से अंकित, पादपद्मों के पराग से रंजित, सुवासित, पुलकित तथा सकल सुकामना पूरक चरण-रेणुकणिकाओं से जहाँ के समस्त प्राणी-मात्र परम पवित्र, भूषित व अनुमोदित रहते हैं, ऐसे मंगलमय वृन्दावन का चिन्तन किया है ।

श्रीराधाकृष्ण के पद-पंकजों के रजःकण-स्पर्शमात्र से करोड़ों विष्णु प्रकट हो जाते हैं ।

तस्या अंघ्रिरजस्पर्शात्कोटिविष्णुः प्रजायते । (पद्मपुराण)

श्रीवृन्दावन-रेणु की प्राप्ति दुर्लभ है । शेष-महेश-गणेश-इन्द्र तथा देवगण भी श्रीराधामाधव की सेवार्थ यहाँ धूलि की आकांक्षा करते हैं । ब्रह्माजी को आज पर्यन्त खोजने पर भी वह रज ध्यान में नहीं आती–

सेस महेस सुरेश गनेसुर, वेदन हित बांछत पद रेन ।
अज अजहु खोजत नहिं पावत, ध्यानमात्र आवत सुहिये न ॥

(महावाणी सि. सु. ४)

श्रीब्रह्मा कहते हैं--मैं तो यही बड़भाग्य चाहता हूँ कि मेरा जन्म इस पृथ्वी पर हो, पृथ्वी पर भी वनों में हो और वनों में भी गोकुल में हो, जहाँ के उन व्रजवासियों में से किसी की चरण-रेणु मुझ पर पड़े, जिनके जीवन धन केवल श्रीकृष्ण हैं, जिनके चरण सरोजों की रज को श्रुतियाँ आज तक ढूँढ रही हैं–

तद् भूरिभाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यां यद् गोकुलेऽपि कतमाङ्घ्रि रजोऽभिषेकः ।
मज्जीवितुं तु निखिलं भगवान् मुकुन्दस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुतिमृग्यमेव ॥

(भाग. १०. १४./३४)

श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी कहते हैं--यहाँ की रज से ही यह शरीर सदैव सना रहे । हृदय में इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी आशा न रहे--

जै श्रीभट्ट धूरि धूसर तन, यह आसा उर धार । (यु. श.)

वह इसलिये कि रज पर कोटि मख अर्थात् यज्ञ तथा तूल याने यज्ञ के समान विविध कर्म-धर्मादि सभी न्यौछावर हैं । अभिप्राय यह है कि यज्ञादिक कर्मों से तो केवल विकारयुक्त स्वर्गादिक प्राप्त होते हैं, परन्तु वृन्दावन-रेणु के आश्रित होने से श्रीराधासर्वेश्वर की प्राप्ति होती है--

ऐसे जानि वृन्दावन श्रीभट्ट, रज पर वारि कोटि मख-तूल । (यु. श.)

श्रीराधासुधानिधिकार कहते हैं--जो ब्रह्म, रुद्र, शुक, नारद, भीष्मजी द्वारा सहसा देखे नहीं जाते, उन पुरुष श्रीकृष्ण को तत्काल वश में करने वाले, वशीकरण-चूर्ण के सदृश, अनन्त शक्तियों वाली श्रीराधिकाजी की चरणधूलि का मैं स्मरण करता हूँ। (रा. सु. नि. श्लोक. ३)

श्रीसूरदासजी कहते हैं--

हम न भई वृन्दावन-रेनु । जहँ चरननि डोलत नंदनंदन, नित प्रति चारत धेनु ॥ (सूरसागर)

रज की विलक्षणता का वर्णन करते हुए श्रीध्रुवदासजी कह रहे हैं कि रसिकेश्वर प्रियतम को अपनी प्रियतमा श्रीकिशोरीजू की चरण-रेणु इतनी प्रिय है कि वे उसमें सदैव लुंठित रहते हैं --

कुँवरि चरन अंकित धरनि, देखत जेहि-जेहि ठौर ।
प्रिया-चरन-रज जानि कै, लुठत रसिक सिरमौर ॥

श्रीराधागोविन्दजू की चरण-रेणु से स्वयं मुक्ति भी मुक्ति होकर इनके दासीत्व को स्वीकार करती है–

मुक्ति कहै गोपाल सों मेरी मुक्ति बताय ।
ब्रजरज उड़ि मस्तक लगे मुक्ति मुक्त ह्वै जाय ॥

श्रीप्रियालाल की कृपा से जिन्हें वृन्दावन की रजरेणु प्राप्त हो गयी, उनके महाभाग्य का भला, कौन बखान कर सकता है--

भाग बड़ौ श्रीवृन्दावन पायौ ।
जा रज को सुर नर मुनि बाँछित, विधि शंकर सिर नायौ ॥
बहुतक जुग या रज बिन बीते, जनम - जनम डहकायौ ।
सो रज अब जु कृपा कर दीनी, अभै निसान बजायौ ॥

(स्वामी श्रीरसिकदेवजी की वाणी)

श्रीहरि एवं प्रियाजू के श्रीचरणों की रेणु की उपलब्धि उनकी कृपा-कटाक्ष चितवनी से ही सम्भव हो सकती है--

कृपा कटाछि चितै श्रीहरिप्रिया, तबही सकै चरन-रज लाध ॥

(महावाणी सि. सु.)

सम्पादक - श्रीसर्वेश्वर
श्रीजी की कुंज, प्रताप बाजार
वृन्दावन (उ० प्र०)

* * *

श्रीवृन्दावनधाम

–आचार्य पं. युगलविहारी शास्त्री (सिद्धजी)

भगवान् श्रीकृष्ण सच्चिदानन्दमय हैं, अतः उनके नाम, रूप, लीला और धाम ये भी चारों भगवद्विग्रह स्वरूप सच्चिदानन्दमय हैं । श्रीवृन्दावन श्रीराधारानी का वन है । अतः इसका नाम श्रीवृन्दावन है । तुलसीजी का वन होने से इसे 'श्रीवृन्दावन' कहते हैं ।

वेद में वृन्दावन का स्वरूप--

ऋग्वेद में वृन्दावन को अलौकिक एवं नित्य माना है । श्रीकृष्ण का गोलोकधाम श्रीवृन्दावन नित्य एवं अलौकिक है । ऋग्वेद में इस प्रकार वर्णन मिलता है--

तां वां वास्तून्युष्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
यत्राह तदुरूगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ॥

हम उस दिव्य लोक में जाना चाहते हैं, जहाँ मोटे सीगों वाली गायें रहती हैं । जहाँ प्रशस्त गति वाले, समस्त कामनाओं के पूरक (गोपवेषधारी) परम दिव्य स्थान प्रकाशित है ।

तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ।

श्रीकृष्ण का वह नित्य धाम वृन्दावन धाम है, जिसे भक्त जन सदा दर्शन करते हैं । जिस प्रकार योगीजन अपनी दिव्य अलौकिक भक्ति से स्वर्ग आदि को देखते हैं । सामवेद में भी वर्णित है कि श्रीवृन्दावन धाम नित्य एवं अलौकिक है । जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण की लीला भी नित्य है ।

इसी क्रम में श्रीवृन्दावन धाम को गोलोक धाम नाम से विभूषित किया गया है । श्रीवृन्दावन श्रीकृष्ण की बाल क्रीड़ास्थली एवं महारास लीला का प्रमुख स्थान होने से सभी वैष्णव सम्प्रदायों में मान्य है।

श्रीवृन्दावन के सम्बन्ध में दो प्रकार की धारणायें है । प्रथम भूमि पर स्थित वृन्दावन, दूसरा गोलोकस्थ वृन्दावन । वस्तुतः दोनों में अभेद है ।

विष्णु पुराण में भगवान् की तीन शक्तियां मानी गयी हैं । ये शक्तियां हैं-ह्लादिनी, संधिनी एवं संवित्। श्रीवृन्दावन प्रमुख रूप से संधिनी शक्ति का विलास है, जबकि श्रीकृष्ण की लीलाओं में इन तीनों शक्तियों का प्रभाव है ।

जिस प्रकार पूर्ण प्रेम नित्य, नूतन और एक रस होता है । उसी प्रकार स्वभावतः श्रीवृन्दावन भी नित्य नवीन और एकरस है । नित्य नवीन रहने के कारण वह परम सौन्दर्य का और सर्वदा एक रस रहने के कारण परम प्रेम का धाम है ।

श्रीवृन्दावन प्रेम की सरस भूमि है, जहाँ प्रेम और सौन्दर्य एक दूसरे में ओत-प्रोत रहते हैं । इस एकरस में अवसाद का लेश मात्र भी नहीं है । यहाँ मन की दुविधा की तो दाल भी नहीं गलती है । यहाँ व्रजेश्वरी श्रीराधारानी एवं व्रजेश्वर श्रीकृष्ण का एक छत्र रस राज्य रहता है ।

श्रीवृन्दावन में आनन्द सिन्धु की तरंगें उठती रहती हैं । अनुराग की मेघ वर्षा से प्रियाप्रीतम रूपी दो पुष्प सदा खिले रहते हैं । श्रीवृन्दावन में प्रिया-प्रीतम अविराम रूप से नित्य निरन्तर क्रीड़ा करते हैं ।

सहज विराजत एक रस वृन्दावन निज धाम ।
ललितादिक सखियन सहित क्रीडत श्यामा श्याम ॥

अतः प्रवोधानन्द सरस्वती पाद उद्‌बोधन करते हैं--

मुक्तिर्याति यतो बहिर्बहिरहो सम्मार्जनी घाततः त्रस्तास्ता वरसिद्धयो विदधते काकादि यत् सेवितम् ।
यन्नाम्नेव विदूरगाऽपि विलयं मायापि यायादहो तद् वृन्दावनमत्यचिन्त्य-महिमा देहान्तमाश्रीयताम् ॥

श्रीवृन्दावन में मुक्ति बुहारी की चोट से आहत होकर दूरातिदूर जा पड़ती है, जिसकी सेवा के लिए अणिमादि अष्ट सिद्धियां प्रार्थना करने में भी डरती हैं । माया तो वृन्दावन का नाम सुनते ही दूर भाग जाती है, उस अति अचिन्त्य महिमामय श्रीवृन्दावन धाम का जीवन पर्यन्त आश्रय ग्रहण करो ।

श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के १५ वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण बलदाऊ भैया से श्रीवृन्दावन की महिमा वर्णन करते हुए कहते हैं--

अहो अमी देववरामरार्चितं पादाम्बुजं ते सुमनः फलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

हे देव शिरोमणि ! यों तो बड़े-बड़े देव आपके चरण कमलों की वन्दना करते हैं, परन्तु देखिये तो, ये वृक्ष भी अपनी डालियों से सुन्दर पुष्प और फलों की सामग्री लेकर, आपके चरण कमलों में झुक रहे हैं । क्यों न हो, उन्होंने इसी सौभाग्य के लिए अपना दर्शन एवं श्रवण करने वालों का अज्ञान नाश करने के लिए वृन्दावन में वृक्षयोनिग्रहण की है । इनका जीवन धन्य है ।

हम वृन्दावन में आज भी बड़े-बड़े महात्मा मधुकरी वृत्ति का निर्वहन कर भजन में लगे रहते हैं और वृन्दावन की सीमा से परे श्रीकृष्ण ही क्यों न हों, देखना तो बहुत दूर, ताकते भी नहीं हैं । श्रीभट्टजी कहते हैं–

रे मन वृन्दा विपिन निहार ।
विपिन राज सीमा के बाहर हरिहु को न निहार ॥
जद्यपि मिले कोटि चिन्तामनि तदपि न हाथ पसार ।
जै श्रीभट्ट धूल धूसरि तन यह आपा उर धार॥

वस्तुतः श्रीधाम वृन्दावन, काल मायातीत है, परन्तु साधन-भक्ति हीनता, साधुसंग का अभाव एवं सत्‌शास्त्रों के अध्ययन में अरुचि और अविश्वास के कारण, विशेष कर वहिर्मुखता वश मायिक पदार्थों एवं वित्तैषणा के कारण आज हम श्रीवृन्दावन महिमा-माधुरी का पूर्णतः आस्वादन नहीं कर पारहे हैं, फिर भी इस पावन श्रीवृन्दावन धाम में आज भी रास लीलानुकरण महान् आकर्षण है, भक्तजन फूल-बंगलों, झूला महोत्सवों, होली महोत्सव आदि के दर्शनों के लिए लाखों की संख्या में यहाँ आते हैं । इस प्रकार के अलौकिक प्रभाव आज भी परिलक्षित होते है ।

पूर्व प्राचार्य - श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, वृन्दावन (उ० प्र०)

'राधा' शब्द विवेचन

—पं० मृदुलकान्त शास्त्री

वन्दे श्री राधिकां देवीं, वृषभानुकिशोरिकाम् । बालोऽपि कुरुते शास्त्रं यदनुग्रहलेशतः ॥

श्रीसर्वेश्वरीजी के चरण रेणु कणिका के सम्बन्ध में भी कुछ कहना इस बालबुद्धि के लिए सर्वथा धृष्टता ही होगी, तथापि पावनातिपावन श्रीराधा नाम का आश्रय ग्रहण कर, श्रीराधा जू की असीम कृपा का अनुभव करते हुए उन्हीं श्रीगोविन्द-मोहिनी के चरणारविन्द युगल में अपनी भावाञ्जलि प्रदान करने का प्रयास करते हैं । सर्वप्रथम श्रीराधा जू के नामार्थ पर कुछ विचार करते हैं । वास्तव में श्रीगोलोक धाम में सुदामा गोप के शापवश भूलोक अवतरण की यह लीला मात्र लीला प्रपञ्च की दृष्टि से ही हुई है । अन्यथा प्रलय, सर्जन फिर संहार पुनः सृष्टि-रस प्रवाह से उस पार श्रीराधा की, श्रीराधाकान्त की लीला उनका नित्य निकुंज विहार तो अनादिकाल से सपरिकर नित्य दो रूपों में प्रतिष्ठित रहकर चल रहा है एवं अनन्त काल तक चलता रहेगा । प्रलय की छाया उसे छू नहीं सकती, सर्जन का कम्पन उसे उद्वेलित नहीं कर सकता । श्रीराधा का यह आविर्भाव तो प्रपञ्चगत कतिपय बड़भागी ऋषियों की चिन्तनभूमि पर कल्प के आरम्भ में उस लीला का उन्मेष किस प्रकार से हुआ, इसका एक निदर्शन मात्र है ।

श्रीरासमण्डल में श्रीकृष्णचन्द्र के वामपार्श्व से आविर्भूत होते ही श्रीकृष्णचन्द्र के चरणों में स्वयं को मुहुर्मुहु समर्पित करने के लिए धावित हुई, दौड़ी । तत्कारण श्रीराधा नाम से विभूषित हुई --

रासे सम्भूय गोलोके सा दधाव हरेः पुरः । तेन राधा समाख्याता पुराविद्भिर्द्विजोत्तम ॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण ब्र. खण्ड)

अथवा--

'कृष्णेनं आराध्यत इति राधा'

श्रीकृष्ण इनकी नित्य आराधना करते हैं, अतः राधा नामकरण हुआ । अथवा **कृष्णं समाराधयति सदेति राधिका** (राधिकोपनिषद्) श्रीकृष्ण की जो सदा सम्यक् रूप से आराधना करती हैं, इसीलिए राधिका नाम से प्रसिद्ध हुई । अथवा--

स्वयं पुरुषः स्वयमेव समाराधनतत्परो ऽभूत् ।
तस्मात् स्वयमेव समाराधनमकरोत् । अतो लोके वेदे श्रीराधा गीयते ॥

राकार दानवाचक है एवं धा निर्वाण का बोधक है । ये निर्वाण का दान करती है, इसीलिए राधा नाम से कीर्तित हुई हैं ।

अस्तु, श्रीराधा का श्रीकृष्ण के प्राणों से ही आविर्भाव हुआ है --

प्राणाधिष्ठात्री देवी सा कृष्णस्य परमात्मनः । आविर्बभूव प्राणेभ्यः प्राणेभ्योऽपि गरीयसी ॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण ब्र. खण्ड)

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के भाष्यानुसार वाम भाग में विराजित होने से जो श्रीकृष्ण की पटरानी हैं, ऐसी श्रीराधारानी ही वास्तव में श्रीकृष्ण की ह्लादिनी शक्ति होने के कारण इस चराचर जगत् की कर्ता, धर्ता एवं हर्ता सिद्ध होती हैं--*बृहन्नारदीय* में श्रीसनत्कुमारजी श्रीनारदजी से इसी बात को पुष्ट करते हैं--**श्रीराधा देवी जगत्कर्त्री, जगत्पालनतत्परा । जगत्त्रयविधात्री च सर्वेशी सर्वसूतिका ॥**

हमारी निम्बार्काचार्य परम्परा में अनेक आचार्यचरणों ने शास्त्र एवं अपने अनुभव के आधार पर राधा तत्त्व के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला है । इस क्रम में वर्तमान जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज ने भी अपनी सारस्वत समाराधना के अन्तर्गत स्वरचित अनेक ग्रन्थों में उक्त विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। आपश्री के राधा रस तत्त्व पर लिखित श्रीराधा-राधना कृति अवलोकनीय, मननीय एवं आराधनीय है।

श्रीयमुनावारिधारायां श्रीराधां राधिकां वराम् ।
दिव्य-लावण्य-सम्पन्नाम्, श्रीराधां रसिकां भजे ॥
निम्बार्काचार्यवर्यश्च रसिकाचार्यहृद्गिरा ।
सर्वदा राधितां राधां स्मरामि रस-सागराम् ॥

—श्रीधामवृन्दावन

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यचरणों के नाम के साथ *श्रीजी* अलंकरण

–पं० विश्वामित्र व्यास, निम्बार्कभूषण

यह सर्व विदित है कि अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, पीठाधिपति आचार्यचरणों का राजस्थान क्षेत्र के राजा-महाराजाओं के साथ गुरु-शिष्य के रूप में परम्परागत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । वि० सं० १८१४ से १८४१ तक श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य **श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज** आसीन थे। आपश्री के ही समय में गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव के आराध्य भगवान् श्रीमाधवजी को राधाकुण्ड वृन्दावन से यहाँ वि० सं० १८२३ में आचार्यपीठ पर प्रतिष्ठित किया गया है।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यचरणों के नाम के साथ ''श्रीजी'' अलंकरण भी आपश्री के समय से ही प्रचलित हुआ है । इस सम्बन्ध में ऐतिहासिक प्रसंग इस प्रकार है--

राजा-महाराजाओं की कुल-परम्परा के अनुसार जिस प्रकार राजा-महाराजा आचार्यचरणों के दर्शनार्थ आचार्यपीठ आया करते थे, वैसे ही महारानियां भी आचार्यचरणों के अर्चन-पूजन एवं दर्शनार्थ उपस्थित हुआ करती थीं । उस समय केवल एक पुजारी के अतिरिक्त और कोई भी पुरुष आचार्यश्री के पास विद्यमान नहीं रहता था। राजघरानों की यह एक पारम्परिक मर्यादा थी । इसी प्रकार जब कभी आचार्यश्री का किसी नरेश के आमन्त्रण पर बाहर पधारना होता था, तब राजमहलों में भी यही प्रथा प्रचलित थी । परिचारक गण सभी ड्योढी पर ही ठहर जाते थे । रानियाँ एवं उनकी परिचारिकायें ही आचार्यश्री का अर्चन, पूजन करती थी । आचार्यश्री उनको दीक्षा (मन्त्रोपदेश) देते थे । इसमें कुछ समय भी लग जाता ।

इसी क्रम में एक बार तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई माधवसिंह प्रथम के निमन्त्रण पर आचार्य श्री 'श्रीजी' श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज का जयपुर पादार्पण हुआ । आचार्यश्री का भव्य स्वागत एवं स्वरूपानुकूल से व्यवस्था सर्वोत्तम रही थी । राजमहल (रनिवास) में यथा समय दीक्षा, दर्शन अर्चनादि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। उस समय जयपुर नरेश के विद्वद्वर्ग में कतिपय विद्वान् जो नरेश के कृपाभाजन थे, किन्तु आचार्यश्री के प्रति छिद्रान्वेषी, विरोधी विचार के थे । उन्होंने नरेश को संशय उत्पन्न करने की दृष्टि से यह बताया कि रात्री में महाराजश्री के महल में महिला स्वरों का श्रवण होता है । नरेश ने स्वयं इसके अनुसंधान हेतु आचार्यश्री के महल के बंद द्वार के बाहर स्थित होकर, स्त्री कंठ स्वर के साथ-साथ महाराजश्री का वार्तालाप का अनुभव किया । तब नरेश ने द्वार खुलवाने की प्रार्थना की । आचार्यश्री ने ज्यों ही कपाट खोले तो नरेश हतप्रभ से नतमस्तक हो गये । महल में महाराजश्री के

अतिरिक्त कोई भी अन्य पुरुष वहाँ नहीं था । महाराजश्री ने तत्काल मलिन मुख पश्चात्ताप रत नरेश के अन्तर्भाव को समझते हुए नरेश को आश्वस्त कर, स्वयं सिंहासन पर विराजमान कर नरेश से कहा--अब तुम कुछ क्षणों के लिए नेत्र बन्द करो, फिर हम कहें तब खोल कर देखना । कुछ समय बाद ज्यों ही महाराजश्री ने नेत्र खोलने का आदेश दिया तो नरेश ने प्रत्यक्ष देखा कि सिंहासन पर आचार्यश्री के स्थान पर श्री ''श्रीजी'' (श्रीराधिकाजी) विराजमान हैं । उनका दिव्य अलौकिक प्रकाश पुञ्ज है । नरेश इस दृश्य दर्शन से मूर्च्छित हो गये । कुछ समय पश्चात् ही महाराजश्री ने नरेश को चेतना में लाकर आशीर्वाद प्रदान किया । नरेश गद्‌गद् हो गये और महाराजश्री द्वारा प्रदत्त दिव्य दृष्टि से श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज का श्री 'श्रीजी' (किशोरीजी) के स्वरूप में दर्शन कर अपने संशय के प्रति क्षमा प्रार्थना की और अगले दिन ही नरेश ने विशेष समारोह के साथ श्रीआचार्यचरण का विशेष अर्चन-वन्दन कर श्री 'श्रीजी' की उपाधि से समलंकृत कर स्वयं को कृतार्थ किया । तब से अनवरत श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर के नाम के साथ श्री 'श्रीजी' महाराज पदवी प्रचलित है ।

श्री 'श्रीजी' शब्द व्रजधाम में श्रीकिशोरीजी लाडली का मुख्य प्रचलित पर्याय शब्द है, जो व्रजधाम की स्वामिनी है । बरसाने में 'श्रीजी' मन्दिर ही 'श्रीजी' का निज धाम प्रसिद्ध है । आज भी भक्तगण परस्पर मिलने पर नमस्कारादि के स्थान पर 'जय श्रीजी' की बोलते हैं । श्रीमहावाणीजी के प्रमाण स्वरूप श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य सहित कई आचार्यवर्य श्रीकिशोरीजी की सेवा में निज परिकर (सखी स्वरूप) में अद्यावधि सेवारत हैं । इसी सम्प्रदाय की उपासना में श्रीरासलीलानुकरण को अष्टयाम सेवादि को महत्त्वपूर्ण अंग माना है और व्रजधाम की रासमण्डलियों में श्यामसुन्दर और किशोरीजी के स्वरूपों को क्रमशः ठाकुर और श्रीजी शब्दों से ही सम्बोधन प्रचलित है । उपर्युक्त घटना क्रम के आधार पर हमारे आचांर्यप्रवर साक्षात् श्री श्रीजी स्वरूप में ही भक्तों पर कृपावर्षण प्रदान कर रहे हैं ।

इसी से सम्बन्धित एक और प्रसंग यह भी है कि श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज से पूर्ववर्ती आचार्यप्रवरों के नाम के साथ मात्र देवाचार्य शब्द ही प्रचलित था, किन्तु 'श्रीजी' की उपाधि के साथ आचार्यों के नाम के साथ देवाचार्य से पूर्व शरण शब्द भी श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय से प्रचलित रहा है । यही 'शरण' शब्द वर्तमान आचार्यश्री ने अपनी रचनाओं (दोहों) में समावेश कर आपश्री की रचनाओं में शरणागति का भाव संजोते हुए अपनी रचना की एक पृथक् पहिचान स्थापित की है । आपश्री की महिमा के विषय में वर्णन करने में कोई प्रभु कृपा एवं गुरु आश्रय सम्पन्न प्राणी ही सक्षम हो सकता है ।

आपश्री की जन्म पत्रिका की रचना, ज्योतिष क्षेत्र में प्रखर वैदुष्य प्राप्त मेरे स्वर्गीय पूज्य पितामह श्रीलादूरामजी व्यास ने जो आचार्यपीठ के व्यास पद पर परम्परागत सेवारत रहे थे, ही सर्वप्रथम की थी। आचार्यश्री के युवराज पद के निर्णय के अवसर पर उक्त आपश्री के जन्माङ्ग (जन्मकुण्डली) के फलादेश को ही आधार माना गया था जो, आज तक आपश्री के प्रति साकार रूप में घटित चल रहा है ।

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

श्रीभट्टदेवाचार्यकृत आदिवाणी - युगलशतक में रसोपासना

–डा० रामप्रसाद शर्मा

श्रीनिम्बार्क परम्परागत रसोपासना के वाणी आदि रसोपासनात्मक ग्रन्थों में वर्णित युगल के व्रजवृन्दावन-उभयात्मक-नित्यबिहार का मूलस्रोत श्रीभट्टदेवाचार्यकृत-आदिवाणी युगलशतक है, जो व्रजभाषा की आदिवाणी है । जिसमें व्रजलीला तथा निकुंजलीला सुखान्तझंकित उभयरसात्मक-निम्बार्कीय रसोपासना का परम्परागत स्वरूप ब्रजभाषा में निरूपित किया गया है । पूर्वोक्त गोपीभावपरक तथा सखीभावपरक उभयात्मक रसोपासनाएँ यहाँ समान रूप में वर्णित हुई हैं । इसके सिद्धान्त सुख में उभयरसात्मक उपासना का अभीष्ट प्रतिपादन हुआ है । युगल-शतक के सूक्ष्म कलेवर में व्रजनिष्ठा तथा वृन्दावननिष्ठा का अद्भुत समन्वय प्रकट हुआ है । युगलशतक विशिष्ट रसोपासना में श्रीराधाजी का प्राधान्य है, व्रजवृन्दावन धाम रसरूप-परमानन्द स्वरूप-युगल-सच्चिदानन्द प्रभु श्रीकृष्ण मनमोहन और मोहनी श्रीराधारानी की रस क्रीड़ा का परमदिव्य स्थल है, जो उन्हीं के रसरूप लीला स्वरूप परमानन्द की आनन्दमूलक-मनमोहक-युगलप्रणय-भक्तिप्रदायिनी रसविस्तृति है, वलयाकार श्रीजमुनाजी, गोकुलादितीर्थ, लताकुंज, पशु पक्षियों की अमृत वाणी आदि सभी रसविस्तारक विधायकतत्त्व उन्हीं के स्वरूप हैं-

व्रजभूमि मोहनी मैं जानी ।
मोहनि कुंज मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी ॥
मोहनि नारि सकल गोकुल की, बोलत अमृतबानी ।
श्रीभट्ट के प्रभु मोहन नागर, मोहनी राधारानी ॥

जै जै वृन्दावन आनन्द मूल ।
नाम लेत पावत जु प्रनै रति, जुगलकिसोर देत निज कूल ॥
सरन आय पाये राधाधव, मिटी अनेक जनम की भूल ।
ऐसै जानि वृन्दावन श्रीभट्ट, रज पैं वारि कोटि मखतूल ॥

श्रीभट्टदेवाचार्यजी रसरूप-परमानन्द-स्वरूप-नित्यविहारी विहारिणी जू के नित्यनूतन परममधुर युगलस्वरूप के सखीभावपरक रसिकोपासक हैं, उभयरसात्मक वृन्दावनविहार में युगलदम्पती प्रियाप्रियतम श्रीराधाकृष्ण का वर्णनातीत दिव्यातिदिव्य अनन्तानन्त-सौन्दर्यलावण्यमय रूप चित्रित किया गया है । नित्यविहारी-युगलदम्पती की सुन्दर जोड़ी, परमविलक्षण, सदासनातन-एकरस,-नित्यकिशोर-अविचल नवल नूतनवयस, नखशिख सुषमा-सौन्दर्य के परमोदधि हैं, सहजसुख के पद द्रष्टव्य हैं--

वृन्दावन इक सुन्दर जोरी ।
खेलत जहाँ तहाँ वंशीवट, नन्दनन्दन वृषभानु किसोरी ॥

भुवन चतुर्दस की सुन्दरता, सुन्दर श्याम राधिका गोरी ।
जय श्रीभट्ट कहाँ लौं बरनौं, रसना एक नाहिं लख कौरी ॥६॥

राधामाधव अद्‌भुत जोरी ।
सदा सनातन इक रस विहरत, अविचल नवल किसोर किसोरी ॥
नख शिख सब सुषमा रतनाकर, भरत रसिक वर हृदय सरोरी ।
श्रीभट्ट कटक कर कुण्डल, गंडवलय मिलि लसत हिलोरी ॥७॥

युगल शतक में व्रजलीला रासविहार, वेणुवादन, गोचारण, छाक, श्रीगोपाल आरती, गोपाललाल दूलह, श्रीव्रजराजगोपाललाल का वृषभानुकुमारी श्रीराधाजी से विवाह प्रसंग, त्रिभंगीलाल की बांसुरीवादन से गोपियों में विरहोद्दीपन, गोपीमंडल में रास, गोरस दान, श्रीराधिकाजी का मान तथा श्रीकृष्ण द्वारा मानमनावन-सखियों से समाधान आदि प्रसंग प्रतिपादित हुये हैं । व्रजरस केन्द्रित युगलविहारी श्रीराधाकृष्ण का नित्यवृन्दावनबिहार भी जमुना तटीय कुंज लीला प्रसंगों में वर्णित हुआ है, तथापि सेवासुख, सहजसुख, सुरतिसुख आदि प्रसंगों में सखीभावपरक निकुंजकेलि का दम्पतीविलास सांगोपांगिक व्यापक रूप से वर्णित है । सेवासुख विशिष्ट शीर्षकांकित पदों में सखीभाव की अष्टकालिक-निकुंजकेलि-सहचरी-सेवा का विधिवत् निरूपण हुआ है । कई पदों में श्रीभट्टअलि, श्रीभट्टभटू नामांकित रहस्यात्मक सखी नाम आये हैं । युगलशतक-आदिवाणीकार श्रीभट्टजी ने निकुंजकेलिरसात्मक पदों में भी अधिकांशतः अपने पुरुषवाचक नाम श्रीभट्ट की ही अभिव्यक्ति की है, श्रीहितु सखी नाम उनके शिष्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी कृत श्रीमहावाणीजी में संलग्न किया गया है । दिव्यक्रीड़ास्थल श्रीवृन्दावन में नित्यनिकुंज केलिबिहार की सहचरी सेवामें युगलसान्निध्य का रसिकवर्य श्रीभट्टदेवाचार्यजी ने सरस प्रतिपादन किया है--

सेऊँ श्रीवृन्दावन विपिन विलास ।
जहाँ युगल मिलि मंगल मूरति, करत निरन्तर वास ॥
प्रेम प्रवाह रसिक जन प्यारे, कबहुँ न छोड़त पास ।
कहा कहौं भाग की, श्रीभट्ट राधाकृष्ण रस चास ॥

ब्राह्ममुहूर्त से शयन तक युगलस्वरूप की दिव्य चेष्टाओं का ध्यान करना, उत्थापन, मंगला-शृङ्गार-राजभोग, निकुंजप्रवेश, शयनादि तक के अवसरों पर श्रीबिहारीबिहारिणीजू के प्रति अनेक सरस-मधुर-भावनात्मक-चिन्तन-चेष्टा करना, प्रतिक्षण-युगलकेलि-अनुभूति करना तथा दम्पतिभावनानुसार उनकी केलिक्रीड़ाओं का तत्परता से विधान करते हुये युगलचरणों के सान्निध्यसुख की परमोपलब्धि से भावाभिभूत होना सहचरी सेवासुख का सार है। श्रीभट्ट ने रसिकभक्तों को यही सेवासुख-उपदिष्ट किया है--

मिलि भोजन श्यामाश्याम करत, कर गरसा हँसत रस बतियाँ करें ।
पीय कहत हितु हाथ जिमाऊँ, इतनों हुँ फल पाऊँ देह धरें ॥

विनय करत भैंननि सौं मोहन, आनन सुधाकर परसिहुरें ।
श्रीभट्ट नेह की घटी अटपटी, सैंन बैंन सौं पैंया परें ॥

अष्टपहर की सहचरी सेवा की भावपूर्ण चेष्टाओं-कार्यकलापों में युगल के प्रति सहचरी हृदय के कोमल-भावपूर्ण मानमनुहार, अनुनयविनय एवं मधुर रासविलासपूर्वक लाडलडावन का परम दिव्यभाव, दुग्धपान करवाने के सेवा पद **पीवौ दोऊ दुग्ध मधुरे भाय - अधिक औट्योनट नटौ ना मेवा मिश्री मिलाय । कनक जटित सुमनि कटोरे प्यारी धेनु दुहाय । बेगि पीवौ बलि कान्ह किशोरी बहुरि जैं हैं सिराय ।** में प्रकट हुआ है ।

"सुरतसुख" साधक की परमभावावस्था है, जहाँ वह दिव्यक्रीड़ास्थल अप्राकृत वृन्दावनधाम में रतिरत श्यामाश्याम की निरन्तर अलौकिक छवि के दर्शन करता हुआ दिव्य रसानन्द की चरमावस्था में पहुँच जाता है - यही सहचरी रसिकों की मधुरभाव की परमोपलब्धि है और यही उनका परमसुख परमानन्द है–

रस की रेलि बेलि अति बाढी ।
दम्पति की हित बावरि विहरति, रहौ सदा मेरे चित चाढी ॥
निरखत रहौं निपट हितकारिणी, पिय प्यारनि गुनगति गाढी ।
जै श्रीभट्ट अति उत्कट संघट, सुख केलि सहेली निरन्तर ठाढी ॥

सहचरियाँ तत्सुखसुखित्व के निष्कामभाव से तटस्थापूर्वक नित्यवृन्दावन के दिव्य कंचनमय-रमणीय क्रीड़ास्थल **निकुंजमहल** में अहर्निश दाम्पत्य-लीलाओं का दिव्यसेवाविधान करती रहती हैं, निकुंजकेलि की साक्षिणी-सहचरियाँ सरस हृदय से नित्यनिकुंज विलास का विधान करती हुई ज्यों ही रसिक रसिकेश्वरी सुरतिरत होते हैं, त्यों ही युगलकेलि को अबाधित एकान्तिकता प्रदान करती हुई निकुंज से बाहर आकर कुंज़रंध्रों से दिव्यविहार की मानसिक रसानुभूति करती है । श्रीभट्ट ने ऐसे नितान्त गुह्य युगल निकुंजकेलिविहार का अनेक पदों में वर्णन किया है, जो निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परागत विशिष्ट सखी भावोपासित निकुंज रसोपासना का प्रबल प्रतिपादन है --

कुंज महल आज मंगल होरी ।
किसलय दल कुसुमनि की सज्जा, तापर बिछई पीत पिछौरी ॥
भये मनोरथ मेरे मन के, सजि दम्पति पौढे इक ठौरी ।
नैंन ओट ह्वै श्रीभट्ट देखत, क्रीड़ा करत किशोर किशोरी ॥

श्रीभट्टदेवाचार्य द्वारा वर्णित दम्पति-विलासपरक निकुंजकेलि उपासना में परमाह्लादिनी रस अधिष्ठात्री श्रीराधाजी का प्राधान्य तथा रसरूप-परमानन्द स्वरूप श्रीकृष्ण द्वारा सर्वेश्वरी परमेश्वरी श्रीराधा का परमाराधन प्रतिपादित हुआ है--**मोहन राधे राधे बोल बोलै । प्रीति रीति रस बस नागरि हरि लियौ प्रेम के मोलै ॥** यही श्रीराधापरक सर्वोच्च भाव प्रदर्शित किया गया है । श्रीराधा श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी अंतरंगभूता आद्याशक्ति-परमेश्वरी होने से उनका सौभाग्य सर्वोपरि है । परमैश्वर्यशालिनी श्रीराधा से आह्लादित श्रीकृष्ण उनकी चरणसेवा में संलग्न रहते हैं ।

प्यारी जू के चरण पलोटत मोहन ।
नील कमल कै दलन लपेटे, अरून कमल दल सोहन ॥
कबहुँक लै लै नैन लगावत, अलि धावत ज्यों गोहन ।
जै श्रीभट्ट छबीली राधे, होत जगे तै छोहन ॥

आदिवाणी युगलशतक के ''उत्सवसुख'' शीर्षांकित पदों में निम्वार्कीय रसोपासना में स्वीकृत उभयरसात्मक व्रजवृन्दावन विहार तथा निकुंज केलिविहार में उभयनिष्ठ होरी-वर्षा-हिंडोरा-रास, दम्पतिराधाकृष्ण का निकुंज केलिपरक विहार, पर्वोत्सव तथा ऋतु विहार के रसलीला वर्णन किये गये हैं। रसाचार्य श्रीभट्ट सहचरी भाव के परमसिद्ध हैं, दम्पति-विलास के वर्षाविहार विधान में उनका परमभावपूर्ण सहचरी हृदय सुरंग चूनरी पहने श्रीराधाजी तथा उपरैंना-सुशोभित-रसरूप परमानन्द स्वरूप परब्रह्म श्रीकृष्ण को वर्षा में भींगते हुए उनके दर्शनानन्द लाभ का मनोरथ कर लेता है--

भीजत कब देखौं इन नैंना ।
स्यामा जू की सुरंग चूनरी, मोहन कौ उपरैंना ॥
जुगल किशोर कुंज तर ठाढे, जतन कियौ कछु मैंना ।
उमगी घटा चहूँ दिस श्रीभट्ट घिरि आई जल सैंना ॥

युगलचरणारविन्दों की महती कृपा से इसी परम दिव्य युगलछवि के दर्शनों का परम सौभाग्य सिद्धरसाचार्य श्रीभट्टजी को तत्क्षण ही फलीभूत हुआ है--**श्रीभट्ट रसिक रसलंपट - हिय सचु पावत** से उनका परम दिव्य मनोरथ सफल हुआ , स्वतः ही प्रतिपादित है--

भीजत कुंजन ते दोउ आवत ।
ज्यों ज्यों बूंद परत चूनरी पैं, त्यौं त्यौं हरि उर लावत ॥
अति गंभीर झीनै मेघन की, द्रुम तर छिन विरमावत ।
जै श्रीभट्ट रसिक रस लंपट, हिलमिल हिय सचुपावत ॥

अस्तु श्रीभट्टदेवाचार्यकृत आदिवाणी युगलशतक उभयात्मक रसोपासना का मूलप्रेरक ग्रन्थ है, तथा उसमें निरूपित नित्यनिकुंज केलिरस बिहारीबिहारिणी जू युगलदम्पति रसरूप प्रियाप्रियतम श्रीराधाकृष्ण की सखीभावोपासित परममधुर भावसमन्वित, निकुंज रसोपासना के रागबद्ध-छन्दात्मक-आलंकारिक-कोमलकान्त मधुर ब्रजभाषा-वेष्टित-अहर्निश-अष्टकालिक-प्रहरात्मक तथा विशिष्ट-पर्व-उत्सव-ऋतुविहार वर्णित युगलकेलि लीला प्रसंग तथा तत्सुख-सुखित्व भावपरक नितान्त-निरपेक्ष-निष्काम युगलसान्निध्य-अभिलषित अनवरत-निकुंजकेलि सेवाविधान क्रम में प्रियाप्रियतम का अनुनयविनय हासपूर्ण लाडलडावन से संलग्न, रसरूप युगल तत्त्व के अनन्त-सौन्दर्य-लावण्य-सौशील्य के रूप ध्यान-गुणात्मक-चिन्तन-मनन-स्मरणपूर्वक कीर्तनादि के रसात्मक सुमधुर भावाप्लावित प्रेमाभक्ति-पदात्मक प्रसंगआदि परवर्ती वाणीकारों के मूल प्रेरक सिद्ध हुये हैं ।

परम रसिकवर्य श्रीहरिप्रिया श्रीहरिव्यासदेवाचार्यकृत श्रीमहावाणी में रसोपासना–

आदिवाणीकार श्रीहितू सखी नामांकित परमरसिकवर्य श्रीभट्टदेवाचार्यजी के पट्टशिष्य, श्रीहरिप्रियासखी-नामांकित परमसिद्धाचार्य रसिकशिरोमणि श्रीहरिव्यासदेवाचार्यकृत निकुंज रसात्मक-मधुर-भक्तिक्षेत्र में विशिष्ट समादृत, श्रीसंयुक्त नामविभूषित, श्रीमहावाणीजी में आद्याचार्य श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा सर्वप्रथम प्रवर्तित, अनादि-वेदान्त-सनातन-परम्परागत 'रसो वै सः' श्रुतिप्रतिपादित, निकुंज केलिरसपरक श्रीराधा-प्राधान्य विशिष्ट-अंतःपुरीय-युगलरसोपासना का महनीय ग्रन्थ है, जहाँ रसरूप-परमानन्दस्वरूप-परात्पर-परब्रह्म-सच्चिदानन्द-सर्वेश्वर श्रीराधारमण श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी अन्तरंगभूता-आद्याशक्ति-प्रेमस्वरूपिणी-निकुंजस्वामिनी-रसअधिष्ठात्री-श्रीकृष्णराधिका श्रीराधिका-प्रधान, निकुंजकेलिरसविधानाधारित -अहर्निश-सखीभावोपासित, दिव्यसुरतिरस युगल की सुरति-रत्यात्मक-दिव्यक्रीड़ाओं की परममधुर-सर्वाङ्गपूर्ण, अत्यन्त-शृंगारिका-परमगुह्य-मधुरोपासना का व्यापक निरूपण हुआ है, जो नितान्त गुह्य-परमगोपनीय-महनीय होने से केवल परमतपोनिष्ठ-परमविरक्त, अविचल-मनसाधनासिद्ध, युगलचरणारविन्द-मकरन्द-सेवापरायण एकनिष्ठ-अनन्याश्रित-अनवरत-रसपिपासु- विशिष्ट द्वादश लक्षणों से विभूषित परमरसिक अधिकारी द्वारा ही नित्यसेवनीय है । इसीलिए श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी ने सिद्धान्तसुख में अनधिकारी-अपरीक्षित विचलितमना-रसिकों से महावाणी तत्त्व-गोपनीय रखना बताया है। श्रीमहावाणीजी रसात्मक-भक्ति की अनुसृति तीक्ष्ण खड्ग धार सदृश अत्यन्त दुर्लभ है। श्रीमहावाणीजी में वर्णित सेवा-उत्साह-सुरत-सहज-सिद्धान्त नामांकित दिव्य पंचसुख परमरसामृतमहौदधि से यत्नपूर्वक निकाले गये पंचरत्न हैं, जिनसे श्रीहरिप्रियापद का आश्रय अविरोध ही प्राप्त हो जाता है

महाबानी जानी जु यह खरी खड्ग की धार । जतन जतन सों राखियो ज्यों पावो सुखसार ॥
दुर्लभ हुँ ते दुरलभ जू सो सुलभ भई तोहि । हित चित हिय नहिं धरहिं तो अहित इष्ट तें होहि ॥
पंच रतन यह दिवि महा काढे सोधि पयोधि । जाकर हरिप्रिया को पावै पद अविरोधि ॥

श्रीमहावाणी के अधिकारी परम रसिक में द्वादश लक्षणों का आचरण नितान्त अपेक्षणीय है-- प्रभु की शरणागति, अन्याश्रयों का परित्याग, निषिद्ध-विहित-कर्मों का त्याग, झूठ-क्रोध-निन्दादि का त्याग, केवल भगवत्प्रसाद का ग्रहण, जीवमात्र पर करुणा, परुषभाषण का त्याग, समय-सदुपयोग, मधुररसचिन्तन, गुरु निर्देशित-मार्गानुसरण तथा हरि-गुरु अभेद की भावना । इन लक्षणों का समागम निम्न दश सोपानों के धीरे-धीरे अवरोहण से प्राप्त होने पर युगलभक्ति रससरिता का अवगाहन सम्भव होता है–

पहले रसिक जन को सेवै, दूजी दया हृदय धरि लेवै ।
तीजी धर्मसुनिष्ठा गुनि है, चौथी कथा अतृप्त ह्वै सुनि है ॥
पंचमी पद पंकज अनुरागै, षष्ठी रूप अधिकता पागै ।
सप्तमी प्रेम हिये विरधावै, अष्टमि रूप ध्यान गुन गावै ॥
नवमी दृढता निश्चय गहिवै, दशमी रस की सरिता बहिवै ॥

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की इस परम गुह्य श्रीमहावाणीजी में प्रियाप्रियतम श्रीराधारमण के नित्यनिकुंज-केलिविहार का परम गोपनीय सैद्धान्तिक चित्रण किया गया है, महावाणीकार ने जिसे-- **निगमागम को सार, तन्त्र को मन्त्र जु भारी** (सि. सु.) कहकर महिमान्वित किया है । सेवासुख, उत्साहसुख, सुरतसुख, सहजसुख, सिद्धान्त सुख नामांकित पांच सुखों में दम्पती के नित्यनिकुंजकेलिविहार, दिव्यकेलिरसधाम श्रीवृन्दावन, रसरूप-परब्रह्म-परमानन्द युगलतत्त्व श्रीराधाकृष्ण तथा नितान्त निष्कामभाव से दम्पती के नित्य केलिविहार की परमगुह्य सखी सहचरी निकुंज-केलिरसोपासना का सैद्धान्तिक एवं पारिभाषिक विवेचन किया गया है । अद्यावधि यही महावाणी निम्बार्कीय निकुंज-रसोपासनात्मक वाणी ग्रन्थों की परम्परा का मूलस्रोत आदर्श रूप अनुकरणीय ग्रन्थ है, श्रीवृन्दावनधामनिष्ठ रसिकजनों में विशिष्ट समादृत होने से इसे आदरसूचक श्री से संयुक्त किया जाता है ।

श्रीमहावाणीजी के निकुंजकेलिविहार में रसरूप-नित्यानन्द-परमानन्दस्वरूप परमरसमय प्रेमानन्द रूपी राधारमण प्रियाप्रियतम दम्पती का विशिष्ट दिव्यक्रीडाविलास वर्णित होने से श्रीराधाकृष्ण का तदनुरूप नामरूपात्मक युगल तत्त्व वर्णित हुआ है, इसीलिए वे यहाँ प्रियाप्रियतम, लाडलीलाल, श्यामाश्याम, मोहनीमोहन, वनाबनी, दूलहदुलहिनी, राधावर-राधावल्लभ, रसिकेश्वर-रसिकेश्वरी, सर्वेश्वर-सर्वेश्वरी, नित्यविहारीबिहारिणी, रसिकबिहारीविहारिणी आदि नामों से वन्दित हुये हैं । निकुंजस्वामिनी, रसअधिष्ठात्री श्रीस्वामिनी जू के रसिकोपासक सखी सहचरी-भावानुसार लाड़ली, अलक लड़ैवी, लड़वन, लाड़रौली, अलबेली आदि नामों से श्रीराधारानी को सम्बोधित किया है, जो सैद्धान्तिक रूप से उनके श्रीमहावाणीवर्णित निम्बार्कीय वर्चस्व के ही परिचायक हैं।

परम गुह्य निम्बार्कीय निकुंज रसोपासनात्मक रहस्यानुसार निकुंजस्वामिनी श्रीराधाजी आदि-अनादि-एकरस, अद्भुत, सर्वदा-सनातन-सच्चिदानन्द-स्वरूप, रसरूप-परब्रह्म-परमानन्द भगवान् श्रीकृष्ण की परमप्रिया आराधिका हैं । युगलस्वरूप में ही उनके उभयरसात्मक रसरूप की पूर्णता होने से भगवान् श्रीकृष्ण सदासर्वदा उन्हीं के अनुरूप परम सौभाग्यशालिनी परम शोभायमान परमाह्लादिनी अन्तरंगभूता-आद्याशक्ति-प्रेमस्वरूपा नित्यकिशोरी वृषभानुनन्दिनी श्रीराधाजी की कृपा-वांछा करते हैं । रसिकों के रसभवन, निकुंज में इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण नित्य राधारमण हैं । महावाणीकार परमरसिकवर्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने श्रीमहावाणी में युगलस्वरूप का यही तात्त्विक निरूपण करते हुये कहा है–

उदधि-महामाधुर्य कैं, रसिक दोऊ रसभौंन ।
सदा सर्वदा एकरस, राजत राधा रौंन ॥ (सि. सु.)

श्रीमहावाणी में दम्पती राधारमण अपने सहज-स्वकीयात्व प्रतिपोषण हेतु एकरस-एकरूप अभिन्न रसतत्त्व होते हुये भी युगलविग्रहात्मक स्वरूप धारण करके दम्पति-विलास का नित्यनूतन रसलीला विहार करते हैं--**सहज स्वकीयानि श्रीपोषक कर्त्ता अमित गुण चंड ब्रह्मंड भर्त्ता । श्रीहरिप्रिया जुगल**

वपुधरि बिहारैं ।। (वही) से यही तथ्य निरूपित हुआ है । युगल का प्रतिपल नित्यनूतन-अविचल-दम्पति-विलास चराचर में प्रतिविम्बित परम रहस्य है । श्रीमहावाणी में युगल के स्वकीयात्व का परिपुष्ट प्रतिपादन सहचरियों द्वारा दिव्यरंगमहल में आयोजित दम्पति के ब्याह, लीला प्रसंगों में हुआ है, बनावनी, दूल्हा-दुल्हिन दम्पती श्रीराधारमण का श्रीमहावाणी वर्णित सांगोपांग ब्याह, बधाई गान, तेल-उबटन, साहिलौ, मंगलाचारिक गीतगार, सुहागरात की सुरतकेलि आदि का व्यापक विधान वर्णित हुआ है--

श्रीराधाकृष्ण बिबाह सुख सरबस मंगल मूल । नित नित रचत सहेलियाँ भरी प्रेम परफूल ।।
भरी प्रेम परफूल सबहित की अलि अलबेलि । ब्याह विनोदनि सुख रच्यौ हिलिमिलि सबै सहेलि।।
सबै सहेलि सहेलियाँ राची रंग रसाल । सर्वस तिनकैं संपति दंपति पति प्रतिपाल ।।
दंपति संपति सहज सुख दुलहिन दूलह लाल । तदपि ब्याह बिरचहिं बिबिध विनोदनि बाल ।।

दोऊ लालन ब्याह लड़ाऔ री, छबि निरखत नैन सिरावौ री ।
फूलन कौ मंडप छावौरी सुचि सरस सथंभ सजावौ री ।।
रंगभीने कौं बना बनावौ री, सब मंगल मोद बढावौ री ।
सुख तेल फुलेल लगावौ री, बहु बाजै विविध बजावौ री ।।
उबटना अंग उबटावौ री, केसरि कैं नीर न्हावौ री ।
अंगनि अंगनि सिरी चढावौ री, जु सहाने पट पहिरावौ री ।।
रोरी को तिलक रचावौ री, मौतिन कैं अछित चढावौ री ।
सेहरा सीस बधावौ री, हंसि हंसि बीरी जु खुवावौ री ।।

सेज पर बाढ्यौ अति रति रंग । दूलह दुलहिनी अलक लड़ीलै अलबेलै अंग अंग ।।
नित्य नवीन किसोर लाल दोउ नित्य नवीन अभंग ।
विलसत बिबिध विलास बितन के श्रीहरिप्रियाजू के संग ।।

सखी-सहचरी भावोपासित निकुंज केलिरस-रसिकों के युगलविहारी दम्पती श्रीराधाकृष्ण में तात्त्विक अभेद हैं, वे सदा एकरस-अभिन्न हैं, अप्राकृत लीलावतारी रसरूप हैं, जो सेवापरायण सहचरियों-रसिकजनों की रसाभिलषित-निष्काम परमानन्द-सुखानुभूति की कामना से उन्हें नित्यनिकुंज-विलास का सान्निध्य सुलभ कराने हेतु नित्यनूतनवयस में दिव्यक्रीड़ाविलास विधान में युगलरसविग्रहात्मक द्वैत धारण करते हैं, उनके दाम्पत्य का यही रहस्य है--

सदा सर्वदा जुगल इक, एक जुगल तन धाम ।
आनन्द अरु आह्लाद मिलि, विलसत हैं द्वै नाम ।। (सि. सु.)

महावाणी में ऐसे सदा-सर्वदा-एकरस-अभिन्न, लीलामय-उभयात्मक-द्वैताद्वैत-दिव्यदम्पती-श्रीराधाकृष्ण के कोटिकंदर्प-रतिदिव्य-विमोहक-निखिलब्रह्मांड-विमोहन, अनन्तानन्त-सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य परिपूर्ण अनन्त सद्गुणालंकृत रसरूपात्मक-परमानन्दमय दिव्य-स्वरूप में विलक्षण समरूपता-अनुरूपता प्रतिपादित हुई है--

(१) बनी भांवती जोरी नवलकिशोरकिशोरी ।

(२) बने दोउ रसिक बिहारी बिहारनि रूप भरे गुण भरे ।

(३) नखशिख सुन्दर बरन वर, अंग अंग आभर्न ।
जोरी स्यामास्याम की, बनी नैंन मन हर्न ॥ (सेवा सुख)

नित्यकिशोरी किशोर दोउ-नित्यकामिनी कंत-नित विलासविलसत दोउ नित नव भाव अनंत।
(सेवासुख)

ऐसे निकुंजविहारिविहारिणीजी के निम्बार्क सम्प्रदायी विशिष्ट रसोपासना के उपास्य-युगल तत्त्व श्रीराधाकृष्ण महावाणी में सर्वत्र प्रतिपादित हुए हैं ।

अनादि वैदिक सनातन निम्बार्क सम्प्रदाय परम्परागत 'रसो वै सः' श्रुतिप्रतिपादित निकुंज केलिविहारीविहारिणी श्रीराधाकृष्ण का दिव्यरसरूपात्मक-निकुंज-केलि-रसात्मक-प्रेमात्मक-पराभक्तिप्रदायक परम सुन्दर परम मधुर परस्पर समरूप अनुरूप दिव्यरसलीलात्मक-परिभाषित केलिरसविभूषित-दिव्यकेलिरसावेष्टित युगलरूप रसोपासनीय है, उनका निम्न रसोपासनात्मक नाम रूपात्मक सद्गुणालंकृत रूपध्यान नाम संकीर्तन-गुण कथन नित्यस्मरणीय-वन्दनीय तथा मन में अवधारणीय है--

नाम संकीर्तन

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्री राधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्री कृष्ण ॥
श्यामा गोरी नित्य किशोरी, प्रीतम जोरी श्री राधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो, गुण-गर्वीलो श्री कृष्ण ॥
रासविहारिणी रसविस्तारिणी प्रिय उरधारिणी श्रीराधे ।
नव नवरंगी, नवल त्रिभंगी श्याम सु अङ्गी श्रीकृष्ण ।।
प्राण प्रियारी, रूप उजारी, अति सुकुमारी श्री राधे ।
मैंन मनोहर महा मोदकर सुन्दर वरतर श्री कृष्ण ॥
शोभा श्रेणी मोभा मैंनी कोकिल वैंनी श्री राधे ।
कीरतिवंता, कामिनिकंता, श्रीभगवन्ता श्री कृष्ण ॥
चन्दा वदनी, कुन्दा रदनी, शोभा सदनी श्री राधे ।
परम उदारा, प्रभा अपारा, अति सुकुमारा श्री कृष्ण ॥
हंसा गमनी, राजत रमनी, क्रीडा कवनी श्री राधे ।
रूप रसाला, नयन विशाला, परम कृपाला श्री कृष्ण ॥
कंचन वेली, रति रस रेली अति अलवेली श्री राधे ।
सब सुख सागर, सब गुण आगर, रूप उजागर श्री कृष्ण ॥

रमणी रम्या तरुतरतम्या गुण आगम्या श्री राधे ।
धाम निवासी, प्रभा प्रकासी, सहज सुहासी श्री कृष्ण ॥
शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादिनि उर उन्मादिनि श्रीराधे ।
अङ्ग अङ्ग टौना, सरस सलौना, सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ॥
राधानामिनि गुणअभिरामिनि हरिप्रियास्वामिनि श्रीराधे ।
हरे हरे हरि, हरे हरे हरि, हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥ (सेवासुख)

निम्बार्क सम्प्रदाय-परम्परागत श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी ने युगलतत्त्व में श्रीराधारानी का प्राधान्य प्रतिपादित किया है । श्रीराधा रसरूप-परमानन्द स्वरूप श्रीकृष्ण की अंतरंगभूता आद्यशक्ति परमाह्लादिनी-रसअधिष्ठात्री-निकुंजस्वामिनी-वृन्दावनेश्वरी होने से श्रीकृष्ण की परमाराध्या है, रसरूप की पूर्णता के लिए वे श्रीराधा की कृपावांछा करते हैं । महावाणीजी में सर्वत्र श्रीराधाजी का सर्वोच्च रसोपासनात्मक वर्चस्व प्रतिपादित हुआ है, महावाणी पराभक्ति प्रदायिनी श्रीराधाजी के गुणगान से आप्लावित है, श्रीराधा ही महावाणीजी का प्राणतत्त्व-मूलाधार रहस्य है–

पराभक्ति रति वर्द्धनी, स्यामा सब सुख दैंनि ।
रसिक मुकुटमनि राधिके, जयनवनीरज नैंनि ॥ (सेवासुख)
जयति जय राधा रसिकमनि मुकुटमनि हरनी त्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥ (वही)

कृष्णवल्लभा लाडिली, राधाबल्लभ लाल ।
बसहुँ निरन्तर हीय में, आनंद रूप रसाल ॥ (वही)

परमानन्द स्वरूप अखिल व्रह्माण्ड-चराचर विमोहन श्रीकृष्ण की मोहनी राधाजी में पराभक्ति है- **-मोहन-मोहनी आधीन । रहैं अति आसक्त अनुदिन कह गति जल मीन ॥ नित्य नवतन नेह परस्पर रसलीन । हितू प्रिया रसिकन हेतु बिदितन कीन ॥** (सहज सुख)

अस्तु रसिकों के युगल, सदासनातन एकरस हैं, जिनकी महिमा निगमादि से परे है । उनका नित्य केलिस्थल अप्राकृत वृन्दावन धाम है, वह श्रीधाम नित्यविहारीविहारिणी जू का दिव्य-रंगमहल है, जहाँ निकुंजस्वामिनी श्रीराधाजी की विशिष्ट अनुचरी-सखी-सहचरियाँ ही एकमात्र श्रीराधाजी की कृपा से सेवा सान्निध्य प्राप्त करती हैं । गोलोक-वैकुंठ से भी पावन तथा परम गुह्य दिव्य-क्रीड़ा स्थल है, यही रससिद्धों-रसोपासनात्मक-योगियों की सर्वोच्च दुर्लभ योगपीठ है । यहाँ सखी भावोपासित सहचरियों द्वारा सेवा सम्पादित-दम्पती-श्रीराधाकृष्ण का अहर्निश-प्रतिपल अबाधित निकुंजकेलि-विहार होता रहता है, ऐसे श्रीधाम-अवस्थित अलौकिक दिव्यस्थल में स्वामिनी श्रीराधाजी का ही एकछत्र राज है, यहीं सहचरियों की तटस्थसुख-अभिलषित-सुखानुभूति कुंजरन्ध्रों से साधित होती है, अतः श्रीमहावाणी में परम्परागत-धामनिष्ठा प्रमुख रूप से प्रतिपादित है--

जय जय वृन्दावन रजधानी ।
जहाँ विराजत मोहन राजा श्रीराधा सी रानी ॥
सदा सनातन एकरस जोरी महिमानिगमन जानी ।
श्रीहितूप्रिया निज दासी रहती सदा अयवानी ॥ (सहजसुख)

जय वृन्दावन धाम सब जन मन पूरन काम ।
सुधर सहेलिन संग रंग बिहरें स्यामा स्याम ॥ (उत्साहसुख)

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित सहस्राधिक-सखी-सहचरियों द्वारा परिसेवित श्रीराधाजी प्राधान्य अंतःपुरीय दम्पतिपरक युगलोपासना श्रीमहावाणीजी के सेवासुख-सुरतसुख में महनीय रूप से निरूपित हुई है । नवनव-लता-द्रुमवेलि आच्छादित, नवनवपल्लव-पवन सुरभित, दुग्ध-धवल-कुसुमित सुमधुर-पक्षी कलरव-स्वर संपूरित, परमरसविस्तारिणी वलयाकार श्रीयमुना महारानीजी के दिव्य क्रोड़ में अवस्थित, दिव्य फूलमहल-सदृश्य रंगमहल में लीलाविलास एवं युगलप्रीति पोषण के समस्त विधान नित्यनूतन निकुंज में समुपलब्ध हैं । ऐसे अप्राकृत परमदिव्य निकुंज-महल में सखीभावोपासिक सहचरियों के अनुनयविनय लाडलडावन-पूर्वक दिव्य-भाव से सुनियोजित सुमनसेज पर अखिल रसामृतसिन्धु रसरूप परमानन्द-सकल-सौंदर्यनिकेतन रसिकेश्वर-रसिकेश्वरी-विहारीविहारिणी जू का निरवधि-नित्यविहार संचरित होता है तथा सखी-सहचरी भक्त लता ओट-कुंजरंध्रों से इसी ऐकान्तिक दाम्पत्य परक प्रियाप्रियतम की कामविमोहक निभृत-दिव्यलीला का अभिलषित-उमंग से दर्शन करते हुए रसनिमग्न हो जाती हैं--

बिहरत सुमन सेज पर दोऊ ।
अलबेले आनन्द की मूरति, और तहाँ नहिं कोऊ ॥
प्यारी के वदनारविन्द की, लेत बलैया लाल ।
पुनि पुनि परम प्रसंसत प्रीतम, प्रिया प्रेम प्रतिपाल ॥
भरि अंकवारि कंवारि कुंवर वर, करत विहार विनोद ।
मदनकेलि रसमत्त मगन भये, मन न समावत मोद ॥
नेति नेति वचनामृत सुनि सुनि, पिय हिय बढत मनोज ।
त्यों त्यों अति रनधीर मिलावत, अंसन अरुन सरोज ॥
नूपुर मुरवर किंकिनी को अति, होत रुनझुन राव ।
अमित अनंगन के अंगन में, उपजत अगनित भाव ॥
सुख सरसावत रस बरसावत, रुचि तरंग नहिं पार ।
श्रीहरिप्रिया निजदासी निरखत, लता ओट निखार ॥ (सेवासुख)
बिलसत दोऊ लाडिले मिलि मृदु रसरंग बिहार हो ।
सहज स्वरूप महल मोहन महासुभग-सेज सुखसार हो ॥

जाचत जतन रतन राचन रति करि करि बहु मनुहारि हो ।
भरत अंक अनुसरत लियें रुख सनमुख श्रीसुकुंवारि हो ॥

तृसकृत होत तृपा नैंनन की पुरवत उर अभिलाष हो ।
निरखि निरन्तर श्रीहरिप्रिया कौ निरवधि नित्यविलास ॥ (सुरतसुख)

सुरति सुख प्रसंग में दिव्य-प्रेमपोषिता-रतिरसविधायिनी-परमप्रीतिप्रदायिनी-परमाह्लादिनी-दिव्यरतिसुख-दायिनी लाडली-अलबेली श्रीकृष्णवल्लभा श्रीराधा का दिव्य परममधुर-वर्चस्व ही रसिकों का दर्शनीय-चिन्तनीय परमानन्द-सुख है--

प्रानप्रिया सुखदा सदा, श्रीस्यामा सुकुंवारि ।
राधा लाड गहेलड़ी, अलबेलीं रिझवारि ॥
अहो बलि लाडगहेलडी राधे अलबेलि रिझवारि ।
श्रीस्यामा अभिरामा रामा सुख धामा सुकुंवारि ॥
प्रान प्रीतमा प्रिया प्रेयसी प्रेमा परम उदारि ।
श्रीहरिप्रिया सलोनी सुन्दरि साहिबनी सिरदारि ॥ (वही)

सहचरी-भक्तों की स्वामिनी श्रीराधा हैं, वे ही उनकी सर्वेश्वरी-परमेश्वरी-इष्टाराध्या है । दाम्पत्य परक युगलतत्त्व में उन्हें स्वामिनी श्रीराधा से ही विशिष्ट अनुरक्ति है, वे उनकी ही अनुचरियाँ हैं, वे उन्हीं की कृपाकांक्षिणी हैं क्योंकि उन्हीं के कृपाकटाक्ष से उन्हें निकुंज प्रवेशपूर्वक सेवासान्निध्य-सुख मिला है। महावाणीजी में श्रीराधिकाजी का इष्टाराधन इसी भाव पर आधारित है । श्रीकृष्ण तो यहाँ श्रीराधाजी के क्रोड़ में रसनिमग्न होने से उन्हीं के वशीभूत है तथा वे अपनी ही अनुरूपा-वामांगी-आह्लादिनी में नित्य रमण करते हैं । अतः सहचरी रसिकोपासक श्रीराधा में ही श्रीराधावल्लभ रसरूप श्रीकृष्ण के दर्शन करते हैं, इसीलिए सहचरियों को श्रीराधाजी की अहर्निश सेवा ही भाती है, श्रीहरिप्रियाजी ने सर्वत्र परमाराधिका श्रीराधाजी से ही शपथपूर्वक अनवरत पराभक्ति की कृपाकांक्षा आश्वासन निवेदित किया है--

मोहि कृपा करि दीजिए अंग-संग की सेवा ।
अहो बिहारिनी लाडली मेरे तुम देवा ॥
या अनन्य व्रत-पोत के हौ तुम ही खेवा ।
श्रीहरिप्रिया जु सो सौंह दे पूछो किनि भेवा ॥ (सुरतसुख)

एक मैं कृपा सुदृष्टि चहौं ।
सौंह तिहारी मोहिं अहो जिय, जो मैं राखि कहौं ॥
जब तुम चितवत यो तन के तन, तब सब सुखहिं लहौं ॥ (सहजसुख)

अविचल-अनवरत रूप से प्रियाप्रियतम के महल की टहल ही सहचरियों का सर्वस्व-स्वसुख है। इसी एकमात्र अंतरंग अभिलाषा की पूर्ति हेतु वे श्रीराधा स्वामिनी से ही विनय करती है–

जो तुम पुरवहौ मनकाम ।
तो मैं मांगत यही निसदिन, छिन छिन न बिसरौं नाम ॥
रहौं टहलनी महल में ह्वै, निरखि छबि अभिराम ।
श्रीहरिप्रिया हित बात सुनि सुनि, धरौं निज हिय धाम ॥ (सहजसुख)

अस्तु, रसरूप-परमानन्द स्वरूप श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी-परमाधार-प्रेयसी निकुंजविहारिणी श्रीस्वामिनी श्रीराधा ही सहचरियों की जीवनाधार है जिनकी नामभक्तिपूर्वक अनन्यभावेन चरणाश्रित भक्ति ही उनकी प्राणपोषक इष्ट उपासना है, महावाणी निकुंजसेवा का यही रहस्य है--

बिहारिनी जीवनि मेरी हो ।
सदा-प्रान प्रतिपल हौं बलिजाऊँ तेरी हो ॥
परमाधार प्रेयसी स्यामा सहजस्वरूपा एरी हो ।
श्रीहरिप्रिया आस अवलंबनि हौ पद केरी हो ॥ (वही)

श्रीमहावाणीजी के सेवा सुख में ब्राह्ममुहूर्त से मध्यरात्रि-शयनपर्यन्त की निकुंज सेवा का निरूपण हुआ है। सहचरियाँ प्रातः ही निकुंज प्रवेश कर सहज भाव से प्रियाप्रियतम को दिव्य सुभग-सेज से जगाती है, विविध भाव-परक अनुनय विनय से लाडलीलाल को लडाती हैं । सुरतसमर के रतिचिह्नों को इंगित कर मुखशोधन कराती हैं, तदनन्तर स्नान शृंगार का उपक्रम करती हैं । इसी प्रकार आरती-भोग, अचवन-ताम्बूल-अर्पण आदि की सेवाएँ सम्पादित करती हैं । यह सेवा सम्पादन स्वसुख कामना से अछूता-तटस्थ-निष्कामभाव से तत्परता पूर्वक किया जाता है । विशिष्ट अवसरों पर दम्पती की सहजभावनाओं-चेष्टाओं की अनुभूति से उनकी दिव्य क्रीड़ाओं का विधान करती हुई अनवरत सान्निध्य सुख की आनन्दानुभूति करती हैं । अष्टकालिक प्रहरात्मक सहचरी सेवा का सुखद पल दर्शनीय है–

रति रस चिह्न संवारहीं, सहचरि निजपट छोर ।
ज्यों ज्यों सकुचत जात हैं, नागर नवल किशोर ॥
लाई कुंज सनान में, निज सहचरि समुझाय ।
पहिराये पट पोंछि अंग, यथारीति अन्हवाय ॥
नखशिख सजि सिंगार विराजे, लै दरपन दिखरावती सुन्दरि, कैसे आज उदार विराजे ॥
देखि देखि सोभा अंग अंग की, उमंगे उरनि अपार विराजे ।
श्रीहरिप्रिया हितू जन जिय की, जीवनि प्रान अधार बिराजे ॥ (वही)

युगलदम्पती सहचरियों को अपनी दिव्य-दाम्पत्य-रसलीलाओं का सुखानुभव कराने हेतु, अत्यन्त

सहज-भाव से, नित्यप्रति विविध प्रकारेण दाम्पत्य-विलास करते हैं, निज परिकर में सेवा परायण निजी सहचरियाँ युगल की सभी सहज सुलभ-मधुर-चेष्टाओं का अंतरंग आनन्द लेती हैं, छप्पन व्यंजनों के राजभोग का सेवा क्रम दर्शनीय है--

भोजन करत लाडलीलाल ।
रतन जटित कंचन चौकी पर, आनि धर्यो सहचरी भरि थाल ॥
छप्पन भोग छत्तीसौं षटरस, लेह्य चोष्य भछि भोज्य रसाल ।
जेंवत जांहि सराहि सरस अति, परसत रंग रंगीली बाल ॥
जे जे बिंजन कर पलवनि ते, छुवति छबीली छई छबि जाल ।
ते ते बिंजन ताहि ठौर ते, लेत छबीलो होत निहाल ॥
इहि विधि राजभोग आरोगत, सुख संभोगत नैन विशाल ।
श्रीहरिप्रिया परस्पर दोऊ, परम प्रवीन प्रेम प्रति पाल ॥ (उत्साहसुख)

इसी प्रकार प्रातः से शयन तक मानसी, सहचरि-सेवा का क्रम बना रहता है । मध्यरात्रि-शयन-सेवा क्रम में ज्यों ही युगल दिव्य सेज पर सुरतरत होते हैं, सखी सहचरियाँ निकुंज से बाहर आकर उनकी दिव्य रसक्रीड़ा को निर्बाध कर देती हैं तथा कुंज रंध्रों से सुरति समर की सुखानुभूति करती हैं, युगल के दिव्य काम उत्प्रेरणार्थ सरस गीत गाती हैं, सुरति समरान्त स्थिति में युगल को रतिश्रम से थककर सोया जान धीरे-धीरे बतराती हैं–

हितू सखी की हितवाई ।
पाँय पलोटि हरे हरे हरके, पट दे झट दे बाहरि आई ॥
रंध्रनि मग लगि रूप माधुरी, अवलोकति सहचरि समुदाई ।
श्रीहरिप्रिया की सहज सुरति रति, गान करति मधुरे मनभाई ॥ (सुरतसुख)
अछन अछन उच्चरहु री, ज्यों ए परैं न जागि ।
श्रीहरिप्रिया सुखसेज पर, सोये सुख श्रम पागि ॥ (सुरतसुख)

उत्साह सुख में वसन्त होरी, शरदरास, फाग, हिंडोरे इत्यादिक अवसरों पर की जाने वाली सहचरी सेवा वर्णित है । सहचरियाँ यहाँ भी अवसर विशेष के युगल केलिविधान का सरस-सुमधुर-सुन्दर आयोजन करती हुई निकुंजलीला आस्वादन करती हैं, ऋतु-पर्व-त्यौहार सम्बन्धित ये सभी आयोजनों के विधान, उनकी झांकियों और तदनुरूप युगलरसविलास सभी अलौकिक हैं

महावाणीजी व्रजभाषा कलेवर में विरचित, कोमलकान्त पदावली में सुरागबद्ध गेय है । व्रजभाषा का संस्कृतनिष्ठ-परिमार्जन-उच्चकाव्यात्मक-अलंकरण तथा उपमा-रूपक-अनुप्रास की सहज चमत्कृति, वैचित्र्यपूर्ण वक्रोक्ति अद्भुत रूप से प्रकाशित है । इस प्रकार महावाणीजी परमसुन्दर परम मधुर पराभक्तिरसार्णव है ।

शिवाजी नगर, मदनगंज-किशनगढ जि. अजमेर

निम्बार्क सम्प्रदाय की माधुर्योपासना

–डा. सुनीता अस्थाना

कृष्ण भक्ति के विभिन्न सम्प्रदाय हैं, जिनमें निम्बार्क सम्प्रदाय सर्वतःप्राचीन है । भागवत धर्म के प्रचलन का अभाव देखकर संसारीजनों के उद्धार के उपाय अपने स्वरूप ज्ञान और भक्ति का प्रचार करने के लिए तथा अपने दर्शनार्थ चातकवत् उत्कंठित अनन्याश्रित, प्रेमी भक्तों को सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य आदि से परिपूर्ण अपनी छवि के दर्शन, मधुर आलाप, मधुर लीला आदि द्वारा अपनी मनोवांछा पूर्ण करने के लिए अपने समग्र गुण और शक्ति सहित भूभार हरण करने के बहाने श्रीकृष्ण प्रकट हुए । निम्बार्क सम्प्रदाय से पूर्व भी श्रीकृष्ण भक्ति का प्रचलन था, ऐसा श्रीमद्भागवत आदि कृष्ण लीलापरक ग्रन्थों के अनुशीलन से ज्ञात होता है, किन्तु इसे साम्प्रदायिक रूप प्रदान करने का श्रेय सर्वप्रथम आचार्य निम्बार्क को ही है। अतएव निम्बार्क सम्प्रदाय का कृष्ण भक्ति सम्प्रदायों में अत्यधिक महत्त्व है ।

भक्तों के लिए भगवान् श्रीकृष्ण की चरण सेवा को छोड़कर अन्य कोई आश्रय नहीं । श्रीकृष्ण ही साक्षात् परमेश्वर हैं, जिनकी वन्दना ब्रह्मा, शिव आदि देवता किया करते हैं । श्रीकृष्ण की शक्तियाँ अचिन्तनीय है, उनका प्रभाव अगम्य है । भक्तों को आनन्दित करने के लिए वे मनोहर स्वरूप में प्रकट होते हैं । ऐसे श्रीकृष्ण प्रभु की प्राप्ति का साधन है भक्ति, जो पांच भावों से पूर्ण मानी जाती है--शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य, तथा उज्ज्वल । आचार्य निम्बार्क ने अपनी उपासना की चर्चा विस्तार से अपने किसी ग्रन्थ में नहीं की । श्रीभट्टदेवाचार्यजी तक समस्त निम्बार्कीय आचार्यों ने अपने उपासना तत्त्व का सैद्धान्तिक विवेचन एवं उसकी भावाभिव्यक्ति देववाणी के द्वारा ही की थी । श्रीभट्ट ने व्रजभाषा के माध्यम से युगलोपासना की अभिव्यक्ति कर न केवल स्वसम्प्रदाय में नयी परम्परा को प्रवर्तित किया, वरन् आपने हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य में भी माधुर्योपासना का सूत्रपात किया! अतः आदि ग्रन्थ किंवा ''आदिवाणी'' से प्रमाणित होता है कि माधुर्योपासना में श्रीराधाकृष्ण युगलोपासना अभिव्यक्त हुई है ।

युगलशतक में सहचरी भाव-समन्वित निम्बार्कीय रसोपासना व्यक्त हुई है, जो परम्परागत है । निम्बार्कीय रसिक भक्तों ने श्रीराधिकाजी को अपनी परम आराध्या माना है । निम्बार्क स्वामी को भी जिस रस की उपासना आदरणीय थी वह दशश्लोकी के इस श्लोक में वर्णित है––

अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूप-सौभगाम् ।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम् ॥

इस श्लोक में कृष्ण के उस रूप के स्मरण एवं ध्यान के लिए कहा गया है, जिनके वाम भाग में श्रीवृषभानुजा (श्रीराधा) विराजमान हैं और उनकी सेवा में सहस्रों सखियां विभिन्न सेवा उपकरणों को लिए तत्पर है । यह श्लोक माधुर्योपासना के स्वरूप को अधिक आकृति नहीं देता, किन्तु माधुर्योपासना का बीजारोपण इसी श्लोक से हुआ ।

श्रीराधाकृष्ण का विहार मधुर होने के कारण नित्य नवीन सुखद है । नित्य विहार श्रीराधाकृष्ण की अनन्य आनन्दमयी अलौकिक सुख पूर्ण सतत शाश्वत रति क्रीड़ा है, जो नित्य वृन्दावन धाम की दिव्य कंचनमय भूमि विमल वृक्षों से आच्छादित सुरङ्ग पत्र, पुष्प, फल परिवेष्टित कंकनाकार यमुना-कूल वर्तिनी सुरभित निकुञ्जों में अनवरत रूप से चलती रहती है । इसमें कोई आन्तरिक अथवा बाह्य विक्षेप नहीं होता । यह सभी वेद तन्त्रों का मनोहर मन्त्र है । आनन्द कल्याण का साधन सहचरी रूप जीवात्माएँ निकुंजरन्ध्रों से इस नित्य विहार का दर्शन करती है । जो श्यामाश्याम के अप्राकृत प्रेम का परिणाम है । सखियों के लिए श्रीराधामाधव का सान्निध्य अनुज्ञापित है । सखियां अपने-अपने भावानुसार सेवा में निरत रह तत्सुखी भाव से वे श्रीराधामाधव के आनन्द में ही अपने आनन्द का अनुभव करती हैं ।

श्रीभट्टजी ने राधाकृष्ण के विहार की सभी माधुर्य लीलाओं का बड़ा सरस वर्णन किया है यथा युगलकिशोर का वन विहार, जल विहार, भोजन, हिंडोला, मान, सुरत आदि झूलन के साथ तदनुकूल प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण भी मार्मिक रूप से हुआ है । इस प्रकार युगलशतक माधुर्य लीलाओं से ओत-प्रोत है । इनमें श्रीभट्टजी की भक्ति की तीव्रता, माधुर्य भाव की स्पष्टता भावुक रसिकजनों को अपने प्रकाश से देदीप्यमान करती रहेगी । इतना ही नहीं, निम्बार्क सम्प्रदाय की माधुर्य उपासना की दिशा में जिन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है, वे है– श्रीहरिव्यासदेव, स्वामी हरिदास, रूपरसिकदेव, विहारिनदेव।

रसोपासना और उत्सव प्रणाली में रासलीलानुकरण का प्रमुख स्थान है । श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध-रासपंचाध्यायी में रास का वर्णन उसकी प्रामाणिकता दर्शाता है । निम्बार्क सम्प्रदाय में अभिनयात्मक रास का सर्वप्रथम उल्लेख स्वामी हरिदासजी के शिष्य बिट्ठल विपुलदेवजी के चरित्र में मिलता है ।

सेव्य हमारे श्रीपिय प्यारे, वृन्दाबिपिन बिलासी -- पद में श्रीभट्टजी सन्त मण्डली के समक्ष अपने उपासना सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि प्रिया-प्रियतम दोनों ही हमारे सेव्य हैं, जो वृन्दावन में नित्य विलास करते हैं । वृन्दाविपिन में इस मधुर जोड़ी के दर्शन कर रसिकजनों के मन मयूर मत्त हो जाते हैं । सर्वोपरि यह विलास सखीभावोपासक के लिए गम्य है । रसोपासना का सर्वस्व ही माधुर्य है। माधुर्योपासना से सम्बन्धित नागरिदासजी ने लिखा है कि–

वृन्दावन रस में पगे जीतयो अजित सुभाव । सात गाँठ कोपीन कै, गनै न रानाराव ॥
गनै न रानाराव, भाव चित रहै महाभरि । लखै दीन तैं दीन, लीन ह्वै परत पगनि ढरि ॥
अहा अनोखी रीति कहा, कहाँ रहत रहति तन । हवै चकोर ससि बदन, जुगल निरखत वृन्दावन ॥

विशुद्ध प्रेम-पथ के पथिक ही तत्सुखसुखी रस का आस्वादन करने में समर्थ हो सकते हैं । श्रीराधाकृष्ण रस के सागर हैं । इस प्रेम-राह का विरले पथिक ही अनुसरण कर पाते हैं । व्रजरस सरिता में अवगाहन करने वाले भावराज्य में निवास करने वाले भावुक रसिकजनों ने ब्रह्म का वेद और पुराणों की ऋचाओं में अन्वेषण किया पर वह कहीं भी प्राप्त नहीं हुआ । अन्वेषण करते-करते वे उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ ब्रह्म भी स्वयं सेवा का अवसर पाना चाहता है, किन्तु प्रवेश करने के लिए उसे भी आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है । तब जाकर कदाचित् उसे सेवा का अवसर मिल पाता है । तत्पश्चात् सेवा-कार्य एवं रस में वह इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे अपने ब्रह्मत्व का भी आभास नहीं रहता–

ब्रह्म में ढूँढ्यौ पुराननि गाननि, वेद रिचा सुनि चौगुने चापन ।
देख्यौ सुन्यौ कबहु न कितै, वहह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन ॥
टेरत हेरत हारि पर्‌यौ, रसखानि, बतायौ न लोग लुगायन ।
देख्यौ दुर्‌यौ वह कुंज कुटीर में, बैठ्यौ पलोटत राधिका पायन ॥

श्रीभट्टजी चाहते हैं कि मन की अनुरक्ति भली भांति बनी रहे, क्योंकि रसिकजन इसी रस सागर में निरन्तर निमग्न रहते हैं । वे सदैव वामांग में विराजित श्रीकृष्ण के साथ राधिका रानी की छवि को अपने नेत्र पुटों से पान कर जाना ही अपना नियम मानते हैं । प्रिया-प्रियतम का रूप लावण्य वर्णनातीत है । श्रीयुगलकिशोर मंगल के भी मंगल हैं । वे युगल होते हुए भी तत्त्वतः एक ही है । एक रसता की स्थिति में भी ये रसिकजनों के लिए आस्वाद्य है । श्रीश्यामाश्याम का यशगुणानुवाद भी परम मंगलमय है । सहचरी भी मंगलमय दिखाई देती है। श्रीभट्टजी उपास्योपासक उभयरूपिणी भाव रखते हैं । उपास्यार्थ में श्रीराधा श्रीकृष्ण की आस्वाद्य हैं एवं श्रीकृष्ण श्रीराधा के। दोनों ही प्रेमरस में प्रवाहित हैं। वे दोनों तत्सुख के लिए निरन्तर रससिक्तावस्था में निरत रहते हैं । वे अपृथक् सिद्ध हैं । नित्य है उनकी परस्पर दिव्य प्रेम केलि।

भगवान् स्वयं रसस्वरूप हैं यह प्रेम लक्षणा भक्ति ही उनकी रसमय उपासना है । इसमें ऐसा अपूर्व आस्वादन है, जिसकी समानता ब्रह्मानन्द भी नहीं कर सकते । श्रीराधाकृष्ण दोनों स्वरूपतः रससिन्धु हैं, जिनकी रसमयी विहार लीलाएँ अनवरत रूप से चलती रहती है । तत्त्वतः दोनों अभिन्न हैं ।

नित्य विहार में प्रेम क्रीड़ा का मूल प्रेरक तत्त्व है । अतः साधक नित्य विहार के ध्यान मात्र से मधुर रस की अनुभूति करने लगता है । इस युगल छवि पर रसिक भक्त अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहता है ।

लोक में विरति एवं रसिक जनों का सम्पर्क दोनों ही अत्यन्त दुर्लभ है । जिस भाग्यशाली ने अहंता-ममता दोनों का परित्याग कर कलिन्द नन्दिनी के तट पर वंशीवट की सुखद छाया में अपना निवास बनाया हो तथा प्रेम परिपूर्ण हृदय से कुञ्ज केलि के मधुर-रस के आस्वादन का निश्चय कर लिया हो, वह इस दिव्य आनन्द को प्राप्त हो जाता है और यह सहचरी भाव से ही सम्भव है । सत्संग प्रभु प्रेमियों का एवं प्रभु लीला का गान करने वाला रसिक ही एकान्त मधुर रस का आस्वादन कर पाता है ।

हरिदासन को संग करे हरि लीला गावै । परमकांत एकांत भगति रस को फल पावै ॥

(नन्ददास)

वृषभानुनन्दिनी के साथ विहार करने वाले नन्दनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र ही रसिकजनों के सार सर्वस्व हैं । भक्तवर प्रतिक्षण प्रियाप्रियतम का विलास, हुलास का दर्शन करते रहें । निम्बार्कीय रसिक सन्त श्रीराधामाधव की माधुर्योपासना द्वारा अपने जीवन को धन्य कर श्रीयुगल छवि में समासीन हो गये । उनके द्वारा निर्दिष्ट माधुर्य रसोपासना की अविरल धारा प्रवाहित हो रही है ।

एम. ए. (चतुष्ट्य) पी-एच. डी., बी. एड., संगीत विशारद,
वृन्दावन (उ. प्र.)

श्री "श्रीजी" अलंकरण कब और कैसे ?

–'चिन्तामणि' ज्ञानगुदड़ी,

मरुभूमि जयपुर नरेश के निवास में एक दिन एक चमत्कारिक घटना घटती है । समय था सम्वत् १८१४ से १८४१ के मध्य का, कोई अपूर्व आध्यात्मिक दिन एवं क्षण । उस समय निम्बार्काचार्य पीठाधिपति आचार्यशिरोमणि श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य आचार्यपीठ पुष्कर क्षेत्र स्थित निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद पर विराजमान थे । आपके विषय में पण्डित मण्डनभट्ट रचित "श्रीजयशाह सुजश प्रकाश" ग्रन्थ की प्रस्तुत पक्तियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं–

तिनके श्रीगोविन्दशरण, परम कवीश पवित्र ।
भये भक्त गोविन्द के, हरिदासन के मित्र ॥

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि "आचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य" आदर्श आचरण वाले उच्चकोटि के कवि, प्रभु गोविन्द के परमभक्त और गोविन्द के भक्तों के अत्यन्त आत्मीय थे । राजस्थान के किशनगढ, जयपुर, रूपनगर आदि रियासतों में आपका सुयश फैला हुआ था । इस विस्तृत क्षेत्र में आप द्वारा निरन्तर भक्ति भगीरथी प्रवाहित हो रही थी । राजघरानों की यह परम्परा रही है कि उनकी रानियाँ पुरुषों की दृष्टि से प्रायः अलग ही रहा करती थीं । यह इनके बड़प्पन का प्रतीक था । इसलिए आचार्यों के दर्शन के समय केवल सखी-सहेलियाँ एवं दासियाँ ही रानी के साथ रहती थीं ।

एक दिन राजप्रासाद जयपुर नरेश के यहाँ से आचार्यश्री को पधरावनी का आमन्त्रण आया । आचार्य-चरण विधि विधान से राजप्रासाद में पधारे, यथोचित स्वागत सत्कार हुआ । श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्य शिरोमणि के जय-जयकार से गगन गूँज उठा । आचार्यश्री को महारानी को दीक्षा देनी थी ।

आचार्यचरण जब रंगमहल में पधारे तो उनके साथ एक पुजारी को ही रहना पड़ता था । पुजारी के अतिरिक्त राजपरिकर के परिचारकों का प्रवेश वर्जित था । कुछ परिचारिकायें आचार्य-अर्चना के समय सहयोग के लिए रहती थीं ।

महारानी उत्कृष्ट भक्ति की मूर्ति और आचार्य निर्मल जल । दोनों ही निर्विकार एवं निरासक्त थे। एक-दूसरे की भक्ति प्रवणता को देख गद्गद हो रहे थे । आचार्यश्री सिंहासन पर विराजमान थे । महारानी आचार्यचरणों का श्रद्धापूर्वक विधि-विधान से अर्चन-पूजन कर चुकी थीं । रानी को भक्ति मार्ग की दीक्षा दी जा चुकी थी । आचार्य- श्री रहनी-सहनी का उपदेश कर रहे थे । उसी समय नरेश ने रंग महल के एक वृद्ध परिचारक को पास देख पूछा, "कि यहाँ क्यों और कैसे घूम रहे हो ? हो सकता है महारानी तलाश कर रही हों ।" परिचारक ने अभिवादन करते हुए विनम्रतापूर्वक कहा, "देव ! महारानीजी ने

सभी परिचारकों को महल से बाहर कर दिया है । वहाँ कोई दूसरे महाराज पधारे हैं । महारानी उन्हीं की सेवा में है । अन्दर किसी अन्य पुरुष के जाने की अनुमति नहीं है ।'' परिचारक ने यह सब इस अन्दाज से कहा कि नरेश का माथा ठनक उठा और बिना सूचना तत्काल महल में जा पहुँचे । आचार्यश्री सिंहासन पर विराजमान रानियों और परिचारिकाओं को उपदेश कर रहे थे । राजा ने यह सब देखने के बाद भी सन्तोष का अनुभव नहीं किया । आचार्यश्री ने नरेश के मनोभावों को जान लिया और स्वयं ''किशोरीजी'' का ध्यान किया, फिर नरेश देखता है कि उसी सिंहासन पर आचार्यश्री के स्थान में किशोरीजी विराजमान हैं । तथ्य की पुष्टि में उल्लेखनीय है–

धरि ''श्रीजी'' कौं रूप, भूप कौ संशै नास्यौ ।
सत्त-भाव कौं तत्त जीव कौं प्रकट प्रकास्यौ ॥

आचार्यश्री ने नरेश को प्रत्यक्ष रूपेण इस आध्यात्मिक अनुभव का दर्शन करा दिया जिससे राजा का संशय दूर हो गया । राजा अपनी करनी पर पश्चात्ताप करने लगा । क्षमा-याचना कर नरेश ने भी रानी के साथ आचार्य चरण से दीक्षा - मन्त्र ग्रहण कर लिया और अनन्य भक्ति एवं श्रद्धा के साथ जगद्गुरु निम्बार्कपीठाधिपति को ''श्रीजी महाराज'' की उपाधि से अलंकृत किया । उसी समय से आचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्य एवं इनके उत्तरकालीन आचार्यश्री ''श्रीजी महाराज'' के उपनाम से विभूषित होते आ रहे हैं ।

जै जै गोविन्दशरण देव दुख-दैन्य-विनाशक ।
श्री राधामाधव की अभिलाषा के साधक ॥

वृन्दावन, मथुरा, उ. प्र.
(श्रीसर्वेश्वर भक्तगाथा अंक एवं श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय एवं
निम्बार्काचार्यपीठ परिचय पुस्तिका से साभार)

श्रीधाम - महिमा

–श्रीअलबेली माधुरीशरण

श्रीधाम वृन्दावन के बारे में कुछ कह पाना तो अति दुर्लभ विषय है फिर भी आचार्य गुरुजनों से जैसा प्राप्त हुआ उसी को आधार बनाकर कुछ निवेदन कर रहा हूँ । श्रीधाम वृन्दावन प्रिया लाल की केलि स्थली है, श्रीधाम का वर्णन सभी आचार्यों ने अपनी-अपनी वाणियों में जैसा दर्शन अनुभव किया लिखा है । श्री शुक सम्प्रदाय प्रवर्तक आचार्य महाप्रभु श्रीश्याम चरणदासजी महाराज ने श्रीभक्ति सागर ग्रन्थ के माध्यम से कहा हैं–

वृन्दावन सब सों बड़ों, जैसे दूध में घीव । सब धर्मन हरि भक्ति ज्यों, जैसे पिण्ड में जीव ॥
सब तीरथ जग में बड़े, जिनहुँ में है ईश । उन तीरथ फल कामना, इहि सेवन जगदीश ॥

जिस प्रकार सभी धर्मो में भक्ति को बड़ा बताया उसी प्रकार श्रीधाम वृन्दावन सबसे बड़ा कहा गया है और जैसे मनुष्य देह में प्राण व दूध में घी छिपा है, वैसे ही गुप्त है ।

यह धाम जब अपने मन और इन्द्रिय को जीत कर दिव्य दृष्टि प्राप्त हो तब ही जीव देख सकता है। कृपा साध्य हैं—

भक्ति बिना पावै नहीं, वृन्दावन की संध । बिन पाये निन्दा करै, भोंदू मूरख अंध ॥
वृन्दावन की साधु गति, कापै वरणी जाय । जैसी जाकी दृष्टि है, तैसो ही दरशाय ॥

श्रीशुक सम्प्रदायाचार्य श्रीरामसखीजी कह रहें हैं :--

नमो नमो वृंदावन चंद ।
जहां विलास करत प्रिया प्रियतम, स्व इच्छा भयी स्वच्छन्द ॥
कबहूं जात नहीं ताको तज नित्यकिशोर बिहारी ।
सेवत रहत ताहि निज करसों बैकुंठादि बिसारी ॥२॥

और लोक अवतार अस्थली यह निज वन रजधानी।
चारों और भर्‌यो जमुना जल उज्वल रस की खानी ॥
प्रेम स्वरूप विपिन वर राजत जुगल सेव अभिलाषी ।
मेरी कहा एक मुख वरणों ग्रंथ देत है साखी ॥
जहां बोलनि बतरानि राग धुनि डोलनि निर्त्तनि सुहायो ।
जाको जस शुक शिव ब्रह्मादिक नारदादि मुनि गायो ॥
राधा कृपा बिना अति दुर्लभ सुलभ अनन्य व्रत लीन्हे।

एक आस विश्वास प्रिया को और सकल तजि दीन्हे॥
रामसखी जीवन फल पायो कियो प्रिया जस गान ।
छोडि सब परपंच जगत के ईश बडाई मान ॥

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के श्री श्रीजी महाराज तो इस धाम की महिमा को देखते हुए, श्रीधाम वृन्दावन की सीमा में छत्र व चरण पादुका त्याग देते हैं ।

अनन्तश्रीविभूषित श्रीसरस माधुरीशरणजी महाराज कह रहे हैं–

श्रीवृंदावन गह्यो आसरो सब साधन कर हीन निहारो ।
निश्चय पावत पिय प्यारी रति ज्यों जल पावन मीन बिचारो ॥
शरणागत वत्सल़ श्रीदंपति सांचो करत है यह वृत धारो ।
'सरस माधुरी' देंह दया कर दरश परस करें न न्यारों ॥

श्रीधाम वृन्दावन में जीव मात्र की तो क्या, वहां के जीव जन्तु भी धन्य है चींटी के लिए कहा हैं–
धन्य-धन्य श्रीवृन्दावन की चेटी सीत प्रसाद को कणिका ले के जाय बिले में लेटी ।

'श्रीसरस परिकर',
श्रीसरस निकुंज, १००७ दरीबापान,
जयपुर-३०२००२
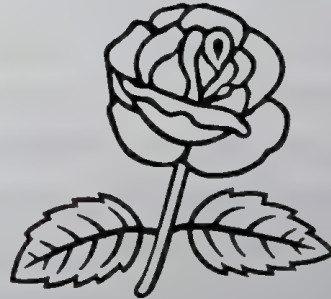
निम्बार्कदर्शनस्य पृष्ठभूमिः

–प्रो. वाचस्पति उपाध्याय

विदितमेव विदुषां यत्समेषां सत्सम्प्रदायानामुत्सभूतः सर्वमङ्गलविग्रहोऽयं भगवान् वेदो विविधैरुपदेशैर्दुःखपङ्कनिमग्नं लोकं सन्ततमध्यात्मपथेऽग्रेसारयति, परमार्थे च नियोजयति । तस्यैवायं कोऽपि महिमा यद्भारतीयतत्त्वचिन्तनपरम्परायां तन्मूलकत्वादजस्रं प्रवहन्ती जीवातुभूता आत्मविद्या वैदिकधर्मे परिस्फुरति । तादृशाम्नायसपर्ययैव प्राचीनभारते यैरसाधारणैर्महामनीषिभिः ऋषिचैतन्यं प्राप्यातीन्द्रियज्ञानेन चराचरात्मकस्यास्य जगतः पारमार्थिकस्वरूपं साक्षात्कृतम्, येषां समुद्बुद्धचेतनायां परमसत्यस्यानावृतं स्वरूपं प्रकाशितम्, तेषामविच्छिन्नगुरु-शिष्यपरम्परया समनुक्रान्तो दिव्यसिद्धान्तोऽद्यापि मुमुक्षुजनेषु विविधसम्प्रदायरूपेण प्रथते । इदञ्चात्र न विस्मर्तव्यं यदेतद्गताः सम्प्रदायाचार्या अपि परम्पराप्राप्तस्य मूलसिद्धान्तस्य परिपुष्ट्यै श्रुत्यविरोधेन लौकिकप्रमाणैस्तदनुगुणयुक्ति-सहकारेण स्वमनीषां निपुणं प्रकामं प्रयुज्य साहित्यश्रियं समेधयामासुः । तदिदं तपःस्वाध्यायनिरतानां तत्त्वानुभूतिमाश्रित्याभ्यस्तं साधनाजन्यं वस्तु तथाविधगुरुजनेभ्य एव प्राप्यम्, तादृशात्मास्वादनं विधातुं श्रुतिषु साधकानां रुचियोग्यताभेदाद् वर्णितासु विविधोपासनासु भेदोपासना अभेदोपासना चेति द्विविधा परिगण्यते । तत्राद्वैतं परमार्थत इत्यातिष्ठमाना अद्वैतिनोऽद्वयतत्त्वे पर्यवसाययन्ति, किन्तु वैष्णवीयेषु चतुर्विधेषु श्रीब्रह्मरुद्रसनकादिसम्प्रदायेषु भेदोपासनैव विधेयत्वेन समाद्रियते ।

चतुर्ष्वपि वैष्णवदर्शनेष्वन्यतमेऽस्मिन्निम्बार्कदर्शने जीवब्रह्मणोर्भेदाभेदत्वं द्वैताद्वैतत्वं वा स्वीक्रियते, अवस्था-भेदेन भेदाभेदयोः सम्मतत्वात् । एष सिद्धान्तो भारतीयदर्शनेऽतीव प्राचीनः न केवलं शङ्कराचार्यादपितु महर्षेर्बादरायणादपि प्रागस्य पोषका औडुलौमि-आश्मरथ्यप्रभृतयो बभूवुः । तद्यथा-उत्क्रमिष्यत एवम्भावादित्यौडुलोमिरिति ब्रह्मसूत्रे व्यवस्थाविशेषमधिकृत्य जीव-ब्रह्मणोर्भिन्नत्वाभिन्नत्वेत्युभयविधकल्पनायाः सामञ्जस्यं, संसारदशायां नानात्मकस्य जीवस्यैकात्मक-ब्रह्मणोरैक्यमभिनन्द्यते, परं कार्यात्मनोभयोर्भेदः, यथा कार्यरूपेषु कटककुण्डलादिषु कारणरूपस्य स्वर्णस्यैकात्मतायामपि कार्यरूपे भेदं को नाम निवारयितुमीष्टे ? इत्थमेव शङ्कराचार्यात्प्राग्वर्तिषु वेदान्ताचार्येषु भर्तृप्रपञ्चाचार्योऽपि भेदाभेदसिद्धान्तं मन्वानः परमार्थस्यैकत्वं नानात्वञ्चातिष्ठते स्म । धर्मदृष्टिभेदेन जीवानां नानात्वं नौपाधिकमपितु वास्तविकम् । ब्रह्मण एकत्वेऽपि समुद्रतरङ्गन्यायेन द्वैताद्वैतत्वम् । ब्रह्मणश्च परिणामित्वमभिमतम्, अयं परिणामः त्रिविधः, अन्तर्यामिजीवरूपे, अव्याकृतदेवतारूपे, जातिपिण्डरूपे च। ज्ञानकर्मसमुच्चये श्रद्धधानस्यास्य मते ज्ञानद्वारा विमलीकृतकर्मणा च निःश्रेयसत्वम् । रामानुजेन उदयनाचार्येण वाचस्पतिमिश्रेण च प्रत्याख्यात-सिद्धान्ततया एभ्यः प्राग्वर्ती भास्कराचार्योऽपि ब्रह्मणः सगुणत्वं सत्यज्ञानानन्तलक्षणत्वं चेतनत्वं रूपान्तररहितत्वमद्वितीयत्वञ्चाभिमन्यते स्म । एतन्मते ब्रह्मणो नैसर्गिकत्वं

ब्रह्म स्वत एव परिणमते तत्स्वाभाव्यात् । यथा सूर्यः रश्मीनभितः प्रक्षिपति तथैव ब्रह्मापि अनन्ताचिन्त्यशक्तिप्रसरं वितनुते । किन्तु निरवयवस्यैव परिणामो न सावयवस्य, यथा अच्युतस्वभावात्तन्तुभ्यः पटः तथैवाच्युतस्वभावाद् ब्रह्मणो जगदिदमुत्पद्यते । तथाहि–

अप्रच्युतस्वरूपस्य शक्तिविक्षेपलक्षणः ।
परिणामो यथा तन्तुनाभस्य पटतन्तुवत् ॥

अत्र मते जीवोऽणुरग्निस्फुलिंगवद् ब्रह्मणोंऽशः, जीवब्रह्मणोरभेदः स्वाभाविको भेदस्त्वौपाधिकः । औपाधिके रूपे निवृत्ते, भेदभावो लीयते । लीने च तस्मिन् जीवो ब्रह्मण्यवस्थितो मुक्तिं प्रपद्यते । भास्करस्य सद्योमुक्तित्वं क्रम-मुक्तित्वञ्चेति द्वयं सम्मतम् । यादवाचार्योऽपि भेदाभेदवादमंगीकृत्य ब्रह्मसूत्रेषु तत्प्रतिपादकं भाष्यं व्यरीरचत्, अनेन निर्गुणब्रह्मवादो मायावादश्च भृशं प्रत्याख्यातौ । भास्करयादवयोर्मतयोस्तु इयान् विशेषो यत् भास्करो भेदमौपाधिकं मनुते किन्तु यादव उपाधिवादे न श्रद्दधते, असौ परिणामवादी, जीवन्मुक्तिरपि अस्यानभिमता । प्रायो यादवाचार्यात् प्राक् सुदर्शनचक्रावतारः श्रीनिम्बार्काचार्य उदियाय, येन स्वाभाविक-भेदाभेदसिद्धान्तः प्रतिष्ठापितः । तन्मतानुसारं सूर्यो यथा प्रकाशमयः प्रकाशाश्रयस्तथैव जीवो ज्ञानाश्रयो ज्ञानमयश्च । यद्यपि जीवस्य स्वरूपभूतं गुणभूतञ्च ज्ञानं ज्ञानाकारतया अभिन्नं तथापि धर्मधर्मिभावेनानयोर्ज्ञातृज्ञानयोर्भेद एवेति निश्चितम् । उक्तञ्च दशश्लोक्याम्–

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं शरीरसंयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥

जीवो नियम्यो ब्रह्म च नियन्तृ। चेतनत्वे साम्येपि नियम्यत्वेन स ब्रह्मणो भिद्यते । मुक्त्यवस्थायामपि जीव ईश्वराश्रित एव, न तल्लीन इति । जीवो यद्यपि ब्रह्मणोंऽशस्तथापि अंशो नात्र विभागपरः किन्तु शक्तिपरः। भगवत्प्रसादेन जीवस्य सत्यरूपावभासः । प्राकृताप्राकृतकालभेदेन त्रिविधाऽत्र जडात्मिका प्रकृतिरङ्गीक्रियते। ब्रह्म समस्ताविद्यास्मितादिदोषशून्यम् अशेषज्ञानवलादिकल्याणगुणविशेषनिधानं स्वीक्रियते। सर्वं दृश्यं ब्रह्मव्याप्यम् । प्रतिपत्तिद्वारा तदनुग्रहोदयादेव साक्षात्कारस्तदनन्तरं मुक्तिर्जायत इति दशश्लोक्यादौ विविच्यते ।

ब्रह्मस्वरूपं वर्णयन्नाह दशश्लोकीकारः--

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोपमशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥

श्रीमद्गोपालमन्त्रोपासकस्य निम्बार्कदर्शनस्यआचार्यो भगवान् श्रीहंसनारायणो यतः सनकादयो दीक्षां लेभिरे, ततो देवर्षिनारदः सोऽपि तत्त्वमिदं तत्रभगवन्निम्बार्काचार्याय ददाविति कालविदां परम्परानुगुणमितिवृत्तम्। दक्षिणभारते वैदूर्यपत्तननामके परमपवित्रक्षेत्रे तैलंगविप्रान्वये श्रीमदरुणमुनेः धर्मपत्न्यां

जयन्तीदेव्यां लब्धाविर्भावो नियमानन्द एव निम्बादित्यनाम्ना ख्यातिं गतः । निम्बार्काभिधाने चास्य निम्नाख्यानं निमित्तीकुर्वन्ति यदसौ निशीथसमये एकदा निम्बोपरि अर्कं सूर्यं दर्शयामास । एतद्रचितेषु ग्रन्थेषु वेदान्तपारिजातसौरभम्, दशश्लोकी, श्रीप्रातःस्तवराजः, सदाचार-प्रकाशः, प्रपन्नकल्पवली, मन्त्ररहस्यषोडशी, राधाष्टकम्, प्रपत्तिचिन्तामणिप्रभृतयः सन्ति । एतदीया महती शिष्यप्रशिष्य-परम्परा तद्रचितग्रन्थपरम्परा चास्य सम्प्रदायस्यानितरसाधारणवैशिष्ट्यं प्रमाणयति। अत्रैव--श्रीनिवासाचार्य-पुरुषोत्तमाचार्य-केशवभट्ट--हरिव्यासदेवाचार्यप्रभृतयो ऽनेके लब्धप्रतिष्ठा महामनीषिणोऽभूवन् । श्रीनिम्बार्काचार्येण प्रस्थानत्रयस्य स्थाने प्रस्थानचतुष्टयमङ्गीकृत्य श्रीमद्भागवतमपि चतुर्थप्रस्थानत्वेन स्वीकृतम् ।

अस्य भारतवर्षस्य पचेलिमं भागधेयं यद् दिष्ट्येदानीं पुष्करक्षेत्रे निम्बार्कतीर्थे निम्बार्काचार्यपीठे तादृशा महामहिमशालिनो महात्मानो विराजन्ते, येषां परोपकाराभरणं जीवितं स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यते लोकहेतोरिति वचनं चरितार्थयति, येषां सान्निध्ये भारतीयसंस्कृतेरासेतुहिमालयं कोऽपि बलवत्तरः प्रचारः प्रचलति । संस्कृत-सपर्याविधौ तदीयं योगदानं मरुधराधौरेयगोष्ठीमुखे जेगीयते, समाजसपर्यारूपं मङ्गलकृत्यं सन्ततमनुष्ठीयमानं तेषां यशोराशिं परितः किरत्येव एवं सर्वथाभिरूपशिरोमणयः सर्वशास्त्रावगाहनधिषणाः प्रकृत्या साधुस्वभावा निम्बार्क-पीठाधीश्वराः जगद्गुरवः श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याः स्वसिद्धान्तानुगुणं विविधपारमार्थिककर्माण्यनुतिष्ठन्तो विराजन्ते । अतस्तेषां लोकमङ्गलकृत्यजातं प्रपूज्य पादपद्मयोः सश्रद्धं प्रणतिततिमर्पयामि ।

कुलपतिः
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठम्
(मानित विश्वविद्यालयः)
कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली - ११००१६

श्रीधाम वृन्दावन का असमोर्द्ध्व स्वरूप

— स्वामी किशोरीरमणाचार्य, भागवतभूषण

श्रीधामवृन्दावन की महिमा और स्वरूप का वर्णन करने में, ब्रह्म, रुद्र, शुकदेव, नारदजी एवं पितामह भीष्म प्रभृति महानुभावों की वाणी भी कुंठित हो जाती है, तो एक सामान्य चेतन जीव की क्षमता ही क्या है, जो वाणी या लेखनी से श्रीवृन्दावन महामहिमा और स्वरूप का गुणगान कर सके।

फिर भी कितनी ही प्रशंसा क्यों न की जाय? यह दिव्य वृन्दावन गोलोकधाम में है। वही गोलोक जिसके लिए वेद कहते हैं —

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युतो भाति कुलोऽयमग्निः।
तमेव भातमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥ (श्वेताश्वतरोपनिषद्)

जहाँ संसार में दिखाई देने वाला न लौकिक सूर्य है और न चन्द्र और न हि अग्नि की गति है, श्रीधाम वृन्दावन स्वयं प्रकाश तत्त्व है, जिसके प्रकाश से ही अनेकों प्रकार के प्रकाश प्रकाशित हो रहे हैं, और होते भी रहेंगे।

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन से भगवान् ने यही कहा—

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः। यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम॥

यह वृन्दावन धाम जहाँ जाने के बाद चेतन जीव लौटकर फिर कभी संसार के धराधाम पर नहीं आता।

धाम और धामी परस्पर अभिन्न हैं। अर्थात् कोई नन्दनन्दन सोई वृन्दावन प्रिया स्वरूप आह्लादिनी-आनन्द स्वरूप। तन वृन्दावन जगमगे-इच्छा सखी अनूप॥

स्वामिनी श्रीराधा सर्वेश्वरी यदि मूर्तिमती आह्लाद हैं, तो प्रियतम श्रीसर्वेश्वर मूर्तिमान् आनन्द, और श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का श्री अंग ही श्रीवृन्दावन के रूप में प्रकट है, जहाँ प्रियाप्रियतम श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् की स्वयं जात समस्त इच्छायें-सखी-सहचरी-किंकरी और मंजरी के रूप में प्रकट होकर नित्य लीला में युगल सरकार का सुखोल्लास-लाड़दुलार सेवा संविधान करती हैं।

तां वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरि शृंगा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि॥ (ऋग्वेद)

जहाँ उत्तुङ्ग शृंगधारी गोवृन्द के बीच वृषभों और बत्सों के बीच सर्वेश्वर प्रभु गोपाल रूप में सुशोभित हैं, वहाँ उस लोक में हम जीने की कामना करते हैं।

तद्वो दक्षिणे सव्ये पंचाशत् कोटि योजनम्। वैकुण्ठं शिवलोकं तु तत्समं सुमनोहरम्॥
(ब्रह्मवैवर्त्त पु.)

तेषामुपरिगोलोकं नित्यमीश्वरवद् द्विज। त्रिकोटियोजनायामं विस्तीर्णं मण्डलाकृति॥
(ब्रह्माण्ड पु.)

त्रिकोटि योजन विस्तीर्ण मण्डलाकृति गोलोक में नित्य ही जहाँ सर्वेश्वर विराजमान हैं, वहीं पर विरजा नदी का कल-कल निनाद-उत्ताल ताल तरङ्ग-विरजा महारानी का तट प्रदेश तो रेशमी वस्त्र के समान दिखाई दे रहा है, दिव्य मणिमय सोपानों से वह अत्यन्त प्रकाशित हो रहा है, तट की शोभा देखते और आगे बढ़ते हुए वे देवता उस दिव्य देश में जब पहुंचते हैं तो अनन्त कोटि सूर्यों की ज्योति का महान् पुंज जान पड़ता है, उसे देख देवताओं की आँखें चौंधियाने लगती है। भगवान् श्रीविष्णुजी की आज्ञानुसार उस तेज को प्रणाम करके ब्रह्माजी उसका ध्यान करने लगते हैं। उस ज्योति के भीतर विधाता परम शान्तिमय साकार धाम देखते हैं, उसमें परम अद्भुत कमल नाल के समान धवल वर्ण हजार मुख वाले शेषनाग भगवान् का दर्शन होता है और सभी देवता उन्हें प्रणाम करते हैं। उन शेषनाग भगवान् की गोद में महान् आलोक तथा लोकान्तरित गोलोकधाम का दर्शन होता है, जहाँ माया तथा काल का भी कोई प्रभाव नहीं।

वहाँ गोवर्द्धन नाम गिरिराज विराजमान हैं। गिरिराज का वह प्रदेश उस समय वसन्तोत्सव मनाने वाली गोपियों और गोओं के समूह से समावृत है।

वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नव काननम्। गोपगोपीगवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम्॥

(भागवत)

कल्पवृक्ष और कल्प लताओं के समुदाय से सुशोभित है। **''श्रेयः कान्ताकान्तः परम पुरुषः कल्पतरवो द्रुमा भूमिश्चिन्तामणिमयी तोयममृतम्''**॥ जहाँ का एक रजकण चिन्तामणि-वैदुर्यमणि-हीरकमणि-नीलमणि सदृश विद्यमान है। रासमण्डल से सुशोभित यह वृन्दावन जहाँ श्याम वर्ण धारिणी श्रीयमुनाजी स्वच्छन्द गति से प्रवाहित हो रही हैं। भाँति-भांति के विचित्र पक्षियों-भ्रमरों तथा वंशीवट के कारण वहाँ की सुषमा और भी बढ़ रही है। **''गुन गुन इति शब्दैस्तूयते नन्दसूनुः''** लगता है समस्त अलिवृन्द अपनी गुनगुनाहट में नन्द-नन्दन के गुणों का ही गायन कर रहे हों! जहाँ सहस्र दल कमलों से सुगन्धित पराग को चारों ओर पुनः पुनः बिखेरती हुई शीतल वायु मंद गति से बह रही है। विशालकायधारी वृषभ जिनके लम्बे-लम्बे सींग-गायों के मध्य सुशोभित है। लगता है मानों अनेक प्रकार के धर्म ही वृषभों के रूप में विद्यमान हैं।

मनोहारी कुंज-निकुंज-निभृत निकुंजों से समावृत वृन्दावन सभी ऋतुओं में सुखदायी है।

वृन्दावनं संप्रविश्य सर्वकालसुखावहम्।

जब गोलोक से पृथ्वी पर प्रिया-प्रियतम के अवतार की परस्पर चर्चा हुई तो प्रियाजी ने एक ही बात कही— **''प्राणधन वृन्दावनं गोवर्द्धनं यत्र नो यमुना नदी''** जहाँ वृन्दावन-गोवर्द्धन-श्रीयमुना नहीं वहाँ **''तत्र मे न मनः सुखम्''** वहाँ मेरे मन को कैसे सुख मिल सकता है।

तब श्रीसर्वेश्वर श्रीकृष्ण ने गोलोकधाम से चौरासी कोस भूमि-गिरिराज पर्वत-श्रीयमुनाजी को भूतल पर भेजा, और तीनों ही अपने-अपने स्व-स्वरूप से प्रकट हुए। ऐसे सुदिव्य व्रजमण्डल में श्रीश्यामा श्याम का प्राकट्य हुआ।

इसीलिए जगद्गुरु निम्बार्काचार्य रसिकराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने ''श्री महावाणी'' निकुञ्ज रसग्रन्थ में यह कहकर पुष्टि की कि **''यही है यही है भूल भरमों न कोई-भूल भरमें ते भव मटक मरि हों।''**

जहाँ भक्ति महारानी स्वयं अपनी पूर्णयौवनावस्था से सम्पन्न घर-घर में पग-पग पर नृत्य करती हुई वृन्दावनव्रजवासियों को राधाकृष्ण रस धारा में डुबोये रखती है।

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च। इसीलिए रसिकों ने वृन्दावन को परम धन्य कहा है।

रसिकों के परम धन वृन्दावन की महिमा का वर्णन कैसे किया जाय? निर्गुण निराकार ब्रह्म से भी सर्वथा जो परे है। ज्ञानियों की समाधि वाला करोड़ों ब्रह्मानन्द जिस पर न्यौछावर किया जा सकता है। जहाँ प्रिया-प्रियतम श्रीराधासर्वेश्वर नित्य विहार करते हैं। वृन्दावन का यह अलौकिक दिव्य महासुख देखकर ही शायद संकोचवश महाविष्णु अपना वैकुण्ठ छोड़ क्षीर सागर में जा छिपे हैं। जहाँ **''श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि''** सर्व सम्प्रदाधिष्ठात्री भगवती जगन्माता लक्ष्मी निरन्तर दासी बनकर-धाम की सेवा में अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपों में संलग्न हैं। अजन्मा ने जन्म लिया है, इसीलिए तो वैकुण्ठ से भी अधिक उत्कर्ष प्राप्त है धाम को।

''वृन्दारण्यं स्वपद-रमणं प्राविशद् गीति-कीर्तिः''

वैकुण्ठ में तो भगवान् के युगल चरणारविन्द भगवती लक्ष्मीजी के अंक तक ही सीमित रहे— किसी अन्य अंग का स्पर्श श्रीजी के चाहते हुए भी सम्भावित न हो सकता। लेकिन यहाँ श्रीवृन्दावन भू में देवी के खुले वक्षोज पर रिरिंसु बने नित्य विहार कर रहे हैं।

वृन्दावनं सखि भुवो वितनोति कीर्तिं, यद्देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि॥

जहाँ श्रीमती यमुना महारानीजी भी अपनी उत्ताल ताल तरङ्गायित कर कमलों से आलिङ्गन करती हुई प्रियतम के श्रीचरणों में पद-कमल पुष्प खचित हारावली समर्पण पूर्वक अभिनन्दन करती है–

आलिङ्गन-स्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः।

वृन्दावन रसिकों की राजधानी है, जहाँ ठकुरानी श्रीराधा रानीजी के दरबार में सालोक-सार्ष्टि-सामीप्य सायुज्य-चारों मुक्तियाँ पानी भरने का काम और जलसेवा करती रहती हैं। ''मुक्ति भरत जहाँ पानी घर-घर प्रेम भक्ति की महिमा सहचरि दास बखानी।'' रसिकों के जीवन की सम्पत्ति ही श्रीवृन्दावन है।

वृन्दावन सांचो धन मैया।
कनक कूट कोटिक लगति तजिये भजिये कुंवर कन्हैया॥
जहाँ श्रीराधा चरण रेणु की कमला लेत बलैयाँ।
तिन में गोपी नाच नचावत मोहन वेणु बजैयाँ॥
कामधेनु को क्षीर सिन्धु तजि भजहुँ नंद की गैया।
चारों मुक्ति कहा लै करिहों जहाँ यशोदा मैया॥

अद्भुत लीला अद्भुत वैभव सत शुकदेव कहैया।
आरत कास पुकारत बन में थोर लोग सुनैया॥

वेद-वेदज्ञ ब्रह्मा बड़े-बड़े माया मुक्त उद्धव सरीखे संन्यासी ज्ञानी भी **''वृन्दावने किमपि गुल्म-लतौषधीनाम्''** कहते हुए कामना करते हैं कि श्रीराधापादाङ्क रज रेणु कणिका में हम सदा सदा गुल्म लता अथवा औषधि के रूप में पड़े रहें। कभी तो श्रीराधाचरण रज पड़ेगी और हम सदा सदा के लिए रजोगुण से मुक्त हो सत्व के सोपान पर अवस्थित होंगे।

यह वह धाम है जिसका महाप्रलय में भी कभी लय नहीं होता—

चन्द्र मिटै दिन बार मिटै मिटै जो त्रिभुवन विस्तार।
दृढ व्रत हित हरिवंश को मिटै न नित्य विहार॥

ऐसे श्रीधाम वृन्दावन और व्रजमण्डल जिसके लिए स्वयं श्रीराधामाधव यह कहते हैं, **''पंचयोजनमेवास्ति'' ''पंचक्रोशत्मकं भूमिवनं मे देह-रूपकम्''** ऐसी वृन्दावन व्रज वसुन्धरा के बीच परम पावन तीर्थ नीमगाँव या निम्बग्राम में श्रीसुदर्शनावतार भगवान् जगद्गुरु निम्बार्काचार्यजी महाराज ने साधना की और श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् की आराधना और निम्बवृक्ष के पीछे-सूर्य अस्त होने पर भी यति रूप ब्रह्माजी को अर्क (सूर्य) के रूप में दर्शन कराया और फिर यति ने भगवत् प्रसाद स्वीकार किया।

एक बार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर सलेमाबाद श्रीआचार्यपीठ-श्रीराधामाधव भगवान् की सन्निधि में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा करने का अवसर मिला, उन्हीं दिनों आचार्यश्री ने निज महल में अपनी व्रज चौरासी कोस यात्रा का फोटो एलबम दिखाया।

देखा तो आचार्यश्री के बगल में ही प्रथम पृष्ठ पर एक वृन्दावन का कूकर केशीघाट पर संकल्प लेते समय खड़ा है। सारी चौरासी कोस यात्रा में तो वृन्दावन का कूकर महाराजश्री के साथ-साथ रहा और श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् के टैन्ट द्वार पर सारे दिन भगवान् सर्वेश्वर की सीत प्रसादी पाते हुए महाराजश्री के साथ चौरासी कोस यात्रा पूर्ण की। अन्तिम अवभृथ स्नान फिर महाराजश्री के साथ केशीघाट पर किया और अपने पार्थिव शरीर का त्याग कर सदा के लिए ठाकुर की सेवा में पहुँच गया।

यह कोई आश्चर्य नहीं, श्रीवृन्दावन का प्रत्येक पशु और पक्षी– सभी महापुरुष मननशील सन्त हैं। जिनकी साधना ही रहीं, किसी न किसी रूप से वृन्दावन वास मिले।

प्रायो बताम्बविहगा मुनयो वनेऽस्मिन्।

अतः श्रीवृन्दावनधाम स्वयं आराध्य है, जिनकी कृपा से श्रीप्रिया, प्रियतम श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का सहज सान्निध्य और सेवा प्राप्त होती है। ऐसे श्रीधाम को हमारा कोटि-कोटि नमन।

आचार्यपीठ – सेवाकुंज
वृन्दावन (मथुरा)

वरुना चकती कर गहे वगहा के असवार।
पलस देव रक्षा करें सुखी रहे परिवार।।

— आचार्य स्वामी अभिरामदास वेदान्ताचार्य (एम.ए.)

बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि अखिल भारतीय निम्बाकाचार्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य अनन्तश्रीविभूषित ''श्रीजी महाराज'' की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय सार्वभौम सनातन धर्म का विराट् महोत्सव होने जा रहा है, जिसमें चारों शंकराचार्य जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य, बल्लभाचार्य आदि सभी सम्प्रदायाचार्य पधार रहे हैं। इसी ऐतिहासिक दिव्य भव्य आयोजन में विद्वद्-परिषद, सन्त समाज और पीठ के सभी अनुयायी विद्वान् भक्तों सेवकों ने परम पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को ''अभिनन्दन ग्रन्थ'' भेंट करने का निर्णय किया है। जिसमें दास को भी अपने शब्द सुमन प्रेषित करने का सौभाग्य मिला।

सचमुच ही ऐसे महिमा मण्डित गरिमा मण्डित यशस्वी नक्षत्र वली भारतीय संस्कृति के प्रत्यक्ष मूर्तिमन्त महापुरुष के विषय में कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा ही है, फिर भी अपनी भावनाओं के द्वारा लेखनी पवित्र करने का सौभाग्य तो मिल ही रहा है। अस्तु

ये पापं शमयन्ति सङ्गतिकृतां ये दान-शृंगारिणः,
येषां चित्तमतीव निर्मलतरं येषां न भग्नवृताः।
ये सर्वान्सुखयन्ति च प्रतिदिनं ये साधवो दुर्लभाः,
गंगावत् गजगण्डवत् गगनवत् गाङ्गेयवत् गेयवत्।।

सचमुच ही पूज्य श्री श्रीजी महाराज जैसे लोकोपकारी सन्त यत्र-तत्र ही वसुन्धरा को पावन करते हैं—

धन्य है वह देश धरा परिवार जहाँ पर ऐसी महान् विभूति प्रकट हुई–

'कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।'
सो कुल उमा धन्य सुनु जगतपूज्य सुपुवीत। की रघुवीरपरायण जेहिकुल उपज विनीत।।

वस्तुतः यह अभिनन्दन ग्रन्थ पूज्यपाद श्री श्रीजी महाराज के कर्त्तव्यों विद्वत्ता, साधुता, तपश्चर्या और अखंड पुरुषार्थ गंगा प्रवाहवत् का ही एक प्रकार से सम्मान है। चित्र की पूजा नहीं होती, 'चरित्र' की पूजा होती है। किसी की चार दिन की जिन्दगी सौ काम कर जाती है। किसी की सौ वर्ष की आयु

कुछ भी नहीं कर पाती। आज जो ऐतिहासिक प्राचीन पीठ को ''तीर्थ'' दर्शनीय दिव्य काव्य जीर्णोद्धार स्वर्गादिक वैकुण्ठ आश्रम बना दिया, यह आपकी तपश्चर्या महत्ता, विद्वत्ता सर्वलोकप्रियता उदारता का प्रत्यक्ष दर्शन है। तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि। श्री निम्बार्कसरोवर, सर्वेश्वरसंस्कृत महाविद्यालय, सर्वेश्वरवेदविद्यालय, श्री निम्बार्क दर्शन विद्यालय, श्री निम्बार्क शिशु मंदिर, श्रीराधा माधव गोशाला, श्री हरिव्यास औषधालय, श्री निम्बार्क मुद्रणालय (प्रेस), श्री राधासर्वेश्वर छात्रावास, पुस्तकालय, वाचनालय, निम्बार्क पाक्षिक पत्र, श्री सर्वेश्वर मासिक पत्र, सन्त सेवा, अतिथि सेवा, अखंड अन्नपूर्णाभंडार, देवपूजा, दर्जनों ऐसे पारमार्थिक शुभ कार्य किये हैं जो स्वर्णाक्षरों में लिखे जावें। श्री निम्बार्क कोर्ट अजमेर–जयपुर वृन्दावन धाम गोवर्धन धाम आदि कितनी आदर्श परोपकारी संस्थायें पूज्यश्री श्रीजी महाराज की यश-कीर्ति में चार चांद लगा रही हैं। आज श्री निम्बार्क पीठ परम्परा अन्तर्राष्ट्रीय रूप ले रही है, इसका पूरा श्रेय श्री श्रीजी महाराज को ही है।

श्रीतुलसीदास जी के शब्दों में– **सत्य वचन मानस विमल कपट रहित करतूत आदि आदि** – आज नहीं तो कल मिलता है हर पूजा का फल मिलता है।

दुनियाँ करती है उसी को बन्दन जिसके जीवन में खुशबू है चंदन सी। आज जो श्री श्रीजी महाराज का सभी शंकराचार्य, सभी सम्प्रदायाचार्य उठकर सम्मान करते हैं, यह महाराजश्री के कर्तव्यों का सम्मान है। वह बड़ा है जिसका काम बड़ा वह नहीं कि जिस का नाम बड़ा। नाम तो हत्यारे वीरप्पन और लादेन का भी छप जाता है। इससे क्या, पर जनता के हृदय में दयालुता, कृपालुता की मिठास शुभकार्यों से ही आती है। कवि के शब्दों में—

जो औरों के सुख दुःख समझे वह इंसान भी है, विद्वान् भी है।

संसार महाविद्यालय इसका तुझ को कुछ ज्ञान भी है बचपन से और बुढ़ापे तक हर दिल है एक नई पुस्तक। यह पुस्तक गर तू पढ़ न सका कालेज की महारत कुछ भी नहीं। डिग्री की तिजारत कुछ भी नहीं। इल्मों की बजारत कुछ भी नहीं वह, बड़ा है जिसका काम बड़ा वह नहीं कि जिसका नाम बड़ा। पूज्य चरणों ने यह कह व्याख्यानबाजी करके नहीं दिखाया है। सुन्दर तन है सुन्दर मन है ऐसी अनुपम छवि वाले– ये सब ईश्वर प्रदत्त ही प्रिय भक्तों में स्वाभाविक गुण होते हैं। आप अपने जीवन में–

सत्य अहिंसा प्रेम जगाकर सुन्दर भाव बढ़ाया है मानवता के प्रहरी बन कर सब को गले लगाया है। दानवता के भाव मिटाकर सबको सुखी बनाया है। अहिंसा प्रतिष्ठियां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। आप के जीवन की शक्तियों का सभी को अन्दाज नहीं है।

लक्ष्य यही रहा– **न मिले इज्जत प्रतिष्ठा कोई परवाह नहीं है।**
पर वे इज्जती कभी भी वरदास्त नहीं है।।

जीवन भर सम्मान बांटते रहे कभी सम्मान लेना नहीं चाहा

सबहि मान प्रद आप अमानी–
तुल्य निन्दा स्तुतिर्मौनी–
समः रात्रौ च मित्रे च। अर्द्वष्टा सर्वभूतानाम्।

अजातशत्रु का प्रत्यक्ष दर्शन कराया, कोई आलोचक मानों जन्मा ही नहीं।

आचार्य परशुराम जी के 'सागर' ग्रन्थ के दोहों –

"राम सगे अरु गुरु सगे तीजो सगोहै राम।
परशुराम या जीव को तीन ठौरविश्राम" के माध्यम से आमजनता को सम्प्रदाय निष्ठा, भगवद् भक्ति परायण बनाया **जागो और जगाओ सबको समय है ऐसा आया।**
बदला जमाना हम भी बदलें सबसे नाता जोड़ो-भेदभाव की दीवारों को तोड़ो

ऐसी आत्मीयता नाते नेह राम के मनियत बहुत कहौ कहौलों, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् की धारा की अजस्र धारा प्रवाहित करके **आनुकूलस्य संकल्पः प्रातिकूलस्य वर्जनम्।**

रक्षयिष्यति विश्वासः गोप्तृत्ववर्णनं तथा।
आत्म-निक्षेप-कार्यण्यं षड् विद्या शरणागतिः॥

के वैदिक सिद्धान्त जीवन में उतार कर अपने कर्त्तव्यों के द्वारा जनता जनार्दन को आदर्श मार्ग पर चलने की कृपा दृष्टि प्रदान की है। सच ही कहा है कि–

सद् गुरु की जब कृपा दृष्टि इस तन पर पड़ती है
छिपी धरोहर तभी मनुज को सचमुच दिखती है।

इस वैदिक प्राचीन सिद्धान्त को अन्त में सभी सन्तों की शुभेच्छा के साथ जौ लौं ऋषि नारद भी नितप्रेम से वीणा बजाते रहें जौलों सनकादिक आदि ऋषि नित राम के नाम को गाते रहें जौ लौं तम नाशन को नभ में रविभारी ज्योति जगाते रहें। तौलों निम्बाकर जगद्गुरु की कीर्ति पताका फहराती रहे॥

मोमाराम मकादंशो हया गलदमम्भकाः।
अष्टौ यत्र न विद्यन्ते तत्र मुक्तिर्न संशयः॥

इति शम्

श्री मयारामदास जी आश्रम
गिरनार रोड, जूनागढ़, गुजरात 362001

* * *

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय एवं वर्तमान आचार्यश्री

— परशुराम भारद्वाज

आनन्दकन्द पूर्णकलावतार भगवान् श्रीकृष्ण के इस धराधाम पर पुण्य पवित्र भारतवर्ष में बाल पराक्रम ज्ञान विज्ञानादि धन-धान्य से सम्पन्न महापराक्रमी बालशाली शासकों के शासन में बढ़ती हुई अधर्मान्धता के कारण पीड़ित प्रजा को अपनी लीला क्रीडाओं से दुष्टों का संहारकर सनातन धर्म का संस्थापन कर सनातन धर्म के संस्थापन द्वारा प्रजा को सुख शान्ति प्रदान कर परमधाम को पधारने के बाद धर्म का आधार ''सुदर्शन महाबाहो.........'' इत्यादि चक्रराज को आज्ञा प्रदान कर भारत धरा पर अवतार लेने के फलरूप गोदावरी तटवर्ती महर्षि अरुण मुनि के आश्रम मूंगी पैठण (महाराष्ट्र) में माता जयन्ती के उदर से प्रादुर्भाव हुआ। नियमानन्द बालरूप के बाद ऋषिराज नारदजी से सन्यस्त रूप ब्रह्माजी के आदेशानुसार दीक्षित होकर आद्याचार्य ''निम्बार्क'' नाम से प्रसिद्ध हुए। तपस्या से परिपूर्ण होकर धर्म प्रचार आरम्भ किया। जिनका आज 5100 वाँ जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। इस सम्प्रदाय के कारण इस भारत धरा पर सनातन धर्म का प्रचार यथावत् चल रहा है। इस सम्प्रदाय के अनन्तर अन्योन्य सम्प्रदाय भी आरम्भ हुए। किन्तु ''ब्रह्मात्मकत्वादिति वेद.......।'' इसी अकाट्य सिद्धान्त का निरन्तर प्रचार चला आ रहा है और चलता रहेगा। उस समय से जो आचार्य परम्परा चली आ रही है, उन परवर्ती आचार्यों में महावाणीकार रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यास देवाचार्यजी महाराज, श्रीनिवासाचार्यजी महाराज दिग्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरी भट्टाचार्य जी महाराज आदि के द्वारा धर्माचारण की गंगा प्रवाहित होती रही है। इसी क्रम में उक्त परम्परा में परमाराध्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज द्वारा भारतीय जन हितार्थ यह सम्प्रदाय सूर्योदय के समान भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु सकल विश्व में प्रकाशित हुआ।

जो धर्माचरण सम्प्रदाय के आदिकाल में प्रचारित हुआ वहीं निरन्त चला आ रहा है और वर्तमान आचार्यचरणों के द्वारा जो धर्माचरण हो रहा है, वह आज सभी के आकर्षण का केन्द्र है। अंग्रेजी शासन काल में सनातन धर्म की मर्यादाएं धूमिल होती जा रही थीं वह आज आचार्यश्री के द्वारा पुनः प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रही हैं। चरण पूजा के लिए आग्रह करने पर जहाँ कहीं भी ''आपश्री'' का पादार्पण होता है, वहाँ जन मानस अत्यन्त आह्लादित हो जाता है। सभी के हृदय में एक नवीन प्रकाश प्रकाशित होता है और आपश्री के उपदेशामृत का पान कर धन्य-धन्य हो जाता है। ''आचार्य मां विजानीयात्'' इति शास्त्र वचन की नितान्त सत्यता हृदय स्वीकार करता है। आपश्री की वाणी से जन्म जन्मान्तरों के पापों का क्षय होता है।

आपश्री के द्वारा अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है। वे ग्रन्थ आचार्यपीठ के मुद्रणालय से प्रकाशित कराकर सभी को सुलभ करवाकर भगवज्जनों पर अनुग्रह किया है। सनकादि संसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं रससिद्ध कवि श्रीजयदेव के आराध्य देव श्रीराधामाधव प्रभु जिनकी सेवाराधना वैदिक पद्धति द्वारा आचार्य पीठ में आज भी आचार्यश्री के द्वारा यथावत चली आ रही है। ''आपश्री'' के द्वारा जो नवीन निर्माण पुष्कर निम्बग्राम अजमेर किशनगढ़ जयपुर, खातोली मूंगी पैठण आदि में हुए हैं, विशेष उल्लेखनीय है। साथ ही सर्वेश्वर वेद विद्यालय, श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, श्रीनिम्बार्क महाविद्यालय, श्रीहंसवाचनालय आदि शिक्षा संस्थानों की संस्थापना द्वारा ब्राह्मण वटुक ब्रह्मचारियों को शिक्षा दीक्षा देकर उनका भरण पोषण कर शिक्षा की प्राचीन आश्रम परम्पराओं का आदर्श दृष्टिगोचर होता है। जिससे सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का विशेष प्रचार प्रसार होता है। ''आपश्री'' के आचार्यत्व में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय ने जिस शीर्ष स्थान को प्राप्त किया है वह अनुपम है।

बौंली, सवाईमाधोपुर

श्रीजी नाम कैसे पड़ा!

— महन्त वृन्दावन दास

'श्रीजी' की पद्वी से विभूषित होने वाले प्रथम आचार्य **श्री गोविन्दशरण देवाचार्य हैं** जिनका समय सम्वत् 1814 से 1841 तक माना जाता है।

राजघराने की यह परम्परा रही है कि उनकी रानियाँ पुरुषों की दृष्टि से अलग ही रहती थी। आचार्यों के दर्शन के लिए तो दासियाँ एवं सखी सहलियाँ ही साथ रहती थी, लेकिन पुरुष वर्ग नहीं रहता था।

इसी प्रकार आचार्यों की पधरावनी जब राजमहल में होती थी तब किसी पुरुष को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी। एक दिन जयपुर रनिवास से आचार्यश्री का पधरावनी का निमन्त्रण मिला– आचार्य चरण विधिविधान पूर्वक राजप्रसाद में पधारे। महल के द्वार पर भव्य स्वागत सत्कार हुआ। श्री सर्वेश्वर प्रभु और आचार्यश्री के जय जयकार से वायुमण्डल गूंजने लगा। श्री आचार्यपाद को जयपुर नरेश की रानी को दीक्षा मन्त्र देना था, इसलिए आचार्य चरण रंगमहल में पधारे। साथ में पुजारी जी को भी अन्दर जाने की अनुमति मिली, लेकिन अन्य पुरुष को प्रवेश नहीं मिला।

महारानी ने आचार्य चरणों का निष्ठापूर्वक अर्चन किया। पुजारी जी विधि का निर्देशन कर रहे थे। आचार्य श्री गोविन्दशरण देवाचार्य जी महाराजरानी को भक्ति मार्ग की दीक्षा दे रहे थे, मन्त्र जाप और रहनी सहनी पर उपदेश कर रहे थे। उधर नरेश ने रंगमहल के वृद्ध सेवक को अपने सामने घूमते देख पूछा– क्यों? यहाँ क्यों घूम रहे हो? सेवक ने विनम्रता से कहा– महाराज महारानी ने हम सेवकों को महल से बाहर निकाल दिया है। वहाँ कोई दूसरे महाराज पधारे हैं, महारानी उन्हीं की सेवा में है और अन्दर किसी भी पुरुष को जाने की अनुमति नहीं है। सेवक ने यह सब कुछ इस ढंग से कहा कि नरेश का माथा ठनक गया, चेहरा क्रोध से तमतमाने लगा। नरेश बिना सूचना भेजे सीधे रंगमहल में पधार गये, परन्तु नरेश द्वार पर जाकर रुक गये। उन्होंने क्या देखा कि आचार्यश्री के स्थान पर साक्षात् श्रीजी श्री राधारानी ही दीक्षा देती नजर आई। श्री किशोरी जी के रूप रंग तेज और माधुर्य को देख कर नरेश का रोम रोम प्रफुल्लित हो गया।

नरेश ने सेवक से पूछा– तुम कहते थे कि महारानी दूसरे महाराज की सेवा में है कहाँ हैं दूसरे महाराज! यहाँ तो श्रीकृष्ण की प्राणवल्लभा साक्षात् श्रीकिशोरी जी विराजमान है?

नरेश हारे हुए सैनिक की भाँति अपनी अदूरदर्शिता और अविवेक पर पश्चात्ताप करता हुआ आचार्यश्री के चरणों में लोट पोट हो गया, और रानी के साथ ही आचार्यचरण का विधिवत् अर्चन करके दीक्षा मंत्र ग्रहण किया और आचार्यश्री को श्री श्रीजी महाराज की उपाधि से अलंकृत किया। आचार्य चरण के इस किशोरी स्वरूप की चर्चा दूर दूर तक फैल गयी और उसी दिन से तत्कालीन निम्बार्काचार्य श्री गोविन्दशरणदेवाचार्य जी महाराज तथा उत्तर कालीन समस्त आचार्यगण श्रीजी महाराज के नाम से प्रतिष्ठित और विभूषित हुए।

श्री अटी माधुरी कुटी, श्री धाम वृन्दावन

राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रवेश

जंगल देश के लोग सब परशाम किये पारषद
खंडैला में ठीकरी, अणपूछी पहिचाणि।
भजन उजागर प्रसराम, प्रगट प्रेम तैं जाणि।।

— मेवाड़ महामण्डलेश्वर मुरलीमनोहरशरण शास्त्री

हंस भगवान् चौबीस अवतारों में परिगणित है, वह अध्यात्म ज्ञान के ब्रह्माण्ड में सर्व प्रथम प्रवर्तक हैं। इन्हें निम्बार्काचार्य-परम्परा में सर्वप्रथम परिगणित किया गया है। नीर-क्षीर-विवेक के कारण श्वेत धवल वर्णाकृत मुक्ता सदृश यह स्वरूप परम वन्दनीय है। इसी से ब्रह्मा को भी ज्ञान सुलभ हुआ। यहाँ तक तो यह पूर्णतया स्वीकार्य है ही, किन्तु ब्रह्मा के मानस पुत्र सनकसनन्दन सनातन सनत्कुमार तथा देवर्षि नारद भी निम्बार्क परम्पराओं में मूल रूप में अभिनन्दित एवं वन्दित है। श्री ब्रह्मा ने राजस्थान क्षेत्र तीर्थगुरु पुष्कर में सृष्टि यज्ञ का अनुष्ठान पूर्ण किया, यह सभी शास्त्रों, पुराणों आदि में उल्लिखित है। इससे यह ध्वनित होना स्वाभाविक है कि सनकादिक एवं देवर्षि नारद ब्रह्मापुत्र होने के कारण चाहे वे मानस सृष्टि के ही अंग हों, पुष्कर, ब्रह्म, अन्तःकरण चतुष्टय, मन आदि के व्यक्त स्वरूप में स्वीकार किये, कराये जा सकते हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय को सनकादिक सम्प्रदाय के नाम से भी पहचान प्राप्त है, तब इन तथ्यों को पुष्कर से समन्वित करना एवं पुष्कर को राजस्थान से समन्वित करना एक विचार्य पक्ष तो हो ही सकता है। इस तथ्य की चर्चा अन्य विद्वानों ने भी समय-समय पर की है। जिस पर विद्वद् जन समीक्षा करेंगे, तब प्रमाणित मत स्थापित किया जा सकता है। यदि इस सन्दर्भ पर थोड़ी सी भी सहमति बने तो यह समझना उचित होगा कि निम्बार्क सम्प्रदाय के बीज वपन में राजस्थान की भूमिका की विद्वानों को समीक्षा करनी चाहिए। यद्यपि मेरा यह मत अन्तिम नहीं है, सुपरीक्षित भी नहीं है, तदपि राजस्थान के सन्दर्भ में तनिक विचारणीय अवश्य है। पुष्कर को सम्पूर्ण मान्यताएँ प्राप्त है और वह राजस्थान का अंग है यह भी सुदृढ़ है।

वशिष्ठ का आश्रम पुष्कर के ही समीप आबू पर्वत में, कर्दम ऋषि भी सिद्धपुर में निकट ही है, अरुन्धती का सम्बन्ध भी इसी शृंखला से है। इस प्रकार सम्पूर्ण परिवेश विषय के सन्निकट कर आलोचना के योग्य है। भगवान् नियमानन्द वैदूर्यपत्तन मूँगीपेठन महाराष्ट्र के अंगभूत दक्षिण से प्रकट है। जन्मस्थिति, निम्बार्क चरित्र इत्यादि सहायक प्रमाण हैं। माता-पिता, अरुण ऋषि तथा जयन्ती ऋषिका के साथ भ्रमण प्रसंग में ब्रज आगमन, गोवर्धन तलहटी में यमुना किनारे निम्ब वृक्षों के झुरमुट में आश्रम स्थिति, यह रचना, देवर्षि नारद का आगमन, दीक्षा एवं सर्वेश्वर स्वरूप प्रसाद ग्रहण आदि प्रमाणिक तथ्य विश्व विदित है। इसे 5100 वर्ष पूर्ण होने को है, इसी उपलक्ष में वृहत् सनातन धर्म सम्मेलन जगद्गुरु-ग्रन्थ समर्पण एक ऐतिहासिक घटना है। अनन्त उपलब्धियों के आचार्य राष्ट्र में वरेण्य है। आपश्री से निम्बार्क

सम्प्रदाय ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र धन्य है। विविधताओं से अनुरंजित इस जीवन दर्शन का अभिनन्दन समर्पण स्वयं अपने आप में अभिनन्दनीय बन गया है। श्री भट्टदेवाचार्य जी (युगलशतक) हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज (महावाणी) के जन्म तथा जन्मस्थल, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पृथक् से प्रकाश डालने का प्रयत्न होगा। किन्तु राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय के भौतिक प्रवेश का **द्वितीय चरण यदि निम्बार्काचार्य स्वामी परशुराम देवाचार्यजी से आरम्भ किया जाए** तो युक्ति संगत बन सकता है।

राजस्थान यवन संस्कृति के आक्रमण का प्रमुख केन्द्र रहा है। यवन शासकों के साथ उनके पीरों आदि का भी प्रभाव राजस्थान एवं इसके समीपवर्ती राज्य उत्तरप्रदेश पर रहा है। इससे सम्बन्धित अनेक घटनाएँ तावीजों, आसुरी अपचारों आदि की घटनाओं के समाधान में हरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज, परशुरामदेवाचार्यजी महाराज, स्वभूराम देवाचार्यजी महाराज की कई घटनाओं में उपलब्ध है, जिन्होंने पाखण्ड और पाखण्डियों को तहसनहस ही नहीं किया, ध्वस्त भी किया तथा अपने अलौकिक चमत्कारों से वैष्णवी महिमा शक्ति को सुप्रतिष्ठित भी किया। इस परिगणना में केशवकाश्मीरि भट्टाचार्य का परिगणन भी प्रासंगिक है। श्रद्धेय गुरुदेव हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज ने राजस्थान एवं सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धार हेतु परशुराम देवाचार्य जी महाराज को राजस्थान (राजपूताना) भेजा और यह उनका कर्मक्षेत्र बन गया। ब्रज से, मथुरा से राजस्थान में प्रवेश भरतपुर, कामा आदि के पथ से होता रहा है, किन्तु जयपुर भी सबल केन्द्र निम्बार्क सम्प्रदाय का रहा, इसे नकारा नहीं जा सकता। इस पर और शोध खोज, अन्वेषण प्रतीक्षित है। यों भ्रमण करते-करते किशनगढ़ राज्य के वन प्रदेश में आचार्यश्री का आगमन, स्थिति, सम्प्रदाय विस्तार, कार्य विस्तार, चमत्कारों की लम्बी शृंखला बहुश्रुत है। आचार्यश्री द्वारा निम्बार्काचार्य पीठ की स्थापना आदि राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की उपस्थिति के तत्कालीन पुष्ट प्रमाण हैं। पुष्कर में परशुराम देवाचार्य जी की समाधि, मीरां के गिरधर गोपाल का श्री विग्रह पुष्कर स्थित मन्दिर में, परशुराम सागर की प्रति सलेमाबाद तथा उदयपुर में उपलब्ध होना, परशुराम देवाचार्य जी महाराज के चित्र हाथ की कलम से जिनमें अनेक चित्र भी अंकित हैं, अन्य स्थानों के साथ साथ परशुरामद्वारा जयपुर तथा उदयपुर में भी उपलब्ध है। बड़ी माला का एक अंग जो परशुराम देवाचार्य जी महाराज की धूणी पर उपलब्ध है, उदयपुर में भी विद्यमान है। राजस्थान में परशुराम देवाचार्य जी महाराज की शिष्य शृंखला में विरक्त एवं गृहस्थों के गांव-गांव में सैकड़ों स्थान होंगे, जिन्हें निम्बार्क एवं निमावतों के नाम से पहचान प्राप्त है। निम्बार्काचार्य परम्परा में 37 वें आचार्य हरिवंश देवाचार्य जी ने भी राजस्थान में सम्प्रदाय का विस्तार किया। आपके ही शिष्य ब्रजभूषण जी महाराज ने हस्तेड़ा में स्थान बनाया, जो बड़े मन्दिर के नाम से विख्यात हैं। यहाँ के जागीरदार इसे अपना गुरुस्थान मानते हैं। जनता भी बहुत आदर सम्मान अर्पित करती है। किशनगढ़-रेनवाल कृष्ण बिहारी जी का बड़ा मन्दिर भी सम्प्रदाय में बहुप्रतिष्ठित है तथा हरिवंश देवाचार्य जी महाराज के शिष्य परम्परा का अंग है। यहाँ वर्तमान में महन्त श्री हरिवल्लभदास जी महाराज विराजमान है जो दर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री आदि उपाधि प्राप्त भी है। आपने स्थान की परम उन्नति की है, जो स्पृहणीय है।

गोपाल मन्दिर, रेनवाल — यह मन्दिर रेनवाल परम्परा का है।

अस्थल आश्रम उदयपुर — जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री नारायणशरण देवाचार्य जी महाराज महाराणा जयसिंह के निमंत्रण से जयसमुद्र का मुहूर्त करने उदयपुर पधारे तथा सूरजपोल स्थित खाली जमीन में छत्ते आदि लगाकर बिराजे। वहाँ आपके शिष्य हरिदास जी महाराज के शिष्य, प्रयागदासजी ने भवन बनाये तथा प्रतिष्ठा अर्जित की।

बाईजीराज का कुण्ड — निम्बार्काचार्य नारायणशरण देवाचार्यजी को बड़ी सादड़ी की बाईजीराज ने एक कुण्ड भेंट किया तथा आचार्यश्री ने अपने शिष्य ईश्वरदासजी को यहाँ नियुक्त किया। अभी-अभी स्थान के पूर्व महन्त राधावल्लभ शरणजी महाराज ने गौलोकधाम प्राप्त किया है, आपके शिष्य मोहन शरणजी महाराज वर्तमान में स्थान पर विराजमान हैं। इस स्थान ने भी अच्छी प्रगति की है।

राजाजी की छतरी, डूंगरपुर — राजाजी की छतरी डूंगरपुर में जगदीश मन्दिर के नाम से विख्यात है। यह स्थान राजगुरु के रूप में प्रतिष्ठित है। यहाँ महन्त सरयूदासजी एवं महन्त राधिकादासजी बहुत तेजस्वी हुए हैं। उनके शिष्य महन्त वैद्य राधाकृष्णदास जी गद्दी पर विराजमान है। स्थान की भी बहुत प्रगति हुई है तथा सम्पूर्ण स्थान का नवीनीकरण हुआ है। सम्प्रदाय में स्थान की अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेयो कॉलेज रघुनाथ मन्दिर अजमेर — यह प्रतिष्ठित स्थान महन्त रामकृष्णदास जी के समय से ही विकसित हो रहा है। वर्तमान में इसके महन्त पुरुषोत्तमदास जी महाराज हैं। कुंभ आदि पर्वों में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

पुराना लक्ष्मीनारायण मन्दिर, अजमेर — यह मन्दिर भी पुरुषोत्तमदास जी महाराज के संचालन में सेवारत है।

चारभुजा का मन्दिर, कायस्थ मोहल्ला, अजमेर — यह स्थान भी मेयो कॉलेज महन्तजी के अधीन है।

सत्यनारायण मन्दिर, अजमेर — यह भी इसी परम्परा का स्थान है।

नया लक्ष्मीनारायण मन्दिर, अजमेर — निम्बार्क सम्प्रदाय का यह स्थान अजमेर में विख्यात है तथा इसी शताब्दी में बना है। यहाँ समस्त शिष्य निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

नृसिंह मन्दिर होलीदड़ा, अजमेर — पूर्व महन्त हरिदासजी महाराज परम विद्वान् थे। निम्बार्क महासभा के अध्यक्ष भी रहे थे। आपके उत्तराधिकारी उपेन्द्र दास जी महाराज संस्कृत के श्रेष्ठ विद्वान् हैं तथा स्थान की प्रगति में संलग्न हैं।

गोपाल मन्दिर, चला — श्री पीताम्बरदेवजी ने गोपाल मन्दिर की स्थापना की। इसके संरक्षक ब्रजवल्लभ शरण जी महाराज निम्बार्काचार्य पीठ में अधिकारी भी थे। श्रीजी महाराज की आज्ञा से स्थान का कार्य संचालित होता है।

पीताम्बर की गाल, चला — यह भी पूर्ण प्राचीन स्थान है। कर्णपुरा, चौकड़ी, हरिजनपुरा, नारनोल, भगेरा स्थान की सोलह उप स्थान भी है। यह स्थान इस क्षेत्र में पंचस्थल माना जाता है।

लूणवा स्थान — यह स्थान भी किशनगढ़-रेनवाल से सम्बद्ध है। रेनवाल से 7-8 मील दूर है।

गोपाल मन्दिर, पलसाना — सीकर जिले का यह स्थान सुप्रतिष्ठित है। महन्त माधवदासजी ने स्थान का बहुत सम्मान बढ़ाया है। ये भगवत् शिरोमणि थे साधना के उत्कर्ष भी थे। इनके शिष्य मनोहरशरणजी सम्प्रदाय की युवा पीढ़ी के मुखिया है। सम्प्रदाय के कार्यों में अग्रणी रहते हैं।

राधामाधव मन्दिर, श्रीमाधोपुर — इसे हनुमान् दासजी महाराज ने विकसित किया। पलसाना से सम्बन्धित है।

भादी मंदिर, मीठड़ी — यह स्थान मारवाड में बहुत प्रतिष्ठित है। इस स्थान की परम्पराओं में लक्ष्मणदास जी महाराज ने एवं उनके शिष्य कृष्णमूर्ति सुखराम दास जी महाराज ने रसिक परम्परा अपना कर विशेष सम्मान अर्जित किया। वर्तमान महन्त राधाचरणदास जी महाराज अच्छे सिद्ध साधक हैं। पूरे क्षेत्र में स्थान का बहुत वर्चस्व है। रासलीला, कथा, भण्डारे आदि होते ही रहते हैं। स्थान की अनेक शाखाएँ तथा आश्रम हैं।

वशिष्ठ आश्रम, माउण्ट आबू — अस्थल आश्रम उदयपुर की परम्परा का यह प्रमुख स्थान है। इस स्थान का नवीनीकरण अस्थल आश्रम के महन्त स्वामी राधिकादास जी महाराज ने वहाँ पहुंचकर कराया तथा राजगुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए। यह स्थान पूरे राजस्थान में दर्शनीय है। यहाँ गोमुख से 12 महीना निर्झर झरना बहता रहता है। 'वशिष्ठ वचनामृत' नामक पत्र भी यहाँ से निकलता है। दर्शनार्थियों का तांता लगा ही रहता है। राधिकादासजी महाराज मिर्चैया बाबा थे और 120 वर्ष की आयु से अधिक बिराजे। आपकी परम्परा में महन्त अचलदास जी हुए। उन्होंने स्थानों को बसाया, सुयोग्य शिष्य परम्परा भी स्थापित की। आपने ब्रह्मचारी युगलशरण जी महाराज को गद्दी प्रदान की तथा आपने स्थान के व्यवस्थापक के रूप में अपने शिष्य भक्तवत्सलशरण जी को कार्यभार सौंप दिया तथा महन्त बना दिया। ये अच्छे सन्त है।

पाटनारायण, गिरवर सिरोही — यह स्थान भी अचलदासजी महाराज द्वारा विकसित हुआ, प्रकाश में आया वर्तमान में स्थान का महन्त पद का दायित्व मुखिया होने के कारण महन्त ब्रह्मचारी युगलशरणजी के पास है। आपने स्थान को अपनी चिकित्सा कौशल एवं सेवा भावनाओं से हिमालय की तरह ऊपर उठा दिया। सन्त सेवा, रोगी सेवा इस आश्रम में चरमोत्कर्ष पर है। इनके अनेक शिष्य क्षेत्र में विभिन्न मन्दिरों को संभाले हुए हैं। यह स्थान भी अस्थल आश्रम उदयपुर की ही शाखा है।

रामझरोखा, सिरोही — अस्थल आश्रम की शाखा के रूप में यह स्थान सिरोही नगर में विद्यमान है। विवाद निपट चुके हैं तथा महन्त कृष्णदास जी इसे सम्हालने में सक्रिय है। यह स्थान भी वशिष्ठ आश्रम से सम्बद्ध रहा है।

राजगुरु स्थान, सिरोही — यह स्थान भी अस्थल आश्रम तथा वशिष्ठ आश्रम से सम्बद्ध है। इसी स्थान में राधिकादास जी महाराज की समाधि भी बनी हुई है। स्थान प्रगति के इन्तजार में बैठा है। पूर्व महन्त गड़बड़दासजी का गोलोकवास हो चुका है। पूर्व महन्त जी एक ट्रस्ट बनाकर गये है तथा एक सन्त को उत्तराधिकार भी देकर गये है। यह भी राजगुरु स्थान है, क्योंकि मिर्चैया बाबा राधिकादासजी महाराज सिरोही के राजाओं के गुरु थे।

द्वारिकाधीश मन्दिर, रोहिड़ा — यह स्थान भी आबू की निम्बार्क सम्प्रदाय की परम्परा का एक भाग है।

शनि मन्दिर, सिरोही — महन्त कृष्णदास जी महाराज ने इस स्थान को अभी-अभी विकसित किया है। इसके साथ ही आबू परम्परा के अनेक स्थान बाबू मण्डल में विद्यमान है।

आबूरोड का स्थान — यह स्थान आबूरोड़ में है और विकसित होता जा रहा है। महन्त युगलशरण जी की अध्यक्षता में श्री संजयशरणजी इसका प्रबन्ध देख रहे हैं।

होद मन्दिर — यह श्रीमाधोपुर से 7 मील पश्चिम में है, इसका विशिष्ट स्थान है। होद स्थान से श्रीमाधोपुर, पलसाना, बवाई, खेतड़ी कुण्ड, पपूरणा, हरडंचा, पचलंगी, छापोली, छुआला, मुण्डावरा, जहाज, शील का बाड़ा, सैंसली, टिडणवास, रलावता आदि बाईस स्थानों की स्थापना की हुई है।

दुल्हपुरा मन्दिर — यह होद के निकट सुप्रतिष्ठित मन्दिर है।

नीम का थाना — यहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय के बहुत मन्दिर हैं। झोडला, कुवण्डा, छावनी, गनेश्वर, गॉवड़ी, टोडा, थानेश्वर, ग्वालिक, ऋषि के आश्रम आदि स्थानों पर कई स्थान है। यहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय की एक जमात भी है, जिनका अलग से गांव बसा हुआ है।

उदयपुर शेखावाटी — यहाँ तथा गुढ़ा, इन्द्रपुरा आदि जगह पर सम्प्रदाय के स्थान है।

चेतनादास जी की बावड़ी लौहार्गल — यह लौहार्गल तीर्थ के समीप है। यहाँ बावड़ी दर्शनीय है। इसकी एक शाखा अमरावती महाराष्ट्र में है, जिसे चेतनदास जी की बगीची के नाम से जाना जाता है।

लौहार्गल — राजस्थान का यह विशिष्ट तीर्थ है। इस पुरी में प्रायः सभी सम्प्रदायों के मठ मन्दिर है। निम्बार्कीय मन्दिरों में श्रीजी का (खालसाही) मंदिर जिसमें श्रीयुगलकिशोर जी के दर्शन हैं। वह आचार्यपीठ के आयत है। इसका खाकचौक है। श्रीगोपीनाथ मन्दिर तथा किरोडी कुण्डों का मन्दिर अच्छी जागीर वाले हैं, गृहस्थ वैष्णव सेवारत हैं। इधर फतहपुर, चिडावा आदि शहरों में श्री बिहारीजी के मन्दिर इसी सम्प्रदाय के है। चिड़ावा में श्री राधिकादासजी विद्वान् सन्त हुए है। लक्ष्मणगढ़ में सारस्वत गोस्वामी है, उनके कुल में श्रीमुरारीलाल जी सारस्वत आदि आयुर्वेद विशेषज्ञ है। रतनगढ़ के स्थान में पहले श्री मिहिरदासजी विशिष्ट सन्त थे, उनके शिष्य श्री रामरतनदास जी और उनके शिष्य श्री ब्रजदास जी से

कल्याण के यशस्वी सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार को आठ वर्ष की अवस्था में ही वैष्णवी दीक्षा प्राप्त हुई थी। बीकानेर में श्री नृसिंह मन्दिर, सीताराम जी की गुफा कई मन्दिर है। बीकानेर राज्यमाता (दादीया श्री पुगलानी महताबकुमारीजी) सम्प्रदाय की मर्यादा का विशेष पालन करती थी। बीकानेर में और भी कई नगरों में इस सम्प्रदाय के मठ मन्दिर है।

रूपजी का मन्दिर पीपाड़, जोधपुर — यह स्थान प्राचीन है।

गोपालद्वारा, पीपाड़ — यह स्थान तत्त्ववेत्ताजी की परम्परा का प्रधान स्थान है। इसकी शाखाएं रास, रायपुर, निमाज, लाम्बा आदि नगरों में भी है।

निमोलगोपल द्वारा, जोधपुर — यह अच्छा स्थान है।

गोपलद्वारा, बिहरोल — यह भी प्रतिष्ठित स्थान है। इस क्षेत्र के गांवों में सभी जगह निम्बार्क सम्प्रदाय के गोपल द्वारे है। पूजा यत्र तत्र गृहस्थ भी करते हैं।

गोपालद्वारा, जोधपुर — निम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद के सीधे नियंत्रण में है।

बाईजीराज का कुण्ड, जोधपुर — साधु सेवी स्थान है।

नौलखा बाग, जोधपुर — यह प्रतिष्ठित स्थान है।

गोवर्धननाथ जी, फलौदी — ग्वालाजी मन्दिर फलौदी ऐसे तीन मन्दिर है।

गोपलद्वारा, थोब, बालोतरा — इस स्थान का भक्तों पर बहुत प्रभाव है। प्रेमदास जी महाराज यहाँ महन्त थे।

गोपालद्वारा, बालोतरा — यहाँ भी एक स्थान है।

सेवा मन्दिर — सेवादास जी सलेमाबाद से ही आये थे।

ब्रजराजजी का मन्दिर, लावा — 1844 में स्थापित हुआ। इस मन्दिर की कडीला, चांदसेन, लदाना, संबेलिया आदि स्थानों पर मठ मन्दिर है।

गोपालजी का मन्दिर, डिग्गी — राजमाता ने बनवाया था।

श्रीकल्याण मन्दिर, बस्सी — सम्प्रदाय का एक विशिष्ट स्थान है जो प्रगति पर है।

गोपाल मन्दिर, आंधीधोराई — तत्त्ववेत्ता जी की परम्परा का स्थान बहुत प्राचीन है। जयपुर में पान के दरीबे में गोपालमन्दिर इसकी शाखा है। यह वि.सं. 1599 में बना।

गोविन्ददेवजी का मन्दिर, सामोत — वि.सं. 1813 में स्थापित हुआ। प्रतिमा बहुत मनोहर है। यहाँ गोविन्द संस्कृत पाठशाला चलती थी।

बिहारीजी का मन्दिर, भरतपुर — नागाजी महाराज चतुर चिन्तामणि जी द्वारा स्थापित है। इस

मन्दिर की महिमा विशेष है। नागाजी के दर्शन होते हैं। जनता एवं नरेशों की अगाध श्रद्धा है। पहले राजा नित्य दर्शन करने आता था। यदि कभी नहीं आ पाता तो पांच रुपये का जुर्माना भरता था। अब ये राज्य के नियंत्रण में है। यहाँ गूदड़ी के दर्शन होते हैं।

श्रीजी मन्दिर, भरतपुर — यह निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यों ने जो राजा की सहायता की, उस उपलक्ष में भेंट है। अभी कोई महन्त नहीं है।

नृसिंह मन्दिर, कामवन — यह बिहारीजी के मन्दिर भरतपुर से सम्बद्ध है।

गोपाल मन्दिर, विमल कुण्ड, कामवन — यह प्राचीन मन्दिर है।

मुरलीमनोहरजी का मन्दिर कामवन — यहाँ के महन्त रामकृष्णदास जी ने बहुत कार्य किया था।

गोपाल मन्दिर, गोहाना,

आदिबद्री स्थान, जिला भरतपुर

पुछरी स्थान, भरतपुर — अप्सराकुंड स्थान (गोवर्धन) भरतपुर और भी इस जिले में निम्बार्क सम्प्रदाय के स्थान है।

नीझरा स्थान, अलवर

शहपुरा स्थान, रामनिवास बाग, अलवर — इस स्थान के रामपुरा आदि उपस्थान भी है।

गोपाल मन्दिर गोपालगढ़ त्रिवेणी, अलवर — यह गोपाल गढ़ भी कहलाता है।

अनुमान मन्दिर, कांवठ — अन्य भी स्थान इससे सम्बन्धित है।

पृथ्वीपुरा स्थान — लपरा गोपाल जी के द्वारे का प्रतिष्ठित स्थान है।

दाऊजी का मन्दिर शाहपुरा मेवाड़ — यहाँ नागरिकों का प्रबन्ध है।

गोपालद्वारा, दूधाधारी भीलवाड़ा — निम्बार्काचार्य पीठ से सीधा सम्बन्धित है। यहाँ महन्त दीनबन्धुशरणजी महाराज बिराजमान हैं। यहाँ इन्होंने स्थान की बहुत उन्नति की। लोगों के कब्जे में गई जमीने छुड़वाई। छात्रालय, वेद विद्यालय चलाये। ये कर्मठ एवं सेवाभावी है। इसकी उपशाखाएँ भी है। भीलवाड़ा का प्रमुख स्थान है।

गोपालद्वारा सांगानेर, भीलवाड़ा — महन्त गोपालदासजी विद्यमान हैं। भागवत के कथा व्यास है। सम्प्रदाय में सर्वत्र इनकी महिमा विद्यमान है। अच्छे विद्वान् वक्ता, संचालक भी है। कुम्भ में बहुत सेवा करते हैं।

मिलवाला मन्दिर, भीलवाड़ा — महन्त बनवारीशरण जी ने इसे अभी-अभी विकसित किया है। खूब अच्छा चला रहे है। छात्र भी रखते हैं। प्रवचन भी करते हैं। नेतृत्व क्षमता भी है। वियोगी जी महाराज ने इन्हें विकसित किया था।

नृसिंह द्वारा गंगापुर, भीलवाड़ा — अस्थल आश्रम, उदयपुर की शाखा है। महात्यागी वल्लभदासजी महाराज सिद्ध सन्त थे। स्थान की बहुत प्रतिष्ठा है। जनमान्य है।

गोपालद्वारा पोटला, भीलवाड़ा — गंगापुर की शाखा है।

गोपालद्वारा मातृ कुण्डिया, चित्तौड़ — गंगापुर की शाखा है।

गोपाल द्वारा, कपासन — गंगापुर की शाखा है।

रघुनाथद्वारा, उदयपुर — गंगापुर की शाखा है।

गोपालद्वारा आरणी, भीलवाड़ा — गंगापुर की शाखा है।

उक्त सभी की बड़ी गद्दी अस्थल आश्रम उदयपुर है।

नृसिंह द्वारा माण्डल जिला – भीलवाड़ा — निम्बार्क सम्प्रदाय का स्थान है।

गोपाल मन्दिर, देवलिया, प्रतापगढ़ — अस्थल आश्रम से सम्बद्ध स्थान है।

छोटी सादडी, मेवाड़ — निम्बार्क स्थान है। मेवाड़ मण्डल मे इसकी ख्याति अच्छी है। अभी रामानन्द सम्प्रदाय के सन्त महन्त हैं।

गोपालद्वारा जूसरी — निम्बार्क सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के महन्त बनवारीशरण हैं, जो पहले आचार्यपीठ में अधिकारी थे। इनकी शिक्षा अस्थल आश्रम उदयपुर में हुई। ये बहुत ही परिश्रमी, सेवाभावी तथा विज्ञ है। मारवाड़ में इनका अच्छा प्रभाव है।

गोपालद्वारा, कानोड, मेवाड़ — अस्थल आश्रम उदयपुर की शाखा है। यहाँ गृहस्थ महन्त है।

जगदीश मन्दिर, सलूम्बर, मेवाड़ — जगदीश भगवान् का मन्दिर है तथा अस्थल आश्रम उदयपुर की शाखा है। यहाँ गृहस्थ महन्त है और वे डॉक्टर हैं।

नृसिंह मन्दिर, भीण्डर, मेवाड़ — अस्थल मन्दिर उदयपुर की शाखा है तथा गृहस्थ महन्त है। पुकार दैनिक पत्र निकालते हैं।

गोपाल मन्दिर, काँकरोली, मेवाड़ — अस्थल आश्रम, उदयपुर की शाखा है और गृहस्थ महन्त हैं।

इस प्रकार राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रवेश परशुराम देवाचार्य जी महाराज के समय से स्वीकार करना औचित्यपूर्ण है। पूरे राजस्थान में इसकी शाखाएँ प्रशाखाएँ फेली हुई है। इन सबका मूल अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य परशुरामपुरी पीठ सलेमाबाद उद्गम है, जिसके वर्तमान आचार्य जगद्गुरु **श्री श्रीजी महाराज राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज** है। जिन्होंने राजस्थान में सैकड़ों धर्म यात्राएं कर हजारों आध्यात्मिक प्रवचन उपदेश प्रदान कर अनेकों, ग्रन्थ लिखकर, अपनी परमोत्कृष्ट साधुता से, पाण्डित्य से, कवित्व से, सहृदयता से, आदर्शों से, करुणामयी भावनाओं से सम्प्रदाय को राजस्थान में सुप्रतिष्ठित कर दिया है। आपश्री के हजारों शिष्य राजस्थान ही नहीं पूरे भारत में विद्यमान हैं। ये गौरव देश में किसी आचार्य को सुलभ नहीं है, जो आपश्री को सर्वेश्वरकृपाप्रसाद से सुलभ हुआ है। आचार्यश्री

के व्यक्तित्व कृतित्व पर पर्याप्त कार्य हुए हैं जो पूरे राष्ट्र में सर्वविदित है। सम्पूर्ण राष्ट्र के समस्त धर्माचार्यों में श्रीजी महाराज परम वन्दनीय है। इसे एक स्वर से सभी ने स्वीकारा है। अभिनन्दन ग्रन्थ के माध्यम से मैं सम्पूर्ण मेवाड़ के पूर्व शासक, जनता जनार्दन तथा समस्त धर्म स्थलों की ओर से सविनीत अभिनन्दन समर्पित करता हूँ। नारायणशरण देवाचार्य जी महाराज के समय से ही समस्त आचार्यों का वरद संरक्षण अस्थल आश्रम को सुलभ रहा है। अस्थल आश्रम के पूर्व महन्त जी वर्तमानकाल तक भी आचार्यपीठ के प्रन्यासी रहे है और है। इससे बड़ा गौरव अस्थल आश्रम का और कोई नहीं हो सकता। हमारे शुभ तथा संकटमय क्षणों में आचार्यश्री का हम पर जो वरद संस्पर्श रहता है, यही हमारे ऊपर आचार्यश्री का महाप्रसाद है, जिसे हम आदर एवं श्रद्धापूर्वक सादर शिरोधार्य करते हैं।

आस्था, संस्कार आदि चैनलों के माध्यम से आचार्यश्री ने जो ख्याति प्रदान की है, वह अवर्णनीय है। युवराजश्री के चयन में जिस दूरदर्शिता का परिचय आचार्यश्री ने दिया है, वह हम सबके लिए अनुकरणीय है। श्रेष्ठ युवराज आचार्यश्री के पद्चिन्हों पर बढ़ रहे है। यह भी निम्बार्क सम्प्रदाय के लिए अमृत कल्प सुखद भविष्य है। मैं महाराजश्री के सुदीर्घ स्वस्थ जीवन की मंगलमय प्रार्थना भगवान् राधासर्वेश्वर श्री द्वारिकाधीश महाप्रभु से करता हुआ इस पावन लेखनी को यशस्वी मानता हूँ।

पुनश्च निम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद के सीधे नियंत्रण में पुष्कर में परशुरामद्वारा, भीलवाड़ा में गोपालद्वारा, जोधपुर में गोपालद्वारा, नागौर में गोपालद्वारा, अजमेर में राधासर्वेश्वर मन्दिर, गोपालद्वारा, नृसिंह मन्दिर, विजयगोपालजी मन्दिर, निम्बार्क गोपीजनवल्लभ मन्दिर, करकेड़ी गोपालद्वारा, गोपालजी मन्दिर, जगमोहनजी मन्दिर, जयपुर में निम्बार्क निकुञ्जबिहारी मन्दिर, औरंगाबाद में निम्बार्क प्राकट्य स्थल मूंगी, सीकर में गोपाल मन्दिर, भीलवाड़ा में दूधाधारी गोपालजी मन्दिर आदि मन्दिर आश्रम भी निम्बार्क सम्प्रदाय की पर्याप्त सेवा कर रहे हैं। सभी स्थानों में सन्त सेवा, विद्यार्थी सेवा, कथाभागवत, रास लीला, उत्सव परम्परा समारोहपूर्वक उत्साह से मनाये जाते हैं, जिसमें हजारों नर-नारी भाग लेते हैं। साथ ही राजस्थान से बाहर भी। आश्रम वृन्दावन में श्रीजी मन्दिर, ठाकुर श्रीरूपमनोहरजी, श्रीसहजबिहारीजी, श्रीनागरबिहारीजी, श्रीदानबिहारीजी, श्रीकृष्णचन्द्रमाजी, निम्बार्कनिकेतन, विहार घाट, राधासर्वेश्वर वाटिका, श्रीजी का बगीचा और श्री शान्तिविहारीजी विद्यमान है।

वृन्दावन में गोवर्धन के निकट निम्ब ग्राम में महान् तीर्थ स्वरूप निम्बार्क सम्प्रदाय का उद्गम दिव्य स्थान है। परशुरामद्वारा मथुरा, निम्बार्क भवन मथुरा, भजनदास मठा शोलापुर, महाराष्ट्र, नृसिंह टेकरी महू में भी बड़े-बड़े दिव्य आश्रम है, जो सम्प्रदाय के लिए गौरव के विषय हैं। इस प्रकार राजस्थान में विरक्त एवं गृहस्थ समाज में उक्त परिगणित आश्रमों के अतिरिक्त ज्ञात-अज्ञात हजारों स्थान एवं मन्दिर विद्यमान है, जिनका वर्णन भविष्य में प्रकाशित होने वाले 'निम्बार्क दर्शन' ग्रन्थ में पढ़ने को सुलभ होंगे।

स्थल मन्दिर, सूरजपोल, उदयपुर (राजस्थान)

Nimbarka and his Vedanta Doctrine

Prof. Satya Deva Misra,
Vice-Chancellor,
Rajasthan Sanskrit University, Jaipur.

Acarya Nimbarka, believed to be an incarnation of the Sudarśana, or the discus of Lord Viśnu, is the founder of the Svabhavika Bhedabheda School of Vedanta. His Vedanta school is also known as the Hansa Sampradaya, because of the belief that Lord Visnu preached the four Rsikumars- Sanaka, Sanandana, Sanatana and Sanatkumara, in the form of a "Swan". They gave this teaching to Devarshi Narada, their disciple. Who handed over the above teaching to Nimbarka and therefore, it is named after the Name of the teggener of the Sampradayees. In their opinion, this Vaisnava faith was received by Rsi Sanaka etc. from Bhagvana Hansa in the form of 'Srigopala Mantraraja'.

They had transmitted the above Mantra to Davarsi Narada, who had passed on the same to Acarya Nimbarka at the end of the Dvapara-yuga. Nimbarka was born in the hermitage of Maharshi Aruna in the village 'Mungi', situated in South near Paithan. Jayanti was his mother. After completing his studies of Vedas, he practised penance with his family in the village called 'Nimba', near Govardhana in the Braja. He received the above 'Mantra' here from sage Narada and availed an opportunity to serve the Lord in his 'Saligrama' form. Niyamananda was his family name. Once, the Creator God, Brahma, who takes meal during the daytimes only visited Niyamananda. He, willing to offer hospitality and meal to Brahma, performed miracle by showing the god Surya amidst the nearby Nimba tree even at the time of sunset. Brahma pleased with Niyamananda's divine power called him Nimbarka, the name by which he is known in the whole world.

Nimbarka founded his Vedanta doctrine of 'Svabhavika-bhedabhedavada' or 'Naturally Dualistic non-dualism' by writing commentaries on the Prasthanatrayi, i.e. the Upanisads, the Gita and the Brahmasutra, as also by writing five material works, namely, Dasasloki, Sriradhastakam, Prātahsmaranastotram, Srikrsnastavaraja and Vedanta-parijatasaurabham. The Vedantaparijatasaurabham has a number of Commentaries. An exhaustive commentary on it has been attempted by his disciple Srinivasacarya, who is regarded as an incarnation of Lord Visnu's Pancajanya conch. Its another voluminous commentary, Prabhavrthi has been written by Kesavakashmiri Bhattacharya. Bhattacharya's commentary on the Gita, Tatva-prakasika and his Tantra text Kramadipika are vitally important works of the Nimbarka Vedanta. Several classics of this Vedanta

system are also available in the 'Braja Bhasa' and Hindi. The Vugalaśataka of Shri Bhattacharya Srimahavani of Sri Harivyasadevacarya, the Sribrajadasi Bhagavata of Sri Bankavati Brajakunwari or Brajadasi and the Jayasahasujasa-prakasa of Mandana Bhatta are the significant texts, belonging to this category.

Sriradhasarvesvarasaranadevacarya Sri "Sriji" Maharaja, the present preceptor Sri Nimbarkacarya-pitha at Salemabad is a versatile genius. He is the embodiment of talented preacher, celebrated lyricist and writer of valuable poems and literary works. He is well-versed in Sanskrit, Hindi, Braja, Bengali and Rajasthani languages. The 'Bharata-bharati-vaibhavam, the Bharatvīragaurava and the Nimbārkacaritam are some of his outstanding creations, which demonstrate his reverence for the nation and the Adyacarya Nimbarka.

In the Nimbarka Vedanta, Srimadbhagavatam constitutes its prasthana-catustayi. Hence, Lord Krisna in this system is Parabrahman and Sri Radhi is his Divine consort. Their grace alone can save the jivas or souls from the pangs of birth and death.

Nimbarka admits three entities, namely cit(conscious), acit(non-conscious) and Isvara or Brahman and believes that all these entities are both different(bhinma) and non-different(abhinna) from each other.As the difference and non-difference between a cause(milk) and its effects(curd etc.) is a natural phenomenon, the difference and non-difference between Brahman and the other two entities are also natural. In the 'Svabhavika-bhedabheda' system of Nimbarka, the Cit entity is the jiva, or individual soul, the acit entity is jagat or world and Isvara, identified with Lord Sri Krsna is the Supreme entity. They are known respectively as bhoktr, or the enjoyer, bhogya, or, the enjoyable and Niyantr, or, the controller (governor).

The cit or individual soul is of the nature of knowledge(jnanasvarupa), though not in the sense of Sankara Vedanta. It is knowledge as well as the possessor of knowledge at the same time, like the sun which is both light and the source of light. The relation of individual soul to its attribute is that of dharmin(the qualified) to the dharma(the qualification). Just as the sun and the sun-light, though identical as light (taijasa), are different from each other, even so the soul, who is knowledge and his attribute, knowledge, is non-different being knowledge, and at the same time different from and related to it as the qualified (dharmin) and the quality(dharma). In fact, both a difference and non-difference between the dharmin and the dharma, and the extreme similarity between them implies, not necessarily their absolute identity, but only a non-perception. Though jiva is atomic(anu), it is able to experience pleasures and pains of the whole body. because of its possession of the omnipresent quality of knowledge. The jiva is the agent of activity(kartr)[3]. The scriptural texts which deny activity are meant to suggest the dependent character of the activity of the jiva. In fact, the knowledge or activity of jiva is not independent. Both of them depend on Isvara. As Isvara is the controller, the jiva in all states has the nature of being controlled(niyamyatva).

The acit(non-conscious) world is of three kinds: (1) aprakrta or not-derived from the primordial matter or prakrti, such as the sun like refulgence of Isvara, his abode, his ornaments etc. (2) prakrta or derived from Prakrti, consisting of sattva, rajas and tamas qualities. The prakrta world includes prakrti, mahat, ahainkara etc, similar to the twenty-four principles recognised in the sankhya system. (3) Kala or time. Prakrti and constitute basic principles of cosmic existence. These three categories in their subtle forms are also eternal as the cit or individual souls[4].

The third principle, according to Acarya Nimbarka, is the Highest-self, the Brahman or Krsna. Krsna, being the supreme self, is regarded as possessing all auspicious qualities and is naturally free from faults of ignorance, egoism, passion and attachment[5]. He has four forms(vyuhas) i.e. Vasudeva, Samkarsana, Pradyumna and Aniruddha and also appears in the incarnations (avatars) of Matsya, Kurma etc. He is both the material(upadana) cause and the efficient (nimitta) cause of the universe. He is material cause in the sense that he enables his natural saktis(capacities) to be manifested in gross forms. He is also the efficient cause, because he brings about the union of the souls with their respective fruits of actions and means of enjoyment. The creation of the universe is therefore manifestation (parinama) of what exists subtly in the nature of god and not an illusion(viverta) or superimposition on Brahman, which is against all reasons. Nimbarka criticises the viverta (illusion) theory of the world, and argues that, if the world were not real, it could not be superimposed on another.[6]

The relation between the three principles, i.e. the jiva(soul) or cit, the world or acit and Isvara is neither of absolute identity or non-difference, and nor of absolute difference. The non-differential relation is not tenable, because it would contradict those texts of the Upanisads, which speak of difference between the above three principles and would also involve confusion between their natures and attributes. The differential relation is also not possible, because it would be against 'sarvam khalvidam brahma' (Chandogya Upanisad,3.14.1) 'tattvamasi' (ibid, 6.8.7, 6.9.4, 6.11.3, 6.12.3, 6.13.3, 6.15.3, and 6.16.3) and other such passages which declare their identity. If Brahman is regarded as quite different from cit and acit, it would cease to be all-pervasive and all-ruling and would be as limited as the individual soul (jiva), and, therefore, could not be the ruler or governor(niyamaka) of the cit and acit principles. The suggestion that non-difference is the reality, while difference is due to limiting adjuncts or upadhis is also not acceptable, because it would be to subject Brahman to conditions. In this case, Brahman would cease to be pure and would be susceptible to the faults of upadhis, would experience pleasure, pain, hatred etc. and would undergo modifications, which is contrary to its real nature. The fact of the matter is that both difference and non-difference are natural and equally real.[7] The cit and acit are different from Brahman, in-as-much as they are described by the Sruti as possessing attributes and capacities distinct from those of Brahman; at the same time they are non-different from Brahman in the sense that they are absolutely dependent on it and cannot have an independent

existence by themselves. Thus bheda or difference means the possibility of an existence, which is separate at the same time dependent(para-tantra-satta-bhavah) while a-bheda or non-difference means the impossibility of an independent existence(svatantra-satta-bhavah). Thus in the sentence 'tattvamasi' the word tat signifies the Brahman which is omniscient, omnipotent, of independent existence, and the self of all, the word tvam signifies the individual soul which depends for its existence upon the Brahman, and the word asi is the copula signifying the relation of the two which is difference, not inconsistant with non-difference, and which can be illustrated by the relation between the fire and the sparks or by that between the sun and his lustre.[8]

According to Nimbarka moksa or deliverance results from Bhakti, which involves a knowledge of the supreme reality and the nature of the individual soul. It removes the erroneous identification of the soul with the body, the senses or the mind, dependence on another than god and other hindrances to god-realisation. Bhakti is not meditation (upasana). but love and devotion. Dependence on god of the jiva is Prapatti, which culminate from (i) a resolution to yield (anukulyasya samkalpah), (ii) the avoidance of opposition (pratikulyasya varjanam), (iii) a faith that god will protect (raksisyatiti visvasah), (iv) acceptance of him as saviour (goptrtva-varanam), (v) throwing one's whole soul upon him (atmaniksepah) and (vi) a sense of helplessness (karpanya). God's grace extends itself to those who are possessed ot the above six constituents of praptti, i.e. who are prapanna, and by that grace is generated Bhakti consisting of special love for him, which ultimately ends in the realisation (saksakara) of the Paramatman.

The Svabhavikabhedabhedavada of Nimbarka has similarities with the doctrines of Bhedabheda, theorized by Bhertrprapanca before Sankara and Visistadvaita founded by Ramanuja. The works of Bhartrprapanca are not available, but the details of his theory may be gleaned from the post-Vedanta writings, particularly those of Sankara and his disciple Suresvara.[9] According to Bhertrprapanca, Brahman is the absolute reality, and there is no contradiction in admitting Brahman-one in its supreme or transcendental nature and many in relation to the diversities of the world. The simultaneous difference and non-difference of Brahman has been explained by Bhartrprapancae on the analogy of the 'snake' and its 'coil'[10] or the 'sun' and its 'rays'.[11] Just as the coil, a particular state of snake, is different from the same due to snakeness inherent in its even so the jiva is different from Brahman because of its individualness, and identical with the same owing to its essential form of brahmatva. The relation between Brahman and the jiva is also that of identity-in-difference. Following are the striking differences between the Bhedabheda doctrines of Bhartrprapanca and Nimbarka. The former, being an old doctrine, regards Brahman as the supreme Reality, while the latter identifies Brahman with Srikrsna. Bhartraprapnca advocates the combination (samuccaya) of jnana and karman for the attainment of moksa, but Nimbarka believes that Bhakti alone is the means to moksa.

These are resemblences between the Vedanta doctrines of Ramanuja and Nimbarka too. Both regard difference and non-difference as necessary, and treat animate and inanimate existences as attributes of Brahman. But while Ramanuja emphasises more the principle of identity, Nimbarka views them equally real, and of the same importance. Again Ramanuja regards the individual souls (cit) and the world (acit) as the attributes of Brahman; and his view emphasises the non-duality of the supreme Lord, qualified by the individual souls and the world (cidacidvisista paramesvaradvaita). Nimbarka disputes this view on the ground that the presence of a body does not necessarily imply the possession of attributes; for an attribute has for its object the distinction of the thing which possesses it from others which do not possess it. If cit and acit are attributes of Brahman, then what is the reality from which Brahman is distinguished by the possession of these marks ?[13]

In view of the above account, it may be concluded that the Svabhavikabhedabhedavada of Nimbarka has excelled not only the other dvaitadvaita doctrines developed before it or after, but has swayed the minds and hearts of millions of devotees by initiating them into the Bhakti of Sri krisna which is the casiestrt path of deliverance(moksa).

---

1. Indian philosophy, Vol. II, p. 751
२. ज्ञानस्वरूपं च हरेरधीनं शरीरसंयोगवियोगयोग्यम्। अणुं हि वीर्यं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववत्वं यदभन्तमाहुः॥ (दशश्लोकी,१)
३. कर्ण शास्त्रार्थवत्त्वात् (ब्रह्मसूत्र, २.३.३३)
४. अप्राकृतं प्राकृतरूपकं च कालस्वरूपं तदचेतनं मतम्। मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र॥ (दशश्लोकी,३)
५. स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम्। व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्॥ (दशश्लोकी,४)
6. S. Radhakrishnan, Indian Philosophy, Vol. 2, p. 753
7. Cf. Anandagiri's Commentary, Sāstraprakāsika on Suresvara's Brahadāranyaka-vārtika 4. 3.16 39 which explains Bhartrpraparica's view of Bhedabhed in the following line. भेदाभेदात्मकं रूपं स्वाभाविकम्
8. V.S. Ghate, The Vedānta, p.p. 31-32
9. See my paper Bhartriprapancha : A vedantin of Pre-Sankar Era in silver jubilee volume of the journal of oriental Research, Vol. xxx-xxxi (Madras, 1981), pp 125-33.
10. Brahma-sūtra, 3.2.27
11. Ibid. 3.2.28
12. यथाऽऽहित्वेनाभेदः। कुण्डलाख्यस्य सर्पावस्थाविशेषस्य कुण्डलत्वेन भेदः तथा जीवस्य ब्रह्मत्वेनाभेदो जीवत्वेन भेदः (गोविन्दानन्द, भाष्यरत्नप्रभा, पृ. ६५८ निर्णयसागर संस्करण, १९३४)
13. S. Radhakrishnan, Indian Philosophy Vol. 2, p. 755-56.

* * *

॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

पञ्चम-खण्ड

हार्दिक-भावाञ्जलिः
एवं
अभिनन्दन-पत्राणि

पञ्चम-खण्ड
अभिनन्दनानि

सूचनिका

|| श्रीः सर्वेश्वरो विजयते ||

सनद

पर्म पूज्य प्रात: स्मर्णीय श्रीमन्निखिल महिममण्डलाचार्य्य

चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, यतिपति दिनेश

अनन्त श्री विभूषित

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य जी

महाराज के कर कमलों में

श्री चर्णों की कृपा आज यहाँ नन्दन बन है

नवदल है नवभाव चल रही प्रेम-पवन है

खिली हृदय की कली प्रफुल्लित सुमन सुमन है।

ऋतुपति का आगमन आपका शुभागमन है।

17.9.56

लेखक आ. छाजूराम मुनीम शण्ठकवि

आगरा सेठ साधूराम कालीचर्ण

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

॥ श्रीहरिः ॥

अनन्तश्रीभूषितानामखण्डभूमण्डलमध्य-वर्त्तिद्वैताद्वैतमतमाजुषां महामहिम्नां
निखिलभारतीय मनुतनुजनुषं मूर्द्धाभिवन्दितपादारविन्दानां
श्री श्रीजी निम्बार्काचार्य प्रधान-पीठाधिपानां
सलेमाबाद
राजस्थान मण्डलमलंकुर्वाणानां
श्री श्री श्रीजि-महाराजानां करकमलयोः सादरं सबहुमानं च
समर्प्यते

★ अभिनन्दन-कुसुमाञ्जलिः ★

निर्गुणोपि गुणग्रामो यादवेन्दु-कलानिधिः॥
सर्वेश्वरस्सदापायादपायादरिषड्जितः॥1॥

अयि महामहिमानः!

यदत्र पुण्यपवित्रतमे भारते विश्ववन्द्य-महर्षिवरिष्ठैर्दर्शितधर्ममार्गस्याविदूषकानां पाश्चात्यचाकचक्येन स्वात्मानं बहुमन्यमानानां साक्षात्करालकलेरेव कलाकलितकलेवराणां मध्येवर्त्तमानायाः भूयो भूयस्तैरेव सुतरां दन्दह्यमानायाः धर्मभीरुजनतायाः दैन्यं दृष्ट्वा कस्य न सहृदयस्य चेतस्तर्षति, तत्र भवादृशा एव पुरुषधुरीणाः आचार्यवर्य्याः शरणम्।

भो भारतीय-संस्कृतिप्राणाः!

विश्वस्मिन् सर्वत्र करालकलिकालकुठारेणोच्छेदितधर्मशास्त्रमहीरुहां स्ववचनामृतवारिसेकेन पुनस्तान् पल्लवयन्तः, सुरभारत्याः समुद्धाराय बद्धपरिकरास्तत्र भवन्तो भवन्तः निगमतरुकुसुमसौरभं प्रसारयन्तु इति प्रार्थयामहे।

हे सनातनधर्म्मरक्षण-धुरीणाः!

समेषामस्माकं महाराणाप्रतापप्रभृतिपराक्रमपावितमेदपाटमहीमण्डलान्तर्गतोदयपुरवास्तव्यानां यात्रामिषेण भारतं परिभ्रमन्तो भवन्तः शुभेऽस्मिन् दिवसे चेतसां हर्षप्रकर्षमेधयन्ति।

सतामन्तर्ध्वान्तं मदमखिलमाविश्य तुदति,
सदैनोजालं या दशति सकलं संस्तुतिमताम्॥
अधिष्ठात्री वाचां तव मनसि रूढा भगवती,
श्रियां गर्वोद्रेके कथमपि पदं नैव दधताम्॥1॥

विक्रम संवत् 2013
कार्तिकी पूर्णिमा, रविवासरः,
उदयपुरम् 18 नवम्बर, 1959

वयं स्मः श्रीमतां विधेयाः
उदयपुरनगर-वास्तव्याः।

निखिल-महीमण्डलाचार्य चक्रचूडामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, यतिपति-दिनेश प्रभृति विविध-विरुदावली विराजित, अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री

राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य

श्री 'श्रीजी' महाराज

के चरणों में सादर समर्पित

✶ *अभिनन्दन-पत्र* ✶

अभिनन्दनीय आचार्य चरण!

श्री प्रयागराज कुम्भ पर्व के लिए प्रस्थान करते समय मार्ग के प्रथम विश्राम में श्रीचरणों का स्वागत व अभिनन्दन करती हुई स्थानीय जनता तथा जयपुर एवं राजस्थान के स्तर की विभिन्न संस्थायें आज **'गागर में सागर'** की तरह अमन्द आनन्द व जीवन की कृतार्थता का अनुभव कर रही है।

श्रद्धेय श्री श्रीजी महाराज!

आपका जयपुर के साथ दूध-पानी का जैसा योग रहा है। महाराज जयसिंह द्वितीय राजा होने से पूर्व ही आपके पूर्वाचार्य श्रीवृन्दावनदेवजी महाराज से पूर्णतः प्रभावित हो चुके थे और इन्हीं के सत्परामर्श से सं. 1784 वि. माघ कृष्ण 5 बुधवार के शुभ समय में जयपुर की नींव लगाई गई थी। तदनन्तर अनेक पीढ़ियाँ तथा यहाँ ही महाराजश्री के विराजने के कारण जयपुर को इस सम्प्रदाय के आचार्यपीठ का जैसा गौरव मिलता रहा है। आज श्रीचरणों के सान्निध्य से इस प्राचीन गौरव की स्मृति ने पुनः नवीनता प्राप्त की है।

सम्माननीय आद्याचार्य पीठाध्यक्ष!

अन्य वैष्णवाचार्यों के पूर्ववर्ती जगद्गुरु श्री आद्य शङ्कराचार्य ने भी अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य में जिनके भाष्य की पंक्तियों का यथावत् उद्धरण देकर आलोचना की है, उन्हीं श्री श्रीनिवासाचार्य चरण के गुरु स्वामी श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र का आद्याचार्य के रूप में प्रख्यात होना एक ऐतिहासिक तथ्य है। इसी आद्याचार्य पीठ को अपनी अध्यक्षता से अलंकृत करके आप सम्प्रदाय की श्रीवृद्धि कर रहे हैं—यह वैष्णवजगत् के लिए परम हर्ष का विषय है।

अनन्तश्रीविभूषित!

पूर्वाचार्यों ने जिस प्रकार विधर्मियों से देश की रक्षा के लिए आध्यात्मिक बल का भी प्रयोग किया था और वे समाज को सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित रखने के लिए यथासमय अनेक लोकोपकारक प्रवृत्तियों का संचालन करते रहते थे, उसी प्रकार आज का समाज भी अपने तन, मन, धन के साथ श्रीचरणों में नत-मस्तक होता हुआ देश की अनेक विषमताओं के अपाकरण एवं भगवती भक्ति भागीरथी के पावन सुधा-प्रवाह की आपसे पूर्ण आशा कर रहा है।

जगद्गुरो!

इस सम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त ने द्वैत व अद्वैत–किंवा भेद व अभेद–इन दोनों ही आपस में विरुद्ध तत्त्वों का विभिन्न श्रुति-वचनों के अनुसार अपने में एक मधुर समन्वय किया है। इसी प्रकार विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित समाज की सहस्रधाराओं का भी एक सरस्वान की ओर आवर्तित होना आज के युग की प्रबल मांग है, अतः धार्मिक जगत् के सभी वर्ग अपनी अपनी रीति-नीति व मर्यादाओं का अपने में संरक्षण करते हुए भी एक सूत्र में सुदृढ संगठन के लिए श्रीचरणों के अमोघ आशीर्वाद की कामना करते हैं।

श्री सर्वेश्वर स्वरूप!

श्री सनकादिकमुनीश्वरों के सेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु का श्रीविग्रह मूर्तरूप से कण्ठ का आभूषण, ध्यान रूप से मानस का सरोरुह, तेजोरूप से सर्वाङ्ग में व्यापक होकर सबको आनन्दित कर रहा है। श्रीमुख से आविर्भूत **'आचार्यं मां विजानीयात्'** इस श्रुति के अनुसार हम भावुक भक्तों को निस्सन्देह श्री सर्वेश्वरस्वरूप में ही श्रीचरणों के दर्शन हो रहे हैं।

करुणा-सुधा-सिन्धो!

विभिन्न सन्त महात्माओं के उपदेशामृत की वर्षा द्वारा जो यह क्षेत्र सदा रसाप्लावित बना रहता था, वह उक्त अभाव के कारण अब नीरस होने लग गया है–अतः भक्तिबीजांकुर को सुरक्षित, पल्लवित, पुष्पित एवं फलित करने के लिए पुनः प्रेरणादायक उपदेश-सुधावृष्टि की आवश्यकता है। श्रीचरणों की सहज करुणा समय-समय पर इसकी पूर्ति अवश्य ही करती रहेगी–ऐसी हमारी सुदृढ़ धारणा है।

हम पुनः श्रीचरणों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए श्री सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि इस लोक में सुदीर्घकाल तक सदुपयोग सुधा वर्षा के साथ श्रीचरणों का सान्निध्य बनाये रखें।

हम हैं आपके–

श्री राजस्थान भारत साधु समाज, राज. वैष्णव समाज, राज. धर्मसभा (मौद मन्दिर), राज. संस्कृत साहित्य सम्मेलन, राज. विद्वत् परिषद्, राज. आयुर्वेदिक यूनानी तिब्बिया कालेज, स्थानीय वैदिक साहित्य संसद्, श्रीकर्मकाण्डि मण्डल, स्वाध्याय-मण्डल, श्री निम्बार्क सत्सङ्ग मण्डल, श्री सर्वेश्वर सत्सङ्ग मण्डल, भागवत संघ, श्रीवैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, श्री सनातन धर्म विद्यापीठ, श्री वेद-वेदाङ्ग महाविद्यालय, श्री बजरंग व्यायामशाला, श्री गौड़ विप्र उच्च मा. विद्यालय, श्री सनाढ्य सभा, श्री गुर्जरगौड सामाजिक संस्थाओं, विद्या मन्दिरों – पत्र पत्रिकाओं के पारिवारिक सदस्य!

शुभ मिति–पौष शुक्ल 10 रविवार सं. 2022 वि.।
जयपुर नगर दि. 2 जनवरी, 1966 ई.

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणीनां सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-यतिपतिदिनेश-प्रभृतिविविध- विरुदावलि-विराजितानाम्

अनन्तश्रीविभूषितानां जगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वराणां

श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजीमहाराज

इति प्रख्याताऽभिधानानां करकमलेषु सादरं समर्पयते

✶ अभिनन्दन-पत्रमिदम् ✶

अयि जगद्वन्द्याः!

जयति जयति दिव्यं धाम वृन्दावनाख्यं, जयति जयति तत्र श्यामगौरस्वरूपम्।
युगलमखिल-सारं दिव्यवृन्दावनस्थं निजसहचरिसेव्यं वाङ्मनोभिर्न गम्यम्।।

हृदयतिमिरहारी नैष्ठिकब्रह्मचारी सकलभरतखण्डे ज्ञानदीप्तिप्रसारी।
अरुणमुनिसुतः श्रीनिम्बमार्तण्डदेवो जयति मुनिवरोऽसौ सर्वकल्याणमूर्तिः॥

वन्दे श्रीनिम्बार्कप्रभुपीठपतिं जगद्गुरु देवम्।
श्रीसर्वेश्वरशरणं प्राग्राधेत्यक्षरोपेतम्॥

श्रेयोविधानं तपसां निधानं मनोन्धकारं सुतिरोदधानम्।
श्रीवैष्णवाचार्यकुलप्रधानं वन्दामहे तं कथिताऽभिधानम्॥
सर्वेश्वराऽऽराधनमात्रचित्तं स्वीयोपदेशैर्जगदुद्धरन्तम्।
संदर्शनेनैव कृतार्थयन्तं वन्दामहे श्रीगुरुमार्तबन्धुम्॥

श्रीमन्त आचार्य-पीठाध्यक्ष महाभागा:!

वेदेभमुनिचन्द्राख्ये (1784) वैक्रमे वत्सरे शुभे। माघे मास्यसिते पक्षे पंचम्यां बुधवासरे॥
श्रीवृन्दावनदेवस्य श्री गुरोराज्ञया ध्रुवम्। जयपत्तननिर्माणं जयसिंहेन कारितम्॥
द्वितीयजयसिंहोऽसौ नृप आसीन्महामतिः। न केवलमसावेव हंसवंशानुगोऽभवत्॥
भवत्पूर्वाचार्यवरैरत्रत्याः प्रत्यशो नृपाः। दीक्षितास्तेन निम्बार्कवंशः पूज्यतमो हि नः।

श्रीगिरिधारी शरणो देवः श्रीमाधवं निजं शिष्यम्। जयपत्तनस्य भूपं चक्रे स्वीयाऽऽशिषा।
आस्ते श्रीमानसिंहोऽपि जयपत्तनभूपतिः। श्रीकृष्णशरणशिष्यः श्रीनिम्बार्कमताः।
राजभिः सहितो राजन्नत्रत्यो हि प्रजाजनः। प्रायशस्ते पदाम्भोजदासो नास्त्यत्र सः।
अतः प्रभो कृपादृष्ट्या रक्षणीया वयं सदा। ब्रूमः किं महिमानं ते जयपत्तननायकाः।

अनन्त श्री विभूषित जगद् गुरो!

श्रीमन्निम्बदिवाकरेण रचितः प्रातःस्तवो यः पुरा तद्भाष्यं युगतत्त्वबोधनपरं सम्यग् विरच्य त्वया।
श्रीमन्! विश्वजनोपकारकधिया भाषाऽनुवादः कृतः। जातं तेन महीतलेऽत्र भवतः शुभ्रं यशोमण्डलम्॥

पंचस्तवी या भवता रसभावसमन्विता। रचिता भावुकानां सा मोदमातनुते हृदि।
गीतिका युगलस्यापि श्रीमता रचिता शुभा। श्रीमद्भागवतस्यास्ति गोपी गीताऽनुसारिणी॥
सर्वेश्वरस्तवादीनां यास्त्वया रचना कृताः। आह्लादयन्ति चेतांसि रसिकानां हिताः सदा॥

करुणावरुणालय!

सर्वेश्वरो यस्य कण्ठे हृदये च निरन्तरम्। विराजते तस्य यशो वर्णने न क्षमा वयम्॥
प्रार्थयामो वयं सर्वे भवन्तु करुणामयम्। श्रीसर्वेश्वरसेवायां रतिः स्यान्नो भवे भवे॥
अद्य धन्याः वयं सर्वे धन्यं च जयपत्तनम्। भवादृशां सतां सङ्गो नाऽल्पपुण्येन लभ्यते॥

विनीत :
श्रीरामचन्द्राचार्यः
(भू.पू. साहित्य-प्राध्यापकः
म. सं. कालेजः जयपुरम्)

भवदीया वयम्

मार्गशीर्ष शु. 5 सं. 2026 वि.

समर्पका :
जयपुर-वास्तव्याः धर्मानुयायिनो
भक्तजनाः

अनन्त श्रीविभूषित परमभागवत श्री श्री 1008 निम्बार्काचार्य विद्वद्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

के कर-कमलों में सादर समर्पित

❀ अभिनन्दन-पत्र ❀

परम अभिनन्दनीय !

जीव-कल्याण की सतत साधना में निरत आपने परम आराध्य श्रीकृष्ण भगवान् एवं रासेश्वरी परम आराध्या राधा की नित्य विहार लीला भूमि इस पावन-व्रजस्थली की यात्रा के सन्दर्भ में मथुरा पधार कर हम लोगों को अत्यन्त अनुगृहीत किया है। पवित्र सलिला, सघन द्रुमपुञ्ज आवृता, कल-कल निनादिता, पापापहारिणी कलिन्दजा की तटवर्तिनी भगवान् श्यामसुन्दर की जन्मभूमि यह मथुरापुरी आपके निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र है। आपके ही सम्प्रदाय के परम भागवत श्री केशव-काश्मीरी, श्रीभट्टदेव तथा श्रीहरिव्यासदेव की समाधियों से यह पूरी गौरवान्वित है। निम्बार्क सम्प्रदाय के मथुरा स्थित साधकों के नारद टीला, ध्रुव टीला, राधाकान्त का मन्दिर, विश्राम घाट, परशुराम द्वारा एवं हनुमान् मन्दिर प्रमुख साधना-पीठ हैं। वृन्दावन जहाँ के कि निकुञ्ज-पुञ्जों में परम उपास्य भगवान् श्रीकृष्ण और परम उपास्या श्रीराधा का नित्य विहार-क्रम चलता रहता है, जिसे भक्त गोपीगण निकुञ्ज-रन्ध्रों से देख-देख अनन्त आनन्द की अनुभूति करता है, इस मथुरा का ही अंगभूत है। अपनी ही इस नगरी में आपके दर्शन-लाभ से पवित्र परम भाग्यशाली हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

परम भागवत !

आप श्री निम्बार्काचार्यजी द्वारा प्रवर्तित चतुः सम्प्रदाय में प्रमुख निम्बार्क सम्प्रदाय के पीठाधीश के रूप में परम वन्दनीय हैं। उक्त सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्रीनिम्बार्काचार्यजी ने दाक्षिणात्य होते हुए भी पराभक्ति रस आस्वादन कर पहले गोवर्द्धन की तलहटी, तदनन्तर नीम गाँव में अनुभूत रस का प्रस्रवण किया। श्रीनिम्बार्काचार्य के आविर्भाव से कृष्ण तथा राधा विषयक भक्ति-भावना का सरस पथ प्रशस्त हुआ। तब से यह भक्ति-भाव की स्रोतस्विनी निरन्तर प्रवाहित है। सर्वश्री श्रीनिवासाचार्य, देवाचार्य, केशव-काश्मीरी तथा श्री भट्ट आदि आचार्यों ने उसके प्रवाह को अक्षुण्ण रखा है। श्री भट्ट जी ने रसोपासना के उस अद्भुत एवं अलौकिक रस को हिन्दी काव्य-धारा में भी बहाने का सूत्रपात किया। इसके अनन्तर श्री हरिव्यासदेवाचार्य आदि उनके अनन्तर वर्तियों ने जो भक्ति-भावक परम सरस काव्य-धारा प्रवाहित की, उसने हिन्दी के भक्ति साहित्य में असाधारण समृद्धि की है। ब्रज-भाषा-

साहित्य उनके द्वारा की गई इस सेवा के लिए सदैव ऋणी रहेगा। इस दिशा में युग-बोध की छाया में परिवर्तित परिस्थितियों में अभी भी बहुत कुछ करना अवशेष है। निम्बार्क-दर्शन एवं निम्बार्क साहित्य के प्रसार-प्रचार की दिशा में सतत जागरूक रहने की अपेक्षा है। रस का जो मादव, जो रहस्य युगों तक परम गोप्य रहा है, जीव-कल्याण की दृष्टि से उसकी व्यापक विवृत्ति अब अनिवार्य हो गई है। भौतिकवाद के आतिशय्य से विपन्न जीव को त्राण देने के लिए निम्बार्क सम्प्रदाय का मङ्गलमय यह सरस पथ अब सभी के लिए उन्मुक्त करना परम अपेक्षित है।

प्रमुख पीठेश्वर !

श्री परशुराम देवाचार्य द्वारा संस्थापित सलेमाबाद पीठ के पीठेश्वर के रूप में आपकी असामान्य उपलब्धियाँ सर्वतोभावेन मुक्तकण्ठ से सराहनीय हैं। अपने दीक्षा-गुरु श्रीबालकृष्णदेवाचार्यजी से प्राप्त आशीष एवं कृपा का सम्बल लेकर आपने जीव कल्याण के लिए अनेकों प्रवृत्तियों का पोषण किया है। ज्ञान-संवर्द्धनार्थ पुस्तकालय एवं वाचनालयों की स्थापना, रोग पीड़ितों की सेवार्थ औषधालयों की व्यवस्था, यात्रियों के लिए आवास गृहों का निर्माण, जन-कल्याण की दिशा में आपकी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं। आपके सम्प्रदायी पत्र 'सर्वेश्वर' के प्रकाशन से सम्प्रदाय विषयक रीति-नीति, भक्ति-भाव एवं परम्पराएँ लोक जीवन के प्रकाश में आई हैं। आपने निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रमुख पीठेश्वर के रूप में अखिल भारत की तीर्थ यात्रायें की हैं। आपके समय में विविध उत्सवों एवं पधरावणियों को प्रोत्साहन मिला है। सलेमाबाद, जयपुर और वृन्दावन इन समस्त उत्सवों, समारोहों के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। आपने समस्त भारत में पर्यटन कर भक्तजनों को कृतार्थ किया है, जीव को गति दी है। जंगली देश में जहां संस्कृति का प्रकाश नहीं था, वहाँ साम्प्रदायिक संस्कारों की सृष्टि की है और उन्हें सुसंस्कृत करने का श्रेय प्राप्त किया है। अपने महान् एवं उच्च भक्ति-भावपरक उच्च जीवन-स्तर, साधना से दीप्त देवोपम व्यक्ति के कारण आप जयपुर, किशनगढ़ एवं जोधपुर के श्रद्धालु नरेशों द्वारा वन्दनीय एवं अभिनन्दनीय रहे हैं। भारत के अनेक धनी-मानी एवं समृद्ध सेठ परिकर का आपके सान्निध्य में समागम होता रहता है। यह सब आपके पावन व्यक्तित्व का प्रतीक है।

व्रज-यात्रा के प्रेरक व्यक्तित्व !

भगवान् श्रीकृष्ण एवं भगवती राधा की नित्य-विहार भूमि इस व्रज की व्रज-संस्कृति विश्व संस्कृति का मूल है। इसके अनुमापन एवं भक्त हृदय के आनन्दातिरेक ब्रह्मानन्द की सुखद अनुभूति के लिए व्रज यात्रा का अपना निजी महत्त्व है। तरुपुञ्जों से लिपटी हुई लतायें, सघन, द्रुम पुञ्ज, रन्ध्र निकुञ्ज, सघन वन, कलित कदम्बखण्डी, गोवर्द्धन पर्वत एवं उसकी मनोरम तलहटी, नर्तन करते मयूर, स्वच्छन्द विचरण करते मृग, मृगशावक-शशक आदि विमल जल भरे सर-सरोवर, कृष्ण की इस क्रीड़ा-भूमि के ब्रजभाषी नर और नारी, नन्दगाँव, बरसाना, मथुरा और वृन्दावन की झाँकी सभी कुछ व्रजयात्रा में सहज साध्य हैं। भला जिस भूमि के दर्शन से, जहाँ के भक्ति-भाव में आप्लावित गोप-

गोपीजन के साहचर्य से महायोगी उद्धव को भी आत्म-विस्मृति हो गई थी, वहाँ किस सहृदय को रसोपासना के अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति न होगी। ब्रज लोक-संस्कृति, जो सीधे हृदय को स्पर्श करती है, आत्म-विस्मृति की अवस्था में भक्तजनों के चित्त को आह्लादित कर देती है। इस ब्रज-यात्रा के द्वारा सहज ही आत्मसात् की जा सकती है। व्रज यात्रा से भगवान् श्रीकृष्ण के प्रमुख लीला-केन्द्रों के दर्शन का लाभ तो मिलता ही है, साथ ही जीव को पुण्य कर्मों एवं परमार्थ की प्रेरणा भी मिलती है। अत: आपका समृद्ध, भक्ति-भाव प्रवण परिकर के साथ यह व्रज-यात्रा अभियान जीव-कल्याणकारी की दिशा में उल्लेखनीय है।

उदारचेता !

हमारे जवाहर विद्यालय इण्टर कालेज, मथुरा को आपने सन् 1958 ई. में अपने शुभागमन से कृतकृत्य किया था, जब कि आप वृन्दावन यात्रा के सन्दर्भ में ही पधारे थे। तब से आपकी सत्प्रेरणा एवं आशीर्वाद से यह निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। विद्यालय का नवीन भवन श्रीकृष्ण जन्मभूमि के निकट, विद्या की अधिष्ठात्री देवी महाविद्या के चरणों पर स्थित एक विशाल भूमि पर निर्मित हो रहा है। अध्यापक, छात्र, प्रधानाचार्य, प्रबन्ध समिति तथा दानवीरों के प्रयासों से उसका नवीन भवन मैदान के वक्ष पर उभर रहा है। भवन के एक ओर छात्रों की क्रीड़ा-भूमि है। छात्रालय, सांस्कृतिक कार्य-कलापों के लिए रङ्ग-मंच, उत्सव समारोहों एवं विशाल आयोजनों के लिए विराट् कक्ष निर्माण की भी योजना है। हम शनै:शनै: इस योजना को कार्यान्वित करने को प्रयत्नशील हैं। अभी प्रथम चरण में चल रहे हैं। आप जैसे आप्त पुरुषों के आशीर्वाद की अपेक्षा है, जिससे कि आगे के चरण भी पूरे किये जा सकें। यहाँ के प्रधानाचार्य डॉ. नारायणदत्त शर्मा, एम.ए. पी-एच.डी. ने आपके सम्प्रदाय के समस्त ग्रन्थों का मन्थन कर, उपलब्ध सामग्री का दोहन कर अपना जो शोध प्रबन्ध ''निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण भक्त कवि'' प्रस्तुत किया है। उससे असन्दिग्ध रूप से सम्प्रदाय के दर्शन आकार, संस्कृति, रीति-नीति के प्रचार-प्रसार की दिशा में अभूतपूर्व कार्य हुआ है। उनके द्वारा आपके सम्प्रदाय की यह सेवा नितान्त अभिनन्दनीय है।

अन्त में हम पुन: आप जैसे धर्मस्तम्भ और प्रमुख सहयोगी सर्व श्री वियोगी विश्वेश्वर, नरहरिदास, व्रज-वल्लभशरण एवं परम भक्त बाबा माधुरीदास, बाबा विश्वेश्वरशरण, महन्त श्री शुकदेवदास तथा सभी समागत धर्मप्राण, उदारचेता एवं परमार्थी सेठों का जिन्हें इस व्रज-यात्रा में आपका सान्निध्य-सुख प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है, हृदय से अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि सहृदय एवं भावुक आप सदैव हमारी स्मृति बनाये रखेंगे।

फाल्गुन कृष्णा पञ्चमी सं. 2026

26.2.1970

हम हैं आपके विद्यालय परिवार के सदस्य,

जवाहर विद्यालय, मथुरा

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीसर्वेश्वरो जयति

अनादि वैदिक सत्सम्प्रदायाचार्य-चक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, यतिपति दिनेश, भागवत धर्मोद्धारक करुणावरुणालय, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

श्री श्रीजी श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज के पुनीत कर कमलों में श्री व्रजयात्रा के शुभावसर पर सादर समर्पित

✣ अभिनन्दन-पत्र ✣

निम्बार्क नायक!

विश्व-नियन्ता के नाम-रूप का चिन्तन एवं विश्लेषण विभिन्न साम्प्रदायिक आचार्यों द्वारा यथासमय किया गया, किन्तु वर्तमान के वैषम्य से विकृत मानव जन्मान्ध की भाँति आदर्शों की खोज में भटक रहा है। अत: समाज एवं धर्म के अग्रणी व्यक्तियों के दृष्टिकोणों का सामंजस्य अनिवार्य हो गया है।

वात्सल्य परिपूर्णानन्द-नन्दन की लीला स्थली श्रीमद् गोकुल गोलोक धाम में आपका अनवरत अभिनन्दन!

द्वैताद्वैत प्रकाशक!

जर्जरित रूढ़ियों का नवीनीकरण तथा संशोधन आज की मांग है। आदर्शों के दर्पण कलुषितावस्था से खिन्न होकर निर्माल्य निर्माता की प्रतीक्षा में व्यग्र है। आस्तिक वर्ग की आस्था भौतिक पिशाचों से जूझती हुई किसी के पीयूषवर्षी प्रोत्साहन की इच्छुक हैं। महामना को ऐसे ही कतिपय उद्देश्यों का स्मरण कराना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

प्रशस्त पथ-प्रदर्शक!

राष्ट्रीय रंगमंच पर अराजकता की ताण्डव वेला में प्रतिभाओं का मौन रहना अस्वाभाविक होने के साथ-साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे दिव्य सन्देश के प्रचार में अवरोधक सिद्ध होता है।

प्रथम प्रयास के साफल्योपरान्त निम्बार्क धार्मिक प्रतिष्ठान की आवश्यकता अनुभव करते हुए ऐसे ही अभियानों की पूर्ति के लिए सौहार्द संसिक्त शुभकामनाएँ समर्पित करने हेतु आपके गोकुलवासी।

दिनांक 27.02.70

गोकुल उत्थान समिति,
गोकुल-भारत

श्री सर्वेश्वरो जयति

अनादिवैदिक सत्सम्प्रदायाचार्य-चक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, यति-पति दिनेश, भागवत धर्मोद्धारक, करुणावरुणालय, अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य,

श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज

के पुनीत कर कमलों में श्री व्रजयात्रा के शुभावसर पर सादर समर्पित

✠ अभिनन्दन-पत्र ✠

प्रात: स्मरणीय आचार्यवर्य !

श्रीधाम वृन्दावन प्रिया-प्रियतम की परम दिव्य लीलास्थली है। इस वृन्दावन के परम असमोर्ध्व गौरव की स्थापना जिन भगवत्स्वरूप महान् आचार्यों एवं रसिकों ने की है, उन वैष्णवाचार्यों में श्री निम्बार्काचार्यजी महाराज का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं अलभ्य स्थान है। अब से सहस्रों वर्ष पूर्व वृन्दावनीय रसोपासना तथा आनन्दकन्द लीला-पुरुषोत्तम श्री राधामाधव की युगल उपासना के आचार्य, चक्रावतार श्री श्रीभगवान् निम्बार्क वृन्दावन में पधारे और यहाँ से श्रीराधाकृष्ण की पावन भक्ति-सलिला प्रवाहित की और उसे भेदाभेदवाद के सुपुष्ट दर्शन का आधार प्रदान किया। उन्हीं श्री निम्बार्क भगवान् की परम्परा में विराजमान आपश्री का हम समस्त ब्रजवासी व्रजयात्रा के इस परम पुनीत अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

जगद्गुरो !

हमारी वैष्णव संस्कृति या भागवत धर्म में आराध्य श्रीगोविन्ददेव से भी श्रीगुरुदेव का गौरव अधिक गाया गया है। रसमयी आन्तरिक साधना के प्रथम चरण के रूप में भी साधक प्रथम सहचरी भाव-भावित हो श्रीगुरु निकुञ्ज का अनुधावन करता है और उनका अनुगत होकर ही अपने परमाराध्य श्रीलाड़िली लाल का संगीतमय उद्बोधन करता है। गुरुदेव के इस गौरवमय पद पर विराजमान श्री श्रीजी के रूप में हम आपका कोटिश: वन्दन करते हैं।

आर्य-धर्म रक्षक !

इतिहास साक्षी है कि जब-जब देश और धर्म पर संकट उपस्थित हुआ है, तब-तब निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुगत अनेक आचार्यों एवं भक्तों ने भारतीय संस्कृति की रक्षा के अपने उत्तरदायित्व का पालन किया है। श्री श्रीकेशव काश्मीरी भट्ट जी महाराज ने मथुरा में व्याप्त तत्कालीन भीषण आतंक को दूर करने में जिस तत्परता का परिचय दिया, वह स्मरणीय है। श्री श्रीहरिव्यासदेव जी महाराज ने शाक्तों को वैष्णव बनाया और प्रसिद्धि है कि उन्होंने अपने भजनबल से देवी को भी दीक्षा दी। इन्हीं आचार्यों ने म्लेच्छ शक्तियों को पराजित करने के लिए सम्पूर्ण देश में अखाड़ों का संगठन किया, जो भारतवर्ष की आस्तिक परम्पराओं के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बने और आज भी विरक्त सम्प्रदायों में जिनका विशिष्ट स्थान है।

वैष्णव धर्मोन्नायक !

यह निश्चित सिद्धान्त है कि आज के अशान्त एवं विविध दु:खाक्रान्त विश्व में यदि शान्ति एवं सुख का स्थापन सम्भव है तो केवल वैष्णव धर्म से ही। वैष्णव धर्म के गौरवमय मानवतावादी अद्वितीय धर्मग्रन्थ

भगवद्गीता एवं श्रीमद्भागवत ही आज की समस्त मानवता को त्राण एवं शान्ति प्रदान कर सकते हैं। आज जिस प्रकार चारों ओर अनैतिकता, भ्रष्टाचार एवं हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है तथा जिसके कारण आज सम्पूर्ण भारत अनिश्चितता की स्थिति में आ चुका है, इसका समाधान बिना वैष्णवता के अहिंसा सिद्धान्त निष्काम कर्मयोग, ईश्वर विश्वास एवं विश्व बन्धुत्व आदि भावनाओं से सम्भव नहीं। ऐसे उदात्त वैष्णव धर्म का आपके द्वारा जो अहर्निश प्रचार-प्रसार हो रहा है, इसके लिए वैष्णव समाज ही नहीं, अपितु सारा भारत आपका आभारी है।

वृन्दावनैक-सर्वस्व !

इस स्वरूप, प्रियाप्रियतम श्रीराधामाधव की मंगलमयी तथा माधुर्यमयी सखी-भावोपासना का जो पावन बीज श्री निम्बार्क भगवान् ने निम्बग्राम में बोया था और जिसे मध्ययुग में प्रातःस्मरणीय रसिकाचार्य श्री श्रीभट्टदेवजी, श्री श्रीहरिव्यासदेवाचार्य तथा श्रीरूप रसिक जी ने पल्लवित एवं पुष्पित कर विश्व में इसका विस्तार किया, जिनका जीवन श्रीराधा माधवमय था, श्रीवृन्दावन को जिन्होंने अपना परमाराध्य एवं जीवन सर्वस्व माना था, उन रसिकाचार्यों की पावन परम्परा में विराजमान आपश्री का हम पुनः पुनः अभिनन्दन करते हैं।

हे व्रजनिष्ठ !

आपके पूज्य पूर्वाचार्यों में जहाँ धामनिष्ठा, इष्टनिष्ठा, मन्त्रनिष्ठा, परोपकार भावना, विलक्षण आध्यात्मिक चमत्कार की पराकाष्ठा रही है, वहाँ व्रजपरिक्रमा की भावना तथा व्रजनिष्ठा में भी ये अग्रणी रहे हैं। श्रीचतुर चिन्तामणि नागाजी महाराज की परिक्रमा प्रसिद्ध है। श्री गोविन्ददेवजी में मङ्गला, केशवदेवजी में शृङ्गार, नन्दगाँव में राजभोग आरती का दर्शन कर वृन्दावन में सायंकालीन आरती का दर्शन करना दैनिक नियम था।

व्रज परम्पराओं के सर्वस्व !

हे मुनीन्द्र, आपने अपने पूर्व-पुरुषों की परम्परा का स्मरण करते हुए श्रीराधाकृष्ण की विहार भूमि उनकी लीला-स्थलियों के दिव्य दर्शनों एवं उनकी परिक्रमा का जो महत्त्वपूर्ण आयोजन व्रजयात्रा के रूप में किया है, वह अत्यन्त स्तुत्य है। व्रज परिक्रमा के इस सन्दर्भ में और भी महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि आज इस पुण्य-भूमि व्रज के विभिन्न तीर्थों में, अनजाने ही सरकार द्वारा भी ठेके दिये जाने के कारण स्वार्थ में लिप्त अनेक व्यक्तियों द्वारा अनुचित कार्य किये जा रहे हैं। पर्वतों का काटकर रोड़ियाँ बनाना, कदंब खड़ियों का नष्ट-भ्रष्ट किया जाना, सरोवरों और तालाबों से मछलियों का पकड़ा जाना आदि ऐसे ही कार्य हैं। परिक्रमा स्वरूप महापुरुषों एवं भगवद्भक्तों की तपोभूमियाँ उजड़ गई हैं, कदंब खड़ियाँ वीरान हो गई हैं और भगवद् विग्रहस्वरूप व्रज की पहाड़ियों का अङ्गविच्छेद हुआ है। हमारा विश्वास है कि आपकी इस व्रजयात्रा से इन स्थलों का पूरा विवरण तैयार किया जा सकेगा, जिसे सरकार के सामने प्रस्तुत कर व्रजभूमि संरक्षण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा सकेगा। आज उन्हीं परमप्रतापी श्रीकेशव काश्मीरी भट्टाचार्य एवं श्रीपरशुराम देवाचार्य जैसे आचार्यों की परम अपेक्षा है, जिनके सिंहासन पर आपश्री विराजमान हैं।

हमें विश्वास है कि श्रीधाम वृन्दावन से समारम्भ यह व्रजयात्रा अपने आध्यात्मिक एवं तत्कालीन समस्त लक्ष्यों को पूर्ण कर एक श्रेष्ठतम परम्परा का प्रवर्तन करेगी।

माघ शुक्ला द्वादशी सं. 2026
दिनाङ्क 17.2.70

हम हैं आपके
वृन्दावन नगर के नागरिकगण

परम श्रद्धेय 1008 श्री 'श्रीजी' महाराज के वज्रयात्रा के उपलक्ष में

ग्राम पैगाँव पधारने के शुभावसर पर

❊ सादर सम्मान-पत्रम् ❊

परम श्रद्धेय!

आज आपके इस पैगाँव ग्राम में पधारने पर हम सभी ग्राम निवासियों को बहुत ही प्रसन्नता हुई है तथा यह दिन हमारे लिए बहुत ही गौरवशाली है कि आपने दर्शन देकर हमें कृतार्थ किया है। हम आपके बहुत ही आभारी हैं तथा हृदय से आपके श्रीचरणों में नत मस्तक होकर अपने को कृतकृत्य मानते हैं।

विद्वद्वर!

आपने अपनी महान् विद्वत्ता के फलस्वरूप अनेकों भक्तों के हृदय पर अधिकार प्राप्त करके भारत में महान् ख्याति अर्जित की है। भारत के सभी विद्वान् आपके प्रति महान् आभार प्रदर्शित करके आपके श्री चरणों में नत-मस्तक होते हैं।

भगवत् प्रेमी!

आपने अपना समस्त जीवन ईश्वर प्रेम में समर्पण करके जन-साधारण के समक्ष अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है, दीनबन्धु हमारा हृदय आपको ईश्वर तुल्य समझ कर अपने को कृतार्थ मानता है, क्योंकि–**''साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने।''**

दीन प्रतिपालक!

कठिन व्रत साधना के उपरान्त आपने दीनों, निर्धनों, असहायों के प्रति जो दया भावना का ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। अनेकों अपंगु, वृद्ध, निर्धन व्यक्ति आपके आश्रम में आपकी छत्र-छाया में अपूर्व सुख का अनुभव करते हैं।

प्राचीन संस्कृति के संरक्षक!

यह गाँव पैगाँव निम्बार्क सम्प्रदाय के परम-भक्त श्री नागाजी महाराज की जन्म-भूमि है, जो अभी तक देश के विद्वानों, दानी महानुभावों से उपेक्षित रहा है। आज आपके सामने हम सभी ग्राम निवासी आपका ध्यान इस पवित्र भूमि की ओर दिलाते हैं। हमें आशा है कि आपकी कृपा इस उपेक्षित व्रज भूमि की ओर सर्वदा रहेगी।

विद्या प्रेमी!

विद्या का प्रसार करना आपका मुख्य लक्ष्य रहा है, यह ग्राम सभी प्रकार से पिछड़ा हुआ है। हमारा श्रीचरणों में यही नम्र निवेदन है कि इस अनपढ़ ग्राम में आपके नाम से एक हायर सैकेण्डरी विद्यालय की स्थापना हो, जिससे हमारे बालक विद्याध्ययन कर सकें।

उपास्य देव!

अन्त में हम आपके सम्मुख करबद्ध होकर निवेदन करते हैं कि आपके स्वागत में हमसे कोई त्रुटि हो गई हो तो आप हमें अपना भक्त जानकर क्षमा करेंगे।

हम हैं आपके–

दिनांक 23.3.70 **सभी ग्राम निवासी पैगाँव तहसील छाता जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)**

श्रीसर्वेश्वरो विजयते

सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, अनादिवैदिक सत्सम्प्रदायाचार्य-चक्रचूड़ामणि, यतिपतिकुल-दिवाकर, भागवत-धर्मोद्धारक, करुणावरुणालय,

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज

के

पावन कर कमलो में

'अनामिका' के तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी-गोष्ठी के शुभ अवसर पर सादर समर्पित

प्रातः स्मरणीय !

प्राच्यदर्शन महाविद्यालय के प्राचार्य, आचार्य एवं छात्र-गण आज आपको अपने मध्य विराजमान देखकर परम पुलकित व प्रमुदित हैं।

आचार्यप्रवर !

अब से सैकड़ों वर्ष पूर्व जिन चक्रावतार जगद्गुरु भगवान् श्री निम्बार्काचार्य ने ब्रज-वृन्दावन में पदार्पण कर उसके परम असमोद्ध्र्व गौरव को बढ़ाया, श्रीराधामाधव की पावन भक्ति सलिला प्रवाहित कर उसे द्वैताद्वैतवाद के सुपुष्ट दर्शन का आधार प्रदान किया, उन्हीं की परम्परा में विराजमान आपश्री का हम सभी हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

आर्यधर्म-रक्षक !

इतिहास साक्षी है कि देश को धर्म-सङ्कट से उबारने और भारतीय संस्कृति की रक्षा करने में निम्बार्क सम्प्रदायी आचार्यों का भारी योगदान रहा है। भारतवर्ष के सुदूर प्रान्तों में भ्रमण कर आज भी आप अपने इस उत्तरदायित्व की रक्षा कर रहे हैं। हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

वैष्णव धर्मोन्नायक !

आज विश्व अशान्त एवं विविध दु:खों से आक्रान्त है। सुख और शान्ति का मार्ग तो केवल वैष्णव धर्म में ही है। गीता और भागवत इसके साक्षी हैं। आज के भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं हिंसात्मक वातावरण का समाधान भागवत धर्म के अहिंसा सिद्धान्त, निष्काम कर्मयोग, ईश्वरविश्वास, विश्वबन्धुत्व बिना असम्भव है। ऐसे वैष्णव धर्म का आपके द्वारा जो अहर्निश प्रचार-प्रसार हो रहा है, यह आपकी अहैतुकी कृपा ही तो है।

विद्यावारिधि !

आपने श्रीनिम्बार्क तथा श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालयों की स्थापना कर, उनमें अध्ययन की नि:शुल्क सुविधायें प्रदान कर विद्या-दान का अक्षय पुण्य अर्जित किया है। हम आपका पुन: पुन: स्मरण करते हैं।

सत्साहित्य-रक्षक !

विगत 22 वर्षों से आपके द्वारा संरक्षित एवं संचालित 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक और 'निम्बार्क' पाक्षिक जैसे पत्रों द्वारा साहित्य, धर्म और संस्कृत की जो रक्षा हो रही है, वह किसी से छिपी नहीं है। इसके माध्यम से प्रकाशित साहित्य आज भारतवर्ष के कौने-कौने में बिखरा पड़ा है। इसके लिए हम आपके चिर आभारी हैं।

हे व्रजनिष्ठ !

ब्रज-वृन्दावन के प्रति आपके हृदय में जिस प्रकार अगाध-भक्ति का सागर लहराता रहता है, उसी प्रकार पूज्यपाद त्रिदण्डी स्वामी श्रीमद्भक्तिहृदय वनमहाराज द्वारा आरोपित प्राच्य दर्शन महाविद्यालय रूपी यह पादप भी आपकी कृपा से निरन्तर हरा-भरा पल्लवित एवं पुष्पित बना रहेगा, ऐसी हमें पूर्ण आशा है। हम आपका पुन: पुन: हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

मनमोहन गौतम
मन्त्री (अनामिका)

महेशचन्द्र अग्रवाल
उपाध्यक्ष (अनामिका)

प्रो. प्रेमनारायण श्रीवास्तव
अध्यक्ष (अनामिका)
18 फरवरी, 74

डॉ. शरणविहारी गोस्वामी
प्रधानाचार्य
प्राच्यदर्शन महाविद्यालय, वृन्दावन

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ||

|| श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

वृन्दावन कलानाथौ हृदयानन्दवर्द्धनौ।
सुखदौ राधिकाकृष्णौ भजेऽहं कुञ्जगामिनौ।।

अनन्तानन्त श्रीविभूषित, चक्रचूड़ामणि, यतिपति दिनेश, महीमण्डलाचार्य,
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य

श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी

महाराज के पावन चरणाम्बुजों में सादर समर्पित–

☆ शुभाभिनन्दनम् ☆

आदरणीय श्रद्धेय जगद्गुरु!

सर्वोपमा योग्य, सकलगुणनिधान, अनन्तानन्त-श्रीविभूषित, यतिराज-राजेश्वर, श्री निम्बार्क सम्प्रदायाचार्य जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की उपस्थिति से **'श्री निम्बार्क नगर'** उज्जैन के इस कुम्भ महापर्व पर देदीप्यमान होता हुआ स्वर्गिक आनन्द को प्रसरित कर रहा है। ऐसे पुनीत शुभ अवसर पर पूज्यवर को यह **'शुभाभिनन्दन'** समर्पित करते हुए महानतम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

शुभ्र यशोमूर्ति !

पूज्यपाद श्री आचार्यचरण की सर्वतोमुखी प्रतिभा, पाण्डित्यं, अद्भुत स्मरणशक्ति, सारल्य, सादगी, श्रमशीलता, सौजन्यादि सद्गुणों एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की उपासना को अवलोकन कर सर्वात्मना मुग्ध हैं। परमात्मा हमारे श्रद्धेय श्री आचार्यचरण को युग-युगान्तर तक हमारे समक्ष उपस्थित रखें।

सनातन धर्म के सम्राट्!

तेजः पुञ्ज, पूर्ण योगेश्वर, सम्प्रदाय के सर्वमान्य आचार्य, सदाचार और ब्रह्मनिष्ठत्व के स्वरूप, परमात्म तत्त्व-सिद्धान्त रहस्य के पूर्ण ज्ञाता, वास्तविक भगवत् प्रेमियों एवं ब्रह्मविदों के समाज में उत्कृष्ट प्रभाव रखने वाले, धर्माधिकार में अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज सनातन धर्म के सम्राट् हैं। पूज्यपाद श्री आचार्यचरण की जिह्वा जप में और मन रसेश्वरी आह्लादिनी शक्ति के दर्शनानुसन्धान में सदा सर्वदा रत रहा करता है।

उपस्थित जनसमुदाय परम तपस्वी कर्मठ कर्मयोगी श्री 'श्रीजी' महाराज के दीर्घतम जीवन की प्रभु श्री सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करें, जिससे चिरकालपर्यन्त हम सबों का कल्याण होता रहे।

बहूनां भाषाणामधिपतिरुदग्रस्त्वमसि च,
बहूनां विज्ञानं त्वमसि परमं मित्रमथ च।
बहूनां भीतानां त्वमसि शरणं विश्रुतमहो,
प्रपन्नास्त्वां तस्माद्वयमिह शरण्यं यतिपते।।

पूर्ण कुम्भ महापर्व
उज्जैन
सन् 1980

हम हैं सम्मान समर्पक
श्रीभक्ति-भागीरथी परिवार के समस्त जन,
श्री नृसिंह निकेतन, श्री नरसिंह पोल,
रायपुर, अहमदाबाद।

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, द्वैताद्वैत-प्रवर्तक,
यतिपति-दिनेश, राजराजेन्द्र-समभ्यर्चित-चरणकमल,
भगवन्निम्बार्काचार्य-पीठ विराजित, अनन्तानन्त-श्रीविभूषित
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'

श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज

अखिल भारतीय-जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठ,
श्री निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर (राजस्थान) के कर कमलों में
वेदान्त-शिरोमणि, श्रीमद्भागवत मर्मज्ञ, श्री युगलरसनिष्ठ, संगीताचार्य

बाबा श्रीशुकदेवदास जी द्वारा विधीयमान श्रीमद्भागवत सप्ताह प्रवचन के

शुभावसर पर

श्री सर्वेश्वर - संसद्, जयपुर

द्वारा सादर समर्पित

☆ अभिनन्दन-पत्र ☆

प्रातः स्मरणीय!

अनादि वैदिक-सत्सम्प्रदाय द्वैताद्वैत-प्रवर्तक जगदगुरु आद्य निम्बार्काचार्य जी महाराज ने कौटिसूर्य समप्रभ अपने दिव्य तेज को निम्बवृक्ष में संस्थापित कर के रात्रि को भी दिन बना दिया था। अपने आश्रम में आये हुए यतिवेशधारी श्री ब्रह्माजी के मोहान्धकार को दूर भगा कर हृदय में परम आह्लाद व आनन्द का प्रकाश किया था। उसी प्रकार आज का सूर्योदय भी अति महनीय है। प्रातः स्मरणीय जगद्वन्द्य आपश्री के दर्शन में हमें वर्णनातीत आह्लाद हो रहा है। आनन्द सुधानिधि में निमग्न होकर हमारा जीवन वास्तव में कृत-कृत्य हो रहा है।

आदरणीय संरक्षक!

आपश्री अपना सद्उपदेशामृत पान करा के जगत् के समस्त जीवों का संरक्षण करते हैं। श्री सर्वेश्वर संसद् के तो आप ही संरक्षक हैं। इसके पारिवारिक हम पामर जीवों को समय-समय पर सन्मार्गदर्शन व उत्साहवर्धन द्वारा अवश्य ही संरक्षित करते रहेंगे—इसमें कोई संशय नहीं।

आनन्द-मूल!

आज इस साकेत भवन में **श्री मुकुन्दशरण जी गोयल** व इनकी माता **श्री श्रीतुलसाँ देवी जी** की धर्मनिष्ठा को साकाररूप देकर श्री श्रीनिवासजी बम्बई वालों के परिवार, श्री सर्वेश्वर संसद जयपुर के पारिवारिक एवं स्थानीय कथामृत-पिपासु भक्तजनों के मध्य में भागवत के मूल प्रवक्ता साक्षात् श्री शुकदेवजी के समान ही सम्माननीय बाबा **श्री शुकदेवदासजी संगीताचार्य** निगम-कल्पतरु से गलित अमृतद्रव संयुक्तफल श्रीमद्भागवत-कथा के सुधारस की चर्चा कर रहे हैं। इस समारोह में श्री चरणों का सान्निध्य भगवत्साक्षात्कार के समान फल प्राप्ति का रूप है। वास्तव में श्रीचरण ही इस महान् आनन्द के मूल हैं।

करुणा-वरुणालय!

श्री युगल चरणारविन्द मकरन्द के मिलिन्द बनकर हम आज इतने आनन्द विभोर हो गये हैं कि समुचित स्वागत-समर्चा-संभार का भी कोई ध्यान नहीं रहा है। आपश्री तो अकारण करुणा के महान् वरुणालय हैं। स्वाश्रित-जनों के इस विधिलोप को भी सुदामा के तण्डुल जैसी सपर्या मान कर सहज अनुकम्पामृत-प्रवाह को प्रवाहित करते ही रहेंगे।

आराध्य-चरण!

श्री चरणों की उपासना के लिए उपासकजन नाना प्रकार की मुक्तामणि आदि बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर भेंट चढ़ाते हैं। धूप, दीप, नैवेद्य आदि विधि से आपश्री का चरण पूजन करते हैं। अपने अपने वैभव के अनुसार विभिन्न साज-बाज सजाते हैं, किन्तु श्री सर्वेश्वर संसद् जयपुर के पारिवारिक हम सर्वथा अकिञ्चन व साधन-विहीन हैं। हमारे पास तो श्रीचरणों के प्रेम का लोभी केवल हृदय ही है। इसी को अर्पित करने के लिए हम आपश्री की सेवा में समुपस्थित हैं। हमें विश्वास है कि आपश्री इसे नहीं ठुकराएंगे, प्रत्युत हृदय की भावात्मक सेवा को स्वीकृत करके इस संस्था में जीवन-सञ्चार करेंगे, जिससे सम्प्रदाय-सेवा व वैष्णव-धर्म संरक्षण के लिए हमें सम्बल प्राप्त होगा।

हम है, श्रीचरणों के ही कृपाकांक्षी

कल्याण प्रसाद सूतवाला
प्रधान मंत्री

मोहनलाल पोद्दार
अध्यक्ष

श्री सर्वेश्वर संसद्, जयपुर
शुभ मिति मार्गशीर्ष शुक्ल 12, मंगलवार संवत् 2038 वि.
(दिनांक 8 दिसम्बर, 1981 ई.)

निखिल-महीमण्डलाचार्य चक्र-चूड़ामणि, यतिपति-दिनेश प्रभृति विविध विरुदावली विभूषित, अनादि निवृत्ति-पथ-प्रवर्तक, ब्रह्मविद्योपदेशक, लोकाचार्य श्री सनन्दनादि-समुपदिष्ट अनादि-वैदिक-सत्सम्प्रदायाचार्य, परमकारुणिक-महामुनीन्द्र-भगवन्निम्बार्काचार्य-पाद-पीठाधीश्वर, अनन्तश्री समलंकृत जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य जी महाराज

के

श्री चरणों में सादर समर्पित

☆ प्रशस्ति-पुष्पाञ्जलि ☆

परम कारुणिक!

श्री सर्वेश्वर संसद्, जयपुर द्वारा समायोजित श्री निम्बार्क भगवान् की 5078 वीं जयन्ती के महोत्सव एवं शोभा-यात्रा-समारोह की पावन वेला में सनकादि-संसेव्य श्री सर्वेश्वर प्रभु की सेवा के साथ श्रीचरणों का यहाँ पादार्पण होना हम जयपुरवासियों के लिए परम सौभाग्य का विषय है। आपने कार्यक्रमों की व्यस्तता होते हुये भी संसत्परिवार की प्रार्थना को स्वीकृत करके जो यह महती कृपा की है, उससे दीपक में स्नेह-पूरण के समान स्थानीय भक्तवृन्द के मानस में आनन्द-प्रकाश की अभिवृद्धि हुई है। श्रीचरणों का हम हृदय से स्वागत करते हैं।

वन्दारु-मन्दार!

यह संसद् आपश्री की ही संरक्षकता में संस्थापित होकर सम्प्रदाय की जो किञ्चिन्मात्र सेवा कर रही है, वह आचार्यश्री के ही शुभाशीर्वाद का प्रतिफल है। वास्तव में आपश्री वन्दारु (भक्त) जनों के लिए मन्दार (कल्पवृक्ष) हैं, जिसका आश्रय सुख-शान्ति का मूल है।

धर्म-धुरीण!

'धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः' का रहस्य समझा कर धर्म-प्राण भारत राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आपश्री सतत प्रयत्नशील हैं। आपने आचार्यपीठ में बृहत् सनातन धर्म सम्मेलन करके सभी धर्माचार्यों को एक मंच पर विराजमान किया है। सब को साथ लेकर संघटित रूप से सनातन धर्म व वैष्णव धर्म का संरक्षण कर रहे हैं, यह उदार व आदर्श धर्म-धुरीणता है। हम इसी सन्मार्ग में चलकर वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति कर सकेंगे–ऐसा दृढ़ विश्वास हैं।

साहित्य-सूर्य!

श्री निम्बार्क भगवान् ने जिस प्रकार निम्ब में अर्क (सूर्य) के दर्शन कराके ब्रह्माजी को आश्चर्य-चकित किया था, उसी प्रकार आपश्री ने भी स्तवरत्नाञ्जलि, प्रातः स्मरण स्तोत्र का भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों की संरचना करके सूर्य के समान ही पर्याप्त साहित्य का प्रकाश किया है, जो वास्तव में साहित्य की स्थायी सेवा सम्पन्न हो रही है। संसद् द्वारा समर्पित 'श्री निम्बार्कसुधा' तो सूर्य के सम्मुख साधारण एक विधि-दीप के समान है। श्रीचरणों का शुभाशीर्वाद ही संसद् की प्रवृत्ति **'श्री निम्बार्क साहित्य तरङ्गिणी'** के प्रवाह का अभिवर्द्धन कर सकेगा।

सम्माननीय संरक्षक!

शिशु पुनः पुनः स्खलित होता रहता है। जब-जब वह गिर जाता है, तब-तब उसके संरक्षक माता-पिता उसे उठा लेते हैं। यह ही स्थिति इस संसद् की है। किशोर अवस्था में प्रवेश कर रही है। उपयुक्त संपोषण नहीं मिल रहा है। समुचित साधन सम्पत्ति के अभाव में अभी यह स्तनन्धय के समान ही है। समय-समय पर समय निकाल कर श्री चरणों का पादार्पण, मार्गदर्शन व शुभाशीर्वाद का संरक्षण प्राप्त होता रहेगा, तभी आचार्यश्री की अनुकम्पा के संबल से पुष्ट होकर यह कुछ आगे बढ़ सकेगी। इसी विनम्र प्रार्थना के साथ भावात्मक यह **'प्रशस्ति पुष्पाञ्जलि'** सेवा में सादर समर्पित है।

आपश्री के ही चरणाब्ज चञ्चरीक-
श्री सर्वेश्वर संसद् जयपुर के पारिवारिक
एवं
सनातन धर्मानुयायी वैष्णवजन

मार्ग. कृ.-4 शनि. सं. 2039 दिनांक 4 दिसम्बर, 1982

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्री सर्वेश्वरो जयति

स्वस्ति श्रीमन्निखिल-गुण-गुणाऽलङ्कृतानामनवद्य-विद्या-विद्योतिताऽन्तःकरणानां
अनन्तश्री जगद्गुरु श्री श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य महाराजानां
करकमलयोः समर्पितम्

* अभिनन्दन-पत्रम् *

प्रणेता–यज्ञाचार्य मथुरास्थ डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदः

द्वैताद्वैत-मत-प्रचारकरणे नित्यंरतो भाग्यवान्
श्री राधादयित-प्रियो मुनिवरो वेदान्त-विद्यापरः।
निम्बग्राम-विभाविकासनपरः सद्भक्ति-विस्तारको
निम्बार्को भगवान् सदैव जयताच् चक्रावतारो विभुः॥

श्री राधिका सेवन के हियेत् श्री
रा जत्यहो तस्य सुतश्च दाराः
धा त्रापि तद्वंशगताहि श्रद्धा
सर्वत्र दृष्टा स च संजहास
र्वे दान्त विज्ञास्तु वदन्ति सर्वे
श्वः किं ततः किं च परश्च कः स्वः
रक्षन्तुना वक्ति भृशं ससार
शर्मास्तु राधारटने जने श
रम्यं यथा स्यात्तदुपैति धो रः
नर्मप्रधानेऽपि विनीतप्राण
दे वादयश्चैव वदन्ति वादे
वाक्चातुरी जुष्टमिभंससेवा
चार्वत्र नित्यं वृषभानुज चा
यज्ञे विधीयेत फलार्जना य
मर्त्यानुशोच्यादधते न प्रेम
हाराधिकास्वामि - निभक्त्यनीहा
राधापदे यस्य च मुदःसुधा रा
जन्मास्ति धन्यं समवेत् सदाऽजः
श्रीः शोभते तस्य मुखे गृहे श्री
जीवत्यहो कृष्णपदाब्जया जी

श्रेमत्कः
पुरुषोत्तममास समारोहे समागतविद्वन्मण्डलः
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
द्वि. फाल्गुन कृष्ण 13 शनौ वि. सं. 2032 दि. 13.3.83

॥ श्रीसर्वेश्वरो विजयते ॥

श्रीमन्निखिल-महीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणीनां सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणां यतिपति-दिनेशादिविविध-विरुदावलीविभूषितानां महर्षिसनकादि-संसेव्य-श्रीसर्वेश्वर-समर्चन-परायणानां निगमागमनिचय-विचक्षणानां सनातनधर्मरक्षणव्रतानां गो-विप्र-साधुपरित्रायणपराणां विश्वकल्याणार्थं निरन्तरं विविधधार्मिकायोजन-शीलानामनेक-विद्यालय-महाविद्यालय-संचालन द्वारा संस्कृतशिक्षां संप्रसारयतां प्राचीनार्वाचीनग्रन्थानां मासिक-पाक्षिकादि धार्मिक पत्रपत्रिकादीनां च प्रकाशन-व्याजेन सर्वत्र सनातनधर्मजागर्तिं विदधतां संगीतादिसकल-कला-कोविदानां परममधुरभावभरित-वाग्व्यवहाराणामखिल भारतीय-श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वराणामनन्तश्रीविभूषित-जगद्गुरु

श्री श्रीजी

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यमहाराजानां

करारविन्दयोर्मिलिन्दायतां सप्रश्रयं समर्पितमिदम्

* अभिनन्दन-पत्रम् *

प्रातः स्मरणीयाः!

राजस्थानराज्यान्तर्गते भीलवाड़ामण्डलेऽनन्तश्रीविभूषित-जगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्य-प्रतिपादितद्वैताद्वैत-दर्शनानुगतानादिवैदिक-सत्सम्प्रदायानुवर्तिनि **श्रीदूधाधारीगोपालमन्दिरे** समायोजितः पुरुषोत्तम-मासीयाष्टोत्तरशत-श्रीमद्भागवत-सप्ताहपरायणादिमहोत्सवः शोभायात्रा-पूर्वकं गते 16.2.83 दिनाङ्के श्रीचरणैरेव सानुग्रहं समुद्घाटितः। पुनरत्रत्यानां भक्तजनानामभ्यर्थनया समारोहस्य समापनावसरेऽत्रभवतां भवतामाचार्यचरणानां दर्शनं समुपलभ्य वयमतितरां प्रमोदामहे।

जगद्गुरवः!

महर्षिसनकादिसंसेव्य-श्रीसर्वेश्वरप्रभोः कविवर-श्रीजयदेवसमाराधित-श्रीराधामाधवप्रभोश्च समर्चने संसक्तास्तपोविद्यावरिष्ठाः पूर्वाचार्य-चरणसरणिमनुसरन्तो वैदिकसंस्कृतेः प्रचाराय

प्रसारायचानवरतं कुम्भाद्यवसरेषु विविधधार्मिकायोजनान्यनुतिष्ठन्तः श्रीमन्तो यत्र कुत्रचित् सनातनधर्मविपरीताचरणभाषणाद्यवेक्षन्ते तत्र तत्परिहाराय सततं सनह्यन्ति। यथासमयं सनातनधर्मरक्षणाय समस्तधर्माचार्याणां समन्वयः स्यादित्यतो हेतोः, अ. भा. विराट्सनातन-धर्मसम्मेलनं समायोज्य श्रीचरणैर्यदुपकृतं तत् स्वर्णाक्षरेषु श्रीचरणानाममरकीर्तिं कलयिष्यति।

शिक्षाप्रचारकुशलाः!

शिक्षाया महत्त्वमङ्गीकुर्वद्भिः श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ एव श्रीसर्वेश्वरसंस्कृत-महाविद्यालय-श्री-निम्बार्कदर्शनविद्यालय-श्रीसर्वेश्वर-वेद विद्यालयानां सम्यक् सञ्चालनं शासकीयं साहाय्यमनादायैव विधीयते। अन्यत्रापि भूयांसो विद्यालयाः श्रीचरणानां संरक्षकत्वे संचाल्यन्ते। **''संस्कृतशिक्षयैव सनातनधर्मस्य संरक्षणं सम्भाव्यते''** इति श्रीमतां द्रढीयान्प्रत्ययः।

वैष्णवमानसहंसाः!

प्रथमे वयस्येवाखिलभारतीय-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-पदमलङ्कुर्वाणैस्तीर्थयात्रा-व्याजेन भारतभुवं परिक्रम्य न केवलं निम्बार्कसम्प्रदायस्यापितु चतुर्वैष्णवसम्प्रदायस्य सनातन-वैदिकधर्मस्य च पुण्यमयः सन्देशः प्रतिजनं प्रतिगेहं श्रीमद्भिरेव प्रापितः। तदिदं श्रीचरणानां वर्चस्वं व्यक्तित्वं वैष्णवजनानां मानसेषु हंसायते।

धर्मनिधयः!

साम्प्रतं विषमेऽप्यस्मिन् समये भवादृशां धर्मधुरीणानामाचार्यचरणानां शास्त्रीयोपदेशेनैव धर्मप्राणस्यास्य राष्ट्रस्य संरक्षणं सम्भविष्यति। श्रीचरणानां शुभाशीर्वचोभिरत्रत्या जनता धर्मस्य रहस्यमधिगम्य सदध्वानमनुसरिष्यति नूनम्।

अद्य श्रीमद्दर्शनेनोपदेशपीयूषपानेन चाप्लाविता वयं प्रार्थयामहे यद् भूयोऽप्यनुग्रहीष्यन्त्यत्र भवन्तो भवन्त इति।

स्थानम्
श्री दूधाधारी गोपाल-मन्दिरम्
भीलवाड़ा मण्डलम्।
राजस्थानम्
दि. 24.2.83

श्रीमच्चरणच्चञ्चरीकाः
महन्त दीनबन्धु शरणः
अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण-
समिति-सदस्याश्च
भीलवाड़ा-वास्तव्याः सनातन धर्मानुयायिनो जनाश्च

श्रीसर्वेश्वरो जयति

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीमदाद्यनिम्बार्काचार्यपीठ-परम्परावर्ती श्रीहरिव्यासदेवाचार्य षष्ठ शताब्दी महोत्सवोपलक्ष में–हंसावतार स्थल श्रीनिम्बार्क तीर्थ-रूप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ परशुरामपुरी (सलेमाबाद) में आयोजित

अखिल भारतीय विराट् सनातन-धर्म सम्मेलन में समागत

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

के चरण-कमलो में सादर समर्पित

✳ अभिनन्दन-पत्र ✳

करुणानिधान!

आपकी सौम्यता, सरलता, दयालुता के सभी भक्त आभारी हैं। साधारणातिसाधारण व्यक्ति पर भी आपकी वही करुणापूर्ण दृष्टि रहती है, जो उच्च से उच्च व्यक्ति पर होनी चाहिए।

श्रीसर्वेश्वर-परायण!

प्रतिक्षण आपकी श्रीसर्वेश्वर के चरणों में निष्ठा बनी रहती है। जटिल से जटिल समस्या हल करने-कराने में आप श्री सर्वेश्वर प्रभु पर ही निर्भर रहते हैं। वे ही आपके समस्त संकल्पों को पूर्ण करते हैं। यह अखिल भारतीय सनातन धर्म-सम्मेलन भी एक ऐसा जटिल कार्य था, जो आपकी उदार भावनाओं और श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अनुकम्पा से सानन्द-सम्पन्न हुआ।

श्रीसनकादि सम्प्रदाय सिद्धान्तसमर्थक!

जब से आपश्री का धराधाम पर आविर्भाव हुआ और अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ के सिंहासन को आपने अलंकृत किया है, तब से सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार और इस आचार्यपीठ की अभूतपूर्व उन्नति हुई है, यह आपका दिग्विजय कहा जायेगा।

धर्म-धुरन्धर!

सभी जगद्गुरुओं का आप में आत्मीय भाव है। आप भी सबको उसी प्रकार सम्मान प्रदान करते हैं। इस पारस्परिक प्रेमभावना से ही आज देश में चारों ओर धर्म की पुनर्जागृति हो रही है और यह धार्मिक सम्मेलन आयोजित करना सम्भव हुआ है।

अनन्त गुणगणार्णव!

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की स्वागत-समिति के हम समस्त जन अनन्तश्री के चरण-कमलों में कोटिशः प्रणतिपूर्वक श्रद्धासुमन रूप यह अभिनन्दन समर्पित करके महान् गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

हम हैं आपके चरणकिंकर–
अ.भा. विराट् सनातन धर्म-सम्मेलन
स्वागत समिति के सदस्यगण

श्रीसर्वेश्वरो जयति

श्री रामकृष्णाभ्यां नमः

श्री भगवन्निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः

श्रीमन्निखिलभूमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, निवृत्तिपथप्रवर्तक, अनादि वैदिक सत्सम्प्रदायाचार्य, द्वैताद्वैतसिद्धान्त-सम्पोषक भगवन्निम्बार्काचार्यचरणाधिष्ठित अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रुतिस्मृति-पुराणाद्यखिलशास्त्रसार-मर्मज्ञ सुरभारतीप्रचारप्रसारपरायण सनातनधर्म संरक्षक अनन्तश्री समलङ्कृत

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य

श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज

के परम पावन कर कमलों में सभक्तिभाव समर्पित

✳ अभिनन्दन-पत्र ✳

प्रातः स्मरणीय!

कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु श्रीपुष्करराज क्षेत्रान्तर्गत अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ समीपस्थ अरड़का ग्राम में श्रीनृसिंह मन्दिर के महन्त एवं आचार्यपीठ के कोतवाल **श्रीरामसेवकदासजी महाराज** की सत्प्रेरणा के फलस्वरूप श्रीविष्णु महायज्ञ समिति द्वारा आयोजित पञ्चदिवसीय श्रीविष्णु महायज्ञ के पावन अवसर पर श्रीचरणों में यह भक्ति भाव पुरःसर सारस्वत सुमनोऽञ्जलि समर्पित करते हुए हम परम गौरव एवं आनन्द का अनुभव करते हैं।

करुणा-वरुणालय!

श्रीनिम्बार्कतीर्थ के समीपस्थ ग्रामों में इस समय जो धार्मिक जागृति हो रही है, यह सब समय-समय पर आपश्री के दिव्य प्रेरणाप्रद सदुपदेश एवं आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। वर्तमान में यहाँ जो विशाल धार्मिक आयोजन हो रहा है, जिसमें सुदूर स्थानों से धर्माचार्य एवं विशिष्ट सन्त महात्मा विद्वानों का जो शुभागमन हुआ है, वह श्रीचरणों की अहैतुकी अनुकम्पा के बल पर ही सम्भव हो सका है।

धर्म-धुरीण!

आपश्री अपने प्रेरणादायक जीवन में प्रारम्भ काल से ही **''स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:''** एवं **''धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:''** इस दिव्य सन्देश को लेकर भारत की धर्मप्राण जनता में धार्मिक जागृति हेतु सतत प्रयत्नशील हैं। धार्मिक जगत् में आज धार्मिक समन्वय भावना की महती आवश्यकता का अनुभव कर आपश्री ने आचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ में एक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के माध्यम से सभी धर्माचार्यों को एक ही मञ्च पर विराजमान करा कर अपनी उदारता एवं आदर्श धर्मधुरीणता का परिचय दिया है।

साहित्य-मार्तण्ड!

आपश्री हमारे पूर्वाचार्यों के साहित्य सर्जन की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए देववाणी एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से साहित्य की अनुपम सेवा कर रहे हैं। विविध स्तोत्रों की रचना का संग्रह स्वरूप **''श्रीस्तवरत्नाञ्जलि''** तथा **'श्रीसर्वेश्वर सुधा बिन्दु'** जिस पर विश्वविद्यालय के शोध छात्रों द्वारा अध्ययन एवं शोध कार्य चल रहा है वह एक गौरव का विषय है। इसी आपश्री की साधना के अन्तर्गत आप द्वारा **''भारत-भारती-वैभवम्''** नामक ग्रन्थ का जो प्रणयन हुआ है, वह संस्कृत साहित्य की अनुपम निधि है।

आचार्यचरण!

यद्यपि कलिकाल के इस विषम समय में हमारी वैदिक संस्कृति एवं धर्म पर विविध प्रकार के प्रहार हो रहे हैं, किन्तु **''आचार्यं मां विजानीयात्''** इस तथ्य के अनुरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सतत समाराधन शक्ति द्वारा प्रजा में संस्कृति एवं धर्म संरक्षण अवश्यमेव होगा और आपश्री के सत्प्रयासों से यह भारत राष्ट्र विश्वगुरु पद पर प्रतिष्ठित होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

अन्त में श्रीचरणों में मुहुर्मुहुः अभ्यर्थना है कि इसी प्रकार आपका वरद हस्त सदा बना रहे।

विनीत–

श्रीविष्णु महायज्ञ समिति
के
अरड़का के समस्त सदस्यगण

वैशाख शु. 8 रविवार सं. 2042
दिनांक 28 अप्रैल, 1985

श्रीसर्वेश्वरो विजयतेतराम्

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य-चक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, यतिपतिदिनेश, भक्तिज्ञानप्रचारप्रसारनिरत, सत्साहित्यकमलदिवाकर, सनातनधर्मधुरीण

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के

पावन कर कमलों में सादर सभक्ति समर्पित

* अभिनन्दन-पत्र *

श्री आचार्यचरण!

आज बोंली ग्राम निवासी हम सब और विशेषतया **त्रिगुणायत ब्राह्मण परिवार** अपने आपको परम सौभाग्यशाली मानते हैं कि जो आपने नानाविध कार्यों की व्यस्तता होते हुए भी आपश्री ने इस ग्राम में पादार्पण कर हमको अनुगृहीत किया है, यह आपश्री की उदारता एवं वत्सलता का परिचायक है।

प्रात: स्मरणीय!

यद्यपि आपश्री के सम्बन्ध में कुछ कहना भगवान् भास्कर को दीप-दर्शन तुल्य महत्त्वहीन प्रतीत होता है, किन्तु जिस प्रकार भगवान् भास्कर का षोडशोपचार-पूजन करने का इच्छुक भक्त यदि दीप-दर्शन न कराये तो पूजा अपूर्ण ही समझी जायेगी, अत: उसे वैसा करना ही पड़ता है। एवमेव जो कुछ आपश्री के सम्बन्ध में व्यक्त किया जाय, उसे हृदयोद्भूत भाव-सुमन मान कर कृपा पूर्वक स्वीकार करावें।

परम उदारचेता:!

यद्यपि यह बात सही है कि इस भयावह कलिकाल में धर्म अत्यधिक कृशता को प्राप्त हो रहा है। अत: सभी धर्मप्रिय व्यक्ति चिन्ताग्रस्त हैं, परन्तु हमें विश्वास है, कि जब तक भारतीय-संस्कृति व सनातन धर्म के संरक्षक आपश्री जैसे धर्मप्राण आचार्य विद्यमान हैं, तब तक चिन्ता की कोई बात नहीं है। क्योंकि आपश्री की छत्रछाया में आचार्यपीठ में वेदादिशास्त्र एवं वेदवाणी के संरक्षणार्थ **''श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय''**, **''श्रीसर्वेश्वरशास्त्री संस्कृत महाविद्यालय''** तथा **''श्रीनिम्बार्कदर्शन विद्यालय''** चल रहे हैं, जिनमें अध्ययन करने वाले 60 छात्रों को **''श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास''** में नि:शुल्क आवास, भोजन, प्रकाश, पुस्तकें आदि की व्यवस्था है। साथ ही गो सवा, सन्त-सेवा, विद्वत्सम्मान, साहित्य प्रकाशन, **श्रीनिम्बार्क** पाक्षिक-पत्र प्रकाशन, **श्रीसर्वेश्वर** मासिक-पत्र का प्रकाशन, निम्बार्क-साहित्य विशारद परीक्षा संचालन, श्रीनिम्बार्क-पुस्तकालय, श्रीहंस वाचनालय, श्रीहरिव्यास औषधालय आदि विभिन्न पारमार्थिक संस्थाओं द्वारा जो जन-कल्याण हो रहा है, वह अनुपम है।

सद्धर्मधुरीण!

आपश्री के द्वारा आचार्यपीठ में ही अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का सफल आयोजन करके मंच पर भारत के समस्त धर्माचार्यों का सम्मिलित होकर धर्म के सम्बन्ध में विचार मन्थन करके देशवासियों को वर्तमान युग में सनातन धर्म का रहस्य बोध कराने का जो अवसर प्रदान किया है, वह इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों से उल्लिखित जगमगाता रहेगा। साथ ही समय-समय पर अन्य धर्माचार्यों द्वारा आयोजित विविध धर्म-सम्मेलनों में पधार कर अपना दिव्य सन्देश देकर दिग्भ्रान्त जन-समाज को सन्मार्ग प्रदर्शित किया है, यह आपश्री के दिव्य गुण-गौरव का अभिवर्द्धन करता है। प्रत्येक कुम्भ एवं पुरुषोत्तम मास के पुण्य पर्वों पर निम्बार्क नगर तथा आचार्यपीठ में विविध धार्मिक कार्य-कलापों में विद्वत्सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, सङ्गीत सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन आदि विभिन्न सम्मेलनों का समायोजन करा कर जो सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार व रक्षण किया जाता है, वह चिर स्मरणीय है।

सौजन्यामृतसिन्धो!

इतना सब करते हुए भी आपश्री के स्वभाव में नितान्त सरलता, निरभिमानिता, दयार्द्रता आदि दिव्य गुण सुशोभित होते रहते हैं। किसी भी दीन दुःखी, रोगी को शरण में आते ही निःशुल्क बहुमूल्य औषधोपचारादि से स्वस्थ एवं नीरोग बनाकर परम हर्ष का अनुभव करते हैं। कभी-कभी अत्यन्त सङ्कटावस्था में तो भगवच्चरणामृत, भगवत्प्रसाद, धूनी की विभूति, आदि प्रदान कर (आत्म-विश्वास के साथ) अद्भुत आश्चर्यजनक चमत्कार दिखा देते हैं।

साहित्याब्जदिवाकर!

वेद, वेदाङ्ग, दर्शन, साहित्य, सङ्गीत, आयुर्विज्ञान आदि विषयों में आपश्री का अगाध वैदुष्य देखकर बड़े-बड़े मनीषी दंग रह जाते हैं। आपश्री द्वारा सद्धर्म व भक्ति पूर्ण अनेक सद्ग्रन्थ रचे गये हैं, जो देश व समाज के लिए अनिर्वचनीय सुखशान्तिदायक एवं हितकारक हैं। अभी-अभी आपश्री ने जो "**भारत-भारती वैभवम्**" ग्रन्थ लिखा है, जिसका विद्वत्समाज में बड़ा आदर हुआ है। आपश्री की अनेक रचनायें उत्तर प्रदेश आदि के विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रम में रखकर अपनी गुणग्राहिता का परिचय दिया है।

परम श्रद्धास्पद!

एक बार पुनः हम सब ग्रामवासी व त्रिगुणायत परिवार के सदस्य आपश्री के चरणकमलों में अपनी अटूट श्रद्धा व निष्ठा अभिव्यक्त कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं कि आपश्री ने अपने पादार्पण से ग्राम को एवं इस अकिञ्चन ब्राह्मण परिवार को कृतकृत्य किया है और दृढ़ विवास है कि हम भविष्यत् में भी आपश्री की कृपा के पात्र होते रहेंगे।

कार्तिक कृष्ण 7 सं. 2042

दिनांक 5 नवम्बर, 1985

श्रीचरणकमलानुरागी
बौंली निवासी
जिला सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

राजस्थान-शासनम्

शिक्षा-विभागः

इदं राज्यस्तरीयपुरस्कारप्रशस्तिपत्रं श्रीमते जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य महोदयाय संस्कृत-शिक्षा-क्षेत्रे प्रशंसनीय-लोक-सेवायै सम्मानार्थं शासनेन प्रदीयते।

(ह. रणजीतसिंह कुमटः)
शासन-सचिवः
राजस्थान-शासकीयः

संस्कृतदिवसः, १९८६
जयपुरम्,

राजस्थानप्रदेशस्य टोंकविषयान्तर्गत–मालपुरानगरे सम्पन्ने ब्राह्मणजातीयवटूनां सामूहिक–यज्ञोपवीतसंस्कारसमारोहे विद्वत्सम्मेलने च विराजमानानां जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य–पीठाधीश्वराणां श्री अनन्तश्रीविभूषितश्री श्रीजी महाराजानां श्रीमतां तत्र भवतां श्री

राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां

सम्मानार्थं पठिता मन्दाक्रान्ताः–

पीठासीनान्प्रणतशिरसा संविधाय प्रणामा-
न्नाचार्याङ्घ्रीन्नघघनघटाखण्डनोद्योगदक्षान्।
प्रस्तौत्येवं सकलविदुषां दासभूतो जनोऽयं,
मन्दाक्रान्ताभिरिह करुणामिश्रिताभिश्च वाग्भिः॥ 1 ॥

धर्मत्राणव्यसनदलिताशेषविघ्नोदयानां
विद्यारक्षाव्रतपरवशीजातचित्तक्रियाणाम्॥
विद्वत्सेवासमुदितयशःशौक्ल्यशुक्लच्छवीनां
कोऽन्यः स्याद्यः समगुणतया श्रीमतां सत्क्रियेत॥ 2 ॥

पूर्वेषां नः शिबि-शुक-रघु-व्यास-बालमीकिनाम्ना-
मारम्भो वै किमभिभवितुं कीर्तिमारब्ध एषः॥
लोके ये ये परहितकृतस्ते स्वभावानुसारं
वर्तन्ते न क्वचिदपि परस्पर्धया तत्प्रवृत्तिः॥ 3 ॥

वाचः शक्तिर्भवति कियती साक्षमा किं प्रवक्तुं
गाथां युष्मद्गुरुगुणगणग्राहिणी मर्हणीयाम्॥
कश्चित्साक्षाद्विशतु हृदयं तत्र पश्यत्वशेषान्
भावांस्तां स्तान्यदभिवचने निर्बलं शब्दशास्त्रम्॥ 4 ॥

अस्मनन्यस्तैः श्रमशतभरैर्यद्यपि स्कंधयुग्मं
श्रान्तं नैषा विरतिमयते निष्ठुरा नः प्रवृत्तिः॥
स्वाभाविक्या निजगुरुतया मालयेवापि नद्धान्
भूयो भूयो निरतशरणाः संविदध्मो गुरून्वः॥ 5 ॥

मालपुरा
माघ शुक्ला षष्ठी
सं. 2044

विनीतः
हरिनारायण तिवाड़ी
समारोहस्याचार्यः

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराः, समस्त-वेदवेदाङ्गसमभ्यर्चित-पूतान्तः करणाः, व्याकरणाद्यनेक-शास्त्रनिचयचेतोऽमलाः, निजबोधप्रकाशित-सकलाज्ञानोज्जृम्भितभाः, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र-स्वमत-प्रतिष्ठापकाः, चतुर्विध-पीठाधीश्वरेश्वराः, विविध-विबुध लोका-लोक-विज्ञान-सम्भार-भूषित-पाद-पद्मोत्फुल्लेन्दीवराः, नृलोक-कोक-शोकापनोदम्ब-रमणयः, श्रीराधामाधव युगलपाद-सरोजगन्ध-मुग्ध-मकरन्द-रसास्वादमधुकरततयः, श्रीनिम्बार्कपथ-मन्दाकिन्यवगाहाह्लादितमहोदारकीर्तयः, सार्वभौम निजसनातनधर्म-प्रचारचित्तैकभावाः, तापत्रयनिवारणैकमात्र-संकल्पित समस्त नित्यनैमित्तिकादि व्यपदेशभाजः, कृपादृष्टिवृष्टिरावर्षहर्षाकुलित-सज्जन जनमानस-मानसराजहंसाः, साध्वसाधु-निर्गत-विक्षोभ-क्षुभित-स्वधर्मस्थापनैक-कर्मव्यग्राः, विद्योतित-विवेकानेक-तर्कवितर्कवाद-खण्डन- मण्डनैकपक्षस्वच्छाः परमपद-पीयूषपान-निर्जिताकाण्डान्तक-ताण्डव-ताण्डव नृत्याखिन्नमनस्काः, दीनजनान्तःकरणसरणिशरणाः, स्वज्ञान-तिग्मकुठार-निर्जितार्जुन-कलिकुटिल-खलवंशाः, साक्षादवतरित-हरिचक्रखण्डितानार्यवारित-समस्तापवाद-स्वधर्म-धौरेयाः, श्रीराधासर्वेश्वरीङ्गिताङ्गुलिदल लुलितगुणानुरागाः, एवं विविध-विधवैदुष्यपुष्यमान मानसानां श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वराणां चरणसरोजयोः समर्प्यते इदम्

अभिनन्दन-पत्रम्

तपो निधिर्ज्ञाननिधिः सुधानिधिः, विद्यानिधिर्बोध-निधिर्महान्निधिः।
गिरां निधिः पुण्यनिधिर्यशो निधिः, सोऽनन्तधीर्वो विदधातु मङ्गलम्॥ १॥

भवदुःख-दवार्दितानामपि पिहिताज्ञान-चक्षुषाञ्च।
निरतिशयनिरयोन्मज्जितानामिह भवतु भूतये भवत्प्रकाशः॥ २॥

कलि-कुटिल कटाक्ष-मूर्च्छितानां, विविध-विधपाखण्डखण्डितानाम्।
विलुलित-निज-धर्मवर्मणां च, स्यादिह 'निम्बार्क' तव प्रकाशः॥ ३॥

वाव्रज्यमानाः पथि लोकसंघाः, परस्परं सम्प्रति किं वदन्ति।
न कुत्रचिद् भाति भवप्रकाशो, विकासते भास्कर-निम्बग्रामे॥ ४॥

श्रीनिम्बार्क-तपःस्थल-स्थलिरसौ, संकीर्त्यते कीर्तिभिः,
विज्ञैरज्ञजनैरनेकरसिकैः, सम्पूज्यमानः सदा।
सद्यो हृद्यजनैरुदारकृतिभिराराध्यमानः सदा,
संसारार्ति विनाशनाय सततं, सोऽसौ मुदे जायताम्॥ ५॥

निम्बग्रामे ललित-ललिते प्रेमपूर-प्रवाहे,
कूजत्कीरे सुतीरे नवजलमधुरे चक्रकुण्डे विशाले।
स्नात्वा पीत्वा च तोयं ननु भवति जनो मुक्तिदो भक्तिदोऽसौ,
निम्बार्काचार्यवर्यो यदधिगतवान् निम्बग्रामः पुनातु॥ ६॥

नन्दग्रामान्तिके ग्रामो, 'गिडोह' इति विश्रुतः।
वास्तव्योऽहं भवद्भक्तः, स्वर्पितः कुसुमाञ्जलिः॥ ७॥

दिनाङ्क 9 मई 87

भवताम्
आचार्य हेतीलाल 'त्रिपाठी'
मन्त्री-विश्व-हिन्दू परिषद्
गोवर्धन प्रखण्ड, जनपद-मथुरा

अनादिवैदिकद्वैताद्वैतसत्सम्प्रदायप्रतिष्ठापक तथा श्रीराधाकृष्ण युगलोपासना-प्रवर्तक सम्प्रदायाद्याचार्य श्रीजगद्गुरु निम्बार्काचार्य परम्परा पीठाधिपति श्रीसनकादिसेवित सर्वेश्वराराधन-परायणैकजीवन, विश्वविश्रुत-वैभव, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

(आचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद)

के मंगलमय कर-कमलों में सादर समर्पित

✵ अभिनन्दन-पत्र ✵

आचार्य-शिरोमणे!

वेद-वेदाङ्ग शास्त्रों का विधिवत् स्वाध्याय सम्पादित कर तदनुसार वैदिक वर्णाश्रमाचार सदाचार परिपालन में जनता जनार्दन को अनुक्षण प्रवृत्त कर स्वयं तदनुकूलाचार परिपालन परायण महामहिम परिकरावतार पुरुष ही महिमामण्डित आचार्य पद से गौरवान्वित हुआ करते हैं। आपश्री ने अपने स्वल्प वय से ही उस गरिमामय पदानुकूल उत्तरदायित्व का निर्वाह कर जो अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है, वही आपश्री के आचार्यशिरोमणित्व का सर्वोत्तम द्योतक है।

धर्मप्रचारकाग्रगण्य!

मानव जीवन में धर्म का क्या महत्त्व है, संसार संचालन में धर्म की क्या उपयोगिता है, धर्म बिना धरातल की क्या स्थिति हो सकती है, धर्म-रक्षा के लिए अनन्त ब्रह्माण्डनायक भगवान् भी क्या-क्या स्वरूप नहीं धारण करते हैं, एकमात्र धर्म-परिपालन से ही विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, आज धर्म की उपेक्षा से ही जगत् में चतुर्दिक्षु अशान्ति का ताण्डव नृत्य हो रहा है, इस रहस्य को भली-भाँति जानकर धर्मप्राण, धर्मवित्, धर्मस्वरूप आपश्री द्वारा अहर्निश भारत-वसुन्धरा पर विगत चार दशाब्दियों से जो धर्म-प्रचार का मङ्गलमय कार्य हुआ है, हो रहा है और होने वाला है, उसकी जितनी भी प्रशंसा-अनुशंसा की जाय, थोड़ी है। इस महान् धर्म-प्रचारक आचार्य के रूप में हम आपश्री की शत-शत वन्दना करते हैं।

भागवतोत्तमोत्तम!

धर्म बड़ी उत्तम वस्तु है, यज्ञ-दान, तप सबका महत्त्व है, ये सभी पावन हैं, पवित्र करने वाले हैं, अतएव अवश्य अनुष्ठेय हैं, इसमें कोई संशय नहीं, पर ये निष्कण्टक नहीं-निरापद नहीं। कर्म जन्म शुद्धि सापेक्ष है और

जन्मशुद्धि सबका संशयग्रस्त होता है, अतः गीता, भागवत आदि भक्तशास्त्रों तथा अशेष भगवताचार्यों ने हरि-भक्तों को ही निष्कण्टक राजमार्ग बताया है। आपश्री इसी सर्वातिशायी लोक-मंगल भक्ति के परमाचार्य हैं। आपश्री का जीवन, आपश्री के जीवन का हर क्षण, श्रीयुगलप्रियाराधन, श्रीसर्वेश्वर समर्चा, श्रीयुगलनाम-संकीर्तन, सबको सब दिन श्रीहरि-भक्ति का उपदेश, यही आपश्री का जीवन है। भागवतोत्तम नित्य-परिकर परमाचार्य के रूप में भी हम आपश्री की कोटि-कोटि वन्दना करते हैं।

सम्प्रदायोद्धारक!

श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय अनादि वैदिक सम्प्रदाय है। इसका द्वैताद्वैत वेदान्तिक प्रस्थान, इसकी स्वाभाविक भेदाभेद की प्रतिष्ठा, इस सम्प्रदाय की श्रीराधाकृष्ण युगल उपासना, इसका रागद्वेष राहित्य तथा खण्डन-मण्डन निरपेक्ष श्रुति सूत्रानुमोदित स्वसिद्धान्त प्रतिपादन परायणता—सब अद्वितीय हैं, आकर्षक हैं, अशेष विश्व हितकारी हैं। इस सम्प्रदाय का जो प्रायः बाहर लुप्त प्रचार हो चुका था, आपने अल्पावधि काल में अपने अमूल्य स्वास्थ्य की भी परवाह न करते हुए समस्त भारत में घूम-घूमकर कदाचित् तीर्थयात्रा के माध्यम से, कदाचित् व्रजयात्रा के प्रसंग से, कुम्भों में श्रीनिम्बार्कनगर की स्थापना से अशेष देश में दूर-दूर तक भ्रमण कर जो प्रचार-प्रसार किया, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता, सम्प्रदाय के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

प्रातः स्मरणीय गुरुदेव!

आप अकारण करुण-करुणा-वरुणालय हैं। प्रभो! हम धन, जन, बुद्धि, वैभव, भक्तिविहीन फरह वासियों में आपश्री की सेवा सम्मान के अनुरूप कोई भी योग्यता नहीं है, फिर भी आपने हम दिग्भ्रमित फरहवासी पामरजनों के उद्धार के लिए जो अहैतुकी कृपाकर पधारे। हम पतितों का उद्धार किया। एतदर्थ हम आपश्री के बहुत-बहुत आभारी हैं। आज से 13 वर्ष पूर्व भी आपने हम लोगों के कल्याण के लिए अपने मंगलमय दर्शन से कृतार्थ किया था और आज पुनः कृष्णमुरारी हलवाई द्वारा नव निर्मित भवन 'किशोरी-सदन' के निमित्त आपश्री का पदार्पण हमारे परम सौभाग्य का सूचक है। आपकी इस असीम अनुकम्पा से हम सभी फरहवासी अत्यन्त अभिभूत हैं। आपके इस परमोदात्त स्वभाव को शब्द शृंखला में आबद्ध करना हमारे लिए अशक्य है।

आपकी इस अकारण कृपा दृष्टि की वृष्टि से सिंचित होकर हम सभी फरहवासी आपश्री का साञ्जलि अभिनन्दन तथा अभिवन्दन करते हैं, साथ ही यह भी आकांक्षा रखते हैं कि इसी तरह भविष्य में सदैव पधार कर हमारी शुष्क-भावनाओं को सिंचित करते रहेंगे।

दिनांक 08.07.88

अभिनन्दक हम हैं–
सर्वेश्वर संसद के सभी सदस्य
एवं समस्त फरहवासी

श्रीमन्निखिलमहि-मण्डलाचार्य-चक्रचूडामणिः सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र
द्वैताद्वैत प्रवर्त्तक यतिपति दिनेशानन्तश्रीविभूषित
जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधिपति

श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य

श्री श्रीजी महाराजमहाभागानाम्

✣ नागरिकाभिनन्दनम् ✣

मधुरकोमलकान्त-चरितचित्रितमानसाः!

अनुभूतीनां द्वन्द्वैरेव प्राणिनां जीवनस्य समारम्भो भवति। क्वचिदेव अननुभूतजीवन-स्योच्चावचभूमेः साहजिक-संस्कारवशादेव ऐकान्तिकरागवृत्त्या जीवनसोपानानि समुत्तीर्यात्मान-मन्यांश्च समुत्तार्य कृतार्थतां लभन्ते महात्मानः। इत्येवं विधं माहात्म्यमुररीकृत्य श्रीमद्भिः स्वल्पतमे वयस्येव त्यागेन वैराग्येन अभ्यासेन च सितासितकान्तिराराधितेति परमाभिनन्दनार्हमेवास्ति।

गोपवधूरगायनोदञ्चितचेताः !

अत्रभवतां द्वैताद्वैतसिद्धान्तवेदान्तचिन्तनप्रौढानां विशिष्टशास्त्रानुशीलनेनावाप्तप्रतिभाभास्वराणां निम्बार्काचार्याधिष्ठितपीठाधीशपारम्पर्यानुगतानामाचार्यपादानां शुभागमनेनामन्दानन्दसन्दो-हमयोऽयं वाग्वरप्रदेशः।

मदनमनोहरवेषसमाराधनतत्परा: !

सगुणत्व-निर्गुणत्व – उभयविधश्रुतिस्मृत्यादिवाक्यानां तुल्यबलत्वाभ्युपगमेन परस्पर-बाध्या-बाधकभावस्य अनंगीकारेण चिदचिद्भ्यां स्वाभाविकभिन्नाभिन्नत्वं ब्रह्मेति प्रतिपादयति द्वैताद्वैत-सिद्धान्तः। इत्थं मनस्यवधार्य सकलजगज्जनक्षेमाय वृन्दावनानन्दां ह्लादिनीं शक्तिरूपिणीं परमां श्रेष्ठां गोपिकां राधिकामेव समाराध्य मूर्तिमद् भक्तिश्रद्धे इव चेत: परम्प्रसादतामुपयाति।

कुसुमसुकुमारकोमलकलाराधका: !

अस्मात्स्थानात् सुदूरपीठाधिष्ठिता अपि श्रीमदाचार्या: परमोच्चप्रेमराज्यस्यादर्शमहिमानं संस्थापनाय अत्रत्यानां मृदुमधुरकोमलभावविभावितान्तःकरणानां सहृदयजनानां मनोराज्ये अखिल-विश्वमोहनमोहिनीं नित्यरासेश्वरीं नित्यकुंजेश्वरीं चितिरूपेण कृत्स्नं जगत्संव्याप्य विराजमानां ह्लादिनीं राधिकां साक्षान्माध्वीकां वाग्देवतां दर्शयितुं श्रीमज्जगद्गुरूणां मंगलयात्रेयं प्रवृत्तेति निश्चिनुमः।

अद्य वयं नृजन्मसाधुविभवं मन्यमाना: श्रद्धाभरितात्मना सादरं सप्रश्रयं चाभिनन्दामहे।

यमुनाजलकूलकेलिकलाकुतुका: !

जगद्गुरूणामाचार्यमहाभागानां परमपवित्रार्चनायाभिमानि समादरगुम्फितानि श्रद्धाभरितभाव-सुमनानि समर्पयन्त: निरतिशयं सौभाग्यफलमिति मन्यामहे।

श्रद्धावनता:

महन्त राधाकृष्ण दास:
जगदीश मन्दिरं, राजा जी की छत्री डूँगरपुरम् (राज.)
अद्य विक्रमाब्द 2045, वै. कृ. 12, सौम्यवासर:

वाग्वर (बांगड़) विद्वत्परिषद्
नागरिकाश्च,
डूँगरपुरम्

॥ श्री रामकृष्णाभ्यां नमः ॥

रामो धर्म तनुः कृष्णो लीलापुरुष उत्तमः।
तौ नमामो जगद्वन्द्यौ धर्म-रक्षार्थमीश्वरौ॥

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, यतिपतिदिनेश, वैष्णवचतुः-सम्प्रदायान्तर्गत स्वाभाविक द्वैताद्वैतसिद्धान्तप्रवर्तक श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परागत जगद्गुरु अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

के आचार्यपीठाभिषेक-अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित,

सप्त दिवसीय अ. भा. सनातन धर्म सम्मेलन के शुभावसर पर, भारतवर्षीया विभिन्न सम्प्रदायाचार्य के धर्माचार्य, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, निर्वाणी-निर्मोही-दिगम्बर अनी के श्रीमहन्त, महन्त, सन्त महात्माओं द्वारा

श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

के पावन कर कमलों में सादर समर्पित–

✿ अभिनन्दन-पत्र ✿

पूज्य जगद्गुरु!

आपश्री के पीठाभिषेक **स्वर्ण जयन्ती महोत्सव** पर समागत हम सब चतुःसम्प्रदायी वैष्णव अत्यन्त हर्षित हैं। आज आपके बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न प्रतिष्ठित वर्चस्व से सम्पूर्ण सनातन धर्म जगत् गौरवान्वित है।

सद्धर्मरक्षक!

आपश्री ने विगत 50 वर्षों में सनातन धर्म, संस्कृति एवं सभी भारतीय परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए अनेक बार ऐसे विराट् धार्मिक अनुष्ठान एवं सम्मेलन आयोजित किये हैं, जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय रहेंगे।

वन्दनीय आचार्यवर्य!

आज इस मङ्गलमय अवसर पर भगवान् श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु से सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वक सर्वविध अभ्युदय एवं चिरायुष्य के लिए अभ्यर्थना करते हैं।

गुणग्राही अभिनन्दनकर्त्ता–

श्रीमहन्त हरिदास दिगम्बर अनी अखाड़ा, नासिक श्रीमहन्त बनवारीशरण शास्त्री, वृन्दावन, श्रीमन्त श्रीसन्त सेवकदास निर्वाणी, अयोध्या हनुमानगढ़ी, श्रीमहन्त नन्दरामदास अ. भा. निर्मोही अनी अखाडा, अहमदाबाद, महन्त श्रीबनवारीशरण शास्त्री जूसरी, श्रीमहन्त राधावल्लभशरण जी,म., कुण्ड उदयपुर, महन्त श्रीहरिवल्लभदासशास्त्री रेनवाल, श्रीमहन्त श्रीकन्हैयादास काठिया, मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त, महन्त श्रीपुरुषोत्तमदास अजमेर, अ. श्रीब्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ वृन्दावन, मुरलीमनोहरशरण, स्थल उदयपुर, महन्त श्रीपीताम्बरदास निम्बोल, अध्यक्ष अ. भा. निम्बार्क महासभा, महन्त श्रीललितशरण लीम्बड़ी, श्रीशुकदेवशरणजी महाराज संगीताचार्य, महामण्डेलश्वर श्रीव्रजविहारीशरण 'राजीव' श्रीनृसिंह पीठ, (महामन्त्री श्रीनिम्बार्क महासभा) अहमदाबाद, महन्त श्रीमनोहरशरण पलसाना, महन्त श्रीगोपालदास साँगानेर, महन्त श्रीराधाकृष्णदास, डूँगरपुर, बाबा श्रीमाधवशरण, निम्बार्कतीर्थ, महन्त श्री प्रेमदास थोब श्रीनवलबिहारीशरण, निम्बार्कतीर्थ, महन्त श्रीदीनबन्धुदास म. भीलवाड़ा।

समारोह स्थल – अ. भा. निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ–सलेमाबाद

पुष्कर क्षेत्र, अजमेर (राजस्थान)

शुभमिति–ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया रविवार वि. सं. 2050

दिनांक 23.5.93 ई.

श्रीसर्वेश्वरो जयति

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणि-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-यतिपतिदिनेश
अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

को पचासौं आचार्यपीठाभिषेक को 'स्वर्ण जयन्ती महोत्सव'
का उपलक्ष्य मा सादर समर्पित

❀ अभिनन्दन-पत्र ❀

आचार्यशिरोमणे!

अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय प्रवर्तक आद्यश्रीनिम्बार्काचार्यजी वाट दिग्दर्शित सर्वशास्त्र सम्मत स्वाभाविक द्वैताद्वैत दार्शनिक सिद्धान्त र प्रेमविशेषलक्षणा भक्तिभागीरथी को भास्वर धारा भूतलमा प्रवाहित गर्ने परम्परामा सुदीर्घकाल पछि आचार्यश्री नै प्रकट हुनुभई विश्वभरमा व्यापकरूपले वैष्णवता को प्रचार-प्रसार गर्न कृतसंकल्प देखिनु भयेको छ।

सनातनधर्मैकप्राण!

आचार्यश्री वाट समय-समयमा सम्पन्न भएका सनातन धर्मप्रचार सम्बन्धी महान् आयोजनहरू कसै वाटपरोक्ष छैनन्। वर्तमान समयमा संपद्यमान अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन पनि आफै आफमा एक अनुपम अभूतपूर्व विशाल आयोजन हो।

शास्त्रोद्धारपरायण!

निम्बार्क वैष्णव-सनातन धर्म का आधारभित्ति दुर्लभ ग्रन्थ हरुको प्रकाशन गर्नु, अतिव्यस्ततामा पनि स्वयं भक्तिसाहित्य र भारतको गौरवगाथा प्रकट गर्ने साहित्यको रचना गर्नु, आचार्यश्रीको अप्रतिहत प्रतिभाको फल हो र यो एक धर्माचार्यको दायित्वको निर्वाह पनि हो।

वैष्णवधर्मभास्कर!

आचार्यश्री वाट भएको सनातन वैष्णवता र आचार संहिताको पावन प्रचार वाट यस्तो कुन व्यक्ति होला, जो हृदयतः प्रभावित न होस्। दिगन्तव्यापी बहुआयामी अभियानहरु यसका ज्वलन्त उदाहरण छन्। आचार्यश्री ले भारतमा झैं नेपालमा पनि निम्बार्क वैष्णव-सनातन धर्मको व्यापक प्रचार गर्नु भएका अनन्तश्री सार्वभौमाचार्य श्रीभगवतशरणदेवाचार्यजी महाराज, यस आचार्यपीठ र आचार्यश्री प्रतिप्रगाढ श्रद्धावनत हुनुहुन्थ्यो र आचार्यश्रीको पनि उहाँ प्रति अगाध आत्मीयता छ, जो शब्द वर्ण्य न भए र अनुभूतिगम्यमात्र छ। हामी यस तादात्म्य भाव वाट परिचित छौं। उता श्रीभगवतशरणदेवाचार्यजी को जन्मशताब्दी मनाउने उद्देश्य लिएका हामी आज आचार्यश्रीको पचासौं पीठासीनता को स्वर्ण-जयन्ती-समारोहमा नेपालका निम्बार्क वैष्णवहरुका तर्फ वाट अभिनन्दन गर्न पाउंदा आनन्दित छौं।

सिद्धसंकल्पात्मन्!

आचार्यश्री को संकल्प सिद्ध छ। यही कारण हो आज हामीले अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत गर्ने भव्य आयोजनहरु देख्न पाएका छौं। आचार्यश्री अखिल भारत का एकमात्र श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर हुनुहुन्छ र सो कुरालाई हामी नेपालका लगभग सवा लाख निम्बार्क वैष्णव हरुले स्वीकार गर्दछौं।

हामी हौं हजुरका–

नेपालस्थ निम्बार्कीय मठाधीश, महन्त एवं विद्वत्समुदाय

मिति-ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया संवत् 2050 ज्येष्ठ 10 गते रविवार

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

॥ श्रीगोदारङ्गनाथपरब्रह्मणे नमः ॥ ॥श्री राधासर्व्वेश्वरो विजयतेतराम्॥

श्रीमद्वेदमार्ग-प्रतिष्ठापकाचार्याणां सत्सम्प्रदायाचार्याणां श्रीमद्धंसब्रह्मनारदसनकादिप्रवर्तितपथ-पथिकानां श्रीनिम्बार्काचार्य प्रदर्शित द्वैताद्वैतसिद्धान्तसिद्धानां स्वसम्प्रदायस्य बहुमुखीप्रोन्नतौ बद्धदीक्षाणां अनन्तश्रीविभूषितानां श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणां जगद्गुरुवर्याणां

श्रीराधासर्व्वेश्वरशरण देवाचार्याणां श्री 'श्रीजी' महाराजानां

करकमलयोः

स्व र्ण ज य न्ती म हो त्स वा स रे

समर्पितमिदं,

राधासर्व्वेश्वराष्टकात्मकम्

अभिनन्दन-पत्रम्

वन्दे वृन्दावनचरं वल्लवीजनवल्लभम्।
जयन्ती सम्भवं धाम वैजयन्ती विभूषणम्॥

(इति सूरयः)

श्रीहंस-ज्ञानदं नित्यं सेवितं सनकादिभिः। आत्मबन्धविमोकाय राधासर्वेश्वरं भजे॥ 1॥
निम्बार्काचार्यपीठस्थं जगद्गुरु-कृपार्णवम्। धर्मिष्ठं सत्त्वसम्पन्नं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 2॥
सौम्याकृतिमृजुं दान्तं शान्तं कोमलविग्रहम्। सदाचारे स्थितं शुद्धं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 3॥
सर्वेषु यो हि भूतेषु नारायणं प्रपश्यति। तं सत्यनिरतं देवं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 4॥
श्रीनारदादिसंसेव्यं श्रीशं सर्व्वेश्वरं विभुम्।अद्यापि सेव्यमानं तु राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 5॥
तस्य पाटोत्सवे चात्र पुण्ये रम्ये महोत्सवे। तन्मङ्गलकरं देवं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 6॥
प्रोन्नतिः कारिता येन पीठस्य सर्वतोमुखी। सत्यसन्धं दयार्द्रं तं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 7॥
राजस्थाने महापुण्ये चक्रतीर्थेऽथ पुष्करे। भ्राजमानं कृपासिन्धुं राधासर्व्वेश्वरं भजे॥ 8॥

सर्व्वेश्वराष्टकं प्रोक्तं वृन्दावननिवासिना।
राधासर्व्वेश्वरप्रीत्यै केशवदेवशास्त्रिणा॥

(शुभमास्ताम्)

श्रीरङ्गनाथ प्रेस		श्रेमत्कः
वृन्दावन-281121	ज्येष्ठ शुक्ल 7 भृगुवासरे	**पं. केशवदेव शास्त्री**
(उ. प्र.)	सं. 2050	सम्पादक–अनन्त-सन्देश(मासिक-पत्र)

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणि-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-यतिपतिदिनेशानां, नित्यनिकुंजविहारि-सर्वेश्वर-श्रीराधामाधव-युगलोपासनलीलानां तदीयललितलीलाचिन्तनशीलानां, स्वाभाविक-द्वैताद्वैतसिद्धान्त-प्रचार-प्रसार-परायणानां, धर्मरक्षणैकजीवनानां, उपासनापरक-प्राचीनदुर्लभ-सद्ग्रन्थप्रकाशनव्रतानां, रसोपासन-धार्मिक-राष्ट्रीय-सामाजिक-प्रेरणाप्रदनूतनसाहित्यसर्जकानां, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-कुम्भ-पुरुषोत्तममासादिपावनपर्वसु विविधयाग-सम्मेलनसदनुष्ठान-रामलीला-रासलीला-संगीतादिकार्यक्रमायोजकानां, न्याय-व्याकरण-वेदान्तायुर्वेद-साहित्यादिशास्त्रमर्मज्ञानां, संगीतादि-विशिष्टकलाकौशलानां, सकलकला-कलाप-विचक्षणानां, भगवदाराधनभूत-प्राचीन-जीर्णमंदिरोद्धारकाणां, नूतनमन्दिरनिर्मापकाणां, विद्यालयौषधालय-गोशाला-मुद्रणालय-पुस्तकालयादिविविधपारमार्थिकसंस्था-संचालकानां, तितिक्षा-करुणा-सौहार्दादिसाधुत्वगुण-भूषणानां, वांछाकल्पतरूणां, कृपासिन्धूनां वैष्णवाचार्यशिरोमणीनां, प्रातः स्मरणीयानामनन्त-श्रीसमलंकृतानां जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजानां

पावनकरकमलयोः श्रीचरणानामेवाचार्यपीठाभिषेक-स्वर्णजयन्ती-महोत्सवोपलक्ष्ये समायोजित-सनातनधर्मसम्मेलने सम्प्रति धर्माचार्याणां, विशिष्टमहानुभावानां, मूर्धन्यविदुषां, कलाविदां श्रद्धासंवलितधार्मिकजनानां समुपस्थितौ मंगलाभिषेक-स्वस्तिवाचनपूर्वकं समर्पितमिदम्-

❄ ❄ ❄ अभिनन्दन-पत्रम् ❄ ❄ ❄

प्रातः स्मरणीयाः!

भारतभूमिर्भगवतो नारायणस्यावतारलीलास्थली, तपःपूतमहर्षीणां साधनस्थली, भक्तिज्ञानवैराग्याणामाधारभूता त्याग-शौर्य-चरित्रवतां जन्मभूमिर्वर्तते। जयन्तु ते मनीषिणो यैः स्वदिव्यानुभूतेः साकाररूपमनन्तज्ञानविज्ञानकोषजातं विपुलशास्त्रवैभवं मानवाय प्रदत्तम्। एवं विधायाः शास्त्रसम्पदः संरक्षणस्य सदुपयोगस्य च दायित्वं श्रीचरणसदृशेभ्यो धर्माचार्येभ्यः समर्पितम्। कस्मिंश्चिद् विशिष्टे नक्षत्रयोगे महत्त्वशालिनां महानुभावानामस्यां धरायामाविर्भावो भवति। ते हि सामान्यमानववद् व्यवहरन्तोऽपि लोकोपकारिकार्येषु सर्वाग्रगण्या भवन्ति। तेषां सर्वोऽपि व्यवहारः सर्वेषां प्राणिनां मङ्गलकारी जायते। एतादृशेषु धर्माचार्येषु विशिष्टं स्थानं वहन्तोऽत्रभवन्तो निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणयः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रा यतिपतिदिनेशाः प्रातःस्मरणीयाः अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वरश्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-श्री 'श्रीजी' महाराजा अतितरां विजयन्ते।

आचार्यचरणाः!

श्रीसुदर्शनचक्रावतारैराद्यनिम्बार्कपादैर्दक्षिणभारतस्य गोदावरीतीरभूमिं स्वाविर्भावेनालङ्कृत्योत्तरभारतस्य यमुनापुलिनवर्तिनीं श्रीकृष्णस्य लीलाभूमिमाश्रित्य चिरं तपः स्वाध्यायौ सम्पादितौ। तदनन्तरं देवर्षेर्नारदाल्लब्धदीक्षैस्तीर्थयात्राव्याजेन सम्पूर्णां भारतभुवं परिक्रम्य सनातनवैष्णवधर्मस्य, सदाचारस्य, स्वाभाविकद्वैताद्वैतसिद्धान्तस्य, श्रीराधाकृष्णोपासनायाश्च सर्वत्र प्रवर्तनं विहितम्। ततः प्रभृति लोके निम्बार्कसम्प्रदायस्य ख्यातिः सञ्जाता। तदनुग्रहादेव सम्प्रति तदीयान् भूरि गुणान् दधानाः पुष्करक्षेत्रान्तर्गतेऽस्मिन्नेव निम्बार्कतीर्थे लब्धजन्मानोऽस्माकमाचार्यचरणाः कैशोरे वयसि, अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्य-श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजेभ्यः परम्परागतं जगद्गुरु-श्रीमन्निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वरत्वमधिगतवन्तः श्रीचरणानामाचार्यत्वकाले सनातनधर्मस्य सर्वतोमुखी प्रचुरप्रसारः सञ्जातः। एतदस्माकं कृते महद् गौरवमस्ति।

तितिक्षादिगुणालंकाराः!

"**तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्। अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः।**" इति कपिलोक्तास्तितिक्षादयो गुणाः श्रीचरणेषु पूर्णरूपेण समुपलभ्यन्ते। यतो हि, अपकारकेषु क्षमा, दीनेषु करुणा, सकलप्राणिषु सहृदयत्वं, अहितेष्वपि हितचिन्तनं, सत्यपि विरोधे सर्वदा परमशान्तरूपेणाववस्थानमित्यादयः स्वाभाविकाः सद्गुणा भूषणानीवालङ्कुर्वन्ति श्रीचरणान्। तथा च वैष्णवानां ये धर्मा औदार्यं, दयार्णवता, बाह्याभ्यन्तरशुचित्वं, सत्यपि विपुलवैभवे निस्पृहत्वं, निरन्तरमिष्टचिन्तनमित्यादयो धर्मा श्रीचरणेष्वनपायिनो वर्तन्ते। किं बहुना **आचार्यं मा विजानीयादिति** भगवद्वचनानुसारं साक्षात् भगवत्स्वरूपा आचार्यचरणा अस्माकं कृते। अत एव यो जनः श्रद्धया यदा श्रीचरणशरणं प्राप्नोति तदा तस्य जीवनं नितान्तं" पावनं कृतकृत्यं च भवतीति सर्वैरनुभूयते।

धर्मरक्षणैकव्रताः!

आचार्यपीठमधिष्ठायाचार्यपादैः पूर्वाचार्यसरणिमनुसृत्य तीर्थयात्राव्याजेन समग्रां भारतभूमिं प्रदक्षिणीकृत्य सद्धर्मोपदेशेन सर्वत्र धार्मिक-समुद्बोधनं विहितम्। अस्मिन्नेवक्रमे ब्रजयात्राप्रसङ्गे गोवर्धनं निकषा निम्बग्रामस्थितायाः श्रीनिम्बार्कतपःस्थल्या जीर्णोद्धारस्य सङ्कल्पः कृत आसीत्, तदनुसारं तत्र जीर्णोद्धारपूर्वकं श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णविहारिमन्दिरस्य भव्यं नवनिर्माणं च सम्पादितम्, यदद्य

ब्रजमण्डलस्यानुपममैतिहासिकं संस्थानं सञ्जातम्। कुम्भादिपर्वसु, सनातनधर्मसम्मेलनेषु च हिन्दूसंस्कृति-गोरक्षा-शिक्षा-देवस्थानसुरक्षा-महिला-संगीतादीनि सम्मेलनानि समायोज्य, विविधधर्माचार्यान् समन्वयीकृत्य सदुपदेशैः, कथाप्रवचनैर्विविधयज्ञानुष्ठानैश्च निरन्तरं धर्मरक्षणं विधीयत इति श्रीचरणानां धर्मसंरक्षणव्रतं स्वाभाविकं राजते।

विविधकलाकलापविचक्षणाः!

श्रीचरणा आयुर्वेदचिकित्साविज्ञानस्य गहनचिन्तनेन विशिष्टानपि चिकित्सकान् विस्मापयन्ति रस-भाव-गुणालङ्कारपूर्णाभिः संस्कृतहिन्दीकाव्यरचनाभिर्वाग्देवताभण्डारवैभवमभिवर्द्धयन्ति। दूरदर्शन-दूरश्रवणसाधनीभूतेन दृश्यश्रव्यचित्राङ्कनेन सदाचारसंवलितं श्रीनिम्बार्कचरितं सम्पाद्याधुनिककलाविदां कौशलमतिशेरते। नानाविधवाद्यसंगीतादिललितकला-नैपुण्येन निखिल-संगीतज्ञानां भावसाम्राज्ये नितरां विभ्राजन्ते।

पूज्यचरणाः

श्रीचरणानामाचार्यताभिषेकस्य पञ्चाशद्वर्षपूर्तौ समायोजितोऽयं **"स्वर्णजयन्तीमहोत्सवः"** न केवलं निम्बार्कसम्प्रदायस्यापितु सर्वस्यापि सनातनधर्मजगतः कृते प्रमोदावहो वर्तते। श्रीचरणानां सङ्कल्पसिद्धिः परमप्रसिद्धा। यादृशः संकल्पो हृदये समुदेति स एव वाचोच्यते, यश्च वाचा निगद्यते स एव क्रियया साध्यते। अतएव **'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनामित्युक्तिः** श्रीचरणेषु पूर्णतया सङ्गच्छते। अन्ततः, आचार्यचरणानां वात्सल्यमयमनुग्रहं कामयमाना वयमस्मिन्महोत्सवे मङ्गलाभिषेकस्वस्तिवाचनपूर्वकं निरामयदीर्घायुष्याय भगवन्तं श्रीसर्वेश्वरं प्रार्थयन्तः श्रीचरणानां करकमलयोरभिनन्दनरूपमिमं भावकुसुमस्तबकं समर्पयाम इति।'

श्रीमच्चरणकमलचञ्चरीकाः—
स्वर्णजयन्तीमहोत्सवसमितेः
विद्वत्परिषदश्च समस्तसदस्याः
अखिलभारतीयश्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

मिति-ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया रविवार
वि. सं. 2050
दिनाङ्क 23 मई 1993 ई.

श्रीसर्वेश्वरो विजयतेतराम्

तत्रभवतां भवतां श्रीमतां निखिलमहीमण्डलाचार्य-चक्रचूडामणीनां, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र-यतिपतिदिनेशानां, निरवद्य-विद्याविद्योतितान्तःकरणानां, अशेषसद्गुणगणसमाश्रयाणां, भारतीयसंस्कृति-संस्कृत-संरक्षण-परायणानां, अनतिसाधारणवाग्वैदुष्यवैभवविभूषितानां, अतिगहनतम-वेदवेदाङ्गीयनिबद्ध-दर्शन-विमर्शन-दर्शितनिरतिश- यशेमुषीविलासानां, अनादिवैदिकसनातनधर्म-प्रत्यवतिष्ठमानवादिवारण-कण्ठीरवाणां, शिष्य-प्रशिष्य प्रख्यापितकीर्तिकलापानां, अखण्डभूमण्डलमण्डनायमानवैदिक-वैष्णव धर्मप्रचार-प्रसारबद्धपरिकराणां, पञ्चषष्ठितमोऽब्दे प्रविविक्षूणां, विद्याज्ञानवयोवृद्धानां, अनवरतलोकोपकारनिरत-हृदयानां, सहजसौजन्यदान- दयादाक्षिण्यादिगुणगणलङ्कृतानां, श्रीयुगल ब्रह्मपादारविन्दमकरन्दास्वादक-परममनोमधुपानां, सतत- शास्त्रानुशीलनशुद्धमनस्सुमनस्सुविराजित-सुरसरस्वतीसेवाहेवाकिनां, हैयङ्गवीनम-सृणहृत्पटलानां, पण्डित-मण्डलीमूर्धन्यानां, विश्वोपकार-तत्पराणां, यमनियमादियोगाङ्गानुष्ठानपरिपूतान्तः-करणानां, सततपरमात्म-चिन्तनविमलस्वान्तानां, स्वाभाविक द्वैताद्वैतसिद्धान्त–प्रतिष्ठापक–श्रीमज्जगद्गुरु-श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यपीठाधिष्ठिताना–

अर्द्धशताब्द्यपगते पञ्चाशत्तमे पाटोत्सवावसरे स्वर्णजयन्तीसमारोहात्मके समायोजिते प्रशस्ति सुमनोञ्जलिसमर्पणक्षणे

अखिलभारतीय विराट् सनातन धर्मसम्मेलने

पुष्करपुण्यक्षेत्रे निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबादे महर्षिवर्य श्रीसनकादिसंसेवित श्रीसर्वेश्वरप्रभुसन्निधौ पुण्यश्लोकश्रीजयदेवसमाराधितश्रीभगवच्छ्रीराधामाधवमङ्गल-मन्दिरपरिसरे सुविराजमानानां

अनन्तानन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य–

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजानां

करसरोरुहेषु सादरं, सगौरवं, सभक्तिश्रद्धञ्च मिलिन्दायतां

✵ ✵ अभिनन्दन-पत्रमिदम् ✵ ✵

जगद्वन्द्याःविविधविद्याधनवदान्यधन्याः! पूज्य श्रीआचार्यचरणाः!

सुरसरस्वतीसेवाव्रतिनः पुण्यपुष्करारण्यपरिसरेऽत्र समवेतानामयुतायुतानां भगवच्छ्रीराधामाधवदिव्य-पादारविन्दयोर्भक्तिभागीरथीनिर्मल-सलिलावगाहने निमग्नानां पुरस्तात् श्रीमद्गुणगणार्णवस्मरणपराः हर्षातिरेकान्विताः वयं केवलं तत्रभवतां श्रीमतां दिव्यावदानानुरणनपरायणमेवस्वान्तःकरणमाकलय्य कानिचिद्भावावेशसमर्पकानि पद्यानि श्री 'श्रीजी' कराम्भोजयुगलसेवायामुपायनी कुर्मः।

"**आचार्यवान् पुरुषो वेद आचार्याऽयेव विद्याविदिता साधिष्ठं प्रापत्**" प्रतिपादयतीति श्रुत्यनया रीत्याशास्त्रार्थप्रवचनपटुः स्वीयाचारव्यवहारादिभिः परेषामप्याचारादिप्रवर्त्तको यो भवति महात्मा, स एव महापुरुष इति सिद्धान्तसरणिमनुसृत्य आशैशवादेव वेदब्रह्मणोऽनवरतसमाराधनेन न केवलं स्वात्मानमेवोपकृतमपितु

महीतलस्थमानवमात्रं ज्ञानमार्गं मोक्षमार्गं चोपदिशन् श्रीहंससनकादिप्रवर्त्तितवैष्णवधर्मसंस्कृतेरक्षुण्णप्रचारप्रसारद्वारा यत्र तत्र सहस्रसंख्याकेषु देवमन्दिरेषु श्रीविग्रहाणां विद्यालयानां भक्तिकेन्द्राणां प्रतिष्ठापनद्वारा प्रत्यक्षमेव सत्यापितः परमाराध्यश्रीसर्वेश्वरवदनारविन्दविनिःसृतः सुदृढसमुद्घोषः यत्–''**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे**'' इति संसाधयन्नन्यदपि भगवद्वचः सत्यापितं यत् ''**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्**॥ इत्यप्यहो श्रीमत्पादानां श्लाघनीयता एवैतेन सुसिद्धमेव यत् '**विष्णोरंश महात्मनः**'।''

सतततपः पूतविग्रहाः, पुण्ययशोधनाः द्वैताद्वैतसिद्धान्तप्रतिपादनपटवः!

परमविश्रुतवैदिक-वैष्णवब्राह्मणकुले स्वनामधन्य पं. **श्रीरामनाथशर्मणां** सहधर्मिण्यां **श्रीमतीस्वर्णलतायां** दशमई ऊनविंशत्ख्रैस्तेऽब्दे '**उत्तमचन्द्रे**' त्याभिधानेन '**रत्नलाले**' तिख्यातनाम्ना च जनिमवाप। ततः पूर्ववर्ति जगद्गुरुपदवीभाजां प्रातर्वन्द्यानन्त**श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्याणां** चरणशरणं सम्प्राप्य चतुर्दशाब्दे वयसि पंचमजून पंचचत्वारिंशत्तमे ईस्वीयेऽब्दे ह्यष्टचत्वारिंशत्तमं जगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपदमलंचक्रुरिति। अनन्तरं च वृन्दाविपिन-निवासं विधाय विद्वत्तल्लजानां प्रकाण्डपण्डितानामन्तेवासित्वमवाप्य वेद-व्याकरण-साहित्य-न्याय-वेदान्तादीनि शास्त्राणि यथाविधि समधीतानि। '**विद्या ददाति विनयं**' इत्युक्तरीत्या श्रीमन्तः साक्षान्नयविनयविषयावताराः राराजन्तेऽत्र, सतततपश्चरणाच्चापि श्रीमतां निरभिमानताऽपि दरीदृश्यते परमश्लाघ्यतमैव।

अयं महान् प्रमोदावसरः यदद्यानेकशास्त्रनिष्णातानां भूर्लोके भारतवसुन्धरायां सर्वत्र स्वधर्मध्वजसमुज्जृम्भायमाणानां, अव्याहतगतीनां द्विजकुलावतंसानां पण्डितमण्डलीषु-पञ्चानन- मिवावगाहमानानां, वेद-ज्ञान-भक्ति-तपोमूर्तीनाम् अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराजानां सुमनस्विनां मानसैः सुमनोभिरभिनन्दनार्थं सबहुमानं कुशलस्वास्थ्य श्रेयोऽभ्युदयाञ्जलिमर्पयामः।

करुणावरुणालयाः, ह्यनन्तश्रीकाः, जगद्गुरवः!

अमरभारतीसमाराधनेऽनवरतसुदृढैकनिष्ठचित्ताः, धर्मध्वजधारणधौरेयाः, नानानिगमागमनिचयपार-दृश्वानः सुरुचिररचनारचयितारः, राष्ट्रपतिसम्मानेन बहुमानिता विद्वत्कवयः श्रुति-वेदान्तोपनिषन्मर्मवेत्तारः, शास्त्रार्थकण्ठीरवाः, कुशाग्रशेमुषीकाः, निर्जरभारतीसाहित्यसमृद्धिमनुतिष्ठन्तः सत्यसनातनधर्ममभिवर्धयन्तश्च सुदीर्घायुष्यमवाप्नुयुरिति सर्वजगदभिन्ननिमित्तोपादानकारणमनन्ताचिन्त्यस्वाभाविकगुणशक्त्यादिभिर्बृहत्तमं ब्रह्मेन्द्र–शिवादिवन्दितं करुणा-वरुणालयं नित्यनिकुञ्जविहारिणं श्रीराधासर्वेश्वर प्रभुमभ्यर्थयामहे वयं सततमिति।

सर्वेश्वरो यस्य कण्ठे हृदये च निरन्तरम्। विराजते तस्य यशो वर्णने न क्षमा वयम्॥
प्रार्थयामो वयं सर्वे श्रीमन्तं करुणामयम्। श्रीसर्वेश्वरसेवायां रतिःस्यान्नो भवे भवे॥
अद्य धन्याः वयं सर्वे धन्यं च पुष्कराजिरम्, भवादृशां सतां सङ्गो नाल्पपुण्येन लभ्यते॥

समर्पकाः

कल्याणप्रसाद अग्रवालः, अध्यक्ष–श्रीसर्वेश्वरसंसदः तत्सदस्याश्च जयपुरम्
अध्यक्ष–श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारीमन्दिरं सेवासमितिस्तत्सदस्याश्च हीरापुरा।
चन्द्रविहारी सोढानी माजूवाला, प्रधानमन्त्री–श्रीसर्वेश्वरसंसदः
संयोजकः–श्रीनिम्बार्कसत्सङ्गमण्डलं तत्सदस्याश्च जयपुरम्।

श्रीमत्पदाम्भोजमकरन्द-पिपासवः–
श्रीवत्स-सुदर्शन-भास्कराचार्याः
जयपुर–राजस्थानम्
वि. सं. 2050
दि. 23 जून 1993 ईस्वीयाः

विनीतोऽकिञ्चनः–
सीतारामशास्त्री श्रोत्रियः निम्बार्कभूषणः
उपसंरक्षकः श्रीसर्वेश्वरसंसद् जयपुरम्
प्रोफेसरः राजस्थान संस्कृत कालेजः ब्रह्मपुरी
शिक्षामन्त्रीः अ.भा.श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्, निम्बार्कतीर्थम्।

॥श्री सर्वेश्वरो जयति॥

परमाराध्य-प्रातःस्मरणीयानां निखिलमहीमण्डलधर्माचार्य-चक्रचूड़ामणीनां सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र यतिपतिदिनेशानामनादिवैदिकसनातन-धर्म-प्रचारप्रसारपरायणानां वैष्णवाचार्य-विभूषणानां यमनियमतपः-स्वाध्याय विविधविद्याविद्योतितान्तः-करणानाम् अनन्त-श्रीविभूषिताखिल- भारतीयजगद्गुरु

निम्बार्काचार्यपीठाधिपतिश्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराजानां

परमपावनकरकमलयोः राजस्थानसंस्कृतसंगम (अकादमी) द्वारा समायोजिताभिनन्दनसमारोहावसरे समवेतानां विशिष्टविदुषां राजस्थानराज्याधिकारिणां परमभावुकभक्तमहानुभावानाञ्च समुपस्थितौ भक्तिभावसमुल्लसितं सादरं समर्पितमिदम्–

अतिविशिष्टविद्वत्सम्मानरूपम्

※ ※ अभिनन्दन-पत्रम् ※ ※

श्रीमदूर्जितमेधाविन्!

निखिलेऽपि महीमण्डले वैदिकसंस्कृतिसभ्यतासंरक्षणपरायणे लोकवन्दनीये जगद्गुरुपीठे कुत्रापि कस्यापि कैशोरे वयसि पट्टाभिषेकोऽश्रुतपूर्वः, किन्तु तत्रभवतां श्रीचरणानां चतुर्दशवर्षवयस्कानां जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यपीठेऽभिषेकः प्राक्तनश्रीमद् तद्दिव्यमेधा-प्रभावसूचकमिति समेषां मनीषिणामाश्चर्यकरम्। श्रीचरणानां स्वाभाविकगुणगौरव-दिनमणिपूर्णोदयात्पूर्वमेव निम्बार्कजगत्येव न, अपितु समस्तेऽपि धार्मिकक्षेत्रे तत्रभवतां श्रीमतां दिव्यगुणगणप्रसारः समजनि।

धर्माचार्य-शिरोमणयः!!

अतिश्लाघनीयोऽयं प्रसङ्गः श्रीचरणानां दिव्यजीवनप्रारम्भस्य यत्–एकोत्तरद्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे कुरुक्षेत्रे सूर्यसहस्ररश्मिमहायज्ञावसरेऽखिलभारतीय-सनातनधर्ममहासम्मेलनस्यायोजनं

धर्माचार्य-मूर्धन्यान्ताराष्ट्रियख्यातिप्राप्त - जगद्गुरुशङ्कराचार्य-श्रीभारतीकृष्णतीर्थमहाराजानां तत्त्वावधाने समभूत्, यस्मिन् विशिष्टधर्माचार्य-महामण्डलेश्वर-मठाधीशमहामनीषिणां समुपस्थितौ षोडशवर्षदेशीयैः श्रीमद्भिर्महासम्मेलनस्याध्यक्षपदं समलङ्कृतम्।

वैदिक संस्कृतिसमुद्धारकाः !!!

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठमलङ्कुर्वद्भिः श्रीमद्भिर्निखिले हि भारते धार्मिकयात्राभिर्योजनापूर्वकं परिभ्रमणैश्च भारतीयसंस्कृतिसभ्यतासमुद्धारायाभूतपूर्वः प्रचारात्मक आदर्शः संस्थापितः। आचार्यपीठेऽपि सांस्कृतिकपारमार्थिकानेक-संस्थासञ्चालनेन प्राचीन-भारतस्य स्वरूपं साम्प्रतिके विषमेऽपि काले रक्षयन्त आचार्यपीठस्य वर्चस्वं गौरवञ्च वर्द्धयन्तीत्यन्येषामपि धर्माचार्याणां प्रेरणास्पदम्।

लोकप्रियजगद्गुरवः!!

समये समये श्रीमन्निम्बार्कपीठे नागरिकवायुमण्डलतः सर्वथा सुदूर एकान्ते तपोवनप्रदेशेऽपि देशस्य वातावरणसंशुद्ध्यै धार्मिक-महासम्मेलनयज्ञयागादिक-माध्यमेन समस्त-सनातन-धर्मसमुद्धारक-धर्माचार्यमहात्म-मठाधीश-मण्डलेश्वरमहामण्डलेश्वर-विद्वद्वरेण्यान् समामन्त्र्य कुम्भपर्व-समसफल- समायोजनैः राष्ट्रस्य धार्मिकगौरवं वर्द्धयन्तीति-श्रीचरणानां लोकप्रियताया उदाहरणमेतत्।

प्रातःस्मरणीयाः!

अद्य वयं सदा वन्दनीयानां श्रीचरणानां सादरमभिनन्दनं कुर्वाणाः परमप्रमोदमनुभवामः, परमपूज्य-भगवत्पादान् भवादृशान् धर्माचार्यचरणान् सम्प्राप्य न केवलं राजस्थानम्, अपितु समग्रं भारतं गौरवान्वितमस्ति। अन्ततः श्रीचरणा एवमेव श्रीनिम्बार्काचार्यपीठमधितिष्ठन्तश्चिरं निरामयजीवनपूर्वकं श्रीसनातनधर्मरक्षणं लोककल्याणञ्च विदधतु-इति करुणावरुणालयं भगवन्तं श्रीसर्वेश्वरं प्रार्थयामः।

आश्विन कृष्णा अष्टमी
विक्रम सं. 2052
दि. 17.9.95

श्रीचरणानुरक्ताः
राजस्थान-संस्कृतसंगमाधिकारिणः सदस्याश्च
जयपुरम् (राजस्थान)

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर

♥ प्रशस्ति-पत्र ♥

1994-95

श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज नैं जीवन भर साहित्य-सृजन कर ब्रजभाषा की अभूतपूर्व सेवा करी है।

या उपलक्ष में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी आपकूँ प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर गौरव कौ अनुभव करै है।

गोपालप्रसाद मुद्गल सचिव	24 दिसम्बर, 95	मोहनलाल मधुकर अध्यक्ष

॥ श्री सर्वेश्वरो जयति ॥

आदर्श विद्या मन्दिर, मालपुरा जिला-टोंक में भगवती भारती मां सरस्वती-प्रतिमा के अनावरण अवसर पर जनता एवं शिक्षा संकुल एवं आत्मीय भक्त समुदाय

द्वारा

सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र यतिपतिदिनेश अनन्तानन्तश्रीविभूषित १००८ जगद्गुरुवर श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर

श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

का विनम्र हार्दिक

अभिनन्दन

❖ ❖ आलोक-भावाञ्जलि ❖ ❖

''श्रीमद् द्वारमहस्कर प्रवसिनी नित्यं समायादुषाः,
तेजःश्रीर्भुवि वर्द्धतां विजयिनी मध्याह्न-मार्तण्डवत्।
सन्ध्या-मङ्गलदीपकैः प्रकुरुताम् सद्भाग्य-नीराजनम्,
सेवास्थान् भवतो विभातु परितश्चालोक-पर्वप्रभा॥''

उषः स्मरणीय श्रीविभूषित!

आज सर्वसुन्दरी उषा ने स्वर्णिम थाल में सौभाग्य का सिन्दूर भर कर पावनात्मा प्राची दिशा की नीलम काया को कञ्चन सी शोभा प्रदान कर श्रीचरणों के दर्शन की किरणों से आलोकित आनन्दानुभूति प्राप्त हो रही है अतः प्रफुल्लित मानस कमल आचार्यश्री की शुभ सेवा में समर्पण कर क्षमा याचना के साथ स्तुतियुक्त अन्तःकरण से आपका हार्दिक सुस्वागत करते हैं।

स्तुति पुरुष! महामनीषी!

आप श्री धर्म की रक्षा और जगत् उद्धार के लिए ही अवतीर्ण हुए हैं। आपके आदर्श एवं पवित्र भाव मुग्ध करने योग्य है, श्रीचरण सद्भावों के सिन्धु हैं। सत्य, सौहार्द, दया, क्षमा, मृदुता, गाम्भीर्य, धैर्य, विनय, शान्ति, निःस्पृहता, नीतिज्ञता, तेज, स्नेह, त्याग, मर्यादा, संरक्षण, प्रजारञ्जकता, शरणागतवत्सलता, सरलता, सौम्यता, साधुसंरक्षणता, निर्वैरता, बहुज्ञता, धर्मज्ञता, धर्म-परायणता, शुचिता, लोकप्रियता, सदाशयता आदि महान् देव-गुण रोमावलि में समाहित हैं।

कीर्तिदेव के कृतित्व

आपश्री के आदर्श सिद्ध ग्रन्थों के अध्ययन से, श्रवण एवं स्मरण-मात्र से हृदय में अत्यन्त पवित्र भावों की लहरें उठने लगती हैं और मन मुग्ध हो जाता है। आपके अनुकरणीय, स्मरणीय अनुपम ग्रन्थ ''**भारत भारती वैभवम्**'' एवं ''**भारत कल्पतरु**'' को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है। इसी क्रम में रीति-नीति, भक्ति उक्ति से पूर्ण-अभिनव रचना '**विवेक वल्ली**' का विगत में विमोचन उल्लेखनीय है। '**स्वधर्मामृत सिन्धु**', '**नित्यकर्म पद्धति**' एवं अन्य उपासनापरक दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन एवं '**ब्रजवासी भागवत**' ग्रन्थ का सर्वप्रथम प्रकाशन श्रेय आध्यात्मिक क्षेत्र में अक्षुण्ण उपलब्धि है। विशिष्ट विद्वानों, धर्माचार्यों के विराट् सम्मेलन आचार्यपीठ के स्तुत्य आयोजन हैं।

आज अपनी महती अभिलाषा को फलवती पाकर पूज्यचरणों के समक्ष प्रत्येक व्यक्ति सम्मानितभावों, सद्भावना से क्षमायाचना करता हुआ सहृदयता से श्रद्धापूर्वक अभिनन्दन करता हुआ नतमस्तक है।

जय सर्वेश्वर! जय श्रीराधे॥ जय श्रीभारत॥॥

वैशाशुक्ला एकादशी, रविवार
सम्वत् 2054
दि. 18.5.97

इन्हीं सद्भावनाओं के साथ,
आदर्श विद्या मन्दिर एवं शिक्षा संकुल व
भक्तगण, मालपुरा।

सर्वेश्वरो जयति

श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः

❊ ❊ अभिनन्दन पत्र ❊ ❊

पूज्य आचार्य चरण, लब्ध प्रतिष्ठ, तपः पूत निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'

राधा सर्वेश्वर शरणदेवाचार्य जी महाराज

मानस पटल पर क्षण प्रतिक्षण उदीयमान दर्शन-लालसा से आपूरित आँखें आज आपका शुभदर्शन पाकर चिर तृप्ति का अनुभव कर रही है। हे अन्तानन्त श्रीविभूषित, राजराजेन्द्र-समभ्यर्चित चरण कमल, आज हमें ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानों हमारे जन्म जन्मान्तर के पुण्यों का अभ्युदय हुआ है, जिसके फलस्वरूप इन नेत्रों को मानों अपार निधि उपलब्ध हो गई है।

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, यतिपति-दिनेश !

सन्त प्रवर श्री रामभक्त सन्त तुलसी की यह वाणी सार्थक सिद्ध हो रही है कि **सन्त मिलन सम सुख जग नाहीं**। आपका आगमन ऊषा के अरुणोदय में देदीप्यमान भुवन भास्कर भगवन् अंशुमाली की मृदुल रश्मियों की तरह नव-चेतना का स्फुरण करने वाला ऊर्जा स्रोत है, जिससे निरन्तर अविरल, ज्ञान, अनपायनी भक्ति की शान्तिमयी सशक्त धारा प्रस्रवित होती हैं। इसमें अवगाहन करने का सौभाग्य हमें आपकी उदारमना प्रवृत्ति के कारण ही मिल रहा है।

बहुज्ञ, कर्मनिष्ठ, महिमा-मण्डित, धर्माचार्य-प्रवर !

सनातन धर्म के क्षेत्र में आपकी सर्वाधिक वर्चस्व सम्पन्नता, आपके तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दू संस्कृति सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, वैष्णव धर्म सम्मेलन तथा उसमें श्रेष्ठ विद्वानों, विदुषी महिलाओं का समागम आपकी धर्मप्राणता के कारण परिचायक हैं।

आदर्श व्यक्तित्व, निरन्तर प्रेमलक्षणा-भक्ति सम्पन्न, राधा कृष्ण मानसलीन !

कहा गया है—वह जननी धन्य है, वह पिता धन्य है, जिसका पुत्र भगवद् भक्ति परायण हो। आप धन्य हैं, आपके पिता-माता धन्य हैं। हमारी चिर लालसा है कि जगन्नियन्ता सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापी भगवान् आपको दीर्घायु प्रदान करें एवं आपकी पावन वाणी से भक्ति की अनवरत धारा प्रवाहित होती रहे।

दिनांक 27.12.1999
स्थान : भाटापारा

आपका दासानुदास
प्रेम बिहारीशरण

अनन्तश्रीविभूषितानाम् अखिलभारतीयजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणाम्

श्री 'श्रीजी' श्री श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यचरणारविन्दानां

*देवभाषा-साहित्य-समीक्षण-प्रवणानां भारतविश्रुतकाव्य-
कलाकोविदानां सुरभारतीसंरक्षणतत्पराणां करकुशेशयेषु
सश्रद्धं सविनयञ्च समर्पितः*

प्रणति-प्रसूनाञ्जलिः

जनिं प्राप्य निम्बार्कतीर्थे पवित्रे
स्वयं वैष्णवीदीक्षया दीक्षिता ये।
गुरोर्निम्बतीर्थे विशिष्टेऽभिषिक्तं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 1॥

गुणानां हि नान्तं निरीहं नितान्तं
शरत्पूर्णचन्द्रप्रभाकान्तिकान्तम्।
जगद्वन्द्यनिम्बार्कयुग्मस्वरूपं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 2॥

रसं सन्निपीयागमानां दुरापं
समस्तासु विद्यासु वाचस्पतित्वम्।
सभायाञ्च पीयूषवर्षं सहर्षं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 3॥

सुविद्याप्रभाभासुरं दीप्तभालं
सगन्धं सुमानां धृतं कण्ठमालम्।
त्रिकालं स्मरन्तं महाकंसकालं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 4॥

विधानं विधेः सद्गुणानां निधानं
पवित्रं परं वैष्णवानां प्रधानम्।
सुधर्मावतारं सदा निर्विकारं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 5॥

समुत्कृष्टकार्यैः स्वयं भ्राजमानं
समाजे सतां सर्वदा राजमानम्।
जनानुग्रहार्थं धृतं सत्स्वरूपं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 6 ॥

तपोभास्वरं ज्ञानवृद्धं समृद्धं
कवीनां कथापुङ्गवानां वरिष्ठम्।
सदा देववाणीप्रसारे प्रसक्तं
नमामो हि सर्वेश्वराचार्यदेवम्॥ 7॥

द्वितीयस्य खण्डस्य लोकार्पणाय
भृशं क्लेशिता भारतीपत्रिकार्थम्।
सदैव स्मरामो भवत्स्नेहभाजः
कृतज्ञा वयं तत्कथं विस्मरामः॥ 8॥

स्तुवन्तो भुजङ्गप्रयाताष्टकेन
यतीन्द्रं हि निम्बार्कतीर्थं मुनीन्द्रम्।
श्रयन्ते सुखं सौख्यभाजो नृलोके
जनाभक्तियुक्ता विमुक्ता भवन्ति॥

प्रणेता–
पद्म शास्त्री
तिथि : माघकृष्णाषष्ठी 2056 विक्रम वर्षम्

समर्पकः
भारती-पत्रिका-परिवारः, जयपुरम्
दिनांक 26.01.2000, बुधवासरः
भारतीभवन,
बी-15, न्यू कॉलोनी, जयपुर-1

श्री राधासर्वेश्वरो विजयतेतराम्

श्रीभगवन्निम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूड़ामणि-सर्वतन्त्र, स्वतन्त्र स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्तप्रवर्तक यतिपतिदिनेश राजराजेन्द्रसमर्चित युगल चरणारविन्द भगवन्निम्बार्काचार्य पीठाधिपति अनन्तश्रीविभूषित

श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

के

करकमलों में सादर समर्पित

❋ ❋ अभिनन्दन पुष्पम् ❋ ❋

पूज्यवर,

आपने सम्पूर्ण देश में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करके धर्मविमुख समुदाय को धर्मोन्मुख करके सत्सनातन धर्म में लगाया। वैदिक शिक्षा दीक्षा का प्रचार प्रसार करके गेहे-गेहे जने-जने धर्म का दुन्दुभिघोष कर अपने पूज्य पद को अभिरक्षित किया।

हे ताप-सन्तप्त प्रपन्नार्तिहरपारिजात!

आप आध्यात्मिक, अधिदैविक एवं आधिभौतिकत्रिविध तापसन्तप्त जन को वैष्णवी दीक्षा दीक्षित कर सन्मार्गोन्मुख बनाते हैं। एतावता समस्त भगवद्भक्तगण, **'यदगत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'** सूक्त्यनुसार सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

हे अनाद्यनन्त श्री राधासर्वेश्वरकैंकर्यनिष्ठ धर्मधुरन्धर!

आप निखिल नियति नियामक परमाराध्य भगवान् श्री सर्वेश्वर की जगद्बन्धनविमोचकभगवतीभक्तिभागीरथी में सतत अवगाहन निरत रहते हैं, यह अनुपम आदर्श

प्रत्येक वैष्णव मात्र के लिए सत्प्रेरणास्पद है, आप जैसी सनातन धर्मधुरीण विभूतियों से समस्त भक्तभागवतगण हर्षोन्मत्त एवं गर्वोन्नत हैं।

हे श्रीमन्निम्बार्कवैभवविस्तारक अगणेयोत्कटकरद्युमणि!

आपश्री के आचार्यत्व में श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की सर्वतोमुखी समुन्नति हुई है, यह निर्विवाद गौरव का विषय है। आप स्वयं परमतपोनिष्ठ, समुत्कृष्ट वैदुष्य सौशील्यादि सद्गुण सम्पन्न, सन्त शिरोमणि हैं। अतः समस्त साम्प्रदायकि समुन्नति बाधकतत्व स्वतः ही सर्वथा साधक स्थिति में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

हे सतत सद्ग्रन्थस्वाध्यायशीलवाग्विदांवरेण्य!

आपने परमपुनीत भारतभूमि में सनातन धर्म समुद्धारक के रूप में अवतरित होकर समस्त साहित्य-संगीत-काव्य कौशलादि विद्याओं का मर्मस्पर्शी अध्ययन किया है जिसका कि प्रज्वलन्त प्रमाण आपकी वाग्वैझरी एवं शब्दझरी है। भवदीय कविता कौशल विद्वज्जन-संग्राह्य है।

'कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा' इत्यादि अग्निपुराणोक्ति सार्थक होती है।

हे भगवत्स्वरूप स्तुत्यचरण आचार्यप्रवर!

अज्ञानतिमिरान्धक प्रबाधित प्राणियों के लिए ज्ञानमय प्रदीप प्रज्वलित कर ज्ञानमार्गोन्मुखी जिज्ञासु एवं पिपासु पद प्रदान कर आप साक्षात् परब्रह्मस्वरूपावस्थित हैं। यह सर्वभूतहित सार्वभौम सिद्धान्त नितरां परम सौभाग्य का विषय है।

श्रीकृष्णबिहारी एवं श्री गिरिधारीजी का मन्दिर
किशनगढ़-रेनवाल
आश्विन शुक्ला दशमी 2057 विक्रम
8.10.2000

भवच्चरणारविन्दचञ्चरीक
समर्पणकर्त्ता
श्रीगोपालयज्ञ महोत्सव समिति
एवं समस्त भक्तगण

अखिल-महीमण्डलाचार्य अनन्तश्रीविभूषित श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

का करकमल मा हिन्दू अधिराज

नेपाल का सम्पूर्ण सनातन धर्मावलम्बीहरू का तर्फ बाट सादर समर्पित–

❊ ❊ अभिनन्दन-पत्र ❊ ❊

हे परमादरणीय जगद्गुरु!

विश्व को एकमात्र हिन्दूराष्ट्र नेपाल को राजधानी मा वैदिक सनातन धर्म का संरक्षक र व्याख्याता तथा सुसम्मानित हिन्दू जगद्गुरु श्रीचरण को स्वागत गर्न पाउंदा हामी हिन्दूराष्ट्रवासी जनता हर्षविभोर भएका छौ। एस पावन अवसर मा परम श्रद्धेय आचार्यवर लाई हामी हार्दिक स्वागत अभिनन्दन टक्र्याउंछौ।

हे पूज्य धर्माचार्य!

नेपाल हिन्दूजाति का परम पावन तीर्थस्थलहरु को केन्द्रभूमि हो पशुपति क्षेत्र मुक्तिक्षेत्र, बाराहक्षेत्र देवघाट धाम, त्रिवेणी धाम, जनकपुर धाम स्वर्गद्वारी जस्ता पवित्र तीर्थभूमि र गण्डकी, कोशी, कर्णाली जस्ता पुण्यसलिला नदीहरू द्वारा सदा अभिसिञ्चित यो भूमि श्रीचरण कों पदार्पण बाट अरू पुण्यमय भएको छ।

हे पूज्य विद्वद्वरेण्य!

वैदिक सनातन धर्म को श्रीवृद्धि का लागी श्रीचरण ले आफना पूवाचार्यहरू को प्रतिनिधित्व गर्दै जुन विद्वत्ता शिक्षाहरू प्रदान गरिरहनु भएको छ, तेसको महत्ता दूरगामी छ। श्रीचरण को प्रेरणा पाएर हिन्दुस्तान मा अनेकौ विराट धार्मिक आयोजनहरू भएका छन् जसबाट सम्प्रदाय विशेष लाई मात्र होइन पूरै वैदिक सनातन धर्म परिवार लाई आत्मबल थपेका छन्, हामी ती सत्यकार्यहरू को भूरिभूरि प्रशंसा गर्दछौ।

हे सद्भाव र सौजन्य का प्रतिमूर्ति!

नेपाल विश्व को एकमात्र हिन्दूराष्ट्र हो। यो राष्ट्र जसरी तीर्थमय छ तेसरी नै विविध संस्कृतिमय पनि छ तथा पारस्परिक धार्मिक सहिष्णुता र सद्भाव ले भरिएको छ। यहाँका राजा विश्वभरि कै साझा हिन्दूसम्राट होइबक्सिन्छ भन्ने कुरा श्रीचरण मा विदितै छ। नेपालीहरू विश्वभरि का हिन्दू तीर्थहरू लाई आत्मीय भाव ले श्रद्धा गर्दछन्। हालै मात्र हाम्रा राजारानी हिन्दुस्तान का तीर्थहरू को परिक्रमा गरेर फिरिबक्से को छ। तीर्थयात्रा को अवसर मा हिन्दुस्तान भरी तेहाका हिन्दू हरु ले जयजयकार गर्दै हाम्रा राजारानी को जुन हार्दिक स्वागत गरे तेसले दुवै देश का सनातन धर्मावलम्बीहरू लाई अरू नजीक ल्याइदिएको छ।

हे परम भागवत!

हामी भगवान् पशुपतिनाथ का चरणकमल मा आचार्यश्री को सुस्वास्थ्य र दीर्घायु को प्रार्थना गर्दछौ र श्रीचरण को दर्शन र शुभाषीर्वाद विश्वभरि का हिन्दूहरू लाई चिरकाल पर्यन्त प्राप्त भइरहोस भन्ने कामना गर्दछौ अन्त्य मा श्रीचरण को नेपाल भ्रमण को एस पावन अवसर मा इनै शब्द कुसुमहरू अर्पित गदै शत शत स्वागत अभिनन्दन टक्रयउं छौ।

डॉ. हरिभक्त नेउपाने
केन्द्रीय महासचिव
मिति: 2059 चैत्र बिहिबार

मुकुन्दशरण उपाध्याय
केन्द्रीय अध्यक्ष
सनातन धर्मसेवा समिति, नेपाल

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश परमपूज्य तपोमूर्ति

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज का करकमल माऊँ

श्यामसुन्दर शान्तिसमूह विराटनगर-4 का तर्फबाट समर्पण गिरएको

अभिनन्दन - पत्र

हे अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरो!

भगवान् श्रीपशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ, बराहक्षेत्र एवं प्राचीन हरिद्वार (चतराधाम) जस्ता तपस्थलीद्वारा सुशोभित विश्वको एकमात्र हिन्दूराष्ट्र नेपाल मन्दिर मन्दिरको देश भनिएको छ। यस पुण्यभूमिमा हामीमात्र होइन हामीले उपासना गरिएका 33 कोटि देवता पनि आनन्दपूर्वक विचरण गर्दै रमाउंछन् भन्ने कुरा हाम्रा श्रुति एवं स्मृति ग्रन्थहरूले प्रमाणित गरिदिएका छन्। प्राकृतिक दृष्टिले स्वर्गतुल्य मानिएको यस पवित्र भूमिमा यहाँको शुभागमनले अध्यात्म जगत् मात्र होइन संपूर्ण चराचर नै आह्लादित बन्न पुगेको अनुभव गरिरहेको छौं। हामी चाहन्छौं - पशुपतिनाथ को यस पुण्यभूमिमा सदा सत्य र निष्ठा को विजय होस् अनि सुपूर्ण नेपालीहरूले शान्ति, मङ्गल एवं आनन्दको अनुभूति गरून्। हामी नेपालीहरू जगद्गुरुवाट पनि यही शुभाषीषको कामना गर्दछौं।

हे निम्बार्काचार्यपीठाधीश!

आद्य जगद्गुरु भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यले द्वापरयुगको अन्त्य र कलियुगको आरम्भको सन्धिकालमा स्थापना गरेको श्रीराधासहित श्रीकृष्ण भक्तिको पावन शिक्षाले मात्र होइन आज पनि असंख्य भक्त एवं साधकहरूलाई जीवन र जगत को वास्तविक सारतत्त्व बोध गराइ शान्तिको मार्ग प्रशस्त तुल्याइरहेको छ। यस निम्बार्क सम्प्रदाय वेदले बताएको द्वैत एवं अद्वैत मार्गको अनुशरण गरेर आफूलाई अगाडि बढाइको छ। यसले वेदलाई आपनो आधारभूमि गनेको छ। यो सनातन हिन्दू धर्म र संस्कृतिको संरक्षण र संबर्द्धनमा कृतसंकल्पित छ। यस्तो पवित्र एवं सर्वप्राचीन सम्प्रदायको सफल यात्री बनेर अथवा भगवान् श्रीराधाकृष्णको युगल उपासना सँगसँगै सर्वेश्वर रूपमा भगवान् शालग्रामको अर्चना गर्ने परम्परा रहेको यस सम्प्रदायको पीठाधीश बनेर अध्यात्म जगतको संरक्षण र संवर्द्धन हेतु सर्वप्रथम यस पावन भूमिमा पदार्पण गर्नुभएकोमा हामी हर्षविभोर बन्दै श्रद्धा भक्तिपूर्वक अभिनन्दन गर्दछौं। साथै हामी दुई करोड़ 50 लाख नेपालीहरू यहाँको पथप्रदर्शनमा हिंडेर आपनो जीवन आलोकित गर्दै यो लोक र परलोक पनि सुधार्न प्रयत्नरत रहनेछौं।

हे तपोमूर्ति!

मानव जीवन र जगतलाई अध्यात्म साधनाद्वारा सुसंस्कृत तुल्याई लोकमा आनन्द र कलयाण को साम्राज्य स्थापना गर्ने यज्ञमा आफूलाई सदा समर्पित तुल्याई समाजमा अमृततुल्य सद्वचनहरूद्वारा शान्तिसुधा वितरण गरेर हिन्दू जगतमा सदाचार को ज्योति जगाउने जुन सफलता प्राप्त गर्नुभएको छ त्यसका लागि कृत कृत्य बन्दै तपाईको सुस्वास्थ्य र दीर्घायुको मङ्गलमय कामना गर्दछौं। हामी हौं–

मिति 2060 साल वैशाख 2 गते, मंगलवार शुभम् विराटनगर (नेपाल)

लक्ष्मीप्रसाद दाहाल	दुर्गा भट्टराई	गीता गौतम
(कोषाध्यक्ष)	(सचिव)	(अध्यक्ष)

ऊँ श्यामसुन्दर शान्ति समूह, विराटनगर-4

॥ श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

अनन्तश्रीविभूषित अखिलमहीमण्डलाचार्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराजज्यूका करकमलामा चढाइएको

◆ ◆ अभिनन्दन पत्र ◆ ◆

हे वैदिक सनातन धर्मप्रचारक गुरुदेव!

जुन समयमा श्री महाराजजीको यो धरामण्डलमा उदय भयो त्यसदिनदेखि यो निम्बार्क सम्प्रदाय निरन्तर उन्नतिपथमा अघि वढीरहेको छ। हजुरले श्रीसर्वेश्वर प्रेसको वृन्दावनमा स्थापना गरि विभिन्न ग्रन्थ, पुस्तक, पुस्तिका, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका प्रकाशन गर्नाले भारत, नेपाल लगायत जहाँ जहाँ हिन्दुधर्मावलम्बीहरू पुगेकाछन् सवैले श्रीराधासर्वेश्वर भगवान्को महत्त्व स्पष्ट ज्ञानगर्न पाएका छन्।

हे वैदिक सनातन धर्म का प्रबल संरक्षक आचार्यचरण!

जुनसमयमा सम्प्रदाय-सम्प्रदायामा अमेलको वातावरण सृजना भएको थियो। सो समयमा श्री आचार्य चरणद्वारा निम्बार्कतीर्थ सलेमाबादमा गरिवक्सिएको गोपाल महायज्ञमा सवै सम्प्रदायका आचार्यहरुलाई एउटै मञ्चमा वसाई मेलमिलापको वातावरण सृजना गरिवक्सियो त्यसले आज पनि विभिन्न सिद्धान्तवादी आचार्यहरू हजुरलाई समन्वयाचार्य भनेर चिन्दछन् साथै **नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव** भन्ने भाव बुझ्दछन्।

हे संस्कृत भाषा का परिपोषक गुरुदेव!

संस्कृत भाषाको संरक्षण गर्न तल्लीन हजुरले निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद, जयपुर, वृन्दावन, नीमगाउं लगायत विभिन्न क्षेत्रमा संस्कृत विद्यालयको स्थापना गरि पठन पाठनको व्यवस्था समेत गरिवक्सिएको सवैका अगाडी आजपनि छर्लङ्ग छ। श्रीनिम्बार्क संस्कृत विद्यालय वृन्दावनमा पनि हजुरको अतुलनीय योगदान रहेको हामीले वुझेका छौं।

हे पुरातात्त्विक अन्वेषक आचार्यज्यू!

श्रीआद्याचार्य निम्बार्क महामुनीन्द्रको तपस्थली गोवर्धन निकट नीमगाँउको प्राचीन मन्दिरको जीर्णोद्धार गरि र नव मन्दिर निर्माण एवं भगवद् विग्रह साथै आचार्यहरुको विग्रह स्थापना गरि वक्सिएकाले सर्वलाई सो स्थान चित्र सजिलो भएको छ। भारत नेपाल का विभिन्न स्थानहरुमा मठ-मन्दिर निर्माण संचालन एवं संरक्षण हजुरबाट भइरहेको छ।

हे दयानिधान गुरुचरण!

सन्त आत्माहमेव च, स्वयं हि तिर्थानि पुनन्ति सन्तः, दर्शनादेव साधवः, सन्तं प्राप्य यथा जनाः, इत्यादि श्रीमद्भागवतीय वचनानुसार आज स्वयं आचार्यचरण तीर्थ स्वरूप हाम्रो यस नेपाल जो कि श्रीसर्वेश्वर (शालग्राम) श्रीपशुपतिनाथ, श्रीमुक्तिनाथ, श्रीसीताजी को प्राकट्यस्थल जनकपुर धाम, श्रीकृष्णगण्डकी, देवघाट, श्रीनारायणी, नारायणघाट र श्रीविराटराजाको नगरी धार्मिक औद्योगिक, राजनैतिक क्षेत्र विराटनगरमा समेत पदार्पण गरी हामीलाई दर्शन दिइ वक्सिएकोमा हामीहरू कृतकृत्य भएका छौं।

श्रीराधासर्वेश्वर प्रभुले हजुरलाई सुस्वास्थ्य, दीर्घायुष्य प्रदान गरिवक्सियोस् यहि हाम्रो श्रीराधासर्वेश्वर प्रभुसंग प्रार्थना छ।

मिति 2060 वैशाख 2 गते
दि. 15.4.2003 ई.

श्रीराधारमण मन्दिर सञ्चालक समिति परिवार एवं
श्रीराधारमण वेदवेदाङ्ग संस्कृत विद्यालय सञ्चालक परिवार
विराटनगर-5 वरगाछी

श्रीसर्वेश्वरो जयति

॥ श्रीमते निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूड़ामणीनां सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणां यतिपतिदिनेशानामनवरत-
तपःस्वाध्यायनिरतानां वैदिक-सनातन-धर्मसंरक्षणैकवक्तानामनन्त
श्रीविभूषितानामखिल-भारतीयजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीशानां

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां

श्री श्रीजी महाराजानां पावनयोः करकमलयोः सश्रद्धं समुपहृतं

❊ शुभाभिनन्दनपत्रम् ❊

आर्यावर्तप्ररूढाः श्रुतिमतविधिना वर्तयन्तः क्रियाः स्वा ज्यायाँसःसम्प्रदाया इति भुवि विदितं शास्त्रघोषैः समन्तात्।
प्रस्थानत्रय्यधिष्ठा निगमपथरताः प्रौढसद्दर्शनाढ्यास्तत्रापि श्लाघ्यरूपा इति लसित-मतं मोक्षलक्ष्मीप्रियाणाम्॥
द्वैताद्वैताख्यया यः प्रथयति विमलं श्रौतसिद्धान्तलक्ष्यं श्रित्वा माधुर्यभावं दिशति हितकरीं कृष्णभक्तिं जनेषु।
नानानुष्ठानमूलैः श्रुतिविहितपथैर्वर्धयन् वेदधर्मं हंसोपज्ञः पुराणो भुवि सुपरिचितोऽस्त्येष सत्सम्प्रदायः॥
तस्यैवाचार्यपीठं सुविमलचरितैः सत्प्रियैर्भूषयन्तो दिव्यैरुद्बोधनैः स्वैर्दिशि दिशि भगवद्भक्तिमुल्लासयन्तः॥
श्रीजी शब्दप्रतिष्ठा विदधति नयनातिथ्यमाचार्यवर्याः स्मारं स्मारं तदेतत् तरलितमनसो मोदमाना वयं स्मः॥
एकाङ्गिन्याऽद्य दृष्ट्याऽपगमितमतयो भौतिकैर्मोहजालैर्विश्वस्मिन्नत्र विश्वे क्वचिदपि न जनाः सन्ति शान्तिं भजन्तः॥
तस्मादध्यात्मनिष्ठाः सततशुभरताः सन्मतिं दीपयन्तो धर्माचार्या हि शान्त्यै दधति सुचरितैः शश्वदाशास्पदत्वम्।
शक्तेरुल्लासभूमिः सुकृतपथजुषां शाश्वती शान्तिभूमिर्लीलाभूमिः पवित्रा प्रभुहरिहरयोर्योगिनां सिद्धिभूमिः।
पार्वत्या भूमिजाया अथ सुगतमुनेः पावनी जन्मभूमि र्विश्वेऽस्मिन् धन्यधन्याऽनुपमगुणगणैरस्ति नेपालभूमिः।
अत्रत्या राजसंस्था श्रुतिविहितदिशा रक्षयन्ती स्वधर्मं सद्भावानस्मिताया: प्रदिशति हृदये विश्वहिन्दूजनानाम्।
शान्तिर्लीलायतेऽस्यां हृदि कृतनिलया हेतुनाऽनेन नूनं नेपालक्षोणिरेषा समधिगतवती हिन्दुराष्ट्रप्रतिष्ठाम्॥
अस्यास्तां सत्प्रतिष्ठां विपुलयितुमनाः सत्कृपैः स्वैः कटाक्षैः सर्वेशो राधिकेशो यदघटयदिमं भव्ययात्राप्रसङ्गम्।
नूनं सौभाग्यमेतत्सकलसुखकरं श्रद्धया मानयन्तः श्रीजी सान्निध्यलाभाद् वयमिह मुदिताः स्वागतं व्याहरामः॥

नक्तन्दिवं श्रुतिपथोन्नमनप्रवृत्तान् निम्बार्कदेशिकवरानतिथीन् सशिष्यान्।
श्रद्धातिरेकरससेकमनोज्ञरूपैः सच्छब्दपुष्पनिचयैरभिनन्दयामः॥

दिनांक 2060 तम वैक्रमवर्षस्य
वैशाखमासे द्वितीयदिवसः, भौमवासरः

अभिनन्दनसमर्पकः
आचार्यखेमराज केशवशरणः
अध्यक्षः - निम्बार्कवैष्णवपरिषद्, नेपाल

उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते। पुण्यः क्षेम्यश्च काम्यश्च स परो लोक उच्यते।
उत्तरः पृथिवीभागः सर्वपुण्यतमः शुभः। इहस्थास्तत्र जायन्ते ये वै पुण्यकृतो जनाः॥

(महा. शा. अ. 192/8, 21)

वैदिक-सनातनधर्मस्य प्रबलपोषकाणां निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणीनां
यतिपतिदिनेशानामनन्त-श्रीविभूषितानां सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणां
द्वैताद्वैतसिद्धान्तपक्षपातिनां योगसिद्धानां जगद्गुरुनिम्बार्काचार्य-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां

करकमलयोः समर्पितं

✪ समभिनन्दनदलम् ✪

भक्तजनहृदयनिवासिनः!

वैष्णवसमाजान्तःपातिषु समस्तघटकेषु प्रधानं सदत्रभवद्भिः अखिल-भारतीय-जगद्गुरु-निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर-परम्परामेकोनपञ्चाशत्तम आचार्यपदे स्वात्मानं स्वीकृत्य जातयः समाजधर्माश्च धर्मशक्त्या सञ्चालने सत्प्रेरितमिति दृग्गोचरीभूतमेव नीरक्षीरविवेकपेशलधीवराणाम्। योगसिद्धा भवन्तोऽसंख्यानां गोशाला-गुरुकुल-वैदिकविद्यापीठ-समाजकल्याणमन्दिर-मठमन्दिराणां प्रणेतारः समस्तार्यसनातनजनपूजित-मखिलविश्वसमुदायसमर्थितमेकमेव हिन्दुराष्ट्रं दिव्यभूमिनेपालमपि कृपादृष्ट्या सदा योजयन्त्विति समनुरुणध्मो वयम्।

शास्त्रनिर्दिष्टविचारानुशास्तारः!

न हिंस्याद् ब्राह्मणान् गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विनः, नाततायिवधे दोषोऽन्यत्र गोब्राह्मणवधात्, शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यत, इति स्मृतिवचनमाश्रित्य गोरक्षायै पुरीशङ्कराचार्यैर्निरञ्जन-देवतीर्थपादैः, करपात्रिभिः, प्रभुदत्तब्रह्मचारिभिश्च सह भवद्भिर्यन्नेतृत्वं कृतं तन्न विस्मृतिपथमायाति धर्माचार-विचारशीलानुसरद्भ्यो विश्वजनिभ्यः। निखिले भारते सर्वोच्चस्तरीयानामगणितानां सभा-सम्मेलनादीनां समायोजनेन धर्मसंसदि लब्धख्यातिमतां भवता स्वागताभिनन्दनदलञ्चास्मिन्नवसरे प्रस्तूय स्वात्मानं धन्यं मन्यामहे वयम्।

मानापमानसमानमूर्तयः!

भवच्चालितपदपथं सर्वेऽनुकुर्वन्तु, देहे स्वास्थ्यमुदारचेतांसि च मनसि सदा वर्धन्तामितीश्वरमास्तुत्य श्रीरामनवमीदिवसे विश्वहिन्दु-एकतादिवसस्योपलक्ष्ये समायोजितेऽस्मिन् समारोहेऽत्र भवतः सादरं समभिनन्दयामः।

श्रीस्थिरबाबुः घिमिरे	**पं. नारायणप्रसादः पोखेलः**	**बद्रीप्रसाद पोखेल**
संयोजकाः	समारोहाध्यक्षाः	प्रमुखातिथयः

अध्यक्षाश्च विश्वहिन्दु-महासंघ-नेपाल-राष्ट्रिय-समितेः
दिनाङ्क 2059/12/28 शुक्रवासरः, रामनवमी।

अखिलभारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यज्यू

महाराज का करकमलमा सादर समर्पित

✣ ✣ अभिनन्दन - पत्र ✣ ✣

हे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य!

मानव सभ्यताको उद्गमस्थल मानिने नेपाल हिमगिरिशृंखलाहरुको मनोरम काखमा अवस्थित ऋषिमुनिहरुको तपस्थली तथा पशुपतिनाथको निवासभूमि हो। राजर्षि जनक र जगज्जननी सीताको जन्मभूमि जनकपुरमा गार्गी, मैत्रेयी जस्ता विदुषी महिला र पारदर्शी दार्शनिक याज्ञवल्क्य जस्ता महामनीषीहरुका साथमा वेदान्त तत्त्वको मीमांसा भएको हो। जसको नामबाट भारतलाई भारत भनिन्छ ती परम भागवत राजर्षि भरतले कृष्णा गण्डकी को पावन तट पुलहाश्रममा आएर तपस्या गरेका थिए। यस दृष्टिले हेर्दा नेपाल अधिराज एक महान् वैदिक हिन्दुराष्ट्र एवं ऐतिहासिक भागवतभूमि हो।

हे प्रातः स्मरणीय आचार्यचरण!

यो उही शालग्राम (हरिहर) क्षेत्र हो जहाँ लोकविख्यात विश्वपूज्य शालग्रामशिला उपलब्ध हुन्छन्। मन्दिरहरूमा यिनै शालग्रामशिला नभए पूर्णता मानिदैन। आज यही विश्वपावनी कृष्णा गण्डकीबाट प्राप्त भएका सनकादिसेव्य सर्वेश्वर नामक सूक्ष्म शालग्रामविग्रह जसका गलामा विराजमान हुनहुन्छ, यहीं त्यस्ता आचार्य चरण को स्वागत एवं अभिनन्दन गर्न पाउंदा हामी सबै हर्षविभोर भएका छौ। यिनै भगवान् श्रीसर्वेश्वर आपनो उद्गमस्थलको दर्शन गर्न आउनु भएको हो कि भन्ने अनुभव समेत हामी सबैलाई भएको छ।

हे सनातन धर्मका परिपोषक!

यहाँले वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण र सम्बर्धनका लागि गर्नुभएका सत्प्रयासहरूबाट सनातन धर्मजगत् सुपरिचित एवं अनुप्राणित छ। यहाँले जीर्ण मठ-मन्दिरहरुको पुनर्निर्माण, मठ-

मन्दिर एवं गौशालाहरुको नवनिर्माण, विद्यालय, महाविद्यालयहरुको स्थापना, खोजपूर्ण दुर्लभग्रन्थहरुको प्रकाशन एवं स्वप्रतिभाको मूर्तस्वरूप स्वरचित ग्रन्थहरुको प्रकाशन आदिकैंयौं लोककल्याणकारी कार्यहरुको सुसञ्चालन गरी वैदिक सनातन धर्म र संस्कृतिको परिपोषण गर्नु भएको छ।

हे विश्वमूर्धन्य धर्माचार्य!

यहाँ वैदिक सनातन धर्म अन्तर्गत पर्ने सबै सम्प्रदाय, षड्दर्शन तथा अन्य विभिन्न सनातन मान्यताहरूलाई समन्वय गरी एक सूत्रमा आबद्ध गर्न सफल सनातन धर्मका संरक्षक, द्वैताद्वैत दर्शनका व्याख्याता एवं सरलता र सहिष्णुताका प्रतिमूर्ति हुनुहुन्छ। चारै शङ्कराचार्य, सबै वैष्णवाचार्य, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर तथा अप्रतिम प्रतिभाशाली विद्वानूहरूलाई एकै मञ्चमा समवेतरुपमा उपस्थित गराई श्रीचरणबाट सुसम्पन्न गरिएका अखिलभारतीय विराट सनातन धर्म सम्मेलन जस्ता महत्त्वपूर्ण आयोजनहरूले धर्माचार्यत्व को निर्वाह पूर्णरूपमा यहाँबाट मात्र भएको छ भन्ने अनुभव कराएको छ।

हे निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज!

श्रीहंस भगवानूबाट सनकादिकमा अन्तर्निहित भएको यस निम्बार्क सम्प्रदायको कौमार परम्परा (आबाल ब्रह्मचर्यत्व को निर्वाह) लाई अक्षुण्ण रूपमा पालना गर्दै आउनुभएका वर्तमान निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज को पदार्पणले यो भूमि अझ पुण्यमय बनेको छ। नेपाल भ्रमणको यस पावन अवसरमा आचार्यश्रीको सुस्वास्थ्य दीर्घजीवनका लागि भगवान् पशुपतिनाथसंग हार्दिक प्रार्थना गर्दछौं श्रीचरणको दर्शन एवं शुभाषीर्वाद विश्वभरिका वैदिक सनातन धर्मका अनुयायीहरूला चिरकालपर्यन्त प्राप्त भइरहोस् भन्ने हार्दिक शुभ-कामनासहित नारायणी नदीको पावन तटमा अवस्थित श्रीनिम्बार्कदर्शन केन्द्र गैंडाकोट को समुद्घाटन समारोहमा हामी सम्पूर्ण वैदिक सनातन धर्मावलम्बीहरुको तर्फबाट शत-शत स्वागत अभिनन्दन टक्र्याउंछौ।

गोपालशरण देव
अध्यक्ष
श्रीराधादामोदर मन्दिर, केलादीघाट, स्याङ्गजा
मिति : 2059 चैत्र गते आइतबार

हरिशरण उपाध्याय
अध्यक्ष
श्रीनिम्बार्कदर्शन केन्द्र, प्रतीक वृन्दावन
गैंडाकोट-1, नवलपरासी, नेपाल

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

अनन्तश्रीविभूषित अखिलमहीमण्डलाचार्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजीमहाराजज्यूका चरणकमलमा सादर समर्पित–

☆ अभिनन्दन - पत्र ☆

हे वैदिक सनातन धर्मका प्रबल संरक्षक आचार्यप्रवर!

जीवन पर्यन्त वैदिक हिन्दू धर्मको संरक्षण र सम्बर्धनमा आफूलाई समर्पित गरि बक्सने तपाई धर्ममूर्तिको परम पावन नेपाल धराको यस पौराणिक नगरीमा पदार्पणबाट राष्ट्र नै गौरवान्वित भएको ठान्दछौ तथा आध्यात्मिक क्षेत्रमा सदैव चिरस्मरणीय रहने योगदानका लागि स-सम्मान कृतज्ञता व्यक्त गर्दै जहाँ जस्तो भागवत भक्त प्रति अगाध आस्था व्यक्त गर्दछौ।

हे हिन्दू मात्रका आशा केन्द्र महाराज श्री!

शान्तिको अग्रदूत, आपसी भाइचारा, सद्भाव र सदाचारका लागि प्रसिद्ध विश्व को एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल यता आएर दिगभ्रष्ट भएको छ, अशान्त भएको छ। यस्तो घडीमा आचार्यश्री को नेपाल भ्रमणले हामी सबै नेपालीलाई सद्बुद्धि, सद्विचार र राष्ट्र एवं धर्म प्रति प्रेमको लागि प्रेरणा दिने छ भन्ने विश्वास राख्दै श्रद्धापूर्वक पूज्य पाउमा सादर अभिनन्दन व्यक्त गर्दछौ!

विराटनगर स्थित मारवाडी समाजको तर्फबाट

भीखमचन्द सरल

अध्यक्ष

तथा मारवाडी सेवा समिति परिवार, विराटनगर

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

अनन्त-श्रीविभूषितानामखिलहीमण्डलाचार्याणां श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वराणां

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याणां

श्री श्रीजी महाराजानां करकमलेषु समर्पितम्

✳ ✳ ✳ अभिनन्दनपत्रम् ✳ ✳ ✳

भो आचार्यशिरोमणे!

श्रीमतां यदोदयः सञ्जातोऽस्मिन्धरामण्डले तदारभ्य निरन्तरमुन्नतिपथम-भिगच्छत्ययं निम्बार्क सम्प्रदायः।

श्रीसर्वेश्वरप्रेसमाध्यमेन मुद्रित-ग्रन्थोदधिः सर्वेषां जनानां ज्ञानकूपारः। निम्बग्रामे श्रीमदाचार्यनिम्बार्कमहामुनीन्द्र-तपस्थल्यां मन्दिरनिर्माण-श्रीभगवद्विग्रहस्थापनेन तथाऽऽचार्यविग्रह-विराजितेन च परिचायिता श्रीनिम्बार्कतपः स्थली।

आचार्यगुरो!

भवद्भिः तीर्थमयनयपालदेशे समागत्य दर्शनप्रदानेन कृतार्थाः वयं नयपालदेश-वासिनः। प्रददातु श्रीसर्वेश्वरो भवद्भ्यो निरुजत्वं दीर्घायुष्यमिति प्रार्थयामः।

श्रीमतामनन्यभक्ताः

2060/1/2

अध्यक्ष - माधवप्रसाद कोईराला

सचिव - परशुराम कोईराला

श्रीराधाकृष्णमन्दिर परिवार - टंकिसीनवारी मोरंग (नेपाल)

तत्र-भवतां जगद्गुरु-निम्बार्कपीठाधीश्वराणामनन्त-श्री-विभूषितानां

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

-श्रीजी महानुभावमहात्मनां करकमलयोः समर्पितमिदं

✣ ✣ शुभाभिनन्दन पत्रम् ✣ ✣

अस्माकं मान्यमहापुरुष!

अस्माकं देशो नेपालोऽयं, यत्र नाम महान् हिमालयः/इतश्च स्रवन्ति स्रोतस्विन्यः सहस्रशः जनानां परितापमपनुदन्त्यस्तीर्थभूताः कल्याणिन्यः, विलसन्ति देवतायतनानि च बहुविधानि, अत्र रमन्ते देवता देवभूम्याम्। अत्रैव भगवान् पशुपतिनाथो देवपत्तने विराजते, देवी च गुह्यकालीति, निकटे श्लेष्मान्तक-विपिने विहरति। वाङ्मत्यादि-सप्तमति-पवित्रितेऽस्माकं राजधान्यां देवदर्शनार्थं तीर्थयात्रायां समागत्य तीर्थान्तर-यात्रा-निष्ठया, कौतुकेन च देशस्य पूर्वभागे, भक्तैरधिष्ठिते विराटनगरे सम्प्राप्तं भवन्तं हर्षेण महता, भाविता वयं स्वागतवचनपूर्वकमभिनन्दामहे।

भो भो सर्वेश्वर-शरण्य!

पुरा प्राचीनकाले, हंसस्वरूपो नारायणः यं द्वैताद्वैततत्त्वं सनकादिभ्यो व्यतरत्, ते च परमभागवतं नारदं समाचख्युः, स च पावनगोवर्द्धन-गिरिशिरसि तपोरतं सुदर्शनावतारं निम्बादित्यमाचार्यं प्रायच्छदिति संप्रदायपरम्परायामद्य भवान् निम्बार्कपीठाधीश्वरो विश्वश्रेयसे मनसा, वचसा, कर्मणा च प्रयत्नपरो जगद्धिताय चरैवेति चरैवेति इति वदोदितमनुसरन्निहास्ते, यस्य दर्शनेन वयं धन्यतमा जाता इति कृपापरवशं जगदगुरुं वयं भूयोऽभिनन्दवचनैः संभावयामः।

हं हो निम्बार्कपीठाधीश्वर!

भवतो भ्रमणं, भगवद्भक्तिविवृद्धये, सर्वेश्वरस्य राधारमणस्याराधनायै वैत्यस्माकं विनिश्चयः। यत्र भवत्प्रवचन-परिस्फुरितान्तस्का भक्ता अनन्यशरणाः सर्वैकशरणं, शरण्यं तमेवानुसरन्ते। महात्मनोहृदयं दुःखदग्धानां जीवानां दुर्गतिमवलोक्य दन्दह्यत इति सत्यमेव भवान् तेषां हितायाहर्निशं जागर्त्तीति भवन्तो लोकातिगं लोकहितावहङ्कर्म वारंवारमाशंसन्तः पुनरपि भवन्तं हृदयतः, अभिनन्दामहे।

अभिनन्दनकः
प्रा. टीकाप्रसाद शर्मा
अध्यक्षः
तथा
सनातन-धर्म-सेवा-समिति-परिवार
सुनसरी-जिला-शाखा, धरान, नेपाल

2 वैशाख 2060
15 अप्रेल 2003

॥ श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

षष्ठ-खण्ड

अतीत की स्मृतियां
पत्रव्यवहार

॥श्रीः॥

श्री एकलिंगजी
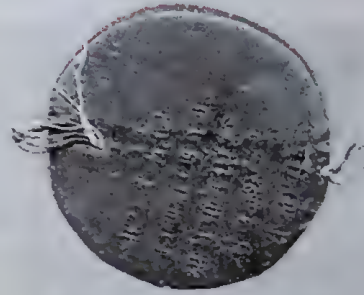
॥स्वस्ति श्रीमदखिलवृन्दारकवृन्दवन्दितपदारविन्दश्रीराधिकारमणचरणसंसेवनसमवगतसकलसद्गुणेषु श्रीराधासर्वेश्वरशरणेषु अस्माकं नमस्कारः अपरञ्च॥ शमत्र श्री- - - - - - - कृपया तत्रत्यं तदनुदिनमीहामहे। श्रीमतां पौषकृष्णसप्तम्या रवेः पत्रमागतं। वृत्तान्ता अवगताः। पूर्वगोस्वामिनां सप्तदशाहमहोत्सवोपलक्ष्ये आह्वानपत्रमागतन्तद्दृग्गोचरीभूतम्। सम्प्रति पाटोत्सवमहाप्रसादः प्रासादिकवस्त्रं च प्रेषिते त अधिगते। अस्मिन्नवसरे विशेषेच्छया मतङ्गजः प्रेषितः स तत्र सम्प्राप्त एव भवेत्। अन्य उदन्तोऽधिकारिवियोगिविश्वेश्वरसकाशादवगतः। किमधिकं विज्ञेषु। विधुव्योमाकाशेक्षणमिते वैक्रमेऽब्दे श्रावणशुक्लतृतीयायां रवौ संस्कृतिव्यास विष्णुरामशास्त्रिणालेखि दलम्। सहायोऽत्र तदङ्गजन्मा संस्कृतिपण्डिताक्षयकीर्त्तिव्यासः। संवत् २००१ श्रावणशुक्ला ३ रवौ।

महाराजा श्री भूपालसिंहजी, उदयपुर द्वारा आचार्यश्री के पीठासीन होने पर भेंट स्वरूप एक हाथी सहित पत्र लिखवा कर विद्वानों को आचार्यपीठ भेजा गया था। उस समय आचार्यश्री वृन्दावन में अध्ययनार्थ विराज रहे थे। वे सब विद्वान वृन्दावन पहुँचे, वहाँ विशाल सभा का आयोजन किया और पत्र वाचन कर आचार्यश्री को समर्पित किया। उस पत्र का अविकल स्वरूप प्रस्तुत है -

श्रीहरिः

अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरंजनदेवतीर्थ जीमहाराज
"श्रीगोवर्धनमठ" पुरी, (उड़ीसा)

ANANT SHREE JAGADGURU SHANKARACHARYA
SWAMI SHREE NIRANJAN DEVA TEERTHAJI MAHARAJ
" Shree Goverdhan Math". PURI. (ORISSA)

Ref No.................. Camp..................
Dated..9-2-68

स्वस्ति श्री महाचार्य महानुभाव
नारायण स्मरण।
आपकी गो के [illegible]
[illegible] शनैः शनैः हो रहा है
आपने [illegible] लिखा
आगे की बातें [illegible]
को विचार होगा उसमें
आपकी दिल्ली आना [illegible]
तो श्रेष्ठ हो
— श्री निरंजन

दिनांक ९ फरवरी, १९६८ को पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज द्वारा आचार्यश्री को गोरक्षा से सम्बन्धित मीटिंग हेतु लिखा पत्र।

गोरक्षा अभियान

श्रीनिम्बार्क संघ

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद

आहार:

कल्याण, गोरखपुर

सम्मान्य श्रीआचार्यजी,

सादर हरिस्मरण। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। श्रीनागरीदासजी की संक्षिप्त जीवनी भक्त-चरितांकमें दी जा रही है परन्तु आपने यदि पत्र प्राप्त होते ही श्रीनागरीदासजी और उनकी विमाता एवं वल्लभ का अति संक्षिप्त चरित्र भेज सकें तो तुरन्त भेज दें। देर होनेसे छपनेकी सम्भावना नहीं रहेगी।

श्रीनिम्बार्काचार्यके सम्बन्धमें आपने लिखा सो ईश्वर श्रीवृन्दावनके उनके एक अनुयायीका भेजा हुआ है, इससे आशा है कि कोई विपरीत बात नहीं होगी। तथापि आपको कोई संशोधन या सुझाव लिखना हो तो उसे कृपया अतिशीघ्र लिखकर भेज दीजिये। आपकी इस कृपाके लिये हम आपके कृतज्ञ हैं।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
सम्पादक

कल्याण मासिक गीताप्रेस-गोरखपुर के प्रधान सम्पादक भाई श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार द्वारा पूज्य आचार्यश्री को आलेख भिजवाने हेतु लिखा पत्र मिति मार्गशीर्ष कृष्ण १ सं. २००६।

दिनांक ३० मई, १९५२ को श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी द्वारा उड़ीसा से पूज्य आचार्यश्री को पूर्वाञ्चल के मठ मन्दिरों की जानकारी हेतु लिखा पत्र।

श्री:

श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीमदाद्याचार्यनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

पूरको भक्तकामानां कोटिसत्कामधेनवः ॥
विजयन्ते सदा श्रीजीमहाराजाङ्घ्रिरेणवः ॥

॥१॥

शालिग्रामप्रकटविलसत्कौस्तुभाङ्गामिकाङ्गो
भृङ्गश्रेणीविचलैर्दलितकाऽऽस्वादितश्रीमुखाब्जः
धुन्वन्स्वानां जनिमृतिरुजो हंसजाक्षीरसिन्धो
र्जातो धन्वन्तरिरिव सुधापूर्णसौवर्णकुम्भः
श्रीलौदार्यादिकगुणगणालङ्कृतोऽनन्तकश्री
राधासर्वेश्वरशरणदेवाभिधाचार्यवर्यः
राधाजानौ परमरतिमद्भक्तिभिक्षाभिलाषी
वन्दे तच्छ्रीपदयुगमहं राधिकादासनामा

॥ ३ ॥

इतिशुभम्

यह अभिनन्दन पत्र -
वृन्दावन कुम्भावसर पर श्री यमुना पुलिन पर समर्पित किया वृन्दावनस्थ विहारकुटी
निवासी परम रसिक महावर्तीय महात्मा श्री राधिकादासजी ने।

युगलभवन-वृन्दावन के संस्थापक श्रीमान् श्रीराधिकादासजी महाराज द्वारा वृन्दावन कुम्भावसर पर यमुना पुलिन पर पूज्य महाराज श्री को समर्पित अभिनन्दन पत्र

श्रीसर्वेश्वरजी

श्री आंप माहाराजके चरणकमलमे हमारि
शासटंग मालम होवे मयाहा आने प्र पर
का मोड़ हतराइ गीरमे हुई। टूटी बाल।
इसो अब पलाखाका पटावां हा है यपटामु
हीनसे रवुलो गया जरता नही है वापटावा
हाकरमें ही आगया अबयापड़ है भगवानके
मेरजी और यपत्र इसलीये लीखताहु, की
हमारे भरोसे पड़ी कानाकान, कसान हो
ता है हमसे काम होता नही नहीतो लीख
ना ही आता और नही बोलना होता नीबड़ो
जगका काम हम जैसे आदमीसे नसमले
और जरीसा जरोसामे चोतरफ नुकसान
होरहा है बामावासीटाकी रकमकी मयाद
नीकलो जारही ओगावजी शकरसेइ जाओर
दुजासे तीजाके पास चलागया है वापीसकबजा
होना भी मुसकील पड़गया है और ठीकानर
का काम सबही बीगड़ है जार है है इसलीये मने
तीतरफसे आपसे प्रार्थना करही है आप ठीकाने
का काम करने वाला प्रबंध करलो हमारे भरो
से नरव म अधाकारका काम संभलना है
मेरा सरीर ढीकर गया तो मेरे सेवा बन
गी करगा परंतु अधीकारसे मुक्त हु
याजी है हो राक कारे यादहारु हाहा वाकर
मा है कोइ आदमी आवे तो समजाइ गुरु साल
का ठीकाना काहीसाब मेरे जुमाका है सो इस
मे आ को इस मजने वाला बात हो तो सम
जेलो फगत मीती १३ - पोस सुद दी नरहरिदास

मिति पौष सुदी १३ सं. २०३१ को श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ अधिकारी श्रीनरहरिदासजी द्वारा स्वयं अस्वस्थ होने के कारण पूज्य महाराज श्री को लिखा पत्र।

ॐ श्री गुरवे नमः (१)

ता. ६/४/८३ई.

SRI NIMBARKA ASRAM
Kathia Baba's Asram
P.O. Brindaban
Distt. MUTTRA

राधा पुर। पो.
छत्ता हूग जि.

Sri Sri Radhabihari Jayati

भगवते श्रीनिम्बार्काय नमः

श्री अनन्तानन्त श्री विभूषित, श्री आचार्य पादस्य शिरोमणि, सर्व गुण अलंकृत, भास्कर सम देदीप्यमान, चन्द्र सम शान्त मूर्ति, जगत् गुरु श्री श्री श्री महाराज जी के चरण कमलों में सेवक श्री मनोहर दास का साष्टांग दंडवत् स्वीकृत होय।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

१/ सर्व प्रथम महन्त जी श्री सर्वेश्वर भगवान जी के चरणों में और आपके चरण कमलों में दंडवत् प्रणाम करते हैं।

२/ महन्त जी पत्र न लिख कर मैं पत्र लिख रहा हूं, इसलिए आप अन्य कुछ अपराध न समझें, क्योंकि मैं भी इन्हीं का अनुज, शिष्य गुरु भाई हूं। और इन्हीं के कथन के अनुसार पत्र लिख रहा हूं।

३/ महन्त जी स्वयं प्रथम ही पत्र लिख कर इसमें सब समाचार देकर आपके विस्तार रूप से समर्पण कर चुके हैं। अतः व निर्दोष हैं।

पत्र के लिखने में अधिक मानसिक होना पड़ता है और समय भी बहुत पर्याप्त लगेगा, फिर बौद्धिक वृत्तियों का चिन्तन करना पड़ता है। इत्यादि के कारण से न लिख सके।

(२४[illegible])

आप का शुभाशीर्वाद पत्र महन्त जी को मिला। और पढ़कर
अत्यन्त हर्ष को प्राप्त हुये और आपकी कृपा व सहानुभूति से
बहुत ही आनन्दित हुये। फिर उपस्थित गुरु भाई व शिष्य वर्ग
भी आपकी इस उदार भाव को देखकर आपकी सराहना
करने लगे।

महन्त जी अब की विस्तार रूप से पत्र प्रथम दे चुके हैं फिर
भी कुछ विशेष बातों का अवधार लिखता हूं।

श्री वृन्दावनस्थ समस्त सन्त महन्तों व गृहस्थ सज्जनों को विदित
है कि निम्ब मंदिर में अग्नि का प्रकोप होकर युगल विग्रह नष्ट
हो गई। मंदिर में प्रतिष्ठा के लिये नई युगल मूर्ति आ गई हैं। प्रतिष्ठा
का दिन भी ठीक हो गया है। सामग्री समस्त प्रस्तुत है। अधिवास भी
हो गया है। बस ऐसे समय में जो कार्य न होना चाहिये ऐसा
कार्य उन्होंने किया। यानी विपक्षियों ने बाधा डाली, प्रतिष्ठा न
होनी चाहिये। कोर्ट में दरख्वास्त पेश करदी। बाधा पड़ गई।
चारों तरफ से हैरे पड़ गई। फिर भी महन्त जी समझ कर आगे
बढ़े और कहने लगे जो हो प्रतिष्ठा होनी ही चाहिये। और
प्रतिष्ठा का यहाँ रखना उचित नहीं कारण कि जिस ठाकुर के
हम सेवाधिकारी थे वही जब चले गये तब हमारा रहना
ठीक नहीं। बस महन्त जी यही निश्चय कर और मां आनन्द
मयी के कथन के अनुसार कोर्ट में जाकर प्रतिष्ठा में बाधक
स्वरूप प्रणामी रुपया, मठ व भाई आदि को प्रतिष्ठा के लिये सब
को छोड़ दिये। प्रतिष्ठा हो गई। प्रतिष्ठा कर महन्त जी काशी-

(५)

२॥ बजे उठकर स्नानादिकों से निवृत्त होकर भजन स्थान में बैठ जाते हैं। ६ बजे तक भजन करके कुछ समय घूम लेते हैं, फिर आरति में उपस्थित होते हैं। इसके बाद आध घंटा, चिट्ठी पत्रादि सुनते हैं। और उसमें अपना मत प्रगट कर देते हैं। [illegible] लिखते नहीं। इसके बाद फिर भजन में बैठ जाते हैं। १० बजे के बाद विश्राम करते हैं। किसी को उपदेश न देने का दस्तूर बंद कर दिया है। बाहर के आदमी से [illegible] कुछ लिखना बोलना बंद रखा है।

यह नियम ३ तीन साल तक के लिए स्वयं रूप से लिया है। इसलिए भीतर बाहर कहीं भी नहीं जायेंगे। एक आसन पर बैठ कर ही भजन करेंगे। आप किसी प्रकार की चिंता न करें, इस समय मच्छर ही स्वयं प्रीति से [illegible] है।

इस समय उनके भीतर कहीं भी जाने का इरादा नहीं है। न कहीं स्थान बनाने का। तीन वर्ष के बाद जैसी प्रभु की इच्छा होगी वैसा ही किया जायेगा।

मस्तक गर्म होने की वजह से सिर से जटा के श्री उतार दिये हैं।

श्री वृन्दावन से वेदान्त निर्णय के कुछ ग्रन्थ भेजे [illegible] रखने के लिये लिखे थे। उनको भी पत्र दे चुके हैं।

अन्त में निवेदन यही है कि आप श्री सर्वेश्वरजी से प्रार्थना करें और आप भी आशीर्वाद करें कि जिससे महाराज का मनोवांछित अभीष्ट सिद्ध हो। अन्त में फिर यह निवेदन है कि पत्र कोई लिखने में जो कुछ अनुचित व त्रुटि हुई हो, सब क्षमा करके क्षमा करें। प्रति [illegible] पत्र का उत्तर [illegible]

पु. मैं यहां से सीधा ही उत्तरकाशी को जा रहा हूं। श्री श्री त्रिवेणीजी को दण्डवत् पहुंचा देवें।

दिनांक ६ मई, १९५३ को श्रीमनोहरदासजी काठिया द्वारा देहरादून से पूज्य आचार्यश्री को लिखा पत्र, जो श्रीमहन्त श्रीघनश्यामदासजी महाराज द्वारा लिखित पत्र की प्रतिलिपि स्वरूप प्रतीत होता है। (पृष्ठ १० व ११) जिसमें महाराजश्री द्वारा प्रेषित पत्र का प्रत्युत्तर भी है। भगवद्विग्रहों की प्रतिष्ठा सम्बन्धी चर्चा भी है। (पृष्ठ १२ व १३)

SRI NIMBARKA ASRAM
(Kathia Baba's Asram)
P. O. Brindaban
Distt. MUTTRA
14/12/53

परम उपमायोग्य सर्वगुण गुणान्वित परमोदार परमपूज्य श्री श्री १००८ श्री श्री श्री महाराज के चरणकमलों में - वृन्दावन काठिया बाबा का स्थान से व्रज विदेही महंत प्रेम दास का साष्टांग दण्डवत। ।

आगे समाचार यह है कि, भादोमें- वृन्दावन तथा व्रज चौरासी कोश के समस्त संत, महंत, विद्वान, पण्डित, नागा तथा तीत एकत्रित होकर- मेरे राम को आप के चरणों की कृपा से व्रज विदेही महंत पद पर बैठाये, उसके बाद आप की तथा श्री श्री सर्वेश्वर भगवान की सेवा के लिये २५ रुपैया भेजा था परन्तु दुर्भाग्य वशात: आप की आशीर्वाद कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या कारण है- मेरा समझ मे नहीं आता है। दास की कोई त्रुटि होगा तो क्षमा करेंगे। आप कृपाकर रुपैया का प्राप्ति संवाद तथा आशीर्वाद देने की कृपा करेंगे। आप की कृपा से इस महत् दायित्व पर बैठे है, परन्तु स्थान की मर्यादा ठीक से चल सके- यह आशीर्वाद करना, अत्र मंगल, तत्र कुशल प्रार्थी।

आशीर्वादाकांक्षी
प्रेमदास

36/4/1 Kasinath Dutt Road
Baranagore
Calcutta.
10.8.53.

Respected Maharajji,

Babaji Maharaj seriously fell ill of fever. A doctor Gurubhai of ours came from Calcutta and removed him to the above address. We have also accompanied him. He is doing a little better now. After he comes round he will remove to some other place.

Under instruction from Babaji Maharaj I went to the Bengal Sanskrit Siksha Parisad & came to know that you passed the Nimbark Vedanta Madhyama examination in the second division. I have also passed the final Upadhi examination in Sankhya Vedanta and have been placed in the second division.

With the most respectful regards, I remain yours obediently Janaki Das.

दिनांक १४ दिसम्बर, १९५३ को व्रज विदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीप्रेमदासजी काठिया द्वारा वृन्दावन से लिखा पत्र, जिसमें स्वयं व्रज विदेही श्रीमहन्त पद पर प्रतिष्ठित होने पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री को भेंट व पत्र भेजने की बात लिखी और उसकी पावती का उत्तर चाहते है।

श्रीहरिः

गीताप्रेस, गोरखपुर
१४-३-५४

पूज्यपाद श्रीआचार्यजी,

सादर प्रणाम।

पं० श्रीसुरति झा महोदयका लिखा हुआ कृपापत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। कुम्भ-मेलासे आप लोग परशुरामपुरीको वापस पधार गये, सो आनन्दकी बात है। आपने मेरे सम्बन्धमें जो कुछ लिखा, सो आपके सद्भावका परिणाम है। मुझमें तो कोई खास गुण नहीं है, जिसको लेकर मैं इस तरहकी प्रशंसाका पात्र बन सकूं। मैंने मिलनेका प्रयत्न एक दिन किया था, परन्तु संयोग नहीं था। मिलकर आपसे बात करनेकी मेरी भी बड़ी इच्छा थी। संयोग भगवदाधीन है। आपके आशीर्वादसे सब कुशल है।

आप स्वस्थ और सानंद होंगे। कृपा बनी रहे।

शेष भगवत्कृपा।

आपका,
हनुमानप्रसाद पोद्दार

दिनांक १४ मार्च, १९५४ को गीताप्रेस-गोरखपुर से पोद्दार का लिखा गया पत्र।

श्री रामकृष्णाभ्यां नमः

अनन्त श्री विभूषित, श्री १००८ जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य (सलेमाबाद, किशनगढ़ – राजस्थान) श्री श्री जी महाराज का --

शुभागमन

आप के तथा हमारे परम हर्ष का विषय, है कि हमारी परम प्रार्थना वश सलेमाबाद निवासी जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्री जी महाराज का शुभ पदार्पण अखिल भारतीय भक्ति योग दार्शनिक सम्मेलन शोभा वृध्द्यर्थ चित्रकूट में ता० २९--१०--५५ शनिवार को प्रातः ६ बजे होगा।

अतः आप से करबद्ध अनुरोध है कि आप सब अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर आचार्य श्री के स्वागत में सम्मिलित हों।

उनका जलूस सीतापुर से प्रातः ६ बजे शुरू होकर मुख्य मार्ग से होकर तुमसर की धर्मशाला में पहुँचेगा, तथा उनका निवास स्थान भी वहीं रहेगा।

निवेदक :---

कृपालुदास

दिनांक २९ अक्टूबर, १९५५ को चित्रकूटधाम में पूज्य आचार्यश्री के पादार्पण पर श्री कृपालुजी महाराज द्वारा भव्य स्वागत एंव शोभायात्रा हेतु श्रद्धालुओं के लिए आह्वान सन्देश

श्रीराधासर्वेश्वरो विजयेताम्

ब्रह्मानन्दरसादनन्तगुणतो रम्यो रसो वैष्णवः

तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वलश्च मधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः

तच्चानन्तचमत्कृतेः प्रतिमुहुः श्रीगोपिकानांपुरः

श्रीराधापदपद्ममेव परमं सर्वस्वभूतं मम ॥

॥ १ ॥

श्रीमन्माननीयकीर्तनीयस्मरणीयसदाऽऽराधनीयेषु अनन्तानन्तश्री विभूषित श्रीनिम्बार्काचार्यश्री १०८ श्रीश्रीजीमहाराजचरणकमलयुगलेषु श्रीमद्युगलचरणानामनन्तरं सादरं सानुरागं च कोटिशो मम दण्डवत्प्रणिपाताः समलङ्कुर्वन्तु भवन्तु ।

श्रीसर्वेश्वरप्रभुकीकृपाद्वारा श्रीपूज्यचरणोंकी कुशलताचाहतेहैं । आशीः प्रभावसे हमसब सकुशलहैं । श्रीसर्वेश्वरजूकी श्रीचरणोंसे तथा श्रीपादकेश्रीचरणोंसे जारकुटी समलङ्कृतभई थी वाकुटीमें समयर पर वर्तमानसरीकी श्रीमूर्तिकी प्रस्फुरितता अबभीहोतीरहतीहै उसनिःसीमकृपाको मैं किसप्रकारवर्णन करसकूं ? इतनीकृपा होनेपरभी

कार्यमें व्यग्रताके कारण सेवाकासुख तथा ऐकान्तिकवचनामृत
अनुभवकरनेमें मैं असमर्थ हीरहगया।

श्रीवृन्दावनमें प्राचीन भजनानन्दी महानुभाव धीरे२ अन्तर्धान
होतेजारहे हैं जिनमहानुभावोंके आकस्मिकदर्शनमात्रसेभी सात्वि
कवृत्तिकीजागृति मालिन्यकातिरोभाव एवं श्रीभगवत्स्मृति होतीथी
गतदिवसप्रातःकालमें ही कलाधारी बगीचाके महन्त श्रीवैष्णवदास
जीमहाराजनित्यलीलामें प्रविष्ट होगये मालुमपड़ताहैकि जिनम
हानुभावोंसे नित्यसंयोग हमचाहतेहैं श्रीयुगलकिशोरजूकोभी उन
सेभीअतिशीघ्र मिलनेकीपरमोत्कण्ठारहतीहै।

सखीशरणने अभीतक १भीपत्रनहीदियापत्रिकजनोंसे कुशल
ताका एवं दोलोत्सवमें आनेकासमाचारमिलताहै अभीतकआया
नही — "किं किं नविस्मरन्तीह मायामोहितचेतसः"।परीक्षामेंभी (जीवनमें भी [illegible])

१आदरणीयमहानुभावसे मैंने श्रीपादका दोलोत्सवमें शुभा
गमन होवेको सुनाथा दर्शनकी आशासे सेवामें पत्रभेजनेमें विलम्बहो
गया अब माधुरीशरणजीसेपूछनेसेकुछ आशालता कुम्हिलायगईहै
कुशलपत्रिकाकेकृपारससे तीनके पुनरुज्जीवित करनेकी अभिला
षाहै श्रीमहाराज! औरविशेषक्यानिवेदनकरें।

कृपाप्रार्थयिता विनीत राधिकादास।मिति श्रावणशु.२

वृन्दावनस्थ युगल भवन संस्था के संस्थापक नेपालदेशीय श्रीराधिकादासजी महाराज
द्वारा श्रावण शु. सं. २०४० के पूज्य आचार्यश्री के प्रति भाव भक्तिपूर्ण लिखा पत्र। (पृष्ठ सं. १७ व १८)

॥ वैष्णवा बांधवा सर्वे ॥

अनन्त श्री विभुषित श्री वैष्णव सम्प्रदायाचार्य जगद गुरु रामानन्दाचार्याश्रम

राजराजेश्वर तपोनिष्ट परिव्राजकाचार्य स्वामी

श्री रामचरणदास जी महाराज

॥ महामण्डलेश्वर ॥ ॥ हरिद्वार वाले ॥

श्रीमान्, मान्यवर आचार्य श्रीचरण!

ता० १३ - ९ - १९५६

चारों सम्प्रदायों के वैष्णवों को भ्रम हो गया है कि मैंने श्री वृन्दावन में श्री [illegible] जी की संस्था की नींव डालने के समय में यह कह दिया कि श्री रामानन्द सम्प्रदाय चतुःसम्प्रदाय में परिगणित नहीं है।

मैंने कभी भी न तो ऐसा कहा है और न मानता हूँ। श्री रामानन्द सम्प्रदाय भी चतुःसम्प्रदाय में इस देश में अनादि काल से परिगणित है। हम लोग श्री रामानन्द सम्प्रदाय श्री निम्बार्क सम्प्रदाय श्री माध्व सम्प्रदाय श्री विष्णुस्वामी सम्प्रदाय इन्हीं चारों सम्प्रदायों को चतुःसम्प्रदाय मानते हैं। हमारे यहाँ जो चतुःसम्प्रदाय खालसा है उसमें भी यही चार सम्प्रदाय हैं।

किसी को भ्रम न हो इसलिये मैंने यह स्पष्टीकरण कर दिया है।

लिखित — महामण्डलेश्वर
स्वामी श्री रामचरणदास जी हरिद्वार वाले
प्रतिनिधि —
स्वामी देवेन्द्राचार्य
[illegible]
[illegible]

स्वामी श्री राम[illegible]
दास शास्त्री
रामायणी [illegible]

दिनांक १३ सितम्बर, १९५६ को रामानन्द सम्प्रदाय के महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामचरणदासजी महाराज द्वारा चतुःसम्प्रदाय में उठे भ्रम के निवारणार्थ अपना स्पष्टीकरण रूप पत्र, जो अनेक सन्त-महात्माओं के हस्ताक्षर युक्त है, पूज्य महाराज श्री को भेजा था, उसका अविकल प्रारुप प्रस्तुत है।

* श्रीहरि *

अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर
जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज
ज्योतिर्मठ, बदरिकाश्रम

संचारस्थान
धर्मसंघ विद्यालय इन्द्रप्रस्थ
दिल्ली
दिनाङ्क २९।१।६७

आनन्द मङ्गलाभिलाषी श्री अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्रीश्रीमहाराज ! नारायण स्मरणम्

समाचार है कि श्रीमज्जगद्गुरु जी श्री शंकराचार्य महाराज कल सकुशल दिल्ली पधार गये हैं यहां पर सत्याग्रह का कार्यक्रम यथापूर्व चल रहा है सरकार की ओर से अभी तक सन्तोषप्रद आश्वासन नहीं हुआ है। श्री प्रभुदत्तजी के अनशन तोड़ने की सूचना पत्रों में छपी है परन्तु निश्चय रूप से अभी कुछ संदेह है कारण पुरीपीठाधीश्वर अभी सर्वथा अडिग हैं ब्रह्मचारी जी बहकाने में आ जाते हैं फिर सम्भल भी जाते हैं ऐसा कई बार हुआ है। आपको भी विदित है। आन्दोलन की सफलता अभीष्ट है जो धर्माचार्यों के आशीर्वाद तथा जनता के संगठन की अपेक्षा रखती है मार्ग में आते हुए शाहजहांपुर में भी महाराजजी का उपदेश हुआ था वहां की जनभावना बहुत अनुकूल थी। शेष कुशल है

श्रीमज्जगद्गुरु जी महाराज की आज्ञा से

नरोत्तमाश्रम
मन्त्रीस्वामी

ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रमजी महाराज की आज्ञा से उनके निजी सचिव श्री नरोत्तमाश्रमजी मन्त्रीस्वामी द्वारा दिल्ली से दिनांक २९ जनवरी, १९६७ को जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज को लिखा गोरक्षा आन्दोलन सम्बन्धी पत्र का स्वरूप।

सं० ५३७ ॐ श्रीहरिः वंशीमठ-वृन्दावन ता० [illegible]

श्रीमन्निखिल महामण्डलाचार्य, सर्व मंगल स्वरूप द्वैताद्वैत प्रवर्तक यति पति शिरोमणि, राज राजेन्द्र समर्चित चरण कमल आचार्य वर्य [illegible], अनन्तानन्त श्री विभूषित. जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्रीश्री श्रीराधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज
अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठ,
सलेमाबाद, अजमेर, राजस्थान।

जय जय श्री राधा बिहारी की जय।

आपका कृपा पत्र दिनांक ता० [illegible] का मिला। आपके इस कृपा के लिये हम बहुत आभारी और कृतज्ञ हैं। श्री प्रभुपाद महाराज जी [illegible] स्वस्थ होगया। अब स्वास्थ्य का लाभ ले रहे हैं। बहुत ही कमजोरी है धीरे २ सुधार होरहा है [illegible] दिन हुए इतना भारी बीमारी पर भी बच गये [illegible]। अभी [illegible] चलना भी नहीं है। इसलिये बहुत थोड़ा २ [illegible] ले रहे हैं। फिर भी आप सभी के कृपा की ही आशा है। आपके [illegible] कल्याण हो सकता है इसलियें [illegible] रहा है।

अब श्रीप्रभुपाद जीका विचार होता है कि जैसे लूली, लंगड़ी, टूटी, [illegible] की रसना की जाय। स्वास्थ्य के लिए होने पर निकलते ही इसकी सेवा में लग जाने की प्रबल इच्छा है। और इस काम में जब तक आप जैसे महानुभावों की दया व प्रेम भरी कृपा न होगी तब तक (श्री [illegible]) इस कार्य को आगे रखना बहुत ही मुश्किल है। क्योंकि [illegible] अकेले लड़का के होना ही मुश्किल है इसलिये तो यह कानून बनाने के [illegible] है। लेकिन संतो की कृपा से ही जनता का प्रभाव [illegible] को पूरा करने में लग जाना होगा। आशा है [illegible] पूरे [illegible] देखें श्रीकृपा करेंगे।

आपका — विनीतश्रम
परमहंस
दास – श्रीवृन्दावन

दिनांक ८ फरवरी, १९६८ को श्रीधामवृन्दावन-वंशीमठ से श्रीपरमहंसदासजी महाराज द्वारा पूज्य आचार्यश्री के पत्रोंत्तर में श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी के स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी प्रदान करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की गयी है।

लोकालोक " धर्मप्रेस कमलानगर देहली
नवम्बर ६८ अङ्क

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री जी श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज का सन्देश
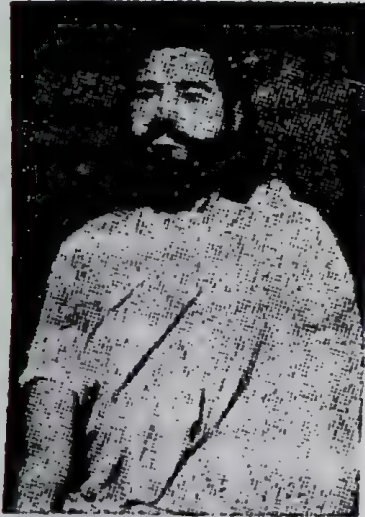
आप हमारे देश की जो स्थिति हो रही है उससे कौन अपरिचित है। उपस्थित उलझनें और विविध समस्याओं को सुलझाने में यद्यपि हमारी सरकार व्यस्त है किन्तु वह सुलझा नहीं पा रही है। इन सब अपराधों के विविध कारणोंमें एक मुख्य कारण गोहत्या है इसी महान् पाप से हमारे देशवासी दुखी हो रहे हैं।

किन्तु बड़े दुःख की बात है कि आज देश को स्वतन्त्र हुए १६ वर्ष होने आये, अहिंसा के राग आलापने वाली सरकार गोहत्या बन्द नहीं कर सकी। जब किसी एक प्राणी की हिंसा भी पाप समझा जाता है तब जिसके शरीर में ब्रह्मा शंकर आदि समस्त देव बसते हों, जो भेद भाव छोड़कर समस्त प्राणियों का हित करती हो, उस गोमाता की हत्या के पाप का तो पार ही क्या है? अतः दुधारु या ठूंठ कामिल या बेकार, बूढ़ी या अपंग किसी भी गो एवं गोवंश की हत्या नहीं होनी चाहिए, सरकार गौ हत्या बन्दी का व्यापक कानून शीघ्र बना दे।

आज लाखों गोभक्त प्रदर्शन एवं सत्याग्रह निरत हैं। सहस्रों साधु सन्त बन्दी बनाए हुए हैं। स्वामी श्री रामचन्द्र वीर, धर्मेन्द्र शर्मा आदि आमरण अनशन व्रत लेकर मरणासन्न हैं। ऐसी स्थिति में भी सरकार यदि उपेक्षा करती है तो हम सभी धर्माचार्य सभी सम्प्रदायों के साधु सन्त और समस्त जनता का कर्तव्य है कि गोहत्या बन्दी के लिये सब प्रकार से अग्रसर बनें, प्राणों तक की आहुति देने में भी पीछे न हटें। अपितु भेद भावों को भुलाकर संगठन पूर्वक आगे बढ़े। धर्मवीरों को भी सर्वेश्वर प्रभु अवश्य ही सफलता प्रदान करेंगे।

धर्मप्रेस कमलानगर, देहली से प्रकाशित होने वाली ''लोकालोक'' मासिक पत्रिका के सन् १९६८ नवम्बर अंक में प्रकाशित पूज्य आचार्यश्री के गोहत्या निषेध सम्बन्धी उदात्त विचार चित्र सहित यथावत् प्रस्तुत है।

फोन नं० : २२६१००

॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥

केन्द्रीय गोरक्षा अभियान समिति

[भारत गोसेवक समाज द्वारा संस्थापित]

प्रधान कार्यालय :
१ जन्तर मन्तर रोड,
दिल्ली-१

क्रमांक

१२-१-६८

परममाननीय अभिनन्दनस्वरूप श्री श्रीजी म०

आपका प्रेरणा पत्र प्राप्त कर मन को परमप्रसन्नता हुई। मेरे मन में गोरक्षाअभियान से पृथक् होने की कल्पना भी नहीं हो सकती। समाचार पत्र में प्रकाशित संसूचन निराधार मिथ्या है।

मैं आप के विश्वास पर सदा भरोसा रखता हूँ, मुझे आपके सुझावों से सहमति तो अवश्य है किन्तु वर्तमान परिस्थिति में किसी प्रकार की अनुचित कार्यनीति घातिनी होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

आप कृपा करके दिल्ली पधार जावें जिससे प्रत्यक्ष में विचार विनिमय हो सके।

आपका अपना ही
मुनि सुशील कुमार

केन्द्रीय गोरक्षा अभियान समिति दिल्ली से मुनि श्रीसुशील कुमारजी द्वारा
दिनांक १२ जनवरी, १९६८ को पूज्य आचार्यश्री के पत्र का प्रत्युत्तर लिखा, उसका स्वरूप

श्रीहरि:

जयदयाल डालमिया

तार { 'डालमियासिमेंट', नई दिल्ली
'DALMIACMNT' NEW DELHI

कार्यालय : ४ सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली : दूरभाष ४०१२१
निवास : २ तिलक मार्ग, नयी दिल्ली : दूरभाष ४५१६८

दिनांक २९ फरवरी, १९६८.

पूज्यवर,

सादर प्रणाम ।

आजकल नहानेके और कपड़े धोनेके प्रायः सभी साबुन गायकी चर्बीसे मिश्रित होकर आते हैं । मुझे पता नहीं, यह बात आपके ध्यानमें आयी है या नहीं । इसके प्रमाणमें मैं कुछ कागज आपके अवलोकनार्थ संलग्न कर रहा हूं ।

इस सम्बन्धमें आपसे नम्र निवेदन है कि आप जैसा भी उचित समझें, अपने भक्तोंका तथा अपने मासिक-पत्रके माध्यमसे लोगोंका मार्गप्रदर्शन करनेकी कृपा करें ।

कृपाकांक्षी -

[signature]

(जयदयाल डालमिया)

पूज्य श्रीजगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी -
श्रीराधासर्वेश्वरशरणजी देवाचार्य,

पो० सलेमाबाद

दिनांक २९ फरवरी, १९६८ को नई दिल्ली से श्री जयदयालजी डालमिया द्वारा पूज्य आचार्यश्री को लिखा पत्र, जिसमें नहाने, कपड़े धोने के साबुनों में गाय की चर्बी का मिश्रण होने का उल्लेख सप्रमाण प्रस्तुत किया है। पीठ द्वारा प्रकाशित पत्रों में भी इसका प्रतिरोध करने की अपील की है।

"मानानुसार गुण च"

तार—'Gita'
कोड—वेंटके दूसरी फ्रेज

फोन नं० ३०

कल्याण

(भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और सदाचारसम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र)

पत्र-संख्या..................

पो० गीताप्रेस

ग्राहक-संख्या..................

गोरखपुर.................. २०६
२२ - ६ - ६८

परम पूजनीय श्री आचार्यचरण,

श्रीचरणोंमें भक्तिपूर्ण कोटि-कोटि नमस्कार।

सेवामें विनीत प्रार्थना है कि आपके 'कल्याण' का आगामी विशेषांक "परलोक और पुनर्जन्माङ्क" प्रकाशित करना निश्चय हुआ है। लेखोंकी संक्षिप्त विषय-सूची साथ भेजी जा रही है। इसमें से किसी विषयपर या इस सम्बन्धके अन्य किसी भी महत्त्वपूर्ण विषयपर आप अपना सारगर्भित उपदेशपूर्ण निबन्ध शीघ्र भेजनेकी कृपा करें।

शेष भगवत्कृपा।

दास,
[illegible]
सम्पादक

[illegible]

गीताप्रेस-गोरखपुर से दिनांक २२ जून, १९६८ को कल्याण के विशेष हेतु पूज्य आचार्यश्री को उपदेशात्मक निबन्ध भिजवाने का प्रार्थना पत्र।

स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती

दिनांक १९-२-६८

आदरणीय महानुभाव

सादर ॐ नमो नारायणाय।

भारत साधु समाज का आमंत्रण पत्र पहुंच चुका है। आजकल हमलोग वृन्दावन में हैं और स्वस्थ प्रसन्न हैं। हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि आपके साथ निवास, आलाप आदि का सुयोग हमें प्राप्त होगा। हम अपने सौभाग्य की सराहना करते हैं कि आपकी अकिंचित सेवा का सुअवसर हमें प्राप्त होगा। आप ८ मार्च से यथासम्भव १-२ दिन पहिले ही पधारिये और उसके दो दिन बाद तक वहाँ रहने का कार्यक्रम बनाइये। आपके पधारने से धर्मभूमि की महिमा बढ़ेगी और आपके विचारों से भारतीय मानवता को दिव्य दिशा-निर्देश प्राप्त होगा।

आपकी स्वीकृति की प्रतीक्षा में

अखण्डानन्द सरस्वती

श्री श्री श्री महाराज
श्री निम्बार्क पीठाधीश्वर
सलेमाबाद

स्वामी श्रीअखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज द्वारा वृन्दावन से दिनांक १९ फरवरी, १९६८ को पूज्य आचार्यश्री की सेवामें प्रेषित पत्र जिसमें भारत साधु समाज के सम्मेलन में पादार्पण हेतु प्रार्थना है।

* श्री हरिः *

अनंत श्री जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरञ्जनदेव तीर्थ जी महाराज

OFFICE OF HIS HOLINESS

Anant Shree Jagadguru Shankaracharya

SWAMI SHREE NIRANJAN DEVA TEERTHAJI MAHARAJ.

SHREE GOVARDHAN MATH, PURI.

Camp. धर्मसंघ, निगम बोध घाट दिल्ली

Ref. No. ३३३/४/६८   Dated १०-३-६६

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्री श्री जी महाराज,

साष्टांग दण्डवत् प्रणाम निवेदित हों।

श्रीमद् अनन्त श्री गोवर्धनपीठाधीश्वरानाम जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामि निरंजनदेवतीर्थ पादानामदेशात्

निवेद्यते:--

दिनांक १६ अप्रैल से २७ अप्रैल तक कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय धर्मसंघ विशिष्ट महाधिवेशन में आचार्य श्री की उपस्थिति साग्रह प्रार्थनीय है। धर्म पर आने वाले संकटों के सम्बन्ध में आप सब आचार्यों को भी महत्वपूर्ण परामर्शार्थ आमन्त्रित किया गया है। आप का पधारना अत्यावश्यक है। कृपया स्वीकृति दिल्ली कार्यालय तथा ५७ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता के पते पर देंगे।

श्री पुरीपीठाधीश्वर जी महाराज के आदेश से

(नन्दलाल शर्मा, शास्त्री)

मुख्यसचिव,

धर्मसंघ निगम बोध घाट दिल्ली से दिनांक १० मार्च १९६९ को पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज की आज्ञा से मुख्य सचिव श्रीनन्दलालजी शर्मा शास्त्री द्वारा जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज को कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय धर्म संघ महाधिवेशन मे पादार्पण की स्वीकृति हेतु प्रार्थना पत्र।

अखिल भारतवर्षीय सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान कार्यसमिति

अधिवेशन

तथा

राजस्थान प्रान्तीय गोरक्षा एवं गोशाला सम्मेलन

ब्यावर, राजस्थान

श्री सनातन धर्म सत्संग भवन

श्रीहरिः

जन्माष्टमी २०२५

स्वस्ति श्री मज्जगद्गुरु निम्बार्काचार्यवर्य श्री श्रीजी महाराज

आपका पत्र तो होगा पर इस अवसर पर आप अवश्य पधारें, इसके अतिरिक्त और क्या कह सकता हूं।

श्री निरञ्जन

दिनांक १५ नवम्बर, १९६९

जयदयाल डालमिया ४, सिंधिया हाउस,
नयी दिल्ली-१.

उत्तरितम् २२-११-७०को

दिनांक २१ नवम्बर, १९७०.

पूज्य चरण,

सादर प्रणाम ।

आपकी सेवामें गत दिनांक १ अक्टूबर, १९७० को 'प्राचीन भारतमें गोमांस—एक समीक्षा' नामक पुस्तककी एक प्रति डाक द्वारा अण्डर-पोस्टल-सर्टिफिकेट भेजी थी और निवेदन किया था कि आप उसपर अपनी सम्मति तथा समालोचना लिखकर अनुगृहीत करें। किन्तु अभी तक आपके यहांसे प्राप्ति-सूचना भी नहीं मिली। यदि पुस्तक आपके पास पहुंच गयी हो तो अपनी सम्मति तथा समालोचना भेजनेकी कृपा करें, लेकिन यदि न पहुंची हो तो वैसा समाचार देनेकी कृपा करें जिससे कि दूसरी प्रति आपकी सेवामें भेज दी जाय।

कृपाकांक्षी-

ज-डालमिया
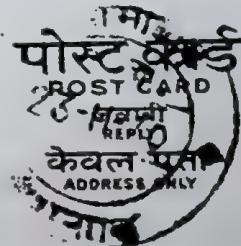
(जयदयाल डालमिया)

परमपूज्य श्रीनिम्बार्काचार्य-
---पीठाधीश्वर श्रीश्रीजी महाराज,

पो० सलेमाबाद.

(वाया - किशनगढ़) राजस्थान

श्रीजयदयाल डालमिया का नई दिल्ली से २१ नवम्बर, १९७० को भेजा गया पत्र, जिसमें 'गोमांस-एक समीक्षा' पुस्तक पर सम्मति भेजने का अनुरोधात्मक निवेदन है।

|| श्रीहरिः ||

'मामनुस्मर युध्य च'

कल्याण

गीताप्रेससे प्रकाशित भक्ति, ज्ञान, सदाचारकी सचित्र मासिक पत्रिका

सम्पादकीय विभाग
पत्रालय–गीतावाटिका
जनपद–गोरखपुर, उ० प्र० (भारत)
तार–'गीता', दूरभाष–८३

श्रीकृष्ण सं० ५१९७, श्रावण शु० ९ (३०-७-७१)

सम्मान्य महोदय,

सप्रेम हरिस्मरण।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि रामभक्तोंके आग्रह तथा कतिपय प्रेमी महानुभावोंके सुझावका आदर करते हुए, साथ ही समाज तथा देशमें बढ़ते हुए अनैतिकता, मर्यादाहीनता एवं उच्छृङ्खलताके प्रवाहको दृष्टिमें रखकर अगले वर्ष 'कल्याण' का 'श्रीरामांक' निकालनेका विचार किया गया है। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामके आदर्श चरित्रका अनुशीलन एवं अनुकरण ही हमारे अन्दर नैतिकताका संचार करनेमें सहायक हो सकता है।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी रचना यथासम्भव शीघ्र भेजनेकी कृपा करें, जिससे विशेषांकमें उसका उपयोग किया जा सके। विशेषांकमें दिये जानेयोग्य विषयोंकी एक तालिका साथमें प्रेषित है। इनमेंसे जिस विषयपर आप अपनी रचना भेजें, उसका संकेत कृपया लौटती डाकसे करें। इसके लिये २० पैसोंका टिकट सेवामें प्रेषित है। शेष भगवत्कृपा।

आपका/
(हस्ताक्षर) चिमनलाल गोस्वामी
सम्पादक

गीता वाटिका गोरखपुर से कल्याण के सम्पादक श्री चिमनलालजी गोस्वामी द्वारा दिनांक ३० जुलाई, १९७१को पूज्य आचार्यश्री की सेवा में पत्र भेजा गया। जिसमें कल्याण के विशेषांक "श्रीरामांक" हेतु सदुपदेशात्मक लेख भिजवाने की प्रार्थना की गयी है।

श्री गणेशाय नमः

बीना
ता० १५-११-७१

श्री अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी महाराज"
किशनगढ़

परम पूज्यपाद,

सेवा में बीना से महंत भगवानदास बड़ा मंदिर बीना वालों का दिन प्रति दिन का दण्डवत स्वीकार्य हो।

सेवा में निवेदन है श्री रघुनाथजी महाराज की असीम अनुकम्पा से यहां श्री बड़े मंदिर में श्री शालिगरामजी के विवाह का आयोजन है। आपसे कर बद्ध निवेदन है कि आप इस अवसर पर बीना (मध्यप्रदेश) पधारने की अनुकम्पा करें।

समय की संकीर्णता के कारण निमंत्रण लेकर यहां से आपकी सेवा में नहीं आ सके इसके लिये क्षमा करेंगे। आज आपको तार भी दिया है जिसमें आपसे यहां आने की प्रार्थना की है व आपकी स्वीकृति तार से देने की प्रार्थना की है। आशा है कि आपने तार से स्वीकृति दे दी होगी।

हम व यहां बीना के धर्मप्रेमी सज्जन आपके दर्शनो के लालायित है। अत: आप अवश्य आने की अनुकम्पा करें।

आपका सेवक
ह०- महंत भगवानदास
महंत भगवानदास,
बड़ामंदिर
बीना (मध्यप्रदेश)

दिनांक १५ नवम्बर, १९७१ को बीना (मध्यप्रदेश) से महन्तवर्य श्रीभगवानदासजी महाराज द्वारा तुलसी-शालिग्राम के विवाहोत्सव में पादार्पण करने हेतु आचार्यश्री को प्रार्थना पत्र भेजा गया।

जयदयाल डालमिया

तार हिन्दी { 'डालमियासिमेंट', नयी दिल्ली
अंग्रेजी { "DALMIACMNT" NEW DELHI

कार्यालय : ४ सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली-१ : *दूरभाष* ४०१२१
निवास : १ तीसजनवरी मार्ग, नयी दिल्ली-११ : *दूरभाष* ६१६४५३

दिनांक ८ मई, १९७२.

पूज्य श्रीमहाराजजी,

चरणोंमें सादर प्रणाम ।

आपने २२ मईके शिलान्यासके आयोजनपर मुझे आमन्त्रित किया, यह आपकी बड़ी कृपा है, लेकिन एक तो १८ या १९ मईको हम लोगोंका यहांसे श्रीबद्रीनाथजीकी यात्रापर जानेका कार्यक्रम प्रायः निश्चित-सा है, दूसरे इस प्रकारके किसी भी आयोजनमें मुख्य-अतिथि आदि बननेकी मेरी बिल्कुल रुचि नहीं रहती है और मुझे बहुत ही संकोच होता है । वैसे साधारण रूपमें उपस्थित हो जाऊं, वह बात अलग है । यदि श्रीबद्रीनाथजीकी यात्राका कार्यक्रम न बना तो फिर बहुत सम्भव है कि मैं मथुरा-वृन्दावनकी तरफ ही रहूंगा और यदि स्मरण रहा तो २२ मईको वहां आपके दर्शन करनेकी जरूर चेष्टा करूंगा ।

कृपाकांक्षी-
ज॰ डालमिया
(जयदयाल डालमिया)

पूज्य श्रीश्रीजी महाराज,
निम्बग्राम

दिनांक ५ मई, १९७२ को श्रीजयदयालजी डालमिया द्वारा निम्बग्राम में मन्दिर के शिलान्यास के समय स्वयं उपस्थित होने में असमर्थता का पत्र आचार्यश्री को भेजा।

TO OPEN CUT HERE

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

जवाबी जगद्गुरु
शंकराचार्यजी
शंकराचार्य मठ पुरी

आपने २८ जून प्रसुनवाटिका मार्ग
[illegible] यहाँ मिल जाएगा 20
जून तक यहाँ पहुँचेंगे तार द्वारा
प्रस्थानकी सूचना दें
निम्बार्काचार्य श्री श्री
जी महाराज झांसी

27-6-72

दिनांक २१ जून, १९७२ को आचार्यश्री द्वारा झांसी से पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य को जवाबी तार भेजा गया था उसका स्वरूप।

श्रीहरिः

परमआप्तशिरोमणि श्री १९०८ श्री श्रीजी महाराज
सादर नारायण स्मरण। आपके दो नोंजवाबी तार
९ कर २८ तारीख को और १० कर २७ तारीख को मिले
फिर २० को आंसी कैसे पहुंच सकता था। क्षमा करें
अपराध न माना जाय, क्योंकि एक तो तार आपकी
पोस्ट आफिस की मोहर के जो भेज रहा हूं [illegible]
दर्शन-मिलन की इच्छा है। [illegible] से मेरा
चातुर्मास्य हैदराबाद में होगा।

श्री निरं[illegible]

श्रीमान् मान्यवर श्री १९०८ श्री श्री जी महाराज
निम्बार्क सम्प्रदाय प्रधानपीठ पो. सलेमाबाद
पो. किशनगढ़ जि. अजमेर (राजस्थान)

Sri 1108 Sri, Sri Ji Maharaj
Nimbarkachari Pradhan
Peeth.
Village : Salemabad
P.O. Kisangarh
Dist Ajamir
Rajsthan

पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज द्वारा जवाबी तार का जवाब आचार्यश्री को प्रेषित। जिसमें तार विलम्ब से मिलने का उल्लेख है।

॥ श्रीहरिः ॥
'मामनुस्मर युध्य च'

कल्याण
गीताप्रेससे प्रकाशित भक्ति, ज्ञान,
सदाचारकी सचित्र मासिक पत्रिका

सम्पादकीय विभाग
पत्रालय–गीतावाटिका
जनपद–गोरखपुर, उ० प्र०, (भारत)
तार–'गीता'; दूरभाष–८३

श्रीकृष्ण सं०– ५१९८, ज्येष्ठ शुक्ल १, सोमवार (१२– ६– ७२)

पूज्यपाद,

चरणोंमें सादर प्रणाम ।

जनवरी ७३ में कल्याणका 'श्रीविष्णु–विशेषाङ्क' प्रकाशित होगा, इसकी सूचना एक पूर्व–पत्रसे आपके श्रीचरणोंमें निवेदित हुई थी । इसी पत्रके साथ श्रीविष्णु–विशेषांककी प्रस्तावित विषय–सूची संलग्न करके यह विनम्र प्रार्थना की गयी थी कि विशेषाङ्कके लिये आपका कोई लेख प्रसाद स्वरूप प्राप्त होना चाहिये । लेखका विषय प्रस्तावित विषय–सूचीमेंसे हो सकता है अथवा विषय–सूचीसे स्वतंत्र कोई भी विषय हो सकता है, जो भगवान् श्रीविष्णुसे सम्बद्ध हो । पूर्व–पत्र गये लगभग एक मास हो गया, परन्तु न कोई लेख ही आया और न कोई आश्वासन ही मिला । आशा है, आपका कृपा प्रसाद कल्याणके लिये प्राप्त होगा । प्रस्तावित विषय–सूची पुनः संलग्न की जा रही है ।

शेष भगवत्कृपा ।

आपका—
चिमनलाल गोस्वामी
— सम्पादक

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य
श्रीश्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज,
सलेमाबाद, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

दिनांक १२ जून, १९७२ को श्री चिमनलालजी गोस्वामी द्वारा गीतावाटिका-गोरखपुर से पूज्य आचार्यश्री को पत्र भेजा गया। जिसमें कल्याण के श्रीविष्णु विशेषांक हेतु लेख भिजवाने की प्रार्थना की गई है।

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

TELEGRAM

C. No. ....
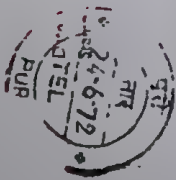
This form must accompany any enquiry respecting this telegram

Address Jagad guru Sankaracharya

जवाबी जरूरी
श्री जगद्गुरु
शंकराचार्य श्री निरंजन
देव तीर्थजी महाराज
श्री शंकराचार्य मठ
पुरी

श्री चरनोंके पदार्पनकी प्रतीक्षा
हो रही है कृपया शीघ्र अति शीघ्र
वायुयान द्वारा दर्शन देनेकी अनुकंपा
किं जाय यहाँ पहुँचनेपर अवशिष्ट
राशी भेंट करती जायगी –
वियोगी द्वारा
बिहारी द्वारा
बिहारी मंदिर उनीभावत्रिलाप

दिनांक २४ जून, १९७२ को झांसी से पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी महाराज को जवाबी तार भेजा जिसमें शीघ्र झांसी पादार्पण की प्रार्थना है।

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते || || श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

|| श्रीहरिः ||

फ़ोन नं. ४६००७

अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज (पुरी)

चातुर्मास प्रबन्धक समिति, हैदराबाद (आं. प्र.)

(सं. २०२९—१९७२)

कार्यालय :
हरि भवन, चारकमान, हैदराबाद

पत्रांक

दिनांक ३०-८-७२

श्रीमान् अनन्त श्री जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्री श्रीजी महाराज,
सादरानुदण्डवत प्रणाम।

परमादरणीय !

आपकी सेवामें निवेदन है कि, विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आचार्य श्री के आदेशानुसार हैदराबाद नगरनिवासियों ने नवरात्रि के दिनों में यहां विश्व कल्याणार्थ पाठ-होमात्मक सहस्त्र चण्डी महायज्ञ तथा सर्ववेद-शाखा सम्मेलन एवं अखिल भारतीय धर्म सङ्घ महाधिवेशन, गोरक्षा सम्मेलनादि करने का निर्णय लिया है। अतः इस शुभावसर पर आप श्री का पधारना परमावश्यक एवं प्रार्थनीय है।

अतएव आचार्य श्री का एवं स्वागत समिति के पदाधिकारियों तथा सदस्यों का विशेष अनुरोध है कि आप अधिक से अधिक समय यहां के लिए देने की कृपा करेंगे। कार्यक्रम ८ अक्टूबर से १५ अक्टूबर १९७२ तक का निश्चित हुवा है। मुद्रित निमन्त्रण-पत्र भी शीघ्र ही सेवामें प्रेषित किया जायगा किन्तु वह तो सर्वसाधारण केलिए ही होगा। आपकेलिए उसकी अपेक्षा नहीं है। अपितु यह पत्र ही विशेषरूप से निवेदनार्थ सेवा में प्रस्तुत है। अपनी स्वीकृति के साथ पधारने की तिथि, गाड़ी तथा समय की सूचना दिलवाने की कृपा करेंगे जिससे आपके आवास एवं स्वागतादि की समुचित व्यवस्था समय रहते की जासके।

अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी पीठाधीश्वर जी महाराजका विशेष आग्रह है कि आप अवश्य पधारें।

रविनन्दन ब्रह्मचारी

निवेदक, (रविनन्दन ब्रह्मचारी),
निजी सचिव श्री जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी पीठाधीश्वर जी महाराज.

दिनांक ३० अगस्त, १९७२ को हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) से शंकराचार्यजी महाराज की आज्ञा से सचिव श्रीरविनन्दनजी ब्रह्मचारी द्वारा पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज को भेजा गया पत्र। जिसमें हैदराबाद में समायोजित सहस्रचण्डी महायज्ञ एवं धर्मसंघ सम्मेलन में पादार्पण करने हेतु प्रार्थना की गयी है।

|| श्री राधासर्वेश्वरो विजयते || || श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ||

Tele. ॥ श्रीहरिः ॥ फोन नं. ४६००७

धर्म की जय हो।
अधर्म का नाश हो।

प्राणियों में सद्भावना हो।
विश्व का कल्याण हो।

हर हर महादेव।

विश्वकल्याणार्थ पाठ-होमात्मक सहस्रचण्डी महायज्ञ

११वाँ सर्ववेदशाखा सम्मेलन

अ. भा. धर्मसंघ का ३०वाँ महाधिवेशन, गोरक्षा सम्मेलनादि

सं २०२९ आश्विन शुक्ल २ सोमवार ता. ९-१०-७२ से १५-१०-७२ तक

संरक्षक : श्री [illegible]
स्वागताध्यक्ष : डा. रामनिरंजन पाण्डेय
संयोजक : श्री विजयकुमार [illegible]
प्रधानमंत्री : श्री [illegible]

कार्यालय :
हरिभवन, चारकमान, हैदराबाद।
दिनांक:.........................

अवभृथ स्नान

कुम्भ मेले की अन्तिम झांकी

सज्जनों,

विदित हो कि १५ अक्टूबर [illegible] रविवार को दिन में १२ बजे तक [illegible] सहस्रचण्डी महायज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होगी और तत्काल उसी समय अनन्त श्री जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्री जी महाराज (सलेमाबाद) की अध्यक्षता में सीताराम बाग - पुष्करणी के तट पर जाया जायगा, जिसमें कि अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य गोवर्धनपीठाधीश्वर जी, अनन्त श्री जगद्गुरु ज्योतिष्पीठाधीश्वर जी महाराज एवं पधारे हुए सभी धर्माचार्य, सन्त महात्मा, वैदिक विद्वान तथा प्रतिनिधिगण होंगे।

स्मरण रहे कि [illegible] नगर [illegible] नगर एवं आन्ध्रप्रदेश का [illegible] अपार जनसमुदाय भी साथ होगा।

निवेदक

विजयकुमार [illegible] बहादुरमल अग्रवाल

हैदराबाद में १ अक्टूबर, १९७२ से १५ अक्टूबर, १९७२ तक समायोजित होने वाले सहस्रचण्डी महायज्ञ, पूर्णाहुति, सम्मेलन, अवभृथ स्नानादि की रूपरेखा। जिसमें पूज्य श्री श्रीजी महाराज की अध्यक्षता रखी गयी है।

श्री राधासर्वेश्वराभ्यांनम:

श्रीमान परम पूज्य श्री आचार्य चरण श्री निम्बार्का चार्य पीठाधिपति जगदगुरु अनंतश्री विभूषित श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी श्री जी महाराज पीठ सलेमाबाद. (राजस्थान)

सादर समर्पित-अभिनन्दनपत्र

श्रीजी श्रीमदाचार्यचरण ।

अखंड भूमण्डलाचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य द्वैता-द्वैत मर्यादा प्रवर्तक प्रतिपादित रहस्य के प्रचारक-संरक्षक-श्रुति-स्मृति-पुराण-प्रति पादित सनातन धर्म संरक्षक गौसंरक्षक धर्म प्राण तपस्वी-नैष्ठिक ब्रह्मचर्य्य व्रत परायण–वेद वेदान्त उपनिषद संस्कृत भाषा–प्रवीण-विज्ञान भास्कर-कलिमलग्रसित जीवोद्धारक द्वैताद्वैत सिद्धातके द्वारा मार्गदर्शन करा कर जीवो को अभय प्रदान कर-सन्मार्ग में चलानेवाले हैं । सभी नागरीक आप श्रीमानों का अभिनन्दनकरते हैं। हम इन्दूर(निजामाबाद) के जन समुदाय की ओरसे।

संवत २०२९ मिती आसोजशु-१३ — विनीत:

सनातन धर्म सभा निजामाबाद

२०-१०-७२ शुक्रवार — मानस मंडल निजामाबाद.

दिनांक २० अक्टूबर, १९७२ को सनातन धर्मसभा निजामाबाद (हैदराबाद) और मानसमण्डल द्वारा पूज्य आचार्यश्री को अभिनन्दन पत्र समर्पित, उसका अविकल स्वरूप।

स्वागताध्यक्षः- फोन नं० ५६ ॥ श्री हरिः ॥ कार्यालयः--- फोन नं० ७६

अखिल भारतीय धर्मसंघ विशेषाधिवेशन

स्वागत समिति

चूरू (राजस्थान)

पत्रांक............ दिनांक...15-10-72..........

परमआदरणीय,

आपकी सेवामें निवेदन है कि आचार्य श्री (अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज, पुरी) के आदेशानुसार चूरू नगर में दिनांक 9-11-72 से 16-11-72 तक विश्व कल्याणार्थ शत-होमात्मक सहस्र चण्डी महायज्ञ तथा धर्मसंघ का विशेषाधिवेशन गोरक्षादि विविध सम्मेलन करने का निर्णय लिया है। अतः इस शुभावसर पर आप श्री का पधारना परमावश्यक एवम् प्रार्थनीय है।

अतएव आचार्यश्री एवम् स्वागत समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का विशेष अनुरोध है कि आप अधिक से अधिक समय यहाँ के लिये देने की कृपा करें और अपनी स्वीकृति, पधारने की तिथि, गाड़ी तथा समय की सूचना शीघ्र भिजवाने की कृपा करें ताकि आपकी स्टेशन पर स्वागतादि की व्यवस्था की जा सके।

अनन्त श्री जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी महाराज, पुरी का विशेष आग्रह है कि आप अवश्य पधारें।

भवदीय

(आत्माराम खेमका)

स्वागत मंत्री,

अखिल भारतीय धर्मसंघ विशेषाधिवेशन स्वागत समिति, चूरू

नोट- चूरू, दिल्ली से बीकानेर तथा दिल्ली से जोधपुर के रास्ते पर प्रमुख स्टेशन है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७२ को श्रीआत्मारामजी खेमका (स्वागताध्यक्ष) द्वारा चुरू से पूज्य आचार्यश्री को भेजा गया पत्र। जिसमें सहस्रचण्डी महायज्ञ, धर्मसंघ महाधिवेशन, गोरक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रम पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में सम्पन्न होंगे। उसमें पूज्य जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज की समुपस्थिति सादर प्रार्थित है। पादार्पण की स्वीकृति भिजवाने की भी प्रार्थना है।

दूरभाष : ५६४०६७

गुरु गंगेश्वर चतुर्वेद संस्थान

गंगेश्वरधाम,
गंगेश्वरधाम मार्ग, ११ पार्क एरिया
करोलबाग, नई दिल्ली-५

GURU · GANGESHWAR CHATURVEDA SANSTHAN

संस्थापक : वेद-दर्शनाचार्य स्वामी गंगेश्वरानंद जी महाराज

मन्त्री : स्वामी गोविन्दानन्द

दिनांक २६-१०-१९७३

प्रधान केन्द्र :
- तुलसी निवास
  फ्लैट ३१, डी. रोड,
  चर्च गेट, बम्बई-२०

क्षेत्रीय केन्द्र :
- वेद मन्दिर,
  कांकरिया रोड,
  अहमदाबाद
- श्रौत मुनि निवास
  वृन्दावन (मथुरा)
- रामधाम
  त्रिं० भल्ला रोड,
  हरिद्वार
- रामधाम
  रतनचन्द रोड,
  अमृतसर
- कैलाश आश्रम
  माउण्ट आबू
- गीता भवन
  मनोरमा गंज,
  इन्दौर
- उदासीन संस्कृत
  विद्यालय
  मुहल्ला ढुण्ढिराज
  वाराणसी
- ओम् प्रकाश
  त्र्यंबक रोड,
  नासिक
- सुन्दरधाम
  राजवाला बड़ा,
  लुधियाना

समादरणीय पं. गोविन्ददास जी को सप्रेम हरिस्मरण
अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री
श्रीजी महाराज की आज्ञा से लिखित पत्र
प्राप्त हुआ
पूज्यपाद गुरुदेव वेददर्शनाचार्य महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज पुनः का-
प्रसन्न हुये पूज्यपाद गुरुदेवजी महाराज की तारीख
२-११-७३ शुक्रवार को प्रातःकाल अजमेर पहुंचेंगे आप समय
आप मिलें तो निश्चय कर लिया जाये कि श्री निम्बार्काचार्यपीठ
एवं तदनन्तर किशनगढ़ में किस समय वेद भगवान की स्थापना
हो और कृपया ४ नवम्बर ही हो सकेगा क्योंकि ५ नवम्बर को
ग्वालियर जाना है अजमेर के स्वामी कल्याणदासजी तथा
उदासीन मण्डल एवं प्रेमी पुरुषों और हमारा मण्डल की इच्छा है
व प्रार्थना है कि २ नवम्बर को अजमेर गीतामन्दिर नाला
बाजार में वेद भगवान की स्थापना के समय श्रीजी महाराज
पधारें तो स्थापना की शोभा में चार चांद लग जायेंगे
सो अवश्य पधारने की कृपा करें।

पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञानुसार
स्वामी गोविन्दानन्द वेदान्ताचार्य

दिनांक २६ अक्टूबर, १९७३ को चतुर्वेद संस्थान, गंगेश्वरधाम नई दिल्ली से स्वामी श्रीगोविन्दानन्दजी द्वारा पीठ से भेजे गये पत्र का प्रत्युत्तर एवं स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दजी महाराज का अजमेर प्रवास के समय आचार्यपीठ पादार्पण हो सकने की बात लिखी हुई है। गीता मन्दिर, नाला बाजार, अजमेर में वेद भगवान् की स्थापना के अवसर पर आचार्यश्री के पादार्पण हेतु प्रार्थना की गई है।

तार : प्रथमेश, बम्बई-२.
फोन : २००३९

॥ श्री मथुरेशो जयति ॥

१०, पंचायतवाड़ी,
बम्बई - २

प्रथमेश गो० रणछोड़ाचार्य

फोन : गोवर्धन - २४

गिरधर निवास, जतीपुरा,
मथुरा (उ. प्र.)

"श्री वल्लभनगर"
पंतद्वीप,
हरिद्वार

ता. १३-४-७४ १९६ .

सदा श्रीकृष्णः सेव्य स्वनीलयज्ञः

स्वस्ति श्री मत्सकलगुणगणाऽलंकृतेषु सौजन्य सुधासागरेषु अनन्त श्री विभूषिते श्यामश्री विभूषितेषु श्री मन्निम्बार्क - प्रभाकरेषु इतो गोस्वामि श्री रणछोड़ाचार्यस्य सादर भगवत्स्मरणम्.

अपरंच मार्गावरोध होने के कारण आने में असमर्थ हूँ. यह अत्यन्त खेद का विषय है , किन्तु परिस्थिति इस प्रकार की बन गई है जिसके कारण उपस्थित होना असम्भव है. विश्वास है आप इसे अन्यथा न समझेंगे.

श्रीमदीय
गो. रणछोड़ाचार्य

वल्लभ नगर-पंतद्वीप हरिद्वार से श्रीमद्वल्लभाचार्य गोस्वामी प्रथम श्रीरणछोडाचार्यजी महाराज द्वारा दिनांक १३ अप्रेल, १९७४ को पूज्य आचार्यश्री की सेवा में प्रेषित पत्र। जिसमें पीठ द्वारा निम्बग्राम में समायोजित कार्यक्रम में उपस्थित न हो सकने के लिए खेद प्रकट किया गया है।

श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीमन्निखिल-महीमण्डलाचार्य-चक्रचूडामणि सर्वतन्त्र स्वतंत्र द्वैताद्वैतप्रवर्तक-यतिपति
दिनेश-राजराजेन्द्रसमभ्यर्चित चरणकमल भगवन्निम्बार्काचार्य पीठ विराजित-
अनन्तानंत श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी
श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्यजी महाराज अखिल भारतीय
श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद, किशनगढ़ (राज०)
के पावन-पाद-पद्मों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

(१) हे भारतीय संस्कृति के महाप्राण विरक्त शिरोमणे,

११ वर्ष की अल्पायु में ही नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर श्रीनिम्बार्क संप्रदाय की परम्परा के अनुरूप आपश्री ने सनकादि संसेव्य श्री सर्वेश्वर प्रभु की सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर श्री निम्बार्क संप्रदाय की एकमात्र आचार्य पीठ को अलंकृत किया। इसी अल्पायु में ही वि० सं० २००१ में सूर्यग्रहण के पावन पर्व पर कुरुक्षेत्र में आयोजित सहस्र सूर्यरश्मि महायज्ञ के सन्दर्भ में अखिल भारतीय षड्दर्शन साधु सम्मेलन के गौरवपूर्ण अध्यक्ष पद को अलंकृत कर अपने महत्त्वपूर्ण भाषण से चमत्कृत कर दिया।

(२) हे आचार्यवर्य,

श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ पर विराजमान होते ही आपश्री ने इस कलियुग में सामान्य से सामान्य जनता के कल्याण के लिये भक्ति को ही परमोपयोगी मानकर संपूर्ण भारतवर्ष का अनेक बार भ्रमण किया और गाँव-गाँव में जाकर आद्याचार्य भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य के द्वारा प्रवर्तित श्रीराधामाधव की सरस भक्ति-प्रणाली का उपदेश दिया, जिससे जनता में एक अपूर्व जागृति पैदा हो गई है। आपके मार्ग निर्देशन में आज लाखों प्राणी इस कल्याण-मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बना रहे हैं।

(३) हे हिन्दू संस्कृति के संरक्षक आचार्यश्री,

अपनी अल्पायु से ही समय-समय पर आयोजित विशिष्ट-विशिष्ट धार्मिक सम्मेलनों में पधार कर आपश्री हिन्दू संस्कृति की सुरक्षा के लिये सर्वविध प्रयासों की ओर समस्त का ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं। हिन्दू संस्कृति की आधारभूत गौमाता की रक्षा के लिए आपश्री ने अनेक-अनेक कष्टों को सहन किया और कर रहे हैं।

(४) हे युग पुरुष,

वर्तमान परिस्थिति को दृष्टिपथ में रखते हुए सर्वविध समस्याओं के निराकरण के लिये आपश्री ने जो अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया है, उसका हम हृदय से स्वागत करते हैं।

(५) हे कृपामय,

अ० भा० धर्मसंघ के ३२वें अधिवेशन के उद्घाटन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये स्वीकृति प्रदान कर हम गुजराती सनातन समाज के सदस्यों पर महान् अनुग्रह किया है। आपश्री के इस अनुग्रह के लिये हम सदा आभारी रहेंगे और आपश्री के द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण करते रहेंगे।

जमशेदपुर
दिनांक—३१-१२-१९७४

हम हैं आपके कृपाकांक्षी—
वल्लभदास मोहनलाल पारीख
प्रमुख
श्री गुजराती सनातन समाज

दिनांक ३१ दिसम्बर, १९७४ को टाटा नगर जमशेदपुर (बिहार) में गुजराती सनातन समाज के प्रमुख श्री वल्लभदास-मोहनलाल पारीख द्वारा पूज्य आचार्यश्री के कर कमलों में अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया था, उसका स्वरूप।

तार : प्रथमेश, बम्बई-२.
फोन : २००३९

फोन : गोवर्धन - २४

॥ श्री मथुरेशो जयति ॥

प्रथमेश गो० रणछोड़ाचार्य

"श्री वल्लभनगर"
पंतद्वीप,
हरिद्वार

१०, पंचायतवाड़ी,
बम्बई - २

गिरधर निवास, जतीपुरा,
मथुरा (उ. प्र.)

ता. १३-४-७४ १९६

सदा श्रीकृष्णः सेव्य [illegible]

स्वस्ति श्री मत्सकलगुणगणाऽलंकृतेषु सौजन्य सुधासागरेषु अनन्त श्री विभूषिते श्यामश्री विभूषितेषु श्री मन्निम्बार्क-प्रभाकरेषु इतो गोस्वामि श्री रणछोड़ाचार्यस्य सादर भगवत्स्मरणम्.

अपरंच मार्गावरोध होने के कारण आने में असमर्थ हूं. यह अत्यन्त खेद का विषय है, किन्तु परिस्थिति इस प्रकार की बन गई है जिसके कारण उपस्थित होना असम्भव है. विश्वास है आप इसे अन्यथा न समझेंगे.

श्रीमदीय
गो. रणछोड़ाचार्य

वल्लभ नगर-पंतद्वीप हरिद्वार से श्रीमद्वल्लभाचार्य गोस्वामी प्रथम श्रीरणछोडाचार्यजी महाराज द्वारा दिनांक १३ अप्रेल, १९७४ को पूज्य आचार्यश्री की सेवा में प्रेषित पत्र। जिसमें पीठ द्वारा निम्बग्राम में समायोजित कार्यक्रम में उपस्थित न हो सकने के लिए खेद प्रकट किया गया है।

श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीमन्निखिल-महीमण्डलाचार्य-चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्र स्वतंत्र द्वैताद्वैतप्रवर्तक-यतिपति दिनेश-राजराजेन्द्रसमभ्यर्चित चरणकमल भगवन्निम्बार्काचार्य पीठ विराजित-अनन्तानंत श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्यजी महाराज अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद, किशनगढ़ (राज०) के पावन-पाद-पद्मों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

(१) हे भारतीय संस्कृति के महाप्राण विरक्त शिरोमणे,

११ वर्ष की अल्पायु में ही नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर श्रीनिम्बार्क संप्रदाय की परम्परा के अनुरूप आपश्री ने सनकादि संसेव्य श्री सर्वेश्वर प्रभु की सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर श्री निम्बार्क संप्रदाय की एकमात्र आचार्य पीठ को अलंकृत किया। इसी अल्पायु में ही वि० सं० २००१ में सूर्यग्रहण के पावन पर्व पर कुरुक्षेत्र में आयोजित महान सूर्यरश्मि महोत्सव के सन्दर्भ में अखिल भारतीय षड्दर्शन साधु सम्मेलन के गौरवपूर्ण अध्यक्ष पद को अलंकृत कर अपने महत्वपूर्ण भाषण से चमत्कृत कर दिया।

(२) हे आचार्यवर्य,

श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ पर विराजमान होते ही आपश्री ने इस कलियुग में सामान्य से सामान्य जनता के कल्याण के लिये भक्ति को ही परमोपयोगी मानकर संपूर्ण भारतवर्ष का अनेक बार भ्रमण किया और गाँव-गाँव में जाकर आद्याचार्य भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य के द्वारा प्रवर्तित श्रीराधामाधव की सरस भक्ति-प्रणाली का उपदेश दिया, जिससे जनता में एक अपूर्व जागृति पैदा हो गई है। आपके मार्ग निर्देशन में आज लाखों प्राणी इस कल्याण-मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बना रहे हैं।

(३) हे हिन्दू संस्कृति के संरक्षक आचार्यश्री,

अपनी अल्पायु से ही समय-समय पर आयोजित विशिष्ट-विशिष्ट धार्मिक सम्मेलनों में पधार कर आपश्री हिन्दू संस्कृति की सुरक्षा के लिये सर्वविध प्रयासों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं। हिन्दू संस्कृति की आधारभूत गौमाता की रक्षा के लिए आपश्री ने अनेक-अनेक कष्टों को सहन किया और कर रहे हैं।

(४) हे युग पुरुष,

वर्तमान परिस्थिति को दृष्टिपथ में रखते हुए उपस्थित समस्याओं के निराकरण के लिये आपश्री ने जो अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया है, उसका हम हृदय से स्वागत करते हैं।

(५) हे कृपामय,

अ० भा० धर्मसंघ के ३२वें अधिवेशन के उद्घाटन जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिये स्वीकृति प्रदान कर हम गुजराती सनातन समाज के सदस्यों पर महान अनुग्रह किया है। आपश्री के इस अनुग्रह के लिये हम सदा आभारी रहेंगे और आपश्री के द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण करते रहेंगे।

जमशेदपुर
दिनांक—३१-१२-१९७४

हम हैं आपके कृपाकांक्षी—
वल्लभदास मोहनलाल पारीख
प्रमुख
श्री गुजराती सनातन समाज

दिनांक ३१ दिसम्बर, १९७४ को टाटा नगर जमशेदपुर (बिहार) में गुजराती सनातन समाज के प्रमुख श्री वल्लभदास-मोहनलाल पारीख द्वारा पूज्य आचार्यश्री के कर कमलों में अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया था, उसका स्वरूप।

'विरक्त' प्रिंन्टिङ्ग प्रेस, अयोध्या जी

(स्थान :- श्री भगवदाचार्य स्मारक भवन)

पत्रांक .... दिनाङ्क २१.७.७५

समादरणीय श्री श्री जी महाराज

सादर सप्रेम दण्डवत

सेवा में विनम्र निवेदन है कि अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन सलेमाबाद (किशनगढ़) राजस्थान के कोषाध्यक्ष श्री राम स्वरूप चौधरी जी के द्वारा विरक्त पत्र के लिए प्रसाद स्वरूप स्टेट बैंक बीकानेर एण्ड जयपुर का २५० रुपये का ड्राफ्ट आया है। ड्राफ्ट नम्बर E 823395 है प्राप्त हुआ। प्राप्त ड्राफ्ट की रसीद (२५०) की इसी पत्र के साथ भेज रहे हैं। स्वीकार करेंगे।

आपात स्थिति के कारणवश प्रेसों में सरकारी मतदाता सूची छपने के कारण इधर एक डेढ़ महीने से विरक्त का प्रकाशन व्यवस्थित रूप से नहीं हो रहा है यद्यपि विरक्त प्रेस ने सरकारी कार्य को नहीं लिया फिर भी अन्य प्रेसों में यहां के कर्मचारियों के चले जाने के कारण कुछ अव्यवस्था हो ही गयी है। अगले अंक में आप की चर्चा आएगी। योग्य सेवा हो तो सदा स्मरित करते रहेंगे।

आपका

ब्र० वासुदेवाचार्य

विरक्त प्रिन्टिंग प्रेस अयोध्याजी से ब्रह्मचारी श्रीवासुदेवाचार्यजी द्वारा दिनांक २१ जुलाई, १९७५ को भेजा पत्र। जिसमें विरक्त पत्र की सहायतार्थ भेजी गई राशि २५०/- की प्राप्ति सूचना एवं रसीद के साथ कृतज्ञता व्यक्त की गयी है।

अटल बिहारी वाजपेयी
नेता, प्रतिपक्ष
लोक सभा

18/1/ने॰प्र॰/लो॰97 — 30 नवम्बर, 1997

पूज्य श्री श्रीजी महाराज,

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ था। शुभाशीर्वाद के लिए आभारी हूं। कार्यालय की भूल के कारण आपका पत्र अनुत्तरित रह गया। इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं।

मुझे आपका दर्शन प्राप्त करके और आपके द्वारा निर्धारित कार्यक्रम में उपस्थित होकर बड़ी प्रसन्नता होगी। फिलहाल तो उधर आना संभव नहीं जान पड़ता। प्रभु की इच्छा हुई तो आपके दर्शन का सौभाग्य शीघ्र ही मिलेगा।

कष्ट के लिए क्षमा, कृपा के लिए कृतज्ञ।

भवदीय,
अटल बिहारी वाजपेयी
(अटल बिहारी वाजपेयी)

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज,
सलेमाबाद - किशनगढ़,
अजमेर-305815
राजस्थान

44, संसद भवन, नई दिल्ली - 110 001 दूरभाष : 301 7470, 303 4285 (कार्यालय)
7, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली 110 011 दूरभाष : 379 4155, 301 3800 (निवास)
फैक्स : 301 6611

लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता माननीय श्रीअटलबिहारी वाजपेयी द्वारा दिनांक ३० नवम्बर, १९९७ को आचार्यश्री के पत्र का उत्तर भेजा गया। जिसमे विलम्ब के लिए क्षमा प्रार्थना की गयी है और शुभाशीर्वाद के लिए कृतज्ञता व्यक्त की गई है।

॥ श्री दयालवे नमः ॥

पूज्यपाद श्री १००८ स्वामी हरिरामजी महाराज
श्रीमद्दादूसम्प्रदायाचार्य

मुख्यपीठ—"श्रीदादूद्वारा"
मु० पो० नरायना (राज०)

क्रमांक ....

दिनांक २३ नवम्बर १९७८

श्री सर्वेश्वराय नमो नमः

परम श्रद्धास्पद अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री १००८ श्री जी महाराज की पवित्र सेवा में लिखी नरायना दादू पीठ से साम्प्रदायिक परम्परागत अभिवादन ज्ञात हो। यहां सर्वेश्वर भगवान् की असीमानुकम्पा से कुशलता है। परम पवित्र निम्बार्कपीठ की कुशलता का पूछना ही क्या जहां शरणागतवत्सल श्री राधा सर्वेश्वर भगवान् का वरदहस्त का प्रतिक्षण अवलम्बन बना हुआ है।

आगे निवेदन है कि मार्गशीर्ष कृष्णा षष्ठी मंगलवार को किशनगढ में पूज्यवर की सेवा में सर्वाधिकारी श्री भण्डारी सन्मान-दास जी तथा कामदार श्री भक्त रामजीदास जी तेला ने उपस्थित होकर जिस कार्य के लिये निवेदन किया था, उसी निमित्त पं० बालूरामजी शर्मा को सेवा में भेजा है। आज के दिन के लिये परम पूज्य ने आदेश दिया था।

समयानुसार विधिपूर्वक श्री दादू द्वारा पीठ का ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन अतिशीघ्र हो जाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। अतः इन पीठों की भविष्य व्यवस्था की आंशिक रूप से रूप रेखा अवगत करने मात्र के लिये आपके इस ट्रस्ट डीट की प्रतिलिपि की आवश्यकता समझी गई है।

अतः आदेश देकर प्रतिलिपि दिलवाने की कृपा करें। यहां योग्य सेवा से अवगत करावें। स्वभावतः पूर्वजन्मकृत पुण्य प्रभाव से हम तो हर समय सेवा संकेत की प्रतीक्षा में हैं। इसे हमारे जीवन काल का विधि विधान ही समझें।

मिती मार्गशीर्ष कृष्णा ८ मी गुरुवार

संवत् २०[illegible] दिनांक २३ नवम्बर सन् १९७८
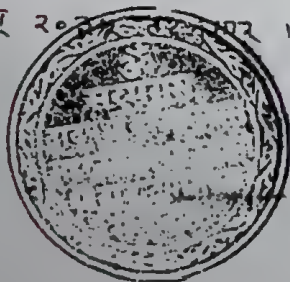
दिनांक २३ नवम्बर, १९७८ को दादूद्वारा-नरेना के पीठाचार्य स्वामी श्रीहरिरामाचार्यजी महाराज द्वारा पूज्य आचार्यश्री को श्रद्धाभाव संवलित पत्र भेजा गया। जिसमें दादूपीठ की सुव्यवस्था हेतु निर्देशन एवं निम्बार्काचार्य पीठ के ट्रस्टडीड की प्रतिलिपी चाही गई है।

मार्गों बन्द रहता है। औषधी उपचार से निदान हो जाता है

आयुर्वेद औषधी ही चल रही है। आपने लिखा कि मैं कुछ

एलोपैथी का भी सहारा लेना पड़ता है महाराज श्री बहुत

ही दयनीय आप सन्त महापुरुषों की कृपा से जागते हैं। इसी

प्रकार अपनी उपस्थिति से कृपालु समाज में बहुत वर्षों तक

बिराजे रहें यही तो मंगल कामनाओं की भावना है।

प्रणाम करने में हमसे जो प्रमाद हुआ उस अपराध

को क्षमा करें। अहैतुकी कृपा की भांति सदा प्राप्त होती

रहे। आप करुणा सागर हैं। निम्बार्कतीर्थ की पवित्रता

आप जैसे सन्तपुरुषों से और अधिक हुयी है।

ता॰ ४-५२ को यहाँ से प्रस्थान करके डीडवाना धाम

को पहुंच रहा हूँ। पत्र द्वारा कृपा पूरित होवें।

सादर

श्रीनिवास रामानुजदास

श्रीआदिसिद्ध स्थल-श्रीनागोरियामठ, श्रीजानकीनाथ मन्दिर डीडवाना (नागोर) के अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीरामानुजाचार्य स्वामी श्रीकेशवाचार्यजी महाराज की अस्वस्थावस्था में उनकी आज्ञा से युवाचार्य श्रीश्रीनिवासरामानुजदासजी द्वारा इन्दौर से पूज्य आचार्यश्री को लिखा समादर भक्तिभाव सौहार्द भरा पत्र।

--सम्पादक

॥ श्रीराघवोविजयततराम् ॥
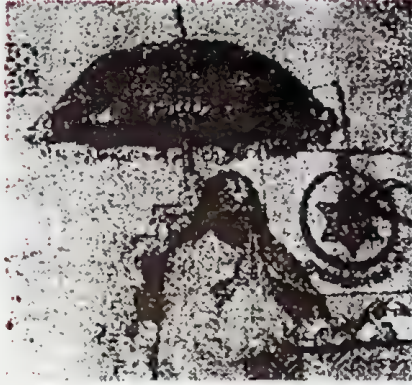
रामानन्दाचार्यो मन्दाकिनीविमलसलिलासिक्तः।
तुलसीपीठाधीश्वरदेवो जगद्गुरुर्जयति ॥

सर्वाम्नाय श्री तुलसीपीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य अनन्त श्रीसमलङ्कृत १००८ श्री रामभद्राचार्यजी महाराज

श्री तुलसीपीठ
आमोदवन
जानकीकुण्ड
श्री चित्रकूटधाम
जि०-सतना (म० प्र०)
Pin-

卐

वशिष्ठायनम्
रानीगली,
भोपतवाला
हरिद्वार (उ० प्र०)

卐

क्र. दि. २० - ४ - ८८

तडिदिन्दीवराभासो विधुकरहासो व्रजाङ्गनारासः।
वृन्दावनकृतवासो राधासर्वेश्वरो जयति ॥

विशेषं विनिवेद्यते, श्रीमद् राधासर्वेश्वर-शरणनामधेयानां श्रीसर्वेश्वरसमर्चासमार्जितभूरि-भागधेयानां श्रीजगद्गुरुनिम्बार्काचार्यमहाराजानां पुरः चित्रकूटस्थ जगद्गुरु रामानन्दाचार्यस्य भूयो भूयान् दण्डवत् प्रणिपातः।

कुशलं कुशलं कामये।

समपरीतो राजस्थानकार्यक्रमस्तत्रभवतां आचार्यैः सह न साक्षात् कृतिरभून्मदीया तत्रस्थे सिंहले स्वास्थ्यम्, आचार्यैः सुहृदां शुभकामनया स्वसाम्प्रदायिकसर्व-समर्थनपुरस्सरं श्रीचित्रकूटतुलसीपीठरामानन्दाचार्यत्वं निर्विवादमवाप्तः सन्तोषमनुबोभूये काशीपीठाय विवदन्तां नाम जनाः तत्कृते न स्पृहयालवो वयम्।

विशेषं विज्ञाप्यं यत् श्रीमदाद्यनिम्बार्काचार्याणां समग्रं साहित्यं नितरामपेक्षे विशेषतः श्रीनिम्बार्काचार्याणां प्रस्थानत्रयी भाष्यं आदेशागारेवग्रन्थ निर्दिष्टानि समग्राणि पुस्तकानि मम निमित्तं 'वशिष्ठायनम्' संकेते पुनः 'वी.पी.' माध्यमेन प्रेषयित्वा अनुगृह्णन्तु पुस्तकमूल्यधनराशेः पूर्वं निर्दिश्यतां यदि पूर्वं सः प्रेष्येत अनन्तरं पुस्तकानां प्रापणं सुलभं स्यात् द्वयोर्विकल्पयोः कतरोऽपि शीघ्रमवलम्बनीयः। वी.पी. द्वारेण पुस्तकानि प्रेषयन्तु वा उताहो निर्दिष्टपुस्तकानां

धनराशिं सूच्यन्तु यथा धनादेशमाध्यमेन सेवायां पुस्तकधनराशेः निवेद्यतां, तदनु पुस्तकानि । कार्यमेतत् शीघ्रतया सम्पादनीयम् ।

इत्यनुरुन्धे

राघवीयो

सर्वाम्नाय श्रीतुलसीपीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य
श्री रामभद्राचार्य श्री चित्रकूट धाम

र्वाम्नाय श्रीतुलसीपीठाधीश्वर श्रीमद्जगद्गुरु श्रीरामानन्दनाचार्य अनन्त श्रीसमलङ्कृत श्रीरामभद्राचार्यजी महाराज चित्रकूट) द्वारा अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराज को प्रेषित समादर क्तिभाव एवं सौहार्द भरा पत्र ।

--सम्पादक

॥ श्रीहरिः ॥

मन्त्र-संदेश—'गीता'　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　दूरभाष—८०

'मामनुस्मर युध्य च'

कल्याण

(भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और सदाचारसम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र)

पत्र-संख्या ६६६/

सम्पादकीय विभाग
पत्रालय-गीताप्रेस (गोरखपुर) २७३००५
उ० प्र० (भारत)

दिनाङ्क 12-6-80

परमपूज्य आचार्य चरण,

सादर दण्डवत प्रणाम ।

श्रीचरणोंकी सेवामें दिनांक 1-4-80के पत्र द्वारा 'कल्याण'के साधारण अंकोंके लिये आशीवर्चन (लेखबद्ध-उपदेशादि) भिजवानेके लिये प्रार्थनाकी गई थी, किंतु वे अद्यावधि प्राप्त नहीं हुये हैं, जिनकी नित्य प्रतीक्षा है ।

'कल्याण'पर सदासे ही आपका सहज स्नेह और कृपाभाव रहा है, उसी कृपा-स्नेहका सम्बल लेकर तदर्थ प्रकाशनार्थ सामयिक-महत्त्वपूर्ण लेख सामग्री भेजनेके लिये पुनः करबद्ध प्रार्थना है । आशा है, अब यथा सम्भव शीघ्र ही अपने लेख-बद्ध सारगर्भित-उपदेश भिजवाकर अनुगृहीत करेंगे । लोक-हितार्थ इस अहैतुकी कृपाके लिये हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे । पुनः सादर प्रणाम ।

विनीत-
(हस्ताक्षर)
(श्यामसुन्दर श्रोत्रिय)
उप-व्यवस्थापक

प्रतिष्ठामें—
अनन्तविभूषित जगतगुरु निम्बार्काचार्य 'श्रीजी' महाराज,
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज,
मु०पो०—सलेमाबाद ।

गीताप्रेस-गोरखपुर से श्री श्यामसुन्दरजी श्रोत्रिय द्वारा आचार्यश्री को दिनांक १२ जून, १९८० को पत्र भेजा गया, जिसमें कल्याण के साधारण अंको के लिए उपदेशात्मक लेख भिजवाने की प्रार्थना की गई है।

॥ श्रीहरिः ॥

दूरभाष—८३

मामनुस्मर युध्य च

कल्याण

(भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और सदाचारसम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र)

पत्र-संख्या 1616

सम्पादकीय विभाग
पत्रालय-गीताप्रेस (गोरखपुर) २७३००५
उ० प्र० (भारत)

दिनाङ्क 29-10-1980,

परमपूज्य आचार्य चरण,

पादपद्मोंमें साष्टाङ्ग प्रणिपात ।

श्रीचरणोंकी सेवामें 'कल्याण' के जनवरी-८१, में प्रकाशित होनेवाले विशेषांक — —' भगवत्तत्त्वांक' के लिये पूज्यचरणोंका कृपाप्रसाद (उपदेशात्मक लेख) भिजवानेकी प्रार्थना इससे पूर्व (दिनांक 3-9-80 के परिपत्र द्वारा) की जा चुकी है । विशेषाङ्कका कार्य अब आरम्भ हो गया है। परन्तु तदर्थ श्रीचरणोंका आशीर्वाद (उपदेशात्मक लेख-सामग्री आदि) अभीतक प्राप्त नहीं हुआ है। समय अब बहुत कम रह गया है ।

अतः इस पत्रद्वारा पूज्यश्रीके स्मृत्यर्थ पुनः सादर सानुरोध विनम्र प्रार्थना है कृपापूर्वक अपने व्यस्त कार्यक्रमोंमेंसे किञ्चित समय निकालकर अपना आशीर्वाद अब यथाशीघ्र भिजवानेका अनुग्रह करें । बड़ी कृपा होगी ।

विनीत,
[signature]
(उप-व्यवस्थापक)

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु,
निम्बार्काचार्य , 'श्रीजी',
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजीमहाराज,
सलेमाबाद (अजमेर) (राज०)

गीताप्रेस-गोरखपुर से श्री श्यामसुन्दरजी श्रोत्रिय द्वारा दिनांक २९ अक्टूबर, १९८० को आचार्यश्री की सेवामें पत्र भेजा गया। पत्र में ''भगवत्स्तवांक'' हेतु लेख भिजवाने की प्रार्थना की गई है।

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥
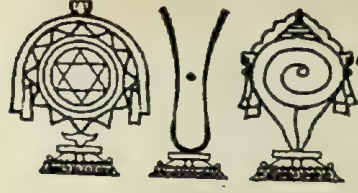
सप्तम-खण्ड

"न भूतो न भविष्यति"
(अनुपम उल्लेखनीय योगदान)

सप्तम-खण्ड

'न भूतो न भविष्यति' अनुपम उल्लेखनीय योगदान

सूचनिका

निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद के उत्कर्ष के पिछले पच्चीस वर्ष (1955-1980 ई.)

– डॉ. नारायण दत्त शर्मा

मानवजाति के सांस्कृतिक, साहित्यिक और धार्मिक उत्थान में सर्जना का सबसे अधिक योगदान रहा है, वह चाहे भौतिक हो अथवा भावात्मक। भौतिक सर्जना के आलम्बन है मठ, मंदिर, तीर्थ, स्तूप, शिलालेख, स्मृति भवन और राजभवन आदि, जो अपने भव्य भौतिक स्वरूप से जनमन में प्रगतिपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं। धर्मग्रन्थ तथा अन्य साहित्यिक-सांस्कृतिक सर्जनाएँ मानव मन के परिष्कृत करने और उन्नति पथ पर अग्रसर होने के अन्य अमोघ अस्त्र हैं। निम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद ने पिछले ढाई तीन दशकों में आशातीत उन्नति करके उस महान् संस्थान में युगान्तरकारी परिवर्तन और कायापलट द्वारा कुछ ऐसा आकर्षक रूप दिया है, जो पीठ के प्रातःस्मरणीय जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य **श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्रीजी महाराज** की सतोवृत्ति, सतत परिश्रमशीलता, प्रखण्ड सेवा-साधना और सर्वेश्वर प्रभु के निरन्तर दयादाक्षिण्य का अद्वितीय उदाहरण है।

बात ऐसी है कि मई सन् 1955 में एक शोध छात्र के रूप में मुझे इस पावन स्थली के दर्शन का महान् सौभाग्य मिला था। तब से मैं निरन्तर इस सम्प्रदाय के संपर्क में रहा और उसकी गतिविधियों का अवलोकन करता रहा, परन्तु निम्बार्काचार्य पीठ जाकर वहाँ के गौरवमय उत्थान के प्रतीक संस्थान के जीर्णोद्धार, नव निर्माण, अधीनस्थ नई संस्थाओं के जन्म और कार्यकलापों से मेरा निकट का परिचय न हो सका। अतः परम सौम्यमूर्ति सहज कृपालु और स्नेहागार श्रीजी महाराज के पूर्व आग्रह का लाभ उठाकर अब पुनः सन् 1981 में जब इधर आया तो पीठ के रूपान्तर और उसके भव्य दर्शन व रमणीयता से नितान्त चमत्कृत सा रह गया। अपने एक सप्ताह के यहाँ निवास में मैंने पीठ की आशातीत उपलब्धियों की अनुभूति की, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत है–

1. निम्बार्काचार्यपीठ एवं देवाचार्य तपःस्थली का जीर्णोद्धार तथा उसके अधीनस्थ नवनिर्माण व अन्य स्थापनाएँ।
2. शिक्षा संस्थाओं का संचालन
3. साहित्य-सर्जना
4. प्रकाशन संस्थाएँ
5. वैष्णव धर्मोत्कर्ष में योगदान
6. लोकहितैषिता और लोकमंगल के कार्य
7. साम्प्रदायिक प्रचार, संगठन और प्रचार कार्य
8. श्री श्रीजी महाराज के प्रभावशाली व्यक्तित्व का उत्तरोत्तर विकास
9. अन्यान्य कार्य

1. जीर्णोद्धार कार्य

निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) में बस से उतरते ही परकोटे की रंगत बदली देखी गई। फाटक का रूपान्तर और मंदिर के प्रवेश द्वार को पहचानना ही कठिन हो गया। द्वार की अर्द्धक्षरित सीढ़ियाँ अब मकराने के सफेद धारीदार संगमरमर से सजी हुई थीं। भीतर आँगन के चौक में बहुमूल्य पत्थरों के आकर्षक चौके सुसज्जित किये गये हैं और जगमोहन व परिक्रमा मार्ग सब कहीं संगमरमर की श्वेत धवलधारा मंदिर को एक प्रकाश पुंज सा बनाए हैं। परशुराम तपस्थली के इस जीर्णोद्धार क्रम में श्री स्वामी जी (परशुरामदेव जी) की तपस्या को नया प्रारूप, आचार्य पंचायतन की स्थापना, श्री राधामाधव जी का सुसज्जित चौक और जगमोहन, आचार्य जी का कक्ष (महल) निर्माण कुछ विशेष उपलब्धियाँ हैं। इसके अतिरिक्त पीठ के अधीनस्थ वहीं के श्री विजयगोपाल जी के मंदिर का जीर्णोद्धार, विद्युत् प्रकाश की सब कहीं व्यवस्था और कूओं पर बिजली की मशीन का फिटिंग विशेष सुविधा के कार्य हुए हैं।

पुष्कर क्षेत्र में अपना जो **'परशुराम-द्वारा'** है, उसका इस बीच एकदम कायापलट सा हो गया है। कुछ जीर्णोद्धार और कुछ नवनिर्माण से उसे अभिनव रूप मिला है। श्रीनिकुंज वृन्दावन का जीर्णोद्धार इस क्रम में एक विशेष उपलब्धि है, जहाँ के चौक का फर्श, विशाल जंगन की लोहे की टहर से आच्छादन कर सभा भवन के रूप में परिणति, आचार्य-विश्राम गृह सुसज्जित एवं अधिकारीजी के कक्ष का सुसज्जित रूप परिवर्तन, जल संरक्षण की व्यवस्था, यहाँ सब कुछ नवउन्मेष का संदेश दे रहे हैं। श्रीनिकुंज के अतिरिक्त वृन्दावन में सम्प्रदाय की अन्य कुंजों में भी जीर्णोद्धार हुआ है।

नवनिर्माण--पीठ द्वारा नवभवन निर्माण के संदर्भ में मदनगंज, किशनगढ़, राजस्थान के श्री राधा-सर्वेश्वर मंदिर का निर्माण विशेष उल्लेखनीय हैं। यह स्थान पहले टूटी फूटी अवस्था में था। मंदिर, सत्संग-भवन, विश्राम-गृह, गोसेवा कक्ष, प्रभृति सुविधाओं से युक्त यह एक अच्छा संस्थान बन गया है। पहले यहाँ सर्वेश्वर दर्शन संस्कृत महाविद्यालय चलता था, जो अब कुछ वर्षों से निम्बार्कतीर्थ में संचालित है। इसी अवधि में निम्बार्क कोट, अजमेर का निर्माण सम्प्रदाय का विशिष्ट कार्य है। निम्बार्क कोट, अजमेर, श्री सर्वेश्वर सत्संग भवन, निम्बार्क ग्रंथ माला प्रकाशन, आवास गृह, अतिथि भवन आदि विविध – साधनों से युक्त श्रेष्ठ निधि है।

श्री पुष्करराज के अंचल में झीरिया ग्राम में श्री राधागोपाल जी का मंदिर निम्बार्कपीठ सलेमाबाद अधीनस्थ एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ के मंदिर के जीर्णोद्धार और विशेष निर्माण का कार्य 3-4 वर्षों में पूर्ण हुआ है, जिसमें ठाकुर प्रतिष्ठा का कार्यक्रम बड़े समारोह पूर्वक पिछले 22 जून को आचार्यश्री के संरक्षण में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। एक जागरूक द्रष्टा के रूप में मुझे इस समारोह का आनन्द लेने का सौभाग्य मिला था।

निम्बार्क-तीर्थ सलेमाबाद में श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय और श्री निम्बार्क दर्शन विद्यालय एवं श्री राधा माधव गोशाला के नवनिर्माण इस अवधि के प्रमुख कार्य हैं। दोनों विद्यालयों के आधुनिक सुविधाओं से युक्त अध्यापन कक्ष, प्राध्यापक कक्ष, आचार्य कक्ष, कार्यालय, पुस्तकालय एवं छात्रावास का निर्माण कोई सहज कार्य नहीं। विशेष अर्थव्यवस्था, श्रम साधना, निरीक्षणक्रम और आचार्यश्री की विद्याव्यसनीय रुचि के परिणामस्वरूप ये उपलब्धियाँ हो सकी हैं। गोशाला में गौओं के आवास की विशेष व्यवस्था है।

राजस्थान सरकार के सहयोग से खातोली ग्राम के फाँटे से निम्बार्क तीर्थ तक डामर की पक्की सड़क का निर्माण इन वर्षों की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अर्जना है। सन् 1975 में सनातन धर्म सम्मेलन के महा-अधिवेशन के

सुअवसर पर प्रदेशीय सरकार ने इसके निर्माण की महती आवश्यकता का अनुभव कर उसकी पूर्ति कराई थी। सलेमाबाद में डाकघर और टेलीफोन व्यवस्था भी उसी संदर्भ के उपहार हैं।

गिरि-गोवर्द्धन भी उपत्यका में आचार्य निम्बार्क की आदि तपस्थली **निम्बग्राम** में परशुरामपुरी, सलेमाबाद निम्बार्क पीठाधीश्वर जी के संरक्षण में संचालित निम्बार्क ग्राम सेवा मण्डल ट्रस्ट द्वारा उत्स तीर्थ के भव्य निर्माण और उसके पुनरुत्थान के विवरण के बिना यह प्रसंग अधूरा ही रहेगा। सम्प्रदाय का यह सबसे महत्त्वपूर्ण आदि स्थल होने के कारण इस स्थान को विकसित करने और गौरवमय बनाने हेतु लगभग 15 वर्ष पूर्व **निम्बार्क-ग्राम-सेवा-मण्डल** नामक एक विशेष परिषद् का गठन हुआ था, जिसके तत्त्वावधान में लगभग 4 लाख रुपये की लागत से प्राचीन तपस्थली का जीर्णोद्धार मंदिर एवं विशेष कक्षों का निर्माण, कुण्ड का पुनर्निर्माण, जल प्रवाह और कृषि उद्यान सिंचन की उच्चस्तरीय व्यवस्था आदि से इस स्थल की काया पलट हो गयी है, जिसे सम्प्रदाय का महाप्रकाश कहना चाहिए। मथुरा के मुड़हाई बाजार में स्थित श्रीजी मार्केट का निर्माण भी इसी बीच हुआ है। यहाँ के परशुरामद्वारे का पुनर्निर्माण, पुष्कर क्षेत्र के अंचल में स्थित रीहा ग्राम में गोपाल मंदिर का जीर्णोद्धार, आदि कुछ नव स्थापनाएँ पूज्य महाराजश्री के विचाराधीन हैं।

2. शिक्षा संस्थाओं का संचालन

जैसा पूर्व में इंगित किया जा चुका है, निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद पीठ के आचार्य जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज संस्कृत, हिन्दी, बंगला भाषाओं के गम्भीर विद्वान्, तत्त्वान्वेषी, भारतीय संस्कृति के उन्नायक, चिन्तक और मनीषी हैं। संस्कृत भाषा साहित्य, दर्शन, वेदान्त आदि के पठन-पाठन और साहित्य सर्जना में उनकी विशेष रुचि है। देववाणी की शिक्षा-दीक्षा के हेतु वे कुछ करते-करते नहीं अघाते। उनकी इस अभिरुचि के परिणामस्वरूप पीठ की ओर से श्री सर्वेश्वर महाविद्यालय एवं श्री निम्बार्कदर्शन विद्यालय निम्बार्कतीर्थ में संचालित हुए हैं और वृन्दावनस्थ श्रीनिम्बार्क महाविद्यालय को संरक्षण एवं आर्थिक सहायता दी जाती है। उक्त संस्थाओं के संचालन हेतु इसी पच्चीस वर्ष की अवधि में नवीन भवनों का निर्माण हुआ है। सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध संस्थान हैं, जिसमें माध्यमिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के शिक्षार्थियों के लिए निशुल्क शिक्षा ही नहीं, वरन् भोजन और आवास की भी व्यवस्था है। श्री निम्बार्क दर्शन विद्यालय श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है। दोनों विद्यालयों की छात्र संख्या एक शतक के ऊपर है। संस्कृत शिक्षा की दिशा में ये नवीन और अद्भुत महाप्रयास हैं, क्योंकि यहाँ के छात्रों की विनयशीलता, अनुशासन, भारतीय संस्कृति और मर्यादा के परिपालन की दृष्टि से प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की सुखद स्मृति हो उठती है। परीक्षा परिणाम, भारतीय आदर्शों के पालन, सहज सरलतापूर्ण विद्यार्थी जीवन सभी दृष्टियों से भारत के श्रेष्ठ शिक्षा संस्थान है।

3. साहित्य-सर्जना

संस्कृत और हिन्दी साहित्य में ग्रन्थ रचना, शोध ग्रन्थ सर्जन, काव्य, जीवनचरित, आचार्य चरितावली आदि सभी क्षेत्रों में इस काल में अनेक ग्रन्थों का सर्जन हुआ। ग्रंथ रचना सर्जन के बाहुल्य के मूल में भी हमें निम्बार्काचार्य महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी का संरक्षण, उनकी प्रेरणा और उत्साहपरक प्रवृत्ति ही विशेष रूप से दिखाई देती है। महाराजश्री स्वयं श्रेष्ठ कवि, संगीतज्ञ, लेखक, कई भाषाविद्, धर्मोपदेशक एवं संस्कृत में न्याय, व्याकरण और वेदान्तादि के गम्भीर विद्वान् हैं। उन्होंने स्वयं अनेक ग्रंथ लिखे हैं, जो उनके अनुभवों और विद्वानों को साहित्य सर्जन की प्रेरणा देते हैं। इनकी ग्रंथ नामावली इस प्रकार है–

(1) आद्य श्री निम्बार्काचार्य कृत 'श्री प्रातःस्तवराज' पर **'युग्मतत्त्व प्रकाशिका'** संस्कृत टीका, (2) **पंचस्तवी,** (3) **श्री युगलगीतिका,** (4) **श्री युगल-गीतिशतकम्,** (5) **श्रीसर्वेश्वर -सुधाबिन्दु,** (6) **स्तवांजलि,** (7) **निकुंज-सौरभम्** और (8) **श्री राधामाधवशतकम्।** इनके अतिरिक्त उनके (9) **'सदुपदेशामृत'** एक बृहद ग्रंथ में संकलित और प्रकाशित हो चुके हैं। ये सभी सरस और भावपूर्ण रचनाएँ हैं।

सम्प्रदाय-विषयक शोध ग्रन्थ भी इन वर्षों में विशेष संख्या में लिखे गए और विभिन्न विश्वविद्यालयों से उन पर डाक्टरेट की 28 उपाधियाँ प्राप्त हुई। इस संदर्भ में सबसे पहला शोध प्रबन्ध **'निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण भक्त हिन्दी कवि' — डॉ. नारायण दत्त शर्मा** ने प्रस्तुत किया, जिससे प्रेरणा लेकर श्री हरिव्यास देव, परशुराम देव, रूपरसिक देव, रसिक गोविन्द, हरिदास, विहारीनिदेव, भगवत रसिक आदि पर व्यक्तित्व और कृतित्व सम्बन्धी शोध प्रबन्ध लिखे गये। **डॉ. गोपालदत्त शर्मा** ने **'स्वामी हरिदास और उनका सम्प्रदाय', डॉ. प्रेमनारायण श्रीवास्तव** ने **'द्वैताद्वैत दर्शन के परिवेश में निम्बार्क सम्प्रदाय का हिन्दी साहित्य', श्रीमती डॉ. आशा शर्मा** ने **'ब्रजभाषा काव्य में निकुंज लीला का स्वरूप'** और **श्रीमती गार्गी वर्मा** ने **'निम्बार्क सम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्त और उपासना प्रणाली का ऐतिहासिक विवेचन'** तथा **डॉ. परमानन्द शर्मा** ने **'निम्बार्क दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अनन्तश्रीविभूषित निम्बार्कपीठस्थ जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** विषयों पर गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत किये। निम्बार्क पीठ सलेमाबाद से प्रकाशित होने वाले निम्बार्क पाक्षिक के विशेषांकों के रूप में **'श्री सर्वेश्वरांक'** और **'ब्रजयात्रा विशेषांक'** दो श्रेष्ठ रचनाएँ प्रकाशित हुई। श्री अधिकारी जी पं. प्रभु – शरण वेदान्ताचार्य के सम्पादकत्व में वृन्दावन से प्रकाशित सर्वेश्वर प्रचार, भक्ति, धर्म, संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित विशेष पठनीय और मननीय साहित्य का प्रकाशन करता रहा है। उसके **निम्बार्काङ्क, राधा अंक, रसोपासना अंक, भक्त-भाषांक, ब्रजलीला अंक,** विशेषांकों में उच्चकोटि का साहित्य प्रकाश में आ सका है। परशुराम पुरी में सन् 1915 में आयोजित 'सनातन धर्म सम्मेलन' की स्मारिका और चला (जि. सीकर) में सन् 1977 में आयोजित **श्री गोपालयज्ञ** की स्मारिकाएँ भी इस उत्कर्षमय काल की विशेष उपलब्धियाँ हैं।

4. प्रकाशन संस्थाएँ

मन-मानस को अपने विचारों से प्रभावित करने का पत्र-पत्रिकाएँ सर्वप्रमुख साधन हैं। इसके अतिरिक्त अपने कार्यकलापों, विचारों, योजनाओं को सर्वसाधारण तक पहुँचाने में भी इनकी उपयोगिता सबसे अधिक है। इन्हीं बातों को दृष्टि में रखते हुए निम्बार्कतीर्थ के पीठ द्वारा सलेमाबाद से **'श्री निम्बार्क'** पाक्षिक और श्री निकुंज वृन्दावन से **श्री सर्वेश्वर मासिक** का प्रकाशन होता है। दोनों पत्रों के अपने निजी प्रेस भी हैं। सर्वेश्वर से पूर्व **'सुदर्शन'** नामक मासिक का प्रकाशन होता था, परन्तु व्यवस्था ठीक न होने से वह बंद हो गया। वि. सं. 2009 में 'सर्वेश्वर' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और सं. 2011 में सर्वेश्वर प्रेस की स्थापना हुई। इन दोनों प्रेसों से पत्रों के अतिरिक्त अनेक साम्प्रदायिक ग्रंथों का प्रकाशन भी हुआ, जो अमूल्य निधि हैं। 'निम्बार्क' पाक्षिक का निम्बार्क मुद्रणालय सलेमाबाद में ही है।

5. वैष्णव धर्मोत्कर्ष में योगदान

स्वभाव से परम धार्मिक, परम निष्ठापरक एवं दृढ़ता से अपने संकल्पों की पूतिसंपूर्ति में रत महाराज श्रीजी श्री राधासर्वेश्वरशरण जी महाराज वैष्णव धर्म के अनन्य उपासक हैं और उसके उत्कर्ष के लिए अपना

सर्वस्व समर्पित करने में संकोच नहीं करते। इसके परिणामस्वरूप वैष्णव धर्म के सभी महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों में उनका भारी योगदान रहता है। कुछ प्रमुख सम्मेलनों में उनके अध्यक्ष पद पर सभासीन होने तथा उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका निभाने के संक्षिप्त सूत्र यहाँ दिये जाते हैं–

(अ) कुरुक्षेत्र के साधु सम्मेलन में सं. 2001 वि. में जब महाराज श्री आचार्य गद्दी पर पदारूढ हुए ही थे, तब उनकी अवस्था केवल 15 वर्ष की थी। पादार्पण करके अध्यक्ष पद का संचालन किया। इस निमित्त उनकी योग्यता, लगन और निष्ठा की जनजन ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

(आ) सं. 2006 वि. में वृन्दावन कुंभ में पादार्पण करके साम्प्रदायिक आचार्यों में प्रमुख भूमिका निभाई।

(इ) सं. 2009 में कानपुर में सार्वभौम साधु मंडल में कार्तिक कृष्णा 10 को अध्यक्ष पद से शुभाशीर्वादात्मक संदेश प्रसारित किया।

(ई) इसी वर्ष माघ शुक्ल पक्ष में मल्हारगढ़ के विष्णुधाम में पादार्पण करके सदुपदेश प्रसारित किया, जिसमें भारी भीड़ थी।

(उ) चित्रकूट-भक्ति-सम्मेलन में सं. 2012 में आश्विन पूर्णिमा को सभापति पद से **'भक्ति'** पर बहुत प्रभावशाली प्रवचन दिया।

(ऊ) प्रयाग कुंभ मेले के विश्व हिन्दू परिषद् के महाअधिवेशन में सं. 2022 में **'धर्म सापेक्षता'** पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन किया।

(ए) कृष्णगढ़ रैनवाल में सं. 2030 में श्री राधिकादास जी के स्मृति महोत्सव पर आपका पादार्पण हुआ और समारोह बड़ा सफल रहा।

(ऐ) धर्म संघ के द्वारा आयोजित अधिवेशनों में आपका प्रायः पादार्पण हुआ है, जिससे उनकी बड़ी सफलता रही है। मेरठ, अकोला, हैदराबाद के सम्मेलनों में आपकी उपस्थिति विशेष शोभनीय रही।

श्री हरिव्यास देवाचार्य षष्ठ शताब्दी महोत्सवान्तर्गत सनातन धर्म सम्मेलन

अब तक आयोजित निम्बार्क सम्प्रदाय का यह सबसे बड़ा आयोजन था। इसका आयोजन निम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद में 30 मार्च से 3 अप्रेल, सन् 1975 तक हुआ। इस पंच दिवसीय बृहद् आयोजन में चारों पीठों के जगद्गुरु शंकराचार्य, चतुःसम्प्रदाय के जगद्गुरु श्री वैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्य और धर्म सम्राट् करपात्री जी, अनेक सन्त, महन्त, विद्वान्, विदुषी महिलाएँ तथा कविगण आदि पधारे थे। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरदेव जोशी, राजमाता सिन्धिया, महाराणा उदयपुर, नेपाल नरेश के प्रतिनिधि आदि राजपुरुषों के आगमन से यह सम्मेलन अपने ढंग का निराला ही था। इस सम्मेलन के अन्तर्गत सुदर्शन महायाग, वैष्णव धर्म सम्मेलन, हिन्दू संस्कृति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन और महिला सम्मेलन बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। निम्बार्कपीठ द्वारा नवनिर्मित गोशाला का उद्घाटन, 'परशुराम सागर' का विमोचन, कवि सम्मेलन आदि उसके आकर्षक कार्यक्रम थे। इस विराट् सम्मेलन के स्मृति स्वरूप विशद विवरण रूप **'सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका'** का प्रकाशन हुआ, जो एक उपयोगी ग्रंथ होते हुए आज भी निम्बार्क सम्प्रदाय की मान्यता, मान मर्यादा और प्रसिद्धि का श्रेष्ठ स्तम्भ है।

6. लोकहितैषिता और लोकमंगल के कार्य

हमारा देश भारतवर्ष अभी भी कृषि सेवी और शाकभोजी है। अतः यहाँ के देशवासियों की प्रवृत्ति सात्विकता, सरलता, परोपकार, आत्मसंयम, अपरिग्रह की ओर विशेष है। महर्षि दधीचि और महाराज शिवि

से लेकर महावीर स्वामी, गौतमबुद्ध, महात्मा गाँधी, करपात्री जी महाराज सदृश दानियों की एक शृंखला है, जिन्होंने लोकमंगल के लिए प्राणाहुति देना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझा है। गो सेवा, गोपालन, गोरक्षा धर्म की दृष्टि से ही नहीं, भारत के अर्थ विकास की दृष्टि से भी यहाँ का सबसे पावन कर्त्तव्य माना गया है। गोरक्षा हेतु इस देश में अनेकानेक प्रयास हुए हैं और आन्दोलन भी। गोरक्षा आन्दोलन में प्राणदान करना मानों देश के लिए प्राणाहुति देना ही माना गया है। निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद की ओर से श्रीजी महाराज ने स्वयं अपने दलबल सहित इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था।

(1) संवत् 2023 वि. दिल्ली के गोरक्षा आन्दोलन में अपने दल सहित स्वयं महाराजश्री पधारे थे। उनके साथ में एक बाबा कमलदास भी थे, जिन्होंने उसमें सक्रिय भाग लेकर प्राण विसर्जन किये। इस पर महाराजश्री बड़े दु:खी हुए थे तथा उनकी निष्ठा की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की थी।

(2) इसी आन्दोलन की विशेष परिस्थिति में संचालन का दिशा दर्शन महाराजश्री के हाथ रखा गया था, जिसके समुचित परामर्श हेतु श्री गोवर्द्धनपीठ पुरी में जगद्‌गुरु शंकराचार्य जी श्री निरंजनदेव तीर्थ से मिलने हेतु इन्हें पुरी जाना पड़ा था। इस पर जगद्‌गुरु शंकराचार्य ने बड़ा आभार माना था और महाराजश्री की विनयशीलता एवं कार्यतत्परता की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। इसी आन्दोलन के संचालन हेतु श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का भी परामर्श अभिधेय था। अत: महाराजश्री इस हेतु वृन्दावन भी पधारे थे। यह सन् 1988 की घटना है।

(3) इसी वर्ष ब्यावर में भी गोरक्षा सम्मेलन हुआ था, जिसमें जगद्‌गुरु शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ, श्री करपात्री जी महाराज, शारदा पीठ के शंकराचार्य जी, ज्योतिषपीठाधीश्वर शंकराचार्य श्री कृष्णबोधाचार्य जी समवेत रूप से भाग ले रहे थे। आश्विन कृष्णा 4 को इन सभी आचार्यों की शोभा यात्रा निकली। महाराजश्री श्रीराधासर्वेश्वरशरण जी विशिष्ट समादर से इस शोभायात्रा में सम्मिलित हुए थे। इसी प्रकार लोकमंगल के अन्य कार्यों में भी श्री श्रीजी महाराज का सक्रिय योगदान होता रहता है।

7. साम्प्रदायिक संगठन और प्रचार कर्म

सम्प्रदाय के संगठन और उसके प्रचार-प्रसार की दिशा में इस अवधि में बहुत प्रशंसनीय और विशाल कार्य सम्पन्न हुआ है। इसमें भी परम पूज्य श्री श्रीजी महाराज का व्यक्तित्व और उनका प्रेरणाप्रद दिशा-दर्शन ही विशेष हेतु है। इस संगठन और प्रचार कार्य की नित्य और नैमित्तिक दो विधाएँ हैं। श्री सर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा-परिचर्या-मंगला, शृंगार भोग, शयन, उत्थापन, संध्या आरती का नित्य विधान सम्प्रदाय ने सभी मंदिर और स्थानों में चलता है। समय-समय पर होने वाले पर्व, उत्सव, जयन्तियाँ और आचार्यों के पाटोत्सव दैनिक सेवा विधान के अन्तर्गत ही हैं। स्थानों के ये नित्य सेवा विधान साधक भक्तों और भक्तजनों के दैनिक अवलम्ब हैं, जो उन्हें निशिदिन प्रभुभक्ति के रज्जु में बाँधे रखते हैं और साम्प्रदायिक निष्ठा एवं सद्भाव के उत्कर्ष में विशेष निमित्त है। श्रीजी महाराज के आचार्यकाल के पिछले तीन दशकों में प्रमुख स्थानों के जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण के अनंतर परंपरा रूप में कुछ नैमित्तिक उत्सवों की संस्थापना हो गई है, जिनमें सहस्रों की संख्या में साधक जन एकत्र होकर उत्सवों को बड़े उत्साह से मनाते हैं। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** के पुण्य पर्व पर निम्बार्क पीठ सलेमाबाद में प्रत्येक वर्ष ऐतिहासिक धार्मिक बृहद् मेला लगता है, जिसमें 15-20 सहस्र तक की उपस्थिति होती है। इसी प्रकार निम्बार्क सत्संग भवन में दंगल (किशनगढ़, राज.) व श्री राधासर्वेश्वर मंदिर में **श्री राधाष्टमी** का उत्सव विशेष उल्लास से होता है। पुष्कर राज (अजमेर-पुष्कर) के

परशुरामद्वारे में **निम्बार्क जयन्ती का महोत्सव** प्रतिवर्ष अभूतपूर्व उल्लास से सम्पन्न होता है और निम्बार्क कोट अजमेर में **श्रीमद्भागवत जयन्ती** प्रत्येक वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। ब्रज के हिंडोले प्रसिद्ध हैं। वृन्दावन स्थित श्री श्रीनिकुंज वृन्दावन में श्रावण मास के उत्तरार्द्ध में श्रीजी महाराज के संरक्षण और दिशा-दर्शन में झूलनोत्सव बड़े ही उल्लास और आल्हाद के वातावरण में सम्पन्न होते हैं, जिनमें सहस्रों की संख्या में भक्तजन वृन्दावनवास करते हुए हिंडोलादर्शन, सत्संग, प्रवचन, रासलीला, रामलीला, संकीर्तन का भाव विभोर होकर आनंद लेते हैं। गो सेवा, पक्षी सेवा, मानव कल्याण के लिए विशेष अनुष्ठान, श्री निम्बार्क पीठ सलेमाबाद द्वारा संचालित स्थल-स्थानों में दैनिक सेवा के महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

पीठ की ओर से '**श्री सर्वेश्वर**' और '**श्री निम्बार्क**' का क्रमशः श्रीधाम वृन्दावन एवं सलेमाबाद से प्रकाशन होता है जिनमें साम्प्रदायिक उपासना प्रणाली, दर्शन, श्रीजी के सदुपदेश विविध साम्प्रदायिक गतिविधियाँ, शोध, उत्सव आदि के समाचार प्रकाशित होते हैं।

(1) कुम्भ मेलों में निम्बार्क-नगर निर्माण

वर्तमान श्रीजी महाराज का एक श्रेष्ठ एवं पूर्ण व्यक्तित्व है। उनके पीठ के अधिकारियों के संयोगों से सम्प्रदाय के प्रचार प्रसार और मानमर्यादा एवं लोकमान्यता में अभिवृद्धि हेतु प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन, वृन्दावन सभी पुनीत पुरियों में यथासमय सभी कार्यों में सन् 1954 ई. से निम्बार्क-नगरों की स्थापना होने लगी, जिससे सम्प्रदाय का विकासात्मक रूप निखर कर आया। भारतवर्ष के प्रत्येक कोने-कोने से संत साधक एवं भक्तजनों का आगमन, विविध पर्वों के स्नान, साधु-समागम, कथा, कीर्तन, वार्ता, सदुपदेश, रासलीला, प्रवचन आदि के द्वारा मन का परिष्कार और सतोवृत्ति का जागरण कुछ ऐसे आकर्षण हैं, जिनके लिए कुछ अवसरों पर साम्प्रदायिक नगरों के निर्माण की महती आवश्यकता है। सबसे पहले प्रयाग कुंभ से (वि. सं. 2011) निम्बार्क नगर स्थापना का सूत्रपात हुआ, जो क्रम निरंतर चला आ रहा है। वियोगी विश्वेश्वर के स्थान पर **युवराज परिषद्** इस कार्य का संचालन करती है।

(2) सप्तपुरी की तीनधाम स्पेशल ट्रेन

सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार और विकास वृद्धि के इसी क्रम में सन् 1956 वि. सं. 2013 में सम्प्रदाय के सन्त, महन्त, शिष्य, सेवक और अनुयायी वर्ग का एक विशाल दल तीन धाम सप्तपुरी स्पेशल ट्रेन द्वारा यात्रा करने हेतु भाद्रपद शुक्ला 10 को अजमेर से चल पड़ा और लौटकर मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में लौटकर श्री पुष्कर राज के स्नान के समय आ गया। यात्रा बड़ी सुखद, मनोरंजक एवं भाव-भक्तिपूर्ण हुई। गाड़ी में सभी तरह की सुविधाएँ थीं। मंगलगान, कीर्तन, कथावार्ता, सर्वेश्वर प्रभु की नित्यकालीन सेवा, स्थान और अवसर के अनुरूप प्रवचन-उपदेशादि के कार्यक्रम सब कुछ नितान्त उत्साह और आल्हादपूर्ण था। यात्रा के कार्यक्रम के समायोजन में बड़ी चतुरता का परिचय मिला, जिसके प्रभावस्वरूप श्राद्धपक्ष में यात्रा गया में, दशहरे के समय मैसूर में, शरद पूर्णिमा पर रामेश्वर में, दीपमालिका और अन्नकूट के समय बम्बई में और निम्बार्क जयन्ती के अवसर पर उदयपुर स्थल में रही और यथावसर एवं यथास्थान विभिन्न पर्व, उत्सव, त्योहारों का आनंद प्राप्त होता रहा। सर्वप्रथम आगरा में अधिकारी पं. श्री व्रजबल्लभशरण वेदान्ताचार्य ने महाराजश्री की अगवानी की और रात्रि में आगरा बाजार में पूज्य जगद्गुरु जी के सदुपदेश हुए, कृष्णगढ़ रैनवाल के महन्त श्री हरिवल्लभदास जी, पीठ के तीनों अधिकारी, श्री सुरति झा, श्री गोविन्द झा, संत स्व. श्री रंगीलीशरण वेदान्ताचार्य महाराज के परिकर में थे, संकीर्तन मंडली एवं अनेक संत महन्तों के साहचर्य से यात्रा सुखशान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई।

(3) ब्रज चौरासी कौसी पद-यात्रा

सभी धर्मशास्त्रों में ब्रज भूमि और उसके 84 कोस व्यापी तीर्थ क्षेत्रों में बड़े उत्साहपूर्वक महिमागान हुआ है। भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मभूमि एवं लीला भूमि होने के कारण उसका सर्वाधिक महत्त्व है। गिरि गोवर्द्धन, श्री यमुना तट, नन्दग्राम, बरसाना, वृन्दावन आदि वहाँ की पुनीत स्थलियाँ श्री राधाकृष्ण की ललित लीलाओं के विशेष क्षेत्र हैं, जहाँ की पावन रज के स्पर्श मात्र से जीवन सद्गति को प्राप्त होता है। फाल्गुन-चैत्र सन् 1990 में परमपूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के संरक्षण में अनेक सन्त, महन्त, भक्तजन और सेवक साधक समवेत रूप से ब्रज चोरासी कोस की पदयात्रा पर निकले, जो संख्या में तीन सहस्र से कम नहीं थे। सभी में बड़ा उल्लास, उत्साह आदि दर्शनीय था। श्री धाम वृन्दावन से नियम लेकर यात्रा प्रारम्भ हुई। स्व. अधिकारी श्री वियोगी विश्वेश्वरजी उसकी समस्त व्यवस्था के सूत्र संचालक थे। अन्य अधिकारी, महान्त श्री हरिवल्लभदास जी, स्व. श्री भीमाचार्य जी, रंगीलीशरण वेदान्ताचार्य महाराजश्री के परिकर में थे। कीर्तन, रासलीला, कथावार्ता, सदुपदेश, प्रवचन, सर्वेश्वर प्रभु की विविध त्रालीन सेवा के आनन्द भी इसमें अद्भुत समायोजन था। मार्ग में अतिवर्षा आदि के कुछेक विक्षेप भी हुए, परन्तु उन करुणामय प्रभु की परम कृपा और उनके अनुग्रह की सूचक अलौकिक घटनाओं की विशेष संख्या थी। सम्प्रदाय के संगठन और प्रचार की दृष्टि से यह एक महान् प्रयास था।

(4) निम्बार्क ग्राम सेवा मण्डल

गिरि-गोवर्द्धन की उपत्यका (तलहटी) में विद्यमान **निम्बग्राम** इस सम्प्रदाय का आदि तीर्थ है, जहाँ पर सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री आद्य निम्बार्काचार्य ने यति वेषधारी ब्रह्माजी को निम्ब वृक्ष पर सूर्य के दर्शन कराकर भोजन कराया था और इसी से उनका यह निम्बार्क नाम पड़ा था। इस पुनीत तीर्थ का प्राचीन मन्दिर बड़ा जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। उसका पुनर्निर्माण कराकर उसे आधुनिक प्रणाली से विकसित करने की महती आवश्यकता का अनुभव महाराजश्री, साम्प्रदायिक अभ्यागत पुरुष और सन्त-साधक सभी कर रहे थे। अत: अब से 14 वर्ष पूर्व जगद्गुरु महाराजश्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी की अध्यक्षता में निम्बार्क ग्राम सेवा मण्डल नामक एक विशेष परिषद् का गठन हुआ, जिसमें लगभग 4 लाख रुपये की लागत से प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया गया और नवमन्दिर भी बनाया गया। साथ ही रास मण्डल, कुण्ड, आवागमन मार्ग, जल प्रवाह, कृषि उद्यान, सिंचन आदि की उच्च स्तरीय व्यवस्था से इस स्थान की कायापलट कर दी गई। यद्यपि उस स्थान का निर्माण और अन्य कार्य अभी पूर्ण नहीं हुए हैं, फिर भी वहाँ नव जीवन का प्रकाश एक दिव्य आभा और भविष्य में विकास की किरणें सर्वथा उत्कीर्ण होती हुई दिखाई दे रही हैं। इन 25 वर्षों में निम्बार्क पीठ द्वारा होने वाले कार्यों में यह सर्वथा वरेण्य और ऐतिहासिक महत्ता का कार्य हुआ है।

(5) निम्बार्क शोध-मण्डल

निम्बार्क पीठ सलेमाबाद द्वारा संचालित यह एक शोध-संस्थान है, जिसका जन्म वि. सम्वत् 2012 में पीठ के विद्वान् अधिकारी और मनीषी श्री पं. ब्रजबल्लभ शरण जी की प्रेरणा से उन्हीं के तत्त्वावधान में वृन्दावन में हुआ। इस संस्थान का शोध-ग्रन्थ बहुल एक विशाल पुस्तकालय श्री निकुंज वृन्दावन में है, जिसमें हस्तलिखित ग्रन्थ, पुराण, श्रीमद्भागवत, आचार्य चरितावली, सामुदायिक उपासना और रस ग्रन्थ, इतिहास, पुरानी तवारीखें और पुरातत्त्व की सहस्रविधि सामग्री संगृहीत है। स्वामी हरिदास रस सागर, विविध वाणियाँ

और दर्शन उपासना के कुछ ग्रन्थों का प्रकाशन भी इस संस्थान के द्वारा हुआ है। सर्वश्री विश्वेश्वरशरण, श्री गोविन्द शर्मा, डॉ. नारायणदत्त शर्मा, डॉ. गोपालदत्त शर्मा, श्री चिरंजीलाल शास्त्री, श्री उमाशंकर दीक्षित, प्रभृति विद्वानों और पण्डितों ने इसके संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। इस संस्थान का विकास करके उसे शोधपीठ के रूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध कराने की योजना श्री 'श्रीजी' महाराज के विचाराधीन है।

८. श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रभावशाली व्यक्तित्व का उत्तरोत्तर विकास

जिस अल्पावस्था में निम्बार्क पीठ सलेमाबाद के आचार्य जगद्गुरु श्री राधासर्वेश्वरशरण जी श्रीजी महाराज का पट्टाभिषेक हुआ, उस प्रकार के पट्टाभिषेक बहुत कम ही होते हैं। परन्तु तुलसीदल और शालग्राम की महत्ता उनके आकार में नहीं, पावनता और लोकनिष्ठा में मानी गई है। प्रकार में वे चाहे कितने छोटे ही क्यों न हो। शान्त, तेजोमय, सरल, शील साधना मुख मुद्रा प्रत्येक समय प्रसन्नता का स्वभाव, गौरवर्ण, मध्यम शरीर, सहज प्रभु निष्ठा अपरिग्रह और वैराग्यमयी वृत्ति, श्री राधा-माधव के नित्यदर्शन और लड्डू गोपाल जी की सेवा में अनुराग है।

संवत् 2011 विक्रमी तक महाराजश्री का समय अपने पद की गरिमानुकूल अनुभव, अभ्यास, चिन्तन, विभिन्न घटनाचक्रों के निरीक्षण और सभी क्षेत्रों में परिपक्वता प्राप्त करने में व्यतीत हुआ। इस अवधि में उन्होंने अधिकारीगण, पुजारीवर्ग, सेवक, सहायक, सन्त-महन्त सभी से आत्मीयता प्राप्त कर ली थी और एक कुशल प्रशासक, धर्माचार्य, लोकसेवा परायण सत्पुरुष की सभी विशेषताएँ वे अर्जित कर चुके थे। उनके प्रताप-दिवाकर की दिव्य उषा की सबसे पहली झाँकी पूर्वाचार्यों द्वारा जयपुर छोड़ने के ८५ वर्ष पश्चात् आपश्री के जयपुर पदार्पण में सं. 2007 में हुई, जब भक्तवर छगनलाल मोहनलाल बजाज के प्रयास से जयपुर नगर के सहस्र विद्वद्गण स्त्री-पुरुषों का प्रार्थनापत्र महाराजश्री के पदार्पण हेतु स्वीकृति के निमित्त प्रस्तुत किया गया था। इतने लम्बे गतिरोध के अनन्तर इस प्रकार के अभूतपूर्व आयोजन की भूमिका निभाना कोई सहज कार्य नहीं था। सम्प्रदाय के संत महन्तों से परामर्श, अधिकारी गण की सहमति, जयपुर के जनजन की तीव्राकांक्षा सभी कुछ विचारणीय था। इधर एक अबोध बालक से 'जयपुर जाना चाहिये' या 'या नहीं जाना चाहिए' इसकी गोली उठवाकर भी सर्वेश्वर प्रभु के अनुकूल आदेश भी प्राप्त किया गया था। योगमाया वा. माधुरी शरणजी, अधिकारी श्री ब्रजबल्लभशरणजी, एवं नरहरिदास जी तथा श्री गोविंददास संतजी ने जयपुर की तैयारियों का निरीक्षण कर वहाँ के जन-जन की तीव्र उत्कंठा और तैयारी की हृदयस्पर्शी रिपोर्ट प्रस्तुत की तो महाराज ने उदारता से वहाँ पधारने की स्वीकृति दे दी थी।

आषाढ़ का महीना था, पुरुषोत्तम मास कृष्णपक्ष की द्वादशी आचार्यश्री का जैसे ही ट्रेन से जयपुर स्टेशन पर पधारना हुआ, सहस्रों नरनारी अगवानी हेतु प्लेटफार्म और मुसाफिरखाने में विद्यमान थे। श्री सर्वेश्वर भगवान् की जय, श्री निम्बार्काचार्य जी की जय, श्री श्रीजी महाराज राधासर्वेश्वरशरण जी की जय आदि जयजयकार की ध्वनियाँ गगनतल का स्पर्श कर रही थीं। 11 बजे शोभायात्रा निकली, जो प्रमुख बाजारों में होती हुई सायंकाल ८ बजे दांता हाउस पहुँची। एक अभूतपूर्व उत्साह, अनुपम हलचल का वातावरण था। अद्यावधि इतनी बड़ी शोभायात्रा किसी धर्माचार्य की जयपुर में नहीं निकली थी।

सं. 2000 वि. से 2010 तक का समय महाराजश्री के देशव्यापी भ्रमण और धर्मप्रचार-प्रसार की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। भ्रमण से विश्वबंधुत्व की भावना, कठिन परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता, उदारता, दया, महानता, सहज धार्मिकता और प्रभु में विश्वास आदि महती शक्तियों का विकास होता

है। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आन्ध्र, महाराष्ट्र, मैसूर, बंगाल, उड़ीसा, बिहार आदि प्रदेशों में इन धार्मिक यात्राओं के माध्यम से महाराजश्री ने देश की जनता को निम्बार्क सम्प्रदाय की सहज, सात्विक और भारतीय संस्कृति का दिव्य संदेश देकर उपकृत किया। महाराजश्री ने इस लम्बे भ्रमण काल में अनुभव किया कि सद्विचारों का आदान प्रदान ही मानव कल्याण का प्रमुख साधन है, जो पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से संभव हो सकता है। इस समय सम्प्रदाय का मुख पत्र **सुदर्शन** बड़े व्यतिक्रम के साथ चल रहा था। अत: उसके स्थान पर सं. 2009 वि. से आपने निकुंज, वृन्दावन से **'श्री सर्वेश्वर'** मासिक का श्री गणेश किया। दो वर्ष पश्चात् सं. 2011 वि. में इसका निजी प्रेस भी खरीद लिया गया। थोड़े ही दिनों में 'श्री सर्वेश्वर' की विशेष प्रसिद्धि हो गई। उसके वृन्दावनांक, भक्तमालांक, श्री राधा अंक, रसोपासना अंक आदि विशेषांकों की शोध सामग्री, धार्मिक साहित्य, साम्प्रदायिक दर्शन उपासना आदि की ऊहापोह की गम्भीर छाप विद्वानों और लेखकों पर पड़ी। उसका एक उच्च स्तर बन गया। अत: कुछ वर्षों पश्चात् **'श्री निम्बार्क '** नामक एक पाक्षिक का प्रारम्भ निम्बार्क पीठ, सलेमाबाद से किया गया और उसका भी 'निम्बार्क मुद्रणालय' एक दूसरा प्रेस चालू हो गया।

वि. सं. 2011 से अब तक श्री श्रीजी महाराज की क्षमता के पूर्ण विकास, समृद्धि एवं गौरवमय कार्यकलापों का समय है। इसका प्रारम्भ सं. 2011 में सबसे पहली बार प्रयाग कुम्भ मेले में निम्बार्क नगर की स्थापना से हुआ। सम्प्रदाय की मानमर्यादा के उत्कर्ष की दृष्टि से यह एक महान् कार्य था। दूसरे वर्ष 2012 वि. में चित्रकूट भक्ति सम्मेलन में महाराजश्री का पादार्पण एक विशेष घटना थी, जहाँ उन्होंने अध्यक्ष पद से अपना शुभाशीर्वाद प्रसारित किया था। इसके पूर्व कानपुर के सार्वभौम साधु मण्डल के विशेषाधिवेशन में भी आपका पादार्पण हो चुका था, जिसमें उ. प्र. के **मुख्यमन्त्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत**, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक **श्री गोलवलकर जी** आदि महानुभाव उपस्थित हुए। सं. 2013 में तीनधाम सप्तपुरी तीर्थयात्रा स्पेशल ट्रेन का आयोजन हुआ, सं. 2014 से 2021 तक निम्बार्क पीठ , सलेमाबाद श्री निकुंज वृन्दावन , श्री विजयगोपाल जी के मन्दिर आदि का जीर्णोद्धार कार्य एवं राधासर्वेश्वर मंदिर मदनगंज, किशनगढ़ का नवनिर्माण आदि कार्य सम्पन्न हुए। सं. 2024 वि. में निम्बार्क ग्राम सेवा मण्डल का गठन हुआ, जिसके तत्त्वावधान में बृहद धनराशि से निम्बग्राम (गोवर्द्धन) के आदि तीर्थ का नवनिर्माण और कायापलट संभव हो सका। सं. 2023 वि. के दिल्ली में आयोजित गोरक्षा आन्दोलन में महाराजश्री के द्वारा जो भूमिका निभाई गई, वह अद्वितीय थी और ब्यावर के सं. 2025 वि. के गोरक्षा सम्मेलन में आपका पादार्पण विशेष गौरवमय रहा।

सं. 2032 वि. में श्री हरिव्यासदेवाचार्य जी महाराज के शष्ठ शताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित अ. भा. विराट सनातन धर्म सम्मेलन का अभूतपूर्व आयोजन निश्चित ही महाराज श्री श्रीराधासर्वेश्वर शरण जी के जीवन के अब तक के कीर्तिमानों में से सबसे बड़ी उपलब्धि है, जिसका उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है।

महाराजश्री के इस सार्वभौम उत्कर्ष में उनके व्यक्तित्व के मेरुदण्ड कतिपय देवी गुण हैं। संगीत (गायन), प्रवचन और संभाषण में उनकी वाणी का सहज लालित्य और चमत्कार सर्वथा श्लाघनीय है। भक्त और रसिकों का पद गायन करते समय विशिष्ट भाव विभोर वे सहज श्रीजी सखी रूपा प्रतीत होते हैं–अद्भुत माधुर्य, मार्दव, अलौकिक स्वर साधना–श्रोता सर्वथा मंत्रमुग्ध से देखे जाते हैं। सायंकालीन प्रार्थना में यह क्रम विशेष मार्मिक होता है। उनकी प्रवचन क्षमता अब सिद्धि कोटि तक पहुँच चुकी है। सानुप्रासिक, ललित भाषा, कोमल वर्णों का चुनाव, सरस शैली श्रोताओं को विषय के आरोह-अवरोह से भावविभोर करने की उनमें अतीव क्षमता है। करुण प्रसंगों में कभी स्वयं भाव विभोर होकर सदन की स्थिति तक पहुँच जाते हैं और समूचा उपस्थित सहस्र जनसमुदाय भी भावावेश में निरन्तर अश्रुपात करता रहता है। उनके संभाषण में सहज

आकर्षण है। अत्यन्त स्नेहिल हृदय से सबसे मिलते हैं। प्रियदर्शन, वाणी का माधुर्य, स्वाभाविक रूप से प्रश्नोत्तर और शंका समाधान, सर्वभूत हितैषिता का चरम लक्ष्य उनका मंतव्य सभी को ग्राह्य होता है। अन्यथा इतने बृहद् कार्यकलापों में सफलता कैसे? लोक व्यवहार पटुता उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग है।

विद्याव्यसन महाराजश्री के अनेक गुणों में प्रमुख है। स्वाध्याय उनका दैनिक सतत साधन है। अतः विद्वानों का सम्मान और उनसे उनकी हार्दिक आत्मीयता रहती है। उनकी सुख-सुविधा की उन्हें सबसे अधिक चिंता रहती है। लेखन और काव्य रचना दोनों में उनकी प्रबन्ध पटुता देखी जाती है। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में 35 ग्रंथ लिखे हैं, जिनके सम्बन्ध में पूर्व में इंगित किया जा चुका है। पीठ के प्रत्येक कार्य में रुचि स्वयं सहयोग और निरीक्षण तत्परता उनकी साधना के अंग हैं। दिन में वे कभी शयन नहीं करते। विश्राम के समय शास्त्र परिशीलन, काव्य-रचना और लेखन कार्य निरन्तर चलता रहता है।

क्रोध और आवेश शून्यता श्री श्रीजी महाराज के स्वभाव के सहज अंग हैं। नौकर-चाकर अथवा सेवकों से भारी क्षति होने पर भी वे कभी क्रुद्ध नहीं होते। कठिनाई के समय क्षोभ और असंतोष न कर वे अतीव उत्साह से कार्य संलग्न होते हैं। सभी पर उनका सहज स्नेह रहता है। उनके सम्पर्क का प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि 'महाराजश्री संभवतया मुझसे अधिक स्नेह और किसी से नहीं करते, मुझ पर उनकी सबसे अधिक कृपा है।' सत्कार्यों में उनका विचित्र साहस देखा जाता है और मानव मात्र की सेवा को वे अपना परम सौभाग्य मानते हैं।

सर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक उनकी पूजा सेवा और प्रसाद स्वयं तैयार करना उनकी दैनिक चर्या का अनिवार्य अंग है। अपने प्रभु की नित्य सेवा, उत्सव समारोह करने और विविध प्राकर से लाड़ लड़ाने में अपने को धन्य मानते हैं। इस प्रकार एक निस्पृह सतोमुखी संत की कोटि में पहुँच चुके हैं, जिसकी जीवमात्र से ममता है और उनमें ही वे अपने प्रभु का दर्शन करते हैं। बालकों से उन्हें विशेष प्रेम है। उन्हें वे अपना गोपाल लाल मानते हैं।

उपसंहार

श्री निम्बार्क पीठ, सलेमाबाद के पूर्वचर्चित उत्थान की कहानी में महाराज श्री की छत्रछाया में कार्यरत हृदय से सर्वतोभावेन सहयोगी कुछ विशिष्ट पुरुषों का हाथ रहा है। **अधिकारी ब्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्यजी** उनमें सर्वप्रमुख हैं। **स्व. अधिकारी नरहरिदासजी, वियोगी विश्वेश्वरजी एवं लाडिली शरण जी का योगदान** भी कुछ कम नहीं मानते। परन्तु श्री ब्रजवल्लभशरणजी उन सबसे वरिष्ठ रहे हैं। सम्प्रदाय के भावात्मक स्वरूप का परिज्ञान, शास्त्रज्ञान, शोध, दर्शन, इतिहास, पुराण ऐसा कौन सा विषय है जिस पर उनका अधिकार नहीं। सेवा और वयोवृद्धता की दृष्टि से भी वे शीर्ष पर हैं। वा. माधुरीशरणजी निस्पृह संत रहे हैं। सम्प्रदाय की सेवा में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे अन्य परखे हुए अन्य संत साधक भी है। इन सबको इनकी सेवाओं के प्रतिफल स्वरूप उचित सार्वजनिक सम्मान मिलना चाहिये।

श्री 'श्रीजी' महाराज के द्वारा सम्पादित महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्यों की गणना करना दुष्कर कार्य है। यहां कुछ एक का उल्लेख जनसामान्य के तोषार्थ किया गया है, जो कालान्तर में उपयोगी होगा तथा इतिहास लेखन में सहयोगी होगा।

❑

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज

की

संक्षिप्त - व्रजयात्रा

श्री नवलकिशोर व्यास,
निम्बार्कतीर्थ

वि. सं. 2000 के ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन हुये और वि.सं. 2006 के फाल्गुन मास में सर्वप्रथम श्रीवृन्दावनीय कुम्भ पर आपका **श्रीधाम वृन्दावन** पधारना हुआ।

श्रीबिहारीजी के बगीचे से बैण्डवाद्य, नोबल-निशान पट्टेबाजी आदि के साथ आपकी बड़े समारोह पूर्वक पदाति शोभायात्रा श्रीधाम के मुख्य-मुख्य स्थानों में होती हुई भगवन्नाम संकीर्तन एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की जयघोष के साथ यमुना पुलिन में जहाँ शिविर लगा हुआ था, सभा स्थल (पंडाल) में पहुँच कर एक सभा के रूप में परिणत हो गई। समागत विद्वानों के प्रवचन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश श्रवण कर भावुक भक्तजन भाव विभोर हो उठे।

प्रारम्भ से कुम्भ की समाप्ति पर्यन्त श्री सर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, वैष्णव विद्वानों द्वारा श्रीगोपालमन्त्रराज के जाप, श्री गोपाल महायाग, पं. श्री गोविन्ददासजी 'सन्त' द्वारा श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण, वैष्णव (सन्त) सेवा और रात्रि में प्रतिदिन प्रवचन तथा रासलीलानुकरण यह आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर **मेवाड़मण्डलेश्वर श्री महान्त श्रीगंगादासजी महाराज** स्थलाधीश सूर्यपोल उदयपुर का भी पधारना हुआ था। एक दिन महान्तजी महाराज की ओर से बड़ी रसोई का आयोजन भी था, जिसमें चतु:सम्प्रदायी सभी वैष्णव आमन्त्रित थे। दूसरे दिन इसी प्रकार श्रीसर्वेश्वर प्रभु की ओर से बृहद् रसोई (वैष्णव सेवा) अ. भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ की ओर से सुसम्पन्न हुई। प्रतिदिन रात्रि में रासलीलानुकरण का आयोजन तो चल ही रहा था, किन्तु एक दिन **बाबा श्रीमाधुरीशरणजी, रमणरेती** के संयोजकत्व में कई एक मण्डलियों द्वारा महारास का भी बृहद् रूप में आयोजन था।

इस अवसर पर बाबा श्री माधुरीशरणजी, श्री नन्दकुमारशरणजी तथा भक्तप्रवर सेठ श्री रतनलाल जी बेरीवाले आदि कतिपय महानुभावों ने आचार्यश्री से श्री व्रज चौरासी कोसीय पद यात्रा के लिए भी निवेदन किया। एतदर्थ उसी समय जीप द्वारा आचार्यश्री ने जहाँ-जहाँ जीप पहुँच सकी, वहाँ-वहाँ के स्थलों का दर्शन एवं अवलोकनार्थ पधार कर दर्शन किये थे। साथ में महान्त श्री गंगादासजी उदयपुर, अधिकारी वियोगीविश्वेश्वरजी, श्री नन्दकुमारशरणजी, मोती बाबा आदि कई महानुभाव थे।

यही उपर्युक्त विचार कालान्तर में श्री सर्वेश्वर प्रभु की कृपा से अनेक भक्तजनों द्वारा प्रस्तावित होता हुआ वि.सं. 2026 के माघ में बृहद् रूप में फलीभूत हुआ।

❑❑❑

ब्रज चौरासी कोसीय पदयात्रा का निजानुभव

वैद्य श्री प्रज्ञावर्धन शास्त्री,
आयुर्वेदाचार्य, सेवा निवृत्त वरिष्ठ चिकित्सक,
बापूनगर, अजमेर

मेरा सर्वप्रथम वृन्दावन में सन् 1935 में पूज्य माताजी व पिताजी के साथ जाना हुआ था। वहाँ पर यमुनाजी में स्नान, बाँके बिहारी के व बड़े-बड़े मन्दिरों, कुंजों के दर्शन किए एवं रासलीलाएँ भी देखी, तब से ही मन में वृन्दावन बहुत समय तक रहने की लालसा का अंकुर पैदा हो गया। फलस्वरूप सन् 1970 में अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की महामंगलमयी परम पावन ब्रज यात्रा विवरण-पत्र पढ़कर मन मयूर नाचने लगा। क्योंकि 37 वर्षों का अंकुर आज पल्लवित होने जा रहा था। अजमेर से श्री हरिश्चन्द्रजी व्यास भी मय दम्पती इस यात्रा के लिए तैयार हो गये, इस तरह हम युगल दम्पती माघ शुक्ला 12 सं. 2027 दिनांक 17 फरवरी, 1970 को वृन्दावन पहुँच गये। बंशीवट से यात्रा प्रारम्भ होने के कारण यात्रियों के लिए केशीघाट के पास यमुनाजी में टेन्ट लगाये गये थे। हमने भी 4 व्यक्तियों की एक छोटी रावटी निवास के लिए किराये पर ले ली और आचार्यश्री की शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। माघ शुक्ला 13 को प्रात: केशीघाट, वंशीवट होते हुए यमुनाजी में यात्रा सम्बन्धी नियम लिए। वैद्य श्री हरिश्चन्द्रजी ने जो पिछले 50 वर्ष से विजया (भाँग) बहुत सेवन करते थे, आजन्म भाँग नहीं पीने की यहाँ प्रतिज्ञा की और इस प्रतिज्ञा को वे आज तक पूर्ण रूप से निभा रहे हैं।

माघ शुक्ला 14 को संघ के साथ हरिकीर्तन करते हुए वृन्दावन की परिक्रमा कर रात्री में विश्राम किया और प्रात: सर्वेश्वर की मंगला व शृंगार आरती के बाद तुलसी प्रसाद प्राप्त कर यात्रा प्रारम्भ की। सबसे आगे सर्वेश्वर प्रभु का झण्डा, पीछे ढोलकिये, झाँझें, करताल आदि अनेक वाद्यों की ध्वनि के साथ-साथ पूज्य आचार्य चरणों के पीछे सन्त, महन्त व भक्तगण 'गोविन्द हरे गोपाल हरे सर्वेश्वर दीनदयाल हरे' की गगनभेदी ध्वनि से हरकीर्तन करते हुए नाचते, गाते तालियाँ बजाते लम्बी-लम्बी कतार से चलने लगे। इन्द्र देव तो पहले दिन ही दामिनी गर्जना के साथ पधारे तथा पूरी यात्रा तक साथ ही रहे।

वसन्त ऋतु होने से गेहूँ के खेत लहलहाते हुए बहुत ही सुहावने लगते थे, कहीं-कहीं तो सरसों के खेत थे, जो इतने सुन्दर दिखाई पड़ते थे मानों जमीन पर पीले रंग की विशाल चादर ही बिछा दी गई है। बीच-बीच में तीर्थस्थलियाँ भी आती, वहाँ का माहात्म्य भी प्रवचनों के द्वारा सभी को सुनाते थे। कहीं-कहीं कुण्ड़ों, सरोवरों में स्नान करते तो कहीं आचमन-मार्जन ही करते। फिर आगे बढ़ते हुए 11/12 बजे तक ठहरने के स्थान पर पहुँच जाते। यात्रियों का सामान भी बैलगाड़ियों, चौकीदारी के साथ सुरक्षित रूप से निश्चित समय पर आगे विश्राम स्थल पर तैयार मिलता था। विश्राम स्थल पर राबटिये पहले दिन ही नम्बरवार लगा दी जाती

थी तथा गैसों की जगमगाती रोशनी में एक अच्छा सुन्दर व्यवस्थित नगर सा विश्राम स्थल हो जाता था। रात्री में सुरक्षा के लिए कड़े पहरे की सुव्यवस्था थी। रात भर कई चौकीदार एक से दूसरे तक 'राधेश्याम' के नाम से एक-दूसरे को सचेत करते थे। विश्राम स्थल पर परचूनी, खाद्यसामग्री एवं हलवाई की दुकानें भी लगती थी। जिनमें दूध, दही, मिठाई, पूड़ी, साग भी मिलते थे, सब्जी की दुकानें भी साथ रहती थी, जिनमें सब्जी, फल-फ्रूट आदि उचित मूल्य पर मिलते थे। दूध के लिए गायें, भैंसे भी साथ चलती थी, जिससे ताजा दूध भी उचित मूल्य पर मिल जाता था। एक दातव्य औषधालय, श्री सर्वेश्वर बैंक तथा डाकघर भी साथ चलता था, जिसका सुचारु प्रबन्ध था। एक विशाल पण्डाल भी बनता था, जिसके पास ही आचार्यश्री भी बिराजते थे एवं वही पर पास ही सर्वेश्वर प्रभु का मन्दिर भी होता था।

प्रातः 4.00 बजे मंगला गायन, स्तुति संकीर्तन आदि ध्वनिविस्तारक यन्त्र (माइक) पर शुरू हो जाते। श्री सर्वेश्वर प्रभु की मंगला आरती के अनन्तर ध्वनि विस्तारक यन्त्र पर सर्वेश्वर प्रभु के अभिषेक का विद्वानों द्वारा वेदोच्चारण बड़ा ही चित्ताकर्षक एवं श्रोत्राभिराम लगता था, इसके बाद श्रृंगार आरती, चरणामृत प्रसाद लेकर सर्वेश्वर प्रभु के साथ पूज्य आचार्यश्री भक्तजनों सहित गन्तव्य स्थान के लिए प्रस्थान करते तथा विश्राम स्थल पर श्री सर्वेश्वर प्रभु का 'राजभोग' होता, सन्तों की पंगत लगती, भक्तगण भी अपने अपने टेण्टों में भोजन बनाकर प्रसाद पाते थे। मध्यान्ह में लगभग दो बजे स्वामी जी श्री गोपालदासजी ब्रजभाषा में श्रीमद्भागवत की कथा करते थे। वहाँ पर औषधियाँ लेकर वैद्यराज भी बैठ जाते थे, जिनको आवश्यकता होती औषधियाँ बिना मूल्य दे देते थे।

कथा के बाद विद्वानों व सन्तों के प्रवचन होते थे, आचार्यश्री के आशीर्वादोपरान्त सभा विसर्जित होते होते सायंकाल हो जाता था और इस तरह प्रभु की सायंकालीन आरती होती तथा सन्तों, विद्वानों, भक्तजनों के साथ स्तुति, आचार्यश्री की वन्दना के बाद आचार्यश्री द्वारा संकीर्तन होता था, संकीर्तन के बाद ही मण्डप में स्थान-स्थान से सम्बन्धित लीलानुकरण (रासलीला) रात्रि के ग्यारह बजे तक होती थी। इस प्रकार प्रतिदिन का व्यस्त कार्यक्रम रहता था।

श्री वृन्दावनधाम में तीन दिन रुककर मानसरोवर में स्नान मार्जनादि कर रात्रि में विश्राम किया तथा अगले दिन आनन्ददेवी के दर्शन कर बन्दीग्राम में विश्राम किया।

बन्दीग्राम के बाद दाऊजी पहुँचे, वहाँ स्कूल के मैदान में बनाये गये नगर में विश्राम किया तथा वहाँ पर क्षीर सागर में स्नान, मार्जन, आचमनादि कर दाऊजी के मन्दिर में दर्शन किए, तथा मिश्री का प्रसाद चढ़ाया। दाऊजी में दूध, रबड़ी की बहुत सी दुकानें हैं, जहाँ खूब दूध, दही, रबड़ी, सस्ती व स्वादिष्ट मिलती है।

दाऊजी से महावन होते हुए पुरानी गोकुल गये, जहाँ मन्दिरों के दर्शन किये, चौरासी खम्भे, आँवल-बन्धन, द्वारकाधीश के दर्शन करते हुए यमुनाजी के ब्रह्माण्ड घाट पर सभी ने स्नान किया, जहाँ भगवान् श्यामसुन्दर ने मिट्टी खाई थी, इस मिट्टी का बड़ा माहात्म्य होने से सभी भक्तों ने मृत्तिका भक्षण किया, आगे रमणरेती में पहुँचे, जहाँ परम शान्ति का अनुभव हुआ। वहाँ दाऊजी का मन्दिर है, गऊशाला है, जिसमें बहुत सारी गायें रहती हैं, गऊओं की बहुत सुन्दर सेवा व्यवस्था है, कच्ची बाऊण्ड्री है, जिसके आस-पास कच्चे

सुन्दर छप्पर बने हुए हैं, जिनमें लकड़ी के पट्टे रखे हुए हैं, जिन पर साधक, सन्त साधना करते हैं, एक भोजनशाला है, जिसका बहुत उत्तम प्रबन्ध हैं। गऊशाला के दूध का मट्ठा (छाछ) बनाते हैं। एक-एक गिलास सब साधकों को सुबह पिलाते हैं तथा घृत को भोजनशाला में भोजन बनाने के काम में लेते हैं। वहाँ पर सन्तों का प्रवचन हुआ। आचार्यश्री ने भी स्थान की रज के माहात्म्य पर सदुपदेश दिया। नई गोकुल, लोहबन में लोह बिहारीजी के दर्शन करते हुए नावों पर बैठकर यमुना पार करते हुए मथुरा में यात्रीगण पहुँच गये। मथुरा में श्री नारदटीला, ध्रुवटीला, सप्तर्षि, बलिटीला, विश्रान्त घाट, बाराह, द्वारकाधीश, पद्मनाभ, दीर्घविष्णु, मथुरादेवी होते हुए भूतेश्वर में विश्राम किया तथा अपराह्न में श्रीकृष्ण जन्मभूमि के दर्शन किए।

मथुरा से रवाना होकर मधुवन, ध्रुवजी, दाऊजी, कृष्ण-कुण्ड होते हुए तालवन में पहुँचे, वहाँ बलभद्र कुण्ड में स्नान किया और मन्दिरों में भगवान् के दर्शन किये। शान्तवन, कुमुदवन, कुमुदकुण्ड आदि में मार्जन-स्नानादि कर कुमुदबिहारी, शान्त्वनुबिहारीजी के दर्शन किए। बहुलावन में वकुलबिहारी व गोदर्शन कुण्ड आदि होते हुए बहुलावन में विश्राम किया। प्रातः किलोलकुण्ड के लिए रवाना होकर राधा-कुण्ड, ललिताकुण्ड, ललित-बिहारी दर्शन, कृष्णकुण्ड, कुसुमसरोवर, नारद कुण्ड, किलोलबिहारीजी के दर्शन कर रात्रि में विश्राम किया। गोवर्धन में आकर किलोलकुण्ड में 3 दिन विश्राम किया, वहाँ मानसी गङ्गा में स्नान किया, श्री गोवर्धन का कच्चे दुग्ध से अभिषेक कराया तथा पत्र-पुष्पादि से पूजन किया एवं आचार्यश्री ने छप्पन भोग कराया। शिवरात्रि का दिन होने से हमारे आयुर्वेदाध्ययन के साथी वैद्य श्री रामेश्वरजी ने किलोल कुण्ड पर हमें शिवजी का पूजन कराया। दो दिन में गोवर्धन की परिक्रमा की। गमनावता चन्द्रसरोवर में स्नान किया, पैठापूँछरी होते हुए जतीपुरा पहुँचे। वहाँ पर गोवर्धन मुखारविन्द स्वरूप का दुग्धाभिषेक से पूजन किया, दानघाटी होते हुए निम्बगाँव में पहुँचे। वहाँ निम्बार्कभगवान् के दर्शन, सुदर्शन कुण्ड में आचमन किया एवं वहाँ रात्रि विश्राम किया। कुण्ड जीर्ण था, अतः कुण्ड की मरम्मत एवं मकान वाटिका आदि से सुन्दर बनाने के लिए भक्त-जनों की मीटिंग हुई, दाता भक्तों के दान से कुछ द्रव्य एकत्रित हुआ, जिससे मरम्मत व अन्य भवन बनकर निम्बगाँव के मन्दिर का बाहरी भाग बड़ा सुन्दर देखने योग्य बन गया है। रात्रि में विश्राम कर डीग में पहुँच कर विश्राम किया, यह अच्छा शहर है। मन्दिर भी अच्छे-अच्छे हैं, जिनके दर्शन किए तथा वहाँ के दर्शनीय जल-महल भी देखे। दूसरे दिन डीग से सेऊ होते हुए परमदरा पहुँचे, वहाँ से अलीपुर पहुँचे, जहाँ अलखगङ्गा में स्नान-मार्जन किया। कामा में तीन दिन तक विश्राम किया, यहाँ पर प्रथम दिन बूढ़े बद्री, केदार-नाथ होते हुए कामवन, विमलकुण्ड, राधाकुण्ड, गोपालजी, जशोदाकुण्ड, लंका प्रलंका, शेषवन, रामेश्वर, लुकसुककुण्ड, चरणपहाड़ी, देवीकुण्ड, गयाकुण्ड, काशी, प्रयाग, चौरासी खम्भे, मदनमोहनजी, गोविन्दजी, गोपीनाथजी, राधावल्लभजी, गोकुलचन्दजी, मदनमोहनजी के दर्शन किये। दूसरे दिन गरुड़, सूरज, सीतल श्रीकुण्ड, फिसलनी शिला, कोमासुर गुफा, भोजनथाली, पद्म कर्म कुण्ड, चन्द्रभागा, कामेश्वर, पाँचों पाण्डव, पाँचों तीर्थ आदि देखे।

कदमखण्ड़ी होते हुए वहाँ के दर्शनीय स्थलों को देखते हुए बरसाना पहुँचे। पीलीपोखर हमारा विश्राम स्थल बना, वहाँ विशाल कुण्ड है। इसके चारों तरफ पक्के बड़े सुन्दर घाट बने हुए हैं। पहाड़ी पर श्रीराधारानी के दो विशाल मन्दिर हैं, जो जयपुर महाराजा द्वारा बनाये हुऐ हैं। हमने पहाड़ी सहित बरसाना की परिक्रमा की।

परिक्रमा में सांकरी खोर एवं मोरकुटी पहुँचे। रास्ते में कई विद्वानों, सन्तों का साथ होता रहा, ज्ञान व वेदान्त की चर्चा व उपदेश होते रहते थे। स्वामी वेदान्त केसरी रङ्गीलीशरणजी के साथ इस मोरकुटी में पहुँचे, वहाँ कई सन्त साधक रहते हैं। वे श्री रङ्गीलीशरण जी के परिचित भक्तों में थे, वहाँ विश्राम किया तथा वहाँ के सन्तों ने हमें भी गुड़ चने का बहुत सा प्रसाद दिया। उस दिन वहाँ होली खेली जा रही थी। हमारे विश्राम स्थल पर भी रासविहारीजी का होली महोत्सव हुआ व रासानुकरणकारियों ने एवं अन्य भक्त (स्त्री-पुरुषों) ने श्वेत वस्त्र पहने, केसरिया गुलाबी रङ्ग के कड़ाव भरे गये। श्यामाश्याम पिचकारियों से रंग डालकर आनन्दित हुए, युगल-सरकार ने यात्रियों पर भी रंग डालकर आह्लादित हो रस वर्षा की। बरसाना के राधारानी के मन्दिर से नन्दगाँव गये, वहाँ पर पाँवरी, मोतीकुण्ड, कदम, उमसेश्वर, कृष्णकुण्ड, उद्धवक्यारी आदि के दर्शन कर नन्दगाँव की परिक्रमा देने गये तो रास्ते में एक छोटा तालाब आया, मार्जन आचमन किया, हाऊ-खाऊ की दर्शनीय मूर्तियाँ देखी, जो बालपन में कृष्ण को डराने के लिए बनाते थे।

बरसाना नन्दगाँव की होली बड़ी विचित्रता से वहाँ की जनता खेलती है। बरसाना वाले नन्दगाँव में होली खेलने आते हैं, नन्दगाँव वाले बरसाना जाते हैं। एक-दूसरे को निमन्त्रण देकर बुलाते हैं। हमने दोनों स्थानों की होली देखी। कृष्ण मन्दिर पहाड़ी के ऊपर है, पहाड़ी का आकार शिखराकार है। मन्दिर का जगमोहन विशाल हॉल है। उसमें पदों, रसियों आदि के अच्छे गायक बैठकर गाते, बजाते, नाचते आनन्दविभोर हो रहे थे। वहाँ से करहला, पिपासा होते हुए चरणपहाड़ल बठैन गाँव में विश्राम किया। बठैन से कोकिलावन होते हुए कोटवन विश्राम किया, वहाँ पांडवगङ्गा, जलघड़ा कृष्णकुण्ड, सूर्यकुण्ड, रामलक्ष्मण आदि के दर्शन किये। क्षीर सागर (चमेली वन) होते हुए शेषशायी में विश्राम किया। चन्दन वन होते हुए फोरेन पहुँचकर विश्राम किया। यह होली का दिन था। वहाँ की होली बड़ी चमत्कृत होती है। गाँव में प्रह्लाद कुण्ड है, उसके पास ही प्रह्लाद जी का मन्दिर है। कहते हैं कि वहाँ का पुजारी होली के एक माह पूर्व से केवल दूध पीकर नृसिंह भगवान् का जप करता है। पुजारी को होली के दिन एक रूमाल पहने प्रह्लादकुण्ड में स्नान करके केवल एक छोटा गीला रूमाल सिर पर डाल कर जलती हुई होलिका में से बड़ी शान्तिपूर्वक साधारण गति से अग्नि के बीच में से होते हुए निकलते देखा। गाँव वालों ने बताया कि यहाँ पर हर वर्ष इसी भाँति होली मनाई जाती है।

फोरेन की होली का उत्सव देखते हुए पैगाम में विश्राम किया। पैगाम में प्रिया कुण्ड में स्नान मार्जन किया, प्रेमबिहारीजी तथा चतुर्भुजजी के दर्शन किये, वहाँ पर नागाजी के जन्म स्थान के दर्शन भी किए।

पैगाम से रवाना होकर शेरगढ़ पहुँचे, वहाँ दाऊजी का फूलडोल उत्सव देखा तथा दर्शन किये। शेरगढ़ से चीरघाट पहुँचे एवं विश्राम किया, दाऊजी के दर्शन जमुनाजी का स्नान, कदम्ब के दर्शनों के आनन्द लिए, जहाँ पर श्रीकृष्ण ने गोपियों का चीरहरण किया था। चीरघाट से उत्सवन पहुँचकर विश्राम किया। वहाँ पर नन्दघाट के दर्शन, मार्जन, नन्दजी के दर्शन, वत्सविहारीजी के दर्शन, महाप्रभु के दर्शन किये। वत्सवन से रवाना होकर श्याम वन, भाण्डीरवन–भाण्डीरवन में ही श्री राधाजी का श्रीकृष्ण के साथ विवाह हुआ था। यह प्रकरण गर्ग संहिता में है। भाण्डीरवन से होते हुए माँट में विश्राम किया, माँट से बेलवन होते हुए सत्यनारायणजी के दर्शन करते हुए वृन्दावन पहुँचकर चौरासी कोस की यात्रा सम्पन्न की।

इस यात्रा में जिन-जिन गाँवों से हम यात्री गुजरते थे, रास्ते में ब्रजवासी हम लोगों को देखकर बड़े प्रसन्न होते, जंगल में मिलते तो कहीं गन्ना, गन्ने का रस, कहीं चणे के छोले, कहीं-कहीं पर मठ्ठा भी मनुहार कर करके पिलाते थे, जबकि इस यात्रा में लगभग तीन हजार यात्री थे। गाँव में जब आचार्यश्री प्रवेश करते तो गाँव में तोरण द्वारों से, पताकायें लगाते, बाजों सहित ब्रज-वनिताएँ कलश लेकर गाती नाचती हुई अगवानी करती। जहाँ विश्राम होता वहाँ दिन में पण्डाल में गाँव की ब्रजबालायें व ब्रजाङ्गनाएँ महिला यात्रियों के साथ गायन में तथा नृत्य में प्रतियोगिताएँ (कम्पीटीशन) करती। यात्रीगण यह सब कुछ देखकर अपने जीवन को धन्य मानते।

ब्रजवासी तन-मन से यात्रियों की सेवा करते थे। पीपरवारा ग्राम में खारा पानी होने के कारण ब्रजवासी जनों ने काफी दूर से गाड़ियों द्वारा पानी ला कर यात्रियों की सेवा की, जो अविस्मरणीय है।

हम सब यात्री श्री सर्वेश्वर प्रभु से बारम्बार यही प्रार्थना करते हैं कि प्रभु हमें ऐसा स्वर्णावसर पुनः दे कि हम सब फिर से अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, अध्यक्ष अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राजस्थान) के तत्त्वावधान में इस प्रकार की यात्रा कर अपने जन्म को सफल बनावें।

× × ×

ब्रजयात्रा के समय एक चमत्कारपूर्ण घटना

राजस्थान प्रान्त अजमेर-पुष्पकरराज के समीप कड़ेल नामक ग्राम के ठाकुर श्री भूरसिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती श्री ठकुरानी साहिबा भी इस ब्रजयात्रा के साथ चल रही थी। एक दिन एक विश्राम स्थल पर उनको रात्रि में ज्वर हो गया था। थकान एवं ज्वर की परेशानी के कारण सवेरे देरी से जगना हुआ। किसी ने उनको आवाज भी नहीं दी। यात्रा वहाँ से प्रस्थान कर लगभग 3-4 मील आगे चल दी थी, तब वे जागी और घबराहट में वे उधर ही जाने लगी, जिस और यात्रा गई थी, पर यात्री तो बहुत दूर निकल चुकी थी। पश्चात्ताप करने लगी और व्याकुल होकर भगवान् श्री कृष्ण का ध्यान करने लगी। इतने ही में एक छोटा सा बालक घुंघराले केश, श्यामवर्ण, मधुर मुस्कान, पास में आकर कहने लगा-ओ! माताजी, क्या आप पीछे रह गई, देखो यात्रा वहां जाए है, आवो मैं बताऊँ। बालक क्षणभर में ही उनको यात्रा के पास छोड़ कर न जाने कहाँ गायब हो गया। यह घटना ठकुरानी जी ने कई यात्रियों को सुनाई। अब भी यह प्रत्यक्ष चमत्कार है कि भगवान् अपने भक्तों पर कृपा कर उन्हें मार्गदर्शन करा देते हैं।

सम्पादक

अखिल भारतीय विराट् सनातन-धर्म सम्मेलन सन् 1975 ई.

जनार्दन शर्मा, एडवोकेट,
भू.पू. अध्यक्ष, नगरपालिका, पुष्कर

किशनगढ़ के निकटवर्ती ग्राम सलेमाबाद में **30 मार्च से 3 अप्रैल, 1975 तक पञ्च दिवसीय अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन** सम्पन्न हुआ। कई दृष्टियों से राजस्थान में यह एक अभूतपूर्व धार्मिक आयोजन रहा। यह प्रथम अवसर था, जबकि एक ही मंच पर अखिल भारतीय स्तर के विविध सम्प्रदायों के धर्माचार्य एकत्रित हुये। **पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी, बदरिकाश्रम के ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्रीस्वरूपानन्द जी** के अलावा **स्वामी श्रीनन्दनन्दनानन्दजी सरस्वती वाराणसी, महन्त श्री वैष्णवदासजी रायपुर (मध्य प्रदेश), दादूपंथाचार्य नरेना, रामस्नेही श्रीथल महान्त श्रीदासरथिदासजी दतिया, स्वामी श्री शिवानन्दजी चूरू, गोस्वामीश्री ब्रजभूषणलाल जी जामनगर, बाबा श्याममनोहरलाल जी बम्बई, गोस्वामी श्री रणछोड़ाचार्य जी प्रथमेश कोटा, रामानुजाचार्य श्री केशवाचार्य जी एवं श्रीधराचार्य जी, बालक-स्वामी घनश्यामाचार्यजी पुष्कर एवं डीडवाना स्वामी श्री करपात्रीजी, मेवाड़ मण्डलेश्वर महान्त श्री मुरलीमनोहरशरण जी** प्रभृति के साथ-साथ विभिन्न पीठों के लगभग 500 महान्त तथा सहस्रों ही सन्त जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री **'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी** महाराज के आह्वान पर उपस्थित हुये थे। विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल नरेश के शाही प्रतिनिधि वहाँ के नायब बड़ा गुरु अपने दल बल के साथ आये थे। **महाराणा श्रीभगबतसिंह जी** उदयपुर, **राजमाता विजयाराजे सिन्धिया, मुख्यमंत्री राजस्थान** के अलावा वाराणसी, कानपुर, हैदराबाद, दिल्ली आदि से अनेक संस्कृत विद्वान् आचार्य, प्राध्यापक एवं विदुषी महिलायें भी सम्मेलन में उपस्थित थीं।

सलेमाबाद में गत 30 मार्च को 30 वर्ष पूर्व की प्रेरणा को मूर्त्त रूप मिला था। विक्रम सं. 2001 में कुरुक्षेत्र में **सूर्यसहस्र रश्मियज्ञ** के अवसर पर आयोजित सनातन धर्म सम्मेलन की अध्यक्षता 15 वर्ष की आयु में वर्तमान निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने की थी, तब तत्कालीन पुरी के शंकराचार्य **श्री भारतीकृष्ण तीर्थजी महाराज** ने इच्छा प्रकट की कि आगामी अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन निम्बार्काचार्यपीठ में आयोजित करें। 'श्रीजी'महाराज की 30 वर्षीय सुदीर्घ, धैर्य पूर्ण श्रमसाधना की सम्पूर्ति का गौरव सलेमाबाद को मिला और यह छोटा सा ग्राम अखिल भारतीय नक्शे पर उभर कर आगे आया। यह भी सकारण है। सलेमाबाद या (परशुराम पुरी) प्रायः 500 वर्ष पूर्व निम्बार्काचार्य श्री परशुराम देवाचार्यजी ने यहाँ आकर (पुष्करारण्य क्षेत्र में) मुस्लिम ओलिया मस्तिंगशाह के अत्याचारी आचरण का अन्त करके उसे अपना शिष्य बनाया था व अन्य राजपूत सरदारों को भी त्राण दिया था, तब स्थायी रूप से उन्होंने अपने गुरु **श्री हरिव्यासदेवाचार्यजी** की प्रेरणा से **अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ की यहाँ स्थापना की थी**। यह अवसर भी अनुकूल था, **उन्हीं श्री हरिव्यास देवाचार्यजी का छठा शताब्दी समारोह।**

पाँच दिवसीय अत्यन्त व्यस्त आयोजन में उद्घाटन समारोह के अलावा वैष्णव सम्मेलन, स्वामी करपात्रीजी का रास पंचाध्यायी पर प्रवचन, धर्म निरपेक्षता पर विद्वद् गोष्ठी, संस्कृति सम्मेलन, शिक्षा संगोष्ठी, गोरक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, धर्म संघ अधिवेशन, सुदर्शन महायज्ञ, रासलीलानुकरण, होलिकोत्सव एवं षड्दर्शन पर प्रवचनादि की धूम मची रही। डॉ. रामप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित शोध ग्रन्थ का भी समर्पण कार्यक्रम हुआ।

30 मार्च को प्रात:कालीन सूर्य रश्मियाँ सलेमाबाद के अरण्यवन की शीतल मंद पवन से अठखेलियाँ कर रही थी, जब इस सुविस्तृत वन में बने बृहद् पांडाल के, भारतीय संस्कृति की गरिमा के अनुकूल निर्मित भव्य मंच पर, वैदिक रीति से काशी, मथुरा आदि के पण्डितों ने मंगलचरण एवं 'ऊँ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः' (हम कानों से कल्याणकारी वचन सुनें) की मधुर प्रार्थना के पश्चात् **बाबा माधुरीशरण** एवं **भागीरथ भराड़िया** (स्वागताध्यक्ष) तथा स्वागत मंत्री **रामकरण बाहेती** ने मुख्य अतिथि **राज्य के मुख्य मंत्री श्री हरिदेव जोशी** एवं धर्माचार्यों को माल्यार्पण तथा भावपूर्ण शब्दों से स्वागत सुमन समर्पित किये थे।

पं. रामगोपाल शास्त्री ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपालों, धर्माचार्यों एवं नेताओं का सन्देश वाचन किया। नेपाल नरेश का सन्देश वाचन एवं उसका अनुवाद करते हुए त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल) के विद्वान् **आचार्यश्री खेमराज केशवशरण शास्त्री** ने नरेश की ओर से आशा प्रकट की कि "विश्व मानव में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के लिए हिन्दू धर्म में निहित सार तत्त्वों को प्रसारित करने के उद्देश्य में सम्मेलन सफल होगा।" तभी वृन्दावन मथुरा के प्रख्यात संगीतकार कथा प्रवक्ता पं. श्यामसुन्दरजी शर्मा के मधुर पद की संगीत वारिधि ने सबको मंत्रमुग्ध किया। 50,000 जनता एवं धर्म गुरुओं द्वारा सम्मेलन में धर्म के तत्त्व समझने व समझाने का अनुरोध करते हुए मेवाड़ मण्डलेश्वर **महान्त मुरलीमनोहरशरणजी** द्वारा **मुख्यमंत्री** से उद्घाटन का आग्रह करने पर उन्होंने कहा–"भारतीय धर्म, संस्कृति और चिन्तन के कारण ही हम विश्व में गर्व करके खड़े हैं। धर्म और संस्कृति केवल विचार-विमर्श और उपदेश की वस्तु नहीं, यह आचरण की वस्तु है। यह सम्मेलन इस दिशा में पग उठायेगा, यही मेरी कामना है।"

पुरी शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म की व्यापकता एवं आचरण की व्याख्या करते हुए बताया कि "मानवता के सभी लक्षणों एवं भेदभाव के बिना सबके साथ समान बर्ताव करने वाला धर्म ही हिन्दू धर्म है। इसने धन्ना जाट, नन्दा नाई, सजना कसाई, चेता चमार, पिंगला वैश्या, चाँद बीबी और रसखान को ही नहीं पशु, पक्षी भूत, प्रेत, गन्धर्व, किन्नर को भी कल्याण का मार्ग बताया है।"

प्रात: काल विश्व हिताय पंच दिवसीय सुदर्शन महायज्ञ तथा दोपहर में रासलीलानुकरण के पश्चात् तीसरे पहर 4 बजे **'धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में धर्म की रक्षा'** विषयक विद्वत् परिषद् में स्वामी करपात्रीजी ने देश में निरपेक्ष यानी अभाव शून्य अर्थात् धर्म शून्य, अधार्मिक अथवा आध्यात्मिकता शून्य शासन के कारण पतनावस्था बताते हुये, धर्म सापेक्ष पक्षपात विहीन राष्ट्र की आवश्यकता प्रतिपादित की। ब्यावर के विधिवेत्ता **पं. ब्रजमोहनलाल शर्मा** ने धर्म निरपेक्ष भारत में शासकों द्वारा 'गीत क्रियान्वयन' करने के विरुद्ध धर्माचार्यों को मिशनरी की भाँति जनता में सेवा व जनमत जागृत करने का अनुरोध किया। **गोस्वामी श्याममनोहरलाल जी** ने कहा कि धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में धर्माचरण या धर्म निरपेक्ष भारत में धर्म रक्षा, ये दो प्रश्न हैं। बहुसंख्यक हिन्दू राष्ट्र भारत में धर्म की रक्षा पर विचार होना ही विचारणीय है। 'श्रीजी' महाराज ने धर्मयुक्त राष्ट्र पर बल दिया। **प्रो. ब्रजलता अग्रवाल** ने इसे अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग बताते हुये कहा कि भारत में धर्म निरपेक्षता को राजनीतिज्ञ भिन्न-भिन्न मुखौटा पहिनाकर स्वार्थ सिद्धि व साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाते हैं।

हिन्दू-संस्कृति-सम्मेलन

31 मार्च को प्रात: यज्ञ, रासपञ्चाध्यायी एवं रासलीला के पश्चात् सायं 4.00 बजे **मेवाड़ महाराणा भगवतसिंह** की अध्यक्षता में हुए हिन्दू संस्कृति सम्मेलन में पुरी शंकराचार्य ने हिन्दू संस्कृति की सम्यक् व्याख्या करते हुए कहा कि हमारे ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों से दैनिक किये जाने वाले कर्म-सुकर्म ही संस्कृति हैं। कर्म अलंकृत भूषण युक्त एवं सुपवित्र हों अन्यथा संस्कृति में नहीं आते और दुष्कृत दानवी होते हैं। मेवाड़ महाराणा ने धर्म-गुरुओं से अनुरोध किया कि संस्कृति की रक्षार्थ वे सक्रिय हों।

शिक्षा सम्मेलन

1 अप्रैल को अपराह्न में हुये शिक्षा सम्मेलन ने 4.00 बजे से आरम्भ होकर 6.00 बजे से अधिक समय तक विभिन्न विद्वानों व धर्माचार्यों की समुपस्थिति से, उच्चस्तरीय शिक्षा संगोष्ठी का स्वरूप ग्रहण कर लिया था। निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के सभापतित्व में सम्पन्न गोष्ठी में पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य ने कहा कि जीव को शिव और आत्मा को परमात्मा बनाने वाली शिक्षा होनी चाहिये। नरेना के दादूपन्थी आचार्यश्री ने आज की धर्महीन शिक्षा द्वारा मानव के आसुरीकरण पर क्षोभ प्रकट किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपाल) के प्राध्यापक पं. श्री खेमराज केशवशरण ने गीता, उपनिषदादि धर्म-ग्रन्थों के आधार पर शिक्षा देने पर बल देते हुए बताया कि पश्चिम को भी 'उपनिषद' ने आलोक दिया है। सर्व श्री विश्वनाथ शास्त्री, (हैदराबाद) डॉ. वासुदेव चतुर्वेदी, (मथुरा) पं. दयाशंकर शास्त्री, (ब्यावर) पं. दिवाकर शास्त्री, (कानपुर) प्रो. चन्द्रकान्त दवे, ब्रजमोहन शर्मा, पो. ब्रजलता अग्रवाल, डॉ. रामप्रसाद शर्मा, (किशनगढ़) पं. बालचन्द शास्त्री, हिन्दू नेता रामनाथ कालिया, महन्त मुरलीमनोहरशरण आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए शासन मुक्त, सदाचार युक्त-शिक्षा देने व छात्र-छात्रों की समस्या समझकर समन्वय करने पर बल दिया था।

मुख्य अतिथि सांसद विश्वेश्वरनाथ भार्गव ने सनातन धर्मी जनता को धर्म का आचरण करने को कहा, जिससे शिक्षा का स्तर सुधरेगा। श्रीजी महाराज ने दिव्य शिक्षा और दिव्य जीवन का परस्पर सम्बन्ध बताया था।

गोरक्षा सम्मेलन

सरकार द्वारा गौ हत्या पर एक वर्ष की अवधि में प्रतिबन्ध लगाने वाला कानून न बनाने की दशा में अहिंसात्मक, धर्मयुद्ध (सत्याग्रह) की घोषणा दिनांक 2 अप्रैल को श्री रामेश्वरलाल धम्माणी की अध्यक्षता में सम्पन्न गोरक्षा सम्मेलन के प्रस्ताव में की गई। अ.भा. धर्म संघ के मन्त्री बिहारीलाल टांटिया ने श्री नन्दनन्दनानन्द सरस्वती के संयोजकत्व में महाअभियान समिति की घोषणा की। पुरी शंकराचार्य, करपात्रीजी व श्रीजी महाराज एवं ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री स्वरूपानन्द जी ने प्रस्ताव को आशीर्वाद प्रदान किया और गाय के राष्ट्रीय व सामाजिक महत्त्व की व्याख्या की। इस अवसर पर स्वागत समिति की ओर से मन्त्री श्री रामकरण बाहेती ने स्वामी करपात्रीजी का अभिनन्दन किया तथा भविष्य में 'श्रीजी' महाराज ने सलेमाबाद को (पौराणिक नाम) 'निम्बार्क तीर्थ' नाम से सम्बोधित करने की घोषणा की थी।

सुदर्शन महायज्ञ व महिला सम्मेलन

दिनांक 3 अप्रैल को मध्याह्न में श्रीजी महाराज, पुरी शंकराचार्य एवं बदरिकाश्रम के शंकराचार्यजी द्वारा 'यजमानों' सर्व श्री बंकटलाल बाहेती, माँगीलाल वाल्दी, भीमकरण छापरवाल, कुन्दनलाल भाटिया, राजाराम बियानी, केदारमल मून्दड़ा, भागीरथ तापड़िया, धरणीधर छापरवाल, शंकरलाल राठी, माणकचन्द भाँगड़िया,

रतनलाल राठी, पुरुषोत्तम दायमा, रामजीवन बाहेती को आशीर्वाद देकर पाँच दिवसीय सुदर्शन महायज्ञ का समापन किया। गोविन्ददासजी 'सन्त' ने यज्ञ की यथेष्ट संयोजना की। प्रातःकाल षड्दर्शन गोष्ठी में विभिन्न सम्प्रदायों के शीर्षस्थ आचार्यों ने अपने-अपने धर्म तत्त्वों की विवेचना की थी। अपराह्न में ग्वालियर की राजमाता सिंधिया ने 'महिला सम्मेलन' की अध्यक्षता करते हुए धर्म-निरपेक्ष शासन के बदले 'शासन निरपेक्ष धर्म' की वकालत की तथा धर्म-रक्षार्थ नारी शक्ति में जागृति व एकता की आवश्यकता पर बल दिया। हरियाणा की चित्रादेवी एवं प्रो. ब्रजलता अग्रवाल ने भी नारी शक्ति को कुरीतियों से लड़ने की अपील की।

समापन

महिला सम्मेलन से पूर्व प्रतिदिन की भाँति रासलीला हुई तथा रात्रि में सम्मेलन का समारोह पूर्वक समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्यों के आशीर्वाद तथा स्वागत समिति की ओर से निम्बार्काचार्य पीठ के प्रधान अधिकारी सर्वश्री वियोगीविश्वेश्वरजी, ब्रजबल्लभशरणजी व अन्य विद्वानों का अभिनन्दन किया गया था।

❊ ❊ ❊

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म-सम्मेलन में घटित

कुछ आश्चर्य-जनक घटनायें

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म-सम्मेलन दिनांक 29 मार्च से 3 अप्रैल 1975 ई. तक अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में सानन्द सम्पन्न हुआ। इन पाँच दिनों में लगभग 5-6 लाख से भी अधिक जनता का आवागमन रहा। कुम्भ मेले के सदृश ही यह आयोजन था। प्रायः इतने विशाल समुदाय के एक स्थान पर एकत्रित होने पर कुछ न कुछ अप्रिय घटनाओं की आशंका रहती ही है। यह श्रीसर्वेश्वर प्रभु का एक दैविक चमत्कार या महापुरुषों के पादार्पण का ही प्रभाव था कि उस समय यहाँ पर जेब कटी, चोरी, लड़ाई झगड़े आदि की एक भी अप्रिय घटना घटित नहीं हुई, राम-राज्य का सा शान्त वातावरण बना रहा। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर अन्य कई आश्यचर्यजनक घटनायें भी हुईं, जिनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

व्यवस्थायें

सम्मेलन में भोजन, यातायात,आवास, विद्युत्, पानी का प्रशंसनीय प्रबन्ध था। आस्थावान् जन यही कहते थे, '**व्यवस्था बहुत अच्छी है।**' इस कारण ही यहाँ पाँच दिनों में पाँच-छह लाख से अधिक यात्री आ गये। दिल्ली के भक्त **कुन्दनलाल भाटिया** ने विद्युत्सज्जा द्वारा इस छोटे से ग्राम को जगमगाता शहर बना दिया। सैंकड़ों आवास टेन्टों का निर्माण एक दर्शनीय आयोजन था। पाँच दिवसीय शान्ति-पूर्ण समारोह में उप-अधीक्षक पुलिस, **श्री गोदिका** ने सुरक्षा व्यवस्था सुन्दर रखी। समिति के स्वयं सेवक भी तैनात थे। आस्था

का कुम्भ-मेला तो लग गया, किन्तु जनता में, आस्था के साथ आचरण और धर्माचार्यों में संस्कृति की रक्षार्थ सक्रियता कितनी तीव्र होगी, यह समय बतायेगा।

सम्मेलन के पूर्व दिनांक 27 मार्च को जब पाण्डाल का निर्माण हो रहा था, तब बड़ी जोर की आँधी आयी, वायु के प्रबल वेग से ऊपर का शामियाना फट गया। वह बिल्कुल नया था। पाण्डाल निर्माण कर्त्ताओं को निराशा होने लगी कि इस प्रकार का तूफान यदि सम्मेलन के दिनों में आ गया तो बड़ी अव्यवस्था हो जावेगी। उन्होंने आचार्यश्री से आकर निवेदन किया। आचार्यश्री ने मुस्कराते हुए कहा–**'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'** 'यह सब तो पहिले पहिले ही है, सम्मेलन के दिनों में कुछ नहीं होगा।' वास्तव में हुआ भी वैसा ही। सम्मेलन के पाँच दिनों में शान्तिपूर्वक सारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ व दो दिन बाद पुनः आँधी का प्रकोप हुआ। आंचार्यश्री के मुखारविन्द से जो कुछ कहा गया था, वह सर्वान्तर्यामी श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रेरणा ही तो थी।

× × ×

श्रीसर्वेश्वर कुण्ड के पास की बावड़ी में बिजली की मोटर लगी हुई है। खेती के दिनों में तीन-चार घण्टे मोटर चलाने पर इस बावड़ी का जल कम हो जाता था और फिर 4-5 घण्टा मोटर बन्द रखने पर ही पुनः जल एकत्रित होता था। किन्तु सम्मेलन के दिनों में यही बावड़ी रात-दिन मोटर चलते रहने पर भी बराबर जल देती रही। बाद में बावड़ी के जल का क्रम पूर्ववत् हो गया। अब भी बावड़ी का जल तीन-चार घटे मोटर चलने पर उसी प्रकार कम हो जाता है। यह आश्चर्य-जनक घटना भी सर्वशक्तिमान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु प्रेरित एक दैविक चमत्कार ही था।

× × ×

सम्मेलन में आये हुए पत्रकारों ने अन्त में आरक्षी पुलिस विभाग से सम्मेलन सम्बन्धी घटित दुर्घटनाओं की जब प्रकाशनार्थ रिपोर्ट माँगी, तब पुलिस विभाग ने बताया कि इतने बड़े भारी सम्मेलन में जहाँ छह-सात लाख लोगों का यातायात था, मोटरों पर मोटरें दौड़ रही थीं, वहाँ न कोई किसी प्रकार का एक्सीडेण्ट हुआ और न कहीं किसी प्रकार का झगड़ा ही हुआ। न किसी की जेब कटी, न किसी के यहाँ चोरी ही हुई और न कोई अप्रिय घटना की कोई रिपोर्ट ही हमारे पास आई। हमने तो यहाँ रामराज्य ही देखा। उनका यह कथन सर्वथा ठीक ही था। श्रीसर्वेश्वर प्रभु जहाँ स्वयं विराजमान हों, वहाँ रामराज्य की कल्पना होना स्वाभाविक ही है।

× × ×

तम्बू, डेरा, रावटियों में खाने-पीने का सामान यों ही खुला पड़ा रहता था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि सम्मेलन के इन पाँच दिनों में यहाँ कुत्ता, बिल्ली आदि भी कहीं नजर नहीं आये।

सम्मेलन में आये हुए सज्जनों का कहना था कि इन पाँच दिनों में हमने तो यहाँ किसी भिखारी (भीख माँगने वाले) को भी नहीं देखा, जबकि सम्मेलन के बाद में बहुत भिखारी आये और प्रसाद लेकर चले गये।

× × ×

सत्संग में प्राय: जहाँ-तहाँ दो-चार हजार व्यक्तियों के एकत्रित होने पर ही शोर-गुल मच जाता है, वहाँ एक दैविक शक्ति का ही चमत्कार था कि पचास-साठ हजार के जन-संख्या वाले विशाल पण्डाल में बैठे हुए श्रोताओं ने तथा उसके आस-पास बैठे हुए श्रद्धालु सज्जनों ने बिना शोर गुल के शान्त वातावरण में पाँच दिनों तक धर्माचार्यों के सदुपदेशों का लाभ लिया।

× × ×

सम्मेलन में जलीय व्यवस्था हेतु बाहर से आये टेंकर, ट्रकों द्वारा दूर-दूर से जल लाया जा रहा था। एक दिन की बात है कि किशनगढ़ से जल लाने के लिए एक टेंकर टूट गया और लौट कर जब वापिस आ रहा था तब खातोली के आगे पुलिया पर से अकस्मात् नीचे उथल कर औंधा होता हुआ तत्काल पुन: उसी स्थान पर स्थित हो गया। इस आश्चर्यमयी घटना को देखकर ट्रक चालक भी महान् आश्चर्यान्वित होकर प्रभु में निष्ठा रखते हुए पूर्ण आस्थावान् बन गया।

× × ×

सम्मेलन में सभी समितियों के कार्यकर्त्तागण तन-मन से जिस उत्साह पूर्वक दौड़-दौड़ कर सेवायें कर रहे थे, वह अनुकरणीय एवं परम सराहनीय थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानों श्रीसर्वेश्वर प्रभु ही सबके घट-घट में बिराजमान होकर व्यवस्था में लगे हुए हों और ये सब तो केवल निमित्त-मात्र हों।

× × ×

यह कुछ दैवी घटनायें उन सर्वशक्तिमान् श्री सर्वेश्वर प्रभु का ही खेल था, वे ही घट-घट में विराजमान होकर **'कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्'** के रूप में सम्मेलन में सब प्रकार की स्वयं ही सुव्यवस्था करवा रहे थे।

❑

योजना का प्रारूप

परमाराध्य अनन्तश्रीविभूषित, जगद्गुरु, श्री निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर **श्री श्रीजी श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज** के पावन मानस में यह विचार प्रादुर्भूत हुआ–

''श्री निम्बार्क सम्प्रदाय पाँच हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। इसका दर्शन अविरोधी है। इसके स्वाभाविक द्वैताद्वैत दर्शन में परस्पर विरुद्ध भी समस्त श्रुतियों का सुन्दर समन्वय हो जाता है। दार्शनिक सभी तत्त्व वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिकों के परीक्षण में वे अब भी सही उतर रहे हैं। संस्कृत वाङ्मय में इस सम्प्रदाय का पुष्कल साहित्य सुलभ है। वेद मूलक होने से 'अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय' की आख्या का गौरव इसे प्राप्त है। विद्वद्वर्ग तथा भक्त वर्ग–ये दोनों ही इसके साहित्य की सुरक्षा व प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। यदि इन्हें प्रोत्साहन मिलता रहे तो अपेक्षा से अधिक मात्रा में साहित्य-सेवा सम्पन्न हो सकती है।''

''जो विद्वान् इस सम्प्रदाय के अनुकूल साहित्य सर्जन करते हैं, प्राचीन साहित्य की गवेषणा, शोध-समीक्षा व उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हैं, उपदेश आदि द्वारा इसका प्रचार-प्रसार करते हैं, तथा निष्ठापूर्वक पुरश्चरणादि विभिन्न साधनाओं में संलग्न रहते हैं, उन्हें आचार्यपीठ की ओर से सम्मानित करना चाहिये।''

पूज्यपाद आचार्यश्री की इस पुनीत विचारधारा की विद्वत्समिति ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। भक्तवर्ग भी सम्प्रदाय के हित में इसे सक्रिय करने के लिए सोत्साह प्रवृत्त हुआ।

अर्थ-व्यवस्था

उदारमना भक्तप्रवर **श्रीमान् रामकरण जी बाहेती** एवं **श्री ब्रजमोहन जी छापरवाल** ने स्वर्गीय **श्रीमती सरजू बाई जी** की पावन स्मृति में इस पुनीत कार्य की अर्थव्यवस्था को अपने हाथ में लिया। नित्य निकुंज लीला के सहचरी परिकर में प्रविष्ट **श्रीमती सरयू बाई जी (धर्मपत्नी श्री माँगीलाल जी छापरवाल)** की पावन स्मृति में उक्त व्यय वहन करने के लिए ये उद्यत हुये।

श्री रामकरण बंकटलाल बाहेती, कडेल तथा **श्री ब्रजमोहन गिरिधर गोपाल छापरवाल कुचामनसिटी** के सम्मिलित आर्थिक योगदान से उक्त योजना के सम्पूर्ण व्यय का भार वहन करने का निर्णय लिया गया।

सम्मान का स्वरूप

प्रारम्भ में सम्मानित विद्वान् को 2000/-अक्षरे दो हजार रुपये मात्र एक शाल व अलंकरण उपाधि-पत्र आचार्यश्री के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया। अब 5000/-अक्षरे पाँच हजार व एक शाल, धातु की

स्वर्णमण्डित निम्बार्काचार्य पीठ की मुद्रा, अलंकरण, उपाधिपत्र **'श्रीनिम्बार्क भूषण'** पूज्य आचार्यश्री के हस्ताक्षरयुक्त आचार्यश्री के कर कमलों द्वारा प्रदान किया जाता है।

सम्मान की उपाधि

सम्मानित होने वाले विद्वान् को **'श्री निम्बार्क भूषण'** की उपाधि से विभूषित किया जाता है तथा उपाधि का उल्लेख प्रमाण-पत्र में किया जाता है।

सम्मान की प्रक्रिया

1. यह सम्मान समारोह प्रतिवर्ष **श्री कृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव** के शुभावसर पर किया जाता है।
2. जन्माष्टमी के सन्निकटवर्ती यदि कोई मास अधिक हो और उमसें विद्वत्सम्मेलन आदि विशिष्ट आयोजन किया जावे तो यह सम्मान समारोह अधिक मास में भी किया जा सकता है।
3. प्रतिवर्ष कम से कम **दो विद्वानों** का सम्मान किये जाने का ध्येय है।
4. कभी-कभी विशेष परिस्थिति में दो से अधिक विद्वानों का भी सम्मान किया जा सकता है।
5. निर्णय के अनुसार सम्मान समारोह का शुभारम्भ **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सम्वत् 2042 वि.** से किया जा रहा है।

प्रथम सम्मान में विद्वानों का चयन

1. अ.भा. श्री निम्बाकाचार्य पीठ के **अधिकारी श्री ब्रजवल्लभ शरण जी वेदान्ताचार्य,** पंचतीर्थ वयोवृद्ध एवं मूर्धन्य विद्वान् हैं। अनेक ग्रन्थों के अनुसंधान, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन आदि द्वारा सम्प्रदाय की आपने पर्याप्त सेवा की है, अतः आपका ही प्रथम सम्मान होना चाहिये।
2. अ.भा. श्री निम्बाकाचार्य पीठ के **प्रचार मन्त्री श्री पं. गोविन्ददास जी 'सन्त'** ने श्री निम्बार्क साहित्य की ग्रन्थ प्रकाशनादि व प्रवचनादि द्वारा प्रचुर मात्रा में सेवा सम्पन्न की है, अतः श्री 'सन्त' जी का भी श्री अधिकारीजी के साथ ही सम्मान किया जाना चाहिये।
3. शैक्षणिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने व बालकों को आचार सम्पन्न विद्वान् बनाने की दृष्टि से सर्वप्रथम श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय का शुभारम्भ किया गया था। उस समय इसके सर्वप्रथम अध्यापक वयोवृद्ध महात्मा योगविशारद **महन्त श्री ब्रजबिहारी शरण जी** (सुपटा) का बनाया था, अतः इनका भी सम्मान इसी वर्ष करना चाहिये।

विद्वत्सम्मान योजना का प्रारूप व उल्लिखित निर्णय स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज के पाटोत्सव के शुभावसर पर शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण 5 शुक्रवार सम्वत् 2041 वि. तदनुसार 17 अगस्त, 1984 ई. को किया गया। अन्त में जय ध्वनि के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

श्री चरणों की आज्ञा से,
विनीत,
रामगोपाल शास्त्री
(शिक्षामन्त्री)

'निम्बार्क-भूषण'

प्रथम सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, चन्द्रवार संवत् 2041
तदनुसार दिनांक 20 अगस्त, 1984 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

सम्मानित विद्वान्

1. अधिकारी श्री ब्रजवल्लभशरण जी, वेन्दान्ताचार्य, पंचतीर्थ, अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
2. श्री पं. गोविन्ददास जी 'सन्त', प्रचार मंत्री, अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ
3. महन्त श्री ब्रजबिहारीशरण जी (सुपटा)

द्वितीय वर्षीय विद्वत् सम्मान समारोह

शुभ मिति द्वितीय श्रावण कृष्ण एकादशी, चन्द्रवार सम्वत् 2042
तदनुसार दिनांक 12 अगस्त, 1985 ई.
(श्री पुरुषोत्तम-मासीय विद्वत्सम्मेलन)

सम्मानित विद्वान्

4. बाबा श्री शुकदेवदास जी सङ्गीताचार्य, निम्बार्कपुरम्, श्री वृन्दावन धाम, पो. देवल्या (जिला जयपुर)
5. श्री पं. वैद्यनाथ जी झा, न्याय-व्याकरण, वेदान्ताचार्य, प्राचार्य, श्री निम्बार्क महाविद्यालय, श्री वृन्दावनधाम

तृतीय वर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण नवमी, गुरुवार सम्वत् 2043
तदनुसार दिनांक 28 अगस्त, 1986 ई.

(श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

सम्मानित विद्वान्

6. श्री रामगोपाल शास्त्री, साहित्य-धर्मशास्त्राचार्य, शिक्षाशास्त्री, शिक्षा मंत्री, अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ, पुरानी बस्ती, जयपुर।
7. पं. श्री बदरी प्रसाद जी शास्त्री, व्याकरणाचार्य, मु.पो. पपूरना, जिला झुन्झुनु वाया खेतड़ी (राज.)
8. पं. श्री मुरलीधर जी शास्त्री, बरसाना (प्रेम सरोवर) जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)

चतुर्थ वर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण नवमी, चन्द्रवार सम्वत् 2044

तदनुसार दिनांक 17 अगस्त, 1987 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

सम्मानित विद्वान्

9. पं. श्री नत्थीलाल जी 'भागवत भूषण' श्री वृन्दावन धाम (मथुरा) उत्तरप्रदेश
10. डॉ. श्री नारायणदत्त जी शर्मा, सेवानिवृत्त प्राचार्य, जवाहर इण्टर कॉलेज, मथुरा (उत्तरप्रदेश)
11. महामण्डलेश्वर श्रीब्रजबिहारीशरण जी 'राजीव', महामन्त्री, अ.भा. श्री निम्बार्क महासभा, प्र. सम्पादक, 'श्री भक्ति भागीरथी', अहमदाबाद

पंचम-वर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, शनिवार सम्वत् 2045

तदनुसार दिनांक 3 सितम्बर सन् 1988 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

सम्मानित विद्वान्

12. प्रिंसिपल पं. श्रीकृष्ण शरण जी आचार्य 'विमल', वेदान्ताचार्य, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड., सम्पादक श्री भक्ति भागरथी, अहमदाबाद
13. डॉ. श्री वासुदेव कृष्ण जी चतुर्वेदी, सप्ताचार्य, पी-एच.डी., डी. लिट्., प्र. सम्पादक, ब्रज गन्धा गतश्रमटीला, मथुरा, उत्तरप्रदेश
14. श्री पं. वासुदेवशरण जी उपाध्याय, व्याकरण-साहित्य-वेदान्त-आचार्य, प्राचार्य श्री सर्वेश्वर संस्कृत महविद्यालय, अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ, मूल निवास–मु. टिकुलीगढ़ ग्राम (टिकुलीगढ ग्राम पंचायत) पो. भलवारी जिला रूपन्देही लुम्बिनी अञ्चल प्रदेश (नेपाल)

षष्ठ वर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, गुरुवार सम्वत् 2046

तदनुसार दिनाक 24 अगस्त, सन् 1989 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

सम्मानित विद्वान्

15. पं. श्री दयाशंकर जी शास्त्री, साहित्याचार्य, सेवानिवृत्त प्राचार्य, श्री सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय, ब्यावर। मूल निवास–शास्त्री सदन (गीता भवन के सामने), नेहरु नगर, ब्यावर, जिला अजमेर (राजस्थान)

16. पं. हरिशरण जी शास्त्री, उपाध्याय, व्याकरण-वेदान्त-आचार्य, दर्शन-विभागाध्यक्ष, श्री निम्बार्क महाविद्यालय, श्री वृन्दावनधाम, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश) मूल निवास–आदर्श ग्राम पंचायत, गैंडाकोट-2, जि. नवल परासी, लुम्बिनी अंचल प्रदेश (नेपाल)
17. डॉ. श्री रामप्रसाद जी शर्मा, एम.ए., पी-एच.डी., प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़। मूल निवास–शिवाजी नगर, मदनगंज किशनगढ, जिला अजमेर (राजस्थान)
18. डॉ. श्री प्रेमनारायण जी (प्रियादास जी) श्रीवास्तव, एम.ए., पी-एच.डी., प्राध्यापक, प्राच्यदर्शन महाविद्यालय, रमणरेती, श्रीवृन्दावनधाम (मथुरा) उत्तरप्रदेश। मूल निवास, मोटा गणेश, श्री वृन्दावनधाम (मथुरा) उत्तरप्रदेश

सप्तमवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, मंगलवार सम्वत् 2047

तदनुसार दिनांक 14 अगस्त, 1990 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

19. श्री महा पण्डित श्री मुकुन्दशरण जी शास्त्री, श्री वृन्दावनधाम, मथुरा (उत्तरप्रदेश)
20. पं. श्री सीतारामजी शास्त्री श्रोत्रिय, जिला जयपुर (राजस्थान) प्राचार्य, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय चिडावा (सीकर) मूल निवास – कुन्दीगरों के भैरु का रास्ता, जयपुर।
21. पं. श्री भंवरलाल जी उपाध्याय, मु.पो. ब्यावर जिला अजमेर (राजस्थान) व्यवस्थापक–श्री निम्बार्क मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद

अष्टमवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, चन्द्रवार सम्वत् 2048

तदनुसार दिनांक 2 सितम्बर, 1991 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

22. श्री चन्द्रदत्त जी पुरोहित, देव भवन, पो. पर्वतसर जिला नागौर (राजस्थान)
23. डॉ. श्री छगनलाल जी शास्त्री, द्वारा शारदा पुस्तक मन्दिर, पो. सरदारशहर - 331 403 जिला चूरू (राजस्थान)

नवमवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रपद कृष्ण नवमी, शनिवार सम्वत् 2049

तदनुसार दिनांक 22 अगस्त, 1992 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

24. पं. श्री गङ्गादत्तजी व्यास, करोलीवाले, जयपुर (राजस्थान)
25. पं. श्री सूवालाल जी व्यास, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), जिला अजमेर (राजस्थान)
26. स्वर्गीय पं. श्री पुरुषोत्तम जी व्यास, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), जिला अजमेर (राजस्थान)
27. पं. श्री शंकरलाल जी व्यास, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), जिला अजमेर (राजस्थान)

दशम वर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी बुधवार सम्वत् 2050

तदनुसार दिनांक 11 अगस्त, 1993 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

28. पं. श्री कैलाशचन्द्र जी गौड, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद जिला अजमेर (राजस्थान)
29. महान्त पं. श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री, व्याकरण-साहित्य आचार्य, शिक्षा शास्त्री साहित्यरत्न, (स्वर्णपदक) श्री लक्ष्मी नृत्यगोपाल जी का मन्दिर, सिरेह ड्योढी दरवाजे के ऊपर (जयपुर) राजस्थान
30. पं. श्री सत्यनारायण जी शास्त्री, आशुकवि, 41, ज्योतिजीवन, शास्त्रीसदन, शिवपुरी (पीपलगली) हाथीभाटा, अजमेर (राजस्थान)
31. वैद्य श्री बैकुण्ठनाथ जी शर्मा, भिषगाचार्य घीयामण्डी, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
32. प्रो. (डॉ.) श्री रसिक बिहारी जी जोशी, पी-एच.डी., डी.लिट्., मु.पो. ब्यावर जिला अजमेर (राज.)

एकादशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, सोमवार सम्वत् 2051

तदनुसार दिनांक 29 अगस्त, 1995 ई.

33. पं. श्री गोकुल प्रसाद जी भारद्वाज, रामगंज, पंजाब बैंक के सामने, अजमेर (राजस्थान)
34. वैद्यश्री धनाधीश जी गोस्वामी, मु.पो. रतनगढ़ जिला चूरू (राजस्थान)

द्वादशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, शुक्रवार सम्वत् 2052

तदनुसार दिनांक 18 अगस्त, 1995 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

35. पं. श्री परशुरामशरण जी भारद्वाज, व्याकरणाचार्य, मु.पो. बौंली, जिला सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
36. वेद्य श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद जिला अजमेर (राज.)
37. श्री राधावल्लभ जी शास्त्री, मु.पो. कचनारिया, जिला जयपुर

त्रयोदशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी गुरुवार सम्वत् 2053

तदनुसार दिनांक 5 सितम्बर, 1996

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

38. पं. श्री बुद्धदेवजी शास्त्री, भागवताचार्य, मु.पो. धनकोली, मोलासर जिला नागौर (राज.)
39. पं. श्री श्रीनिवास जी शास्त्री, वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, भागवत मर्मज्ञ, रिडनिवासी, वर्तमान निवास मदनगंज (किशनगढ़) जिला अजमेर (राजस्थान)
40. पं. श्री महावीरप्रसाद जी गौड़, साहित्याचार्य, शिक्षाशास्त्री, मु.पो. लोहार्गल, चिराणा, जिला सीकर (राजस्थान)

चतुर्दशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, सोमवार वि. सम्वत् 2054
तदनुसार दिनांक 25 अगस्त, 1997
(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

41. वैद्य श्रीरामेश्वरप्रसाद जी, आयुर्वेदाचार्य, मु.पो. कुचामन, जिला नागौर (राजस्थान)
42. वैद्य श्रीप्रज्ञावर्धन जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, मु.पो. अजमेर (राजस्थान)
43. पं. श्री विश्वामित्रजी व्यास, निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद जिला अजमेर (राजस्थान)
44. पं. श्री दामोदरप्रसाद जी व्यास, इन्जिनियर विद्युत विभाग, मु.पो. अजमेर (राजस्थान)
45. श्री भगवत्शरण जी शास्त्री, जयपुर (राजस्थान)

पंचदशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, शनिवार सम्वत् 2055
तदनुसार दिनांक 15 अगस्त, 1998

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

46. वैद्य पं. श्री जगदीशप्रसाद जी आयुर्वेदाचार्य, श्याम जी की खाटू, जिला सीकर (राज.)
47. वैद्य पं. श्री हनुमानप्रसाद जी आयुर्वेदाचार्य, श्यामजीकीखाटू, जिला सीकर (राज.)
48. पं. श्री राधाकृष्णजी शास्त्री (संस्कृत रसकवि वरेण्य), कच्ची सड़क, मथुरा (उत्तरप्रदेश)
49. रसिक-वरेण्य श्री महावाणी मर्मज्ञ, बाबा श्री घनश्यामदास जी, शान्ति आश्रम, रमणरेती, श्रीवृन्दावन, मथुरा (उत्तरप्रदेश)

षोडशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, शुक्रवार सम्वत् 2056
तदनुसार दिनांक 03.09.1999

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

50. वैद्य श्रीछगनलाल जी ओझा, आयुर्वेदाचार्य, भिषग्भास्कर, निम्बार्क आयुर्वेद फार्मेसी, महेसाना (गुजरात)
51. पं. श्री रामेश्वरलाल जी शर्मा, गौड, एम.ए. जयपुर (राजस्थान)
52. डॉ. श्री प्रभाकरजी शास्त्री, साहित्य-धर्मशास्त्राचार्य, एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्. पूर्वनिदेशक, राजस्थान संस्कृत अकादमी, प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) निवास – 254, शास्त्री सदन, खूंटेटा मार्ग, जयपुर (राज.)
53. वैद्य श्री रामेश्वरप्रसाद जी आयुर्वेदाचार्य, परबतसर, नागौर (राजस्थान)

सप्तदशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्णा अष्टमी, बुधवार सम्वत् 2057
तदनुसार दिनांक 23 अगस्त, 2000

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

54. पं. श्री पुरुषोत्तमशरणजी शास्त्री (भागवत व्याख्याता), मु.पो. वृन्दावन, जिला मथुरा (उत्तरप्रदेश)
55. पं. श्री कृष्णचन्द्र जी शास्त्री (भागवत प्रवक्ता) मु.पो. देराटू वाया नसीराबाद जिला अजमेर (राज.)

अष्टादशवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्ण नवमी सोमवार सम्वत् 2058
तदनुसार दिनांक 13 अगस्त, 2001 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

56. पं. श्री रामस्वरूपजी गौड़, मु.पो. मोखमपुरा (बिचून) जिला जयपुर (राजस्थान)
57. डॉ. श्री परमानन्द जी शर्मा, एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी), पी-एच.डी., साहित्याचार्य, मु.पो. तेवड़ी, बैराठ, जिला जयपुर (राजस्थान)

एकोनविंशतिवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभमिति भाद्रकृष्ण अष्टमी शनिवार सम्वत् 2059

(श्रीकृष्णजन्माष्टमी महोत्सव)

58. श्री महन्त श्री बनवारी शरण जी शास्त्री 'नारदजी', नवलचन्द निकुंज, सेवाकुंज, पो. वृन्दावन जिला मथुरा (उत्तरप्रदेश)
59. प्रो. श्री भास्कर जी श्रोत्रिय, ज्योतिषाचार्य, ज्योतिष-विभागाध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, निवास म.नं. 4847, सोतियान मोहल्ला, कुन्दीगर भैंरु का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)

विंशतिवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी, बुधवार सम्वत् 2060
तदनुसार दिनांक 20 अगस्त, 2003 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

60. पं. श्री रमाकान्त जी शर्मा, व्याकरणाचार्य, मु.पो. कटूमरी, तह. राजाखेड़ा, जिला धौलपुर (राज.)
61. पं. श्री रेवतीरमण जी शर्मा, वैदिक, साहित्याचार्य, मु.पो. बौंली जिला सवाईमाधोपुर (राज.)
62. पं. श्री घनश्यामजी शर्मा शास्त्री, निम्बार्कतीर्थ, मु.पो. सलेमाबाद जिला अजमेर (राज.)

एकविंशतिवर्षीय विद्वत्सम्मान समारोह

शुभ मिति भाद्रकृष्ण अष्टमी मंगलवार सम्वत् 2068
तदनुसार दिनांक 7 सितम्बर, 2004 ई.

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव)

63. श्रीमहन्त डॉ. श्री वृन्दावन बिहारीदास जी काठियाबाबा, काठिया बाबा का आश्रम, सुखचर, जिला 24 परगना, कोलकाता (पश्चिमी बंगाल)
64. पं. श्री मुकुन्दशरण जी उपाध्याय (आशुकवि), साहित्याचार्य, पूर्व केन्द्रीयाध्यक्ष, सनातन धर्म सेवा समिति,काठमाण्डू मु. सिम यामी-हेमजा पोखरा जि. कास्की गण्डकी, अञ्चल (नेपाल)
65. वैद्य श्री बालमुकुन्द जी शर्मा गौड़, आयुर्वेदाचार्य, वैद्यप्रभारी, आयुर्वेद चिकित्सालय, मु.पो. निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद जिला अजमेर (राजस्थान)
66. वैद्य श्रीधरणीधरजी उपाध्याय, संचालक, श्रीकृष्ण आयुर्वेद औषधालय, मु.पो. निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद, जिला अजमेर
67. पं. श्री ओमप्रकाश जी शर्मा शास्त्री, निजी सचिव, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, मु.पो मुकुन्दपुरा, भाँकरोटा, जिला जयपुर (राजस्थान)

इसके अतिरिक्त आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज विशिष्ट आयोजनों, महोत्सवों व दर्शनार्थ निम्बार्कपीठ पर उपस्थित होने वाले विद्वानों, कथावाचकों, रासलीलानुकर्ताओं, सङ्गीताचार्यों एवं श्रद्धालुओं को यथोचित पीतवस्त्र, दुपट्टा, शाल, प्रसाद आदि प्रदान कर सम्मानित करते हैं।

यह भी संस्मरणीय है कि अनन्त श्री विभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज ने **राष्ट्रीय सन्त, रामकथा विशेषज्ञ श्री मोरारजी बापू को** ***'निम्बार्करत्न'*** के अलंकरण से विभूषित कर सम्मानित किया है।

❑

ई.सन् 1993 स्वर्णजयन्ती महोत्सव एवं अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के आयोजन की पृष्ठभूमि

धर्म प्रधान हमारे देश के धार्मिक क्षेत्र में धर्माचार्यों द्वारा जनकल्याणकारी धार्मिक आयोजनों की मङ्गलमयी परम्पराओं के अन्तर्गत वर्तमान में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी** महाराज की भूमिका प्रमुख ही नहीं, अद्वितीय है। आचार्यश्री का सम्पूर्ण जीवन अनादि वैदिक द्वैताद्वैत सिद्धान्त, सार्वभौम सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में निरन्तर संपृक्त है। देश काल एवं परिस्थिति की आवश्यकता को देखते हुए आपश्री का जो विशिष्ट धार्मिक आयोजनों का संकल्प होता है, वह महनीय स्तर के साथ जब साकार होता हुआ अद्भुत विशाल आयोजन के रूप में सफल सम्पन्न होता है तो बड़े-बड़े मनीषी धर्माचार्य, पत्रकार, कलाकार एवं धार्मिक जनता आश्चर्यचकित हो जाती है और **'धातुरिवेहितं फलैः'** जैसे भगवान् के संकल्प का अनुमान सृष्टि के कार्य रूप फलों से लगाया जाता है, वैसे ही उक्त सफल आयोजनों से हमारे आचार्यश्री के संकल्प का अनुमान लगाया जाता है। अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) द्वारा सम्पन्न होने वाले महनीय यशस्वी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विशाल आयोजनों के मूल में पूज्य आचार्यश्री का ही सत्संकल्प होता है, फिर उसकी क्रियान्विति में कोई भी भाग्यशाली निमित्त बन सकता है।

विक्रम सम्वत् 2031 (सन् 1975) में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा ऐतिहासिक विशाल अ.भा. सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसके कुछ वर्षों के पश्चात् आचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज का संकल्प हुआ–**''श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर अब एक विशाल वैष्णव सम्मेलन होना चाहिए।''** सामान्य रूप से परिकर वर्ग को उक्त संकल्प की जानकारी हुई। यदा-कदा प्रसंग-वश उक्त संकल्प की चर्चा भी होती रही। संयोग-वश परिकरवर्ग में एक चर्चा चली, आचार्यश्री के पीठाभिषेक के ऐतिहासिक एवं यशस्वी 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। अत: इस स्वर्णिम अवसर पर आचार्यश्री के पट्टाभिषेक स्वर्णजयन्ती महोत्सव का आयोजन होना चाहिए। इस विषय के मुख्य सूत्रपात्र करने वाले थे **श्रीदिनेशजी किरण रूपनगर**। परिकरवर्ग एवं आचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् के सदस्यों द्वारा आचार्यपीठ के निकटस्थ भावुक भक्तजनों को उक्त विषय की जानकारी प्रदान करने पर सबके हृदय में स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाने के लिए स्वाभाविक उल्लास भरा भाव जागृत हुआ। उक्त महोत्सव की रूपरेखा तैयार करने के लिए स्वीकृति हेतु आचार्यश्री से प्रार्थना की गई तो सर्वथा निषेध करते हुए कहा गया कि हमारे लिए स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि कोई उत्सव महोत्सव करना है तो भगवान् श्रीराधामाधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही महोत्सव मनाना चाहिए। पुन: समन्वित रूप से विशेष प्रार्थना के साथ आचार्यश्री को स्मरण दिलाया गया कि आपश्री का ही एक संकल्प है कि–आचार्यपीठ पर एक विशाल सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन होना चाहिए। अत: स्वर्णजयन्ती के निमित्त रूप में उक्त आयोजन की स्वीकृति प्रदान की जावे। इस पर स्वीकृति प्रदान करते हुए

आज्ञा हुई कि–किसी भी निमित्त से यदि आचार्यपीठ पर विशाल धार्मिक आयोजन हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। इस प्रकार स्वीकृति प्राप्त होने पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के जयघोष के साथ कार्यकर्त्ताओं के हृदय में अपार हर्षातिरेक की अनुभूति हुई।

आचार्यश्री द्वारा स्वीकृति प्रदान होने पर अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् की ओर से दिनांक 28/02/93 को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अजमेर, मदनगंज-किशनगढ़, मकराना, जयपुर, ब्यावर, कुचामन, रूपनगर आदि स्थानों के पर्याप्त संख्या में भक्तजन उपस्थित हुए। **महन्त श्रीहरिवल्लभदासजी शास्त्री, किशनगढ़-रेनवाल** की अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी ज्येष्ठ शु. 2 वि.सं. 2050 को अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री **'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव विशेष समारोह** व विविध आयोजनों के साथ मनाने का सर्व सम्मति से निर्णय हुआ तथा कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने हेतु एक समिति का गठन किया गया। इस समिति की बैठक दिनांक 03/03/93 ई. को हुई, जिसमें इस अवसर पर **अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन** बुलाने का निश्चय किया गया तथा इसके अन्तर्गत होने वाले विविध आयोजनों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

दिनांक 21/03/93 को आचार्यपीठ में पुनः अनेक सन्त-महन्त, विद्वान् तथा गण्यमान्य भक्तमहानुभावों को उपस्थिति में महन्त **श्रीबनवारीशरणजी शास्त्री वृन्दावन** की अध्यक्षता में सभा का आयोजन हुआ, जिसमें महोत्सव समिति के पदाधिकारियों एवं विभिन्न समितियों का गठन किया गया।

दिनांक 06/05/93 को महोत्सव समिति के पदाधिकारियों एवं विभिन्न समिति के कार्यकर्त्ताओं की एक बृहद् सभा आचार्यपीठ में हुई। महोत्सव समिति के **अध्यक्ष श्री भीमकरणजी छापरवाल इचलकरंजी** ने इस सभा की अध्यक्षता की। इसमें सप्त दिवसीय कार्यक्रमों को मूर्तरूप दिया गया तथा आयोजन के सफल सम्पादन का दायित्व समिति के सदस्यों को सौंप दिया गया।

आयोजन का उद्देश्य

परम पूज्य आचार्यश्री के अन्तर्मानस में इस महानायोजन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था। आज हमारा यह धर्म प्रधान भारतदेश राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होते हुए भी ऐसा लगता है, सांस्कृतिक दृष्टि से अभी हम स्वतन्त्र नहीं हैं। दुर्भाग्य-वश इसी देश के राजनैतिक नेताओं एवं शासन में छद्म धर्म निरपेक्षता के विष से धार्मिक वातावरण को ऐसा दूषित किया है कि–लोग दिग्भ्रान्त होकर हमारी शाश्वत संस्कृति, सभ्यता एवं धार्मिक जीवन से पथ भ्रष्ट होकर पतन की पराकाष्ठा की ओर अग्रसर हैं। यही कारण है कि आज इस देश का मानव अपने कुल परम्परागत धार्मिक एवं सामाजिक शिष्टाचार को तिलाञ्जलि देकर अपने देव दुर्लभ मानव जीवन की इतिश्री कर रहा है। वर्णाश्रम, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं कुल परम्परागत सम्प्रदाय पुरःसर वैष्णवता के दर्शन दुर्लभ होते जा रहे हैं। **''नहि वैष्णवता कुत्र सम्प्रदाय पुरःसरा।''** इस प्रकार इस देश का मानव भी आज अपने सामान्य धर्म का भी परित्याग कर दानव बनता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज के उद्धार एवं पुनर्निर्माण का दायित्व किस पर है? आज की धर्म निरपेक्ष सरकार या नेताओं तथा अन्य संस्थाओं से उक्त अपेक्षा करना दुराशा मात्र होगा।

जिस देश की राजनीति के संचालन में **'धर्मो रक्षति रक्षितः' 'सत्यमेव जयते' 'जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार।'** ऐसे उद्घोषों के साथ धर्म का प्राधान्य था, वहाँ आज भारतीय जन-जीवन से सार्वभौम

सनातन धर्म को ही मिटाने की होड़ लगी हुई हैं। लगता है, आसुरी शक्तियों का यह ताण्डव इस देश के विश्व विख्यात आध्यात्मिकता के स्वरूप को ही विकृत कर देगा। यह एक चिन्ता का विषय है।

इस देश का इतिहास प्रमाण है कि जब-जब भी आसुरी शक्तियों के प्रभाव से देश में धर्मग्लानि व अधर्माभ्युत्थान की स्थिति उत्पन्न हुई, यहाँ के धर्माचार्य, सन्त-महात्मा व स्व-कर्त्तव्यपरायण विद्वान् ब्राह्मणों ने सजग प्रहरी के रूप में अपन कर्त्तव्य से इस देश की संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म को बचाया। आज वैसी ही देश की परिस्थिति बनती जा रही है, किन्तु सम्प्रति समाज और धर्माचार्यों के पारम्परिक धर्म सम्बन्ध शिथिल होते जा रहे हैं। जिन पर संस्कृति एवं धर्म रक्षा का दायित्व है, जिनके हाथों में धर्म की बागडोर है, वह वर्ग ही अपने दायित्व से उदासीन रहा तो देश की क्या स्थिति होगी? देश की वर्तमान ऐसी परिस्थिति में धार्मिक जनता और धर्माचार्यों के पारम्परिक सम्बन्ध दृढ़ता के साथ अपने-अपने दायित्व के प्रति जागृति द्वारा देश को उक्त विकृतियों से बचाने के उद्देश्य से आयोजित यह ऐतिहासिक विराट् सनातन धर्म सम्मेलन निश्चित रूप में धार्मिक जागृति का महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध होगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए आचार्यश्री ने आयोजन की स्वीकृति प्रदान की।

धर्माचार्यों का आह्वान

उद्देश्य की सफलता के लिए समस्त धर्माचार्यों का सम्मेलन में पादार्पण नितान्त आवश्यक मानकर उनके आह्वान का आधार केवल निमन्त्रण पत्र व पत्रों को ही नहीं बनाकर देश के कौने-कौने में विराजने वाले समस्त धर्माचार्यों के धर्मपीठों व स्थानों पर जाकर प्रत्यक्ष सम्पर्क करने की योजना बनाई गई। तदनन्तर्गत सन्त-महात्मा एवं विद्वानों के एक शिष्टमण्डल का गठन किया गया। शिष्टमण्डल के सदस्यों के लिए विभिन्न धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं वरिष्ठ विद्वानों के स्थानों पर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के प्रतिनिधि के रूप में जाकर सम्पर्क साधने का कार्यक्रम बनाया गया। योजना के अनुसार सर्वश्री **महन्त बालकदासजी फालेन, रसिकमोहन जी, स्वामी गिरिराजप्रसाद जी, पं. वासुदेवशरणजी उपाध्याय, पं. दयाशंकर जी शास्त्री** एवं **रामकुमार शर्मा** अपने-अपने दायित्व का वहन करते हुए स्वर्णजयन्ती महोत्सव में पधारने के लिए उक्त महानुभावों की स्वीकृतियाँ लाये। फलस्वरूप सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्य, सन्त, महन्त एवं विद्वानों के पादार्पण से उक्त सम्मेलन आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

❑

पारमार्थिक संस्थाएँ एवं सेवायें

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्री **'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी** महाराज के वि. सं. 2000 में पीठ पर प्रतिष्ठित होने के बाद नव संस्थापित व परम्परा से संचालित संस्थाओं का प्रवर्तन यथावत् प्रभावी है।

1. श्री सर्वेश्वर मासिक पत्र

पूज्य श्री 'श्रीजी' के संकल्पानुसार 'श्री सर्वेश्वर' मासिक पत्र का प्रकाशन श्री निम्बार्क जयन्ती वि. सं. 2009 से प्रारम्भ हुआ। निम्बार्काचार्य-पीठ द्वारा यह मासिक पत्र प्रतिमास श्री 'श्रीजी' के कुञ्ज, प्रताप बाजार, वृन्दावन (उ. प्र.) से प्रकाशित होता है। इसके आदि सम्पादक अ. **श्री ब्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य** जी रहे हैं व वर्तमान में सम्पादक **श्री रसिक मोहन शरण शास्त्री** व सम्पादक मण्डल में **पं. वैद्यनाथ जी झा** व **श्री जयकिशोर शरण जी** हैं। श्री सर्वेश्वर धर्म, भक्ति और सत्संस्कृति की शोधपूर्ण व प्रेरणादायी पत्रिका हैं। इसमें वृन्दावन रघुपति श्री श्यामा-श्याम की परमोत्कृष्ट सुमधुर भाव भक्ति का प्रचुर साहित्य प्रकाशित होता है। इस पत्रिका ने अपने गौरवपूर्ण इक्यावन वर्ष के इतिहास में प्रकाशन की अपनी मासिक नियमितता के साथ कई संग्रहणीय शोधपूर्ण प्रेरणादायी विशेषांक प्रकाशित किये हैं, जिनमें **वृन्दावनांक, श्री युगल शतांक, श्री महावाणी अंक, श्रीरसोपासना अंक, श्री नागरीदास की वाणी, श्री व्रज लीलांक, श्रीमद्भगवद् गीता अंक, श्री शरणागति अंक, श्री गुरुमहिमा अंक** आदि उल्लेखनीय हैं।

'श्री निम्बार्क' पाक्षिक पत्र

'श्री निम्बार्क' अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज के संकल्पानुसार ई. सं. 1970 को छोटे आकार में प्रकाशित होने लगा था, दो वर्ष बाद यह चार पृष्ठ का हुआ। 'श्री निम्बार्क' पाक्षिक पत्र है। यह प्रत्येक अंग्रेजी माह की 3 तारीख व 18 तारीख को अ. भा. निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद, अजमेर (राज.) से प्रकाशित होता है। 'श्री निम्बार्क' पूर्णतः धार्मिक और अ. भा. निम्बार्काचार्य पीठ का निजी समाचार पत्र है और आचार्य पीठस्थ प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित होता है। इसके आदि सम्पादक गोलोकवासी **पं. श्री गोविन्दास जी 'सन्त'** रहे है। वर्तमान में 'श्री निम्बार्क' के सम्पादक **श्री दयाशंकर जी शास्त्री, श्री वासुदेव शरण जी उपाध्याय** व सह-सम्पादक **पं. भंवरलाल जी उपाध्याय है। प्रकाशक-व्यवस्थापक श्री माधवशरण बाबा है।** 'श्री निम्बार्क' पाक्षिक पत्र निम्बार्क सम्प्रदाय उपलब्धियों के संदेश-समाचार व विचार का मुख्य संचार माध्यम है। इस पाक्षिक पत्र द्वारा आचार्य पीठ द्वारा समायोजित किये जाने वाले कुम्भ, वर्ष भर के पर्व, विशेष उत्सव, महोत्सव, श्री पुरुषोत्तम मासिक महोत्सव श्री निम्बार्क व्रतोत्सव पूज्य श्री की पधरावनिया व पूज्यश्री के दिव्य सदुपदेश वचनामृत आदि प्रकाशित होते हैं। श्री निम्बार्क ने आचार्यश्री के **'तीन धाम सप्तपुरी यात्रा' व्रजचोरासी कोशीय यात्रा** समय-समय पर **कुम्भ विशेषांक,** मूंगी में **श्री निम्बार्काचार्य विग्रह प्रतिष्ठा विशेषांक** व **नेपाल यात्रा विशेषांक** तथा **युग सन्त मुरारी बापू**

की **'रामकथा' विशेषांक** आदि महनीय विशेषांक प्रकाशित किये हैं। इसके अतिरिक्त सन् 1975 के व 1993 के अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलनों, अष्टोत्तर भागवत पारायण, गीता, भागवत प्रभृति प्राचीन साहित्य, पूज्य आचार्यश्री की रचनाओं व विशेष उद्धरण के साथ विशिष्ट विद्वानों के रचनाओं के प्रकाशन व सम्प्रदाय सम्बन्धी विशिष्ट जानकारी यथावसर प्रकाशित की जाती है।

3. अ. भा. सनातन धर्म सम्मेलन : स्मारिका

1975 ई. पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के संकल्पानुसार महावाणीकार श्री हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज के 600वें पाटोत्सव के अवसर पर समायोजित अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद अजमेर (राज.) में सुसंपन्न हुआ। यह सम्मेलन सनातन धर्म जगत् में अपने आप में विशिष्ट व प्रथम रहा। इसकी स्मृति को बनाये रखने के लिए व सम्मेलन में व्यक्त विचारों को सर्वत्र प्रकाशित करने के लिए आचार्यश्री के निर्देशानुसार स्मारिका का प्रकाशन किया गया। इस स्मारिका में सनातन धर्म जगत् के धर्म समृद्ध प्रवचन, स्वाध्याय अनुशीलन के लिए प्राप्त हुए।

सम्पादक मण्डल में महन्त श्री मुरलीमनोहरशरण शास्त्री, अधिकारी श्री व्रज वल्लभशरण जी अधिकारी खेमोजी विश्वेश्वरजी, श्री दयांशकर जी शास्त्री, श्री गोविन्द शरण 'सन्त' श्री मुरलीधर शास्त्री, श्री वासुदेवशरण उपाध्याय, डॉ. रामप्रसाद शर्मा, श्री विष्णुदत्त शर्मा कान्त, प्रबन्ध सम्पादक श्री भगवानदास भागीरथ के नाम संस्मरणीय हैं।

4. स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव एवं सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका 1993

पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज के जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठप्रतिष्ठा की **'स्वर्णजयन्ती'** के अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा महोत्सव आयोजन के सुझाव को आचार्यश्री ने पूर्वानुसार अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का स्वरूप संकल्प प्रदान किया। इसी अवसर पर पूज्य श्री श्रीजी महाराज ने **युवराज** पद पर **श्री श्यामशरणदेव** को प्रतिष्ठित किया। इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में कई ज्वलन्त विषयों पर गम्भीर विचार विमर्श हुआ। इस सम्मेलन में वरिष्ठ शंकराचार्य, वैष्णवाचार्य, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर व साधु महन्त व विशिष्ट विद्वान् समुपस्थित हुए। इस सम्मेलन के विचार निष्कर्ष को यथावत् जन जन तक पहुँचाने के लिए आचार्यश्री के संकल्पानुसार सनातन धर्म सम्मेलन 'स्मारिका' 1993 का प्रकाशन हुआ।

5. श्री निम्बार्क ग्रन्थ माला

इस ग्रन्थ माला में कई ग्रन्थ रत्न प्रकाशित हो चुके हैं। आचार्य पीठ प्रकाशन विभाग व शिक्षा समिति के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। आचार्यश्री के स्वरचित ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। श्री निम्बार्काचार्य पीठान्तर्गत श्री 'श्रीजी' मन्दिर वृन्दावन मथुरा (उ. प्र.) द्वारा कई धार्मिक व सम्प्रदाय सम्बन्धी ग्रन्थ रत्नों का प्रकाशन हुआ है।

6. श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

इस विद्यालय का प्रारम्भ बड़े महाराज श्री 'श्रीजी' श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी के संकल्पानुसार वि. सं. 1994 में हो गया था। वर्तमान आचार्यश्री के कार्यकाल में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर व महर्षि

दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से मान्यता प्राप्त विद्यालय एवं महाविद्यालय बना। यहाँ प्रवेशिका, उपाध्याय व शास्त्री तक अध्ययन कराया जाता है। अब **'निम्बार्क-दर्शन'** विषय में आचार्य तक श्री रामानन्द राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से क्रमोन्नत होने की आशा है।

7. श्री निम्बार्क दर्शन विद्यालय, वृन्दावन

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा मध्यमा तक की स्थायी मान्यता प्राप्त उक्त विद्यालय श्रीनिम्बग्राम जिला मथुरा उत्तरप्रदेश में सञ्चालित है, जहाँ उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि विभिन्न प्रदेशों तथा नेपाल के छात्रों को व्याकरण, साहित्य आदि विषयों के अध्ययन की सुविधा प्राप्त है।

8. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय, निम्बार्कपीठ

भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर के सौजन्य से संस्थापित इस विद्यालय में सस्वर वेदाध्ययन की व्यवस्था है। 6 छात्रों को प्रतिमास सौ-सौ रु. छात्रवृत्ति और वेदाध्यापक का पारिश्रमिक एक हजार रुपये की राशि भी सरकार की ओर से 1997 तक प्राप्त होती रही है। आज इनके आवास, भोजन आदि की व्यवस्था आचार्यपीठ की ओर से है। इसके अतिरिक्त आचार्यपीठ से दी जाने वाली वृत्ति वाले छात्र भी अध्ययन करते हैं।

9. श्रीनिम्बार्क वेद विद्यालय

यह वेद विद्यालय श्रीनिम्बार्कनिकुञ्ज, निम्बार्कनगर, हीरापुर जयपुर में चल रहा है।

10. श्री राधासर्वेश्वर छात्रावास, निम्बार्कपीठ

तीनों विद्यालयों के कुल मिलाकर इस छात्रावास में इस समय 100 छात्र हैं, जिनके आवास, प्रकाश, पुस्तक एवं भोजन-वस्त्रादि की व्यवस्था पीठ की ओर से ही हो रही है। धनीमानी सज्जनों को इन छात्रों के लिए अन्न या वस्त्र आदि भेजकर इस शिक्षा सम्बन्धी सर्वोत्तम सेवा में आचार्यपीठ का सहयोग करना चाहिए।

11. श्री राधामाधव गोशाला, निम्बार्कपीठ

इस गोशाला में इस समय दूध देने वाली तथा न देने वाली कुल मिलाकर 100 गायें हैं। दूध देने वाली गायों का दूध भगवत्सेवादि कार्यों में ही लिया जाता है, बिक्री आदि में नहीं। इस गोशाला में विद्युत् प्रकाश के साथ पंखे, बाँसुरी वादन आदि दुग्धवर्द्धक साधनों की योजना भी है, स्वच्छता आदि पर भी पूर्ण ध्यान दिया जाता है। गोभक्त प्रेमियों को गो-सेवार्थ आर्थिक सहयोग भेजकर गो-सेवा में सहयोग प्रदान करना चाहिए।

12. श्री हरिव्यास पारमार्थिक औषधालय, निम्बार्कपीठ

इस औषधालय द्वारा रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा व औषधि दी जाती है। इसमें श्रीकृष्ण गोपाल आयुर्वेद भवन कालेड़ा एवं श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन झाँसी द्वारा औषधियों का समय-समय पर पूर्ण सहयोग संप्राप्त है।

13. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय, निम्बार्कपीठ

इस प्राचीन पुस्तकालय में स्मृति, पुराण, इतिहास, व्याकरण, साहित्य, न्याय, मीमांसा एवं वेदान्तादि विषयों के अनेक हस्तलिखित तथा प्रकाशित धार्मिक ग्रन्थों का संग्रह है। इनमें प्राचीन हस्तलिखित कई एक ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्य भी चल रहा है।

14. श्रीहंस वाचनालय, निम्बार्कपीठ

इस वाचनालय में संस्कृत तथा हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक अनेक पत्र पत्रादिक आते हैं, जिनको पढ़ कर सभी लाभ उठाते हैं।

15. सन्त-सेवा

अ. भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) एवं आचार्यपीठ द्वारा संचालित (1) तीर्थ गुरु श्री पुष्करराज संस्थित श्री परशुरामद्वारा, (2) श्रीश्रीजी मन्दिर प्रताप बाजार वृन्दावन तथा (3) श्रीनिम्बार्कराधा कृष्णबिहारी मन्दिर निम्बार्क तपःस्थली निम्बग्राम, (4) श्रीनिम्बार्ककोट अजमेर, (5) श्री राधासर्वेश्वर मन्दिर, मदनगंज-किशनगढ़, (6) श्री गोपाल बिहारी मंदिर, किशनगढ़-शहर, (7) श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जबिहारी मन्दिर, निम्बार्कनगर, हीरापुर-जयपुर (8) श्री निम्बार्क मारुति मन्दिर, निम्बार्कतीर्थद्वार, किशनगढ़-मकराना मार्ग, इन सभी संस्थानों में प्रतिदिन सन्त-सेवा होती है।

16. पक्षी सेवा

मोर, मबूतर, तोता, मैना, चिड़िया आदि पक्षियों को ज्वार-बाजरा-मक्का आदि का दाना दिया जाता है। इसमें भी जो भक्त अपनी सेवा अर्पित करना चाहें, तदर्थ अपनी यथारुचि, यथाशक्ति सेवा करके परम पुण्य का लाभ प्राप्त करें।

उपर्युक्त इन पारमार्थिक संस्थाओं में आप अपनी इच्छानुसार आर्थिक सेवायें प्रदान कर पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहिए।

17. महोत्सव आयोजन

1. श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद
2. बलराम जयन्ती, गोपालद्वारा, किशनगढ़ (किशनगढ़)
3. श्रीराधाष्टमी श्री राधासर्वेश्वर मंदिर, मदनगंज
4. श्रीभागवत जयन्ती, निम्बार्ककोट, अजमेर
5. श्रीनिम्बार्कजयन्ती, श्रीपरशुरामद्वारा, पुष्कर
6. झूलन महोत्सव, श्रीजी बड़ा मन्दिर, वृन्दावन।

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित विभिन्न देवालय

1.	मन्दिर श्रीविजयगोपालजी	निम्बार्कतीर्थ
2.	मन्दिर नृसिंह जी	निम्बार्कतीर्थ
3.	आचार्य समाधि स्थल, श्री हनुमान जी	निम्बार्कतीर्थ
4.	महादेवजी का मन्दिर	निम्बार्कतीर्थ
5.	मन्दिर श्रीनिम्बार्क महादेव, सूर्यमन्दिर	निम्बार्कतीर्थ

6.	मन्दिर	हनुमान्‌जी, गंगासागर	निम्बार्कतीर्थ
7.	मन्दिर	बाली वाले हनुमान् जी	निम्बार्कतीर्थ
8.	मन्दिर	निम्बार्क मारुति	खातोली मोड़
9.	मन्दिर	राधासर्वेश्वरजी	मदनगंज (किशनगढ़)
10.	मन्दिर	गोपालबिहारी जी	किशनगढ़
11.	मन्दिर	निम्बार्कगोपीजनवल्लभजी	अजमेर
12.	मन्दिर	परशुरामद्वारा	पुष्कर
13.	मन्दिर	गोपालजी महाराज	झीतियाँ
14.	मन्दिर	जगमोहनद्वारा	रूपनगर
15.	मन्दिर	गोपालद्वारा	रूपनगर
16.	मन्दिर	गोपालजी महाराज	करकेड़ी
17.	मन्दिर	युगलबिहारी जी	फतेहगढ़
18.	मन्दिर	गोपालजी	जोधपुर
19.	मन्दिर	निम्बार्कनिकुञ्जबिहारी जी (निम्बार्कनगर)	जयपुर
20.	मन्दिर	नृसिंह टेकरी	महू (म.प्र.)
21.	मन्दिर	निम्बार्कराधाकृष्ण बिहारी जी निम्बार्क तप:स्थली	नीमगाँव (उ.प्र.)
22.	मन्दिर	द्वारकाधीशजी	अमरावती (महाराष्ट्र)
23.	मन्दिर	नृसिंहजी	नागपुर (महाराष्ट्र)
24.	मन्दिर	भजनदासमठ	पंढरपुर (महाराष्ट्र)
25.	मन्दिर	आनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी	बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन
26.	मन्दिर	भगवन्निम्बार्काचार्यजी	मूँगी (महाराष्ट्र)
27.	मन्दिर	श्रीमुरलीमनोहर जी, बड़ी कुंज	वृन्दावन
28.	मन्दिर	रूपमनोहरचन्द्रजी, बाँदी कुंज	वृन्दावन
29.	मन्दिर	कृष्णचन्द्रमाजी, छोटी कुंज	वृन्दावन

30.	मन्दिर	नागरबिहारीजी, नागरकुंज	वृन्दावन
31.	मन्दिर	सहजबिहारीजी, जीवाराम कुञ्ज	वृन्दावन
32.	मन्दिर	दानबिहारी जी, दानबिहारी कुंज	वृन्दावन
33.	मन्दिर	राधाकृष्णबिहारी जी, पन्नावाली कुंज	वृन्दावन
34.	मन्दिर	सर्वेश्वर वाटिका	वृन्दावन
35.	मन्दिर	इमली कुंज	वृन्दावन
36.	मन्दिर	बिहार घाट	वृन्दावन
37.	मन्दिर	परशुराम द्वारा	मथुरा
38.	मन्दिर	निम्बार्क निकेतन, चौक बाजार	मथुरा
39.	मन्दिर	श्रीगोपालजी महाराज	चला
40.	मन्दिर	दूदाधारी गोपालजी	भीलवाड़ा
41.	मन्दिर	गोपालजी	साँगानेर
42.	मन्दिर	ब्रजराजजी	लावा (राज.)
43.	श्रीजी का बड़ा बगीचा (पक्का बगीचा)		परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन
44.	निम्बार्क निकेतन		शाहगंज, मथुरा

नवनिर्माण व जीर्णोद्धार

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज (वि. सं. 2000) को पीठ प्रतिष्ठित होने के बाद नवनिर्माण व जीर्णोद्धार

1. भगवान् निम्बार्क मन्दिर, मूंगी, पैठण (महाराष्ट्र)

आद्य निम्बार्काचार्य श्रीजी प्राकट्य स्थली कहाँ है, यह पता नहीं था। शास्त्रवचन और जनश्रुति के आधार पर इतना मात्र ज्ञात होता था कि दक्षिण भारत के दक्षिण महाराष्ट्र प्रान्त में मूँगी-पैठण (मूंगी पत्तन) श्री निम्बार्काचार्य जी की प्राकट्य स्थली है। लेकिन कोई इस गाँव स्थान से अवगत नहीं था। सम्प्रदायजनों के संकेत से प्रो. श्री सुरेश जी जोशी द्वारा मूंगी पैठण का पता लगा। जोशी जी के प्रयास से वहाँ प्रतिवर्ष निम्बार्क जयन्ती का आयोजन होने लगा। गोदावरी के तट पर मूँगी की भूमि क्रय कर पूज्य आचार्यश्री के द्वारा दिनांक

15.12.99 को भूमि पूजन व शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आस्तिकजनों के सहयोग से पूज्यश्री के संकल्पानुसार भव्य दिव्य मन्दिर का निर्माण सम्पन्न होकर माघ कृष्णा 11 रविवार दिनांक 18.1.2004 को भगवान् श्री निम्बार्क के श्री विग्रह का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव बृहद् महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

2. श्री निम्बार्क भगवान् की तपस्थली नीम गाँव का जीर्णोद्धार व नव मन्दिर निर्माण तथा प्राण प्रतिष्ठा समारोह पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के संकल्पानुसार निम्बार्क भगवान् की तपस्थली के जीर्णोद्धार व तपस्थली को भव्य रूप प्रदान करने हेतु एक समिति का गठन किया गया, जिसके **संयोजक श्री भागीरथ जी भरडिया** व **श्री व्रजमोहन जी शर्मा** को बनाया गया। आचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज की भावनानुसार भव्य मन्दिर निर्माण, गोशाला, छात्रावास, चिकित्सालय, सन्तनिवास व सुदर्शन कुण्ड के जीर्णोद्धार भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव वि. सं. 2044 वैशाख शुक्ल 7 से वैशाख शुक्ला चतुर्दशी तक आयोजित हुआ और श्री निम्बार्क राधाकृष्ण बिहारी, आचार्य पंचायतन तथा निम्बार्क भगवान् के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा 1987 ई. में सम्पन्न हुई।

3. श्रीपरशुरामद्वारा पुष्कर का जीर्णोद्धार

श्री परशुराम द्वारा, पुष्कर में स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज का समाधि स्थल है और सम्प्रदाय का प्राचीन स्थान है। यहीं पर भक्तिमती मीरां बाई द्वारा पूज्य श्री गिरधर गोपालजी का श्रीविग्रह प्रतिष्ठित है। यह स्थान जीर्णशीर्ण हो गया था। अत: आचार्यश्री के संकल्पानुसार सम्पूर्ण परिसर के पुराने निर्माण को हटाकर नया स्वरूप प्रदान किया है। यह कार्य 1989 में सम्पन्न हुआ। अब यहाँ श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज की समाधि, स्वामी जी महाराज का श्रीविग्रह, श्री निम्बार्क भगवान् का श्रीविग्रह, श्री गिरधर गोपाल का श्रीविग्रह व सन्त निवास सभा मण्डप आदि भव्यरूप में अवस्थित हैं।

4. पन्नाबाई वाली कुञ्ज, वृन्दावन, 5. बिहारीधाम वाली कुञ्ज, व 6. श्री हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज की चरणपादुका स्थल का नवीनता के साथ जीर्णेद्धार, तथा 7. श्री निम्बार्क शिशु मन्दिर, वृन्दावन बिहार घाट वाली कुञ्ज का भवन निर्माण ई. सं. 1998 के लगभग पूज्यश्री 'श्रीजी' महाराज के संकल्पानुसार सम्पन्न हुआ।

8. श्री निम्बार्क कोट अजमेर के पुरातन स्थल का नवीनीकरण व भगवान् निम्बार्क गोपीजनवल्लभ के श्रीविग्रह की प्रतिष्ठा ई. सं. 1993 में सम्पन्न हुई।

9. श्री विजयगोपाल जी के मन्दिर, निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद (अजमेर) का सर्वथा नवीन स्वरूप 1990-2000 में प्रदान किया गया।

10. श्री आचार्यपीठ परिसर, श्री राधा माधव मन्दिर, स्वामी श्री परशुराम देवाचार्य जी की तपस्थली, आचार्य पंचायतन व श्री सर्वेश्वर मन्दिर आदि पर नवीन साज सज्जा स्वरूप प्रदान करने के कार्य आचार्य पीठान्तर्गत संचालित सभी स्थानों के छोटे मोटे जीर्णोद्धार के कार्य सदैव चलते ही रहते हैं, किन्तु आचार्य-पीठ परिसर में संगमरमर का कार्य, 11. मन्दिर परिसर में सुनहरे कांच का जड़ाव, 12. श्री सर्वेश्वर मन्दिर, 13. आचार्य पंचायतन, 14. श्री स्वामी जी महाराज की तपस्थली के किवाड़ों पर रजत पत्र का जड़ाव, पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज के पीठासीन कार्यकाल में ही भव्यता से हुआ है।

15. श्री निम्बार्क तीर्थ परिसर, सलेमाबाद में श्री निम्बार्क महादेव व सूर्य मन्दिर का नव निर्माण,

16. गंगा सागर पर हनुमान् मन्दिर का नवीनीकरण।

17. बाली वाले हनुमान् जी।

18. निम्बार्क मारुति मन्दिर खातोली मोड़ किशनगढ़, अजमेर का नव निर्माण

19. आचार्य समाधि स्थल का तथा यहाँ स्थित हनुमान् जी व महादेव जी के मन्दिर का नवीनीकरण हुआ है।

20. श्री गोपाल जी महाराज झीतियाँ, (मेड़ता) नागौर के मन्दिर का निर्माण पूज्य श्री 'श्रीजी' महाराज की भावना के अनुसार हो चुका है।

21. श्री निम्बार्क कुंजबिहारी जी मन्दिर, हीरापुरा, निम्बार्कनगर, जयपुर का निर्माण जयपुर के भक्तजनों के अनन्य उत्साह से आचार्यश्री की भावनानुसार 1993 में सम्पन्नता के साथ प्रतिष्ठा को प्राप्त है।

22. श्री राधासर्वेश्वर मन्दिर, मदनगंज-किशनगढ़ का निर्माण 1979 के लगभग पूर्ण हुआ।

पूज्य आचार्यश्री बड़ायली जिला नागौर में स्थित विद्यालय संस्था के माननीय अध्यक्ष हैं। जहाँ पर शिक्षा शास्त्री, बी. ए. तथा एम. ए. तक के अध्ययन की सुविधा है। इस संस्था भवन का शिलान्यास भी पूज्य आचार्यश्री के कर कमलों द्वारा ही हुआ है।

इस तरह आचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज के पीठ प्रतिष्ठित होने के बाद मन्दिर व लोकोपयोगी प्रतिष्ठानों के कई नवनिर्माण हुए हैं।

आचार्य पीठ परिसर में श्री राधासर्वेश्वर छात्रावास भवन, श्री सर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के भवन एवं बैंक भवन का निर्माण व पोस्ट आफिस भवन का निर्माण भी आपश्री के कार्यकाल में ही हुआ है।

यह अनन्तश्रीविभूषित श्री 'श्रीजी' महाराज श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी की देवमन्दिरों के प्रति अनन्य निष्ठा व श्रद्धा की एक झलक मात्र है। भक्तजनों के परिज्ञानार्थ किंवा सूचनार्थ प्रस्तुत है।

सम्पादक-मण्डल

भगवान् श्री निम्बार्काचार्यजी का प्राकट्य धाम
मूँगी - पैठण

साहेबराव आबासाहेब गायकवाड़

पद्मपुराण में पिप्पलिका क्षेत्र का उल्लेख आता है। वही पिप्पलिका का आधुनिक नाम मुँगी प्रचलित है। जहाँ पर आज पिप्पिलिकेश्वर नामक शिव मन्दिर एवं मुंगी देवी नामक मातृका मन्दिर है। वही स्थान आज **मुँगी धाम** दिखाई देता है। इस सन्दर्भ में पर्याप्त शोध हो चुका है। ऐतिहासिक एवम् पौराणिक प्रमाणों से यह प्रमाणित है। दक्षिणवाहिनी गोदावरी किनारे यह धाम बसा हुआ है। गोदावरी के उत्तर किनारे पैठण (पुरातन प्रतिष्ठान) है। पैठण औरंगाबाद जिले में एवं मुँगी अहमदनगर जिले में पड़ता है। गाँव में लोककथा आज भी कही जाती है कि पाँच हजार साल पहले मुँगी गाँव में स्वयंभू ब्रह्मा ने 'गणेशयाग' आयोजित किया था। याग में चिंटियों के हमला करने से याग को पैठण जाकर पूरा करना पड़ा था। एक और सन्दर्भ दिया जाता है याग की प्रतिष्ठापना फिर से जहाँ की गई, वह प्रतिष्ठान आज का पैठण है। ऐसी किंवदन्तियों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयत्न अवश्य हुआ है, अत: मुँगी और प्रतिष्ठान पौराणिक स्थान है। पौराणिक सांस्कृतिक धरोहर के भरसक प्रमाण उपलब्ध हो रहे हैं। ब्रह्मा से ही पिप्पलिकेश्वर एवम् प्रतिष्ठा की स्थापना बताई जाती है।

भगवान् श्री निम्बार्काचार्य की जन्मभूमि वैदूर्यपत्तन जो कानडी भाषा से सिद्ध किया जाता है। वैदूर्य शायद कर्नाटकी में वाल्मिक अथवा भूम को कहा जाता है, जो चिंटियों का निवास स्थान है। वही मराठी प्रदेश में मुँगी नाम प्रचलित हुआ। इसी क्षेत्र में महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के शेवगाँव तहसील अन्तर्गत मुँगी गाँव प्रसिद्धि पर आया, श्री निम्बार्काचार्य की जन्मभूमि के रूप में। पाँच हजार सालों में अनेक परिवर्तन होते गये। गोदावरी का किनारा अपनी करवटें बदलता रहा।

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद (अजमेर) राजस्थान ने सभी पौराणिक ग्रन्थों का अवलोकन-अध्ययन कर यह ध्यान में लिया कि मुँगी पैठण ही आचार्य भगवान् निम्बार्क की अवतरण-स्थली है। अतएव यहाँ पर भगवान् निम्बार्काचार्य का स्मारक खड़ा किया गया और आज यह निम्बार्क सम्प्रदाय का तीर्थ क्षेत्र बन गया है।

निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्य भगवान् निम्बार्काचार्य के मुँगी स्थित अरुणमुनि के आश्रम में युधिष्ठिर शके 6 में कार्तिक शुक्ल 15 पूर्णिमा को प्रदोष समय में माता जयन्ती देवी ने भगवान् को जन्म दिया। वैदुर्यपत्तन (मुँगवी-पैठण) मध्यकाल में हैदराबाद निजाम राज्य नजदीक पड़ने से आन्ध्रप्रदेश से भी अनेक प्रकार के व्यवहारों से संलग्न रहा है। मुँगी गाँव इसी का प्रमाण है कि आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवम् महाराष्ट्र की संस्कृति का संगम होता रहा है। **प्राचार्य सुरेश जोशी** (चिखली) द्वारा सम्पन्न शोधकार्य से यह प्रमाणित होता है।

अरुणाश्रम में जन्म बालक श्री का नियमानन्द नामकरण हुआ था। मुँगी गाँव की परम्परा से जुड़ी रूढ़ बात से एक और पुष्टि मिलती है–मुँगी गाँव की हद में नीम वृक्ष का घर, खेती औजार या ईंधन में कोई प्रयोग नहीं किया जाता। इसी का कारण बताया जाता है कि नियमानन्द ने नीम वृक्ष पर सुदर्शन का अवतरण दिखाया। अन्धेरे में ही नीम वृक्ष पर सुदर्शन प्रकाश देता रहा और स्वयम् ब्रह्माजी ने उसी प्रकाश में अपना भोज यज्ञ पूरा किया। सुदर्शनचक्र प्रकाशधारी नीम वृक्ष की तब से कोई भी शाखा तोड़ना पसन्द नहीं करता। श्रद्धा से नीम का पालन-पोषण होता है। उस पर कोई कुल्हाडी नहीं चलाता। यही चमत्कार माना जाता है निम्ब+अर्क (सूर्य) के संयोग से निम्बार्क भगवान् का इसी प्रदेश में अवतार माना जाता है। मुँगी में कार्तिक मास की पूर्णिमा को इसी उपलक्ष में उत्सव मनाया जाता है और मुँगा देवी एवम् निम्बार्क महाराज की कृपा से जागृत (जागरण) किया जाता है।

मन्दिर स्थापना के लिए भूमि आंवटन

मुँगी ग्राम से दो किलोमीटर दूरी पर गोकुलेश्वर शिव मन्दिर है। गोदावरी किनारे स्थापित इस मन्दिर में पूजा पाठ चलता रहता है। इस मन्दिर के आस-पास पुरातन ऋषि-मुनियों के आश्रम थे, उस बारे में अनेक प्रमाण दिये जाते हैं। श्री रसिक मोहन जी वृन्दावन से पधारे और विचार-विमर्श के बाद यह तय हो गया कि यह आश्रम स्थली गोदावरी नदी के किनारे होने से अनेक बार बाढ़ की चपेट में आती है, अतः निम्बार्क आश्रम के लिए गाँव के पास नदी के बाढ़ के प्रकोप से बचाने के लिए जमीन प्राप्त की जाय। इस सूचना पर शीघ्र सहमति होते ही गाँव के पास की 161 आर. जमीन श्री निम्बार्क आश्रम निर्माण के लिए पसन्द की गई और कहने लायक घटना है कि अनेक भूमिदाताओं ने एक दो तीन आर. जमीन दान में सौंप दी। 5 अक्टूबर, 1998 के दिन मन्दिर के लिए जमीन निम्बार्क निगम को समर्पित की गई। सन् 1988 से 1998 तक भगवान् निम्बार्काचार्य जयन्ती उत्सव कार्तिक मास में पूर्णिमा के दिन मनाया जाने लगा। हर दिन काकड आरी, एकनाथी भागवत पारायण, हरिपाठ तथा कीर्तन जैसे कार्यक्रम सम्पन्न होने लगे। **श्री ह.भ.प.महन्त भीमसिंग महाराज भगवान् गढ** महाराज का इस आयोजन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहने लगा। सलेमाबाद से भी **श्री हरिप्रसाद जोशी** एवम् **श्रीमती हर्षा जोशी** का गीत गायन एवम् प्रवचन का आयोजन होता रहा है।

आद्य पीठाधीश्वर जगद्गुरु भगवान् श्री निम्बार्काचार्य जी

भगवान् श्री निम्बार्काचार्य जन्म अरुणाश्रम में हुआ था, जो वैदुर्यपट्टण पहले मध्यकाल में हैदराबाद संस्थान में राजकीय प्रभाव में था। श्री नियमानन्द जी वैष्णव धर्म प्रचार कार्य के लिए श्रीकृष्ण भगवान् का आदेश प्राप्त कर मानव का रूप लेकर आदेश की पालना करते हैं–

सुदर्शन महाबाहो कोटि-सूर्य समप्रभ।
अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥

नियमानन्दजी को आदेश मिला कि चक्रराज पृथ्वीतल पर अवतरित होकर भक्ति का मार्ग प्रशस्त करने हेतु प्रकाशमान् हों। भगवत् आदेश के अनुरूप श्री चक्रराज सुदर्शन बालक नियमानन्द के रूप में अवतार ग्रहण करके निम्बार्क सम्प्रदाय का भक्तिमार्ग प्रतिष्ठित करने में जुट गये। नियमानन्द आश्रम चलाने लगे एवं द्रविड़

प्रदेश में देशाटन भी किया। नियमानन्द (अपने माता-पिता सहित) ब्रज में पधारे। गिरिराज गोवर्द्धन की उपत्यका में अवस्थित निम्बग्राम में आश्रम बनाकर तपस्या करने लगे।

एक सन्दर्भ दिया जाता है कि एक बार स्वयं ब्रह्मदेव त्रिदण्डी साधु का रूप लेकर श्री नियमानन्द के आश्रम में पधारे, रात्रि भोजन न करने का विधान ब्रह्माजी ने बताया। भोजन न हो पाने से नियमानन्द खिन्न हो गये। तभी अपने तेजसत्व के बलपर श्री सुदर्शनचक्र को पेड़ पर प्रकाशित किया। चारों ओर प्रकाश हो गया, जैसे नीम पर सूर्य (अर्क) प्रकाशमान हो रहा हो। ब्रह्मदेव जी का भोजन पूरा हुआ। प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने नियमानन्द को 'निम्बार्क' नाम दे दिया। उन्हीं द्वारा प्रचारित वैष्णव भक्ति परम्परा कार्य करने वाला **'निम्बार्क सम्प्रदाय'** कहा जाता है। आचार्यश्री निम्बार्काचार्य द्वारा निम्बार्क वैष्णव परम्परा का सूत्रपात हुआ।

सिद्धान्त रूप में भक्त-परम्परा के लिए दर्शनों का जो रूप उन्होंने लोगों के सामने रखा, वे तत्त्व इस प्रकार हैं–ब्रह्म, जीव है और प्रकृति (माया) माया अनन्त अनादि है, वैसे ही जैसे ब्रह्म अनादि अनन्त है। ब्रह्म स्वतन्त्र है और माया परतन्त्र। यह प्रकृति माया ब्रह्माधीन है, जगत् ब्रह्म का ही अंश है। फिर भी प्रकृति जगत् से अभिन्न है। श्री निम्बार्काचार्य इसीलिए राधा-कृष्ण को भक्ति धारा को अपनाते हैं और राधा को सखी रूप में मानकर कृष्ण की सेवा करने वाली रंगदेवी रूप स्वीकार करते हैं। कृष्ण - राधा को पृथक् न मानते हुऐ यह स्वीकार करते हैं ब्रह्म और प्रकृति एक होकर भी पृथक् है।

इस सम्प्रदाय में द्वैत भी और अद्वैत भी एक साथ मान लिए गये हैं। इसलिए इस सम्प्रदाय को आचार्यों ने **'द्वैताद्वैत'** सम्प्रदाय के रूप में मान्यता दी है। वह भी स्वाभाविक द्वैताद्वैत रूप में विख्यात है। बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र, वेदान्त पारिजात सौरभ, वेदान्त दशश्लोकी, मंत्र रहस्य पोडशी, प्रपन्न कल्पवल्ली, राधाष्टक आदि ग्रन्थों में निम्बार्क भक्ति परम्परा के सूत्र स्पष्ट दिये गये हैं। भक्तिकाल में प्रमुख चार सम्प्रदाय जैसे वल्लभ सम्प्रदाय, मध्वसम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, शंकर मत आदि प्रसिद्ध हुऐ और अखिल भारत भूमि भक्ति रस से गूँज उठी। उमसें आचार्य निम्बार्क का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके अनुयायियों ने द्वैताद्वैत मत का प्रचार-प्रसार पूरे भारत वर्ष में किया है।

आचार्यश्री केशव काश्मीरी भट्टाचार्य

द्वैताद्वैत भक्ति परम्परा में अर्थात् श्री निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय में आगे चलकर पीठाधिपति एवम् भाष्यकार प्रसिद्ध हो गये। आचार्य परम्परा चलती रही। उस परम्परा में 33वें स्थान पर जो आचार्य पीठासीन हो गये, उसमें दिग्विजयी नाम है आचार्य केशव काश्मीरी भट्टाचार्य का। उनका जन्म भी वैदूर्यपत्तन - (मुँगी-पैठण) में हुआ था, जो उस काल में तेलंग प्रदेश के आधिपत्य में था। निम्बार्काचार्य की वंश परम्परा में ही उनका जन्म माना जाता है। तेरहवीं शती में पूरे भारत वर्ष में भ्रमण कर अपने सम्प्रदाय को बढ़ाया और प्रचारित किया।

आचार्य केशव काश्मीर प्रदेश में अधिक दिन रहे, इसलिए उनको काश्मीरी कहा जाता था। कश्मीरी में वेदान्त सूत्रों पर कौस्तुभ प्रभा नाम से भाष्य लिखा। ग्वालियर में भगवद्गीता के आधार पर तत्त्व-प्रकाशिका नाम से टीका ग्रन्थ लिखा। मंत्रानुष्ठान का विधिवत् ज्ञान हो, इसलिए 'मंत्रक्रमदीपिका' ग्रन्थ लिखा। संस्कृत ग्रन्थों में उनकी रचनायें अमूल्य ग्रन्थों के रूप में आज भी प्रख्यात हैं।

'केशव दिग्विजय समुच्चय' नामक ग्रन्थ में आचार्य की कथायें संगृहीत हैं, जहाँ हिन्दुओं को यवन बनाने वालों को रोकना। मंत्रों के आधार पर ही जबरदस्ती यवन बनाये गये लोगों को फिर से हिन्दु दीक्षा मंत्रों

से देना आदि प्रसिद्ध हैं। वृन्दावन प्रदेश में व्रजमण्डल में किसी को भी यवन नहीं बनाया जायेगा, जैसा प्रतिज्ञापत्र काजी द्वारा प्रदान किया गया। पाखण्ड का नाश करना इस आचार्य का प्रधान कार्य रहा है।

आचार्य केशव ने संस्कृत का प्रचार-प्रसार भी आवश्यक समझा। ब्राह्मणों को संस्कृत का प्रबन्ध करना ही होगा और प्रचार आचार्य करते रहे। मुँगीधाम में उनके कार्य का प्रचार और जानकारी शिलाबद्ध हो ऐसी मनीषा ग्रामस्थ रखे हुए हैं।

भगवान् निम्बार्क की प्राकट्य स्थली का विकास कार्य

परम आचार्यश्री के संकेत से प्रतिवर्ष श्रीनिम्बार्क जयन्ती का आयोजन होने लगा। परम पावन तपस्थली को आज की स्थिति में प्रकट रूप देने का संकल्प कर 161 आर. भूमि का भवन निर्माण के लिए हस्तान्तरण किया गया। शास्त्रज्ञ शिल्पियों द्वारा भूमि का अवलोकन कराकर शास्त्रानुकूल एवं आधुनिक समयानुसार निर्माण के लिए भव्य मानचित्र बनाया गया और पूज्य आचार्यश्री के करकमलों द्वारा दिनांक 15/12/1999 को विधि विधान से भूमि पूजन एवं शिलान्यास का मंगल कार्य सम्पन्न हुआ।

जन्मभूमि शिलान्यास के लिए सलेमाबाद श्री निम्बार्काचार्य पीठ के जगद्गुरु निम्बार्काचार्य **श्री राधा सर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी** महाराज (श्री श्रीजी महाराज) पधारे। 13/12/1999 को हवाई जहाज से औरंगाबाद होकर पैठण माहेश्वरी भक्तिनिवास में पादार्पण हुआ। मुँगी-पैठण, सोलापुर, बीजापुर, इचलकरंजी, मानवत, सेलू, धूलिया, सेंधवा, जलगाँव, भुसावल, मुँबई, मथुरा, वृन्दावन, जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ आदि स्थानों से पधारे भक्तजनों का स्वागत किया गया। 14/12/1999 को दोपहर में श्री श्रीजी महाराज पैठण से मुँगी की ओर प्रस्थान कर गये।पैठण से मुँगी रास्ते में आचार्य के स्वागत में बैनर लगाये थे और फूलों से कमान लगाकर सुशोभित किया था। रास्ते की यात्रा, जगह-जगह स्वागत, कुंकुमतिलक एवं दण्डवत् करने वाले भक्तगणों को देखकर रोमांचित हुआ जाता था। असंख्य महिला-पुरुषों ने हर्षोल्हास से महाराज का स्वागत मुँगी क्षेत्र पर किया था।

बैलगाड़ियों की कतार में एक रथ सजाया गया और महाराज की शोभायात्रा निकाली गई। प्रथम महाराज ने श्री निम्बार्क जन्मस्थली अरुणाश्रम गंगा गोदावरी किनारे वेदमंत्रों से गोदावरी का पूजन किया। मुँगी गाँव में भी शोभायात्रा निकाली गई। नियोजित पीठ स्थल पर शामियाना लगाया गया था। भव्य व्यासपीठ, भगवान् निम्बार्काचार्य एवम् श्री श्रीजी की प्रतिमाओं से शोभायमान हो रहा था। रजत सिंहासन पर सन्मानपूर्वक महाराज विराजमान हुए। लगभग दस ग्यारह हजार भक्तगणों की संख्या में जनसमूह उपस्थित था। एक अलौकिक दृश्य देखकर मुँगी ग्रामवासियों में सारी प्राचीन परम्परा की अनुभूति जाग गई थी और लगने लगा था कि ब्रह्माजी के अपने पादस्पर्श से पावन भूमि की लौ फिर से यहाँ अवतरित हो गई है। मुँगी ग्रामवासियों के लिए यह एक अनोखा दृश्य था। पाटली, गायकवाड़, कुणबी, छोटे व्यवसायी, काजी कहारों के लिए भविशों की सेवा, खेतीबाड़ी करने वाले भोलेभाले ग्रामवासियों ने पहली बार यहाँ इन्द्रसभा का दृश्य देखा। भक्ति भाव विभोर जनता ने श्री निम्बार्काचार्य का जयघोष किया और भावभीना दृश्य रोमांचित करता रहा।

मन्दिर निर्माण का मानस तथा ग्रामवासियों का उत्साह देखकर रसिक मोहनशास्त्री एवं अन्य महानुभावों ने सन्तोष व्यक्त किया। गाँव की ओर से अनेक मान्यवरों ने मन्तव्य व्यक्त किए। अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर सलेमाबाद राजस्थान से पधारे 48वें पीठाधिपति जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'

महाराज का मनोगत सुनकर लोग भाव गद्‌गद् हो उठे। सलेमाबाद पीठ द्वारा भूमिदाता एवं शोधकार्यकर्ता, सहायकर्ता दाताओं का यथोचित स्वागत भी किया गया।

15/12/1999 को शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। भगवान् निम्बार्काचार्य स्मारक एवम् भव्य मन्दिर का वास्तुशास्त्रीय आरेखन किया गया और वेदशास्त्रसम्मत विधिवत् महामंत्र उजागर करते हुऐ यजमान **कल्याणप्रसाद सूतवाले, ब्रजमोहन फोफलिया, गिरिधरजी सोनी, युगलकिशोर तोषनीवाल** आदि के करकमलों से हवन-यजन करके शिला रखी गई। गायन, संगीत, मंगलाचरण सुस्वरों में सुनकर पूरा परिसर गुंजित हुआ। शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ। आदरणीय अतिथियों का यथोचित सम्मान किया गया। भजन, गायन, कीर्तन ये होता रहा। सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि आज मुँगी ग्रामवासी जो पुरातन काल से अनभिज्ञ थे, उनके सामने अपने गाँव की इतनी महान् धरोहर छिपी थी, खुल गई। यह देखकर सभी रोमांचित हो गये। भारतभूमि के नक्शे में आज मुँगी गाँव श्री निम्बार्काचार्य पावन तीर्थ के रूप में चमकने वाला है। मुँगी गाँव में उस दिन हुआ महाभोजन पहले कभी हुआ नहीं था, इतना विशाल और रुचिपूर्ण था यह कार्यक्रम।

16/12/1999 को महाराज श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' हाराज द्वारा दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया। आसमंत के अनेकों ने निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करके साम्प्रदायिक कार्य की शपथ ली। मंगलवस्त्र प्रदान करके सबका यथोचित सम्मान किया गया।

भगवान् निम्बार्काचार्य का स्मारक एवं भव्य मन्दिर का निर्माण कार्य जनवरी, 2004 तक पूर्णत्व की ओर पहुँचा। 66'× 33' चौरस फुट काँक्रीट का पूरा हुआ। दानवीरों ने और संयोजकों ने पूरा सहयोग दिया। निर्माण काल में छुट-पुट अवरोध या आकस्मिक घटनायें अवश्य हुई, लेकिन कोई हानि नहीं हुई। तीन मंजिल में मन्दिर का निर्माण हुआ। दूसरी मंजिल में बीचोंबीच निम्बार्काचार्य का विग्रह चबूतरे पर स्थापित किया गया है। मन्दिर के पास ही भक्तिनिवास का निर्माण कार्य हुआ है। दूर-दूर से आने वाले भक्तों के लिए सभी सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं। स्वतन्त्र रूप में यज्ञशाला का निर्माण किया गया है, जो प्रत्येक उत्सव में भक्ति अभिव्यक्ति, जप तप की सुविधा करेगा। मन्दिर के लिए आवंटित जमीन पर कम्पाउण्ड लगा हुआ है और अनेक पेड़ों के उगाने से वातावरण सदा हराभरा होगा। गोशाला का फिलहाल निर्माण हुआ है। विश्वस्त मण्डल तथा स्थानिक संयोजन समिति उसके यथाविकास कार्य में समुचित प्रयत्न में लगी है। भक्तों को गोपूजन का पुण्य मिले एवं कृषि समाज के लिए इस योजना से लाभ मिले, ऐसी विश्वस्त की धारणा है।

आचार्य भगवान् निम्बार्काचार्य का विग्रह स्वरूप मुँगी गाँव में स्थापित होने से भारतवर्ष में एक परम सुन्दर भव्य मन्दिर का निर्माण हुआ और मुँगी गाँव आध्यात्मिक नक्शे पर छा गया है। यहीं छोटा सा गाँव एक समय में वतनदारों का, राजकीय थाना बना था। मराठा राज्य में छत्रपति शिवाजी महाराज का ससुराल माना जाता है। दसपुते पाटील, राजे, भोसले, रजो गायकवाड़ आदि वतनदार आज अपनी विरासत सम्भाले हुऐ हैं। कान्हव ब्राह्मण एवं जोशी के परिवार आज मुँगी में है, जो पुराने इनामदार हैं। कुल मिलाकर 600 घरों की बस्ती और लगभग पाँच हजार जनसंख्या वाला गाँव आज प्रसिद्धि पर है। औद्योगिक प्रगति का माहौल उतना नहीं है, फिर भी दस किलोमीटर दूरी पर शक्कर कारखाने से गाँव की स्थिति में परिवर्तन अवश्य आया है। गन्ने की खेती के लिए पानी और उपजाऊ जमीन के कारण गाँव वैसे धनवानों का ही माना जा सकता है।

आवागमन के बारे में (जो इस तीर्थ को देखने आने वाले हैं) मुँगी गाँव पैठण, शेवगाँव, नगर, पाटोदा, गेवराई, आदि जगहों से रास्तों से जुड़ा हुआ है। एस.टी. बसें प्रत्येक मार्ग पर चलती हैं। पैठण-मुँगी, पैठण-पंढरपुर, पैठण-पाटोदा ये बसें मुँगी से चलती है। पैठण से मुँगी 12 कि.मी; शेवगाँव मूंगी 30 कि.मी; ज्ञानेश्वर जन्मभूमि आपेगाँव से 5 कि.मी. इतनी दूर से गोदावरी नदी किनारे गाँव बसा हुआ है।

अन्य देशों व भारत भर से आने वाले भक्तगणों के लिए औरंगाबाद हवाई अड्डा 65 कि.मी. पड़ता है, जो औरंगाबाद पैठण रोड़ से प्रवास किया जा सकता है। औरंगाबाद एवं अहमदनगर रेल स्टेशनों का भी लाभ मिल सकता है, जहाँ पूरे भारत भर से रेलें चलती हैं।

निम्बार्क भक्तों के लिए मुँगी में श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का सुरम्य मन्दिर अवश्य आनन्द देगा और आसानी से यहाँ यात्रा करने का सुयोग प्रदान करेगा। पैठण पंढरपुर दिंडी मार्ग का निर्माण कार्य अभी चल रहा है, जिसके कारण कुछ ही दिनों से मुँगी गाँव राज्य-रास्तों से जुड़ जाएगा। भविष्य में मुँगी की तरक्की होकर भक्ति सम्प्रदाय में चार चाँद लग जायेंगे, यही आशा है।

निम्बार्कधाम-मूंगी पर चल रही नित्य सेवा

श्री निम्बार्क धाम पर नित्य सेवा का आयोजन होता है। प्रात: 4.30 से 5.00 बजे तक - भक्ति अर्चना, 5.00 से 6.00 सद्भाव प्रभात फेरी, 6.00 बजे प्रातः वन्दना, 6.15 बजे से 7.00 बजे तक भजन, 8.00 बजे भोग आरती, 12.00 बजे नैवेद्य आरती, दर्शन 4.30 से 5.30 बजे तक महिला मण्डलों का भजन, सायं 7.00 से 7.15 बजे तक सायं आरती, 7.15 से 8.00 बजे तक भजन माला, और बाद में शेजारती भजन। मास की प्रत्येक पूर्णमासी को भगवान् निम्बार्काचार्य का विशेषाभिषेक होता है।

इस प्रकार मूंगी में निम्बार्कधाम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर लेखक आनन्दित है।

सेवानिवृत्त प्रधान अध्यापक (प्राथमिक) शाला,
निम्बार्कधाम-मूंगी, ता. शेवगाँव, जिला अहमदनगर
अनुवाद - प्रा.गो.तु. काकड़े,
सेवानिवृत्त, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
प्रतिष्ठाण महाविद्यालय पैठण, जिला औरंगाबाद

श्री सर्वेश्वर प्रभु से सम्बद्ध कुछ सत्य घटनाए

श्री सर्वेश्वर प्रभु की गोदुग्धाभिषेक सम्बन्धी एक सत्य घटना

मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्री मुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री,
आयुर्वेदाचार्य,स्थल, सूर्यपोल, उदयपुर

एक बार सूर्य ग्रहण पर श्रीकुरुक्षेत्र की यात्रार्थ अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु वर्तमान निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, सलेमाबाद एवं मेरे स्वर्गीय श्रीगुरुदेव धर्माचार्य महान्त भूषण स्थलधीश श्री 108 श्रीगंगादासजी महाराज मेवाड़ मण्डलेश्वर, उदयपुर (राजस्थान) का अपने परिकर वृन्द के साथ पधारना हुआ था। सेवा में इन पंक्तियों का लेखक भी साथ था।

यात्रा प्रवास में दिल्ली से करीब 60 मील दूर जंगल में एक स्थान पर हम सबको प्रातः काल रुकना पड़ा था। कारण कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मङ्गला आरती से राजभोग पर्यन्त की सेवा सुसम्पन्न होनी थी। परम्परा परिपालित नित्य नियमानुसार भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु का गोदुग्धाभिषेक होना था। गोदुग्ध के लिए चारों ओर आस-पास की बस्ती में परिचारक भेजे गये। ये सभी परिचारक 9 बजे लौटकर बोले कि गोदुग्ध तो नहीं मिल सका है, अब क्या किया जाय? प्रातः स्मरणीय श्री 'श्रीजी' महाराज ने कहा कि नियमानुसार श्रीसर्वेश्वर प्रभु का गोदुग्धाभिषक तो होगा ही। हम सभी बड़े चिन्तित थे कि आज ऐसे इस भयानक जङ्गल में प्रभु का अभिषेक गोदुग्ध से कैसे होगा? इधर श्री 'श्रीजी' महाराज पूर्ण निश्चिन्त अपनी स्वाभाविक सौम्य निश्चल साधु प्रकृति के अनुसार विराजमान थे। इतने ही में क्या होता है कि पंजाब बाउण्डरी का एक ट्रक वहाँ आकर उसी जगह ठहरा और उसमें बैठे हुये कुछ सज्जन हाथ जोड़कर बोले आप लोग जङ्गल में बैठकर ईश्वराराधना कर रहे हैं, कहिये हमारे योग्य कोई सेवा? उपस्थित सन्तों ने कहा–साहब हमें तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अभिषेकार्थ गोदुग्ध चाहिये। चारों तरफ आदमियों को भेज रक्खा है, कहीं भी प्राप्त नहीं हो रहा है। तब उन सज्जनों ने कहा–भगवन्! हम इस ट्रक में गायों को ही ले जा रहे हैं, लीजिये अभी हम इन गायों का दुग्ध निकाल देते हैं, अभिषेक ही नहीं राजभोग के लिए भी लीजिये। ऐसा कहकर उन सज्जनों ने चार गायों का दुग्ध निकाल कर दे दिया, जिससे श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक और राजभोग सेवा भी सम्पन्न हो गई। उस घोर जङ्गल में ऐसी समस्या खड़ी होना और उसका किस प्रकार तुरन्त हल हो जाना, यह एक प्रत्यक्ष चमत्कार नहीं तो और क्या है? हम सभी इस आश्चर्यजनक घटना तथा प्रभु के प्रत्यक्ष चमत्कार तथा प्रातःस्मरणीय श्री

'श्रीजी' महाराज की प्रभु के विधान के प्रति निश्चिन्तता देख कर आनन्द मग्न होकर श्रीसर्वेश्वर भगवान् एवं महाराजश्री के प्रति और अधिक निष्ठावान् श्रद्धावान् बन गये।

इस घटना तथा उस दृश्य को स्मरण करके आज भी हम श्रीसर्वेश्वर भगवान् एवं श्री 'श्रीजी' महाराज के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं।

❊ ❊ ❊

एक चमत्कारी घटना श्री सर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्य चरणों में दृढ़ निष्ठा के कारण जीवनदान

– चन्द्रदत्त पुरोहित, परबतसर

सन् 1942-43 की बात है, मैं ग्राम बेसरोली तहसील परबतसर में प्राथमिक पाठशाला में प्रधानाध्यापक था, टाइफाइड बिगड़ गया और स्थिति ऐसी बन गई कि प्रायः मरणावस्था की प्राप्ति सन्निकट हो गई।

मेरी पूजनीया माताजी परबतसर ही थी, उन्हें रात्रि में स्वप्न हुआ कि मुझे पलंग से नीचे जमीन पर सुलाया जा रहा है तथा मेरे श्वास की गति एकदम तीव्र होकर यकायक शान्त हो गई है।

प्रातः होते ही माताजी ने पड़ौसियों से तद्विषयक चर्चा की और तुरन्त ही ऊँट किराये पर करके बेसरोली के लिए प्रस्थान किया, माताजी ने बेसरोली पहुँचने पर जब मेरी स्थिति गम्भीर देखी तो घबराहट के स्थान पर भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु का ही एक मात्र सहारा लिया, मेरा परिवार सदैव से ही श्री निम्बार्काचार्य पीठ, सलेमाबाद स्थित श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अपना इष्टदेव मानता आया है। अतः माताजी ने आचार्य चरणों द्वारा प्रदत्त श्री शरणागत मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया। बीच-बीच में श्री सर्वेश्वर प्रभु की जय आदि का उच्चारण उनकी वाणी से सुनाई पड़ता था, चूँकि मैं तो बेहोशी अवस्था में था, परन्तु उपस्थित बन्धु-बान्धव तथा मित्रादि जो सब वहाँ उपस्थित थे और अत्यन्त ही घबराहट में थे। कई तो मेरे उस अवस्था के कारण विलाप तक करने लगे थे, पर माताजी एकदम शान्त विश्वसनीय अवस्था में जाप करने में संलग्न थीं, रात्रि के प्रायः 8.00 बजे से उनका यह क्रम प्रारम्भ हो गया था, परन्तु मेरी पलट बिगड़ती अवस्था से बेसरोली निवासी एवं चिकित्सक एकदम निराश हो चुके थे। वैद्यजी तो अन्त में यह कह कर चले गये कि घण्टा भर के अन्दर-अन्दर शरीर जाने वाला है।

रात्रि बीत गई, माताजी जप में संलग्न। प्रातः 5-6 बजने का समय हुआ, अकस्मात् एक सन्त महोदय का प्राकट्य हुआ। उपस्थित समुदाय ने देखा कि वे सीधे मेरे शरीर के समीप आये और अपने हस्तकमल को मेरे शरीर पर फेरने लगे, शीघ्र ही मेरी अचेतन अवस्था समाप्त हो गई, नेत्र खुल गये, मित्र मण्डली में हर्ष का पारावार नहीं, मैंने चरण स्पर्श की चेष्टा की पर उपस्थित जनों ने सन्तजी महाराज से कोई दवा देने का अनुरोध किया। उन्होंने कुछ जड़ी-बूँटी पिलवाई, सन्त जी मौन थे, जिन्हें घेरे हुये पूरा समुदाय बैठा था। ज्योंहीं मुझे

कुछ और शक्ति प्राप्त हुई, उपस्थित समुदाय के बीच से सन्तजी अकस्मात् गायब हो गये और इस प्रकार न उन्हें किन्हीं ने आते देखा न जाते।

घण्टे भर में इस चमत्कार पूर्ण घटना की बेसरोली में प्रातः चर्चा व्याप्त हो गई। मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया। आज भी इस घटना को देखने वाले कई सज्जन बेसरोली में उपस्थित हैं। पूजनीया माताजी ने अपनी दृढ़ अवस्था के कारण मुझे एक प्रकार यमदूतों से छुड़वा लिया यह कहूँ तो कोई अत्युक्ति नहीं।

❊ ❊ ❊

श्री सर्वेश्वर और आचार्य चरणों में दृढ़ निष्ठा : एक सत्य घटना

–नवलकिशोर व्यास, सलेमाबाद

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक श्री सर्वेश्वर प्रभु एवं परम पूज्य श्री 1008 श्री 'श्रीजी' महाराज की अनुपम कृपा तथा अहैतुकी दया की यह एक सच्ची घटना है–

गत 3-4 वर्ष पहिले घर के सब लोगों को यह चिन्ता बनी हुई थी कि राधेश्याम दुकान पर मन लगाकर काम नहीं करता। उनके दादाजी श्रीमान् भँवरलाल जी ने परेशान होकर यह सूचित किया था कि यदि वह दुकान पर मन लगा कर ठीक से काम करने को राजी न हो तो, उसे बम्बई में श्रीमान् गजाधर जी सोमानी की सिफारिश से मील में नौकरी पर लगवा देना चाहिये। किन्तु राधेश्याम के स्वसुर श्रीमान् रामकरण जी बाहेती ने श्रीमान् भँवर लाल जी साहब से यह अनुरोध किया कि राधेश्यामजी स्वतन्त्रता से काम करना चाहते हैं, तो उन्हें स्वतन्त्र रूप से अलग कोई काम करवा दिया जाय। यह श्रीमान् रामकरण जी की बात श्रीमान् श्री भंवरलाल जी के भी ध्यान में बैठ गई ओर उन्होंने पावरलूम कपड़े का छोटा सा काम राधेश्यामजी को करवा देने के लिए कहा। राधेश्यामजी के अनुरोधानुसार श्री रामकरणजी ने अपने दामाद को जयसिंहपुर में सरस्वती टैक्सटाइल के नाम से काम करने के लिए उत्साहित किया एवं उनकी प्रेरणा से उनके द्वारा मन में श्री सर्वेश्वर एवं श्री 'श्रीजी' महाराज की आराधना तथा ध्यान कर वह काम प्रारम्भ किया गया। कुछ दिन बाद ही राधेश्याम का नटखटपना एवं फिजूल खर्चीलापन एक कुशल व्यापारी के रूप में परिणत हो गया।

अब तो उनके कारोबार में श्री सर्वेश्वर प्रभु एवं श्री श्रीजी महाराज की अनुपम कृपा से दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होने लगी। राधेश्याम का ध्यान, चमत्कार को नमस्कार वाली कहावत के अनुसार श्री सर्वेश्वर तथा श्री श्रीजी महाराज के चरणों की ओर आकर्षित हुआ। धार्मिक भावना के अंकुर हृदय में जाग उठे, एवं अपनी कमाई का कुछ अंश धार्मिक कार्यों में विनियोग करने का उन्होंने एक संकल्प सा कर लिया। यह कुछ एक वर्ष पूर्व की ही सत्य घटना है।

❊ ❊ ❊

श्री सर्वेश्वर के तुलसी चरणोदक का प्रभाव : आखों देखी घटना

–श्री रामकुमार राजावत
रा.प्रा. कन्या पाठशाला कुचामन सीटी)
(नागौर-राजस्थान)

परम पूज्यनीय 1008 श्री 'श्रीजी' महाराज की अनुपम कृपा एवं अहैतुकी दया की यह एक सच्ची घटना है। कुछ दिन पहले की घटना है–कुचामन सिटी निवासी श्री ब्रजमोहन जी की माताजी का महाराज 'श्रीजी' द्वारा प्राप्त श्री सर्वेश्वर प्रभु के चरणामृत से पुनः जन्म हुआ।

घटना इस प्रकार है कि श्री ब्रजमोहन जी की माताजी 20 दिन से बीमार थी। दिनांक 24.11.71 को तो घर वाले बिल्कुल ही निराशा को प्राप्त हो गये थे। सारे परिवार के लोगों ने बीमारी की हालत देखकर रोना बिलखना शुरू कर दिया था। डाक्टर ने बीमार के कई बीमारियाँ घोषित कर रखी थी। ब्लडप्रेशर, श्वास, खाँसी, बुखार आदि। ऐसी स्थिति में बीमार की बहिन भगवतदासी ने बीमार के पास जाकर पूछा कि आप की क्या इच्छा है सो आप हमें बताओ। इस पर बीमार ने कहा सर्वेश्वर प्रभु का चरणामृत, हो तो महाराज श्री के दर्शन।

जब बीमार के आज्ञाकारी पुत्र श्री ब्रजमोहन जी को यह मालूम हुआ कि माँ की इच्छा महाराज श्री के दर्शनों की है तो वह दौड़कर फोन पर गये तथा बिलखते शब्दों में महाराजश्री को फोन किया कि भगवन् श्री! माँ की इच्छा अन्त समय में श्रीचरणों के दर्शनों की है। अगर कृपा दृष्टि कर हमारे घर श्री चरणों का पादार्पण हो जावे तो मैं कृतार्थ हो जाऊँगा।

इस प्रकार दुःखभरी आवाज सुनकर परम दयालु महाराजश्री ने फरमाया तुम सब धैर्य धारण करो, हम आ रहे हैं। महाराजश्री ऐसा क्यों नहीं फरमाते–**"परमार्थ के कारण सन्तन धरा शरीर"** महाराजश्री का अवतार ही हमारे जैसे अन्ध कूप में पड़े जीवों के उद्धार हेतु हुआ है। यह तो दुर्भाग्य है कि हम ऐसे अवतारी महापुरुष को पाकर भी ऐसे अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु की चरण शरण छोड़कर इधर-उधर भटकते रहते हैं। हाँ, तो जिस दिन महाराजश्री का पादार्पण हुआ, उस दिन बीमार के एक बून्द पानी नहीं उतर रहा था। सोना, बोलना, दवा का लेना आदि सब कार्य बन्द हो रहा था, उसी दिन डॉक्टर ने निराशा के शब्दों में कहा था कि बीमारी पकड़ में नहीं आ रही है। इनके एक बीमारी नहीं है, कई बीमारियाँ बन गई। किन्तु हर्ष का विषय तो यह है कि ज्योंही महाराजश्री के द्वारा प्राप्त श्री सर्वेश्वर प्रभु का चरणामृत बीमार को पिलाया और श्री स्वामी जी महाराज की धूनी की विभूति के देते ही बीमार की सारी बीमारियाँ समाप्त हो गयी। बीमार स्वयं उठकर महाराजश्री से बातचीत करने लगी, महाराजश्री के बिराजे-बिराजे एक डॉक्टर साहब भी आ गये। उन्होंने बीमार का निरीक्षण किया तो बताया कि इनके कोई बीमारी नहीं है। जिस स्थान पर कुछ समय पहले दुःख का वातावरण फैल रहा

था, वहाँ श्रीमहाराज के पदार्पण होते ही बीमार के परिवार लोगों के मुँह प्रसन्नता से खिल उठे थे। सब सुख शान्ति का अनुभव कर रहे थे। सब लोग हँसी खुशी की बातें करने लगे, जो बीमार 10 दिन नींद न ले सका था, उन्होंने उस दिन रात्रि भर सुख की नींद ली। यह था श्री सर्वेश्वर प्रभु के दिव्य चरणामृत का असीम प्रभाव का प्रत्यक्ष चमत्कार।

मुझे ऐसा लगा कि जिस प्रकार श्री गङ्गा जल में मुनष्यों के पाप नाश करने की शक्ति है, उसी प्रकार श्री प्रभु के चरणामृत में यमदूतों को भगता कर मनुष्यों की पुन: जीवन देने की शक्ति है। किन्तु होनी चाहिये श्री सर्वेश्वर प्रभु के चरण कमलों में दृढ़ भक्ति व पूर्ण विश्वास, फिर तो बेड़ापार है। महाराजश्री करीब 2 घण्टे बीमार के घर बिराजे। बीमार के परिवार ने महाराजश्री का बड़ी धूम-धाम से पूजन किया। बड़ा उत्सव मनाया।

महाराजश्री का रात्रि के 9.00 बजे कुचामन सिटी में पादार्पण हुआ तथा रात्रि 11.00 बजे वापस सलेमाबाद पधारे। रात्रि के 1-2 बजे महाराजश्री का शयन (रात्रि विश्राम) हुआ होगा। क्या कोई महाराजश्री की इस उल्लेखनीय महनीयता का अनुभव कर सकता है कि दूसरों का दु:ख निवारण करने हेतु महाराजश्री के मुखारविन्द पर प्रसन्नता झलक रही थी। यह है सन्तों का स्वभाव, स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुख पहुँचाते हैं।

हाँ तो इसमें सन्देह नहीं है कि जो श्रद्धापूर्वक 'श्रीजी' महाराज की चरण शरण लेगा, उसके सब कष्ट विलीन हो जायेंगे और वह जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेगा।

❑